और दाँत के मध्य दो योजनों का अन्तर रहा। वह मुख क्या था मकरालय (-सा) था। ११४२

ईण्डिय पुलवरो डवुण रिन्दुवॆत्
तीण्डिय नॆंडुवरैत् तॆय्व मत्तिन्नैप्
पूण्डुयर् वडमिरु पुडैयिन् वाङ्गलिन्
नीण्डन्न किडन्दन निमिर्न्द कैयिनान् 1143

ईण्टिय पुलवर् ओटु–एकत्रित देवों के साथ; अवुणर्–असुर; इन्तुवै–चन्द्र को; तीण्टिय–स्थिर-स्तम्भ बनाकर; नॆंटु वरै–बड़े (मेरु) पर्वत को; तॆय्व मत्तित्तै–दिव्य मथानी को; पूण्टु–रखकर; उयर् वटम्–वासुकी की रस्सी से; इरु पुटैयिन् वाङ्कलिन्–दोनों पार्श्वों में बारी-बारी से खींचने से; नीण्टु अॆन्न–लम्बा बना पड़ा रहा जैसे; निमिर्न्त कैयित्तान्–ऊपर उठे हाथों वाला। ११४३

देवों और असुरों ने एकत्रित होकर चन्द्र को स्थिर-थम्भ के रूप में गाड़ा। बड़े मन्दर को दिव्य मथानी बनाया। बड़े वासुकी नामक सर्प को उस पर लपेटकर दोनों ओर खड़े होकर बारी-बारी से खींचा। उस दिन लम्बा बनकर वासुकी जैसा दिखता था, वैसा ही कवन्ध के हाथ लम्बे और मोटे बन पड़े थे। ११४३

तॊहैक्कनऱ् करुमहन् ऱुरुत्तित् तूम्बॆन्नप्
पुहैक्कॊडिक् कनलॊडु पॊडिक्कु मूक्किन्नान्
पहैत्तहै नॆंडुङ्गडल् परुहुम् पावहन्
शिहैक्कॊऴुन् दॆन्नवॆदिर् तिरुहुम् नाविन्नान् 1144

करुमकन्–लुहार की; तॊकै कनल्–अधिक आग की भाथी में; तुरुत्ति तूम्पु अॆन्न–लगी रहनेवाली धौंकनी की नाक (नली) के समान; कनल् ओटु कॊटि पुकै–आग के साथ लताओं के आकार में फैलनेवाला धूम; पॊटिक्कुम्–निकालनेवाली; मूक्कित्तान्–नाक का; पकै तकै–शत्रुता के साथ; नॆंटुम् कटल् परुकुम्–विशाल सागर को पी लेनेवाली; पावकन्–बड़वाग्नि की; चिकै कॊऴुन्तु अॆन्न–ज्वालाशिखा के समान; तिरुकुम्–घूमती रहनेवाली; नावित्तान्–जीभ वाला। ११४४

उसकी नाक से लुहार की अधिक अग्निसहित भाथी से लगी हुई धौंकनी की नाक के समान आग और लता के आकार में धुआँ निकल रहा था। (सागर का) शत्रु बनकर विशाल सागर को जो बड़वाग्नि पी (सोख) रही थी, उस बड़वाग्नि की ज्वालाशिखा के समान घूमती रहती हुई जीभ वाला था वह कबन्ध। ११४४

पुरण्डर विडैवर वॆरुविप् पुक्कुरै
अरण्डन्नै नाडियो ररुवि माल्वरै

मुरण्डहु मुळैनुळै मुळुवॆण् डिङ्गळै
इरण्डुकू ट्रिट्टॅन्न विलङ्गॆ यिड्ड्रिन्नान् 1145

अरवु पुरण्टु इटै वर-(राहु) सर्प को लोटते हुए अपने पास आते देखकर; वॆरुवि-भय खाकर; पुक्कु उऱै-घुसकर वास करने योग्य; अरण् लतै नाटि-सुरक्षित स्थान ढूँढ़कर; ओर् अरुवि माल् वरै-सरिताओं-सहित एक पर्वत पर; मुरण् तकु-प्रबल; मुळै नुळै-गुफा में प्रविष्ट; मुळु वॆण् तिङ्कळै-पूर्ण-श्वेत चन्द्र को; इरण्टु कूरु इट्टु अॅत-दो अंशों में काट लिया गया हो, ऐसा; इलङ्कु-दृश्यमान; ऎयिड्ड्रिन्नान्-वक्रदाँतों का। ११४५

उसके वक्रदाँत उस पूर्णचन्द्र के दो टुकड़ों के समान थे, जो राहु-केतु के सर्पों को पास आते देखकर डर से भाग गया, और सरिताओं-सहित वड़े एक पर्वत की शक्तियुत गुफा में घुसा हो और वहाँ जिसके दो टुकड़े हो गये हों। ११४५

ओदनीर् मण्णिवै मुदल वोदिय
पूदमो रैन्दिन्िड् पॉरुन्दिड् ड्ऱ्ऱ्रियॆ
वेदनूल् वरन्मुरै विदिक्कु मैम्बॆरु
पादहन् दिरण्डुयिर् पडैत्त पण्बिन्नान् 1146

ओतम् नीर्-शीतल जल; मण्-पृथ्वी; इवै मुतल-इनको आदि में रखकर; ओतिय-गणित; पूतम् ओर् ऐन्तिऩ्िल्-पाँच एक भूतों का; पॉरुन्तिड्ड्रु अऩ्ड्रियॆ-न बनकर; वेत नूल्-वेद-शास्त्रों में; वरन् मुऱै-यथाक्रम; वितिक्कुम्-विहित; ऐम् पॆरुम् पातकम्-पाँच महापातक; तिरण्टु उयिर् पटैत्त-मिलकर प्राणवन्त हो गये; पण्पिन्नान्-ऐसे प्रकार वाला। ११४६

उसका शरीर शीतल जल, पृथ्वी आदि कथित पाँचों भूतों का बना नहीं लगता था। पर वेदों और शास्त्रों में वर्जित पाँचों महापातकों (हत्या, चोरी, असत्यवाचन, सुरापान, गुरुनिन्दा या परस्त्री-प्रेम, जुआ, सुरापान, असत्यवाचन, दान देते समय रोकना —ये पंच महापातक माने जाते हैं।) का मिलकर बना और प्राणवन्त हुआ-सा था। ११४६

वॆय्यवॆङ् गदिर्हळै विळुङ्गुम् वॆव्वरा
शॆय्तॊळि लिलतुयिल् शॆविवियिन् ड्रॊळ्ळैयान्
पॊय्हिळर् वन्मैयिड् पुरियुम् पुन्मैयोर्
वॆहुरु नरहैयुम् नहुम्व यिड्ड्रिन्नान् 1147

वॆय्य वॆम् कतिर्कळै-गरम और प्रिय (शीतल) किरणों वाले सूर्य और चन्द्र के; विळुङ्कुम्-खादक; वॆम् अरा-भयंकर (राहु-केतु) सर्प; चॆय् तॊऴिल् इल-निष्क्रिय होकर; तुयिल्-आकर जहाँ सोते है; चॆवियित् तॊळ्ळैयान्-कर्ण-विवर वाला; किळर् वन्मैयित्-बढ़ती कठोरता से; पॊय् पुरियुम्-असत्य-वादन (आदि दुष्कर्म) करनेवाले;

पुन्मैयोर्–नीच लोग; वैकुम्–जहाँ वास करते हैं; नरकैयुम्–उस नरक का भी; नकुम्–परिहास करनेवाले; वयिर्रिन्नान्–पेट का। ११४७

सूर्य गरम किरणों के हैं और चन्द्र प्रिय शीतल किरणों के। इन दोनों को राहु और केतु नाम के सर्प पकड़कर निगल लेते हैं। ये दोनों अपना काम छोड़कर कबन्ध के कर्ण-विवरों में जाकर सोते रहते हों, ऐसे कानों वाला था वह। असत्य-कथन आदि नीच काम करनेवालों को जहाँ जाकर रहना पड़ता है, उस नरक को भी लजानेवाला था, उसका पेट। ११४७

मुऱ्ऱिय वुयिरॅला मुरुङ्ग वारित्तान्
पऱ्ऱिय करत्तिनन् पणैत्त पण्णैयिल्
तुऱ्ऱिय पुहुतरु तोऱ्ऱत् तान्मन्
कॊऱ्ऱवाय् तऱ्चॅयल् कुऱित्त वायिनान् 1148

मुऱ्ऱिय–जिनको घेर लिया; उयिर् ॲलाम्–उन सभी प्राणियों को; मुरुङ्क–मिटाकर; तान् वारि पऱ्ऱिय–जिनसे पकड़ता है; करत्तिनन्–ऐसे हाथों का; पणैत्त पण्णैयिल्–मोटे झुण्डों में; तुऱ्ऱिय–ठूँसे हुए (प्राणी); पुकु तरुम्–घुसते हैं; तोऱ्ऱत्ताल्–उस दृश्य से; नमन् कॊऱ्ऱ वाय् तन्–यम के राजद्वार का; चॅयल्–कार्य; कुऱित्त–जिसकी ओर संकेत करता है (समान); वायिनान्–ऐसा मुख वाला। ११४८

उसके हाथ अपने क्रोड के घेरे में आये हुए सभी प्राणियों को मिटाने के काम में लीन थे। बड़े-बड़े झुण्डों में अनेक प्राणी उसके मुख में ठूँसे जा रहे थे। उस दृश्य को देखकर यम का सुरक्षित राजद्वार स्मरण आता था। ११४८

ओलमार् कडलॅन मुऴङ्गु मोदैयान्
आलमे यॅन्नविरुण् डऴन्ऱ वाक्कैयान्
नीलमाल् नेमियिऱ् ऱलैयै नीक्किय
कालने मियैप्पॅरुङ् गवन्दक् काट्चियान् 1149

ओलम् आर्–गर्जनशील; कटल् ॲन–सागर-सम; मुऴङ्कुम् ओतैयान्–कोलाहलमय शब्द वाला; आलमे ॲन–हलाहल के ही समान; इरुण्टु–काले; अऴन्ऱ–उष्ण; आक्कैयान्–शरीर का; नील माल् नेमियिल्–नील श्रीविष्णु के चक्रायुध से; तलैयै नीक्किय–सिर-कटे; काल नेमियिल्–कालनेमि के समान; पॅरुम् कवन्त–बड़े कबन्ध के; काट्चियान्–दृश्य वाला। ११४९

उसका बोल गर्जनशील सागर के शोर के समान था। उसका शरीर हलाहल के समान काला और गरम था। नीले वर्ण के श्रीविष्णु के चक्रायुध के द्वारा सिर-कटे कालनेमि नामक राक्षस के कबन्ध के समान

उसका आकार दिखता था। (कालनेमि के सौ सिरों और हाथों को श्रीविष्णु ने अपने चक्रायुध चलाकर काटा था। वही कालनेमि पीछे कंस बना था। यह पुराणांतर में कहा गया है। इसका उल्लेख अयोध्याकाण्ड में भी आया है।)। ११४९

ताक्किय तणप्पिल्का लॅऱियत् तन्नुडै
मेक्कुयर् कॉडुमुडि यिऴन्द मेरुनेर्
आक्कैयि निरुन्दवन् ऱन्नै यव्वऴि
नोक्किन रिरुवरु नुणङ्गु केऴ्वियार् 1150

तणप्पु इल् काल्–अप्रतिहत पवन के; ताक्किय ऍऱिय–वेग से बहकर झटका देने से; तन् उडै–अपने; मेक्कु उयर्–ऊपर उठे हुए; कॉडु मुटि–उन्नत शृंगों को; इऴन्त–जिसने खोया है; मेरु नेर्–ऐसे मेरु के समान; इरुन्तवन्–जो रहा; तन्नै–उस कबन्ध को; नुणङ्कु केऴ्वियार्–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान के; इरुवरुम्–(श्रीराम और लक्ष्मण) दोनों ने; अ वऴि–वहाँ; नोक्किनर्–देखा। ११५०

उसका शरीर उस मेरु के समान था, जिसके उन्नत शृंग दुर्धर्ष वेग से बहनेवाले पवन के झटके से टूटकर गिरे हों। सूक्ष्म श्रवणज्ञान के स्वामी दोनों, श्रीराम और लक्ष्मण ने वहाँ ऐसे कबन्ध को देखा। ११५०

नीर्पुहु नॅडुङ्गड लडङ्गु नेमिशूऴ्
पार्पुहु नॅडुम्बहु वायैप् पार्त्तनर्
शूर्पुह वरियदो ररक्कर् ऱॉन्मदिल्
ऊर्पुहु वायिलो विदुवॅन् ऱुन्निनार् 1151

नीर् पुकु–जल जिसमें प्रवेश करता है; नॅटुम् कटल् अटङ्कु–वे विशाल समुद्र जिसमें समाविष्ट हैं; नेमि चूऴ्–और (जो) चक्रवालगिरि से घिरी हुई है; पार् पुकु–वह भूमि जिसमें प्रविष्ट हो सकती है; नॅटुम् पकु वायै–उस बड़े और खुले मुख को; पार्त्तनर्–(उन्होंने) देखा; चूर् पुकल् अरियतु–सूर्य जिसमें प्रवेश नहीं कर सकता, ऐसा; ओर्–एक; अरक्कर्–राक्षसों का; तॉल् मतिल् ऊर्–प्राचीन प्राचीरों से आवृत नगर में; पुकु–प्रवेश करानेवाला; वायिलो इतु–द्वार क्या यह; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उन्नितार्–सोचा। ११५१

श्रीराम और लक्ष्मण ने देखा कि उसके मुख के अन्दर सारी नदियों के जल को समा लेनेवाले सारे सागरों को अपने अन्दर लिये हुए चक्रवालगिरि से आवृत पृथ्वी जा सकती है! उन्होंने सन्देह किया कि क्या यह सूर्य के लिए भी अगम प्राचीन प्राचीरों से आवृत लंका नगर का द्वार है?। ११५१

अव्वऴि यिऴैयव नमैन्दु नोक्किये
वॅव्विय वीरुपॅरुम् बूदम् विल्वलाय्

ववविय तन्गैयिन् वळैत्तु वाय्प्पॅयुम्
शॅय्वदॅ न्निवणॅनच् चॅम्मल् शॅप्पुवान् 1152

अ वऴि–तव; इळैयवन्–कनिष्ठ भ्राता (के); अमैन्तु नोक्कियॆ–खूब देखकर; विल् वलाय्–धनुर्विद्याविदग्ध; वॅव्वियतु ओरु पॅरुम् पूतम्–भयंकर एक भूत; ववविय–अपने द्वारा पकड़े गये प्राणियों को; तन् कैयिल् वळैत्तु–अपने हाथों से समेट लेकर; वाय् पॅयुम्–अपने मुख मे डालनेवाला है; इवण् चॅय्वतु ॲन्–यहाँ करना क्या; ॲन्न–कहने पर; चॅम्मल्–प्रभु श्रीराम; चॅप्पुवान्–बोले। ११५२

तब लक्ष्मण ने कवन्ध को खूब ध्यान से देखा। फिर श्रीराम से कहा कि धनुर्विद्या-निपुण! यह भयंकर भूत है, जो अपने क्रोड में आने वाले सभी प्राणियों को हाथ से लेकर अपने मुख में डाल लेता है! अव हम क्या करें? —लक्ष्मण ने यह प्रश्न किया। ११५२

तोहैयुम् बिरिन्दनन् ळॅन्दॅ तुञ्जिनान्
वेहवॅम् बऴिशुमन् दुऴल वेण्डिलेन्
आहलिन् यानिनि यिदनुक् कामिडम्
एहुदि यीण्डुनिन् ट्रिळव लाण्डॅन्ट्रान् 1153

इळवल्–छोटे भैया; तोकैयुम् पिरिन्ततळ्–मयूराभा (जानकी) विछुड़ गयी; ॲन्तै तुञ्चितान्–मेरे पिता (जटायु) चिरनिद्रा में लग गये; वेक वॅम् पऴि–अकस्मात आया यह कठोर अपयश; चुमन्तु–ढोता हुआ; उऴल वेण्टलेन–संकट में फिरना नहीं चाहता; आकलिन्–इसलिए; यान्–मैं; इनि इततुक्कु–अव इसका; आमिटम्–(आमिश =) खाद्य मांस (या मेरा स्थान); ईण्टु निन्ऱु–यहाँ से; एकुति–चलो; ॲन्ड्रान्–कहा। ११५३

तब श्रीराम ने नैराश्य से यों कहा— छोटे भैया! मयूर की-सी छटा वाली सीता बिछुड़ गयी। मेरे पिता (-सम) जटायु चिर निद्रा में लीन हो गये; अकस्मात आयी यह निंदा ढोता फिरना मैं नहीं चाहता। इसलिए अब मेरा स्थान उसका भोजन बनना है। (आमिटम्— आमिष का भी तमिऴ रूप है; आम् इटम्— करके बननेवाला स्थान अर्थ भी किया जा सकता है।) तुम मुझे छोड़कर यहाँ से चले जाओ। ११५३

ईन्ड्रव रिडर्प्पड वॅम्बि तुन्पुरच्
चान्ड्रवर् तुयरुरप् पऴिक्कुच् चान्ड्रमाय्त्
तोन्ड्रलि नॅन्नुयिर् तुरन्द पोदलाल्
ऊन्ड्रिय पॅरुम्बडर् तुडैक्क वॊण्णुमो 1154

ईन्ड्रवर्–मेरे जनक-जननी; इटर् पट–कष्ट भोगते हैं; ॲम्पि–मेरा कनिष्ठ भरत; तुन्पुऱ–दुःखी है; चान्ड्रवर् तुयर् उऱ–उत्तम (वसिष्ठ आदि) लोग संकट में पड़े हैं; पऴिक्कु–अपयश के लिए; चान्ड्रम् आय्–एक दृष्टान्त बना; तोन्ड्रलिन्–पैदा हुआ हूँ, इसलिए; ॲन् उयिर् तुरन्त पोतु अलाल्–विना प्राण त्यागे; ऊन्ड्रिय–

स्थिर रूप से हुए; पॅरुम् पटर्—इन बड़े दुःखों को; तुटैक्क् ऑण्णुमो—मिटा सकेंगे क्या। ११५४

मेरे कारण मेरे माँ-बाप दुःखी हुए। मेरा कनिष्ठ भरत संकट में है। बड़े और आदरणीय वसिष्ठ आदि दुःख में हैं। और भी मैं अपकीर्ति का दृष्टान्त बना पैदा हुआ हूँ! इसलिए मरे विना इस बड़े और गहरे दुःख का मिटना सम्भव है क्या? । ११५४

इल्लियल् बुडैयनी रळित्त्त विन्नॅॉलाळ्
वल्लिवल् लरक्क्कर्दम् मनैयु ळाळॅनच्
चॉल्लिनन् मलैयंतच् चुमन्द तूणियन्
विल्लिनन् शॅल्वन्नो मिदिलै वेन्दन्बाल् 1155

इल् इयल्पु उटैय नीर्—गृहस्थ धर्म का; अळित्त्त—पालनकारिणी; इन् चॉलाळ्—मधुरभाषिणी; वल्लि—लता (-समाना); अरक्कर् तम् मनै उळाळ्—राक्षसों के घर में है; ॲन—ऐसा; मितिलै वेन्तन् पाल्—मिथिलापति के पास; चॉल्लि—कहता हुआ; नल् मलै—श्रेष्ठ पर्वत; ॲन चुमन्त—के समान ढोये जानेवाले; तूणियन् विल्लिनन्—तूणीरों व धनु के साथ; चॅल्वन्नो—जाऊँगा क्या। ११५५

गृहस्थ धर्म की अच्छी पालिका, मधुरभाषिणी और लता-समाना सीता राक्षसों के घर में है! श्रेष्ठ पर्वत के समान यह तूणीर और धनु ढोते हुए मैं क्या मिथिलेश के पास यह समाचार देने जाऊँ? । ११५५

तळैयविळ् कोदैयैत् ताङ्ग लाऱ्ऱलन्
इळैपुरन् दळित्त्तन्मे लिवर्न्द कादलन्
उळन्ॅन वुरैत्तलि नुम्ब रान्ॅन
विळैदलन् ऱादलिन् विळिद नन्ऱॅन्ऱान् 1156

तळै अविळ् कोतैयै—प्रफुल्ल पुष्पों की मालाधारिणी सीता को; ताङ्कल् आऱ्ऱलन्—संरक्षित करने की शक्ति से हीन; इळै पुरन्तु अळित्तल् मेल्—(पर) (इला) भूमि के पालन-शासन पर; इवर्न्त कातलन्—उमँगते प्रेम का; उळन्—है; ॲन—ऐसा; उरैत्तलिन्—कहे जाने से; उम्परान् ॲन विळैतल्—स्वर्गवासी कहे जाने का यह कार्य; नन्ऱु आतलिन्—अच्छा है, इसलिए; विळितल्—मरना; नन्ऱु ॲन्ऱान्—अच्छा होगा, कहा। ११५६

लोग यों कहकर मेरी निंदा करेंगे कि श्रीराम में विकसित पुष्पों की मालाधारिणी सीता का पालन करने की शक्ति नहीं रही। पर भूमि का पालन और शासन करने की इच्छा तो खूब रही! इस अपवाद से 'वह स्वर्गवासी हो गया' यह कहा जाना अच्छा है। इसलिए मेरा मर जाना ही श्रेयस्कर है! श्रीराम ने अपार खेद के साथ अपनी भर्त्सना के ये वचन कहे। ११५६

आण्डा त्रिन्न पन्निड वेयर् किळवीरन्
ईण्डा युन्बिन् नेयिन शॅय्दे यिडर्वन्दु
मूण्डान् मुन्ने यारुयि रोडु मुडियादे
मीण्डे पोदर् कामॅनि नन्ट्रॅन् विनैयॅन्ड्रान् 1157

आणटान्–जगद्रक्षक; इतन–इस भाँति; पन्निट–बोले, तब; ऐयर्कु–प्रभु से; इळ वीरन्–छोटे वीर; उन् पिन्–आपके पीछे; ईण्टु आय्–यहाँ आकर; एयित चॅय्ते–आज्ञा-पालन करके; इटर् वन्तु मूण्टाल्–आफ़त आ गयी तो; मुन्ने–आपके पहले ही; मुटियाते–बिना मरे ही; आर् उयिर् ओटु–प्रिय प्राणों के साथ; मीण्टे पोतर्कु आम्–लौट जाने ही योग्य रहा; ऍतिल्–तो; नन्ऱु ऍन् विनै–बड़ी अच्छी होगी न मेरी सेवा; ऍन्ड्रान्–कहा। ११५७

जगन्नायक ने यह सब गहरे शोक के साथ कहा। तब छोटे वीर लक्ष्मण ने अपने ज्येष्ठ भ्राता से कहा कि भाई! यह भी खूब रहा। आपके साथ वन में आया आपकी अज्ञाओं का पालन करने का, आप पर संकट आया तो आपके पहले अपनी जान दे देने का संकल्प करके। अब प्रिय प्राण लेकर लौट जाने के ही लिए योग्य समझा जाऊँ, तो मेरी सेवा बड़ी श्लाघनीय होगी न? ११५७

ऍन्ड्रा नन्नान् पिन्नु मिशैप्पा निडर्दन्नै
वॅन्ड्रा रन्ड्रो वीरर्ह ळावार् मेलाय
तन्ड्राय् तन्दै तम्मु नॅनुन्दन् मैयर्मुन्ने
पॉन्ड्रा निन्ड्रा नीङ्गुव दन्ड्रो पुहळम्मा 1158

ऍन्ड्रान् अन्नान्–ऐसा कहकर लक्ष्मण; पिन्नुम् इचैप्पान्–और भी बोले; इटर् तन्नै–दुःख को; वॅन्ड्रार् अन्ड्रो–जीतनेवाले ही तो; वीरर्कळ् आवार्–वीर होते हैं; तन् ताय्–अपनी माता; तन्तै–पिता; तन् मुन्–अपना अग्रज; ऍनुम् तन्मैयर्–ऐसे पद में रहनेवालों को; मुन्ने पोन्ड्रा–अपने पहले मरने देते हुए; निन्ड्राल्–कोई जीवित रहा तो; पुकळ् नीङ्कुवतन्ड्रो–उसकी कीर्ति चली नहीं जायगी क्या; अम्मा–माँ। ११५८

लक्ष्मण ने और भी कहा। संकट आए तो उस पर विजय पानेवाले ही वीर कहे जायँगे न? अपनी माँ, अपने पिता और अग्रज आदि बड़ों को मरने देकर कोई जीवित रहेगा तो क्या उसकी कीर्ति मिट नहीं जायगी? । ११५८

माने यन्ना डन्नोडु तम्मुन् वरैयारुम्
काने वैहक् कण्डुयिल् कॉळ्ळान् ड्रन्हिात्तर्
काना नॅन्ने यॅन्ड्रवर् मुन्ने यवरन्ड्रित्
ताने वन्दा नॅन्ड्रपिन् वेड्रोर् तवरुण्डो 1159

माने अन्नाळ्–हरिणी ही सम; तन् ओटु–सीताजी के साथ; तम् मुन्–अपने

बड़े भाई के; वरै आरुम्–बाँसों से पूर्ण; कात्ते वैक-जंगल में ही रहते समय; कण् तुयिल् कोळ्ळान्–अनिद्र रहा; तत्ति कात्तर्कु आतान्–अनुपम रक्षक रहा; अँन्ते–क्या ही (खूब); अँन्ऱवर्–जिन्होंने ऐसा कहा, वे; अवरै इन्ऱि–उनके बिना ही; मुन्ने–उनके पहले ही; ताने वन्तान्–खुद आ गया; अँन्ऱु पिन्–कहेंगे, फिर; वेऱु ओर् तवऱु–उससे बढ़कर कोई और दोष; उण्टो–हो सकता है क्या। ११५९

लोगों ने यह देखकर आश्चर्य के साथ मेरी सराहना की कि हरिणी-सी सीताजी के साथ जो गये, उन अपने ज्येष्ठ भ्राता के साथ लक्ष्मण जंगल गया और रक्षणकर्ता बना। अब उनको ही यह कहने का मौका मिल जाय कि लक्ष्मण उनको छोड़कर उनके आने से पहले ही लौट आ गया तो (कितना बड़ा दोष हो जायगा ?) इससे बढ़कर कोई दोष हो सकता है ? । ११५९

अँन्ऱा युन्मुन् नेयित्त यावुम् मिशैयिन्नल्
पिन्ऱा दॅय्दिप् पेरिशै याळर् कऴिवुण्डेल्
पॉन्ऱा मुन्नम् बॉन्ऱुदि यॅन्ऱा ळुरैपॉय्या
निन्ऱा लन्ऱो निन्ऱदु वाय्मै निलैयम्मा 1160

अँन् ताय्–मेरी माता ने; उन् मुन्–तुम्हारा ज्येष्ठ भाई; एयित यावुम्–जो आज्ञाएँ देगा, वह सब; इचै–पूरा करो; इन्नल्–विपदाएँ आयें तो; पिन्ऱातु–पीछे मत रहो और; अँय्ति–आगे जाकर अपने ऊपर धारण कर लो; पेर् इचै आळर्कु–प्रकीर्तित उनके; अऴिवु उण्टेल्–मरने की नौबत आयगी तो; पॉन्ऱा मुन्नम्–उनके मरने के पहले; पॉन्ऱुति–तुम मर जाओ; अँन्ऱाळ्–यह कहा है; उरै–उनका वचन; पॉय्या निन्ऱाल् अन्ऱो–असत्य नहीं होगा, तभी तो; वाय्मै निलै निऱ्पतु–सत्य स्थिर होगा; अम्मा–माँ। ११६०

मेरी माता ने मुझे आदेश दिया था कि तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम जो भी आज्ञाएँ देंगे, वे सब पूरा करो। विपदा आयेगी तो पीछे मत रहो, पर आगे बढ़कर तुम उसे अपने ऊपर ले लो। शायद मरने की स्थिति आने की सम्भावना देखते हो तो उनके मरने के पहले तुम मरण का वरण कर लो। उस आदेश के अनुसार चलूँ तभी न मेरा सत्यव्रत स्थिर होगा ? । ११६०

अँऱ्पॅऱ् ऱाळुम् यानु मॅन्नैत्तोर् वहैयालुम्
निऱ्पॅऱ् ऱाट्कु निऱ्कु निन्नैप्पुम् पिऴैयामल्
नऱ्पॊर् ऱोळाय् नल्लवर् पेण नन्निनिऱ्कुम्
शॊऱ्पॅऱ् ऱान्मऱ् ऱारुयिर् पेणित् तुऱवेमाल् 1161

नल् पॊन् तोळाय्–श्रेष्ठ और सुन्दर कन्धों वाले; अँन् पॅऱ्ऱाळुम् यानुम्–मेरी जननी और मैं; निन् पॅऱ्ऱाट्कुम्–आपकी जननी और; निऱ्कुम्–आपके प्रति; अँन्नैत्तु ओर् वकैयालुम्–किसी भी तरह से; निनैप्पुम् पिऴैयामल्–विना मन बदले; नल्लवर्

पेण–श्रेष्ठ लोगों द्वारा श्लाघ्य रीति से; नति निऱ्कुम्–अच्छी तरह अचल रहनेवाली; चॊल् पॆऱ्ऱाल्–(साधु-)वचन प्राप्त करेंगे तो; मऱ्ऱु–उसको छोड़कर; आर् उयिर् पेणि–अपने प्राणों के पालन में; तुऱवोम्–आपका कैंकर्य नहीं छोड़ेंगे। ११६१

उत्तम और मनोरम स्वर्ण-सम कन्धों वाले! मेरी जननी को और मुझे यह ख्याति मिल जाय कि हम आपकी जननी और आपके प्रति उत्तम मनुष्यों से श्लाघ्य होकर स्थिरमन रहे। जब इसकी सम्भावना है, तब उसके विपरीत अपने प्राणों के लोभ से अपने कर्तव्य छोड़ देंगे क्या? । ११६१

ओदुङ् गालप् पल्पॊरुण् मुऱ्ऱुऱ् ऱॊरुवाद
वेदञ् जॊल्लुन् देवरुम् वीयुङ् गडैवीयाय्
मादङ् गन्दिऩ् ऱुय्न्दिव नत्तिऩ् ऱलैवाऴुम्
पूदङ् गॊल्लप् पॊऩ्ऱुदि यॆऩ्ऩिऱ् पॊरुळुण्डो 1162

ओतुम् काल्–सच कहा जाय; पल् पॊरुळ्–जग के सारे पदार्थ; मुऱ्ऱु उऱ्ऱु–जब मिट जायँगे; ऒरुवात–अमर; अ वेतम् चॊल्लुम्–उन वेदों में कथित; तेवरुम्–देव भी; वीयुम् कटै–मिट जायेंगे, उस युगान्त में; वीयाय्–अमर रहनेवाले आप; मातङ्कम् तिऩ्ऱु–गजों को खाकर; उय्न्तु–जीवित; इ वत्तत्तिऩ् तलै–इस कानन में; वाऴुम्–रहनेवाले; पूतम् कॊल्ल–भूत के द्वारा मारे जाकर; पॊऩ्ऱुति ऎऩ्ऩिल्–मर जायँगे तो; पॊरुळ् उण्टो–उसका कोई अर्थ रहता है क्या। ११६२

सच कहा जाय, हे प्रभु! आप कौन हैं? जब प्रपंच की सारी सृष्टि मिट जायगी और अमर वेदों से प्रशंसित देवता लोग भी नहीं रह जायँगे, उस युगान्तकाल में भी आप अमर रहनेवाले हैं। ऐसे आप, हाथी खाते हुए जीवित रहनेवाले इस काननवासी भूत के मारते मर जायँगे? इस कथन का कोई अर्थ हो सकता है क्या? । ११६२

केट्टार् कॊळ्ळार् कण्डवर् पेणार् किळर्पोरिल्
तोट्टार् कोवैच् चोर्कुऴ ऱऩ्ऩैत् तुवळामल्
मीट्टा ऩॆऩ्ऩुम् बेरिशै कॊळ्ळान् शॆरुवॆल्ल
माट्टाऩ् माण्डा ऩॆऩ्ऱलिऩ् मेलुम् वशैयुण्डो 1163

केट्टार् कॊळ्ळार्–सुननेवाले नहीं मानेंगे; कण्टवर् पेणार्–देखनेवाले नहीं चाहेंगे; तोटु आर् कोतै–विकसित दलों के पुष्पों की मालाधारिणी; चोर् कुऴल् तऩ्ऩै–बिखरे केश की सीतादेवी को; तुवळामल्–दुःख में न छोड़कर; मीट्टाऩ् ऎऩ्ऩुम्–मुक्त कर लाया, यह; पेर् इचै कॊळ्ळाऩ्–बड़ा यश प्राप्त नहीं करके; चॆरु वॆल्ल माट्टाऩ्–युद्ध में जीत न पा सका; माण्टाऩ्–मर गया; ऎऩ्ऱ पिऩ्–यह कथन होने के बाद; मेलुम्–उससे बढ़कर; वचै उण्टो–निंदा होगी क्या। ११६३

जो कोई सुनेगा वही नहीं मानेगा। जो कोई देखेगा वही नहीं चाहेगा। लोग यह कहें कि विकसित पुष्पों की मालाधारिणी सीतादेवी

को दुःख से निवृत्त कर लौटा नहीं लाया, न किसी युद्ध में विजय पायी; पर श्रीराम मर गया —इससे बढ़कर क्या निंदा होगी ? । ११६३

तणिक्कुन् दन्मैत् तत्तुरैनि लन्ऱित् तहैवाळाल्
कणिक्कुन् दन्मैत् तन्ऱु विडत्तिऱ् कनल्बूदम्
पिणिक्कुङ् गैयुम् बॅय्पिल वायुम् पिळैयामल्
तुणिक्कुम् वण्णङ् गाणुदि तुन्बन् दुऱवॅन्ऱान् 1164

विटत्तिल्–विष के समान; कनल् पूतम्–जलता यह भूत; कणिक्कुम् तन्मैत्तु अन्ऱु–कुछ गण्य नहीं है; इ तकै वाळाल्–(हमारी) इन उत्तम तलवारों द्वारा; तणिक्कुम् तन्मैत्तु अन्ऱु–नहीं काटा जा सकता है; ॲत्तिल् अन्ऱु–ऐसा भी नहीं है; पिणिक्कुम् कैयुम्–जकड़नेवाले इन हाथों को; पॅय् पिल वायुम्–गुफा के समान मुख को, जिसमें वह सारे जीवों को समेटकर डाल लेता है; पिळैयामल्–अचूक रीति से; तुणिक्कुम् वण्णम्–काट लेता हूँ, वह रीति; काणुति–देखिए; तुन्पम् तुऱ–शोक छोड़ दीजिए; ॲन्ऱान्–कहा । ११६४

यह विष-समान जलनेवाला भूत कुछ गण्य नहीं है ! इन उत्तम तलवारों से न मारा जा सकेगा —ऐसा भी नहीं । अब देख लीजिए । मैं कैसे सभी जीवों को जकड़ लेनेवाले इसके हाथों को और गुफा के समान मुख को छिन्न-भिन्न कर देता हूँ । आप दुःख करना छोड़ दें । —लक्ष्मण ने ऐसा कहा । ११६४

ॲन्ना मुन्ने शॊल्लु मिळङ्गो विऱैयोऱ्कु
मुन्ने शॆल्ल मुन्नव नन्ना निनुमुन्दत्
तन्ने रिल्लात् तम्बि तडुप्पान् पिऱरिल्लै
अन्नो कण्ड वुम्बरुम् वॆय्दुऱ् ऱळुदाराल् 1165

ॲन्ना–ऐसा; मुन्ने चॊल्लुम्–(करने के) पूर्व ही वादा करके; इळम् को–लघुराज; इऱैयोऱ्कु–भगवान (श्रीराम) के; मुन्ने चॅल्ल–आगे गये; मुन्नवन्–ज्येष्ठ श्रीराम; अन्नानिनुम्–उनके भी; मुन्त–आगे गये; तन् नेर् इल्ला–अप्रमेय; तम्पि–छोटे भाई; तटुप्पान्–रोकने लगे; पिऱर् इल्लै–(उनको रोकने) कोई दूसरे नहीं थे; कण्ट उम्परुम्–इसको देख देव भी; वॅय्तुऱ्ऱु–शोकाकुल होकर; अळुतार्–रोये; अन्नो–हाय । ११६५

लक्ष्मण ने कार्य के पहले ही वादा कर दिया । लघुराज यह कहकर (उसको चरितार्थ करने के विचार से) श्रीराम के आगे कबन्ध के मुख की तरफ़ जाने लगे । श्रीराम भी उनको पीछे करके आगे जाने लगे । तब अनुपमेय छोटे भाई ने अपने बड़े भाई को रोका । इस तरह दोनों ने आपस में एक दूसरे को रोका । देवों ने यह देखा और यह भी देखा कि उन दोनों को रोकनेवाला कोई अन्य नहीं है । तब वे शोक से रोने लगे । ११६५

इन्नैय राहिय विरुवरु मुहत्तिरु कण्बोल्
कन्नैयुम् वार्हळल् वीरर्शॆन् ऱणुहलुङ् गवन्दन्
विन्नैयि नॆय्दिय वीरर्नीर् यावर् कॊलॆन्नन
निन्नैयु नॆञ्जिन रिमैत्तिल रुरुत्तनर् निन्ऱार् 1166

इन्नैयर् आकिय–ऐसे; कन्नैयुम् वार् कळल्–क्वणनशील बड़ी पायलधारी; वीरर् इरुवरुम्–दोनों वीर; मुकत्तु इरु कण् पोल्–मुख की दोनों आँखों के समान; चॆन्ऱु अणुकलुम्–ज्योंही जाकर नियराये, त्योंही; कवन्तन्–कवन्ध के भी; विन्नैयिन् ऎय्तिय–कर्म-प्रेरित हो आये; वीरर् नीर्–वीर तुम; यावर् कॊल्–कौन हो; ऎन्न–पूछने पर; निन्नैयुम् नॆञ्चिनर्–सोचते हुए मन के साथ; उरुत्तनर्–क्रुद्ध बनकर; इमैत्तिलर्–अपलक; निन्ऱार्–(तरेरते) खड़े रहे। ११६६

क्वणनशील पायलधारी दोनों वीर एक ही मुख की दोनों आँखों के समान जाकर कबन्ध के पास पहुँचे। कबन्ध ने उनसे पूछा कि कर्म-परिपाक से इधर आगत तुम दोनों वीर कौन हो ? यह सुनकर दोनों वीर क्रुद्ध हुए और कुछ सोचते हुए उसको तरेरने लगे। उस स्थिति में वे खड़े रहे। ११६६

अऴिन्दु ळारल रिहऴ्नदन्न ऱॆन्नैयॆन् ऱळन्ऱान्
पॊऴिन्द कोपत्तन् पॊरिक्कनल् विऴितॊऱुम् बॊडिप्प
विऴुङ्गु वॆन्नन वीङ्गलुम् विण्णुऱ वीरर्
ऎऴुन्द तोळ्हळै वाळ्हळा लरिन्दन रिट्टार् 1167

अऴिन्तुळ्ळार् अलर्–(मुझे देखकर भी) ये भय से निस्पंद नहीं हुए; ऎन्नै इकऴ्न्तनर्–मेरा अपमान करते हैं; ऎन्ऱु अळन्ऱान्–यह सोचकर खौल उठा; तन् कोप पॊरि कनल्–अपनी अंगार के साथ कोपाग्नि; विऴि तॊऱुम्–दोनों आँखों द्वारा; पॊटिप्प–प्रकट करते हुए; विऴुङ्कुवान् ऎन्न–निगल लूंगा, इस विचार से; वीङ्कलुम्–शरीर को फुलाने पर; वीरर्–दोनों वीरों ने; विण् उऱ ऎऴुन्त–आकाश से लगते हुए जो उठे, उन कन्धों को; वाळ्कळाल्–तलवारों से; अरिन्तनर्–काटकर; इट्टार्–गिराया। ११६७

कबन्ध सोचने लगा कि यह क्या नई बात है ? ये मुझे देखकर भयभीत होकर मूर्च्छित नहीं हो रहे ! मेरा अपमान करते हैं। उसकी कोपाग्नि अंगारों के साथ उसकी दोनों आँखों से प्रकट होने लगी। उसने उनको निगलने के विचार से अपना शरीर फुलाया। तब दोनों वीरों ने आकाश तक उठे हुए उसके हाथों को अपनी तलवारों से काटकर गिरा दिया। ११६७

कैह ळऱ्ऱवॆङ् गुरुदिया ऱॊऴुक्किय कवन्दन्
मॆय्यिन् मेऱ्कॊडु किऴक्कुरप् पॆरुनदि विरवुम्

शैय मानॅडुन् दाळतडत् तन्निवरै तन्नो
डैय नीङ्गिय पेरॅळि लुवमैय नातान् 1168

कैकळ् अऱ्ऱु–कटे हाथों का होकर; वॅम् कुरुति आऱु–गरम रक्त की नदी; ऑळुक्किय कवन्तन्–बहाता हुआ कबन्ध; मॅय्यिन्–अपने शरीर में; मेऱ्कु ऑटु किळक्कु–पश्चिम से पूर्व तक; उऱ–जाती हुई; पॅरु नति विरवुम्–बड़ी नदी (कावेरी) से युक्त; चॅय मा नॅटु–सह्य नाम के लम्बे-चौड़े और; ताळ् तट–विस्तृत तराइयों के; तन्नि वरै तन्नॊटु–श्रेष्ठ पर्वत के साथ; ऐयम् नीङ्किय–सन्देह-रहित; पेर् ऍळिल्–अतीव सुन्दर; उवमैयन् आतान्–तुल्य बन गया। ११६८

कटे हाथों के साथ शरीर पर रक्त की नदी बहाते हुए जो रहा, उस कवन्ध का शरीर सह्याद्रि से असंदिग्ध और सुन्दर रूप से तुल्य हो गया, जिस पर कावेरी की लम्बी नदी पश्चिम से लेकर पूर्व के छोर को छूती हुई बहती है। ११६८

आळु नायह नङ्गैयिऱ् ऱीण्डिय वदनाल्
मूळुज् शावत्तिन् मुन्दिय तीविनै मुडित्तान्
तोळुम् वाङ्गिय तोमुडै याक्कैयैत् तुऱवा
नीळ नीङ्गिय पऱवैयिन् विण्णुऱ निमिर्न्दान् 1169

आळुम् नायकन्–लोकपालक जगन्नाथ प्रभु श्रीराम ने; अम् कैयिल्–अपने सुन्दर हस्त से; तीण्टिय अतनाल्–स्पर्श किया, उससे; मूळुम् चापत्तिन्–प्रभावपूर्ण शाप के कारण; मुन्तिय–आरब्ध; तीविनै–पाप को; मुटित्तान्–मिटाकर; तोळुम् वाङ्किय–कटी भुजाओं के साथ; तोम् उटै याक्कैयै–दोषयुक्त शरीर को; तुऱवा–छोड़कर; नीळम् नीङ्किय–नीड़ को त्यागकर आये; पऱवैयिन्–पक्षी के समान; विण् उऱ निमिर्न्तान्–आकाश को स्पर्श करते हुए बढ़ा। ११६९

उसके शरीर पर भुवनगोप्ता जगन्नायक श्रीराम के सुन्दर हाथ का स्पर्श हो गया था। इसलिए सारे पाप कट गये, जो प्रबल शाप के कारण उसे लगे थे और फल दे चुके थे। भुजाओं-रहित दोषसहित अपना शरीर छोड़कर वह नीडमुक्त पक्षी के समान आकाश में एक दिव्य रूप में खड़ा हो गया। ११६९

विण्णि निन्ऱवन् विरिञ्जने मुदलिनर् यार्क्कुम्
कण्णि निन्ऱव निवनॅनक् करुत्तुऱ वुणर्न्दान्
ऑण्णि यन्नवन् गुणङ्गळै वाय्दिऱन् दिशैत्तान्
पुण्णि यम्बयक् किन्ऱुळि यरियदॅप् पॊरुळे 1170

विण्णिन् निन्ऱवन्–आकाश में खड़ा होकर; विरिञ्चन् मुतलिनर्–ब्रह्मादि; यार्क्कुम्–सभी को; कण्णिन् निन्ऱवन्–दृष्टि के सामने स्थित; इवन् ऍन–भगवान ये हैं, यह; करुत्तु उऱ उणर्न्तान्–मन में स्थिर रूप से जान लिया; अन्नवन् कुणङ्कळै–उनके कल्याणगुणों को; ऍण्णि–स्मरण कर; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; इचैत्तान्–

गान किया; पुण्णियम्-पुण्य; पयक्कितूऱ्ऴि-जब फलीभूत होता है, तब; ऍं पॊरुळे अरियतु-कौन सी वस्तु दुर्लभ है। ११७०

आकाश में खड़ा होकर उसने अपने मन में यह स्थिर रूप से जान लिया कि ये ही वे परमदेव हैं, जो विरंचि आदि देवताओं की (ध्यान-) दृष्टि के लक्ष्य बने हैं। वह उनके कल्याणगुणों का स्मरण करके गान करने लगा। हाँ! जब पुण्य फलीभूत होने लगता है, तब कौन सी वस्तु दुर्लभ होती है? । ११७०

ईन्ऱवत्तो वॆप्पॊरुळु मॆल्लैतीर् नल्लरत्तिन्
शान्ऱवत्तो तेवर् तवत्तिन् ऱत्तिप्पयनो
मून्ऱु कवडाय् मुळैत्तॆऴुन्द मूलमो
तोन्ऱि यरुविन्नैयेन् शाबत् तुयर्तुडैत्ताय् 1171

तोन्ऱि-मेरे सामने प्रकट होकर; अरु विनैयेन्-दुस्तर पापी (मेरे); चाप तुयर्-शाप का दुःख; तुटैत्ताय्-मिटानेवाले; ऍं पॊरुळुम् ईन्ऱवत्तो-सभी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता हैं क्या; ऍल्लै तीर्-सीमाहीन; नल् अऱत्तिन्-श्रेष्ठ धर्म के; चान्ऱु अवत्तो-प्रमाण जो है, वे हैं क्या; तेवर् तवत्तिन्-देवों के तप के; तत्ति पयत्तो-श्रेष्ठ फलस्वरूप हैं क्या; मून्ऱु कवटु आय्-त्रिशाखा में; मुळैत्तु ऍऴुन्त-प्रकट होनेवाले; मूलमो-उनके मूल हैं क्या। ११७१

मेरे सामने प्रकट होकर कठोर पापी मेरा शाप-दुःख दूर करनेवाले हे प्रभु! क्या आप ही चराचर के जनक हैं? अनन्त धर्मपथ के पथिकों के लिए प्रमाणस्वरूप आप ही हैं क्या? आप देवों के कठिन तप के फलस्वरूप अवतरित परमपुरुष हैं? या ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूपी त्रिशाखाओं के मूल परब्रह्म हैं? । ११७१

मूलमे यिल्ला मुदल्वत्ते नीमुयलुम्
कोलमो यार्क्कुन् दॆरिवरिय कॊळ्हैयवाल्
आलमो वालि नडैयो वडैक्किडन्द
बालत्तो वेलैप् परप्पो पहराये 1172

मूलमे इल्ला-अनादि; मुतल्वत्ते-मूलपुरुष; नी मुयलुम्-आप जो लेते हैं; कोलमो-वे रूप; यार्क्कुम् तॆरिवु अरिय-सबके लिए अज्ञ; कॊळ्कैय-तथ्यों के आधार पर हैं; आल्-इसलिए; आलमो-(प्रलय के बाद उत्पन्न) वह वृक्ष हैं क्या; आलिन् अटैयो-उस वट का पत्र है क्या; अटै किटन्त पालत्तो-पत्र पर पड़े रहे शिशु हैं क्या; वेलै परप्पो-(वह वट-वृक्ष जिसमें है) वह सागर-विस्तार है क्या; पकराय्-समझाइए। ११७२

अनादि आदिपुरुष! आप स्वेच्छा से जो रूप लेते है, उनके तथ्य किसी के ज्ञानगम्य नही होते। आपका मूल रूप क्या है? प्रलय के जलविस्तार के मध्य प्रकट होनेवाला वट-वृक्ष है? या उसका पत्र?

या उस पत्र के शायी शिशु ? या वही जल-विस्तार ? समझाइए कौन सा है ? । ११७२

निन्‌शॅय्है कण्डु निनैन्दनवो नीण्मरैहळ्
उन्‌शॅय्है यन्नवैताम् शॊन्न वॊळुक्किनवो
ॲन्‌शॅय्दॆन् मुन्न मिच्चॅय्है यॆय्दिनाय्
पिन्‌शॅय्व दिल्लाप् पॅरुञ्जॆल्व नीपॆर्राय् 1173

पिन् चॅय्वतु इल्ला–और भी जोड़ा जाय ऐसा जो नहीं; **पॅरुम् चॅल्वम्**–ऐसे बड़े (मोक्ष) धन के; **पॅऱ्ऱाय् नी**–स्वामी हैं आप; **नीण् मरैकळ्**–अनन्त वेदों ने; **निन् चॅय्कै कण्टु**–आपके कार्य देखकर; **निनैन्तनवो**–स्मरण करके कहे; **अन्नवै ताम्**–(या) वे; **उन् चॅय्कै**–आपके कृत्यों को; **चॊन्न ऒळुक्किनवो**–निर्धारित कर कहनेवाले हैं; **इ चॅय्कै ऍय्तिनाय्**–यह (मुझे तारने का) काम करने की कृपा की; **मुन्नम् ॲन् चॅय्तेन्**–(इनके योग्य) पहले मैंने क्या पुण्य किया था । ११७३

आप मोक्षनिधि के स्वामी हैं। वह निधि ऐसी है, जिसमें और जोड़ने की आवश्यकता नहीं रहती, न जोड़ना ही सम्भव है। वेदों ने आपके कार्य देखकर वर्णन किये हैं या उनके कहे अनुसार आप कार्य करते हैं ? आपने मेरे प्रति यह जो हित-कार्य किया है, उसके योग्य मैंने क्या पुण्य किया था ? । ११७३

काण्बार्क्कुङ् गाणप् पडुम्बॊरुट्कुङ् गण्णाहिप्
पूण्बाय्पो निऱ्ऱियाल् यादॊन्ऱुम् पूणादे
माण्बा लुलहै वयिऱ्ऱॊळित्तु वाङ्गुदियाल्
आण्बालो पॆण्बालो वप्पालो वॆप्पालो 1174

काण्पार्क्कुम्–दर्शकों और; **काणप्पटुम् पॊरुट्कुम्**–दृश्य पदार्थों की; **कण्णाकि**–दृष्टि बनकर; **यातु ऒन्ऱुम् पूणाते**–बिना किसी का धारण किये ही; **पूण्पाय् पोल्**–धारक के समान; **निऱ्ऱि**–स्थित हैं; **उलकै**–सर्वलोकों को; **माण्पाल्**–दिव्यशक्ति से; **वयिऱ्ऱु ऒळित्तु**–उदर में छिपाये रखकर; **वाङ्कुति आल्**–(कल्पारम्भ में) फिर से बाहर लाते हैं; **आण् पालो**–आप पुरुष जाति हैं; **पॆण्पालो**–स्त्री; **अप्पालो**–दोनों के परे हैं; **ऍ पालो**–कौन जाति है । ११७४

आप दर्शकों और दृश्यों की आँखें है ! आप सचमुच किसी का धारण नहीं करते पर देखने में धारण करते से स्थित हैं ! [यह गीता के (९-५) श्लोक का भाव है। श्लोक यह है— "न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् । भूतभृन्न भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥" इसको ऐसे ही मनन करके समझना है।] अपनी (शक्ति) महिमा से प्रपंच को अपने उदर में छिपा लेते हैं और बाद प्रकट करते है ! क्या आप पुरुष जाति के है या स्त्री जाति के ? या दोनों नहीं है ? या दोनों के परे कोई (नपुंसक) जाति हैं ? कौन सा लिंग है आपका ? । ११७४

आदिप् पिरमनुनी यादिप् परमनुनी
आदियॅनुम् बॊरुळुक् कप्पालुण् डायिनुनी
शोदिनी शोदिच् चुडर्प्पिऴम्बुम् नीयॅन्ऱु
वेदमुरै शॅय्दाल् वॆळ्हारो वेऱुळ्ळार् 1175

आति पिरमतुम् नी–सृष्टिमूल ब्रह्मा भी आप है; आति परमतुम् नी–उनके भी आदि परब्रह्म भी आप है; आति ऎँतुम् पॊरुळुक्कु–आदि कहलानेवाले तत्त्व के भी; अप्पाल् उण्टु आयितुम्–परे कुछ हो तो; नी–वह भी आप हैं; चोति नी–ज्योतिस्वरूप हैं आप; चोति चुटर् पिळम्पुम्–ज्योतियों की ज्योति का पुंज भी; नी ऎँन्ऱु–आप ही है, यह; वेतम् उरै चॆय्ताल्–वेद कहते हैं तो; वेऱु उळ्ळार्–वेदबाह्य सम्प्रदायों के देव; वॆळ्कारो–नहीं शरमायेंगे क्या। ११७५

सृष्टि के मूल ब्रह्मा आप ही है। उनके भी आदि आप ही है। अगर आदि के आदि कुछ हैं तो वह भी आप ही है। आप ज्योतिस्वरूप सब है। ज्योतियों की ज्योति का पुंज भी आप ही हैं। यह वेदों का निष्कर्ष है। यह सुनकर अन्य सम्प्रदाय जिनको आदिदेव कहते हैं, वे देव कहाने पर नहीं शरमायेंगे क्या ?। ११७५

ऎँण्डिशैयुन् दिण्शुवरा येऴॆऴ् निलैयॅडुत्त
अण्डप् पॅरुङ्गोयिऱ् कॅल्ला मऴहाय
मण्डलङ्गळ् मून्ऱिन् मेनिन्ऱु मलराद
पुण्डरिह मॊट्टिन् पॊहुट्टो पुरैयम्मा 1176

ऎँण् तिचैयुम्–आठों दिगन्त; तिण् चुवराय्–सबल भित्तियां बने हैं; एऴ् एऴ् निलै ऎँट्टुत्त–ऐसे चौदह तल्लों में बने; अण्ट पॆरुम् कोयिऱ्कु ऎँल्लाम्–अण्डों के बने सम्पूर्ण मन्दिर से; अऴकु आय–अधिक सुन्दर; मण्टलङ्कळ् मून्ऱिन् मेल् निन्ऱु–(सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र-) त्रिमण्डलों के ऊपर स्थित होकर; मलरात–अविकसित; पुण्टरिकम् मॊट्टिन्–कमलकली का; पॊकुट्टो–कर्णिका (परमपद); पुरै–आपका वासस्थान है क्या; अम्मा–री मैया। ११७६

चौदह लोकों का एक अण्ड है। उनमें हर एक दिगन्त की भित्तियों से आवृत है। वह अण्ड मन्दिर के समान है। उस सुन्दर मन्दिर के ऊपर सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र —तीन मण्डल हैं। उनके ऊपर अविकसित कमल की कली है। उसकी कर्णिका जो है (परमपद) क्या वही आपका वासस्थान है ?। ११७६

मण्बा लमरर् वरम्बारुङ् गाणाद
ऎँण्बा लुयर्न्द वॅरियोङ्गु नल्वेळ्वि
उण्बाय्नी यूट्टुवाय् नीयिरण्डु मीक्किन्ऱ
पण्बा रऱिवार् पहर्वाय् परमेट्टि 1177

परमेट्टि–परमेष्ठी; मण् पाल् अमरर्–भूसुर; आरुम्–कोई भी; वरम्पु काणात–जिसका ठिकाना नहीं देख पाते; ऍण्पाल् उयर्न्त–संख्या में बढ़े; ऍरि ओम्कु–जिनमें अग्नि पाली जाती है, उन; नल् वेळ्वि–श्रेष्ठ यज्ञों में; उण्पाय् नी–(हवि-) भोक्ता भी आप हैं; ऊट्टुवाय् नी–अन्य देवों को भोग करानेवाले भी (या हवि देनेवाले भी) आप ही हैं; इरण्टुम् ऑक्किन्ऱ–(भोजनदाता, भोजनकर्ता) दोनों के साथ रहने का; पण्पु–प्रकार; अऱिवार् यार्–जाननेवाले कौन हैं। ११७७

परमेष्ठी ! भूसुर असंख्य यज्ञ करते हैं। उनमें अग्निदेव का आवाहन होता है और उनके पास हवि अर्पित की जाती है। उस हवि के भोक्ता भी आप हैं और उसका उच्छिष्ट देवताओं को आहार करानेवाले भी आप ही हैं। (हवि के देनेवाले भी आप हैं।) भोक्ता तथा भोजनदाता दोनों आप ही एक साथ रहते हैं। यह महिमा जान सकनेवाले कौन हैं ?। ११७७

निऱ्कु नॆडुनीत्त नीरिन् मुळैत्तॆळुन्द
मॊक्कुळे पोल मुहुळित्त वण्डङ्गळ्
ऑक्कवुयर्न् दुन्नुळे तोन्ऱि यॊळिक्किन्ऱ
पक्क मऱिदऱ् कॆळिदो परम्बरने 1178

परम्परने–परात्पर; निऱ्कुम् नॆटुम् नीत्तम्–विपुल महाप्रलय के; नीरिन्–जल में; मुकुळित्त–कली के समान उठे; अण्टङ्कळ्–अण्डगोल; ऑक्क उयर्न्तु–एक साथ ऊपर आकर; उन् उळे तोन्ऱि–आपके अन्दर से प्रकट होकर; ऑळिक्किन्ऱ–फिर कल्पान्त के प्रलय में छिप जाते हैं; पक्कम्–वह पक्ष; अऱितऱ्कु ऍळितो–जानने के लिए सुलभ है क्या। ११७८

परात्पर ब्रह्म ! महाप्रलय के जलविस्तार में से कली के समान अण्ड निकलकर ऊपर आते हैं। वे आप ही के अन्दर से बाहर प्रकट होते हैं, फिर यथासमय कल्पान्त के प्रलय में आप ही में समा जाते हैं ! यह आपका अतिशय पक्ष यथार्थ रूप में समझ लेना सुलभ है क्या ? । ११७८

मायप् पिऱवि मयनीक्कि माशिल्लाक्
कायत्तै नल्हित् तुयरिन् करैयेऱ्ऱिप्
पेयॊत्तेन् बेदैप् पिणक्करुत्त वॆम्बॆरुमान्
नायॊत्ते नॆन्न नलनिळैत्ते नानॆन्ऱान् 1179

माय पिऱवि–वंचकमय (राक्षस-)जन्म-सुलभ; मयल् नीक्कि–मोह हटाकर; माचु इल्ला–निर्दोष; कायत्तै नल्कि–शरीर को देकर; तुयरिन् करै एऱ्ऱि–दुःख (सागर) के तीर पर चढ़ाकर; पेय् ऑत्तेन्–भूत के समान; पेतै पिणक्कु–अज्ञता से गृहीत पातकमय जीवन; अऱुत्त–काटनेवाले; ऍम्पॆरुमान्–मेरे प्रभु; नाय् ऑत्तेन् नान्–श्वान-सम मैंने; ऍन्न नलन् इऴैत्तेन्–क्या ही सुकर्म किया था। ११७९

मेरा वंचक राक्षस-जन्म था, उससे अत्यन्त मोह में फँसा हुआ था।

आपने उस मोह का जाल काट दिया। फिर यह निर्दोष दिव्य शरीर प्रदान किया। दुःख-सागर के तीर पर चढ़ा दिया। भूत के समान मेरे कुजीवन का वन्धन काटकर मुझे उवारनेवाले हे प्रभु! मैं कुत्ते का जीवन बिता रहा था। मैंने क्या ही सुकार्य किया था? आपकी निर्हेतुक करुणा भी कितनी वड़ी है! । ११७९

ॲन्ऱाङ् गिनिदियम्बि यिन्ऱरियक् कूरुवॅन्नेल्
ऑन्ऱादु तेव रुऱुदिक् कॅन्ऱवुन्ऩात्
तन्ऱायॅक् कण्णुऱ्ऱ कन्ऱन्नैय तन्मैयनाय्
निन्ऱानैक् कण्डा नॆरिनिन्ऱार् नेर्निन्ऱान् 1180

ॲन्ऱाङ्कु–ऐसा; इत्तिु इयम्पि–सन्तोषक रीति से स्तुति करके; इन्ऱ–अब; अरिय कूऱुवॅन्नेल्–प्रकट कहूँ तो; तेवर् उऱुतिक्कु–देवों के हित में; ऑन्ऱातु–उचित नहीं रहेगा; ॲन्न उन्ऩा–यह सोचकर; तन् तायॅ कण् उऱ्ऱ–अपनी माँ को जिसने देखा हो, उस; तन्मैयताय्–(वछड़े की-सी) स्थिति में आकर; निन्ऱानै–जो खड़ा रहा, उस कवन्ध को; नॆरि निन्ऱार्–धर्मपथिकों को; नेर् निन्ऱान्–सामने आकर दर्शन देनेवाले (श्रीराम) ने; कण्टान्–देखा। ११८०

स्तुति में इतना कहा कबन्ध ने। वह और भी कहना चाहता था। लेकिन, 'और भी कहूँ तो अवतार-रहस्य खुल जायगा। वह देवों के हित में अच्छा नहीं रहेगा।' यह सोचकर वह बिछुड़ी माता गाय से पुनः प्राप्त वछड़े की-सी हालत में अत्यन्त आनन्द के साथ चुप खड़ा रह गया। ज्ञानमार्गियों को उनके ध्यान में दर्शन देनेवाले श्रीराम ने उसको उस स्थिति में देखा। ११८०

पारा यिळैयवन्ने पट्टविवन् वेऱॆयोर्
पेराळन् ऱाना यॉळियोङ्गु पॅऱ्ऱियनाय्
नेराहा यत्तिन् निऱ्किन्ऱा नीयिवनै
आरा यॅन्नववनुम् यार्हॊलो नीयॅन्ऱान् 1181

इळैयवन्ने–अनुज; पाराय्–देखो; पट्ट इवन्–(हमारे हाथों) मरा यह; वेऱॆ ओर्–अन्य एक; पेर् आळन् तानाय्–सम्मान्य (व्यक्ति) बनकर; ऑळि ओङ्कु–तेज में उन्नति; पॅऱ्ऱियन् आय्–प्राप्त करके; नेर् निऱ्कित्ऱान्–हमारे सामने खड़ा है; नी इवनै आराय्–तुम इसको परख लो; ॲन्–(श्रीराम के) कहने पर; अवनुम्–उन्होंने भी; नी यार् कॊलो–तुम कौन हो तो; ॲन्ऱान्–पूछा। ११८१

तब श्रीराम ने लक्ष्मण को सुझाया कि छोटे भैया! देखो। जिसको हमने मारा था, वह बहुत सम्मान के योग्य और तेजोमय रूप में खड़ा है। पता लगा लो कि वह सचमुच कौन है? तब लक्ष्मण ने उससे पूछा कि तुम कौन हो तो? । ११८१

शन्दप्पू णलङ्गल् वीरन् दनुवॅनु नामत् तेनोर्
कन्दर्प्पन् शाबत् तालिक् कडैप्पडु पिऱ्वि कण्डेन्
वन्दुऱ्ऱीर् मलर्क्कै तीण्ड मुन्नुडै वडिवु पॅऱ्ऱेन्
ऍन्दैक्कु मॅन्दै नीर्या निशैप्पदु केण्मि नॅन्ऱान् 1182

चन्तम् पूण्–सुन्दर आभरण; अलङ्कल् वीरन्–और मालाधारी वीर; तनु ऍनुम् नामत्तेन्–तनु का नामधारी हूँ; ओर् कन्तर्प्पन्–एक गन्धर्व हूँ; चापत्ताल्–शाप के कारण; इ कटै पटु पिऱ्वि–यह नीच जन्म; कण्टेन्–प्राप्त कर चुका था; वन्तु उऱ्ऱीर्–आप पधारे; मलर् कै तीण्ट–(आपके) कमल-सम हाथों के स्पर्श से; मुन् उटै वटिवम्–मूल रूप; पॅऱ्ऱेन्–प्राप्त किया; ऍन्तैक्कुम् ऍन्तै नीर्–मेरे पिता के पिता आप; इचैप्पतु–मेरा विनय-कथन; केण्मिन्–सुनिए; ऍन्ऱान्–कहा। ११८२

तब उसने उत्तर दिया। वह सुन्दर आभरणों से और हारों से भूषित था। उसने कहा कि मैं तनु नामधारी गन्धर्व हूँ। किसी शापवश इस नीच जन्म को प्राप्त हुआ था। आप कृपा करके आये और आपके कमल-हस्तों के स्पर्श से मुझे अपना पूर्वरूप प्राप्त हो गया। मेरे पिता के पिता! मैं कुछ सुनाता हूँ। आप सुनिए। ११८२

कणैयुलाञ् जिलैयि ऩीरैक् काक्कुन रिल्लै येनुम्
इणैयिला डन्नै नाडऱ् केयिन शॅय्दऱ् केऱ्कुम्
पुणैयिला दवर्क्कु वेलै पोक्करि दन्न देपोल्
तुणैयिला दवर्क्कु मिन्ऱाऱ् पहैप्पुलन् ऱॊलैत्तु नीक्कल् 1183

कणै उलाम् चिलैयिऩीरै–शरासन-हस्त आपको; काक्कुनर् इल्लै–रक्षित करने में समर्थ कोई नहीं है; एनुम्–तो भी; इणै इलाळ् तन्नै–अप्रमेय (सीताजी को); नाटऱ्कु–खोजने के हेतु; एयिन–आवश्यक; चॅय्तऱ्कु–(काम) करने को; एऱ्कुम्–(सहायता प्राप्त करना) उचित होगा; पुणै इलातवर्क्कु–नाव जिनके पास नहीं है, उन्हें; वेलै पोक्कु–समुद्र-तरण; अरितु–कठिन है; अन्नते पोल्–उसी तरह; पकै पुलम् तॊलैत्तु–शत्रु का समर में संहार करके; नीक्कल्–दूर करना; तुणै इलातवर्क्कुम्–सहायक-हीनों के लिए; इन्ऱु–(सम्भव) नहीं है। ११८३

यह सर्वविदित है कि शरासनधारी आपकी सहायता करने का सामर्थ्यशाली कहीं नहीं है। तो भी अनुपम देवी सीता को खोजने हेतु आवश्यक और योग्य कार्य करने के लिए कुछ लोगों को सहायक बना लेना ही उचित होगा। जिसके पास नाव नहीं, उसे समुद्र पार करना कठिन है! वैसे ही समरांगण में शत्रुओं का नाश करना हो तो निस्सहायों के लिए साध्य नहीं है। ११८३

पऴिप्परु निलैमै याण्मै पहर्वदॅन् पडुम पीडत्
तुऴिप्पॅरुन् दहैमै शान्ऱ वन्दण ऩुयिरत्त वॅल्लाम्

अऴिप्पदऱ् कॊरुव नान वण्णलु मरिदि रन्ऱे
ऒऴिप्परुन् दिऱल बूद गणत्तॊडु मुऱैयु मुण्मै 1184

पऴिप्पु अऱ–अनिंद्य; निलैमै आण्मै–आपके स्थान और पौरुष का; पकर्वतु ऎन्–क्या कहना; पतुम पीटत्तु उऴि–पद्मपीठ पर (के); पॆरुम् तकैमै चान्ऱ–उत्कृष्ट और शानदार; अन्तणन् उयिर्त्त–ब्रह्मा द्वारा सृष्ट; ऎल्लाम्–सारे (लोकों व जीवों) को; अऴिप्पतऱ्कु–संहार करनेवाले; ऒरुवन् आन अण्णलुम्–एक बने ईश्वर भी; ऒऴिप्पु अरुम्–अलग न होनेवाले; तिऱल् अ–बलशाली; पूत कणत्तॊटुम्–भूतगणों के साथ; उऱैयुम् उण्मै–रहते है, सो तथ्य; अऱितिर् अन्ऱे–आप जानते हैं न। ११८४

आपके अनिंद्य गौरव और पौरुष (वीरता) का कहना क्या? पद्मपीठासीन ब्रह्मा से सृष्ट सारे लोकों के संहारक हैं शिवजी। वे भी अपने बलशाली भूतगणों को सदा साथ रखते हैं। यह तथ्य आप जानते ही हैं न?। ११८४

आयदु शॆयहै यॆन्ब दऱत्तुऱै नॆऱियि नॆण्णित्
तीयवर्च् चेर्हि लादु शॆव्वियोर्च् चेरुम् शॆय्है
तायिनु मुयिर्क्कु नल्हुञ् जवरियैत् तलैप्पट् टन्नाळ्
एयदोर् नॆऱियै यॆय्दि यिरलैयङ् गुन्ऱ मेऱि 1185

अऱ तुऱै नॆऱियिन् ऎण्णि–धर्म-मार्ग का विचार करके; तीयवर् चेर्किलातु–बुरों से नहीं मिलकर; चॆव्वियोर् चेरुम् चॆय्कै–अच्छों के साथ मिलने का काम; चॆय्कै ऎन्पतु आयतु–कर्तव्य-कर्म है; उयिर्क्कु–जीवों को; तायितुम्–माता से बढ़कर; नल्कुम्–सहायक; चवरियै–शबरी को; तलैप्पट्टु–मिलकर; एयतु–उनसे निर्दिष्ट; नॆऱियै ऎय्ति–मार्ग पर जाकर; इरलै अम् कुन्ऱम् एऱि–ऋष्यमूक पर्वत पर चढ़कर। ११८५

धर्म-मार्गों का अवलम्बन करके, विना बुरों की संगति किये अच्छों के साथ मिलना अब कर्तव्य कर्म है। आप शबरी के पास जाकर उनसे मिलिए। वे माता से भी अधिक हित करेंगी। वे मार्ग बतायेंगी। आप उनके बताये मार्ग को पकड़कर जाइए और ऋष्यमूक (ऋष्य— एक तरह का हरिण है, उसके नाम से भूषित) पर्वत पर चढ़कर—। ११८५

कदिरवन् शिऱुव नान कनहवा णिऱत्ति नानै
ऎदिरॆदिर् तऴुवि नट्पि निनिदमर्न् दवनि नीण्ड
वॆदिर्पॊरु तोळि नाळै नाडुदल् विऴुमि दॆन्ऱान्
अदिर्कऴल् वीरर् तामु मन्नदे यमैव दानार् 1186

कतिरवन् चिऱुवन् आन–सूर्य का पुत्र; कनक वाळ् निऱत्तिनानै–उज्ज्वल कनक-वर्ण (सुग्रीव) को; ऎतिर् ऎतिर् तऴुवि–आमने-सामने मिलकर; नट्पिन् इनितु अमर्न्तु–मित्रता में सुख से रहकर; अवतिन्–उसकी सहायता के साथ; ईण्ट–शीघ्र;

वॆतिर् पॊरु–बाँस के समान; तोळिताळै–कंधों की (सीता) को; नाडुतल्–खोजना; विळुमितु ऎन्ऱ्रात्–श्रेयस्कर होगा, कहा; अतिर् कळल् वीरर् तामुम्–क्वणनशील पायलधारी वीर भी; अन्ततॆ–वही; अमैवतु आतार्–करने में लगे। ११८६

वहाँ सुग्रीव से मिलिए। वह कनकवर्ण वानरनायक सूर्य का पुत्र है। उसके साथ मित्रता कर लीजिए। उसकी सहायता लेकर बाँस के समान कन्धों वाली सीतादेवी को खोजिए। वही श्रेष्ठ होगा। कबन्ध की यह सलाह मानकर क्वणनशील पायलधारी वीर श्रीराम और लक्ष्मण चलने लगे। ११८६

आऩपिऩ् ऱॊळुदु वाळ्त्ति यन्दरत् तवऩुम् बोऩाऩ्
मानवक् कुमरर् तामु मत्तिशै वळिक्कॊण् डेहि
कानमु मलैयु नीङ्गिक् कङ्गुल्वन् दिरुक्कुङ् गालै
आऩैयि निरुक्कै यॆन्नु मदङ्गन् दडुक्कल् शेर्न्दार् 1187

आनपिन्–उसके बाद; अवनुम्–वह (कबन्ध) भी; तॊळुतु वाळ्त्ति–विनय और स्तुति करके; अन्तरत्तु पोताऩ्–आकाश में गया; मानव कुमरर् तामुम्–मानव-कुमार भी; अ तिचै वळि कॊण्टु एकि–उस दिशा में राह बनाकर गये; कानमुम् मलैयुम् नीङ्कि–कानन और पर्वत पार करके; कङ्कुल् वन्तु–रात आकर; इरुक्कुम् कालै–जब जम गयी, तब; आनैयित् इरुक्कै ऎन्नुम्–गज का स्थान कहलानेवाले; मतङ्कन् अतु–मातंग ऋषि के; अटुक्कल्–पर्वत पर; चेर्न्तार्–पहुँचे। ११८७

उसके बाद कबन्ध भी उनकी विनय के साथ स्तुति करके स्वर्ग चला गया। मानव (मनुकुल-जात) वीर भी कबन्ध की निर्दिष्ट (दक्षिण) दिशा में गये। अनेक कानन और पर्वत पार करके वे जाते रहे। खूब रात हो गयी, तब वे मातंग ऋषि के पर्वत पर आये। वहाँ मातंग (हाथी) रहते थे। ११८७

12. शवरि पिऱप्पु नीङ्गु पडलम् (शबरी जन्म-विमोचन पटल)

कण्णिय तरुदर् कॊत्त कऱ्पहत् तरुवु मॆन्ऩ
उण्णिय नल्हुऱ् जॆल्व मुरुनरुऱ् जोलैच् चालै
ऎण्णिय विन्व मन्ऱित् तुन्बङ्ग ळिल्लै याऩ
बुण्णियम् पुरिन्दोर् वैहुन् दुऱक्कमे पोलु मन्ऱे 1188

कण्णिय–इच्छित; तरुतऱ्कु ऒत्त–(पदार्थ) देने में समर्थ; कऱ्पक तरुवुम् ऎन्ऩ–कल्पतरु के समान; उण्णिय–खाद्य (फलादि को); नल्कु–देनेवाले; चॆल्वम् उऱुम्–समृद्ध; चोलै–उपवनों से पूर्ण; चालै–(मातंग का) आश्रम; ऎण्णिय इऩ्पम् अन्ऱि–सबसे गण्य सुख के सिवा; तुन्पङ्कळ् इल्लै आऩ–दुःख जहाँ नहीं है; पुण्णियम् पुरिन्तोर् वैकुम्–पुण्यपुरुष जहाँ रहते हैं; तुऱक्कमे पोलुम्–स्वर्ग के समान था। ११८८

शबरी का आश्रम इच्छित सभी मनोकामनाओं को पूरा करनेवाले

कल्पतरु कहा जा सकता था। खाद्य फल आदि यथेष्ट दे सके, उतने समृद्ध उपवन उसके चारों ओर थे। उसी आश्रम में मातंग मुनि रहते थे। वह पुण्यकृतों का प्राप्ति-स्थान साक्षात् स्वर्ग ही था, जहाँ चाहे हुए सभी सुख ही सुख मिलते हैं। कोई दुःख नहीं होता। ११८८

अन्तदा मिरुक्कै नण्णि याण्डुनित् त्ऴविल् कालम्
तन्नैये निनैन्दु नोऱ्कुम् शवरियैत् तलैप्पट् टन्नाट्
कित्नुरै यरुळित् तीदिन् ऱिरुन्दनै पोलु मॅन्ऱात्
मुन्नवर् किदुवॅन् ऱॅण्ण लावदोर् मूल मिल्लान् 1189

अवऱ्कु मुन्–उनके पूर्व; इतु–ये; ऍन्ऱु ऍण्णल् आवतु–ऐसा मानने योग्य; ओर्–कोई; मूलम् इल्लात्–(जिनका) मूल नहीं है; अन्नतु आम्–(वे श्रीराम) ऐसे; इरुक्कै नण्णि–स्थान में पहुँचकर; आण्टु निन्ऱु–वहाँ रहकर; अळवु इल् कालम्–अगणित काल तक; तन्नैये–अपना (श्रीराम का) निनैन्तु–ध्यान करके; नोऱ्कुम्–जो तपस्या करती रहीं; चवरियै तलैप्पट्टु–उन शबरी से मिलकर; अन्नाट्कु–उनको; इन् उरै अरुळि–मधुर उपदेश देकर; तीतु इन्ऱु–विना कष्ट के; इरुन्तनै पोलुम्–रहीं, शायद; ऍन्ऱान्–कहा। ११८९

श्रीराम आदिदेव थे। उनके पूर्व कोई नहीं रहे। वे सृष्टि के मूल थे। वे उस प्रख्यात मातंगाश्रम पर आये। वहाँ शबरी श्रीराम का ही ध्यान करते हुए अकूत काल से तपस्या कर रही थीं। श्रीराम उनसे मिले और उनका कुशल-क्षेम सम्बन्धी प्रश्न किया। आप विना किसी कष्ट के सुखी तो रहती हैं न? ११८९

आण्डव ळन्बि नेत्ति यळुदिऴि यरुविक् कण्णळ्
माण्डदॆन् मायप् पाशम् वन्दडु वरम्बिल् कालम्
पूण्डमा दवत्तिन् शॆल्वम् बोयदु पिऱवि यॆन्ऱाळ्
वेण्डिय कॊणर्न्दु नल्हि विरुन्दुशॆय् दिरुन्द वेलै 1190

आण्टु–तब; अवळ्–शबरी; अरुवि कण्णळ्–सरिता के समान आँसू की धारा वाली आँखों के साथ; अन्पिन् एत्ति–भक्ति के साथ स्तुति करके; ऍन् माय पाचम्–मेरी माया का पाश; माण्टतु–मिट गया (आपके दर्शन से); वरम्पु इल् कालम्–असीम काल से; पूण्ट–मैने जो धारण कर लिया था, उस; तवत्तिन् चॆल्वम्–उस तप का भाग्य; वन्ततु–आ मिला; पिऱवि पोयतु–जन्म कट गया; ऍन्ऱा–कहकर; वेण्टिय–निवेदनार्ह; कॊणर्न्तु–(फल आदि) लाकर; नल्कि–देकर; विरुन्तु चॆय्तु–आतिथ्य करके; इरुन्त वेलै–जब रहे, तब। ११९०

तब शबरी की आँखों से भक्ति के कारण आँसू की धारा सरिता के समान बहने लगी। उन्होंने श्रीराम की स्तुति की। कहा कि स्वामी! आपके दर्शन से मेरा मायापाश कट गया। निस्सीम काल से मैं तपस्या कर रही हूँ। उसका सुफल आज मुझे मिल गया। मेरा जन्म-मोचन हो

गया है। फिर उन्होंने उनके भोजन के योग्य फल आदि लाकर अतिथि-सत्कार किया। जब श्रीराम और लक्ष्मण विश्रांत रहे, तब— । ११९०

ईशनुङ् गमलत् तोनु मिमैयवर् यारु मॅन्दै
वाशवन् रानु मीण्डु वन्दनर् मकिळ्न्दु नोक्कि
आशरु तवत्तुक् कॅल्लै यणुहिय दिरामर् काय
पूशनै विरुम्बि यॅम्बार् पोदुदि यॅन्रु पोनार् 1191

ऍन्तै–मेरे पिता; **ईचतुम्**–शिवजी और; **कमलत्तोतुम्**–कमलासन; **इमैयवर् यारुम्**–सुर सब; **वाचवत् तानुम्**–वासव भी; **ईण्टु**–यहाँ; **वन्तनर्**–आये; **मकिळ्न्तु नोक्कि**–सन्तोष के साथ मुझे देखकर; **आचु अरु**–निर्दोष; **तवत्तिर्कु ऍल्लै**–तप का अन्त, सिद्धि का काल; **अणुकियतु**–निकट आ गया; **इरामर्कु आय**–श्रीराम की; **पूचनै विरुम्पि**–पूजा प्यार के साथ करके; **ऍम् पाल् पोतुति**–हमारे पास पहुँच जाओ; **ऍन्ऱु पोनार्**–कहके गये। ११९१

शबरी बोलीं। मेरे तात ! कमलासन, सभी देव और वासव यहाँ आये थे। उन्होंने मुझे सन्तोष के साथ देखकर कहा कि तुम्हारे निर्दोष तप का सिद्धिकाल आ गया। तुम श्रीराम की पूजा करना चाहती हो। वह पूरा करके हमारे पास आ जाओ। ११९१

इरुन्दनॅ नॅन्दै नीयीण् डॅय्दुदि यॅन्ननुन् दन्मै
पॊरुन्दिड विन्रु तानॅन् पुण्णियम् बूत्त दॅन्ऱु
अरुन्दवत् तरशि तन्नै यन्बुर नोक्कि यॅङ्गळ्
वरुन्दुरु तुयरन् दीर्त्ता यम्मनै वाळि यॅन्रान् 1192

ऍन्तै–नाथ; **नी ईण्टु ऍय्तुति**–आप इधर पधारेंगे; **ऍन्नुम् तन्मै**–यह हालत; **पॊरुन्तिट**–जब हुई; **इरुन्तनॅन्**–(प्रतीक्षा में) रही; **इन्ऱु तान्**–आज ही; **ऍन् पुण्णियम्**–मेरा पुण्य; **पूत्ततु**–फूला (फलीभूत हुआ); **ऍन्ऱु**–ऐसा जिन्होंने कहा; **अरुम् तवत्तु अरचि तन्नै**–कठिन तपस्या की, उन रानी को; **अन्पु उऱ**–कृपा के साथ; **नोक्कि**–देखकर; **अम्मनै**–माताजी; **ऍङ्कळ् वरुन्तुरु**–हमें कष्ट देनेवाले; **तुयरम्**–श्रम-दुःख को; **तीर्त्ताय्**–दूर किया; **वाळि**–जिओ; **ऍन्ऱान्**–कहा। ११९२

मेरे नाथ ! आप यहाँ पधारेंगे— जब इसका भान लगा तभी से मैं आपकी प्रतीक्षा में रह रही हूँ। आज ही मेरा पुण्य सफलीभूत हुआ। जब शबरी ने राम से यह आदरवचन कहा, तब श्रीराम ने उन तपस्विनियों में रानी से कहा कि माता ! आपने हमारा श्रम और श्रमजनित दुःख दूर किया। आप चिरजीव रहें। ११९२

अन्नहत् मिळैय कोवु मन्रव णुरैन्द पिन्रै
विन्नैयरु नोन्बि ताळु मॅय्म्मैयि नोक्कि वॅय्य

तुनैपरित् तेरोन् मैन्द निरुन्दवत् तुळक्किल् कुन्ऱम्
निनैवरि दायर् कौतृत नॅऱियॅला निनैन्दु शौन्नाळ् 1193

अतकत्तुम्–अनघ के; इळैय कोवुम्–और लघुराज के; अनुऱ–उस दिन; अवण्–वहाँ; उरैन्त पिन्ऱै–ठहरने के बाद; वित्तै अऱ–कर्ममुक्त; नोऩ्पिनाळुम्–तपस्विनी ने भी; मॅय्मेयिन् नोक्कि–यथार्थ रूप से देखकर; वॅय्य–गरम; तुत्तै परि–शीघ्रगामी अश्वों के; तेरोन्–रथ पर जानेवाले (सूर्य) का; मैन्तन्–पुत्र, सुग्रीव; इरुन्त–जहाँ रहा; अ तुळक्कु इल्–उस अचल; कुन्ऱम्–पर्वत के; नितैवु अरितु आयऱ्कु–मन से जानने में कठिन; औतुत–जो रहा; नॅऱि ऑलाम्–मार्ग सभी; नितैन्तु चौन्ताळ्–स्मरण करके बताया। ११९३

अनघ श्रीराम और उनके छोटे भाई लक्ष्मण उस दिन वहीं ठहरे। बाद कर्मभंजक तपस्विनी ने सच्चे भाव से श्रीराम और लक्ष्मण से शीघ्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार दीप्तियुत सूर्य के पुत्र, सुग्रीव के वासस्थान के पर्वत के मार्ग बताए। वे इतने जटिल थे कि मन में धारण करना भी कठिन था। पर उन्होंने अपनी स्मृति से उस अचल ऋष्यमूक पर्वत को जाने के सारे मार्ग ठीक-ठीक बता दिये। ११९३

वीट्टिनुक् कमैव दान· मॅय्न्नॅऱि वॅळियिर् ऱाहक्
काट्टुरु मऱिञ् ञॅन्न वन्तवळ् कळऱिर् ऱॅल्लाम्
केट्टन नॅन्व मन्नो केळ्वियार् चॅविहण् मुऱ्ऱुम्
तोट्टव रुणर्वि नुण्णु ममिळ्दत्तिन् शुवैयाय् निन्ऱान् 1194

केळ्वियाल्–उपदेश-श्रवण द्वारा; चेविकळ्–कर्ण (जिनके); मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; तोट्टवर्–विद्ध हुए (भरे हुए) हैं; उणर्विन्–(वे ज्ञानी) अपनी अनुभूति द्वारा; उण्णुम्–(जिसको) भोगते हैं; अमुतत्तिन्–उस अमृत (रूपी) ज्ञान की; चुवैयाय् निन्ऱान्–जो रुचि के रूप में स्थित हैं, उन (श्रीराम ने); वीट्टिनुक्कु अमैवतु आत–मोक्ष के; मॅय् नॅऱि वॅळि–सच्चे मार्ग को; इऱु आक–यही है, ऐसा; काट्टुरुम्–दरसानेवाले; अऱिञर् ऍन्न–ज्ञानियों (गुरुओं) के समान; अन्तवळ्–उन्होंने; कळऱिऱ्ऱु ऍल्लाम्–जो कहा, वह सब; केट्टतन्–ध्यान देकर सुना; ऍन्प–ऐसा बड़े लोग कहते है। ११९४

श्रीराम कौन थे और उन्होंने किस विधि शवरी का मार्ग-दर्शन सुना? श्रेष्ठ उपदेशों से जिनके कर्ण भर गये थे, उनकी अनुभूति के लक्ष्य है वे। व उन ज्ञानियों से भुगते हुए ज्ञान रूपी अमृत के स्वाद थे। वे विनय के साथ ऐसे सुनते रहे, मानो शवरी कोई ज्ञानी गुरु हों, जो मोक्ष का मार्ग साफ़-साफ़ बता रहे हों। कवि कहते है कि ऐसा बड़े लोगों का कहना है! । ११९४

पिन्नव ळुळन्दु पॅऱ्ऱ योहत्तिन् पॅऱ्ऱियाले
तन्नुड ऱुरन्दु तानत् तनिमैयिन् वीडु शार्न्दाळ्

अन्नदु कण्ड वीर रदिशय मळवित्र् ऍय्दिप्
पॊन्नडिक् कळल्ह ळार्प्पप् पुहन्ऱमा नॅरियिर् पोनार् 1195

पिन्–उसके बाद; अवळ्–शवरी; उळन्तु पॅऱ्ऱ–परिश्रम से प्राप्त; योकत्तिन् पॅऱ्ऱियाले–योग के फलस्वरूप; तन् उटल्–अपना शरीर; तुऱन्तु–त्यागकर; अ तनिमैयिन्–उस अद्वितीय; वीटु–मुक्तिपद को; चार्न्ताळ्–गयीं; अन्नतु कण्ट–उसको देखकर; वीरर्–(श्रीराम और लक्ष्मण) वीरों ने; अळवु इऩ्ऱु–अपार; अतिचयम् ऍय्ति–विस्मय पाकर; पॊन् अटि–सुन्दर चरणों की; कळल्कळ् आर्प्प–पायलों को बजने देते हुए; पुकन्ऱ–शवरी-कथित; मा नॅऱियिल्–बड़े मार्ग पर; पोनार्–गये। ११९५

यह कहने के बाद शवरी ने कठिन परिश्रम द्वारा प्राप्त योगशक्ति के बल से अपना शरीर छोड़ दिया। वे मोक्षपद को प्राप्त हो गयीं। श्रीराम और लक्ष्मण को यह देखकर अपार विस्मय हुआ। फिर वे अपने सुन्दर चरणों की पायलों को बजने देते हुए उस दुरूह और विकट मार्ग पर जाने लगे, जिसका सम्यक् वर्णन शवरी ने किया था। ११९५

तण्णॅन्नुङ् गानुङ् गुन्ऱु नदिहळुन् दविरप् पोनार्
मण्णिडै वैह ऱोरुम् वरम्बिला दाडु माक्कळ्
कण्णिय विनैह ळॅन्नुङ् गट्टळल् कळिद लाले
पुण्णिय मुरुविऱ् ऱन्न पम्बैयाम् पॊय्है पुक्कार् 1196

तण् ऍन्नुम्–शीतल; कानुम् कुन्ऱुम्–वनों और पर्वतों को और; नतिकळुम्–नदियों को; तविर–पार करते हुए; पोनार्–जो गये; मण् इटै–(वे) भूमि पर; वरम्पु इलातु–अपार वनकर; वैकल् तोऱुम्–दिने-दिने; आटुम् माक्कळ्–स्नान करनेवाले लोगों ने; कण्णिय–जान-बूझकर जो किये; वितैकळ् ऍन्नुम्–वे कर्म रूपी; कट्टळल्–अग्निपुंज; कळितलाले–दूर हो जाते हैं, इसलिए; पुण्णियम् उरुविऱ्ऱु अन्न–पुण्यस्वरूप आया जैसे; पम्पै आम्–पंपा नाम के; पॊय्कै–सर पर; पुक्कार्–पहुँचे। ११९६

वे अनेक शीतल वनों, पर्वतों और नदियों को पार कर जाते रहे और पंपासर के तीर पर आ गये। उस पंपासर में दिने-दिने असंख्य लोग आकर स्नान करते और अपने पापों को निवार देते थे। उनके पापों का अग्निपुंज वहाँ मिट जाता था। इसलिए वह सर मूर्तपुण्य के समान लगा। ११९६

॥ अरण्यकाण्ड समाप्त ॥

विज्ञप्ति

विश्व-वाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई-धारा।
पहन नागरी-पट सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

प्रकाशित हो चुके हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण ग्रन्थः—

१ गुजराती—गिरधर रामायण (रचनाकाल-१८३५ ई०) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृष्ठ संख्या १४६४ मूल्य ६०.००
२ मलयाळम—अध्यात्म रामायण (एळुत्तच्छन् कृत १५वीं शती) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृ० सं० ७५२ मू० ४०.००
३ ,, —महाभारत-अेळुत्तच्छन् (१५वी शती) पृ० १२१६ मू० ६०.००
४ बँगला— कृत्तिवास रामायण (आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्ध्या और सुन्दर)—१५वीं शती। हिन्दी पद्यानुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण पृ० ६२४ मू० २५.००
५ ,, कृत्तिवास लंकाकाण्ड— ,, गद्यानुवाद पृ० ४८८ मू० १५.००
६ कश्मीरी—रामावतारचरित-प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत पृ० ४८९ मू० २०.००
७ ,, लल्द्यद—(नागरी) हिन्दी गद्य संस्कृत पद्यानु० पृ० १२० ,, १०.००
८ राजस्थानी—रुक्मिणी मंगल-पदम भगत कृत। पृ० ३०० मू० १५.००
९ तमिळ— तिरुक्कुरळ्-तिरुवल्लुवर कृत। २००० वर्ष से अधिक प्राचीन; नागरी लिप्यन्तरण, गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद, पृ० ३५२ मू० २०.००
१० ,, कम्ब रामायण बालकाण्ड (९वीं शती) पृ० ६५२ मूल्य ४०.००
११ कन्नड— रामचन्द्रचरित पुराणं-अभिनव पम्प विरचित जैन-सम्प्रदाय रामचरित्र (११वीं शती) पृ० ६९० मू० ४०.००
१२ तेलुगु— मोल्ल रामायण (१४वीं शती) पृ० ४०० मू० २०.००
१३ ,, रंगनाथ रामायण (१३वीं शती) अनु. पृ. १३३५ मू० ६०.००
१४ मराठी—श्रीरामविजय-श्रीधरकृत (१७वीं शती) पृ० १२२८ मू० ६०.००
१५ अरबी— ज़ादे सफ़र (रियाज़ुस्सालिहीन) प्रामाणिक हदीस प्र० खण्ड पृ० ३३६ मू० १२.००
१६ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत उपनिषदों की व्याख्या) हिन्दी में पृ० २८० मू० २०.००
१७ उर्दू— शरीफ़ज़ादः (मिर्ज़ा रुस्वा कृत) पृ० १३६ मू० ८.००
१८ गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब पहली सैंची पृ० ९६८ मू० ४०.००
१९ ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ९९२ मूल्य ५०.००
२० ,, श्रीजपुजी सुखमनी साहब गुरमुखी पाठ तथा ख्वाजः दिलमुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनों नागरी लिपि में; पृ० १६४ मू० ८.००
२१ ,, सुखमनी साहिब मूल गुटका नागरी लिपि। मूल्य ४.००
२२ सिन्धी— सामी, शाह, सचल की त्रिवेणी पृष्ठ ४१५ मू० २०.००

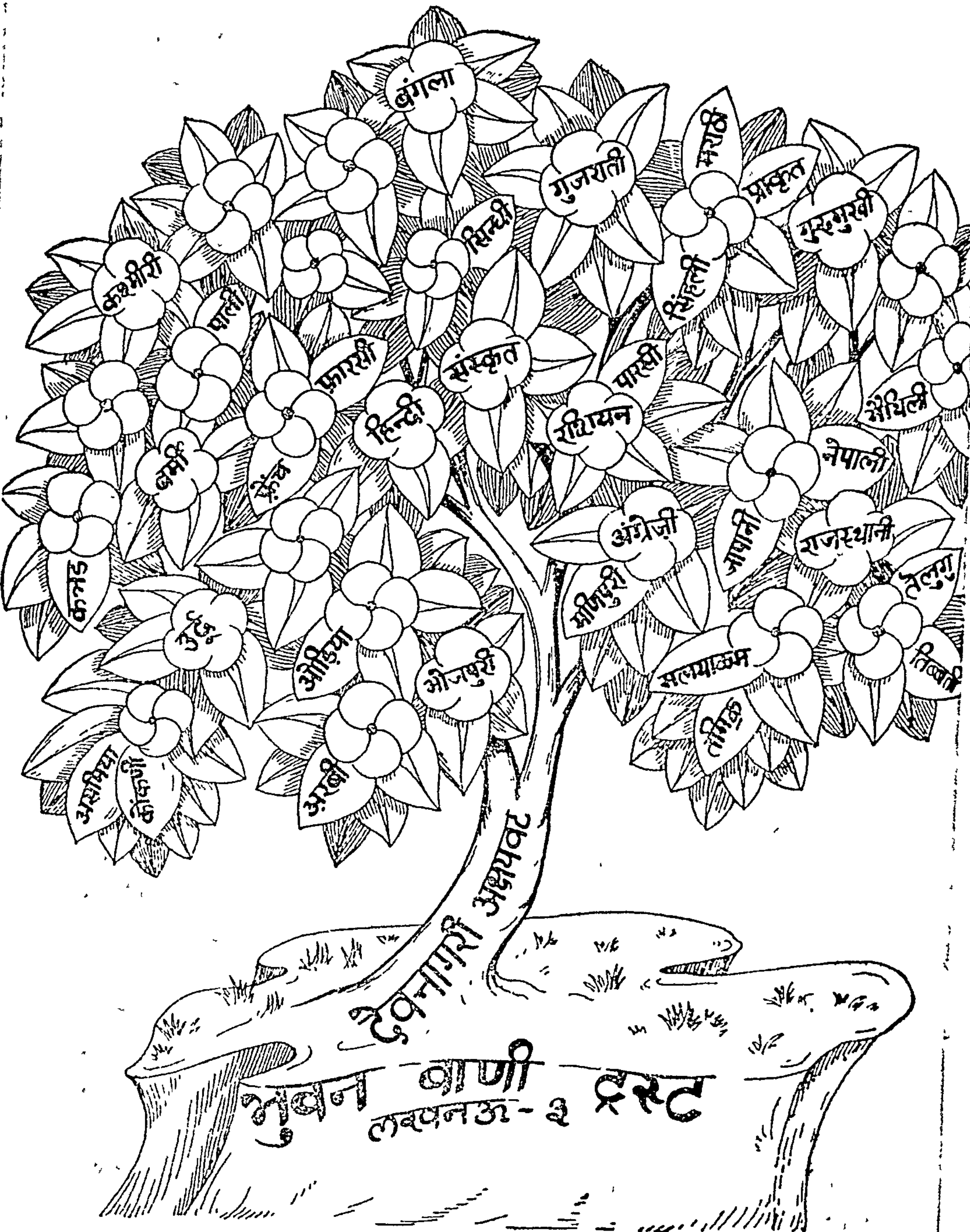
२३ नेपाली—भानुभक्त रामायण पृ० ३४४ मूल्य २०·००
२४ असमिया—माधवकंदली रामायण (१४वीं शती) पृ० ९४३ ,, ६०·००
२५ ओड़िआ—बैदेहीश-बिळास उपेन्द्रभञ्ज (१८वीं शती) पृ० १०००,, ६०·००
२६ ,, तुलसी-रामचरितमानस—ओड़िआ लिपि में मूलपाठ तथा ओड़िआ गद्य-पद्य अनुवाद। पृ०सं० १४६४ मू० ६०.००

प्रचारित प्रकाशन (ल.कि.घ.)

२७ क़ुर्आन शरीफ़ मूलपाठ अरबी तथा नागरी लिपि में पृ० ५२० मू० २०.००
२८ ,, ,, तथा हिन्दी अनुवाद सहित पृ० १०२४ मू० ४०.००
२९ ,, केवल हिन्दी अनुवाद पृ० ५३० मू० २०.००
३० ,, क़ौरानिक कोश (पठनक्रम) पृ० १९२ मू० १०.००
३१ बहुभाषाई— 'वाणी सरोवर' त्रैमासिक पत्र वार्षिक मूल्य १०·००

यन्त्रस्थ तथा कार्याधीन चल रहे अन्य ग्रन्थ :—	अनुमानित पृष्ठ
१ तमिळ— कम्बरामायण अयोध्या से लंकाकाण्ड	४०००
२ गुरमुखी—श्री गुरूग्रन्थ साहिब ३,४ सैंची	२०००
३ गुजराती—प्रेमानन्द रसामृत	६००
४ उर्दू— गुज़श्त: लखनऊ (शरर)	३५०
५ तेलुगु— पोतन्नकृत भागवतमु (१३वीं शती)	२०००
६ ओड़िआ—जगमोहन रामायण बलरामदास कृत	१०००
७ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर खण्ड २-३	६००
८ ,, मुल्ला मसीही रामायण (जहाँगीर काल)	५००
९ अरबी—बुख़ारी शरीफ़ (ल.कि.घ.)	३०००
१० " क़ौरानिक कोश वर्णानुक्रम (ल.कि.घ.)	३००
११ ,, क़ुर्आन शरीफ़ तफ़सीर माजिदी (ल०कि०घ०)	६०००
१२ मराठी—श्रीहरि-विजय (श्रीधर कृत)	१२००
१३ , श्री संत एकनाथ भावार्थ रामायण	३०००
१४ कोकणी—ख्रीस्त पुराण	५००
१५ कन्नड—तोरवै रामायण (१६वीं शती)	९००
१६ बँगला—कृत्तिवास रामायण उत्तरकाण्ड	५००
१७ हिब्रू— बाइबिल ओल्ड टेस्टामेण्ट	२०००
१८ ग्रीक— " निउ टेस्टामेण्ट	१०००
१९ बाइबिल-सार (सालोमन के नीति-वचन)	१००
२० संस्कृत—(तुलसी) रामचरितमानस का मूलपाठ सहित संस्कृत पंक्ति-अनुपंक्ति पद्यानुवाद	१०००
२१ परिवर्द्धित नागरी उर्दू-हिन्दी कोश	१२००

' प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥ '



प्रतिष्ठाता— पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी

वक्तव्य के साथ-साथ ट्रस्ट के निर्माणाधीन 'भुवन वाणी मन्दिर' के लिए एक हज़ार रुपया दान-स्वरूप अर्पण किया है। एक्स्प्रेस परिवार की तमिळ्नाडु से प्रकाशित होनेवाली क्षेत्रव्यापी पत्रिका 'दिनमणि कदिर', 'दिनमणि दैनिक', सर्वोदय पत्र 'राम-राज्यम्' आदि ने बड़ी भावुकता के साथ 'भुवन वाणी मंदिर' के स्वरूप की चर्चा की है। ग्रन्थ में पृष्ठ ३-४ (द्वितीय) पर ये संस्तुतियाँ अवलोकनीय हैं।

अनुवादक की अवतरणिका

आचार्य ति० शेषाद्रि ने 'कम्ब रामायण' के प्रकाशित होनेवाले सभी (लगभग पाँच) खण्डों में एक धारावाहिक अवतरणिका लिखने की धारणा बनाई है। अवतरणिका, न केवल सम्बन्धित ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार, वरन् तमिळ्भाषा और तमिळ्काव्य पर, सब मिलकर एक स्वयं-शिक्षिका के रूप में नागरी एवं हिन्दी के पाठकों तथा हिन्दी जाननेवाले तमिळ्-भाषियों का ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी।

महर्षि कम्बर्

ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर ग्रन्थकार का नाम मैंने 'महर्षि कम्बर्' दिया है। कई शुभचिन्तकों को कम्बर् के लिए 'महर्षि' शब्द उपयुक्त नहीं प्रतीत हुआ। "कम्बर् विवाहित गृहस्थ था, कम्बर् के वंश-परिवार पर विपरीत किम्वदन्तियाँ भी हैं, आदि-आदि।" मेरा नम्र निवेदन है कि ऋषि-महर्षि प्रायः सब पुत्र-कलत्र वाले हुए हैं। महर्षि होने के लिए अविवाहित होगा, ऐसा कोई विधान नहीं है। रहा लोक-आक्षेप, तो उस त्रास से गोस्वामी तुलसीदास, सन्त एकनाथ, सन्त ज्ञानेश्वर जैसे भी नहीं बच पाये। देवभाषा संस्कृत के अतिरिक्त, एक देशज भाषा 'तमिळ्' में रामचरित की रचना! यही क्या कम अपराध था कम्बर् का। शुद्धाशुद्ध का तथ्य तो अतीत के अन्तराल में है। हमारे सामने तो प्रेरणा-स्रोत की महत्ता प्रधान है। नागरी लिपि की सार्वभौमिकता का उद्‌घोष करनेवाले जस्टिस शारदा-चरण मित्र मंत्र-द्रष्टा ऋषि हैं। 'वंदेमातरम्' मंत्र के मूलस्रोत वंकिम ऋषि कहे जाते हैं। 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का शंख-नाद करनेवाले तिलक 'भगवान्' पदवी से प्रख्यात हुए।

कम्बर्-काव्य को, विद्वान् १२०० वर्ष पूर्व तक ले जाते हैं। तब से तमिळ् का यह जीवन्त अद्‌भुत महाकाव्य, जनता और विद्वानों, सभी में शीर्षस्थ सम्मान-प्राप्त है। और आज १२०० वर्षों के बाद, वह नागरीलिपि का नव-कलेवर धारण कर, न केवल अखिल राष्ट्र, वरन् विश्व में भारतीय वाङ्मय की छटा विखेरने जा रहा है। हम गौरवान्वित हैं,

आत्मविभोर हैं, उस युगपुरुष के लिए नत-मस्तक हैं। कम्ब को 'महर्षि' सम्बोधित करने के लिए और चाहिए क्या ?

आभार-प्रदर्शन

कम्ब रामायण का १०२४ पृष्ठों का द्वितीय खण्ड प्रस्तुत है। शेष तीन खण्ड लगभग, ४००० पृष्ठों में, शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान्, और शासन —सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत 'सानुवाद लिप्यन्तरण' के प्रकाशन में, शिक्षा तथा संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार की उल्लेखनीय सहायता निहित है। वर्षानुवर्ष उनसे प्राप्त सहायता के फलस्वरूप, 'रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु' के पदचिह्नों पर चलकर, भुवन वाणी ट्रस्ट, 'भाषाई सेतु' पर ग्रन्थ रूपी शिला पर शिला जमाता चला आ रहा है। केवल आभार प्रकट करना पर्याप्त नहीं है। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरीलिपि और राष्ट्रभाषा के माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी का प्रस्थापन, और राष्ट्रभाषा के भण्डार को भरने में उत्तरोत्तर अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे। यही है हमारा आभार-प्रदर्शन।

विश्ववाङ्मय से निस्रित अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी - पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त

(तमिऴ) वर्णमाला का देवनागरी रूपान्तर

तमिऴ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने, २३-६-६६ में प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ष़' रूप निर्धारित किया था। मैंने उस पर आपत्ति करके 'ऴ' का सुझाव दिया था। तब से संभवतः और भी आपत्तियाँ 'निदेशालय' अवश्य पहुँची होंगी।

विदित हो कि ५-६ फ़रवरी, १६८० की निदेशालय की बैठक में, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, यह निर्णय लिया गया कि अब 'ष़' के स्थान पर 'ऴ' ही प्रयुक्त किया जाय। आशा है लिप्यन्तरणकार भविष्य में इसका ध्यान रखेंगे।

तमिऴ - देवनागरी वर्णमाला			
அ अ क	ஆ आ का	இ इ कि	ஈ ई की
உ उ कु	ஊ ऊ कू	எ ऎ कॆ	ஏ ए के
ஐ ऐ कै	ஒ ऒ कॊ	ஓ ओ को	ஔ औ कौ
	ஃ अक्		
க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ऴ,ऴ	ள ळ
ற ऱ,ऱ	ன ऩ,ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

☞ तमिऴ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की 'कम्ब रामायण बालकाण्ड' पर भूमिका पृष्ठ २३-२४ द्रष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं।

नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

अयोध्या काण्डम्

ईश्वर वन्दना

❀ वानिन् रिऴिन्दु वरम्बिहन्द माबू दत्तिन् वैप्पॅङ्गुम्
ऊनु मुयिरु मुणर्वुम्बो लुळ्ळुम् बुऱत्तु मुळर्नॅन्ब
कूनुम् जिऱिय कोत्तायुङ् गॉडुमै यिऴैप्पक् कोऱुऱन्दु
कानुङ् कडलुम् कडन्दिमैयो रिडुक्कण् डीर्त्त कळल्वेन्दै 1

कूनुम्–कुब्जा मन्थरा और; चिऱिय को तायुम्–छोटी रानी और माता कैकेयी के; कॉडुमै इऴैप्प–अनिष्ट करने से; कोल्–राज-दण्ड (शासन के अधिकार) को; तुऱन्तु–छोड़कर; कानुम्–जंगल और; कटलुम्–समुद्र को; कटन्तु–पार करके; इमैयोर्–देवों का; इटुक्कण्–संकट; तीर्त्त–(जिन्होंने) दूर किया (उन); कळल् वेन्तै–पायलधारी राजा (श्रीराम) को; वान् निन्ऱु इऴिन्तु–आकाश से उतरकर; वरम्पु इकन्त–सीमा पार; मा पूतत्तिन्–पाँच महाभूतों के बने; वैप्पु ऍङ्कुम्–प्रपंच भर में; ऊनुम् उयिरुम् उणर्वुम् पोल्–शरीर, प्राण और आत्मा के समान; उळ्ळुम् पुऱत्तुम्–अन्दर और बाहर; उळन्–रहनेवाले; ऍन्प–कहते हैं। 1

कुब्जा मंथरा और श्रीराम की छोटी माँ, रानी कैकेयी दोनो ने निष्ठुरता के साथ अहित किया और उससे श्रीराम को राज्य त्यागकर जंगल, समुद्र आदि पार कर जाना पड़ा। इस प्रकार उन्होंने देवताओं का संकट दूर किया। ऐसे, पायलधारी राजा राम को (ज्ञानी लोग) पंचभूतों से बने इस पंच भर में, शरीर, आत्मा और अहंकार के समान अन्दर और बाहर रहनेवाले (तत्व) कहते हैं। (शरीर, आत्मा और अहंकार के जैसे का अर्थ करना कुछ कठिन है। एक अर्थ है— शरीर और अहंकार के समान भगवान क्रमशः सृष्टि के बाहर भी हैं और अन्दर भी, और आत्मा के समान एक साथ बाहर और अन्दर भी)। १

1. मन्दिरप्पडलम् (मन्त्रणा पटल)

❀ मण्णुरु मुरशिन मळैयि नार्प्पुरप्, पण्णुरु पटर्शिनप् परुम यानैयान्
कण्णुरु कवरियिन् कर्रै शुर्रुर, ऍण्णुरु शूळ्च्चियि निरुक्कै यॅय्दिनान् 2

पण् उरु–अलंकृत; पटर् चिनम्–वर्धनशील कोप; परुमम्–और हौदे वाले; यानैयान्–गजों के स्वामी (दशरथ); मण् उरु–मिट्टी का लेप-लगे; मुरचु इनम्–भेरियों की राशि के; मळैयिन्–मेघों के समान; आर्प्पु उर–नर्दन करते; कण् उरु–दर्शनीय; कवरियिन् कर्रै–सुरागाय की पूँछ के बने चामरों के; चुर्रु उर–पार्श्व में डुलते; ऍण् उरु–मन्त्रणा के लिए बने; चूळ्च्चियिन् इरुक्कै–मन्त्रणागृह में; ऍय्तितान्–पहुँचे। २

[किसी-किसी संस्करण में दो अतिरिक्त पद पाये जाते हैं। उनका सार यह है— राजा के कर्णमूल में एक वाल श्वेत वन गया मानो उसने राजा को समझाया कि राजा! राज्य को पुत्र को सौपकर वन में जाकर आपका तपस्या करने का समय आ गया। रावण के पाप ही वहाँ एक पके केश के रूप में आये हों, ऐसा वह वाल पका था। उसको राजा ने मुकुट में देखा।]

चक्रवर्ती मंत्रणा-गृह में आ पहुँचे। वे अलंकृत, क्रोधशील और हौदेदार गज के स्वामी थे। जब वे आये तव वे ढोल मेघों के समान वज उठे जिनके चमड़े पर मिट्टी का वना लेप लीपा गया था। दर्शनीय चामर भी डुलवाये गये। वे कुछ मंत्रणा करने आये। २

❀ पुक्कपिन् निरुवरुम् पॉरुविल् शुर्रमुम्
पक्कमुम् पॅयर्हॅनप् परिवि नीक्किनान्
ऑक्कनिन् रुलहळित् तियोगि नॅय्दिय
शक्करत् तवर्नॅनत् तमिय नायिनान् 3

पुक्क पिन्–प्रवेश के वाद; निरुपरुम्–नृप; पॉरु इल्–श्रेष्ठ; चुर्रमुम्–वन्धु; पक्कमुम्–और प्रिय मित्र; पॅयर्क–यहाँ से हट जायें; ऍन–कहकर; परिविन्–स्नेह के साथ; नीक्कितान्–अलग किया; ऑक्क निन्रु–समरस और तटस्थ रहकर; उलकु अळित्तु–लोक-पालन करके; योकिन् ऍय्तिय–योग-निद्रा में लीन रहनेवाले; चक्करत्तवन् ऍन–चक्रधारी श्रीविष्णु के समान; तमियन् आयितान्–एकाकी हुए। ३

वहाँ आने के वाद उन्होंने बहुत मीठे ढंग से आज्ञा दी कि राजा लोग, श्रेष्ठ वन्धु-वान्धव सब वहाँ से हट जायें। फिर वह उन चक्रधारी भगवान विष्णु के समान एकाकी हुए जो समरसता के साथ लोकों का पालन करते हुए योगनिद्रा में लीन हैं। (आज्ञाचक्र चलाने, लोकपालन करने और अकेले रहने के धर्मों के कारण चक्रवर्ती विष्णु तुल्य वताये गये हैं।)। ३

❀ शन्दिरड़् कुवमैशॅय् तरळ वॅण्गुडै, अन्दरत् तळवुनिन् ड्रळिक्कु माणैयान्
इन्दिरड़् किमैयवर् गुरुवै येयन्ददन्, मन्दिरक् किळवरै वरुहॅन् ड्रेवित्तान् 4

चन्तिरड़्कु उवमै चॅय्–चन्द्र से उपमित करने योग्य; तरळम्–मुक्ताओं का; वॅण् कुटै–श्वेत छत्र; अन्तरत्तु अळवु निन्ड्र–आकाश तक उन्नत रहकर; अळिक्कुम्–पालन करनेवाले; आणैयान्–आज्ञापक; इन्तिरड़्कु–देवराज के; इमैयवर् कुरुवै एय्न्त–देवगुरु बृहस्पति के समान; मन्तिरम् किळवरै–मन्त्रीमण्डल को; वरुक ॲन्ड्र–आयें, ऐसी; एवित्तान्–आज्ञा की। ४

राजा का चंद्र-सम मुक्तामंडित श्वेत छत्र आकाश तक व्याप्त था। यानी उनका पालन का काम स्वर्ग में भी व्याप्त था। जैसे देवेन्द्र के बृहस्पति थे वैसे इनके भी गुरु अमात्यादि मंत्रीगण थे। चक्रवर्ती ने उनको आने की आज्ञा दिलायी। ४

❀ पूवरु पॉलड़्गऴड़् पॉरुविन् मन्नवन्, कावलि नाणैशॅय् कडवु ळामॅन्न
तेवरु मुनिवरु मुणरुन् दॅवर्हळ, मूवरि नाल्वना मुनिवन् दॅय्दिनान् 5

पू वरु–शोभायुक्त; पॉलम् कळल्–स्वर्णपायलधारी; पॉरुवु इल् मन्नन्–उपमाहीन चक्रवर्ती के; कावलिन्–शासन कार्य में; आणै चॅय्–आज्ञा देनेवाले; कटवुळ् आम् ॲन–ईश्वर हैं ऐसा; तेवरुम् मुनिवरुम् उणरुम्–देव और मुनि जिनके सम्बन्ध में अनुभव करते हैं उन; तेवर्कळ् मूवरिन्–(अज, हरि, हर) तीन की श्रेणी में; नाल्वन् आम्–चौथे के रूप में माननीय; मुनि–महर्षि (वसिष्ठ); ॲय्तिनान्–पधारे। ५

पहले वसिष्ठजी पधारे। उज्ज्वल पायलधारी और अप्रमेय चक्रवर्ती दशरथ के शासन में उनका नियंता का (ईश्वर का-सा) विशिष्ट स्थान था। वे देवताओं के और मुनियों के ज्ञात त्रिदेव— अज, हरि और हर —के साथ चौथे ईश्वर के रूप में सम्मानित थे। ५

❀कुलमुदड़् ड्रॉन्मयुड़् गलैयिन् कुप्पयुम्, पलमुदड़् केळ्वियुम् पयनु मॅय्दिनार्
नलमुद नलियिनु नडुवु नोक्कुवार्, शलमुद लरुत्तरुन् दरुमन् दाड़्गिनार् 6

कुलम् मुतल् तॉन्मैयुम्–कुल के क्रम में प्राचीनता; कलैयिन् कुप्पैयुम्–शास्त्रों की ज्ञानराशि; पल मुतल् केळ्वियुम्–अनेक श्रेष्ठ श्रौतज्ञान; पयनुम्–उनका लाभ; ॲय्तिनार्–जो पा चुके थे (वे मन्त्रीगण); नलम् मुतल् नलियिनुम्–अपना हित आमूल नष्ट हो जाय तो भी; नटुवु नोक्कुवार्–तटस्थता बरतनेवाले; चलम् मुतल् अरुत्तु–क्रोधादि काटकर; अरु तरुमम् ताङ्कित्तार्–उत्तम धर्मावलम्बी। ६

बाद अमात्य आये। उनके पास कुल की प्राचीनता थी; शास्त्रों की ज्ञानराशि थी। अनेक विषयों पर प्रथम श्रेणी का श्रुत-ज्ञान था। वही नहीं; इन सबका प्रभाव भी उन पर खूब पड़ा था। चाहे उनका हित बिलकुल नष्ट हो जाय तो भी वे तटस्थता से हटनेवाले नहीं थे। क्रोध आदि को उन्होंने दूर किया था और उत्तम धर्मावलंवी थे। ६

उऱ्ऱतु कॊण्डु मेल्वन् दुरुपॊरु ळुणरुङ् गोळार्
मऱ्ऱदु विनैयिन् वन्द दायिनु माऱ्ऱ लाऱ्ऱम्
पॆऱ्ऱियर् पिऱप्पिन् मेन्मैप् पॆरियव ररिय नूलुम्
कऱ्ऱवर् मान नोक्किऱ् कवरिमा वन्नैय नीरार् 7

उऱ्ऱतु कॊण्टु–जो हो गया उसको शोधकर; मेल् वनतु उरु पॊरुळ्–आगे जो होगी उस बात को; उणरुम्–बुद्धि द्वारा समझनेवाले; कोळार्–चातुर्य रखनेवाले; अतु–वह बात; विनैयिन् वन्ततु आयिनुम्–प्रारब्ध कर्म से हो गई तो भी; माऱ्ऱल् आऱ्ऱम्–बदल सकने की; पॆऱ्ऱियर्–शक्ति रखनेवाले; पिऱप्पिन् मेन्मै पॆरियवर्–कुल-जन्म के अनुरूप गौरवशाली; अरिय नूलुम् कऱ्ऱवर्–सूक्ष्म ग्रन्थों के अध्येता; मानम् नोक्किन्–अपने मान के विचार में; कवरि मा अनैय नीरार्–चामर हिरन के-से स्वभाव वाले। ७

वे संभूत काम देखकर भविष्य को समझने का चातुर्य रखनेवाले और प्रारब्ध-कर्म के कारण कुछ हो भी जाय तो उसका परिहार जाननेवाले, अपने कुल की मर्यादा और गौरव उनमें यथेष्ट था। साथ-साथ सूक्ष्म ग्रंथों का अध्ययन कर चुके थे। जहाँ तक गौरव का सम्बन्ध था वे चामर-मृग (सुरा गाय ?) के स्वभाव के थे, जिसके सम्बन्ध मे कहा जाता है कि एक बाल भी खोना पड़ा तो वह अपनी जान दे देगा। (यानी अपमान हो जाने के पहले अपना प्राण दे देनेवाले थे।)। ७

कालमु मिडनु मेऱ्ऱ करुवियुन् दॆरियक् कऱ्ऱ
नूलुऱ नोक्कित् तॆय्व नुनित्तरङ् गुऱित्त मेलोर्
शीलमुम् पुहऴ्क्कु वेण्डुञ् जॆय्हयुन् दॆरिन्दु कॊण्डु
पाल्वरु मुरुदि यावुन् दलैवऱ्क्कुप् पयक्कु नीरार् 8

एऱ्ऱ कालमुम् इटनुम् करुवियुम्–उचित काल, स्थान और साधन को; कऱ्ऱ नूल् उऱ–अपने पठित ग्रन्थों के अनुकूल; तॆरिय नोक्कि–खूब समझकर; तॆय्वम् नुनित्तु–ईश्वर का ध्यान करके; अऱम् कुऱित्त मेलोर्–धर्म में आचरण वाले श्रेष्ठों के बताये; चीलमुम्–शील और; पुकऴ्क्कु वेण्टुम् चॆय्कैयुम्–यश देनेवाले कार्यों को; तॆरिनतु कॊण्टु–जानकर; पाल् वरुम् उऱुति यावुम्–इनके हक में आनेवाले सारे शुभ फलों को; तलैवऱ्कु–अपने स्वामी, राजा को; पयक्कुम्–प्राप्त करानेवाले; नीरार्–स्वभाव वाले। ८

वे उचित काल, स्थान और साधनों का विचार कर, शास्त्र के प्रमाणों को भी लेकर, धर्म के आचार्यों के भी शील और प्रशंसा योग्य सम्बन्धी उपदेशों का लाभ उठाते हुए ऐसे काम करते जिससे सुफल अपने नायक को मिल जायँ। ८

तम्मुयिर्क् कुऱुदि यॆण्णार् तलैमहन् वॆहुण्ड पोदुम्
वॆन्मयैत् ताङ्गि नीदि विडादुनिन् ऱुरैक्कुम् वीरर्

शॅम्मयिऱ् ऱिऱम्बल् शॅल्लात् तेऱ्ऱत्तार् तॅरियुङ् गालम्
मुम्मयु मुणर वल्लो रॉरुमये मॉऴियुम् नीरार् 9

तलै मकन्-राजा के; वॅकुण्ट पोतुम्-कुपित होने पर भी; तम् उयिर्क्कु-अपने प्राणों का; उऱुति ॲण्णार्-हित नहीं सोचते; वॅम्मैयै ताङ्कि-(कोप की) गर्मी को सहकर; विटातु निन्ऱु-कर्तव्य न छोड़ते हुए अचल रहकर; नीति उरैक्कुम्-नीति समझानेवाले; वीरर्-वीर हैं; चॅम्मैयिल्-नेकनीयती से; तिऱम्पल् चॅल्ला-हटकर न जानेवाले; तोऱ्ऱत्तार्-समझदार है; तॅरियुम्-शास्त्रज्ञान से ज्ञातव्य; कालम् मुम्मैयुम्-भूत, वर्तमान और भविष्य (के व्यापारों) को; उणरवल्लोर्-समझ सकनेवाले; ऑरुमैये मॉऴियुम्-स्थिर रूप से एक ही बात कहने का; नीरार्-स्वभाव वाले। ९

जब राजा या नायक कोप करते तव ये अपने प्राणों की परवाह नहीं करते। पर कोप की आँच (उग्रता का) सहन करके, अपने अभिप्राय में अचल रहकर नीति वताने से पीछे न हटनेवाले वीर थे। उनकी बुद्धि इतनी सुलझी हुई थी कि नेक रास्ते से वे कभी नहीं हटते। ग्रंथों, अनुमान आदि से ज्ञातव्य भूत, वर्तमान और भविष्य के कार्यों को समझने की शक्ति के साथ वे स्थिर रूप से असंदिग्ध एक ही बात कहने का स्वभाव भी रखते थे। ९

❀ नल्लवुन् दीयवु नाडि नायहर्, कॅल्लैयिन् मरुत्तुव रियल्बि नॅण्णुवार्
ऑल्लैवन् दुरुवन वुऱ्ऱ पॅऱ्ऱियिन्, तॉल्लैनल् वितैयॅन वुदवुञ् जूऴ्च्चियार् 10

नायकर्क्कु-अपने नायक का; नल्लवुम् तीयवुम् नाटि-हित, अहित सोचकर; ॲल्लैयिल्-अन्त में; मरुत्तुवर् इयल्पिन्-वैद्यों के-से गुण के साथ; ॲण्णुवार्-(नायक का हित ही) सोचते; ऑल्लै वन्तु उऱुवन-अकस्मात आनेवाली हानियाँ; उऱ्ऱ पॅऱ्ऱियिन्-जब आ जाती हैं; तॉल्लै नल् वितै ॲन-पूर्वकृत पुण्य के समान; उतवुम् चूऴ्च्चियार्-सहायक उपाय बतानेवाले। १०

नायक के लिए क्या हित है क्या अहित है -यह खूब सोचकर अच्छे वैद्य के समान जो रोगी के हित की दवा देते हैं, उनका हित ही करनेवाले थे। अकस्मात आई हुई हानि के सम्बन्ध में भी वे पूर्वकृत पुण्य के समान आकर कोई न कोई उपाय करके उसको दूर करने का सामर्थ्य रखते थे। १०

❀ अऱुपदि नायिर रॅत्तिनु माण्डहैक्
कुऱुदियि नॉन्ऱिवर्क् कुणर्वॅन् ऱुन्नलाम्
पॅऱलरुञ् जूऴ्च्चियर् तिरुविन् पॅट्पिनर्
मऱ्ऱिदिरैक् कडलॅन वन्दु ऱुऱ्ऱिनार् 11

तिरुविन् पॅट्पिनर्-श्री समन्वित हैं; अऱुपतिनायिरर् ॲत्तिनुम्-(संख्या में) साठ हजार थे तो भी; आण् तकैक्कु-पुरुष श्रेष्ठ (दशरथजी) को; उऱुतियिन्-भला

पहुँचाने में; इवर्क्कु उणर्वु ऑन्ऱु–इनका चित्त एक है; ऍन्ऱु–यह; उन्नत्त् आम्–मान सकते हैं ऐसा; पॆऱल् अरुम्–(पाने में) दुर्लभ; चूळ्च्चियर्–मतिमान हैं; मऱि तिरै कडल् ॲॅत–मुड़ आनेवाली लहरों वाले सागर के समान; वन्तु चुऱ्ऱिऩर्–(वे) आकर घेरे रहे। ११

वे साठ हजार थे। तो भी अपने नायक के हितचिंतन में मानो वे सब मिलकर एक ही मन रखते थे, ऐसे सलाहकारिता में अपूर्व दक्षता दिखाते थे। वे मुड़-मुड़कर लहरानेवाली तरंगों से युक्त समुद्र के समान आकर उनको घेर गये। ११

❀ मुऱैमयि नॆय्दिनर् मुन्दि यन्दमिल्, अऱिवनै वणङ्गित्तम् मरशॆक् कैदॊऴु
दिऱैयिडै वरऩ्मुऱै येऱि येऱ्ऱशॊल्, तुऱैयऱि पॆरुमया ऩरुळुन् जूडिऩार् 12

मुऱैमैयिल्–यथाक्रम; ऍय्तिनर्–आकर; अन्तम् इल् अऱिवनै–अनन्त बुद्धिमान वसिष्ठ को; मुन्ति वणङ्कि–प्रथमतः नमस्कार करके; तम् अरचै कै तॊऴुतु–अपने राजा को अंजलि समर्पित करके; इऱै इडै–आसनों पर; वरल् मुऱै–अपने पदों के अनुसार; एऱि–(चढ़कर) आसीन होकर; एऱ्ऱ चॊल् तुऱै–उचित शिष्ट वचन की रीतियों के; अऱि पॆरुमैयान्–ज्ञाता, गौरवान्वित दशरथ की; अरुळुम्–कृपादृष्टि भी; चूटिनार्–(उन्होंने) प्राप्त की। १२

वे यथाक्रम आये। पास आकर उन्होंने अथाह बुद्धिमान वसिष्ठजी को नमस्कार किया और फिर राजा को अंजलि समर्पित की। बाद में वे अपने-अपने उचित आसन पर आसीन हुये। राजा ने, जो योग्य शिष्टाचार के वचन कहने में समर्थ थे उचित रूप से स्वागत किया। उन्हें राजा की कृपादृष्टि मिल गई। १२

❀ अन्नव ररुळमैन् दिरुन्द वाण्डयिल्, मन्ननु मवरमुह मरवि नोक्किनान्
उन्निय दरुम्बॆऱ् लुरुदि यॊन्ऱुळ, दॆन्नुणर् वनैयनी रिनिदु केट्कॆन्ऱा 13

अन्नवर्–(जब) वे; अरुळ् अमैन्तु–कृपाप्राप्त हो; इरुन्त आण्टैयिन्–आसीन रहे तब; मन्ननुम्–चक्रवर्ती भी; अवर् मुकम्–उनके मुखों को; मरपिन्–क्रम से; नोक्किनान्–देखकर; उन्नियतु–मेरा सोचा; पॆऱल् अरुम्–दुर्लभ; उऱुति ऑन्ऱु–हितकार्य एक; उळतु–है; ऍन् उणर्वु अनैय नीर्–मेरी ही प्रज्ञा रहनेवाले आप लोग; इनितु केट्क–सन्तोष से सुनिये; ऍन्ना–कहकर आगे। १३

जब वे राजा की कृपादृष्टि प्राप्त करके अपने-अपने आसन पर बैठे थे तब राजा ने उन सबके मुखों को उचित क्रम से देखा। "मैंने एक पुरुषार्थ का काम सोचा है। आप मेरी ही मतिवत है। आप संतोष के साथ सुनिये।" —यह कहकर आगे बोले। १३

❀ वॆय्यवन् कुलमुदल् वेन्दर् मेलवर्, शॆय्हयि नॊरुमुऱै तिऱम्ब लिन्ऱिये
वैयमॆन् पुयत्तिडै नुङ्गण् माट्चियाल्, ऐयिरण् डायिरत् ताण्ड ताङ्गिनेन् 14

नुङ्कळ् माट्चियाल्–आप लोगों (की सलाह) की महिमा से; **वॅय्यवन्न् कुलम्**–सूर्यकुल के; **मुतल् वेन्तर्**–अग्रगण्य राजा; **मेलवर्**–मेरे पूर्वजों के; **चॅय्कैयिन्**–कार्यों (की पद्धति) से; **ऑरु मुरै**–किसी विधि; **तिरम्पल् इन्ऱि**–हटे बिना; **वैयम्**–भूमि का; **ऐ इरण्टु आयिरत्तु आऱु**–(५×२×१०००×६) साठ सहस्र वर्ष; **अॅन् पुयत्तिटै**–अपनी भुजाओं पर; **ताङ्कित्तेन्**–धारण किया। १४

आपकी संगति के महत्व के कारण मैंने साठ सहस्र वर्ष इस भूमि को अपनी भुजाओं में धारण किया। उसमें सूर्यकुल के मेरे पूर्वजों ने जो नीति-रीति अपनायी थी उससे थोड़ा भी विचलित न हुआ। १४

❀**कन्नियरक् कमैवरुङ् गऱ्पिन् मानिलम्, तन्नैयित् तकैयदात् तरुमङ् गैदर**
मन्नुयिर्क् कुरुवदे शॅय्तु वैहिन्नेन्, ॲन्नुयिर्क् कुरुवदुञ् जॅय्य वॅण्णिनेन् 15

कन्नियरक्कु–कन्याओं के लिए; **अमैवरुम्**–उचित; **कऱ्पिन्**–चरित्र के समान; **मा निलम् तन्नै**–इस विशाल भूमि को; **इ तकैयता**–यह स्थिति देते हुए; **तरुमम् कै तर**–धर्म ने भी हाथ बँटाया, इसलिए; **मन् उयिर्क्कु**–स्थायी जीवों को; **उरुवतु**–हितकारी काम; **चॅय्तु वैकित्तेन्**–करता रहा; **ॲन् उयिर्क्कु**–अपनी आत्मा के लिए; **उरुवतुम्**–हितकारी काम; **चॅय्य ॲण्णित्तेन्**–करना चाहा। १५

इस भूमि को इस रीति से पाला कि यह भूमि कन्योचित पातिव्रत्य व्रतशीला-सी रही। यानी उसके दो स्वामी नहीं रहे। धर्म ने भी साथ दिया और अब तक मैं प्रजाजन का हित करता रहा। अब मैं अपनी आत्मा का हितकारी कार्य करना चाहता हूँ। १५

❀ **विरुम्बिय मूप्पॅनुम् वीडु कण्डयान्**
इरुम्बिय लनन्दनु मिन्नत्त यानैयुम्
पॅरुम्बॅयरक् किरिहळुम् पॅयरत् ताङ्गिय
अरुम्बॊरै यिन्निच्चिरि दाऱ्ऱ वाऱ्ऱलेन् 16

विरुम्पिय–(मैंने जो) चाहा; **मूप्पु ॲनुम्**–वह वार्द्धक्य रूपी; **वीटु**–स्वतन्त्रता; **कण्ट यान्**–देखकर मैं; **इरु पियल् अनन्तनुम्**–विशाल गर्दन वाला अनन्तनाग; **इनत्त यानैयुम्**–एक ही जाती के (दिग्-) गज; **पॅरु पॅयर् किरिकळुम्**–बड़े ही प्रसिद्ध (अष्ट) कुलशैल; **पॅयर**–इनको छुट्टी देकर; **ताङ्किय अरुपॊरै**–जो मैंने धारण किया उस भार को; **इन्नि चिऱितु**–अब जरा भी; **आऱ्ऱ**–भरण करने में; **आऱ्ऱलेन्**–समर्थ नहीं हूँ। १६

मैं इस वार्द्धक्य की प्रतीक्षा में था ताकि मुझे स्वतंत्रता मिले। वह अब आ गया। इसलिए विशाल गर्दन वाला अनंत नाग, अष्ट दिग्गज, सप्तकुल शैल —इनको अपने काम से छुट्टी देकर मैं भू-भार वहन करता रहा। अब सोचता हूँ कि आगे किंचित भी वह भार सह नही सकूँगा। १६

❀ नङ्गुलक्	कुरवर्ह	णवैयि	न्नीङ्गिन्नार्
तङ्गुलप्	पुदल्वरे	तरणि	ताङ्गप्पोय्
वॆङ्गुलप्	पुलन्कॊड	वीडु	नण्णिनार्
ऎङ्गुलप्	पुरुवरॆन्न्	ऱॆण्णि	नोक्कुहेन्न् 17

नम् कुलम् कुरवर्कळ्–मेरे कुल के पूर्वज; नवैयिन्न् नीङ्किन्नार्–(जो) दुर्गुण-त्यागी (थे); तरणि–भूमि को; तम् कुलम् पुतल्वरे–अपने श्रेष्ठ पुत्रों के; ताङ्क–पालन करने (देकर); पोय्–जाकर; वॆम् कुलम् पुलन् कॊट–अत्याचारी इन्द्रियों के कुल को दमन करके; वीटु नण्णिन्नार्–मोक्ष को प्राप्त हुए; ऎङ्कु उलप्पु उऱुवर्–कहाँ जा के (संख्या में) अन्त होंगे; ऎन्न्ऱु–यह सोचकर; नोक्कुकेन्–(मैं भी वह पुरुषार्थ) खोजता हूँ। १७

मेरे कुल के पूर्वजों ने काम, क्रोध और मोह के दोषों से निवृत्त होकर अपने-अपने पुत्रों के पास राज्य-भार सौंपकर वनवास किया और इंद्रियों का दमन करके तपस्या की। फिर वे मुक्ति को प्राप्त हुए। ऐसे राजाओं की गणना का अंत कहाँ? असंख्यक उनका अनुकरण करके मैं भी मुक्ति के पुरुषार्थ-साधन में लग जाना चाहता हूँ। १७

❀ वॆळ्ळनी	रुलहिनिल्	विण्णि	न्नाहरिल्
तळ्ळरुम्	बहैयॆलान्	दविर्त्तु	निन्न्ऱयान्न्
कळ्वरिऱ्	करन्दुऱै	काम	मादियाम्
उळ्ळुऱु	पहैवरुक्	कॊदुङ्गि	वाऴ्वॆन्नो 18

वॆळ्ळम् नीर् उलकितिल्–अपार (सागर) जल से घिरी हुई भूमि में; विण्णिल्–आकाश में; नाकर् इल्–नागलोक में; तळ्ळ अरुम् पकै ऎल्लाम्–दूर (जिनको) करना कठिन है उन शत्रुओं को; तविर्त्तु निन्न्ऱ–हराकर (जो) रहा; यान्–(वह) मैं; कळ्वरिल्–चोरों के समान; करन्तु उऱै–छिपकर रहनेवाले; कामम् आति आम्–काम आदि; उळ् उऱु पकैवरुक्कु–अन्तःशत्रुओं से; ऒतुङ्कि वाऴ्वॆनो–(हार मानकर) दूर रहूँगा क्या। १८

इस भूलोक में, जिसे विपुल जलराशि, सागर घेरे रहता है, आकाश के सुरलोक मे और नाग-(पाताल-)लोक मे जितने भी शत्रु थे उन सब पर मैने विजय पा ली है। ऐसा मैं क्या उन कामादि अंतश्शत्रुओं से हार मानकर बैठा रहूँगा जो चोरों के समान मेरे ही अंदर छिपे रहते है। १८

❀ पञ्जिमॆन्	ऱळिरडिप्	पावै	कोल्हॊळ
वॆञ्जिनत्	तवुणर्देर्	पत्तुम्	वॆन्ऱुळेऱ्
कॆञ्जलिन्	मनमॆनु	मिळुदै	येऱिय
अञ्जुतेर्	वॆल्लुमी	दरुमै	यावदो 19

पञ्चि–महावर लगे; मॅल् तळिर् अटि–पल्लव-मृदु-चरण; पावै–प्रतिमा-सी कैकेयी के; कॉल् कॉळ–(सारथी का) वेत्र हाथ में लेते (सारथ्य में); वॅम् चिन्नत्तु–भयंकर क्रोधी; अवुणर् तेर् पत्तुम्–असुरों के दशों रथों को; वॅन्रुळॅर्कु–जिसने हराया उस मुझे; ऍञ्चल् इल् मतम् ॲनुम्–अथक मनरूपी; इळ्ळुतै एरिय–भूत जिन पर चढ़ा है उन; अञ्चु तेर्–(इन्द्रिय रूपी) पाँच रथों को; वॅल्लुम् ईतु–जीतने का यह काम; अरुमै आवतो–कठिन हो जायगा। १६

(शम्बरासुर दस रूप लेकर दस रथों पर सवार हो आया।) उसके साथ मैंने लड़ाई की। मेरी पत्नी लाक्षारसरंजित, पल्लव समान मृदु चरण वाली कैकेयी ने हाथ से चाबुक लेकर सारथ्य किया। मैंने दसों रथों पर विजय पायी और दानवों का नाश किया। उधर तो दस रथ थे, इधर इंद्रियरूप में पाँच ही रथ हैं जिन पर मन भूत के समान सवार है। क्या दस के विजयी के लिए पाँच पर विजय पाना कठिन है? । १९

* ऑट्टिय पहैजर्वन् दुरुत्त पोरिडैप्
पट्टव रल्लरेड् परम ञानम्बोयत्
तॅट्टव रल्लरेड् चॅल्व मीण्डॅन
विट्टव रल्लरेल् यावर् वीडुळार् 20

वन्तु ऑट्टिय–आकर टकरानेवाले; पकैजर्–शत्रु; उरुत्तपोर् इटै–(जो) करते हैं, उस लड़ाई में; पट्टवर्–मर चुके; अल्लरेल्–नहीं तो; परम ञानम्–परम-ज्ञान के; पोय्–अधिक होने पर; तॅट्टवर्–समझदार हुए हैं; अल्लरेल्–नहीं तो; चॅल्वम् ईण्टु अॅत्त–अर्थ आदि यहीं तक, यह जानकर; विट्टवर्–छोड़ चुके हैं; अल्लरेल्–वे नहीं तो; वीटु उळार् यावर्–मुक्ति के अधिकारी कौन है। २०

मुक्ति के अधिकारी तीन तरह के लोग ही होते हैं। शत्रुओं के साथ युद्ध में मरनेवाले; या परम ज्ञान प्राप्त करके आत्म-अनात्म-विवेक जो पा चुके वे; ये दोनो नहीं हों तो "यहाँ का धन आदि इसी भूमि में रहते समय तक हमारा साथ दे सकता है" यह जानकर जो मोह छोड़ चुके हैं वे—ये तीनो ही वे अधिकारी हैं। इन तीनो में नही है तो कौन मुक्ति पाने के योग्य हो सकता है? । २०

इऱप्पॅनु मॅय्म्मयै यिम्मै यावर्क्कुम्
मऱप्पॅनु मदनिऩ्मेऱ् केडु मऱ्ऱुण्डो
तुऱप्पॅनुन् दॅप्पमे तुणैयॅय् यादिडिऩ्
पिऱप्पॅनुम् बॅरुङ्गडल् पिळैक्क लावदो 21

यावर्क्कुम्–सब किसी के लिए; इऱप्पु ॲनुम् मॅय्म्मैयै–मृत्यु है इस तथ्य को; इम्मै–इस जन्म में; मऱप्पु ॲनुम्–भूल जाने का; अततिऩ् मेल्–जो है उससे बढ़कर; मऱ्ऱु–अन्य; केटु उण्टो–हानि है क्या; तुऱप्पु ॲनुम् तॅप्पमे–संन्यास नाम की डोंगी ही; तुणै–चॅय्या विटिऩ्–सहायता न करे तो; पिऱप्पु ॲनुम् पॅरु कटल्–जन्म नामक बड़ा सागर; पिळैक्कल् आवतो–बचाना हो सकता है क्या। २१

किसी के लिए इस बात को भूल जाने से कि मरण ध्रुव है, अधिक हानिकारक कोई चीज़ नही है। वैराग्य की डोंगी का सहारा न लिया जाय तो जन्म नामक विपुल सागर का तरण संभव है क्या ? । २१

अरुञ्जिऱप् पमैवरुन् दुऱवु मव्वऴित्
तॆरिञ्जुऱ वॆनमिहुन् दॆळिवु माय्वरुम्
पॆरुञ्जिऱै युळवॆनिऱ् पिऱवि यॆन्नुमिव्
विरुञ्जिऱै कडत्तलि निऩिय दियावदो 22

अरुम् चिऱप्पु–श्रेष्ठ (मोक्ष का) गौरव; अमैवरुम् तुऱवुम्–दिलानेवाला वैराग्य; अ वऴि तॆरिञ्चु–वह मार्ग जानकर; उऱवु ॲन–उसका सहायक रहनेवाला; तॆळिवुम्–तत्वज्ञान-विवेक; आय् वरुम्–ऐसे रहनेवाले; पॆरु चिऱै उळ ॲनिल्–बड़े पक्ष हैं तो; पिऱवि ॲन्नुम्–जन्म नाम के; इ इरु चिऱै–इस वड़ी कारा को; कडत्तलिन् इऩियतु–पार करके जाने से सुखद; यावतो–कौन सी वस्तु है। २२

मानव जीवन की गरिमा मुक्ति पाना है। उसका हेतु वैराग्य है। उसका सहायक है आत्म-अनात्म-विवेक। वैराग्य और विवेक दो पंख हैं। अगर ये दोनो पंख हों तो जन्म नाम की कारा से छूटना आसान हो जायगा। इस कारा से छूटने से वढ़कर सुखद क्या हो सकता है ? । २२

इनियतु पोलुमिव् वरशै यॆण्णुमो, तुनिवरु पुलनॆनत् तॊडर्न्दु तोऱ्कला
ननिवरु पॆरुम्बहै नवैयि नीङ्गिय, तनियर शाट्चियिऱ् ऱाऴ्, मुळ्ळमे 23

तुनिवरु–दुखदायक; पुलन् ॲन–इन्द्रियों के रूप में; तॊटर्न्तु–जीवन में अनुवर्ती बनकर; तोऱ्कला–कभी न हारकर; नतिवरु–अधिक आनेवाली; पॆरुम् पकै–वड़ी शत्रुता से उत्पन्न; नवैयिन् नीङ्किय–दोषों से दूर; तनि अरचाट्चियिल्–विशिष्ट (मोक्ष-)साम्राज्य में; ताऴ्म्–मग्न; उळ्ळम्–मेरा मन; इतियतु पोलुम्–सुखद दिखनेवाले; इव्वरचै–इस राज्य को; ॲण्णुमो–(कोई वस्तु) मानेगा क्या। २३

मेरा मन अव मोक्ष-साम्राज्य में लग गया है। वह दुखदायी इंद्रियों रूपी अक्षय और अजेय रूप से सतानेवाले वड़े शत्रुओं के कारण हो जानेवाले दोषों से छूटने पर प्राप्त होती है। उसमें लगा मेरा मन अव क्या दिखावे के सुख वाले इस राज्य को कोई (मूल्यवान) पदार्थ मानेगा ? नही। २३

❀ उम्मैया नुडैमयि नुलहम् यावैयुम्, चॆम्मैयि नोम्बिनल् लऱमुञ् जॆय्दनॆन्
इम्मैयि नुदवियॆन् निशैन डायनीर्, अम्मैयु मुदवुदऱ् कमैय वॆण्डुमाल् 24

यान्–मैं; उम्मै उटैमैयिन्–आप लोगों को (मन्त्रियों के रूप में) प्राप्त किए रहने के कारण; उलकम् यावैयुम्–सारे लोकों को; चॆम्मैयिन्–ठीक तरह से; ओम्पि–रक्षित करके; नल् अऱमुम् चॆय्तनॆन्–अच्छे धर्म-कार्य भी कर चुका; इम्मैयिन् उतवि–इह जीवन में मेरी सहायता करके; ॲन् इचै नटाय–मेरी कीर्ति को फैलानेवाले;

नीर्–आप लोग; अम्मैयुम् उतवुतऱ्‌कु–परलोक जीवन में भी सहायता देने को; अमैब वेण्टुम्–सम्मन हों। २४

आपको मैंने अपने मंत्रियों के रूप में पाया। इसीलिए मैं भूमि का ठीक तरह से पालन करके अच्छे धार्मिक कार्य पूरा कर सका। इह-जीवन में सहायक रहकर मेरी कीर्ति को बढ़ाने के आप ही हेतु रहे। ऐसे आप मेरे पारलौकिक जीवन में भी भला दिलाने में सहायक बनने की इच्छा करें। २४

इऴैत्ततॊल् विनैययुङ् गडक्क वॆण्णुदल्
तऴैत्तपे ररुळुडैत् तवत्ति नाहुमेल्
कुऴैत्तदो रमुदिनैक् कोड नीङ्गिवे
ऱऴैत्तती विडत्तिनै यरुन्द लाहुमो 25

इऴैत्त–(पूर्व-)कृत; तॊल् विनैयैयुम्–प्राचीन कर्मों के फल को; कटक्क–लाँघने के लिए; ऍण्णुतल्–विचार करना; तऴैत्त–अधिक; अरुळ् उटै तवत्तिन्–भूत-दया पर आधारित तपस्या से; आकुमेल्–सफल हो सकता है तो; कुऴैत्तु ओर् अमुतिनै–औषधि डालकर, मथकर निकाले गये अमृत को; कोटल् नीक्कि–लेना छोड़कर; वेऱु अऴैत्त–दूसरी रीति से प्राप्त; ती विटत्तिनै–भयंकर विष को; अरुन्तल् आकुमो–खाना ठीक हो सकता है क्या। २५

प्रारब्ध (संचित) कर्म भी भूत-दया से प्रभावित तपस्या के फलस्वरूप काट लिया जा सकता है। तब औषधि-सहित सागर-मथन से प्राप्त अमृत को छोड़कर विष पीने को उद्यत होना कहाँ तक उचित है? (तपस्या अमरता देगी। जीवन भोग कर्म को बढ़ायेगा, अतः वह विषतुल्य है।)। २५

कच्चयङ् गडहरिक् कऴुत्तिन् कण्णुऱप्
पिच्चमुङ् गविहयुम् वॆय्यु मित्तिऴल्
निच्चय मन्ऱॆनि नॆडिदु नाळुण्ड
ऍच्चिलै नुहरुव दिन्ब माहुमो 26

कच्चै–रस्सी बँधे; अम् कटम् करि–सुन्दर मत्तगज के; कऴुत्तिन् कण् उऱ–गर्दन पर बैठे; पिच्चमुम्–मोरछल; कविकैयुम्–श्वेतछत्र; पॆय्युम्–जो देते हैं उस; इन् निऴल्–सुखद छाया में रहनेवाला जीवन; निच्चयम् अन्ऱु ऍनिन्–शाश्वत नहीं है तो; नॆटितु नाळ् उण्ट ऍच्चिलै–दीर्घकाल से खाये हुए जूठन को; नुकरुवतु–भोगता रहना; इन्पम् आकुमो–सुख हो सकता है क्या। २६

गले में बँधी रस्सी के साथ रहनेवाले मत्त गज पर सवारी और मोरछल, श्वेतछत्र आदि की छाया, अर्थात राजा का जीवन शाश्वत नहीं है। यह जानकर भी जूठन के भोग में लगा रहना आनन्ददायक हो सकता है क्या? यह भोग भी काफ़ी दिनों तक भोगा जा चुका है! । २६

मैन्दरै यिन्मयिऩ् वरम्बिल् कालमुम्
नॊन्दनॆऩ् निरामनॆऩ् नोवै नीक्कुवाऩ्
वन्दन नवनिनि वरुन्द याऩ्पिऴैत्
तुयन्दनॆऩ् पोवदो रुऱुदि यॆण्णिनेन् 27

मैन्तर् इऩ्मैयिऩ्–सन्तान के न होने से; वरम्पु इल् कालमुम्–असीम काल तक; नॊन्तनॆऩ्–दुखी रहा; ऎऩ् नोयै नीक्कुवाऩ्–मेरा (दुख-) रोग दूर करने; इरामऩ् वन्तनऩ्–श्रीराम आया है; इऩि–अव; अवऩ् वरुन्त–वह कष्ट उठावे; याऩ्–मैं; पिऴैत्तु उयन्तनॆऩ् पोवतु–वचकर तर जाने का; ओर् उऱुति–एक हित; ऎण्णिनेऩ्–सोचा। २७

मै सन्तान के ने होने से कितने ही वर्षो से (असीम काल तक) दुखी रहा। मेरे दुख-रोग को दूर करने के लिए राम आकर पैदा हो गया। अव वह भार अपने ऊपर ले लेगा और मै इससे मुक्त हो जाऊँ —यह हित-साधन करने की वात मैंने सोची है। २७

इऱन्दिलऩ् शॆरुक्कळत् तिरामऩ् ऱादैदाऩ्
अऱन्दलै निरम्बमूप् पडैन्द पिऩ्ऩरुम्
तुऱन्दिल नॆऩ्बदोर् शॊल्लुण् डाऩ्पिऩ्
पिऱन्दिल नॆऩ्वदिऱ् पिऱिदुण् डाहुमो 28

इरामऩ् तातै–राम का पिता; चॆरुक्कळत्तु इऱन्तिलऩ्–समरभूमि में न मरा; ताऩ् मूप्पु अटैन्त पिऩ्नरुम्–वार्द्धक्य प्राप्त करने के वाद भी; अऱम् तलै निरम्प–धर्म के पूर्ण-साधन में; तुऱन्तिलऩ्–विरक्त नहीं हुआ; ऎऩ्पतु ओर् चॊल्–ऐसी एक (निन्दा की) वात; उण्टान पिऩ्–हो जाने के वाद; पिऱन्तिलऩ् ऎऩ्पतिऩ्–जन्म नहीं लिया, इस (अपयश) के सिवा; पिऱितु उण्टाकुमो–और कुछ हो सकता है क्या। २८

अव भी मै वानप्रस्थ न वनूँ तो अपयश हो जायगा। लोग कहने लगेंगे कि बूढ़ा दशरथ न किसी समर में मरा; न वार्द्धक्य प्राप्त करने के वाद पूर्ण धर्म साधनार्थ उसने संन्यास लिया। ऐसी अपकीर्ति हो गई तो मानव-जन्म व्यर्थ गया। इसके अतिरिक्त क्या मिल सकता है ?। २८

❀ पॆरुमह नॆऩ्वयिऱ् पिऱक्कच् चीदयाम्
तिरुमहण् मणविनै तॆरियक् कण्ड याऩ्
अरुमह निऱैकुणत् तवत्ति मादॆऩुम्
ऒरुमहण् मणमुङ्गण् डुवप्प वॆण्णिनेऩ् 29

पॆरुमकऩ्–पुरुषोत्तम (राम); ऎऩ् वयिऩ् पिऱक्क–मेरा पुत्र पैदा हुआ और; चीतै आम् तिरुमकळ्–सीता नाम की लक्ष्मीदेवी के साथ (उसका); मणविनै–विवाह हुआ, उसको; तॆरिय कण्ट याऩ्–प्रत्यक्ष देखा मैने, ऐसा मै; अरु मकऩ्–श्रेष्ठ पुत्र का; निऱै कुणत्तु–पूर्ण-गुण वाली; अवत्ति मातु ऎऩुम्–भूमि देवी रूपी; ऒरु

मकळ् मणमुम्–एक देवी के साथ विवाह भी; **कण्टु उवप्प**–देखकर आनन्दित होने की बात; **ऍण्णिनॅन्**–सोची। २८

राम पुरुषोत्तम है। वह मेरा पुत्र पैदा हुआ। उसका श्रीलक्ष्मी देवी और भूदेवी दोनों के साथ परिणय हो, यही उचित है। सीता के साथ उसका विवाह कराकर मैंने अपनी आँखों से लक्ष्मी का विवाह देख लिया। अब सर्वगुणसम्पन्न भूदेवी से भी उसका विवाह देखकर आनन्द पाना चाहता हूँ। (श्रीविष्णु के दो देवियाँ मानी जाती हैं— श्रीदेवी और भूदेवी। श्रीराम विष्णु के अवतार थे। इसलिए भूदेवी से उनके व्याह की बात उचित है। अलावा साहित्य में राजा को भूमि का पति मानना प्रचलित है।) । २९

निवप्पुरु निलत्तैनु निरम्बु नङ्गयुम्
शिवप्पुरु मलर्मिशैच् चिरन्द शॅल्वियुम्
उवप्पुरु कणवनै युयिरि नॅय्दिय
तवप्पयन् ताळ्प्पदु दरुम मन्ररो 30

निवप्पु उरु–उत्कृष्ट; निलत् ॲत्तुम्–भूमि रूपी; निरम्पु नङ्कैयुम्–सर्वगुणपूर्णा देवी भी; चिवप्पु उरु मलर् मिचै–ललाई लिए रहनेवाले (कमल) फूल पर; चिरन्त–शोभने वाली; चॅल्वियुम्–श्रीदेवी; उवप्पु उरु–मन भानेवाले; कणवनै–नायक को; उयिरिन्–अपने प्राणों के समान; ॲय्तिय तवम् पयन्–प्राप्त करानेवाले तप के फल की प्राप्ति को; ताळ्प्पतु–स्थगित कराना; तरुमम् अन्रु–धर्म नहीं होगा। ३०

अब दोनो देवियाँ— उत्कृष्ट भूमि की देवी और लाल-कमल-निवासिनी श्रीदेवी अपनी इच्छा-योग्य पति को, जो उनके प्राणों के समान उन्हें प्यारा है, अपनी तपस्या के फल के आधार पर पानेवाली हैं। उसमें देरी कराना धर्म नहीं होगा। ३०

❀आदला लिरामनुक् करशै नल्हियिप्
पेदमैत् तायवरुम् बिरप्पै नीक्कुवान्
मादवन् दॉडङ्गिय वनत्तै नण्णुवेन्
यादुनुङ् गरुत्तॅन विनैय कूरिनान् 31

आतलाल्–इसलिए; अरचै–राज को; इरामनुक्कु नल्कि–राम को देकर; पेतैमैत्तु आय् वरुम्–अविद्या से प्राप्य; पिरप्पै–जन्म को; नीक्कुवान्–रोकने के लिए; मा तवम् तॉटङ्किय–बड़ी तपस्या करने के हेतु; वनत्तै नण्णुवेन्–वन में जाऊँगा; नुम् करुत्तु यातु–आपकी राय क्या है; ॲन्–ऐसा; इनैय कूरिनान्–ये बातें कहीं, (दशरथ ने)। ३१

इसलिए राज्य को राम के पास सौंपकर, अविद्याजन्य जन्म को रोकने

के हेतु बड़ी तपस्या करने की इच्छा से मैं वन में जाना चाहता हूँ। इसमें आपकी राय क्या है ? दशरथ ने सारी बातें कहकर यह प्रश्न किया। ३१

तिरण्ड तोळित्त तिप्पडिच् चॅप्पवुम् जिन्दै
पुरण्डु मीदिडप् पॉङ्गिय वुवहय राङ्गे
वॅरुण्डु मन्नवन् पिरिवॅनुम् विम्मुरु निलैयाल्
इरण्डु कन्ड्रिनुक् किरङ्गुमो रावॅन्न विरुन्दार् 32

तिरण्ट तोळितन्–पुष्ट कन्धों वाले (दशरथ) के; इप्पटि चॅप्पवुम्–ऐसा कहने पर; चिन्तै–मन में; पुपण्टु मीतु इट–उठकर ऊपर; पॊङ्किय–उमड़ते हुए; उवकैयर–आनन्द से पूरित हो; आङ्के–तभी; मन्तवन् पिरिवु ऍन्नुम्–राजा का बिछोह रूपी; विम्मुरु निलैयाल्–दुखदायक स्थिति से; वॅरुण्टु–घबड़ाकर; इरण्टु कन्ऱितुक्कु–दो बछड़ों के बीच; इरङ्कुम् ओर् आ ऍन्न–स्नेहार्द्र गाय के समान; इरुन्तार्–रह गये। ३२

पुष्ट कंधों वाले दशरथ के यों कहने पर मन्त्री लोगों के मन में अपार हर्ष उमड़ आया। लेकिन तभी राजा का बिछोह भी उन्हें खलने लगा। तब वे उस गाय की-सी दशा में पड़ गये जो दो बछड़ों से स्नेह करके असमंजस में पड़ जाती हो। वे भ्रमित रह गये। ३२

अन्न रायिनु मरशनुक् कदुवल्ल दुरुदि
पिन्न रिल्लॅन्नक् करुदियुम् वॅरुनिल वरैप्पिन्
मन्नु मन्नुयिर्क् किरामनिन् मन्नव रिल्लै
ऍन्न वुन्नियुम् विदियदु वलियिनु मियैन्दार् 33

अन्नर् आयितुम्–वैसी दशा में रहने पर भी; अरचनुक्कु–राजा का; पिन्नर् उरुति–पर-जीवन-हित; अतु अल्लतु इल्–वह (तपस्या) छोड़ दूसरा नहीं; ऍन्न करुतियुम्–यह सोचकर, और; पॆरु निल वरैप्पिल्–विशाल भूतल में; मन्नुम्–रहनेवाले; मन् उयिर्क्कु–अक्षय जीवों के लिए; इरामतिन्–श्रीराम के समान; मन्नवर्–राजा; इल्लै–नहीं मिलेंगे; ऍन्न उन्नियुम्–यह भी सोचकर; वितियतु वलियितुम्–और विधि के प्रभाव से; इयैन्तार्–सहमत हुए। ३३

दशरथ-वियोग को दुख मानते हुए भी उन्होंने उनके सुझाव को सहमति दी क्योंकि दशरथ का हित तपस्या को छोड़ और किसी में नहीं था। विशाल भूमि पर रहनेवाले सभी अक्षय जीवों के लिए श्रीराम के समान कोई भला राजा नही मिल सकता था। उन्होंने यह सोचा और प्रबल विधि का भी विधान वही था। ३३

*इरुन्द मन्दिरक् किळवर्द मॅण्णमु महन्पाल्
परिन्द शिन्दयम् मन्नवन् करुदिय पयनुम्

पौरुन्नु मन्नुयिर्क् कुरुदियुम् पौदुवुड़ नोक्कित्
तॅरिन्द नान्मड़ैत् तिशैमुहन् ड़िरुमहन् चॅप्पुम् 34

तॅरिन्त नाल् मड़ै–पठित चारों वेदों का ज्ञान रखनेवाले; तिचैमुकन् तिरु मकन्–चतुर्मुख के पुत्र; इरुन्त–(सभा में) रहनेवाले; मन्तिरम् किळवर् तम् ॲण्णमुम्–(मन्त्रणा देनेवाले) मन्त्रियों का विचार और; मकन् पाल्–अपने पुत्र पर; परिन्त–वात्सल्य रखनेवाले; चिन्तै–मन के; अ मन्तवन्–उन राजा (दशरथ) के; करुतिय–सोचे हुए; पयतुम्–सुफलदायी कार्य को; मन् उयिर्क्कु–(और उससे) स्थायी प्रजाजनों को; पौरुन्तुम् उड़ुतियुम्–प्राप्य भले को; पौतु उड़ नोक्कि–तटस्थता से देखकर; चॅप्पुम्–बोले। ३४

तब वसिष्ठजी बोले। वेदज्ञ और ब्रह्मा के पुत्र उन्होंने सभी सलाहकार मन्त्रियों का विचार, अपने पुत्र पर अगाध वात्सल्य रखनेवाले दशरथ का सोचा हुआ शुभकार्य, और अक्षय प्रजाजनों का हित —इन सब पर तटस्थता से विचार किया। उन्होंने यों कहा। ३४

[तमिळ में "मन् उयिर" कहने की परिपाटी है। जीवात्मा भी परमात्मा के समान शाश्वत है, यह हिन्दू धर्म में जाना जाता है। दूसरा जब तक लोक है तब तक जीव रहेंगे ही]।

* निरुब निन्कुल मन्नवर् नेमिपण् डुरुट्टिप्
पॅरुमै यॅय्दिनर् यावरे यिरामनैप् पॅड़्ड़ार्
करुम मुम्मिदु कड़्ड़ुणर्न्दोर्हट्कुक् कडव
दरुम मुम्मिदु तक्कदे निनैन्ददै तहवोय् 35

तकवोय्–महिमावान; निरुप–नृप; पण्टु–पहले; नेमि उरुट्टि–(आज्ञा-)चक्र चलाकर; पॅरुमै ॲय्तिनोर्–कीर्ति प्राप्त; निन् कुलम् मन्तर्–आपके कुल के राजाओं में; यावर् इरामनै पॅड़्ड़ार्–किसने राम को (पुत्र के रूप में) पाया; करुममुम् इतु–कर्म यही है; कड़्ड़ुणर्न्तोर्कट्कु–धर्मशास्त्र का अध्ययन कर जिन्होंने ज्ञान प्राप्त किया है उन्हें; कटव–कर्तव्य; तरुममुम् इतु–धर्म भी यही है; तक्कते निनैन्तनै–उचित ही (आपने) सोचा है। ३५

हे महिमावान ! आपका भाग्य अभूतपूर्व है। आपके पहले जितने भी राजा आज्ञाचक्र चलाकर गौरवान्वित हुए उनमें किसका भाग्य था कि श्रीराम उसके पुत्र पैदा होते ? अब यही यानी तप करना आपका श्रेष्ठ कर्म भी है; और शास्त्रज्ञों का कर्तव्य धर्म भी है। आपने बहुत ही उचित बात सोची है ! । ३५

पुण्णि यम्बुरि वेळ्विहळ् यावयुम् बुरिन्द
अण्ण लेयिति यरुन्दव मियड़्ड़वु मडुक्कुम्
वण्ण मेहलै निलमहण् मड़ुत्तैप् पिरिन्दु
कण्णि ळ्न्दिल ळैतच्चॅयु नीतन्द कळ्सोन् 36

पुण्णियम् पुरि–पुण्यकारी; वेळ्विकळ् यावैयुम्–(कर्तव्य) सभी यज्ञ; पुरिन्त–(जो) कर चुके; अण्णले–हे महिमावान; इनि–आगे; अरु तवम्–उपादेय तप; इयऱ्ऱवुम् अटुक्कुम्–करना भी उचित ही होगा; वण्णम् मेकलै–सुन्दर मेखलाधारिणी (समुद्र-मेखला); निलम् मकळ्–पृथ्वी देवी; उनै पिरिन्तु–आपको छोड़कर; कण् इळन्तिलळ्–आँखों से हीन नहीं हुई; अँन–ऐसा; नी तन्त कळलोन्–आपके (पुत्र) पायलधारी श्रीराम; चैयुम्–(कार्य) करेंगे। ३६

पुण्यप्रद सभी यज्ञों के याजी! अब तपस्या करना भी उपयुक्त ही है। सुन्दर (समुद्र–)मेखला पृथ्वी आपसे बिछुड़ने से आँखों से हीन नहीं हो जाय यह व्यवस्था आपके पुत्र वीर पायलधारी श्रीराम कर देंगे। ३६

❀ पुऱत्तु नामोरु पौरुळिनिप् पुहल्हिन्ऱ दैवनो
अऱत्तिन् मूर्त्तिवन् दवदरित् तानॆन्व दल्लाल्
पिऱत्ति यावयुङ् गात्तवै पिन्निन्ऱु तुडैक्कुम्
तिऱत्तिन् मूवरुन् दिरुत्तिन तिरुत्तुमत् तिऱलोन् 37

अऱत्तिन् मूर्त्ति–धर्मस्वरूप परात्पर; वन्तु–(स्वेच्छा से) आकर; अवतरित्तान् ॲन्पतु अल्लाल्–अवतरित हुए हैं, इसके सिवा; पुऱत्तु–और; नाम–हम; ओरु पौरुळ्–कोई बात; पुकल्किन्ऱतु ॲवन्–कहें क्या; यावैयुम् पिऱत्तु–सबको उत्पन्न करके; पिन् निन्ऱु कात्तु–बाद उन सब की रक्षा कर; अवै तुटैक्कुम्–उन सब को मिटाने का; तिऱत्तिन् मूवरुम्–सामर्थ्य रखनेवाले तीनो के; तिरुत्तिन–कृत्यों को; अ तिऱलोन्–वह सर्वशक्तिमान; तिरुत्तुम्–स्वयं अकेले पूरा करेंगे। ३७

'स्वयं परात्पर भगवान, धर्ममूर्ति अपनी इच्छा से अवतरित हुए हैं' इसके अलावा हम और क्या कह सकेंगे? सृष्टि, स्थिति और संहार के तीनो के कर्ता ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र तीनो जो करने का सामर्थ्य रखते हैं उन तीनो के कार्य को ये अकेले ही कर चुकेंगे। ३७

पौन्नु यिर्त्तपू मडन्दयुम् बुवियॆनुन् दिरुवुम्
इन्नु यिर्त्तुणै यिवनॆन निनैक्किन्ऱ विरामन्
तन्नु यिर्क्कॆन्ऱ पुल्लिदु तऱ्पयन् दॆडुत्त
उन्नु यिर्क्कॆन नल्लन्मन् नुयिर्क्कॆला मुरवोय् 38

उरवोय्–शक्तिमन्त; पौन् उयिर्त्त–सुन्दरता की जननी; पू मटन्तैयुम्–कमला श्रीदेवी; पुवि ॲनुम् तिरुवुम्–और भूदेवी; इवन् इन् उयिर् तुणै–ये हमारे प्यारे प्राणाधार हैं; ॲन निनैक्किन्ऱ–ऐसा (जिनको) मानती हैं; इरामन्–वे श्रीराम; तन् उयिर्क्कु–मेरे प्राणों का; (नल्लन्–हितकारी); ॲन्ऱ पुल्लितु–कहना छोटी बात है; (अवन्) तन् पयन्तु ॲटुत्त–उनको जिन्होने जन्म दिया; उन् उयिर्क्कु ॲन–उन आपके प्राणो के लिए, जैसे; मन् उयिर्क्कु ॲल्लाम्–अक्षय सभी जीवों के लिए; नल्लन्–हित हैं। ३८

शक्तिमान! शोभाशालिनी श्रीदेवी और भूदेवी दोनो इनको अपने-अपने प्राण-प्यारे नाथ समझती हैं। ऐसे श्रीराम को आप अपने प्राणों का

हितकारी समझते हैं, यह छोटा विचार है। उनके जन्मदाता आपके लिए जैसे वे हितरक्षक हैं उतने ही सभी जीवों के धाता हैं। ३८

वार मॅन्निनिप् पहर्वदु वैहलु मनैयान्
पेरि नाल्वरु मिडरॅलाम् बॅयर्हिन्र पयत्ताल्
वीर निन्कुल मैन्दनै वेदियर् मुदलोर्
यारुन् दाऩ्जॅय्द नल्लऱप् पयनॅन विरुप्पार् 39

वीर-प्रतापी; वैकलुम्-रोज; अतैयान्-उनके; पेरिनाल्-नामस्मरण से; वरुम् इटर् ॲलाम्-आनेवाले संकट सब; पॅयर्किन्र पयत्ताल्-हट जाते हैं, इस फल से; निन् कुलम् मैन्तनै-आपके उत्तम पुत्र को; वेतियर् मुतलोर् यारुम्-वेदज्ञ ब्राह्मण आदि सब; ताम् चॅय्त नल् अऱम् पयन् ॲन-हमारे किये श्रेष्ठ धर्मों का फल समझते; इरुप्पार्-रहते हैं; वारम्-प्रजाजनों का; ॲन् इति पकर्वतु-आगे क्या कहा जाय। ३९

हे वीर! आनेवाले सभी संकट श्रीराम के दैनिक नामस्मरण से दूर हो जाते हैं। इस कारण वेदज्ञ विप्र सब श्रीराम को अपने सुकृतों का सुफल जानकर उनसे भक्ति करते रहेंगे। तो मामूली प्रजाजनों की बात कहने की आवश्यकता है क्या? वे भी उन पर अगाध भक्ति रखेंगे। ३९

मण्णि नुन्नल्लण् मलर्महळ् कलैमहळ् कलैयूर्
पॅण्णि नुन्नल्लळ् पॅरुम्बुहळ्च् चनहियो नल्लळ्
कण्णि नुन्नल्लन् कऱ्ऱवर् कऱ्ऱिला दवरुम्
उण्णु नीरिनु मुयिरिनु मवनैये युहप्पार् 40

मण्णिलुम् नल्लळ्-(क्षमा में) पृथ्वी से अधिक भली; मलर् मकळ्-कमला; कलैमकळ्-सरस्वती; कलै ऊर पॅण्णिनुम्-हरिणवाहना (सती) देवी से; नल्लळ्-(क्रमशः सौंदर्य, बुद्धिशक्ति और चारित्र्य में) अधिक श्रेष्ठ; चनकियाम् नल्लळ्-जानकी जो उत्तम है, उनकी; कण्णिनुम् नल्लन्-आँखें भी श्रेष्ठ हैं; कऱ्ऱवर् कऱ्ऱिलातवरुम्-शिक्षित और अशिक्षित; उण्णुम नीरिनुम्-पेय जल से भी; उयिरिनुम्-अपनी जान से भी; अवनैये उकप्पर्-उनको चाहते है। ४०

सीताजी क्षमा में पृथ्वी से, सौन्दर्य में कमला से, बुद्धि-शक्ति में सरस्वती से और सतीत्व में स्वयं सतीदेवी से बढ़कर भली हैं। उनकी भी आँखों में श्रीराम श्रेष्ठ हैं। शिक्षित और अशिक्षित सभी लोग उन्हें अपने पेय जल से भी अधिक, अपने प्राणों से भी अधिक मानकर आनन्द अनुभव करेंगे। ४०

मन्निदर् वानवर् मऱ्ऱुळो रऱ्ऱङ्गात् तळिप्पार्
इन्निय मन्नुयिर्क् किरामनिऱ् चिऱन्दव रिल्लै
अनैय नादलि नरशनिऱ् कुऱुपॊरु ळरियिन्
पुन्निद मादव मल्लदॊन् ऱिल्लॅनप् पुहन्ऱान् 41

अरच–राजन; मतितर्–मनुष्य; वातवर्–देव; मऱ्ऱु उळ्ळोर–अन्य सबों के; इनिय मन् उयिर्क्कु–प्रिय और शाश्वत जीव (आत्मा) को; अऱ्ऱम् कात्तु हानियों से बचाकर; अळिप्पार्–सुरक्षित करनेवाले; इरामनिऩ्–श्रीराम से बढ़कर; चिऱन्तवर् इल्लै–श्रेष्ठ (कोई) नहीं है; अत्तैयन् आतलिऩ्–वैसे हैं, इसलिए; निऩ्कु उऱु पॉरुळ् अऱियिऩ्–आपका हित सोचें तो; पुनितम् मातवम् अल्लतु–पवित्र तप का आचरण छोड़कर; ऑऩ्ऱु इल् अँत्त–दूसरा कोई नहीं है, यह; पुकऩ्ऱाऩ्–कहा। ४१

राजन् ! मानव हों, सुर हों या अन्य; सभी प्राणियों को हानि से बचाकर अपनी कृपा का पात्र बनाकर पालन करनेवाले, श्रीराम से बढ़कर कोई नहीं मिल सकते। चूँकि वे ऐसे है, आपको अपने हित में पवित्र तपस्या करने जाने के अतिरिक्त कोई दूसरा कर्तव्य नही है। —महर्षि वसिष्ठजी ने यों कहा। ४१

❀ मऱ्ऱ वऩ्शॉऩ्ऩ वाशहङ् गेट्टलु महत्तैप्
पॅऱ्ऱ वऩ्ऱिनुम् बिज्जहऩ् पिडित्तवप् पॅरुविल्
इऱ्ऱ वऩ्ऱिनु मॅऱिमऴु वाळव निऴुक्कम्
उऱ्ऱ वऩ्ऱिनुम् पॅरियदो रुवहैय नाऩाऩ् 42

अवन् चॉन्न वाचकम् केट्टलुम्–उनके वचन सुनते ही; मकत्तै पॅऱ्ऱ अन्ऱिनुम्–उनके जन्म के दिन से; पिञ्ञकन् पिटित्त–शिवगृहीत; अ पॅरु विल्–उस बड़े चाप के; इऱ्ऱ अन्ऱिनुम्–भंजन के दिन से; ऍऱि–फेंके जानेवाले; मऴु वाळवन्–परशुशस्त्रधारी परशुराम; इऴुक्कम् उऱ्ऱ अन्ऱिनुम्–(जब) परास्त हुए उस दिन से भी; पॅरियतु ओर्–अधिक बड़ा; उवकैयन् आनान्–आनन्दित हुए। ४२

दशरथ ने उनके कथन सुने तो उन्हें अपार हर्ष हुआ। पुत्र-जन्म के दिन, शिवचाप-भंजन के दिन, और परशुरामगर्व-भंग के दिन, जो आनन्द उन्हें हुआ था उससे कई गुना अधिक आनन्द अब हुआ। ४२

अन्नय दाहिय वुवहयन् कण्गणी ररुम्ब
मुनिवन् मामलर्प् पादङ्गण् मुऱैमैयि निऱैञ्जि
इनिय शॉल्लिनै यॅम्बॅरु मानरुळ् वऴियिन्
तनिय नानिलन् दाङ्गिय दवऱ्कदु तहादो 43

अत्तैयतु आकिय–उस प्रकार के; उवकैयन्–आनन्दयुक्त दशरथ; कण्कळ् नीर् अरुम्प–आँखो में (अश्रु-) जल के ढलकते; मुनिवन्–मुनिवर के; मा–उत्तम; मलर् पातङ्कळ्–कमल चरणों की; मुऱैमैयिन् इऱैञ्चि–उचित रीति से वन्दना करके; ऍम् पॅरुमान्–मेरे नाथ; इनिय चॉल्लित्तै–हितवचन कहे; वऴियिन्–(आप से निर्दिष्ट) मार्ग पर; तनियन्–(चलकर) अकिंचन मैने; नातिलम् ताङ्कियतु–भूमि का भरण किया; अरुळ् वऴियिन्–आपके कृपा से निर्दिष्ट मार्ग से ही; अतु–वह (मार्गदर्शन की कृपा); अवऱ्कु–श्रीराम को भी; तकातो–प्राप्य नहीं होगा क्या। ४३

ऐसे आनन्द से भरकर राजा ने अश्रुमय आँखों के साथ-साथ मुनिवर के कमल-चरणों की यथाविधि वन्दना की। "मेरे नाथ ! आपने बहुत ही हित-वचन कहे। आपके निर्दिष्ट मार्ग पर चलकर ही, अकिंचन मैंने भू-भार वहन किया। अब वही आपकी मार्गदर्शन की कृपा श्रीराम को भी प्राप्य नहीं होगी क्या ? अवश्य होगी। वह भी उसके योग्य रहेगा। ४३

ॲन्दै नीयुवन् दिदञ्जॊल वॆङ्गुलत् तरशर्
अन्द मिल्लदोर् पॆरुम्बुह ऴवनियि निरुत्ति
मुन्दु वेळ्वियु मुडित्तुत्तम् मिरुवित्तै मुडित्तार्
वन्द दव्वरु ळॆनक्कुमॆन् ऱुरैशॆय्दु महिऴ्न्दान् 44

ॲन्नै–पितृतुल्य; ॲम् कुलत्तु अरचर्–मेरे कुल के राजाओं ने; नी उवन्तु इतम् चॊल–आपके सन्तुष्ट होकर हितोपदेश करते; अवनियिल्–अवनि में; अन्तम् इल्लतु–सीमाहीन; ओर् पॆरु पुकऴ् निऱुत्ति–एक बड़ा यश स्थापित करके; मुन्तु वेळ्वियुम् मुटित्तु–पहली श्रेणी के अनेक यज्ञ पूरा करके; तम् इरु वित्तै मुटित्तार्–अपने दोनो कर्म-(वासना-)क्षय कर लिया; अ अरुळ्–वह कृपा; ॲनक्कुम् वन्ततु–मुझे भी मिली; ॲन्ऱु उरै चॆय्तु–ऐसा कथन करके; मकिऴ्न्तान्–आनन्दमग्न हुआ। ४४

मेरे पितृतुल्य ! मेरे पूर्वजों ने आपके तत्व-हितोपदेश के कारण भूमि पर बड़ा यश अर्जित कर स्थायी बनाया; अनेक श्रेष्ठ यज्ञ सम्पन्न किये और अपने पाप-पुण्य दोनो कर्मों का क्षय करा लिया (मुक्ति के योग्य बने)। वह कृपा मुझे भी प्राप्त हुई।" —यह दशरथ ने सानन्द कहा। ४४

* पऴुदिन् मादवन् पिन्नॊन्ऱुम् पणित्तिल निरुन्दान्
मुऴुदु मॆण्णुरु मन्दिरक् किऴवर्तम् मुहत्ताल्
ॲऴुदि नीट्टिय विङ्गिद मिऱैमहर् केऱत्
तॊऴुद कैयिनन् सुमन्दिरन् मुन्निन्ऱु शॊल्लुम् 45

पऴुतु इल् मातवन्–निर्मल और महान तपस्वी; पिन् ऒन्ऱुम् पणित्तिलन्–फिर कुछ नहीं बोले; इरुन्तान्–चुप रह गये; मुऴुतुम् ॲण्णुरु–सभी ओर से (बात का) विचार करनेवाले; मन्तिरम् किऴवर्–परामर्शदाता मन्त्रियों के; तम् मुकत्ताल् ॲऴुति नीट्टिय–अपने-अपने मुखों (भावप्रदर्शन) से लिखकर बढ़ाये हुए (प्रकट किये गये); इङ्कितम्–इंगित को; इऱै मकऱ्कु–राजा को; एऱ–समझाते हुए; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र; मुन् निन्ऱु–सामने खड़े होकर; तॊऴुत कैयिनन्–हाथ जोड़कर; चॊल्लुम्–कहने लगे। ४५

पवित्र और महान तपस्वी वसिष्ठजी ने आगे कुछ नहीं कहा। वे मौन रह गये। तब मन्त्रिमण्डल के सभी सदस्यों की सम्मिलित राय को,

उनके मुखों पर अंकित भावों के प्रतिफलन से समझकर सुमंत्र नाम के मन्त्री हाथ जोड़कर खड़े हो गये और दशरथ के सामने निम्नलिखित वचन कहने लगे। ४५

❀ उऱत्त हुम्मर शिरामऱ्कॅऩ् ऱुवक्किऩ्ऱ मत्तत्तै
तुऱत्ति नीयॅन्नुम् जॊऱ्चुडु मुऩ्गुलत् तॊल्लोर्
मऱत्तल् शॅय्हलात् तरुमत्तै मऱप्पदुम् वऴक्कऩ्
ऱऱत्ति नूड्गिनिक् कॊडिदॅन लावदॊऩ् ऱियादे 46

अरचु इरामऱ्कु उऱ तकुम्–राज्य श्रीराम का होना उपयुक्त है; ऍन्ऱु–ऐसा; उवक्किन्ऱ मत्तत्तै–मोद करनेवाले मन को; नी तुऱत्ति–आप वैराग्य ले रहे हैं; ऍन्नुम् चॊल्–यह कथन; चुट्टुम्–जलाता है (क्लेश देता है); उन् कुलम् तॊल्लोर्–आपके कुल के पूर्वजो ने; मऱत्तल् चॅय्कला–(जिसको) नहीं भुलाया; तरुमत्तै–उस धर्म को; मऱप्पतुम्–(आपका) भूल (छोड़) जाना भी; वऴक्कु अन्ऱु–योग्य नहीं है; इति–अव; अऱत्तिन् ऊड्कु–धर्म से वढ़कर; कॊटितु ऍन्तल् आवतु–क्रूर (दुख देनेवाला) कहलाने योग्य; ऑन्ऱु यातु–एक क्या है। ४६

श्रीराम को राज मिलेगा और वे उसके परम योग्य है —इस विचार से हुलसित-मन आप संन्यास ले लेगे —यह वात सुनकर मन विदग्ध हो जाता है। आपके पूर्वजों ने ज्येष्ठ पुत्र को राज देकर स्वयं तपस्या करने की परिपाटी चलाई है और वह अचूक चलती है। उसको भुलाना भी सही नहीं होगा। धर्म भी कितना निष्ठुर है! उससे वढ़कर निर्मम कौन सी वस्तु है? । ४६

पुरैशै माल्करि निरुबरुम् बुरत्तुरै वोरुम्
उरैशॅय मन्दिरक् किऴवरु मुनिवरु मुवप्प
मुरैश मार्प्पनिन् मुदन्मणिप् पुदल्वनै मुऱैयाल्
अरैश नाक्किय पिन्बुनक् कडुत्तदु पुरिवाय् 47

पुरैचै माल् करि–रस्सी सहित वड़े गजों के; निरुपरुम्–स्वामी राजा लोग और; पुरत्तु उऱैवोरुम्–नगरवासी; उरै चॅय् मन्तिरम् किऴवरुम्–परामर्श देनेवाले मन्त्रीगण; मुनिवरुम्–मुनि; उवप्प–इनको आनन्द देते हुए; मुरैचम् आर्प्प–भेरियों के नर्दन के साथ; निन्–आपके; मुतल् मणि पुतल्वनै–ज्येष्ठ नीलीमणि-सम पुत्र को; मुऱैयाल्–वेदोक्त रीति से; अरचन् आक्किय पिन्पु–राजा बनाने के बाद; अटुत्ततु–अपना उपयुक्त (तप का) कार्य; पुरिवाय्–कीजिए। ४७

आप कृपया एक काम कीजिये। पहले आप वेदोक्त रीति से अपने ज्येष्ठ पुत्र, नीलमणिवर्ण श्रीराम को राजा वना दीजिए ताकि गजपति राजा लोग, नगरवासी, मन्त्रीगण, मुनि, सवको सन्तोष हो जाय। फिर आप तपस्या करने जाइये। ४७

❀ ऍन्ऱ्उ वाशहम् जुमन्दिर त्तियम्बलु मिऱैवन्
नन्ऱु शौल्लिनै नम्बियै नळिमुडि शूट्टि
निन्ऱु निन्ऱदु शॆय्वदु विरैविनि नीये
शॆन्ऱु कौण्डणै तिरुमहळ् कौळुननै ऍन्ऱान् 48

ऍन्ऱ वाचकम्–ऐसे वाक्य; चुमन्तिरन् इयम्पलुम्–सुमन्त्र के कहने पर; इऱैवन्–राजा ने; नन्ऱु चॊल्लिनै–भला कहा; नम्पियै–नायक को; नळि मुटि चूट्टि निन्ऱु–गौरवपूर्ण मुकुट पहना चुककर; निन्ऱतु चॆय्वतु–बचा रहा काम करना; नीये–आप ही; विरैविनिल् चॆन्ऱु–सत्वर जाकर; तिरुमकळ् कॊळुननै–श्रीपति को; कॊण्टु अणै–ले आइये; ऍन्ऱान्–कहा। ४८

सुमंत्र के ये वचन सुनकर राजा ने उनसे कहा कि आपने ठीक कहा। श्रीराम को श्रेष्ठ गौरव बढ़ानेवाले मुकुट पहनाने के बाद ही दूसरा कार्य करूँगा। आप ही सत्वर जाकर श्रीपति को ले आयें। ४८

❀ अलङ्गन् मन्ननै यडितॊळु दवन्मन मनैयान्
विलङ्गन् माळिहै वीदियिन् विरैवॊडु शॆन्ऱान्
तलङ्गळ् यावयुम् पॆऱ्ऱनन् ऱानॆनत् तळिर्प्पान्
पॊलङ्गॊ डेरॊडु मिराहवन् तिरुमनै पुक्कान् 49

अवन् मनम् अनैयान्–उनके ही मन के समान मन वाले; अलङ्कल् मन्ननै–मालाभूषित राजा के; अटि तॊळुतु–चरणों पर प्रणाम करके; तलङ्कळ् यावैयुम्–भूतल सब; तान् पॆऱ्ऱनन् ऍन्न–खुद प्राप्त कर लिया जैसे; तळिर्प्पान्–हुलसकर; पॊलम् कॊळ् तेरॊटु–स्वर्णनिर्मित रथ के साथ; विलङ्कल् माळिकै–पर्वत-सम सौधों वाले; वीतियिन्–मार्गों में; विरैवॊटु–सत्वर; चॆन्ऱान्–गये; इराकवन् तिरुमनै–श्रीराघव के महल में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। ४९

राजा के मन के अनुकूल ही सुमंत्र का मन भी सोचने का आदी था। उन्होंने मालाधारी राजा दशरथ के चरणों पर प्रणमन करके श्रीराम के महल की ओर प्रस्थान किया। उनके मन में ऐसा आनन्द उमड़ा मानो उन्हीं को सारी भूमि पर अधिकार मिल गया हो। वे रथ पर गये और रथ उस राजमार्ग पर गया जिसके दोनों किनारों पर पर्वत के समान उन्नत प्रासाद बने थे। स्वर्णमय रथ श्रीराम के महल को पहुँचा और सुमंत्र श्रीराम के महल के अन्दर प्रविष्ट हुए। ४९

❀ पॆण्णि नित्नमु दन्नव डन्नॊडुम् बिरिया
वण्ण वञ्जिलैक् कुरिशिलु मरुङ्गिनि दिरुप्प
अण्ण लाण्डिरुन् दान्ळ हुरुनर वॆन्नत्तन्
कण्णु मुळ्ळमुम् वण्डॆनक् कळिप्पुरक् कण्डान् 50

अण्णल्–पुरुष श्रेष्ठ; पिरिया–अपने से कभी अलग न होनेवाले; वण्णम् वॆम् चिलै कुरिचिलुम्–सुन्दर और भयंकर धनुष के लघराज (लक्ष्मण) के; मरुङ्कु इनितु

इरुप्प–पार्श्व में सुख से रहते; पॆण्णिऩ्–स्त्रियों में; इऩ् अमुतु अऩ्ऩवळ् तऩ्ऩॊटुम्–प्रिय सुधासम देवी (जानकी) के साथ; आण्टु–वहाँ; इरुन्ताऩ्–विराजे रहे; अऴकु–उनके सौंदर्य को; अरु नऱवु अॆऩ्ऩ–अपूर्व शहद के समान; वण्टु अॆऩ्ऩ–भ्रमर जैसे; तऩ् कण्णुम् उळ्ळमुम्–आँखें और मन; कळिप्पु उऱ–आनन्द से पूर्ण हो जायँ, ऐसा; कण्टाऩ्–दर्शन किया। ५०

वहाँ श्रीराम अपनी पत्नी सीताजी के साथ, जो स्त्रियों में अमृत के समान श्रेष्ठ थी, विराजमान थे। उनके पास लघुराज लक्ष्मण भी, जो उनसे कभी अलग नही जाते थे, विराजमान थे। श्रीराम का सौन्दर्य सुमंत्र के नेत्रों और मन के लिए श्रेष्ठ शहद के समान सावित हुआ। सुमंत्र ने मन में उल्लास के साथ उनको देखा। ५०

❀ कण्डु कैतॊऴु दैयविक् कडलिडैक् किऴवोऩ्
उण्डोर् कारियम् वरुहॆऩ्ऩ वुरैत्तऩ ऩॆऩ्ऩलुम्
पुण्ड रीकक्कट् पुरवलऩ् पॊरुक्कॆऩ वॆऴुन्दोर्
कॊण्डल् पोऱ्चॆऩ्ऱु कॊडिनॆडुन् देर्मिशैक् कॊण्डाऩ् 51

कण्टु–देखकर; कै तॊऴुतु–हाथ जोड़कर; ऐय–मेरे नाथ; इ कटल् इटै–इस समुद्र-मध्य; किऴवोऩ्–(भूमि के) पति ने; ओर् कारियम् उण्टु–एक कार्य है; वरुक अॆऩ्ऩ–आओ, यह; उरैत्तऩऩ्–कहा; अॆऩ्ऩलुम्–कहते ही; पुण्टरीकम् कण् पुरवलऩ्–पुण्डरीकाक्ष प्रभु; पॊरुक्कॆऩ–झट; अॆऴुन्तु–उठकर; ओर् कॊण्टल् पोल् चॆऩ्ऱु–एक मेघ समान चलकर; कॊटि नॆटु तेर् मिचै–ध्वजायुक्त व उन्नत रथ पर; कॊण्टाऩ्–सवार हुए। ५१

सुमंत्र ने श्रीराम के दर्शन करके हाथ जोड़कर नमस्कार किया। बाद सन्देश सुनाया कि समुद्रमध्यस्थ पृथ्वी के पति, आपके पिता ने यह कहला भेजा है कि कोई काम है, आओ। यह कहते ही, पुण्डरीकाक्ष, प्रभु श्रीराम तुरत उठे। मेघ जैसे चलकर ध्वजायुक्त ऊँचे रथ पर आरोहण किया। ५१

❀ मुऱैयिऩ् मॊय्म्मुहि लॆऩ्ऩमुर शार्त्तिड मडवार्
इऱैह ळ्ऩ्ऱशङ् गार्त्तिड विमैयव रॆङ्गळ्
कुऱैमु डिन्ददॆऩ् ऱार्त्तिडक् कुञ्जियैच् चूऴ्न्द
नऱैय लङ्गल्वण् डार्त्तिडत् तेर्मिशै नडन्दाऩ् 52

मुऱैयिऩ्–क्रमेण; मॊय् मुकिल् अॆऩ्ऩ–लसे मेघों के समान; मुरचु–ढोल; आर्त्तिट–वज उठे, तव; मटवार्–स्त्रियों के; इऱै कळ्ऩ्ऱ–हाथों से खिसके; चङ्कु–कंकण; आर्त्तिट–शब्द कर उठे; इमैयवर्–देवता लोग; अॆङ्कळ् कुऱै–हमारा संकट; मुटिन्ततु अॆऩ्ऱु–मिटा, यह कहकर; आर्त्तिट–हल्ला मचा उठे; कुञ्चियै चूऴ्न्त–केश को आवृत्त करनेवाली; नऱै अलङ्कल्–शहद ढलकनेवाली मालाओं पर के; वण्टु–भ्रमर; आर्त्तिट–गुंजार उठे, तव; तेर् मिचै नटन्ताऩ्–रथ पर गये। ५२

जब वे वीथी पर चलने लगे तब मर्यादा के अनुसार क्रम से ढोल वज उठे। स्त्रियों के हाथों से खिसककर गिरनेवाले कंकण स्वर कर उठे। देवता लोग, हमारा संकट मिट गया, यह कहते हुए शोर मचाने लगे। श्रीराम के केश पर माला का वलय था; उससे शहद झरता था। उस पर मँडरानेवाले भ्रमरों ने गुंजार किया। इस रीति से श्रीराम रथ पर वढ़ते गये। ५२

पणैनि रन्दत्त पाट्टौलि निरन्दत्त वत्तङ्गत्
कणैनि रन्दत्त नाणौलि करङ्गित्त निरैप्पेर्
अणैनि रन्दत्त वरिवैनुम् पॅरुपुत्त लत्तैयार्
पिणैनि रन्दॅत्तप् परन्दत्तर् नाणमुम् बिरिन्दार् 53

पणै–ढोल (-नाद); निरन्तत्त–(फैल) भर गये; पाट्टु ऑलि–संगीत-नाद; निरन्तत्त–फैल गया; अत्तङ्कत्त् कणै–अनंग-शर; निरन्तत्त–व्याप गये; नाण् ऑलि–(अनंगचाप की) प्रत्यंचा का नाद; करङ्कित्त–सुनाई दिया; अरिवु ऍन्नुम्–बोध रूपी; पॅरु पुत्तल्–विपुल जलराशि; निरै–संयम रूपी; पेर् अणै–बड़े बाँध को; निरन्तत्त–लाँघकर बह गई; अत्तैयार्–वे; नाणमुम् पिरिन्तार्–लाज खोकर; पिणै निरन्त ऍत्त–हरिणियाँ जमा हुईं, जैसे; परन्तत्तर्–आ जमा हुईं। ५३

श्रीराम के चलते समय राजमार्ग पर ढोल-नाद फैला; संगीत का नाद फैला; अनंग शर (अंगनाओं के मनों में) भरे; अनंग के चाप की प्रत्यंचा (भ्रमरों) का टंकार (गुंजार) भरा। स्त्रियों को श्रीराम का बोध रहा और तदुत्पन्न प्रेमाधिक्य की जलराशि संयम रूपी बाँध को लाँघकर वहने लग गई। स्त्रियों का संयम छूट गया और उनकी लाज भी तिरोहित हो गई। वे धैर्य और लाज खोकर भाग आईं और वीथी में हरिणियों के समान जुट गई। ५३

❀ नीळॅ ळुत्तॉडर् वायिनुङ् गुळैयॊडु नॅहिळ्न्द
आळ हत्तिनो डरमियत् तलत्तिनु मलर्न्द
वाळ रत्तवेल् वण्डॊडु कॅण्डैहण् मयङ्गच्
चाळ रत्तिनुस् बूत्तन तामरै मलर्हळ् 54

नीळ् ऍळु तॉटर् वायितुम्–दीर्घ स्तम्भों वाले (प्रासादों के) द्वारों पर; अरमियम् तलत्तितुम्–चन्द्रशालाओं पर; कुळैयॊटुम्–कर्णकुण्डलों के साथ, और; नॅकिळ्न्त–खुले; अळकत्तिनोटुम्–केश के साथ; तामरै मलर्कळ्–(मुख-) कमल; अलर्न्त–खिले; चाळरत्तितुम्–गवाक्षों में भी; वाळ् अरत्तम्वेल्–तलवारों और रक्तरंजित भालों और; वण्टॊटु कॅण्टैकळ्–भ्रमरों के साथ कॅण्टै नाम के मीन; मयङ्क–मिश्रित; पूत्तत्त–खिले। ५४

उन प्रासादों के द्वारों पर, जिनके खंभे अत्युन्नत थे, और उन प्रासादों की चन्द्रशालाओं में कमल विकसित दिखे। वे कमल कुंडलों और विखरे

केश के साथ खिले थे। वैसे ही गवाक्षों में भी कमल खिले थे और वे तलवारों, रक्तरंजित भालों, भ्रमरों और कॅण्ट्टै नाम की मछलियों से युक्त रहे। वे विचित्र कमल स्त्रियों के मुख थे। तलवारें, भाले, भ्रमर और मीन उनके नेत्र थे। ५४

मण्ड	लन्दरु	मदिहॅळ्ळु	मळैमुहि	लनैय
अण्डर्	नायहन्न्	वरैपुरै	यहलत्तु	ळलङ्गल्
तॉण्डै	वाय्च्चियर्	निऱैयॊडु	नाणॊडुन्	दॊडर्न्द
कॅण्डै	युम्मुळ	किळैपयिल्	वण्टॊडु	किडन्द 55

मण्तलम् तरु–भूतलदत्त; मति कॅळु–चन्द्रयुक्त; मळैमुकिल् अनैय–काले मेघ के समान; अण्टर् नायकन्–देवों के नायक, श्रीराम के; वरै पुरै अकलत्तुळ्–पर्वत-सम वक्ष पर शोभित; अलङ्कल्–मालाएँ; तॉण्टै वाय्च्चियर्–बिंब(-फल) सदृश अधरों वाली प्रमदाओं के; निऱैयॊटुम्–संयम और; नाणॊटुम्–लाज के साथ; तॊटर्न्त–अनुगमन करते हुए; कॅण्टैयुम् उळ–कॅण्टै नाम के मीन भी हैं; किळै पयिल् वण्टॊटु–'कैकिळै' नाम की तान अलापनेवाले भ्रमरो के साथ; किटन्त–पड़ी रहीं। ५५

श्रीरामचन्द्र के वक्ष पर माला शोभित थी। उस पर स्त्रियों की आँखे लगी हुई थी। कवि का वर्णन देखिये। भूतल पर अपूर्व रीति से उत्पन्न, चन्द्र सहित मेघ के समान थे श्रीराम। उनका श्रीवक्ष पर्वत के समान था। उनके वक्ष की माला पर स्त्रियों के संयम और लाज का पीछा करते आनेवाली कॅण्ट्टै नाम की मछलियाँ भी पाई जाती थीं और 'कैकिळै' नाम का राग अलापनेवाले भ्रमर भी थे। (भ्रमरों को अभिधा अर्थ में भ्रमर भी ले सकते है या लक्षणा द्वारा प्राप्त आँख के अर्थ में भी ले सकते है।)। ५५

शरिन्द	पूवुळ	मळैयॊडु	कलैयुडत्	ताळप्
परिन्द	पूवुळ	पनिक्कडै	मुत्तिनम्	बडैप्प
ऍरिन्द	पूवुळ	विळमुलै	यिळैयिडै	नुळैय
विरिन्द	पूवुळ	वन्दर	वानिन्ऱु	वीळ 56

मळैयॊटु–मेघों (रूपी केशों) और; कलै–पूर्णचन्द्र (मुखों) के; उड़ ताळ–(लाज से) खूब झुकने से; चरिन्त पू–(केशों से) छूटकर गिरे पुष्प; उळ–रहते हैं; पनि–शीतल; कटै–(स्त्रियों के) अपांगों के; मुत्तु इनम्–मोती (अश्रु) समूह को; पटैप्प–सृजित करते हुए; परिन्त–उनसे त्यक्त; पू उळ–पुष्प भी हैं; इळ मुलै–युवतियो के स्तनों के; इळै इटै नुळैय–आभरणों के मध्य घुस जाने से; ऍरिन्त–(स्तनों के ताप से) जलकर गिरे हुए; पू उळ–पुष्प हैं; अन्तरम् वान् निन्ऱु–आकाश मध्य से; वीळ–गिरने पर; विरिन्त पू–विकसित पुष्प; उळ–रहते हैं (वीथी पर ये सब बिछे रहते है)। ५६

उस मार्ग पर फूल बिछ गये। वे कैसे फूल थे और कहाँ से आ गिरे ? प्रासादों के ऊपर स्थित स्त्रियों ने लाज से अपने मुख झुकाये। तब उनके मेघसम केश और चन्द्रसम मुख नीचे झुके। उस समय केशों की मालाओं से पुष्प छूटकर गिर गये। उन्होंने अपने अपांगों से मोतीसम अश्रुकण बरसाते हुए (प्रेमाधिक्य के कारण) स्वयं फूलों को उतार फेंका। वे फूल भी बिछे रहे। उनके युवास्तन तप्त रहे और जब वे मालाओं के मध्य प्रविष्ट हुए तब स्तनताप से माला के फूल झुलस कर गिर गये। देवलोक के, जो आकाश-मध्य है, देवता लोगों ने फूल बरसाये। वे मार्ग पर गिरकर खूब खिले हुए थे। इन सब तरह के फूल वहाँ पड़े रहे। (यह अशुभशकुन है।)। ५६

वळ्ळ् रैहळ्ळित् तोॅळिर्वन्न वाण्मिळिर् मदियम्
तळ्ळु रच्चुमन् दॅळुतरु तमन्नियक् कोॅम्बिर्
पुळ्ळि नुण्पन्नि पोॅडिप्पन्न पोॅन्निन्निर् पोॅदिन्द
ॲळ्ळु डैप्पोॅरि विरविन्न वुळशिल विळनीर् 57

वळ् उरै कळ्ळितुतु-(पलकें रूपी) मोटी म्याने निकालकर; ऑळिर्वन्न वाळ्-चमकती (आँख रूपी) तलवारों के साथ; मिळिर् मतियम्-प्रकाश देनेवाले चाँद को; तळ्ळुर चुमनतु-लड़खड़ाते हुए ढोकर; ॲळुतरु तमनियम् कोॅम्पिल्-उठनेवाली (प्रमदाएँ रूपी) स्वर्णलताओं पर; चिल इळनीर्-कुछ (जोड़ों के) डाभों पर; नुण् पन्नि-हल्के और शीतल; पुळ्ळि पोॅटिप्पन्न-(पसीने के) कण बिन्दियों के समान लगते हैं; पोॅन्नितिल् पोॅतिन्त-स्वर्ण (पीले) रंग की चित्तियों से भरे है; ॲळ् पोॅरि विरविन्न उळ-तिल भी बीच-बीच में दिखाई देते हैं। ५७

श्रीराम को देखकर जो स्त्रियाँ लड़खड़ाती हुई आईं उनके चन्द्रमुख पर म्यान-विमुक्त तलवारें (आँखें) चमक रही थीं। वे स्वर्ण-लताओं के समान थीं जिन पर दो-दो कच्चे नारिकेल पाये जाते थे। उन स्तनों पर ओसकण के समान स्वेदकण झलक आये थे और पीले रंग के धब्बे काले रंग के तिलों के साथ उनकी शोभा बढ़ा रहे थे। (पीला रंग या स्वर्ण-वर्ण चमड़े पर जो धब्बों के रूप में पाया जाता है वह जवानी की शोभा समझा जाता है। वह कभी विरह से भी उत्पन्न होता है जो पीले से अधिक सफ़ेद रहता है। तिल भी सुन्दरता के चिह्न माने जाते हैं।)। ५७

ॐ आय दव्वळि निहळ्दर वाडव रॅल्लाम्
तायै मुन्निय कन्रॅन्न निन्रुयिर् तळिर्प्पत्
तूय तम्बियुन् दानुमच् चुमन्दिरन् ऱेर्मेल्
पोय हङ्गुळिर् पुरवल न्निरुन्दुळिप् पुक्कान् 58

आयतु-(जो उन नारियों पर) बीता; अव्वळि-ऐसा; निकळ्तर-होता रहा, तब; आटवर् ॲल्लाम्-पुरुष सब; तायै मुन्निय कन्रु अन्न-माता गाय का

स्मरण करनेवाले वछड़ों के समान; निऩ्ऱु उयिर् तळिर्प्प–खड़े रहकर प्राण-पुलकित होते हैं, ऐसी रीति से; तूय तम्पियुम् ताऩुम्–पवित्र भाई और स्वयं; अ चुमन्तिरऩ् तेर् मेल् पोय्–उस सुमन्त्र के रथ पर जाकर; अकम् कुळिर्–(शीतल-) प्रफुल्लमन; पुरवलऩ्–धाता (दशरथ); इरुन्त उळि–(जहाँ) रहे (उस) स्थान में; पुक्काऩ्–प्रविष्ट हुए। ५८

स्त्रियों की हालत यह रही। उधर पुरुष लोग भी माता गाय को देखकर हुलसित होनेवाले वछड़ों के समान लहलहाये खड़े रहे। तव श्रीराम अपने लघुभाई, पवित्रमन लक्ष्मण के साथ सुमंत्र के रथ पर जाकर उस मण्डप में पहुँचे जहाँ दशरथ रहे। दशरथ का मन वहुत स्नेहार्द्र था। ५८

❀ माद　　वऩ्ऱऩै　　वरऩ्मुऱै　　वणङ्गिवा　　ळुळवऩ्
पाद　　पङ्गयम्　　पणिन्दऩऩ्　　पणिदलु　　मऩैयाऩ्
कादल्　　पॊङ्गिडक्　　कण्वनि　　युहुत्तिडक्　　कनिवाय्च्
चीदै　　कॊण्गऩैत्　　तिरुवुऱै　　मार्वहम्　　जेर्त्ताऩ् 59

वरल् मुऱै–परम्परागत रीति से; मातवऩ् तऩै वणङ्कि–महान तपस्वी को नमस्कार करके; वाळ् उळवऩ्–तलवार 'जोता'; पातपङ्कयम्–पादपंकजों पर; पणिन्तऩऩ्–विनत हुए; पणितलुम्–नमस्कार करने पर; अऩैयाऩ्–उन्होंने; कातल् पॊङ्किट–वात्सल्य के उमड़ते; कण् पति उकुत्तिट–आँखों से अश्रु वहाते हुए; कतिवाय् चीतै–(विंव-) फलाधरा सीता के; कॊण्कऩै–पति (श्रीराम) को; तिरु उऱै मार्पु अकम्–श्रीमन्त अपने वक्ष से; चेर्त्ताऩ्–लगा लिया। ५९

वहाँ पहुँचकर श्रीराम ने परंपरागत क्रम के अनुसार महान तपस्वी वसिष्ठजी को नमस्कार किया। फिर वे तलवार 'जोता' (तलवार के धनी) दशरथ के चरण-कमलों पर विनत हुए। तव दशरथ ने उमड़ते वात्सल्य के साथ, आँखों से आनन्दाश्रु वहाते हुए विंवफलाधरा श्री सीताजी के भर्त्ता श्रीराम को अपने श्रीविलसित वक्ष से लगा लिया। ५९

❀ नलङ्गॊण्　　मैन्दऩैत्　　तळुविऩ　　नॆऩ्ऩवदॆऩ्　　ऩळिनीर्
निलङ्ग　　डाङ्गुऱु　　निलैयिऩै　　निलैयिड　　निऩैन्दाऩ्
विलङ्ग　　लऩ्ऩतिण्　　डोळैयु　　मॆय्त्तिरु　　विरुक्कुम्
अलङ्गऩ्　　मार्बयुन्　　दऩ्ऩडुतोण्　　मार्बुकॊण्　　डळन्दाऩ् 60

नलम् कॊळ् मैन्तऩै–सभी अच्छाइयों से पूर्ण अपने पुत्र को; तळुविऩऩ् अॆऩ्पतु–आलिंगन किया कहना; अॆऩ्–क्या (मतलव) रखता है; नळि नीर् निलङ्कळ्–विशाल जलाशय, सागर से वलयित भूमि को; ताङ्कु उऱु–भरण करने की; निलैयिऩै–स्थिति को; निलै इट–परखने का; निऩैन्ताऩ्–संकल्प करके; विलङ्कल् अऩ्ऩ–पर्वतसदृश; तिण् तोळैयुम्–वलवान कन्धों; मॆय् तिरु इरुक्कुम्–सच्ची विजयश्री का निलय; अलङ्कल् मार्पैयुम्–मालाभूषित वक्ष को; तऩतु–अपने; तोळ मार्पु कॊण्टु–भुजाओं और वक्ष से; अळन्ताऩ्–नापकर देखा। ६०

सारी अच्छाइयाँ जिनके पास थीं उन श्रीराम का दशरथ ने आलिंगन कर लिया —यह कहना कोई अर्थ नहीं रखता। असल में दशरथ ने उनकी लोक-भरण शक्ति की परीक्षा ली। विशाल सागर-मेखला, भूमि को पालने की शक्ति श्रीराम की भुजाओं और वक्ष में है क्या ? इसको आजमाने के लिए दशरथ ने अपनी भुजाओं और वक्ष से श्रीराम के पर्वततुल्य कंधों और सच्ची श्री का वासस्थान— उनके श्रीवक्ष को नापकर देखा। ६०

❀ आण्डु तन्मरुङ्‌ गिरीइयुवन् दन्बुर नोक्किप्
पूण्ड पोर्मऴु वुडैयव नॅडुम्बुहऴ् कुरुह
नीण्ड तोळिनाय् निऱ्पयन् दॆडुत्तया निन्नै
वेण्डि यॆय्दिड विऴैवदोन् ऱुळदॆन विळम्बुम् 61

आण्टु–तब; उवन्तु–(बहुत) मुदित होकर; तन् मरुङ्कु इरीइ–अपने पास बिठाकर; अन्पु उर नोक्कि–प्रेम के साथ देखकर; पोर् पूण्ट–युद्ध सन्नद्ध; मऴु उटैयवन्–परशुधर की; नॆटु पुकऴ् कुरुक–दीर्घ कीर्ति को कम करके; नीण्ट तोळिनाय्–उठे हुए कन्धों वाले; निन् पयन्तु ऎटुत्त यान्–तुमको जन्म देनेवाले मैं; निन्नै वेण्टि–तुमसे माँगकर; ऎय्तिट विऴैवतु–प्राप्त करने की इच्छा करूँ; ऒन्ऱु उळतु–ऐसी एक बात है; ऎन–कहकर; विळम्पुम्–(आगे) बोले। ६१

फिर, उन्होंने श्रीराम को, बहुत आनन्द के साथ अपने पास बिठा लिया। वात्सल्यपूर्ण आँखों से उनको देखा। युद्धसन्नद्ध, परशुधर की कीर्ति को मिटानेवाले वीरबाहु ! तुम्हारे जनक, पिता —मेरी तुमसे एक प्रार्थना है। ६१

ऐय शालवु मलशित्तॆ सरुम्बॆरु मूप्पु
मॆय्य दायदु पियलिडम् बॆरुम्बरम् विशित्त
तॊय्यन् मानिलच् चुमैयुरुज् जिरैतुरन् दिनियान्
उय्य लावदोर् नॆऱिपुह वुदविड वेण्डुम् 62

ऐय–तात; अरु पॆरु मूप्पु मॆय्यतु आयतु–कष्टकर और आदर योग्य बुढ़ापा शरीर को मिल गया; चालवुम् अलचित्तॆन्–बहुत जर्जर हो गया; पियल् इटम्–गर्दन पर; पॆरुम् परम्–बड़ा भार; विचित्त–जो बँधा हुआ है; तॊय्यल्–दुखदायी; मा निलम् चुमै उरुम्–विशाल भूमि रूपी उस भार से युक्त; चिऱै–वद्ध जीवन से; यान् इनि तुऱन्तु–मैं अब विमुक्त होकर; उय्यल् आवतु–उज्जीवन के; ओर् नॆऱि पुक–एक (तप के) मार्ग में प्रवेश करूँ, इसमें; उतविट वेण्टुम्–तुमको मेरी सहायता करनी चाहिए। ६२

हे तात ! दुर्वह पर आदरणीय वार्द्धक्य मेरे शरीर को ग्रस गया है। मैं बहुत जर्जर हो गया हूँ। गर्दन पर बड़ा भू-भार बँधा हुआ है। यह कारा है जिस स्थिति से छूटकर मैं वैकुण्ठप्राप्ति के उज्जीवन का मार्ग अपनाना चाहता हूँ। उसमें तुम्हें मेरी सहायता करनी चाहिए। ६२

उरिमै मैन्दरैप् पॆऱुहिन्ऱ दुरुतुयर् नीङ्गि
इरुमै युम्वॆऱ्ऱ् कॊन्वदु पॆरियव रियऱ्कै
दरुम मन्ननिऱ् ऱन्दयान् रळर्वदु तहवो
करुम मॆन्वयिऱ् चॆय्यिनॆन् कट्टुरै कोडि 63

उरिमै मैन्तरै पॆऱुकिन्ऱतु–स्वकीय पुत्रों को प्राप्त करना; उऱु तुयर् नीक्कि–दुख-निवारण पाकर; इरुमैयुम् पॆऱ्ऱ्कु–इह-पर (सुख) लाभार्थ है; ऎन्पतु–यह; पॆरियवर् इयऱ्कै–बड़ों का सिद्धान्त है; तरुमम् अन्न निन्–धर्म देवता सदृश तुम्हें; तन्ल यान्–(जन्म) दिया (जिसने वह) मैं; तळर्वतु तकवो–(वंचित रहकर) क्लेश उठाना उचित है क्या; ऎन् वयिन् करुमम्–मेरे प्रति कर्तव्य; चॆय्यिन्–तुम करना चाहो तो; ऎन् कट्टुरै कोटि–मेरा हित-वचन मान लो। ६३

वड़ों के बताये सिद्धांत के अनुसार स्वकीय पुत्रों का प्राप्त करना कठोर दुखों से निवृत्त होकर इह-पर दोनो सुखों का लाभ करने के लिए ही है। धर्मदेवता सदृश तुम्हें पुत्र के रूप में प्राप्त करने के बाद मेरा संकट में रहना उचित है क्या? मेरे प्रति तुम अपना कर्तव्य करना चाहो तो मेरा हितवचन मान लो। ६३

❀ मैन्द नङ्गुल मरवितिल् वन्दरुळ् वेन्दर्
तन्द मक्कळे कडैमुऱै नॆडुनिलन् दाङ्ग
ऐन्दॊ डाहिय मुप्पहै मरुङ्गऱ वहऱ्ऱि
उय्न्दु पोयिना रुळिनिन् ऱॆण्णिनु मुलवार् 64

मैन्त–पुत्र; नम् कुलम् मरपितिल्–हमारे कुल की परम्परा में; वन्तरुळ् वेन्तर्–क्रमागत राजा लोग; कटै मुऱै–अपने अन्तिम काल में; नॆटु निलम्–विशाल भू (भरण के) भार को; तम् तम् मक्कळे ताङ्क–अपने पुत्रों को ही वहन करने देकर; ऐन्तॊटु आकिय–पांच (इन्द्रियों) से सम्बन्धित; मुप्पकै–(काम, क्रोध, लोभ) तीन शत्रुओं को; मरुङ्कु अऱ–पूर्णरूप से काटते हुए; अकऱ्ऱि–हटाकर; उय्न्तु पोयिनार्–(जो) तर गये; ऊळि निन्ऱु ऎण्णितुम्–कल्पकाल तक रहकर गिनें तो भी, (वे); उलवार्–गिने नहीं जा सकते। ६४

हे मेरे पुत्र! हमारे कुल में पैदा होकर जो राजा अपने अंतिम समय में विशाल भूमि के शासन का भार अपने पुत्रों को उठाने देकर, इंद्रिय-सम्बद्ध काम, क्रोध और मोह रूपी तीनो शत्रुओं को मिटाते हुए तर गये उनकी संख्या, युग भर रहकर गिने तो भी पूरी नहीं हो सकती। ६४

मुन्नै यूळ्विनैप् पयत्तिनु मुऱ्ऱिय वेळ्विप्
पिन्नै यॆय्दिय नलत्तिनु मरिदिनिऱ् पॆऱ्ऱेन्
इन्नम् यानिन्द वरशिय लिडुम्बय नॆन्ऱाल्
निन्नै यीन्ऱुळ पयत्तिनि निरम्बुव दियादो 65

मुन्नै–पूर्व के; ऊळ्वित्तै पयत्तितुम्–कर्मो के फल से; पिन्नै–बाद के (इस जीवन में); मुर्रिय–पूरा किये हुए; वेळ्वि–यज्ञों से; अय्तिय नलत्तितुम्–प्राप्त सुफल से; अरितिनिल् पॅर्रेन्–दुर्लभ तुमको (मैंने पुत्र के रूप में) पाया है; यान्–मैं; इन्नम्–आगे भी; इनृत अरचियल् इटुम्पैयन्–इस राज्य की झंझट का भागी रहूँ; अन्राल्–तो; निन्नै–तुमको; ईन्रु उळ पयत्तितिन्–जन्म देने के फलस्वरूप; निरम्पुवतु यातो–दूर हुई कमी कौन सी। ६५

मेरे प्राचीन कर्म प्रबल थे। इस जन्म में भी मैंने कठिन यज्ञादि किये। उसी का शुभफल था कि मैंने तुम्हें पुत्र पाया। अब भी शासन के झंझट से मुक्त न हुआ तो तुम्हारे पैदा होने से क्या लाभ हुआ? कौन सी कमी पूरी हुई? । ६५

ऑरुत्त लैप्परत् तॉरुत्तलैप पङ्गुवि नूर्दि
अॅरुत्ति नीङ्गुनिन् रियल्वरक् कुळैन्दिड रुळक्कुम्
वरुत्त नीङ्गियव् वरम्बरु तिरुविनै मरुवुम्
अरुत्ति युण्डॅनक् कैयवी दरुळिड वेण्डुम् 66

ऑरु तलै–एक ओर; परत्तु–भार; ऑरु तलै–दूसरी ओर; पङ्कुविन्–पंगु रहनेवाले; ऊर्ति अॅरुत्तिन्–सवारी के बैल के समान; ईङ्कु निन्रु–यहाँ से; इयल् वर कुळैन्तु–अवश्यम्भावी कष्ट उठाकर; चुमन्तु–भार ढोते हुए; इटर् उळक्कुम्–क्लेश सहने के समान; वरुत्तम्–(राज्य-भार की) झंझट से; नीङ्कि–मुक्त होकर; अ वरम्पु अरु तिरुवित्तै–उस निस्सीम (मोक्ष-) साम्राज्य-श्री को; मरुवुम् अरुत्ति–पाने की प्रबल इच्छा; अॅनक्कु उण्टु–मुझे है; ऐय–तात; ईतु–यह माँग; अरुळिट वेण्टुम्–तुमको पूरी करने की कृपा करनी चाहिए। ६६

मैं उस लँगड़े बैल के समान हूँ जो एक ओर पंगुता और दूसरी ओर बोझ का भार वहन करते हुए बड़ा संकट उठा रहा है। उस दुखदायक स्थिति से छूटकर निस्सीम मोक्ष-साम्राज्य को प्राप्त करने की मेरी बलवती इच्छा हो गयी है। तात! यह माँग पूरी करो। ६६

आळु नन्नॅरिक् कमैवरु ममैदियिन् राह
नाळु नङ्गुल नायह नरैविरि कमलत्
ताळि नल्हिय गङ्गयैत् तन्दुतन् दयरै
मीळ्वि लावुल हेर्रिना नॅरुमहन् मेनाळ् 67

मेल् नाळ्–पहले एक दिन; ऑरु मकन्–उत्तम एक पुत्र (भगीरथ); आळुम् नल् नॅरिक्कु–भोग्यमान (मुक्ति के) श्रेष्ठ मार्ग के लिए; अमैवरुम्–आवश्यक; अमैति–योग्यता; इन्रु आक–नहीं हो जाने से; नाळुम्–सदा; नम् कुलम् नायकन्–हमारे कुलदेवता श्रीरंगनाथ के; नरै विरि कमलम् ताळित्–शहद बहानेवाले कमल के समान चरणों से; नल्किय–(उनके द्वारा) दी गई; कङ्कैयै–(आकाश-) गंगा को; तन्तु–(इस भूमि में) लाकर; तन्तैयरै–अपने पितरों को; मीट्पु इला उलकु–(जहाँ से) पुनः आना नहीं है उस (मोक्ष) लोक को; एर्रिनान्–पहुँचा दिया। ६७

तुम्हें मालूम है। सगर-पुत्रों को मोक्षप्राप्ति की योग्यता का अभाव हो गया था। तब हमारे कुल के एक श्रेष्ठ पुत्र (भगीरथ) कड़ी तपस्या करके हमारे कुलदेवता श्रीरंगनाथ के चरणों से निःसृत गंगाजी को भूमि पर लाये। जिससे सगर-पुत्र तरे और श्रीवैकुंठ गये जहाँ से पुनरावृत्ति नहीं होती (फिर से जन्म लेना नहीं होता)। ६७

मन्न रात्व रल्लर्मेल् वात्रवर्क् करशाम्
पॊन्निन् वार्हळ्ऴ् पुरन्दरन् पोलिय रल्लर्
पिन्नु मादवन् दॊडङ्गिनोन् पिळ्ळैत्तव रल्लर्
शॊन्म ऴामहप् पॆट्ऱव रेतुयर् तुऱन्दार् 68

तुयर् तुऱन्तार्—दुख-मुक्त; मन्नर् आतवर् अल्लर्—राजा जो बने हैं, वे नहीं हैं; मेल्—ऊपर (परलोक में); वानवर्क्कु अरचु आम्—देवों का राजा; पॊन्निन् वार् कऴल्—स्वर्णरचित और लम्बी पायल के (धारक); पुरन्तरन् पोलियर् अल्लर्—पुरन्दर सदृश लोग भी नहीं; पिन्नुम्—और; मातवम् तॊडङ्कि—महान तपस्या आरम्भ करके; नोन्पु इऴैत्तवर् अल्लर्—अनेक व्रतों का पालन (जिन्होंने) किया, वे भी नहीं; चॊल् मऱा—आज्ञा का उल्लंघन न करनेवाले; मक्कळ् पॆट्ऱवरे—पुत्र प्राप्त ही हैं। ६८

सचमुच (जन्म-मरण के) संकट से मुक्त होनेवाले नरपति नहीं हैं; स्वर्ण-पायलधारी देवेन्द्र-सम लोग भी नहीं हैं। महान तपस्वी और अटलव्रती भी नहीं हैं। पर वे ही पिता दुख-मुक्त होते हैं जिनके आज्ञाकारी (पिता की आज्ञा का उल्लंघन न करनेवाले) पुत्र पैदा हुए हैं। ६८

❀ अत्तैय दादलि नरुन्दुयरप् पॆरुम्बर मरशन्
वित्तैयि नॆन्वयिन् वैत्तन नॆनक्कॊळ्ळल् वेण्डा
पुत्तैयु मामुडि पुनैन्दिन्द नल्लऱम् बुरक्क
नित्तैयल् वेण्डुम्या नित्वयिऱ् पॆऱुवदी दॆन्ऱान् 69

अत्तैयतु आतलिन्—(धर्म की रीति) ऐसी है, इसलिए; अरु तुयर् पॆरु परम्—अतिशय दुखदायी इस बड़े भार को; वित्तैयिन्—(कपट) नीति से; अरचन्—राजा ने; ऎन् वयिन्—मेरे ऊपर; वैत्तनन्—लाद दिया; ऎन—ऐसा; कॊळ्ळल् वेण्टा—मत लेना चाहिए; पुत्तैयुम् मा मुटि—धार्य श्रेष्ठ किरीट को; पुनैन्तु—धारण करके; इन्त नल् अऱम्—इस श्रेष्ठ (पिता के प्रति) धर्म का; पुरक्क नित्तैयल् वेण्टुम्—पालन करने को सोचना चाहिए; निन् वयिन्—तुम्हारे पास; यान् पॆऱुवतु—मेरी याचना; ईतु—यही; ऎन्ऱान्—कहा। ६९

श्रीराम! धर्म की यही रीति है। इसलिए तुम पीछे यह मत कहो कि शासन का भार मेरे ऊपर कपटनीति से लाद दिया गया। धार्य-मुकुट का धारण यही धर्मनिर्वाहार्थ है। यह सोचना चाहिए। यही मेरी तुमसे याचना है। —दशरथ ने इतना कहा। ६९

※ ताद यप्परि ग़ुरैशॆयत् तामरैक् कण्णन्
काद लुऱ्ऱिल निहळ्न्दिलन् कडनिदॆन् ऱुणर्न्दुम्
यादु कॊऱ्ऱव नेविय ददुशॆय लन्ऱो
नीदि यॆऱ्कॆन निनैन्दुमप् पणितलै निन्ऱान् 70

तातै–पिता (के); अ परिचु उरै चॆय–ऐसा कहने पर; तामरै कण्णन्–पुण्डरीकाक्ष ने; कातल् उऱ्ऱिलन्–स्पृहा न की; इकळ्न्तिलन्–न उपेक्षा की; कटन् इतु–कर्तव्य यह; ऎन्ऱु उणर्न्तुम्–ऐसा सोचकर और; कॊऱ्ऱवन् एवियतु–राजा द्वारा आज्ञापित; अतु चॆयल् अन्ऱो–वह करणीय है न; ऎऱ्कु नीति–मेरा धर्म; ऎन निनैन्तुम्–ऐसा समझकर; अ पणि तलै निन्ऱान्–उस सेवा को शिरोधार्य किया। ७०

पिता के इतना कहने पर पुंडरीकाक्ष श्रीराम सहमत हुए; इसलिए नहीं कि उनमें राज्य की स्पृहा थी। न ही उन्होंने उसकी उपेक्षा की। "यह हमारा कर्तव्य है" —उनमें यह भाव था। साथ-साथ "चक्रवर्ती की आज्ञा का पालन करना ही मेरा धर्म है" —यह भी विचार था। अतः उन्होंने उस सेवा को शिरोधार्य मान लिया। ७०

※ कुऱिशिल् शिन्दयै मनक्कॊण्ड कॊऱ्ऱवॆण् गुडैयान्
तरुदि यिव्वर मॆनच्चॊल्लि युयिरुऱत् तळुविच्
चुरुदि यन्नदन् मन्दिरच् चुऱ्ऱमुज् ज़ुऱ्ऱप्
पॊरुविन् मेरुवुम् पॊरुवरुङ् गोयिल्पोय्प् पुक्कान् 71

कुरुचिल् चिन्तैयै–श्रीराम के मन को; मनम् कॊण्ट–जो जान गये वे; कॊऱ्ऱम् वॆण् कुटैयान्–विजयी (श्वेत-) छत्रधारी; इ वरम् तरुति–यह वर दो; ऎन चॊल्लि–यह कहकर; उयिर् उऱ तळुवि–प्राणों से प्राण मिलाते हुए आलिंगन करके; चुरुति अन्न–वेद-सम; तन् मन्तिरम् चुऱ्ऱमुम्–अपने मन्त्रीमण्डल के; चुऱ्ऱ–घेरे जाते; पोय्–जाकर; पॊरु इल् मेरुवुम्–उपमाहीन मेरु भी; पॊरुवु अरु–जिसकी उपमा नहीं बन सकता (उस) अपूर्व; कोयिल्–पुक्कान्–महल में पहुँचे। ७१

विजयी छत्रधारी दशरथ ने श्रीराम का मन जान लिया। इसलिए उन्होंने फिर से कहा कि 'यह वर दो मुझे'। उनको मानो अपने प्राणों से उनके प्राण मिला रहे हों, ऐसा आलिंगन किया। फिर वे अपने महल की ओर जाने लगे। वेदसम उनके मंत्रियों का मंडल भी उनके साथ गया। वे अनुपम मेरु से भी अनुपमेय अपने महल में पहुँचे। ७१

※ निवन्द वन्दणर् नॆडुन्दहै मन्नवर् नहरत्
तुवन्द मैन्दरहण् मडन्दय रुळैपुळै तॊडरच्
चुमन्दि रन्ऱडन् देर्मिशैच् चुन्दरत् तिरडोळ्
अमैन्द मैन्दनुन् दन्नॆडुङ् गोयिल्शॆन् ऱडैन्दान् 72

चुन्तरम्–सुन्दर (और); तिरळ् तोळ् अमैन्त–पुष्ट कन्धों से युक्त; मैन्तनुम्–राजकुमार (श्रीराम) भी; निवन्त अन्तणर्–उत्कृष्ट ब्राह्मण; नेट्टु तकै मन्नवर्–श्रेष्ठतायुक्त राजा लोग; नकरत्तु–नगर के; उवन्त मैन्तर्कळ्–प्रसन्नता से पूरित तरुण लोग; मटन्तैयर्–ऐसी ही स्त्रियाँ; उळ्ळै उळ्ळै तोटर–पास-पास आते; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र (चालित); तट तेर् मिचै–विशाल रथ पर; चॆन्ऱु–जाकर; तन् नॆट्टु कोयिल् अटैन्तान्–अपने बड़े भवन में पहुँचे। ७२

बाद श्रीराम भी उठकर सुमंत्र-चालित उन्नत रथ पर सवार हुए। रथ जाने लगा। उनके साथ उत्कृष्ट ब्राह्मण लोग, श्रेष्ठ राजा लोग, प्रसन्न तरुण लोग और स्नेहार्द्र रमणियाँ भीड़ लगाकर चलीं। वे अपने श्रेष्ठ महल में पहुँचे। ७२

❀ वॆन्ऱि वेन्दरै वरुहॆन्न वुवणम्वीऱ् ऱिरुन्द
पॊन्ऱि णिन्दतोट् टरुम्बॆऱ लिलच्चिनै पोक्कि
नन्ऱु शित्तिर नळिमुडि कवित्तऱ्कु नल्लोर्
शॆन्ऱु वेण्डुव वरन्मुऱै यमैक्कॆनच् चॊप्प 73

वॆन्ऱि वेन्तरै–विजयशील राजाओं को; वरुक ऎन्न–आइए, कहकर; उवणम् वीऱ्ऱिरुन्त–गरुड़ांकित; पॊन् तिणिन्त तोटु–स्वर्णमय पत्र पर; अरु पॆऱल्–(दूसरों के लिए) अप्राप्य; इलच्चिनै पोक्कि–लांछन लगाकर, भिजवाकर; नल्लोर्–साधुश्रेष्ठ; चॆन्ऱु–जाकर; चित्तिरम् नळि मुटि–चित्र और बहुमूल्य किरीट को; नन्ऱु–भली रीति से; कवित्तऱ्कु–(श्रीराम के सिर पर) धराने के लिए; वेण्टुव–जो आवश्यक है; वरल् मुऱै–परम्परा के अनुसार; अमैक्क–वह प्रबन्ध कीजिए; ऎन चॊप्प–यह कहने पर। ७३

चक्रवर्ती ने गरुड़ांकित स्वर्णमय पत्र पर राजा के स्वत्व का लांछन लगाकर निमंत्रण लिखा कि सब पधारें। फिर वसिष्ठजी से प्रार्थना की कि साधु महात्मा! आप जाकर अलंकारयुक्त श्रेष्ठ किरीट को श्रीराम के सिर पर लगाने के लिए (मुकुट धारण के उत्सव के लिए) आवश्यक प्रबंध यथाक्रम करने की कृपा कीजिए। तब; । ७३

❀ उरिय मादव नॊळ्ळिदॆन् ऱुवन्दनन् विरैन्दोर्
पॊरुवि ऱेर्मिशै यन्दणर् कुळात्तॊडुम् बोह
निरुवर् केण्मित्तग ळिरामऱ्कु नॆऱिमुऱै यदनाल्
तिरुवुम् बूमियुञ् जिन्दयिऱ् चिऱन्दन वॆन्ऱान् 74

उरिय–(मुकुट लगाने के) अधिकारी; मातवन्–महान तपस्वी; ऒळ्ळितु–सही है; ऎन्ऱु–कहकर; उवन्तनन्–मुदित हुए; विरैन्तु–सत्वर; अन्तणर् कुळात्तॊटुम्–विप्रसमूह के साथ; पॊरु इल्–उपमारहित; ओर् तेर् मिचै–एक रथ पर; पोक–गये, तब; निरुपर्–राजे; केळ्मिन्कळ्–सुनें; तिरुवुम्–(राज्य) श्री और; पूमियुम्–राज्य; इरामऱ्कु–श्रीराम के; नॆऱि मुऱै–(कुल गत) परम्परा के अनुसार; चिन्तैयिल्–मेरे मन में; चिऱन्तन–श्रेष्ठ हैं; ऎन्ऱान्–कहा। ७४

वसिष्ठजी ही मुकुट धराने का अधिकार रखते थे। वे महान तपस्वी राजा से, 'बहुत अच्छा' कहकर बहुत ही आनन्द के साथ अनुपम एक रथ पर आरूढ़ होकर श्रीराम के पास जाने लगे। तब विप्रों का समूह भी उनके साथ गया। चक्रवर्ती ने राजाओं से कहा कि राजा लोग! सुनिये। श्रीराम राज्य की संपत्ति और शासन की भूमि दोनो का अधिकारी है। इसलिए मेरे मन में वे ही विशेष रूप से चिन्त्य रहती हैं। ७४

❀ इऱैवन् शॊल्लॆन्नु मिन्नऱ वरुन्दिऩर् यारुम्
मुऱैयि निऩ्ऱिलर् मुन्दुरु कळियिडै मूऴ्हि
निऱैयु नॆञ्जिडै युवहैपोय् मयिर्वऴि निमिर
उऱैयुम् विण्णह मुडलॊडु मॆय्दिऩ रॊत्तार् 75

इऱैवन् चॊल् ऍंनुम्–दशरथ के वचन रूपी; इन् नऱवु–मधुर मधु को; अरुन्तिनर् यारुम्–(जिन्होंने) भोगा वे सब; मुन्तु उरु कळि इटै–अतिशय आनन्द रूपी प्रवाह में; मूऴ्कि–डूबकर; नॆञ्चु इटै–मन में; निऱैयुम् उवकै–भरा वह आनन्द; पोय्–(पार) जाकर; मयिर् वऴि निमिर–रोमकूपों में प्रकट हुआ तो; उऱैयुम् विण् अकम्–(पीछे जाकर जहाँ) रहेंगे उस स्वर्गलोक को; उटलॊटुम् ऍय्तिनर्–सशरीर पहुँच गये; ऒत्तार्–ऐसे होकर; मुऱैयिन् निऩ्ऱिलर्–अपने-अपने मर्यादित स्थान में नहीं रह पाये। ७५

राजा का वचन मधुर मधु-सम था। राजा लोगों ने मानो उसको पीकर अपार आनन्द पाया। वह आनन्द मानो उनके हृदय से छलककर रोमकूपों में भर गया, ऐसा उनके रोम पुलकित हो गये। सशरीर तभी स्वर्ग पहुँच गये हों, ऐसा वे आनन्द भरे हो गए। इस मोद-मोह के कारण वे अपनी व्यवस्था और मर्यादा भी भूलकर, ठीक स्थान में खड़े नहीं रह पाये। ७५

ऒत्त शिन्दय रुवहयि ऩॊरुवरि ऩॊरुवर्
तत्त मक्कुऱ्ऱ वरशॆऩत् तळैक्किऩ्ऱ मऩत्तार्
मुत्त वॆण्गुडै मऩ्ऩऩै मुऱैमुऱै तॊऴुदार्
अत्त नऩ्ऱॆऩ वऩ्बिनो डऱिविप्प दाऩार् 76

उवकैयिऩ्–आनन्द के कारण; ऒरुवरिऩ् ऒरुवर्–परस्पर; ऒत्त चिन्तैयर्–समचित्त होकर; तम् तमक्कु–अपने, अपने को; अरचु उऱ्ऱ ऍन–राज्य मिल गया हो, ऐसा; तळैक्किऩ्ऱ मऩत्तार्–लहलहानेवाले मन के हुए; मुत्तम् वॆण् कुटै मऩ्ऩऩै–मोतियों से अलंकृत श्वेतछत्र वाले चक्रवर्ती को; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; तॊऴुवार्–नमस्कार करके; अत्त–पितृतुल्य; नऩ्ऱु ऍन–आपका अभिप्राय सही है, यह; अऩ्पिऩोटु–प्रेम के साथ; अऱिविप्पतु आऩार्–(अपने-अपने विचार) प्रकट करने लगे। ७६

श्रीराम के राज्याभिषेक के सम्बन्ध में उनका एकसग विचार था। खुद उन्हें राज्य मिल गया हो, ऐसे वे संतोष से भर गये। उनके मन लहलहा उठे। वे वारी-वारी से, मोतियों से सज्जित श्वेत छत्रधारी दशरथ को नमस्कार कर उनको पितृतुल्य —ऐसा सम्बोधित करके प्यार के साथ यों वोले। ७६

मूवॅऴु मुऱैमयॅङ् गुलङ्गण् मुऱ्ऱुऱप्, पूवॅऴु मऴुविनाऱ् पॊरुदु पोक्किय
शेवहन् शेवहम् जॅहुत्त शेवहऱ्, कावदिव् वुलहमी दऱनॅन् ऱाररो 77

मू ॲऴु मुऱैमै–तीन के सात (इक्कीस) पीढ़ियाँ; ॲम् कुलङ्कळ्–हमारे कुल; मुऱ्ऱ उऱ–नाश करके; पू ॲऴु मऴुविनाल्–तीक्ष्ण परशु से; पॊरुतु–युद्ध करके; पोक्किय–(जिन्होंने) निर्मूल किया; चेवकन् चेवकम्–उन वीर की वीरता को; चॅकुत्त–परास्त करनेवाले; चेवकऱ्कु–वीर राघव को; इ उलकम् आवतु–यह भूमि हो; ईतु–यह; अऱन्–धर्मसम्मत हो; ॲन्ऱार्–कहा। ७७

आपने श्रीराम को राजा बनाने का विचार किया है। श्रीराम ने उन परशुराम की वीरता को परास्त किया जिन्होंने हम क्षत्रियकुल के राजाओं की इक्कीस पीढियों से परशु लेकर युद्ध करके उनको मारा था। यह अवश्यमेव धर्म-सम्मत कार्य है। ७७

वेऱिला मन्नरुम् विरुम्बि यिन्नदु, कूऱिना रदुमनङ् गॊण्ड कॊऱ्ऱवन्
ऊऱिय वुवहयै यॊळिक्कुञ् जिन्दयान्, माऱुमो रळवैशाल् वाय्मै कूऱिनान् 78

वेऱु इला मन्नरुम्–असमान विचार न रखनेवाले वे राजा भी; विरुम्पि–चाहकर; इन्नतु कूऱिनार्–ऐसा बोले; अतु मनम् कॊण्ट कॊऱ्ऱवन्–उसको मन में धरकर चक्रवर्ती; ऊऱिय उवकैयै–उमड़ते आनन्द को; ऒळिक्कुम् चिन्तैयान्–छिपाने का विचार करके; माऱुम्–फिर भी; ओर् अळवै चाल् वाय्मै–थाह लेने की एक वार्ता; कूऱिनान्–कही। ७८

आपस मे विचारवैषम्य न रखनेवाले राजाओं ने यह वात सच्चे प्यार के मन से कही। चक्रवर्ती ने यह जान भी लिया। तो भी दशरथ ने उमड़ते आनन्द को छिपाने का संकल्प करके उसे प्रकट नहीं होने दिया। उनके मन की और थाह लेने के विचार से एक वार्ता कही। ७८

महन्वयि नन्विनान् मयङ्गि यानिदु, पुहलनीर् पुहन्ऱविप् पॊम्मल् वाशहम्
उहवयिन् मॊऴिन्ददो वुळ्ळ नोक्कियो, तहवॅन निनैन्ददो तन्मै यादॅन्ऱान् 79

मकन् वयिन् अन्पिनाल्–(अपने) पुत्र के प्रति प्रेम के कारण; मयङ्कि–मोहित होकर; यान् इतु पुकल–मेरे इस प्रकार कहने से; नीर् पुकन्ऱ–आपके (उत्तर में) कहे हुए; इ पॊम्मल् वाचकम्–ये प्रकाशमय (मोदपूर्ण) वचन; उकवैयिन् मॊऴिन्ततो–

सन्तोष से कहे हुए; उळ्ळम् नोक्कियो–(या) मेरा रुख देखकर; तकवु अैन्न नितैन्ततो– उचित ही समझने के कारण; तन्मै यातु–प्रकार क्या है; अैन्ऱान्–पूछा। ७९

चक्रवर्ती ने राजाओं से कहा। कहीं ऐसा तो नहीं है कि मेरे अपने पुत्र के प्रेम के मोह में यह कहने पर आपने यह उत्साहवर्धक उत्तर यों ही अपने मौज में कहा है ? या मेरा मन रखने के लिए ? या आपने सचमुच इसको उचित समझा है ? कैसा है ? —यह बता दें। ७९

इव्वहै युरैशॅय विरुन्द वेन्दर्हळ्, शॅव्वियोय् निन्ऱिरु महऱ्कुत् तेयत्तोर्
अव्ववर्क् कव्ववर्क् कमैन्द वारुरुम्, अॅव्वमि लन्बिनै यिनिदु केळॅन्ना 80

इ वकै उरैचॅय–ऐसा कहने पर; इरुन्त वेन्तर्कळ्–(वहाँ जो) रहे (वे) राजा लोग; चॅव्वियोय्–नेक चक्रवर्ती; निन् तिरु मकऱ्कु–आपके श्रीमान पुत्र के प्रति; तेयत्तोर्–देशवासियों में; अव्ववर्क्कु अव्ववर्क्कु—उन-उन के; अमैन्तवारु– योग्य रीति से; उरुम्–होनेवाले; अॅव्वम् इल् अन्पिनै–निर्दोष प्रेम को; इनितु केळ्–प्रसन्नता से सुनिए; अॅन्ना–कहकर। ८०

दशरथ के ये वचन सुनकर राजाओं ने उत्तर में कहा कि नेक चक्रवर्ती ! इस देश के वासी आपके पुत्र श्रीराम पर अपनी-अपनी मर्यादा और स्थिति के अनुसार कैसा प्रेम रखते हैं ? उस निर्मल प्रेम की बात कहते हैं, सुनिये। ८०

दानमुन् दरुममुन् दहवुन् दन्मशेर्, ञानमु नल्लवर्प् पेणु नन्मयुम्
मानमु मैयनिन् महऱ्कु वैहुमाल्, ईन्मिल् शॅल्वमवन् दियैव दॅन्नवे 81

ऐय–प्रभु; निन् मकऱ्कु–आपके पुत्र के प्रति; ईनम् इल् चॅल्वम्–अनिन्द्य (राज्य) श्री; वन्तु इयैवतु अॅन्न–आ मिल जाय, इस योग्य; तानमुम्–दान; तरुममुम्–धर्मपरायणता; तकवुम्–शील; तन्मै चेर् ञानमुम्–श्रेष्ठ तत्व-ज्ञान; नल्लवर् पेणुम् नन्मैयुम्–साधुओं का त्राण करने का अच्छा स्वभाव; मानमुम्–और मान; वैकुम्–(उन्हें) प्राप्त हैं। ८१

प्रभु ! आपके पुत्र में अक्षय राज्यश्री की प्राप्ति के लिए आवश्यक और अनुकूल सारे गुण हैं। दानशीलता, धर्मपरायणता, शील, श्रेष्ठ तत्वज्ञान, साधुत्राण का स्वभाव, मान —ये सब उनमें हैं। ८१

ऊरुणि निऱैयवु मुदवु माडुयर्, पार्नुहर् पयन्मरम् पळुत्त दाहवुम्
कारमळै पॊळियवुङ् गळत्ति पायनदि, वार्पुनल् पॆरुहवु मरुक्किन् ऱार्हळ् यार् 82

ऊरुणि निऱैयवुम्–(बस्ती के) तालाब के भरने पर; उतवुम् माटु–सब के लिए सहायक (सुगम) स्थान में; उयर्–खूब बढ़े हुए; पार् नुकर् पयन् मरम्–लोक-खाद्य फलों वाले वृक्ष; पळुत्तततु आकवुम्–फलदार होने पर; कार् मळै पॊळियवुम्–मेघ वर्षा करने पर; कळत्ति पाय् नति–खेतों को सींचनेवाली नदी में; वार् पुनल् पॆरुकवुम्–अधिक जल के बहने पर; मरुक्किन्ऱार्कळ–इनकार करनेवाले; यार्– कौन। ८२

वस्ती में सर्वभोग्य तालाव में जल भर जाय, ग्राम स्थल में रहनेवाले फलवृक्ष फलें, वर्षाकालीन मेघ वरसें, खेती को सीचनेवाली नदी में धार बढ़ जाय तो इनका सभी स्वागत करेंगे। कौन होगा जो इनसे अतृप्त होगा ? । ८२

पन्नैयवा नॅडुङ्गरप् परुम यानयाय्, नित्तैयवान् दहैयनाय् निमिर्न्द मन्नुयिर्क्
कॅन्नैयवा ऱन्बिन निराम नोण्डवर्, कन्नैयवा ऱन्बिन ववैयु मॅन्ऱनर् 83

पनै अवाम् नॅटु करम्–ताड़ के पेड़ के समान लम्बी सूंड़ और; परुमम्–हौदे से युक्त; यानैयाय्–राजगज वाले; इरामन्–श्रीराम; नित्तै अवाम् तकैयन् आय्–आपके समान योग्यता वाले होकर; निमिर्न्त–संसार में भरे; मन् उयिर्क्कु–अक्षय जीवों पर; ॲनैय आऱु अन्पिनन्–जिस प्रकार का प्रेम रखते हैं; अत्तैय आऱु–उसी प्रकार के; अवैयुम्–वे भी; अवर्कु–उन पर; ईण्टु अन्पित–खूब प्रेम करनेवाले हैं; ॲन्ऱनर्–कहा। ८३

उस गजराज के स्वामी जिसकी सूंड़ लंबे ताल-वृक्ष के समान है और जो हौदे से सजा है, आपके पुत्र आपके ही समान योग्यता और श्रेष्ठता रखते है। वे लोकों के अक्षय जीवों पर जितना स्नेह रखते हैं उतने ही वे जीव भी इनसे खूब प्रेम करते हैं। ८३

मॊऴिन्ददु　　केट्टलु　　मॊय्त्तु　　नॅञ्जिनैप्
पॊऴिन्दपे　　रुवहयन्　　पॊङ्गु　　कादलन्
कऴिन्ददोर्　　तुयरिनन्　　कळिक्कुञ्　　जिन्दयन्
वऴिन्दकण्　　णीरिनन्　　मन्नन्　　कूऱुवान् 84

मॊऴिन्तदु केट्टलुम्–(राजाओं का) कथन सुनने पर; मन्नन्–चक्रवर्ती; नॅञ्चित्तै मॊय्त्तु–मन में भरकर; पॊऴिन्त–छलकनेवाले; पेर् उवकैयन्–बड़े आनन्द से युक्त होकर; पॊङ्कु कातलन्–उमड़ते प्रेम वाले वनकर; कऴिन्तदु ओर् तुयरिनन्–(जो) छूट गया (उस) दुख वाले होकर; कळिक्कुम् चिन्तैयन्–उमड़नेवाले चित्त के; वऴिन्त कण् नीरितन्–वहनेवाले अश्रु की आँखो के वनकर; कूऱुवान्–वोलने लगे। ८४

राजाओं ने जव यह कहा तव दशरथ के मन में इतना आनन्द उमड़ आया कि वह उसमें नही समा सका। वात्सल्य वढ़ा। उनकी चिंता दूर हुई। प्रसन्नमन हुए। उनकी आँखों से आनन्द के आँसू ढलक आये। वे वोले। ८४

शॅम्मयिर्　　ऱुमत्तिर्　　चॅयलिर्　　ऱीङ्गिन्वाल्
वॅम्मयि　　नीळुक्कत्तिन्　　मेन्मै　　मेविनीर्
ॲम्मह　　नॅन्वदॆन्　　नॅऱियि　　नीङ्गिवन्
नुम्महन्　　कैयडै　　नोक्कु　　मीङ्गॆन्ऱान् 85

चॅम्मैयिल्–पक्षपात रहित रहने में; तरुमत्तितिल्–और धर्मपालन में; चॅयलिल्–अच्छे कार्यों में; तीङ्कित् पाल् वॅम्मैयित्–अन्याय के प्रति क्रोध में; ऑळुक्कत्तित्–श्रेष्ठ आचरण में; मेन्मै मेवित्तीर्–उन्नत हुए लोगों; इवन्–यह श्रीराम; ईङ्कु–आगे; ॲम् मकन् ॲन्पतु–मेरा पुत्र है, यह कहना; ॲन्–क्या (अर्थ रखता है); नॅऱियित्–क्रम से; नुम् मकन्–आपका पुत्र है; कैयटै–आपका धरोहर है; ईङ्कु नोक्कुम्–उसी दृष्टि से देखिए; ॲन्ऱान्–कहा। ८५

(उन्होंने राजाओं से कहा—) निष्पक्षता में, धर्मपालन में, अच्छे कामों में, अन्याय के प्रति क्रोध की गर्मी दिखाने में, और आचरण में बढ़े हुए राजाओ ! आगे श्रीराम को मैं अपना ही पुत्र मानूँ इसका कोई अर्थ नहीं रहेगा। वह आपका ही पुत्र है। उसे आपका धरोहर मानता हूँ। आप भी उसी दृष्टि से उसको देखिये। —दशरथ ने यह कहा। ८५

अरचरै विट्टुत्तबि नाणै मन्नवन्, पुरैतबु नाळोंडुम् बॉळुदु नोक्कुवान्
उरैतॅरि कणिदरै यॉरुङ्गु कॉण्डोरु, वरैपॉरु मण्डब मरुङ्गु पोयिनान् 86

अरचरै विट्टुत्तपित्–राजाओं को बिदा देने के बाद; आणै मन्नवन्–आज्ञापक चक्रवर्ती; पुरै तपु–निर्दोष; नाळॉटु–नक्षत्र के साथ; पॉळुतु–मुहूर्त को; नोक्कुवान्–शोधने के लिए; उरै तॅरि–शास्त्रज्ञ; कणितरै–ज्योतिषियों को; ऑरुङ्कु कॉण्टु–साथ लेकर; वरै पॉरु–पर्वततुल्य; ऑरु मण्टपम् मरुङ्कु–एक मण्डप में; पोयित्तान्–पहुँचे। ८६

आज्ञापक चक्रवर्ती ने उनको बिदा दिया। फिर वे निर्दोष नक्षत्र और मुहूर्त शोध लेने के विचार से, ज्योतिषियों को साथ लेकर एक पर्वततुल्य बड़े भवन में गये। ८६

***आण्ड वन्निलै याह वऱिन्दवर्, पूण्ड कादलर् पूट्टविळ् कॉङ्गयर्**
नीण्ड कून्दलर् नीळ्हलै ताङ्गलर्, ईण्ड वोडिन रिट्टिडै यिऱ्ऱिलर् 87

आण्टु–वहाँ; अवन् निलै आक–उनकी यह स्थिति रही तब; अऱिन्तवर्–समाचार को जानकर (कुछ स्त्रियाँ); पूण्ट कातलर्–प्रेम-भरी; पूट्टु अविळ् कॉङ्कैयर्–(जिनका) अँगिया खुल गया, ऐसे स्तनों वाली; नीण्ट कून्तलर्–मुक्तकेश; नीळ् कलै ताङ्कलर्–ढीले पड़े वस्त्र को न सँभालनेवाली; ईण्ट–सत्वर; ओटितर्–(कौसिल्या के पास) भागीं; इट्टु–भाग्य की बात थी; इटै इऱ्ऱिलर्–भग्नकमर नहीं हुईं। ८७

राजा का समाचार यह रहा। तब कुछ चार स्त्रियों ने यह समाचार पाया तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। आनन्दातिरेक में उन्होंने अपने स्तनों का अँगिया के खुलने से बाहर प्रकट होना नहीं जाना, केश खुल गया उसकी परवाह नहीं की, वस्त्र ढीले होने लगे उनको नहीं संभाला, वे बहुत तेजी से भागीं। भाग्य था कि उनकी कमरें नहीं टूटीं। ८७

❀ आडु हिन्ऱनर् पण्णडै विन्ऱियै, पाडु हिन्ऱनर् पार्त्तवर्क् कैकरम्
शूडु हिन्ऱनर् शौल्लुव दोरहिलार्, माडु शॅन्ऱनर् मङ्गयर् नाल्वरे 88

मङ्कैयर नाल्वर्–वे स्त्रियाँ चार थीं, वे; आटुकिन्ऱनर्–नाचतीं; पण् अटैवु इन्ऱियै–राग शुद्धि के विना ही; पाटुकिन्ऱनर्–गातीं; पार्त्त वर्क्कु–सामने जिनको देखती है, उन सबको; करम् चूटुकिन्ऱनर्–हाथ जोड़तीं; चौल्वतु ओर्किलार्–क्या कहना, नहीं जानतीं; माटु चॅन्ऱनर्–पास गईं। ८८

वे नाचतीं, विना राग की दुरुस्ती के ही गातीं। जो भी सामने आते उनके आगे हाथ जोड़तीं। उनसे क्या वात करती हैं —यह भी नहीं जानती। इस स्थिति में वे कौसल्यादेवी के पास पहुँचीं। ८८

❀ कण्ड मादरैक् कादलि नोक्किनाळ्, कॉण्डल् वण्णनै नल्हिय कोशलै
उण्डु पेरुव हैप्पॉरु ळन्नदु, तॉण्डै वायिनिर् शौल्लुमि नॆण्डॅन्ऱाळ् 89

कॉण्टल् वण्णतै–मेघवर्ण (श्रीराम को); नल्किय–देनेवाली; कोचलै–कौसल्यादेवी (ने); कण्ट मातरै–अपने सामने दृष्ट उन स्त्रियों को; कातलिन् नोक्किनाळ्–स्नेह से देखकर; तॉण्टै वायिनीर्–(विंव-) फल-सम अधर वालियों; पेर् उवकै पॉरुळ् उण्टु–(इस) वड़े आनन्द का अर्थ होगा; अन्नतु–उसको; ईण्टु कूऱुमिन्–यहाँ वताओ; ॲन्ऱाळ्–कहा। ८९

कौसल्या ने अपने सामने आई उन सवको स्नेह से देखा। मेघ वर्ण श्रीराम की माता ने उनसे पूछा। तुम्हारे आनन्दप्रदर्शन का कोई महत्वपूर्ण अर्थ अवश्य होगा। वह क्या है —वताओ। ८९

❀ मन्नॅ डुङ्गळल् वन्दु वणङ्गिडप्, पन्नॅ डुम्बहल् पारळिप् पायॅन
निन्नॅ डुम्बुदल् वन्ऱनै नेमियान्, तॉन्नॅ डुम्मुडि शूट्टुहिन् ऱानॅन्ऱार् 90

नेमियान्–आज्ञाचक्र चलानेवाले (चक्रवर्ती) ने; मन् वन्तु–राजाओं के आकर; नॆटु कऴल् वणङ्किट–सम्मान्य पायलधारी पैरों पर नमस्कार करते; पल नॆटु पकल्–अति दीर्घकाल तक; पार् अळिप्पाय्–भूमि का पालन करो; ॲन–ऐसा; निन् नॆटु पुतल्वन् तनै–आपके श्रेष्ठ पुत्र को; तॉल् नॆटु मुटि–प्राचीन और उत्कृष्ट किरीट; चूट्टुकिन्ऱान्–पहनायँगे; ॲन्ऱार्–कहा। ९०

उन्होने उत्तर दिया। आज्ञाचक्र चलानेवाले चक्रवर्ती आपके पुत्र के सिर पर प्राचीन और गौरवान्वित किरीट पहनायेंगे। श्रीराम राजा राम वनेंगे। सभी राजा लोग उनके सम्मान्य पायलधारी चरणों पर अपने शीश नवावेंगे। "चिरकाल तक इस रीति से शासन करो" —यह चक्रवर्ती ने श्रीराम से कहा है। ९०

❀ शिऱक्कुञ् जॅल्व महऱ्कॅनच् चिन्दयिल्, पिऱक्कुम् पेरुव हैक्कडल् पॅट्पऱ
वऱक्कु मावड वैक्कन लानदाल्, तुऱक्कु मन्नव नॆन्नुन् दुणुक्कमे 91

मकऱ्कु–पुत्र को; चॅल्वम् चिऱक्कुम् ॲन्न–राज्यश्री पाने का गौरव मिलेगा, यह सोच; चिन्तॅयिल् पिऱक्कुम्–मन में उत्पन्न; पेर् उवकै कटल्–बड़े प्रेम के सागर को; पॅट्पु अऱ–अनचाहे रूप से; वऱक्कुम्–सुखानेवाली; मा वटवै कनल्–बड़ी बड़वाग्नि सी; मन्नवन् तुऱक्कुम्–राजा वानप्रस्थ होंगे; ॲन्नुम्–इससे; तुणुक्कम्–(मिलनेवाला) भय; आनतु–हुआ। ६१

कौसल्या के मन में यह सुनकर बड़ा आनन्द हुआ कि मेरे पुत्र को राज्य मिलेगा और वह सम्मानित बनेगा। वह बड़ा सागर-सा उमड़ा तो भी उसको अनचाहे रूप से सुखानेवाली बड़वाग्नि बना, यह डर कि राजा वानप्रस्थ होंगे और विरक्त बनेंगे। ९१

❀ अन्न ळायु मरुम्बॅऱ् लारमुम्, नन्नि दिक्कुवै युम्बल नल्हित्तन्
तुन्नु कादऱ् चुमित्तिरै योडुम्बोय्, मिन्नु नेमियन् मेविड मेविनाळ् 92

अन्नळ् आयुम्–वैसी होने पर भी; आरमुम्–हार; नल् निति कुवैयुम्–धनराशि को; पल नल्कि–बहुत देकर; तन् तुन्नु कातल्–अपने अधिक प्यार का पात्र; चुमित्तिरैयोटुम्–सुमित्रा के साथ; पोय्–जाकर; मिन्नुम् नेमियन् मेवु इटम्–दीप्तिमान चक्रधारी (श्रीरंग जी) के श्रेष्ठ मन्दिर में; मेविनाळ्–पहुँचीं। ६२

मन की यह (मिश्रित) स्थिति होने पर भी कौसल्यादेवी ने उन्हें अनेक हार और धनराशि इनाम में दी। उन्हें विदा देकर वे अपनी प्यारी सौत सुमित्रा के पास आई। उनको भी साथ लेकर वे दीप्तिमान चक्रधारी श्री रंगजी के मंदिर में पहुँची। ९२

❀ मेवि मॅन्मल राणिल मार्दॅनुम्, तेवि मारॊडुन् देवर्हळ् यावर्क्कुम्
आवि युम्मऱि वुम्मुद लायवन्, वावि मामलर्प् पादम् वणङ्गिनाळ् 93

मेवि–पहुँचकर; मॅल् मलराळ्–कोमल कमला श्री देवी; निल मातु–भूदेवी; ॲनुम्–इति; तेवि मारॊटुम्–दो पत्नियों के साथ; तेवर्कळ्–देवों के और; यावर्क्कुम्–सभी के; आवियुम्–प्राण; अऱिवुम्–प्रज्ञा; मुतल्–और आदि; आयवन्–जो बने हैं; वावि मा मलर् पातम्–(उनके) तालाब में अभी खिले कमल के समान चरणों की; वणङ्किनाळ्–पूजा की (कौसल्या ने)। ६३

वहाँ पहुँचकर उन श्रीमन्नारायण के तालाब में विकसित कमलों के समान चरणों की पूजा की जो कोमल कमलजा श्रीदेवी और भूदेवी, दोनों पत्नियों के साथ शोभायमान थे और जो देवों और अन्य सभी जीवों के प्राण और प्रज्ञा थे और आदि कारण थे। ९३

❀ ॲन्व यिऱ्ऱु मैन्दऱ् किनियरुळ्, उन्व यत्तदॅन् ऱाळुल हियावयुम्
मन्व यिऱ्ऱि लडक्किय मायनैत्, तन्व यिऱ्ऱि लडक्कुन् दवत्तिनाळ् 94

उलकु यावैयुम्–सभी लोकों को; मन् वयिऱ्ऱिन् अटक्किय–वन्द्य अपने उदर में (जिन्होंने) रख लिया है; मायनै–उन मायावी श्रीमन्नारायण को; तन् वयिऱ्ऱिल्–

अपने गर्भ में; अटक्कुम्–रखने का; तवत्तिऩाऴ्–जिन्होंने तप (भाग्य) किया था, उन कौसल्या ने; ऎऩ् वयिऱ् तरुम् मैन्तऱ्कु–आपकी कृपा से मेरे द्वारा उत्पन्न पुत्र (श्रीराम) को; इनि अरुळ्–अब सौभाग्य देना; उऩ् वयत्ततु–आपका ही काम है; ऎऩ्ऱाळ्–विनय की। ९४

फिर उन्होंने जिनका भाग्य इतना था कि सारी सृष्टि को उदर में समाये रखनेवाले श्रीमन्नारायण को अपने गर्भ में धारण किया था, उनसे प्रार्थना की कि आपने श्रीराम को मेरे पेट से जन्म दिलाने की कृपा की थी। अब उन्हें सारे सौभाग्यों को दिलाने की कृपा करना भी आपके ही वश का है। ९४

ऎऩ्ऱि रैञ्जियव् विन्दिरै केळ्वऩुक्, कॊऩ्ऱु नाऩ्मऱै योदिय पूशऩै
नऩ्ऱि ऴैत्तव णल्ल तवर्क्कॆलाम्, कऩ्ऱु डैप्पशु विऩ्कड ऩल्हिऩाळ् 95

अवळ्–उन्होंने; ऎऩ्ऱु–ऐसा; इऱैञ्चि–प्रार्थना करके; अ इन्तिरै केळ्वऩुक्कु–उन इन्दिरापति की; ऒऩ्ऱु–युक्त; नाल् मऱै ओतिय–चतुर्वेदविहित; पूचऩै नऩ्ऱु इऴैत्तु–पूजा खूब करके; नल्ल तवर्क्कु ऎलाम्–अच्छे सभी तपस्वियों को; कऩ्ऱु उटै (य) पचुविऩ् कटऩ्–बछड़ो सहित गोदान; नल्किऩाळ्–किया। ९५

यह प्रार्थना करके देवी कौसल्या ने उन इन्दिरापति की युक्त चारों वेदों मे कथित रीति से पूजा संपन्न करके, सभी तपस्वियों को बछड़ों के साथ गायो का दान किया। ९५

पॊऩ्ऩु मामणि युम्बुऩै शान्दमुम्, कऩ्ऩि मारॊडु काशिनि यीट्टमुम्
इऩ्ऩ यावयु मीन्दऩ ळन्दणर्क्, कऩ्ऩ मुन्दळि राडयु नल्हिनाळ् 96

अन्तणर्क्कु–विप्रों को; पॊऩ्ऩुम्–स्वर्ण; मा मणियुम्–बहुमूल्य रत्न; पुऩै चन्तमुम्–चर्चायोग्य चन्दन; कऩ्ऩि मारॊटु–कन्याओ के साथ; काचिऩि ईट्टमुम्–भूमि की राशि; इऩ्ऩ यावैयुम्–ऐसी (दान की) वस्तुएँ; ईन्तऩळ्–दीं; अऩ्ऩमुम्–भोजन और; तळिर् आटैयुम्–कदलीपल्लव मृदुल वस्त्र भी; नल्किऩाळ्–दिये। ९६

बाद ब्राह्मणों को स्वर्ण, रत्न, चंदन, कन्यायें और भूमि के खण्ड तथा अन्य वस्तुओ का दान किया। भोजन और कदलीपत्र के समान शोभित वस्त्र भी दिया। ९६

नल्हि नायह नाण्मलर्प् पादत्तैप्
पुल्लिप् पोऱ्ऱि वणङ्गिप् पुरैयिलाळ्
मल्लल् मामणिक् कोयिल् वलङ्गॊळात्
तॊल्लै नोन्बुहळ् यावुन् दॊडङ्गिनाळ् 97

पुरै इलाळ्–अनिन्द्य; नल्कि–दान करके; नायकऩ्–भगवान के; नाळ् मलर् पातत्तै–नवविकसित कमल चरण; पुल्लि–पकड़कर; पोऱ्ऱि वणङ्कि–स्तुति और नमस्कार करके; मल्लल्–समृद्ध; मा मणि–श्रेष्ठ रत्नों से अलंकृत; कोयिल्–

मन्दिर की; वलम् कॊळा–परिक्रमा करके; तॊल्लै–प्राचीन; नोऩ्पुकळ् यावुम्–सभी व्रत; तॊटङ्किऩाळ्–रखना आरम्भ किया। ९७

निर्मल स्वभाव वाली कौसिल्या ने यह सब दान करके भगवान के नवविकसित कमल-सम चरण पकड़कर स्तुति और दण्डवत की। फिर खूब श्रेष्ठ रत्नों से अलंकृत उस बड़े मन्दिर की परिक्रमा की। बाद वे प्राचीन अनेक व्रतों का पालन करने लगीं। ९७

2. मन्दरै शूऴ्च्चिप् पडलम् (मन्थरा षडयन्त्र पटल)

कडिहमऴ् तारिनाऩ् कणित माक्कळै
मुडिवुऱ नोक्कियोर् मुहमन् कूऱिप्पिऩ्
वडिमऴु वाळवऩ् कडन्द मैन्दऱ्कु
मुडिपुनै कडिहैनाण् मॊऴिमि ऩॆऩ्ऱऩऩ् 98

कटि कमऴ् तारिऩाऩ्–सुगन्धि छिटकती माला के धारी ने; कणित माक्कळै–ज्योतिषी लोगों को; मुटिवु उऱ नोक्कि–पूर्णरूप से देखकर; ओर् मुकमऩ् कूऱि–युक्त शिष्ट वचन कहकर; पिऩ्–पश्चात; वटि मऴुवाळऩ्–तीक्ष्ण परशु के रखनेवाले (परशुराम) के; कटन्त–विजयी; मैन्तऱ्कु–वीर राघव को; मुटि पुनै–किरीट पहनाने योग्य; कटिकै नाळ्–मुहूर्त के दिन को; मॊऴिमिऩ्–कहिये; ऎऩ्ऱऩऩ्–कहा। ९८

सुवासित पुष्पों की माला से अलंकृत चक्रवर्ती ने अपने सामने रहे सभी ज्योतिषियों पर खूब दृष्टि डाली। अवसरानुकूल शिष्ट वचन कहे। फिर उनसे कहा कि तीक्ष्ण परशु के धारण करनेवाले परशुराम के जयी श्रीराम को किरीट पहनाने के लिए योग्य मुहूर्त और दिन शोध करके बताइये। ९८

पॊरुन्दुना णाळैयुन् पुदल्वऱ् कॆऩ्ऱलुम्
तिरुन्दिऩा रिनियशॊऱ् केट्ट शॆय्हऴऱ्
पॆरुन्दिण्मा लियानैयाऩ् पिऴैप्पिल् शॆय्दव
मरुन्दिऩाऩ् वरुहॆऩ वशिट्ट ऩॆय्दिऩाऩ् 99

उऩ् पुतल्वऱ्कु–आपके पुत्र के लिए; पॊरुन्तु नाळ्–अच्छे मेल का दिन; नाळै–कल ही; ऎऩ्ऱलुम्–कहते ही; तिरुन्तिऩार्–(ज्योतिष शास्त्र में) कुशलता प्राप्त उनके; इऩिय चॊल् केट्ट–मधुर (सुखद) वचन सुना (जिन्होंने) उन; चॆय् कऴल्–भूपक पायलधारी; पॆरु तिण् माल् यानैयाऩ्–बड़े, बलिष्ठ और मत्तगजों के स्वामी, (दशरथ) के; पिऴैप्पु इल्–दोषहीन; चॆय्तवम्–कृततप; मरुन्तु अऩ्ऩाऩ्–अमृत सम (वसिष्ठजी); वरुक ऎऩ्ऩ–आजायँ, कहने पर; वचिट्टऩ्–वसिष्ठ; ऎय्तिऩाऩ्–पधारे। ९९

ज्योतिषियों ने खूब परीक्षा करके वताया कि आपके पुत्र के मुकुट-धारण के लिए योग्य दिन कल ही है। ज्योतिपशास्त्र में निपुण उनके सुखद वचन सुनकर भूषक पायलधारी गजपति दशरथ ने इच्छा प्रकट की कि निर्दोष तपस्वी श्री वसिष्ठजी इधर आ जायँ। वसिष्ठ भी पधारे। ९९

नल्लियन् मङ्गल नाळु नाळैयव्
विल्लिय ऱ्ोळवऱ् किन्ऱु वेण्डुव
ऑल्लयि नियऱ्ऱिनल् लुऱुदि वाय्मयुम्
शॊल्लुदि पॆरिदॆऩत् तॊऴुदु शॊल्लिनान् 100

नल् इयल्–भलाइयों से युक्त; मङ्कल नाळुम्–शुभ दिन भी; नाळै–कल ही है; अ–उस; विल् इयल् तोळवऱ्कु–धनु से अभ्यस्त भुजा वाले; इन्ऱु–आज ही; वेण्टुव–आवश्यक कार्य; ऑल्लैयिन् इयऱ्ऱि–सत्वर सम्पन्न करके; उऱुति नल् वाय्मैयुम्–हितोपदेश भी; पॆरितु चॊल्लुति–विशद रूप से करें; ऍन–ऐसा; तॊऴुतु चॊन्ऩान्–नमस्कार करके कहा। १००

चक्रवर्ती ने वसिष्ठजी से कहा— सभी प्रकार से मंगलमय दिन कल ही है। इसलिए उस कोदण्डपाणी द्वारा जो भी वैदिक कर्म कराना है शीघ्र कराइये और आवश्यक हितोपदेश विस्तार से कीजिए। १००

मुऩिवनु मुवहैयुन् दानु मुन्दुवान्
मनुकुल नायकन् वायिन् मुन्नितान्
अनैयवन् वरवुकण् डलङ्गन् मार्वनुम्
इनिदॆदिर् कॊण्डुदन् निरुक्कै यॆय्दिनान् 101

मुऩिवऩुम्–मुनिवर भी; उवकैयुम् तानुम् मुन्तुवान्–आनन्द के साथ शीघ्र जाकर; मनुकुलम् नायकन्–मनुकुलनायक के; वायिल्–(महल के) द्वार पर; मुन्नितान्–पहुँचे; अनैयवन् वरवु कण्टु–उनका आगमन देखकर; अलङ्कल् मार्पनुम्–माला से अलंकृत श्रीवक्षवाले श्रीराम भी; इनितु ऍतिर् कॊण्टु–आदर के साथ अगवानी करके; तन् इरुक्कै ऍय्तिनान्–(उनके साथ) अपने स्थान गये। १०१

मुनिवर भी वहुत आनन्द के साथ शीघ्र गमन कर मनुकुलश्रेष्ठ श्रीराम के महल के द्वार पर पधारे। श्रीराम ने उनका आगमन देखा तो वे स्वयं अगवानी के लिए आये और उनको लेकर अन्दर अपने स्थान पर गये। १०१

ऑल्हि लात्तवत् तुत्तम नोदुनूल्, मल्हु केळ्वियव् वळ्ळलै नोक्किये
पुल्हु कादऱ् पुरवलन् पोर्वलाय्, नल्हु नाऩिल नाळै निऩक्कॆन्ऱान् 102

ऑल्कु इला–अचंचल; तवत्तु उत्तमन्–तपस्या के उत्तम मुनि; ओतुम् नूल्–अध्ययन योग्य शास्त्रों का ज्ञान; मल्कु केळ्वि–व भरपूर श्रौतज्ञान रखनेवाले;

अ वळ्ळलै नोक्कि–उन प्रभु (श्रीराम) को देखकर; पोर् वलाय्–युद्धचतुर; पुलकु कातल्–(आप पर) रखे प्रेम के; पुरवलन्–चक्रवर्ती; नाळै–कल; निन्नक्कु–आपको; नाल् निलम् नल्कुम्–चतुर्विध भूमि दिला देंगे; ऍन्ऱान्–बोले । १०२

वसिष्ठजी अचंचल तपोधन थे । श्रीराम अध्ययन और श्रवण के भरपूर ज्ञान के ज्ञानी थे । वसिष्ठ ने उनसे कहा कि हे युद्धनिपुण श्रीराम ! आप पर गंभीर स्नेह रखनेवाले चक्रवर्ती कल आपके पास राज्य का अधिकार सौंपेंगे । १०२

ऍन्ऱु पिन्नु मिरामनै नोक्किनान्, ऒन्ऱु कूऱुव दुण्डुऱु दिप्पॊरुळ्
नन्ऱु केट्टुक् कडैप्पिडि नन्ऍन्नात्, तुन्ऱु तारवर् चॊल्लुदन् मेयिन्नात् 103

ऍन्ऱु–यह कहकर; पिन्नुम् इरामनै नोक्कि–और श्रीराम को देखकर; नान् कूऱुवतु–मेरा कहा जानेवाला; उऱुतिप्पॊरुळ् ऒन्ऱु उण्टु–हित उपदेश एक है; नन्ऱु केट्टु–उसको ध्यान से सुनकर; नन्कु कटैप्पिटि–भलीभाँति (उसका) अनुसरण करो; ऍन्ना–ऐसा; तुन्ऱु तार् अवन्–घनी पुष्पमालाधारी श्रीराम से; चॊल्लुतल् मेयिनान्–कहने लगे । १०३

और भी आगे कहा । मुझे आपसे एक हितकारिणी बात कहनी है । आप उसे ध्यान से सुनिये और उस पर खूब अमल कीजिए । घनी माला-धारी श्रीराम से यह कहकर वे आगे बोले । १०३

करिय मालिनुङ् गण्णुद लानिनुम्, उरिय तामरै मेलुरै वानिनुम्
विरियुम् बूदमॊ रैन्दिनु मॆय्यिनुम्, पॆरிய रन्दणர் पेणुदि युळ्ळत्ताल् 104

करिय मालिनुम्–श्यामलवर्ण तिरुमाल (श्रीनारायण) से भी; कण् नुतलानिनुम्–भालनेत्र (शिवजी) से भी; उरिय–स्वत्व के; तामरै मेल्–कमल पर; उऱैवानिनुम्–रहनेवाले (ब्रह्मा) से भी; विरियुम् पूतम् ओर् ऐन्तिनुम्–विस्तारशील पाँचों भूतों से; मॆय्यिनुम्–सत्य से भी; अन्तणर् पॆरियर्–ब्राह्मण लोग श्रेष्ठ हैं; उळ्ळत्ताल् पेणुति–(उनका) मन से आदर कीजिये । १०४

श्यामल श्रीविष्णु, भालनेत्र श्रीशिव, कमलासन ब्रह्माजी, विस्तृत पाँच भूत, सत्य —इन सबसे ब्राह्मण लोग श्रेष्ठ हैं । उनका मन से आदर कीजिए । १०४

अन्द णाळर् मुनियवु माङ्गवर्, शिन्दै यालरुळ् शॆय्यवुन् देवरुळ्
नॊन्दु ळारयु नॊय्दुयर्न् दारयुम्, मैन्द वॆण्ण वरम्बुमुण् डाङ्गॊलो 105

मैन्त–पुत्र; अन्तणाळर् मुनियवुम्–ब्राह्मणों के कोप करने पर; आङ्कु–उसी प्रकार; अवर्–उनके; चिन्तैयाल् अरुळ् चॆय्यवुम्–मन से अनुग्रह करने पर; तेवरुळ्–देवों में भी (सही); नॊन्तु उळारैयुम्–(क्रम से) दुखी हुओं को; नॊय्तु उयर्न्तारैयुम्–शीघ्र उन्नति प्राप्त लोगों को; ऍण्ण–गिनने की; वरम्पुम् उण्टो–सीमा है क्या । १०५

पुत्र ! ब्राह्मणों के कोप का पात्र बनकर देवों में भी कितने अवनति को और दुख को प्राप्त हो गये ! उनकी कृपा का पात्र बनकर कितने ही उन्नत और सुखी हो गये ! उनकी संख्या का अंत भी है क्या ? नहीं। उनकी संख्या अनंत है। (इस पद में यथाक्रम अलंकार है।)। १०५

अनैय रादलि नैयवव् वॅय्यती, विनैयि नीङ्गिय मेलवर् ताळिणै
पुनैयुज् जॅन्नियै याय्प्पुहळ्न् देत्तुदि, इनिय कूऱिनिन् ऱेयिन शॅय्दियाल् 106

ऐय–तात; अनैयर् आतलिऩ्–वे ऐसे हैं, इसलिए; वॅय्य–क्रूर; ती वितैयिऩ् नीङ्किय–पापों से मुक्त; अ मेलवर्–उन उत्तम लोगों के; ताळ् इणै–चरणद्वय को; पुनैयुम् चॅन्नियै आय्–धारण करनेवाले सिर के होकर; पुकऴ्न्तु एत्तुति–गुणवर्णन और स्तुति कीजिये; इनिय कूऱि–मधुर भाषण करके; निन्ऱु–उनके बताये मार्ग में स्थित होकर; एयिन चॅय्ति–उनकी आज्ञा का पालन कीजिये। १०६

तात ! ब्राह्मण लोग ऐसे महिमावान हैं। इसलिए आप निष्पाप उन महानों के चरणद्वय को अपने सिर पर धारण कीजिए। सदा उनका गुणगान कीजिए और स्तुति कीजिए। उनसे मधुर भाषण कीजिए और उनके बताये मार्ग पर रहकर उनकी आज्ञा का अनुसरण कीजिये। १०६

आव दऱ्कु मऴिवदऱ् कुम्मवर्, एव निऱ्कुम् विदियुमॅन् ऱालिऩि
आव दॅप्पॊरु ळिम्मयु मम्मयुम्, दॆव रॆप्पर वुन्दहै शीर्त्तदे 107

वितियुम्–(अकाट्य) विधि भी; आवतऱ्कुम्–बनाने और; अऴिवतऱ्कुम्–बिगाड़ने को; अवर् एव–उनकी आज्ञा पर; निऱ्कुम् ॲन्ऱाल्–(अधीन) रहेगी तो; इऩि–अब; आवतु ॲ पॊरुळ्–(सहायक) रहेगी कौन सी वस्तु; इम्मैयुम्–ऐहिक जीवन के लिए हो; अम्मैयुम्–परलोक के लिए हो; तेवर् परवुम् तकै–भूसुरों का आदर करने की प्रवृत्ति; चीर्त्तते–श्रेष्ठ है। १०७

दुर्द्धर्ष विधि भी उनकी आज्ञा पाकर बनाती है या बिगाड़ती है। फिर उनकी आज्ञा से बढ़कर हितैषिणी वस्तु क्या है ? ऐहिक जीवन के लिए हो चाहे पारलौकिक जीवन के लिए, भूसुरों का आदर करना श्रेष्ठ है। १०७

उरुळु नेमियु मॊण्गव रॅःकमुम्, मरुळिल् वाणियुम् वल्लवर् मूवर्क्कुम्
तॆरुळु नल्लऱ मुम्मनच् चॅम्मयुम्, अरुळु नीत्तपि नावदुण् डाहुमो 108

उरुळुम् नेमियुम्–सर्वत्र चलनेवाला चक्रायुध; ऑण्–उज्ज्वल; कवर्–(तीन) काँटोंवाले; ॲःकमुम्–शूल और; मरुळ् इल्–असंदिग्ध; वाणियुम्–वाणी में; वल्लवर्–समर्थ; मूवर्क्कुम्–त्रिदेवों का भी; तॆरुळुम् नल् अऱमुम्–शुद्ध सद्धर्म; मनम् चॅम्मैयुम्–मन की नेकी; अरुळुम्–कृपा; नीत्तपिऩ्–छोड़ देने के बाद; आवतु–(उनसे) होनेवाला; उण्टु आकुमो–कुछ हो सकता है क्या। १०८

चक्रायुध (विष्णु देव) त्रिशूलभृत (शिवजी) पवित्र वाणी को अस्त्र के रूप में प्रयोग करनेवाले (वाणीपति) ब्रह्मा —ये भी शुद्ध धर्म, मन का आर्जव और दया को छोड़ देंगे तो उनसे किसी का कोई हित नहीं हो सकता। (ऐसी स्थिति में राजा के लिए ये गुण परमावश्यक हैं।)। १०८

शूदु मुन्दुरच् चॊल्लिय मात्तुयर्, नीदि मैन्द निनक्किलै यायिनुम्
एद मॆन्बन यावयु मॆय्दुदर्, कोदु मूल मवैयॆन्न वोर्दिये 109

नीति मैन्त–नीतिमान सुत; चतु मुन्तु उऱ–कपट आदि; चॊल्लिय–कथित; मा तुयर्–बड़े दुखदाई दुष्कर्म; निन्नक्कु इलै–आपके पास नहीं है; आयिनुम्–तो भी; एतम् ऎन्पन यावैयुम्–अपराध कहे जानेवाले सभी को; ऎय्तुतऱ्कु–प्राप्त करने के लिए; ओतुम्–(नीतिशास्त्रों में) कथित; मूलम् अवै ऎन्न–हेतु वे ही हैं, यह; ओर्ति–जान लीजिये। १०६

नीतिमान कुमार! कामादि बड़े दुखदायी गुण और कर्म आपके पास नहीं है। तो भी यह स्मरण रखें कि वे ही सभी अपराधों के मूल है। यह शास्त्रों का कथन है। १०९

यारॊडुम्वहै कॊळ्ळल नॆन्ऱपिन्, पोरॊ डुङ्गुम् पुहऴॊडुङ् गादुतन्
तारॊ डुङ्गल्शॆय् याददु तन्दपिन्, वेरॊ डुङ्गॆड वेण्डलुण् डाहुमो 110

यारॊटुम् पकै कॊळ्ळलन्–किसी से शत्रुता नहीं रखता; ऎन्ऱ पिन्–ऐसी स्थिति होने के बाद; पोर् ऒटुङ्कुम्–युद्ध नहीं रह जायगा; तन् तार्–उसकी सेना; ऒटुङ्कल् चॆय्यातु–कम नहीं होगी; पुकऴ् ऒटुङ्कातु–यश कम नहीं होगा; अतु तन्त पिन्–(ऐसी) वह स्थिति बना लेने के बाद; वेरॊटुम् कॆट वेण्टल्–जड़ के साथ नाश होने की स्थिति; उण्टाकुमो–होगी क्या। ११०

कोई राजा किसी का शत्रुत्व नहीं मोल लेता और उसके कोई शत्रु न रहे —ऐसी स्थिति हो जायगी तो उससे बड़े लाभ होते हैं। युद्ध नहीं होता और सेना नहीं घटती। यश भी कम नहीं होता। उस स्थिति में जड़ से नष्ट होने की दशा उत्पन्न होगी क्या? नहीं होगी। ११०

कॊळ्ळु मैम्बॊरि युङ्गुऱै यप्पॊरुळ्, नाळुङ् गण्डु नडुवुऱु नोन्मयिन्
आळु मव्वर शेयर शन्नदु, वाळिन् मेल्वरु मादव मैन्दने 111

मैन्तने–वीर कुमार; ऐन्तु पॊऱियुम्–पाँच इन्द्रिय; कॊळुम्–और उनके ग्राह्य (विषय); कुऱैय–कम हो तो; पॊरुळ् नाळुम् कण्टु–अर्थ (धार्मिक रीति से) रोज़ अर्जन करके; नटु उऱु नोन्मैयिन्–निष्पक्ष मनोभाव के साथ; आळुम्–शासन करने का; अ अरचे–वह राज्य ही; अरचु–सही शासन है; अन्नतु–वह शासन; वाळिन् मेल् वरुम्–तलवार की धार पर किया जानेवाला; मातवम्–महान तप है। १११

वीर सुत! इन्द्रियों और विषय-भोग की आसक्ति को दमन किया गया तो अर्थार्जन खूब होगा। दिनोंदिन सम्पत्ति बढ़ेगी। निष्पक्ष

मनोभाव के साथ शासन होगा। ऐसा शासन ही सच्चा शासन है। वह शासन तलवार की धार पर किया जानेवाला तप है। (वह उतना कठिन भी है।)। १११

उमैक्कु नादऱ्कु मोङ्गुपुळ् ळूर्दिक्कुम्, इमैप्पि नाट्टमो रॅट्टुडै यानुक्कुम्
शमैत्त तोळ्वलि ताङ्गिन रायिनुम्, अमैच्चर् शौलवऴि याऱ्ऱुद लाऱ्ऱले 112

उमैक्कु नातऱ्कुम्–उमापति का; ओङ्कु पुळ् ऊर्तिक्कुम्–श्रेष्ठ पक्षी (गरुड़) पर आरूढ़ (विष्णु) का; इमैप्पु इल् नाट्टम्–पलक न मारनेवाली आँखें; ओर् ऍट्टु उटैयानुक्कुम्–एक आठ रखनेवाले ब्रह्माजी का; चमैत्त–मिला हुआ; तोळ् वलि–भुजबल; ताङ्कितर् आयिनुम्–रखनेवाले भी हों; अमैच्चर् चौल् वऴि–मन्त्रियों की बात पर; आऱ्ऱुतले–कर्म करना ही; आऱ्ऱल्–बल है। ११२

समझिए कि कोई राजा उमापति शिवजी, ऊँचा उड़नेवाले गरुड़ पर आरूढ़ विष्णु और आठ अप्रमत्त दृष्टि वाले ब्रह्मा —इनका-सा भुजबल रखता है। तो भी मन्त्रियों की सलाह पर चलना ही सच्चा बल होगा। ११२

ऍन्बु तोलुडै यार्क्कुमॅल् लार्क्कुनदम्, वन्ब हैप्पुल माशऱ माय्प्पदॅन्
मुन्बु पिन्बिन्ऱि मून्ऱुल हत्तिनुम्, अन्बि नल्लदो राक्कमुण् डाहुमो 113

ऍन्पु तोल् उटैयार्क्कुम्—अस्थि-चर्ममय (मुनि) के लिए भी; ऍल्लार्क्कुम्–(क्यों) सभी के लिए; तम्–उनके; वन् पकै पुलम्–प्रबल शत्रु, इन्द्रियों को; आचु अऱ–अशेष; माय्प्पतु–दमन करना; ऍन्–किस काम का; मुन्पु पिन्पु इन्ऱि–पहले, बाद का, यह भेद छोड़ (सर्वदा); मून्ऱु उलकत्तिनुम्–तीनों लोकों में; अन्पिन् अल्लतु–(पवित्र) प्रेम के सिवा; ओर् आक्कम्–एक उन्नति का हेतु; उण्टाकुमो–हो सकता है क्या। ११३

केवल अस्थिपंजर-से दिखनेवाले मुनियों के लिए क्या, सभी लोगों के लिए पाँचों इन्द्रियों का संपूर्णतः दमन करने से भी क्या मिलनेवाला है? पीछे या बाद की बात नहीं— सदा और सर्वत्र, तीनों लोकों में, पवित्र प्रेम को छोड़कर कोई हितकारी वस्तु हो सकती है क्या? नहीं हो सकती। ११३

वैय मन्नुयि राहवम् मन्नुयिर्, उय्यत् ताङ्गु मुडलन्न मन्ननुक्
कॅय मिन्ऱि यऱङ्गड वादरुळ्, मॅय्यि निन्ऱपिन् वेळ्वियुम् वेण्डुमो 114

वैयम्–प्रजाजन; मन् उयिराक–अक्षय जीव है, मानकर; अ मन् उयिर् उय्य–उन अक्षय जीवों के भले के लिए; ताङ्कुम्–उनको धारण करनेवाला; उटल् अन्न–शरीर-सम; मन्नतुक्कु–राजा के लिए; अऱम् कटवातु–धर्म का उल्लंघन न करके; अरुळ्–दया; मॅय्यिन्–और सत्य के मार्ग में; ऐयम् इन्ऱि निन्ऱ पिन्–असंदिग्ध रूप से रहकर व्यवहार करेगा तो; वेळ्वियुम् वेण्टुमो–यज्ञ भी चाहिए क्या। ११४

प्रजाजन अक्षय जीव या प्राण हैं। उन जीवों का भर्त्ता शरीर-सम राजा है। अगर वह धर्म का उल्लंघन नहीं करके करुणा और सत्य के मार्ग पर, संशयहीन प्रकार से स्थिर रहेगा तो कोई यज्ञ भी करना चाहिए क्या ? (नहीं।)। ११४

इऩिय शॊल्लिऩ ईहय ऎण्णिऩऩ्, विऩयऩ् तूयऩ् विऴुमियऩ् वॆऩ्ऱियऩ्
निऩयु नीदि नॆऱिहड वाऩॆऩिऩ्, अऩय मऩ्ऩऱ्कु अऴिवुमुण् डाहुमो 115

इऩिय चॊल्लिऩऩ्–मधुर भाषी; ईकैयऩ्–दानी; ऎण्णिऩऩ्–विवेकी; विऩैयऩ्–और कार्यकुशल; तूयऩ्–पवित्र; विऴुमियऩ्–उत्कृष्ट विचार वाला; वॆऩ्ऱियऩ्–और विजयी; निऩैयुम्–सबसे प्रशंसित; नीति नॆऱि कटवाऩ्–नीति मार्ग न छोड़नेवाला हो; ऎऩिल्–तो; अऩैय मऩ्ऩऱ्कु–ऐसे राजा का; अऴिवुम् उण्टाकुमो–नाश (पतन) भी होगा क्या। ११५

कोई राजा मधुरभाषी, दानी, विवेकशील, कर्मण्य, विजयशील, प्रकीर्तित और नीतिमार्ग न त्यागनेवाला हो तो उसकी कोई हानि हो सकती है क्या ? । ११५

शील मल्लऩ नीक्किच्चॆम् बॊऱ्ऱुलैत्, ताल मऩ्ऩ तऩिनिलै ताङ्गिय
ञाल मऩ्ऩऱ्कु नल्लवर् नोक्किय, काल मल्लदु कण्णुमुण डाहुमो 116

चीलम् अल्लऩ नीक्कि–सदाचार जो नहीं है, उनको हटाकर; चॆम् पॊऩ् तुलै–उत्तम स्वर्ण-तुला के; तालम् अऩ्ऩ–(जीभ) काँटे के समान; तऩि निलै ताङ्किय–श्रेष्ठ निष्पक्ष स्थिति को अपनाकर रहनेवाले; ञालम् मऩ्ऩऱ्कु—देश-शासक राजा के; नल्लवर् नोक्किय–अच्छे मन्त्रियों द्वारा निर्दिष्ट; कालम् अल्लतु–काल के सिवा; कण्णुम् उण्टाकुमो–आँखें हो सकती हैं क्या। ११६

जो राजा कुचाल को हटाकर बहुमूल्य स्वर्ण-तुला के काँटे के समान उत्तम निष्पक्षता का आलंबन करके राज करेगा उसे अच्छे अमात्य जो काल बतावेंगे उसके सिवा उसके कोई आँख है क्या ? (इस पद्य में आँख का विचित्र प्रयोग हुआ है। राजा के शासन-कार्य में काल का बड़ा महत्व है। अमात्य लोग जब काल-निर्धारण करेंगे तब अच्छा राजा उसका ध्यान रखेगा। वह अपने तर्क या विवेक की आँख का भरोसा नहीं करेगा। इस अर्थ में यहाँ आँख विवेक या तर्क की शक्ति का संकेत करती है।)। ११६

ओर्वि ऩल्विऩै ऊऱ्ऱत्ति ऩारुरै, पेर्वि ऱॊल्विदि पॆऱ्ऱुळ दऩ्ऱरो
तीर्वि लऩ्बु शॆलुत्तलिऩ् चॆव्वियोर्, आर्व मऩ्ऩवर् कायुदमावदे 117

ओर्विऩ्–तर्कबुद्धि के साथ; नल्विऩै ऊऱ्ऱत्तिऩार्–सत्कर्मों में स्थिर रहनेवालों के; उरै–वचन की शक्ति; पेर्वु इल्–अचल; तॊल् विति–प्राचीन विधि ने भी; पॆऱ्ऱुळतु अऩ्ऱु–नहीं पाई है; तीर्वु इल् अऩ्पु चॆलुत्तलिऩ्–निरन्तर प्रेम करने से;

चॅव्वियोर् आर्वम्–उन उत्तम लोगों की सदिच्छा; मन्नवर्कु–राजा के लिए; आयुतम् आवतु–(शत्रुसंहारक) अस्त्र बनेगी (अरो)। ११७

तर्क और विवेक के साथ जो सोच-समझकर काम करते है उनकी वाणी मे जो शक्ति है वह अकाट्य प्राचीन विधि में भी नहीं है। अडिग प्रेम रखने के कारण उन कर्मठ अमात्यों का सौजन्य राजा की, अस्त्र के समान शत्रु-हनन में सहायता करेगा। ११७

तूम केदु पुविक्कॅन्नत् तोन्ऱिय, वाम मेकलै मङ्गय रालवरुम्
काम मिल्लै यॅनिऱ्कडुङ् गेडॅनुम्, नाम मिल्लै नरहमु मिल्लये 118

पुविक्कु तूमकेतु अॅन्न–पृथ्वी के लिए धूमकेतु (नाशक ग्रह) के समान; तोन्ऱिय–जो पैदा हुई है उन; वामम् मेकलै–सुन्दर मेखलाधारिणी; मङ्कैयराल्–स्त्रियों के कारण; वरुम्–उत्पन्न; कामम् इल्लै अॅनिल्–काम नहीं रहा तो; कडुम् केडु अॅन्नुम् नामम्–कठोर आफ़त का नाम भी; इल्लै–नही रहेगा; नरकमुम् इल्लै–नरक भी नहीं है। ११८

मनोरम मेखलाधारिणी स्त्रियों के प्रति जो कामातुरता पैदा होकर बढ़ती है वह पृथ्वी को संकट देनेवाला धूमकेतु है। अगर वह नहीं होगी तो कष्ट का नाम तक नही रहेगा। नरकवास का मौका भी नही आयेगा। ११८

एनै नीदि यित्तैयन वैयहप्, पोन हर्कु विळम्बिप् पुलङ्गॉळीई
आन वन्नॉडु मायिर मौलियान्, तान नण्णिनन् ऱत्तुव नण्णिनान् 119

तत्तुवम् नण्णितान्–तत्वदर्शी वसिष्ठ; वैयकम् पोनकर्कु–विश्वगर्भ श्रीराम को; इत्तैयन–ऐसी; एनै नीति–अन्य नीतियाँ; विळम्पि–बताकर; पुलम् कॉळीइ–ज्ञान उद्बुद्ध करके; आनवन्नॊडुम्–उनके साथ; आयिर मौलियान् तानम्–सहस्रशीर्ष श्रीरंगनाथ के मन्दिर को; नण्णितान्–पधारे। ११९

तत्वदर्शी ने भूगर्भ श्रीराम को ऐसे और अन्य उपदेश दिये। श्रीराम को ज्ञान दिया। फिर वे श्रीराम को साथ लेकर सहस्रशीर्ष भगवान श्रीरंगनाथ के मंदिर मे गये। ११९

नण्णि नाहणै वळ्ळलै नान्मरैप्, पुण्णि यप्पुन लाट्टिप् पुलमयोर्
अॅण्णु नल्विनै मुऱ्ऱुवित् तेऱ्ऱिनान्, वॅण्णि ऱत्त तरुप्पै विरित्तरो 120

नण्णि–पहुँचकर; नाकम् अणै वळ्ळलै–शेषशायी भगवान को; नाल् मऱै–चतुर्वेदमन्त्रों से; पुण्णियम् पुनल् आट्टि–पवित्रीकृत जल से अभिषिक्त करके; पुलमैयोर् अॅण्णुम्–विद्वानों से आवश्यक माने जानेवाले; नल् विनै–वैदिक कर्मों को; मुऱ्ऱुवित्तु–सम्पूर्ण कराकर; वॅण् निऱत्त–श्वेतवर्ण; तरुप्पै विरित्तु–कुश डसाकर; एऱ्ऱिनान्–उस पर आसीन कराया। १२०

वहाँ उन्होंने चतुर्वेद के मंत्रों से पवित्रीकृत पुण्यजल से श्रीराम

का मज्जन कराया। विद्वानों द्वारा अनुशासित सभी वैदिक कर्मों का श्रीराम से अनुष्ठान करवाया। फिर श्वेतवर्ण कुश बिछाकर उन पर उन्हें आसीन कराया। १२०

❀ एड्रिड वाण्डहै यिनिदि रुन्दपिन्, नूड्रड मार्बनु नोय्दि नेय्दप्पोय्
आड्रल्शाल् मन्नवड् करिवित् तानवन्, शाड्रुह नहरणि शमैक्क वॅन्ड्रनन् 121

एड्रिट–आसीन कराने पर; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; इतितु इरुन्त पिन्–सुख से (ध्यान मग्न) रहने के बाद; नूल्–यज्ञोपवीतधारी; तटमार्पतुम्–विशाल वक्ष वाले वसिष्ठजी; नोय्तिन्–शीघ्र; ॲय्त पोय्–जा पहुँचे और; आड्रल् चाल्–प्रतापी; मन्नवड्कु–चक्रवर्ती के पास; अरिवितुतान्–समाचार दिया; अवन्–राजा ने; नकर् अणि चमैक्क–नगर का अलंकार करने का; चाड्रुक ॲन्ड्रतन्–ढिंढोरा पिटवाओ, यह आज्ञा दी। १२१

श्रीराम दर्भासन पर बैठकर ध्यान करने लगे। तब यज्ञोपवीतधारी विशाल श्रीवक्ष के ऋषि वसिष्ठ शीघ्र शक्तिमान प्रतापी चक्रवर्ती के पास पधारे और सभी बातें सुनायी। तब राजा ने आज्ञा दी कि नगर सजाने की आज्ञा की मुनादी हो जाय। १२१

❀ एविय वळ्ळुव रिराम नाळये, पूमहळ् कोळुननाय्प् पुनैयु मोलियिक्
कोनह रणिहॅनक् कॉट्टुम् बेरिहै, तेवरुङ् गळिहॉळत् तिरिन्दु शाड्रिनार् 122

एविय वळ्ळुवर्–आज्ञापित "वळ्ळुव" लोगों ने; इरामन्–श्रीराम; नाळैये–कल ही; पू मकळ् कोळुनन् आय्–भूमिपति होकर; मोलि पुनैयुम्–मुकुट धरेंगे; इ को नकर्–इस राजधानी नगर को; तेवरुम् कळि कोळ–देवों को भी आनन्द देते हुए; अणिक–सजाओ; ॲन्न–ऐसा; तिरिन्तु–घूम-घूमकर; कॉट्टुम् पेरिकै–ढोल पीटकर; चाड्रिनार्–घोषणा की। १२२

राजाज्ञा पाकर वळ्ळुव (ढिंढोरा पीटनेवाले, विशिष्ट जाति के) लोगों ने सब जगह घूमकर ढिंढोरा पिटवाया कि श्रीराम कल ही भूपति होंगे और किरीटधारण करेंगे। लोग इस राजधानी नगर को ऐसा सजायें कि देव लोग भी विस्मित हो जायें। १२२

❀ कवियमै कीर्त्तियक् काळै नाळये, पुवियमै मणिमुडि पुनैयु मॅन्ड्रशॉर्
चॅवियमै नुहर्च्चिय दॅनिनुन् देवर्तम्, अवियमु दानदन् नहरु ळार्क्कॅलाम् 123

कवि अमै कीर्त्ति–काव्य-योग्य यशस्वी; अ काळै–वे (पुरुष-) ऋषभ; नाळैये–कल ही; पुवि अमै–भूमि को अपने शासनाधीन करने के निशान रूपी; मणि मुटि पुनैयुम्–रत्नकिरीट पहनेंगे; ॲन्ड्र चोल्–यह समाचार; चॅवि अमै नुकर्च्चियतु–श्रुति द्वारा ग्रहण करने योग्य बात ही थी; ॲनिनुम्–तो भी; अ नकर् उळ्ळार्क्कु ॲल्लाम्–उस नगर के सभी वासियों के लिए; तेवर् तम् अवि–देवों का खाद्य; अमुतु आनतु–अमृत-सा (भोग्य) बन गया। १२३

जिन पर काव्य की रचना हो सकती है ऐसे यशस्वी नरपुंगव श्रीराम कल ही भूमि के शासन के अधिकार को अपनाने का निशानरूपी मुकुट धारण करेंगे —यह घोषणा कानों में पड़नेवाली वोली मात्र है। पर अयोध्यानगर-वासियों के लिए यह केवल समाचार सुनना नहीं था। किन्तु देवों का भोग्य अमृत ही हो गया। वे वहुत आनन्दित हो गये। १२३

❀ आर्त्तनर् कळित्तन राडिप् पाडिनर्
वेर्त्तनर् तडित्तनर् शिलिर्त्तु मॅय्म्मयिर्
पोर्त्तनर् मन्नैप् पुहऴ्न्दु वाऴ्त्तिनर्
तूर्त्तन रिरुनिदि शॊल्लि नार्क्कॅलाम् 124

आर्त्तनर् कळित्तनर्—हल्ला मचाया, मोद दिखाया; आटि पाटिनर्—गाये, नाचे; वेर्त्तनर्—पसीना हुए; तटित्तनर्—मोटे हुए; मॅय् मयिर् चिलिर्त्तु—बाल पुलकित हुए; पोर्त्तनर्—शरीर पुलक भरे हो गये; मन्नै—चक्रवर्ती को; पुकऴ्न्तु—तारीफ़ करके; वाऴ्त्तिनर्—स्तुति की; चॊल्लितार्क्कु ॲल्लाम्—समाचार देनेवाले सभी को; इरु निति तूर्त्तनर्—वड़ा धन दिया। १२४

नगरवासियों ने आनन्दारव किया। सव तरह से मोद प्रदर्शित किया। कुछ गाये, कुछ नाचे। कइयों के शरीर स्वेद से भर गये। लोगों के शरीर फूल गये। उनके शरीर के वाल पुलकित हो गये और सारे शरीर पुलक से भर गये। वे राजा की प्रशंसा करने लगे। उनकी सस्तुति की। जो भी आकर समाचार कहता (यद्यपि पहले ही उन्हें मालूम था तो भी) उसे अपार धन भेंट करते। १२४

❀ तिणिशुड रिरवियैत् तिरुत्तु माऱुनऱ्
पणियिडैप् पळ्ळियान् परन्द मार्बिडै
मणियिनै वेहडम् वहुक्कु माऱुम्बोल्
अणिनह रणिन्दन रुरुत्ति माक्कळे 125

उरुत्ति माक्कळ्—उत्साहपूर्ण उन लोगों ने; तिणि चुटर्—घनी किरणों वाले; इरवियै—सूर्य को; तिरुत्तुम् आऱुम्—माँज लिया, ऐसा और; नल् पणि इटै—श्रेष्ठ शेषनाग पर; पळ्ळियान्—शयन करनेवाले (परमपुरुष) के; परन्त मार्पिटै—विशाल वक्षस्थल में रहनेवाले; मणियिनै—कौस्तुभमणि को; वेकटम् वकुक्कुम् आऱुम् पोल्—सान पर तराशकर और चमकदार वना रहे हों, इस प्रकार; अणि नकर्—सुन्दर नगर को; अणिन्तनर्—सजाने लगे। १२५

वे नगर को अलंकृत करने लगे। उनका प्रयास ऐसा रहा मानो अंशुमाली को नयी रौनक दी जा रही हो; या श्रेष्ठ शेषनाग-शायी श्रीविष्णु भगवान के विशाल वक्ष को भूषित करनेवाली कौस्तुभ मणि सान पर धरकर तराशी जा रही हो! अयोध्या नित्यसुन्दर नगर है। उसे और भी सुन्दर वनाया गया। १२५

❀ वॆळ्ळिय करियन शॆय्य वेऱुळ
कॊळ्ळवान् कॊडिनहर्क् कुळाङ्गॊण् डाडुव
कळ्ळविळ् कोदयान् शॆल्वङ् गाणिय
पुळ्ळॆलान् दिरुनहर् पुहुन्द पोन्ऱवे 126

वॆळ्ळिय–श्वेत रंग की; करियन–काले रंग की; चॆय्य–लाल; वेऱु उळ–अन्य विविध रंगों की; नकर्–नगर भर में; कॊळ्ळ कॊण्टु–बहुत बड़ी राशि में; आटुव–हिलनेवाली; वान् कॊटि–श्रेष्ठ पताकाएँ; कळ् अविळ् कोतैयान्–शहद के साथ खिले पुष्पों की माला के धारी श्रीराम का; चॆल्वम् काणिय–श्रीयुक्त होना देखने के लिए; पुळ् ऎलाम्–पक्षीगण सब; तिरुनकर्–श्रीसम्पन्न नगर में; पुकुन्त पोन्ऱ–आ जुटे हों, ऐसा लगीं। १२६

कई पताकाएँ फहरायी गई। वे सफ़ेद, काली, लाल और अनेक रंगों की थीं। उनको देखकर ऐसा लगा मानो सारे खगगण शहद के साथ खिले पुष्पों की माला से शोभायमान श्रीराम का श्रीयुक्त होने का वैभव देखने आ पहुँचे हों। १२६

मङ्गयर् कुऱङ्गॆन वहुत्त वाळैहळ्, अङ्गवर् कळुत्तॆनक् कमुह मार्न्दन
तङ्गॊळि मुऱुवलिर् ऱाम नान्ऱन, कॊङ्गयि निरैत्तन कनह कुम्बमे 127

अङ्कु–वहाँ; मङ्कैयर् कुऱङ्कु ऎन–रमणियों के ऊरुओं के समान; वाळैकळ्–कदलीवृक्ष; वकुत्त–(यत्रतत्र) लगाये गये; अवर् कळुत्तु ऎन–उनके कण्ठों के समान; कमुकम्–पूग के वृक्ष; आर्न्तन–(गाड़कर) भर गये; ऒळि तङ्कु–प्रकाशमान; मुऱुवलिन्–(उनके) दाँतों के समान; तामम् नान्ऱन–मोतियों की मालाएँ लटकाई गईं; कॊङ्कैयिन्–उनके स्तनों के समान; कनकम् कुम्पम्–स्वर्णकलश; निरैत्तन–पंक्ति में रखे गये। १२७

उस नगर में कदली वृक्ष और पूग वृक्ष यत्रतत्र गाड़े गये। मुक्ता-मालाएँ लटकायी गई। पूर्णकलश पंक्तियों में रखे गये। वे क्रमशः रमणियों की जाँघों, कंठों, दंतावलियों और स्तनों के समान थे। १२७

मुदिरॊळि युयिर्त्तन मुडुहिक् कालयिऱ्, कदिरवन् वेऱॊरु कविन्कॊण् डानॆन
मदितॊड निवन्दुयर् महर तोरणम्, पुदियन वलर्न्दन पुदव राशिये 128

पुतियन–नवीन; मति तॊट–चन्द्रमण्डल को छूते हुए; निवन्तु उयर्–उन्नत बड़े ऊँचे; मकर तोरणम्–मकर तोरण; अलर्न्तन–जिन पर बने; पुतवम् राशिये नगरद्वार; कालैयिल् कतिरवन्–उदय सूर्य ने; मुटुकि–सत्वर आकर; वेऱु ऒरु कविन् कॊण्टान्–दूसरा एक सुन्दर रूप धर लिया; ऎन–ऐसा; मुतिर् ऒळि उयिर्त्तन–अतिशय प्रकाश देने लगे। १२८

नगर द्वारों में नये मकर-तोरण बनाये गये। वे चंद्रमंडल को छूते-से उन्नत बनाये गये। वे ऐसे प्रकाश देने लगे मानो उदय सूर्य ने शीघ्र आकर अभूतपूर्व सुन्दर रूप धर लिया हो। १२८

तुनियऱ शॅम्मणित् तूण नीऱुतोय्, वनिदयोर् कूऱिनन् वडिवु काट्टिऩ
पुनैतुहि लुऱैतॊऱुम् बॊलिन्दु तोन्ऱिन, पनिपॊदि कदिरॅनप् पवळत् तूण्गळे 129

पुनै तुकिल् उऱै तॊऱुम्–अलंकृत वस्त्र की वनी खोलों के; तुनि अऱ–निर्मल; चॅम्मणि तूणम्–माणिकमय खम्भों ने; नीऱु तोय्–भभूतधारी; वनितै ओर कूऱिनन्–और अर्धनारीश्वर के; वटिवु–रूप को; काट्टिऩ–दिखाया; पवळम् तूण्कळ्–मूंगे के खम्भे; पनि पॊति कतिर् ॲन–हिमाच्छादित सूर्य के समान; पॊलिन्तु तोन्ऱिऩ–सुन्दर दिखे। १२६

खंभों के ऊपर नवीन (श्वेत) वस्त्र की खोलें चढ़ायी गई। कुछ खंभे माणिक्य-सज्जित थे। वे भभूतधारी अर्धनारीश्वर श्री शिवजी के समान लगे। कुछ लाल प्रवाल के खंभे थे। वे उस सूर्य के समान सुन्दर थे जिसको हिम ढँक रहा था। [वस्त्र की खोल भभूत (भस्म) और हिम से उपमित है और खंभे शिवजी और अंशुमाली से उपमित हैं।]। १२९

मुत्तिनाऩ् मुऴुनिला वॅऱिप्प मॊय्म्मणिप्
पत्तियि निऴवॅयिल् परप्प नीलत्तिन्
तॊत्तिऩ मिरुळ्वरत् तूणडच् चोदिड
वित्तहर् विरित्तना ळॊत्त वीदिये 130

वीति–वीथियाँ; मॊय्मणि पत्तियिऩ्–पास-पास रखी गई लाल मणियों की पंक्तियों के कारण; इळ वॅयिल् परप्प–बाल धूप छिटकाती है; तॊत्तु नीलत्तिन् इऩम्–झुरमुटों में रहे नीले रत्न; इरुळ् वर तुण्ट–अन्धकार को उकसाते हैं; मुत्तिऩाऩ्–मोतियों से; मुऴुनिला ॲऱिप्प–पूर्णचाँदनी फैलती है; चोतिटम् वित्तकर्–ज्योतिष शास्त्र विद्वानों के; विरित्त–वर्णित; नाळ् ऑत्त–दिन के समान थीं। १३०

वीथियाँ रत्न, नीली मणियाँ, मोती आदि से भरी थीं। रत्नों से मंद धूप-सा प्रकाश, नीली मणियों से अंधकार-सा और मोतियों से चंद्रिका का प्रकाश छूटता था। इसलिए वे वीथियाँ ज्योतिष-शास्त्रियों से वर्णित दिन के समान थीं। एक ही दिन में सूर्य की धूप, अंधकार और चाँदनी तीनों पायी जाती है। वैसे ही वीथियों में तीनों पाये जाते थे। तिथि, नक्षत्र, योग आदि की गणना ज्योतिषी करते है। १३०

* आडन्मान् ऱेर्क्कुऴा मवनि काणिय
वीडॅनु मुलहिन्वीऴ् विमानम् वोन्ऱन
ओडैवॅङ् गडहळि ऱुदय माल्वरै
तेडरुङ् गदिरॊडुन् दिरिव पोन्ऱवे 131

आटल्मान्–नर्तनशील अश्वों के; तेर् कुऴाम्–(जुते) रथों का समूह; अवनि काणिय–इस अवनी को देखने के लिए; वीटु ॲनुम् उलकिल्–मुक्ति के स्वर्ग के लोक से; वीऴ्–उतरकर आये हुए; विमानम् पोऩ्ऱऩ–देवयानों के समान थे; ओटै–मुखपट्ट पहने हुए; वॅम् कटम् कळिऱु–भयंकर मदमत्त गज; उतयम् माल् वरै–गुरु

उदयपर्वत अनेक; तेट अरु कतिरोंटुम्-अलभ्य सूर्यों के साथ; तिरिव पोऩ्ऱ-घूमते जैसे थे। १३१

नाचते-से सुन्दर चाल के साथ दौड़नेवाले अश्वों से जुते रथ पृथ्वी के दर्शनार्थ आगत देवयानों के समान लगे जो पापपुण्य-मुक्त स्वर्गलोक से चाव के साथ उतर आये थे। उज्ज्वल मुखपट्टों के साथ जो भयंकर मदमत्त गज घूमते थे वे अनेक उदयगिरियों के समान लगे जो अलभ्य अंशुमालियों के साथ आ रहे हों। १३१

वळङ्गॅळ्ळु तिरुनहर् वैहुम् वैहलुम्
पळिङ्गुडै नॅडुञ्जुव रडुत्त पत्तियिल्
किळर्न्दॅळ्ळु शुडर्मणि यिरुळैक् कीऱलाल्
वळर्न्दिल विरिन्दिल शॅक्कर् वाऩमे 132

वळम् कॅळ्ळु तिरुनकर्-सर्वसमृद्ध श्रीमन्त नगर में; वैकुम् वैकलुम्-वास के हर दिन; पळिङ्कु उटै(य)-स्फटिक की; नॅटु चुवर्-ऊँची दीवारों पर; पत्तियिल् अटुत्त-श्रेणियों में जड़ित; किळर्न्तु ॲळु चुटर्-छिटक उठनेवाली किरणों के; मणि-रत्न; इरुळै कीऱलाल्-अँधेरे को चीर देते हैं, इसलिए; वळर्न्तिल-नहीं बढ़ता; चॅक्कर् वाऩम्-लाल गगन; विरिन्तिल-नहीं फैलता। १३२

सर्वसमृद्ध उस नगर की स्फटिकमय दीवारों पर अनेक रत्न जटित थे। उनसे लगातार विपुल किरणराशि छूट रही थी। उसने अँधेरे को मिटाया। इसलिए किसी भी दिन न अन्धकार रहा, न (सांध्य-) गगन की लालिमा विस्तृत हुई। (न अँधेरा हुआ न संध्या आई)। दिन और रात एक समान थे। १३२

❀ पूमळै पुऩ्ऩ्मळै पुदुमॅऩ् शुण्णत्तिऩ्
तूमळै तरळत्तिऩ् ऱोमिल वॅण्मळै
तामिळै नॅरिदलिऱ् ऱहर्न्द पॊऩ्मळै
मामळै निहर्त्तऩ माड वीदिये 133

माटम् वीति-प्रासादों से भरी वीथियों में; पू मळै-पुष्पों की वर्षा; पुऩ्ऩल् मळै-(धूल थमाने के लिए सिंचित) सुवासित जल की वर्षा; तूम्-छिड़के हुए; पुतु मॅऩ् चणणत्तिऩ् मळै-नवीन सुगन्ध-चूर्ण की वर्षा; तोम् इल-निर्मल; वॅण् तरळत्तिऩ् मळै-श्वेतमुक्ता के चूर्ण की वारिश; इळै ताम् नॅरितलिऩ्-आभरणों के, भीड़ के कारण, आपस में टकराने से; तकर्न्त पॊऩ् मळै-टूटकर गिरे स्वर्ण की वर्षा; मा मळै निकर्त्तऩ-(सब मिलकर) विपुल वर्षा-सी बन गई। १३३

प्रासादों से भरी अयोध्या की वीथियों में पुष्पों की वर्षा, सुवासित जल की वर्षा, नवीन सुगन्ध-चूर्ण की वर्षा, निर्मल मोतियों की वर्षा, भीड़ के कारण आपस में टकराकर आभरणों ने जो स्वर्णकण गिराये उनकी वर्षा —सब मिल गई और बड़ी भारी वर्षा-सी हो गई। १३३

कारोंडु तोंडर्मदक् कळिरु शॅन्ऱन, वारोंडु तोंडर्हळ्न् मैन्द रामॅनत्
तारोंडु नडन्दन पिडिह डाळ्हलैत्, तेरोंडु नडक्कुमत् तॅरिवै मारिने 134

कारोंटु तोंटर्–मेघों से तुलनेवाले; मतम् कळिऱु–मत्तगज; वारोंटु तोंटर्–तस्मे से बँधी; कऴल्–पायलधारी; मैन्तर् आम् अॅत–पट्ठों के समान; चॅन्ऱत–चले; पिटिकळ्–हथिनियाँ; ताऴ् कलै–लटकते वस्त्रों से आवृत; तेरोंटु नटक्कुम्–रथों (नितम्बों) के साथ चलनेवाली; अ तॅरिवै मारिन्–उन स्त्रियों के समान; तारोंटु नटन्तत–कण्ठहार के साथ चलीं। १३४

वहाँ हाथी और हथिनियाँ घूम रही थीं। मेघसम वे हाथी तस्मों पर बँधी घुँघुरुओं की बनी पायल के धारी पट्ठों के समान घूमे। हथिनियाँ अपने गले के हारों के साथ उन स्त्रियो के समान घूमी जो ढीले वस्त्रों से आवृत नितंवों के साथ घूम रही थीं। १३४

ॐ एयन्दॅळु शॅल्वमु मळ्हु मिन्बमुम्, तेयन्दिल वनैयदु तॅरिहि लामयाल्
आयन्दत्तर् पॅरुहवु ममर रिम्बरिऱ्, पोन्दवर् पोन्दिल मॅन्नुम् बुन्दियाल् 135

एयन्तु अॅऴु चॅल्वमुम्–लगी रहकर बढ़नेवाली सम्पत्ति; अऴकुम्–और सौंदर्य; इन्पमुम्–आनन्द; तेयन्तिल–घटे नहीं; अतैयतु–उसको; तॅरिकिलामैयाल्–न जानने से; इम्परिल् पोन्तवर्–इस लोक में आगत; अमरर्–सुर लोग; पोन्तिलम् अॅन्नुम् पुन्तियाल्–अभी नहीं पहुँचे, इस बोध से; पॅरुकवुम् आयन्ततर्–बहुत सोच-विचार करने लगे। १३५

उस नगर में संपत्ति, सौन्दर्य और आनन्द हमेशा लगे रहे; कभी कम नहीं हुए। यह तथ्य सुर लोग नहीं जानते थे। इसलिए वे, जो अभिषेक के दर्शनार्थ आये थे, अयोध्या में पहुँचकर भी यह समझे कि हम अभी नहीं पहुँचे हैं— अपने देवलोक में ही है। इसलिए वे सोच-विचार में पड़ गये। १३५

ॐ अन्नह रणिवुरु ममलै वानवर्, पॉन्नह रिदुवॅनप् पॉलियु मेल्वयिल्
इन्नल्शॅ यिरावण निळैत्त तीमैपोल्, तुन्नरुङ् गॉडुमनक् कूनि तोन्ऱिनाळ् 136

अ नकर्–वह नगर; अणिवु उऱुम् अमलै–जो सजाया जा रहा था, उस शोर-गुल में; वानवर् पॉन् नकर् इतु अॅन–देवों की स्वर्णपुरी यह है, ऐसा; पॉलियुम् एल्वैयिल्–जब शोभित रहा, तब; इन्नल् चॅय् इरावणन्–(लोक-) हानिकारक रावण के; इऴैत्त तीमै पोल्–किये दुष्कर्मों के रूप के समान; तुन्न अरु–अचिन्त्य; कॉटु मनम्–क्रूर मन की; कूनि–कुब्जा (मंथरा); तोन्ऱिनाळ्–प्रकट हुई। १३६

अयोध्या में अलंकार के कार्यों के कारण बड़ा शोरगुल मचा हुआ था। वह देवों की स्वर्णनगरी के ही समान शोभापूर्ण था। उस समय कुब्जा मंथरा प्रकट हुई। वह साक्षात उस आततायी रावण के सभी दुष्कर्मों के मूर्तरूप के समान थी। उसका मन अत्यंत और अचिंत्य रीति से क्रूर था। १३६

❀ तोन्ऱिय कूनियुन् दुडिक्कु नॅञ्जिन्ताळ्
ऊन्ऱिय वॅहुळिया ळुळैक्कु मुळ्ळत्ताळ्
कान्ऱॅरि नयनत्ताळ् कलिक्कुञ् जॊल्लिन्ताळ्
मून्ऱुल हिनुक्कुमो रिडुक्कण् मूट्टुवाळ् 137

तोन्ऱिय कूनियुम्–प्रकट जो हुई वह कुब्जा; मून्ऱु उलकित्तुक्कुम्–तीनो लोकों को; ओर् इट्टुक्कण् मूट्टुवाळ्–एक आफत मचानेवाली; तुटिक्कुम् नॅञ्चित्ताळ्–उद्विग्न मन वाली; ऊन्ऱिय वॅकुळियाळ्–गम्भीर क्रोध वाली; उळैक्कुम् उळ्ळत्ताळ्–(क्रोध से) आक्रांत मन वाली; कान्ऱु ऍरि नयनत्ताळ्–क्रोध से जलती-सी आँख वाली; कलिक्कुम् चॊल्लिन्ताळ्–उच्च स्वर वाली। १३७

जो सामने प्रकट होकर आई वह मंथरा तीनों लोकों पर सितम ढानेवाली थी। उसका मन उद्विग्न था; गंभीर क्रोध घर किये था। उसका चित्त क्रोधाक्रान्त था। उसकी आँखें जलती आग के समान थीं और वाणी उग्र थी। १३७

❀ तॊण्डवाय्क् केहयन् ऱोहै कोयिन्मेल्
मण्डिनाळ् वॅहुळियिन् मडित्त वायिनाळ्
पण्ड(य्)ना ळिराहवन् पाणि विल्लुमिळ्
उण्डयुण् डदनैत्तन् नुळ्ळत् तुळ्ळुवाळ् 138

पण्टै नाळ्–पूर्व समय में; इराकवन् पाणि–श्रीराम के हाथ के; विल् उमिळ् उण्टै–चाप से निकले गुलेले (मिट्टी की गोलियाँ); उण्टततै–खाने (मारे जाने) को; तन् उळ्ळत्तु उळ्ळुवाळ्–अपने मन में स्मरण करती; वॅकुळियिन्–उस कोप से; मटित्त वायिनाळ्–(अधर मोड़े) होंठ चबाती हुई; तॊण्टै वाय्–बिंबाधरा; केकयन् तोकै–केकय की मयूराभा पुत्री, कैकेयी के; कोयिल् मेल्–महल पर; मण्टिनाळ्–प्रचण्डवेग से आई। १३८

पहले कभी श्रीराम उस पर गुलेले (चाप से मिट्टी की गोलियाँ) मारते थे। उसे वह याद करती थी। उससे क्रोधोन्मत्त हुई। वह होंठ चबाते हुए केकयराजतनया, मयूराभा कैकेयी के महल पर प्रचंड गति से गई। (यह गुलेला मारने की बात वाल्मीकि ने नहीं कही है। लेकिन तमिळ् के वैष्णव संतों की कृतियों में इसका उल्लेख है।)। १३८

❀ नाऱ्कडऱ् पडुमणि नळिनम् बूत्तदोर्
पाऱ्कडऱ् पडुदिरैप् पवळ वल्लियै
पोऱ्कडैक् कण्णरुळ् पॊळियप् पॊङ्गणै
मेऱ्किडन् दाडनै विरैवि नॅय्दिन्ताळ् 139

नाल् कटल् पटु मणि–चारों ओर के समुद्र से प्राप्त रत्नों के साथ; नळितम् पूत्ततु–कमल खिला हो जैसे; ओर् पाल् कटल् पटु तिरै–अनुपम क्षीरसागर की तरंगों के बीच रहनेवाली; पवळ वल्लियै पोल्–प्रवाललता के समान; पॊङ्कु अणै मेल्–

उन्नत एक शय्या पर; कटै कण् अरुळ पोऴिय-अपांगों से कृपा प्रकट करते हुए; किटन्ताळ् तलै-लेटी हुई कैकेई को; विरैवित् ॲय्तिनाळ्-शीघ्र नियराई। १३८

कैकेयी शय्या पर शयन करती सो रही थीं। वह रत्नाकरों से प्राप्य रत्नों के साथ खिले कमल के समान लगीं। और उस प्रवाल-वल्लरी के समान भी लगीं जो क्षीरसागर की तरंगों के मध्य फैली हो। कुब्जा उनके पास अति वेग से गई। १३९

❀ ॲय्दियक् केहयन् मडन्द येडविऴ्
नॊय्दलर् तामरै नोऱ्ऱ नोऱ्विन्नाऱ्
शॆय्दपे रुवमैशाल् शॆम्बॊऱ् चीऱ्ऱडि
कैहळिऱ् ऱीण्डिन्नळ् कालक् कोळ्ळाळ् 140

कालम् कोळ् अन्नाळ्-बुरा काल उत्पन्न करनेवाले बुरे ग्रह के समान वह; ॲय्ति-पास पहुँचकर; अ केकयन् मटन्तै-उन केकयपुत्री के; एटु अविऴ्-खुली पंखुड़ियों के साथ; नॊय्तु अलर्-मृदु-विकसित; तामरै-कमलपुष्प; नोऱ्ऱ नोऱ्पित्ताल्-अपनी की हुई तपस्या से; चॆय्त-प्राप्त; पेर् उवमै चाल्-श्रेष्ठ उपमा के योग्य (जिससे) बना; चॆम्पॊऩ् चिऱु अटि-उत्तम स्वर्णाभूषण शोभित लघु चरण को; कैकळिन् तीण्टिनळ्-हाथों से स्पर्श किया। १४०

बुरे काल के बुरे ग्रह के समान उस मंथरा ने उनके पास पहुँचकर कैकेयी के उस मृदु चरण का स्पर्श किया जिसकी उपमा पाने के लिए कमल ने तपस्या की थी। वह चरण पुष्ट पखुड़ियों के व विकासशील कमल के पुष्प के समान था। १४०

❀ तीण्डलु मुणर्न्दत् तॆय्वक् कऱ्पिनाळ्
नीण्डकण् णन्न्दलु नीङ्गु हिऱ्ऱिलळ्
मूण्डॆऴु पॆरुम्बऴि मुडिक्कुम् वल्विनै
तूण्डिडक् कट्टुरै शॊल्लन् मेयिन्नाळ् 141

तीण्टलुम्-स्पर्श करते ही; उणर्न्त-निद्रामुक्त; अ-वे; तॆय्व कऱ्पित्ताळ्-दैवी पातिव्रत्यवती; नीण्ट कण्-लम्बी आँखों में; अतन्तलुम् नीङ्कुकिऱ्ऱिलळ्-तन्द्रा छुड़ा नहीं पाई; मूण्टु ॲऴु-उठकर फैलनेवाले; पॆरु पऴि-बड़े निन्द्य काम को; मुटिक्कुम्-करा चुकनेवाली; वल् विनै तूण्टिट-बलवान विधि की प्रेरणा से; कट्टुरै-अपनी वार्ता को; चॊल्लल् मेयिनाळ्-(मंथरा) कहने लगी। १४१

स्पर्श होते ही उन दैवी पतिव्रता ने निद्रा त्यागी। पर अभी उनकी आँखों से तन्द्रा न छूटी थी। पीछे बड़ा अपयश लानेवाला कार्य होने को था। उसकी विधि की प्रबल प्रेरणा थी। इसलिए कुब्जा अपने मन की सोची बात यों कहने लगी। १४१

❀ अणङ्गुवाळ् विडवरा वणुहु मॅल्लयुम्
गुणङ्गॅडा दॉळिविरि कुळिर्वॅण् डिङ्गळपोल्
पिणङ्गुवान् पेरिडर् पिणिक्क नण्णवुम्
उणङ्गुवा यल्ल(य्)नी युरङ्गु वायॅन्ऱाळ् 142

अणङ्कु–पीडक; वाळ् विटम्–भयंकर विषैला; अरा–राहु सर्प; अणुकुम् ॲल्लैयुम्–अपने पास आते तक; कुणम् कॅटातु–(शीतलता का) स्वभाव न खोकर; ऑळि विरि–प्रकाश देनेवाले; कुळिर् वॅण् तिङ्कळ् पोल्–शीतल श्वेत चन्द्र के समान; पिणङ्कु–विपरीत; वान् पेर् इटर्–बहुत बड़ा दुख; पिणिक्क नण्णवुम्–आपको ग्रसने आ रहा है, तो भी; उणङ्कुवाय् अल्लै–दुख नहीं समझतीं; नी उऱङ्कुवाय्–तुम सोओगी; ॲन्ऱाळ्–पूछा। १४२

पीड़ा देनेवाले विष से युक्त राहु-सर्प जब आपको ग्रसने आता है तब भी चन्द्र अज्ञ रहकर अपना स्वभाव न छोड़कर प्रकाश देता रहता है। उस शीतल श्वेत राकापति के समान आप भी इस बात को नहीं समझतीं कि बड़ी विपदा आपको ग्रसने आ रही है। आप दुख का अनुभव नही करती। आप सोती रहती है। १४२

❀ वॅव्विड मन्तयवळ् विळम्ब वेऱ्कणाळ्
तॅव्वडु शिलैक्कयॅन् शिऱुवर् शॅव्वियर्
अव्ववर् तुऱैतॊऱु मऱन्दि ऱम्बलर्
ॲव्विड रॅन्क्कुवन् दडुप्प दीङ्गॅना 143

वॅम् विटम् अन्तैयवळ्–भयंकर विषतुल्य उसके; विळम्प–कहने पर; वेल् कण्णाळ्–शक्ति-सम नेत्र वाली; तॅव् अटु–शत्रुसंहारक; चिलै कै–धनुर्हस्त; ॲन् चिऱुवर्–मेरे पुत्र (चारों); चॅव्वियर्–बलवान हैं; अव् अवर् तुऱै तॊऱुम्–उनके अपने-अपने क्षेत्रों में; अऱम् तिऱम्पलर्–धर्मविमुख न होनेवाले; ईङ्कु–तब यहाँ; ॲव् इटर्–कौन सी विपदा; ॲन्तक्कु वन्तु अटुप्पतु–मेरे पास आ लगेगी; ॲना–यह कहकर। १४३

भयंकर विष-सी मंथरा ने जब यह बात कही तो शक्ति (बर्छी-) सी आँख वाली कैकेयी ने पूछा कि क्या बात कहती हो? मेरे चार पुत्र हैं जो शत्रुसंहारक धनुर्धर है। वे प्रतापी हैं और अपने-अपने मार्ग के धर्म से हटनेवाले नहीं हैं। उनके रहते मुझ पर क्या विपदा आयेगी ? । १४३

❀ परावरुम् पुदल्वरैप् पयक्क यावरुम्
उरावरुन् दुयर(य्)विट् टुऱुदि काण्बराल्
विरावरुम् बुविक्कॅलाम् वेद मेयन
इरामनैप् पयन्दवॅर् किडरुण् डोवॅन्ऱाळ् 144

यावरुम्–सभी कोई; परावु–जिनकी प्रशंसा करते है; अरु पुतल्वरै पयक्क–श्रेष्ठ पुत्र को पाने पर; उरावु–कठोर; अरु तुयरै विट्टु–और कठिन दुखों से छूटकर;

उरुति काण्पर्–श्रेष्ठ भलाई पायेंगे; विरावु–विविध जीवों से मिश्रित; अरु पुविक्कु ऍल्लाम्–उत्तम सभी लोकों के लिए; वेतमे अन्न–वेदों के ही समान; इरामतै पयन्त ऍर्कु–श्रीराम को पुत्र रूप में जिसने पाया है, उस मुझे; इटर् उण्टो–आफत होगी क्या; ऍन्ऱाळ्–कहा। १४४

संसार में कोई भी हों, उसके यशस्वी पुत्र पैदा हो जायँ तो वे प्रबल दुखों से निवृत्त हो जाते हैं और उनका परम सौभाग्य हो जाता है। मेरे तो श्रीराम पुत्र है जो विविध जीवों से भरे सभी लोकों के लिए वेद समान है। फिर मुझे भी कोई विपदा होगी क्या ? (वेद धर्मशास्त्र के मूल हैं जो विधि-निषेधों द्वारा मनुष्य को मार्ग वताते हैं। श्रीराम भी धर्मानुयायी ही नहीं धर्मप्रवर्तक भी हैं। वे "विग्रहवान धर्म" भी कहे जाते है।)। १४४

❀ आऴ्न्दपे रन्बिना ळनैय कूऱलुम्
शूऴ्न्दती विनैनिहर् कूनि शॊल्लुवाळ्
वीऴ्न्ददु निन्नलन् दिरुवुम् वीन्ददु
वाऴ्न्दनळ् कोसलै मदियि नालॆन्ऱाळ् 145

आऴ्न्त पेर् अन्पिनाळ्–गम्भीर तथा अतिशय वात्सल्यशीला के; अनैय कूऱलुम्–ऐसा कहते ही; चूऴ्न्त–आवृत; ती वित्तै निकर्–बुरे कर्म के समान; कूनि–कुब्जा; चॊल्लुवाळ्–फिर से कहनेवाली वनकर; निन् नलम् वीऴ्न्ततु–आपका भाग्य मिट गया; तिरुवुम् वीन्ततु–वैभव भी मिट गया; कोचलै–कौसल्या; मतियिनाल् वाऴ्न्ततळ्–बुद्धिचातुर्य से खुशहाल हो गई; ऍन्ऱाळ्–कहा। १४५

श्रीराम पर गंभीर और अतिशय प्रेम रखनेवाली कैकेयी ने यह वात कही तो मंथरा चुप नहीं रही। वह तो बुरे कर्म के समान उन्हें घेर आई थी। उसने कहा— आपका सौभाग्य मिट गया। आपका विभव मिट गया। कौसल्या अपनी बुद्धि-चातुर्य से उत्कर्ष पा गई। १४५

❀ अन्नशॊ लनैयव ळुरैप्प वायिऴै
मन्नवर् मन्ननेर् कण्वन् मैन्दनेर्
पन्नरुम् बॆरुम्बुहऴ्प् परदन् पार्दनिल्
ऍन्निदन् मेलवद् कॆय्दुम् वाऴ्वॆन्ऱाळ् 146

अनैयवळ्–उस (मंथरा) के; अन्न चॊल् उरैप्प–वे शब्द कहने पर; आय् इऴै–चुने हुए श्रेष्ठ आभरणभूषित कैकेयी; कणवन्–(कौसल्या के) पति; मन्नवर् मन्नतॆल्–राजाओं के राजा हैं; पन्न अरु–अवर्ण्य; पॆरु पुकऴ्–वड़े यशस्वी; परतन्–भरत; मैन्ततॆल्–पुत्र है; पार् ततिल्–(तब) इस पृथ्वी पर; इतन् मेल्–इससे वढ़कर; अवट्कु ऍय्तुम् वाऴ्वु–उनको मिलनेवाला सौभाग्य; ऍन्–क्या है; ऍन्ऱाळ्–पूछा। १४६

श्रेष्ठ आभरणधारिणी कैकेयी ने इसके उत्तर में पूछा— कौसल्या के

पति राजाधिराज दशरथ हैं। अवर्ण्य यश के भागी भरत उनका पुत्र है। क्या यह कम है ? इससे बढ़कर कौन सा उत्कर्ष उन्हें मिलनेवाला है ? (कौसल्या भरत पर और कैकेयी राम पर समान प्रेम रखती थीं।)। १४६

❀ आडवर् नहैयुऱ वाण्मै माशुऱत्, ताडहै यॆन्नुम्बॆयर्त् तैय लाळ्पडक्
कोडिय वरिशिलै यिरामन् कोमुडि, शूडुव नाळैवाळ् विदॆन्च् चॊल्लिनाळ् 147

आटवर् नकैयुऱ–पुरुष लोग परिहास करे; आण्मै माचु उऱ–पुंसत्व कलंकित हो जाय, ऐसा; ताटकै ॲन्नुम् पॅयर्–ताड़का नाम की; तैयलाळ् पट–स्त्री को मारने के लिए; कोटिय–झुकाये गये; वरि चिलै–बन्धनयुक्त धनु के; इरामन्–(धारण करनेवाले) श्रीराम; नाळै–कल; को मुटि चूटुवन्–राजमुकुट धारण करेगा; वाळ्वु इतु–(कौसल्या का) जीवनोत्कर्ष यही; ॲन्–ऐसा; चॊल्लिनाळ्–कहा (मंथरा ने)। १४७

मंथरा ने कहा— पूछती है ? उनका पुत्र जो सब तरह से अयोग्य है कल राजमुकुट पहनेगा। ताड़का नाम की एक स्त्री पर उसने अपना धनुष झुकाकर बाण फेंका और उसे मारा। पुरुष लोग उसकी निन्दा करते हैं। पुंसत्व ही उसके इस काम से कलंकित हो गया। वह राम राजा बनेगा ! यही कौसल्या का उत्कर्ष है ! । १४७

❀ माऱ्ऱमह(क्) (त्)तुरैशॆय मङ्गै युळ्ळमुम्
आऱ्ऱल्शाल् कोशलै यऱिवु मॊत्तवाल्
वेऱ्ऱुमै युऱ्ऱिलळ् वीरन् ऱादैपुक्
केऱ्ऱव ळिदयत्ति निरुक्क वॆकॊलाम् 148

माऱ्ऱम् अ.्तु–उत्तर में वह; उरै चॆय–कहने पर; मङ्कै उळ्ळमुम्–देवी (कैकेयी) का मन; आऱ्ऱल् चाल् कोचलै अऱिवुम्–और सुदृढ़ कौसल्या की बुद्धि; ऑत्त–एक सम थी; वेऱ्ऱुमै उऱ्ऱिलळ्–भेद नहीं मानती थीं; वीरन् तातै–वीरराघव के पिता; अवळ् इतयत्तिन् पुक्कु–उसके हृदय में प्रवेश कर; एऱ्ऱु–वासस्थान मानकर; इरुक्कवे कॊल् आम्–वास करते थे, शायद उससे। १४८

यह सुनकर कैकेयी के मन में कोई वैषम्य उदित नहीं हुआ। उनके हृदय में दशरथजी वास करते थे। शायद उस कारण से उनका मन और कौसल्या की दृढ़ बुद्धि दोनों श्रीराम पर समान प्रेम रखते थे। इस पद में एक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक बात कही गयी है। कैकेयी का राम पर प्रेम मन का और कौसल्या का भरत पर प्रेम बुद्धि पूर्वक था। इसका भेद हम पीछे देखते हैं। कैकेयी का राम-प्रेम चलित हो गया और कौसल्या का भरत-प्रेम अडिग रहा। १४८

❀ आयपे रन्बॆन्नु मळक्क राऱ्ऱॊळ्त्
तेय्विला मुहमदि विळङ्गित् तेशुऱत्

तूयव ऴुवहैपोय् मिहच्चु डर्क्कॆलाम्
नायह मऩ्ऩैयदोर् मालै नल्हिनाळ् 149

तूयवळ्–पवित्र मन वाली; आय–अपने मन में रहे; पेर् अऩ्पु ॲऩुम् अळक्कर्–बड़े प्रेमसागर के; आर्त्तु ॲऴ–गर्जन कर उठते; मुकम्–मुख रूपी; तेय्वु इला मति–अक्षय चन्द्र के; विळङ्कि तोऩ्ऱ–अधिक शोभायमान होते; तेचु उऱ–तेज से भर जाते; उवकै पोय् मिक–उल्लास के बढ़ते; चुटर्क्कु ॲल्लाम्–सभी ज्योतियों के; नायकम् अऩैयतु–नायक जैसा (श्रेष्ठ); ओर् मालै–एक स्वर्णहार को; नल्किऩाळ्–उपहार में दिया। १४६

पवित्र मन वाली कैकेयी के मन में जो प्रेम उठा वह समुद्र-सम कोलाहल के साथ उमड़ने लगा। उनका मुख अक्षय चन्द्र के समान अधिक शोभा। उसमें एक नया तेज स्फुरित हुआ। आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। तब उन्होंने ग्रह और नक्षत्र आदि ज्योतियों से भी बढ़कर तेजोमय एक स्वर्णहार उठाकर मंथरा को उपहार में दिया। १४९

❀ तॆऴित्तऩ ऴुरप्पिऩळ् शिऱुकण् डीयुह
विऴित्तऩळ् वैदऩळ् वॆय्दु यिर्त्तऩळ्
अऴित्तऩ ळऴुदऩ ळम्बॊऩ् मालयाल्
कुऴित्तऩ णिलत्तैयक् कॊडिय कूऩिये 150

अ कॊटिय कूऩि–वह क्रूर कुब्जा; तॆऴित्तऩळ्–चिल्लाई; उरप्पिऩळ्–डाँटा; चिऱु कण् ती उक–छोटी आँखों से आग उगलती हुई; विऴित्तऩळ्–तरेरा; वैतऩळ्–गाली दी; वॆय्तु उयिर्त्तऩळ्–गरम साँस छोड़ी; अऴित्तऩळ्–अपना अलंकार बिगाड़ लिया; अऴुतऩळ्–रोयी; अम् पॊऩ् मालैयाल्–उस स्वर्णहार से; निलत्तै कुऴित्तऩळ्–(पटककर) भूमि पर गड्ढा बना दिया। १५०

अब मंथरा का क्रोध सीमा पार हो गया। वह क्रूर कुब्जा यह देखकर चिल्ला उठी। उसने डाँटा, अपनी छोटी आँखों से अंगारे भरकर तरेरा, गाली दी, अपने अलंकार को बिगाड़ लिया। वह खुलकर रोई। उसने उस हार को ऐसा जोर से पटका कि भूमि पर छोटा गड्ढा ही बन गया। १५०

❀ वेदऩैक् कूऩिपिऩ् वॆहुण्डु नोक्किये
पेद(य्)ऩी पित्तिनिऩ् पिऱन्द शेयॊडु
माड्डुयर्प् पडुहना नॆडिदुऩ् माऱ्ऱवळ्
तादियर्क् काट्चॆयत् तरिक्कि लेऩ्ऩ्ऱाळ् 151

वेतऩै कूऩि–वेदनाविद्ध कुब्जा ने; पिऩ्–और; वॆकुण्टु नोक्कि–क्रोध के साथ देखकर; नी पेतै–आप अज्ञ है; पित्ति–पागल हैं; निऩ् पिऱन्त चेयॊटु–अपने जनाये पुत्र के साथ; नॆटितु–दीर्घकाल तक; मा तुयर् पटुक–विपुल दुख उठाइए; नाऩ्–मैं; उऩ् माऱ्ऱवळ्–आप की सौत के; तातियर्क्कु आळ् चॆय–दासियों की दासता करना; तरिक्किलेऩ्–सह नहीं सकूँगी; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। १५१

वेदनाविद्ध कुब्जा ने कैकेयी को क्रोध की दृष्टि से देखा। फिर कहा— आप मूर्ख हैं। आप पागल हैं। अपने पुत्र के साथ दीर्घकाल तक अत्यधिक संकट उठाइये। मैं आपकी सौत की दासियों की दासी बनकर जीना सह न सकूँगी। १५१

शिवन्दवाय्च् चीदयुङ् गरिय शॅम्मलुम्
निवन्दवा शन्तत्तित्ति दिरुप्प निन्महन्
अवन्दन्नाय् वॅरुनिलत् तिरुक्क लान्पो
दुवन्दवा रॅन्निदर् कुरुदि यादॅन्राळ् 152

चिवन्त वाय् चीतैयुम्–लाल मुख वाली सीता और; करिय चॅम्मलुम्–काला प्रभु; निवन्त आचन्तत्तु–उन्नत सिंहासन पर; इन्तितु इरुप्प–सुख से रहेंगे, तब; निन् मकन्–आपका पुत्र; अवन्तन् आय्–अवन्द्य बनकर; वॅरुम् निलत्तु इरुक्कल्–कोरी भूमि पर (खड़ा) रहेगा, यह स्थिति; आन्पोतु–हो गई, तब; इतर्कु–इस पर; उवन्त आरु–आनन्दित होने का हेतु; ॲन्–क्या; उरुति यातु–लाभ क्या है; ॲन्राळ्–पूछा। १५२

और भी पूछा— लाल मुख वाली सीता और काला रंग वाला राम दोनों ऊँचे सिंहासन पर बैठेंगे। तब आपका लाडला भरत अवन्द्य होकर कोरी ज़मीन पर खड़ा रहेगा। स्थिति ऐसी हो गई है। तो भी आप आनन्द भरी है, सो कैसा? इसमें आप क्या लाभ देखती है? । १५२

* मरन्दिलळ् कोशलै युरुदि मैन्दनुम्
शिरन्दनन् दिरुविनिर् ड्रिरुवि नीङ्गिनान्
इरन्दिल निरुन्दन नॅन्शॅय् दारुवान्
पिरन्दिलन् बरदनी पॅर्र दालॅन्राळ् 153

कोचलै–कौसल्या; उरुति मरन्तिलळ्–अपना हितसाधन नहीं भूलीं; मैन्तनुम्–उनका पुत्र भी; तिरुविनिन् चिरन्तनन्–विशेष श्रीमान हो गया; परतन्–भरत; नी पॅर्रताल्–आपका पुत्र होने से; तिरुविन् नीङ्किनान्–निर्धन हो गया; इरन्तिलन् इरुन्तनन्–मरा नहीं, इतना ही, मृतक समान रह गया; ॲन् चॅय्तु–क्या उपाय करके; आरुवान्–धैर्य धरेगा; पिरन्तिलन्–पैदा नही हुआ; ॲन्राळ्–कहा। १५३

कौसल्या हमेशा सतर्क रहीं और अपना हितसाधन कभी नहीं भूलीं। अब उनका पुत्र राजा बनता है और श्रीमान होता है। इसके विपरीत असावधान आपका पुत्र निर्धन हो गया। मरा नहीं पर मृतक से कोई भेद नहीं रखता। अब क्या उपाय करके वह धैर्य धारण करेगा? वह जन्मा ही नहीं। ऐसा ही मानना चाहिए। उसका जन्म निरर्थक है क्योंकि वह आपका पुत्र जन्मा है। १५३

शरदमिप्	पुवियॅलान्	दम्बि	योडुमव्
वरदऩ्	काक्कुमेल्	वरम्बिल्	कालमुम्
बरदऩु	मिळवलुम्	वदियि	ऩीङ्गिप्पोय्
विरदमा	दवञ्जॅय	विडुद	नऩ्ऱॆऩ्ऱाळ् 154

वरतऩ्–वरद श्रीराम ही; तम्पियोटुम्–अपने लघु भाई के साथ; इ पुवि ॲलाम्–यह भूमि सब की; वरम्पु इल् कालमुम्–असीम काल तक; काक्कुमेल्–रक्षा करेगा तो; चरतम्–सचमुच; परतऩुम् इळवलुम्–भरत और उसका छोटा भाई; पतियिऩ् नीङ्कि–नगर से निकलकर; पोय्–(वन) जाकर; विरतम् मातवम् चॅय विटुतल्–व्रतसहित बड़ी तपस्या करने देना; नऩ्ऱु ॲऩ्ऱाळ्–भला है, कहा। १५४

आगे वरद राम अपने लघुभ्राता लक्ष्मण के साथ असीम काल सारी भूमि का शासन करता रहेगा। सच कहती हूँ, उस स्थिति में भरत को अपने भ्राता शत्रुघ्न के साथ नगर छोड़कर जंगल में जाकर लंबी तपस्या करने के लिए भेजना ही श्रेयस्कर है! —मंथरा ने कहा। १५४

पण्णुरु	कडहरिप्	परदन्	पार्महळ्
कण्णुरुङ्	गविनरा	यिनिदु	कात्तवम्
मण्णुरु	मुरशुडै	मऩ्ऩर्	मालयिल्
ऍण्णुरप्	पिऱन्दिल	निऱत्त	नऩ्ऱॆऩ्ऱाळ् 155

पण् उरु–अलंकृत; कटम् करि–मत्तगज का पति; परतऩ्–भरत; पार् मकळ् कण् उरुम्–भूमि देवी की आँखों में खुभनेवाले; कविऩर् आय्–सौंदर्यवान बनकर; इनितु कात्त–जो पालन करते थे; अ–उन; मण् उरु मुरचु उटै(य)–मृण्लेप लगे ढोल वाले; मऩ्ऩर्–राजाओं की; मालैयिल् ॲण् उऱ–श्रेणी में गिने जाने के लिए; पिऱन्तिलऩ्–पैदा नहीं हुआ; इऱत्तल् नऩ्ऱु–मरना ही श्रेष्ठ है; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। १५५

भरत इक्ष्वाकुकुल में पैदा तो हुआ पर अलंकृत मत्त गजपति हमारा भरत उन राजाओं की श्रेणी में, जो भूमि देवी की आँखों में खुभकर उसका भरण करते थे, गिने जाने को पैदा नहीं हुआ! इसलिए उसका मर जाना ही अच्छा है। १५५

* पाक्कियम्	बुरिन्दिलाप्	परदन्	ऱऩ्ऩैप्पण्
डाक्किय	पॅलङ्गळ्	लरश	ऩाणयाल्
तेक्कुयर्	कल्लदर्	कडिदु	शेणिडैप्
पोक्किय	पॅारुळॅनक्	किन्ऱु	पोन्ददाल् 156

पाक्कियम् पुरिन्तु इला–जिसने पुण्य नहीं किया है; परतऩ् तऩ्ऩै–उस भरत को; पॅालम् आक्किय कऴल् अरचऩ्–स्वर्णपायलधारी राजा; पण्टु–पहले ही; तेक्कु उयर् कल् अतर्–सागौन के तरुओं से पूर्ण और पथरीले मार्ग के; चेण् इटै–दूर के (केकय) देश को; आणैयाल्–आज्ञा द्वारा; कटितु पोक्किय पॅारुळ्–शीघ्र जो भेजा, उसका अर्थ; ॲऩक्कु–मुझे; इऩ्ऱु पोन्ततु–आज विदित हुआ। १५६

अब एक बात सूझती है। स्वर्णपायलधारी राजा ने आज्ञा देकर इस अभागे भरत को सुदूर उस केकय देश में भेजा जिसका लंबा मार्ग सागौन के तरुओं से पूर्ण और कंकड़ीला है। उसके पीछे जो रहस्यमय आशय था वह अभी मुझे मालूम हो रहा है! । १५६

❀ मन्दरै पिन्ऩरुम् वहैन्दु कूऱुवाळ्
अन्दरन् दीर्न्दुल हळिक्कु नीरिऩाल्
तन्दयुङ् गॉडियनऱ् ऱायुन् दीयळाल्
ॲन्दये बरदने यॅन्शॅय् वायॅन्ऱाळ् 157

मन्तरै–मंथरा; पिन्ऩरुम्–आगे भी; वकैन्तु–गढ़कर; कूऱुवाळ्–बोली; अन्तरम् तीर्न्तु–निष्पक्षता छोड़कर; उलकु–राज्य को; अळिक्कुम् नीरिताल्–(श्रीराम के पास) देने की रीति से; तन्तैयुम्–पिता भी; कॉटियन्–निष्ठुर बने; नल् तायुम्–जननी भी; तीयळ्–क्रूरी बनीं; ॲन्तैये–मेरे तात; परतने–भरत; ॲन् चॅय्वाय्–क्या करोगे; ॲन्ऱाळ्–कहा । १५७

मंथरा आगे भी बात गढ़कर बोली— निष्पक्षता छोड़कर राजा ने राज्य को श्रीराम के पास दिया और यह साबित कर दिया कि वह, हे भरत! तुम्हारे प्रति क्रूर है। तुम्हारी माता भी क्रूर है! तो मेरे तात! तुम क्या करोगे? —उसने ऐसा नाटकीय ढंग से प्रलाप किया । १५७

❀ अरशरिऱ् पिऱन्दुपिन् ऩरश रिल्वळर्न्
दरशरिऱ् पुहुन्दुपे ररशि यान्ऩी
करय्शॅयऱ् करुन्दुयर्क् कडलिल् वीऴ्हिन्ऱाय्
उरय्शॅयक् केट्किलै युणर्दि योवॅन्ऱाळ् 158

अरचर् इल् पिऱन्तु–राजघराने में जन्म लेकर; पिन् अरचर् इल् वळर्न्तु–फिर राजा के घर में पलकर; अरचर् इल् पुकुन्तु–राजा के घर में (ब्याही हो) प्रवेश करके; पेर् अरचि आन नी–महिषी जो बनीं वह आप; करै चॅयऱ्कु अरु–तीर (जिसका) देखना दुस्तर है, ऐसे; तुयर् कटलिल्–दुखसागर में; वीऴ्किन्ऱाय्–गिरने को है; उणर्तियो–समझती हैं क्या; उरै चॅय–मैं समझाती हूँ तो भी; केट्किलै–सुनती नहीं है; ॲन्ऱाळ्–कहा । १५८

आप राजघराने में पैदा हुईं; फिर राजा के घर में ही पलीं। राजा के घर में वहू बनकर आईं और महिषी भी बन गईं। फिर अब अनंत दुखसागर में गिरने को है। यह बात आप समझतीं क्या? मैं समझाती हूँ तब भी बात नहीं समझतीं। मंथरा ने ऐसा कहा । १५८

कल्वियु मिळमैयुङ् गणक्कि लाऱ्ऱलुम्
विल्विनै युरिमयु मळ्हम् वीरमुम्
ॲल्लयिल् गुणङ्गळुम् बरदऱ् कॅय्दिय
पुल्लिडै युहुत्तनल् लमुदम् बोलुमाल् 159

कल्वियुम्–शिक्षा; इळमैयुम्–और यौवन; कणक्किल् आऱ्ऱलुम्–असीम शौर्य; विल् विनै उरिमैयुम्–धनु के प्रयोग में निपुणता; अऴकुम्–सौंदर्य और; वीरमुम्–वीरता; अॅल्लै इल् कुणङ्कळुम्–अपार अच्छे गुण; परतऱ्कु अॅय्तिय–सभी भरत को प्राप्त; पुल् इटै उकुतुत–तृण भरे गन्दे स्थान पर डाले गये; नल् अमुतम् पोलुम्–उत्तम अमृत के समान हो गये। १५९

भरत के पास विद्या है, यौवन है, निस्सीम शौर्य (या कौशल) है, धनु चलाने की कुशलता है, सौंदर्य, वीरता और अनंत अच्छे गुण प्राप्त है। पर ये सब अब तृणयुक्त गन्दे स्थान पर डाला हुआ श्रेष्ठ अमृत-सम हो गये। १५९

❀ वाय्क यप्पुऱ मन्दरै वळङ्गिय वॅम्जोल्
कायॢह नऱ्ऱलै नॅय्शॊरिन् दॅनक्कदङ् गऩऱ्ऱक्
केह यर्क्किऱै तिरुमहळ् किळरिळ वरिहळ्
तोयॢह यऱ्कण्गळ् शिवप्पुऱ नोक्किऩळ् शॊल्लुम् 160

मन्तरै–मंथरा; वाय् कयप्पु उऱ–मुख भी कड़ुआ हो, ऐसा; वळङ्किय–एक दम लगातार कहे हुए; वॅम् चॊल्–निष्ठुर वचन; काय् कतल् तलै–जलती आग में; नॅय् चॊरिन्ततु अॅन–घी डाला गया, जैसे; कतम् कनऱ्ऱ–क्रोधाग्नि को उभाड़ते; केकयर्क्कु इऱै–केकयराजा की; तिरुमकळ्–श्रीतनया; किळर् इळ वरिकळ् तोय्–सुन्दर हल्की लकीरों से युक्त; कयल् कण्कळ्–मछली-सी आँखों को; चिवप्पु उऱ–(क्रोध से) लाल करते हुए; नोक्किनाळ्–देखती हुई; चॊल्लुम्–बोलीं। १६०

मंथरा की ये बातें स्वयं उसके मुख को भी कड़ुआ बनानेवाली थीं; उसने यह सब धड़ाधड कह दिये। उन सब वचनों ने जलती आग में पड़े घी के समान कैकेयी के क्रोध को उभाड़ दिया। केकयराजकुमारी की शोभायमान हल्के डोरों से युक्त मछली-सी आँखें लाल हो गईं। मंथरा पर कुपित दृष्टि डालती हुई वह बोलीं। १६०

वॅयिऩ्मु ऱैक्कुलत् तिऱैयवन् मुदलिय मेलोर्
उयिर्मु दऱ्पॊरु डिऱम्बिनु मुरैतिऱम् बादोर्
मयिऩ्मु ऱैक्कुलत् तुरिमैयै मनुमुदन् मरबैच्
चॅयिरु ऱप्पुलैच् चिन्दया लऩ्शॊनाय् तीयोय् 161

तीयोय्–क्रूरी; वॅयिल् मुऱै कुलत्तु–सूर्यवंश में उत्पन्न; इऱैयवन् मुतलिय मेलोर्–हमारे राजा आदि श्रेष्ठ; उयिर् मुतल् पॊरुळ्–प्राण आदि सर्वश्रेष्ठ वस्तुएँ; तिऱम्पितुम्–नष्ट हो जायँ तो भी; उरै तिऱम्पातोर्–वचन तोड़नेवाले नहीं हैं; मयिल् मुऱै कुलत्तु–मोर के जैसे (स्वभाव वाले) कुल की; उरिमै एय्–रीति से युक्त; मनु मुतल् मरपै–मनु से आनेवाले इस कुल को; चॅयिर् उऱ–कलंक लगाते हुए; पुलै चिन्तैयाल्–निकृष्ट बुद्धि के कारण; अॅन् चॊनाय्–क्या ही कह गई हो। १६१

री क्रूरी! सूर्यवंश के मेरे पति आदि सभी राजा, प्राण भी या अन्य ऐसी बहुमूल्य वस्तुएँ चली जायँ तो भी वचन छोड़नेवाले नहीं है। मोर

के कुल का-सा सम्प्रदाय है मनुकुल का सम्प्रदाय। इस पर कलंक लगाते हुए तुमने अपनी नीच बुद्धि के कारण क्या-क्या बातें कह डालीं ? १६१

[इसमें मयूरकुल की बात कही गई है। इस पर सालों से चर्चा है। कहा जाता है कि मोर के कुटुंब में अनेक अंडों से एक साथ शावक उत्पन्न होने पर भी सबसे ज्येष्ठ मोर के ही सबके पहले पंख लगते हैं। यह एक टीका है। यह भी कहा जाता है कि जब एक ही माता से उत्पन्न अनेक मोर एक जगह पर रहते हैं तब सबसे बड़ा मोर ही पहले अपने पंख खोलता है, बाद ही अन्य। इनसे अलग एक टीका भी है। कैकेयी के कुल में भी यही रिवाज था कि ज्येष्ठ पुत्र ही राजा बनता है। इसके आधार पर उस पंक्ति का ऐसा अर्थ किया जाता है कि केकय, यह शब्द 'केकी' से बना है, कुल की जैसी रीति मनुकुल की भी है। उस कुल पर कलंक लानेवाली ऐसी बात क्यों करती हो ?]

❀ अँन्तक्कु नल्लयु मल्लैनी यॆन्महन् बरदन्
तन्नक्कु नल्लयु मल्लैयत् तरुममे नोक्किन्
उन्नक्कु नल्लयु मल्लैवन् दूऴ्विनै तूण्ड
मन्नक्कु नल्लन शॊल्लिनै मदियिला मनत्तोय् 162

नी–तुम; अँन्तक्कु नल्लैयुम् अल्लै–मेरी हितकारिणी नहीं हो; अँन् मकन्–मेरे पुत्र; परतन् तन्नक्कु–भरत की भी; नल्लैयुम् अल्लै–हितू नहीं हो; अ तरुममे नोक्किन्–उस राजधर्म को देखें तो; उनक्कु नल्लैयुम् अल्लै–अपने लिए भी हित करनेवाली नहीं हो; मति इला मनत्तोय्–बुद्धिहीन चित्त वाली; ऊऴ् विनै तूण्ट–पूर्व कर्म की प्रेरणा से; वन्तु–इधर आकर; मन्नक्कु नल्लन–अपने मन में जो भला लगा; चॊल्लिनै–वह बोलीं। १६२

कैकेयी ने और भी कहा— तुम मेरा हित नहीं करतीं; न मेरे पुत्र भरत की। राजधर्म की दृष्टि में तुम अपना भी हित नहीं करतीं। बुद्धि से वियुक्त चित्त वाली ! विधि की प्रेरणा से जो भी तुम अपने मन में सोचती हो उसे अच्छा समझकर बक रही हो। १६२

पिऱन्दि ऱन्दुपोय्प् पॆऱुवदु मिऴप्पदुम् बुहऴे
निऱन्दि ऱम्बिनु नियायमे तिऱम्बिनु नॆऱियिन्
तिऱन्दि ऱम्बिनुज् जॆय्दवन् दिऱम्बिनुज् जॆयिर्दीर्
मऱन्दि ऱम्बिनुम् वरन्मुऱै तिरम्बुदल् वऴक्को 163

पिऱन्तु–पैदा होकर; इऱन्तु पोय्–मर जाकर; पॆऱुवतुम्–पाना; इऴप्पतुम्–या खोना; पुकऴे–कीर्ति ही है; निऱम् तिऱम्पितुम्–स्वभाव बदल जाय; नियायमे तिऱम्पितुम्–(अन्य) न्याय भी टल जायँ; नॆऱियिन् तिऱम् तिऱम्पितुम्–मार्ग की दिशा भी बदल जाय; चॆय् तवम् तिऱम्पितुम्–पूर्वकृत तपस्या का फल चाहे न मिले; चॆयिर् तीर्–निर्दोष; मऱम् तिऱम्पितुम्–वीरता भी निष्फल हो जाय; वरन् मुऱै–परम्परागत धर्म को; तिरम्पुतल्–छोड़ना; वऴक्को–उचित है क्या। १६३

आखिर जन्म और मरण का मूल्य कीर्ति पाने या खोने पर ही आँका जाता है। चाहे स्वभाव छोड़ना पड़े, चाहे कोई न्याय-मार्ग की दिशा बदलनी पड़े, चाहे तपस्या का फल त्यागना पड़े; चाहे निर्दोष वीरता भी निरर्थक हो जाय, कुल के परंपरागत सम्प्रदाय को छोड़ना उचित है क्या? । १६३

❀पोदि यॅऩ्ऩॅदिर् निऩ्ऱुनिऩ् पुऩ्वॊऱ्ऱि नावैच्
चेदि यादिदु पॊऱुत्तऩॆऩ् पुऱम्जिल ररिऱियिऩ्
नीदि यल्लवु नॆऱिमुऱै यल्लवु निनॆऩ्दाय्
आदि यादलि नऱिविलि यडङ्गुदि यॆऩ्ऱाळ् 164

अऱिवु इलि–बुद्धिहीन; ऍऩ् ऍतिर् निऩ्ऱुम् पोति–मेरे सामने से चली जा; निऩ् पुऩ् पॊऱ्ऱि नावै–तुम्हारी नीच इन्द्रिय जीभ को; चेतियातु–काटे बिना; इतु पॊऱुत्तऩॆऩ्–इसको सह लिया; पुऱम् चिलर् अऱियिऩ्–बाहर के कुछ लोग जान जायें तो; नीति अल्लवुम्–जो नैतिक नहीं; नॆऱि मुऱै अल्लवुम्–उचित धर्मसम्मत नहीं; निऩैन्ताय् आति–वह करने की अपराधिनी मानी जाओगी; आतलिऩ्–इसलिए; अटङ्कुति–बस करो; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। १६४

बुद्धिहीन! चलो, हटो मेरे सामने से। तुम्हारी नीच वागिन्द्रिय काटनी थी, पर मैं वह किये बिना सब्र कर चुकी हूँ। बाहर वाले किसी के कानों में बात पड़ गई तो तुम अनैतिक और अधार्मिक बुरा काम सोचने का अपराध करनेवाली बन जाओगी। इसलिए बस करो। —यह कहा। १६४

❀अञ्जि मन्दरै यहऩ्ऱिल ळम्मॊऴि केट्टुम्
नञ्जु तीर्क्किनुन् दीर्हिला ददुनलिन् दॆऩ्ऩत्
तञ्ज मेयुनक् कुऱुपॊरु ळुणर्त्तुहै तविरॆऩ्
वञ्जि पॊलियॆऩ् ऱडिमिशै वीऴ्न्दुरै वळङ्गुम् 165

नञ्चु–विष; तीर्क्कितुम्–(जादू की क्रिया आदि से) निवारण करने का प्रयास करने पर भी; तीर्किलातु–प्रभावहीन न होकर; अतु–वह; नलिन्ततु ऍऩ्ऩ–पीड़ा देता रहा हो, ऐसा; मन्तरै–मंथरा; अ मॊऴि केट्टुम्–वह (डाँट) वचन सुनकर भी; अञ्चि अकऩ्ऱिलळ्–डरकर नहीं हटी; वञ्चि पोलि–हे लता-समाना; तञ्चमे–मेरी शरण्या; उनक्कु उऱु पॊरुळ्–आपके हित की बात; उणर्त्तुकै तविरेऩ्–समझाना नहीं छोड़ूँगी; ऍऩ्ऱु–कहकर; अटि मिचै विऴ्न्तु–पैरों पर गिरकर; उरै वळङ्कुम्–अपनी (हाँक चलाने लगी) बात कहने लगी। १६५

मंथरा इससे न डरी, न हटी। वह उस विष के समान थी जो जादूक्रिया आदि चिकित्सा करने पर भी अपना प्रभाव नहीं छोड़ता और कष्ट देता रहता है। वह कहने लगी— लतासमाना! मेरी शरण्या! मैं कैसे हटूँगी? आपका जो हित है वह समझाने से मैं नहीं

रुकूँगी। वह उनके पैरों पर गिरकर नमस्कार कर उठी और बोली। १६५

मूत्त वर्कुरित् तरशॅनु मुरैमैयि नुलहम्
कात्त मन्ननि निळैयनन् ऱोकडल् वण्णन्
एत्तु नीण्मुडि पुनैवदर् किशैन्दनन् ऩॅन्ऱाल्
मीत्तरुञ् जॅल्वम् बरदनै विलक्कुमा ऱॅवनो 166

मूत्तवर्कु उरित्तु अरचु–सबसे बड़े के अधिकार का है राज; अँतुम् मुरैमैयिन्–इस रीति से; उलकम् कात्त मन्ननिन्–भूपालक हमारे राजा से; कटल् वण्णन् इळैयन् अन्ऱो–समुद्रवर्ण श्रीराम छोटा है नहीं; एत्तुम् नीळ् मुटि–प्रथित दीर्घ किरीट; पुनैवतर्कु–धारण करने को; इचैन्ततन्–सहमत हुए; अन्ऱाल्–तो; मीतरुम् चॅल्वम्–गौरवपूर्ण राज्यश्री को प्राप्त करने से; परततै विलक्कुम्–भरत को रोकने का; आऱु ॲवनो–प्रकार (या धर्म) क्या है। १६६

आप कहती हैं कि आपके कुल में उम्र में सबसे बड़े का ही राज्य पर अधिकार होगा। उस रीति से देखा जाय तो अब राज्य का शासन जो कर रहे हैं उन दशरथ से समुद्रवर्ण श्रीराम छोटे है न ? उनको यह गौरवपूर्ण मुकुट पहनाने को ये राजा सहमत हो गये है। फिर भरत कैसे वर्ज्य हुआ ? उसको इस वैभवयुक्त राज्यश्री को प्राप्त करने से रोकनेवाली कैसी रीति है ? । १६६

❀ अऱनि रम्बिय वरुळुडै यरुन्दवर्क् केनुम्
पॅऱल रुन्दिरुप् पॅऱ्ऱपिन् शिन्दनै पिऱिदाम्
मऱनि नैन्दुमै वलिहिल रायिनु मनत्ताल्
इऱलु रुम्बडि यियऱ्ऱुव रिडैयऱा विन्नल् 167

अऱम् निरम्पिय–संन्यास धर्म में बढ़े हुए; अरुळ् उटै–कृपायुक्त; अरु तवर्क्केतुम्–उत्तम तपस्वियों का भी; पॅऱल् अरु–दुष्प्राप्य; तिरु पॅऱ्ऱ पिन्–बड़े धन को प्राप्त करने पर; चिन्ततै पिऱितु आम्–मन विकृत हो जायगा; मऱम् नितैन्तु–आपकी हानी सोचकर; उमै वलिकिलर्–आपको नहीं सताया; आयितुम्–तो भी; मनत्ताल् इऱल् उरुम्पटि–मन मारकर मर जायँ, ऐसा; इटै अऱा इन्नल् इयऱ्ऱुवर्–निरन्तर (आपको और भरत को, कौसल्या और राम) दुख देंगे। १६७

देखिए ! संन्यास धर्म अपनाकर उसमें उन्नति जो कर चुके उन कृपालू तपस्वियों का मन भी दुष्प्राप्य बड़े धन को पाकर बिगड़ जायगा। कौसल्या और राम आपका अहित सोचते तो हैं पर अब तक आपकी कोई हानि नहीं की है। पर आगे वे आपको ऐसे दिक करेंगे कि आपको मन मारकर प्राण छोड़ने के सिवा दूसरा चारा नहीं रहेगा। १६७

❀ पुरियुन् दन्महं नरशॅनिर् पूदल मॅल्लाम्
अॅरियुञ् जिन्दनैक् कोशलैक् कुडैमैया मॅन्ऱाल्

परियु निऩ्कुलप् पुदल्वऱ्कु निऩक्कुमिप् पार्मेल्
उरिय दॆऩ्ऩव ऴुदविय वॊरुपॊरु ळल्लाल् 168

ऍरियुम् चिन्तनै कोचलैक्कु–जलनेवाले मन की कौसल्या का; तन् मकन् अरचु पुरियुम् ऍनिऩ्–उनका पुत्र राज करेगा तो; पूतलम् ऍल्लाम् उटैमै आम्–भूतल सब पर आधिपत्य हो जायगा; ऍऩ्ऱाल्–तो; इ पार् मेल्–इस भूमि पर; परियुम् निऩ्कुलम् पुतल्वऱ्कुम्–दयनीय, आपके अच्छे पुत्र को; निऩक्कुम्–और आपको; अवळ् उतविय ऒरु पॊरुळ् अल्लाल्–उनके, सहायता में दिये गये पदार्थ के सिवा; उरियतु ऍन्–अपना क्या होगा। १६८

कौसल्या का मन पहले से ही जलता रहता है। उनका पुत्र राजा बनेगा तो भूतल सब उनके अधिकार मे आ जायगा। फिर आपकी और भरत की स्थिति दयनीय हो जायगी। दया करके जो भी वे देंगी उसको छोड़कर किस वस्तु पर आपका हक रहेगा ? । १६८

❋ तूण्डु मिन्ऩलुम् वऱुमैयुन् दॊडर्दरत् तुयराल्
ईण्डु वन्दुनै यिरन्दवर्क् किरुनिदि यवळै
वेण्डि योदियो वॆऴ्हुदि योविम्म नोयाल्
माण्डु पोदियो मऱुत्तियो वॆङ्ङऩम् वाऴ्दि 169

तूण्टुम् इऩ्ऩलुम्–(माँगने के लिए) प्रेरित करनेवाली (भूख की) पीड़ा और; वऱुमैयुम्–अभाव; तॊटर् तर–अपना पीछा करते; तुयराल्–वेदना के साथ; ईण्टु वन्तु–यहाँ आकर; उऩै इरन्तवर्क्कु–आपसे याचना करनेवालों को; इरु निति–बड़े धन को; अवळै वेण्टि ईतियो–उनसे माँग लाकर दिलायेंगी; वॆऴ्कुतियो–शरमायेंगी; मऱुत्तियो–या इनकार करेंगी; विम्मल् नोयाल्–अपमान के दुख के रोग से; माण्टु पोतियो–मर जायेंगी; ऍङ्ङऩम् वाऴ्ति–किस तरह जीवित रहेंगी। १६९

और भी सोचिये। आपके पास याचक भूख और अभाव के कारण कुछ माँगने आयेंगे। आप उनको अधिक धन देना चाहेंगी। तब आप क्या कौसल्या से माँग लाकर इन्हें देंगी ? या अपनी स्थिति पर शरम खाकर चुप रह जायँगी ? या साफ़ इनकार कर सकेंगी ? या अपमान के दुख से प्राणत्याग कर लेंगी ? कहिए आप किस प्रकार जीवित रहेंगी ? । १६९

शिन्दै यॆऩ्शॆयत् तिहैत्तनै यिनिच्चिल नाळिल्
तन्द मिऩ्मयु मॆळिमयु निऱ्कॊण्डु तविर्क्क
उन्दै यन्नैयुन् किळैञर्मऱ् ऱुऩ्गुलत् तुळ्ळोर्
वन्दु काण्बदुन् माऱ्ऱवळ् शॆल्वमो मदियाय् 170

ऍन् चॆय–क्या करने; चिन्तै तिकैत्तऩै–चित्तभ्रमित हे; इऩि चिल नाळिल्–आगे कुछ दिनों में; उन्तै–आपके पिता; अन्नै–माता; उन् किळैञर्–आपके

बन्धुबान्धव; मऱ्ऱु उन् कुलत्तु उळ्ळोर्—अन्य आपके कुल के लोग; **तम् तम् इन्मैयुम्**—अपना-अपना अभाव; **अॅळिमैयुम्**—दीनता को; **निन् कॊण्टु**—आपके द्वारा; **तविर्क्क**—दूर करने के विचार से; **वन्तु**—इधर आने पर; **काण्पतु**—जो देखेंगे वह; **उन् माऱ्ऱवळ् चॅल्वमो**—आपकी सौत का वैभव क्या; **मतियाय्**—सोचिए। १७०

क्या करने के विचार से आप भ्रमित खड़ी रहती हैं ? आगे कुछ ही दिनों में आपके पिता, आपकी माता, आपके बन्धु-बान्धव और आपके कुल के अन्य लोग अपने अभाव और अपनी दीनता को आपकी सहायता से दूर करने के विचार से आपको देखने आयेंगे। तब वे आपकी सौत का वैभव देखें —क्या यही स्थिति हो ? । १७०

काद लुन्बॅरुङ् गणवनै यञ्जियक् कनिवायच्
चीदै तन्दयुन् ऱादयैत् तॅरुहिल निरामन्
मादु लन्नव नुन्दय्क्कु वाळ्विनि युण्डो
पेदै युन्रुणै यारुळर् पळिबडप् पिरन्दार् 171

अ कनिवाय् चीतै तन्तै—उस (बिम्ब-)फल-सम मुख (होंठ) वाली सीता के पिता; **उन् पॅरुम् कातल् कणवनै अञ्चि**—आपके बहुत प्यारे पति से डरकर; **उन् तातैयै तॅरुकिलन्**—आपके पिता को मिटा नहीं पाये; **अवन् इरामन् मातुलन्**—वे श्रीराम के मातुल (ससुर) हैं; **उन्तैक्कु**—आपके पिता को; **इनि वाळ्वु उण्टो**—आगे जीवन (सकुशल) रहेगा क्या; **पेतै**—नादान; **पळि पट**—निंदा सह लेने के लिए; **पिऱन्तार्**—उत्पन्न; **उन् तुणै यार् उळर्**—आपके समान कौन हैं। १७१

बिम्बफल-सी होंठ वाली उस सीता के पिता जनक ने आपके प्रिय पति से डरकर आपके पिता को नहीं मारा है। वे श्रीराम के ससुर हैं। (तमिऴ् में मामा कहते हैं ससुर को भी।) इस स्थिति में आपके पिता का (सुखमय) जीवन कहाँ ? अबोध ! आपके समान ऐसा कौन इस संसार में जन्मा है जिससे उसका और उसके अपनों का निन्दनीय जीवन हो गया ? । १७१

मऱ्ऱु नुन्दैक्कु वान्बहै पॅरिदुळ माऱ्ऱार्
शॅऱ्ऱ पोदिवर् शॅन्रुद वारॅनिऱ् चॅरुविऱ्
कॊऱ्ऱ मॅन्बदोन् ऱॅव्वळि युण्डदु कूऱाय्
शुऱ्ऱ मुऱ्ऱॉडक् कडुन्दुयरक् कडल्वीळत् तुणिन्दाय् 172

नुन्तैक्कु—आपके पिता को; **मऱ्ऱुम् वान् पकै पॅरितु**—और भी बड़े शत्रु; **उळ**—हैं; **माऱ्ऱार्**—वे शत्रु; **चॅऱ्ऱपोतु**—जब लड़ने आएँगे तब; **चॅरुविल्**—उस युद्ध में; **इवर् चॅन्ऱु उतवार् ॲनिल्**—ये जाकर सहायता नहीं करेंगे तो; **कॊऱ्ऱम् ॲन्पतु ऒन्ऱु**—विजय नामक कोई चीज; **ॲव्वळि उण्टु**—किस प्रकार मिलेगी; **अतु कूऱाय्**—वह कहिए; **चुऱ्ऱमुम् कॅट**—अपने परिवार को नाश होने देते हुए; **कटु तुयर् कटल्**—भयंकर दुखसागर में; **विळ तुणिन्ताय्**—गिरने का निश्चय कर चुकी हैं। १७२

आपके पिता के, पहले ही से अनेक प्रबल शत्रु हैं। समझिए कि वे शत्रु उन पर युद्ध करने आते है। उस युद्ध में ये (श्रीराम) जाकर आपके पिता की सहायता नहीं करेंगे तो उन्हें विजय का गौरव मिलेगा कैसा ? आप ही कहिए। अपने वन्धुजनों को मटियामेट करते हुए आपने दुख-सागर में डूबने का निश्चय कर लिया न ! । १७२

कॅडुत्तौ ऴिन्दनै युन्नक्करुम् बुदल्वनैक् किळर्नीर्
उडुत्त पारह मुडेयव नीरुमहड् कॅन्नवे
कॊडुत्त पेरर शवन्गुलक् कोमयन्दर् तमक्कुम्
अडुत्त तम्बिक्कु माम्पिऱर्क् काहुमो वॅन्ड्राळ् 173

उन्नक्कु अरु पुतल्वनै–अपने प्यारे पुत्र को; कॅट्टुत्तौऴिन्तनै–आपने बिलकुल मिटा दिया है; किळर् नीर् उदुत्त–विपुल जल (सागर-)वसना; पारकम् उटैयवन्–भूमि के पति (हमारे राजा); और मकऱ्कु अॅत्तवे कॊटुत्त–एक पुत्र को जो देते हैं; पेर् अरचु–वह बड़ा राज्य; अवन् कुलम् को मॆन्तर् तमक्कुम्–उसके वंश के राजकुमारों का; अटुत्त तम्पिक्कुम्–और उसके साथ के भाई का; आम्–होगा; पिऱर्क्कु आकुमो–दूसरों का होगा क्या; अॅन्ऱाळ्–कहा। १७३

आपने अपने पुत्र की स्थिति बिगाड़ दी। समुद्रवसना भूमि को उसके राजा, हमारे दशरथजी ने अपने ज्येष्ठ और श्रेष्ठ पुत्र को दिया तो वह विशाल राज्य उसका होगा, उसके कुल में उत्पन्न राजकुमारों का होगा और उसके साथी छोटे भाई का होगा। दूसरे का होगा क्या ? —यह पूछा। १७३

* तीय मन्दरै यिव्वुरै शॅप्पलुन् देवि
तूय शिन्दयुन् दिरिन्दडु शूऴ्च्चियि निमैयोर्
मायै युम्मवर् पॅड्ऱनल् वरमुण्मै यालुम्
आय वन्दण रियऱ्ऱिय वरुन्दवत् तालुम् 174

तीय मन्तरै–क्रूर मंथरा के; इ उरै चॅप्पलुम्–यह वचन कहने पर; इमैयोर् मायैयुम्–देवों की माया से (और); अवर् पॅऱ्ऱ–उनके (श्रीविष्णु से) प्राप्त; नल् वरम् उण्मैयालुम्–श्रेष्ठ वर भी था, इसलिए; आय–विश्वासी (आस्तिक); अन्तणर् इयऱ्ऱिय–ब्राह्मणों का किया हुआ; अरु तवत्तालुम्–कठिन तप, उससे; तेवि तूय चिन्तैयुम्–देवी कैकेयी का पवित्र मन; चूऴ्च्चियिन्–(मंथरा के) षडयन्त्र के वचन से; तिरिन्ततु–विकृत हुआ। १७४

दुर्गुण क्रूरी मंथरा ने इतना कहा तो देवी कैकेयी का पवित्र मन विकृत हो गया। देवों की माया, उनका श्रीविष्णु से प्राप्त वर, तपस्वी ब्राह्मणों का तप और मन्थरा का षडयन्त्रभरा वाद —इन सबके कारण वे पलटा खा गईं। १७४

अरक्कर् पावमु मल्लव रियऱ्ऱिय वऱमुम्
तुरक्क नल्लरु डुऱन्दन डूमॊऴि मडमान्
इरक्क मित्मयन् ऱोविन्ऱिव् वुलहङ्ग ळिरामन्
परक्कुन् दॊल्पुह ऴमुदितैप् परुहनित् ऱदुवे 175

अरक्कर् पावमुम्–राक्षसों का पाप और; अल्लवर्–अन्यों का; इयऱ्ऱिय–किया; अऱमुम्—धर्म-फल; तुरक्क–(दोनो की) प्रेरणा से; तू मॊऴि–पवित्र वाणी; मटम् मान्–बाल मृगी (सी कैकेयी); नल् अरुळ् तुऱन्तनळ्–अपनी कृपा से बिछुड़ गई; इरक्कम् इन्मै अन्ऱो–उनकी करुणाहीनता से तो; इ उलकङ्कळ्–ये सब लोक; इमामन्–श्रीराम की; परक्कुम्–सर्वव्यापी; तॊल् पुकऴ् अमुतिनै–प्राचीन कीर्ति रूपी अमृत को; इन्ऱु परुक निन्ऱतु–आज पान करते हुए स्थित है। १७५

राक्षसों का पाप, अन्यों का धर्म-प्रभाव इन दोनों की प्रेरणा भी थी कि पवित्रवाणी वालमृगी-सी कैकेयी ने अपनी कृपा को त्याग दिया। लेकिन, जो आज सारे लोक श्रीराम के विशाल और प्राचीन यश के अमृत को भोग रहे हैं तो वह क्या उनकी करुणाहीनता के ही कारण नहीं ? । १७५

❀ अन्नैय तन्मय ळाहिय केहय नन्नम्
विन्नैनि रम्बिय कूनियै विरुम्बित्त णोक्कि
ऎन्नैयु वन्दनै यिनियॆन् महनुक्कु मन्नैयान्
पुन्नैयु नीण्मुडि पॆऱुम्बडि पुहलुदि यॆन्ऱाळ् 176

अन्नैय तन्मैयळ् आकिय–ऐसी (विकृतमन और करुणात्यक्त) जो बन गई उन; केकयन् अन्नम्–केकयराज की हंसिनी-सी पुत्री ने; विन्नै निरम्पिय—कृत-कृत्य हुई; कूनियै–कुब्जा को; विरुम्पित्तळ् नोक्कि–स्नेह के साथ देखकर; ऎन्नै उवन्तनै–मुझे चाहती हो; ऎन् मकन्तुक्कुम् इनियै–मेरे पुत्र की भी हितैषिणी हो; अन्नैयान्–वह (भरत); पुन्नैयुम् नीळ् मुटि–धार्य श्रेष्ठ मुकुट को; पॆऱुम् पटि–प्राप्त करने का उपाय; पुकलुति–कहो; ऎन्ऱाळ्–पूछा। १७६

ऐसी, मन-बदली कैकेयी ने अब मन्थरा को बहुत स्नेहार्द्र दृष्टि से देखा। मंथरा सफल-मनोरथ हो गई। केकयराज की पुत्री हंसिनी के समान दृश्यमान कैकेयी ने मन्थरा से कहा कि मन्थरा तुम कितनी अच्छी हो ! मेरी हितैषिणी और मेरे पुत्र का हित चाहनेवाली हो ! अब बताओ कि किस उपाय से मेरा पुत्र भरत, उसको जो मिलना चाहिए वह श्रेष्ठ राजमुकुट पा सकता है ? । १७६

❀ माळै यॊण्गणि युरैशॊयक् केट्टमन् दरैयॆन्
तोऴि वल्लळॆन् ऱुणैवल्ल ळॆन्ऱडि तॊऴुदाळ्
ताऴु मॆन्निनि यॆन्नुरै तलैनिऱ्पि नुलहम्
एऴु मेऴुमु नीरुमहऱ् काक्कुवॆ नॆन्ऱाळ् 177

माऴै ऑण् कण्णि–टिकोरे की फांक के समान आँखों वाली ने; उरै चॅय–यह वचन कहा, उसको; केट्ट–जिसने सुना वह; मनृतरै–उस मंथरा ने; ऍन्नु तोऴि वल्लळ्–मेरी (प्यारी) सखी समर्थ है; ऍन् तुणै वल्लळ्–मेरी संगिनी समर्थ है; ऍन्ऱु–(प्रशंसा) कहकर; अटि तोऴुताळ्–चरणों पर प्रणमन किया; ऍन् उरै तलै निऱ्पिन्–मेरे कहे अनुसार करेंगी तो; इनि ऍन् ताऴुम्–अब क्या देरी होगी; उलकम् एऴुम् एऴुम्–लोक सात और सात (चौदहों); उन् ओर मकऱ्कु–आपके श्रेष्ठ पुत्र के; आक्कुवेन्–(अधीन) बना लूंगी; ऍन्ऱाळ्–कहा। १७७

(आम के) टिकोरे की फांक-सम आँख वाली कैकेयी ने यह कहा तो मन्थरा का मन कृतार्थता की तृप्ति से भर गया। उसने वात्सल्य के साथ कैकेयी की, "मेरी सखी है न, बड़ी चतुर है!, मेरी साथिन है न, बड़ी समर्थ है", यह कहकर प्रशंसा की। फिर उसने उनके चरणों पर गिरकर नमस्कार करके कहा कि आप मेरे कहे अनुसार निश्चित रूप से चलेंगी तो अब देरी क्या? ऊपर के सात और नीचे के सात, चौदहों भुवन अब आपके अपने एकाकी पुत्र भरत के हो जायँगे। १७७

❀ नाडि यॊन्ऱुनन् गुरैशॆय्वॆ नळिर्मणि नहैयाय्
तोडि वर्न्दतार्च् चम्बरन् ऱॊलैवुऱ्ऱ वेलै
आडल् वॆन्ऱिया नरुळिय वरमवै यिरण्डुम्
कोडि यॆन्ऱन ळुळ्ळमुङ् गोडिय कॊडियाळ् 178

उळ्ळमुम् कोटिय–मन भी (जिसका) कुटिल (था) उस; कॊटियाळ्–क्रूरी मंथरा ने; नळिर् मणि नकैयाय्–शीतल (मनोरम) मोती समान दांत वाली; नन्कु नाटि–खूब सोचकर; ऑन्ऱु उरै चॆय्वॆन्–एक बात कहूंगी; तोट्टु इवर्न्त तार्–पुष्पलसी मालाधारी; चम्परन्–शम्बरासुर; तॊलैवुऱ्ऱ वेलै–जब मिटा तब; आटल् वॆन्ऱियान्–युद्धविजयी आपके पति के; अरुळिय–दत्त; वरम् अवै इरण्टुम्–वर हैं दो, उनको; कोटि (अब) माँग लो; ऍन्ऱनळ्–कहा। १७८

मन्थरा का शरीर कुटिल था, उसका मन भी कुटिल था। उस क्रूर स्वभाव वाली ने आगे कहा— शीतल मुक्ता-सम दांत वाली! मैं खूब सोच-विचारकर एक बात कहूँगी। आप सुन लीजिए। जब घने पुष्पों की मालाधारी शंबरासुर का वध हुआ तब उस युद्ध में विजयप्राप्त आपके नायक ने आपको दो वर दिये थे। उन दोनों वरों को आज माँग लीजिए। १७८

❀ इरुव रत्तिनु ळॊन्ऱिना लरशुकॊण् डिरामन्
पॆरुव नत्तिडै येऴिरु परुवङ्गळ् पॆयर्न्दु
तिरिदरच् चॆय्व दॊन्ऱिनाऱ् चॆऴुनिल मॆल्लाम्
ऑरुव ऴिप्पडु मुन्महऱ् कुवाय मीदॆन्ऱाळ् 179

इरु वरत्तिनुळ्–दो वरों में; ऑन्ऱिनाल्–एक से; अरचु कॊण्टु–भरत के लिए राज्य लेकर; ऑन्ऱिनाल्–दूसरे (एक) से; इरामन्–श्रीराम को; पॆयर्न्तु–

(राज्य से) निकलकर; एळ् इरु परुवङ्कळ्–सात के दो (चौदह) साल; पॅरुवत्तुतिटै–विशाल वन में; तिरि तर चॅय्वतु–भटकने देना; चॅळु तिलम् ॲल्लाम्–समृद्ध देश सब; उन् मकऱ्कु–आपके पुत्र का; ऑरु वळि पट्टुम्–एक साथ मिले, इसका; उपायम् ईतु–उपाय यही; ॲन्ऱाळ्–कहा। १७९

दो वरों में एक के द्वारा भरत को राज्य माँग लीजिए। दूसरे वर से श्रीराम को राज्य छोड़कर घने वन में भटकने के लिए भिजवा देने की व्यवस्था कर लीजिए। यह सारी समृद्ध भूमि आपके पुत्र की सम्पत्ति हो, उसका यही उपाय है। —मन्थरा ने कहा। १७९

❀ उरैत्त कूनियै युवन्दन्‌ ळुयिरुरत् तळुवि
निरैत्त मामणि यारमु निदियमु नीट्टि
इरैत्त वेलय्शू ळुलहमॅन् नोरुमहऱ् कीन्दाय्
तरैक्कु नायहन् ऱायिनि नीयॅनत् तणिया 180

उरैत्त कूनियै–(उपाय जिसने) बताया उस कुब्जा को; उवन्तनळ्–प्रसन्न होकर; उयिर् उऱ तळुवि–प्राणों से मिलाकर गले लगाती हुई; मा मणि निरैत्त–बहुमूल्य रत्नजटित; आरमुम्–हार; नितियमुम्–और धन; नीट्टि–उपहार में देकर; इरैत्त वेलै चूळ् उलकम्–गर्जनशील समुद्रवलयित भूमि को; ॲन् ऑरु मकऱ्कु ईन्ताय्–मेरे एकाकी पुत्र को दिया; इति–आगे; नी–तुम; तरैक्कु नायकन् ताय्–भूपाल की माता; ॲन–कहकर; तणिया–सन्तुष्ट हुई। १८०

मन्थरा ने यह उपाय बताया तो कैकेयी बहुत मुदित हो गई। उन्होंने मन्थरा को खूब कसकर हृदय से (मानो प्राणों से) लगा लिया। फिर उसे रत्नहार, धन आदि उपहार दिये। फिर उससे कहा कि गर्जनशील समुद्र से घिरी हुई इस भूमि को तुम्हीं ने मेरे भरत को दिया। इसलिए तुम्हीं राजमाता हो। वह अत्यन्त तृप्त हुई। १८०

❀ नन्‌ऱु शॊल्लिनै नम्बियै नळिमुडि शूट्टल्
तुन्‌ऱु कानहत् तिरामनैत् तुरत्तलिव् विरण्डुम्
अन्‌ऱ दामॅनि लरशन्मु नारुयिर् तुऱन्दु
पॊन्‌ऱि नीङ्गुदल् पुरिवॆन्यान् पोदिनी यॅन्‌ऱाळ् 181

नन्‌ऱु चॊल्लिनै–अच्छा कहा; नम्पियै–कुमार भरत का; नळि मुटि चूट्टल्–श्रेष्ठ मुकुट पहनाना; इरामनै–राम को; तुन्‌ऱु कानकत्तु–घने वन में; तुरत्तल्–भिजवा देना; इ इरण्टुम्–ये दोनो कार्य; अन्‌ऱु आम् ॲनिल्–नहीं होंगे तो; यान्–मैं; अरचन् मुन्–राजा के सामने ही; आर् उयिर् तुऱन्तु–अपने मूल्यवान प्राण त्यागकर; पॊन्‌ऱि नीङ्कुतल्–मर जाने का काम; पुरिवॆन्–कर लूँगी; नी पोति–तुम जाओ; ॲन्‌ऱाळ्–कहा। १८१

उन्होंने आगे यह भी कहा। तुमने बड़ा अच्छा उपाय बताया। भरत का मुकुटधारण, राम का वनगमन —ये दोनों हो नहीं सकेंगे तो मैं राजा के सामने ही अपना प्राणत्याग कर लूँगी। तुम जाओ। १८१

❀ कूऩि पोऩपिऩ् कुलमलर्क् कुप्पयनिऩ् ड्रिऴिऩ्दाळ्
शोनै वार्हुळर् कड्रैयिड् चौरुहिय मालै
वाऩ मामळै नुळैदरु मदिपिदिर्प् पाळ्पोल्
तेऩ वावुरुम् वण्डिऩ मलमरच् चिदैत्ताळ् 182

कूऩि पोऩ पिऩ्–कुब्जा के जाने के बाद; कुलम् मलर् कुप्पै निऩ्ड्र–श्रेष्ठ पुष्पों से सज्जित पलंग पर से; इऴिन्ताळ्–उतरकर; चोनै–काले मेघ के समान; वार् कुळल् कड्रैयिल्–लम्बी केशराशि में खोंसे हुए; मालै–हार को; वानम्–आकाश में; मा मळै नुळै तरु–बड़े मेघ-मध्य प्रविष्ट; मति–चाँद को; पितिर्प्पाळ् पोल्–छीनकर पटकती-सी; तेन् अवा उरुम्–शहद चाहनेवाले; वण्टु इनम्–भ्रमरकुल; अलमर–घवड़ा जायँ ऐसा; चितैत्ताळ्–छिन्न-भिन्न कर दिया। १८२

(मन्थरा निश्चिन्त होकर चली गई।) उसके जाने के बाद कैकेयी पुष्पसज्जित पलंग से उतरी। अपने लम्बे केश में खोंसी हुई पुष्पमाला को मानो आकाश के मेघमध्य से चन्द्र को छीन लेती हो ऐसा झट से छीना तो उस पर शहद की इच्छा से बैठे हुए भ्रमर घवड़ाकर उड़ने लगे। उन्होंने उस माला को छिन्न-भिन्न कर दिया। १८२

❀ विळैयुन् दऩ्बुहळ् वल्लियै वेररुत् तॆऩ्ऩक्
किळयहॊण् मेहलै शिन्दिऩळ् किण्किणि योडुम्
वळैदु रन्दऩण् मदियिनिऩ् मरुत्तुडैप् पाळ्पोल्
अळह वाणुद लरुम्बॆर्ड्र् ड्रिलहमु मऴित्ताळ् 183

विळैयुम्–वर्धनशील; तन् पुकऴ् वल्लियै–अपनी कीर्ति-लता को; वेर् अऱुत्तु अॆन्न–जड़ से काट देती-सी; किळै कोळ्–लड़ियाँ रूपी शाखाओं से युक्त; मेकलै–मेखला को; चिन्तिनाळ्–तोड़कर फेंक दिया; किण्किणि योटुम्–पैंजनियों के साथ; वळै–हाथ के कंकणों को भी; तुऱन्तनळ्–हटा दिया; मतियिनिल् मऱु–चन्द्रमध्य कलंक को; तुटैप्पाळ् पोल्–पोंछती-सी; अळकम्–सामने के बाल (अलक) जिस पर पड़े रहते है, उस; वाळ् नुतल्–उज्ज्वल ललाट पर के; पॆऱल् अरुम्–दुष्प्राप्य (मंगल-चिह्न); तिलकमुम्–तिलक भी; अऴित्ताळ्–मिटा दिया। १८३

उन्होंने लड़ियों सहित अपनी मेखला को भी तोड़ दिया मानो अपनी ही बढ़ती कीर्तिलता को जड़ से काट रही हो! फिर पैर के नूपुर, हाथ के कंकण —उनको भी उतार फेंका। फिर अलकमण्डित भाल पर से मंगल-सूचक चिह्न को इस प्रकार पोंछा मानो चन्द्र से उसका कलंक हटा रही हो! वह तिलक भी कितना मूल्यवान था! उसको पोंछ दिया। १८३

❀ ताविऩ् मामणिक् कलऩ्मड्रुन् दनित्तनि शिदड्रि
नावि योदियै नाऩिलऩ् दैवरप् परप्पिक्
कावि युण्डकण् णञ्जऩङ् गाऩ्ड्रिडक् कलुळाप्
पूवु दिर्त्तदोर् कॊम्बॆऩप् पुविमिशैप् पुरण्डाळ् 184

ता इल्–निर्दोष; मा मणि कलन्कळ्–श्रेष्ठ रत्नाभरणों को; मर्रुम्–और अन्य अलंकारों को; तति तत्ति चितरि–अलग-अलग फेंककर; नावि ओतियै–कस्तूरी-लगे केश को; नाल् निलम् तँवर परप्पि–भूमि पर लगाते बिछाकर; कावि उण्ट कण्–नीले पुष्प के समान आँखों के; अञ्चत्तम् कान्रिट–अंजन को गलकर रसने देते हुए; कलुळा–आँसू बहाते हुए; पू उतिर्त्ततु ओर् कॊम्पु–पुष्पत्यक्त एक लता; अँत–के समान; पुवि मिचै पुरण्टाळ्–भू पर लोटीं। १८४

अनेक निर्दोष रत्नाभरणों और अन्य अलंकारों को उन्होंने उठाकर अलग-अलग फेंक दिया। नीचे लेट गई और कस्तूरी लगे अपने केशजाल को खोलकर भूमि पर फैला दिया। आँखों से अंजन को अश्रु से गलाकर बहाते हुए वे एक पुष्पों से विमुक्त हुई लता के समान भूमि पर लोटीं। १८४

नव्वि वीळ्न्दॆन्न नाडह मयिलुयिन्‌ रॆन्नक्
कव्वै कूर्तरच् चन्नहियाङ् गडिहमळ् कमलत्
तव्वै नीङ्गुमॆन् ड्र्योत्तिवन् दडैन्दवम् मडन्दै
तव्वै यामॆन्नक् किडन्दनळ् केहयन् ड्रनयै 185

केकयन् तनयै–केकयतनया; नव्वि वीळ्न्ततु अँत–मृगी गिर गई, जैसे; नाटकम् मयिल्–नाचनेवाला मोर; तुयिन्रतु अँन्न–सो गया-हो जैसे; कव्वै कूर् तर–दुख के तेज बनते; चत्तकि आम्–जानकी रूपी; कटि कमळ् कमलत्तु–सुवासित कमल की; अव्वै–देवी (श्री); नीङ्कुम् अँन्रु–छोड़ जाएगी, यह जानकर; अयोत्ति वन्तु अटैन्त–अयोध्या में जो आ पहुँची; अ मटन्तै तव्वै आम्–उन देवी की ज्येष्ठा है; अँन–ऐसा; किटन्तनळ्–पड़ी रहीं। १८५

उनको देखने पर ऐसा लगा मानो हरिण चौकड़ी भरना छोड़कर म्लान पड़ा हो; या नाचनेवाला मयूर थक कर सो रहा हो। वे ज्येष्ठा (लक्ष्मी की बड़ी बहन जो दरिद्रता, अभाव और संकट की देवी मानी जाती हैं) के समान लगीं जो यह जानकर उधर आई हों कि सुवास-पूर्ण कमलपुष्प पर रहनेवाली जानकी नाम की देवी कमला, बढ़ते दुख के साथ, अयोध्या छोड़ जायेगी और हमारा अब यहाँ स्थान हो गया है। वे निश्चेष्ट पड़ी रहीं। १८५

3. कैकेयी शूळ् विनैप् पडलम् (कैकेयी दुष्कर्म पटल)

❀ नाळिहै कङ्गुलि नळ्ळ डैन्द वेलै
याळिशे यञ्जिय वञ्जी लेळै कोयिल्
वाळिय वॆन्रयन् मन्नर् तुन्न वन्दान्
आळि नॆडुङ्गै मडङ्ग लाळि यन्नान् 186

आळि नॆटुङ्कै–आज्ञा का चक्र धारण करनेवाले लम्बे हाथ का; आळि मटङ्कल् अन्नान्–पुरुष केसरी सदृश दशरथ; कङ्कुलिन् नाळिकै–रात का समय; नळ् अटैन्त

वेलै–जब मध्य में आया तब; वाळ्िय ऍन्ऱु–जयजीव, ऐसा विरुद कहते हुए; मन्नर् अयल् तुन्न–राजा लोगों के पार्श्व में आते; याऴ् इचै–वीणा का संगीत; अञ्चिय अम् चोल्–जिससे डरता है, उस मधुर वचन की; एऴै कोयिल्–स्वामिनी देवी के महल में; वन्दान्–आये। १८६

रात अपनी मध्यवेला पर आ गई। तब आज्ञाचक्रधर, दीर्घबाहु दशरथ कैकेयी के महल की तरफ़ चले आये। उनके साथ राजा लोग 'जयजीव' का विरुद कहते आये। कैकेयी मधुरभाषिणी थीं और उनकी वाणी की मधुरता के सामने वीणा का स्वर भी डरता था। तो भी वे अबोध थीं। (उनकी मधुर बोली का याद दिलाना इसलिए कि अब उनकी वाणी कठोर रहनेवाली है और अबोध इसलिए कि वह अपनी बुद्धि से कार्य करनेवाली नहीं थीं।)। १८६

❀ वायिलिन् मन्नर् वणङ्गि निऱ्प वन्दाङ्
गेयिन शॅय्यु मणङ्गिनर् शूऴ वेहिप्
पाय तुऱन्द पडैत्त उङ्गण् मॅन्ऱोळ्
आयिऴै तन्नै यडैन्दन नाऴि मन्नन् 187

आऴि मन्नन्–चक्रवर्ती; मन्नर्–राजाओं को; वणङ्कि–हाथ जोड़कर; वायिलिन् निऱ्प–द्वार पर खड़े होने देकर; आङ्कु–वहाँ; एयित्त चॅय्युम्–आज्ञाएँ बजा लानेवाली; अणङ्कित्तर्–दासियाँ; वन्तु चूऴ–जब आकर घेर गईं, तब; एकि–जाकर; पायल् तुऱन्त–शय्या त्यागकर; पटै तट कण्–अस्त्र-सम विशाल आँखें और; मॅन् तोळ्–कोमल कंधे वाली; आय् इऴै तन्नै–चुने हुए (श्रेष्ठ) आभरणधारिणी के पास; अटैन्तनन्–पहुँचे। १८७

राजा लोग कैकेयी के महल के द्वार पर ही हाथ जोड़े रुक गये। चक्रवर्ती आगे जाने लगे तो वहाँ आज्ञाकारिणी दासियाँ साथ लग गईं। वे उन कोमलांगी बर्छी-सम नेत्र वाली कैकेयी के पास पहुँचे जो पलंग त्यागकर नीचे भूमि पर लेटी थीं। १८७

❀ अडैन्दन नोक्कि यरन्दै यॅन्कोल् वन्दु
तॊडर्न्द दॅन्नत्तुयर् कॊण्डु शोरु नॅञ्जन्
मडन्दयै मानै यॅडुक्कु मानै येपोल्
तडङ्गैहळ् कॊण्डु तऴीइ यॅडुक्क लुऱ्ऱान् 188

अटैन्तनन्–पास जाकर; नोक्कि–उनकी स्थिति देखकर; वन्तु तॊटर्न्ततु–इसे आ लगा; अरन्तै ऍन् कोल्–दुख क्या है; ऍन्न–सोचकर; तुयर् कॊण्टु–व्याकुल होकर; चोरुम् नॅञ्चन्–खिन्नमन हो; मटन्तैयै–रमणी को; मानै ऍटुक्कुम् आनै पोल्–हरिण को उठानेवाले गज के समान; तट कैकळ् कॊण्टु तऴीइ–विशाल, लम्बे हाथों से बाँधकर; ऍटुक्कल् उऱ्ऱान्–उठाने लगे। १८८

चक्रवर्ती ने उनकी हालत देखी तो वे बड़े व्याकुल हुए और सोचने लगे

कि इन्हें क्या हो गया है ? खिन्नमन होकर उन्होंने उन्हें अपने दोनों पुष्ट हाथों से बांधकर ऐसा उठाने का प्रयास किया जैसे एक हाथी एक हथिनी को उठा रहा हो। १८८

❀ निन्ऱु तॉडर्न्द नॅडुङ्गै तम्मै नीक्कि
मिन्ऱुवळ् हिन्ऱदु पोल मण्णिल् वीऴ्न्दाळ्
ऑन्ऱु मियम्बल णीडु यिर्क्क उऱ्ऱाळ्
मन्ऱ लरुन्दॉडै मन्न नावि यन्नाळ् 189

मन्ऱल् अरु तॉटै मन्नन्–सुगन्धयुक्त अतिसुन्दर मालाधारी राजा की; आवि अन्नाळ्–प्राणसमाना; निन्ऱु–स्थिर रहकर; तॉटर्न्त–(दशरथ के) बढ़े हुए; नॅटु क तम्मै–दीर्घ भुजाओं को; नीक्कि–हटाकर; मिन् तुवळ्किन्ऱतु पोल–मानो बिजली लचकती हो ऐसा; मण्णिल् वीऴ्न्ताळ्–भूमि पर गिरीं; ऑन्ऱुम् इयम्पलळ्–कुछ नहीं बोलीं; नीटु उयिर्क्कल् उऱ्ऱाळ्–लम्बी साँसें छोड़ने लगीं। १८९

सुवासपूर्ण मालाधारी चक्रवर्ती की वे प्राण-सम प्यारी थीं। वे अब अपनी स्थिति में अटल रहीं। उन्होंने दशरथ के बढ़े हुए हाथों को निवारित किया और तड़पती बिजली के समान भूमि पर लचकती हुई गिरी। वे कुछ नहीं बोलीं; पर लम्बी-लम्बी साँसें छोड़ने लगीं। १८९.

❀ अन्नदु कण्ड वलङ्गल् मन्नन् नड्ंजि
ॲन्नै निहऴ्न्ददिव् वेऴु ञालम् वाऴ्वार्
उन्नै यिहऴ्न्दवर् माळ्व रुऱ्ऱ दॅल्लाम्
शॊन्नपि नॆन्शॆयल् काण्डि शॊल्लि ॲन्ऱान् 190

अन्नतु कण्ट–उस (कार्य) को देखकर; अलङ्कल् मन्नन्–मालाशोभित राजा; नड्ंजि–डरकर; निकऴ्न्ततु ॲन्नै–घटित हुआ क्या; इ एऴु ञालम्–इन सातों लोकों में; वाऴ्वार्–रहनेवालों में; उन्नै इकऴ्न्तवर्–तुम्हारी निंदा करनेवाले; माळ्वर्–मर जायेंगे; उऱ्ऱतु ॲल्लाम्–जो भी हुआ वह सब; शॊन्न पिन्–तुम कहो, उसके बाद; ॲन् शॆयल् काण्टि–मेरा कृत्य देखो; शॊल्लिटु–कहो जल्दी; ॲन्ऱान्–कहा। १९०

यह देखकर चक्रवर्ती दशरथ डर गये। माला से शोभित राजा ने उनसे पूछा कि हुआ क्या ? तुम्हारी निन्दा करनेवाले इन सातों लोकों के वासियों में कोई भी हों, वे मेरे हाथों मारे जायेंगे। घटित सब बातें बताओ पहले; पीछे मेरा कृत्य देखो। कहो जल्दी। १९०

❀ वण्डुळर् तारवन् वायमै यॆन्ऱ मन्नाॅ
कॊण्ड नॆडुङ्गणि नालि कॊडुम्बै कोपम्
उण्डॆनि नाम ळॆन्न पॆण्मै नान्ऱिन्
पण्डॊरु नाळ्पनि न्दॆ ळित्ति यॆन्ऱाळ् 191

वण्टु उळर् तारवन्–भ्रमरनुची मालाधारी राजा के; वाय्मै–वचनों को; केट्ट मङ्कै–जिन्होंने सुना वे देवी; नॆंटुम् कण्–दीर्घ आँखों रूपी; कॊण्टलिन् आलि–मेघों के जल (अश्रु) कण; कॊङ्कै कोप्प–स्तनों पर गिराते हुए; ॲन् कण्–मुझ पर; अरुळ् उण्टु आम् कॊल्–दया भी है क्या; उण्मै नाट्टिन्–उसका रहना स्थापित करना चाहते हों तो; पण्टैय–पहले के (वादों को); इन्ऱु–आज ही; परिन्तु अळित्ति–प्रेम के साथ दे दीजिए; ॲन्ऱाळ्–कहा। १९१

भ्रमर जिनको नोच रहे थे उन पुष्पों की माला से अलंकृत राजा के निश्चयपूर्ण वचन सुनकर कैकेयी ने अपने नेत्र रूपी मेघ से आँसू के जल कणों को अपने स्तनों पर बरसाते हुए कहा कि क्या मुझ पर आपकी दया भी है ? अगर सचमुच है तो उन दो वरों को, जिनका वादा आपने पहले किया था, अभी दीजिए और स्नेह के साथ दीजिए। १९१

※ कळ्ळविऴ्	कोदै	करुत्तुण	राद	मन्नन्
वॆंळ्ळ	नॆंडुनजुडर्	मिन्निन्	मिन्न	नक्कान्
उळ्ळ	मुवन्ददु	शॆय्वॆं	नॊन्ऱु	लोवेन्
वळ्ळ	लिरामनुन्	मैन्द	ताणै	यॆन्ऱान् 192

कळ् अविऴ् कोतै–शहद बरसानेवाले (पुष्पों से अलंकृत) केश वाली के; करुत्तु उण्रात–मन से अनभिज्ञ; मन्नन्–राजा; वॆंळ्ळम् नॆंटु चुटर्–अतिशय प्रकाश वाली; मिन्निन्–बिजली के समान; मिन्न–प्रकाशमय रीति से; नक्कान्–हँसकर; उळ्ळम् उवन्तु चॆय्वॆंन्–तुम्हारे मन की चाह पूरा करूँगा; ऒन्ऱुम् उलोवेन्–कुछ भी लोप नहीं करूँगा; उन् मैन्तन्–तुम्हारे पुत्र; वळ्ळल्–वदान्य; इरामन् आणै–राम की कसम; ॲन्ऱान्–बोला। १९२

राजा ने कैकेयी का, जिसके केश पर शहद रस रहा था, आन्तरिक अभिप्राय नहीं जाना। यह सुनकर वे हँस उठे और उनके दाँतों ने अतिशय प्रकाश वाली बिजली से भी अधिक चमक दिखाई। उन्होंने वादा किया कि तुम जो चाहोगी वह अवश्य करूँगा। कुछ भी लोप नही करूँगा। हाँ, राम की सौगन्ध ! । १९२

※ आन्ऱव	नव्वुरै	कूऱ	वैय	मिल्लाळ्
तोन्ऱिय	पेरव	लन्ऱु	डैत्त	लुण्डेल्
शान्ऱिमै	योर्कुल	माह	मन्न	मुन्नी
एन्ऱ	वरङ्ग	ळिरण्डु	मीदि	यॆन्ऱाळ् 193

आन्ऱवन्–गुणश्रेष्ठ के; अ उरै कूऱ–वह वचन कहने पर; ऐयम् इल्लाळ्–संशय-छूटी; मन्न–राजन; तोन्ऱिय–उत्पन्न; पेर् अवलम्–मेरा बड़ा दुख; तुटैत्तल् उण्टेल्–दूर करना हो; मुन्–पहले; इमैयोर् कुलम् चान्ऱु आक–देवगणों को साक्षी बनाकर; नी एन्ऱ वरङ्कळ् इरण्टुम्–आपने जो वादे किये वे दो वर; ईति–अब दीजिए; ॲन्ऱाळ्–कहा। १९३

जब राजा ने राम की सौगन्ध खाई तो कैकेयी को विश्वास हो गया कि अब मनोरथ पूरा हुआ। संशय सब जाता रहा। तब उन्होंने कहा— हे राजन्! अगर आप मेरा कठोर दुख दूर करना चाहेंगे तो आपने पहले किसी दिन, देवता लोगों को साक्षी बनाकर दो वर देने का जो वादा किया था, उन दोनों वरों को अभी दीजिए। १९३

❀ वरङ्गॉळ विल्तुणै मम्म रल्ल लॅय्दि
इरङ्गिड वेण्डुव दिल्लै यीव नॅन्बाल्
परङ्गॉड विप्पॉळु दैव हर्न्दि डॅन्ड्रान्
उरङ्गॉण् मनत्तवळ् वञ्ज मोर्हि लादान् 194

उरम् कॉळ् मनत्तवळ्—कठोरता से भरे मन की; वञ्चम्—वंचना का; ओर्किलातान्—जो अनुमान नहीं कर सके, उन दशरथ ने; वरम् कॉळ—वर लेने के लिए; इत्तुणै मम्मर् अल्लल् ॲय्ति—इतनी घबड़ाहट और इतना संकट पाकर; इरङ्किट वेण्टुवतिल्लै—दुखी होने की आवश्यकता नहीं थी; ॲन् पाल् परम् कॅट—मेरा भार दूर हो जाय ऐसा; इ पॉळुते ईवॅन्—अभी दे दूँगा; पकर्न्तिटु—बताओ; ॲन्ड्रान्—कहा। १९४

राजा ने अब भी कठोरता से भरे कैकेयी का सच्चा मनोभाव नहीं जाना। उन्होंने कहा कि मुझसे वर लेने के लिए इतनी घबड़ाहट, इतना संकट क्यों? इतना दुखी होने की आवश्यकता नहीं थी। अभी कहो। अपना भार हल्का करते हुए तुम्हें अभी दे दूँगा। १९४

❀ एय वरङ्ग ळिरण्डि नॊन्ड्रि नालॅन्
शेयुल हाळ्वदु शीदै केळ्व नॊन्ड्राल्
पॉय्वन माळ्व दॅन्नप्पु हन्ड्रु निन्ड्राळ्
तीयवै यावयि नुञ्जि र्न्द तीयाळ् 195

तीयवै यावैयिनुम्—सभी क्रूर बातों से; चिर्न्त तीयाळ्—बढ़कर अधिक क्रूरता वाली; एय वरङ्कळ् इरण्टिन्—सहमत दो वरों में; ऑन्ड्रिताल्—एक से; ॲन् चेय्—मेरा पुत्र; उलकु आळ्वतु—लोकशासन करे; ऑन्ड्राल्—(दूसरे) एक से; चीतै केळ्वन्—सीता का पति; पोय्—(राज्य छोड़) जाकर; वनम् आळ्वतु—वन का पालन करे; ॲन पुकन्ड्रु—यह कहकर; निन्ड्राळ्—अचल रही। १९५

दुनिया में जो भी निष्ठुर और निर्मम चीज़ें हैं उन सबसे क्रूर निकलीं कैकेयी। उन्होंने कहा कि आपने दो वर देने की सम्मति दी है। उनमें एक से मेरा पुत्र भरत राज्य का शासन करे; दूसरे से सीता का पति राज्य छोड़कर जाए और जंगल का शासन करे। यह कहते हुए वे काँपीं नहीं। अचल और अकम्पित रहीं। १९५

❀ नाह मॅनुङ्गॉडि याड नाविन् वन्द
शोह विडन्दॊड रत्तु णुक्क मॅय्दि

आह मडङ्गलुम् वॆन्द ऴिन्द राविन्
वेह मडङ्गिय वॆऴ् मॆन्न वीऴ्न्दान् 196

नाकम् ॲन्नुम्—सर्प-सम; कॉटियाळ् तन्—निष्ठुर कैकेयी की; नाविन् वन्त—जीभ से निकले; चोक विटम् तॊटर—शोकोत्पादक विष के लगने से; तुणुक्कम् ॲय्ति—दहलकर; आकम् अटङ्कलुम्—शरीर भर में; वॆन्तु—जलकर; अऴिन्तु—निर्बल होकर; अराविन्—विषैले सर्प के (डसने के) कारण; वेकम् अटङ्किय—शक्ति खाये हुए; वेऴम् ॲन्न—हाथी के समान; वीऴ्न्तान्—(भूमि पर) गिरे। १९६

कैकेयी सर्प बन गई और उनकी जीभ से शब्द नहीं निकले, पर विष ही निकला। शोकोत्पादक उस विष के लगने से दशरथ दहल उठे। सारा शरीर तप्त हो गया और वे निर्बल हो गये। सर्प-दंशन से शक्ति के क्षीण होने से जैसे हाथी गिर जाता है वैसे राजा भी भूमि पर गिर पड़े। १९६

❀ पूदल मुऱ्ऱद तिऱ्पु रण्ड मन्नन्
मादुय रत्तिनै यावर् शॊल्ल वल्लार्
वेदनै मुऱ्ऱहम् वॆन्दु वॆन्दु कॊल्लन्
ऊदुलै यिऱ्कनल् लॆन्न वॆय्दु यिर्त्तान् 197

पूतलम् उऱ्ऱु—भूमि पर गिरकर; अतनिल् पुरण्ट—उस पर लोटनेवाले; मन्नन्—राजा के; मा तुयरत्तितै—महान दुख को; चॊल्ल वल्लार् यावर्—बता सकनेवाले कौन हैं; वेततै मुऱ्ऱु अकम्—वेदना भरे मन के; वॆन्तु वॆन्तु—बहुत तप्त होकर; कॊल्लन् ऊतु उलैयिल्—लुहार की भाथी के द्वारा हवा पाकर जलनेवाली भट्ठी की आग के समान; वॆय्तु उयिर्त्तान्—गरम श्वास छोड़े। १९७

चक्रवर्ती भूमि पर गिरकर लोटने लगे। उनके महान दुख का वर्णन कर सकनेवाला कौन है? मन असीम वेदना से भर गया। अत्यन्त दुख-तप्त हो गया। इसलिए उन्होंने जो साँसें छोड़ीं वे लुहार की उस भट्ठी की आग के समान गरम थी जिसे भाथी द्वारा लुहार हवा देकर जलाता रहता है। १९७

उलर्न्ददु नावुयि रोड लुऱ्ऱ दुळ्ळम्
पुलर्न्ददु कण्गळ् पॊडित्त पॊङ्गु शोरि
शलन्दलै मिक्कदु तक्क दॆन्गॊ लॆन्ऱॆन्
ऱलन्दलै युऱ्ऱ वरुम्बु लन्ग ळैन्दुम् 198

तक्कतु ॲन् कॊल् ॲन्ऱु ॲन्ऱु—(अब) उचित क्या है, यह सोच-सोचकर; ना उलर्न्ततु—जीभ (मुख) सूख गई; उयिर् ओटल् उऱ्ऱतु—प्राण निकलने को हुए; उळ्ळम् पुलर्न्ततु—मन मुरझा गया; कण्कळ्—आँखों ने; पॊङ्कु चोरि पॊटित्त—अधिक रक्त बहाया; चलम् तलै मिक्कतु—कोप सिर पर चढ़ा; अरु पुलन्कळ् एन्तुम्—श्रेष्ठ पाँचों इंद्रिय; अलन्तलै उऱ्ऱ—अस्तव्यस्त हुईं। १९८

'अब क्या करना उचित होगा ?' यह सोचते-सोचते चक्रवर्ती की जिह्वा सूख गई। प्राण निकलने को हो गये। मन मुरझा गया। आँखों से मानो रक्त के कण बरसने लगे। गुस्सा सिर पर चढ़ आया। श्रेष्ठ पाँचों इन्द्रियाँ अस्तव्यस्त हो गईं। १९८

❀ मेवि निळत्ति लिरुक्कु निऱ्कुम् वीळुम्
ओविय मॉप्प वयिर्प्प डङ्गि योयुम्
पावियै युऱ्ऱॆदिर् पऱ्ऱि यॅऱ्ऱ वॆण्णुम्
आवि पदैप्प वलक्क णॆय्दि निऩ्ऱान् 199

आवि पतैप्प–प्राण छटपटाते; अलक्कण् ऍय्ति निऩ्ऱान्–कठोर दुख से पीड़ित जो रहे वे; निलत्तिल् मेवि इरुक्कुम्–(कुछ देर) भूमि पर बैठे रहते; निऱ्कुम्–(बाद) खड़े हो जाते; वीळुम्–(फिर) गिरते; ओवियम् ऑप्प–चित्र की तरह; उयिर्प्पु अटङ्कि–साँस रोककर; ओयुम्–शिथिल रहते; पावियै–पापिन को; ऍतिर् उऱ्ऱु–सामने जाकर; पऱ्ऱि–पकड़कर; ऍऱ्ऱ ऍण्णुम्–पटकना चाहते। १९९

वे ऐसे दुखी हुए कि प्राण छटपटाने लगे। वे कुछ देर भूमि पर बैठे रहते, फिर उठकर खड़े होते। फिर भूमि पर गिर जाते। चित्र के समान साँस रोके निस्पंद खड़े रहते। पापिनी कैकेयी को सामने जाकर पकड़कर एक दम पटकने का विचार करते। १९९

पॆण्णॆऩ वुट्कुम् पॆरुम्ब ऴिक्कु नाणुम्
उण्णिऱै वॆप्पॊ डुयिर्त्तु यिर्त्तु लावुम्
कण्णिल नॊप्प वयर्क्कुम् वऩ्गै वेल्वॆम्
पुण्णुऴै हिऱ्क वुळैक्कु मानै पोल्वान् 200

वन् कै वेल्–बलिष्ट हाथ से प्रेषित बर्छी के; वॆम् पुण् नुऴैकिऱ्क–पीडक व्रण में घुसने से; उळैक्कुम्–लटनेवाले; आनै पोल्वान्–हाथी समान राजा; पॆण् ऍन–स्त्री समझकर; उट्कुम्–संकोच करते; पॆरुम् पऴिक्कु–(स्त्री-हत्या से होनेवाली) बड़ी निंदा से; नाणुम्–शरम खाते; उळ् निऱै वॆप्पॊटु–आन्तरिक सन्ताप से; उयिर्त्तु उयिर्त्तु–निश्वास छोड़ते, छोड़ते; उलावुम्–(इधर से उधर और उधर से इधर) चलते; कण्णिलन् ऑप्प–आँखों से हीन के समान; अयर्क्कुम्–निस्पन्द खड़े रहते। २००

फिर सोचते कि वह स्त्री है। उन्हें उतनी पीड़ा हुई जितनी बलवान हाथ से प्रेषित भाले के पके व्रण में घुसने से हाथी को होती है। तो भी वे सोचते है कि वह स्त्री है। इसलिए उन्हें मारने से डरते; स्त्रीहत्या का बड़ा दोष और उसकी बड़ी निन्दा होगी, इस बात से शरमाते। दुखतप्त मन के साथ वे बेचैन होकर इधर से उधर और उधर से इधर चलते थे। कुछ देर अन्धे के समान थके खड़े रहते। २००

कम्ब नॆडुङ्गळि यानै यन्न मन्नन्
वॆम्बि विळुन्दयर् विम्मल् कण्डु वॆय्दुऱ्
ऱुम्बर् नडुङ्गिन ऱूळि पेर्व दौत्त
दम्बन कण्णव ळुळ्ळ मन्न दॆयाल् 201

कम्पम्–खूँटे से बँधे; नॆट्टु कळि यानै अन्न–अत्यन्त मदमत्त गज के समान; मन्नन्–राजा; वॆम्पि–दुखतप्त होकर; विळुन्तु अयर् विम्मल्–गिरकर शिथिल होते है, यह दशा; उम्पर् कण्टु–देवता लोग देखकर; वॆय्तुऱ्ऱु–दुखी होकर; नटुङ्किनर्–काँप उठे; ऊळि पेर्वतु औत्ततु–युगान्त हो गया, ऐसा लगा; अम्पु अन्न कण्णवळ् उळ्ळम्–(तब भी) शरसम आँख वाली का हृदय; अन्नते–वैसा ही (रहा)। २०१

आलान के साथ बँधे हुए अति मदमत्त हाथी की-सी स्थिति में पड़कर राजा मन मारकर लड़खड़ाते है, शिथिल पड़ जाते है —यह स्थिति देखकर देवों को दुख और डर हो गया। उन्हें लगा कि प्रलय का समय आ गया है। इतना होने पर भी शर-सम निर्मम आँखों वाली कैकेयी का मन टस से मस नही हुआ। वैसे ही निर्मम बना रहा। २०१

अञ्जल ळैयन दल्लल् कण्डु मुळ्ळम्
नञ्जिल णाणिल ळॆन्न नाण मामाल्
वञ्जनै पण्डु मडन्दै वेड मन्ऱो
तञ्जॆन मादरै युळ्ळ लार्ह डक्कोर् 202

ऐयनतु अल्लल् कण्टुम्–नायक का दुख देखकर भी; अञ्चलळ्–न डरी; उळ्ळम् नञ्चिलळ्–आर्द्रमना नहीं हुईं; नाणिलळ्–न शरमाई; ऍन्न–(उनकी यह स्थिति) कहते; नाणम् आम्–हमें लज्जा होती है; पण्टु–पहले से ही; वञ्चनै–वंचकता; मटन्तै वेटम् अन्ऱो–स्त्रीरूप ही रही है न; तक्कोर्–योग्य बड़े लोग; मातरै–स्त्रियों को; तञ्चु ऍन–सहायक; उळ्ळलार्कळ्–नहीं मानते। २०२

अपने ही पति की वेदना देखकर भी कैकेयी नही डरी; न उनका मन ही नरम हुआ। वे नही लजाईं। उनकी यह स्थिति कहते हुए हमे लज्जा होती है! हाँ, पहले से ही वंचना स्त्रीरूपधारिणी ही रहती आई है। योग्य और विद्वान बड़े लोग स्त्री को कभी विश्वसनीय सहायक नही मानते। २०२

❀ इन्निलै निन्ऱव डन्नै यॆय्द नोक्कि
नॆय्न्निलै वेलव नीदि शैत्त तुण्टो
पॊय्न्निलै योर्हळ् पुणर्त्त वञ्जमुण्डो
उन्निलै शॊल्लॆन दाणै युण्मै यॆन्ऱान् 203

नॆय्निलै वेलवन्–घृत-लगा भालाधारी; इ निलै निन्ऱवळ् तन्नै–इस स्थिति में रहीं उनको; ऍय्त नोक्कि–खूब देखकर; नी तिचैत्ततु उण्टो–तुम भ्रम में पड़

गई हो; पॉय् निलैयोर्कळ्–मिथ्याचारी; पुणर्तूत–कल्पित; वञ्चम् उण्टो–वंचना है; ऑत्तु आणै–मेरी शपथ; उन् निलै उण्मै चॉल्–अपनी इस स्थिति की सच्चाई कहो; ऍन्ऱान्–कहा। २०३

घी-लगे भाले के दशरथ ने इस स्थिति में खड़ी रही कैकेयी को घूर कर देखा। फिर प्रश्न किया कि क्या तुम्हारा मन भ्रमित हो गया? या मिथ्यावादी किन्हीने आकर तुम्हें गढ़कर वंचना बताई है? मेरी सौगन्ध! तुम अपनी इस स्थिति का असली कारण सच-सच बताओ। —दशरथ ने कहा। २०३

❀ तिशैत्तदु मिल्लै यॅनक्कु वन्दु तीयोर्
इशैत्तदु मिल्लैमु न्नीन्द वरङ्ग ळॅन्बाल्
कुशैप्परि योय्तरि निन्ऱु कॉळ्वॅ नन्ऱेल्
वशैत्तिऱ निन्वयि निऱ्क माळ्व नॅन्ऱाळ् 204

कुचै परियोय्–रासदार अश्वों के स्वामी; तिचैत्ततुम् इल्लै–भ्रमित होने की बात नहीं; तीयोर्–बुरे लोगों ने; ऍन्नक्कु वन्तु इचैत्ततुम् इल्लै–मेरे पास आकर गढ़न्त नहीं कहा है; मुन् ॲन् पाल् ईन्त वरङ्कळ्–पहले मुझे दिये गये वर; इन्ऱु तरिन्–आज देंगे तो; कॉळ्वॅन्–लूँगी; अन्ऱेल्–नहीं तो; वचै तिऱम् निन् वयिन् निऱ्क–अपयश का हेतु आपके पास छोड़कर; माळ्वॅन्–मर जाऊँगी; ऍन्ऱाळ्–कहा। २०४

कैकेयी ने अप्रमत्त रूप से उत्तर दिया। भ्रमित होने की कोई बात नहीं है! न किन्हीं बुरों ने आकर गढ़कर बातें बताई हैं। रासदार अश्वों के स्वामी! आपने पहले जो दो वर देने का वादा किया था, उन दोनो वरों को आज देंगे, तो लूँगी। नहीं तो आपको अपयश उठाने देते हुए प्राण त्याग दूँगी। २०४

❀ इन्द नॅडुञ्जॉलव् वेळै कूऱ मुन्ने
वॅन्द कॉडुम्बुणिल् वेनु ळैन्द वॉप्पच्
चिन्दै तिरिन्दु तिहैत्त यर्न्दु वीळ्न्दान्
मैन्द नलादुयिर् वेऱि लाद मन्नन् 205

इन्त नॅटुम् चॉल्–यह बड़ी बात; अ एळै कूऱ–(उन) अबोध नारी के कहने पर; मैन्तन् अलातु–पुत्र के सिवा; उयिर् वेऱु इल्लात मन्नन्–प्राण जो अलग नहीं रखते थे, वे राजा; मुन्ने वॅन्त कॉटुम् पुण्णिल्–पहले ही अग्नि के लगने से बने व्रण में; वेल् नुळैन्तु ऑप्प–भाला घुस गया, ऐसा; चिन्तै तिरिन्तु–मन अस्त-व्यस्त होकर; तिकैत्तु–भ्रमित होकर; अयर्न्तु–निर्बल होकर; वीळ्न्तान्–भूमि पर गिरे। २०५

यह बड़ा निष्ठुर वचन था। कैकेयी ने यह कह दिया तो राजा का मन टूट गया। उनके तो श्रीराम ही प्राण थे। श्रीराम से अलग उनके प्राण

रह ही नहीं सकते थे। उन्हें ऐसा लगा मानो अग्नि के लगने से उत्पन्न व्रण में भाला घुसेड़ दिया गया हो। वे भ्रमित हो गये और थककर भूमि पर गिर गये। २०५

❀ आकोंडि यायॅनु मावि कालु मन्दो
ओकोंडि देयऱ् मॅन्नु मुण्मै यौंन्ऱुम्
शाहवॅ नावॅळु मॅय्त ळाष्टि वीळुम्
माहमु नाहमु मण्णुम् वॅन्ऱ् वाळान् 206

माकमुम्–आकाशलोक को; नाकमुम्–और पाताललोक को; मण्णुम्–भूलोक को; वॅन्ऱ् वाळान्–जीतनेवाली तलवारधारी; आ कोंटियाय् ऍन्नुम्–हाय क्रूर (नारी) कहते; आवि कालुम्–प्राणाकुलित हो जाते; अन्तो–हाय; अऱम् ओ कोंटिते–धर्म अत्यन्त निर्मम है; ऍन्नुम्–कहते; उण्मै ओन्ऱुम्–सत्य नाम का वह; चाक ऍन्ना–मर जाय, कहकर; ऍळुम्–उठते; मॅय् तळ्ळाटि–शरीर के लड़खड़ाने से; वीळुम्–गिर जाते। २०६

चक्रवर्ती विख्यात वीर थे। उनकी तलवार को आकाश, भूलोक और पाताललोक तीनो को जीतने का गौरव प्राप्त था। वे प्रलाप कर उठे— हाय क्रूर नारी! उनके प्राण सूख-से गये। "हाय! धर्म भी अत्यन्त निर्मम है! सत्य नामक तथ्य का नाश हो!" —यह कहते हुए वे उठे। लड़खड़ाकर गिर गये। २०६

❀ नारिय रिल्लयिञ् ञाल मॅङ्गु मॅन्नक्
कूरिय वाळ्कोंडु कोंन्ऱु नीक्कि यानुम्
पूरिय रॅण्णिडै वीळ्वॅ नॅन्ऱु पोंङ्गुम्
वीरियर् वीरम् विळुङ्गि निन्ऱ् वेलान् 207

वीरियर् वीरम्–श्रेष्ठ वीरों की वीरता; विळुङ्कि–कवलित करके; निन्ऱ्–रहनेवाला; वेलान्–भालाभृत; इ ञालम् ऍङ्कुम्–इस भूतल भर में; नारियर् इल्लै ऍन्न–स्त्रियाँ नहीं हों; कूरिय वाळ् कोंटु–तीक्ष्ण तलवार से; कोंन्ऱु नीक्कि–(इस तरह) मारकर हटाकर; यानुम्–मैं भी; पूरियर् ऍण्णिटै–नीच लोगों की गिनती में; वीळ्वॅन् ऍन्ऱु–पतित हो जाऊँगा, कहकर; पोंङ्कुम्–विफर उठते। २०७

उनका भाला बड़े-बड़े सभी वीरों की वीरता को कवलीकृत कर रहनेवाला था। उनका क्रोध भड़क उठा। "संसार भर में नारियाँ ही न हों, ऐसी स्थिति पैदा करते हुए अपनी तलवार से सभी नारियों को मारकर मिटा दूँगा। नीच लोगों की श्रेणी में गिना जाऊँगा तो कोई बात नही है।"। २०७

❀ कैयोडु कैयॅप् पुडैक्कुम् वायक डिक्कुम्
मॅय्युरै कुऱ्ऱ् मॅनप्पु ळुङ्गि विम्मुम्

नॅय्यॅरि युऱ्ऱॅऩ नॅञ्ज ळिऩ्ड़ु शोरुम्
वैयह मुऱ्ऱु नडऩ्द वाय्मै मऩ्ऩऩ् 208

वैयकम् मुऱ्ऱुम्–पृथ्वी भर में; नटऩ्त–व्याप्त; वाय्मै मऩ्ऩऩ्–सत्यव्रती के यश वाले; (चिनत्ताल्–क्रोध से;) कैयॊटु कैयै–हाथ से हाथ; पुटैक्कुम्–जोर से बजाते; वाय् कटिक्कुम्–होंठ चबाते; मॅय् उरै कुऱ्ऱम्—सत्य-कथन अपराध है; ऍऩ–यह सोचकर; पुळुङ्कि–मनतप्त होकर; विम्मुम्–सिसकते; ऍरि नॅय् उऱ्ऱतु ऍऩ–आग में घी पड़ गया जैसे; नॅञ्चु अळिऩ्तु–मन पिघलाकर; चोरुम्–लट जाते। २०८

दशरथ की सत्यवादिता का यश संसार भर में व्याप्त था। उन्होंने क्रोध से एक हाथ से दूसरे हाथ को जोर से मारा। होंठ चबाये। 'सत्य बोलना भी अपराध हो गया!' यह देखकर उनका मन संतप्त हुआ। सिसकियाँ भरने लगे। आग में लगे घी के समान उनका मन क्षीण हो गया। वे थक गये। २०८

ऑरुप्पिनु मन्दर मुण्मै यॊऩ्ऱु मोवा
मरुप्पिनु मन्दर मॅऩ्ऱ वाय्मै मन्ऩऩ्
पॊरुप्पिऩु मन्निलै पोहि लाळै यावि
इऱुप्पिऩु माव दिरप्प दॅऩ्ऱॆ ळुन्दाऩ् 209

ऑऱुप्पितुम्–इसे दण्डित करूँ तो भी; अन्तरम्–बुरा है; उण्मै ऑऩ्ऱुम् ओवा–सत्य से हटकर; मऱुप्पिनुम्–वर देने से इनकार कर दूँ तो भी; अन्तरम्–बुरा ही; ऍऩ्ऱ–ऐसा सोचकर; वाय्मै मऩ्ऩऩ्–सत्यव्रती चक्रवर्ती; पॊऱुप्पितुम्–कितना भी सब्र करने पर भी; अ निलै पोकिलाळै–उस स्थिति से न हटनेवाली उनको; आवि इऱुप्पितुम्–मारने से; इरप्पतु–याचना करना; आवतु–(लाभदायक) हो सकता है; ऍऩ्ऱु–सोचकर; ऍळुन्ताऩ्–उठे। २०९

राजा सोचने लगे। 'इसे दण्ड दूँ तो भी बुरा है। सत्य से हटकर वर देने से इनकार कर दूँ तो भी बुरा है।' सत्यसंध राजा ने यह निर्णय किया कि कितना भी सब्र के साथ इससे तर्क करूँ तो भी वह अपनी स्थिति को बदलनेवाली नहीं है। इसलिए उसको मारने से उससे प्रार्थना करना अच्छा है। यह सोचकर वे उठे। २०९

❀ कोऩ्मेऱ् कॊण्डुङ् गुऱ्ऱ महऱ्ऱक् कुडिकॊण्डार्
पॊऩ्मे लुऱ्ऱ दुण्डॅनि नऩ्ऱाम् पॊऱैयॅऩ्ऩाक्
काऩ्मेल् वीळ्न्दाऩ् कन्दुहोल् यानैक् कळऩ्मन्ऩर्
मेन्मेल् वन्दु मुन्दि वणङ्ग मिडैताळाऩ् 210

कन्तु कोल् यानै–आलानभंजक हाथी वाले; कऴल्–पायलधारी; मन्ऩर्–राजा लोग; मेल् मेल् मुन्ति वन्तु–उत्तरोत्तर बढ़ते हुए आकर; वणङ्क मिटै–नमस्कार करने के लिए जिनके पास जुटते हैं; ताळाऩ्–उन चरणों वाले; कोल् मेल्

कॊण्टुम्–राजदण्ड रखते हुए भी; कुऱ्ऱम् अकऱ्ऱ–दोष से बचने का; कुऱि कॊण्टार् पोल्–लक्ष्य रखनेवाले के समान; मेल् उऱ्ऱतु उण्टु ऍऩिऩ्–आगे भला होगा तो; पॊऱै नऩ्ऱु आम्–क्षमाशीलता अच्छी है; ऍऩ्ऩा–सोचकर; काल् मेल् वीऴ्न्ताऩ्–कैकेयी के चरणों पर गिरे। २१०

राजा बड़े प्रतापी थे। वे खूँटे तोड़ सकनेवाले गजों के स्वामी थे। उनके चरण ऐसे थे कि राजा लोग "मैं, मै पहले," यह कहते हुए एक से पहले एक आकर उन पर नमस्कार करते थे। उनके हाथ में राजदण्ड, आज्ञा देने का अधिकार था। तो भी उन्होंने शायद सोचा कि हमारा व्यवहार दोष रहित होना चाहिए। 'आगे भला होगा तो क्षमा माँगना श्रेयस्कर है', यह विचार कर राजा कैकेयी के चरणो पर गिरे। २१०

❀ कॊळ्ळा निऩ्शे यिव्वर शऩ्ऩाऩ् कॊण्डालुम्
नळ्ळा दिऩ्द नानिल ञालम् दऩ्ऩॆऩ्ऱुम्
उळ्ळा रॆल्ला मोद वुवक्कुम् पुहऴॊळ्ळा
दॆळ्ळा निऱ्कुम् वऩ्बऴि कॊण्डॆऩ् पयऩॆऩ्ऱाऩ् 211

निऩ् चेय्–तुम्हारा पुत्र; इव् अरचु कॊळ्ळाऩ्–यह राज नहीं लेगा; अऩ्ऩाऩ् कॊण्टालुम्–वह ले भी तो; इन्त नाल् निलम्–यह चतुर्विधा भूमि; नळ्ळातु–सम्मत नहीं होगी; ञालम् तऩिल् उळ्ळार् ऍल्लाम्–संसार के सभी वासी; ऍऩ्ऱुम् ओत–सदा कहते है उससे; उवक्कुम्–चाहनीय वने; पुकऴ् कॊळ्ळातु–यश को न लेकर; ऍळ्ळा निऱ्कुम्–सब (जिसको) निकृष्ट मानेंगे उस; वऩ् पऴि कॊण्टु–प्रबल अपयश प्राप्त कर; ऍऩ् पयऩ्–क्या लाभ होगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। २११

उन्होंने कैकेयी को समझाया कि देखो, तुम्हारा पुत्र भरत राज्य नही लेगा। अगर वह ले भी तो यह भूमि सम्मत नही होगी यानी प्रजा उसे राजा नहीं मानेगी। यश इसलिए चाहनीय है कि दुनिया के सारे लोग उसका बखान करेगे। वह यश न अर्जन कर तुम सर्वनिन्द्य प्रवल अपयश लेने का प्रयास क्यों करती हो ?। २११

वानोर् कॊळ्ळार् मण्णव रुय्या रिऩिमऱ्ऱॆऩ्
एनोर् शॆय्है यारॊडु नीयिव् वरशाळ्वाय्
याऩे शॊल्लक् कॊळ्ळ विशैन्दाऩ् मुऱैयाले
ताऩे नल्हु मुऩ्महऩ् नुक्कुत् तरैयॆऩ्ऱाऩ् 212

वानोर् कॊळ्ळार्–देवता उसको नहीं मानेंगे; मण्णवर् उय्यार्–पार्थिव लोग (श्रीराम को छोड़कर) प्राणधारण नहीं करेंगे; एऩोर् चॆय्कै–इनसे परे (जो पाताल-लोकवासी हैं), उनका काम; इऩि मऱ्ऱु ऍऩ्–अब दूसरा क्या होगा; यारॊटु नी इ अरचु आळ्वाय्–किनके साथ रहकर तुम यह राज्य करोगी; याऩे चॊल्ल–मेरे ही कहने पर; मुऱैयाले–उचित क्रम था इसलिए; कॊळ्ळ इचैन्ताऩ्–(राम) लेने को

सहमत हुआ; उन्‌ मकन्‌क्कु—तुम्हारे पुत्र को; तान्‌ तरै नल्कुम्‌—(तुम्हारी इच्छा मालूम होगी तो) खुद भूमि को दे देगा; ॲन्‌ड्रान्‌—कहा। २१२

तुम्हारी बात देवता नहीं मानेंगे। इस पृथ्वी के लोग श्रीराम से बिछुड़कर जीवित नहीं रहेंगे। अन्य जो पातालवासी हैं, उनका क्या कहा जाय? वे भी सहमत नहीं होंगे। फिर किनको साथ रखकर शासन करोगी? राम ने मेरे कहने से और यही उचित समझकर अपनी सम्मति दी। अब उसे मालूम हो जाय कि तुम्हारी इच्छा यही है तो वह स्वयं राज्य को भरत के पास सौंप देगा। दशरथ ने यह कहा। २१२

कण्णे वेण्डु मॅन्‌निनु मीयक्‌ कडवेॅन्‌न्‌
उण्णे रावि वेण्डिनु मिन्‌ड्रे युनदन्‌ड्रो
पॅण्णे वण्मैक्‌ केहयन्‌ माने पॅरुवायेल्‌
मण्णे कॊण्णी मट्ट्रय दॊन्‌रुम्‌ मड्वॅन्‌ड्रान्‌ 213

पॅण्णे—रमणी; वण्मै केकयन्‌ माने—उदार केकयराज की मृगी-सी तनया; कण्णे वेण्टुम्‌ ॲन्‌निनुम्‌—आँखों को ही चाहोगी तो; ईय कटवेन्‌—देने का मेरा कर्तव्य है; ॲन्‌ उळ्‌ नेर्‌ आवि वेण्टिनुम्‌—मेरे अन्दर के रहनेवाले प्राणों को चाहो तो भी; इन्‌ड्रे उन्‌तु अन्‌ड्रो—वे आज ही तुम्हारे है न; नी पॅरुवायेल्‌—तुम लेना ही चाहो; मण्णे कॊळ्‌—भूमि को लो; मट्ट्रैयतु ऑन्‌रुम्‌—दूसरा जो एक है; मऱ—उसे भूल जाओ; ॲन्‌ड्रान्‌—कहा। २१३

दशरथ ने आगे कहा कि रमणी! उदार केकयराजतनया! मृगी-सी सुन्दरी! मेरी आँखें ही चाहो तो दे दूँगा, यह मेरा कर्तव्य है। मेरे प्राण भी माँगो तो अभी वे तुम्हारे हो जायँगे। इसलिए तुम मुझसे वर लेना चाहो तो दया करो राज्य को लो, दूसरे एक वर को भूल जाओ। २१३

वाय्‌तन्‌ दॆन्‌न्‌ ड्रेनिनि यान्‌नो वडुमाट्ट्रेन्‌
नोय्‌दन्‌ दॆन्‌नै नोवन शॆय्‌दु नुवलादे
ताय्‌दन्‌ दॆन्‌नत्‌ तन्‌नै यिरन्‌दाऱ्‌ ड्ळल्‌वॆङ्‌गट्‌
पेय्‌दन्‌ दीयु नीयिदु तन्‌दाऱ्‌ पिळैयामो 214

यान्‌ वाय्‌ तन्‌तेन्‌ ॲन्‌ड्रेन्‌—मैंने तो वचन दे दिया कि वर दे दिये; इनि अतु माट्ट्रेन्‌—अब उससे नहीं मुकरूँगा; नोय्‌ तन्‌तु—बड़ा रोग (सम दुख) देकर; ॲन्‌नै नोवन चॆय्‌तु—मुझे वेदना देनेवाला काम करके; नुवलाते—ऐसी बातें मत कहो; तळल्‌ वॆम्‌ कण्‌ पेय्‌—आग-सी आँखों वाले भूत; तन्‌नै इरन्‌ताल्‌—आपसे याचना करने पर; ताय्‌ तन्‌ततु ॲन्‌न—माता ने दिया जैसे; तन्‌तु ईयुम्‌—(माँगी चीज) दे देगा; इतु तन्‌ताल्‌—यह (मेरी अर्थना) दोगी तो; पिळै आमो—अपराध होगा क्या। २१४

देखो। मैंने वचन दे दिया कि वर तुम्हें दे दिये। अब उससे नहीं मुकरूँगा। तुम मुझे दुख का रोग दिया, फिर मुझे वेदना देने का काम भी किया; तिस पर पीड़क बातें भी मत कहो। आग-सी आँखों वाला भूत

भी याचक के सामने माता-सा नरमदिल बन जाता है और माँगी चीज प्यार के साथ दे देता है। तो तुम यह छोटा-सा वर दे दो तो वह क्या तुम्हारे लिए अपराध हो जायगा ? । २१४

※ इऩ्ऩे यिऩ्ऩ पऩ्ऩि यिरन्दा ऩिहल्वेन्दऩ्
तऩ्ऩे रिल्लात् तीयव ळुळ्ळऩ् दडुमाऱाळ्
मुऩ्ऩे तन्दा यिव्वर नल्हाय् मुऩिवायेल्
अँऩ्ऩे मऩ्ऩा यारुळर् वाय्मैक् किऩियॆऩ्ऱाळ् 215

इकल् वेन्तऩ्–शक्तिमान चक्रवर्ती ने; इऩ्ऩे–ऐसी; इऩ्ऩ–और इसी तरह की बातें; पऩ्ऩि–बार-बार कहकर; इरन्ताऩ्–प्रार्थना की; तऩ् नेर् इल्ला–अपनी सानी न रखनेवाली; तीयवळ्–अत्याचारिणी; उळ्ळम् तडुमाऱाळ्–कम्पितमन नहीं हुई; मऩ्ऩा–राजा; इ वरम् मुऩ्ऩे–ये वर पहले ही; तन्ताय्–दे दिये; नल्काय्–अब न देकर; मुनिवायेल्–कोप करेंगे तो; अँऩ्ऩे–यह क्या है; वाय्मैक्कु–सत्यपालन के लिए; इऩि–अब; यार् उळर्–कौन हैं; अँऩ्ऱाळ्–कहा। २१५

शक्तिमान राजा ने ये बाते कही; ऐसी ही बहुत सी बातें कहकर मिन्नत की। पर कैकेयी तो क्रूरता में अपनी सानी रखनेवाली नहीं थीं। उस अत्याचारिणी ने निर्ममता से बात काटकर कहा कि देखिए राजा ! देने का वादा कर चुके है। अब बिना वर दिये कोप दिखाएँगे तो क्या होगा ? फिर सत्यपालन के लिए दुनिया में रहेगा कौन ? । २१५

अच्चॊऱ् केळा वावि पुळुङ्गा वयर्हिऩ्ऱाऩ्
पॊय्च्चॊऱ् पेणा वाय्मॊळि मऩ्ऩऩ् पॊऱैकूर
नच्चुत् तीये पॆण्णुरु वन्ऱो वॆन्ननाणा
मुच्चऱ् ऱार्पोऱ् पिऩ्ऩु मिरन्दे मॊऴिहिऩ्ऱाऩ् 216

पॊय् चॊल् पेणा–असत्य वचन कभी न कहनेवाले; वाय् मॊळि मऩ्ऩऩ्–सत्य ही बोलनेवाले राजा; अ चॊल् केळा–(कैकेयी का) वह कथन सुनकर; आवि पुळुङ्का–प्राण संतप्त होकर; अयर्किऩ्ऱाऩ्–क्लांत हो जाते; पॊऱै कूर–सहनशील बनकर; नच्चु तीये–विष और अनल; पॆण् उरु अऩ्ऱो–स्त्री रूप में आये; अँऩ्ऩ–यह सोचकर; नाणा–शरम का अनुभव करते हुए; मूच्चु अऱ्ऱार् पोल्–(योगी) बेहोशों के समान; पिऩ्ऩुम्–(कुछ देर) रहने के बाद; इरन्ते मॊळिकिऩ्ऱाऩ्–प्रार्थना करते ही बोले। २१६

राजा असत्यवाचन को कभी स्थान देनेवाले नहीं थे। सदा सत्यवादी थे। उन्हें कैकेयी के वचन सुनकर अपार दुख हुआ। प्राण सूखने-से लगे। थक गये। तो भी सहनशीलता को अपनाकर वे कुछ देर चुप रहे मानो वे बेहोश या साँस रोके पड़े हों। उन्हें इस बात से शरम होती थी कि विष और आग दोनो मिलकर (इस) स्त्री के रूप में आये है। फिर वे बोलने लगे; तब भी प्रार्थना के स्वर मे ही बोले। २१६

❀ नित्मह ताळ्वा नीयिनि दाळ्वाय् निलमॅल्लाम्
उन्वय मामे याळुदि तन्दे नुरैहुन्ऱेन्
ॲन्मह नॅन्ग णॅन्नुयि रॅल्ला वुयिर्हट्कुम्
नन्मह निन्द नाडिऱ वामै नयवॅन्ऱान् 217

निलम् ॲल्लाम् तन्तेन्–भूमि सब मैंने दिला दी; उरै कुन्ऱेन्–वचन नहीं टालूँगा; उन् वयमे आम्–(राज्य) तुम्हारे वश में हो जायगा; निन् मकन् आळ्वान्–तुम्हारा पुत्र शासन करे; नी इन्तिु आळ्वाय्–या तुम ही सुख से पालन करो; आळुति–आज्ञा चलाओ; ॲन् मकन्–मेरा पुत्र; ॲन् कण्–मेरा नेत्र; ॲन् उयिर्–मेरा प्राण (राम); ॲल्ला उयिर्कट्कुम्–सभी जीवों के लिए; नल् मकन्–अच्छा पुत्र; इन्त नाटु इऱवामै–इस देश से बाहर न जाए; नय–यह वर दो; ॲन्ऱान्–कहा। २१७

उन्होंने याचना की— मैंने अपना सारा राज्य दे दिया। अब वचन नहीं टालूँगा। राज्य तुम्हारा हो जायगा। तुम्हारा पुत्र भरत शासन करे; चाहे तुम ही सुख से शासन करो। मेरा पुत्र, मेरी आँख का तारा, मेरी जान, सभी जीवों के लिए अच्छा पुत्र (सम मित्र) इस देश को छोड़कर न जाए —यह वर दे दो। २१७

मॅय्ये यॅन्ऱन् वेरऱ नूरुम् विनैनोक्कि
नैया निन्ऱे नावु मुलर्न्दे नळिनम्बोऱ्
कैया निन्ऱॅन् कण्णॅदिर् निन्ऱुङ् गळिवानेल्
उय्ये नङ्गा युन्नब यम्मॅन् नुयिरॅन्ऱान् 218

नङ्काय्–(देवी) नायिका; मॅय्ये–सत्यपालन ही; ॲन्ऱन् वेर् अऱ–मेरा मूल काटकर; नूरुम्–नाश करता है; विनै नोक्कि–ऐसा कर्म देखकर; नैया निन्ऱेन्–दुखी हूँ; नावुम् उलर्न्तेन्–मेरी जीभ भी सूख गई; नळिनम् पोल् कैयान्—कमल-सम हाथ वाला राम; इन्ऱु–अब; ॲन् कण् ॲतिर् निन्ऱुम्–मेरी आँख के सामने से; कळि वानेल्–अलग हो जायगा तो; उय्येन्–जीवित नहीं रहूँगा; ॲन् उयिर् उन् अपयम्–मेरी जान तुम्हारे अधीन है; ॲन्ऱान्–कहा। २१८

देवी! मेरा कर्म-भाग्य ऐसा हो गया कि मेरा सत्य ही मुझे निर्मूल करके नाश कर रहा है। यह देखकर मैं वेदना-विद्ध हो रहा हूँ। तुमसे याचना करते-करते मेरी जीभ सूख गई है! कमल-हस्त श्रीराम अब मेरे सामने से दूर हो जायगा तो मेरे प्राण नहीं रहेंगे। अब मेरे प्राण तुम्हारे अधीन, धरोहर, है। —दशरथ ने यह कहा। २१८

❀ इरन्दान् शॉल्लु मिन्नुरै कॉळ्ळाण् मुनिवञ्जाळ्
मरन्दा नॅन्नु नॅञ्जिन णाणाळ् वशैपाराळ्
शरन्दाळ् विल्लाय् तन्द वरत्तैत् तविर्हॅन्ऱल्
उरन्दा नल्ला नल्लऱ मामो वुरैयॅन्ऱाळ् 219

मरम् तान्–काठ ही; ऍन्नुम् नॆञ्चित्तळ्–कहलाने योग्य (कठोर) चित्त वाली; इरन्तान् चॊल्लुम्–प्रार्थना करनेवाले के कहे; इन् उरै–मधुर वचन; कॊळ्ळाळ्–मन में नहीं लेतीं; मुनिवु अञ्चाळ्–उनके कोप से नहीं डरतीं; नाणाळ्–अपनी करनी पर नहीं शरमातीं; वचै पाराळ्–(आनेवाला) अपयश नहीं देखतीं; चरम् ताळ् विल्लाय्–शरनिलय चाप वाले; तन्त वरत्तै–दिये गये वरों को; तविर्क ऍन्ऱल्–छोड़ दो कहना; उरम अल्लाल्–साहस होगा, नहीं तो; नल् अऱम् आमो–सद्धर्म होगा क्या; उरै–आप ही कहिए; ऍन्ऱाळ्–कहा। २१६

कैकेयी का हृदय तो, काठ का है, ऐसा कहाने योग्य हो गया था। उन्होंने प्रार्थना करनेवाले दशरथ की स्निग्ध बात पर ध्यान नहीं दिया। न वह उनके सम्भवनीय कोप से डरी। न ही वह अपनी करनी पर शरमाईं। उन्होंने राजा से कहा कि हे शरनिलय धनुर्धर ! पहले वचनदत्त वरों को छोड़ दो कहना साहस का काम हो सकता है। पर वह धार्मिक हो सकता है क्या ? आप ही बतायें ! २१९

❀ कॊडिया ळिन्न कूऱिनळ् कूऱक् कुलवेन्दन्
मुडिशू डामल् वॆम्बरन् मॊय्हा निडैमॆय्य्ये
नॆडियो नीङ्गु नीङ्गुमॆ नावि यिनियॆन्ना
इडिये ऱुण्ड माल्वरै पोन्मण् णिडैवीळ्न्दान् 220

कॊटियाळ्–निर्मम कैकेयी ने; इन्न कूऱिनळ्–ऐसा कहा; कूऱ–कहने पर; कुलम् वेन्तन्–उत्तम राजा; नॆटियोन्–त्रिविक्रम श्रीराम; मुटि चूटामल्–मुकुट पहने विना; मॆय्य्ये–सचमुच; वॆम् परल्–भयंकर कंकड़ों से; मॊय–भरे; कान् इटै–जंगल में; नीङ्कुम्–चला जायगा; इनि–आगे; ऍन् आवि नीङ्कुम्–मेरे प्राण चले जायँगे; ऍन्ना–यह समझकर; इटि एऱु उण्ट–अशनीप्रहत; माल् वरै पोल्–बड़े पर्वत के समान; मण् इटै वीळ्न्तान्–भूमि पर गिरे। २२०

निर्मम कैकेयी ने ऐसा कह दिया। चक्रवर्ती को विश्वास हो गया कि अब त्रिविक्रम (विष्णु का) अवतार राम मुकुट-धारण न करके घने कंकड़ों से भरे जंगल में चला जायगा। मेरे प्राण भी चले जाएँगे। यह सोचकर राजा अशनि से आहत बड़े पर्वत के समान नीचे गिरे। २२०

❀ वीळ्न्दान् वीळा वॆन्दुय रत्तिन् कडल्वॆळ्ळत्
ताळ्न्दा नाळा वक्कड लुक्कोर् करैकाणान्
शूळ्न्दा डुन्ब मक्कॊडि याळ्शॊर् कॊडुशित्तम्
पॊळ्न्दा ळुळ्ळप् पुन्मयै नोक्किप् पुरळ्हिन्ऱान् 221

वीळ्न्तान्–जो गिरे वे; वीळा वॆम् तुयरत्तिन्–अनभ्यस्त भयंकर दुख के; कटल् वॆळ्ळत्तु–सागर के प्रवाह में; आळ्न्तान्–मग्न हो गये; आळा–मग्न होकर; अ कटलुक्कु–उस सागर का; ओर् करै काणान्–एक तीर (अन्त) नहीं देखते; तुन्पम् चूळ्न्ताळ्–अपने को दुख देनेवाली; चॊल् कॊटु–वचन (अस्त्र) से; चित्तम्

पोळ्न्ताळ्—अपने मन को चीरनेवाली; अ कॉटियाळ्—उन निर्मम कैकेयी के; उळ्ळम् पुन्मैयै—मन की नीचता को; नोक्कि—देखकर; पुरळ्कित्राऩ्—लोटने लगे। २२१

राजा नीचे क्या गिरे, अब तक अननुभूत दुख के सागर में गिर गये। उसमें मग्न उन्हें न ओर दिखाई दिया, न छोर! वे उन कैकेयी के मन की नीचता पर, जिन्होंने उन्हें अत्यन्त दुख देने का संकल्प करके वचन रूपी तलवार से उनके हृदय को विदीर्ण कर दिया, अफ़सोस करते हुए लोटने लगे। २२१

❀ ऑन्ड्रा निन्ड्र आरुयि रोडु मुयर्हेळ्वर्
पॉन्ड्रा मुन्नम् पॉन्ड्रिन रॅन्नुम् पुहळ्ल्लाल्
इन्ड्रोर् कारु मॅल्वळै यार्दम् मिड्रैयोरैक्
कॉन्ड्रा रिल्लैक् कॉल्लुदि योनी कॉडियोळे 222

ॲल् वळैयार्—प्रकाशमान चूड़ाधारिणी स्त्रियाँ; ऑन्ड्रा निन्ड्र—अपने बने रहनेवाले; आर् उयिरॉटुम् उयर्—मूल्यवान प्राणों के समान श्रेष्ठ; केळ्वर्—पतियों के; पॉन्ड्रा मुन्नम्—मरने के पहले; पॉन्ड्रिनर्—मर गईं; ॲन्नुम्—यह; पुकळ् अल्लाल्—यश छोड़कर; इन्ड्रु कारुम्—आज तक; तम् इरैयोरै कॉन्ड्रार्—अपने पतियों को मारनेवालियाँ; इल्लै—नहीं (पाई जातीं); कॉटियाळे—क्रूर नारी; नी कॉल्लुतियो—तुम मार दोगी क्या। २२२

उन्होंने कैकेयी से कहा। उज्ज्वल कंकणधारिणी स्त्रियाँ अपने प्राणप्यारे पतियों के मरने से पहले मरकर यश प्राप्त करती हैं। इसके अलावा हमने कहीं सुना नहीं है कि अपने भर्त्ताओं को मारनेवाली स्त्रियाँ भी इस लोक में हैं। पर तुम हो ऐसी! मुझे मारकर ही छोड़ोगी क्या? २२२

एवम् बारा यिन्मुरै नोक्का यरमॅण्णाय्
आवॅन् बायो वल्लै मनत्ता लरुळ्हॊन्ड्राय्
नावम् बालॅन् नारुयि रुण्डा यिनिज्ञालम्
पावम् बारा दिन्नुयिर् हॉळ्ळप् पडुहिन्ड्राय् 223

एवम् पाराय्—मेरा दुख नहीं देखतीं; इल् मुरै नोक्काय्—इस कुल का गौरव नहीं देखतीं; अरम् ॲण्णाय्—धर्म नहीं सोचतीं; आ ॲन्पायो अल्लै—हाय कहकर सहानुभूति नहीं दिखातीं; मनत्ताल् अरुळ् कॊन्राय्—अपने मन में दया का हनन कर दिया; ना अम्पाल्—जीभ के शर से; ॲन् अरु उयिर् उण्टाय्—मेरा प्यारा प्राण (चूस) हर लिये; इत्ति—अब; ञालम्—इस लोक के वासियों द्वारा; पावम् पारातु—पाप का विचार त्यागकर; इन् उयिर् कॉळ्ळ पटुकिन्राय्—प्यारे प्राणों को हरने से मारी जानेवाली हो। २२३

तुम मेरी वेदना नहीं देखतीं। इस कुल की गौरव परम्परा का विचार नहीं करतीं। धर्म भी नहीं सोचतीं। "हाय!" करके दुख या सहानुभूति

भी प्रदर्शित नहीं करतीं। अपने मन में दया का नाम ही मिटा चुकी हो। अपनी जीभ रूपी शर से मेरे प्राणों को हर चुकी हो। इनका फल क्या होगा, जानती हो ? लोकवासी स्त्रीहत्या के पाप की परवाह न करके तुमको मार देंगे और तुम अपने प्यारे प्राणों को छोड़ दोगी ! । २२३

एण्वा लोवा नाण्मड मच्च मिवयेतम्
पूण्बा लाहक् काण्ववर् नल्लार् पुहळ्पेणि
नाण्बा लोरार् नङ्गयर् तम्वा नणुहारे
आण्बा लारे पॆण्वा लारो डडॆवम्मा 224

एण्पाल् ओवा–स्त्रियोचित विशिष्टता से अवियुक्त; नाण् मटम् अच्चम् इवैये–लाज, संकोच, डर ये ही; तन् पूण् पाल् आक–अपने अलंकार का अंश; काण्पवर्–समझनेवालियाँ; नल्लार्–श्रेष्ठ स्त्रियाँ हैं; पुकळ् पेणि–अपने यश का संरक्षण करके; नाण् पाल् ओरार्–लाज का अंश न माननेवाली; नङ्कैयर् तम् पाल् नणुकार्–स्त्रियों की श्रेणी में नहीं जायेगी; आण् पालारे–पुरुष श्रेणी में भी गण्य हैं; पॆण् पालारोटु अटैवु–स्त्रियों की श्रेणी में केवल रूप के कारण कोष्ठवद्ध की जाती हैं। २२४

स्त्रियों के विशेष गुण है, लाज, संकोच और भय, जो उन्हें शक्ति और गौरव देते हैं। श्रेष्ठ स्त्रियाँ वे गुण रखनेवाली है। अपना यश चाहकर जो लाज को त्याग देती हैं वे स्त्रियों की श्रेणी में गिनी नहीं जायेंगी चाहे वे रूप के कारण स्त्रियों से कोष्ठवद्ध कर दी जाती है ! । २२४

❀ मण्णाळ् हिन्ऱा रादि वलत्तान् मदियाल्वॆत्
तॆण्णा निन्ऱा रियारयु मॆल्ला विहलालुम्
विण्णोर् काऱुम् वॆन्ऱ वॆन्नक्कॆन् मनैवाळ्म्
पॆण्णाल् वन्द तन्दर मॆन्नप् पॆऱुवेनो 225

मण् आळ्किन्ऱार् आति–भूमि के शासकों से लेकर; विण्णोर् काऱुम्–देवलोक-वासियों तक; वलत्ताल्–वल में; मतियाल्–और बुद्धिचातुर्य में; वैत्तु ऍण्णा निन्ऱार्–श्रेष्ठ माने जानेवालों पर; ऍल्ला इकलालुम्–सभी तरह की शक्ति से; वॆन्ऱ ऍनक्कु–विजय पाये हुए मुझे; ऍन् मनै वाळुम्–मेरे घर में रहनेवाली; पॆण्णाल्–स्त्री द्वारा; अन्तरम् वन्ततु–अन्त आ गया; ऍन्न पॆऱुवेनो–ऐसा कहा जाऊँगा क्या। २२५

हाय ! भूमि के राजाओं से लेकर सुरलोकवासियों तक शारीरिक या वौद्धिक वल में वडे समझे जानेवाले सभी को सभी रीतियों से मैंने हराया है। वैसे मेरा, मेरे ही घर की स्त्री से अन्त हो गया —इस लोकनिन्दा का भोगी हो जाऊँगा क्या ? । २२५

❀ ऒन्ऱॊन् ऱुन्नुम् वन्नि यिरङ्गु मिडर् तोयुम्
ऒन्ऱॊन् ऱॊव्वा विन्न लुळक्कु मुयिरुण्डो

इन्ऱिन् ऎन्ऩुम् वण्ण मयङ्गु मिडैयुम्बॊन्
कुन्ऱॊन् ऱॊन्ऱो डॊन्ऱिय वॆन्ऩक् कुवितोळान् 226

पॊन् कुन्ऱु ऒन्ऱु–स्वर्णपर्वत एक; ऒन्ऱॊडु–दूसरे से; ऒन्ऱियतु ऎन्ऩ–जुड़ गया जैसे; कुवि तोळान्–पुष्ट कन्धों वाले; ऎन्ऱु ऎन्ऱु उन्ऩुम्–ऐसा-ऐसा सोचते हैं; पन्ऩि–कहकर; इरङ्कुम्–व्याकुल होते; इटर् तोयुम्–पीड़ामग्न हो जाते; ऒन्ऱु ऒन्ऱु ऒव्वा–परस्पर भिन्न; इन्ऩल्–शोक के विचारों से; उळक्कुम्–विक्षुब्ध होते; उयिर् उण्टो–प्राण हैं क्या; इन्ऱु इन्ऱु–नहीं, नहीं; ऎन्ऩुम् वण्णम्–ऐसा कहने योग्य प्रकार से; मयङ्कुम्–बेसुध हो जाते; इटैयुम्–क्लांत हो जाते। २२६

दशरथजी के कन्धे ऐसे पुष्ट और शोभायमान थे जैसे दो स्वर्णपर्वत एक स्थान पर आकर मिले हों। वे ऐसी-ऐसी बातें सोचते और कहते हुए दुखी हो रहे। व्याकुलता के सागर में डूबे; अनेक तरह के शोकों से उद्विग्न हुए। ऐसे थक कर बेहोश हो गये कि प्राण हैं या नहीं यह संशय होने लगा। २२६

❀ आऴिप् पॊऱ्ऱेर् मन्ऩव निव्वा ऱयर्वॆय्दिप्
पूऴिप् पॊऱ्ऱोण् मुऱ्ऱु मडङ्गप् पुरळ्पोदिल्
ऊऴिऱ् पॆऱ्ऱा यॆन्ऱुरै यन्ऱे लुयिर्माय्वॆन्
पाऴिप् पॊऱ्ऱार् मन्ऩव वॆन्ऱाळ् पशैयऱ्ऱाळ् 227

आऴि पॊन्तेर्–चक्रों से युक्त स्वर्णरथ के स्वामी; मन्ऩवन्–चक्रवर्ती; इव्वाऱु–इस प्रकार; अयर्वु ऎय्ति–श्रांत होकर; पॊन् तोळ् मुऱ्ऱुम्–स्वर्णमय कंधों पर; पूऴि अटङ्क–धूलि को लगने देकर; पुरळ् पोऴ्तिल्–जब लोटे तब; पचै अऱ्ऱाळ्–स्निग्धतामुक्त कैकेयी; पाऴि–गरिमामय; पॊन् तार्–स्वर्णहारधारी; मन्ऩव–राजा; ऊऴिल् पॆऱ्ऱाय्–(वर को) उचित रीति से प्राप्त किया; ऎन्ऱु उरै–ऐसा कहिए; अन्ऱेल्–नहीं तो; उयिर् माय्वॆन्–प्राणहीना हो जाऊँगी; ऎन्ऱाळ्–कहा। २२७

पहियों वाले स्वर्णमय रथ के स्वामी दशरथ क्लांत होकर भूमि पर लोटे जिससे उनके स्वर्णमय कन्धों पर धूलि लग गई। तब स्नेहहीना कैकेयी ने ये वचन कहे— मूल्यवान स्वर्णहारधारी राज्यपति! आप अपने मुख से साफ़ कहिए कि 'तुमने उचित क्रम से ही वर पाये हैं।' नहीं तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगी। २२७

अरिन्दान् मुन्ऩोर् मन्ऩव नन्ऱे यरुमेनि
वरिन्दार् विल्लाय् वाय्मै वळर्प्पान् वरनल्हिप्
परिन्दा लॆन्ऩा मॆन्ऱनळ् पायुङ् गनलेपोल्
ऎरिन्दा राते यिन्ऩुयि रुण्णु मॆरियन्ऩाळ् 228

पायुम् कनल् पोल्–फैलती आग के समान; ऎरिन्तु आऱाते–जलकर ठण्डा पड़े बग़ैर; इन् उयिर् उण्णुम्–प्यारी जान को खानेवाली; ऎरि अन्ऩाळ्–आग के समान

कैकेयी; वरिन्तु आर् विल्लाय्–वन्धन से युक्त धनुर्धर; मुन् ओर् मन्नवन्–(आपके कुल में) पहले एक राजा ने; वाय्मै वळर्प्पान्–सत्यपालन के हेतु; अरु मेनि–अपने मूल्यवान शरीर को; अरिन्तान् अन्ऱे–काटकर दिया न; वरम् नल्कि–वर देकर; परिन्ताल्–अब पछताइये तो; ॲन् आम्–क्या होगा; ॲन्ऱनळ्–कहा। २२८

कैकेयी एक विचित्र आग बनी थी जो नहीं फैलती और जलाकर शान्त होती पर केवल जला सकती थी! उन्होंने राजा को याद दिलाया कि बन्धनयुक्त धनुर्धर! क्या आपके कुल में पहले एक राजा (शिवि) नहीं हुए थे जिन्होंने वचन पालन के लिए अपने ही शरीर को काटकर दिया था? ऐसे वंश में उत्पन्न आप पहले वर दें और अब पछताने लगें—यह क्या? । २२८

❀ वीन्दा ळेयिव् वॆय्यव ळॆन्ना मिडल्वेन्दन्
इन्दे नीन्दे निव्वर मॆन्ऱेय् वनमाळ
मायन्दे नान्पोय् वानर शाळ्वॆन् वशैवॆळ्ळम्
नीन्दाय् नीन्दाय् निन्मह नोडु नॆडिदॆन्ऱान् 229

मिटल् वेन्तन्–शक्तिमान राजा; वॆय्यवळ्–यह निर्मम स्त्री; वीन्ताळे–(वर न दूँ तो) मर जायगी; ॲन्ना–यह समझकर; इ वरम्–इस वर को; ईन्तेन्–दिया; ॲन् चेय् वनम् आळ–मेरा पुत्र जंगल का पालन करे; नान् माय्न्तु पोय्–मैं मरकर, जाकर; वान् अरचु आळ्वॆन्–स्वर्ग का राज करूँगा; निन् मकनॊटुम्–अपने पुत्र के साथ; वचै वॆळ्ळम्–निंदा की धार में; नॆटितु–दीर्घ काल तक; नीन्ताय् नीन्ताय्–तैरती रहो, तैरती रहो; ॲन्ऱान्–कहा। २२९

यह सब सुनकर राजा ने विश्वास कर लिया कि ये वर नहीं दूँ तो अपने प्राण छोड़ देंगी। इसलिए उन्होंने दुख के साथ कह दिया कि अच्छा मैंने वर दे दिये। मेरा पुत्र वन में जाकर उसका परिपालन करे। मैं भी स्वर्ग जाकर उसका शासन करूँगा (वहाँ का सुख भोगूँगा।) तुम अपने पुत्र को साथ लेकर लोकनिन्दा के प्रवाह में तैरती रहो— बहुत काल तक! । २२९

❀ कूऱा मुन्नम् कूऱु पडुक्कुङ् गॊलैवाळिन्
एऱा मॆन्नुम् वन्ऱुय राहत् तिडैमूळ्हत्
तेऱा नाहिच् चॆय्है मऱन्दान् शॆयन्मुऱ्ऱि
ऊऱा निन्ऱ शिन्दयि नाळुन् दुयिल्वुऱ्ऱाळ् 230

कूऱा मुन्नम्–(दशरथ के) कहने के साथ-साथ; कूऱु पटुक्कुम्—खण्ड-खण्ड करनेवाली; कॊलै वाळिन् एऱु आम्–घातक तलवारों के राजा से काटे गये; ॲन्नुम्–जैसे; वन् तुयर्–प्रचण्ड पीड़ा के; आकत्तु इटै मूळ्क–हृदयमध्य पैठते; तेऱान् आकि–बेसुध होकर; चॆय्कै मऱन्तान्–निष्क्रिय हो गये; चॆयल् मुऱ्ऱि–अपना मनोरथ

पूर्ण होने से; ऊरा निन्ऱ चिन्तैयिनाळुम्–(संतोष) उमड़ता मन वाली भी; तुयिल्वु उऱ्ऱाळ्–नींद में मग्न हो गईं। २३०

दशरथ यह 'वर दिया' कहने के पूर्व ही (कहने के साथ-साथ) बेसुध हो गये क्योंकि उनके हृदय में ऐसा आघात लगा मानो काटकर खण्ड-खण्ड बनानेवाली अति तीक्ष्ण तलवार उनके हृदय को चीर गई हो ! वे एक दम निस्पन्द पड़े रह गये। उधर कैकेयी के मन में पूर्ण-मनोरथ होने के कारण आनन्द उमड़ आया। निश्चिन्त होकर वे सो गईं। २३०

❀ शेणु लाविय नाळॅ लामुयि रॊन्ऱु पोल्वन शॅय्दुपिन्
एणु लाविय तोळि नानिड रॆय्द वॊन्ऱु मिरङ्गिला
वाणि लानहै माद राळ्शॅयल् कण्डु मैन्दर्मु निऱ्कवुम्
नाणि नाळॅन वेहि नाणळिर् कङ्गु लाहिय नङ्गये 231

चेण् उलाविय–लम्बे अरसे के; नाळ् ॲलाम्–सभी दिन; उयिर् ऑन्ऱु पोल्वन–एक ही प्राण सम; चॅय्तु–व्यवहार करते रहकर; पिन्–फिर; एण् उलाविय तोळिनान्–सबल कंधों वाले पति को; इटर् ॲय्त–बहुत बड़ा दुख देते हुए; ऑन्ऱुम् इरङ्कला–कुछ भी दया न करनेवाली; वाळ् निला नकै मातराळ्–उज्ज्वल दाँतों वाली स्त्री (कैकेयी) का; चॅयल् कण्टु–काम देखकर; नळिर् कङ्कुल् आकिय नङ्कै–शीतल रात्रि रूपी स्त्री; मैन्तर् मुन् निऱ्कवुम् नाणित्ताळ्–पुरुषों के सामने खड़ा रहने से लजाती; ॲन्न–जैसे; एकित्ताळ्–हट गई। २३१

विवाह से लेकर इतने लम्बे काल तक कैकेयी और दशरथ एकप्राण रहे और वैसे ही व्यवहार करते रहे। अब सबल भुजाओं वाले दशरथ दुखी हैं, पर चन्द्रकला सदृश दाँत वाली कैकेयी कुछ भी नहीं पछताती। उनका यह काम देखकर शीतल रात्रि रूपी रमणी मानो लज्जित होकर, पुरुषों के सामने रहना नहीं चाहा हो, ऐसा हट गई। २३१

ऍण्ड रुङ्गडै शॅन्ऱ याम मियम्बु हिन्ऱन वेळ्ययाल्
वण्डु तङ्गिय तॊङ्गन् मार्बन् मयङ्गि विम्मिय वाऱॅलाम्
कण्डु नॅञ्जुक लङ्गि यञ्जिऱै यान कामर्दु णैक्करम्
कॊण्डु तम्वयि ऱॆऱ्ऱि यॆऱ्ऱि विळिप्प पोन्ऱन कोळियॆ 232

ऍण् तरुम्–गिना जानेवाला; कटै चॅन्ऱ याममम्–दिन का आखिरी पहर; इयम्पुकिन्ऱन–बतानेवाले; कोळि–कुक्कुट; एळैयाल्–अबला द्वारा; वण्टु तङ्किय तॊङ्कल् मार्पन्–भ्रमरावृत मालाधारी वक्ष वाले; मयङ्कि–भ्रमित हो; विम्मिय आऱु ॲलाम् कण्टु–सिसकने का प्रकार सब देखकर; नॅञ्चु कलङ्कि–चित्ताकुल होकर; अम् चिऱै आन–सुन्दर पंख रूपी; कामर् तुणै करम् कॊण्टु–मनोरम हस्तद्वय से; तम् वयिऱु ॲऱ्ऱि ॲऱ्ऱि–अपना पेट पीट-पीटकर; विळिप्प पोन्ऱन–मानो रोते थे। २३२

दिन के गिने हुए आठ यामों के अन्तिम याम को अपनी बाँग द्वारा

लोगों पर प्रकट करनेवाले मुर्गे अपने पंखों को जोर से मारने लगे। उसे देखकर ऐसा लगा कि नारी, कैकेयी, के कारण भ्रमरावृत मालाधारी वक्ष वाले दशरथ व्यथितमन होकर जो सिसक रहे थे उसको देखकर ये कुक्कुट दुखी होकर अपने सुन्दर पंख रूपी हाथों से छाती पीटते हुए रुदन कर रहे हों। २३२

तोय्‌ह यत्तु मरत्तु मॆन्‌शिऱै तुळ्ळि मीदॆऴु पुळ्ळॆलाम्
तेय्‌ह(य्) यॊत्त मरुङ्गुन् मादर् शिलम्बि निन्ऱु शिलम्बुव
केह यत्तर शन्ब यन्द विडत्तै यिन्नदोर् केडुशूऴ्
माह यत्तियै युट्कॊ दित्तु मनत्तु वैवन पोन्ऱवे 233

तोय् कयत्तुम्–(पक्षी जहाँ) ठहरते है, उन तालावों में; मरत्तुम्–तरुओं पर; मॆन् चिऱै तुळ्ळि–कोमल पंखों को पटकते हुए; मीतु ऍऴु–ऊपर उठनेवाले; पुळ् ऍलाम्–सभी पक्षी; तेय्कै ऑत्त मरुङ्कुल्–दिने-दिने क्षीण होती-सी लगनेवाली कमरों की; मातर्–स्त्रियों के; चिलम्पिन्–नूपुरो के समान; निन्ऱु चिलम्पुव–जो बोलते है; केकयत्तु अरचन् पयन्त–केकयराज जनित; विटत्तै–विष-सी; इन्नतु ओर् केट्ु चूऴ्–ऐसे एक क्रूर काम करनेवाली; मा कयत्तियै–बहुत नीच गुण वाली कैकेयी पर; मनत्तुळ्–मन में; कॊतित्तु–क्रोध से जलकर; वैवन पोन्ऱ–गाली देते-से लगे। २३३

जलाशयों में और तरुओं पर खगगण बोलने लगे। वे अपने कोमल पंख फड़काते हुए क्षीणकटि नारियों के नूपुरों की-सी ध्वनि में बोले। उनकी वह बोली ऐसी लगती थीं मानो वे दशरथ को इतना बड़ा दुख देनेवाली, विषसमाना केकयराजतनया नीच कैकेयी को कुढ़कर गालियाँ दे रहे हों। २३३

शेम मॆन्बन पऱ्ऱि यन्बु तिरुन्द विन्ऱुयिल् शॆय्दपिन्
वाम मेहलै मङ्गै योडु वनत्तुळ् यारुम ऱक्कला
नाम नम्बि नडक्कु मॆन्ऱु नडुङ्गु हिन्ऱ मनत्तवाय्
यामु मिम्म णिऱत्तु मॆन्बन पोलॆ ऴुन्दन यानये 234

यानै–गज; चेयम् ऍन्पत्त–सुरक्षित मान्य शालाओ में; अन्पु पऱ्ऱि–चाह के साथ; तिरुन्त इन् तुयिल् चॆय्त पिन्–खूब, सुखमय नीद सोने के बाद; यारुम् मऱक्क अल्ला–किसी के लिए भी अविस्मरणीय; नामम् नम्पि–नामी नायक; वामम् मेकलै मङ्कैयोटु–सुन्दर मेखलाधारिणी वाला (सीता) के साथ; वनत्तुळ् नटक्कुम् ऍन्ऱु–जंगल में चले जायँगे, यह जानकर; नटुङ्कुकिन्ऱ–काँपते; मनत्त आय्–मन वाले हो; यामुम् इ मण् इऱत्तुम्–हम भी इस स्थल से चले जायँ; ऍन्पन पोल्–कहते जैसे; ऍऴुन्तन–उठ खड़े रहे। २३४

हाथी अपनी गजशालाओ मे रात भर सुख से सोने के बाद ऐसे उठे मानो वे 'सबसे अविस्मरणीय नामधारी श्रीराम सुन्दर मेखलाधारिणी

सीताजी के साथ जंगल चले जायँगे' —इस विचार से दहलते मन के साथ, 'हम भी इस स्थल को छोड़ जायँगे' —यह संकल्प करके उठे हों। २३४

❀ शिरित्त पङ्गय मॉत्त शॅङ्गणि राम नैत्तिरु मालयक्
करिक्क रम्बॊरु कैत्त लत्तुयर् काप्पु नाणणि दऱ्कुमुन्
वरित्त तण्गदिर् मुत्त दाहियिम् मण्ण नैत्तु निऴऱ्ऱमेल्
विरित्त पन्दर् पिरित्त दामॆन मीनॊ ळित्तन वानमे 235

चिरित्त पङ्कयम् ऑत्त–हँसते से कमल-सम; चॅम् कण्–लाल आँखों वाले; तिरुमालै–श्रीराम के; करि करम् पॊरु–गज की सूँड़ के समान; अ कै तलत्तु–उस सुन्दर हाथ में; उयर् काप्पु नाण्–श्रेष्ठ रक्षाबन्धन; अणितऱ्कु मुन्–पहनने के पूर्व; इ मण् अनैत्तुम् निऴऱ्ऱ–इस भूतल भर में छाया करने के लिए; मेल् वानम्–ऊपर आकाश में; वरित्त–बनाया गया; तण् कतिर् मुत्ततु आकि–शीतल मुक्ताओं से निर्मित; विरित्त–विस्तृत; पन्तर्–पण्डाल को; पिरित्ततु आम् ऑन–खोलकर हटा दिया गया हो, जैसे; मीन् ऑळित्तन–नक्षत्र छिप गये। २३५

आकाश के नक्षत्र ओझल हो गये। नक्षत्रशून्य आकाश को देखकर यह भास होता था कि विकसितपुण्डरीक-सम आँखों वाले श्रीराम के करिशुण्ड-से हाथ में मंगलसूचक रक्षाबन्धन के पहले इस भूतल भर में छाया देने के लिए जो शीतल प्रकाशमय मोती का पण्डाल लगाया गया था वह विस्तृत पण्डाल अब उठा दिया गया हो। २३५

नाम विऱ्कै यिराम नैत्तॊऴु नाळ डैन्द दुमक्कॆलाम्
काम विऱ्कुडै कङ्गुन् मालै कऴिन्द दॆन्बदु कऱ्पियात्
तामॊ लित्तन पेरि यव्वॊलि तारै मारि तऴङ्गलाल्
माम यिऱ्कुल मॆन्न वुळ्ळ मलर्न्दॆ ऴुन्दनर् मादरे 236

उमक्कु ऑलाम्–तुम सभी को; कामन् विऱ्कु उटै—काम-धनुष से पीड़ित करनेवाली; कङ्कुल मालै कऴिन्ततु–रात की वेला बीत गई; नामम् विल् कै–(शत्रु-) भयंकर धनुर्हस्त; इरामनै तॊऴुम् नाळ्–श्रीराम को नमस्कार करने का दिन; अटैन्ततु–आ गया; ऑन्पतु–यह समाचार; कऱ्पिया–देते हुए; पेरि ऑलित्तन–भेरियाँ बज उठीं; अ ऑलि–वह ध्वनि; तारै मारि तऴङ्कलाल्–जलमेघ के शोर के समान रही, इसलिए; मा मयिल् कुलम् ऑन्न–श्रेष्ठ मयूर-समूह सम; मातर्–स्त्रियों का; उळ्ळम् मलर्न्तु–चित्त फूलकर; ऑऴुन्तनर्–उठी। २३६

भेरियाँ नर्दन कर उठीं। वे मानो स्त्रियों को यह बता रही थीं कि रात, जिसमें तुम लोग मन्मथ के धनु के सामने हार मानकर संकट उठाती रहीं, अब दूर हो गई और शत्रुपीडक धनुर्धर श्रीराम के दर्शन करने का दिन उदय हो गया। वह ध्वनि मेघध्वनि के समान रही और स्त्रियाँ मोरों के समान प्रसन्नमन होकर उठ गईं। २३६

इत्तम लर्क्कुलम् वाय्वि रित्तिळ वाश मारुदम् वीशमुन्
पुत्तैतु हिड्कलै शोर नॆञ्जु पुळुङ्गि ताऱ्शिल पूवैमार्
मत्तव नुक्कम् विडत्त नित्तनि वळ्ळ लैप्पुणर् कळ्ळविन्
कत्तवि नुक्किडै यूऱ डुक्क मयङ्गि ताऱ्शिल कन्निमार् 237

इत्तम्–विविध; मलर् कुलम्–पुष्प-समूह को; वाय् विरित्तु–मुख खोलते हुए; वाचम् इळम् मारुतम् वीच–सुवासित मन्द पवन के वहने से; चिल पूवैमार्–कुछ रमणियाँ; मुन् पुत्तै–पहले वेष्टित; तुकिल् कलै चोर–वस्त्र और मेखला के खिसकते; नॆञ्चु पुळुङ्कित्तार्–मन में (कामज्वर के कारण) तप्त हुईं; चिल कन्निमार्–कुछ कन्याएँ; मत्तम् अनुक्कम् विट–मन का रंज दूर करके; तनि तनि–अलग-अलग; वळ्ळलै पुणर्–(श्रीराम) प्रभु को मिलकर सुख उठाने का; कळ्ळम् इन् कत्तवुक्कु–झूठे और मधुर जो था, उस स्वप्न में; इटैयूरु अटुक्क–वाधा पड़ने से; मयङ्कित्तार्–व्याकुल हुईं। २३७

सवेरे की सुगन्धित मन्द हवा कलियों को खिलाती हुई वहने लगी तो विवाहित स्त्रियों में कुछ लोगों को उससे वेदना हुई। उनके वस्त्र और मेखला ढीली हो गई थी। उनको खेद इसलिए हुआ कि जल्दी दिन हो गया और उनकी प्रणयेच्छा पूर्ण नहीं हुई थी। कुछ कन्याओं को इसलिए दुख हुआ कि वे श्रीराम के संग समय विताने के स्वप्न में मग्न हो रही थीं। उस मधुर और झूठे स्वप्न में वाधा पड़ गई। वे वहुत व्याकुल हुई। २३७

शाय डङ्ग नलङ्ग लनुदु तयङ्गु तन्कुल नन्मयुम्
पोय डङ्ग नॆडुङ्गो डुमुवळि कॊण्ड रुम्वुहळ् शिन्दुमत्
तीय डङ्गिय शिन्दै याळ्शॆयल् कण्डु शीरिय नङ्गैमार्
वाय डङ्गिन वॆन्न वन्दु कुविन्द वण्कुमु दङ्गळे 238

चाय् अटङ्क–अपना गौरव खोते हुए; नलम् कलनुतु तयङ्कुम्–श्रेष्ठता के साथ रहनेवाले; तन् कुलम् नन्मैयुम्–अपने कुल का भी गौरव; पोय् अटङ्क–नष्ट हो जाय, ऐसा; नॆटु कॊटु पऴि कॊण्टु–दीर्घ और भयंकर अपयश लेकर; अरु पुकऴ् चिन्तुम्–श्रेष्ठ यश को दे देनेवाली; अ–उन; ती अटङ्किय चिन्तैयाळ्–अग्निगर्भित मन वाली कैकेयी का; चॆयल् कण्टु–काम देखकर; चीरिय नङ्कैमार् वाय्–श्रेष्ठ स्त्रियों के मुख; अटङ्किन ऍन्न–वन्द हो गये, जैसे; वण् कुमुतङ्कळ्–प्रफुल्ल लाल कुमुद; वन्तु कुविन्तन–दलों को समेटकर वन्द हुए। २३८

दिन के आने से लाल कुमुद वन्द हुए। वे उन कुलीना स्त्रियों के मुखों के समान वन्द हुए जो, अपने और अपने कुल के गौरव का नाश करते हुए यश के वदले दीर्घ और कठोर अपयश मोल लेनेवाली, अग्निमय मन वाली कैकेयी का अनुचित कार्य देखकर लज्जा के कारण अपने मुख वन्द कर लेती हों। २३८

मॉय्य राह निरम्ब वाशै मुरुङ्गु तीयिन् मुळ्ङ्गमेल्
वैय राविय मारन् वाळियुम् वान्ि लानॅडु वाडयुम्
मॅय्य राविड वावि शोर वॅदुम्बु मादर्द मॅन्शॅविप्
पैय रानुळै हिन्ड्र पोन्ड्रन पण्क निन्दॅळु पाडले 239

मॉय् अराकम् निरम्प–घना राग (काम) भरा, तो; आचै–वह इच्छा; मुरुङ्कु तीयिन्–अन्दर की आग के समान; मुळ्ङ्क–बहुत जली, अतः; मेल्–ऊपर; वै अराविय मारन् वाळियुम्–तराशे गये और तीक्ष्ण मन्मथ-शर; वान् निला–श्वेत चाँदनी; नॅटु वाटैयुम्–और लगातार बहनेवाली उदीची हवा (जाड़ा); मॅय् अराविट–(इनके) शरीरों को दुख देने से; आवि चोर–प्राण चलते से लगे; वॅतुम्पुम्–तप्त; मातर् तम्–स्त्रियों के; मॅन् चॅवि–कोमल कानों में घुसनेवाले; पण् कतिन्तु ॲळुम् पाटल्–रागयुक्त गाने; पै अरा–फन वाले सर्प; नुळैकिन्ड्र पोन्ड्रन–घसते जैसे लगे। २३९

प्रातःकालीन गीत गाये जा रहे थे। वे गीत उन स्त्रियों के कर्ण-विवर में फणी सर्प के समान घुसे जिनके अन्दर काम आग के समान ज्वर दे रहा था और बाहर कामदेव के पैनाये गये शर, चाँदनी और निरन्तर बहनेवाली उदीची (ठंडी) हवा उन्हें तंग करके प्राणों को थका रही थी। २३९

आळि यान्मुडि शूडु नाळिडै यान पावियि दोरिरा
ऊळि यायिन वारॅ ज़ावुयर् पोदिन् मेलुऱै पेदयुम्
एळु लोहमु मॅण्ड वञ्जॅय्द कण्णु मॅङ्गण् मनङ्गळुम्
वाळु नाळि दॅनावॅ ळुन्दनर् मञ्जु तोय्बुय मैन्दरे 240

मञ्चु तोय् पुयम्–सुन्दरता भरे कंधों के; मैन्तर्–पुरुष लोग; आळियान्–चक्रधारी; मुटि चूटुम् नाळ् इतु–मुकुट धारण करेंगे, आज का दिन; पोतिन् मेल् उऱै पेतैयुम्–कमल पर रहनेवाली देवी भी; ॲण् तवम् चॅय्त–(आवश्यक) मान्य तपस्या करनेवाले; एळु लोकमुम्–सातों लोक; ॲङ्कळ् कण्णुम्–और हमारी आँखें; मनङ्कळुम्–मन भी; वाळुम् नाळ् ॲना–जीवन (कृतकृत्य) पाने का दिन है; इटै आन पावि–आड़े आई पापिनी; इतु ओर् इरा–यह एक रात्रि; ऊळि आयिन् आङ्–युग समान लम्बी हो गई, किस प्रकार; ॲन–कहते हुए; ॲळुन्तनर्–उठे। २४०

मनोरम भुजा वाले पुरुष लोग यह कहते हुए उठे कि चक्रधारी विष्णु भगवान के अवतार, श्रीराम के मुकुट-धारण का दिन आज है; आज ही कमलनिवासिनी (राज्य) लक्ष्मी के लिए, उन सातों लोकों के लिए जिन्होंने श्रीराम को राजा के रूप में पाने का उद्देश्य लेकर तपस्या की थी, और इनके साथ हमारी आँखों और मनों के लिए सौभाग्य का दिन है; और बीच में पड़ी रात भी एक युग के समान कितनी लम्बी हो रही! । २४०

ऐयु ऱुञ्जुडर् मेनि यानॅळिल् काण् मूळु मवाविनाल्
कॉय्यु ऱुङ्गुल माम लर्क्कुवै निन्ड्रॅ ळुन्दनर् कूर्मैकूर्

नॅय्यु रुञ्जुडर् वेनॅ डुङ्गण् मुहिळ्त्तु नञ्जि निन्ऱप्पॉडुम्
पॉय्यु ऱङ्गु मडन्दै मार्हुळल् वण्डु वॉम्मॅन विम्मवे 241

कूर्मै कूर्–अति तीक्ष्ण; नॅय् उरुम्–और घी लगे; चुटर् वेल्–उज्ज्वल भाले-समान; नॅट्टुकण्–आयत आँखों को; मुकिळ्त्तु–वन्द करके; नॅञ्चिल् निन्ऱप्पॉटुम्–मन में (श्रीराम के) स्मरण के साथ; पॉय् उऱङ्कु मटन्तैमार्–झूठी नींद सोनेवाली स्त्रियाँ; ऐ उरुम् चुटर् मेनियान्–विस्मयकारी कांतिवाले शरीर के श्रीराम की; ॲळिल् काण–रूप-वैभव देखने के लिए; मूळम् अवाविनाल्–उमड़नेवाले अनुराग के कारण; कॉय् उरुम् कुलम् मा मलर् कुवै निन्ऱु–(ढेंपुनी तोड़कर) चुनकर लाये गये विविध फूलों की शय्या से; कुळल् वण्टु पॉम् ॲन विम्म–केश के भ्रमरों को गुंजार के साथ उठने देते हुए; ॲळुन्तनर्–उठीं। २४१

स्त्रियाँ जो तीक्ष्ण और घी-लगे भालो के समान तीक्ष्ण और आयत आँखों को वन्द किये मन में श्रीराम का ध्यान करते हुए झूठी निद्रा सो रही थीं, विस्मयविमूढ करनेवाली देह कान्तियुक्त श्रीराम के किरीट-धारण के वैभव को और उनकी सुन्दरता को देखने की प्रवल इच्छा से ढेंपुनी रहित पुष्पों की शय्या से उठी, तो उनके केशों पर लगे रहे भ्रमर भी 'भनभन' गुंजार कर उठे। २४१

आड हन्दरु पूण ळुन्दिड वञ्जि यञ्जि यनन्दराल्
एड हम्बॉदि तार्पॉ रुन्दिड याम पेरि यिशैत्तलाल्
शेड हम्बुनै कोदै मङ्गयर् शिन्दै यिर्चॅरि तिण्मयाल्
ऊडल् कण्डवर् कूडल् कण्डिलर् नैयु मैन्दर्ह ळुय्यवे 242

चेट्टु अकम् पुनै कोतै–मनोहारिणी रीति से गुँथी हुई मालाधारिणी; मङ्कैयर्–(पत्नी-) स्त्रियाँ; चिन्तैयिन् चॅरि तिण्मैयाल्–मन की दृढ़ता से; ऊटल् कण्टु–रूठती है, यह देखकर; नैयुम् मैन्तर्कळ्–संकटग्रस्त पुरुष लोग; आटकम् तरुम् पूण्–स्वर्णनिर्मित आभूषण; अळुन्तिट अञ्चि अञ्चि–(स्त्रियों के वक्ष में) दर्द करेंगे, इस डर से; अतन्तराल्–भ्रम के कारण; एट्टु अकम् पॉति तार् पॉरुन्तिट–पुष्पों की माला पहनते हैं, तव; यामम् पेरि इचैत्तलाल्–याम के वीतने का संकेत देनेवाली भेरी के वज उठने से; उय्य–(नैराश्य से) वच जाएँ, ऐसा; अवर्–वे; कूटल् कण्टिलर्–मिलन का आनन्द नहीं पा सके। २४२

रात को कितने ही दम्पतियो के यहाँ प्रणय-कलह हो गया था। मनोरम पुष्पमाला से अलंकृत स्त्रियाँ रूठ गईं। उनकी दृढ़ता देखकर पुरुष घवड़ा उठे और उनको मनाने के अनेक उपाय किये। उन्हें यह वात सूझी कि हमारे स्वर्णहार पत्नियों के वक्ष को दुख देंगे, इसलिए उन्हें उतारकर उन्होंने फूलों की माला पहन ली। तभी याम का संकेत देनेवाली भेरी वज गई। वेचारे अपनी पत्नियों से समागम कर नहीं पाये और उनकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई जिससे उनका दुख दूर नहीं हुआ। २४२

कळैयॉ लित्तन वण्डॉ लित्तन कारॉ लित्तन बेरियाम्
मुळवॉ लित्तन तेरॉ लित्तन मुत्तॉ लित्तन मलहुपेर्
इळैयॉ लित्तन पुळ्ळॉ लित्तन याळॉ लित्तन वॅङ्गणुम्
मळैयॉ लित्तन पोलॉ लित्त मनत्तिन् मुन्दुरु वाशिये 243

ॲङ्कणुम्—सब जगह; कळै ऑलित्तन—बाँसुरियाँ बजीं; वण्टु ऑलित्तन—भ्रमर गुंजार कर उठे; कार् ऑलित्त अन्न—मेघ गरजे, जैसे; पेरि आम् मुळवु ऑलित्तन—भेरियाँ रूपी बाजे बजे; तेर् ऑलित्तन—रथों की ध्वनि गूँज उठी; मुत्तु ऑलित्तन—मोती आपस में टकराकर ध्वनित हुए; मलकु पेर् इळै—बहुतायत से पाये जानेवाले आभरणों ने; ऑलित्तन—नाद किया; पुळ् ऑलित्तन—पक्षीगण बोल उठे; याळ् ऑलित्तन—वीणाएँ बजीं; मनत्तिन् मुन्तु उरु—मन से भी अधिक वेग के साथ जानेवाले; वाचि—अश्व; मळै ऑलित्तन पोल—मेघ गरजे जैसे; ऑलित्त—हिनहिनाये। २४३

नगर में अनेक प्रकार के नाद हुए। विविध बाँसुरियाँ बजीं। भ्रमर गुंजार करते थे। मेघ समान भेरियाँ बजीं। रथों की घरघराहट उठी। मोती आपस में टकराकर ध्वनित हुए। बहुमूल्य आभरणों के आपस में टकराने से शब्द हुआ। पक्षीगण बोले। मनोवेग से अधिक तेज चलनेवाले अश्व मेघ-गर्जन के समान हिनहिनाये। २४३

वैय मेळुमॉ रेळु मारुयि रोडु कूड वळङ्गुमम्
मॅय्यन् वीररुळ् वीरन् मामहन् मेल्वि ळैन्दॅळ कादलाल्
नैय नैय नलम्बु लन्गळ विन्द डङ्ग नडुङ्गुवान्
दॅय्व मेनि पडैत्त शेयॉळि पोन्म ळुङ्गिन दीबमे 244

वैयम्—भुवन; एळुम् ओर् एळुम्—चौदहों को; अरु उयिरोटु कूट—अपने मूल्यवान प्राणों के साथ; वळङ्कुम्—जिन्होंने दिया; अ मॅय्यन्—वे सत्यसंध; वीररुळ् वीरन्—वीरों के वीर; मा मकन् मेल्—अपने महान पुत्र पर; विळैन्तु ॲळु कातलाल्—उठकर बढ़ते प्रेम के कारण; नैय नैय—अधिक व्यथित होने से; पुलन्कळ्—इन्द्रिय; नलम् अविन्तु—अपनी स्वस्थता खोकर; अटङ्क—निस्तेज हो गई; नटुङ्कुवान्—काँपनेवाले दशरथ के; तॅय्वम् मेनि पटैत्त—दिव्य शरीर को उपलब्ध; चेय् ऑळि पोल्—श्रेष्ठ दीप्ति (मन्द होती) जैसे; तीपम् मळुङ्किन—दीप मन्द पड़ गये। २४४

चौदहों भुवनों को और अपने प्राणों को देनेवाले सत्यसंध और बड़े से बड़े वीर दशरथ अपने पुत्र पर अत्यधिक प्रेम रखते थे। इसलिए उनके वन में जाने की मजबूरी जो हो गई उसको लेकर वे बहुत दुखी हो गये। इसलिए उनकी इन्द्रियाँ निस्तेज हो गई। वे काँपते थे। उनके दिव्य शरीर की कान्ति जैसे मन्द हुई उसी तरह दीप भी मन्दप्रभ हो गये। २४४

वङ्गि यम्बल तेन्वि ळम्बिन वाणि मुन्दिन पाणियिन्
पङ्गि यम्बर मॅङ्गुम् विम्मिन पम्बै पम्विन पल्वहैप्

पॉङ्गि यम्वल वुङ्ग इङ्गित्त नूवु रङ्गळ्पु लम्ववॅण्
शङ्गि यम्बिन कॊम्व लम्बिन साम गीद निरन्दवे 245

वङ्कियम् पल–विविध वेणुवाद्य, अनेक से; तेन् विळम्पित्त–मधु (-सम) संगीत उठे; वाणि मुन्तित्त–उनसे पहले मौखिक जय-गीत आये; पाणियित् पङ्क्ति–विविध तानों की राशियाँ; अम्परम अॅङ्कुम्–आकाश (भर) में सर्वत्र; विम्मित्त–भर गईं; पम्पै पम्मिन–"पम्पै" (नामक बाजा-दुंदुभी ?) नदित हुए; पल् वकै–अनेक प्रकार के; पॊङ्कु इयम् पलवुम्–नाद देनेवाले वाजे, अनेक; कऱङ्कित्त–वजाये गये; नूपुरङ्कळ् पुलम्प–नूपुर क्वणित हुए; वॅण् चङ्कु इयम् पिन–श्वेत शंख बजाये गये; कॊम्पु अलम्पिन–तुरहियाँ वजीं; चाम कीतम् निरन्त–सामवेद के गीत गाये गये। २४५

फूँककर वजानेवाले अनेक वाद्यों का मधुर संगीत, मौखिक संगीत, बधाई के गीतों का संगीत सब सभी दिशाओं में भर गये। 'पम्पै' नाम का (दुन्दुभी ?) बाजा बजाया गया। विविध उच्च स्वर के बाजे बजे। नूपुर और शंख की चूड़ियाँ खनखना उठीं। श्रृंगियों का नाद उठा। सामवेद के गीत भी गाये गये। २४५

❀ तूव मुऱ्ऱिय कारि रुट्पहै तुळ्ळि योडिड वुळ्ळॅळ्ळुम्
दीब मुऱ्ऱु मॊळित्त हन्ऱन शेय दाशयिर् तेयवॅम्
बाब मुऱ्ऱिय पेदै शॅय्द पहैत्ति ऱत्तिनिल् वॅय्यवन्
कोब मुऱ्ऱि मिहच्चि वन्दन तॊत्त नन्गुण कुन्ऱिन्मेल् 246

चेयतु–अपने कुल के पुत्र दशरथ के; अरु उयिर् तेय–मूल्यवान प्राणों के क्षीण होने देते हुए; वॅम् पापम्–कठोर पाप-कर्म; मुऱ्ऱिय पेतै–पूर्ण जो कर चुकीं उन अबोध कैकेयी के; चॅय्त–किये हुए; पकै तिऱत्तिनिल्–शत्रुकृत्य से; कुण कुन्ऱिन् मेल्–उदयाचल पर; वॅय्यवन्–किरणमाली; कोपम् मुऱ्ऱि–क्रोध में वढ़कर; मिक चिवन्तनन्–अधिक लाल हो गये, ऐसा; ऒत्तनन्–लगे; तूपम् मुऱ्ऱिय–धुएँ के समान सर्वत्र व्याप्त; कार् इरुळ् पकै–काला अन्धकार-शत्रु; तुळ्ळि ओटिट–लपककर भाग जाय; उळ् ॲळ्ळुम्–(घरों के) अन्दर जले (जो); तीपम् मुऱ्ऱुम्–सभी दीप; ऒळित्तु अकन्ऱन–गुल हो गये। २४६

उदयगिरि पर जो सूरज उग आया उसको देखकर ऐसा लगा मानो वह क्रोध से लाल हो गया हो। उसे कैकेयी के सूर्यवंशज दशरथ के प्रति शत्रु का-सा काम करने पर कोप हुआ था। उसके उदय होने पर धुएँ के समान जो अँधेरा सर्वत्र फैला था वह भाग गया! घरों के अंदर जो दीप जलते थे वे भी बुझ गये। २४६

मूव रायमुद लाहि मूलमु माहि ञालमु माहुमत्
तेव देवर् पिडित्त पोरुवि लॊडित्त शेवहन् शेणिलम्
कावन् मामुडि शूड मारॅळिल् काण लामॆनु माशैकूर्
पावै मारुमुह मॆन्न मुन्न मलर्न्द पङ्गय राशियें 247

मूवर् आय्–तीन (त्रिदेव) बनकर; मुतलाकि–उनके आदि बनकर; मूलमुम् आकि–सबका आधार बनकर; ञालमुम् आकुम्–प्रपंच भी जो बने रहते हैं; अ तेव तेवर्–और उन देवाधिदेव (शिवजी) का; पिटित्त–हस्तगृहीत; पोर् विल्–युद्धधनु को; ओटित्त–जिन्होंने तोड़ा वे; चेवकन्–बड़े वीर; चेण् निलम् कावल्–विस्तृत भूमि का पालन करने के लिए; मा मुटि चूटुम्–महत्वपूर्ण किरीट धारण के; अरु ऍळिल्–अपूर्व वैभव को; काणलाम् ऍनुम्–देख सकेंगे, यह; आचै कूर्–आशायुक्त; पावैमार् मुकम् ऍन्न–स्त्रियों के मुखों के समान; पङ्कयम् राचि–पंकज समूह; मुन्नम् मलर्न्त–पहले खिल गये। २४७

सूरज के उगने पर कमल के पुष्प स्त्रियों के मुखों के समान खिल गये। स्त्रियों के मुख क्यों खिले? जो त्रिदेव, त्रिदेव के प्रधान, और त्रिदेव के आदि और प्रपंच के आधार देवाधिदेव और श्री शिवजी के युद्ध-धनुष को तोड़नेवाले श्रीराम के, विस्तृत भूमि के पालन के लिए किरीट-धारण करने की शोभा और वैभव को देखने की आशा से स्त्रियों के मुख खिले थे। २४७

इन्न वेलयि नॆळु वेलयु मॊत्त पोल विरैत्तॆळुन्
दन्न मानहर् मैन्दन् मामुडि शूडुम् वैह लिदामॆनात्
तुन्नु काद लुरप्प वन्दवै चॊल्ल लाम्वहै यॆम्मनोर्क्
कुन्न लावन वल्ल वॆन्निनु मुर्र् पॆर्रि युणर्त्तुवाम् 248

इन्न वेलैयिन्–ऐसी वेला में; मैन्तन्–कुमार के; मा मुटि चूटुम् वैकल्–श्रेष्ठ मुकुटधारण करने का दिन; इतु आम् ऍना–आज ही है, इसकी; तुन्नु कातल्–भरी उमंग के; तुरप्प–प्रेरित करने से; अन्न मा नकर्–उस बड़े नगर के सभी वासी; एळु वेलैयुम् ओत्त पोल–सातों समुद्र मिल गये जैसे; इरैत्तु ऍळुन्तु–आनन्दरव करते हुए उठकर; वन्तवै–जो आये उसका; चॊल्लल् आम् वकै–(विस्तार से) कहने का प्रकार; ऍम्मनोर्क्कु–हम जैसों के लिए; उन्नल् आवन अल्ल–सोचने के लिए सुलभ नहीं है; ऍन्निनुम्–तो भी; उऱ्ऱ पॆऱ्ऱि–भरसक; उणर्त्तुवाम्–समझायेंगे। २४८

ऐसी स्थिति में उस महान नगर के वासी आकर भीड़ लगाने लगे। चक्रवर्ती के पुत्र श्रीराम मूल्यवान किरीट को आज ही धारण करेंगे—यह जानकर उस उत्सव को देखने की इच्छा से प्रेरित होकर, सातों समुद्रों के मिल आने के समान, शोरगुल के साथ उनका एकत्र होना, कवि कहते हैं, हमारे लिए वर्णनातीत है! तो भी भरसक उसका वर्णन करेंगे। २४८

कुञ्जर मन्नैयार् शिन्दयुहॊ ळिळैयार्, पञ्जिह ळणिवार् पाल्वळै तॆरिवार्
अञ्जन मॆन्वा ळम्बुह ळिडये, नञ्जिलै यिडुवार् नाण्मलर् पुनैवार् 249

कुञ्चरम् अन्नैयार्–गज-सम (मत्त) पुरुषों के; चिन्तै कॊळ्–मन हरनेवाली; इळैयार्–तरुण रमणियाँ; पञ्चिकळ् अणिवार्–लाक्षारस लगाती हैं; पाल् वळै तॆरिवार्–दुग्ध-सम श्वेत चूड़ियाँ चुनकर पहनती हैं; अञ्चनम् ऍन–अंजन के नाम

से; वाळ् अम्पुकळ् इटै–तलवारों और वाणो (सी आँखों) में; नञ्चित्तै इटुवार्–विष लगा लेती हैं; नाळ् मलर् पुनैवार्–उसी दिन खिले फूल पहनतीं। २४६

तरुणियो का व्यवहार देखिये। कुंजर-सम तरुणों के मन को हरनेवाली तरुणियों ने पैरों में महावर लगाया। शंख की बनी चूड़ियाँ चुनकर पहनी। अंजन कहकर विष को तलवारों और शरों के समान अपनी आँखों में लगा लिया। उसी दिन विकसित पुष्प पहन लिये। २४९

पौङ्गिय वुवहै वॆळ्ळम् पौऴितरक् कमलम् पूत्त
शङ्गयिन् मुहत्तार् नम्बि तम्बिय रनैय रानार्
शॆङ्गय नऱव मान्दिक् कळिप्पन शिवणुङ् गण्णार्
कुङ्गुमच् चुवडु नीङ्गाक् कुववुत्तोट् कुमर रॆल्लाम् 250

नऱवम् मान्ति–मधु पीकर; कळिप्पत्त–मुदित; चॆम् कयल् चिवणुम् कण्णार्–अच्छी ("कयल" की) मछली-सम मत्त आँखो वालियों का; कुङ्कुमम् चुवटु नीङ्का–कुंकुम का लगा चिह्न जिनसे धुला नहीं है; कुववु तोळ्–वे पुष्ट कंधों वाले; कुमरर् ऍल्लाम्–तरुण पुरुष, सब; कमलम् पूत्त—कमल-सम प्रफुल्लित; चङ्कै इल् मुकत्तार्—कपट-रहित मुख वाले होकर; पौङ्किय–उमड़ा हुआ; उवकै वॆळ्ळम्–आनन्द का प्रवाह; पौऴि तर–अश्रु के रूप में वहाते हुए; नम्पि–नायक श्रीराम के; तम्पियर् अनैयर् आनार्–छोटे भाइयों के समान हो गये। २५०

तरुण लोग ऐसे थे जिनके कंधों से कुंकुम का चिह्न नहीं छूटा था। शहद पीकर मत्त रहनेवाली 'कयल' नामक मछलियों के समान जिनकी आँखें थीं उन तरुणियों के वक्ष पर लगा था वह कुंकुम! वे पुष्ट कंधों वाले तरुण लोग निष्कपट मुख और आनन्दाश्रु वहानेवाली आँखों के साथ श्रीराम के छोटे भाइयों के समान वन गये (अत्यन्त आनन्दित हो गये।)। २५०

❀ मादर्हळ् कऱ्पिन् मिक्कार् कोशलै मनत्तै यॊत्तार्
वेदियर् वशिट्ट नॊत्तार् वेऱुळ माद रॆल्लाम्
शीदयै यॊत्ता रन्ना डिरुविनै यॊत्ता ळव्वूर्च्
चादुहै मान्द रॆल्लान् दयरदन् ऱन्नै यॊत्तार् 251

अ ऊर्–उस (अयोध्या) नगर में; कऱ्पिल् मिक्कार् मातर्कळ्–विवाहिता बड़ी उम्र की स्त्रियाँ; कोचलै मनत्तै ऑत्तार्–कौसल्यादेवी के-से मन वाली हो रहीं; वेऱु उळ मातर् ऍल्लाम्–अन्य सभी (कन्या) स्त्रियाँ; चीतैयै ऑत्तार्–सीताजी के समान हो गईं; अन्नाळ्–वे सीता; तिरुविनै ऑत्ताळ्–लक्ष्मीदेवी के समान हो गईं; चातुकै मान्तर् ऍल्लाम्–साध (उम्र में वड़े) पुरुष सभी; तयरतन् तन्नै–दशरथ से; ऑत्तार्–तुल्य रहे; वेतियर् वचिट्टर् ऑत्तार्–वेदज्ञ विप्र वसिष्ठ से तुले। २५१

उमर में वड़ी सभी गृहिणियाँ (सधवाएँ) कौसल्यादेवी के समान

(मुदित) हुई। अन्य कन्याएँ सीता-सम हुईं। वे सीता भगवती श्रीलक्ष्मी के समान शोभीं। वयोवृद्ध साधू लोग दशरथ के समान रहे। और वेदपाठी सभी ब्राह्मण लोग वसिष्ठजी के समान हो रहे थे। २५१

❀ इमिळ्तिरैप् परवै ञाल मॅङ्गणुम् वरुमै कूर
उमिळ्वदीत् तुदवु काद लुन्दिड वन्द दन्ऱे
कुमिळ्मुलैच् चीदै कॉण्गन् कोमुडि पुनैदल् काण्बान्
अमिळ्दुणक् कुळुमु हिन्ऱ वमररि नरश वॅळ्ळम् 252

अरच वॅळ्ळम्–राजाओं की बड़ी भीड़; कुमिळ् मुलै चीतै कॉण्कन्–कलशस्तनी सीता के पति के; को मुटि पुनैतल् काण्पान्–राजमुकुट धारण करने को देखने के लिए; उमिळ्वतु ऑत्तु–बाहर प्रकट होते से; उतवु कातल्–उमड़ते प्रेम के; उन्तिट–प्रेरित करने से; इमिळ् तिरै परवै ञालम् ॲङ्कणुम्–ध्वनियुक्त लहरों वाले समुद्र से वलयित पृथ्वी के सभी स्थानों को; वरुमै कूर–रिक्त बनाकर; अमिळ्तु उण–अमृत अशन करने; कुळुमुकिन्ऱ अमररिन्–एकत्र होनेवाले देवों के समान; वन्ततु–आने लगी। २५२

राजाओं की भीड़ अत्यधिक थी। उनके मन में मनोरम उरोज वाली सीताजी के पति, श्रीराम के मुकुटधारण के उत्सव को देखने की प्रवल लालसा रही। उससे प्रेरित होकर वे आ गये। संसार के अन्य भाग सभी रिक्त हो गये। वे राजा लोग उन देवों के समान अयोध्या में आने लगे जो अमृत का अशन करने के लिए क्षीरसमुद्र पर गये थे। २५२

पाहियल् पवळच् चॅव्वायप् पणैमुलैप् परवै यल्हुल्
तोहयर् कुळामु मैन्दर् शुम्मयुन् दुवन्ऱि यॅङ्गुम्
एहुमि नेहु मॅन्ऱॅन् रिडैयिडै निऱ्ऱ लल्लाल्
पोहलर् मीळ्ह लिल्लार् पॉन्नहर् वीदि यॅल्लाम् 253

पॊन् नकर्–लक्ष्मी के (वासस्थान, उस) नगर में; वीति ॲल्लाम्–सभी सड़कों पर; पाकु इयल्–चाशनी का मधुर स्वभाव; पवळम् चॅम् वाय्–और प्रवाल-सी लालिमा से युक्त मुख; पणै मुलै–पीन स्तन; परवै अल्कुल्–विशाल नितम्ब; तोकैयर् कुळामुम्—कलापी-सी आभावाली स्त्रियों की भीड़ और; मैन्तर् चुम्मैयुम्–पुरुषों की भीड़; ॲङ्कुम् तुवन्ऱि–सर्वत्र भरकर; एकुमिन् एकुम्–चलिए, चलो; ॲन्ऱु ॲन्ऱु—कहते-कहते; इटै इटै निऱ्ऱल् अल्लाल्—यत्र-तत्र खड़ी ही रहती है, उसके सिवा; पोकलार्–आगे बढ़ नहीं पाते; मीळ्कल् इल्लार्–पीछे भी मुड़कर जा नहीं पाते। २५३

श्रीलक्ष्मी के वास के उस नगर की वीथियों में स्त्रियों और पुरुषों की वड़ी भारी भीड़ लग गई। स्त्रियाँ सुन्दर थीं। वे चाशनी-सम मधुर वोली वाली और प्रवाल-सम लाल अधर-होंठ वाली रमणियाँ थीं। उनके स्तन पीन थे और नितम्ब-प्रदेश विशाल। भीड़ के लोग कहते कि

"वढ़ो आगे, स्थान दो"; पर वे न आगे वढ़ पाते हैं, न पीछे मुड़ पाते हैं। उनको खड़ा रहना ही पड़ता है। इतनी भारी भीड़ थी। २५३

❀ वेन्दरे पॅरिदॆन् वारुम् वीररे पॅरिदॆन् वारुम्
मान्दरे पॅरिदॆन् वारु महळिरे पॅरिदॆन् वारुम्
पोन्ददे पॅरिदॆन् वारुम् पुहुवदे पॅरिदॆन् वारुम्
तेर्न्ददे तॆरिव दल्लाल् यावरे तॆरिय वल्लार् 254

वेन्तरे पॅरितु ऍन्पारुम्–राजाओं की संख्या ही अधिक है, कहनेवाले; वीररे पॅरितु ऍन्पारुम्–और वीरों की भीड़ ही वड़ी, कहनेवाले; मान्तरे पॅरितु–पुरुषों की भीड़ वड़ी; ऍन्पारुम्–कहनेवाले; मकळिरे पॅरितु–स्त्रियों का समूह ही विशाल है; ऍन्पारुम्–कहनेवाले; पोन्तते पॅरितु–आगत लोगों की संख्या वड़ी; ऍन्पोरुम्–कहनेवाले; पुकुवते पॅरितु ऍन्पारुम्–आनेवाले लोग ही अधिक कहनेवाले; तेर्न्तते तॆरिवतु अल्लाल्–अपने देखे हुओं को ही जानते हैं, उसको छोड़; तॆरियवल्लार् यावर्–संपूर्णता जाननेवाले कौन है। २५४

उस भीड़ को देखकर लोग कहते है कि राजाओं की भीड़ ही वड़ी है। सेना-वीरों की संख्या अधिक है; पुरुष लोगों की भीड़ वड़ी है; स्त्रियों का समूह ही विशाल है; जो आ चुके उनकी भीड़ भारी है; नहीं-नहीं जो आनेवाले है उनकी संख्या ही अधिक है। इस तरह लोग अपनी-अपनी जानकारी के आधार पर अनुमान लगा रहे थे। वहाँ कौन थे जो संपूर्ण भीड़ को देखकर वता सकें ?। २५४

❀ कुवळयि नॅळ्ळिलुम् वेलिन् कॊडुमयुङ् गुळैत्तुक् कूट्टित्
तिवळुमञ् जनमॆन् ड्रेय्न्द नञ्जिनैत् तॆरियत् तीट्टित्
तवळवॊण् मदियिन् वैत्त तन्मशा ट्रडङ्ग णल्लार्
तुवळुनुण् णिडया राडुन् दोहयिन् कुळात्तिर् ड्रॊक्कार् 255

कुवळैयिन् ऍळिलुम्–नील कुवलय की छटा; वेलिन् कॊटुमैयुम्–भाले की क्रूरता; कुळैत्तु कूट्टि–मिलाकर घोलकर; तिवळुम–वने रहे; अञ्चतम् ऍन्ऱु एय्न्त–'अंजन' नाम के साथ, रहनेवाले; नञ्चितै–विष को; तॆरिय तीट्टि–दरसाते हुए लगाकर; तवळम् ऑळ् मतियिन् वैत्त–श्वेत, उज्ज्वल चन्द्र पर जड़ित-सी; तन्मै चाल्–दृश्यवाली; तटम् कण्–विशाल आँखों की; नल्लार्–स्त्रियाँ; तुवळुम् नुण् इटैयार्–लचकती पतली कमरवालियाँ; आटुम् तोकैयिन् कुळात्तिन्–पंख फैलाकर नाचनेवाले मोरों के झुण्डों के समान; तॊक्कार्–आ एकत्र हुई। २५५

पतली कमर वाली स्त्रियाँ नाचते मोरों के समान आ जुट गई। उनका श्रृंगार देखिये। नील कुवलय का रूप और भाले की क्रूरता से युक्त अंजन नामक विष को उन्होंने अपनी आँखों में लगा लिया है! उनको एक श्वेत, उज्ज्वल चन्द्र पर जटित कर लिया हो ऐसा उनका मुख है। उन आँखों की वे स्त्रियाँ अपनी कमर लचकाती आई है। २५५

नलङ्गिळर् बूमि यॆन्नुनु नङ्गयै नऱुन्दु ळायित्
अलङ्गलान् पुणरुञ् जॆल्वङ् गाणवन् दडैन्दि लादार्
इलङ्गयि ऩिरुद रेमऱ् ऱीरॆऴु पुवऩत् तुळ्ळ
विलङ्गलु मरमु मादि वेऱुळ पॊरुळ्ह ळॆल्लाम् 256

नलम् किळर्–अच्छाइयों से युक्त; पूमि ऍन्नुम् नङ्कैयै–भूमि रूपी देवी को; नऱु तुळायित् अलङ्कलान्–सुगन्धित तुलसी-मालाधारी; पुणरुम्–जो मिलते है उस; चॆल्वम् काण–वैभव को देखने के लिए; वन्तु अटैन्तिलातार्–जो अभी तक नहीं आ पहुँचे; इलङ्कैयिल् निरुतरे–लंका के राक्षस ही; मऱ्ऱु–उनके अलावा; ईर् एऴु पुवनत्तु–दो के सात (चौदह) भुवनों के; उळ्ळ–रहनेवाले; विलङ्कलुम् मरमुम् आति–पर्वत, पादप आदि; वेऱु उळ–(मानव देवादि से) भिन्न; पॊरुळ्कळ् ऍल्लाम्–निर्जीव पदार्थ सभी। २५६

इस बड़ी भीड़ में दुनिया के सभी थे। पर कौन नहीं थे? सौभाग्य-दायिनी पृथ्वीदेवी को तुलसीमाला-धारी श्रीराम वरमाला पहनानेवाले हैं। उस उत्सव को देखने के लिए जो नहीं आये, वे लंका के राक्षस ही थे। उनके अलावा चौदहों भुवनों के पर्वत और वृक्ष नहीं आये क्योंकि वे स्थावर थे। २५६

चन्दिरर् कोडि यॆन्नत् तरळवॆण् कविहै योङ्ग
अन्दरत् तन्न मॆल्ला मार्न्दॆऩक् कवरि तुन्न
इन्दिरऱ् कुवमै शालु मिरुनिलक् किळव रॆल्लाम्
वन्दऩर् मवुलि शूट्टु मण्डब मरबिऱ् पुक्कार् 257

इन्तिरऱ्कु उवमै चालुम्–इन्द्र से उपमेय; इरु निलम् किळवर् ऍल्लाम्–बड़े पृथ्वी भागों के अधिपति लोग; चन्तिरर् कोटि ऍन्न–करोड़ों चन्द्र हों ऐसे; तरळम् वॆण् कुटैकळ् ओङ्क–मोती के छत्रों के ऊपर रहते; अन्नम् ऍल्लाम्–संसार के सभी हंस; अन्तरत्तु आर्न्त–आकाश में भर गये; ऍन्न–ऐसा; कवरि तुन्न–चामरों के साथ; वन्तनर्–आये; मवुलि चूट्टुम् मण्टपम्–मुकुट-धारण के मण्डप में; मरपिन् पुक्कार्–क्रम के अनुसार पहुँचे। २५७

सभी महीपति अभिषेक के मण्डप में आ पहुँचे। उनके आने का ठाठ कैसा था? उनके करोड़ों छत्र, करोड़ों चंद्रों के समान थे। चामरों की संख्या इतनी थी और उनका डुलना ऐसा लगता था मानो संसार भर के हंस उधर आ गये हों। उन राजाओं से इन्द्र भी उपमित हो सकते थे! वे सब अपनी-अपनी मर्यादा के क्रम के अनुसार आ पहुँचे। २५७

मुऱ्पयन् ऱॆडुत्त कादऱ् पुदल्वऩै मुऱैयि नोड्म्
इऱ्पयन् शिऱप्पिप् पारि ऩीण्डिय वुवहै तूण्ड
अऱ्पुदन् ऱिरुवैच् चेरु मरुमणङ् गाणप् पुक्कार्
नऱ्पयन् ऱवत्ति नुय्क्कु नाऩ्मऱैक् किळव रॆल्लाम् 258

तवत्तिन्–तपोबल से; नल् पयन् उयक्कुम्–श्रेष्ठ उपकार (संसार को) करनेवाले; नाल् मऱै किऴवर् ॲल्लाम्–चारों वेदों के ज्ञाता सभी ब्राह्मण; मुन् पयन्तु ॲट्टुत्त–पहले जनाये; कातल् पुतल्वऩै–प्यारे पुत्र को; मुऱैयिनोटुम्–विधिवत; इल् पयन् चिऱप्पिप्पारिन्–गृहस्थ धर्म में (प्रवेश कराके) गौरव दिला रहे हों, जैसे; ईण्टिय उवकै तूण्ट–उमड़नेवाले प्रेम से प्रेरित होकर; अऱ्पुतन्–अद्भुत कुमार श्रीराम के; तिरुवै चेरुम्–(राज्य-) श्री के साथ मिलने के; अरु मणम्–श्रेष्ठ विवाह को; काण पुक्कार्–देखने के लिए (मण्डप में) पहुँचे। २५८

वेदपाठी ब्राह्मणों का आनन्द भी अधिक था। अपनी तपस्या के फल को लोक-हितार्थ समर्पण करनेवाले वे ऐसे आनन्दित हुए मानो वे अपने ज्येष्ठ पुत्र को वैवाहिक जीवन में प्रवेश करा रहे हों जिससे उसका और लोक का सौभाग्य बढ़े! वे भी श्रीराम तथा भूमिदेवी का विवाह (राज्याभिषेक) देखने की इच्छा से प्रेरित होकर मण्डप में आ पहुँचे। २५८

विण्णवर् विशुम्बु तूर्त्तार् विरितिरै युडुत्त कोल
मण्णवर् तिशैह डूर्त्तार् मङ्गल मिशैक्कुञ् जङ्गम्
कण्णहन् मुरशिन्नोदै कण्डवर् शॅविह डूर्त्त
ॲण्णरुङ् गनह मारि यॅऴुतिरैक् कडलुन् दूर्त्त 259

विण्णवर् विचुम्पु तूर्त्तार्–देवों से आकाश भर गया; विरि तिरै उट्टुत्त–विस्तृत सागर वेष्टित; कोलम्–सुन्दर; मण्णवर्–पृथ्वी के लोगों ने; तिचैकळ् तूर्त्तार्–दिशाओं को भर दिया; मङ्कलम् इचैक्कुम्–मंगलस्वन; चङ्कम्–शंख; कण् अकल्–विशाल "आँख" के; मुरचिन् ओतै–ढोल का नाद; कण्टवर् चॅविकळ् तूर्त्त–(इन्होंने) दर्शन करने के लिए आगतों के कान भर दिये; ॲण्ण अरु–अमाप; कनकम् मारि–कनक वर्षा; ॲऴुतिरै–उठनेवाली लहरों से पूर्ण; कटलुम् तूर्त्त–समुद्र को भर गई। २५६

आकाश देवों से भर गया। सागरवसना भूमि के लोगों से दिशाएँ भर गई। मंगलमय शंखनाद और विशाल चमड़े के ढोलों के नाद से आगतों के कान भर गये। कनक-वर्षा जो लोगों के द्वारा की गई उससे लहरसंकुल (या सातों) सागर भर गये। २५९

विळक्कॉळि मऱैत्तु मन्नर् मिन्नॊळि महुड कोडि
तुळक्कॊळि विशुम्बि नूरुञ् जुडरयु मऱैत्तुच् चूऴ्न्द
अळक्कर् वॆण् मुत्त मूरन् मुरुवला रणियिन् शोदि
वळैक्कला मॆन्ऱव् वानोर् कण्णयु मऱैत्त वन्ऱे 260

मन्नर्–महीपतियों के; मिन् ऑळि–विद्युत-सी छटा वाले; मकुटम् कोटि–करोड़ों किरीटों के; तुळक्कु ऑळि–हिलने से उत्पन्न प्रकाश; विळक्कु ऑळि मऱैत्तु–दीपों का प्रकाश मन्द करके; विचुम्पिन् ऊरुम्–आकाशचारी; चुटरैयुम् मऱैत्तु–सूर्य को भी छिपाते हुए; चूऴ्न्त–(सर्वत्र) फैल गया; अळक्कर्–समुद्र में उत्पन्न;

वॅण् मुत्तम् मूरल्–श्वेत मुक्ता-सम दाँतों और; मुरुवलार्–मन्दहास वाली स्त्रियों के; अणियिन् चोति–आभरणों की दीप्ति ने; वळैक्कलाम् ॲन्ऱु–उनको भी घेर लेंगे, इस विचार के साथ; अ वानोर् कण्णैयुम्–उन देवों की आँखों को भी; मरैत्त–चौंध से भर दिया। २६०

आगत करोड़ों राजाओं के मुकुटों का हिलनेवाला प्रकाश दीपों को निस्तेज बनाते हुए, आकाशचारी सूर्य की प्रभा को भी छिपाते हुए सर्वत्र फैल गया। उन मुक्तादाँत वाली मंदहासिनी स्त्रियों के आभरणों की उन्मुक्त आभा ने देवों को भी घेर लेती हुई उनकी आँखों को मीच दिया। २६०

❀ आयदो रमैदि यिन्ग णैयत्तै महुडञ् जूट्टर्
केयुमङ् गलङ्ग ळात्त यावयु मियैयक् कॉण्डु
तूयनान् मऱैहळ् वेद पारहर् शॉल्लत् तॉल्लै
वायिल्ह णॅरुक्क नीङ्ग मादवक् किळवन् वन्दान् 261

आयतु ओर् अमैतियिन् कण्–ऐसे समय में; मा तवम् किळवन्–महान तपोधन वसिष्ठ; ऐयत्तै–प्रभु श्रीराम को; मकुटम् चूट्टर्कु एयुम्–मुकुट धारण करने के लिए योग्य; मङ्कलङ्कळ् आत्त यावैयुम्–मंगल द्रव्य सब; इयैय कॉण्टु–उचित प्रकार से लेकर; वेतम् पारकर्–वेदपारगों के; तूय नाल् मऱैकळ् चॉल्ल–पवित्र वेदों का पाठ करते; तॉल्लै वायिल्कळ्–प्राचीन द्वारों में; नॅरुक्कम् नीङ्क–भीड़ के स्थान देते; वन्तान्–आये। २६१

ऐसे समय में महान तपोधन वसिष्ठजी श्रीराम के मुकुटधारण के कार्य के लिए आवश्यक और योग्य मंगलपदार्थ लेते हुए मंडप में आये। उनके साथ वेदपारंगत ब्राह्मण आये। द्वारों में जो भीड़ थी उसने इनके लिए रास्ता छोड़ा। २६१

❀ गङ्गये मुदल वाहक् कन्नियी ऱाय तीर्त्त
मङ्गलप् पुनलु नालु वारियि नीरुम् बूरित्
तङ्गियिन् विनैहट् केऱ्ऱ यावयु समैत्तु वीरच्
चिङ्गवा दनमुम् वैत्तुच् चॅय्वन पिऱवुञ् जॅय्दान् 262

कङ्कैये मुतलवाक–गंगा से लेकर; कन्नि ईऱु आय–"(कुमारी) कन्या" नदी तक के; तीर्त्तम्–नदियों के; मङ्कलम् पुनलुम्–पुण्यसलिल को; नालु वारियिन् नीरुम्–चारों ओर के समुद्रजल को; पूरित्तु–घटों में भरकर; अङ्कियिन् विनैकट्कु–(अग्नि) होम-कार्य के लिए आवश्यक सब; अमैत्तु–सँभालकर; वीरम् चिङ्क आतनम्–वीरसिंहासन भी; वैत्तु–लगाकर; चॅय्वन पिऱवुम्–करणीय सब; चॅय्तान्–किया (वसिष्ठजी ने)। २६२

वसिष्ठजी ने गंगा (यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी) और कुमरी (दक्षिण की नदी जो, कहते हैं, समुद्र के अन्दर समा

गई है) की नदियों के जल, और चारों दिशाओं के समुद्रों के जल को कलशों में भर रखा। होम-कार्य के लिए (अक्षत, दर्भ, समित, घी, कलछी आदि) उपकरण संभालकर रखा। फिर एक वीरोचित सिंहासन डलवाकर अन्य आवश्यक तैयारियाँ कीं। २६२

❀ कणिदनू लुणर्न्द मान्दर् कालम्वन् दडुत्त दॅन्नप्
पिणियऱ् नोऱ्ऱु निन्ऱ पॅरियवन् विरैवि नॅय्दि
मणिमुडि वेन्दन् ऱन्नै वल्लयिऱ् कॊणर्दि यॅन्नप्
पणिदलै निन्ऱ कादऱ् चुमन्दिरन् परिविऱ् चॅन्ऱान् 263

कणितम् नूल् उणर्न्त मान्तर्–ज्योतिष-शास्त्री (लोगों के); कालम् वन्तु अटुत्ततु–मुहूर्त आ गया; ॲन्न–कहने पर; पिणि अऱ–(भव-) रोग से मुक्ति पाने के लिए; नोऱ्ऱु निन्ऱ–तपस्या करके रहनेवाले; पॅरियवन्–महात्मा के; विरैविन् ॲय्ति–सत्वर जाकर; मणि मुटि वेन्तन् तन्नै–रत्नकिरीटधारी चक्रवर्ती को; वल्लैयिल् कॊणर्ति–शीघ्र लिवा लाइए; ॲन्न–कहने पर; पणि तलै निन्ऱ–आज्ञा शिरोधार्य करके; कातल् चुमन्तिरन्–सबके स्नेहपात्र सुमन्त्र; परिविन् चॅन्ऱान्–श्रद्धा के साथ गये। २६३

ज्योतिष-शास्त्रियों ने सावधान किया कि मुहूर्त आ गया है। तब भव-रोग-मुक्ति के लिए जिन्होने तपस्या की उन वसिष्ठजी ने सुमन्त्र से कहा कि जल्दी चलिए और रत्नकिरीटधारी चक्रवर्ती दशरथ को यहाँ लिवा लाइए। सबके स्नेह-पात्र सुमन्त्र भी उस शासन को शिरोधार्य करके बड़ी उमंग के साथ गये। २६३

❀ विण्डॊड निवन्द कोयिल् वेन्दर्दम् वेन्दन् ऱन्नैक्
कण्डिलन् विन्नवक् केट्टान् कैहयळ् कोयि नण्णिक्
तॊण्डैवाय् मडन्दै मारिऱ् चॊल्लमऱ् ऱवरुम् जॊल्लप्
पॅण्डिरिऱ् कूऱ्ऱ मन्नाळ् पिळ्ळयैक् कॊणर्ह वॅन्ऱाळ् 264

विण् तॊट निवन्त–आकाश को छूता उन्नत; कोयिल्–महल में; वेन्तर् तम् वेन्तन् तन्नै–राजाधिराज को; कण्टिलन्–न पाकर; विन्व–पूछने पर; केट्टान्–(उनका उत्तर) सुनकर; कैकयळ् कोयिल् नण्णि–कैकेयी के महल में जाकर; तॊण्टैवाय् मटन्तै मारिल्–बिंबफलाधरा दासियों से; चॊल्ल–(सूचना देने को) कहा, तब; अवरुम्–उन्होंने भी; चॊल्ल–(कैकेयी के पास) कहा, तब; पॅण्टिरिल् कूऱ्ऱम् अन्नाळ्–स्त्रियों में यमदेव-सी उन्होने; पिळ्ळैयै कॊणर्क–सुत को लाओ; ॲन्ऱाळ्–कहा। २६४

सुमन्त्र पहले दशरथ के आकाशस्पर्शी महल में गये। वे वहाँ नही मिले। वहाँ रहनेवालों से पूछने पर उन्होंने उत्तर दिया। उसको सुनकर वे कैकेयी के महल में गये। द्वार पर रुककर उन्होंने बिम्बफलाधरा दासियों द्वारा अन्दर समाचार भेजा। स्त्रियों में यम के समान जो रहीं उन कैकेयी ने आज्ञा सुनाई कि सुत को यहाँ ले आइए। २६४

❀ ऍन्ड्रन ऴॅन्नक् केट्टा तॅऴुन्दपे रुवहै पॉङ्गप्
पॉन्ड्रिणि माड वीदि पॉरुक्कॅन नीङ्गिप् पुक्कान्
तन्ड्रिरु वुळ्ळत् तुळ्ळे तन्नये निनैयु मड्रक्
कुन्ड्रिवर् तोळि नानैत् तॉऴुदुवाय् पुदैत्तुक् कूरुम् 265

ऍन्ड्रतळ्–कहा तो; ऍन्न केट्टान्–उतना सुनकर; ऍऴुन्त पेर् उवकै–उठा बड़ा आनन्द; पॉङ्क–उमड़ आया, तब; पॉन् तिणि माटम् वीति–स्वर्णनिर्मित सौधों से भरी वीथी में; पॉरुक्कॅन–झट से; नीङ्कि–पार करके; पुक्कान्–(श्रीराम के महल में) प्रविष्ट हुए; तन् तिरु उळ्ळत्तु उळ्ळे–अपने मन में; तन्नये निनैयुम्–आत्मा का ध्यान लगाते हुए रहनेवाले (स्वात्मध्यान-मग्न); अ कुन्ड्र इवर् तोळिनानै–गिरितुल्य कंधे वाले को; तॉऴुतु–नमस्कार करके; वाय् पुतैत्तु–मुख पर हाथ रखकर; कूरुम्–बोले। २६५

सुमन्त्र ने उतना सुना तो समझ लिया कि श्रीराम को मुकुटधारण के लिए ही बुलाया जा रहा है। उन्हें अपार आनन्द हुआ। वे बहुत शीघ्र स्वर्णमय सौधों से शोभित राजमार्ग पार करके श्रीराम के भवन में पहुँचे। वहाँ श्रीराम आत्मध्यानमग्न थे। उन गिरितुल्य कंधों वाले श्रीराम को नमस्कार करके सुमन्त्र अपने मुख पर उँगलियाँ रखते हुए (मुख के सामने हाथ रखना विनय प्रदर्शन का शिष्टाचार है) बोले। २६५

❀ कॉड्रवर् मुनिवर् मड्रुङ् गुवलयत् तुळ्ळा रुन्नैप्
पॅड्रवन् ड्रन्नैप् पोलप् पॅरुम्बरि वियड्रि निन्ड्रार्
शिड्रवै तानु माङ्गे कॉणर्हॅन्नच् चॅप्पि नाळप्
पॉड्रड महुडञ् जूडप् पोदुदि विरैवि नॅन्ड्रान् 266

कॉड्रवर्–राजा लोग; मुनिवर्–मुनिगण; मड्रुम्–और; कुवलयत्तु उळ्ळार्–भूतलवासी; उन्नै पॅड्रवन्न पोल–आपके जनक पिता के समान; पॅरु परिवु इयड्रि–बड़े प्रेम के साथ; निन्ड्रार्–खड़े हैं; चिड्र अव्वैयुम्–छोटी माता भी; आङ्कु कॉणर्क ऍन–वहाँ लिवा लाने को; चॅप्पिनाळ्–कहा है; अ पॉन् तट मकुटम् चूट–उस स्वर्ण के बड़े मुकुट को धारण करने के लिए; विरैविन्न पोतुति–शीघ्र आइए; ऍन्ड्रान्–(सुमन्त्र ने) कहा। २६६

राजकुमार! वहाँ राजा लोग, मुनिगण, और संसार के सभी लोग आपके ही पिता के समान आनन्दभरे होकर आपकी प्रतीक्षा में खड़े हैं। आपकी छोटी (सौतेली) माता ने आपको लिवा लाने की आज्ञा दी है। इसलिए उस बड़े स्वर्णमुकुट के धारण करने के हेतु आप पधारिए—यह सुमन्त्र ने विनय के साथ कहा। २६६

❀ ऐयनु मच्चॉर् केळा वायिर मौलि यानैक्
कैतॉऴु दरशर् वॅळ्ळङ् गडलॅनत् तॉडर्न्दु शुड्रत्

तॆय्वगी दङ्गळ् पाडत् तेवरु मह्ळि़न्दु वाऴ्त्तत्
तैयला रिरैत्तु नोक्कत् तारणि तेरिड् पोनान् 267

ऐयतुम्–प्रभु (सुन्दर राज) श्रीराम भी; अ चॊल् केळा–वह वचन सुनकर; आयिरम् मौलियानै–सहस्रशीर्ष (श्रीरंगजी) का; कै तॊऴुतु–हाथ जोड़कर नमस्कार करके; अरचर् वॆऴ्ळम्–राजाओं की भीड़ के; कटल् ॲन–सागर के समान; तॊटर्न्तु चुऱ्ऱ–पीछे और पार्श्व में आते; तॆय्व कीतङ्कळ् पाट–ईश्वर-स्तुति के गीत (गवैयो के) गाते; तेवरुम्–(आकाशस्थित) देवों के; मकिऴ्न्तु वाऴ्त्त–आनन्द के साथ वधाई कहते; तैयलार्–स्त्रियों के; इरैत्तु नोक्क–आनन्दनाद करते उनको देखते; तार् अणि तेरिल्–मालाओ से अलंकृत रथ पर; पोनान्–गये। २६७

सुन्दरराज प्रभु श्रीराम ने वह सुनकर सहस्रशीर्ष श्रीरंगजी को नमस्कार किया। फिर वे पुष्पमालाओं से अलंकृत रथ पर बैठकर जाने लगे। तब सागर के समान राजसमूह उनके पीछे और पार्श्व में लगे गये। गवैये प्रार्थना और मंगलगीत गाते गये। देव आकाश में स्थित होकर वधाई के वचन बोले। स्त्रियाँ आनन्दघोष करती हुई उनको देख रही थी। २६७

तिरुमणि महुडज् जूडच् चेवहन् शॆल्हिन् ऱानॆन्
ऱॊरुवरि नॊरुवर् मुन्दिक् कादलो डुवहै युन्द
इरुहयु मिरैत्तु मॊय्त्ता रिन्नुयिर् यार्क्कु मॊन्ऱाय्प्
पॊरुवरु तेरिऱ् चॆल्लप् पुऱत्तिडैक् कण्डार् पोल्वार् 268

चेवकन्–प्रतापी वीर; तिरु मणि मकुटम् चूट–उत्तम मणिमुकुट धारण करने; चॆल्किन्ऱान् ॲन्ऱ–जाते हैं, यह जानकर; कातलोटु उवकै उन्त–भक्ति के साथ आनन्द के प्रेरित करते; ऒरुवरिन् ऒरुवर् मुन्ति–एक के पहले एक वढ़कर; इरु कैयुम् इरैत्तु मॊय्त्तार्–दोनो किनारों पर कोलाहल के साथ जो एकत्र हुए वे सब; यार्क्कुम् इन् उयिर्–सभी की प्यारी जानें; ऒन्ऱु आय्–एक (श्रीरामरूप) होकर; पॊरु अरु तेरिल्–अनुपम रथ पर; पुऱत्तु इटै–बाहर (वीथी में); चॆल्ल कण्टार् पोल्वार्–जाती है, यह देखते से अनुभव करने लगे। २६८

श्रीवीरराघव मंगलमय मणिमुकुट धारण करने जा रहे हैं। यह जानने पर लोगों के मन में अपार हर्ष और प्रेम उत्पन्न हुए। उनकी प्रेरणा से वे एक से पहले एक आकर मार्ग के दोनो ओर एकत्र हो गये। उनको ऐसा लगा कि हम सबकी जानें मिलकर एक रूप लेकर जा रही हैं। वे ऐसा उनको देख रहे थे। २६८

तुण्णॆनुञ् जॊल्लाळ् शॊल्लच् चुडर्मुडि तुऱन्दु तूय
मण्णॆनुन् दिरुवै नीङ्गि वऴिक्कॊळा मुन्नम् वऴ्ळल्
पण्णॆनुञ् जॊल्लि नार्तन् दोळॆनुम् पणैत्त वेयुम्
कण्णॆनुङ् गाल वेलु मिडैनॆडुङ् गानम् बुक्कान् 269

तुण् ॲतुम् चॉल्लाळ्–भय-चकित करनेवाले वचन की; चॉल्ल–(कैकेयी के) कहने से; वळ्ळल्–उदार प्रभु; चुटर् मुटि तुऱन्तु–दीप्त मुकुट त्यागकर; तूय मण् ॲतुम् तिरुवै–पवित्र भूश्री से; नीङ्कि–बिछुड़कर; वळि कोळा मुऩ्ऩम्–(वन का) मार्ग अपनाने से पहले; पण् ॲतुम् चॉल्लियार् तम्–संगीत-सम बोली वाली स्त्रियों के; तोळ् ॲतुम् पणैत्त वेयुम्–पुष्ट कंधों रूपी बाँसों; कण् ॲतुम्–आँखें रूपी; कालन् वेलुम्–यम से भालों के; मिटै–भरे; नॅटु कातम् पुक्कान्–विस्तृत वन में घुसे। २६६

श्रीराम-दिल दहलानेवाली बात कहने को जो प्रस्तुत थीं उनके कहने से शोभायमान मुकुट और राज्यश्री को छोड़कर वन में जाने से पहले ही एक विचित्र वन में घुस गये। इस विशाल वन में संगीतसम मधुरभाषिणी स्त्रियों के कंधे रूपी बाँस और उनकी आँखें रूपी घातक भाले भरे थे। २६९

चुण्णमु मलरुञ् जान्दुङ् गनहमुन् दूव वन्दु
वण्णमे हलैयु नाणुम् वळैहळुम् जिन्दु वारुम्
पुण्णुऱ वनङ्गन् वाळि पुळैत्तदम् बुणर्मॅन् कॊङ्गै
कण्णुऱप् पॉळिन्द काम वॅम्बुनल् कळुवु वारुम् 270

चुण्णमुम्–गन्धचूर्ण; मलरुम्–और पुष्प; चान्तुम्–और चन्दन; कनकमुम्–स्वर्ण (के सिक्के); तूव वन्तु–बरसाने के लिए आकर; वण्णम् मेकलैयुम्–सुन्दर मेखलाएँ; नाणुम्–और लाज; वळैकळुम्–करकंकणों को; चिन्तुवारुम्–गिरानेवालियाँ; अनङ्कन् वाळि–मन्मथशर; पुण् उऱ–व्रण बनाते हुए; पुळैत्त–जिन पर चुभ गये; तम् पुणर् मॅन् कॊङ्कै–उन अपने सटे हुए स्तनद्वय को; कण् उऱपॉळिन्त–आँखों से खूब बहनेवाले; काम वॅम् पुनल्–कामोत्तेजित गरम आँसुओं से; कळुवुवारुम्–धुलानेवालियाँ बन के। २७०

स्त्रियाँ रास्ते में सुगन्धचूर्ण, पुष्प, चन्दन और कनककण बरसाने आईं। पर वह भूल गईं। उसके बदले उन्होंने अपनी मेखलाएँ, लाज और हाथ के कंकण गिरा दिये। मन्मथ ने अपने शरों से जिन स्तनों को विद्ध कर दिया उनको वे अपनी आँखों से वहनेवाली कामतप्त अश्रुधारा से धुलाने लग गईं। ऐसी—। २७०

अङ्गण नवनि कात्तऱ् कामिव नॅन्ऩ लामो
नङ्गणन् बिलनॅन् ऱुळ्ळन् दळ्ळुऱ नडुङ्गि नैवार्
शॅङ्गणुङ् गरिय कोल मेनियुन् देरु माहि
अॅङ्गणुन् दोन्ऱु हिन्ऱा नॅ़नैवरो विराम रॅन्बार् 271

अम् कण्णन्–सुन्दराक्ष; नम् कण् अऩ्पु इलन्–हमारे प्रति प्रेम नहीं रखते; इवन् अवनि कात्तऱ्कु आम्–यह भूमि का पालन करने योग्य है; ॲन्ऩल् आमो–कह सकते हैं क्या; ॲन्ऱु–ऐसा सोचकर; उळ्ळम् तळ्ळुऱ–मन के अस्तव्यस्त होते; नटुङ्कि–काँपकर; नैवार्–मुरझातीं; चॅम् कण्णुम्–लाल आँखें; करिय कोलम् मेनियुम्–नीला सुन्दर शरीर; तेरुम् आकि–और रथ बनकर; ॲङ्कणुम् तोन्ऱु

किन्ऱान्–सर्वत्र दिखाई देते हैं; इरामर्–श्रीराम; ऍत्तैवरो–कितने ही हैं; ऍन्ऩार्–कहतीं। २७१

वे स्त्रियाँ कहती— सुन्दराक्ष ये राम हम पर किंचित भी स्नेह नहीं दिखाते। ऐसे ये अवनि की रक्षा कर सकेंगे —यह विश्वास करना उचित होगा क्या ? देखिये— ललाई लिये ललचानेवाली आँखें और नीले और रूपवान शरीर और रथ वनकर सर्वत्र वे ही दिख रहे हैं ! श्रीराम भी कितने है ? अनेक हैं क्या ? । २७१

इन्नैयरा महळिर् ऍल्ला मिरैत्तनर् निरैत्तु मॊय्त्तार्
मुत्तैवरु नहर मूदूर् मुदियरु मिळैञर् तामुम्
अन्नैयवन् मेनि कण्डा रन्बिन्नुक् कॆल्लै काणार्
नित्तैविनर् मनत्ताल् वाया निहळ्न्ददु निहळ्त्त लुऱ्ऱाम् 272

इन्नैयर् आम् मकळिर् ऍल्लाम्–ऐसी सभी स्त्रियाँ; इरैत्तनर्–शोर मचाते हुए; निरैत्तु मॊय्त्तार्–दल के दल पिल पड़ीं; मुनैवरुम्–मुनिगण भी; नकरम् मुतु ऊर्–प्राचीन बड़े नगर के; मुतियरुम्–वृद्ध लोग; इळैञर् तामुम्–युवा भी; अन्नैयवन् मेनि कण्टार्–उनका रूप-सौंदर्य देखकर; अन्पिनुक्कु–अनुराग की; ऍल्लै काणार्–सीमा नहीं देखते; मनत्ताल् नित्तैविनर्–अपने मन में अनेक तरह की भावनाएँ करने लगे; वायाल् निकळ्न्ततु–मुख खोलकर जो उन्होंने कहा; निकळ्त्तल् उऱ्ऱाम्–हम कहने लगे। २७२

इस रीति से स्त्रियाँ आनन्द का शोर मचाती हुई दल के दल पिल पड़ी। इनकी वात छोड़िये। निर्लिप्त मुनिगण, प्राचीन उस अयोध्या नगर के साधू, वृद्ध लोग और स्वयं युवक भी उनका दिव्य रूप-लावण्य देखकर असीम भक्ति से भर गये। तव उनके मन मे अनेक भाव उठे। हम उनको नही जान सकते। पर मुख खोलकर जिन भावों को उन्होने शव्दों द्वारा प्रकट किया उनको हम कहने की कोशिश करेंगे। २७२

❀ उय्न्ददिव् वुलह मॆन्बा रूळिहाण् गिऱ्पा यॆन्बार्
मैन्दनी कोडि यॆङ्गळ् वाळ्क्क(य्)नाळ् यावु मॆन्बार्
ऐन्दवित् तरिदिऱ् चॆय्द तवमुन्नक् काह वॆन्बार्
पैन्दुळाय्त् तॆरिय लाय्क्के नल्विन्नै पयक्क वॆन्बार् 273

इ उलकम् उय्न्ततु ऍन्पार्–यह लोक तर गया, कहते; ऊळि काण्किऱ्पाय्–युगांत देखेंगे (आप) कहते; मैन्त–प्रभु; ऍङ्कळ् वाळ्क्कै नाळ् यावुम्–हमारी आयु के दिन सभी; नी कोटि–आप लीजिए; ऍन्पार्–कहते; ऐन्तु अवित्तु–पाँच (इन्द्रियों का) दमन करके; अरितिन् चॆय्त तवम्–कष्ट के साथ किया तप (फल); उनक्कु आक–आपको मिले; ऍन्पार्–कहते; पचु तुळाय् तॆरियलार्क्के–हरी तुलसीमाला पहननेवाले आपको; नल् विनै पयक्क–मेरे सव सुकृतों का फल मिले; ऍन्पार्–कहते। २७३

लोग नानाविध बातें कहते थे। "यह संसार दुखविमुक्त हो तर गया; वीर! आप युगांत देखें। तात! हमारे आयु के पूरे दिन आप ले लीजिए।" ये उनमें कुछ विचार थे। कुछ लोगों ने कहा— पाँचों इन्द्रियों का दमन करके जो हमने तप किये हैं, उनका सारा फल आपको मिल जाय। कुछ लोगों ने कहा कि तुलसीमाला-धारी! हमारे सभी सुकृतों का पुण्य आपका हो जाय। २७३

❀ उयररु ळॊण्ग णॊक्कुन् दामरै निऱत्तै यॊक्कुम्
पुयल्पॊऴि मेह मॆन्न पुण्णियज् जॆय्द वॆन्बार्
शॆयलरुन् दवङ्गळ् शॆय्दिच् चॆम्मलैत् तन्द शॆल्वत्
तयरदऱ् कॆन्न कैम्मा ऱुडयम्यान् दक्क दॆन्बार् 274

उयर् अरुळ्—उच्च करुणामयी; ऑण् कण् ऑक्कुम् तामरै—उज्ज्वल आँखों से तुल्य कमल; निऱत्तै ऑक्कुम्—रंग से तुल्य; पुयल् पॊऴि मेकम्—जल बरसाते मेघ; ॲन्न पुण्णियम् चॅय्त—क्या ही पुण्य कर गये हैं; ॲन्पार्—कहते; चॅयल् अरु तवङ्कळ् चॅय्तु—करने में कठिन तपस्याएँ करके; इ चॅम्मलै तन्त—इन महानुभाव को (राजा के रूप में) जिन्होंने दिया; चॅल्वम् तयरतऱ्कु—उन धनी दशरथ का; तक्कतु—योग्य; ॲन्न कैम्माऱु—कौन सा प्रत्युपकार; याम् उटैयम्—हमारे पास हैं; ॲन्पार्—कहते। २७४

कुछ लोग कहते कि कमल और काले जलवर्षी मेघ ने क्या ही पुण्य किया है कि कमल उनकी श्रेष्ठ, करुणामयी तेजपूर्ण आँखों की और मेघ उनके वर्ण की उपमा पा सके! कुछ लोग कहते कि दशरथ ने कितना दुस्तर तप करके इन नायक को हमारे राजा के रूप में हमें दिया है। उनका प्रत्युपकार करने के लिए हमारे पास क्या है?। २७४

❀ वारण मऴैक्क वन्दु महरङ्गोळ् विडुत्त नेमि
नारण नॊक्कु मिन्द नम्बितन् करुणै यॆन्बार्
आरण मऱिद ऱॆऱ्ऱा वैयनै यणुहि नोक्किक्
कारण मिन्ऱि येयुङ् गण्गणीर् कलुऴ निऱ्पार् 275

इन्त नम्पि तन् करुणै—इन नायक की करुणा; वारणम् अऴैक्क—गजराज के पुकारने पर; वन्तु—तुरत पधारकर; मकरम् कोळ् विटुत्त—मकरग्राह से बचानेवाले; नेमि नारणन् ऑक्कुम्—चक्रधारी भगवान नारायण (की करुणा) के समान है; ॲन्पार्—कहते; आरणम् अऱितल् तेऱ्ऱा—वेदों से भी अज्ञात; ऐयनै—प्रभु को; अणुकि नोक्कि—खूब तृप्ति भर देखकर; कारणम् इन्ऱियेयुम्—निर्हेतुक रूप से भी; कण्कळ् नीर् कलुऴ—आँखों को आँसू बहाने देते हुए; निऱ्पार्—अवश खड़े रहते। २७५

इनकी करुणा उन भगवान नारायण की करुणा (सम) ही है जिन्होंने गजराज के पुकारने पर सत्वर आकर उसे ग्राह से छुड़ाया था। कुछ लोग वेदों को भी अज्ञात उनके अति समीप आकर देखते और निर्हेतुक रीति से गद्गद् होकर आँसू वहाते। २७५

नीलमा मुहिलन् नान्ऱ निऱैविनो डऱिवु निऱ्क
शीलमाऱ्क् कुण्डु कॅट्टेन् ऱेवरि नडङ्गु वानो
कालमाक् कणिक्कु नुण्मैक् कणक्कयुङ् गडन्दु निन्ऱ
मूलमाय् मुडिवि लाद मूर्त्तियिम् मुन्व नॆन्बार् 276

नीलम् मा मुकिल् अन्नान् तन्–नीले बड़े मेघसम इनकी; निऱैविनोटु–गम्भीरता के साथ; अऱिवुम्–बुद्धि; निऱ्क–एक ओर रहे; चीलम् आऱ्क्कु उण्टु–इनका-सा शील (सदाचार) किसके पास है; इ मुन्पन–ये मुखिया; तेवरिन् अटङ्कुवानो–देवों के अन्दर आयँगे; कालम् आक कणिक्कुम्–काल के माप की; नुण्मै कणक्कैयुम्–सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणना को भी; कटन्तु निन्ऱ–पार कर रहनेवाले; मूलम् आय्–मूलवस्तु होकर; मुटिवु इल्लात मूर्त्तिये–अनन्त मूर्ति ही; कॅट्टेन्–(अब तक बिना जाने) नष्ट हो गया; ॲन्पार्–कहते। २७६

बड़े, नीले मेघ के समान रंग वाले इनकी गम्भीरता और मेधा की बात छोड़ दीजिए। इनका-सा शील, सदाचार किसके पास है! क्या ये अग्रणी देवों की श्रेणी के अन्दर गिने जा सकते है? नहीं। काल के सूक्ष्मातिसूक्ष्म माप से भी परे रहनेवाले (कालातीत) मूलतत्व है! अनंत परब्रह्म है। इतने दिन तक मैने यह नही जाना। जन्म व्यर्थ कर दिया—ऐसा कुछ लोग कहते। २७६

❀ आऱ्हलि यहळ्न्दोर् गङ्गै यवनियिऱ् ऱन्दोर् मुन्दैप्
पोर्हॅळ्ळु देवर्क् काहि यशुरर्रैप् पॉरुदु वॅन्ऱोर्
पेर्हॅळ्ळु शिऱप्पिन् वन्द पॅरुम्बुहळ् निऱ्प दैयन्
तार्हॅळ्ळु तिरडो डन्द पुहळिनैत् तळुवि यॅन्बार् 277

मुन्तै–पहले; आर् कलि अकळ्न्तोर्–सागर जिन्होंने खना वे सगरपुत्र; कङ्कै अवनियिल् तन्तोर्–गंगा जो भूमि पर लाये वे (भगीरथ); पॉर् कॅळु तेवर्क्कु आकि–युद्ध-रत देवों के सहायक बनकर; पॉरुतु–घोर समर करके; अचुररै वॅन्ऱोर्–असुरों पर जिन्होंने विजय पाई, वे ककुत्स्थ मुचुकुंद आदि; पेर् कॅळु चिऱप्पिन् वन्त–इनकी गौरवपूर्ण श्रेष्ठता के कारण मिली; पॅरु पुकळ्–बड़ी कीर्ति; निऱ्पतु–स्थिर रहेगी; ऐयन्–प्रभु श्रीराम के; तार् कॅळु–मालाशोभित; तिरळ् तोळ्–पुष्ट कंधों द्वारा; तन्त–अर्जित; पुकळिनै तळुवि–कीर्ति के साथ मिलकर ही; ॲन्पार्–कहते। २७७

पहले इनके कुल में पैदा होकर सगरपुत्रों ने सागर निर्मित करके, भगीरथ ने गंगाजी को अवनि में ला करके, राजा ककुत्स्थ, मुचुकुन्द जैसों ने युद्धग्रस्त देवों की सहायता के लिए जाकर असुरों पर विजय पा करके कीर्ति अर्जित की थी। वह सारी कीर्ति खड़ी रहेगी इनके माला से शोभित पुष्ट कन्धों द्वारा अर्जित कीर्ति पर ही! वीरों के वंश में वीर पैदा हो तभी कुल की वीरता की कीर्ति टिक सकेगी। २७७

शन्दमिवै तावि्न्मणि यारमिवै यावुम्
शिन्दुरमु हङ्गिळर् तॅरिन्दमद वेळम्
पन्दिहळ् वयप्परि पशुम्बॉन्नणि यावुम्
मैन्दवरि योर्हॉळ वळङ्गॅन्न निरैप्पार् 278

मैन्त–वीर कुमार; इवै चन्तम्–ये चन्दन के लेप; ता इल् मणि आरम्–निर्मल रत्नहार; इवै यावुम्–ये सब; चिन्तुरम् मुकम् किळर्–सिन्दूर के तिलकों के साथ शोभायमान रहनेवाले; तॅरिन्त–चुने हुए; मतम् वेळम् पन्तिकळ्–मत्तगज-पंक्तियाँ; वयम् परि–विजयशील अश्व; पचुमै पॉन् अणि–शुद्ध स्वर्ण के आभरण; यावुम्–इन सबको; वरियोर् कॉळ–अभावग्रस्त लोग ले ले उनको; वळङ्कु–देने की कृपा कीजिए; ॲन–यह कहकर; निरैप्पार्–कतार में ला रख देते। २७८

कुछ लोग कहते कि वीर कुमार! देखिए— ये चन्दन और सुगन्ध-पदार्थों के लेप हैं; ये निर्दोष रत्नहार हैं; ये चुने हुए मत्त हाथी हैं जिनके भाल पर सिंदूर के तिलक लगाये गये हैं। ये विजयी अश्व है। ये स्वर्णाभरण है। इन सबको आप लीजिये और अपने हाथों से अभावग्रस्त याचकों को दे दीजिये। ऐसा कहते हुए उनको लाकर सामने पंक्तियों में छोड़ देते। २७८

❀ मिन्बॉरुवु तेरिन्मिशै वीरन्वरु पॉळ्दिल्
तन्बॉरुविल् कन्रुतनि ताविवरल् कण्डाङ्
गन्बुरुहु शिन्दयॉडु मावुरुहु मापोल्
ॲन्बुरुह नॅञ्जुरुह यारुरुह िल्लार् 279

वीरन्–वीर; मिन् पॉरुवु तेरिन् मिचै–बिजली-सम रथ पर; वरु पोळ्तिल्–जब आ रहे थे, तब; तन् पॉरुविल् कन्रु–अपना अनुपम बछड़ा; तनि तावि वरल् कण्ट आङ्कु–अकेला चौकड़ी भरता आता (है, उसे) देख; आ–गाय; अन्पु उरुकु चिन्तैयॉटुम्–प्रेमार्द्र मन के साथ; उरुकुम् आरु पोल्–द्रवीभूत होती जैसे; नॅञ्चु उरुक–मन के पिघलते; ॲन्पु उरुक–हड्डी के गलते; उरुककिल्लार्–न पिघलनेवाले; यार्–कौन। २७९

श्रीराम जब बिजली के समान चमकते हुए रथ पर आ रहे थे तब उनको देखकर दर्शकों की स्थिति उस गाय की-सी हो गयी जो अपने बछड़े को चौकड़ी भरते आते हुए देखती हो। उनका मन प्रेमार्द्र हो गया। हड्डी भी पिघल गयी। तब जो न पिघले वे कौन या कहाँ रहे? कोई वहाँ नही रहा जो पूर्णरूप से द्रवीभूत न हो गया! । २७९

शत्तिर निळऱ्ऱनिमिर् तानयॉडु नाना
अत्तिर निळऱ्ऱवरु ळोडवनि याळ्वार्
पुत्तिर रिनिप्पॅरुदल् पुल्लिदॅन्न नल्लोर्
शित्तिर मॅन्नत्तनि तिहैत्तुरुहि निऱ्पार् 280

नल्लोर्–सज्जन; चत्तिरम् निळऱ्ऱ–छत्रों की छाया देते; निमिर् तानैयोटु–बड़ी सेना के साथ; नाना अत्तिरम् निळऱ्ऱ–विविध अस्त्रों के कांति बिखेरते; अरुळोटु–कृपा के साथ; अवनि आळ्वार्–भूमि का पालन करनेवाले; इनि–श्रीराम के बाद; पुत्तिरर् पॅऱुतल्–पुत्र पैदा करना; पुल्लितु ॲन–लघुता है (व्यर्थ है); ॲंन–यह कहते हुए; तनि–अलग-अलग; तिकैत्तु–चकित; उरुकि–पिघलकर; चित्तिरम् ॲंन–चित्र के समान; निऱ्पार्–निष्क्रिय खड़े रहे। २८०

कई सज्जन कहते कि श्वेत छत्र और बड़ी सेना रखनेवाले उन राजा लोगों का, जो विविध अस्त्र चमकाते हुए कृपा के साथ भूमि का पालन करते है, अब पुत्र पैदा करना निरर्थक है (क्योंकि कोई भी पुत्र श्रीराम के समान गौरव बढ़ानेवाला नही होगा)। वे लोग अलग-अलग, श्रीराम के अतिशय सौन्दर्य से चकित, मुग्ध और द्रवणशील होकर चित्रसम खड़े रहते। २८०

❀ कार्मिनॊडु लायदॆन नूल्कऩलु मार्वन्
तेर्मिशैनम् वायिल्कडि देहुदल्शॆय् यामल्
नेर्मिनिमिर् कोडिमणि यालुनिदि यालुम्
तूर्मिनॆडु वीदियिनै यॆन्ऱुशॊरि वारुम् 281

कार् मिन्नॊटु उलायतु ॲंन–मेघ बिजली-सह सैर करता हो जैसे; नूल् कऩलुम् मार्पन्–यज्ञोपवीत-शोभित वक्ष वाले श्रीराम; तेर्मिचै–रथ पर; नम् वायिल् कटितु एकुतल् चॅय्यामल्–हमारे द्वार को जल्दी पार कर न जाएँ, इस तरह; नेर्मिन्–रथ के सामने रहिए (रोकिये); निमिर् कोटि मणियालुम्–बहुत अधिक रत्नों से; नितियालुम्–स्वर्ण से; नॆटुवीतियिनै तूर्मिन्–लम्बी वीथी को पाट दीजिये; ॲंन्ऱु–ऐसा कहते हुए; चॊरिवारुम्–उड़ेलते है। २८१

जैसे मेघ बिजली के साथ संचार करता हो उस तरह उपवीतधारी वक्ष वाले श्रीराम अपने रथ पर बैठकर हमारे द्वार के सामने से आगे जाने न पावें! रथ के सामने जाकर खड़े हो जाइए। और अधिक संख्या में रत्न और स्वर्ण डालकर रास्ता दुर्गम बना दीजिये। ऐसा कहते हुए लोग वे वस्तुएँ लाकर मार्ग पर डाल रहे थे। ऐसे लोग कुछ थे। २८१

तायहयिल् वळर्न्दिलन् वळर्त्तदु तवत्ताल्
केहयन् मडन्दैकिळर् ञालमिव नाळ
ईहयि लुवन्दन ळियऱ्कयिदु वॆन्ऱाल्
तोहयवळ् पेरुवहै शॊल्लवरि दॆन्बार् 282

ताय् कैयिल् वळर्न्तिलन्–अपनी माता के पास पले नहीं; वळर्त्ततु–पालनेवाली; तवत्ताल्–पूर्वकृत तपस्या के फल से; केकयन् मटन्तै–केकयराज-तनया; किळर् ञालम्–विभवपूर्ण इस भूमि को; इवन् आळ ईकैयिल्–इनके पास शासन करने के लिए देते समय; उवन्तनळ्–हर्षित हुई; इयऱ्कै इतु ॲन्ऱाल्–उनकी प्रकृति यह

है तो; तोकै अवळ्—मोर-सी छटा वाली उनका; पेर् उवकै—बड़ा आनन्द; चोल्ल अरितु—वर्णनातीत है; ऍन्पार्—कहते। २८२

कुछ लोग कहते हैं कि ये श्रीराम माता कौसल्या के हाथ नहीं पले थे। कैकेयी ने उस भाग्य के लिए तपस्या की थी। उन्होंने इनको पाला था। इसलिए चक्रवर्ती श्रीराम को राज्य पालन के लिए दे देंगे —यह सुनकर उन्हें हर्ष हुआ। यही उनकी प्रकृति सच्ची है तो मयूरछटा उनके मन का बड़ा आनन्द वर्णन करना कठिन है। २८२

❀ पावमु मरुन्दुयरुम् वेर्पऱियु मॅन्बार्
पूवलय मिन्ऱुमुद लन्ऱुपोदु वॅन्बार्
तेवर्पहै युळ्ळवुमिव् वळ्ळऱॅरु मॅन्बार्
एवल्शॅयु मन्नर्तवम् यावदुहो लॅन्बार् 283

पावमुम्—(इनके दर्शन से) पाप; अरु तुयरुम्—और कठिन क्लेश; वेर् परियुम्—निर्मूल हो जायँगे; ऍन्पार्—कहते; पू वलयम्—भूमण्डल; इन्रु मुतल्—आज से; पॉतु अन्रु—आम सम्पत्ति नहीं होगी; ऍन्पार्—कहते; इ वळ्ळल्—ये प्रभु; तेवर् पकै उळ्ळवुम् तॅरुम्—देवों के शत्रु जो है, उनका नाश करेंगे; ऍन्पार्—कहते; एवल् चॅयुम् मन्तर्—इनके आज्ञाकारी राजाओं का; तवम्—सुकृत (पुण्य); यावतु कोल्—कैसा (बड़ा) है; ऍन्पार्—कहते। २८३

कुछ लोग कहते हैं कि इनके दर्शन से पाप और कठोर दुख निर्मूल हो जायँगे। अब भूमि इन्हीं की होकर रहेगी, कोई दूसरा उस पर अधिकार नही जता सकेगा। ये प्रभु देवों के सारे शत्रुओं का नाश कर देंगे। और कुछ लोग कहते कि इनके मातहत रहनेवाले राजाओं ने कैसी ही उत्कृष्ट तपस्या की है कि उन्हें इनके आज्ञाकारी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है! । २८३

❀ आण्डिनय रायिनय कूऱवडल् वीरन्
तूण्डुपुर विप्पॊरुविल् शुन्दर मणित्तेर्
माण्ड कॊडि माडनॅडु वीदिमऱै यप्पोय्प्
पूण्डपुहळ् मन्ननुऱै कोयिलवै पुक्कान् 284

आण्टु—वहाँ; इनैयर् आय्—ऐसी स्थिति वाले बनकर; इतैय कूऱ—यह कहते थे, तब; अटल् वीरन्—विजयी वीर; तूण्टु पुरवि—त्वरितगामी अश्वों के; पॊरु इल्—उपमारहित; चुन्तरम्—सुन्दर; मणि तेर्—घण्टियाँ-बँधे रथ पर; माण्ट कॊटि माटम्—सम्मान के प्रदर्शक, पताकाओं से युक्त सौधों वाले; नॅटु वीति—राजमार्ग; मऱैय—आँखों से ओझल होने देते हुए; पोय्—जाकर; पूण्ट पुकळ्—(आभरण के समान) पहनी हुई कीर्ति वाले; मन्नन् उऱै—चक्रवर्ती के रहने के; कोयिल्—मन्दिर के; अवै पुक्कान्—सभा-मण्डप में पहुँचे। २८४

मार्ग में लोग ऐसी स्थिति में पड़कर ऐसी बातें कर रहे थे।

विजयी वीर श्रीराम त्वरगामी अश्वों के जुते और घन्टियों से युक्त उन्नत रथ पर सम्मान-प्रदर्शक पताकाओं वाले बड़े सौधों के मार्ग शीघ्र तय करते हुए आगे निकल गये। राजमार्ग पीछे ओझल हो गया। वे यशोभूषित चक्रवर्ती दशरथ के महल के अन्दर सभामंडप में पहुँचे। २८४

आङ्गुवन् दडॅन्द वण्ण लाशयिन् कवरि वीशप्
पूङ्गुऴल् मह़ळि राडुम् पुदुक्कळि याट्ट नोक्कि
वीङ्गिरुङ् गादल् काट्टि विरियरि चुमन्द पीडत्
तोङ्गिय वुवहै योडु मरशऩ्वीऱ् ऱिरुप्पक् काणाऩ् 285

आङ्कु वन्तु अटॅन्त अण्णल्–वहाँ जो आ पहुँचे उन प्रभु ने; आचॅ इन् कवरि वीच–स्वर्ण-डण्ड के चामर डुले; पू कुऴल् मकळिर् आटुम्–पुष्पसज्जित कुंतल की नर्तकियाँ जो नाचती है उस; पुतु कळि आट्टम् नोक्कि–नवीन उल्लासदायी नाच देखते हुए; वीङ्किरु कातल् काट्टि–(श्रीराम के आगमन पर) बड़ा प्रेम दिखाकर; ओङ्किय उवकै योटुम्–बढ़ते हुए हर्ष के साथ; अरचत्–राजा को; विरि अरि चुमन्त पीटत्तु–विशाल सिंह (धृत) आसन पर; वीऱ्ऱिरुप्प–विराजमान; काणाऩ्–नहीं देखा। २८५

वहाँ पहुँचकर उन्होने दशरथजी को नही देखा। वे होते तो स्वर्ण-डण्ड के चँवर डुलते होते। पुष्पालंकृत केश वाली नर्तकियों का नवीन और चित्ताकर्षक नाच होता रहता। वे श्रीराम के आगमन पर बड़े प्रेम और आनन्द का प्रदर्शन करते। वे नहीं थे और सिंहासन रिक्त था। श्रीराम ने सिंहासन पर राजा को विराजमान नहीं देखा। २८५

वेत्तवै मुऩिव रोडुम् विरुप्पुडक् कळिक्कु मॅय्म्मै
एत्तवै यिशैक्कुञ् जॅम्बॊऩ् मण्डबत् तिनिदि नॅय्दान्
ओत्तवै युलहत् तॅङ्गु मुळ्ळवै युणर्न्दा रुळ्ळम्
पूत्तवै वडिवै यॉप्पान् शिऱ्ऱवै कोयिल् पुक्काऩ् 286

ओत्तु अवै–वेदसमूहों को; उलकत्तु ऍङ्कुम्–संसार भर में; उळ्ळवै–प्राप्त रहनेवाले; उणर्न्तार्–जाननेवालों के; उळ्ळम् पूत्तवै–मन में भावित; वटिवै–रूपों को; ऑप्पाऩ्–धरनेवाले वे; वेन्तु अवै–राजमण्डली; मुऩिवरोटुम्–मुनियों के साथ; विरुप्पु उऱ–इच्छा के साथ; कळिक्कुम्–(जहाँ) हुलसेंगे; मॅय्म्मै एत्तु–सच्ची कीर्ति के; अवै इचैक्कुम्–गान गाये जायँगे; चॅम् पॊऩ् मण्टपत्तु–उस चोखे स्वर्ण से निर्मित मण्डप में; ऍय्ताऩ्–न घुसकर; चिऱ्ऱवै कोयिल् पुक्काऩ्–छोटी माता के महल में गये। २८६

श्रीराम वेदसमूहों और संसार भर में प्रचार में रहनेवाले अन्य सभी शास्त्रों के ज्ञाता लोगों को, "जिन्ह की रही भावना जैसी", वैसे रूप में दर्शन देनेवाले थे। वे उस श्रेष्ठ स्वर्णमंडप में नही प्रविष्ट हुए, जहाँ उनके जाने पर यह आशा की जा सकती थी कि वहाँ एकत्रित राजदल मुनिवृंदों के साथ (मुकुट धारणोत्सव देखकर) प्रत्याशित आनंद का अनुभव करते

और स्वयं श्रीराम की यथार्थ महिमा गायी जाती। पर वे अपनी छोटी (सौतेली) माता कैकेयी के महल में प्रविष्ट हुए। २८६

पुक्कवऩ् ऱऩ्ऩै नोक्किप् पुरवलर् मुऩिव रॅल्लाम्
तक्कदे निऩैन्दाऩ् ऱादै तामरैच् चरणञ् जूडित्
तिक्किऩै निमिर्त्त कोलच् चॅल्वऩै शॅम्बॊऩ् चोदि
मिक्कुयर् महुडञ् जूट्टच् चूडुदल् विळुमि दॅऩ्ऱार् 287

पुक्कवऩ् तऩ्ऩै नोक्कि–(वहाँ) प्रविष्ट उनको देखकर; पुरवलर्–(मण्डप में रहे) राजा लोग; मुऩिवर्–मुनिगण; ॲल्लाम्–और अन्य सभी; तक्कते निनैन्ताऩ्–उचित ही सोचा; तातै तामरै चरणम् चूटि–पिता के कमल-चरण (सिर पर) धारण करके; तिक्किऩै निमिर्त्त कोल्–दिशाओं को सीधा करनेवाले (राज) दण्डधर; अ चॅल्वऩे–उन चक्रवर्ती के; चॅम् पॊऩ्–अच्छे स्वर्ण के; चोति मिक्कु–अधिक कांतिमय; उयर् मुकुटम्–उन्नत किरीट को; चूट्ट–पहनाने पर; चूटुतल्–पहन लेना; विळुमितु–श्रेयस्कर है; ॲऩ्ऱार्–यह बोले। २८७

कैकेयी के महल में प्रवेश करनेवाले उनको देखकर सभामंडप में जो रहे उन राजाओं, मुनियों और अन्य लोगों ने यों सोचा। ठीक है। वे उचित कार्य ही कर रहे है। वे पहले पिता के चरण-कमलों पर नमस्कार करना चाहते हैं। बाद ही दशरथ द्वारा, जिनका राजदण्ड सभी दिशाओं में सीधापन (न्याय) स्थापित कर चुका है, अच्छे स्वर्ण के कांतिबहुल उन्नत किरीट का धारण किया जाना ही उचित और श्रेयस्कर है। २८७

आयत्त निहळ्म् वेलै यण्णलु मयर्न्दु तॆऱात्
तूयव निरुन्द शूळल् तुरुविनऩ् वरुद नोक्कि
नायह नुरैयाऩ् वायाल् नानिदु पहर्वे नॆऩ्नात्
तायॆऩ्न निनैवाऩ् मुऩ्ऩे कूऱ्ऱॆनत् तमियळ् वन्दाळ् 288

आयत्त निकळ्म् वेलै–(वहाँ मण्डप में) ऐसा होता रहा, तब; अण्णलुम्–पुरुष-श्रेष्ठ; अयर्न्तु तेऱा–बेहोशी से जो सँभले नहीं थे; तूयवन्–उन पवित्र दशरथ के; इरुन्त चूळल्–रहने के स्थान को; तुरुविनऩ् वरुतल् नोक्कि–ढूँढ़ते हुए आते हैं, यह देखकर; नायकन् वायाल् इतु उरैयान्–नायक अपने मुँह से यह नहीं कहेंगे; नान् पकर्वेन्–मै कहूँगी; ॲन्ऩा–यह विचार करके; ताय् ॲन निनैवान् मुऩ्ऩे–माता समझनेवाले (श्रीराम) के सामने; कूऱ्ऱु ॲन–मृत्यु के समान; तमियळ् वन्ताळ्–एकाकिनी आईं। २८८

वहाँ लोग ये बातें कर रहे थे। प्रभु राम को कैकेयी ने देख लिया और जान लिया कि वे दशरथ को, जो अभी होश में नहीं आये थे, ढूँढ़ते हुए आ रहे हैं। वे सोचने लगीं— राजा अपने मुख से यह बात नहीं कहेंगे। उन्होंने निश्चय किया कि मैं स्वयं श्रीराम से बात कह दूँगी। यह संकल्प लेकर वे, उन राम के सामने जो इनको अपनी माता ही समझ रहे है, यम के समान एकाकिनी बनकर आई। २८८

❀ वन्दव डन्नैच् चॆन्नि मण्णुऱ वणङ्गि वाशच्
चिन्दुरप् पवळच् चॆव्वाय् शॆङ्गयिऱ् पुदैत्तु मऱ्ऱैच्
चुन्दरत् तडक्कै तानै मडक्कुऱत् तुवण्डु निन्ऱान्
अन्दिवन् दडैन्द तायैक् कण्डवान् कन्ऱि नन्नान् 289

अन्ति वन्तु अटैन्त–सायंकाल आकर प्राप्त हुई; तायै कण्ट–माता को देखकर; आन् कन्ऱु अन्नान्–गाय के बछड़े-से वे; वन्तवळ् तन्नै–आगत कैकेयी को; चॆन्नि मण् उऱ–सिर भूमि पर लगाये; वणङ्कि–नमस्कार करके; वाचम्–सुवासपूर्ण; चिन्तुरम् पवळम्–सिन्दूर के समान; चॆवाय्–लाल मुँह को; चॆ कैयिन् पुतैत्तु–ललाई लिए (ललाम) हाथ से ढँककर; मऱ्ऱै चुन्तरम् तट कै–अन्य सुन्दर विशाल हाथ से; तानै मटक्कुऱ–वस्त्र को मोड़ लेकर; तुवण्टु निन्ऱान्–विनयशील मुद्रा में खड़े हुए। २८९

जब कैकेयी सामने आई तब श्रीराम ने भूमि पर सिर लगाकर दण्डवत की। शाम के समय माता गाय को देखकर बछड़े की जैसी स्थिति होती है वैसे मातृप्रेम से वे भर गये। उन्होंने विनयसूचक शिष्टाचार की मुद्रायें धारण की— अपने एक ललाई लिये ललाम हाथ को अपने मुख के सामने रखा। दूसरे हाथ से वस्त्र को मोड़कर पकड़ा। फिर वे झुके हुए खड़े रहे। २८९

❀ निन्ऱवन् ऱन्नै नोक्कि यिरुम्बिना लियन्ऱ नॆञ्जिऱ्
कॊन्ऱुऴल् कूऱ्ऱ मॆन्नुम् बॆयरिन्ऱिक् कॊडुमै पूण्डाळ्
इन्ऱॆनक् कुणर्त्तल् लाव देयदे यॆन्नि नाहुम्
ऒन्ऱुनक् कुन्दै मैन्द वुरैत्तदो रुरैयुण् डॆन्ऱाळ् 290

इरुम्पिनाल् इयन्ऱ नॆञ्चिन्–लौहनिर्मित मन के साथ; कॊन्ऱु उऴल्–जीवों को मारते फिरनेवाली; कूऱ्ऱम् ऎनुम् पॆयर् इन्ऱि–मृत्यु का नाम धरे बिना ही; कॊटुमै पूण्टाळ्–(उसकी) क्रूरता रखनेवाली; निन्ऱवन् तन्नै नोक्कि–स्थित उनको देखकर; मैन्त–पुत्र; ऒन्ऱु उनक्कु–योग्य तुम्हें; उन्तै उरैत्तत्तु–तुम्हारे बाप का कहा हुआ; ओर् उरै–एक कथन; उण्टु–है; इन्ऱु–अब; उनक्कु उणर्त्तल् आवतु–तुमसे वह बताने का काम; एयते ऎन्निन्–(मेरे) योग्य (समझते) हो तो; आकुम्–(बताने का काम) मुझसे होगा; ऎन्ऱाळ्–बोलीं। २९०

ऐसी विनयमुद्रा मे स्थित उनको कैकेयी ने देखा। कैकेयी में यम की-सी, जो लौहदिल के साथ जीवों को मारकर फिर रहा है, क्रूरता थी। हाँ, यम का नाम धारण किये बिना ही उन्होंने यम की क्रूरता अपना ली थी। उन्होंने कहा— वत्स ! आज्ञाकारी योग्य तुम्हे जो तुम्हारे पिता बताना चाहते थे वह एक बात है। अगर तुम मेरा कहना उचित मानो तो मुझसे उसका कथन हो सकता है। (मैं कहूँगी।)। २९०

❀ अॅन्दये येव नीरे युरैशॅय वियैन्द दुण्डेल्
उयन्दनॅ तडिये नॅन्निर् पिरन्दव रुळरो वाळि
वन्दर्दन् ररवत्ति नाय वरुपयन् मर्रॉन् रुण्डो
तन्दयुन् दायु नीरे तलैनिन्रेन् पणिमि नॅन्रान् 291

अॅन्तैये एव–मेरे पितृदेव की आज्ञा; नीरे उरै चॅय–आप ही सुनाये; इयैन्ततु उण्टेल्–इसका संयोग हुआ तो; अटियेन् उयन्तनॅन्–मै तर गया; पिरन्तवर्–सफलजन्मा; अॅन्निन् उळरो–मेरे समान कोई होंगे (नहीं); अॅन् तवत्तिन् आय पयन् वन्ततु–मेरे तप का फल अब मिलने को हुआ है; वरुपयन् मर्रॉन्रु उण्टो–इससे बढ़कर मिलनेवाला (उत्कृष्ट) फल हो सकता है क्या; तन्तैयुम् तायुम् नीरे–पिता और माता आप ही हैं; तलै निन्रेन्–शिरोधार्य करूँगा; पणिमिन्–आज्ञा कीजिए; अॅन्रान्–कहा। २९१

श्रीराम ने उत्तर में वड़ी विनय के साथ कहा कि मेरे पितृदेव आज्ञा दें और वह आज्ञा आप मुझे सुनावें —ऐसा एक संयोग हो गया तो मैं तर गया। मुझसे बढ़कर सफलजन्मा कौन हो सकता है? मेरे पूर्वकृत तपों का यह वहुत ही शुभ फल अब मिल गया। इससे बढ़कर कौन सा सुफल मिलनेवाला है? अब आप ही पिता हैं, माता भी। आपकी आज्ञा को शिरोधार्य मानकर उसके अनुसार चलूँगा। अव आप आज्ञा सुनाइये। २९१

❀ आळिशू ळुलह मॅल्लाम् बरदने याळ नीपोय्त्
ताळिरुज् जडैह डाङ्गित् ताङ्गरुन् दवमेर् कॉण्डु
पूळिवॅङ् गान नण्णिप् पुण्णियत् तुरैह ळाडि
एळिरण् डाण्डिन् वावॅन् रियम्बिन नरश नॅन्राळ् 292

आळि चूळ् उलकम् अॅल्लाम्–समुद्रवलयित भूमि सब; परतने आळ–भरत के ही राज करते; नी पोय्–तुम जाकर; ताळ् इरु चटैकळ् ताङ्कि–लम्बी, वड़ी जटाएँ धारण करके; ताङ्क अरु–दुर्वह; तवम्–तपस्या; मेर् कॉण्टु–व्रत लेकर; पूळि वॅम् कानम् नण्णि–धूलि-भरा, तप्त जंगल जाकर; पुण्णियम् तुरैकळ् आटि–पुण्य-सलिलों में स्नान करके; एळ् इरण्टु आण्टिन् वा–दो के सात (चौदह) सालों में आ जाओ; अॅन्रु–ऐसा; अरचन् इयम्पितन्–राजा ने कहा; अॅन्राळ्–कहा। २९२

कैकेयी ने कहा— सागर की घिरी इस सारी वसुन्धरा पर भरत का ही अधिकार होगा। तुम लम्वी, वड़ी जटा बना लो, दुर्वह तप का व्रत लो, धूलि भरे जंगल जाओ, पुण्यसलिलों में स्नान किया करो, और चौदह साल में लौट आओ। यही राजा ने कहा है। २९२

❀ इप्पॉळु दॅम्म नोरा लियम्बुव दॅळिदो यारुम्
शॅप्परुङ् गुणत्ति रामन् तिरुमुहच् चॅव्वि नोक्किन्

ऑप्पदे मुऩ्बु पिऩ्बव् वाशह मुणरक् केट्ट
अप्पॊऴ्दु अलर्न्द शॆन्दा मरैयिऩै वॆऩ्ऱ दम्मा 293

यारुम्–कोई भी (भाषा पर अधिकार रखनेवाले); चॆप्प अरुम्–वर्णन न कर सके; कुणत्तु इरामऩ्–ऐसे गुण वाले श्रीराम के; तिरु मुकम् चॆव्वि नोक्किऩ्–श्रीमुख की शोभा देखने पर; मुऩ्पु–(कैकेयी-कथन से) पूर्व; पिऩ्पुम्–बाद भी; ऑप्पते–समान था (कमल); अ वाचकम्–वह वचन; उणर–समझते हुए; केट्ट अप्पॊऴुतु–जब सुना तब; अलर्न्त चॆन्तामरैयिऩै–विकसित लाल कमल को; वॆऩ्ऱतु–जीत गया (शोभा में बढ़ गया)। २९३

श्रीराम पर इसका प्रभाव कैसे पड़ा ? यह सुनकर श्रीराम का मुखमंडल चमक उठा। श्रीराम किसी से भी अवर्णनीय श्रेष्ठ गुण वाले थे। उनके मुख की दिव्य शोभा देखिए। कैकेयी के वचन को सुनने के पहले और सुनकर जब जाने लगे उसके बाद भी उनके मुख की लाल कमल समता कर सकता था। पर जब उन्होंने कैकेयी का वचन खूब ध्यान देकर सुना और समझा तब उनका मुख सद्यविकसित कमल पर जीत पा गया। वह आज्ञा सुनकर श्रीराम अत्यन्त आनन्दपूरित हो गये। २९३

तॆरुळुडै मनत्तु मऩ्ऩ ऩेवलिऱ् ऱिऱम्ब वञ्जि
इरुळुडै युलहन् दाङ्गु मिऩ्ऩलुक् किशैन्दु निऩ्ऱाऩ्
उरुळुडैच् चहडम् बूट्टि युडयव नुय्त्त कारे
ऱुरुळुडै यॊरुव ऩीक्क वप्पिणि यविऴ्न्द दॊत्ताऩ् 294

तॆरुळ् उटै(य) मनत्तु–संशय-विमुक्त (विशुद्ध) मन वाले; मऩ्ऩऩ् एवलिऩ्–चक्रवर्ती की आज्ञा को; तिऱम्प अञ्चि–उल्लंघन करने से डरकर; इरुळ् उटैय–अज्ञानांधकार युक्त; उलकम् ताङ्कुम् इऩ्ऩलुक्कु–लोकभरण के संकट सहने के लिए; इचैन्तु निऩ्ऱाऩ्–सम्मत रहे; उरुळ् उटैय–पहियेदार; चकटम् पूट्टि–छकड़े से जोतकर; उटैयवऩ् उय्त्त–स्वामी का चलाया गया; कार् एऱु–काला बैल; अरुळ् उटै(य) ऑरुवऩ्–करुणामय किसी के द्वारा; अ पिणि नीक्क–वह बन्धन खोल देने पर; अविऴ्न्ततु ऑत्ताऩ्–जो मुक्त हो गया उस बैल के समान हो गये। २९४

वे कितने उल्लसित हुए ? पहले वे स्वच्छ मन वाले चक्रवर्ती की आज्ञा का उल्लंघन करने से डरे। इसीलिए वे अज्ञानांधकार-मग्न भूमि का भार वहन करने का दुख उठाने के लिए सम्मत हो गये थे। अब वे उस काले बैल के समान अनुभव करने लगे जिसको उसके स्वामी ने एक बड़े छकड़े में जोतकर उस छकड़े पर बड़ा भार लाद दिया था और जिसको किसी दयावान मनुष्य ने बंधन काटकर छकड़े से मुक्त कर दिया। २९४

मऩ्ऩवऩ् पणियऩ् ऱाहि नुम्बणि मऱुप्प ऩॊवॆऩ्
पिऩ्ऩवऩ् पॆऱ्ऱ शॆल्व मडियनेऩ् पॆऱ्ऱ दऩ्ऱो

ऍन्निदि नुरुदि यप्पा लिप्पणि तलैमेऱ् कॉण्डेन्
मित्तॊळिर् कान मित्ऱे पोहिन्ऱेन् विडैयुङ् गॉण्डेन् 295

मन्नवन् पणि अन्ऱु आकिल्–राजा का काम (हुक्म) नहीं हो तो (भी); नुम् पणि–आपकी आज्ञा; मरुप्पनो–मैं इनकार करूँगा क्या; ऍन् पिन्नवन् पॅऱ्ऱ चॅल्वम्–मेरे बाद के आये (कनिष्ठ) का प्राप्त विभव; अटियनॅन् पॅऱ्ऱतन्ऱो–मुझ दास का प्राप्त नहीं है क्या; ऍन् इनि उरुति अप्पाल्–कौन सा पुरुषार्थ है, इससे बढ़कर; इ पणि तलै मेल् कॉण्टेन्–यह आज्ञा सिर पर धर ली; मिन् ऑळिर् कानम्–बिजली के समान जहाँ धूप रहेगी, उस जंगल को; इन्ऱे पोकिन्ऱेन्–आज ही जा रहा हूँ; विटैयुम् कॉण्टेन्–अब आपसे अनुमति लेता हूँ (अनुमति दीजिए)। २६५

(श्रीराम ने कहा।) चक्रवर्ती की आज्ञा नही हो, और यह आपकी ही आज्ञा हो तो मैं क्या उससे इनकार करूँगा ? मेरे छोटे भाई का प्राप्त विभव क्या मेरा नही है ? इस सौभाग्य से बढ़कर कौन सा पुरुषार्थ मुझे मिलेगा ? अभी यह आज्ञा मैने सिर पर धारण कर ली ! उस जंगल मे जाने को अभी निकला जिसमें बिजली के समान धूप पड़ती रहती है। आपसे विदा लेता हूँ। २९५.

4. नहर् नीङ्गु पडलम् (नगर-निष्क्रमण पटल)

❀ ऍन्ऱुकॊण् डिन्नैय कूऱि यडितॊऴु दिऱैञ्जि मीट्टुम्
तन्ऱुणैत् तादै पाद मत्तिशै नोक्कित् ताऴ्न्दु
पॊन्ऱिणि पोदि नाळुम् बूमियुम् पुलम्बि नैयक्
कुन्ऱिनु मुयर्न्द तोळान् कोशलै कोयिल् पुक्कान् 296

ऍन्ऱु कॊण्टु इन्नैय कूऱि–यह और ऐसा कहकर; मीट्टुम्–फिर; अटि तॊऴुतु–चरणो पर पड़कर; इऱैञ्चि–वन्दना करके; तन् तुणै तातै पातम्–स्वोपम पिता के चरणों की; अ तिचै नोक्कि ताऴ्न्तु–उस दिशा की ओर झुककर; कुन्ऱिनुम् उयर्न्त तोळान्–पर्वत से भी अधिक उन्नत कंधे वाले; पॊन् तिणि पोतिन्ताळुम्–स्वर्णकमलवासिनी (श्रीलक्ष्मीदेवी) को; पूमियुम्–व भूदेवी को; पुलम्पि नैय–प्रलाप करते हुए दुखी रहने देकर; कोचलै कोयिल्–कौसल्या के मन्दिर (महल) में; पुक्कान्–पहुँचे। २६६

पर्वत से भी अधिक उन्नत कन्धों वाले श्रीराम ने यह इस रीति से कहकर कैकेयी के चरण फिर एक बार छुए। पिता को नमस्कार उस दिशा में मुख करके सिर झुकाकर मानसिक रूप से किया। फिर वे कौसल्यादेवी के महल में आये। इनका कार्यक्रम देखकर स्वयं स्वर्णकमलवासिनी लक्ष्मीदेवी और भूमिदेवी भी दुखी होकर प्रलाप करने लगीं। २९६

❀ कुळैक्किन्ऱ कवरि यिन्ऱिक् कॊऱ्ऱवण् कुडयु मिन्ऱि
इळैक्किन्ऱ विदिमुन् शॅल्लत् तरुमम्बिन् निरङ्गि येह

मळैक्कुन्ऱ अनैयान् मौलि कवित्तनन् वरुमॆन् ऱॆन्ऱु
तळैक्किन्ऱ वुळ्ळत् तन्नाळ् मुन्नॊरु तमियन् शॆन्ऱान् 297

मळै कुन्ऱम् अनैयान्–मेघाच्छन्न पर्वत-सम (श्रीराम); मौलि कवित्तनन्–मुकुट पहनकर; वरुम्–आयेंगे; ऎन्ऱु ऎन्ऱु–ऐसा सोच-सोचकर; तळैक्किन्ऱ उळ्ळत्तु–लहलहानेवाले चित्त की; अन्नाळ् मुन्–उनके सामने; कुळैक्किन्ऱ कवरि इन्ऱि–डुलनेवाले चामर के विना; कॊऱ्ऱम् वॆण् कुटैयुम् इन्ऱि–विजयी श्वेतछत्र के बिना; इळैक्किन्ऱ विति–क्रियाशील विधि के; मुन् चॆल्ल–(उनके) आगे जाते; तरुमम् इरङ्कि–धर्म के दुख के साथ; पिन् एक–उनका पीछा करते; ऒरु तमियन् चॆन्ऱान्–एकाकी गये। २९७

उधर कौसल्यादेवी इनकी प्रतीक्षा में थीं। पर वे यह सोचते हुए आनन्दानुभव कर रही थी कि मेघाच्छादित पर्वत-सम श्रीराम किरीटधारी होकर राजा के ठाट के साथ आयँगे। पर ये तो गये, अकेले; चामर नहीं डुल रहे थे; विजयी छत्र भी नही था। साथ कौन थे ? क्रियाशील विधि आगे जा रही थी और धर्म रोते हुए पीछे आ रहा था ! । २९७

❀ पुनैन्दिलन् मौलि कुञ्जि मञ्जनप् पुनित नीराल्
ननैन्दिल नॆन्गॊ लॆन्नु मैयत्ता णळिन पादम्
वनैन्दपॊऱ् कळऱ्काल् वीरन् वणङ्गलुङ् गुळैन्दु वाळ्त्ति
निनैन्ददॆन् निडैयू ऱुण्डो नॆडुमुडि पुनैदऱ् कॆन्ऱाळ् 298

मौलि पुनैन्तिलन्–मुकुट पहना नहीं है; मञ्चनम् पुनितम् नीराल्–अभिषेक-योग्य पवित्र जल से; कुञ्चि ननैन्तिलन्–केश भीगा नहीं है; ऎन् कॊल्–क्या कारण है; ऎन्नुम् ऐयत्ताळ्–यह संशयवाली; नळिनम् पातम्–कमलचरणों में; वनैन्त पॊन् कळल् काल् वीरन्–पहनी हुई पायल वाले चरणों के वीर राघव के; वणङ्कलुम्–नमस्कार करते ही; कुळैन्तु वाळ्त्ति–गद्गद होकर उसे आशीर्वाद देकर; निनैन्ततु ऎन्–सोचा क्या; नॆटु मुटि पुनैतऱ्कु–उन्नत किरीट पहनने में; इटैयूऱु उण्टो–कोई बाधा है; ऎन्ऱाळ्–यह प्रश्न किया। २९८

कौसल्या के मन में सन्देह उत्पन्न हुआ। सिर पर किरीट नहीं था। और उनका केश अभिषेकजल से भीगा भी नही था। क्या कारण होगा ? तव उनके कमलचरणों पर स्वर्ण-पायलधारी श्रीराम ने झुककर नमस्कार किया। वात्सल्य से गद्गद होकर कौसल्या ने पूछा कि अव तुमने इधर आने को सोचा क्यों है ? दीर्घ काल से रहता आनेवाला (या उन्नत) राजकिरीट पहनने में कोई बाधा उपस्थित हो गई क्या ? । २९८

❀ मङ्गै यम्मॊळि कूऱलु मानवन्, शॆङ्गै कूप्पिनिन् कादऱ् ऱिरुमहन्
बङ्ग मिल्गुणत् तॆम्बि बरदने, तुङ्ग मामुडि शूडुहिन् ऱानॆन्ऱान् 299

मङ्कै–देवी के; अ मॊळि कूऱलुम्–वह वचन कहते ही; मानवन्–मनुकुल के, श्रेष्ठ श्रीराम; चॆम्कै कूप्पि–लाल हाथ जोड़कर; निन् कातल् तिरुमकन्–आपका

प्यारा पुत्र; पङ्कम् इल् कुणत्तु–कमोहीन गुणों वाले; ऍम्पि–मेरा छोटा भाई; परतऩ्–भरत ही; तुङ्कम् मा मुटि चूटुकिऩ्ऱाऩ्–पवित्र, बड़े किरीट को धारण करेगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। २६६

जब देवी ने यह बात कही तब मानव श्रीराम ने अपने सुन्दर हाथ जोड़कर उत्तर दिया कि आपका प्यारा पुत्र, अभंगी गुण वाला मेरा छोटा भाई भरत पवित्र श्रेष्ठ और बड़े किरीट को धारण करनेवाला है। (मानव— मान्य या मनुकुलोत्पन्न)। २९९

❀ मुऱैमै यऩ्ऱॆऩ्ब दॊऩ्ऱुण्डु मुम्मयिऩ्
निऱैहु णत्तव ऩिऩ्निनु नल्लनोर्
कुऱैवि लऩ्ऩॆऩक् कूऱिऩ ळाल्वर्क्कुम्
मऱुवि लऩ्बिनिल् वेऱुमै माऱ्ऱिनाळ् 300

नाल्वर्क्कुम् मऱु इल् अऩ्पिऩिल्–चारों पुत्रों पर के निष्कलंक प्रेम में; वेऱुमै माऱ्ऱिऩाळ्–भेद-विचार जिन्होंने वदल दिया था, उन कौसल्या ने; मुऱैमै अऩ्ऱु–यह क्रमोचित नहीं; ऍऩ्पतु ऒऩ्ऱु–ऐसी एक बात (दोष); उण्टु–इसमें है; निऩ्निऩुम्–तुमसे अधिक; मुम्मैयिऩ् निऱै कुणत्तवऩ्–तिगुना श्रेष्ठ गुण वाला है (भरत); नल्लऩ्–सब लोगों से अच्छा माना जाता है; ओर् कुऱैवु इलऩ्–कोई कमी नहीं, उसमें; ऍऩ–ऐसा; कूऱिऩळ्–कहा। ३००

यह सुनकर कौसल्या उद्विग्न नहीं हुई। चारों पुत्रों के प्रति होने वाले उनके प्रेम में जो स्वभावतया भेद हो सकता था उसको उन्होंने अपने विवेक से दूर कर दिया था और वे चारों पर समान प्रेम रखती थीं। उन्होंने शान्ति के साथ कहा कि इसमें एक ही दोष है। यह कुल का क्रम नही है कि ज्येष्ठ के रहते कनिष्ठ को राजा बनाया जाय। नहीं तो भरत तुमसे गुण में तिगुना श्रेष्ठ है! उसमें कोई कमी नही है। वह मुकुट के योग्य ही है। ३००

❀ ऍऩ्ऱु पिऩ्ऩरु मऩ्ऩव ऩेविय, दऩ्ऱॆ ऩामै महऩ्ऩे युऩक्कऱऩ्
नऩ्ऱु तुम्बिक्कु नानिल नीकॊडुत्, तॊऩ्ऱि वाऴुदि यूऴि पलवॆऩ्ऱाळ् 301

ऍऩ्ऱु–यह कहकर; पिऩ्ऩरुम्–और भी; मकऩे–पुत्र; मऩ्ऩवऩ् एवियतु–राजा का आज्ञापित; अऩ्ऱु ऍऩामै–"नहीं-नहीं" कहना; उनक्कु अऱऩ्–तुम्हारा धर्म है; तुम्पिक्कु–तुम्हारे अनुज को; नाल् निलम्–इस भूमि को; नी नऩ्ऱु कॊटुत्तु–तुम प्रेम के साथ देकर; ऒऩ्ऱि–उसके साथ मेल करके; ऊऴि पल वाऴुति–अनेक युग जिओ; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ३०१

कौसल्यादेवी ने यह कहकर आगे कहा कि वत्स! राजा की आज्ञा से इनकार नही करना ही तुम्हारा धर्म है। इसलिए तुम यह भूमि अपने भाई भरत को उत्साह के साथ दे दो और उसके साथ मेल से अनेक युग जिओ। ३०१

❀ तायु रैत्तशॊऱ् केट्टुत् तऴैक्किन्ऱ, तूय शिन्दयत् तोमिल् कुणत्तिनान्
नाय हन्नॆन्नै नन्नॆऱि युय्प्पदऱ्, केय ळ्ळुण्डोर् पणियॆन् ऱियम्बिनान् 302

ताय् उरैत्त चॊल् केट्टु–माता का कहा वचन सुनकर; तऴैक्किन्ऱ–आनन्द-वर्धित; तूय चिन्तै–पवित्र मन और; अ तोम् इल् कुणत्तितान्–निष्कलंक गुण वाले श्रीराम; ऍन्नै नल् नॆऱि उय्प्पतऱ्कु–मुझे सद्गति मे पहुँचाने के निमित्त; नायकन् एयतु–राजा का आज्ञापित; ओर् पणि उण्टु–एक काम है; ऍन्ऱु इयम्पितान्–ऐसा कहा। ३०२

माता का यह कथन सुनकर श्रीराम का मन उल्लास से भर गया। पवित्रमन और निर्दोषगुण श्रीराम ने माता को दूसरी बात सुनाई। माताजी ! मुझे श्रेष्ठ गति में पहुँचाने के विचार से हमारे नायक ने मुझे एक आज्ञा दी है। ३०२

❀ ईण्डु रैत्त पणियॆन्नै यॆन्ऱवट्, काण्डॊरेऴिनो डेऴहन् कानिडै
माण्ड मादवत् तोरुडन् वैहिप्पिन्, मीण्डु नीवर वेण्डुमॆन् ऱानॆन्ऱान् 303

ईण्टु उरैत्त पणि ऍन्नै–(राजा का) यहाँ पर आज्ञापित कार्य क्या है; ऍन्ऱ वट्कु–यह पूछनेवाली (माता) से; ओर् एऴिनोटु एऴु आण्टु–एक सात के साथ सात (चौदह) साल; अकन् कान् इटै–विस्तृत जंगल में; माण्ट–महान; मातवत्तोरुटन्–बड़े तपस्वियो के साथ; नी वैकि–तुम रहो और; पिन् मीण्टु वर वेण्टुम्–फिर लौट आना चाहिए; ऍन्ऱान्–(राजा ने) कहा; ऍन्ऱान्–कहा। ३०३

कौसल्या ने अशंकमन से पूछा कि यहाँ उन्होंने तुम्हें क्या कार्य सौंपा है ? श्रीराम ने उन्हें उत्तर दिया कि सात और सात साल (चौदह वर्ष) वन में जाकर महिमायुक्त उत्तम तपस्वियों के साथ समय बिताऊँ और बाद लौट आऊँ —यह पिताजी की आज्ञा है। ३०३

❀ आङ्गव् वाशह मॆन्नु मनलकुऴै
तूङ्गु तन्शॆवि यिऱ्ऱॊड रामुनम्
एङ्गि ताऴिळैत् ताडिहैत् ताण्मनम्
वीङ्गि ताऴ् विम्मि नाऴ्विऴुन् दाळरो 304

आङ्कु–तब; अ वाचकम् ऍन्नुम् अनल्–उस वचन रूपी आग के; कुऴै तूङ्कु–कुण्डल-शोभित; तन् चॆवियिल् तॊटरा मुन्नम्–अपने कानों में पड़ने के पूर्व ही; एङ्कित्ताऴ्–दुखी हुई; इळैत्तताऴ्–कृश हुई; मनम् तिकैत्ताऴ्–भ्रम-चित्त हुई; विम्मिनाऴ्–सिसकने लगीं; वीङ्कित्ताऴ्–(रोने से) सूजा मुख वाली हो गई; विऴुन्ताऴ्–नीचे गिर गई। ३०४

वह कथन आग के समान कौसल्याजी के कुंडलशोभित कान में घुसा तो उनको अपार दुख हुआ। उनका मन भ्रमित हो गया। उनका शरीर कृश हो गया। सिसकने लगीं। रोते-रोते मुख सूज गया। वे अचेत होकर गिर पड़ी। ३०४

❀ वञ्ज मोमह ऩेयुनै मानिलम्, तञ्ज माहनी ताङ्गॅन्ऱ् वाशहम्
नञ्ज मोविन्ऩि नानुयिर् वाऴ्वॅऩ्ऩो, अञ्जु मञ्जुमॅऩ् ऩारुयि रञ्जुमाल् 305

मकऩे–सुत; उऩै–तुमसे; मा निलम्–इस बड़ी भूमि को; तञ्चम् आक–शरण्य (रक्षक) रहकर; नी ताङ्कु–तुम भरण करो; ऍऩ्ऱ् वाचकम्–यह (राजा का) वचन; वञ्चमो–वंचना है; नञ्चमो–(या मुझे मारने आया) विष है; इऩि नान् उयिर् वाऴ्वॅऩो–अब मैं क्या जिऊँगी; ऍऩ् अरु उयिर्–मेरे दुर्लभ प्राण; अञ्चुम् अञ्चुम्–डरते हैं, डरते। ३०५

(सम्हलकर कौसल्या ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी!) वत्स! इस विशाल भूमि का रक्षक रहकर उसका भरण करो—यह जो राजा का कहना था वह क्या वंचना थी? या मुझे मारने के लिए आया विष था? अब मैं जी सकूँगी क्या? मेरे प्राण काँपते हैं, हाँ काँपते है। ३०५

❀ कैयॅक् कैयि नॅरिक्कुन्दऩ् कादलऩ्, वैहु मालिलै यन्ऩ वयिऱ्ऱिऩैप्
पॅय्व ळैत्तळि राऱ्पिशै युम्बुहै, वॅय्दु यिर्क्कुम् विऴुन्दु पुऴुङ्गुमाल् 306

कैयै कैयिऩ् नॅरिक्कुम्–एक हाथ को दूसरे हाथ से मसलतीं; तऩ् कातलऩ् वैकुम्–अपना प्यारा पुत्र जिसमें रहा उस; आल् इलै अऩ्ऩ–वटपत्र-सम; वयिऱ्ऱै–पेट को; वळैपॅय् तळिराल्–वलयधारी पल्लव (-मृदुल कर) से; पिचैयुम्–दवातीं; पुकै वॅय्तु उयिर्क्कुम्–अग्नि-धूम के समान गरम साँस छोड़तीं; विऴुन्तु–नीचे गिरकर; पुऴुङ्कुम्–पीड़ा का अनुभव करतीं। ३०६

देवी एक हाथ से दूसरा हाथ पकड़कर मसलतीं। कभी अपने वटपत्र-सम पेट को, जिसमें उनका प्यारा पुत्र वास करता था, वलयधारी पल्लवमृदुल हाथ से मसलतीं। कभी आग से निकलनेवाले धुएँ के समान गरम साँस निकालतीं। कभी नीचे गिरकर मन मसोसतीं। ३०६

❀ नऩ्ऱु मन्ऩन् करुणै यॅऩ्ऩानहुम्, निऩ्ऱ मैन्दऩै नोक्कि नॅडुञ्जुरत्
तॅन्ऱु पोव दॅऩ्ऩावॅऴु मिन्नुयिर्, पॉन्ऱुम् पोदुऱ्ऱ दुऱ्ऱनऴ् पोलुमे 307

मन्ऩऩ् करुणै नन्ऱु–राजा की दया भी भली है; ऍऩ्ऩा नकुम्–कहकर हँसतीं; निऩ्ऱ मैन्तऩै नोक्कि–खड़े रहे तनय को देखकर; नॅटु चुरत्तु–विस्तृत जंगल में; ऍऩ्ऱु पोवतु–कब जाना है; ऍऩ्ऩा ऍऴुम्–कहती हुई उठतीं; इऩ् उयिर् पॉन्ऱुम् पोतु–जब प्यारे प्राण चलने को होते हैं तब; उऱ्ऱतु–जो पीड़ा होगी; उऱ्ऱनळ् पोलुम्–उसको प्राप्त कर चुकी-सी बन गईं। ३०७

कहती—राजा की कृपा भी भली रही! कहकर हँसतीं! अपने सामने स्थित श्रीराम से पूछती कि विस्तृत जंगल में कब जाना है? कहती हुई उठतीं। उनकी मरणवेला की-सी अवस्था हो गई। ३०७

❀ अन्ऩवि ळैत्त मनत्तर शऱ्कुनी, ऍन्ऩवि ळैत्तनै यॅन्ऱुनिऩ् ऱेङ्गुमाल्
मुन्ऩवि ळैत्त वरुमयिऩ् मुऱ्ऱिऩोर्, पॉन्ऩवि ळैक्कप् पॉदिन्दनर् पोलवे 308

अऩ्पु इऴैत्त मऩत्तु–(तुम्हारे प्रति) प्रेम रखनेवाले मन के; अरचर्कु–राजा को; नी ॲन्ऩ् पिऴैत्तऩै–तुमने क्या अपराध किया; ॲन्ऱु–कहकर; निऩ्ऱु–(ठिठकी) खड़ी रहकर; मुऩ् पिऴैत्त वऱुमैयिल्–पूर्व पाप प्राप्त दरिद्रता में; मुऱ्ऱिऩोर्–वढ़े हुओं ने; पॊऩ्–प्राप्त स्वर्ण को; पिऴैक्क–हाथ से जाने देते हुए; पॊतिन्तत्तर् पोल–गाँठ में बाँध रखा जैसे; एङ्कुम्–तरसतीं; (आल्, ए)। ३०८

कभी पूछतीं— राजा तुम पर गहरा प्रेम रखते थे। ऐसे उनका तुमने क्या अपराध किया ? पूछती हुई चकित खड़ी रहतीं। वह पूर्वकृत पापों के कारण दरिद्रता में वढ़े हुए उन लोगों के समान मन मसोसने लगीं जिन्होंने कुछ स्वर्ण पाकर गाँठ में असावधानी से बाँध रखी हो कि वह स्वर्ण खो गया हो। ३०८

❀ अऱमॆ नक्किलै योवॆऩु माविनैन्, दिऱव डुत्तदॆऩ् ऱॆय्वदङ् गाळॆऩुम्
पिऱवु रैप्पदॆन् कन्ऱु पिरिन्दुऴिक्, कऱवै यॊप्पक् करैन्दु कलङ्गिऩाळ् 309

अऱम् ॲनक्कु इलैयो–धर्म देवता मेरी सहायता करनेवाले नहीं हैं क्या; ॲॅनुम्–कहती; तॆय्वतङ्काळ्–देवताओ; आवि नैन्तु इऱ–प्राण क्षीण होकर मिट जायँ, इसका; ॲटुत्ततु ॲन्–हेतु क्या है; ॲॅनुम्–कहतीं; कन्ऱु पिरिन्त उऴि–वछड़ा जब विछुड़ गया तव; कऱवै ऒप्प–जैसे गाय, वैसे; करैन्तु–पिघलकर; कलङ्किऩाळ्–व्याकुल हुई; पिऱ उरैप्पतु ॲन्–फिर कहना क्या। ३०९

वे प्रलाप करती— क्या मेरा धर्म (सहायक) नहीं है ! देवताओ ! मेरे प्राणों को क्षीण करते हुए जो यह दुख सता रहा है उसका हेतु क्या है ? बछड़ा खोकर दुधार गाय जैसे छटपटाती है वैसे ही कौसल्याजी पिघलकर व्याकुल हुई। किं वहुना ? अपार दुखी हो रहीं। ३०९

❀ इत्ति ऱत्ति ऩिडरुऱु वाडनैक्, कैत्त लत्ति नॆडुत्तरुङ् गऱ्पिऩोय्
पॊय्त्ति ऱत्तिऩ नाक्कुदि योपुहल्, मॆय्त्ति ऱत्तुनम् वेन्दऩै नीयॆऩ्ऩा 310

इ तिऱत्तिऩ्–इस प्रकार; इटर् उऱुवाळ् तऩ्ऩै–दुखनेवाली उनको; कै तलत्तिऩ् ॲॅटुत्तु–करतल से उठाकर; अरु कऱ्पिनोय्–महार्घ पातिव्रत्य शीला; मॆय् तिऱत्तु नम् वेन्तऩै–सत्यनिष्ठ हमारे राजा को; नी–आप; पॊय् तिऱत्तितऩ्–असत्यवादी; आक्कुतियो–बना लेंगी क्या; पुकल्–कहिये; ॲॅन्ऩा–ऐसा कहकर। ३१०

श्रीराम ने इस तरह दुख करनेवाली अपनी माता को अपने करतल से उठाया। आश्वस्त करते हुए कहा— महार्घ पातिव्रत्य वाली ! हमारे राजा सत्यनिष्ठ है। क्या आप उन्हें असत्यवादी बना लेंगी? कहिये। ३१०

पॊऱ्पु ऱुत्तऩ मॆय्म्मै पॊदिन्दऩ, शॊऱ्पु ऱुत्तऱ् कुरियऩ शॊल्लिऩाऩ्
कऱ्पु ऱुत्तिय कऱ्पुडै याडनै, वऱ्पु ऱुत्ति मऩङ्गॊळत् तेऱ्ऱुवाऩ् 311

कऱ्पु उऱुत्तिय–(वड़ों से) सिखाया गया; कऱ्पु उटैयाळ् तऩ्ऩै–पातिव्रत्यशीला को; वऱ्पुऱुत्ति–दृढ़चित्त वनाकर; तेऱ्ऱुवाऩ्–स्वस्थ वनाने के हेतु; पॊऱ्पु

उऱ्ऱुतत्त–सुन्दरता भरे; मॅय्म्मै पॉतिन्तत्त–सत्यगर्भित; चॉऱ्पु उऱुत्तऱ्कु उरियत्त–वात समझाने के लिए आवश्यक; मतम् कॉळ–(तर्क) मन में लगे ऐसे; चॉल्लिनान्–(श्रीराम ने) वचन कहे। ३११

श्रीराम ने धारणा कर ली कि उत्तम गुरुओं से शिक्षित पातिव्रत्य रखनेवाली इनको धीरज बँधाना चाहिए। इसलिए उन्होंने ऐसे शब्दों में उन्हें समझाया जो तर्कयुक्त थे, सत्यगर्भित थे और उनके मन को व्यक्त करने की क्षमता रखते थे। ३११

❀ शिऱन्द तम्बि तिरुवुऱ वॅन्दयै, मऱन्दुम् पॉय्यिल नाक्कि वनत्तिडै
उऱैन्दु पेरु मुऱुदिपॅऱ् ऱेनिदिऱ्, पिऱन्दि यान्पॅऱुम् बेऱॆन्ब दियावदो 312

चिऱन्त तम्पि–श्रेष्ठ अनुज के; तिरु उऱ–राज्यश्री प्राप्त करते; ऍन्तैयै–मेरे पिता को; मऱन्तुम् पॉय्यिलन् आक्कि–अप्रमत्त सत्यसंध बनाकर; यान् वनत्तु इटै उऱैन्तु–मैंने, वनवास करके; पेरुम् उऱुति पॅऱ्ऱेन्–लौट आने को तय किया है; पिऱन्तु–(इस कुल में) जन्म लेकर; पॅऱुम् पेऱु ऍन्पतु–पाने का सौभाग्य; इतिन् यावतु–इससे बढ़कर क्या होगा। ३१२

उन्होंने कहा— माताजी मैं जंगल हो आने का निश्चय कर चुका हूँ ताकि मेरा प्यारा भाई राज्य पा जाय और मेरे पिताजी भूलकर भी असत्य न बोलनेवाले अप्रमत्त सत्यवादी रह जायँ। इस वंश में जन्म लेकर, इससे बड़ा लाभ कौन सा होगा जो मुझे प्राप्य होगा? ३१२

❀ विण्णुम् मण्णुमिव् वेलयु मऱ्ऱुम्वे, ऱॅण्णुम् बूद मॅलामऴिन् देहिनुम्
अण्ण लेवन् मऱुक्क वडियनेऱ्, कॉण्णु मोविदऱ् कुळ्ळऴि येलॆन्ऱान् 313

विण्णुम्–आकाश; मण्णुम्–और यह पृथ्वी; इ वेलैयुम्–और यह सागर; मऱ्ऱुम्–और; वेऱु ऍण्णुम्—अलग-अलग गिने जानेवाले; पूतम् ऍल्लाम्–भूत सब; अऴिन्तु एकिनुम्–नाश हो जायँ तो भी; अटियनेऱ्कु–मुझ दास को; अण्णल् एवल्–चक्रवर्ती की आज्ञा; मऱुक्क ऑण्णुमो–टाली जा सकती है क्या; इतऱ्कु उळ् अऴियेल–इसके लिए मन छोटा मत कीजिए; ऍन्ऱान्–ऐसा कहा। ३१३

आकाश, पृथ्वी, समुद्र यानी जल और (दो अनल और अनिल) अन्य भूत— अलग-अलग गिने जानेवाले ये सब— मिट जायँ (यानी प्रलय ही क्यों न हो जाय) मुझ दास से स्वामी राजा की आज्ञा टाली जा सकती है क्या? फिर आप क्यों अपने मन मारें? दुखी मत होइए। (तमिऴ में 'मैं' की जगह पर अडियेन्, जिसका अर्थ 'दास मैं' है, प्रयोग करने की प्रथा है। यह वैष्णव लोगों में अब भी प्रचलित है।)। ३१३

❀ आहि लैय वरशन्ऱ नाणयाल्, एह लॅन्ब दियानु मुरैक्किलेन्
शाह लावयिर् ताङ्गवल् लेनयुम्, पोहि लुन्नॊडुङ् गॊण्डनै पोहॆन्ऱाळ् 314

आकिल्–ऐसा है तो; ऐय–तात; अरचन् तन् आणैयाल्–राजा की आज्ञा से;

एकल् अॅन्ऩपतु–(वन) मत जाओ, कहना; यातुम् उरैक्किलेऩ्–मै भी नहीं कहती; पोकिल्–तुम जाओ तो; चाक अल्ला उयिर्–न मर जानेवाली इस जान को; ताङ्क वल्लेतैयुम्–न रख सकनेवाली मुझे भी; उऩ्ऩॊटुम् कॊण्टत्ते पोक–अपने साथ लेते जाओ। ३१४

यह सुनकर कौसल्या ने उत्तर में वेदना देनेवाली बात कही। हे आर्य ! हे राम ! अगर यही तुम्हारा निर्णय है तो मैं भी नहीं कहूँगी कि तुम राजा की आज्ञा के कारण वन मत जाओ। पर इतना कहूँगी कि तुम्हारे वनगमन के निश्चय की बात सुनकर तत्काल मेरे प्राण नहीं छूटे, तो भी तुम्हारे जाने के बाद ध्रुव है कि मैं अपने प्राण धारण नहीं कर सकूँगी। इसलिए तुम मुझे भी साथ लेते चलो। ३१४

❀ अॅन्ऩै नीङ्गि यिडर्क्कडल् वैहुरुम्, मन्ऩर् मन्ऩनै वर्पुरुत् तादुडऩ्
तुन्ऩु कानन् दॊडरत् तुणिवदे, अन्ऩै नीयरम् वार्क्किलै यामॆन्ऱान् 315

अन्ऩै–माताजी; अॅन्ऩै नीङ्कि–मुझसे बिछुड़कर; इटर् कटल् वैकु उरुम्–दुख-सागर में डूबनेवाले; मन्ऩर् मन्ऩनै–राजाधिराज को; वर्पुरुत्तातु–धीरज बँधाये बिना; तुन्ऩु कातम्–घने जंगल में; उटऩ्–मेरे साथ; नी तॊटर तुणिवते–आप आने का साहस करें; अरम् पार्क्किलै आम्–धर्म नहीं देखा, यही बात है; अॅन्ऱान्–कहा। ३१५

श्रीराम ने कहा— माताजी ! मेरे पिता मुझसे बिछुड़कर दुखसागर में मग्न हो जायँगे। उनको पास रहकर धीरज बँधाये बिना कैसे आप मेरे साथ जंगल आने का निश्चय करती हैं ? वैसा भी करेंगी ? तब इसका अर्थ यही होगा कि आपने धर्म पर ध्यान नहीं दिया है। ३१५

❀ वरिवि लॅम्बियिम् मण्णर शायवऱ्, कुरिमै मानिल मुऱ्ऱपिन् कॊऱ्ऱवन्
तिरुवि नीङ्गित् तवञ्जॆयु नाळुडन्, अरुमै नोन्बुह ळाऱ्ऱुदि यामन्ऱे 316

वरि विल् ॲम्पि–बन्धनयुक्त धनुर्धर मेरा अनुज; इ मण् अरचु आय्–इस पृथ्वी का राजा बनकर; अवऱ्कु मा निलम् उरिमै उऱ्ऱ पिन्–उसका, यह बड़ा राज्य अपना हो जाने के बाद; कॊऱ्ऱवन्–चक्रवर्ती; तिरुविन् नीङ्कि–सम्पत्ति छोड़कर; तवम् चॆय्युम् नाळ्–तपस्या जब करेंगे तब; उटन्–उनके साथ; अरुमै नोन्पुकळ्–महार्घ व्रत; आऱ्ऱुति–पालन कीजिए; आम् अन्ऱे–यह उचित है न। ३१६

वन्धनयुक्त धनुर्धर मेरा भाई राजा बनेगा। सारा राज्य उसके अधिकार में आ जायगा। फिर राजा सांसारिक सुख-वैभव से छूटकर तपस्या करने वन में जायँगे। तब आप भी उनके साथ रहकर व्रतपालन कीजिए। यही न श्रेष्ठ होगा ! । ३१६

❀ शित्त नीतिहैक् किन्ऱदॆन् तेवरुम्, ऑत्त मादवञ् शॆय्दुयर्न् दारन्ऱे
अॅत्त नैक्कुळ वाण्डुह ळीण्डवै, पत्तु नालुम् पहलल वॊवॆन्ऱान् 317

नी चित्तम् तिकैक्किन्ऱतु अॅन्–आप चित्ताकुल क्यों होती हैं; तेवरुम्–देवता लोग भी; ऑत्त मातवम् चॅय्तु–उचित बड़ा तप करके; उयर्न्तार् अन्ऱे–न बढ़े; ईण्टु–यहाँ; आण्टुकळ् अॅत्तनैक्कु उळ–वर्ष कितने है; अवै पत्तुम् नालुम्–वे दस और चार; पकल् अलवो–केवल (उतने ही) दिन है न; अॅन्ऱान्–कहा। ३१७

आपका मन क्यों चकित हो ? देवता भी उचित तपस्या करके न ऊँचे बढ़े ? यहाँ मेरे बनवास के वर्ष भी कितने है ? चौदह ही वर्ष हैं और वे उतने दिनों के समान बीत जायँगे। ३१७

मुन्तर्क् कोशिह नॅन्नु मुनिवरन्, तन्न रुट्टलै ताङ्गिय विज्जयुम्
पिन्न रॅय्दिय पेरुम् पिळैत्तवो, इन्न नन्ऱवर्क् केयिन शॅय्दले 318

मुन्तर्–पहले; कोचिकन् अॅन्नुम् मुनिवरन् तन्–कौशिक नाम के मुनिवर की; अरुळ् तलै–दया से; ताङ्किय विज्चैयुम्–प्राप्त मेरी विद्याएँ; पिन्तर्–बाद को; अॅय्तिय पेरुम्–(उनकी कृपा से) प्राप्त सौभाग्य भी; पिळैत्तनवो–क्या दोषपूर्ण हैं; इन्तम्–और भी; अवर्क्कु एयिन चॅय्तल्–उन (जैसे ऋषियों) की उचित सेवा करना; नन्ऱे–लाभदायक ही होगा। ३१८

देखिये। पहले कौशिक महर्षि की कृपा से मुझे विद्याएँ मिली और कितनी ही! अन्य (यश, विवाह) उपलब्धियाँ हुईं! क्या वे कुछ कमी रखती हैं! और भी ऐसे महर्षियों की संगति और सेवा लाभदायक ही होगी। ३१८

माद वर्क्कु वळिपा डिळैत्तरुम्, बोद मुऱ्ऱिप् पॉरुवरु विज्जहळ्
एद मऱ्ऱन ताङ्गि यिमैयवर्, कादल् पॅऱ्ऱिन् नहर्वरक् काण्डियाल् 319

मातवर्क्कु–महान तपस्वियों की; वळि पाडु इळैत्तु–पूजा-सेवा करके; अरु पोतम् मुऱ्ऱि–मूल्यवान ज्ञान से पूर्ण होकर; एतम् अऱ्ऱन–निर्दोष; पॉरुवु अरु–और अनुपम; विज्चैकळ् ताङ्कि–मन्त्रविद्या प्राप्त करके; इमैयवर कातल् पॅऱ्ऱु–देवों की कृपा का पात्र बनकर; इ नकर् वर काण्टि–इस नगर को लौट (आऊँगा) आना देखेंगी। ३१९

आप ही देखेंगी। महान तपस्वियों की चरणसेवा करके उनकी संगति और उनके उपदेशों से ज्ञान में पूर्ण होकर निर्दोष और अनुपम विद्यायें अर्जित करके, और देवताओं का प्रेमपात्र बनकर इस नगर को लौट आऊँगा। ३१९

महर वेलैमण् डॉट्टवण् डाडुतार्च्, चहरर् तादै पणितलै निन्ऱुतम्
पुहरिल् याक्कयि त्तिन्तुयिर् पोक्किय, निहरिन् माप्पुहळ् निन्ऱदन् ऱोवॅन्ना 320

मकरम् वेलै–मकरालय सागर से वलयित; मण् तॉट्ट–भूमि को जिन्होंने खोदा वे; वण्टु आटु तार् चकरर्–भ्रमरावृत-मालाधारी सगरपुत्रों का; तातै पणि तलै निन्ऱु–पिता की आज्ञा शिरोधार्य करके; तम्–अपने; पुकर् इल् याक्कैयिन्–निर्दोष

शरीरों से; इऩ् उयिर् पोक्किय–अपने प्राणों को त्यागने का; निकर् इल् मा पुकऴ्–अप्रमेय महान यश; निऩ्ऱतु अऩ्ऱो–आज भी अचल है न; एऩा–ऐसा कहकर। ३२०

मकरालय-वलयित भूमि को भ्रमरावृत्तमाला-धारी सगरसूनुओं ने खोदा था। उन्होंने अपने पिता की आज्ञा का पालन करके ही अपने शरीरों से प्राण अलग करा लिये। उनका यश आज भी अचल है न? —यह कहकर आगे बोले। ३२०

माऩ्म रिक्करत् ताऩ्मऴु वेऩ्दुवाऩ्, ताऩ्म ऱुत्तिलऩ् ऱादैशॊऱ् ऱायये
ऊऩ ऱक्कुऱैत् तानुर वोनरुळ्, याऩ्म ऱुप्पदेऩ् ऱॆण्णुव दोवॆऩ्ऱाऩ् 321

माऩ् मऱि करत्ताऩ् मऴु—मृगशावक-हस्त (शिवजी) का परशु; ताऩ् एन्तुवाऩ्–उसको अपने हाथ में रखनेवाले परशुराम ने; तातै चॊल् मऱुत्तिलऩ्–पिता की आज्ञा मानने से इनकार नहीं किया; तायैये–और माता को भी; ऊऩ् अऱ–शरीर के खण्ड करते हुए; कुऱैत्ताऩ्–उनका सिर काटा; उरवोऩ् अरुळ् मऱुप्पतु–मेरे बुद्धि-शक्ति में श्रेष्ठ पिता के कृपा-वचन (आज्ञा) का अनादर करना; एऩ्ऱु याऩ् ऎण्णुवतो–ऐसा मै सोचूं क्या; एऩ्ऱाऩ्–कहा। ३२१

एक हाथ मे मृगशावक धारण करनेवाले शिवजी का हथियार परशु जो है उसको अपना हथियार बनाकर रखनेवाले परशुराम ने क्या किया? अपने पिता की आज्ञा से (जो अपनी पत्नी के चरित्र पर संदेह हो जाने से क्रुद्ध हुए थे) अपनी माता का सिर काट लिया। इन उदाहरणों के सामने, मै, अपने बुद्धिमान पिता की कृपापूर्ण आज्ञा मानने से इनकार करना सोचूँ? । ३२१

❀ इत्ति ऱत्त वॆऩैप्पल वाशहम्, उय्त्तु रैत्त महऩ्उरै युट्कॊळा
ऎत्ति ऱत्तु मिऱक्कुमिऩ् नाडॆना, मॆय्त्ति ऱत्तु विळङ्गिऴै युऩ्ऩुवाळ् 322

इ तिऱत्त–इस प्रकार के; एऩै पल वाचकम्–और अन्य वचन; उय्त्तु उरैत्त–समझाकर जिन्होंने कहे उन; मकऩ् उरै–पुत्र की बात; उळ् कॊळ्ळा–मन में धरकर; ऎ तिऱत्तुम्–किसी भी विध; इ नाटु इऱक्कुम् ऎऩा–यह राज्य छोड़ देगा, यह सोचकर; मॆय् तिऱत्तु–सत्यपक्ष (या सत्यरूपी); विळङ्कु इऴै–शोभायुक्त आभरण वाली; उऩ्ऩुवाळ्–(उपाय) सोचने लगी। ३२२

कौसल्या ने इस प्रकार कहते हुए राम की बातें सुनीं। निश्चय जान लिया कि यह किसी विध राज्य छोड़ ही देगा। सत्यवादी और (या सत्य का ही) श्रेष्ठ आभरणधारिणी कौसल्या (उन्हें रोकने का) उपाय सोचने लगीं। ३२२

❀ अवऩि कावल् बरदऩ दाहुह, इवऩिऩ् जाल मिऱऩ्दिरुङ् गाऩिडैत्
तवऩि लावहै काप्पॆऩ् ऱहविऩाल्, पुवऩि नादऩ् ऱॊऴुदॆऩ्ऱु पोयिनाळ् 323

अवऩि कावल्–राज्यरक्षण; परतऩतु आकुक–भरत का हो; इवऩ्–यह;

इ ञालम् इरन्तु–यह देश छोड़कर; इरु कान् इटै–बड़े वन में जाकर; तवन् निला वकै–तपोरत न हो, इस प्रकार; तकवित्ताल्–उचित क्रम से; पुवनि नातन् तॊऴुतु–भुवनपति से विनय करके; काप्पॆन्–रोकूँगी; ऎन्ऱु–सोचकर; पोयिऩाळ्–गई। ३२३

उन्होंने सोचा कि भू-पालन भरत का हो, पर यह देश छोड़कर विशाल वन में जाकर तपस्या करता न रह जाय। मैं भुवनपति चक्रवर्ती से योग्य रीति से प्रार्थना करके इसको रुकवाऊँगी। यह मन में सोचकर वे निकलकर चलीं। ३२३

❀ पोहिन् ऱाळैत् तॊऴुतु पुरवलन्, आह मऱ्ऱिव ळन्नयु माऱ्ऱियिच्
चोहन् दीर्प्पव ळॆन्ऱु शुमित्तिरै, मेहन् दोय्मणिक् कोयिलै मेयिनान् 324

पोकिन्ऱाळै–जानेवाली का; तॊऴुतु–नमस्कार करके; पुरवलन्–राजा के साथ; इवळ् तन्नैयुम्–इनको भी; आकम् आऱ्ऱि–मन दृढ़ करके; इ चोकम् तीर्प्पवळ्–शोकमुक्त करनेवाली; ऎन्ऱु–समझकर; चुमित्तिरै–सुमित्रा के; मेकम् तोय्–मेघ-स्पर्शी; मणि कोयिलै–सुन्दर महल में; मेयिनान्–जा पहुँचे। ३२४

गमनशील उनको श्रीराम ने नमस्कार किया। उन्होंने सोचा कि सुमित्रादेवी ही इनको और राजा को धीरज देकर उनके दुःख को दूर कर सकती है। इसलिए वे सुमित्रा के मेघस्पर्शी सुन्दर महल की ओर गये। ३२४

❀ नडन्द कोशलै केहय नाट्टिऱै, मडन्दै कोयिलै यॆय्दिनण् मन्नवन्
किडन्द पार्मिशै वीऴ्न्दनळ् कॆट्टुयिर्, उडैन्द पोऴ्दि नुडल्विऴुन् दॆन्नवे 325

नटन्त कोचलै–जो चलीं वे कौसल्या; केकय नाट्टु इऱै मटन्तै–केकय देश के राजा की पुत्री के; कोयिलै ऎय्तिनळ्–महल में पहुँचीं; मन्नवन् किटन्त पार्मिचै–राजा जहाँ गिरे थे, उस स्थल पर; उयिर् उटैन्त पोतिन्–प्राणवियोग के अवसर पर; उटल् कॆट्टु विऴुन्ततु–शरीर अस्थिर होकर गिरा जैसे; वीऴ्न्तनळ्–गिर पड़ीं। ३२५

कौसल्यादेवी चलकर केकयराज-तनया के महल में पहुँची। (देखा कि राजा भूमि पर बेहोश पड़े हैं।) वे भी उसी स्थान पर, जहाँ राजा गिरे पड़े थे, धड़ाम से गिरी जैसे प्राण छूटने पर निर्जीव शरीर गिर जाता है। ३२५

पिऱियार् पिरिवे दॆन्नुम् पॆरियोय् तहवो वॆन्नुम्
नॆऱियो वडियो निलैनी निन्नैयाय् निनैवे दॆन्नुम्
वऱियोर् दनमे यॆन्नुन् दमियेन् वलिये यॆन्नुम्
अऱिवो विनैयो वॆन्नु मरशे यरशे यॆन्नुम् 326

पिऱियार्–अब तक जो कभी विलग नहीं हुए हैं उनमें; पिरिवु एतु–अब बिछुड़न का कारण क्या; ऎन्नुम्–कहतीं; पॆरियोय्–सर्वोत्तम; तकवो–क्या यह उचित है; नॆऱियो–नीतिसम्मत है; ऎन्नुम्–कहतीं; अटियोम् निलै–आपकी दासियाँ हमारी

स्थिति; नी नितैयाय्–आपने नहीं सोची; निनैवु एतु–आपका अभिप्राय भी क्या है; अॅऩ्ऩुम्–कहतीं; वऱ्रियोर् तनमे अॅऩ्ऩुम्–निर्धनों के धन कहतीं; तमियेन् वलिए–मेरे, निर्बल के बल; अॅऩ्ऩुम्–कहतीं; अऱिवो–इसका ज्ञान आपको है क्या; विऩैयो–(दूसरे का) दुष्कर्म है; अॅऩ्ऩुम्–कहतीं; अरचे अरचे–राजा, राजा; अॅऩ्ऩुम्–यह पुकारतीं। ३२६

फिर वे विलाप करने लगीं। हम अब तक एक-दूसरे से अलग नहीं हुए थे। अब विलगाने का हेतु क्या है? सर्वोत्तम! क्या यह उचित है? नीतिसम्मत है? कभी कहतीं— हम चरणदासियों की स्थिति पर आपने विचार नहीं किया। आपका अभिप्राय क्या है? निर्धन के धन! मुझ निर्बल के बल! कभी पूछती कि यह जो हुआ वह आप के जानते हुआ या किसी का षडयन्त्र है? वे राजा, राजा कहकर प्रलाप करती। ३२६

इरुळऱ् ऱिडवुऱ् ऱोंळिरु मिरविक् कॅदिरुन् दिहिरि
उरुळत् तनियुयत् तोरुको नडैयिऱ् कडैहा णुलहम्
पॉरुळऱ् ऱिडमुऱ् ऱुरुमप् पहलिऱ् पुहुदऱ् कॅऩ्ऱो
अरुळिऱ् करुदुऱ् ऱदुनी यरशर्क् करशे यॅऩ्ऩुम् 327

अरचर्क्कु अरचे–राजाधिराज; नी–आप; अरुळिन् करुतु उऱ्ऱतु–कृपा करके (श्रीराम वनगमन) जो सोचा वह; इरुळ् अऱ्ऱिट–अन्धकार दूर करते हुए; उऱ्ऱु–ऑळिरुम्–अधिक दीप्त; इरविक्कु ॲतिरुम्–सूर्य के समान; तिकिरि–अपने आज्ञाचक्र को; तनि उरुळ उय्त्तु–अनुपम रूप से चलाकर; ऑरु कोल् नटैयिल्–राजदण्ड प्रयोग में; कटै काण्–उच्चता देखनेवाला; उलकम्–यह लोक; पॉरुळ् अऱ्ऱिट–सभी वस्तुओं के नाश के साथ; मुऱ्ऱु उरुम्–पूर्ण नष्ट जिसमें हो जायगा; अ पकलिल्–उस समय में; पुकुतर्कु अॅऩ्ऱो–प्रवेश करने के लिए क्या; अॅऩ्ऩुम्–कहतीं। ३२७

राजन्! आपने जो कृपापूर्ण आज्ञा सुनाई है उसका फल क्या होगा, सोचा है? अन्धकार हटाते हुए दीप्त रहनेवाले सूर्य के समान आपका आज्ञाचक्र है। उस आज्ञाचक्र को चलाते हुए आप राजदण्ड धर रहे हैं। उस शासन में यह भूमि अत्युन्नत स्थिति पर है! अब आपकी आज्ञा उस भूमि पर प्रलय ला देगी! इसी हेतु आपकी आज्ञा निकली है क्या? । ३२७

तिरैयार् कडलशू ऴुलहिन् ऱवमे तिरुविन् ऱिरुवे
निरैयार् कलैयिन् कडले नॅऱियार् मऱैयिन् ऩिलैये
करैया वयर्वे नॅऩैनी करुणा लयने यॅन्ऩॅन्
ऱुरैया यिदुदा नळहो वुलहे ऴुडैया यॅऩ्ऩुम् 328

तिरै आर्–लहरोंवाले; कटल् चूऴ्–सागर से घिरी; उलकिन् तवमे–पृथ्वी के तपोरूपी; तिरुविन् तिरुवे–धनों में धन; निरै ऑर् कलैयिन्–श्रेणीबद्ध विद्याओं के; कटले–सागर; नॅऱि आर् मऱैयिन्–अच्छे नीतिवचनों से पूर्ण वेदों के; निलैये–निलय; करुणा आलयने–करुणा के आलय; उलकु एऴु उटैयाय्–सातों लोकों के स्वामी;

करैया अयर्वेऩ् ॲतै–पिघलकर श्रांत होनेवाली मुझे; नी–आप; ॲऩ् ॲऩ्ऱु उरैयाय्–क्यों नहीं पूछते; इतु अऴकु तानो–यह आपके लिए शोभा है क्या। ३२८

लहरोंवाले समुद्र से वलयित इस भूमि के तपोरूप! धनों में श्रेष्ठ धन! अनेक विद्याओं और शास्त्रों के सागर (आगार)! श्रेष्ठ नीतिवोधक वेदों के निलय! करुणा के आलय! सातों लोकों के मालिक! मैं पिघल कर श्रान्त हो रही हूँ। 'क्यों रो रही हो' —यह एक बात नहीं पूछते! यह मौन आपको शोभा देता है क्या? । ३२८

मिऩ्निऩ् ऱतैय मेनि वॅऱिदा यळहऱ् ऱळिय
उऩ्ऩुऩ् दहमैक् कडैया वुऱुनो युऱुहिऩ् ऱुणराऩ्
ॲऩ्ऩॅऩ् ऱुरैया तॅऩ्ऩे यिदुदा नॆऩ्ऱॆऩ् ऱऱियेऩ्
मऩ्ऩऩ् ऱऩ्मै काण वाराय् महने यॆऩ्ऩुम् 329

मिऩ् निऩ्ऱ अतैय मेऩि–स्थिर विद्युत-सम इनकी देह; वॅऱितु आय्–प्रभाहीन होकर; अळकऱ्ऱु अळिय–सौंदर्यविहीन होकर नष्ट होता है; उऩ्ऩुम् तकमैक्कु अटैया–अचिन्त्य रूप से; उऱुनोय् उऱुकिऩ्ऱु उणराऩ्–अत्यधिक वेदना भी नहीं समझते; ॲऩ् ॲऩ्ऱु उरैयाऩ्–क्या हुआ यह भी नहीं कहते; ॲऩ्ऩे–यह क्या है; इतु ताऩ् एतु ॲऩ्ऱु अऱियेऩ्–यह क्यों यह मैं नहीं जानती; मकऩे–हे वत्स; मऩ्ऩऩ् तऩ्मै काण वाराय्–राजा की स्थिति देखने के लिए तुरत आओ; ॲऩ्ऩुम्–कहतीं। ३२९

वे राजा की निपट सुधि-हीन स्थिति से घवड़ा उठीं। स्थिर विद्युत समान कान्ति वाले इनकी देह निष्प्रभ हो गई है। सौन्दर्य चला गया है। अचित्य पीड़ा की भी सुध नहीं करते। मुख खोलकर, क्या वात है —यह भी नहीं कहते। यह कैसी स्थिति है जान नहीं पातीं। वे उच्च स्वर में चिल्लाने लगीं— हे पुत्र! आओ। चक्रवर्ती की दशा देखो। ३२९

इव्वा ऱऴुवा ळिरियऱ् कुरल्शॆऩ् ऱिशैया मुऩ्ऩम्
ऒव्वा दॊव्वा दॆऩ्ऩा वॊळिर्वा णिरुबर् मुनिवर्
अव्वा ऱऱिवा यॆऩ्ऩ वन्दाऩ् मुनिमऩ् ऩवनुम्
वॆव्वा ळरशऩ् निलैहण् डॆऩ्ऩो विळैवॆऩ् ऱुऩ्ऩा 330

इव्वाऱु अऴुवाळ्–इस प्रकार विलापती कौसल्या के; इरियल् कुरल्–रोने का स्वर; चॆऩ्ऱु इचैया मुऩ्ऩम्–जाकर लगने से पहले; ऒळिर् वाळ् निरुपर्–कांतियुक्त तलवार वाले राजा लोग; मुनिवर्–मुनि; ऒव्वातु ऒव्वातु–यह वेमेल है, अवद्ध; ॲऩ्ऩा–कहते हुए; अ आऱु अऱिवाय् ॲऩ्ऩ–उसका हेतु जानिये, कहने पर; वन्ताऩ् मुनि मऩ्ऩवनुम्–आये मुनिराज वसिष्ठ; वॆम् वाळ् अरचऩ् निलै–भयंकर तलवार वाले राजा की स्थिति; कण्टु–देखकर; विळैवु ॲऩ्ऩो–हुआ क्या; ॲऩ्ऱु उऩ्ऩा–यह सोचकर। ३३०

इस प्रकार विलापनेवाली देवी का रुदन-स्वर मण्डप में सुनाई दिया। उनके कान में पड़ते ही चमकती तलवार-धारी नरपति लोग और

मुनिगण सोचने लगे कि यह क्या बेमेल स्वर है ! विलकुल प्रसंगविरोधी और अबद्ध ! उन्होंने वसिष्ठजी से प्रार्थना की कि आप जाकर इसका पता लगा लें। मुनिराज वसिष्ठ भी वहाँ आये। उन्होंने भयंकर तलवार-धारी प्रतापी राजा की बेहोशी देखी तो उन्हें कुछ नही सूझा। यह क्या और क्यों हुआ ? इस पर विचार करके— । ३३०

इऱन्दा तल्ल नरश निऱवा दॊऴिवा नल्लन्
मऱन्दा नुणर्वॆन् ऱुन्नाळ् वण्के हयर्कोन् मङ्गै
तुऱन्दा डुयरन् दन्नैत् तुऱवा डुयर्हो शलैयिऱ्
पिऱन्दार् पॆयरुन् दन्मै पिऱरा लऱिदऱ् कॊळिदो 331

अरचन् इऱन्तान् अल्लन्–राजा मरे नहीं है; इऱवातु ऒऴिवान् अल्लन्–बिना मरे नहीं रहेंगे भी; वण् केकयर् कोन् मङ्कै–समृद्ध केकय देश के राजा की पुत्री; उणर्वु मऱन्तान्–सुध खो गये; ऎन्ऱु उन्नाळ्–यह नहीं सोचतीं; तुयरम् तन्नै तुऱन्ताळ्–दुख करना ही छोड़ दिया; कोचलै तुयर् तुऱवाळ्–कौसल्या दुख नहीं छोड़ेंगी; इल् पिऱन्तार्–अच्छी कुलोद्भवाएँ; पॆयरुम् तन्मै–परस्पर भिन्न है, इस स्वभाव को; पिऱराल्–दूसरों को; अऱितऱ्कु ऎळितो–जानना सुलभ है क्या। ३३१

(वसिष्ठ ने यों सोचा।) राजा मरे नहीं; पर विना मरे रहनेवाले भी नही लगते ! राजा सुध खोये पड़े है, केकयराजकुमारी इसकी सुध नहीं लेतीं; दुख नही करती। पर कौसल्या है जो दुख नही छोड़ती। ये दोनो उच्च कुल की ही पुत्रियाँ है। पर इनमे इतना वैषम्य कैसे आया ? यह विचित्रता दूसरों के लिए जानने को सुलभ नहीं लगती। ३३१

ऎन्ना वुन्ना मुनिव निडरा लऴिवा डुयरम्
शॊन्ना ळाहा ळॆन्मुन् ऱॊऴुके हयर्कोन् महळै
अन्ना युरैया यरश नयर्वा निलैये दॆन्नत्
तन्ना निहऴ्न्द वॆल्लान् दाने तॆरियच् चॊन्नाळ् 332

ऎन्ना उन्ना–यह सोचकर; मुनिवन्–मुनि (वसिष्ठजी); इटराल् अऴिवाळ्–दुख-पीड़ित; तुयरम् चॊन्नाळ् आकाळ्–(कौसल्या) दुख (का कारण) बता सकनेवाली नहीं होंगी; ऎन–यह सोचकर; मुन् तॊऴु–सामने आकर नमस्कार करनेवाली; केकयर् कोन् मकळै–केकयराज-तनया से; अन्नाय्–माँ; अरचन् अयर्वान्–राजा मूर्छित है; निलै एतु–यह स्थिति क्यों कर; उरैयाय् ऎन्न–कहिए, कहने पर; तन्नाल् निकऴ्न्त ऎल्लाम्–अपने से जो हुआ वह सब; ताने तॆरिय चॊन्नाळ्–स्वयं समझाती हुई बोली। ३३२

यह सोचनेवाले वसिष्ठजी ने आगे सोचा कि दुख-पीड़ित कौसल्या दुख का कारण बताने की स्थिति मे नही है। तब तक कैकेयी ने सामने आकर महर्षि को नमस्कार किया। उनसे महर्षि ने पूछा कि माँ ! राजा मूर्छित क्यों है ? उनकी इस स्थिति का कारण क्या है; बताइए। तब कैकेयी ने अपने कारण जो भी हुआ वह सारा वृत्तान्त कह सुनाया। ३३२

शोऱ्ऱाळ् शोऱ्ऱा मुऩ्ऩऩ् जुडर्वा ळरशर्क् करशैप्
पोऱ्ऱा मरैपोर् कैयाऱ् पोॅडिशूळ् पडिनिऩ् ऱॅळुविक्
कऱ्ऱा ययरे लवळे तरुनिऩ् कादर् करशै
ऍऱ्ऱे शॅयलिऩ् ऱॉळिनी यॅऩ्ऱॅऩ् ऱिरवा निऩ्ऱाऩ् 333

चोऱ्ऱाळ् चोऱ्ऱामुऩ्ऩम्–जो कहने लगीं उनके कहने ही के पूर्व; चुटर् वाळ्–चमकती तलवार वाले; अरचर्क्कु अरचै–राजाधिराज को; पोॅऩ् तामरै पोल–सुन्दर कमल-सम; कैयाल्–हाथों से; पोॅटि चूळ् पटि निऩ्ऱु–मैली भूमि से; ऍळुवि–पकड़ उठाकर; कऱ्ऱाय्–शिक्षा प्राप्त; अयरेल्–दुखी मत होइए; अवळे–खुद वे ही; निऩ् कातर्कु अरचै तरुम्–आपके प्यारे को राज दे देंगी; चॅयल् ऍऩ्ऱु–यह आपका करना क्या है; इऩ्ऱु ऑळि नी–अभी (दुख करना) छोड़ दीजिए; ऍऩ्ऱु ऍऩ्ऱु–कई बार यह कहकर; इरवा निऩ्ऱाऩ्–याचना की। ३३३

उनके पूरा कह चुकने के पहले ही मुनिवर ने अपने श्रेष्ठ कमल-सम हाथों से राजा को पकड़कर मैली भूमि से उठाया। "विद्वान राजा! आप क्लांत न हों। वे कैकेयी स्वयं आपके प्रिय पुत्र को राज्य दे देंगी। यह आपका दुख करना कैसा? अभी उसे दूर कर दीजिए।" ऐसा कई बार कहकर उन्होंने याचना की। ३३३

शीदप् पऩिनी रळवित् तिण्गा लुक्क मॅऩ्काऱ्
पोदत् तळवे तवळ्वित् तिऩ्शोऱ् पुहला निऩ्ऱाऩ्
ओदक् कडऩ्ज् जऩ्नैया ळुरैनज् जॉरुवा ऱवियक्
कादऱ् पुदल्वऩ् पॅयरे पुहल्वा नुयिरुङ् गण्डाऩ् 334

चीतम् पनि नीर् अळवि–शीतल हिमजल छिड़काकर; तिण् काल्–दृढ़ (दस्ता) डण्ड वाले; उक्कम् मॅऩ् काल्–पंखे की मृदु हवा; पोततुतु अळवु–सुध लौटते तक; तवळ्वित्तु–चलाकर; इऩ् चोॅल् पुकला निऩ्ऱाऩ्–मधुर वचन जो कह रहे थे उन्होंने; ओतम् कटल्–शीतल (क्षीर-) सागर के; नञ्चु अऩ्नैयाळ्–विषतुल्य कैकेयी का; उरै नञ्चु–वचनविष; ऑरु वाऱु अविय–कुछ हद तक मन्द पड़ा, तब; कातल् पुतलवऩ् पॅयरे पुकल्वाऩ्–अपने प्यारे पुत्र का नाम ही कहते रहनेवाले राजा की; उयिरुम् कण्टाऩ्–चेतना देखी। ३३४

उन्होंने राजा पर शीतल हिमजल छिड़का। पंखे से राजा के सचेत होते तक हवा की। उनसे, तब तक, बातें भी करते जाते थे। तब उनको पता लगा कि शीतल क्षीरसागर से निकले विष के समान कैकेयी के वचनविष का प्रभाव कुछ कम हो गया और राम का नाम बराबर लेने वाले दशरथ की सुध लौट आई है। मुनि ने देखा कि राजा श्रीराम का नाम लेते हुए सचेत हो रहे हैं। ३३४

काणा वैया विऩ्ऩिनी यॉळिवाय् कळिपे रवलम्
आणा यहने यिनिना डाळ्वा ऩ्ऱिडैयू ऱुळदो

मुनिगण सोचने लगे कि यह क्या बेमेल स्वर है ! बिलकुल प्रसंगविरोधी और अबद्ध ! उन्होंने वसिष्ठजी से प्रार्थना की कि आप जाकर इसका पता लगा लें। मुनिराज वसिष्ठ भी वहाँ आये। उन्होंने भयंकर तलवार-धारी प्रतापी राजा की बेहोशी देखी तो उन्हें कुछ नहीं सूझा। यह क्या और क्यों हुआ ? इस पर विचार करके— । ३३०

इऱन्दा नल्ल नरश निऱवा दॊऴिवा नल्लन्
मऱन्दा नुणर्वॆन् ऱुन्नाळ् वण्के हयर्कोन् मङ्गै
तुऱन्दा डुयरन् दन्नैत् तुऱवा डुयर्हो शलैयिर्
पिऱन्दार् पॆयरुन् दन्मै पिऱरा लऱिदऱ् कॆळिदो 331

अरचन् इऱन्तान् अल्लन्–राजा मरे नहीं हैं; इऱवातु ऒऴिवान् अल्लन्–विना मरे नहीं रहेंगे भी; वण् केकयर् कोन् मङ्कै–समृद्ध केकय देश के राजा की पुत्री; उणर्वु मऱन्तात्–सुध खो गये; ऎन्ऱु उन्नाळ्–यह नहीं सोचतीं; तुयरम् तन्नै तुऱन्ताळ्–दुख करना ही छोड़ दिया; कोचलै तुयर् तुऱवाळ्–कौसल्या दुख नहीं छोड़ेंगी; इल् पिऱन्तार्–अच्छी कुलोद्‌भवाएँ; पॆयरुम् तन्मै–परस्पर भिन्न हैं, इस स्वभाव को; पिऱराल्–दूसरों को; अऱितऱ्कु ऎळितो–जानना सुलभ है क्या। ३३१

(वसिष्ठ ने यों सोचा।) राजा मरे नही; पर विना मरे रहनेवाले भी नही लगते ! राजा सुध खोये पड़े हैं, केकयराजकुमारी इसकी सुध नहीं लेतीं; दुख नही करती। पर कौसल्या है जो दुख नही छोडती। ये दोनो उच्च कुल की ही पुत्रियाँ है। पर इनमें इतना वैषम्य कैसे आया ? यह विचित्रता दूसरों के लिए जानने को सुलभ नही लगती। ३३१

ऎन्ना वुन्ना मुनिव निडरा लऴिवा डुयरम्
शॊन्ना ळाहा ळॆन्मुन् ऱॊऴुके हयर्कोन् महळै
अन्ना युरैया यरश नयर्वा निलैये दॆन्नत्
तन्ना निहऴ्न्द वॆल्लान् दाने तॆरियच् चॊन्नाळ् 332

ऎन्ना उन्ना–यह सोचकर; मुनिवन्–मुनि (वसिष्ठजी); इटराल् अऴिवाळ्–दुख-पीड़ित; तुयरम् चॊन्नाळ् आकाळ्–(कौसल्या) दुख (का कारण) बता सकनेवाली नहीं होंगी; ऎन–यह सोचकर; मुन् तॊऴु–सामने आकर नमस्कार करनेवाली; केकयर् कोन् मकळै–केकयराज-तनया से; अन्नाय्–माँ; अरचन् अयर्वान्–राजा मूर्छित है; निलै एतु–यह स्थिति क्यों कर; उरैयाय् ऎन्न–कहिए, कहने पर; तन्नाल् निकऴ्न्त ऎल्लाम्-अपने से जो हुआ वह सब; ताने तॆरिय चॊन्नाळ्–स्वयं समझाती हुई बोली। ३३२

यह सोचनेवाले वसिष्ठजी ने आगे सोचा कि दुख-पीड़ित कौसल्या दुख का कारण बताने की स्थिति मे नही है। तब तक कैकेयी ने सामने आकर महर्षि को नमस्कार किया। उनसे महर्षि ने पूछा कि माँ ! राजा मूर्छित क्यों है ? उनकी इस स्थिति का कारण क्या है; बताइए। तब कैकेयी ने अपने कारण जो भी हुआ वह सारा वृत्तान्त कह सुनाया। ३३२

शोर्ड्राळ् शोर्ड्रा मुन्नम् जुडर्वा ळरशर्क् करशैप्
पोर्ड्रा मरैपोर् कैयार् पोडिशूळ् पडिनिन् ड्रॅळुविक्
कर्ड्रा ययरे लवळे तरुनिन् कादर् करशै
ऍर्ड्रे शॅयलिन् ड्रोळिनी यॅन्ड्रॅन् ड्रिरवा निन्ड्रान् 333

चॉर्ड्राळ् चॉर्ड्रामुन्नम्–जो कहने लगीं उनके कहने ही के पूर्व; चुटर् वाळ्–चमकती तलवार वाले; अरचर्क्कु अरचै–राजाधिराज को; पॉन् तामरै पोल–सुन्दर कमल-सम; कैयाल्–हाथों से; पॉटि चूळ् पटि निन्ड्रु–मैली भूमि से; ऍळुवि–पकड़ उठाकर; कर्ड्राय्–शिक्षा प्राप्त; अयरेल्–दुखी मत होइए; अवळे–खुद वे ही; निन् कातर्कु अरचै तरुम्–आपके प्यारे को राज दे देंगी; चॅयल् ऍर्ड्रु–यह आपका करना क्या है; इन्ड्रु ऑळि नी–अभी (दुख करना) छोड़ दीजिए; ऍन्ड्रु ऍन्ड्रु–कई बार यह कहकर; इरवा निन्ड्रान्–याचना की। ३३३

उनके पूरा कह चुकने के पहले ही मुनिवर ने अपने श्रेष्ठ कमल-सम हाथों से राजा को पकड़कर मैली भूमि से उठाया। "विद्वान राजा! आप क्लांत न हों। वे कैकेयी स्वयं आपके प्रिय पुत्र को राज्य दे देंगी। यह आपका दुख करना कैसा? अभी उसे दूर कर दीजिए।" ऐसा कई वार कहकर उन्होंने याचना की। ३३३

शीदप् पन्निनी रळवित् तिण्गा लुक्क मॅन्कार्
पोदत् तळवे तवळ्वित् तिन्शोर् पुहला निन्ड्रान्
ओदक् कडनज् जनैया ळुरैनज् जोरुवा ड्रवियक्
कादर् पुदल्वन् पॅयरे पुहल्वा नुयिरुङ् गण्डान् 334

चीतम् पनि नीर् अळवि–शीतल हिमजल छिड़ककर; तिण् काल्–दृढ़ (दस्ता) डण्ड वाले; उक्कन् मॅन् काल्–पंखे की मृदु हवा; पोतत्तु अळवु–सुध लौटते तक; तवळ्वित्तु–चलाकर; इन् चॉल् पुकला निन्ड्रान्–मधुर वचन जो कह रहे थे उन्होंने; ओतम् कटल्–शीतल (क्षीर-) सागर के; नञ्चु अनैयाळ्–विषतुल्य कैकेयी का; उरै नञ्चु–वचनविष; ऑरु वाड़ अविय–कुछ हद तक मन्द पड़ा, तब; कातल् पुतलवन् पॅयरे पुकल्वान्–अपने प्यारे पुत्र का नाम ही कहते रहनेवाले राजा की; उयिरुम् कण्टान्–चेतना देखी। ३३४

उन्होंने राजा पर शीतल हिमजल छिड़का। पंखे से राजा के सचेत होते तक हवा की। उनसे, तव तक, बातें भी करते जाते थे। तब उनको पता लगा कि शीतल क्षीरसागर से निकले विष के समान कैकेयी के वचनविष का प्रभाव कुछ कम हो गया और राम का नाम बराबर लेने वाले दशरथ की सुध लौट आई है। मुनि ने देखा कि राजा श्रीराम का नाम लेते हुए सचेत हो रहे है। ३३४

काणा वैया विन्निनी यॊळिवाय् कळिपे रवलम्
आणा यहन्ने यिन्निना डाळ्वा निडैयू रुळदो

माणा वुरैया डरुमा मळैये यनैयान् महुडम्
पूणा दौळिवा नैनिन्या मुळमो पौन्ऱे लॅन्ऱान् 335

काणा–(सचेत हुए) देखकर; ऐया–आर्य; इनि नी कळि पेर् अवलम्–आप यह बहुत बड़ा दुख; ऑळिवाय्–छोड़ दीजिए; आण् नायकत्ते–पुरुषोत्तम ही; इनि नाट्टु आळ्वान्–अब राज करेंगे; इटैयूऱु उळतो–और कोई बाधा है; माणा उरैयाळ्–अनादरयोग्य वचन जो बोलीं; तरुम्–वे स्वयं दे देंगी; मा मळैये अनैयान्–काला मेघ-सम राम; मकुटम् पूणातु ऑळिवान् ऍनिन्–मुकुट धारण किये विना जायेंगे तो; याम् उळमो–हम (यहाँ) रहेंगे क्या; पौन्ऱेल्–मन मत मारिए; ऍन्ऱान्–कहा। ३३५

राजा को सचेत देखकर मुनिवर ने कहा कि आर्य ! अब आप यह अत्यधिक दुख छोड़ दीजिए। पुरुषोत्तम ही राज्य करेंगे। कोई संकट नहीं रहेगा। रानी, जिन्होंने अनादर योग्य वचन कहा था स्वयं राज्य को श्रीराम के पास सौंप देंगी। मेघश्याम श्रीराम विना मुकुट पहने, राजा बने वगैर जंगल चले जायेंगे तो क्या आप समझते हैं कि हम सब यहाँ रहेंगे? आप मन छोटा न करें। (आर्य शब्द का जो अर्थ है वही तमिळ 'ऐय' शब्द का भी है।)। ३३५

ऍन्ऱुम् मुनिवन् ऱन्नै निनैया विनैये निनियान्
पौन्ऱुम् मुन्नम् मवनैप् पुनैमा महुडम् पुनैवित्
तौन्ऱुम् वनमॅन् ऱुन्ना वण्णञ् जॅय्दॅन् नुरैयुम्
कुन्ऱुम् पळिपू णामऱ् कावाय् कोवे यॅन्ऱान् 336

ऍन्ऱ मुनिवन् तन्नै–यह जिन्होंने कहा उन मुनि से; निनैया–जिसकी सुध नहीं थी; विनैयेन्–ऐसे पाप का भागी हो गया; इनि नान् पौन्ऱुम् मुन्नम्–अब मेरे मरने से पहले; अवनै–उनको; पुनै मा मकुटम्–धार्य श्रेष्ठ मुकुट को; पुनैवित्तु–धारण कराकर; वनम् ऍन्ऱु ऑन्ऱुम्–वनगमन की कोई बात; उन्ना वण्णम्–न सोचे, वह उपाय; चॅय्तु–करके; ऍन् उरै कुन्ऱुम् पळियुम्–मुझ पर वचन-भंग की निन्दा; पूणामल्–न लगवाकर; कावाय्–बचाइए; कोवे–महाराज; ऍन्ऱान्–कहा। ३३६

राजा ने ऐसा ढाढस देनेवाले मुनिवर्य से कहा— महाराज ! मुझे इसका भान ही नहीं रहा ! मैं ऐसा पापी हूँ ! मेरे मर जाने से पहले आप एक सहायता करें। श्रीराम को मुकुट-धारण करके राजा बना लीजिए। वह वनगमन की बात सोचे ही नहीं उसका उपाय कीजिए और मुझे भी 'वचन तोड़नेवाला' —इस निन्दा से बचाइए। ३३६

मुनियुम् मुनियुञ् जॅय्हैक् कौडियाण् मुहमे मुन्नि
इनियुन् पुदल्वऱ् करशुम् मेनै योरुक् कुयिरुम्
मन्नुवित् वळिनिन् कणवऱ् कुयिरुम् मुदवि वशैतीर्
पुनिदम् मरुवुम् पुहळे पुनैयाय् पौन्ने यॅन्ऱान् 337

मुनियुम्–मुनि ने भी; मुत्तियुम् चॅय्कै–कोपजनक काम की; कॉटियाळ्–निर्मम (कैकेयी) का; मुकम् मुन्नि–मुख देखकर; पॊन्ने–स्वर्ण; इनि–अब; उन् पुतल्वऱ्कु–आपके पुत्र श्रीराम को; मनुविन् वऴि अरचुम्–मनुकुल-परम्परागत राज को; निन् कणवऱ्कु उयिरुम्–अपने पति को जीवन; एनै योरुक्कु उयिरुम्–अन्यों को भी उनके प्राण; उतवि–दान करके; वचै तीर्–निन्दारहित; पुनितम् मरुवुम्–पवित्रता-मिलित; पुकऴे–कीर्ति को; पुनैयाय्–धारण कीजिए; ॲन्ऱान्–बोले। ३३७

मुनिवर तब कोपजनक वचन वाली कैकेयी को देखकर बोले। हे स्वर्णसमान मूल्य वाली ! अब आप स्वयं आपके पुत्र राम को मनुकुल के परम्परागत राज्य को सौंपकर अपने पति को प्राणदान और अन्य प्रजाजनों को जीवनदान कीजिए और आप भी अनिंद्य पवित्र यश धारण कीजिए। ३३७

मॊय्म्माण् विनैवे रऱवॆन् ऱुयर्वान् मॊऴिया मुन्नम्
विम्मा वऴुवा ळरशन् मॆय्यिऱ् ऱिरिवा नॆन्निन्
इम्मा वुलहत् तुयिरो डिनिवाऴ् वुहवे नॅन्शॊल्
पॊय्म्मा णामऱ् किन्ऱे पॊन्ऱा दॊऴिये नॆन्ऱाळ् 338

मॊय् माण् विनै–सशक्त दोनो (पाप, पुण्य) कर्मो को; वेर् अऱ वॆन्ऱु–जड़ तक नाश करके उन पर विजय पाकर; उयर्वान्–उत्कृष्ट जो हुए थे उनके; मॊऴिया मुन्नम्–बात पूरा करने के पूर्व ही; विम्मा अऴुवाळ्–सिसकते हुए रोनेवाली; अरचन् मॆय्यिल् तिरिवान् ॲन्निन्–राजा सत्यपालन से मुकर जायँगे तो; इनि इ मा उलकत्तु–अब इस विशाल पृथ्वी पर; उयिरोटु–प्राण लेकर; वाऴ्वु–जीना; उकवेन्–नहीं चाहूँगी; ॲन् चॊल्–मेरा वचन; पॊय् माणामऱ्कु–झूठा न बन जाए, इसके लिए; इन्ऱे पॊन्ऱातु ऒऴियेन्–आज ही मरे बिना नहीं रहूँगी; ॲन्ऱाळ्–कहा। ३३८

वसिष्ठजी वलवान कर्मबन्धन को पूर्णरूप से काट चुके महात्मा थे। उनकी बातें पूरी होते तक भी कैकेयी ने सब्र नहीं किया। उसके पूर्व ही वे बोलीं। सिसक-सिसककर रोते हुए उन्होंने कहा कि अगर राजा अपने सत्यपालन से मुकर जाएँगे तो इस विशाल पृथ्वी पर प्राणों के साथ जीना नहीं चाहूँगी। मेरी बात झुठलायी न जाय इसके लिए मैं मरे बिना नही रहूँगी। उन्होंने अपना दृढ़ निश्चय सुना दिया। ३३८

कॊऴुनन् ऱुञ्जुम् मॆन्नवुङ् गॊळ्ळा दुलहम् मॆन्नवुम्
पऴिनिन् ऱुयरुम् मॆन्नवुम् पावम् मुळदा मॆन्नवुम्
ऒऴिहिन् ऱिलैयन् ऱियुमॊन् ऱुणर्हिन् ऱिलैया निनिमेल्
मॊऴिहिन् ऱनवॆन् ऱॆन्ना मुनियुम् मुऱैयन् ऱॆन्वान् 339

मुनियुम्–(वसिष्ठ) मुनि भी; कॊऴुनन् तुञ्चुम् ॲन्नवुम्–पति मर जाएँगे यह बात और; उलकम् कॊळ्ळातु–संसार सहन नहीं करेगा यह भी; पऴि निन्ऱु उयरुम् ॲन्नवुम्–अपमान अचल होगा और बढ़ेगा यह भी; पावम् उळतु आम्–पाप होगा;

ऎंतवुम्–यह भी सोचकर; ऒऴिकिन्ऱिलै–हठ नहीं छोड़तीं; अन्ऱियुम्–इसके अलावा; ऒन्ऱु उणर्किन्ऱिलै–(दूसरों की) एक भी नहीं मानतीं; यान् इनिमेल्–मेरे, आगे; मॊऴिकिन्ऱत–कथनीय; ऎन्–क्या है; ऎन्ना–कहकर; मुऱै अन्ऱु–यह ठीक नहीं है; ऎन्पान्–आगे भी बोले। ३३९

मुनिवर ने यह सुना तो उन्हें रंज हुआ। वे जरा डाँटते हुए बोले—आप यह नही देखती कि पति मर जायँगे, संसार सहन नहीं करेगा, अपयश बढ़ेगा और आप पर पाप लगेगा। यह समझकर आप अपना हठ नही छोड़ती। फिर दूसरों की भी एक नही सुनतीं। आगे मेरे पास कहने को क्या है ? यह न्यायसम्मत नही। फिर वे आगे भी कहने लगे। ३३९

कण्णो डादे कणव नुयिरो डिडर्का णादे
पुण्णू डोडुङ् गनलो विडमो वॆन्नप् पुहल्वाय्
पॆण्णा हुदियो मायप् पेयो कॊडियाय् नीयिम्
मण्णो डुन्नो डॆन्ना मनमे वलिदे यॆन्ऱान् 340

कॊटियाय्–निष्ठुर; कण्णोटाते–दाक्षिण्यरहित; कणवन् उयिर् ओटु इटर्–पतियों के प्राण निकलते-से है, उससे होनेवाला दुख भी; काणाते–नहीं देखतीं; पुण् ऊटु ओटुम् कनलो–व्रण में घुसनेवाली आग क्या; विटमो–विष; ऎन्न–ऐसा समझी जाइए ऐसा; पुकल्वाय्–बात करती हैं; नी पॆण् आकुतियो–आप भी स्त्री हैं क्या; मायम् पेयो–मायावी पिशाच; इ मण्णोटु–इस मट्टी से; उन्नोटु–आपका; ऎन् आम्–क्या (लाभ) होगा; मनम् वलिते–आपका मन कठोर है; ऎन्ऱान्–बोले। ३४०

हे निष्ठुर ! दया-दाक्षिण्य नहीं दिखाती। पति के प्राण-त्याग के दुख को भी नही देखती। क्या आप व्रण में घुसनेवाली आग है ? विष है ? —ऐसा पूछने योग्य रीति से बात करती है। आप स्त्री हैं, या माया-पिशाचिनी है ? इस मट्टी को लेकर आपका क्या लाभ होगा ? क्या आपका मन इतना कठोर है ? (आश्चर्य है !)। ३४०

वायान् मन्नन् महनै वनमे हॆन्ना मुन्नम्
नीये शॊन्ना यवनो निमिर्हा न्ऱिडैवन् नॆऱियिऱ्
पोयो पुहलो तविरान् पुहऴो डुयिरैच् चुडुवॆन्
दीयोय् निन्बोऱ् ऱीयो रुळरो शॆयलॆन् नॆन्ऱान् 341

मन्नवन्–राजा (के); वायाल्–अपने मुख से; मकनै–अपने पुत्र को; वनम् एकु–वन जाओ; ऎन्ना मुन्नम्–कहने के पहले; नीये चॊन्नाय्–आप ही ने कह दिया; अवनो–वे तो; निमिर् कान् इटै–विस्तृत वन में; वल् नॆऱियिल्–कठोर मार्ग में; पोय् पुकल्–जा पहुँचना; तविरान्–नहीं छोड़ेंगे; पुकऴोटु–यश के साथ; उयिरै चुटु–प्राणों का भी नाश करनेवाली; वॆम् तीयोय्–भयंकरअग्नि-समाना; निन् पोल् तीयोर्–आपके समान क्रूर; उळरो–होगे क्या; चॆयल् ऎन्–करनी भी कैसी; ऎन्ऱान्–कहा। ३४१

मुनिवर आगे बोले। चक्रवर्ती के अपने मुख से, 'वन जाओ' कहने से पहले ही आपने उनसे (राजा की आज्ञा के रूप में) कह दिया। श्रीराम भी विस्तृत जंगल में कठोर मार्ग तय करते हुए जा पहुँचने से नहीं रुकेंगे। आप भी कितनी क्रूर है कि आपने यश और चक्रवर्ती के प्राण दोनो को जला दिया है ? आपके समान निर्मम स्त्री इस संसार में और कोई होंगी क्या ? नहीं मिलेंगी। आपका भी कैसा काम है ? । ३४१

तावित्‌ मुनिवन्‌ पुहलत्‌ तळरा नित्‌र मत्‌नन्‌
नावित्‌ नञ्ज मुडैय नङ्गै तन्‌नै नोक्किप्‌
पावि नीये वॅङ्गान्‌ पडर्‌वा यॅन्‌रॅन्‌ नुयिरै
एवि नायो ववनु मेहिन्‌नानो वॅन्‌रान्‌ 342

तावित्‌ मुन्निवन्‌–निर्दोष मुनिवर के; पुकल–कहने पर; तळरा नित्‌र मत्‌नन्‌–शिथिल (हुए) राजा; नाविल्‌ नञ्चम्‌ उटैय–विष-जिह्वा; नङ्कै तन्‌नै–स्त्री को; नोक्कि–देखकर; पावि–पापिनी; नीये–तुम स्वय ही; अॅन्‌ उयिरै–मेरे प्राण (सम पुत्र) को; वॅम्‌ कान्‌ पटर्‌वाय्‌ अॅन–भयंकर वन में जाओ, यह; एवित्तायो–आज्ञा दिला चुकीं; अवन्‌म्‌–वह भी; एकिन्‌नानो–चला गया क्या; अॅन्‌रान्‌–पूछा। ३४२

अनिंद्य मुनि ने यह बात कही तो चक्रवर्ती को सच्ची स्थिति मालूम हो गई। उन्होंने, बहुत पीड़ा का अनुभव करते हुए विकल होकर, विषजिह्वा कैकेयी से पूछा— क्या तुमने अपनी ओर से मेरे प्राणप्यारे पुत्र को जंगल जाने की आज्ञा दिला दी ? वह भी चला गया क्या ? । ३४२

कण्डे नॅञ्जङ्‌ गळियाऱ्‌ कनिवाय्‌ विडना नॅडुनाळ्‌
उण्डे नदन्ना नीयॅन्‌ नुयिरै मुदलो डुण्डाय्‌
पण्डे यॅरिमुन्‌ नुन्नैप्‌ पावी देवि याहक्‌
कॉण्डे नल्लेन्‌ वेरोर्‌ कूऱ्‌रन्‌ देडिक्‌ कॉण्डेन्‌ 343

पावी–पापिनी; नॅञ्चम्‌ कण्टेन्‌–तुम्हारा मन जाना; कळियाल्‌–(काम, मोह) मस्ती के साथ; नान्‌–मैंने; कनिवाय्‌ विटम्‌–(बिंब-) फल-सम मुख (अधर) का विष; नॅटु नाळ्‌ उण्टेन्‌–बहुत काल तक पिया; अतन्नाल्‌–उससे (उसके बदले); नी मुतलोटु–तुमने मूल के साथ; अॅन्‌ उयिरै उण्टाय्‌–मेरे प्राण पी लिये; पण्टे–पहले ही; अॅरि मुन्‌–अग्नि को साक्षी बनाकर; उन्नै तेवि आक कॉण्टेन्‌ अल्लेन्‌–तुम्हें महिषी नहीं बनाया; वेऱु ओर्‌ कूऱ्‌रम्‌–विलक्षण एक यम को; तेटि कॉण्टेन्‌–ढूँढ़ लिया। ३४३

चक्रवर्ती ने और भी कहा— पापिनी ! तुम्हारा मन समझ लिया। बहुत दिन तक मैने तुम्हारा बिंबाधर-निसृत 'विष' पिया था। अब उसके बदले तुम मेरे प्राणो को मूल सहित पी चुकी हो। पहले अग्नि को साक्षी बनाकर तुमसे विवाह करके मैने रानी को नही वरा था; परन्तु एक

विलक्षण यम को ढूँढ़ लिया। (तुमको रानी समझा पर तुम यम निकली।)। ३४३

विऴिक्कुङ् गणवे ऱिल्ला वॅङ्गा नॅन्कात् मुऴैयैच्
चुऴिक्कुम् विनैया लेहच् चूऴ्वा यॅन्नैप् पोऴ्वाय्
पऴिक्कु नाणाय् माणाप् पावि यिनियॅन् पलवुन्
कळुत्ति नाणुन् महऱ्कुक् काप्पु नाणा मॅन्ऱान् 344

माणा पावि–अनादरयोग्य पापिनी; विऴिक्कुम् कण्–देखनेवाली आँखें; तन्नैयन्ऱि वेऱु इल्ला–उसको छोड़कर मेरी कोई और नहीं ऐसे; ॲन् काल् मुऴैयै–मेरे वंश के किसलय को; वॅम् कान् एक–भयंकर कानन में भेजने का; चुऴिक्कुम् वित्तैयाल्–गोलमाल के काम द्वारा; चूऴ्वाय्–षड्यन्त्र रचती हो; ॲन्नै पोऴ्वाय्–मुझे काट रही हो; पऴिक्कुम् नाणाय्–कलंक से नहीं डरती; इनि पल ॲन्–अब अनेक बातों से क्या; उन् कळुत्तिल् नाण्–तुम्हारे गले का मंगलसूत्र ही; उन् मकऱ्कु–तुम्हारे पुत्र का; काप्पु नाण् आम्–रक्षाबन्धन का सूत्र बन जायगा; ॲन्ऱान्–कहा। ३४४

आदर के लिए अयोग्य पापिनी! श्रीराम मेरे वंश का वृक्ष का 'किसलय' है। मेरी आँखें ही है। तुम उसको भयंकर वन में भेजने का, अपने वंचक काम द्वारा षड्यन्त्र रच चुकी हो! उससे तुम मेरे प्राणों को चीर रही हो। तुम कलंक से नहीं डरतीं। हाँ, अब कितना भी कहूँ क्या लाभ है? पर यह समझ लो कि तुम्हारे गले का मंगल-सूत्र (विवाह के समय में पति द्वारा पत्नी के गले में पहनाया जाता है। यह एक ही बहुमुख्य अहिवात का सूचक है और मंगलकारी वस्तु है) तोड़ लेकर अपने पुत्र के अभिषेक के अवसर पर जो रक्षा-बन्धन किया जायगा उसके काम में लाया जानेवाला है (तुम विधवा बन जाओगी)। ३४४

इन्ने पलवुम् पहर्वा निरङ्गा दाळै नोक्किच्
चॊन्ने निन्ऱे यिवळॆन् ऱार मल्ल डुऱन्देन्
मन्ने यावान् वरुमप् परदन् ऱन्नैयुम् महनॆन्
ऱुन्नेन् मुनिवा ववनु माहा नुरिमैक् कॅन्ऱान् 345

इन्ने–इस प्रकार; पलवुम् पकर्वान्–विविध बातें कहकर; इरङ्कातााळै–निर्दय को; नोक्कि–देखकर; मुनिवा–महर्षे; इन्ऱे चॊन्नेन्–अभी कहता हूँ; इवळ् ॲन् तारम् अल्लळ्–यह मेरी पत्नी नहीं है; तुऱन्तेन्–त्याग दिया; मन् आवान् वरुम्–राजा बनकर आनेवाले; अ परतन् तन्नैयुम्–उन भरत को भी; मकन् ॲन्ऱु उन्नेन्–पुत्र नहीं मानूँगा; अवन् उरिमैक्कुम् आकान्–वह मेरे पितृकृत्य करने का अधिकारी नहीं होगा; ॲन्ऱान्–कहा। ३४५

दशरथ ने कितनी ही ऐसी बातें कहीं। पर कैकेयी कुछ भी नहीं पसीजी। तब राजा ने वसिष्ठजी से कैकेयी के सम्बन्ध में अपना फैसला

सुनाया। महर्षे! अभी कहे देता हूँ। यह मेरी धर्मपत्नी नहीं है। उसको मैं त्याग चुका। उसके पुत्र भरत को भी, जो राजा बनेगा, अपना पुत्र नहीं मानता। उसे दाहक्रिया आदि पितृकर्म करने का अधिकार नहीं होगा। ३४५

ऍन्नैक् कण्डु मेहा वण्ण मिडैयू रुडैयान्
उन्नैक् कण्डु मिलनो वॅन्ना वुयर्को शलैयैप्
पिन्नैक् कण्डा ननैयान् पिरियक् कण्ड तुयरम्
तन्नैक् कण्डे तविर्वा डळर्वा णिलैयिर् रळर्वान् 346

उयर् कोचलैयै–उत्कृष्ट (गुण वाली) कौसल्यादेवी से; ऍन्नै कण्टुम् एका वण्णम्–मुझसे मिलने के बाद जाने से रोकनेवाली; इटैयूरु उटैयान्–बाधा जिसको हुई थी वह; उन्नैयुम् कण्टिलनो–तुमसे भी नहीं मिला क्या; ऍन्ना–कहकर; पिन्नै–बाद; कण् अनयान् पिरिय–आँख-सम प्यारा छोड़ जाने से; कण्ट तुयरम्–उत्पन्न दुख; तन्नै कण्टु तविर्वाळ्–अपने को (दशरथ को) देखकर दूर करने के विचार से आकर; तळर्वाळ्–श्रांत होनेवाली उनकी; निलैयिन्–स्थिति से; तळर्वान्–(प्रभावित हो) श्रांत पड़ गये। ३४६

फिर दशरथ ने गुणोन्नत कौसल्या से पूछा कि देवी! मुझसे मिलकर जाने में उसे बाधा हो गई थी। क्या वह तुमसे भी नहीं मिला? कौसल्या अपनी आँख के समान पुत्र के वियोग से दुखी होकर उस दुख को राजा की संगति में भूलने के विचार से आई थी। यह राजा ने जाना और उनकी स्थिति को देखकर विचलित हो गई। कौसल्या की स्थिति देखकर राजा भी व्याकुल हो गये। ३४६

माऱ्ऱाळ् शॅयला मॅन्ऩुरुङ् गणवन् वरमीन् दुळ्ळम्
आऱ्ऱा दयर्न्दा नॅन्ऩु मऱिन्दा ळवळुम् मवनैत्
तेऱ्ऱा निन्ऱाण् महनैत् तिरिवा नॅन्ऱा ळरशन्
तोऱ्ऱान् मॅय्यॅन् ऱुलहञ् जॊल्लुम् बळिक्कुञ् जोर्वाळ् 347

माऱ्ऱाळ् चॅयल् आम् ऍन्ऱुम्–सौत का काम है, यह और; कणवन् वरम् ईनतु–पति ने वर देकर; उळ्ळम् आऱ्ऱातु–चित्तक्षमता खोकर; अयर्न्तान्–(संकटग्रस्त हो) बेहोश हुए, यह भी; अऱिन्ताळ् अवळुम्–जिन्होंने जाना वे भी; अवनै तेऱ्ऱा निन्ऱाळ्–उन्हें ढाढस देते हुए; मकनै–श्रीराम (को); तिरिवान्–लौट आयगा; ऍन्ऱाळ्–बोली; अरचन् मॅय् तोऱ्ऱान् ऍन्ऱु–राजा सत्य-पराजित हो गये, इस; उलकम् चॊल्लुम् पळिक्कुम्–लोक-निंदा से भी; चोर्वाळ्–मन में मुरझाई। ३४७

कौसल्या ने जब यह जाना कि यह सब सपत्नी का काम है और राजा वर देकर संकट में पड़े बेहोश हो गये थे। यह जानकर उन्होंने राजा को धीरज बँधाते हुए कहा कि श्रीराम, हमारा पुत्र लौट आयगा। पर उससे राजा की सत्यवादिता की हानि हो जायगी। राजा की सत्य के क्षेत्र में

पराजय हो जायगी। लोकनिन्दा होगी। राजा के सत्यपालन की अभिलाषा रखनेवाली कौसल्या इस विचार से वहुत खिन्नमन हो गईं। ३४७

तळ्ळा निलैशान् मॆय्म्मै तळ्ळुवा वहैता नॆय्दिन्
ऒळ्ळा निलैहूर् पॆरुमैक् किळिवा मॆन्नला लुरवोय्
विळ्ळा निलैशे रन्बान् महन्मेन् मॆलियिन् नुलहम्
कॊळ्ळा दन्ऱो वॆन्ऱाळ् कणवन् कुऱैयक् कुऱैवाळ् 348

कणवन् कुऱैय–पति के कृश होने से; कुऱैवाळ्–खुद क्षीण होनेवाली; उरवोय्–बुद्धिवली; तळ्ळा निलै चाल् मॆय्म्मै–जिसका अनिवार्य रूप से पालन करने में ही गौरव है, उस सत्य को; तळ्ळुवा वकै ऎय्तिन्–न पालने की स्थिति को प्राप्त होंगे तो (छोड़ देंगे तो); ऒळ्ळा निलै कूर् पॆरुमैक्कु–अनिद्य आदर का स्थान प्राप्त आपके गौरव की; इळिवु आम् ऎन्तलाल्–हानि होगी, इसलिए; मकन् मेल्–पुत्र पर; विळ्ळा निलै चेर् अन्पाल्–अभिन्न स्थिति के प्रेम के कारण; मॆलियिन्–अब ढिलाई होगी तो; उलकम् कॊळ्ळातु अन्ऱो–संसार (के श्रेष्ठों का समुदाय) नहीं मानेगा न; ऎन्ऱाळ्–कहा। ३४८

राजा कृश हुए —यह देखकर कौसल्यादेवी भी निर्बल हुईं। तो भी उन्होंने दशरथ को समझाया कि बुद्धिवली! अनिवार्य पालन से ही सत्य यशदायी बनता है। अगर आप उसके पालन को छोड़ देंगे तो अनिन्द्य आपके यश की हानि हो जायगी। इसलिए अकाट्य पुत्र-प्रेम के वश में पड़कर सत्यपालन में ढिलाई दिखायेंगे तो संसार का श्रेष्ठ समाज उसको उचित नहीं मानेगा न! । ३४८

पोवा दॊळिया नॆन्ऱाळ् पुदल्वन् ऱन्नैक् कणवन्
शावा दॊळिया नॆन्ऱॆन् ऱुळ्ळन् दळ्ळुऱ् ऱयर्वाळ्
कावा यॆन्नाण् महनैक् कणवन् पुहळुक् कळिवाळ्
आवा वुयर्को शलैया मन्न मॆन्नुऱ् ऱनळे 349

उयर् कोचलै आम् अन्नम्–गुणोन्नत कौसल्या हंसिनी (सी देवी); पुतल्वन् तन्नै–अपने पुत्र को; पोवातु ऒळियान्–बिना गये नहीं रहेगा; ऎन्ऱाळ्–समझकर; कणवन् चावातु ऒळियान्–पति मरे विना नहीं रहेंगे; ऎन्ऱु ऎन्ऱु–ऐसा सोच-सोचकर; उळ्ळम् तळ्ळुऱ्ऱु–चित्ताकुल हो; अयर्वाळ्–लटतीं; कणवन् पुकळुक्कु अळिवाळ्–पति के यश के लिए मरतीं (उसकी उत्कट इच्छा करतीं); मकनै कावाय् ऎन्नाळ्–पुत्र को बचाओ (रोको) नही कहतीं; आ, आ–हाय, हाय; ऎन्न् उऱ्ऱनळ्–कैसी हो (दुखी) हो गईं। ३४९

गुणोन्नत हंसिनी-समान कौसल्या ने समझ लिया कि श्रीराम बिना वन गए नही रहेगा। "पति भी विना मरे जीवित नहीं रहेंगे" यह बार-बार सोचकर वे विकलमन हुईं और शिथिल हुईं। पति के यश को प्राण-सम चाहनेवाली वे राजा से यह कह नही सकी कि पुत्र को वन जाने से

बचाइए (रोकिए)। हाय ! उनकी स्थिति भी कैसी दयनीय हो गई ? । ३४९

उणर्वा तत़ैया ळुरैयालु यर्न्दा नुरैशाल् कुमरन्
पुणरा तिलमे वतमे पोवा नेया मॅत़्ता
इणरार् तरुदा ररश तिडरा लयर्वात् वितैयेत्
तुणैवा तुणैवा वॅत़्रान् रोत़्रा रोत़्रा यॅत़्रान् 350

इणर् आर् तरु तार्–(फूलों के) गुच्छों से पूर्ण मालाधारी; अरचत्–राजा; अनैयाळ् उरैयाल्–उनके कथन से; उयर्न्तात्–गुणोत्कृष्ट (और); उरै चाल्–प्रकीर्तित; कुमरत्–कुँअर श्रीराम; निलम् पुणरात्–भूमि से विवाह नहीं करेगा; वत्तम् पोवाने आम्–वन जाएगा ही; ऑत़्ता उणर्वात्–ऐसा सोचकर; इटराल् अयर्वात्–दुखी हो विकल होकर; विनैयेत् तुणैवा–पापी, मेरे सहायक; तुणै वा–सहायता के लिए आओ; ॲत़्रात्–कहा; तोत़्राल्–उत्तम कुमार; तोत़्राय्–सामने आ जाओ; ॲत़्रात्–कहा। ३५०

पुष्प के गुच्छों से मिली मालाधारी दशरथ ने कौसल्या के वचन से जान लिया कि गुणोत्कृष्ट और प्रकीर्तित श्रीराम भूपति नहीं बनेंगे और वन जाएँगे ही। यह जानकर दुख से लट गये और विलाप करने लगे कि हे राम ! इस पापी के सहायक ! आओ सहारा दो। उत्तम पुत्र ! सामने आओ। ३५०

कण्णु नीरा युयिरु मॉळुहक् कळिया नित्ऱेत्
ऑण्णु नीरात् मऱैयो रॅरिमुन् तित्मेऱ् चॉरिय
मण्णु नीराय् वन्द पुनलै महत्ते वितैयेत्
उण्णु नीरा युदवि युयर्का तडैवा यॅत़्रान् 351

मकत्ते–हे पुत्र; कण्णुम् नीर् आय् ऑळुक–आँखों के (अश्रु) जल होकर बहते; उयिरुम् कळिया–प्राणों के भी निकलते; नित्ऱेत्–(ऐसी स्थिति में) रहता हूँ; ऑण्णुम् नीराल्–मान्य प्रकार से; मऱैयोर्–वेदज्ञ; ॲरि मुत्–अग्नि के सामने; नित् मेल् चॉरिय–तुम्हारे ऊपर (अभिषेक) जल डालें; मण्णुम् नीर् आय् वन्त–मज्जनजल जो आया है; पुत्तलै–उस सलिल को; विनैयेत्–मुझ पापी को; उण्णुम् नीर् आय्–(मृत्यु के बाद) तर्पण का जल; उतवि–देकर; उयर् कात् अटैवाय्–उच्चवृक्ष-जंगल में जाओ; ॲत़्रात्–कहा। ३५१

दशरथजी ने राम को सम्बोधित करते हुए विलाप किया। हे राम ! हे पुत्र ! मेरी आँखें स्वयं द्रवीभूत हो बह रही हैं। प्राण भी जाने को छटपटा रहे हैं, सबकी प्रशंसा और वाहवाही के साथ, अग्नि के सामने वेदज्ञों द्वारा तुम्हारा अभिषेक करने के लिए मंगलमज्जन जल जो आया है उसको लेकर पापी, मेरा तर्पण करो; तब ऊँचे पेड़ों के वन में जाओ। ३५१

पडैमा णरशैप् पलहाल् मऴुवा ळदत्ता लॆऱिवान्
मिडैमा वलिदा ननैयान् विल्ला लडुमा वल्लाय्
उडैमा महुडम् वुनैयॆत् ऱुरैया वुडने कॊडियेन्
शडैमा महुडम् पुनैयत् तन्दे नन्दो वॆन्ऱान् 352

पटै माण् अरचै–सेनाविशिष्ट राजाओं को; पल काल्–अनेक वार; मऴु वाळ् अतताल्–परशु के अस्त्र से; ऍऱिवान्–चलाकर (जिन्होंने) परास्त किया उनका; मिटै मा वलि–सुदृढ़ और वड़े वल को; अनैयान् विल्लाल्–उन्हीं के धनुष से; अटुम् आऱु वल्लाय्–मिटानेवाले समर्थ; कॊटियेत–क्रूर मैंने; उटै मा मकुटम्–(तुम्हारे ही) स्वत्व का उन्नत किरीट; पुनै ऍन्ऱु उरैया–पहनो कहकर; उटत्ते–तुरन्त; चटै मा मकुटम्–जटा का वड़ा किरीट; पुनैय तन्तेन्–पहनने को दिया; अन्तो–हाय; ऍन्ऱान्–कहा। ३५२

सेना सहित राजाओं को अनेक वार जिन्होंने अपना परशु फेंककर परास्त किया था उन परशुराम के कठिन वल को उन्हीं के धनु से नष्ट करनेवाले, हे राम ! मै वड़ा क्रूर हूँ। पहले मैंने कहा कि यह उत्तम और उन्नत किरीट तुम्हारा है; धारण कर लो। पर तुरन्त आज्ञा दे दी कि जटा रूपी मुकुट धारण कर लो। ३५२

करुत्ता युरुवम् मतमुङ् गण्णुङ् गैयुञ् जॆय्याय्
पॊरुत्ताय् पॊऱैये यिऱैवन् पुरमून् ऱॆरित्त पोर्विल्
इरुत्ताय् तमिये नॆन्ना दॆन्ऩै यिम्मूप् पिडैये
वॆरुत्ता यिनिनान् वाणाळ् वेण्डेन् वेण्डे नॆन्ऱान् 353

उरुवम् करुत्ताय्–श्यामरूप; मनमुम् कण्णुम् कैयुम् चॆय्याय्–लाल मन, आँखों और हाथों वाले; पॊऱैये पॊरुत्ताय्–क्षमाशील; पुरम् मून्ऱु ऍरित्त इऱैवन्–त्रिपुरदाही परमेश्वर का; पोर् विल्–युद्धधनु; इऱुत्ताय्–तोड़नेवाले; इ मूप्पिटै–इस वार्द्धक्य में; तमियेन् ऍन्नातु–निस्सहाय (हूँ इसका भी) विचार न करके; ऍन्नै वॆरुत्ताय्–मुझसे घृणा करते हो; इति–अव; नान्–मै; वाऴ्नाळ् वेण्टेन्–जीवन के दिन नहीं चाहता; वेण्टेन्–नही चाहता; ऍन्ऱान्–कहा। ३५३

दशरथ ने आगे कहा— श्याम रूप ! मन के श्रेष्ठ ! लाल (सुन्दर) आँखों और हाथों वाले; हे क्षमाशील ! त्रिपुरान्तकधनु-भंजक ! मेरे इस वार्द्धक्य में मेरी निस्सहायता का भी विचार न करके मुझे घृणा करके (त्याग कर) जाते हो अव और दिन जीना नही चाहता, नही चाहता। ३५३

पॊन्निन् मुन्न मॊळिरुम् बॊन्ने पुहऴिन् पुहऴे
मिन्निन् मिन्नुम् वरिविऱ् कुमरा मॆय्यिन् मॆय्ये
ऍन्निन् मुन्नम् वननी यडैदऱ् कॊळिये नल्लेन्
उन्निन् मुन्नम् बुहुवे नयर्वा नहम्या नॆन्ऱान् 354

पॉन्निन् मुन्नम्–स्वर्ण से बढ़कर; ऑळिरुम्–चमकनेवाले; पॉन्नॅ–स्वर्ण; पुकळिन् पुकळ–यश से अधिक यशस्वी; मिन्निन् मिन्नुम्–बिजली से भी अधिक दमक वाले; वरिविल् कुमरा–बन्धनयुक्त धनुर्धर; मॅय्यिन् मॅय्ये–सत्य के विग्रह; ॲन्निन् मुन्नम्–मुझसे पहले; नी वनम् अटैतऱ्कु–तुम वन चले जाओ, इतना; ॲळियेन् अल्लेन–(मैं) क्षुद्र नहीं हूँ; उन्निन् मुन्नम्–तुमसे पहले; यान् उयर् वान् अकम्–मैं उच्च आकाशलोक (स्वर्ग) में; पुकुवेन्–पहुँचूँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ३५४

स्वर्ण से अधिक मूल्यवान स्वर्ण ! यश से अधिक यशस्वी ! बिजली से अधिक चमकनेवाले धनु के धारक ! सत्यमूर्ति ! तुमको मुझसे पहले, मुझे जीता छोड़कर, वन जाने दूँ मैं इतना क्षुद्र या मन का दुर्बल नहीं हूँ। तुम निकलो, इसके पहले ही मैं ऊपर स्वर्ग पहुँच जाऊँगा। ३५४

नहुदऱ् कौत्त नञ्जु नेयत् ताले यावि
उहुदऱ् कौत्त वुडलु मुडैये नुन्बो लल्लेन्
तहुदऱ् कौत्त शनहन् तैयल् कैयैप् पऱ्ऱिप्
पुहुदक् कण्ड कण्णाऱ् पोहक् काणे नॅन्ऱान् 355

नॅकुतऱ्कु ऑत्त नॅञ्चुम्–द्रवणशक्य मन; नेयत्ताले–स्नेह से; आवि उकुतऱ्कु ऑत्त उटलुम्–जीवन छोड़ सकनेवाला शरीर; उटैयेन्–मेरे पास है; उन् पोल् अल्लेन्–तुम्हारे समान नहीं हूँ; तकुतऱ्कु ऑत्त–योग्यता रखनेवाली; जनकन् तैयल्–जनक की पुत्री का; कैयै पऱ्ऱि–पाणीग्रहण करके; पुकुत कण्ट कण्णाल्–(नगर-) प्रवेश करते देखा (जिन्होंने) उन आँखों से; पोक काणेन्–नगर छोड़ जाना न देख सकूँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ३५५

मेरे पास द्रवणशील मन है। शरीर इतना दुर्बल हो गया कि प्राण छोड़ देने में कोई कष्ट नहीं होगा। तुम्हारे समान मेरे पास कठोरता नहीं है। मैंने तुमको अपने योग्य, जनकपुत्री के साथ हाथ में हाथ डाले नगर में प्रवेश करते देखा था। क्या उन्हीं आँखों से मैं तुम्हारा नगर-निर्गम देख सकूँगा ? नहीं —कहा। ३५५

ॲऱ्ऱे पहर्वे निनिया नॅन्ने युन्निऱ् पिरिय
वऱ्ऱे युलहम् मॅन्निनुम् वाने वरुन्दा दॅनिनुम्
पॉऱ्ऱे ररशे तमियेन् पुहळे युयिरे युन्नैप्
पॅऱ्ऱे नरुमै यऱिवेन् पिळैयेन् पिळैये नॅन्ऱान् 356

पॉन् तेर् अरचे–स्वर्णरथ राजा; तमियेन् पुकळे–मेरे यश के हेतुभूत; उयिरे–मेरे प्राण (सम); ॲन्ने–(यह) क्या (हो गया); इनि–अब; यान् ॲऱ्ऱु पकर्वेन्–मैं कैसे बताऊँ; उलकम्–सारा संसार; उन्निल् पिरिय वऱ्ऱे ॲनिनुम्–तुमसे बिछुड़ा रह सकता है, तो भी; वान् वरुन्तातु–स्वर्ग नहीं पछतायेगा; ॲनिनुम्–तो भी; अरुमै–तुम्हारा मूल्य; पॅऱ्ऱेन् अऱिवेन्–जनक के नाते मै जानता हूँ; पिळैयेन्–जीता नहीं रहूँगा; पिळैयेन्–नहीं जिऊँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ३५६

दशरथजी आगे विलापते हुए कहते हैं— स्वर्णरथी ! मेरे यश के कारणभूत ! मेरे प्राण ! यह क्या हो गया ? मैं अपनी दशा कैसे कहूँ ? यह सारा संसार तुमसे विलग रह सके तो भी, आकाशलोक भी तुम्हारा वियोग सह सके तो भी मैं तुम्हारा जनक हूँ, मैं तुम्हारा मूल्य जानता हूँ; मैं नही बचूँगा, न बचूँगा । ३५६

अळ्ळऱ् पळ्ळप् पुनलूशू ऴहत्तमा निलमु मरशुम्
कॉळ्ळक् कुऱैया निदियित् कुवैयु मुदला मॅवैयुम्
कळ्ळक् कैहे शिक्के युदविप् पुहऴ्हैक् कॉण्ड
वळ्ळऱ् ऱनमॅन् नुयिरै माय्क्कु माय्क्कु मॅन्ऱान् 357

अळ्ळल्–पंकिल; पळ्ळम्–गहरा; पुनल् चूऴ्–सागर-वलयित; अकल् मा निलमुम्–विस्तृत श्रेष्ठ राज्य; अरचुम्–उस पर शासन का अधिकार; कॉळ्ळ कुऱैया–लेने से कम न होनेवाली; नितियित् कुवैयुम्–निधि की राशियाँ; मुतल् आम्–आदि; ॲवैयुम्–सबको; कळ्ळम् कैकेचिक्के–वंचक कैकेयी को ही; उतवि–दान करके; पुकऴ् कै कॉण्ट–यश ग्रहण का; वळ्ळल् ततम्–दातापन; ॲन् उयिरै माय्क्कुम्–मेरे प्राणों को हर लेगा; माय्क्कुम्–हर ही लेगा; ॲन्ऱान्–कहा । ३५७

मैंने पंकिल और गहरे सागर से घिरी हुई विस्तृत भूमि, उस पर शासन का अधिकार, अक्षय निधि की राशियाँ आदि वंचक कैकेयी को दिया और उससे अपार यश अर्जित किया भी, सही । पर यह दातापन मेरे प्राण हर लेनेवाला है; हाँ हर अवश्य लेगा । ३५७

ऑलियार् कडलूशू ऴुलहत् तुयर्वा ऩिडैना हरित्तुम्
पॉलिया निऩ्ऱा रुऩ्नैप् पोल्वा रुळरो पॉन्ऩे
वलिया रुडैया रॅन्ऱात् मऴुवा ळुडैयान् वरवुम्
चलिया निलैया यॅन्ऱाऱ् ऱविर्वा रुळरो वॅन्ऱात् 358

ऑलि आर्—शब्द-समन्वित; कटल् चूऴ् उलकत्तु–समुद्रवलयित इस पृथ्वी पर; उयर् वान् इटै–ऊँचे आकाशलोक में; नाकरित्तुम्–पाताल में; पॉलिया निऩ्ऱार्–विद्यमान लोगों में; उऩ्नै पोल्वार्–तुम्हारे समान रहनेवाले; उळरो–रहते हैं क्या; पॉन्ऩे—स्वर्ण-सम (श्रेष्ठ); मऴुवाळ् उटैयान्–परशुधर; वलि यार् उटैयार्–बली कौन है; ॲन्ऱान् वरवुम्–कहते हुए आने पर; चलिया निलैयाय्–अचल खड़े रहे; ॲन्ऱाल्–तो; तविर्वार् उळरो–ऐसे तुमको जाने देनेवाले कोई होगे क्या; ॲन्ऱान्–कहा । ३५८

हे स्वर्णसम श्रेष्ठ ! शब्दायमान समुद्रवलयित इस भूलोक में, उन्नत सुरलोक में और पाताल में तुम्हारे समान सर्वश्रेष्ठ कोई है क्या ? परशुधर ललकारते हुए आये कि यहाँ कौन बलशाली है ? तब तुमने बिना चलित हुए उनका सामना किया । ऐसे तुमको वन जाने देनेवाला कोई होगा क्या ? । ३५८

केट्टे यिरुन्दे नॅन्तिुङ् गिळर्वा निन्ऱे यडैय
माट्टे ताहि लन्ड्रो वन्ग णॅन्कण् मैन्दा
काट्टे युरैवाय् नीयिक् कैहे शियैयुङ् गण्डिन्
नाट्टे युरैवे नॅन्ड्रा तन्ड्रैन् ऱन्मै यॅन्ड्रान् 359

केट्टे–सुनकर भी; इरुन्तेन् ऍन्निनुम्–जीवित रहा, तो भी; इन्ड्रे–अभी; किळर् वान् अटैय माट्टेन् आकिल् अन्ड्रो–प्रकाशमान आकाश नहीं जानेवाला रहा, तभी तो; ऍन् कण् वन् कण्–मेरी आँखें निष्ठुर आँखें होंगी; मैन्ता–मेरे सुत; नी काट्टे उरैवाय्–तुम जंगल में रहोगे; इ कैकेयियैयुम् कण्टु–इस कैकेयी को देखते हुए; इ नाट्टे–इस राज्य में; उरैवेन् ऍन्ड्राल्–रहूँगा तो; ऍन् तन्मै नन्ड्रु–मेरा स्वभाव भी अच्छा है; ऍन्ड्रान्–कहा। ३५९

दशरथ ने आगे भी कहा— तुम्हारे वनगमन की बात सुनकर भी मैं जीवित रहता हूँ। यह कठोर मन का द्योतक है। पर अभी स्वर्ग न पहुँच सकूँगा तभी तो मेरी आँखें कठोर कही जायँगी ! हे प्यारे पुत्र ! तुम जाकर जंगल में रहो और मैं इस क्रूर कैकेयी को अपनी आँखों से देखते हुए इस राज्य में मजे से रहूँ तो मेरा स्वभाव भी बड़ा अच्छा माना जायगा न ! । ३५९

मॅय्यार् तवमे शॅय्दुन् वियन्मार् बरिदिऱ् पॅऱ्ऱ
शॅय्या ळॅन्नुम् बॊन्नु निलमा दॅन्नुन् दिरुवुम्
उय्या रुय्या विनैये नुन्नैप् पिरिन्दु मिरुन्दाल्
ऐया कैहे शियैने राहे नोना नॅन्ड्रान् 360

ऐया–तात; मॅय् आर् तवम् चॅय्तु–सत्यसंयुक्त तपस्या करके; उन् वियल् मार्पु–तुम्हारा विशाल वक्षस्थल; अरितिन् पॅऱ्ऱ–अपूर्व रूप से जिन्होंने पाया है; चॅय्याळ् ऍन्नुम् पॊन्नुम्–वे, लक्ष्मी नाम की श्रीदेवी और; निलम् मातु ऍन्नुम् तिरुवुम्–भूदेवी की श्री; उय्यार्–(तुम्हारे बिछुड़ने पर), जीवित नहीं रहेंगी (श्रीहीन हो जायगा यह राज्य); उय्या विनैयेन्–जिससे बच नहीं पाता ऐसे कर्म का मैं; उन्नै पिरिन्तुम्–तुमसे वियुक्त होने पर भी; इरुन्ताल्–जीवित रहूँ तो; नान् कैकेयियै नेर् आकेनो–कैकेयी-सदृश न हो जाऊँगा क्या; ऍन्ड्रान्–कहा। ३६०

तात ! भूदेवी तथा श्रीदेवी दोनो ने बड़ी तपस्या करके तुम्हारा वक्ष-स्थल (भर्त्तापन) पाया है। वे तुमको छोड़कर बची नहीं रहेंगी। अगर पापी मैं, इस स्थिति से बचने का मार्ग ही न हो ऐसा काम जो कर चुका वह, मैं तुमसे वियुक्त होकर भी जीवित रह जाऊँ तो मैं भी कैकेयी के समान नही हो जाऊँगा क्या ? मैं उतना निर्मम नही हूँ। ३६०

पूणा रणियुम् मुडियुम् पॊन्ना शनमुङ् गुडैयुम्
शेणार् मार्बुन् दिरुवुन् दॅरियक् काणक् कडवेन्

माणा मरवऱ् कलैयु मानिऩ् ड्रोलुम् वऩैंदल्
काणा दोंऴिवे नॅऩ्ड्रा ऩऩ्ड्रायत् तऩ्ड्रो करुमम् 361

पूण् आर् अणियुम्–पहननेयोग्य आभरण; मुटियुम्–किरीट; पोंऩ् आचनमुम्–स्वर्ण (सिंह-) आसन; कुटैयुम्–श्वेत छत्र; चेण् आर् मार्पुम्–विशाल वक्षस्थल; तिरुवुम्–विजयश्री; तेरिय काण कटवेऩ्–आँख भर देखने का अधिकार रखनेवाला मैं; माणा मरम् वऱ्कलैयुम्–क्षुद्र पेड़ की छाल का वस्त्र; मातिऩ् तोलुम्–और मृगचर्म; वऩैतल्–पहनना; काणातु ओऴिवेऩ् ऍऩ्ऱाल्–बिना देखे (संसार से) चला जाऊँ तो; करुमम्–वही कार्य; नऩ्ऱु आय्त्तु अऩ्ऱो–अच्छा होगा न। ३६१

पहनने योग्य आभूषण, किरीट, स्वर्ण-सिंहासन, श्वेत छत्र, विशाल वक्ष, उसमें शोभित विजयश्री आदि के साथ तुम्हें देखने का मैं अधिकारी हूँ। पर क्षुद्र वल्कल और मृगचर्म पहने हुए तुमको देखना पड़ जाय तो उसको बिना देखे ससार छोड़ चला जाऊँ —वही काम श्रेष्ठ होगा न ? । ३६१

ऍऩ्ड्रा वोंऩ्ड्रोंऩ् ड्रोव्वा विशैदऩ् दरशऩ् ऩुयिरुम्
शॅऩ्ड्रा निऩ्ड्रो डॅऩ्ऩुऩ् दऩ्मै यॅय्दित् तेय्ऩ्दाऩ्
मॅऩ्ड्रोऩ् मार्बिऩ् मुऩिवऩ् वेऩ्दे ययरे लवनै
इऩ्ड्रे येहा वण्णऩ् दहैवॅऩ् ऩुलहो डॅऩ्ड्राऩ् 362

ऍऩ्ऱा–ऐसा; ओंऩ्ऱु ओंऩ्ऱु ओव्वा–एक दूसरे से न मिलनेवाली बातें; इचै तन्तु–कहते हुए; अरचऩ् इऩ्ऱोटु उयिर् चॅऩ्ऱाऩ्–राजा आज मर जायेंगे; ऍऩ्ऩुम् तऩ्मै ऍय्ति–यह कहने योग्य दशा में आकर; तेय्न्ताऩ्–घुले; मॅऩ् तोल् मार्पिऩ् मुऩिवऩ्–मृदु (मृग-) चर्म वाले वक्ष के मुनिवर (वसिष्ठ); वेन्ते–राजा; अयरेल्–दुखी मत होइए; इऩ्ऱे–अभी; उलकोटु–श्रेष्ठ लोगों के साथ; अवनै–(जाकर) उनको; एका वण्णम् तकैवॅऩ्–न जाएँ ऐसा रोकूँगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ३६२

इस तरह के परस्पर असंबद्ध प्रलाप करते हुए राजा इतने श्रान्त हो गये कि यह सन्देह होने लगा कि राजा प्राणहीन हो गये है क्या ? उनको देखकर मृगचर्म-धारी वक्ष वाले वसिष्ठ ने कहा कि राजा ! दुखी मत होइए। अभी अन्य बड़े लोगों को साथ लेकर श्रीराम के पास जाऊँगा और उनको जाने से रोक लूँगा और राज्य-युक्त कर लूँगा। ३६२

मुऩिवऩ् शॉल्लु मऴविऩ् मुडियुङ् गॉल्लॅऩ् ड्ररशऩ्
तऩिनिऩ् ड्रुऴड्रऩ् ऩुयिरैच् चिऱिदे तहैवा ऩिऩ्दप्
पुऩिदऩ् बोना लिवनाऱ् पोहा दोंऴिवा ऩॅऩ्ऩा
मऩिदऩ् वडिवङ् गॊण्ड मनुवुऩ् दऩ्ऩै मऱ्ऩ्दाऩ् 363

मुनिवऩ् चॉल्लुम् अऴविल्–मुनि के कहते समय; मुटियुम् कॉल्–मर जायेंगे क्या; ऍऩ्ऱ अरचऩ्–ऐसी स्थिति में जो रहे वे राजा; मनितऩ् वटिवम् कॉण्ट मनुवुम्–मनुष्य रूप में मनु (सम रहनेवाले); इन्त पुनितऩ् पोताल्–यह पवित्रपुरुष जाएँगे तो; इवनाल्–इनके प्रयास से; पोकातु ओऴिवाऩ्–बिना गये रह जायगा; ऍऩ्ऩा–समझकर;

तनि निन्ऱु उळल्–एकाकी रहकर कुढ़नेवाले; तन् उयिरै–अपने प्राण को; चिरिते तकैवान्–कुछ देर स्थिर करके; तन्नै मऱन्तान्–अपनी सुध खोकर मूर्छित हुए। ३६३

यह सुनकर राजा को थोड़ा विश्वास हुआ। 'मर ही गये' ऐसी स्थिति में जो रहे वे, मनु के समान राजा यह सोचकर कि पवित्र मुनि जायँगे तो शायद श्रीराम वन जाना छोड़ देगा कुछ देर अपने छटपटानेवाले प्राणों को स्थिर करके बेहोश हो गये। ३६३

मऱन्दा तुणर्वु मुयिरुम् मन्न नॆन्न मरुहा
इऱन्दान् कॊल्लो वऱियें नॆन्ना विडरुऱ् ऱळिवाळ्
तुऱन्दान् महन्मुन् नॆनैयुन् दुऱन्दाय् नीयुन् दुणैवा
अऱन्दा निदुवो वैया वरशर्क् करशे यॆन्ऱाळ् 364

मन्नन् उणर्वुम् उयिरुम् मऱन्तान्–राजा की सुध और बुध लुप्त हो गई; ॲन्न यह सोचकर; मरुका–व्याकुल होकर; इऱन्तान् कॊल्लो–मर गये क्या; अऱियेन्–नहीं जानती; ॲन्ना–कहते हुए; इटर् उऱ्ऱु–दुखी होकर; अळिवाळ्–क्लांत होनेवाली (कौसल्या); ऐया–आर्य; अरचर्क्कु अरचे–राजाधिराज; मकन्–पुत्र ने; मुन्–पहले; ॲनैयुम् तुऱन्तान्–मुझे भी (आपके साथ) त्याग दिया; तुणैवा–जीवनसंगी; नीयुम् तुऱन्ताय्–आपने भी त्याग दिया; इतु अऱम् तानो–क्या यह धर्म है; ॲन्ऱाळ्–(ऐसा विलाप-वचन) कहा। ३६४

कौसल्या यह देखकर रोने लगीं। "राजा ने सुध-बुध खो ली; क्या वह मर गये? नहीं मालूम कर पाती!" ऐसा सोचकर वे घबड़ा उठीं। वे विलाप करने लगीं। आर्य! राजाधिराज! पहले मेरे पुत्र ने (आपके साथ) मुझे (भी) छोड़ दिया। अब आप भी मुझे छोड़ जाएँगे क्या? जीवनसंगी आप छोड़ जाएँ—क्या यह धर्म है?। ३६४

मॆय्यिन् मॆय्ये युलहिन् वेन्दर्क् कॆल्लाम् वेन्दे
उय्युम् वहैनिन् नुयिरै योम्बा दिङ्ङन् ऱेम्बिन्
वैय मुळ्ळुदुन् दुयरान् मऱुहुम् मुनिवन् नुडनम्
ऐयन् वरिनुम् वरुमा लयरे लरशे यॆन्ऱाळ् 365

मॆय्यिन् मॆय्ये–सत्यविग्रह; उलकिन् वेन्तर्क्कु ॲल्लाम्–लोक के राजाओं के; वेन्ते–राजा; उय्युम् वकै–(हमको) तारने के हेतु; निन् उयिरै ओम्पातु–अपने प्राणों की रक्षा न करके; इङ्ङन्–इस प्रकार; तेम्पिन्–दुख करेंगे तो; वैयम् मुळ्ळुतुम्–भूलोक सारा; तुयराल् मऱुकुम्–दुख से विकल होगा; मुनिवनुटन्–मुनि के साथ; नम् ऐयन्–हमारा पुत्र; वरितुम् वरुम्–आ भी सकता है; अयरेल्–शिथिल मत होइए; अरचे–राजा; ॲन्ऱाळ्–कहा। ३६५

वे और भी दुख करते हुए बोलीं— हे सत्यरूप! सारे लोक के राजाओं के राजा! हम सब जीवित और अच्छी स्थिति में रहें; इस हेतु आपको अपने प्राणों की रक्षा करनी चाहिए। बिना अपने प्राणों की

रक्षा किये अगर आप इस तरह मुरझा जाएँगे तो सारा लोक दुख से विकल हो जाएगा। हो सकता है कि हमारा लड़का मुनिवर के साथ आ जाय। इसलिए आप शिथिल न हों। ३६५

अॅन्ड्रॅन्	ड्रशन्	मॅय्यु	मिरुदा	ळिणैयुम्	मुहनुम्
तन्ड्रन्	शॅय्य	कैयाड्	ड्रैवन्	दिड्को	सलैयै
ऑन्ड्रुन्	दॅरिया	मम्म	रुळ्ळत्	तरशन्	मॅळ्ळ
वन्ड्रिण्	शिलैनङ्	गुरिशिल्	वरुमे	वरुमे	यॅन्ड्रान् 366

अॅन्ड्रु अॅन्ड्रु–ऐसा, ऐसा कहते हुए; अरचन् मॅययुम्–राजा का शरीर; इरु ताळ् इणैयुम्–दोनो चरणों; मुकनुम्–और मुख को; तन् चॅय्य कैयाल्–अपने लाल (सुन्दर) हाथों से; तैवन्तिटु–सहलाती हुई; कोचलैयै–कौसल्या को; ऑन्ड्रुम् तॅरिया–कुछ भी न जाननेवाले; मम्मर् उळ्ळत्तु–अचेतमन; अरचन्–दशरथ ने; मॅळ्ळ–धीमे स्वर में; वल् तिण् चिलै–सबल और गफ़ धनु के; नम् कुरुचिल्–हमारा राजा; वरुमे, वरुमे–आयगा क्या, आयगा क्या; अॅन्ड्रान्–कहा। ३६६

कौसल्यादेवी ऐसी-ऐसी बातें कहते हुए राजा के शरीर को, उनके दोनो पैरों को और मुख को (गरमी देते हुए) सहला रही थी। तब राजा बेसुध थे और उनका मन धूमिल पड़ गया था। तब वह कौसल्या से पूछने लगे कि क्या सुदृढ़ और सबल धनु का धारक हमारा राजा (पुत्र) आयगा ? आयगा क्या ?। ३६६

वन्मा	यक्कै	हेशि	वरत्ता	लॅन्ड्र	नुयिरै
मुन्माय्	विप्पत्	तुणिन्दा	ळॅन्ड्रुङ्	गूनि	मॉऴियाल्
तन्मा	महनुन्	दानुन्	दरणि	पॅरुमा	ड्रन्ड्रि
अॅन्मा	महनैक्	कान्नें	हेन्ड्रा	ळन्ड्रो	वॅन्ड्रान् 367

वल् मायम् कैकेचि–प्रबल मायाविनी कैकेयी ने; कूनि मॉऴियाल्–कुब्जा के कहने से; वरत्ताल्–वर द्वारा; तन् मा मकनुम् तानुम्–अपना बड़ा पुत्र और आप; अॅन्ड्रुम् तरणि पॅरुम् आरु अन्ड्रि–सदा के लिए राज्य पाने के अलावा; अॅन् मा मकनै–मेरे बड़े पुत्र को; कान् एकु–जंगल जाओ; अॅन्ड्राळ् अन्ड्रो–कहा न; अॅन् तन् उयिरै–मेरे प्राणों को; मुन् माय्विप्प तुणिन्ताळ्–पहले मारने का निश्चय कर लिया; अॅन्ड्रान्–कहा। ३६७

धीरे-धीरे उनका मन अधिक सुलझा। तब उन्होंने कहा कि बड़ी मायाविनी कैकेयी ने कुब्जा मथरा का मार्गदर्शन पाकर अपने और अपने पुत्र का शासक का स्थान सदा के लिए निश्चित कर लिया। साथ-साथ उसने मेरे पुत्र से 'वन जाओ' कहा न ? उसके द्वारा उसने क्या कर लिया, मालूम है ? पहले मेरे प्राणों का अन्त कर लिया। ३६७

पॉन्नार्	वलयत्	तोळान्	कानो	पुहुद	ड्रविरान्
अॅन्ना	रुयिरो	वहला	दॉऴिया	दिडुको	शलैकेळ्

मुऩ्ऩाळ् ऒरुमा मुनिवऩ् मॊऴिन्द शाब मुळदॆऩ्
उऩ्ऩाळ् उऱ्ऱ दॆल्ला मवळुक् करश ऩऱैवाऩ् 368

पॊऩ् आर् वलयम्–स्वर्णनिर्मित (बाहु-) वलय; तोळाऩ्–धारी; काऩ् पुकुतल् तविराऩ्–जंगल जाना नहीं छोड़ेगा; ऎऩ्ऩ् आर् उयिरो–मुझसे लगे प्राण तो; अकलातु ऒऴियातु–अलग हुए बिना नहीं रहेंगे; कोचलै–कौसल्या; इतु केळ्–यह सुनो; मुऩ् नाळ्–पहले किसी दिन; ऒरु मा मुनिवऩ्–एक बड़े मुनि का; मॊऴिन्त चापम्–दिया गया शाप; उळतु–है; ऎऩ्ऱु–कहकर; अऩ्ऩाळ् उऱ्ऱतु ऎल्लाम्–उस दिन जो हुआ वह सब; अरचऩ्–राजा; अवळुक्कु–उनको; अऱैवाऩ्–सुनाने लगे। ३६८

स्वर्ण के बाहुवलय-धारी श्रीराम जंगल जाने से नहीं रुकेगा। मेरे प्राण भी चले बिना टिकनेवाले नहीं है। कौसल्या! एक बात सुनो। पहले कभी मुझे एक महामुनि का दिया शाप मिला था। —यह कहकर राजा वह सारा वृत्तान्त सुनाने लगे। ३६८

वॆय्य कानत् तिडैये वेट्टै वेट्कै मिहवे
ऐय शॆऩ्ऱे करियो डरिह डुरुवित् तिरिवेऩ्
कैयिऱ् चिलैयुङ् गणैयुङ् गॊडुहार् मिरुहम् वरुमोर्
शॆय्य नदियिऩ् करैवायच् चॆऩ्ऱे मऱैय निऩ्ऱेऩ् 369

वेट्टै वेट्कै मिक–आखेट की इच्छा के बढ़ने से; वॆय्य कानत्तिटै–भयंकर कानन में; चॆऩ्ऱु–जाकर; ऐय करियोटु–विस्मयकारी गजों के साथ; अरिकळ्–सिंहों को भी; तुरुवि तिरिवेऩ्–ढूँढ़ता फिरा; कैयिल् चिलैयुम् कणैयुम्–हाथ में धनुष और बाण; कॊंटु–लेकर; कार् मिरुकम् वरुम्–करि जहाँ आ सकते हैं; ओर् चॆय्य नतियिऩ् करै वाय्–एक अच्छी नदी के किनारे पर; चॆऩ्ऱु–जाकर; मऱैय निऩ्ऱेऩ्–छिपा खड़ा रहा। ३६९

एक बार आखेट की मेरी इच्छा प्रबल हुई। मैं बड़े-बड़े विस्मयकारी आकार वाले गजों और सिंहों को ढूँढ़ता फिरा। उस सिलसिले में मैं, धनु और शर के साथ एक नदी के किनारे पर गया। वह नदी अच्छी नदी थी और हाथी आदि जल पीने के लिए उधर ही आएँ —इसकी संभावना थी। मैं वहाँ छिपा खड़ा रहा। ३६९

ऒरुमा मुऩिवऩ् मऩैयो डॊऴियॊऩ् ऱिलवा नयऩम्
तरुमा महऩे तुणैयाय्त् तवमे पुरिपोऴ् दिनिल्वाय्
अरुमा महऩे पुनल्कॊण् डणैवान् वरुमा ऱिऱियेऩ्
पॊरुमा कणैविट् टिडलुम् बुविमी दलऱिप् पुरळ 370

ऒरु मा मुऩिवऩ्–एक महामुनि; मऩैयोटु–अपनी पत्नी के साथ; ऒऴि ऒऩ्ऱिल आम्–तेजहीन (अन्धी); नयनम् तरु–आँखों के स्थान में आँख का काम देनेवाले; मा मकऩे–श्रेष्ठ पुत्र को ही; तुणै आय्–सहायक बनाकर; तवम् पुरि पोऴ्तिऩ् वाय्–तपस्या करते रहे, तब; अरु मा मकऩे–वह उत्तम पुत्र ही; पुनल्

कॊण्टु अणैवान्–जल ले आने के लिए; वरुम् आऱु–आया, यह वात; अऱियेन्–न जानता; पॊरु मा कणै–घातक वड़ा अस्त्र (शब्दवेधी वाण); विट्टिट्टलुम्–छोड़ने पर; अलरि–चीखते हुए; पुवि मीतु पुरळ–भूमि पर (वह) लोटा तव। ३७०

तब वहाँ एक मुनि-वालक आया। एक महामुनि अपनी पत्नी के साथ पास में रहते तपस्या करते रहे। वे दोनो अन्धे थे। यही वालक उन दोनो अन्धों की आँख के समान उनकी सव विधि से सहायता करता था। वह उत्तम चरित्र वाला पुत्र जल ले जाने के लिए वहाँ आया। यह मैं नही जानता था। मैंने एक घातक वाण छोड़ा जो वालक पर लगा। लगते ही वह चीखते हुए गिर पड़ा और भूमि पर लोटने लगा। ३७०

पुक्कुप् पॆरुनीर् नुहरुम् पॊरुपो तहमॆन् ऱॊलिमेऱ्
कैक्कट् कणैशॆन् ऱदलाऱ् कण्णिऱ् ऱॆरियक् काणेन्
अक्कैक् करियिन् कुरले यन्ऱॊ वॆन्न वॆरुवा
मक्कट् कुरलॆन् ऱयर्वेन् मननॊन् दवणवन् दनॆनाल् 371

पुक्कु–वहाँ आकर; पॆरु नीर् नुकरुम्–अधिक जल पीनेवाला; पॊरु पोतकम्–झगड़ालू हाथी; ऎन्ऱु–समझकर; ऒलि मेल्–शब्द (की दिशा) में; कै कण् कणै–मेरे हाथ का अस्त्र; चॆन्ऱतु अल्लाल्–गया, उसे छोड़कर; कण्णिल्–अपनी आँखों से; तॆरिय काणेन्–देख न पाया; ईतु–यह स्वर; अ कैकरियिन् कुरले–उस हाथी का ही स्वर है; अन्ऱु ऎन्न–नहीं, यह; मक्कळ् कुरल्–और मानवी स्वर है; ऎन्ऱु–ऐसा जानकर; वॆरुवा–डरकर; मनम् नॊन्तु–खिन्नमन होकर; अयर्वेन्–श्लथ हुआ; अवण् वन्तनॆन्–वहाँ आया। ३७१

मैने यह सोचकर कि कोई बड़ा झगड़ालू हाथी आकर जोर से पानी पी रहा है उस दिशा में शर छोड़ा जहाँ से वह ध्वनि आ रही थी। अपनी आँखों से तो मैंने कुछ नही देखा था। जव यह ध्वनि आई तो लगा कि वह हाथी की नही थी और मानवी स्वर है। इसलिए भय-चकित और दुखी होकर मैं वहाँ गया। ३७१

कैयुङ् गुडमुन् नॆहिऴक् कणैयो डुरुऴ्वोऱ् काणा
वॆय्य तनुवु मननुम् वॆरिदे किडवे वीऴा
ऐय नीतान् याव नन्दो वरुऴॆन् ऱयरप्
पॊय्यॊन् ऱऱिया मैन्दन् केणी यॆन्नप् पुहल्वान् 372

कैयुम् कुटमुम् नॆकिऴ–हाथ से घट गिराकर; कणैयोटु–(शरीर पर) लगे शर के साथ; उरुऴ्वोन् काणा–लोटनेवाले को देखकर; वॆय्य तनुवुम्–भयंकर धनु; मनतुम्–और मेरा मन; वॆरितु एकिट–निर्बल हो गये, तव; वीऴा–(उसके पास) गिरकर; ऐय–आर्य; नी यावन्–तुम कौन हो; अन्तो–हाय; अरुऴ्क–कहने की

कृपा करो; ॲन्ऱु–पूछकर; अयर–दुखी हुआ तो; पॊय् ऒन्ऱु अऱिया मैन्तन्–असत्य कुछ न जाननेवाले ऋषि-कुमार ने; केळ् नी–सुनिए आप; ॲन्ऱ–कहकर; पुकल्वान्–कहने लगा। ३७२

वहाँ मुनिपुत्र अपने हाथ से जलघट गिराकर शरीर पर लगे शर-सह लोट रहा था। उसे देखकर मेरा धनु हाथ से छूटा और मन मेरे वश से। मैंने भी उसके पास तपाक से बैठकर पूछा कि आर्य! तुम कौन हो? हाय! कृपा करके बताओ। मेरा दुख देखकर असत्य से अभिज्ञ वह बोला कि सुनिए। ३७२

अन्नाण् मलरोन् वऴिया लरुळ्का शिबनन् मैन्दन्
मित्तार् पुरिनून् मार्बन् विरुत्ते शनन्मॆय्प् पुदल्वन्
नन्नात् मऱैनू ऱॆरियु नावान् शलबो शनॆच्
चॊन्नात् मुनिवन् पुदल्वन् शुरोश ननिया नॆन्ऱान् 373

अ नाळ्–उन दिनों; मलरोन्–ब्रह्मा के; वऴियाल् अरुळ्–क्रमवार सृष्ट; काचिपन् नल् मैन्तन्–काश्यप के श्रेष्ठ पुत्र; मित्त् आर् पुरि नूल् मार्पन्–उज्ज्वल त्रिसूत्री उपवीत से शोभित वक्ष वाले; विरुत्तेचनन्–व्रतेश के; मॆय्पुतल्वन्–सत्पुत्र; नल् नाल्मऱै–श्रेष्ठ चतुर्वेद; नूल्–और शास्त्र; तॆरियुम्–जाननेवाले; नावान्–वाग्मी; चलपोचन् ॲन–जलभोज (?); चॊन्नान् मुनिवन्–ऐसे कहलानेवाले मुनि का; पुतल्वन्–पुत्र; चुरोचनन् यान्–सुरोचन मैं हूँ; ॲन्ऱान्–कहा। ३७३

उन प्राचीन दिनों में ब्रह्माजी की क्रमवार सृष्टि में काश्यप पहले आये। उनके पुत्र यज्ञोपवीतालंकृत वक्ष वाले व्रतेश (?) थे। उनके पुत्र वेदों और शास्त्रों के विद्वान जलभोज (?) थे। उनका पुत्र मैं हूँ और मेरा नाम सुरोचन (?) है। ३७३

[इसके बाद एक पद किसी-किसी संस्करण में पाया जाता है जिसका सार यह है— वेदरक्षण के लिए मत्स्यावतार लेनेवाले विष्णु के नाभीकमल से उत्पन्न ब्रह्मा ने वेदोक्त प्रकार से विविध जीवों की सृष्टि की। उन्होंने मनुष्य के चार वर्ण बनाये। उनमें प्रथम वर्ण का हूँ मैं।]

इरुकण् कळुमिन् ऱियदाय् तन्दैक् कुम्मिङ् गवर्हळ्
परुहुम् पुनल्हॊण् डहल्वान् पडर्न्देन् पळ्ुदा यिनदाल्
इरुहुन् ऱनैय पुयत्ता यिबमॆन् ऱुणरा दॆय्दाय्
उरुहुन् दुयरन् दविर्नी यूऴिन् शॆयली दॆन्वे 374

इरु कण्कळुम् इन्ऱिय–दोनो आँखों से हीन; ताय् तन्तैक्कुम्–माता और पिता को; अवर्कळ् परुकुम् पुनल्–उनका पेय जल; कॊण्टु अकल्वान्–ले जाने के लिए; इङ्कु पटर्न्तेन्–यहाँ आया; पऴुतु आयिनतु–निरर्थक हो गया; इरु कुन्ऱु अनैय पुयत्ताय्–दो पर्वतों के समान कंधों वाले; उणरातु–बिना जाने; इपम् ॲन्ऱु–हाथी समझकर; ऎय्ताय्–(शर) चलाया; ईतु ऊऴिन् चॆयल् न्–यह विधि का काम है;

ऍन–लेकर; नी उरुकुम् तुयरम्–आप विगलित करनेवाला दुख; तविर्–छोड़ दीजिए। ३७४

मेरे माता-पिता दोनो अन्धे है। उनके पीने के लिए जल ले जाने के लिए मै इधर आया था। पर काम विगड़ गया। पर्वतसम कन्धे वाले! आपने भी अज्ञान मे हाथी समझकर शर प्रेपित किया। यह विधि का काम समझिए और दुख से विकल मत होइए। ३७४

उण्णीर् वेट्कै मिहवे युयङ्गु मॆन्दैक् कॊरुनी
तण्णीर् कॊडुपो यळित्तॆन् शावु मुरैत्तुप् पुदल्वन्
विण्मी दडैवान् ऱॊऴुदा नॆनवुम् मवर्पाल् विळम्बॆन्
ऱॆण्णीर् मैयिनान् विण्णो रॆदिर्हॊण् डिडवे हिननाल् 375

उण् नीर् वेटकै–प्यास; मिक–वढ़ी, तो; उयङ्कुम् ऍन्तैक्कु–दुखी रहते मेरे पिता को; ऑरु नी–अप्रमेय आप; तण् नीर्–शीतल जल; कॊटु पोय्–ले जाकर; अळित्तु–देकर; ऍन् चावुम् उरैत्तु–मेरा मरण वतलाकर; उम् पुतल्वन्–आपका पुत्र; विण् मीतु अटैवान्–स्वर्ग जानेवाला; तॊऴुतान्–(उसने) नमस्कार कहा; ऍनवुम्–यह भी; अवर् पाल् विळम्पु–उनके पास कहिए; ऍन्रु–ऐसा; ऍण् नीर्मैयिनान्–सवसे स्मरणीय स्वभाव वाला; विण्णोर् ऍतिर् कॊण्टिट–देवों के स्वागत करते; एकिनन्–चला गया। ३७५

वहाँ मेरे पिताजी वढती प्यास से दुखी हो रहे हैं। अप्रमेय आप उनको पीने के लिए जल ले जाइए। उनसे मेरे मरण की बात कहिए, और कहिए कि आपके पुत्र ने, जो स्वर्ग जा रहा था, आपको अपना नमस्कार कहा है। अवश्य वह कुमार श्रेष्ठमान्य स्वभाव वाला था। देवों ने आकर उसका स्वागत किया और वह स्वर्ग सिधार गया। ३७५

मैन्दन् वरवे नोक्कुम् वळर्मा दवर्पान् महनो
डन्दण् पुनल्कॊण् डणुह वॆया विदुपो दळवाय्
वन्दिङ् गणुहा यॆन्नो वन्द दॆन्ऱे नॊन्देम्
शन्दङ् गमळुन् दोळाय् तऴुविक् कॊळवा वॆन्रवे 376

मैन्तन् वरवे नोक्कुम्–पुत्र के आने की ही प्रतीक्षा करनेवाले; वळर् मातवर् पाल्–वृद्ध महातपस्वियों के पास; मकनोटु–(उनके) पुत्र (के शरीर) के साथ; अम् तण् पुनल् कॊण्टु–स्वच्छ शीतल लेकर; अणुक–जाने पर; ऐया–तात; इतु पोतु अळवाय्–इतनी देर; इङ्कु वन्तु अणुकाय्–यहाँ आकर नहीं पहुँचे; वन्ततु ऍन्नो–(बाधा) आई क्या; ऍन्रु नॊन्तेम्–समझकर हम वहुत कुढ़ते रहे; चन्तम् कमऴुम् तोळाय्–चन्दन-वासित भुजा वाले; तऴुवि कॊळ वा–गले लगाने आओ; ऍन्न–कहने पर। ३७६

वे वृद्ध तपस्वी अपने पुत्र की ही प्रतीक्षा में वैठे थे। मै उस मुनि-पुत्र का शरीर और स्वच्छ, शीतल जल लेकर वहाँ पहुँचा। मेरी आहट

पाकर वे अपना पुत्र समझकर कहने लगे— वत्स ! इतनी देर कर दी तो हमें डर हो गया कि कुछ विपदा हो गई है। वह क्या होगी —यह विचार करते हुए हम वहुत घवड़ाये रहे। चन्दनवासित भुजा वाले ! आओ। हृदय से लग जाओ। ३७६

ऐया यानो ररश नयोत्ति नहरत् तुळ्ळेन्
मैयार् कळबन् दुरुवि मरैन्दे वदिन्दे निरुळ्वाय्
पॉय्या वाय्मैप् पुदल्वन् पुनत्मॉण् डिडुमो दयित्मेर्
कैयार् कणैशॅत् रदलार् कण्णिर् रॅरियक् काणेन् 377

ऐया–आर्य; यान् ओर् अरचन्–मैं एक राजा हूँ; अयोत्ति नकरत्तु उळ्ळैन्–अयोध्या नगर में रहता हूँ; मै आर् कळपम् तुरुवि–काले रंग के गजों की खोज में; इरुळ् वाय्–अँधेरे स्थान में; मरैन्तु वतिन्तेन्–छिपा रहा; पॉय्या वाय्मै पुतल्वन्–आपका अप्रमत्त सत्यसंध पुत्र; पुनल् मॉण्टिटुम्–जल भरने की; ओतैयिन् मेल्–ध्वनि पर; कै आर् कणै चॅन्ऱतु–मेरे हाथ का वाण गया; अल्लाल्–उसके सिवा; कण्णिल् तॅरिय काणेन्–आँखों से न देख पाया। ३७७

तव मैं वोला— आर्य ! मैं एक राजा हूँ— अयोध्यावासी। काले रंग के हाथियों की खोज मे जाकर मैं एक अँधेरे स्थान में छिपा खड़ा रहा। तव अप्रमत्त सत्यवादी आपका पुत्र अपने घट में जल भरने लगा। उस शब्द की ओर मेरा अस्त्र गया। मैंने तो उसको अपनी आँखों से नही देखा। ३७७

वीट्टुण् डलरुङ् गुरलाल् वेळ्क् कुरलन् ऱॅनवे
ओट्टन् दॅदिरा नीया रॅनवुर् ऱदॅला मुरैया
वाट्टन् दरुनॅञ् जिननाय् निन्ऱान् वणङ्गि वानोर्
ईट्ट मॅदिर्वन् दिडवे यिऱन्दे हिनन्विण् णिडैये 378

वीट्टुण्टु–गिराया जाकर; अलऱुम् कुरलाल्–(उसके) विलापनेवाले स्वर से; वेळम् कुरल् अन्ऱु–हाथी की ध्वनि नहीं; ॲन–जानकर; ओट्टन्तु–दौड़ जाकर; ॲतिरा–उससे मिलकर; नी यार् ॲन–तुम कौन हो, यह पूछने पर; उऱ्ऱतु ॲल्लाम् उरैया–हुआ सव कहकर; वाट्टम् तरु नॅञ्चिनत् आय्–दुखितमन होकर; वणङ्कि–आपको नमस्कार करके; निन्ऱान्–निस्पंद रहा; इऱन्तु–मरकर; वानोर् ईट्टम् ॲतिर् वन्तिट–देवगण के स्वागत के लिए आते; विण् इटै एकिनन्–स्वर्ग में चला गया। ३७८

उस अस्त्र से विद्ध होकर वह गिर गया। उसके रुदनस्वर से मैंने समझ लिया कि यह हाथी की ध्वनि नही है। इसलिए मैं सवेग दौड़ा। आपके पुत्र से मिलकर मैंने उससे पूछा कि तुम कौन हो ? उसने अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया। दुखपूरित मन के साथ उसने आपको नमस्कार कहा। फिर वह संज्ञाहीन होकर मर गया। देवगण आकर उसको ले गये और वह स्वर्ग सिधार गया। ३७८

अरुत्ताय् कणैया लॆनवे यडियेन् ऱन्नै यैया
करुत्ते यरुळा यानो कण्णिऱ् कण्डे नल्लेन्
मरुत्ता निल्लान् वनमॊण् डिडुमो दयिनॆय् दनॆन्ताल्
पॊरुत्ते यरुळ्वा यॆन्ना विरुताळ् शॆन्नि पुनैन्देन् 379

ऐया–महात्मा; कणैयाल् अरुत्ताय्–शर से मार दिया; ॲन–सोचकर; अटियेन् तन्नै–मुझ दास पर; करुत्ते अरुळाय्–कोप मत कीजिए; यानो कण्णिल् कण्टेन् अल्लेन्–मैंने तो अपनी आँखों के सामने नहीं देखा था; मरु तान् इल्लान्–निरपराध उसके; वनम् मॊण्टिटुम् ओतैयिन्–जल भरने की ध्वनि से; ॲय्तनॆन्–शर चलाया; पॊरुत्ते अरुळ्वाय्–क्षमा कीजिए; ॲन्ना–विनय करके; इरु ताळ्–उनके दोनो पैर; चॆन्नि पुनैन्तेन्–सिर पर धारण कर लिए। ३७९

हे महात्मा ! 'तुमने मेरे पुत्र को शर से मारा' —यह कहकर दास पर न कोप करें। कृपा कीजिए। मैंने प्रत्यक्ष देखा नहीं था। निरपराध आपके पुत्र के जल भरने का नाद सुना और (शब्दवेधी) वाण चला दिया। आप क्षमा कीजिए। यह विनय करके मैंने उनके दोनो चरणों पर अपना सिर रखकर दण्डवत की। ३७९

वीऴ्न्दा रयर्न्दार् पुरण्डार् विऴिपो यिऱ्ऱिन् ऱॆन्ऱार्
आऴ्न्दार् तुन्बक् कडलु ळैया वैया वॆन्ऱार्
पॊऴ्न्दाय् नॆञ्जै यॆन्ऱार् पॊन्ना डदनिऱ् पोय्नी
वाऴ्न्दे यिरुप्पत् तरियेम् वन्देम् वन्दे मिनिये 380

वीऴ्न्तार्–वे भूमि पर गिरे; अयर्न्तार्–शिथिल हुए; पुरण्टार्–लोटे; इऱ्ऱु विऴि पोयिऱ्ऱु ॲन्ऱार्–अब आँखें चली गईं, कहा; तुन्पम् कटलुळ् आऴ्न्तार्–दुखसागर में मग्न हुए; ऐया, ऐया ॲन्ऱार्–तात, तात पुकारा; नॆञ्चै पोऴ्न्ताय्–गला चीर दिया; ॲन्ऱार्–आर्त्तनाद किया; नी–तुम; पॊन् नाटु अतनिल्–स्वर्ग में; पोय् वाऴ्न्तु इरुप्प–जाकर रहो, यह; तरियेम्–सहेंगे नहीं; इन्िये–अभी; वन्तेम् वन्तेम्–आये, आये। ३८०

माता-पिता दोनो यह सुनकर नीचे गिर गये। लोटने लगे। 'हाय हमारी आँखें ही चली गयीं' —यह आर्तवचन कहा। दुख-सागर में मग्न हो गये। हाय वत्स वत्स —की पुकार मचायी। "तुमने हमारा गला चीर दिया। तुम जाकर स्वर्ग में रहो —यह हम सह नहीं सकते; इधर रह नही सकते। अभी हम भी आ गये, आ गये अभी।" । ३८०

ॲन्ऱॆन् ऱयरुन् दवरै यिरुताळ् वणङ्गि याने
इन्ऱुम् पुदल्वन् निनिनी रेवुम् पणिशॆय् दिडुवेन्
ऑन्ऱुन् दळरे लैया वॊऴिमिन् ऱुयरॆन् ऱिडलुम्
वन्ऱिण् शिलैयाय् केण्मो वॆन्ना वीरुशॊल् वहुत्तान् 381

ॲन्ऱु ॲन्ऱु–ऐसा, ऐसा; अयरुम्–दुखनेवाले; तवरै–(वृद्ध) तपस्वियों को;

इरु ताळ् वणङ्कि–दोनो चरणों पर नमस्कृत करके; इन्रु–आज से; यान् उम् पुतल्वन्–मैं ही आपका पुत्र बनूँगा; इनि नीर् एवुम् पणि–अब से आपसे आज्ञापित सेवाएँ; चॅय्तिटुवेन्–कर दूँगा; ऐया–उत्तम मुनि; ऑन्रुम् तळरेल्–धीरज कुछ मत छोड़िए; तुयर् ऑळिमिन्–दुख छोड़ दीजिए; ॲन्रिटलुम्–कहते ही; वल् तिण् चिलैयाय्–बलवान और कठोर धनुर्धर; केण्मो ॲन्ना–सुनिए कहकर; ऑरु चॉल्–एक बात; वकुत्तान्–बताई। ३८१

ऐसा-ऐसा विलाप करते हुए वे विगलित हो रहे थे। उनके पैर पड़कर मैंने विनय सुनाई— आज से मैं आपका पुत्र रहूँगा। आपकी आज्ञाएँ मानूँगा। आपकी सेवा करूँगा। महात्मा, आप धीरज न खोइए; यह दुख त्यागिए। मेरे यह कहने पर तपस्वी ने कहा कि बलवान और कठोर धनुर्धर! यह सुनिए। यह कहकर उन्होंने आगे एक बात कही। ३८१

कण्णुण् मणिबोन् महवै यिऴन्दु मुयिर्हा दलिया
उण्ण वॅण्णि यिरुन्दा लुलहो रॅन्नॅन् ऩुरैयार्
विण्णिन् ऱलैशे रुदुम्या मॅम्बोल् विडलै पिरियप्
पण्णुम् बरिमा वुडैया यडैवाय् पडर्वा नॅन्ना 382

कण्णुळ् मणि पोल्–आँखों के तारे के समान; मकवै इऴन्तुम्–पुत्र को खोकर भी; उयिर् कातलिया–जीवन चाहकर; उण्ण ॲण्णि–पेट भरने की इच्छा करते हुए; इरुन्ताल्–(जीवित) रहेंगे तो; उलकोर् ॲन् ॲन्रु उरैयार्–लोकवासी क्या (निन्दा) नहीं कहेंगे; याम् विण्णिन् तलै चेरुतुम्–हम स्वर्ग चले जाएँगे; पण्णुम् परि मा–अलंकृत अश्वों के; उटैयाय्–पति; ॲम् पोल्–हमारी ही भाँति; विटलै पिरिय–लड़का खोकर; पटर् वान् अटैवाय्–विशाल स्वर्गलोक पहुँचेंगे; ॲन्ना–ऐसा। ३८२

हम आँख का तारासम पुत्र को खोकर, इस लोक में पेट भरने के लिए जीवित रह जायँ तो दुनियावाले क्या कहेंगे? निन्दा में क्या-क्या नहीं कहेंगे? हम अभी स्वर्ग चले जायँगे। कोतल घोड़ों वाले राजा। आप भी हमारे जैसे, प्रिय पुत्र को गँवाकर स्वर्ग सिधारें। उन लोगों ने कहा। फिर वे आगे बोले। ३८२

तावा दॊळिरुङ् गुडैयाय् तवरिङ् गिदुनिन् शरणम्
कावा यॅन्ऱा यदनाऱ् कडिय शाबङ् गरुदेम्
एवा महवैप् पिरिन्दिन् ऱॆम्बो लिडरुऱ् ऱनैनी
पोवा यहल्वा नॅन्नाप् पॊन्नाट् टिडैपो यिनराल् 383

तावातु ऒळिरुम् कुटैयाय्–मन्द हुए बिना उज्ज्वल रहनेवाले श्वेतछत्रधारी; इङ्कु इतु तवरु–यहाँ यह अपराध है; निन् चरणम्–आपकी शरण में आया; कावाय्–रक्षा करें; ॲन्राय्–यह कहा; अतनाल्–उससे; कटिय चापम करुतेम्–कठोर शाप (देने) का विचार नहीं करते; इन्रु ॲम् पोल्–आज जैसे हम; नी–आप भी;

एवा–बिना आज्ञा की प्रतीक्षा किये, इंगित जानकर सेवा करनेवाले; मकवै–पुत्र से; पिरिन्तु–अलग होकर; इटर् उऱ्ऱ्तै–दुखी बन; अकल् वान् पोवाय्–विस्तृत स्वर्ग में जायेंगे; अॅन्ऩ्ता–कहकर; पोॅन् नाटु इटै–स्वर्गलोक में; पोयित्तर्–चले। ३८३

सदा उज्ज्वल रहनेवाला छत्र-पति ! "यह मेरा अपराध हो गया। आपकी शरण में आया हूँ" —ऐसा सत्य कहकर आपने विनय की। इसलिए हम कठिन शाप देना नही चाहते। आज जैसे हम, आप भी अपने आज्ञा के पहले ही इंगित जानकर सेवा-तत्पर रहनेवाले अपने पुत्र से विलग होकर दुख का अनुभव करके स्वर्ग सिधारेंगे। यह शाप देकर वे स्वर्ग सिधारे। ३८३

शिन्दै तळवुऱ् ऱयर्दल् शिऱिदु मिलना यिन्शॊल्
मैन्द नुळनॆन् ऱदनाऩ् महिऴ्वो डिवण्वन् दनॆनाल्
अन्द मुनिशॊऱ् ऱदुवु मण्णल् वनमे हुदलुम्
ऎनुऱ् नुयिर्वी हुदलु मिऱैयुन् दवऱा वॆन्ऱाऩ् 384

इन् चॊल् मैन्तन्–मधुरभाषी वत्स; उळन् ऎन्ऱतनाल्–होगा, इस कथन से; चिन्तै तळर्वुऱ्ऱु–क्षुब्धमन होकर; अयर्तल् चिऱितुम् इलताय्–आयास कुछ भी न करके; मकिऴ्वोटु–हर्ष के साथ; इवण् वन्ततॆन्–यहाँ आया; अन्त मुनि–उन मुनि ने; चॊऱ्ऱतुवुम्–जो कहा वह शापवचन और; अण्णल् वनम् एकुतलुम्–प्रभु का वन जाना; ऎन् उयिर् वीकुतलुम्–मेरे प्राणों का छूटना; इऱैयुम् तवऱा–कुछ भी न टलेंगे; ऎन्ऱाऩ्–कहा। ३८४

दशरथजी ने कौसल्या से कहना जारी किया। इस शाप से यह ध्वनित होता था कि हमारे मधुर-तुतली बोली बोलनेवाला वत्स पैदा होगा। यह सोचकर मैं, जिसे शाप के कारण दुखी हो जाना था, दुखदग्ध नहीं हुआ। मेरा मन शोक से उद्विग्न नही हुआ। मै आनन्द के साथ लौटकर महल में आ गया। अब देखो— मुनि का शाप, श्रीराम का वनगमन और मेरा मरण तीनो जरा भी नही टलेंगे। ३८४

उरैशॆय् पॆरुमै युयर्दवत्तो रोङ्गल्
पुरैशै मदहळिऱ्ऱाऩ् पॊऱ्कोयिन् मुऩ्ऩर्
मुरश मुळङ्ग मुडिशूट्ट मॊय्त्ताण्
डरश रिनिदिरुन्द नल्लवैयि नायिनाऩ् 385

उरै चॆय् पॆरुमै–(सबसे) प्रशंसित यशस्वी; उयर् तवत्तु–उत्कृष्ट तपोमार्ग में; ओर् ओङ्कल्–एक पर्वत-समान (रहे) वसिष्ठजी; पुरैचै मतम् कळिऱ्ऱाऩ्–गले की रस्सी के साथ मत्त रहनेवाले गजों की सेना के स्वामी के; पॊन् कोयिल् मुऩ्ऩर्–स्वर्ण-महल के सामने; मुरचम् मुळङ्क–ढोलों के बजते; मुटि चूट्ट–मुकुटधारण कराने के हेतु; अरचर् मॊय्त्तु–राजा एकत्र होकर; इनितु इरुन्त–जहाँ उत्साह से रहे; आण्टु–वहाँ; नल् अवैयिन्–उस सुन्दर मण्डप-प्रविष्ट; आयिनाऩ्–बने। ३८५

उधर प्रकीर्तित (और पर्वतसम उन्नत महान तपस्या के कर्ता) महान तपस्वी वसिष्ठ सभामण्डप में गये जहाँ राजा लोग इस विचार से एकत्र हुए थे कि गजपति दशरथ के स्वर्णमहल के द्वार पर ढोल बजेंगे और श्रीराम का मुकुटधारण सम्पन्न होगा। ३८५

❀ वन्द मुनियै मुहनोक्कि वाळ्वेन्दर्
ॲन्दै पुहुदर् किडैयूरुण् डायदो
अन्दमिल् शोहत् तळुदहुर ऱान्नॅन्कॊल्
शिन्दै तॅळिन्दोय् तॅळिवियॅमक् कॅन्ऱुरैत्तार् 386

वन्त मुनियै–आगत मुनि को; मुकम् नोक्कि–मुख पर देखकर; वाळ् वेन्तर्–तलवारधारी राजा लोगों ने; चिन्तै तॅळिन्तोय्–स्वच्छ मन वाले; ॲन्तै पुकतऱ्कु–हमारे पितृतुल्य दशरथ के आने में; इटैयूरु उण्टायतो–कोई बाधा हो गई क्या; अन्तम् इल् चोकत्तु–अपार शोक के साथ; अऴुत कुरल् ताऩ् ॲऩ् कॊल्–जो रोने का स्वर आया वह क्या था; ॲमक्कु तॅळिवि–हमें साफ़ बताइए; ॲऩ्ऱु उरैत्तार्–ऐसा पूछा। ३८६

तलवारधारी नृपों ने आगत वसिष्ठजी के मुख को निहारकर प्रश्न किया कि निश्चल स्वच्छ चित्त वाले! हमारे पितृतुल्य राजा के इधर आने में कोई बाधा उपस्थित हो गई क्या? अपार शोक प्रदर्शित करते हुए कोई क्रन्दन-स्वर जो सुनाई दिया वह क्या है। हमें साफ़-साफ़ बताने की कृपा कीजिए। ३८६

❀ वेन्दऩ् पणियिनाऱ् कैहेशि मॅय्प्पुदल्वऩ्
पान्दण् मिशैक्किडन्द पार्काप्पा ऩायिनाऩ्
एन्दु तडन्दो ळिरामन् ऱिरुमडन्दै
कान्द नॊरुमुऱैपोय्क् काडुऱैवा ऩायिनाऩ् 387

वेन्तऩ् पणियिनाल्–राजा की आज्ञा से; कैकेचि मॅय् पुतलवऩ्–कैकेयी के सत्यनिष्ट पुत्र; पान्तळ् मिचै किटन्त–शेषनाग पर धृत; पार् काप्पाऩ् आयिनाऩ्–भूमि के पति हो गये; तिरु मटन्तै कान्तऩ्–श्रीलक्ष्मी-पति; एन्तु तट तोळ् इरामऩ्–उन्नत व विशाल भुजा वाले श्रीराम; ऒरु मुऱै–एक रीति से; काटु पोय् उऱैवाऩ्–वनवासी; आयिनाऩ्–हो गये। ३८७

वसिष्ठ ने उत्तर दिया— राजा की जो आज्ञा हुई है उसके अनुसार कैकेयी का सत्यवादी (या असली) पुत्र शेषशीर्षस्थ इस भूमि के नायक बनेंगे। श्रीलक्ष्मी-कान्त, विशाल और उन्नत भुजा वाले श्रीराम एक क्रम से वनवासी हो जाएँगे। ३८७

❀ कॊण्डाळ् वरमिरण्डुङ् गेहयर्कोन् कॊम्बवट्कुत्
तण्डाद कादऱ् ऱयरदनुन् दाऩळित्ताऩ्

ऑण्डार् मुहिलैवनम् बोहॅन् ड्रीरुप्पडुत्ताळ्
ॲण्डानुम् वेऱ्रिल्लै ईदडुत्त वाऱॆन्ड्रान् 388

केकयर् कोन् कॉम्पु–केकयराज की पुत्री ने; इरण्टुम् वरम् कॉण्टाळ्–दोनो वर माँग लिये; तण्टात कातल् तयरतनुम्–अविच्छिन्न प्रेम रखनेवाले दशरथ ने भी; अवट्कु अळित्तान्–उन्हें दे दिये; ऑळ् तार् मुकिलै–उज्ज्वल मालाधारी मेघ (सम श्रीराम) को; वनम् पोक–वन जाओ; ॲन्ऱु–कहकर; ऑरुप् पटुत्ताळ्–सम्मत कराया; ईतु अटुत्त आऱु–यही वृत्तान्त है; ऍण् वेऱु इल्लै–सोचने-समझने के लिए और कुछ नहीं है; ॲन्ड्रान्–कहा। ३८८

उन्होंने आगे विवरण दिया। केकयराज-तनया ने राजा से दो वर माँगे। उन पर अगाध और अविच्छिन्न प्रेम रखनेवाले राजा ने भी उन्हें दो वर दे दिये। उनमें ही एक से कैकेयी ने उज्ज्वलमाला-धारी मेघसम श्रीराम को, 'वन जाओ' कहकर जाने को भी सम्मत करा लिया। इसमें आगे सोचने के लिए या इसके सम्बन्ध में और किसी प्रकार का अनुमान करने के लिए कुछ नही है। यही हुआ। —वसिष्ठ ने कहा। ३८८

❀ वारार् मुलैयारु मड्रुळ्ळ मान्दर्हळुम्
आराद काद लरशर्हळु मन्दणरुम्
पेराद वाय्मैप् पॅरियो नुरैशॅविपुळ्
शाराद मुन्नन् दयरदनैप् पोल्वीऴ्न्दार् 389

वार् आर् मुलैयारुम्–अँगिया-बद्ध स्तन वालियाँ (स्त्रियाँ); मड्रु उळ्ळ–और अन्य; मान्तर्कळुम्–पुरुष भी; आरात कातल् अरचर्कळुम्–अघट प्रेम रखनेवाले राजा; अन्तणरुम्–ब्राह्मण लोग; पेरात वाय्मै–अचल सत्यवादी; पॅरियोन्–महात्मा का; उरै–कथन; चॅविपुळ् चारात मुन्नम्–कान में पड़ने से पूर्व; तयरतनै पोल् वीऴ्न्तार्–दशरथ के समान नीचे गिरे। ३८९

स्त्रियाँ, जिनके स्तन अँगिया-बद्ध थे, पुरुष, श्रीराम के अत्यंत प्रेमी राजा लोग, और ब्राह्मण लोग, सभी; ज्योंही अचल सत्यवादी महात्मा वसिष्ठजी के कथन उनके कानों में लगे त्योंही दशरथ के समान भूमि पर गिर पड़े। ३८९

❀ पुण्णुड्र तीयिऱ् पुहैयुऱ् ड्रुयिर्पदैप्प
मण्णुड्र् ड्रयर्न्दु मरुहिऱ् ड्रुडम्बॆल्लाम्
कण्णुड्र वारि कडलुड्र दन्निलैये
विण्णुड्र दॆम्मरुङ्गुम् विट्टळुद पेरोशै 390

उटम्पु ऍल्लाम्–शरीर सब; पुण् उड्र तीयिन्–व्रण में आग लगी, जैसे; पुकैयुड्रु–झुलसकर; उयिर् पतैप्प–प्राणों के छटपटाते; अयर्न्तु–थककर; मण् उड्रु–भूमि पर पड़कर; मरुकिड्रु–लोटे; अ निलैये–उस दशा में; कण् उड्र वारि–आँखों से निकला (अश्रु-) जल; कटल् उड्रतु–बहकर समुद्र में गया; ऍ मरुङ्कुम्–

सब ओर; विट्टु अळुत–खुलकर जो रोये; पेर् ओचै–वह जोर का स्वर; विण् उऱ्ऱतु–आकाश तक पहुँचा। ३९०

उनके शरीर व्रण में आग लगी जैसे झुलस गये, प्राण छटपटाने लगे। वे थकित होकर भूमि पर लोटने लगे। उस दशा में उनकी आँखों से जो आँसू का प्रवाह निकला वह समुद्र में जा मिला। सब ओर जो वे मुख खोलकर रोये उसका जोर का नाद आकाश से जा मिला। ३९०

❀ माद रुरुङ्गलमु मङ्गलमुम् शिन्दित्तङ्
गोदै पुडैपॅयरक् कूऱ्ऱनैय कण्शिवप्पप्
पाद मलर्पदैप्पत् ताम्बदैत्तुप् पार्शेर्न्दार्
ऊदै यॅऱिय वॊशिपूङ् गॊडिपोल्वार् 391

मातर्–स्त्रियाँ; अरु कलमुम्–बहुमूल्य आभरणों को; मङ्कलमुम्–अहिवात-सूचक आभरणों को भी; चिन्ति–गिराकर; तम् कोतै पुटै पॅयर–केश को बिखरने देते हुए; कूऱ्ऱु अनैय–यम-सम; कण् चिवप्प–आँखों को लाल करते हुए; पातम् मलर् पतैप्प–चरणकमलों के गड़बड़ाने से; ताम् पतैत्तु–खुद छटपटाकर; ऊतै–ऍऱिय–उदीची (ठण्डी) हवा के बहने से; ऑचि–मुरझाकर गिरनेवाली; पू कॉटि पोल्वार्–पुष्पलतायें जैसे; पार् चेर्न्तार्–भूमि पर गिर पड़ीं। ३९१

स्त्रियाँ इतनी प्रभावित हुई कि उन्होंने अपने सारे आभरण, अहिवात-सूचक आभरण तक—उतार फेंक दिया। उनके केश खुलकर बिखर गये। पुरुषों के हृदय-भेदक (यम-सी) आँखें रोने से लाल हो गई। चरण-कमल लड़खड़ाने लगे। वे खुद कंपित होकर उदीची हवा से मुरझायी हुई पुष्पलताएँ जैसे टूटकर भूमि पर गिर पड़ीं। ३९१

❀ आवा वरश नरुळिलने यामॅन्बार्
कावा दऱत्तैयिनिक् कैविडुवोम् यामॅन्बार्
तावाद मन्नर् तलैत्तलैवीळ्न् देङ्गिनार्
मावादञ् जायत्त मरामरमे पोल्हिन्ऱार् 392

तावात मन्नर्–(श्रीराम के प्रति) अबाध (प्रेम वाले) राजा; आ, आ–हाय, हाय; अरचन्–चक्रवर्ती; अरुळ् इलन् आम्–दयाहीन हैं; ऍन्पार्–कहते; याम्–हम भी; इनि–अब; अऱत्तै कावातु–धर्म को बिना पाले; कै विट्टुवोम्–छोड़ देंगे; ऍन्पार्–कहते; मा वातम् चाय्त्त–प्रबलप्रभंजन-निहत; मरा मरम् पोल् किन्ऱार्–सालवृक्ष के समान; तलै तलै वीळ्न्तु–यत्र-तत्र गिरकर; एङ्कितार्–दुखी हुए। ३९२

श्रीराम पर जो राजा अचल प्रेम रखते थे वे भी, यह कहते हुए कि हाय, हाय! चक्रवर्ती भी निर्दय हैं। हम भी धर्म क्यों पालें? छोड़ देंगे, प्रचंड-प्रभंजन-प्रतिहत साल वृक्षों के समान यत्र-तत्र गिरकर रोये। ३९२

किळ्ळैयोडु पूवै यऴुद किळर्माडत्
तुळ्ळुऱैयुम् वूशै यऴुद वुणर्वरियाप्
पिळ्ळै यऴुद पॅरियोरै यॅन्शोल्ल
वळ्ळल् वनम्बुहुवा नॅन्ऱुरैत्त माऱ्ऱत्ताल् 393

वळ्ळल्–प्रभु श्रीराम; वनम् पुकुवान्–वन जाएँगे; ॲन्ऱु उरैत्त माऱ्ऱत्ताल्–ऐसा कहे हुए वचन से; किळर्–शोभायमान; माटत्तु उळ् उऱैयुम्–महल के अन्दर रहनेवाले; किळ्ळैयोटु–शुकों के साथ; पूवै–सारिकाएँ भी; अऴुत–रोईं; पूवै अऴुत–मार्जार रोये; उणर्वु अरिया–अबोध; पिळ्ळै अऴुत–शिशु रोये; पॅरियोरै ॲन् चोल्ल–बड़ों का क्या कहूँ। ३९३

श्रीराम वन जाएँगे —यह सुनकर सुन्दर सौधों के अंदर रहनेवाले तोते रोये; सारिकाएँ भी रोयीं। बिल्लियाँ रोयीं। अबोध शिशु रोये। फिर बड़ों की हालत का कहना क्या है ? । ३९३

चेदाम्बल् पोदनैय शॅङ्गनिवाय् वॅण्डळवप्
पोदाम्बल् ऱोन्ऱप् पुणर्मुलैमेल् पूण्डरळ
मादाम्बल् ऱॅन्न मऴैक्कण्णी रालियुह
नादाम्बल् ऱामऴलै नङ्गैमा रेङ्गिनार् 394

ना पऱ्ऱात मऴलै–जीभ पर अपरिपक्व तोतली बोली वाली; नङ्कैमार्–स्त्रियाँ; चॅम्मै आम्पल्–लाल कुमुद का; पोतु–फूल; चॅम् कनि–लाल बिंबफल; अनैय वाय्–जैसे मुखों में; वॅळ् तळवम् पोतु आम्–श्वेत कुन्दकली से; पल् तोन्ऱ–दांत प्रकट करते हुए; पुणर् मुलै मेल्–संश्लिष्ट स्तनद्वय पर; पूण्–पहनी हुई; मा तरळम् ताम्पु–श्रेष्ठ मुक्तामाला; अऱ्ऱु ॲन्न–टूटी हो जैसे; मऴै कण् नीर् आलि उक–शीतल आँखों से आंसू की बूंदें गिराते हुए; एङ्किनार्–रोईं। ३९४

अपरिपक्व जीभ से अस्पष्ट मधुर तोतली बोली निकालनेवाली (उच्चकुल की) स्त्रियाँ भी लाल कुमुद और बिंबफल-सम अपने मुख में कुन्दकली-सी दंतावली प्रकट करते हुए, और आभरण-मंडित श्लिष्ट स्तनद्वय पर मुक्तामाला से छूटकर मोती के दाने गिरते है जैसे, जलभरी आँखों से आँसू के कण गिराते हुए रो रही थी। ३९४

आवु मऴुदवदन् कन्ऱऴुद वन्ऱलर्न्द
पूवु मऴदपुनर् पुळ्ळऴुद कळ्ळोऴुहुम्
कावु मऴुद कळिऱऴुद कालवयप्पोर्
मावु मऴुदनवम् मन्नवनै मानवे 395

अ मन्नवनै मानवे–उन चक्रवर्ती के समान; आवुम् अऴुत–गायें रोईं; अतन् कन्ऱु अऴुत–उनके बछड़े रोये; अन्ऱु अलर्न्त–उसी दिन विकसित; पूवुम् अऴुत–फूल रोये; पुनल् पुळ् अऴुत–जल-पक्षी रोये; कळ् ऒऴुकुम् कावुम्–शहद चूनेवाले उद्यान रोये; कळिऱु अऴुत–गज रोये; काल् वय पोर् मावुम् अऴुतन–ताकतवर पैरों वाले युद्ध-अश्व भी रोये। ३९५

गायें भी उन्हीं चक्रवर्ती के समान रोयी। उनके बछड़े रोये। सद्यविकसित फूल रोये। जल-पक्षी रोये। मधुस्रावी वृक्षों वाले उद्यान रोये। गज रोये और सशक्त पैरों वाले युद्ध-अश्व भी रोये। (रोये-मुरझाये, दुखी हुए।)। ३९५

नानीयु मुयह्ला मॅन्ऱॅण्णि नायहऩैक्
कानीयु मॅन्ऱुरैत्त कैहेशि युड्गॉडिय
कूनीयु मल्लाऱ् कॉडियार् पिऱरुळरो
मेनीयु मिन्ऱि वॅरुनीरे यायिनार् 396

नान्-मैं; नीयुम्-तुम भी; उय्कल आम्-उन्नत होंगे; ऍन्ऱु ऍण्णि-यह सोचकर; नायकनै-(श्रीराम) नायक को; कान् ईयुम्-वनवास दिला दीजिए; ऍन्ऱु उरैत्त-ऐसा जिन्होंने कहा उन; कैकेयियुम्-कैकेयी और; कॉटिय कूनियुम् अल्लाल्-क्रूर कुब्जा के सिवा; कॉटियार् पिऱर् उळरो-निर्मम कोई होंगे; मेनियुम् इन्ऱि-विदेह होकर; वॅऱुम् नीरे आयिनार्-केवल जलप्राय हो गये। ३९६

"मैं और तुम दोनो फूलें और फलें" —इस विचार से कैकेयी और कुब्जा दोनो ने षडयंत्र रचकर श्रीराम को वनवास दिलाया। उन दोनो निर्मम स्त्रियों के सिवा वहाँ निर्मम कौन थे ? इसलिए अन्य सभी लोग विदेह वनकर जलप्राय हो गये ! (वे शोक से एक दम दुखविगलित हो गये।)। ३९६

तेऱा दऴिवऴिन्दा रॅङ्गुलप्पार् तेरोड
नीऱाहिच् चुण्ण निऱैन्द तॅरुवॅल्लाम्
आऱाहि योडिन कण्णी ररुनॅञ्जम्
कूऱाहि योडाद वित्तनैये कुऱ्ऱमे 397

तेऱातु-फिर सचेत न हुए, ऐसे; अऴिवु अऴिन्तार्-जो अचेत हुए; ऍङ्कु उलप्पार्-कहाँ गिनती में आएँगे; तेर् ओट-रथ के दौड़ने से; नीऱु आकि-धूलि उठी; चुण्णम् निऱैन्त-उससे धूलि-भरी; तॅरु ऍल्लाम्-सभी वीथियों में; कण् नीर्-अश्रुजल; आऱु आकि ओटिन-नदी वनकर बहा; अरु नॅञ्चम्-उनके प्यारे हृदय; कूऱु आकि ओटात-खण्ड-खण्ड होकर नहीं भागे; इत्तनैये-इतनी ही; कुऱ्ऱम्-कसर थी। ३९७

जो इस तरह अचेत हो गये कि फिर सचेत होते नही दिखते उनकी गिनती कहाँ है ? (वे अनगिनत है।) रथों के चलने से जो वीथियाँ धूलि-भरी हो गई थीं उन पर लोगों के अश्रुजल की वनी नदियाँ वह रही थीं। उनके प्यारे हृदय के टुकड़े नहीं बने और भागे, इतनी ही कसर थी। ३९७

❀ मण्शॅय्द पाव मुळदॅऩ्बार् मामलर्मेऱ्
पॅण्शॅय्द पाव मदनिऱ् पॅरिदॅऩ्बार्

पुण्शॅय्द नॆञ्जॆ विदियॆन्बार् पूदलत्तोर्
कण्शॅय्द पावङ् गडलिङ् पॆरिदॆन्बार् 398

मण् चॆय्त–पृथ्वी का कृत; पावम् उळतु–कोई पाप है; ॲन्पार्–कहते; मा मलर् मेल् पॆण्–उत्कृष्ट कमल पर स्थित देवी का; चॆय्त पावम्–किया हुआ पाप; अततिल् पॆरितु–उससे बड़ा है; ॲन्पार्–कहते; विति–विधि ने; नॆञ्चॆ पुण् चॆय्ततु–सभी के हृदयों पर घाव किया है; ॲन्पार्–कहते; पूतलत्तोर्–भूलोकवासियों की; कण् चॆय्त पावम्–आँखों का किया हुआ पाप; कटलिन् पॆरितु–सागर से भी विपुल है; ॲन्पार्–कहते (कुछ लोग)। ३९८

लोग विविध विचार प्रकट करते थे। कुछ लोग कहते कि पृथ्वी-देवी ने कोई पाप किया है; और कुछ कहते कि श्रेष्ठ कमल-निवासिनी श्रीदेवी ने उससे बड़ा पाप किया है। विधि ने सबके हृदयों को वेध दिया है —यह कुछ लोग कहते। भूतल के लोगों की आँखों का पाप, जिसकी वजह से उन्हें श्रीराम को जटावल्कल-धारी देखना पड़ा, सागर से भी बड़ा हो गया है। ३९८

❀ आळान् वरद नरशॆन्वा रैयनिनि
मीळा नहर्क्कु विदिकॊडिदॆ काणॆन्बार्
कोळाहि वन्दवा कॊर्ड्रमुडि तानॆन्बार्
माळाद नम्मिन् मनम्वलिया रारॆन्बार् 399

परतन् अरचु आळान् ॲन्पार्–भरत राज नहीं करेगा, कहते; ऐयन्–आर्य; इनि नकर्क्कु मीळान्–अब नगर लौट नहीं आएँगे, कहते; विति कॊटितॆ–विधि क्रूर है; ॲन्पार्–कहते; कॊर्ड्रम् मुटि तान्–विजयीमुकुट-धारण की बात ही; कोळ् आकि वन्त आऱु–बुरा ग्रह-फल बनके आया, किस प्रकार; ॲन्पार्–कहते; माळात नम्मिन्–यह सुनकर भी जो नहीं मरे हमसे; मनम् वलियार्–कठोरमन; आर् ॲन्पार्–कौन है, कहते। ३९९

'भरत राज्य नहीं करेंगे'; 'आर्य श्रीराम अब नगर नहीं लौटेंगे'; 'विधि बड़ी क्रूर है'; मुकुटधारण की बात ही इस प्रकार का बुरा फल देनेवाला दुर्ग्रह बन गया; 'यह समाचार सुनकर भी जो नहीं मरे, हमसे बढ़कर पत्थरमन कौन हो सकता है?' —ऐसे अनेक विचार उनसे व्यक्त किये गये। ३९९

❀ आदि यरश नरुङ्गे हयन्महण्मेर्
कादन् मुदिरक् करुत्तऴिन्दा ऩामॆन्बार्
शोदै मणवाळन् ऱन्नोडुन् दीक्कानम्
पोदु मदुवन्ऱेर् पुहुदु मॆरियॆन्बार् 400

आति अरचन्–हमारे नायक चक्रवर्ती; अरुम् केकयन् मकळ् मेल्–अपनी प्यारी केकयपुत्री पर; कातल् मुतिर–प्रेम की बढ़ती से; करुत्तु अऴिन्तान्–विवेकशून्य हो

गये; अन्नार्–कहते; चीतै मणवाळन् तन्नोटुम्–सीता के पति के साथ; ती कानम् पोतुम्–हम भी तापक वन में जायँगे; अतु अन्ऱेल्–वह न हुआ तो; अरि पुकुतुम्–अग्निप्रवेश करेंगे; अन्नार्–कहते। ४००

और भी कुछ लोग कहते कि हमारे प्रमुख नायक कैकेयी पर के प्रेमाधिक्य के कारण विवेकहीन मन वाले हो गये। हम श्रीसीतापति के साथ संतापी वन में चले जायँगे। अगर वह संभव नहीं होगा तो आग में गिरकर जल जायँगे। ४००

❀ कैया ल्निलन्दडविक् कण्णीर् मॅळ्हुवार्
उय्याळ्पोऱ् कोशलैयॅन् ऱोवादु वॅय्दुयिर्प्पार्
ऐया विळङ्गोवे याऱ्ऱुदियो नीयॅन्बार्
नॅय्या रळ्लुऱ्ऱ दुऱ्ऱारन् नीणहरार् 401

कैयाल् निलम् तटवि–हाथों से धरती को मलकर; कण् नीर् मॅळ्कुवार्–आँसुओं से लीपते; पॊन् कोचलै उय्याळ्–स्वर्णसम कौसल्या जीवित नहीं रहेंगी; अन्ऱु–कहते हुए; ओवातु वॅय्तुयिर्प्पार्–निरन्तर गरम उच्छ्वास छोड़ते; इळम् कोवे–लघुराज; ऐया–तात; नी आऱ्ऱुतियो–आप सह सकते हैं क्या; अन्नार्–कहते; अ नीळ् नकरार्–उस बड़े नगर के वासी; नॅय् आर्–घी-लगी; अळल् उऱ्ऱतु–आग लगी जैसे; उऱ्ऱार्–(बहुत दुख की) स्थिति में पहुँचे। ४०१

कुछ लोग आँसू बहाकर भूमि को अपने हाथों से लीपते। (यह दुख के वर्णन की एक रीति है, जो तमिळ का विशेष मसल है।) कुछ लोग, 'स्वर्ण-सम श्रेष्ठ कौसल्या पुत्र से विलग होकर जी नहीं सकेंगी' —यह कहते हुए गरम निश्वास छोड़ते थे। कुछ लोग लक्ष्मण को पुकारकर कहते कि लघुराज! हमारे प्रभु! आप यह दुख सह सकेंगे क्या? इस तरह उस बड़े नगर के सभी लोग जैसे घी-लगी आग उन पर लगी हो वैसा दुखी हुए। ४०१

तळ्ळूरु वेऱिल्लै तन्महऱ्कुप् पार्कॊळ्वान्
अॅळ्ळूरु तीक्करुम नेर्न्दा ळिवळॅन्नाक्
कळ्ळूरु शॅव्वाय्क् कणिहयरुङ् गैहेशि
उळ्ळूरु काद लिलळ्पोलॅन् ऱुळ्ळळिन्दार् 402

कळ् ऊरु–मधुस्रावी; चॅम्मै वाय्–लाल अधरों वाली; कणिकैयरुम्–वेश्याएँ भी; तन् मकऱ्कु–अपने पुत्र के लिए; पार् कॊळ्वान्–भूमि दिलवा लेने के विचार से; कैकेचि–कैकेयी ने; अॅळ् ऊरु–गर्ह्य; ती करुमम्–बुरा काम; नेर्न्ताळ्–किया; तळ्ळूरु वेरु इल्लै–निवारण कुछ नहीं है; अन्ना–कहकर; इवळ् उळ् ऊरु कातल्–ये अन्तस्थ सच्चा प्रेम वाली; इलळ् पोल्–नहीं हैं तो; अन्ना–कहकर; उळ् अळिन्तार्–चिन्ताकुलित हुईं। ४०२

(मन न देकर) अधर-सुरा देनेवाली वेश्याएँ भी दुखी हुईं। वे कहतीं

पुण्शॅय्द नञ्जे विदियॅन्बार् पूदलत्तोर्
कण्शॅय्द पावङ् गडलिऱ् पॅरिदॅन्बार् 398

मण् चॅय्त–पृथ्वी का कृत; पावम् उळतु–कोई पाप है; ऍन्पार्–कहते; मा मलर् मेल् पॅण्–उत्कृष्ट कमल पर स्थित देवी का; चॅय्त पावम्–किया हुआ पाप; अततिल् पॅरितु–उससे बड़ा है; ऍन्पार्–कहते; विति–विधि ने; नॅञ्चै पुण् चॅय्ततु–सभी के हृदयों पर घाव किया है; ऍन्पार्–कहते; पूतलत्तोर्–भूलोकवासियों की; कण् चॅय्त पावम्–आँखों का किया हुआ पाप; कटलिन् पॅरितु–सागर से भी विपुल है; ऍन्पार्–कहते (कुछ लोग)। ३९८

लोग विविध विचार प्रकट करते थे। कुछ लोग कहते कि पृथ्वी-देवी ने कोई पाप किया है; और कुछ कहते कि श्रेष्ठ कमल-निवासिनी श्रीदेवी ने उससे बड़ा पाप किया है। विधि ने सबके हृदयों को वेध दिया है —यह कुछ लोग कहते। भूतल के लोगों की आँखों का पाप, जिसकी वजह से उन्हें श्रीराम को जटावल्कल-धारी देखना पड़ा, सागर से भी बड़ा हो गया है। ३९८

❀ आळान् बरद नरशॅन्वा रैयनिनि
मीळा नहर्क्कु विदिकॉडिदे काणॅन्बार्
कोळाहि वन्दवा कॉऱ्ऱमुडि तानॅन्बार्
माळाद नम्मिन् मनम्वलिया रारॅन्बार् 399

परतन् अरचु आळान् ऍन्पार्–भरत राज नहीं करेगा, कहते; ऐयन्–आर्य; इनि नकर्क्कु मीळान्–अब नगर लौट नहीं आएँगे, कहते; विति कॉटिते–विधि क्रूर है; ऍन्पार्–कहते; कॉऱ्ऱम् मुटि तान्–विजयीमुकुट-धारण की बात ही; कोळ् आकि वन्त आऱु–बुरा ग्रह-फल बनके आया, किस प्रकार; ऍन्पार्–कहते; माळात नम्मिन्–यह सुनकर भी जो नहीं मरे हमसे; मनम् वलियार्–कठोरमन; आर् ऍन्पार्–कौन हैं, कहते। ३९९

'भरत राज्य नहीं करेंगे'; 'आर्य श्रीराम अब नगर नहीं लौटेंगे'; 'विधि बड़ी क्रूर है'; मुकुटधारण की बात ही इस प्रकार का बुरा फल देनेवाला दुर्ग्रह बन गया; 'यह समाचार सुनकर भी जो नहीं मरे, हमसे बढ़कर पत्थरमन कौन हो सकता है?' —ऐसे अनेक विचार उनसे व्यक्त किये गये। ३९९

❀ आदि यरश नॅरुङ्गे हयन्महण्मेऱ्
कादन् मुदिरक् करुत्तळिन्दा नामॅन्बार्
शोदै मणवाळन् ऱन्नोडुन् दीक्कानम्
पोदु मदुवन्ऱेऱ् पुहुदु मॅरियॅन्बार् 400

आति अरचन्–हमारे नायक चक्रवर्ती; अरुम् केकयन् मकळ् मेल्–अपनी प्यारी केकयपुत्री पर; कातल् मुतिर–प्रेम की बढ़ती से; करुत्तु अळिन्तान्–विवेकशून्य हो

गये; ॲन्पार्–कहते; चीतै मणवाळन् तन्नोटुम्–सीता के पति के साथ; ती कानम् पोतुम्–हम भी तापक वन में जायँगे; अतु अन्ऱेल्–वह न हुआ तो; ॲरि पुकुतुम्–अग्निप्रवेश करेंगे; ॲन्पार्–कहते। ४००

और भी कुछ लोग कहते कि हमारे प्रमुख नायक कैकेयी पर के प्रेमाधिक्य के कारण विवेकहीन मन वाले हो गये। हम श्रीसीतापति के साथ संतापी वन में चले जायँगे। अगर वह संभव नहीं होगा तो आग में गिरकर जल जायँगे। ४००

❀ कैया निलन्दडविक् कण्णीर् मॅळुहुवार्
उय्याळ्पोंर् कोशलैयॅन् ऱोवादु वॅय्दुयिर्प्पार्
ऐया विळङ्गोवे यार्ऱुदियो नीयॅन्बार्
नॅय्या रळलुऱ्ऱ दुऱ्ऱारन् नीणहरार् 401

कैयाल् निलम् तटवि–हाथों से धरती को मलकर; कण् नीर् मॅळुकुवार्–आँसुओं से लीपते; पॉन्न कोचलै उय्याळ्–स्वर्णसम कौसल्या जीवित नहीं रहेंगी; ॲन्ऱु–कहते हुए; ओवातु वॅय्तुयिर्प्पार्–निरन्तर गरम उच्छ्वास छोड़ते; इळम् कोवे–लघुराज; ऐया–तात; नी आऱ्ऱुतियो–आप सह सकते हैं क्या; ॲन्पार्–कहते; अ नीळ् नकरार्–उस बड़े नगर के वासी; नॅय् आर्–घी-लगी; अळल् उऱ्ऱतु–आग लगी जैसे; उऱ्ऱार्–(बहुत दुख की) स्थिति में पहुँचे। ४०१

कुछ लोग आँसू बहाकर भूमि को अपने हाथों से लीपते। (यह दुख के वर्णन की एक रीति है, जो तमिळ का विशेष मसल है।) कुछ लोग, 'स्वर्ण-सम श्रेष्ठ कौसल्या पुत्र से विलग होकर जी नही सकेंगी' —यह कहते हुए गरम निश्वास छोड़ते थे। कुछ लोग लक्ष्मण को पुकारकर कहते कि लघुराज! हमारे प्रभु! आप यह दुख सह सकेंगे क्या? इस तरह उस बड़े नगर के सभी लोग जैसे घी-लगी आग उन पर लगी हो वैसा दुखी हुए। ४०१

तळ्ळूरु वेऱिल्लै तन्महऱ्कुप् पार्कोंळ्वान्
ॲळ्ळूरु तीक्करुम नेर्न्दा ळिवळॅन्ऩाक्
कळ्ळूरु शॅव्वायक् कणिहयरुङ् गैहेशि
उळ्ळूरु कादलिलळ्पोलॅन् ऱुळ्ळळिन्दार् 402

कळ् ऊरु–मधुस्रावी; चॅम्मै वाय्–लाल अधरों वाली; कणिकैयरुम्–वेश्याएँ भी; तन् मकऱ्कु–अपने पुत्र के लिए; पार् कॉळ्वान्–भूमि दिलवा लेने के विचार से; कैकेचि–कैकेयी ने; ॲळ् ऊरु–गर्ह्य; ती करुमम्–बुरा काम; नेर्न्ताळ्–किया; तळ्ळूरु वेऱु इल्लै–निवारण कुछ नहीं है; ॲन्ना–कहकर; इवळ् उळ् ऊरु कातल्–ये अन्तस्थ सच्चा प्रेम वाली; इलळ् पोल्–नहीं है तो; ॲन्ना–कहकर; उळ् अळिन्तार्–चित्ताकुलित हुईं। ४०२

(मन न देकर) अधर-सुरा देनेवाली वेश्याएँ भी दुखी हुईं। वे कहतीं

कि अपने पुत्र के लिए राज्य पाने की इच्छा से इन कैकेयी ने भी कितना निंदित और नीच और बुरा काम किया है ? इसका कोई निवारण नहीं है। तब वे असल में उनसे मन से प्रेम नहीं करती थीं —यही लगता है । ४०२

❀ नित्ऱु तवमियऱ्ऱित् ताऩ्ऱीर नेर्न्ततो
अऩ्ऱि युलहत्तु ळारुयिराय् वाऴ्वारैक्
कॊऩ्ऱु कळैयक् कुऱित्त पॊरुळदुवो
नऩ्ऱु वरङ्गॊडुत्त नायहऩ्ऱ ऩॆण्णमॆऩ्बार् 403

वरम् कॊटुत्त–वर देनेवाले; नायकऩ् तऩ् ऍण्णम्–नायक का मतलब; ताऩ् नित्ऱु–आप जाकर; तवम् इयऱ्ऱि–तपस्या करके; तीर–प्राण छोड़ने का; नेर्न्ततो–सोचकर क्या; अऩ्ऱि–वह नहीं तो; उलकत्तुळ्–संसार में; आर् उयिराय्–प्यारे प्राण-सम; वाऴ्वारै–जीनेवाले प्रजाजनों को; कॊऩ्ऱु–मारकर; कळैय–दूर करने; कुऱित्त पॊरुळ् अतुवो–किया गया संकल्प है; नऩ्ऱु–बहुत अच्छा रहा; ऍऩ्पार्–कहते । ४०३

कुछ लोग कुछ निष्ठुर वचन कहते— राजा ने जो वर दिया उसके पीछे उनका विचार क्या है ? वे क्या तपस्या करने जाकर अपने प्राणों को छोड़ना चाहते हैं या अपने प्राणप्यारे प्रजाजनों को मरवाने का उनका विचार है ? । ४०३

❀ पॆऱ्ऱुडैय मण्णवळुक् कीन्दु पिऱन्दुलहम्
मुऱ्ऱुडैय कोवैप् पिरियादु मॊय्त्तीण्डि
उऱ्ऱुऱैदुम् यारु मुऱैयवे शिऩ्ऩाळिल्
पुऱ्ऱुडैय काडॆल्ला नाडाहिप् पोमॆऩ्बार् 404

पॆऱ्ऱु उटैय मण्–(वर द्वारा) प्राप्त भूमि को; अवळुक्कु ईन्तु–उन्हें देकर; यारुम्–हम सभी कोई; पिऱन्तु–जन्म (-सिद्ध अधिकार) से; उलकम् मुऱ्ऱुम्–सभी भुवनों के; उटैय कोवै–स्वामी राजा (राम) को; पिरियातु–अलग न छोड़कर; मॊय्त्तु ईण्टि–उनसे लगे एकत्र होकर; उऱ्ऱु उऱैतुम्–मिले रहेंगे; उऱैयवे–वैसे रहने से; चिल नाळिल्–कुछ दिनों में; पुऱ्ऱु उटैय काटु ऍल्लाम्–बाँबियों से पूर्ण जंगल सब; नाटु आकि पोम्–पुर बन जायगा; ऍऩ्पार्–कहते । ४०४

और कुछ लोग कहते कि ठीक ! कैकेयी को वर द्वारा यह भूमि मिली है। लेने दो । पर हम जन्मसिद्ध अधिकार वाले राजा राम से अलग न होकर उनसे लगे रहकर वन मे चले जायँगे । वहाँ जाकर रहेंगे तो कुछ ही दिनों में वह वन पुर बन जायगा । बाँबियाँ महलों में परिवर्तित हो जाएँगी । ४०४

❀ ऍऩ्ऩे निरुब नियऱ्कै यिरुन्दवा
तऩ्ऩे रिलाद तलैमहऱ्कुत् तारणियै

मुन्ऩे कौडुत्तु मुऱैतिऱम्बत् तम्बिक्कुप्
पिन्ऩे कौडुत्ताऱ् पिऴैयादो मॅय्यॅन्बार् 405

तारणियै–धरणी को; मुन्ऩे–पहले; तन् नेर् इलात–जिनका सादृश्य अन्यत्र नहीं, उन; तलै मकऱ्कु–नायक और ज्येष्ठ पुत्र को, देकर; पिन्ऩे–बाद; मुऱै तिऱम्प–क्रम तोड़कर; तम्पिक्कु कौटुत्ताल्–उनके छोटे भाई को दे दे तो; मॅय् पिऴैयातो–सत्य भ्रष्ट नहीं होगा क्या; निरुपन् इयऱ्कै–राजा का स्वभाव भी; इरुन्त आऱु ऎन्ऩे–रहता किस प्रकार का है; ऎन्पार्–कहते। ४०५

कुछ लोगों ने बहुत पते का प्रश्न पूछा। नरपति तो पहले धरणी को अप्रमेय नायक अपने श्रेष्ठ पुत्र श्रीराम को दिया। फिर मुकरकर अब उनके छोटे भाई को देते हैं। तो क्या यह सत्य से भ्रष्ट होना नहीं है ? चक्रवर्ती की प्रकृति भी कैसी विचित्र है ? । ४०५

कोदै वरिविऱ् कुमरऱ् कौडुत्तनिल, मादै महन्पुणर वॅण्णियॆ वञ्जित्त
पेदै शिऱुवऩैप् पिन्पार्त्तु निऱ्कुमे, शीदै पिरियिनुन्दान् तीरा डिरुवॅन्बार् 406

कोतै–विजयमाला से अलंकृत; वरि विल्–बन्धनयुक्त धनु के; कुमरन् कौटुत्त–कुमार को दी गई; निलम् मातै–भूमिदेवी का; मकन् पुणर ऎण्णि–मेरा पुत्र पति हो, यह सोचकर; वञ्चित्त–(जिन्होंने अपने पति को) धोखा दिया उन; पेतै चिऱुवऩै–जड़मति (कैकेयी के) पुत्र को; तिरु–श्रीदेवी; पिन् पार्त्तु निऱ्कुमे–मुड़कर देखेगी और स्थिर रहेगी क्या; चीतै पिरियिनुम्–सीता विलग हो (रह) जाएँगी तो भी; तान् तीराळ्–वह नहीं बिछुड़ेंगी; ऎन्पार्–कहते। ४०६

कुछ लोग विस्मय करते कि क्या राज्यश्री, जो विजयीमाला से अलंकृत बंधनयुक्त धनुर्धर श्रीराम की वाग्दत्ता हो गई थीं, और जिसका अपने पुत्र भरत को बनाना चाहकर अपने पति को जड़मति कैकेयी ने ठग दिया, अब भरत पर मुड़कर भी दृष्टिपात करेंगी और उनके अधीन रहेंगी ? सीता भी चाहें तो राम से अलग रह जायँ पर राज्यलक्ष्मी उनको नहीं छोड़ेंगी। (भरत राज्य पर शासन नहीं कर सकेगा —यह संकेत है।) । ४०६

❀ उन्दादु नॅय्वार्त् तुदवादु कालॅऱिय
नन्दा विळक्कि नडुङ्गुहिन्ऱ नङ्गैमार्
शॅन्दा मरैत्तडङ्गट् चॅव्वि यरुणोक्कम्
अन्दो पिरिदुमो वाविदियॆ योवॅन्बार् 407

उन्तातु–बिना उकसाये; नॅय् वार्त्तु उतवातु–घी डालकर सहायता किये बिना; काल् ऎऱिय–वात के बहने से; नटुङ्कुकिन्ऱ–काँपनेवाले; नन्ता विळक्किन्–अविरत जलते दीप के समान; नङ्कै मार्–उच्चकुल की स्त्रियाँ; अन्तो–हन्त; चॅम् तामरै तट कण्–लालकमल से विशाल नेत्रों की; चॅव्वि–सुन्दर; अरुळ् नोक्कम्–कृपादृष्टि से; पिरितुमो–वंचित हो जायँगे क्या; आ–हाय; वितियेयो–हमारा दुर्भाग्य है क्या; ऎन्पार्–कहतीं। ४०७

कुछ उच्च कुल की स्त्रियाँ उन अविरत जलनेवाले दीपों के समान थीं जिसकी वाती उकसायी नहीं गई हो और जिसमें घी (तेल) नहीं डाला गया हो, और जो प्रवल वेग से वहनेवाली हवा के सामने काँपते हैं। वे वैसे काँपने लगीं। वे इस वात का दुख करने लगीं कि अव वे श्रीराम के कमलसम आँखों की कृपापूर्ण सुन्दर दृष्टि से वंचित हो जायँगी। वे पछताने लगीं कि हन्त ! अव उनकी कृपादृष्टि के वगैर जी सकेंगी क्या ? हाय ! यह क्या हमारा दुर्भाग्य हुआ ? । ४०७

❀ केट्टा निळैयोऩ् किळर्ञालम् वरत्ति नाले
मीट्टा ळऴित्ताळ् वऩ्ऩ्दम्मुऩिऩ् वॆम्मै मुऱ्ऱित्
तीट्टाद वेऱ्कट् चिऱुदायॆऩ याव रालुम्
मूट्टाद कालक् कडैत्तीयॆऩ मूण्डॆ ऴुन्दाऩ् 408

तीट्टात वेल् कण्–विना पैनाये (ही तीक्ष्ण रहनेवाले) भाले-सी आँखों की; चिऱ ताय्–छोटी माता ने; तम् मुऩिऩ्–मेरे भाई के प्रति; वॆम्मै मुऱ्ऱि–द्वेष वढ़ाकर; किळर् ञालम्–उनकी अपनी रहनेवाली भूमि को; वरत्तिऩाले–वर के व्याज से; मीट्टाळ्–उनसे छीन लेकर; वऩम् अळित्ताळ्–वनवास दे दिया; ॲऩ–यह वात; केट्टाऩ् इळैयोऩ्–अनुज (लक्ष्मण) ने सुना; यावरालुम्–किसी से; मूट्टात–न प्रज्वलित; कालम् कटै ती ॲऩ–युगान्त की अग्नि के समान; मूण्टु ॲऴुन्ताऩ्–क्रोधोन्मत्त हो उठे। ४०८

लक्ष्मण के कानों में यह समाचार पड़ा। 'सौतेली माता ने जिनकी आँखें स्वाभाविक रूप से भाले के समान तीक्ष्ण है, मेरे वड़े भाई से वढ़ते द्वेष के कारण उनके अधिकार के इस राज्य को छीनकर उनको वनवास दिया' —यह सुनकर वे स्वयं, विना किसी के द्वारा प्रज्वलित हो, उठनेवाले प्रलयांत अनल के समान क्रोधोन्मत्त हो उठे। ४०८

कण्णिऩ् कडैत्तीयुह नॆऱ्ऱियिऩ् कऱ्ऱै नाऱ
विण्णिऩ् चुडरुम् जुडर्नाणमॆय् नीर्वि रिप्प
उण्णिऩ् कुमुयिर्प् पॆऩ्मूदै पिऱक्क निन्ऱ
अण्णऩ् पॆरियोऩ् ऱनदादियिऩ् मूर्त्ति यॊत्ताऩ् 409

कण्णिल् कटै ती उक–आँखों से युगान्त की (सी) अग्नि प्रकट होती थी; नॆऱ्ऱियिल् कऱ्ऱै–भाल पर भौंहें; नाऱ–चढ़ गईं; मॆय्–शरीर; नीर्–स्वेदजल; विरिप्प–अधिक परिमाण में निकालने लगा तव; उळ् निऱ्कुम्–भीतरी; उयिर्प्पु ॲऩ्ऩुम्–श्वास का; ऊतै पिऱक्क–प्रवल पवन प्रकट हुआ, तव; विण्णिल् चुटरुम्–आकाश में दीप्त; चुटर् नाण–सूर्य भी लजा जाए, ऐसा; निऩ्ऱ–(उग्र रूप में) खड़े जो रहे; अण्णल् पॆरियोऩ्–वड़े महिमावान (लक्ष्मण); तततु आतियिल् मूर्त्ति ऒत्ताऩ्–अपने आदि (अनन्तनाग के) रूप में जैसे लगे। ४०९

आँखों से प्रलयकाल की-सी आग निकलने लगी। भौंहें भाल पर

चढ़ गई। शरीर स्वेद से भीग गया। भीतर से साँसें आँधी के समान आने लगीं। उनको देखकर आकाशचारी तेजोमय सूर्य भी मानो लज्जा से ठिठक गया। इस उग्ररूप में स्थित लक्ष्मण, उनके, असली आदि रूप अनंतनाग के समान लगे। ४०९

शिङ्गक् कुरुळैक् किडुतीञ्जुवै यून् नायिन्
वॅङ्गट् चिरुकुट् टनुक्कूट्ट विरुम्बि ताळे
नङ्गैक् करिविन् रिडनन्रिडु नन्रि दॅन्नाक्
कङ्गैक् किरैवन् कडहक्कै पुडैत्तु नक्कान् 410

कङ्कैक्कु–गंगा के देश के; इरैवन्–पति (लक्ष्मण); चिङ्कम् कुरुळैक्कु–सिंहशावक को; इट्टु–देने योग्य; तीम् चुवै ऊनै–मधुर स्वाद के मांस को; वॅम् कण्–भयंकर आँख वाले; नायिन् चिरु कुट्टनुक्कु–कुत्ते के छोटे पिल्ले को; ऊट्ट–खिलाने को; विरुम्पिताळे–चाहती हैं; नङ्कैक्कु–इस स्त्री की; अरिविन् तिरम्–बुद्धि का कौशल; नन्रु इतु–अच्छा है; नन्रु इतु–अच्छा है; ॲन्ना–कहकर; कटकम् कै पुटैत्तु–कंकणधारी हाथों को पीटते हुए; नक्कान्–ठठाकर हँसे। ४१०

गंगा के देश के पति वे, 'सिंहशावक के योग्य स्वादिष्ट मांस को लेकर क्रूराक्ष कुत्ते के पिल्ले को देना चाहती हैं वे देवी! उनकी बुद्धिमानी भी बड़ी अच्छी रही, अच्छी रही', यह कहते हुए तालियाँ पीटकर हँस उठे। ४१०

❀ शुर्रारन्द कच्चिर् चुरिहैपुडै तोन्र वार्त्तु
विर्राङ्गि वाळिप् पॅरुम्बुट्टिल् पुरत्तु वीक्किप्
पर्रारन्द शॅम्बोर् कवशम्बत्ति मेरु वाङ्गोर्
पुर्रा मतवोङ् गियतोळोडु मार्बु पोर्क्क 411

चुर्रु आर्न्त कच्चिल्–वलयित कर बँधे कमरबन्द में; चुरिकै–करवाल को; पुटै तोन्र आर्त्तु–पार्श्व में प्रकट बाँधकर; विल् ताङ्कि–(बाँयें हाथ में) धनु लेते हुए; पॅरु वाळि पुट्टिल्–बड़ा तूणीर; पुरत्तु वीक्कि–पीठ पर कस कर; पर्रु आर्न्त–चुस्त; चॅम् पॊन् कवचम्–चोखे स्वर्ण का कवच; पति मेरु ओर पुर्रु आम्–(इसके सामने) हिमालय एक बाँबी है; ॲन ओङ्किय–ऐसा कहने योग्य रीति से उन्नत; तोळोटु–कंधों के साथ; मार्पु–वक्ष को भी; पोर्क्क–ओढ़ते हुए (पहनकर)। ४११

वे युद्ध के लिए लस थे। कमरबंद में बँधकर तलवार लटक रही थी। बायें हाथ में धनुष, पीठ पर बड़ा तूणीर, और हिमालय को भी अपने सामने बाँबीसम दिखनेवाला बना दें ऐसे उन्नत कंधों और वक्ष को ढँकने वाला चोखे स्वर्ण का कवच —इनके साथ—। ४११

अडियिर् चुडर्पोर् कळ्ळार्हलि नाण वार्प्पप्
पिडियिर् रडवुज् जिलैनाण्पॅरुम् पूश लोशै

इडियिऱ् ऱींडरक् कडलेऴु मडुत्तु ञाल
मुडिविऱ् कुमुऱुम् मऴैमुम्मयिऩ् मेऩ्मु ऴङ्ग 412

अटियिल् चुटर्–पैरों में चमकनेवाली; पॊऩ् कऴल्—स्वर्ण-पायल; आर् कलि नाण—सागर-घोष को लज्जित करते हुए; आर्प्प–शब्द करे; पिटियिल् तटवुम्–(उँगलियों से) पकड़कर डोरी खींचने से; चिलै नाण्–धनु की प्रत्यंचा का; पॆरु पूचल् ओचै–बहुत बड़ी ध्वनि (जो उठी); इटियिऩ् तॊटर–वज्रघोष के समान लगातार उठे; ञालम् मुटिविल्–भुवनों के नाश के कल्पान्त में; कटल् एऴुम् मटुत्तु–समुद्र, सातों को पीकर; कुमुऱुम्–गरजनेवाले; मऴैयिऩ् मेल्–मेघों से बढ़कर; मुम्मै मुऴङ्क–तिगुना शोर मचावे, ऐसा। ४१२

उनके पैरों में स्वर्ण-पायल बँधी थी जिसकी ध्वनि समुद्रगर्जन को भी हरा रही थी। धनुष की टंकार, जो उन्होंने अपनी उँगलियों से डोरी पकड़कर खीचने से उठी, वज्रगर्जन के समान ध्वनित हो रही थी। दोनो ध्वनियाँ मिलकर युगांतकाल के, जब सारे लोक मिट जाते है, सातों समुद्रों का जल पीकर गरजनेवाले मेघों के गर्जनध्वनि से तिगुनी जोर की थी। ४१२

वाऩुन् निलनुम् मुदलीऱिल् वरम्बिल् पूदम्
मेनिऩ्ऱु कीऴ्हाऱुम् विरिन्दत्त वीऴ्व पोलत्
ताऩुन् दनदम् मुऩ्ऩुमल्लदु मुम्मै ञालत्
तूऩु मुयिरु मुडैयार्ह ळुळैन्दॊ दुङ्ग 413

वाऩुम् निलऩुम्–आकाश और धरती; मुतल् ईऱिल्–आदि और अन्तिम; मेल् निऩ्ऱु कीऴ् काऱुम्–ऊपर से नीचे तक; विरिन्तत्त–व्याप्त; वरम्पु इल् पूतम्–अनन्त भूत; वीऴ्व पोल–मानो मिट रहे है, ऐसा हो गये; मुम्मै ञालत्तु–(उसे देख) तीनो लोकों में; ताऩुम् तन तम्मुऩुम् अल्लतु–आप (लक्ष्मण) और अपने ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम के सिवा; ऊऩुम् उयिरुम् उटैयार्कळ्–शरीर और प्राणों वाले जीव; उळैन्तु–डरकर; ऒतुङ्क–(छिपने को) हटकर भाग जाएँ, ऐसा। ४१३

ऊपर आकाश से नीचे भूमि तक व्याप्त पाँचों भूतों का नाश होने वाला है ऐसा समझकर त्रिभुवनवासी जीवधारी सब, श्रीराम और लक्ष्मण को छोड़, डरकर छिपने का स्थान ढूँढ़कर भागने लगें, ऐसा— (लक्ष्मण का भयंकर रूप था)। ४१३

❀ पुविप्पावै परङ्गॆडप् पोरिल्वन् दोरै यॆल्लाम्
अविप्पानु मवित्तव राक्कयै यण्ड मुऱ्ऱक्
कुविप्पानु मिन्ऱॆन् कुणक्कोवित्तैक् कॊऱ्ऱमौलि
कविप्पानु निन्ऱे निडुकाक्कुनर् कामि नॆन्ऱान् 414

इऩ्ऱु–आज; पोरिल् वन्तोरै ऎल्लाम्–युद्ध में आनेवाले सभी को; पुवि पावै परम् कॆट–भूमिदेवी का भार दूर करते हुए; अविप्पाऩुम्–मार मिटाने के हेतु और;

अवित्तवर् आक्कैयै–ऐसा मारे गये लोगों के शरीरों के; अण्टम् मुट्र् कुविप्पानुम्–आकाश को छूते हुए ढेर लगाने के लिए; ॲन् कुणम् कोवित्तै–(बाद) मेरे गुणपूर्ण राजा (राम) को; कॉट्रम् मौलि कविप्पातुम्–विजयी किरीट पहनाने के निमित्त; निन्ट्रेन्–सन्नद्ध खड़ा हूँ; इतु काक्कुत्तर्–इसको रोक सकनेवाले; कामिन्–आकर रोको; ॲन्ट्रान्–ललकारा। ४१४

उन्होंने ललकारा। अब मैं, युद्ध करने आनेवालों को, भूभार-निवारण करते हुए मारने, और उनकी लाशों के आकाशस्पर्शी ढेर लगाने और उसके बाद मेरे गुणोन्नत श्रीराजाराम को विजयमुकुट पहनाने के लिए सन्नद्ध खड़ा हूँ। जो रोकना चाहें वे आवें। ४१४

विण्णाट्टवर् मण्णवर् विज्जयर् नाहर् मट्रुम्
ॲण्णाट्टवर् यावरु निट्कवॉर् मूव राहि
मण्णाट्टुनर् काक्कुनर् नीक्कुनर् वन्द पोदुम्
पॅण्णाट्ट मॉट्टे न्निप्पेरुल हत्तु ळॅन्ना 415

विण् नाट्टवर्–स्वर्गवासी; मण्णवर्–भूलोकवासी; विज्चैयर्–विद्याधर; नाकर्–नाग लोग (पातालवासी); मट्रुम् ॲण् नाट्टवर् यावरुम्–और भी दूसरे (लोक) समझे जानेवाले लोकों के सभी वासी; निट्क–एक ओर रहें; ओर् मूवर् आकि–परमश्रेष्ठ त्रिमूर्ति बने; मण् नाट्टुत्तर्, काक्कुनर् नीक्कुनर्–भुवन की सृष्टि, पालन और संहार करते है; वन्त पोतुम्–वे आएँ तो भी; इ पेर् उलकत्तुळ्–इस विशाल संसार में; इत्ति–अब; पॅण् नाट्टम् ऑट्टेन्–एक नारी का मनचीता होने नहीं दूँगा; ॲन्ना–कहते हुए। ४१५

स्वर्गवासी, भूलोकवासी, विद्याधर, पातालवासी और अन्य लोक-सज्ञित सभी लोकों के सभी वासियों को छोड़ो एक ओर; स्वयं सृष्टि, स्थिति और संहार का काम करनेवाले परमश्रेष्ठ त्रिदेव भी क्यों न आएँ, मैं कदापि एक नारी के संकल्प को चरितार्थ होने नहीं दूँगा। ४१५

❀ कालैक् कदिरो नडुवुट्रदोर् वॅम्मै काट्टि
ञालत् तवर्को महत्तन्नह रत्तु नाप्पण्
मालैच् चिहरत् तनिमन्दर मेरु मुन्दै
वेलैत् तिरिहिन् ट्रुदुपोऱ्ऱिरि हिन्ट्र वेलै 416

कालै कतिरोन्–प्रातःकालीन सूर्य; नट्ट उट्रतु—आकाश-मध्य आया; ओर् वॅम्मै काट्टि–तब का एक ताप प्रकट करते हुए; ञालत्तवर् को मकन्–लोकों के चक्रवर्ती के पुत्र; अ नकरत्तु नाप्पण्–उस नगर के मध्य; मालै चिकरम्–श्रेणीबद्ध शिखरों के साथ; तत्ति मन्तरम्–अनुपम मन्दर; मेरु–मेरुपर्वत का अंश; मुन्तै–पहले; वेलै तिरिकिन्ट्रतु पोल्–(क्षीर-) सागर में जैसा घूमता था; तिरिकिन्ट्र वेलै–वैसा घूमते जब रहे, तब। ४१६

प्रातःकालीन सूर्य के समान रहे लक्ष्मण अब आकाशमध्य के सूर्य के

समान हो गये। उनमें उतना क्रोधताप पैदा हो गया। भुवनपति चक्रवर्ती दशरथ के उस नगर के मध्य वे उस शिखरबहुल मेरु के (अंश-भूत) मंदरपर्वत के समान घूम रहे थे जो पहले क्षीरसागर मथते हुए घूमा था। ४१६

※ वेर्ुक् कॉडियाळ् विळैवित्त विनैक्कु विम्मित्
तेर्र्त् तॅळिया दयर्शिर्रवै पालि रुन्दान्
आर्र्र् रुणेत्तम्बि तन्विर्पुय लण्ड कोळम्
कीर्र्र् रुडैयप् पडुनाणुरु मेरु केळा 417

वेरु कॉटियाळ्–रुख बदलकर जो अब निर्मम बन गई हैं, उनके; विळैवित्त–कृत; विनैक्कु–उत्पात से; विम्मि–सिसकती हुई; तेर्र् तॅळियातु–धीरज बँधाने पर भी धीरज न धरकर; अयर्–लटनेवाली; चिर्रवै पाल्–छोटी माता (सुमित्रादेवी) के पास; इरुन्तान्–जो रहे (वे श्रीराम); आर्रल्–बलवान; तुणै तम्पि तन्–साथी, छोटे भाई का; विल् पुयल्–धनु रूपी मेघ से; अण्ट कोळम् कीर्रु उर्रु उटैय–अण्डगोल चिरकर टुकड़े-टुकड़े हो जाय ऐसा; पटु–उत्पन्न; नाण् उरुम् ऐरु–टंकार रूपी (मेघ-) गर्जन; केळा–सुनकर। ४१७

तब श्रीराम अपनी छोटी विमाता सुमित्रा के पास उनको धीरज बँधाते हुए रहते थे। निर्मम बनी कैकेयी के दुष्कृत्य से सिसकनेवाली वे धैर्य का अवलंबन नहीं कर पा रही थी। उस स्थिति में श्रीराम ने सुना कि उनके सहचर भाई के धनु रूपी मेघ से ऐसी टंकार रूपी गर्जन निकल रहा है जिससे अंडगोल ही फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। ४१७

※ वीराक् कियपॉर् कलन्विल्लिड वार मिन्न
मार्रात् तनिच्चॉर् रुळिमारि वळङ्गि वन्दान्
कार्राक्क निमिर्न्दु पुहैन्दु कन्नरु पॉङ्गुम्
आर्राक् कन्नलार् रुमोरञ्जन मेह मॅन्न 418

वीरु आक्किय–विशिष्ट रूप से निर्मित; पॉन् कलन्–स्वर्णाभरण; विल् इट–इन्द्रधनुष की-सी आभा छिटक रहे थे; आरम् मिन्न–मोतियों के हार चमके; काल् ताक्क–हवा के आघात से; निमिर्न्तु पुकैन्तु–प्रज्वलित होकर धुएँ के साथ; कनन्रु पॉङ्कुम्–ज्वाला के साथ उठनेवाली; आर्रात कन्नल्–न बुझनेवाली आग को; आर्रुम्–शान्त करने में समर्थ; ओर् अञ्चनम् मेकम् ॲन्न–एक काले मेघ के समान; मार्रात–जिनको सुनकर लोग विपरीत नहीं जा सकते ऐसे; तनि चॉल्–श्रेष्ठ वचन रूपी; तुळि मारि–बूँदों की वर्षा; वळङ्क–करने; वन्तान्–पधारे। ४१८

वे वहाँ चले। उनके विशेष रूप से निर्मित आभरण इन्द्रधनुष-सम विविध रंग के प्रकाश बिखेर रहे थे। मुक्तामालाएँ चमक रही थीं। वे ऐसे काले मेघ के समान आये जो हवा की सहायता पाकर भभक उठकर धुएँ के साथ अदम्य रीति से जलनेवाली अग्नि को शांत करने में समर्थ हो और जो अवार्य श्रेष्ठ वचन रूपी बूँदों की वर्षा करने आता हो। ४१८

❀ मिन्नॊत्त शीऱ्ऱक् कनल्विट्टु विळङ्ग निन्ऱ
पॊन्नॊत्त मेनिप् पुयलॊत्त तडक्कै यानै
ऎन्नत्त नॆन्नी यिऱैयेनु मुनिन्दि लादाय्
सन्नत्त नाहित् तनुवेन्दुदऱ् केदु वॆन्ऱान् 419

मिन् ऒत्त–बिजली के समान; चीऱ्ऱम् कनल् विट्टु–कोपाग्नि निकालते हुए; विळङ्क निन्ऱ–सबको वह स्थिति कराते हुए खड़े (जो) रहे उनको; पॊन् ऒत्त मेनि–और स्वर्णवर्ण-शरीरी; पुयल् ऒत्त तट कैयानै–मेघ-सम विशाल हाथों वाले उनको; ऎन् अत्तन्–मेरे तात; इऱैयेनुम् मुनिन्तु इलाताय्–किंचित भी कोप न करनेवाले; नी–तुम; चन्नत्तन् आकि–युद्धसन्नद्ध होकर; तनु एन्तुतऱ्कु–धनु उठा लेने का; एतु ऎन–हेतु क्या है; ऎन्ऱान्–पूछा। ४१९

आते ही उन्होंने बिजली के समान क्रोधाग्नि प्रकट करते हुए कुपित रहनेवाले, स्वर्णसम शरीर और मेघसम हाथों वाले लक्ष्मण से प्रश्न किया कि मेरे तात ! तुमने कभी ऐसा कोप नहीं किया था। अब युद्धसन्नद्ध ही हो गये हो और तुमने हाथ में धनु भी उठा लिया है। इसका हेतु क्या है ? । ४१९

❀ मॆय्यैच् चिदैवित्तु निन्मेन्मुऱै नीत्त नॆञ्जम्
मैयिऱ् करिया ळॆदिर्निन्नैयम् मौलि शूट्टल्
शॆय्यक् करुदित् तडैशॆय्हुनर् देव रेनुम्
तुय्यैच् चुडुवॆङ् गनलिऱ्चुडु वान्ऱु णिन्दॆन् 420

मॆय्यै चितैवित्तु–सत्य की हत्या करके; नित् मेल् मुऱै नीत्त–आपका परम्परागत स्वत्व का क्रम तुड़ानेवाले; नॆञ्चम् मैयिन् करियाळ्–चित्त (जिसका) अंजन से काला है उसके; ऎतिर्–सामने ही; निन्नै–आपका; अ मौलि चूट्टल् चॆय्य–वह मुकुट धारण कराना; करुति–सोचकर; तटै चॆय्कुनर्–बाधा देनेवाले; तेवरेनुम्–देव भी हों; तुय्यै चुटु–रुई को जलानेवाली; वॆम् कनलिन्–भयंकर आग के समान; चुटुवान् तुणिन्तेन्–उनको जलाने का निश्चय किया है। ४२०

लक्ष्मण ने उत्तर दिया— जिस कैकेयी ने सत्य का गला घोंट दिया, और आपका परंपरागत स्वत्वक्रम छीन लिया उस अंजनसम काले मन वाली कैकेयी के देखते, उसके सामने ही मैंने आपको मुकुट पहनाने का संकल्प कर लिया है। उसको रोकनेवाले चाहे देवता ही क्यों न हों उनको रुई को जलानेवाली आग के समान जलाकर राख बनाने को ठान लिया है। ४२०

वलक्कार्मुह मॆन्कैय दाहवव् वानु ळोरुम्
विलक्कारवर् वन्दु विलक्किनु मॆन्कै वाळिक्
किलक्कावॆरि वित्तुल हेळिनो डेळु मन्नर्
कुलक्कावलु मिन्ऱुनक् कियान्ऱरक् कोडि यॆन्ऱान् 421

वलम् कार्मुकम्–बलवान कार्मुक; ॲन् कैयतु आक–मेरे हाथ में रहता है, तब; अवर् वनतु अ वान् उळोरुम्–वे स्वर्गवासी देवता भी; विलक्कार्–मुझे नहीं रोकेंगे; ॲन् कै वाळिक्कु–मेरे हाथ के अस्त्र का; विलक्कितुम्–वे आकर रोकें तो भी; ॲरिवितुतु–मिटाकर; उलकु एळिनोटु एळुम्–लोक इलक्कु आ(क)–लक्ष्य बनकर; सात और सात, चौदहों को; मन्नर् कुलम् कावलुम्–उनके राजाओं का अधिकार भी; इन्रु उनक्कु यान् तर–मैं आज आपको दूंगा और; कोटि–ले लीजिए; ॲन्ऱान्–कहा। ४२१

लक्ष्मण ने आगे कहा— जब तक सबल कार्मुक मेरे हाथ में है तब तक वे स्वर्गलोक-वासी देवगण भी मुझे रोकने नहीं आयेंगे। आयेंगे तो भी उनको अपने वाणों का निशान बनाकर जला दूंगा और उनको राख बना दूँगा। मैं चौदहों लोकों को और उनमें रहनेवाले राजाओं के अधिकार को आपका बना दूँगा। आप ग्रहण कर लीजिए। ४२१

❀ इळैयानिदु कूऱ विराम नियॅन्द नीदि
वळैयावरु नन्नॅऱि निन्ऩॅऱि वाहु मन्ऩे
उळैयावऱम् वऱ्ऱिड वूळ्वळु वुऱ्ऱ शीऱ्ऱम्
विळैयाद निलत्तुनक् कॅङ्ङन् विळैन्द दॅन्ऱान् 422

इळैयान्–अनुज के; इतु कूऱ–यह कहने पर; इरामन्–श्रीराम; इयॅन्त नीति–सर्वसम्मत नीति; वळैयातु वरुम्–जिसमें टल नहीं जाती; नल् नॅऱि–उस मार्ग में; निन् अऱिवु आकुम् अन्ऱे–तुम्हारी बुद्धि चलनेवाली है न; उळैया अऱम्–अचल धर्म को; वऱ्ऱिट–मिटाते हुए; ऊळ् वऴुवु उऱ्ऱ चीऱ्ऱम्–क्रम का व्यतिक्रम करनेवाला क्रोध; विळैयात निलम्–न होनेवाले स्थान; उनक्कु–तुममें; ॲङ्ङन् विळैन्ततु–क्योंकर हुआ; ॲन्ऱान्–पूछा। ४२२

जब अनुज ने यह कहा तब श्रीराम ने पूछा कि भाई ! तुम्हारी मति उसी अच्छे मार्ग में चलनेवाली है न जो सर्वसम्मत-नीति से युक्त और बिना वक्र हुए चलता आता है ? फिर अब यह धर्मनाशक और क्रमभंजक क्रोध, अपने लिए अनुचित प्रदेश, तुममें उत्पन्न कैसे हुआ ? (तमिऴ का जो 'इळैयान्' शब्द इस पद्य में प्रयुक्त है उसका 'छोटा' अर्थ भी है; अदम्य, अथक आदि अर्थ भी।)। ४२२

❀ नीण्डा नदुकूऱलु नित्तिलन् दोन्ऱ नक्कुच्
चेण्डान् ऱोडऱ्मानिल निऱ्कॅन्त् तादै शॅप्पप्
पूण्डाय् पहैयालिळन् देवनम् बोदि यॅन्ऱाल्
याण्डो वडियेऱ्किनिच् चीऱ्ऱ मडुप्प दॅन्ना 423

नीण्टान्–सर्वश्रेष्ठ श्रीराम के; अतु कूऱलुम्–वह कहने पर; नित्तिलम् तोन्ऱ–मोती (सम दाँत) प्रकट करते हुए; नक्कु–हँसकर; चेण् तोटर् मा निलम्–(दूर से) बहुत काल से रहता आनेवाला विशाल राज्य; निऱ्कु ॲन्त–आपका, यह; तातै चॅप्प–

पिता के कहने पर; पूण्टाय्–मान लिया (आपने); पकैयाल् इळन्तु–(किसी के) द्वेष से खोकर; वतम् पोति ऍन्ऱाल्–वन जाओ कहा गया तो; अटियेऱ्कु चीऱ्ऱम् अटुप्पतु–मुझ दास का क्रोध करना; इत्ति याण्टो–इसके सिवा कहाँ; ऍन्ता–कहकर। ४२३

सर्वोत्तम श्रीराम के यह कहने पर लक्ष्मण ने अपने मोतीसम दाँतों को प्रकट करते हुए हँसकर कहा कि आप भी खूब बोले! परंपरा के क्रम से ज्येष्ठ पुत्र का होता हुआ आनेवाला यह विशाल राज्य पिताजी के कहने पर आपका हुआ। फिर किसी की शत्रुता के कारण आपको उसको खोना पड़ा और आप जंगल जा रहे हैं। तब क्रोध नहीं आएगा तो फिर कब मुझे कोप होगा? । ४२३

❀ नित्कट्परि विल्लवर् नीळवतत् तुन्नै नीक्कप्
पुत्कट्पॊऱि याक्कै पॊऱुत्तुयिर् पोऱ्ऱु हेनो
ऍन्कट्पुल मुन्नुतक् कीन्दुवैत् तिल्लै यॅन्ऱे
वत्कट्पुलन् दाङ्गिय मन्नवन् पोल वॅन्ऱात् 424

ऍन् कण् पुलम् मुन्–मेरी आँख के सामने; उतक्कु ईन्तु वैत्तु–आपको देकर; इल्लै ऍन्ऱु–फिर 'नाहिं' करके; वत् कण् पुलम् ताङ्किय–कठोर हृदय बने हुए; मन्नवत् पोल–चक्रवर्ती के समान; नित् कण् परिवु इल्लवर्–आप पर स्नेह न रहनेवालों के; उत्तै–आपको; नीळ् वततुतु नीक्क–विशाल वन में भेजते; पुत् कण्पॊऱि–नीच इन्द्रियों वाला; याक्कै पॊऱुत्तु–शरीर धारण करके; उयिर् पोऱ्ऱुकेतो–प्राण रखूँगा क्या; ऍन्ऱात्–कहा। ४२४

लक्ष्मण ने आगे कहा कि मेरे ही समक्ष राजा ने आपको राज्य दिया; फिर नहीं कह दिया। इतने कठोरहृदय उन राजा के समान क्या मैं भी यह देखते हुए कि आपसे प्रेम न रखनेवाले आपको वन भेज रहे हैं, अपना इन्द्रियागार यह शरीर ढोता हुआ जीवन रखूँगा? । ४२४

पित्कुऱ्ऱ मन्नुम् बयक्कुम्मर शॅन्ऱल् पेणेत्
मुन्कॊऱ्ऱ मन्नत् मुडिकॊळ्हॅनक् कॊळ्ळ मूण्ड
दॅन्कुऱ्ऱ मन्ऱि यिहन्मन्नवन् कुऱ्ऱम् यादो
मित्कुऱ् ऱॊळिरुम् वॅयिऱीक्को डमैन्द वेलोय् 425

मित् कुऱ्ऱु–बिजली (की चमक) मिटाकर (मन्द कर); ऑळिरुम् वॅयिल्–गरम धूप; ती कॊटु अमैन्त–और अग्नि-सह निर्मित; वेलोय्–भाला वाले; अरसु–राज; पित् मन्नुम् कुऱ्ऱम्–फिर भी अधिक दोष; पयक्कुम्–दिलाएगा; ऍन्पतु पेणेत्–इसकी परवाह न करके; कॊऱ्ऱम् मन्नत्–विजयशील चक्रवर्ती के; मुन्–पहले; मुटि कॊळ्क ऍत–किरीट धारण कर लो कहने पर; कॊळ्ळ–मैंने मान लिया; मूण्टतु–ऐसा फल हुआ; ऍन् कुऱ्ऱम् अन्ऱि–मेरे अपराध के सिवा; इकल् मन्नवन् कुऱ्ऱम्–वीर राजा का कसूर; यातो–कौन सा है। ४२५

श्रीराम ने समाधान देते हुए कहा कि बिजली की कान्ति को मिटाने वाली कांति और उज्ज्वल धूप और गरम आग की-सी तापक शक्ति से युक्त भाला वाले ! मुझे यह सोचना चाहिए था कि राज्य कितने ही दोष पैदा करेगा। मैंने उसका विचार किये बिना ही, जब राजा ने कहा कि 'राज्य लो', तो मान लिया। उसी का यह फल है ! तब अपराध मेरा है। शक्तिमान राजा का इसमें अपराध क्या है ? । ४२५

❀ नदियिन्पिऴै यन्ऱु नऱुम्पुन लिन्मै यऱ्ऱे
पदियिन्पिऴै यन्ऱु पयन्दु नमैप्पु रन्दाऴ्
मदियिन्पिऴै यन्ऱु महन्पिऴै यन्ऱु मैन्द
विदियिन् पिऴैनी यिदर्कॆन्नै वॆहुण्ड दॆन्ऱान् 426

मैन्त–कुमार; नऱु पुनल् इन्मै–अच्छा जल न रहे तो; नतियिन् पिऴै–नदी का दोष; अन्ऱु–नहीं है; अऱ्ऱे–उसी तरह; पतियिन् पिऴै अन्ऱु–राजा का दोष नहीं है; पयन्तु नम्मै पुरन्ताऴ्–(हमको पुत्र रूप में) प्राप्त कर पालनेवाली (कैकेयी) की; मतियिन् पिऴै अन्ऱु–मति का दोष भी नहीं है; मकन् पिऴै अन्ऱु–उनके पुत्र का भी दोष नहीं है; वितियिन् पिऴै–विधि का दोष है; इतर्कु–इसमें; नी वॆकुण्टतु–तुम क्रोधित हुए; ऎन्नै–क्यों; ऎन्ऱान्–कहा। ४२६

श्रीराम ने आगे बहस की। नदी में जल सूख गया तो नदी का क्या दोष ? उसी तरह यह राजा का अपराध नही है; न उन कैकेयी माता की बुद्धि की भूल है जिन्होंने हमें पुत्र के रूप में प्राप्तकर (पुत्र मानकर) प्रेम से पाला था। भरत का भी कोई अपराध नहीं है। यह केवल विधि का दोष है। इसमें तुम क्रोध क्यों करते हो ? । ४२६

❀ उदिक्कुम् मुलैयुऴ् ळुरुदीयॆन वूदै पॊङ्गक्
कॊदिक्कुम् मनमॆङ् ङ्नमाऱुमिक् कोऴि ऴैत्ताऴ्
मदिक्कुम् मदियाय् मुदलवानवर्क् कुम्व लीइदाम्
विदिक्कुम् विदियाहु मॆन्विऱ्ऱॊऴिल् काण्डि यॆन्ऱान् 427

ऊतै पॊङ्क–(भाथी की) हवा के अधिक होने से; उलै उऴ् उतिक्कुम्–भट्ठी के अन्दर प्रज्वलित; उरु ती ऎन–विपुल अग्नि के समान; कॊतिक्कुम् मतम्–तपनेवाला मेरा मन; ऎङ्ङनम् आऱुम्–कैसे शान्त होगा; इ कोऴ् इऴैत्ताऴ्–यह उत्पात मचानेवाली की; मतिक्कुम् मति आय्–बुद्धि की बुद्धि बनकर; मुतल् वानवर्क्कुम्–आदि त्रिदेव के लिए भी; वलितु आम्–प्रबल रहनेवाली; वितिक्कुम् विति आकुम्–विधि की विधि बननेवाले; ऎन् विल् तॊऴिल्–मेरे धनु का कार्य; काण्टि–देखिए; ऎन्ऱान्–कहा। ४२७

इसके उत्तर मे लक्ष्मण ने कहा— भाथी की हवा के अधिक लगने से उत्तेजित भट्ठी की अग्नि के समान मेरा मन तप्त है। वह शांत कैसे होगा ? आप कैकेयी की बुद्धि, विधि आदि की बात क्या करते हैं। मेरा

धनु उनकी मति को बुद्धि दिलायेगा और त्रिदेवों से भी अकाट्य विधि की भी विधि बनेगा। देखिए उसका कार्य। ४२७

❀ आय्तन्दव तव्वुरै कूऱलु मैय नित्ऱन्
वाय्तन्दन कूऱुदि योमऱै तन्द नावाल्
नीतन्ददन् ऱोर्नेरि योऽह णिलाद दीन्ऱ
ताय्दन्दयॆन् ऱालवर् मेऱ्चलिक् कित्ऱ दॆन्नो 428

आय् तन्तवन्–शास्त्रानुशीलन-कर्ता के; अ उरै कूऱलुम्–वह वचन कहने पर; ऐयन्–आर्य बोले; मऱै तन्त नावाल्–वेदाभ्यस्त जिह्वा से; नित्ऱन् वाय् तन्तत–जो भी मुख में आए; कूऱुतियो–कहोगे; नी तन्ततु–अब जो तुमने (करने को) कहा; नॆऱियोर् कण् निलाततु अन्ऱो–सन्मार्गियों में पाया जायगा न; ईन्ऱ ताय् तन्तै ॲन्ऱाल्–जनक माँ-बाप हैं तब; अवर् मेल्–उनसे; चलिक्कित्ऱतु–क्रोध करना; ॲन्नो–क्या ठीक है। ४२८

लक्ष्मण स्वयं शास्त्रज्ञ तथा शास्त्रानुशीलन-कर्ता थे। श्रीराम ने उसका स्मरण दिलाते हुए कहा— वेदों से अभ्यस्त अपनी जीभ से तुम यह कैसे शब्द निकाल रहे हो? अब जो करने की बात कह रहे हो क्या वह सन्मार्ग-गामियों के पास उचित रहेगा? जब सम्बद्ध लोग हमारे माता-पिता हैं तब उन पर क्रोध करना कैसी बात है? । ४२८

❀ नल्ऱा दयुनी तन्निनायह नीव यिऱ्ऱिऱ्
पॆऱ्ऱायु नीये पिऱरिल्लै पिऱर्क्कु नल्हक्
कऱ्ऱा यिदुहा णुदिनीयॆनक् कैम्म ऱित्तान्
मुऱ्ऱा मदियम् मिलैन्दान्मुनिन् दानै यन्नान् 429

मुनिन्तान्–क्रोधशील; मुऱ्ऱा मतियम् मिलैन्तानै–बालचन्द्रधर शिव के; अन्नान्–सदृश रहनेवाले ने; पिऱर्क्कु नल्क कऱ्ऱाय्–दूसरों को (सब) दान कर देना आपने सीखा है; नल् तातैयुम् नी–मेरे लिए आप ही अच्छे पिता हैं; तन्नि नायकन् नी–अद्वितीय नायक आप है; वयिऱ्ऱिल् पॆऱ्ऱ आयुम् नीये–गर्भ में से जन्म देनेवाले भी आप ही; पिऱर् इल्लै–और कोई नहीं; इतु नी काणुति–यह आप ध्यान से देखिए; ॲन–यह कहकर; कै मऱित्तान्–हाथ हिलाया। ४२९

तब क्रोधशील, चंद्रशेखररुद्र-सम लक्ष्मण ने कहा— आपने सब कुछ दूसरों को देना सीख लिया है। (या सबको दान करने की शिक्षाप्राप्त हे उदार!) मेरे आप ही पिता है; जननी माता भी अद्वितीय नायक आप ही। और कोई नहीं हैं। अब मेरी करनी देखिए। यह कहकर लक्ष्मण ने अपना हाथ नकारात्मक उत्तर में हिला दिया। ४२९

वरदन् पहर्वान् वरम्बॆऱ्ऱव डान्विव् वैयम्
शरदम् मुडैया ळवळॆन्ऱनित् तादै शॆप्पप्

परदन् पॅरुवा निनियान्पडैक् किन्ऱ शॆल्वम्
विरदम् मिदिनल् लदुवेऱिनि याव दॆन्ऱान् 430

वरतन् पकर्वान्–वरद प्रभु ने कहा; इ वैयम्–इस राज्य की; वरम् पॆऱ्ऱवळ् तान्–जिन्होंने वर द्वारा प्राप्त किया है वे ही; चरतम् उटैयाळ्–सच्ची स्वामिनी हैं; अवळ्–वे; ॲन् तनि तातै–मेरे अनुपम पिता; चॆप्प–कहते हैं; परतन् पॆरुवान्–भरत (राज्य को) प्राप्त करेगा; इनि–आगे; यान् पटैक्किन्ऱ–जो मै प्राप्त करूँगा वह; चॆल्वम्–धन; विरतम्–तपस्या है; इतिन् नल्लतु–इससे अधिक अच्छा; इनि वेऱु यावतु–अब क्या है; ॲन्ऱान्–कहा। ४३०

वरदप्रभु श्रीराम ने बहस जारी की। सच पूछा जाय तो इस भूमि की स्वामिनी कैकेयी ही है जिन्हें यह वर के रूप में प्राप्त हो गई। वे और मेरे श्रेष्ठ पिताजी इसको भरत को देते हैं तो वह भरत की हो गई। अब मेरा प्राप्य धन तप का धन है। अब इससे बढ़कर श्रेयस्कर वस्तु क्या है ? । ४३०

❀ आन्ऱान् पहर्वान् पिनुमैयविव् वैय मैयल्
तोन्ऱा नॆऱिवाळ् तुणैत्तम्बियैप् पोर्तॊ लैत्तो
शान्ऱोर् पुहळुन् दनित्तादैयै वाहै कॊण्डो
ईन्ऱाळै वॆन्ऱो विनियिक्कदन् दीर्व दॆन्ऱान् 431

आन्ऱान्–सर्वश्रेष्ठ श्रीराम; पिन्नुम्–फिर भी; पकर्वान्–कहा; ऐय–आर्य; इनि–अब; इ वैयम् मैयल्–इस संसार-मोह से; तोन्ऱात नॆऱि वाळ्–रहित मार्ग में रहनेवाले; तुणै तम्पियै–सहचर अनुज (भरत) को; पोर् तॊलैत्तो–युद्ध में मारकर; चान्ऱोर् पुकळुम्–सभी बड़े लोगों से प्रशंसित; तनि तातैयै–अनुपम पिता पर; वाकै कॊण्टो–विजय पाकर; ईन्ऱाळै वॆन्ऱो–या जननी को हराकर; इ कतम् तीर्वतु–यह कोप दूर होगा क्या; ॲन्ऱान्–बोले। ४३१

पुरुषोत्तम ने आगे पूछा— उत्तम गुणों के आर्य ! क्या तुम्हारा कोप, सांसारिक मायाजाल से विमुक्त, अच्छे मार्ग में जानेवाले अपने साथी भ्राता भरत को युद्ध में मारकर, साधुओं से प्रशंसित हमारे पिता को हराकर, या जननी कैकेयी को हराकर ही शांत होगा ? । ४३१

❀ शॊल्लुञ्जॊल् वल्ला नॆदिर्तम्बियुन् दॆव्वर् शॊल्लुम्
शॊल्लुञ् जुमन्दे निरुतोळॆनच् चोम्बि योङ्गुम्
कल्लुञ् जुमन्देन् कणैप्पुट्टिलुङ् गट्ट मैन्द
विल्लुञ् जुमक्कप् पिऱन्देन्वॆहुण् डॆन्नै यॆन्ऱान् 432

चॆल्लुम् चॊल् वल्लान्–अमोघ भाषणकुशल के; ॲतिर्–सामने; तम्पियुम्–अनुज लक्ष्मण ने भी; तॆव्वर् चॊल्लुम् चॊल्लुम् चुमन्तेन्–शत्रुओं की निंदा के वचन सह रहा हूँ; इरु तोळ् ॲन–दो कंधे के नाम पर; चोम्पि आङ्कुम्–व्यर्थ बढ़े हुए; कल्लुम् चुमन्तेन्–पत्थर ढोता हूँ; कणै पुट्टिलुम्–शरों की थैली भी; कट्टु अमैन्त

विल्लुम्–वन्धन से युक्त धनु भी; चुमक्क पिऱन्तेन्–ढोने के लिए पैदा हुआ; वेकुण्टु ॲन्तै–मुझ पर गुस्सा करके क्या (लाभ) है; ॲन्ऱान्–कहा। ४३२

यह सुनकर अनुज लक्ष्मण अपनी निंदा करते हुए बोले— मैं अपने शत्रुओं की निंदा का वचन सहते हुए दो कन्धे के नाम पर व्यर्थ बढ़े हुए पत्थर, शरों की थैली और बंधनयुक्त धनुष ढोनेवाला हो गया। फिर आप मुझ पर कोप करके क्या करेंगे! । ४३२

नन्शौर् कडन्दाण् डॅन्नैनाळुम् वळर्त्त तादै
तन्शौर् कडन्दॅर् करशाळवदु तक्क दन्ऱाल्
ॲन्शौर् कडन्दा लुनक्कियादुळ दूऱ्ऱ मॅन्ऱान्
तॅन्शोर् कडन्दान् वडशौर्कलैक् कॅल्लै तेरन्दान् 433

तॅन् चौल् कटन्तान्–दक्षिणी भाषा (तमिऴ) के पारंगत; वट चौल् कलैक्कु–उत्तरी (संस्कृत) भाषा के वेदशास्त्रों के; ॲल्लै तेर्न्तान्–पूर्ण ज्ञानी; नन् चौर्कळ् तन्तु–श्रेष्ठ वचन (विद्याएँ) सिखाकर; ॲन्नै आण्टु–मुझे पालकर; नाळुम् वळर्त्त–जिन्होंने पोषा; तातै तन् चौल् कटन्तु–उन पिता का वाक्य टालकर; अरचु आळ्वतु–राज करना; तक्कतु अन्ऱु–उचित नहीं है; ॲन् चौल् कटन्ताल्–मेरा वचन न मानोगे; उनक्कु यातु उळतु ऊऱ्ऱम्–तुम्हारा क्या वल होगा; ॲन्ऱान्–बोले। ४३३

तमिऴ और संस्कृत के पारंगत श्रीराम ने कहा कि 'मुझे अच्छी विद्याएँ सिखाकर जिन्होंने पालन-पोषण किया उन पिताजी के वाक्य का उल्लंघन करके राज्य करना मैं उचित नहीं समझता। तुम भी मेरी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारा बल क्या रह जायगा? सोचो!' श्रीराम ने यह कह अपनी बात समाप्त की। ४३३

शीऱ्ऱन् दुऱन्दा नॅदिर्निन्ऱु तॅरिन्दु शॅप्पुम्
माऱ्ऱन् दुऱन्दान् मऱैनान्गॅन वाङ्गल् शॅल्ला
नाऱ्ऱॅण् डिरैवे लयिनम्बिद ताणै याले
एऱ्ऱन् दौडङ्गाक् कडलिऱ्ऱणि वॅय्दि निन्ऱान् 434

नम्पितन्–नायक के; मऱै नान्कु ॲन–चतुर्वेद-सम; वाङ्कल् चॅल्ला–अकाट्य; आणैयाल्–आज्ञा से; चीऱ्ऱम् तुऱन्तान्–कोप छोड़कर; ॲतिर् निन्ऱु–समक्ष खड़े होकर; तॅरिन्तु चॅप्पुम्–सोचकर कहे हुए; माऱ्ऱम्–वचन; तुऱन्तान्–छोड़ दिये; नाल्, तॅळ् तिरै–चार, स्वच्छ लहरों वाले; वेलैयिन्–तीरों को; एऱ्ऱम् तॊटङ्का–पार कर जाना, जो नहीं करते; कटलिन्–उन समुद्रों के समान; तणिवु ॲय्ति–कोप थाम कर; निन्ऱान्–खड़े रहे। ४३४

नायक श्रीराम के वचन प्रभुसंहिता कहे जानेवाले चतुर्वेद के शासनों के समान अकाट्य थे। इसलिए लघुराज लक्ष्मण ने अपना क्रोध त्याग दिया। अपने ज्येष्ठ भ्राता के समक्ष खड़े होकर तर्क करना भी छोड़

दिया। वे तीर न पार करनेवाले, पारावार के समान कोप थामकर खड़े रहे। ४३४

अन्नानुरनै यैयनु मादियो डन्द मॅन्रुम्
तन्नालु मळप्परुन् दानुन्दन् पाह निन्र
पॊन्मानुरि यानुन् दळीइयॅनप् पुल्लिप् पिन्नैच्
चॊन्माणबुडै यन्नै शुमित्तिरै कोयिल् पुक्कान् 435

ऐयतुम्–आर्य भी; आतियॊटु अन्तम्–आदि और अन्त; ऍन्रुम्–कभी भी; तन्नालुम् अळप्पु अरुम्–स्वयं अपने लिए भी अगम; तातुम्–आप; तन् पाकम् निन्र–अपने ही भाग के रूप में विद्यमान; पॊन्मान् उरियानुम्–स्वर्णमृगचर्मधारी; तळीइयतु ॲन–आलिंगन कर रहे हों, जैसे; अन्नान् तनै पुल्लि–उन (लक्ष्मण) को गले लगाकर; पिन्नै–बाद; चॊल् माण्पु उटैय–भाषण-गरिमा वाली; अन्नै–माता; चुमित्तिरै कोयिल् पुक्कान्–सुमित्रा के मन्दिर में जा पहुँचे। ४३५

श्रीराम ने लक्ष्मण का कसकर आलिंगन कर लिया। वे अपने लिए भी अगम श्रीविष्णु थे। लक्ष्मण उन स्वर्णमृगांबर-धारी शिवजी के समान थे, जो विष्णु के ही अर्द्धांग (समझे जाते) है। वह आलिंगन शिव-विष्णु का आलिंगन-सा था। फिर वे दोनो भाषण की गरिमा वाली सुमित्राजी के महल में जा पहुँचे। (दक्षिण में शंकर-नारायण की मिली हुई मूर्तियाँ और उनके मन्दिर भी हैं)। ४३५

कण्डाण् महनुम् महनुन्दन कण्गळ् पोल्वार्
तण्डा वनञ्जॅल् वदर्केशमैन् दार्ह डम्मैप्
पुण्डाङ्गु नॅञ्जत् तिनळाय्प् पुरण्डाळ् पडिमेल्
उण्डाय तुन्बक् कडर्कॅल्लै युणर्न्दि लादाळ् 436

तन् कण्कळ् पोल्वार्–अपने दोनो आँखों के समान रहनेवाले; मकतुम् मकतुम्–अपना पुत्र और दूसरा पुत्र; तण्टा वनम् चॅल्वतर्के–दण्डकारण्य जाने के ही लिए; चमैन्तार्कळ् तम्मै–उद्यत उनको; कण्टाळ्–देखकर; उण्टाय तुन्पम् कटर्कु–जो हुआ उस दुख के सागर की; ऍल्लै उणर्न्तिलाताळ्–सीमा न जाननेवाली; पुण् ताङ्कुम् नॅञ्चत्तिनळ् आय्–व्रणयुक्त मन वाली होकर; पटि मेल् पुरण्टाळ्–भूमि पर लोटने लगी। ४३६

सुमित्रादेवी ने अपनी दोनो आँखों के समान अपने दोनो पुत्रों को दण्डकवन जाने के लिए उद्यत ही आते हुए देखा। तब उनको जो दुख हुआ वे उसका अन्त नही पा सकीं। उनका हृदय व्रणयुक्त हो गया। वे दुख के अतिरेक से भूमि पर गिरी और लोटने लगी। ४३६

शोर्वाळै योडित् तॊळुदेन्दिनन् रुन्ब मॅन्नुम्
ईर्वाळै वाङ्गि मनन्देर्रुदर् केर्र शॅय्वान्

पोर्वा ळरशर्क् किरैपॊय्त्तन नाक्क हिल्लेन्
कार्वा नॆंडुङ्गा ननिरंकण्डिवण् मीळ्वॆं नॆंन्ऱान् 437

चोर्वाळै–शिथिल पड़नेवाली उनको; ओटि तॊंळुतु–दौड़कर नमस्कार करके; एन्तितन्–(हाथ में) उठाया; तुन्पम् ॲन्नुम्–दुख रूपी; ईर् वाळै–चीरनेवाली कटार को; वाङ्कि–दूर कर; मनम् तेऱ्ऱुतऱ्कु एऱ्ऱ–मन को धीरज देने योग्य; चॆय्वान्–(उपाय) करने के लिए; पोर्वाळ् अरचर्क्कु इऱै–युद्ध में प्रयुक्त तलवारों के राजाओं के राजा मेरे पिता को; पॊय्त्ततन्–असत्यवक्ता; आक्ककिल्लेन्–बना नहीं सकूँगा; कार् वान् नॆंटु कान्–काले मेघों से भरे विशाल वन को; इऱै कण्टु–जरा देखकर; इवण् मीळ्वॆंन्–यहाँ लौट आऊँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ४३७

श्रीराम शिथिल होनेवाली माता के पास दौड़े आये। उन्होंने माता को नमस्कार करके उन्हें अपने हाथों मे पकड़कर उठाया। सुमित्रा के मन को जो दुख तलवार के समान काट रहा था उसे हटाने का उपाय करने के विचार से श्रीराम ने उनसे कहा कि माताजी! तलवार-धारी राजाओं के राजा, अपने पिता को मै असत्यभाषी बनाना नही चाहता। वह मुझे असह्य होगा। इसलिए वन में, जहाँ काले मेघ मँड़राते रहते है, जाऊँगा; उसको जरा देखूँगा और यहाँ लौट आऊँगा। ४३७

कान्पुक् किडिनुङ् गडल्पुक्किडि नुङ्ग लिप्पेर्
वान्पुक् किडिनु मॆंनक्कन्नवै माण योत्ति
यान्पुक्क दॊक्कु मॆंनैयार्नलि हिऱ्कु मीट्टार्
ऊन्पुक् कुयिर्पुक् कुणर्पुक्कुलै यऱ्क वॆंन्ऱान् 438

कान् पुक्किटिनुम्–वन-गमन करूँ; कटल् पुक्किटिनुम्–समुद्र-प्रवेश करूँ; कलि पेर् वान् पुक्किटिनुम्–शब्दाधार बड़े आकाश में पहुँच जाऊँ; ॲनक्कु–मेरे लिए; अन्नवै–वे सब; माण् अयोत्ति–महिमायुक्त अयोध्या में; यान् पुक्कतु ऒक्कुम्–मेरे जाने के समान ही होंगे; ॲनै नलिकिऱ्कुम्–मुझे दुख देने की; ईट्टार्–शक्ति रखनेवाले; यार्–कौन है; ऊन् पुक्कु–शरीर के अन्दर प्रवेश करने; उयिर् पुक्कु–प्राणों के अन्दर प्रवेश करने; उणर् पुक्कु–आत्मा के अन्दर प्रवेश करने (दुख को) देकर; उलैयऱ्क–वेदना का अनुभव मत कीजिए; ॲन्ऱान्–कहा। ४३८

माताजी मेरे लिए जंगल जाना क्या? समुद्र में प्रवेश, शब्दागार आकाश में गमन, सब अयोध्यावास के समान ही होंगे। कहीं भी मेरा अहित कर सकनेवाला कौन होगा? इसलिए आप दुख को अपने शरीर, प्राण और आत्मा तक को पीड़ा पहुँचाने मत दीजिए। आप चिन्ताग्रस्त न हों। —श्रीराम ने आश्वासन दिया। ४३८

तायाऱ् ऱुहिला डनैयाऱ्ऱुहिन् ऱाऱ्ह डम्बाल्
तोयाऱ्ऱु हिन्ऱा रॆंनच्चिन्दयि निन्ऱु तेऱ्ऱ
नोयाऱ्ऱ हिल्ला वुयिर्पोल नुडङ्गि डैयार्
मायाप् पळियाडरवऱ्कलै येन्दि वन्दार् 439

आऱ्ऱकिलाऴ् ताय् तन्नै–(दुख-) सहन न कर सकनेवाली (वि-) माता को; आऱ्ऱकिन्ऱार्कळ्–धीरज बँधानेवाले; तम् पाल्–उन (भाइयों) के पास; ती आऱ्ऱकिन्ऱार् अन्न–आग बुझानेवाले, जैसे; चिन्तैयिन् निन्ऱु तेऱ्ऱ–चिन्ता (दुख) से मुक्त कराने के लिए धीरज बँधाने पर भी; नोय्–पीड़ा-रोग से; आऱ्ऱ किल्ला–मुक्त हो धैर्य-धारण न कर सकनेवाली की; उयिर् पोल–जान के समान; नुटङ्कु–लचकनेवाली; इटैयार्–कमरों की (दासियाँ); मायात पऴियाळ्–अमरअपयश-पात्र; तर–(श्रीराम के पास) देने के लिए, दिये गये; वऱ्कलै–वल्कल को; एन्ऱि वन्तार्–ले आई। ४३९

अधीर माता सुमित्राजी की दुखाग्नि को श्रीराम और लक्ष्मण शान्त करने का प्रयास करने लगे। पर उनकी जान उस दुखरोग से मुक्त न हो सकी और क्षीण होती गई। तब उनकी ही जान के समान कृशकटि वाली दासियाँ, अमिट कलंकिनी कैकेयी द्वारा दिये हुए वल्कल लिये हुए आई। ४३९

कार्वान मोप्पात् ऱनैक्काण्डोरुम् काण्डोरुम् पोय्
नोरा युहक्कण् णिनुनेञ्ज ऴिहिन्ऱ नीरार्
पेरा विडर्प्पट् टयलारुरु पीऴै कण्डुम्
तीरा मनत्ता डरवन्दन शीर मॅन्ऱार् 440

कार् वानम् ऑप्पान् तन्नै–काले मेघ-सम (श्रीराम) को; काण् तॉरुम् काण् तॉरुम्–ज्यों-ज्यों देखतीं त्यों-त्यों; कण्णिनुम् नीर् आय् उक–आँखों से आँसू बहाते हुए; नॅञ्चु पोय् अऴिकिन्ऱ नीरार्–मन अति व्याकुल होकर; पेरात इटर् पट्टु–अदम्य दुख के वश में होकर; अयलार् उऱु–अन्यों की सही हुई; पीऴै कण्टुम्–पीड़ा देखकर भी; तीरात मनत्ताळ् तर–(अपने संकल्प से) न हटनेवाले मन की (कैकेयी) के देने से; वन्तन चीरम्–आये हैं, ये चीर; अॅन्ऱार्–कहा। ४४०

वे भी काले मेघ के समान रहनेवाले श्रीराम को देखकर दुख से भर गई। ज्यों-ज्यों वे उन पर दृष्टि डालती त्यों-त्यों उनकी आँखों से आँसू वहने लगते। कम न होनेवाले दुख से पीड़ित उन्होंने कहा कि दूसरों का दुख करना देखकर भी जिसका मन अपने बुरे और कठोर संकल्प से नहीं हटता ऐसी कैकेयी ने ये चीर दिये है। उनकी आज्ञानुसार हम इन्हें इधर लाई। ४४०

वाणित् तिलनन् नहैयार्हळै वळ्ळ ऱबिम्
याणर्त् तिरुना डिळप्पित्तव रीन्द वॅल्लाम्
पूणप् पिऱन्दानु नित्ऱान्दु पोर्वि लोडुम्
काणप् पिऱन्देनु नित्ऱेनवै काट्टु मॅन्ऱान् 441

वळ्ळल् तम्पि–प्रभु के भाई (या उदारमन लघुभ्राता); वाळ् नित्तिलम्–उज्ज्वल मोती-सम; नल् नकैयार्कळै–अच्छे दाँत वालियों को (देखकर): याणर् तिरुनाटु–आमदनीवाले विभवशील राज्य से; इळप्पित्तवर्–जिन्होने (श्रीराम को) वंचित कराया; ईन्त अॅल्लाम्–वे जो भी देते हैं; पूण पिऱन्तानुम्–उन्हें स्वीकार

करने के लिए जो पैदा हुए हैं, वे; निऩ्ऱाऩ्–इधर विद्यमान हैं; पोर् विल्लोट्टुम्–युद्धधनु के साथ; अतु काण पिऱन्तेतुम्–उसको देखते चुप रहने के लिए जो जन्मा हूँ, वह मै भी; निऩ्ऱेऩ्–इधर खड़ा रहता हूँ; अवै काट्टुम्–उनको दिखाओ; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ४४१

प्रभु के छोटे भाई लक्ष्मण ने सुन्दर मुक्तातुल्य दाँत वाली उनसे कहा—अच्छी आमदनी वाले विभवशील राज्य से जिन्होंने मेरे भाई को वंचित किया वे जो भी (भला-बुरा) भेजती हैं उनको अंगीकार करने के लिए मेरे भाई श्रीराम, मानो इसी के लिए पैदा हुए हों, ऐसे तैयार खड़े है। इधर मैं भी खड़ा हूँ, अपना धनुष व्यर्थ ढोते हुए उसको देखने के लिए मानो मैंने जन्म लिया हो। दिखाओ तो, सही उन चीरों को। ४४१

अऩ्ऩा नवर्तन् दऩ्ऩवादरत् तोडु मेन्दि
इऩ्ऩा विडर्तीर्न्दु डुडनेहॆऩ्ऩ वॆम्बि राट्टि
शॊऩ्ऩा लदुवे तुणैयामॆनत् तूय नङ्गै
पॊन्ना रडिमेऱ् पणिन्दानव ळुम्पु हल्वाळ् 442

अऩ्ऩाऩ्–वे; अवर् तन्तत–उनसे दिये हुए; आतरत्तोटुम् एन्ति–आदर के साथ ग्रहण करके; ऎम् पिराट्टि–मेरी मातादेवी; इऩ्ऩा इटर् तीर्न्तु–इस कठोर दुख से छूटकर; उटन् एकु–साथ चलो; ऎऩ्ऩ चॊऩ्ऩाल्–यह कहेंगी तो; अतुवे तुणै आम्–वही मेरा सहायक होगा; ऎऩ्ऩ–कहकर; तूय नङ्कै–पवित्रमना देवी के; पॊऩ् आर् अटि मेल्–सुन्दरता-युक्त चरणों पर; पणिन्ताऩ्–नमस्कार किया; अवळुम् पुकल्वाळ्–वे भी बोलीं। ४४२

लक्ष्मण ने उनसे दिये गये चीरों को आदर के साथ स्वीकार किया। फिर अपनी माता से बोले। माताजी! आप दुख छोड़कर यह कहेंगी कि 'तुम भी श्रीराम के साथ जाओ', तो वह मेरे लिए बड़ा उपकार होगा। यह कहकर उन्होंने अपनी माता के सुन्दर चरणों पर अपना मस्तक रखा। माता ने भी (यों) कहा। ४४२

आहाद दऩ्ऱा लुनक्कव्वन मिव्व योत्ति
माहाद लिराम ऩम्मऩ्ऩवन् वैय मीन्दुम्
पोहावुयिर्त् तायर्नम् पूङ्गुळऱ् चीदै यॆऩ्ऱे
एहायिनि यिव्वयि निऱ्ऱलु मेद मॆन्ऱाळ् 443

उनक्कु–तुम्हारे लिए; अ वऩम्–वह वन; इ अयोत्ति–यह अयोध्या है; आकातु अऩ्ऱु–अयोग्य स्थान नहीं है; मा कातल् इरामऩ्–तुम्हारे प्रति अधिक प्रेम रखनेवाला श्रीराम; नम् मऩ्ऩवऩ्–हमारे पिता; वैयम् ईन्तुम्–राज्य दूसरों को देने के बाद भी; उयिर् पोकात–जो प्राण विमुक्त नहीं है; तायर्–वे माताएँ (कौसल्या और मै); नम् पू कुळल् चीतै–हमारी पुष्पालंकृत केश वाली सीता; ऎऩ्ऱु–यह मानकर; एकाय्–तुम चलो; इऩ्ऩि–अब; इ वयिऩ्–इस स्थान पर; निऱ्ऱलुम्–खड़ा रहना भी; एतम्–अपराध है; ऎऩ्ऱाळ्–कहा। ४४३

बेटे ! जाओ। उस वन को अयोध्या मानकर जाओ। वह ठीक स्थान नही है —ऐसा समझकर मत जाओ। तुम्हारे ऊपर अपार प्रेम रखने वाले इन श्रीराम को अपने राजा-पिता मान लो। श्रीराम को राज्यहीन देखने पर भी उसकी माताएँ हम जीवित है। तुम पुष्पालंकृत केश वाली सीता को अपनी माता मान लो। जाओ। आगे यहाँ खड़ा रहना भी अपराध होगा। सुमित्रा ने इतना कहा। ४४३

पिन्नुम् पहरवाण् महनेयिवन् पिन्शॅ ऱ्म्बि
ऍन्नुम् पडियन् ऱडियारिनु मेवल् शॅय्दि
मन्नुन् नहर्क्के यिवन् वन्दिडिन् वाव दन्ऱेल्
मुन्नम् मुडियॅन् ऱनळपात्मुलै शोर निन्ऱाळ् 444

मुलै पाल् चोर–स्तनों से दूध के स्रवते; निन्ऱाळ्–जो रहीं वे; पिन्नुम्–और भी; पकर्वाळ्–बोलीं; मकर्न–पुत्र; इवन् पिन् चॅल्–इसके पीछे जाओ; तम्पि ऍन्नुम् पटि अन्ऱु–(छोटे) भ्राता के रूप में नहीं; अटियारिनुम्–दास से भी बढ़कर; एवल् चॅय्ति–सेवा करो; मन्नुम् नकर्क्कु–स्थायी इस नगर को; इवन् वन्तिटिन्–यह आएगा तो; वा–तुम भी आओ; अतु अन्ऱेल्–वह नहीं हो तो; मुन्नम् मुटि–उसके पहले तुम काम आ जाओ; ऍन्ऱनळ्–कहा। ४४४

वात्सल्य के कारण अपने स्तनों से दूध को वहने देते हुए वे चिन्ताहत सुमित्रा और भी बोलीं— वत्स ! इसके पीछे जाओ। पर उसके भाई के नाते नहीं। उसके दास की तरह जाओ और उसकी आज्ञाओं का पालन करो। इस स्थायी नगर को वह लौट के आयेगा तो तुम भी आओ। नहीं तो तुम पहले ही उनके काम आ जाओ। ४४४

इरुवरुन् दॉऴुदन रिरण्डु कन्ऱोरीइ
वॅरुवरु मावॅनत् तायुम् विम्मिनाळ्
पॉरुवरुङ् गुमररुम् पोयि नार्पुऱम्
तिरुवरैत् तुहिलोरीइच् चीरै शात्तिये 445

इरुवरुम्–दोनो ने; तॉऴुतनर्–प्रणमन किया; तायुम्–माता भी; इरण्टु कन्ऱु ओरीइ–दो बछड़ों से छूटकर; वॆरुवरुम् आ ऍन–दुख उठानेवाली गाय के समान; विम्मिताळ्–रोई; पॊरु अरु कुमररुम्–अप्रमेय वे कुमार भी; तिरु अरै–अपनी शोभायुक्त कमर से; तुकिल् ओरीइ–वस्त्र उतारकर; चीरै चात्ति–वल्कल पहनकर; पुऱम् पोयिनार्–बाहर चले गये। ४४५

इसके बाद दोनो भाइयों ने उनको नमस्कार किया। वे भी अपने दोनो वछड़ों को एक साथ खोकर दुख करनेवाली गौ के समान रोईं। अप्रतिम कुमारों ने अपनी शोभायमान कमर से वस्त्र उतारकर चीर पहन लिये। फिर वे वाहर चले गये। ४४५

❀ ताऩ्बुनै शीरैयैत् तम्बि शात्तिडत्
तेऩ्बुनै तॅरियलाऩ् शॅय्है नोक्किऩाऩ्
वाऩ्बुनै यिशैयिनाय् मरुक्कि लादुनी
याऩ्बुह ऱहैयदो ररुदि केळॆना 446

ताऩ् पुनै चीरैयै–जैसे स्वयं आपने वल्कल पहना वैसे ही; तम्पि चात्तिट–अपने छोटे भाई को भी पहनते (देख); तेऩ् पुनै तॅरियलाऩ्–शहद से युक्त मालाधारी राम ने; चॅय्कै नोक्किऩाऩ्–उनका वह काम देखकर; वाऩ् पुनै इचैयिनाय्–आकाश तक व्याप्त यशस्वी; याऩ् पुकल्–मेरी अब कथनीय; तकैयतु ओर् उऱुति–उचित एक हितवचन; नी मरुक्किलातु–तुम बिना असहमत हुए; केळ्–सुनो; ॲना–कहकर। ४४६

जब श्रीराम ने देखा कि वे जैसे वल्कल चीर पहन रहे हैं वैसे ही लक्ष्मण भी पहन रहे हैं, तो शहदभरी पुष्पमाला-धारी उन्होंने उनसे कहा—आकाश तक व्याप्त यश वाले, लक्ष्मण ! मेरा कहना सुनो। मैं बहुत ही उचित एक हितवचन कह रहा हूँ। मान जाओ। ४४६

❀ अऩ्नय रतैवरु माळि वेऩ्दनुम्
मुऩ्नय रल्लरॅन् दुयरिन् मूळ्हिनार्
ॲऩ्नयुम् बिरिन्दन रिडरु ऱावहै
उऩ्न(य्)नी यॅऩ्बॊरुट् टुदवु वायॆऩ्ऱाऩ् 447

अऩ्नैयर अतैवरुम्–माताएँ सभी; आळि वेन्ततुम्–और चक्रवर्ती; मुऩ्नैयर् अल्लर्–पहले की-सी स्थिति में नहीं; वॅम् तुयरिल्–कठोर दुख में; मूळ्किऩार्–डूबे हुए हैं; ॲऩ्नैयुम् पिरिन्ततर्–मुझसे भी बिछुड़े हुए है; इटर् उऱा वकै–वे संकट न पाएँ, इसलिए; ॲऩ् पॊरुट्टु–मेरे लिए; उऩ्नै नी उतवुवाय्–तुम अपने को समर्पित करके सहायता करो; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ४४७

वह क्या है—उसे भगवान ने व्यक्त कहा। हमारी माताएँ और पिता, चक्रवर्ती पहले की-सी स्थिति में नही हैं। वे अब बहुत दुख-पीड़ित हैं। तिस पर मैं ही छोड़कर जानेवाला हूँ और मेरा वियोग उन्हें और भी दुख देगा। तुम इनको दुखी होने से बचाने के लिए यहीं रह जाओ और अपने को उनके सहायक रूप में उनको समर्पित कर लो। ४४७

❀ आण्डहै यम्मॊळि यरुळ वऩ्बनुम्
तूण्डहु तिरळ्पुयन् दुळङ्गत् तुण्णॆऩ्ऩा
मीण्डदो रुयिरिडै विम्म विम्मुवान्
ईण्डुतक् कडियनेऩ् पिळैत्तत दियादॆना 448

आण् तके–पुरुषश्रेष्ठ के; अ मॊळि अरुळ–वह वचन कहने की कृपा करने पर; अऩ्पतुम्–उनसे अचल प्रेम करनेवाले लक्ष्मण; तूण् तकु—स्तम्भ-सम; तिरळ् पुयम्

तुळङ्क–कन्धों को हिलाते; तुण ऎना–एक दम ठिठककर; मीण्टतु ओर् उयिर्–चलते-चलते बची जान; इटै विम्म–फिर चलनेवाली बनी हो, जैसे; विम्मुवान्–सिसककर; अटियनेन्–दास मुझसे; ईण्टु–अब; उनक्कु पिऴैत्तत्तु यातु–आपके प्रति हुआ अपराध क्या है; ऎन्ना–कहकर। ४४८

जब पुरुषोत्तम ने यह वाक्य कहा तो उन पर अपार प्रेम रखनेवाले लक्ष्मण रोने लग गये। उनकी सिसकियों से उनके स्तम्भसम कंधे भी हिलने लगे। चलती-चलती जो बची थी वह उनकी जान फिर चली जायगी ऐसी स्थिति का अनुभव करते हुए उन्होंने रोते-रोते अपने भाई से पूछा कि प्रभु! दास द्वारा अब क्या अपराध हो गया है? । ४४८

नीरुळ वॆनिनुळ मीनु नीलमुम्, पारुळ वॆनिनुळ यावुम् पार्प्पुऱिन्
नारुळ तनुवुळाय् नानुज् जीदयुम्, आरुळ रॆनिनुळ मरुळु वायॆना 449

नीर् उळ ऎनिन्–(जलाशय में) जल रहा तो; मीनुम् नीलमुम् उळ–मछलियाँ और नीलोत्पल आदि पुष्प होंगे; पार् उळ ऎनिन्–भूमि रही तभी तो; यावुम् उळ–सभी वस्तुएँ है; पार्प्पु उऱिन्–सोचकर देखिए तो; नार् उळ–डोरे सहित; तनु उळाय्–धनु वाले; नानुम् चीतैयुम्–मै और सीताजी; आर् उळर् ऎनिन्–कौन रहेंगे तो; उळम्–जीवित रहेगे; अरुळ्वाय्–श्रीवचन कहो; ऎना–कहकर। ४४९

आप ही सोचकर देखिए। जल रहा तो जलाशयों में मछलियाँ रह सकती है, नीलोत्पल आदि फूल भी पनप सकते हैं। मालाधारी धनुर्धर! भूमि रही तो सब वस्तुएँ रह सकती है। आप आधार नहीं रहेंगे तो मैं और सीता, किसके रहते, रह सकेंगे? आप ही कहने की कृपा करें। यह कहकर उन्होंने आगे भी कहा। ४४९

❀ पैन्दॊडि यॊरुत्तिशॊऱ् कॊण्डु पार्मकळ्
नैन्दुयिर् नडुङ्गवु नडत्ति कानॆना
उय्न्दन निरुन्दन नुण्मै कावलन्
मैन्दनॆन् ऱिनैयशॊल् वळङ्गि नायॆना 450

पार् मकळ्–भूमिदेवी; उयिर् नैन्तु–प्राणों के क्षीण होते; नटुङ्कवुम्–काँप रही हैं, इस रीति से; पचु तॊटि–सुन्दर कंकणधारिणी; ऒरुत्ति–एक स्त्री का; चॊल् कॊण्टु–वाक्य मानकर; कान् नटत्ति–जंगल जाओ; ऎना–कहकर; उय्न्तनन् इरुन्तनन्–जीवित रहे; उण्मै कावलन्–सत्यपालक राजा; मैन्तन्–उनका पुत्र; ऎन्ऱु–हूँ, इसलिए; इनैय चॊल् वऴङ्कितनाय्–ऐसा वाक्य कहा, शायद; ऎना–कहकर। ४५०

राजा ने कंकणधारिणी एक नारी का वचन मानकर आपसे कह दिया कि जंगल जाओ। उससे भूमिदेवी भी प्राण क्षीण कर काँप रही हैं। इतना होने पर भी वे जीवित रहते है। उनका पुत्र मैं हूँ —इसीलिए आपने ऐसा वाक्य कहा —शायद! । ४५०

❀ मारिऩि यॆऩ्ऩैनी वनङ्गॊळ् वायॆन, एऱिन वॆहुळियै यादु मुऱ्ऱुरा
दारिऩै तविर्हॆन वैय वाणैयिन्, कूऱिऩ मॊऴियिनुङ् गॊडिय दामॆऩ्ऱाऩ् 451

माऱु इऩि ॲऩ्ऩै–इसके अलावा कहना क्या है; ऐय–आर्य; नी वतम् कॊळ्वाय्–आप वन जाएँगे; ॲऩ्–यह जानकर; एऱिन वॆकुळियै–जो चढ़ा, उस क्रोध को; यातुम् मुऱ्ऱु उऱातु–(अपने विचारों के अनुसार) कुछ न करके; आऱिऩै तविर्क्क–शान्त होकर छोड़ दो; ॲऩ्–ऐसा; आणैयिन् कूऱिय–आज्ञा का वचन जो आपने कहा, उससे वढ़कर; कॊटियतु आम्–कठोर है यह; ॲऩ्ऱान्–कहा। ४५१

"आर्य ! इसके उत्तर में मैं क्या कहूँ ? जब मुझे, यह जानने पर कि आप वन जाएँगे, क्रोध हुआ और वह बढ़ने लगा; तब आपने मेरे सब इरादे व्यर्थ करते हुए आज्ञा दी कि यह क्रोध थामो और बिलकुल छोड़ दो। उस आज्ञा से भी यह कथन अत्यधिक निर्मम है।" लक्ष्मण ने दुख के साथ ऐसा कहा। ४५१

❀ शॆय्दुडैच् चॆलवमो डियादुन् दीर्न्दॆमैक्
कैदुडैत् तेहवुङ् गडवै योवैया
नॆय्दुडैत् तडैयलार् नेय मादर्हण्
मैदुडैत् तुऱैपुहुम् मऱङ्गॊळ् वेलिनाय् 452

ऐया–आर्य; नॆय् तुटैत्तु–घी मलकर; अटैयलार्–शत्रुओं की; नेयम् मातर्–प्यारी पत्नियों का; कण् मै तुटैत्तु–आँखों का अंजन पोंछकर; उऱै पुकुम्–कोश में आनेवाले; मऱम् कॊळ्–सशक्त; वेलिऩाय्–भाला वाले; चॆय्तु उटैय–सुकृत से प्राप्त; चॆल्वमोटु–राज्यविभव के साथ; यातुम्–और सभी सुख-भोगों को; तीर्न्तु–त्यागकर; ऍमैयुम् कै तुटैत्तु–हमसे भी हाथ धोकर; एक कटवैयो–जा पायँगे क्या; (ॲऩ्ऱात्–कहा)। ४५२

"प्रभु ! घी-मला, और शत्रुओं की पत्नियों की आँखों से काजल पुँछवाकर (उनकी पत्नियों को विधवा बनाते हुए शत्रुओं का संहार करके) कोश में आए हुए सशक्त भाले वाले ! आपने अपने सुकृत से प्राप्त राज्य छोड़ा; और अन्य सभी सुख-भोग छोड़े। इसके साथ क्या आप हमसे भी हाथ धोकर चले जायँगे ? यह उचित है ?" लक्ष्मण ने अपनी बात इस आर्तवचन के साथ समाप्त की। ४५२

❀ उरैत्तवि ऩिरामनॊन् ऱुरैक्क नेर्न्दिलन्
वरैत्तडन् दोळिऩान् वदन नोक्किनान्
विरैत्तडन् दामरैक् कण्णिन् मिक्कनीर्
निरैत्तिडै यिडैविळ नॆंडिदु निऱ्किन्ऱान् 453

उरैत्त पिऩ्–यह कहने के बाद; इरामन्–श्रीराम; ऒन्ऱुम् उरैक्क नेर्न्तिलन्–कुछ भी कह नहीं सके; वरै तट तोळिऩान्–पर्वत-सम विशाल भुजा वाले (लक्ष्मण)

का; वतनम्–वदन को; नोक्किनात्–देखते हुए; विरै–सुवासित; तट तामरै–बड़े कमल के समान; कण्णित्–आँखो से; मिक्क नीर्–वहुत निकला अश्रुजल; निरैन्त–लगातार; इटै इटै विळ–भूमि पर गिराते हुए; नॅटितु निऱ्कित्ऱात्–बहुत देर खड़े रहे । ४५३

लक्ष्मण के ऐसे कथन के वाद श्रीराम क्या कह सकते थे ? कुछ कह नही पाये । पर्वतसम विशाल कंधे वाले अपने भाई के मुख को एकटक निहारते हुए खड़े ही रह गये और उनकी सुगन्धयुक्त कमल के समान विशाल आँखों से आँसू टप-टप भूमि पर गिरने लगे । ४५३

❀ अव्वयि नरशवै यहत्तु नॅञ्जहत्
तॅव्वमि लिरुन्दव मुनिव नॅय्दिऩात्
शॅव्विय कुमररुम् जॅन्ऩि ताळ्न्दऩर्
कव्वयिन् पॅरुङ्गडल् मुनियुङ् गाल्वैत्ताऩ् 454

अ वयिन्–उस समय; नॅञ्चु अकत्तु–मन में; ऍव्वम् इल्–दुख का अनुभव न करनेवाले (निर्लिप्त); इरु तव मुऩिवऩ्–महान तपस्वी मुनि वसिष्ठ; अरचु अवै अकत्तु–राजसभामण्डप से निकलकर; ऍय्तिऩाऩ्–वहाँ आये; चॅव्विय कुमररुम्–श्रेष्ठ कुमार; चॅन्ऩि ताळ्न्तनर्–नतमस्तक हुए; मुनियुम्–मुनिवर ने भी; कव्वैयिन्–दुख के; पॅरु कटल्–बड़े सागर में; काल् वैत्ताऩ्–पैर रखे । ४५४

तब दुख-सुख-निर्लिप्त मुनि वसिष्ठजी सभामण्डप से निकलकर वहाँ आ गये । महान तपस्वी उनके चरणों पर दोनो कुमारों ने अपने मस्तक नवाये । मुनि के मन में, इनको देखकर, दुख घर करने लगा । मुनिवर ने दुख-सागर में पैर रखा । ४५४

❀ अत्तवर् मुहत्तिनो डहत्तै नोक्किनाऩ्
पॉत्ऩरैच् चीरयिन् पॉलिवु नोक्किनाऩ्
ऍत्निति युणर्त्तुव दॅडुत्त तुऩ्बत्ताल्
तन्नयु मुणर्न्दिल नुणरुन् दन्मयाऩ् 455

उणरुम् तन्मैयाऩ्–(किसी भी विषय का) सत्व जाननेवाले स्वभाव के; अत्तवर् मुकत्तितोटु–उनके मुखभाव के साथ; अकत्तै–मन के भाव को भी; नोक्कितात्–देख, समझ गये; पॉन् अरै–सुन्दर कमर पर; चीरैयिन् पॉलिवुम्–वल्कलचीर की शोभा; नोक्किनात्–देखी; ऍटुत्त तुन्पत्ताल्–उठी वेदना से; तन्तैयुम् उणर्न्तिलन्–अपना वश (अपनी सुध को) खो दिया; इत्तियुम् ऍन् उणर्त्तुवतु–और क्या समझाया जाय । ४५५

तत्वदर्शी महर्षि वसिष्ठजी ने उनका मुख देखा, उनका मन जाना और कमर पर वल्कल की शोभा देखी । समझ गये कि क्या होनेवाला है । श्रीराम और लक्ष्मण दोनो वन जाने के लिए उद्यत हो गये । यह जानकर

मुनि के मन में अपार दुख उभर आया और वे अपनी सुध भूल गये। अब क्या बताया-समझाया जाय ? । ४५५

❀ वाळ्वित्तै नुदलिय मङ्ग लत्तुनाट्
टाळ्वित्तै यदुवरच् चीरै शात्तिनान्
शूळ्विनै नान्मुहत् तौरुवन् शूळिनुम्
ऊळ्विनै यौरुवरा लौळिक्कर् पालदो 456

वाळ्वित्तै नुतलिय–सुखमय जीवन के लिए जो बताया गया; मङ्कलम् नाळ्–उस शुभ दिन में; ताळ् वित्तै अतु वर–दुर्भाग्य के आने से; चीरै चार्त्तिनान्–वल्कल पहन लिया; चूळ् वित्तै–विधिविधायक; नाल् मुकत्तु ओरुवन्–चतुर्मुख ब्रह्मा के; चूळितुम्–उपाय का निर्णय करने पर भी; ऊळ्वित्तै–प्रारब्ध कर्म; ओरुवराल्–किसी से भी; ओळिक्कल् पालतो–निवारणीय है क्या। ४५६

वसिष्ठजी मन में सोचने लगे। यह क्या दुर्भाग्य और विडम्वना है ? मंगलकार्य के लिए शुभ दिन शोधा गया था। उसी दिन यह दुर्भाग्य हुआ और श्रीराम को वल्कल पहनना पड़ गया। चतुर्मुख ब्रह्माजी भी स्वयं कोई कार्य निर्णय क्यों न करें, जब विधि प्रबल है तो किसी से भी वह टाली न जा सकेगी। ४५६

वॅव्वित्तै यवडर विळैन्द देयुमन्
ड्रिव्वित्तै यिवन्वयि नॆय्दर् पाऱ्ऱमन्
ड्रॆव्वित्तै निहळ्न्ददो वेव रॆण्णमो
शॆव्विदि तॊरुमुरै तॆरियुम् बिन्नॆन्ना 457

इ वित्तै–यह कृत्य; वॅम् वित्तैयवळ्–बुरे कार्य करनेवाली के; तर–कराने से; विळैन्ततुम् अन्ऱु–फलीभूत हुआ भी नहीं; इवन् वयिन्–इन (पुण्य-मूर्ति) का; ऍय्तल् पाऱ्ऱुम् अन्ऱु–होने योग्य भी नहीं है; ऍ वित्तै निकळ्न्ततो–(इसका हेतु) कौन सा दुष्कर्म हुआ है; एवर् ऍण्णमो–किसका षडयन्त्र है; पिन्–बाद; ओरु मुरै–एक तरह से; चॅव्वितिन् तॆरियुम्–साफ़ विदित होगा; ऍन्ना–यह सोचकर। ४५७

अब श्रीराम वल्कल पहनकर जो वन में जा रहे हैं, यह विधान क्रूर-कर्मिणी कैकेयी के कार्य का फल नहीं है ! ये पुण्यमूर्ति हैं और वे ऐसे कष्ट के लिए अर्ह नहीं है। फिर यह किस कर्म का फल है ? इसका हेतु क्या हुआ है ? किसकी करनी का यह फल है ? यह सब, पीछे समय पड़ने पर साफ-साफ़ प्रकट हो जायगा। ऐसा सोचते हुए— । ४५७

❀ विड्ऱडन् दामरैच् चॆङ्गै वीरनै
उड्ऱडैन् दैयनी यौरुवि योङ्गिय
कड्ऱडङ् गाणुदि यॆन्निर् कण्णहन्
मड्ऱडन् दानयान् वाळ्हि लानॆन्ऱान् 458

विल्–धनुर्धर; तट तामरै–विशाल कमल-सम; चॅम् कै–लाल हस्त वाले; वीरतै उऱ्ऱु अटैन्तु–वीर के बहुत पास जाकर; ऐय–आर्य; नी ऒरुवि–आप (इस राज्य को) छोड़कर; ओङ्किय कल्–उन्नत चट्टानों के; तटम् काणुति ऍन्ऱिन्–जंगल जायेंगे तो; कण् अकल्–विस्तृत; मल् तट तानैयान्–मल्लों की बड़ी सेना के स्वामी (हमारे राजा); वाऴ्किलान्–जीवित नहीं रहेंगे; ऍन्ऱान्–कहा। ४५८

वे धनुर्धर विशाल कमलहस्त श्रीराम के पास आये। 'आर्य! आप यह राज्य छोड़कर ऊँचे पर्वतों वाले वन मे चले जायेंगे तो मल्लयुद्ध-कुशल वीरों की बड़ी सेना के स्वामी आपके पिता जीवित नहीं रहेंगे।' —वसिष्ठ ने श्रीराम से कहा। ४५८

❀ अन्नवन् पणितलै येन्दि याऱ्ऱुदल्
ऍन्नदु कडनव निडरै नीक्कुदल्
निन्नदु कडनिदु नॅऱियु मॅन्ऱनन्
पन्नहप् पायलुट् पळ्ळि नीङ्गिनान् 459

पन्नकम् पायलुळ्–पन्नग-शय्या पर से; पळ्ळि नीङ्किनान्–शयन त्यागकर आये हुए; अन्नवन् पणि–(श्रीराम ने) उनकी आज्ञा; तलै एन्ति–सिर पर धारण करके; आऱ्ऱुतल्–अदा करना; ऍन्नतु कटन्–मेरा कर्तव्य है; अवन् इटरै नीक्कुतल्–उनका दुख दूर करना; निन्नतु कटन्–आपका कर्तव्य है; नॅऱियुम् इतु–क्रम भी यही है; ऍन्ऱनन्–कहा। ४५९

क्षीरसागर की पन्नगशय्या में योगनिद्रा त्यागकर जो अयोध्या में आकर श्रीराम बने थे, उन्होंने वसिष्ठजी से कहा कि मुने! राजा की आज्ञा शिरोधार्य कर उसका पालन करना मेरा कर्तव्य-धर्म है। उनका दुख दूर करना आपका धर्म है। यही तो उचित क्रम है। ४५९

वॅव्वरम् बयिल्शुरम् विरवॅन् ऱानलन्
तॅव्वरम् बनैयशॊऱ् ऱीट्टि ऩाडनक्
कव्वरम् बॊरुदवे लरश नाय्हिला
दिव्वरन् दरुवॅनॆन् ऱॆन्ऱ दुणडॆन्ऱान् 460

तॆव्वर् अम्पु अनैय–शत्रुओ के सायक के समान; चॊल् तीट्टिनाळ् तनक्कु–(वर के रूप में) वाक्य जिन्होंने कहा, उनको; अरम् पॊरुत–रेती से रगड़े हुए; वेल्–(तीक्ष्ण) भाले वाले; अ अरचन्–उन राजा का; आय्किलातु–विना सोचे; इ वरम् तरुवॅन्–यह वर दूँगा; ऍन्ऱु–ऐसा; एन्ऱतु उण्टु–सम्मत होना अवश्य हुआ है; वॅम् अरम् पयिल्–भयंकर रेतियो के समान रहनेवाले कंकड़ जहाँ भरे रहते है; चुरम् विरवु–जंगल जाओ; ऍन्ऱान् अल्लन्–यह नहीं कहा; ऍन्ऱान्–कहा। ४६०

वसिष्ठजी को दशरथजी को दिये गये वचन का निर्वाह करना था। इसलिए उन्होंने कहा कि दशरथ ने, जिनका भाला रेती द्वारा तीक्ष्ण बना हुआ है कैकेयी से, जिन्होने शत्रु के शर के समान वर के रूप में वचन कहा

था कहा अवश्य था कि वर दूँगा। पर उन्होंने यह नहीं कहा था कि आप पैर में चुभनेवाले, रेती के समान कंकड़ों से भरे जंगल में जाइए। ४६०

❀ एन्ऱऩ नॆन्दयिव् वरङ्ग ळेविन्ऩाळ्
ईन्ऱवळ् यानदु शॆन्ऩि येन्दिनेन्
शान्ऱॆन निन्ऱनी तडुत्ति योवॆन्ऱान्
तोन्ऱिय नल्लऱ निऱुत्तत् तोन्ऱिनान् 461

तोन्ऱिय नल् अऱम्–प्रकटित सद्धर्म के; निऱुत्त तोन्ऱिनान्–उत्थानार्थ जो अवतरित हुए थे, उन्होंने; ॲन्तै इ वरङ्कळ् एन्ऱनन्–मेरे पिता ये दोनो वर देने को सम्मत हुए; ईन्ऱवळ् एविनाळ्–जननी माता ने आज्ञा की; यान् अतु चॆन्नि एन्दिनेन्–मैने सिर पर धारण की; चान्ऱु ॲन–साक्षीभूत; निन्ऱ नी–विद्यमान आप; तडुत्तियो–रोकेंगे क्या; ॲन्ऱान्–कहा। ४६१

सनातन धर्म के उत्थान के लिए अवतरित हुए श्रीराम ने इसके उत्तर में कहा कि मेरे पिताजी ने वर दिये। मेरी जननी माता ने मुझे वन जाने की आज्ञा की। मैंने उसको शिरोधार्य कर लिया। साक्षी रूप में विद्यमान आप बीच में पड़कर मुझे रोकेंगे क्या ? । ४६१

❀ ॲन्ऱपिन् मुनिवन्ॊन् ऱियम्ब नेर्न्दिलन्
निन्ऱन नॆडुङ्गणीर् निलत्तु नीर्त्तुहक्
कुन्ऱन तोळवन् ऱॊऴुदु कॊऱ्ऱवन्
पॊन्ऱिणि नॆडुमदिल् वायिल् पोयिनान् 462

ॲन्ऱ पिन्–यह कहने के बाद; मुनिवन्–महर्षि; ऑन्ऱु इयम्प नेर्न्तिलन्–कुछ कह नहीं पाये; नॆटु कण् नीर्–अधिक अश्रु; नीर्त्तु निलत्तु उक–धारा के रूप में भूमि पर गिरा; निन्ऱनन्–(गिराते हुए) खड़े रहे; कुन्ऱु अन्न तोळ् अवन्–पर्वत-सम कन्धे वाले श्रीराम; तॊऴुतु–नमस्कार करके; कॊऱ्ऱम्–विजयशील; वल्–मजबूत; पॊन् तिणि–स्वर्णखचित; नॆटु मतिल्–लम्बे प्राचीर के; वायिल्–द्वार से होकर; पोयिनान्–जाने लगे। ४६२

श्रीरामजी के ऐसा कहने के बाद वसिष्ठजी क्या कहते ? उनके पास कहने को कुछ नहीं था। इसलिए आँखों से आँसू की धारा बहाते हुए, जो भूमि पर गिर रही थी; स्तम्भित-से खड़े रह गये। तब पर्वतोन्नत कन्धे वाले श्रीराम उनको नमस्कार करके, विजयी, सुदृढ़ और स्वर्णखचित प्राचीर के द्वार से होकर जाने लगे। ४६२

शुऱ्ऱिय शीरयन् ऱॊडरुन् दम्बियन्
मुऱ्ऱिय वुवहयन् मुळरिप् पोदिनुस्
कुऱ्ऱमिन् मुहत्तिनन् कॊळ्है कण्डवर्
उऱ्ऱदै यॊरुवहै युणर्त्तु वामरो 463

चुऱ्ऱिय चीरैयऩ्–लपेटा हुआ वल्कल वाले; तॉटरुम् तम्पियऩ्–पीछे लगे भाई सह; मुऱ्ऱिय उवकैयऩ्—पूर्ण-आनन्दित; मुळरि पोतिऩुम्–नीरज पुष्प से अधिक (सुन्दर); कुऱ्ऱम् इल्–निर्मल; मुकत्तिऩऩ्–मुख वाले; कोळ्कै–(उनका) मनोभाव; कण्टवर्–जिन्होंने जाना, वे; उऱ्ऱतै–जिस स्थिति को पहुँच गये; ओरु वकै–(उसको) एक प्रकार से; उणर्त्तुवाम्–वताएँगे । ४६३

श्रीराम की कमर मे वल्कल वेष्टित था। भाई लक्ष्मण उनके पीछे जा रहे थे। वे आनन्दपूर्ण थे। उनका मुख कंजपुष्प से वढ़कर सुन्दर था। उनका मुखभाव निर्मल था। ऐसे श्रीराम के मनोभाव को समझ कर लोगों की जो दशा हुई उसका वर्णन अव करेंगे। ४६३

❀ अन्दण रुन्दव रवऩि कावलर्, नन्दलि नहरुळोर् नाट्टु ळोर्हडम्
शिन्दयॆऩ् पुहल्वदु तेव रुळ्ळमुम्, वॆन्दऩर् मेल्वरु मुऱुदि वेण्डलर् 464

तेवरुम्–देवता भी; मेल् वरुम् उऱुति–आगामी हित; वेण्टलर्–नहीं चाहते हुए; उळ्ळम् वॆन्तऩर्–चिन्ताकुलित हुए; अन्तणर्–ब्राह्मण; अरु तवर्–उत्तम तपस्वी; अवनि कावलर्–अवनिपति; नन्तल् इल् नकर् उळोर्–अक्षय नगरवासी; नाट्टु उळोर्कळ् तम्–और कोसलदेश-वासी, इन सवके; चिन्तै–मन की स्थिति; ऎऩ् पुकल्वतु–क्या कही जाय। ४६४

स्वयं देवता भी अपने भावी का हित भूलते हुए दुख से झुलसे। ब्राह्मण, मुनि, राजा और अक्षय उस नगर के वासी और कोसल देश के सारे प्रजाजन —सवके मन की स्थिति का क्या कहा जाय ? । ४६४

ऐयऩैक् काण्डलु मणङ्ग नारॆलाम्
मॊय्यिळन् दळिर्हळाऩ् मुळरि मेल्विळुम्
मैयलिऩ् मदुहरङ् गडियु माऱॆनक्
कैहळिऩ् मदर्नॆडुङ् गण्णि ऩॆऱ्ऱिनार् 465

अणङ्कु अऩ्ऩार् ऎल्लाम्–देवियों के समान रहनेवाली सव स्त्रियों ने; ऐयतै काण्टलुम्–आर्य को देखते ही; मुळरि मेल् विळुम्–कमलपुष्प पर मँड़रानेवाले; मैयल् मतुकरम्–मधुमत्त मधुकरों को; मॊय् इळ तळिर्कळाल्–घने मृदु पल्लवों से; कटियुम् आऱु ऎऩ–मार भगाते हों, जैसे; कैकळिऩ्–अपने हाथों से; मतर् नॆटु कण्णिऩ्–मत्त आयत आँखों पर; ऎऱ्ऱिऩार्–पीट लिए। ४६५

सुरस्त्री-सदृश नगर की स्त्रियों ने श्रीराम को इस वेष में देखते ही अपने हाथों से अपनी मत्त और लवी आँखों को पीट लिया, मानो वे अपने मुखकमलों से मत्त मधुकरों को मृदुल पल्लवों से मारकर भगा रही हों। ४६५

तम्मयु मुणर्न्दिलर् तणप्पि लन्बिनाल्
अम्मयि निरुविऩै यहऱ्ऱ वोवन्ऱॆल्

विम्मिय पेरुयिर् मीण्डिला मैहॊल्
शॅम्मऱन् ऱादयिर् चिलवर् मुन्दिऩार् 466

चिलवर्–कुछ लोग; तणप्पु इल् अऩ्पिनाल्–अभंग प्रेम के कारण; तम्मैयुम् उणर्न्तिलर्–अपनी सुध खोकर; चॅम्मल् तऩ् तन्तैयिऩ्–प्रभु के पिता दशरथ के भी; मुन्तिऩार्–पहले (स्वर्ग) गये; अम्मैयिऩ्–परवर्ती; इरु विऩै अकऱ्ऱवो–दोनो (पाप-पुण्य-)कर्म निवारणार्थ; अऩ्ऱेल्–नहीं तो; विम्मिय पेर् उयिर्–बाहर निकले प्राण; मीण्टु इलामै कॊल्–लौट नहीं आये, इसलिए क्या। ४६६

कुछ लोग श्रीराम के प्रति अभंगप्रेम के कारण सुध-बुध खो गये और दशरथ के पहले ही स्वर्गवासी हो गये। उनका ऐसा प्राणत्याग कर्मबन्धन काटने के लिए था? या उनके प्राण जो अकस्मात हुए दुख के कारण बाहर निकले लौट नही आये? यानी वे जान-बूझकर मरे या अवश ही मर गये? मालूम नहीं। ४६६

विऴुन्दनर् शिलर्शिलर् विम्मि विम्मिमेल्
ॲऴुन्दनर् शिलर्मुहत् तिऴिह णीरिडै
अऴुन्दिऩर् शिलर्पदैत् तळह वल्लियिन्
कॊऴुन्दन लुऱ्ऱॆनत् तुयरङ् गूर्हिन्ऱार् 467

चिलर् विऴुन्तनर्–कुछ लोग गिरे; चिलर्–कुछ लोग; विम्मि विम्मि–सिसक-सिसक कर; मेल् ॲऴुन्तनर्–दुख के साथ उठे; चिलर्–(अन्य) कुछ; मुकत्तु इऴि–मुख से निकलनेवाले; कण् नीर् इटै अऴुन्तिऩर्–अश्रुजल में डूब गये; चिलर्–कुछ; पतैत्तु–तड़पकर; अळकम् वल्लियिल्–केश-लता पर; कॊऴुन्तु अनल् उऱ्ऱाल् ॲन–अग्नि की ज्वाला लग गई, जैसे; तुयरम् कूर्किऩ्ऱार्–दुख से भर जाते। ४६७

कुछ लोग रोते हुए गिरे; कुछ लोग सिसकते हुए उठे; कुछ लोग अपनी आँखों से बही अश्रुधारा में डूब गये। कुछ लोग ऐसे तड़प उठे मानो उनकी केश-लता पर आग लग गई हो; अपार दुख से उद्विग्न हुए। ४६७

करुम्बन मॊऴियवर् कण्ब निक्किलर्
वरम्बरु तुयरिनाऩ् मयङ्गि येकॊलाम्
इरुम्बन मनत्तव रॆऩ्ऩ निऩ्ऱनर्
पॆरुम्बॊरु ळिऴन्दवर् पोलुम् बॆऱ्ऱियार् 468

करुम्पु अऩ्ऩ मॊऴियवर्–ईक्षु (-रस) समान भाषण वाली कुछ स्त्रियाँ; पॆरु पॊरुळ्–बड़ा धन; इऴन्तवर् पोलुम्–खो चुकी हों, जैसे; पॆऱ्ऱियार्–ऐसी अवस्था में पड़कर; कण् पऩिक्किलर्–आँखों से आँसू न निकालतीं; इरुम्पु अऩ्ऩ–लोहे के समान; मनत्तवर् ॲऩ्ऩ–मन वाली हों, ऐसा; निऩ्ऱनर्–अकम्पित खड़ी रहीं; वरम्पु अऱु–निस्सीम; तुयरिनाल्–दुख से; मयङ्कियॆ कॊल् आम्–चकित हो गईं, इसलिए ही। ४६८

इक्षुरसमधुर बोली वाली कुछ स्त्रियाँ ऐसे निस्तब्ध खड़ी हो गईं मानो उनका सारा धन खो गया हो। उनकी आँखों से अश्रु नही निकला। देखनेवाले को यही लगता कि उनका दिल लोहे का बना है। वे इसलिए ऐसे खड़ी रहीं कि श्रीराम पर अपार प्रेम के कारण वे संज्ञाशून्य हो गईं। ४६८

नक्कन वुटलुयिर् निलैयि ऩिन्ऱिल, इक्कण मिक्कण मॅन्ऩुन् दन्मय
पुक्कन पुऱत्तन पुण्णिऱ् कण्मलर्, उक्कत्त नीर्वऱन् दुदिर वारिये 469

उटल् नॅक्कत–(कुछ लोगो के) शरीर ढीले हो गये; उयिर् निलैयिल् नित्ऱिल–प्राण स्थिर न रहे; इ कणम्–इसी क्षण; इ कणम्–इसी क्षण (चले जायेंगे); ऍन्ऩुम् तन्मैय–ऐसी स्थिति वाले; पुऱत्तन पुक्कन–बाहर निकले और भीतर आये; कण् मलर्–नेत्रपुष्पों ने; नीर् वऱन्तु–जल सूखकर; पुण्णित्–व्रणों के समान; उतिरम् वारि–रक्तधारा; उक्कत्त–बहाई। ४६९

कुछ लोगों के शरीर ढीले हो गये। उनके प्राण डगमगाने लगे। प्राण अभी निकले, इसी क्षण निकले —ऐसी स्थिति उनकी हो गई। असल में जान बाहर जाती फिर भीतर प्रवेश करती —ऐसी लगी। आँखों में जल नही रहा; वे शुष्क हो गईं। वे व्रण के समान रक्त की धारा बहाने लगीं। ४६९

इरुकैयिऱ् करिनिह रॅण्णि ऱन्दवर्
पॅरुहैयिऱ् पॅयर्त्तनर् तलैयैप् पेणलर्
ऑरुकैयिऱ् कॉण्डन रुरुट्टु हिन्ऱनर्
चुरिहैयिऱ् कण्मलर् चून्ऱु नीक्किनार् 470

इरु कैयित् करि निकर्–दो सूँड़ों वाले हाथी के समान; ऍण् इऱन्तवर्–असंख्यक; तलैयै पेणलर्–अपने सिर की परवाह न करके; पॅरु कैयित् पॅयर्त्तनर्–अपने बड़े हाथ से घुमाकर, नोचकर; ऑरु कैयिल् कॉण्टत्तर्–एक हाथ में लिये; उरुट्टुकित्ऱत्तर्–(गेंद की तरह) लुढ़काते; कण् मलर्—आँख-फूलों को; चुरिकैयित्–कटार से; चून्ऱु–निकालकर; नीक्किनर्–फेंक देते। ४७०

अनेक वीर थे जो दो सूंड़ो वाले हाथी के समान थे और जिन्होंने अपने सिर का भला ही नही सोचा पर अपने ही हाथ से उसे घुमाकर तोड़ लिया। वे उसे अपने एक हाथ में लेकर, गेंद के समान उससे खिलने लगे। ऐसे वीर भी थे जिन्होने अपनी कटार से अपनी कमल-सी आँखें नोचकर निकाल ली। ४७०

शिन्दित्त वणिमणि शिदऱि वीऴ्न्दन
पैन्दुणर् मालयिऱ् परिन्द मेहलै

नन्दिनर् नहैयोळि विळक्क नङ्गैमार्
सुन्दर वदनमु मदिक्कुत् तोऱ्ऱवे 471

नङ्कैमार्–स्त्रियों के; अणि चिन्तित–आभरण छितरे; मणि चितऱि वीळ्न्तन–रत्न गिरकर बिखरे; पचु तुणर् मालैयिन्–ताजे गुच्छों की माला के समान; मेकलै परिन्त–मेखलाएँ टूटीं; नकै ऑळि विळक्कम्–मुस्कुराहट की आभा से; नन्तिनर्–हीन हुईं; चुन्तर वतनमुम्–उनके सुन्दर आनन भी; मतिक्कु तोऱ्ऱन–चन्द्र के सामने हार गये। ४७१

स्त्रियों के आभरण बिखर गये। उनके रत्न बिखर गये। ताजे फूल के गुच्छों की माला के समान मेखलाएँ टूटकर अलग हो गई। उनके मुख से मन्दहास की शोभा दूर हो गई। उनके सुन्दर वदन अब चन्द्र के सामने हार गये। ४७१

❀ अऱुपदि नायिर ररशन् ऱेवियर्
मऱुवऱु कऱ्पिनर् मळैक्कण् णीरिनर्
शिऱुवनैत् तॉडर्न्दनर् तिऱन्द वायिनर्
ऍऱिदिरैक् कडलॆन विरङ्गि येङ्गिनार् 472

मऱु अऱु कऱ्पिनर्–निष्कलंक पातिव्रत्य वाली; अरचन् तेवियर्–चक्रवर्ती की पत्नियाँ; अऱुपतिनायिरर्–साठ हज़ार स्त्रियाँ; मळैकण् नीरिनर्–वर्षा के समान आँख के आँसू वालियाँ; तिऱन्त वायिनर्–खुले मुख वालियाँ; चिऱुवनै तॉटर्न्तनर्–पुत्र (श्रीराम) के पीछे जाती हुईं; ऍऱि तिरै कटल्–तरंग फेंकनेवाले समुद्र; ऍन–के समान; इरङ्कि–उच्च स्वर में रोते हुए; एङ्किनार्–व्याकुल हुईं। ४७२

चक्रवर्ती की साठ हज़ार निष्कलंक पतिव्रता पत्नियाँ श्रीराम के पीछे मुख खोलकर रोते हुए, आँखों से अश्रु बरसाते हुए और लहरों से भरे समुद्र के समान उच्च दुख-रव निकालते हुए जाने लगीं। ४७२

❀ कन्निनन् मयिल्हळुङ् गुयिऱ्क णङ्गळुम्
अन्नमुञ् जिऱैयिळन् दवनि शेर्न्दन
ऍन्नवीळ्न् दुळन्ऱन रिराम नल्लदु
मन्नुयिर्प् पुदल्वरै मऱ्ऱुम् बॆऱ्ऱिलार् 473

इरामन् अल्लतु–श्रीराम के सिवा; मऱ्ऱुम् मन् उयिर् पुतल्वरै–और अन्य प्राण-सम पुत्र; पॆऱ्ऱिलार्–जिनके नहीं हुए थे, वे; कन्नि नल् मयिल्कळुम्–श्रेष्ठ बालमयूर और; कुयिल् कणङ्कळुम्–कोकिल-समूह और; अन्नमुम्–और हंस; चिऱै इळन्तु–पंख खोकर; अवनि चेर्न्तन ऍन्न–भूमि पर गिरे, जैसे; वीळ्न्तु–गिरकर; उळन्ऱनर्–रोईं। ४७३

उनके अपने कोई पुत्र नहीं हुए थे। इसलिए वे श्रीराम पर प्राण-सम प्यार करती थीं। वे अब मोर, कोकिल और हंस पक्षहीन होकर भूमि पर गिरे जैसे नीचे गिरकर छटपटाने लगीं। (देवियों की देह की

कान्ति मोर की-सी थी; स्वर कोयल का-सा और चाल हंस की-सी थी।) । ४७३

किळैयिनु नरम्बिनु निरम्बुङ् गेऴन्
अळविऱन् दुयिर्प्पुविट् टरऱ्ऱुन् दन्मयाल्
तॊळैपडु कुऴलिनो डियाऴ्क्कुन् दोऱ्ऱन
इळैयव रमुदिनु मिन्निय शॊऱ्कळे 474

इळैयवर्–कम उम्र वाली उनकी; अमुतितुम् इन्निय चॊऱ्कळ्–अमृत से अधिक मधुर शब्द; किळैयिनुम्–बाँसुरी-नाद से; नरम्पिनुम्–वीणा के स्वर से; निरम्पुम् केऴन–बढ़कर मधुर (पहले) रहे; अळवु इऱन्तु–अपार; उयिर्प्पु विट्टु–निश्वास छोड़ते हुए; अरऱ्ऱुम् तन्मैयाल्–विलाप करने से; तॊळै पटु कुऴलितोटु–रंध्रसहित बाँसुरी के स्वर के सामने और; याऴ्क्कुम्–वीणा के सामने; तोऱ्ऱन–हार गये। ४७४

कम उमर वाली उनका स्वर अमृत से भी बढ़कर मीठा था। वह पहले बाँसुरी और वीणा के स्वर से भी अधिक श्रुतिमधुर और मनोरम होता था। पर अब, अत्यधिक निश्वास छोड़ते हुए रोती-विलापती रही। इसलिए उनका स्वर अब बाँसुरी और वीणा के स्वर के सामने हार गया। ४७४

❀ पुहलिडङ् गॊडुवनम् बोलु मॆन्ऱुतम्
महन्वयि निरङ्गुरु महळिर् वाय्हळाल्
अहन्मदि तॆंडुमनै यरत्त वाम्बल्हळ्
पहलिडै मलर्न्ददोर् पऴनम् बोन्ऱवे 475

पुकल् इटम्–वास का स्थान; कॊटु वनम् पोलुम्–भयंकर वन ही है क्या; ऍन्ऱु–कहते हुए; तम् मकन् वयिन्–अपने पुत्र के प्रति; इरङ्कु उऱुम्–शोक करनेवाली; मकळिर् वाय्कळाल्–स्त्रियों के मुखों के दृश्य से; अकल् मतिल्–विशाल प्राचीरों के; नॆंटु मनै–बड़े सौध; अरत्तम् आम्पल्कळ्–लाल कुमुद; पकल् इटै मलर्न्ततु–दिन मे खिले हों (जिसमें), ऐसे; ओर् पऴनम् पोन्ऱ–एक खेत के समान रहे। ४७५

वे अपने मुख खोलकर रो रही थी। 'क्या तुम्हारा वास-योग्य स्थान भयंकर वन ही है ?' —यह पूछती हुई वे विलाप रही थी। तब उनके खुले लाल मुखो के कारण वे सब सौध, जिनके चारों ओर चौड़े प्राचीर थे ऐसे खेत के समान लगे जिसमें रक्तकुमुद दिन में ही खिले हों। ४७५

तिडरुडैक् - कुङ्गुमच् चेरुञ् जान्दमुम्
इडैयिडै वण्डलिट् टार मीर्त्तन

मिडैमुलैक् कुवडौरीइ मेहलैत् तडम्
कडलिडैप् परन्दहट् कलुऴि याऱ्रो 476

कण् कलुऴि आरु–अश्रुजल की नदियाँ; मिटै मुलै कुवट्टु ऑरीइ–संश्लिष्ट स्तनों के शिखरों से छूटकर; तिटर् उटैय–उन पर टीले के समान लिप्त; कुङ्कुमम् चेरुम्–कुंकुम का लेप; चान्तुम्–चन्दन; इटै इटै वण्टल् इट्टु–बीच-बीच में तलौंछ छोड़ते हुए; आरम् ईर्त्तन–मोती के हारों को बहाते हुए; मेकलै तटम्–मेखला-वलयित विशाल; कटल इटै–(कटि) समुद्र में; परन्त–प्रवेश कर फैलीं। ४७६

उनकी आँखों से जो अश्रुनदियाँ निकली वे संश्लिष्ट स्तनों के शिखरों से होकर नीचे बह चली। उन पर से कुंकुम और चन्दन का लेप गलाकर बहा ले चलीं। इधर-उधर उसको तलौंछ के रूप में छोड़ती हुई आगे बढ़ी। मोती की मालाओं को बहा ले जाकर वे मेखला-वलयित कटितट रूपी विशाल सागर में प्रविष्ट होकर फैल गईं। ४७६

तण्डलैक् कोशलत् तलैवऩ् मादरैक्, कण्डन ऩिरवियुङ् गमल वाण्मुहम्
विण्डलत् तुऱैयुनल् वेन्दऱ् कायिऩुम्, उण्डिड रुऱ्ऱपो दॆऩ्ऩु ऱ्ऱादन 477

तण्टलै–उद्यानों से घिरे; कोचलम् तलैवन् मातरै–कोसल देश के राजा की पत्नियों के; कमलम् वाळ् मुकम्–कमल-सम उज्ज्वल मुख; इरवियुम् कण्टनन्–रवि ने (आज ही) देखे; विण् तलत्तु उरैयुम्–आकाश के वासी; नल् वेन्तऱ्कु आयिनुम्–श्रेष्ठ देवेन्द्र के लिए भी; इटर् उण्टु–दुर्भाग्य होगा; उऱ्ऱ पोतु–जब होता है; उऱ्ऱातन ऍन्–न आनेवाले (अपमान) क्या हैं। ४७७

उपवनों से भरे कोसल देश के अधिपति दशरथ की उन पत्नियों के मुख सूर्य ने उस दिन देख लिए। (इसके पहले सूर्य ने भी उनको नहीं देखा था।) उनकी ऐसी संकट की दशा हो गई! हाँ देवेन्द्र के भी दिन फिरते है और दुर्भाग्य का दौर हो जाता है। कौन सी दुर्गतियाँ हैं, जो तब उन्हें प्राप्त नहीं होतीं? । ४७७

तायरुङ् गिळैञरुञ् जार्न्दु ळार्हळुम्, शेयरु मणियरुञ् शिऱन्द मादरुम्
कायॆरि युऱ्ऱन रनैय कव्वयर्, वायिलु मुन्ऱिलु मऱैय मॊय्त्तनर् 478

तायरुम्–माताएँ (साठ सहस्र); किळैञरुम्–अन्य रिश्तेदार; चार्न्तु उळ्ळार्कळुम्–उनके परिवार; चेयरुम् अणियरुम्–दूर की और निकट की; चिऱन्त मातरुम्–श्रेष्ठ स्त्रियाँ; काय् ऍरि–जलनेवाली आग में; उऱ्ऱनर् अनैय–प्रविष्ट हुईं, जैसे; कव्वैयर्–दुखिनी बनकर; वायिलुम् मुन्ऱिलुम् मऱैय–द्वारों और आँगनों को ढँकते हुए; मॊय्त्तनर्–एकत्रित हुईं। ४७८

वे साठ हज़ार माताएँ, उनकी रिश्तेदारिनें, उनके परिवार, और दूर और पास के रिश्ते की स्त्रियाँ जलती आग में प्रविष्ट-सी दुखी होकर सौधों के द्वारों और आँगनों में आ जुट गईं। ४७८

इरैत्तन रिरैत्तॆळुन् देङ्गि यॆङ्गणुम्
तिरैप्पॆरुङ् गडलॆनत् तॊडर्न्दु पिन्शॆल
उरैप्पदै युणर्न्दिल नॊळिप्प दोर्हिलन्
वरैप्पुयत् तण्णड़न् मनैयै नोक्किनान् 479

इरैत्तनर्–शोर मचाया; इरैत्तु ऍळुन्तु–शोर करते हुए उठकर; ऍङ्कणुम्–सब ओर; तिरै पॆरु कटल् ऍन–लहरों-सहित बड़े सागर के समान; पिन् तॊटर्न्तु चॆ..–पीछे लगे चलीं; वरै पुयत्तु अण्णल्–पर्वत-सम भुजाओं के प्रभु; उरैप्पतै उणर्न्तिलन्–(क्या) कहना (यह) जान न पाये; ऒळिप्पतु ओर्किलत्–उनको रोकने का उपाय न सूझा; तन् मनैयै नोक्किनान्–अपने महल की तरफ़ (देखा) गया। ४७६

वे सब दुख का उच्च रव करते हुए, सब ओर, गर्जनयुक्त सागर के समान श्रीराम के पीछे चली। पर्वतसम भुजा वाले श्रीराम उनसे क्या कहते ? उन्हे क्या कहना है ? —यह नही सूझा। वे उनको रोकने का उपाय भी न सोच सके। वे चुपचाप अपने महल की तरफ़ जाने लगे। ४७९

❀ नन्नॆडु नळिमुडि शूड नन्मणिप्, पॊन्नॆडुन् देर्मिशैप् पवनि पोनवन्
तुन्नॆडुञ् जीरैयैच् चुऱ्ऱि मीण्डुमप्, पॊन्नॆडुन् दॆरुविडैप् पोद नोक्किनर् 480

नल् नॆटु नळि मुटि–उत्तम, बड़े, सम्मानित किरीट को; चूट–धारण करने के लिए; नल् मणि–चुने हुए अच्छे रत्नों से सज्जित; पॊन् नॆटु तेर् मिचै–स्वर्णमय बड़े रथ पर; पवनि पोनवन्–जो वीथी-यात्रा पर गये, वे; तुत् नॆटु चीरैयै–सिये हुए वल्कल को; चुऱ्ऱि–वेष्टित करके; मीण्टुम्–लौटकर; अ पॊन् नॆटु तॆरु–उस उज्ज्वल वीथी के; इटै पोतल्–मध्य जाते; नोक्किनर्–(सबने) देखा। ४८०

श्रीराम जिस वीथी से श्रेष्ठ सुन्दर और सम्मानित किरीट पहनने के लिए रत्नजटित स्वर्णमय रथ पर वीथी-यात्रा मे गये थे उसी वीथी से, वल्कलधारी बनकर पैदल जा रहे थे। इसको सबने देखा। ४८०

❀ अञ्जन मेऩियिव् वळहर् कॆय्दिय
वञ्जनै कण्डपिन् वहिर्न्दु नीङ्गला
नॆञ्जिनुम् वलिदुयिर् निनैप्प दॆन्शिल
नञ्जिनुम् वलियनन् नलमॆन् ड़ार्शिलर् 481

अञ्चनम् मेऩि–काजल-सम शरीर के; इ अळकर्कु ऍय्तिय–इन सुन्दर पुरुषोत्तम को प्राप्त; वञ्चनै कण्ट पिन्–वंचना को देखने के बाद; वकिर्न्तु नीङ्क अल्ला–टूटा जो नहीं; नॆञ्चितुम्–उस हृदय से अधिक; उयिर् वलितु–प्राण कठोर हैं; चिल निनैप्पतु ऍन्–अन्य कुछ प्रकार से सोचा क्या जाय; नम् नलम्–हमारा भाग्य; नञ्चितुम् वलितु–विष से भी क्रूर है; ऍन्ऱार्–कहा; चिलर्–कुछ लोगों ने। ४८१

अंजनवर्ण सुन्दर पुरुष श्रीराम पर किसीकी वंचना से इतना भारी संकट आया है। यह देखकर भी हमारा हृदय टुकड़े-टुकड़े नहीं हुआ। यह बड़ा कठोर है! उससे भी निर्मम है हमारे प्राण। अन्य प्रकारों से क्यों सोचा जाय ? हमारा भाग्य ही विष से अधिक क्रूर निकला। —ऐसा कुछ लोगों ने कहा। ४८१

❀ मण्कॊडु वरुमॆन वळियि रुन्ददियाम्
ऎण्कॊडु शुडर्वनत् तेहल् काणवो
पॆण्कॊडु विनैशॆय्प् पॆऱ्ऱ नाट्टिनिल्
कण्कॊडु पिऱत्तलुङ् गडैयॆन् ऱार्शिलर् 482

मण् कॊटु वरुम् ऎँन्त–पृथ्वी साथ लेकर (मुकुट धरकर) आएँगे, यह सोचकर; याम् वळि इरुन्ततु–हम जो राह देखते रहे, वह; ऎण् कॊटु–हमारा हृदय लेकर; चुटर् वनत्तु–जलते जंगल में; एकल् काणवो–जाना देखने के लिए है क्या; पॆण्–एक स्त्री; कॊट वितै चॆय पॆऱ्ऱ नाट्टिनिल्–क्रूर काम करना जहाँ सम्भव हुआ, उस राज्य में; कण् कॊटु पिऱत्तलुम्–आँखों के साथ जन्म लेना भी; कटै–निकृष्टता है; ऎँन्ऱार् चिलर्–कहा कुछ ने। ४८२

कुछ लोगों ने कहा— हम यह विश्वास करके उनकी राह देख रहे थे कि वे 'पृथ्वी के स्वामी बनकर आयेंगे' पर वे हमारा हृदय छीनकर गरम धूप के जंगल में जा रहे है। क्या यही देखने के लिए हम प्रतीक्षा में बैठे थे ? इस देश में, जहाँ एक स्त्री का अनुचित रूप से क्रूर कर्म करना संभव हो गया, दृष्टिशक्ति के साथ जन्म लेना ही पाप था। ४८२

❀ मुळुवदे पिऱन्दुल हुडैय मॊय्म्बितोन्
उळुवैशेर् कानहत् तुऱैवॆन् यानॆना
ऎळुवदे यॆळुदल्कण् डिरुप्प देयिरुन्
दळुवदे यळहिदिव् वन्बॆन् ऱार्शिलर् 483

पिऱन्तु–(ज्येष्ठ पुत्र के रूप में) जन्म लेकर; उलकम् मुळुवते उटैय–सारे भुवन के स्वामी जो हुए; मॊय्म्पितोन्–वे वीर; उळुवै चेर्–बाघों का वासस्थान; कानकत्तु उऱैवॆन् यान्–जंगल में वास करूँगा; ऎँन–कहकर; ऎँळुवते–निकलें, (यह उचित है) क्या; ऎँळुतल् कण्टु–निकलना देखकर; इरुप्पते–चुप रह जायँ क्या; इरुन्तु अळुवते–रहकर रोएँगे क्या; इ अन्पु अळकितु–यह स्नेह भी भला है; ऎँन्ऱार् चिलर्–कहा कुछ ने। ४८३

कुछ लोगों ने कहा कि श्रीराम ज्येष्ठ पुत्र पैदा हुए हैं। सारा भुवन उनका है। वे योग्य वीरता भी रखते हैं। इतना होने पर भी वे, 'बाघ जहाँ वास करते है उस वन में जाकर वास करूँगा' —यह कहते हुए जा रहे हैं। क्या यह उचित है ? उनको जाते हुए देखकर हम चुप रहें; निष्क्रिय रहकर रोएँ —यही हमारा उन पर स्नेह का निशान है ? हमारा स्नेह भी भला रहा ! । ४८३

वलङ्गडिन् देॗशॉर् कॊण्ड मन्ननै
नलङ्गडिन् दऱङ्गॅड नयत्ति योॅनाक्
कुलङ्गडिन् दान्वलि कॊण्ड कॊण्डलै
निलङ्गडिन् दाळॊडु निहरॆन् ऱार्शिलर् 484

चिलर्–कुछ लोग; वलम् कटिन्तु–अपना बल त्यागकर; एऴै चॊल् कॊण्ट–एक स्त्री का वचन जिन्होंने माना; मन्ननै–उन राजा को; नलम् कटिन्तु–भलाई छोड़कर; अऱम् कॅट–धर्म बिगाड़ने की; तयत्तियो–सोची क्या; ऍना–ऐसा न पूछनेवाले; कुलम् कटिन्तान्–क्षत्रियकुल को हरानेवाले परशुराम का; वलि कॊण्ट–बल परास्त करनेवाले; कॊण्टलै–मेघश्याम को; निलम् कटिन्ताळॊटु–भूमि (का अधिकार) छीननेवाली कैकेयी के; निकर्–समान मानो; ऍन्ऱार्–कहा। ४८४

राजा अपनी शक्ति भूलकर एक स्त्री के वचन को मान गये। उनसे इन श्रीराम को पूछना चाहिए था कि हित का त्याग कर धर्म का गला घोंटने की बात आपने सोची है क्या ? पर क्षत्रियकुल-घाती परशुराम को परास्त करनेवाले मेघश्याम ने यह नहीं किया। उनमें और उनसे देश छीननेवाली कैकेयी में क्या भेद रहा ? दोनो समान समझिए। —यह कहा कुछ लोगों ने। ४८४

तिरुवरै शुऱ्ऱिय शीरै याडैयन्
पॊरुवरुन् दुयरिनन् ऱॊडर्न्दु पोहिन्ऱान्
इरुवरैप् पयन्दव ळीन्ऱ कान्मुळै
ऑरुवनो विवर्किव्वू रुऱवन् ऱार्शिलर् 485

इरुवरै पयन्तवळ् ईन्ऱ–दो पुत्रों की जननी के जन्मे; काल् मुळै–ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मण; तिरु अरै चुऱ्ऱिय–अपनी शोभायमान कमर में; चीरै आटैयन्–वल्कल पहने हुए; पॊरुवु अरुम्–उपमाहीन; तुयरिनन्–दुखी बनकर; तॊटर्न्तु पोकिन्ऱान्–(श्रीराम के) पीछे लगे जाते है; इवर्कु–इन श्रीराम के; इ ऊर्–इस नगर में; उऱवु ऑरुवनो–रिश्तेदार एक ही है क्या; ऍन्ऱार् चिलर्–कहा कुछ लोगों ने। ४८५

कुछ लोगों ने कहा कि सुमित्रादेवी दो पुत्रों की जननी है। उनके ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मण ही वल्कल पहनकर, अत्यधिक दुख के साथ श्रीराम के साथ जा रहे है। इस विशाल नगर मे श्रीराम के स्नेही केवल वे एक ही है ? । ४८५

मुळुक्कलिन् वलियनम् मूरि नॆञ्जिनै
मऴुक्कळिऱ् पिळत्तुमॆन् ऱोडु वार्वऴि
ऑऴुक्किय कण्णिनिर् कलुऴि यूऱ्ऱिडै
इऴुक्कलि निऴुक्किवीऴ्न् दिडरुऱ् ऱार्शिलर् 486

चिलर्–कुछ; मुळु कल्लिन् वलिय–बड़ी चट्टान से अधिक कठोर; नम् मूरि नॆञ्चिनै–हमारे सख्त हृदय को; मऴुक्कळिन्–कुल्हाड़ियों से; पिळत्तुम् ऍन्ऱु–फाड़

देंगे, यह कहकर; ओट्टुवार्–दौड़नेवालों ने; वऴि–मार्ग में; ऑऴुक्किय–जो वरसाया; कण्णिनिल् कलुऴि ऊऱ्ऱु–वह आँखों का झरना; इटै इऴुक्कलिन्–बीच-बीच से फिसलाता था, इसलिए; इऴुक्कि वीऴ्न्तु–फिसलकर गिरे; इटर् उऱ्ऱार्–और संकटग्रस्त हुए। ४८६

कुछ लोग चट्टान से कठोर अपने हृदय को कुल्हाड़ी से फाड़ दें, इस विचार से दौड़ रहे थे। तब उनकी आँखों से अश्रुधारा जो बही उसके कारण मार्ग कीचड़ से भर गया। वे उससे फिसलकर गिर गये और तंग हो गये। ४८६

पॉन्नणि मणियणि मॅय्यिऱ् पोक्किनर्
मिन्नॅन मीनॅन विलक्कि मॅय्विलैप्
पन्निऱत् तुहिलिनैप् परित्तु नीक्किये
शिन्ननुण् डुहिलरैच् चॅऱिक्किन् ऱार्शिलर् 487

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; मिन् अॅन–बिजली के समान; मीन् अॅन–आकाश (की मछलियों) के नक्षत्रों की तरह; मॅय्यिल्–अपने शरीरों पर के; पॉन् अणि–स्वर्णाभरणों और; मणि अणि–रत्नाभूषणों को; विलक्कि पोक्किनर्–उतारकर दूर करके; मॅय्विलै–अधिक दाम के; पल् निऱ–रंग-बिरंगे; तुकिलिनै–वस्त्रों को; परित्तु नीक्कि–निकाल दूर करके; चिन्नम् नुण् तुकिल्–फटे-पुराने सादे वस्त्र; अरै चॅऱिक्किन्ऱार्–कमर में पहन लेती है। ४८७

कुछ स्त्रियों ने अपने शरीर पर से बिजली और नक्षत्रों के समान शोभनेवाले स्वर्ण तथा रत्नाभरणों को उतारकर फेंक दिया और महँगे और रंगीन वस्त्र हटाकर फटे-पुराने सादे कपड़े पहन लिये। ४८७

* निऱैमह वुडैयवर् नॅऱिशॅ लैम्बॊऱि
कुऱैमहक् कुऱैयिनुङ् कॉडुप्प रामुयिर्
मुऱैमहन् वनम्बुह मॊऴियैक् काक्किनऱ्
इऱैमहन् ऱिरुमनत् तिरुम्बॅन् ऱार्शिलर् 488

चिलर्–कुछ लोग; निऱै मक उटैयवर्–बहुत पुत्र वाले हों (तो भी); नॅऱि चॅल्–विषय पर चलनेवाली; ऐन्तु पॉऱि–पाँच इन्द्रियों में; कुऱै मक–एक भी से हीन पुत्र के; कुऱैयितुम्–मर जाने पर; उयिर् कॉटुप्पर्–अपनी जान दे देंगे; आम्–यह लोकरीति है; मुऱै मकन्–अधिकारी श्रेष्ठ पुत्र को; वनम् पुक–जंगल जाने देकर; मॊऴियै काक्किन्ऱ–अपना वचन पालन करनेवाले; इऱैमकन्–(हमारे) राजा का; तिरु मनम्–सुन्दर मन; इरुम्पु अॅन्ऱार्–लोहा है, कहते। ४८८

कुछ लोगों ने दशरथ की यों आलोचना की। किसी के अनेक पुत्र भी हों और उनमें एक लूला या लँगड़ा, काना या अन्धा पुत्र भी मर जाय तो वह अपनी जान दे देगा। यही लोकरीति देखी जाती है। पर

दशरथ को देखिए—। अपने ज्येष्ठ और श्रेष्ठ पुत्र राम को वन भेजकर अपना वचन-पालन करते हैं ! अवश्य उनका मन लोहे का होगा। ४८८

वान्मे यनैयदोर् करुणै माण्बलाल्, ऊनम्वे ड्रिलानुड नुलहम् यावैयुम्
कानमे पुहुमॅनिरू कादत् मैन्दनुम्, तानुमे याळ्ळङ्गॉ ड्ररैयॅत् ड्रार्शिलर् 489

वान्मे अनैयतु–मेघ के ही सम; ओर्–अप्रतिम; करुणै–करुणा; माण्पु–अन्य उत्तम गुण; अल्लाल्–इनके अलावा; वेरु ऊनम् इलानुटन्–जिनमें कोई कमी नहीं है, उन श्रीराम के साथ; उलकम् यावैयुम्–सारा देश; कानमे पुकुम् ऍन्निल्–वन में चला जायगा तो; कातल् मैन्तनुम् तानुमे–अपने प्यारे पुत्र भरत और आप ही; तरै आळुम् कॊल्–खाली भूमि का शासन करेंगे क्या। ४८६

कुछ स्त्रियाँ कहतीं कि समझो कि मेघश्याम, करुणानिधि, श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण और बिल्कुल त्रुटिहीन श्रीराम के साथ सारे देश के लोग वन चले जाते है तो क्या चक्रवर्ती अपने प्यारे पुत्र के साथ रहकर खाली भूमि का शासन करते रहेंगे शायद ! । ४८९

वाङ्गिय मरुङ्गुलै वरुत्तुङ् गॉङ्गयार्
पूङ्गॉडि यॊदुङ्गुव पोलॊ दुङ्गिनार्
एङ्गिय कुरलिन रिणैन्द कान्तळिन्
ताङ्गिय शॅङ्गैदन् दलैयिन् मेलुळार् 490

वाङ्किय मरुङ्कुलै–धँसी हुई (पतली) कमर को; वरुत्तुम्–दुख देनेवाले; कॊङ्कैयार्–स्तनों की; एङ्किय कुरलिन्नर्–रो-रोकर क्षीण हुए स्वर वालियाँ; इणैन्त कान्तळिन्–संश्लिष्ट 'कान्तळ' पुष्पों के समान; तम् तलैयिन् मेल् ताङ्किय चॅम् कै–सिर पर जोड़े रखे गये लाल हाथों; उळ्ळार्–वालियाँ; पू कॊटि ऒतुङ्कुव पोल्–पुष्पलताएँ चलतीं जैसे; ऒतुङ्किनार्–चलीं। ४६०

कुछ स्त्रियाँ जिनके स्तन अन्दर धँसी हुई कमर को कष्ट दे रहे थे, रोते हुए अपने दोनो हाथों को, कांतळ् पुष्पो के जोड़े के समान जोड़कर सिर पर रखे, पुष्पलता के समान चल रही थी। ४९०

तलैक्कुवट् टयन्मदि तवळु माळिहै
निलैक्कुवट् टिडैयिडै निन्रू नङ्गैमार्
मुलैक्कुवट् टिळिहणी रालि मॊय्त्तुह
मलैक्कुवट् टयर्वुरु मयिलिन् माळ्हिन्नार् 491

तलै कुवटु अयल्–(जिनके) शीर्ष भागों के पास; मति तवळुम्–चन्द्र रेंगता है; माळिकै–ऐसे सौधों के; कुवटु निलै–उच्च भागो पर; इटै इटै–बीच-बीच में; निन्रु–स्थित; नङ्कैमार्–रमणियों के; मुलै कुवटु इऴि–स्तनशिखरों पर से बहनेवाली; कण् नीर् आलि–आँसू की बूँदें; मॊय्त्तु उक–एकत्र होकर गिरीं; मलै कुवटु अयर्वु उरुम्–पर्वत-शिखरों पर कुम्हलानेवाले; मयिलिन्–मोरों के समान; माळ्किन्नार्–दुखतप्त हुई। ४६१

कुछ प्रासादों के ऊपरी भागों में, जिनके पास चन्द्र चल रहा था (याने चन्द्रस्पर्शी, ऊँचे प्रासादों पर) स्त्रियाँ खड़ी थीं। उनकी आँखों से अश्रुधाराएँ निकलीं, स्तनों के ऊपरी भाग पर से होती हुई नीचे बह रही थीं। वे स्त्रियाँ पर्वत-शिखरों पर कुम्हलाते हुए मोर जैसे दुखतप्त दिख रही थी। ४९१

मञ्जॅन्त वहिऱ्पुहै वळ्ङ्गु माळिहै
ॲञ्जलिल् शाळरत् तिरङ्गु मिऩ्शॊलार्
अञ्जनक् कण्गणी ररुवि शोर्दरप्
पञ्जरत् तिरुन्दळ्ङ् गिळियिऩ् पऩ्नितार् 492

मञ्चु ॲन्न–मेघों के समान; अकिल् पुकै वळ्ङ्कुम्–अगरु का धुआँ निकालनेवाले; माळिकै–प्रासादों की; ॲञ्चल् इल् चाळरत्तु–असंख्यक खिड़कियों के पास; इरङ्कुम्–दुख प्रकट करते हुए रहनेवाली; इऩ् चॊल्लार्–मधुर-भाषिणियाँ; अञ्चनम् कण्कळ्–अंजन-लगी आँखों से; नीर् अरुवि चोर् तर–सरिता-सम आँसू बहाते हुए; पञ्चरत्तु इरुन्तु अळुम्–पिंजरे में रहकर रोनेवाले; किळियिऩ्–शुकों के समान; पऩ्ऩिऩार्–कई बातें कहती हुई विलाप करती थीं। ४९२

उन प्रासादों के, जिनके अन्दर से अगरु का धुआँ मेघ के समान निकल रहा था, झरोखों के पास स्त्रियाँ खड़ी होकर रो रही थी। वे मधुर-भाषिणी स्त्रियाँ, अपने काजल-लगे नेत्रों से आँसू-नदियाँ बहाते हुए पंजरस्थ शुकों के समान कई बातें कहकर विलाप रही थी। ४९२

नऩ्ऩॆडुङ् गण्गळि ऩाऩ्ऱ नीर्त्तुळि
तऩ्ऩॆडुन् दारैह ळत्तिऩ् वीऴ्दलाल्
अऩ्ऩॆडुङ् गुमरतुक् कळुङ्गि माडमुम्
पॊऩ्ऩॆडुङ् गण्कुऴित् तळुव पोऩ्ऱवे 493

नल् नॆटु कण्कळिऩ् ऩाऩ्ऱ–(ऊपर रही स्त्रियों की) सुन्दर आयत आँखों से निकले हुए; नीर् तुळि तऩ्–अश्रुकणों की; नॆटु तारैकळ्–मिली हुई धाराएँ; तळत्तिऩ् वीऴ्तलाल्–ऊपर से नीचे गिरने से; माटमुम्–अटारी भी: अ नॆटु कुमरतुक्कु अळुङ्कि–उन श्रेष्ठ कुमार से सहानुभूति करके; पॊऩ् नॆटु कण् कुऴित्तु–सुन्दर आयत आँखों को धँसाकर; अळुव पोऩ्ऱ–रोते-से लगे। ४९३

प्रासादों की छतों पर खड़ी होकर स्त्रियाँ रो रही थी। उनकी आँखों से निकलनेवाले आँसू के कण धाराएँ बने और वे धाराएँ नीचे गिरने लगीं। तब ऐसा लगता था कि स्वयं प्रासाद भी उन श्रेष्ठ और बड़े चक्रवर्ती के कुमार श्रीराम से सहानुभूति करके आँखों में गड्ढे बनाते हुए रो रहे हों। ४९३

मक्कळै मऱ्न्दनर् मादर् तायरैप्
पुक्किड मुणर्न्दिलर् पुदल्वर् पूशलिट्
टुक्कन रुयङ्गिन रुरुहिच् चोर्न्दनर्
तुक्कनित्त् ऱ्ऱिविनैच् चूऱ्ऱ् याडवे 494

तुक्कम् नित्ऱ-दुख ने स्थिर होकर; अऱ्ऱिविनै चूऱ्ऱ् आटवे-बुद्धि को लूट लिया, इसलिए; मातर्-स्त्रियों ने; मक्कळै मऱ्न्ततऩर्-अपने पुत्रों को भुला दिया; पुतल्वर्-पुत्रों ने; तायर् पुक्क इटम्-माताओं के गमनस्थान; उणर्न्तिलर्-न जाना; पूचल् इट्टु-रोते-चिल्लाते; उक्कऩर्-आँसू बहाये; उयङ्किऩर्-कुम्हलाये; उरुकि चोर्न्तनर्-विकल होकर थक गये। ४६४

दुख ने स्थायी रहकर लोगों की बुद्धि हर ली। इसलिए माताओं ने अपने पुत्रों को भुला दिया। वत्स भी अपनी माताओं के रहने के स्थान नही जान सके। सब रोते-चिल्लाते, आँसू बहाते-कुम्हलाते और विगलित होते थक जाते थे। ४९४

कामरङ् गनिन्दॅनक् कनिन्द मॅन्मॊऴि, मामडन् दैयरॅला मरुहु शेर्दलाल्
तेमरु नरुङ्गुळर् ऱ्रुवि नीङ्गिय, तामरै यॊत्तन तवळ माडमे 495

कामरम् कतिन्ततु ऍन्न-'श्रीकामर' नामक राग अपनी उच्च गति पर हो, ऐसा; कनित्त-मधुरतापूर्ण; मॅल् मॊऴि-मृदु बोली वाली; मा मटन्तैयर् ऍल्लाम्-श्रेष्ठ लक्ष्मी-सम-स्त्रियाँ, सभी; मरुकु चेर्तलाल्-मार्ग पर जुट गईं, इसलिए; तवळम् माटम्-धवल प्रासाद; तेम् मरु-मधुरता भरा; नऱु कुळल्-सुवासित केश वाली; तिरुविन् नीङ्किय-श्री-विहीन; तामरै ऒत्तन-कमल-तुल्य हो रहे। ४६५

सभी स्त्रियाँ, जिनकी वाणी 'श्रीकामर' के खूब अलापे स्वर के समान मीठी थी सड़कों पर आ गईं। इसलिए स्त्रियों से विहीन धवल प्रासाद मधुर और सुवासित केश वाली श्री से परित्यक्त कमलों के समान शोभाहीन हो गये। ४९५

❀ मळैक्कुलम् बुरैहुळल् विरिन्दु मण्णुऱक्
कुळैक्कुल मुहत्तियर् कुळाङ्गॊण् डेङ्गिनर्
इळैक्कुलञ् जिदऱ्रिड वेवुण् डोय्वुरुम्
उळैक्कुल मुळैप्पन वॊत्तॊर् पालॆलाम् 496

ओर् पाल् ऍलाम्-एक ओर; कुळै-कुण्डलधारिणी; कुलम् मुकत्तियर्-उज्ज्वल मुख वाली स्त्रियाँ; कुळाम् कॊण्टु-दलों में जुटकर; मळै कुलम् पुरै-मेघ-समूह के समान; कुळल्-केश को; विरिन्तु मण् उऱ-खुलकर भूमि पर बिखरने देते हुए; इळै कुलम् चितऱिट-और आभरण-जाल को छितरने देते हुए; ए उण्टु ओय्वु उऱुम्-शराहत हो गिरनेवाले; उळै कुलम्-हरिण-समूह; उळैप्पन ऒत्तु-दुख करते जैसे; एङ्किनर्-दुखी हुईं। ४६६

एक ओर देखिए। उस तरफ़ सभी स्थानों में कुंडलधारिणी स्त्रियाँ

प्रभाहीन मुखों के साथ आ जुटी थीं। उनके मेघसम केश खुलकर नीचे भूमि पर बिखरे थे। उनके आभरण गिर गये थे। वे शराहत हरिण-समूह जैसे पीड़ा का अनुभव करती रहीं। ४९६

कॊडियडङ् गिन्नमन्नैक् कुन्ऱङ् गोमुर
शिडियडङ् गिनमुळक् किळन्द पल्लियम्
बडियडङ् गलुनिमिर् पशुङ्गण् मारियाल्
पॊडियडङ् गिन्नमदिर् पुऱत्तु वीदिये 497

मन्नै कुन्ऱम्—प्रासाद रूपी पर्वतों पर; कॊटि अटङ्कित्त—पताकाएँ स्थिर रहीं; को मुरचु—राजकीय ढोल; इटि अटङ्कित्त—वज्रसम घोष से विहीन रहे; पल् इयम्—विविध वाद्य; मुळक्कु इळन्त—बजे नहीं; पटि अटङ्कलुम्—भूमि पर सब जगह; निमिर्—विपुल; पचु कण् मारियाल्—ताजे आँसुओं की वर्षा के कारण; मतिल् पुऱत्तु वीति—प्राकार से लगी वीथियों में; पॊटि अटङ्कित्त—धूलि थम गई। ४९७

पर्वतसम प्रासादों पर पताकाएँ नही फहरती थीं। राज-ढोल नहीं बज रहे थे। विविध वाद्य बजने से रह गये। भूमि भर में आँखों के आँसू की धारा बह रही थी अतः धूलि थम गई। (इसमे "अटङ्कित्त" शब्द विविध अर्थों में प्रयुक्त होकर बार-बार आया है।) । ४९७

❀ अट्टिलु मिळन्दन पुहैय हिऱ्पुहै
नॆट्टिलु मिळन्दन निऱैन्द पाल्किळि
वट्टिलु मिळन्दन मरुङ्गु कान्मणित्
तॊट्टिलु मिळन्दन् महवुञ् जोर्न्दवे 498

अट्टिलुम्—पाकशालाएँ भी; पुकै इळन्तन—धुएँ से रिक्त हो गईं; नॆटु इल्लुम्—ऊँचे प्रासाद भी; अकिल् पुकै इळन्तन—अगरु के धुएँ खो गये; किळि वट्टिलुम्—शुकाशनपात्र भी; निऱैन्त पाल् इळन्तन—दूध से पूर्ण रहने से रह गये; मरुङ्कु कान्—चारों ओर प्रकाश बिखरनेवाले; मणि तॊट्टिलुम्—रत्नमय पालने भी; मकवु इळन्त—शिशु-रहित हो रहे; मकवुम् चोर्न्त—शिशु भी थके पड़े रहे। ४९८

पाकशालाओं में (पकाने का काम नहीं होता था, इसलिए) धुएँ का अभाव था। ऊँचे माढ़ों में अगरु का धुआँ नही पाया जाता था। शुकों को खिलाने के लिए उपयुक्त कटोरे दूध से खाली थे। रत्नमय पालनों में, जिनसे चारों ओर कान्ति छूटती थी, शिशु नही थे। शिशु जो नीचे पड़े थे, किसी के द्वारा उठाये न जाने से थके पड़े रहे। ४९८

ऒळितुऱन् दन्नमुह मुयिर्त्तु ऱन्दॆन्नत्
तुळितुऱन् दन्नमुहिऱ् ऱॊहैयुन् दूयवाम्
तळितुऱन् दन्नबलि दान यान्नैयुम्
कळितुऱन् दन्नमलर्क् कळ्ळुण् वण्डिने 499

मुकम्–मुख; उयिर् तुऱन्ताल् अॅन–प्राणविहीन हुए जैसे; ऑळि तुऱन्तऩ–निष्प्रभ हुए; मुकिल् तॉकैयुम्–मेघ-समूह भी; तुळि तुऱन्तऩ–जलकण-रिक्त हो गये; तूय आम् तळि–पवित्र देवालय; पलि तुऱन्तऩ–पूजा खो गये; मलर्कळ् उण् वण्टिऩ्–पुष्प मे शहद पीनेवाले भ्रमरो के समान; तानम् यानैयुम्–मत्तगज भी; कळि तुऱन्तऩ–मस्ती छोड़ गये। ४९९

लोगों के मुख कान्तिहीन हो रहे। मेघो के दल जल-कण से रिक्त रहे। पवित्र देवालयों मे पूजा नही होती थी। फूलों पर मँड़राकर शहद पीनेवाले भ्रमरो के साथ मत्तगजो ने भी अपनी मस्तता खो दी। ४९९

निऴल्पिरिन् दन्नकुडै नॅडुङ्ग णेऴैयर्–
कुऴल्पिरिन् दनमलर् कुमरर् ताळिणै
कऴल्पिरिन् दनशिनक् कामन् वाळियुम्
अऴल्पिरिन् दन्तुणै पिरिन्द वन्ऱिले 500

कुटै निऴल् पिरिन्तन–छत्र-छाया नहीं दे रहे थे; नॅटु कण्–लम्बी आँखों की; एऴैयर् कुऴल्–स्त्रियों का केश; मलर् पिरिन्तऩ–पुष्पो से रिक्त हो गया; कुमरर् ताळ् इणै–वीर नौजवानो के चरणद्वय; कऴल् पिरिन्तन–पायलों से शून्य रहे; चिनम् कामन् वाळियुम्–क्रोधशील कामदेव के शरों से; अऴल् पिरिन्तन–ताप-शक्ति छूट गई; अन्ऱिल्–क्रौंच; तुणै–अपने सहचर से; पिरिन्त–अलग हो गये। ५००

छत्रो ने छाया देना छोड़ दिया। (किसी ने छत्र का उपयोग नही किया।) लवी आँखो वाली स्त्रियों के केश पुष्पो से विहीन रहे। नौजवानों ने पायल पहनना छोड़ दिया। मन्मथ के शरों ने अपनी तापन-शक्ति खो दी। क्रौंच पक्षी भी अपने जोड़े से अलग हो गये। ५००

तारॉलि नीत्तन पुरवि तण्णुमै, वारॉलि नीत्तन मऴैयिन् विम्मुऱुम्
तेरॉलि नीत्तन तॅरुवुन् दॅण्डिरै, नीरॉलि नीत्तन नीत्तम् बोलुमे 501

पुरवि–अश्वों ने; तार् ऑलि नीत्तन–पाजेव की गुरियाओं की ध्वनि छोड़ दी; तण्णुमै–मृदंगों ने; वार् ऑलि नीत्तन–अपनी ऊँची ध्वनि छोड़ दी; मऴैयिन् विम्मुऱुम्–मेघ-गर्जन से अधिक स्वर करनेवाले; तेर् ऑलि–रथो की ध्वनि को; तॅरुवुम् नीत्तन–सड़को ने छोड़ दिया; तॅळ् तिरै–स्वच्छ तरंगों वाले; नीर् ऑलि नीत्तन नीत्तम् पोलुमे–जल से युक्त ध्वनिहीन नदियो के समान रही। ५०१

अश्वो को गले का हार नही पहनाया गया अतः उनसे गुरियों का क्वणन नही निकल रहा था। मृदंग नही बजाये गये, इसलिए वे ध्वनिहीन पड़े हुए थे। सडकों पर रथ नही दौड़ते थे, इसलिए रथो की, मेघसम घरघराहट सुनाई नही देती थी और सडके भी कल-कल ध्वनि से रिक्त नदी के समान पड़ी रही। ५०१

❀ मुळवॆळु मॊलियिल मुइैयिन् याळ्नरम्
वॆळवॆळु मॊलियिल विझैप्पिल् कण्णिनर्
विळवॆळु मॊलियिल वेरु मॊन्रिल
अळवॆळु मॊलियॆळु मरश वीदिये 502

अरच वीति–राजमार्ग; मुइैयिन्–लगातार; मुळवु ॲळुम् ऑलि इल–ढोलों के नाद से खाली रहे; याळ् नरम्पु ॲळ–वीणा की तंत्रियों को झटका देने से; ॲळुम् ऑलि–उठनेवाला नाद; इल–नहीं रहा; इमैप्पु इल् कण्णिनर्–पलकहीन देवो के; विळवु ॲळुम् ऑलि इल–उत्सवो के कारण उठनेवाला शोर नही रहा; वेरु ऑन्रुम् इल–और कोई (मंगल) नाद नहीं उठा; अळ ॲळुम्–रोने से उठनेवाला; ऑलि ॲळुम्–नाद उठा। ५०२

राजमार्गो पर ढोल नही बजते थे। कोई वीणा नहीं बजाता था इसलिए वीणा का तन्त्रीनाद सुनाई नही दिया। पलक न झपनेवाले देवताओं के पूजा आदि उत्सव नही मनाये गये, इसलिए कही कुछ कोलाहल सुनाई नही दिया। केवल रुदन-स्वर ही सुनाई देता था और अन्य कोई मंगलध्वनि सुनाई ही नही देती थी। ५०२

तॆळ्ळॊलिच् चिलम्बुहळ् शिलम्पु पॊन्मनै
नळ्ळॊलित् तिलनळिर् कलैयु मन्नवे
पुळ्ळॊलित् तिलपुनल् पॊळिलु मन्नवे
कळ्ळॊलित् तिलमलर् कळिरु मन्नवे 503

तॆळ् ऑलि चिलम्पुकळ्–साफ़ स्वर वाले नूपुर; चिलम्पु–जहाँ स्वरित हो रहे थे; पॊन् मनै–उन स्वर्णप्रासादों; नळ्–के मध्य; ऑलित्तिल–स्वरित नहीं हुए; नळिर् कलैयुम् अन्नवे–श्रेष्ठ मेखलाओं की बात वही; पुनल्–जलाशयों में; पुळ् ऑलित्तिल–पक्षी बोले नहीं; पॊळिलुम्–उद्यानों की बात भी; अन्नवे–वैसी ही; मलर्–पुष्पों पर; कळ् ऑलित्तिल–भ्रमरों ने गुंजार नहीं किया; कळिरुम् अन्नवे–गजों की बात वही (पुष्प की तरह ही)। ५०३

जिन प्रासादों में स्त्रियों के पैरों के नूपुरो की मनोरम साफ़ ध्वनि होती थी उनमें अब नूपुर मौन थे। मेखलाओं की भी वही स्थिति हो गई। जलाशय खगरव-हीन हो गये और उद्यानों की हालत भी वही हो गई। पुष्प, जैसे मत्तगज, मधुपों से खाली हो रहे। ५०३

शॆय्म्मरन् दनपुनल् शिवन्द वाय्च्चियर्
कैम्मरन् दनपशुङ् गुळलि कान्दॆरि
नॆय्म्मरन् दननॆरि यरिजर् यावरुम्
मय्म्मरन् दनरॊलि मरन्द वेदमे 504

चॆय्–खेत; पुनल् मरन्तन–जल भूल गये; चिवन्त वाय्च्चियर् कै–अरुणाधरा

स्त्रियों के हाथ; पचु कुऴवि मऱन्तत्त–शिशु भूल गये; कानु अॅरि–जलनेवाली ज्वालाएँ; नॅय् मऱन्तत्त–घी भूल गई; नॅरि अरिनर् यावरुम्—सन्मार्ग-वेदज्ञ सभी; मेय् मऱन्तत्तर्–अपने शरीर भूल गये; वेतम् ऑलि मऱन्त–वेदों ने स्वर भुला दिया। ५०४

खेत, काम करनेवालों के न होने के कारण सीचे नहीं गये थे अतः जल भूलकर सूखे पड़े थे। अरुणाधरा स्त्रियों के हाथों ने शिशुओं को भुला दिया। ज्वालाएँ घी भूल गई क्योकि होम-कार्य नहीं हुआ। वेदज्ञ ब्राह्मण अपने शरीर को भी भुलाए रह गये। इसलिए वेदध्वनि कही नही सुनाई दी। (सव तरह के लोग निष्क्रिय थे अतः कहीं कुछ आवश्यक कामों की भी आहट नहीं मिलती थी।)। ५०४

आडिऩ रऴुदन रमुद वेऴिशै, पाडिन रऴुदऩर् परिन्द कोदैयर्
ऊडिन रऴुदन रुयिरि ऩऩ्बरैक, कूडिन रऴुदऩर् कुऴाङ्गु ऴाङ्गोडे 505

कुऴाम् कुऴाम् कॉट्टु–दल के दल; आटिऩर् अऴुतऩर्–(स्त्रियाँ) जो नाच रही थीं, वे रोईं; अमुतम् एऴ् इचै पाटिऩर्—सुधा-सम सप्तस्वर संगीत गानेवाली; अऴुतऩर्–रोईं; परिन्त कोतैयर्–त्यक्त-माला वालियाँ; ऊटिऩर् अऴुतऩर्–रूठी हुई स्त्रियाँ रोईं; उयिरिऩ् अऩ्परै–प्राणसम प्रिय नाथों से; कूटिऩर्–जो मिली थीं, वे भी; अऴुतऩर्–रोईं। ५०५

नर्तकियाँ मिलकर रोईं। गानेवाली स्त्रियाँ गाना छोड़कर रोई। पुष्पमाला निकाल फेंककर जो अपने पतियों से रूठी हुई थीं वे रोईं। जो पतियों से मिलन का आनन्द उठा रही थीं वे भी रोई। ५०५

नीट्टिल कळिरुकै नीरिऩ् वाय्पुदल्
पूट्टिल पुरविहळ् पुळ्ळुम् पार्प्पिनुक्
कीट्टिल विरैपुऩिर् ऱीऩ्ऱ कऩ्ऱैयुम्
ऊट्टिल करवैनैन् दुरुहिच् चोर्न्दवे 506

कळिरु–हाथियों ने; कै–सूँड़ें; नीरिऩ् नीट्टिल–पानी की तरफ़ नहीं बढ़ाई; पुरविकळ्–अश्वों ने; वाय्–अपने मुखों पर; पुतल् पूट्टुतल् इल–घास नहीं रखी; पुळ्ळुम्–पक्षियों ने; पार्प्पिऩुक्कु–अपने शावकों के लिए; इरै ईट्टिल–चारा नहीं ढूँढ़ा; करवै–गायों ने; ईऩ्ऱ–नये व्याये; पुऩिऱु कऩ्ऱैयुम्–छोटे बछड़ों को; ऊट्टु इल–दूध नहीं पिलाया; नैन्तु उरुकि–विगलित होकर; चोर्न्त–मुरझाये रहे। ५०६

गजों ने सूँड़ो को पानी की तरफ़ नही बढ़ाया। अश्वों ने अपने मुख में घास का ग्रास नहीं लिया। पक्षी अपने शावकों के लिए चारा ढूँढ़ नही लाये। गायों ने अपने नये बछड़ों को भी दूध नहीं पिलाया। सब दुख से विगलित रहे। ५०६

मान्दर्द मौंयम्बितित् महळिर् कौंङ्गयाम्
एन्दिळ नीर्हळुम् वरुमै येंय्दिन
शान्दमम् महिळ्नर्तम् मुडियिर् रैयलार्
कून्दलुम् वरुमैय मलरिन् कूलमे 507

मान्तर् तम् मौंय्म्पित्तिल्–पुरुषों की भुजाओं के समान; मकळिर्–स्त्रियों के; कोङ्कै आम्–स्तन रूपी; एन्तु इळनीर्कळुम्–उन्नत (कच्चे) नारियल; चान्तम् वरुमै अँय्तिन–चन्दन से रिक्त रहे; अ मकिळ्तर् तम्–उन पुरुषों के; मुटियिल्–केशों के समान; तैयलार् कून्तलुम्–स्त्रियों के केश भी; मलरिन् कूलम् वरुमैय–पुष्पों के समूह से रिक्त हो गये। ५०७

पुरुषों के कन्धे और स्त्रियों के नारियल के फलों जैसे स्तनों पर चन्दन नहीं लगा। दोनो के केश पुष्पों के अलंकार से शून्य पाये गये। ५०७

ओडै नल्लणि मुनिन्दन वुयर्हळि रुच्चि
शूडै नल्लणि मुनिन्दन शुडर्मणिक् कौंडियिन्
आडै नल्लणि मुनिन्दन वम्बौंन्शॅं यिञ्जि
पेडै नल्लणि मुनिन्दन मॅन्नडैप् पुरवम् 508

उयर् कळिरु–उत्तम गजों ने; ओटै–मुखपट्टों के; नल् अणि–सुन्दर अलंकार से; मुनिन्तन–गुस्सा किया; उच्चि–(स्त्रियों के) केशों ने; चूटै नल् अणि मुनिन्तन–श्रेष्ठ शिरोभूषणों से घृणा की (पहना नहीं); अम् पोन् चॅय् इञ्चि–उत्तम स्वर्णनिर्मित प्राचीरों ने; चुटर् मणि कॉटियिन् आटै–कान्तियुत सुन्दर पताकाएँ रूपी; नल् अणि–श्रेष्ठ अलंकार को; मुनिन्तन–त्याग दिया था; मॅल् नटै पुरवम्–मृदु-चाल कपोतों ने; पेटै नल् अणि मुनिन्तन–कपोतियों की श्रेष्ठ कमनीयता दुत्कार दी। ५०८

हाथियों ने मुखपट्ट आदि अलंकार दुत्कार दिये; स्त्रियों के सिर के केश ने शिरोभूषण पसन्द नही किये। प्राचीरों पर पताकाओं का अलंकार नहीं पाया गया। मृदु चाल वाले कपोतों ने अपनी कमनीय कपोतियों का संग छोड़ दिया। ५०८

❀ तिक्कु नोक्किय तीविनैप् पयनॅनच् चिन्दै
नॅक्कु नोक्कुवोर् नल्विनैप् पयनॅन नेर्वोर्
पक्क नोक्कलॅन् परुवर लिन्बमॅन् ड्रिरण्डुम्
ऑक्क नोक्किय योहरु मरुन्दुय रुळ्न्दार् 509

तीविनै पयन्–बुरे कर्म का फल (दुख); तिक्कु नोक्किय–तुम्हारी दिशा की ओर आ रहा है; अँन–ऐसा किसी के कहने पर; चिन्तै नॅक्कु–मन को विगलित करके; नोक्कुवोर्–प्रतीक्षा करनेवाले; नल् विनै पयन् अँन–सुकर्म का फल (सुख) आ रहा है, कहने पर; नेर्वोर् पक्कम्–स्वागत करनेवालों का स्वभाव; नोक्कल् अँन–देखने से क्या; परुवरल् इन्पम् अँन्रु इरण्टुम्–दुख, सुख दोनो को; ऑक्क

नोक्किय–समदृष्टि से देखनेवाले; योकरुम्–योगी भी; अरु तुयर् उळन्तार्–अत्यधिक दुख से पीड़ित हुए। ५०९

बुरे कर्मफल, दुख, का नाम सुनकर घबड़ानेवाले और अच्छे फल, सुख, का स्वागत करनेवाले मामूली लोगों की बात क्या कही जाय ? दुख और सुख को समदृष्टि से देखनेवाले योगीजन भी बहुत शोकाकुल हुए। ५०९

ओवि नल्लुयि रुयिर्प्पिनो डुडल्पदैत् तुलैय
मेवु तोल्लऴ हॆऴिल्कॆड विम्मनोय् विम्मत्
तावि लैम्बॊऱि मऱुहुऱत् तयरद नॆऩ्ऩ
आवि नीक्किऩ्ऱ दॊत्तदव् वयोत्तिमा नहरम् 510

अ अयोत्ति मा नकरम्–वह अयोध्या नगर; ओवु इल् नल् उयिर्–न छूटनेवाले प्राणों के समान रहे जीव (प्रजाजन) सभी; उयिर्प्पिनोटु–निश्वास के साथ; उटल् पतैत्तु उलैय–शरीर के तड़पकर शिथिल होने से; मेवु तोल् अऴकु–पहले के स्वाभाविक आकर्षण; ऍऴिल्–और अलंकार के आकर्षण के; कॆट–विकृत हो जाने से; विम्मल् नोय् विम्म–दुख के रोग के बढ़ने से; ता इल् ऐन्तु पॊऱि–निर्बल हुई पाँचों इन्द्रियों के; मऱुकु उऱ–क्षुब्ध होने से; तयरतऩ् ऍऩ्ऩ–दशरथ के समान; आवि नीक्किऩ्ऱतु ऒत्ततु–प्राणों को छोड़ता-सा रहा। ५१०

उस अयोध्या नगर के सब जीव निश्वास छोड़ते हुए, स्वाभाविक सुन्दरता और अलंकार का आकर्षण —इनसे रिक्त होकर, कम्पायमान शरीरों के साथ दुखतप्त हुए और उनकी इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गई। वह नगर उस अवस्था मे बिलकुल दशरथ के समान रहा। ५१०

❀ उयङ्गि यन्नह रुलैवुऱ वॊरुङ्गुळैच् चुऱ्ऱम्
मयङ्गि येङ्गिऩर् वयिऩ्वयिऩ् वरम्बिलर् तॊडर
इयङ्गु पल्लुयिर्क् कोरुयि रॆऩ्ऩनिऩ्ऱ इरामन्
तयङ्गु पूण्मुलैच् चानहि यिरुन्दुऴिच् चार्न्दान् 511

अ नकर्–वह नगर; उयङ्कि उलैवु उऱ–दुखी होकर छटपटाता रहा, तब; उळै चुऱ्ऱम्–पास रहनेवाले सेवक; वयिऩ् वयिऩ्–इधर-उधर; वरम्पु इलर्–असंख्यक लोग; ऒरुङ्कु–एक साथ; मयङ्कि एङ्किऩर्–भ्रान्त होकर रोते हुए; तॊटर–पीछा करते चले, तब; इयङ्कु पल् उयिर्क्कु–जीवन्त सभी विविध जीवों के; ओर् उयिर् ऍऩ्ऩ निऩ्ऱ–एक प्राण के समान (जो) रहे (वे); इरामऩ्–श्रीराम; तयङ्कु पूण् मुलै–शोभायमान आभरण-भूषित स्तनों वाली; चानकि इरुन्त उऴि–जानकी जहाँ रही, उस स्थान को; चार्न्ताऩ्–पहुँचे। ५११

वह नगर ही दुखाक्रांत हो गया। असंख्यक नौकर लोग भी यत्र-तत्र मिलकर बुद्धि-भ्रमित होकर श्रीराम का पीछा करते जा रहे थे। तब सब जीवों के एकप्राण श्रीराम आभरणभूषित स्तनों वाली जानकी के (रहने के) स्थान को गये। ५११

❀ अऴुदु तायरी डन्दण ररुन्दव ररशर्
पुऴुदि याडिय मॅय्यिनर् पुडैवन्दु पॉरुमप्
पऴुदु शीरैयि नुडैयिनन् वरुम्बडि पारा
ॲऴुदु पावयन् ताण्मतत् तुणुक्कमॊ डॅऴुन्दाळ् 512

तायरॊडु—माताओं के साथ; अन्तणर्—ब्राह्मण लोग; अरु तवर्—श्रेष्ठ तपस्वी लोग; अरचर्—राजा लोग; पुऴुति आटिय मॅय्यिनर्—धूल-धूसरित शरीर वाले; अऴुतु पुटै वन्तु—रोते हुए पास आकर; पॊरुम—सिसकते खड़े रहे, तब; पऴुतु चीरैयिन् उटैयिनन्—क्षुद्र वल्कल-वसन; वरुम्पटि पारा—आते है, देखकर; ॲऴुतु पावै अन्नाळ्—चित्र-प्रतिमा-सी देवी; मनम् तुणुक्कमॊटु—मन में भय के साथ; ॲऴुन्ताळ्—उठ खड़ी हुई। ५१२

सीताजी ने देखा कि श्रीराम आ रहे है और उनके पीछे माताएँ, ब्राह्मण, मुनि, राजा आदि विविध प्रकार के लोग, धूल-धूसरित शरीरों के साथ पार्श्व में रोते हुए आ रहे हैं। स्वय श्रीराम क्षुद्र वल्कल धारण किये हुए थे। यह देखकर चित्रप्रतिमा-सी जानकीजी ठिठककर खड़ी हो गई। ५१२

❀ ॲऴुन्द नङ्गयै मामियर् तऴुविन रेन्दिप्
पॊऴिन्द वुण्गणीर्प् पुदुप्पुन लाट्टिनर् पुलम्ब
अऴिन्द शिन्दय ळन्नमु मिन्नदॆन् ररियाळ्
वऴिन्द नीर्नॆडुङ् गण्णिनळ् वळ्ळलै नोक्कि 513

ॲऴुन्त नङ्कैयै—जो उठीं, उन देवी को; नामियर्—सासों ने; तऴुवितर्—गले लगाते हुए; एन्ति—सम्हालकर; पॊऴिन्त—बहनेवाले; उण् कण नीर् पुतु पुनल्—काजल से युक्त आँखों के नये (अश्रु-) जल से; आट्टिनर्—नहलाया; पुलम्प—और विलाप किया, तब; अन्नमुम्—हंसिनी (सीता) भी; इन्नतु ॲन्नु अरियाळ्—क्या बात है, यह नहीं जानकर; अऴिन्त चिन्तैयळ्—उद्विग्न-मन होकर; नीर् वऴिन्त नॆटु कण्णिनळ्—आँसू बहानेवाली आँखो को होकर; वळ्ळलै नोक्कि—प्रभु श्रीराम को देखकर। ५१३

वहाँ सासे खड़ी थी। उन्होंने सीता को गले से लगा लिया। और अपनी आँखों से अश्रुजल बहाकर उन्हें नहला दिया। वे विलाप करने लगी। सीताजी को पता नही लग रहा था कि यह सब क्या अनर्थ है? इसलिए क्षुब्धमना और अश्रु-भरी आँख वाली बनकर (जानकीजी ने) श्रीराम से—। ५१३

❀ पॊन्नै युऱ्ऱ पॊलङ्गऴ् लोय्पुहऴ्
मन्नै युऱ्ऱदुण् डोमऱ्ऱिव् वन्नुयर्
ॲन्नै युऱ्ऱ दियम्बॆन् ऱिरैञ्जिनाळ्
मिन्नै युऱ्ऱ नडुक्कत्तु मेनियाळ् 514

मिऩ्ऩै उऱ्ऱ–बिजली के समान; नट्कुकत्तु मेत्तियाळ्–काँपनेवाली देह की वनकर; पौऩ्ऩै उऱ्ऱ पॉलम् कळलोय्–स्वर्णरचित पायलधारी; इ वऩ् तुयर् उऱ्ऱतु ऍऩ्ऩै–यह बड़ा दुख क्यों कर हुआ; पकळ् मऩ्ऩै–प्रकीर्तित राजा पर; उऱ्ऱतु उण्टो–कुछ बीता क्या; इयम्पु ऍऩ्ऱु–कहिए, कहकर; इऱैञ्चिऩाळ्–विनय की। ५१४

बिजली के समान काँपनेवाली श्री सीताजी ने (श्रीराम से) पूछा कि स्वर्णरचित पायलधारी वीर ! यह कठोर और बड़ा दुख काहे का और क्यों कर हुआ ? प्रथित यशस्वी महाराजा पर कुछ बीता है क्या ? कहिए —यह विनय की। ५१४

❀ पॉरुवि लॅम्बि पुविबुरप् पाऩ्पुहऴ्
इरुव राणैयु मेन्दिऩ्ँ निऩ्ऱुपोयक्
करुवि मामऴैक् कऱ्कडङ् गण्डु नाऩ्
वरुवॅ नीण्डु वरुन्दलै नीयॅन्ऱाऩ् 515

पॉरुवु इल् ऍम्पि–अप्रतिम मेरा अनुज; पुवि पुरप्पाऩ्–भूमि का पालन करेगा; नाऩ् पुकऴ् इरुवर्–मैने यश के पात्र (माता-पिता) दोनो की; आणैयुम् एन्तिऩ्ऩ्–आज्ञा मान ली; इऩ्ऱु पोय्–आज ही चलकर; करुवि मा मऴै–समूहों में मेघ-संचारित; कल् कटम् कण्टु–पर्वतों वाले वन को देखकर; वरुवॅऩ्–लौट आऊँगा; ईण्टु नी वरुन्तलै–यहाँ तुम दुख मत करो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ५१५

श्रीराम ने उत्तर में कहा कि मेरा अनुपम भाई भरत राजा बनेगा और भूमि का पालन करेगा। मैंने यशोगान-योग्य अपने पिता और माता की आज्ञा मान ली है। उसके अनुसार मैं आज ही जाऊँगा और मेघ-मंडरित वन को देखकर लौट आऊँगा। तुम यहीं रहो और दुखी मत हो। ५१५

❀ नाय हऩ्वऩ नण्णलुऱ् ऱाऩ्ऩॆऩ्ऱुम्, मेय मण्णिऴन् दाऩ्ऩॆऩ्ऱुम् विम्मलऴ्
नीव रुन्दलै नीङ्गुवॅन् याऩ्ऩॆऩ्ऱ, तीय वॅञ्जोल् शॅविशुडत् तेम्बुवाळ् 516

नायकऩ् वतम् नण्णल् उऱ्ऱाऩ्–हमारे पति जंगल जाने लगे; ऍऩ्ऱुम्–यह सोचकर; मेय मण् इऴन्ताऩ् ऍऩ्ऱुम्–स्वत्व की भूमि खोई, इसके लिए भी; विम्मलऴ्—दुख-भरी नहीं हुई; याऩ् नीङ्कुवॅऩ्–मै जाऊँगा; नी वरुन्तलै–तुम दुख न करो; ऍऩ्ऱ–इस; तीय वॅम् चॊल्–कठोर तापक वचन के; चॅवि चुट–कानों को जलाने से; तेम्पुवाळ्–रोने लगी। ५१६

सीताजी यह सुनकर रोने लगीं। उनको इस बात के दुख ने नहीं सताया कि उनके प्रिय पति जंगल जा रहे है। न यह बात उन्हें दुख दे रही थी कि उनके अधिकार की भूमि उन्हें नही मिली। पर 'मैं जा रहा हूँ। तुम दुख मत करो', यह निर्मम और तापक वचन उनके कानों को मानो जलाने लगा। वे अत्यन्त व्याकुल हुई। ५१६

❀ तुऱन्दु पोमॅन्ऱु शॉऱ्ऱशॉऱ् ऱेऱुमो
उऱैन्द पाऱ्कडऱ् चेक्कै युडनॉरीइ
अऱन्दि ऱम्बल्कण् डैय नयोत्तियिल्
पिऱन्द पिन्बुम् पिरिविल ळायिनाळ् 517

ऐयन्–मेरे प्रभु; अऱम् तिरम्पल् कण्डु–(पृथ्वी पर) धर्म की ग्लानि देखकर; उऱैन्त पाल् कटल्–अपने वास के क्षीरसागर पर; उटन् चेक्कै ऑरीइ—साथ-साथ शयन त्यागकर; अयोत्तियिल् पिऱन्त पिन्पुम्–अयोध्या में जन्म लेने के बाद भी; पिरिवु इलळ् आयित्ताळ्–अलग न होकर साथ रहीं, ऐसी; तुऱन्तु पोम् ऍन्ऱु–तुमको छोड़कर जायँगे, यह; चॉऱ्ऱ चॉल्–कथन; तेऱुमो–उचित मानती क्या। ५१७

भगवान विष्णु धर्म की ग्लानि देखकर उसके संरक्षणार्थ, क्षीरसागर से, श्री लक्ष्मीदेवी के साथ का शयन छोड़कर अयोध्या मे श्रीराम बनकर आये। उसके बाद भी श्रीलक्ष्मी उनसे विलग नही हुई थीं। वियोग न सह सकनेवाली ऐसी देवी श्रीराम के इस कथन को कैसे सत्य मान सकेंगी कि 'मै तुमसे अलग जा रहा हूँ' ? । ५१७-

❀ अन्न तन्मैय ळैयनु मन्नयुम्, शॉन्न शॅय्यत् तुणिन्ददु तूयदे
ऍन्नै यॅन्नै यिरुत्तियॅन् ऱायॅन्ऱाळ्, उन्न वुन्न वुयिरुमि ळानिन्ऱाळ् 518

अन्न तन्मैयळ्–वैसी प्रकृति वाली ने; ऐयनुम् अन्नैयुम्–पिता और माता का; चॉन्न–कहा; चॅय्य तुणिन्ततु–करने को ठाना (आपने); तूयते–वह पवित्र (और श्लाघ्य) है; ऍन्नै ऍन्नै इरुत्ति–पर क्यों मुझे रहो; ऍन्ऱाय्–कहते है; ऍन्ऱाळ्–पूछा; उन्न उन्न–(वियोग की बात) ज्यो-ज्यों सोचतीं; उयिर् उमिळा निन्ऱाळ्–त्यों-त्यों प्राण निकालती-सी रहीं। ५१८

वैसी श्री सीताजी ने प्रभु से कहा कि आपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने का जो निश्चय किया है, वह अवश्यमेव पवित्र आचरण है। पर आप मुझे क्यों ठहर जाने को कह रहे हैं ? ज्यों-ज्यों वह उनकी बात पर सोचतीं त्यों-त्यों उनके प्राण निकलने-से लगते थे। ५१८

वल्ल रक्करिन् माल्वरै मेल्विळुन्, दल्ल रक्कि नुरुक्कळऱ् काट्टदरक्
कल्ल रक्कुङ् गडुमय वल्लनिन्, शिल्ल रक्कुण्ड शेवडिप् पोदॅन्ऱान् 519

निन्–तुम्हारे; चिल्–छोटे; अरक्कु उण्ट–महावर लगे; चे अटि पोतु–लाल चरण कमल; वल् अरक्करिन्–सबल राक्षसों का; माल् वरै मेल् विळुन्तु–बड़े पर्वतों पर पड़कर; अल्–रात को भी; अरक्किन् उरुक्कु–लाख की तरह पिघलाने वाली; अळल्–गर्मी वाले; काटु अतर्—वन-मार्ग में; कल् अरक्कुम्–कंकड़ों का चुभना सहन करने योग्य; कटुमैय अल्ल–कठोर नहीं है; ऍन्ऱान्–कहा। ५१९

श्रीराम ने समझाया कि देखो। वन में बलवान राक्षस वास कर रहे हैं। हमेशा गर्मी लगी रहेगी। पर्वतों पर पड़कर पत्थर को लाख

की तरह पिघलानेवाली गर्मी होगी वह। ऐसे वन के मार्गों में चुभते हुए कंकड़ों पर चलने योग्य क्षमता तुम्हारे छोटे, लाक्षारस-लगे कोमल पैर नहीं रखते। ५१९

❀ परिवि इन्द मनत्तॊडु पऱ्ऱिला, दॊरुवु हिन्ऱनै यूऴि यरुक्कनुम्
ऍरियु मॆन्बन याण्डय वीण्डुनिन्, पिरिवि नुञ्जुडु मोपॆरुङ् काडॆन्ऱाळ् 520

पऱ्ऱु इलातु–(मुझ पर) प्रेमरहित; परिवु इकन्त–दयाहीन; मनत्तॊटु–मन के साथ; ऒरुवुकिन्ऱनै–मुझे त्यागते है; ऊऴि अरुक्कनुम्–प्रलयकाल का सूर्य और; ऊऴि ऍरियुम्–प्रलयाग्नि; ऍन्पन–संज्ञित वे भी; याण्टैय–कहाँ के; ईण्टु निन् पिरिविनुम्–इधर आपसे वियोग से अधिक; पॆरु काटु–बड़ा वन; चुटुमो–मुझे जला सकेगा; ऍन्ऱाळ्–पूछा। ५२०

देवी ने उत्तर दिया— आप मुझ पर प्रेम नहीं रखते। दया भी नहीं करते। मुझे छोड़ जाना चाहते है। इसके सामने प्रलय-कालीन सूर्य और अग्नि भी गर्मी में कहाँ रहेंगे ? आप जिस वन की गर्मी का बयान कर रहे है वह विशाल वन आपके वियोग से अधिक जला (ताप दे) सकता है क्या ? । ५२०

❀ अण्ण लल्नशॊऱ् केट्टन नन्ऱियुम्, उण्णि वन्द करुत्तु मुणर्न्दनन्
कण्णि नीर्क्कडऱ् कैविड नेर्हिलन्, ऍण्णि निन्ऱन नॆन्शॆयऱ् पाऱ्ऱॆना 521

अण्णल्–प्रभु श्रीराम ने; अन्न चॊल्–वह वचन; केट्टनन्–सुना; अन्ऱियुम्–अलावा; उळ् निवन्त–उनके मन में उभरा रहा; करुत्तुम् उणर्न्तनन्–इरादा भी पहचाना; कण्णिन् नीर् कटल्—अश्रु-सागर में; कै विट नेर्किलन्–हाथ छोड़ना नहीं चाहा; ऍन् चॆयल् पाऱ्ऱु ऍन्ना–क्या करना चाहिए, यह; ऍण्णि निन्ऱनन्–सोचते खड़े रहे। ५२१

श्रीराम ने सीताजी का कथन सुना और उनका मन समझ लिया। वे उन्हें अश्रु-सागर मे हाथ (साथ) छोड़कर जाना नही चाहते थे। अब क्या किया जा सकता है ? —इस पर सोचते रहे। ५२१

❀ अनैय वेलै यहमनै यॆय्दिनळ्, पुनैयुञ् जीरै तुणिन्दु पुनैन्दनळ्
निनैयुम् वळ्ळल्पिन् वन्दय निन्ऱनळ्, पनैयि नीळ्करम् पऱ्ऱिय कैयिनाळ् 522

अनैय वेलै–उसी समय; अकम् मनै ऍय्तिनळ्–अन्तःपुर गईं; पुनैयुम् चीरै–पहनने योग्य वल्कल; तुणिन्तु पुनैन्तनळ्–निश्चय के साथ पहन लिया; निनैयुम् वळ्ळल् पिन् वन्तु–सोचते जो रहे, उनके पीछे आकर; पनैयिन् नीळ् करम्–तालवृक्ष से अधिक लम्बे हाथ को; पऱ्ऱिय कैयिनाळ्–अपने हाथ से पकड़कर; अयल् निन्ऱनळ्–पार्श्व में खड़ी रहीं। ५२२

तब तक सीताजी अन्तःपुर में गईं और दृढ़-चित्त हो पति के अनुकूल वल्कल पहने हुए आई और श्रीराम के पीछे पास खड़ी हुई। उन्होंने

श्रीराम का तालवृक्ष-सम लम्बा हाथ अपने हाथ से पकड़ लिया (जाने को तैयार)। ५२२

❀ एऴै तन्शॆयल् कण्डवर् यावरुम्, वीऴ्‌ मण्णिडै वीऴ्न्दनर् वीन्दिलर्
वाऴु नाऴुळ वंन्ऱबिन् माऴ्वरो, ऊऴि पेरिनु मुय्हुन रुय्वरे 523

एऴै तन् चॆयल्–देवी का यह कार्य; कण्टवर् यावरुम्–जिन्होंने देखा, वे सभी; वीऴु मण् इटै वीऴ्न्तनर्–मरकर गिरने योग्य धरती पर गिर पड़े; वीन्तिलर्–पर मरे नहीं; वाऴुम् नाऴ् उळ–आयु शेष रही; ऍन्ऱ पिन्–तो उसके बाद; माऴ्वरो–मरेंगे क्या: ऊऴि पेरितुम्–युग बदल जाय तो भी; उय्कुनर्–जिनको जीना है; उय्वरे–जीते ही रहेंगे। ५२३

देवी का कृत्य देखकर स्त्री-पुरुष सभी दुखाभिभूत हो गये। वे मरे-से भूमि पर गिरे। पर मरे नहीं क्योंकि आयु शेष थी। युगांत भी हो जाय तो जिनकी आयु शेष है और जिनको जीना है वे जीवित ही रहेंगे। ५२३

❀ तायर् तव्वयर् तन्ऱुणैच् चेडियर्, आय मन्निय वन्विन रॆन्ऱिवर्
तीयिन् मूऴ्हिन रीत्तनर् शॆङ्गणान्, तूय तैयलै नोक्किनन् शॊल्लुवान् 524

तायर्–माताएँ (रिश्ते, सेवा या उम्र में मातागण्य स्त्रियाँ); तव्वैयर्–बड़ी बहनें; तन् तुणै चेटियर्–साथिन चेरियाँ; आयम्–खेल की सखियाँ; मन्निय अन्पिनर्–गहरा प्रेम रखनेवाली अन्य; ऍन्ऱ इवर्–ये सब; तीयिल् मूऴ्किनर् ऑलुत्तनर्–आग में मग्न हो गई सी हो गईं; चॆम् कण्णान्–अरुणाक्ष; तूय तैयलै नोक्कितन्–पवित्र देवी को देखकर; चॊल्लुवान्–बोले। ५२४

देवी की मातासम स्त्रियाँ, बड़ी बहनेंसम स्त्रियाँ, साथिन चेरियाँ, खेल की सखियाँ और अन्य प्रेम रखनेवाली स्त्रियाँ —सभी आग में कूदी जैसे संकटग्रस्त हो गई। अरुणाक्ष श्रीराम उज्ज्वल चरित्र वाली पवित्र देवी से बोले। ५२४

❀ मुल्लै युङ्गडन् मुत्तु मॆदिर्प्पिनुम्, वॆल्लुम् वॆण्णहै याय्विऴै वुन्नुवाय्
अल्लै पोद वमैन्दनै यादलिन्, ऍल्लै तीर्न्द विडर्दरु वायॆन्ऱान् 525

मुल्लैयुम्–चमेली; कटल् मुत्तुम्–समुद्र के श्रेष्ठ मोती; ऍतिर्प्पिनुम्–टकराएँगे तो भी; वॆल्लुम्–उनको जीतनेवाले; वॆळ् नकैयाय्–श्वेत दन्तवती; विऴैवु उन्नुवाय् अल्लै–जो होगा वह सोचती नहीं; पोत अमैन्तनै आतलिन्–जाने का निश्चय कर चुकी हो, इसलिए; ऍल्लै तीर्न्त इटर् तरुवाय्–असीम संकट दिलाओगी; ऍन्ऱान्–कहा। ५२५

चमेली के फूल और समुद्रज मोती को भी हरानेवाले श्वेत दाँतों से शोभित प्रिये, सीता! तुम अपने कार्य का नतीजा नहीं समझतीं। मेरे साथ आने का निश्चय कर लिया —इससे तुम मुझे अपार संकट दिलाओगी। ५२५

❀ कोऱ्ऱ वन्नदु कूऱलुङ् गोहिलम्, शॅऱ्ऱ दन्न कुदलयळ् शोरुवाळ्
उऱ्ऱु निन्ऱ तुयरमि दॊन्ऱुमे, ॲऱ्ऱु ऱन्दपि निन्वङ्गॊ लामॆन्ऱाळ् 526

कॊऱ्ऱवन् अतु कूऱलुम्–राजा राम के वह कहने पर; कोकिलम् चॅऱ्ऱतु अन्न–कोकिल को जीतती-सी; कुतलैयळ्–मधुर तोतली बोली वाली; चीरुवाळ्–कुपित होकर; उऱ्ऱु निन्ऱ तुयरम्–आपको लगा रहा दुख; इतु ऑन्ऱुमे–यही एक है; ॲन् तुऱन्त पिन्–मुझे त्यागने के बाद; इन्पम् आम् कॊल्–सुख ही सुख होगा क्या; ॲन्ऱाळ्–कहा। ५२६

विजयी राजा राम ने जब यह कहा तो कोकिलबयनी सीताजी क्रुद्ध होकर बोलीं कि ऐसी बात ! यही एक आपका संकट होगा क्या ? यानी आप मुझे त्याग देंगे तो आपको सुख ही सुख होगा ! यही है न ? । ५२६

❀ पिऱ्दॊर् माऱ्ऱम् बॅरुन्दहै पेशलन्, मरुहि वीऴ्न्दळ मैन्दरु मादरुम्
शॅरुविन् वीऴ्न्द नॅडुन्दॅरुच् चॅन्ऱनन्, नॅरिपॅ ऱामै यरिदिनि नीङ्गुवान् 527

पॅरुन्तकै–उदार श्रीराम; पिऱितु ओर् माऱ्ऱम्–उत्तर में कोई वाक्य; पेचलन्–नहीं बोले; मैन्तरुम् मातरुम्–पुरुष और स्त्रियाँ; मरुकि वीऴ्न्तु–व्याकुल होकर भूमि पर गिरकर रोये, इसलिए; चॅरुविन् वीऴ्न्त–(सिंचे) खेत के समान जो बन गया, उस; नॅटु तॅरु चॅन्ऱनन्–उस लम्बे मार्ग में जाने लगे तो; नॅरि पॅऱामै–मार्ग न पाने से; अरितिनिन् नीङ्कुवान्–सायास तय करते हुए जाने लगे। ५२७

श्रीराम आगे उत्तर में कुछ कह नहीं सके। वे उनको साथ लेकर जाने लगे। पुरुष और स्त्री सब गिरकर रोने लगे। उनके अश्रु के कारण मार्ग सिंचित खेत के समान हो गया। अधिक भीड़ के कारण मार्ग रुक जाता था। श्रीराम सायास आगे बढ़ते चले। ५२७

❀ शीरै शुऱ्ऱित् तिरुमहळ् पिन्शॅल, मूरि विऱ्कै यिळैयवन् मुन्शॅलक्
कारै यॊत्तवन् पोम्बडि कण्डवव्, वूरै युऱ्ऱ दुणर्त्तव् मॊण्णुमो 528

तिरु मकळ्–भगवती; चीरै चुऱ्ऱि–वल्कल पहने हुए; पिन् चॅल–अनुगमन करती गई; मूरि विल् कै–बलवान धनुर्हस्त; इळैयवन्–अनुज लक्ष्मण; मुन् चॅल–आगे गये; कारै ऑत्तवन्–मेघश्याम; पोम् पटि–(उनके बीच) गये, वह प्रकार; कण्ट–जिसने देखा; अ ऊरै उऱ्ऱतु–उस नगर का जो हुआ; उणर्त्तवुम् ऑण्णुमो–(वह दुख) वर्णित करना सम्भव है क्या। ५२८

वल्कल पहने हुए सीताजी श्रीराम के पीछे जा रही थी। हाथ में बलवान धनुष उठाए हुए लक्ष्मण उनके आगे जा रहे थे। बीच में श्रीराम के जाने का प्रकार देखकर वह नगर कैसे दुख में पड़ा, उसका वर्णन करना हमारे लिए सम्भव है क्या ? (नहीं।) । ५२८

❀ आरुम् बिन्न रळुदव लित्तिलर्, शोरुज् जिन्दयर् यावरुज् जूऴ्न्दनर्
वीरन् मुन्वन मेवुदुम् यामॆन्ऱाप्, पोरॊन् ऱॊल्लॊलि कैमिहप् पोयिनार् 529

पिन्नर्–उसके बाद; आरुम् अळुतु अवलित्तिलर्–रोते हुए दयनीय नहीं बने; चोरुम् चिन्तैयर् यावरुम्–खिन्नमन सभी; चूळ्न्ततर्–एकत्र हुए; याम् वीरन् मुन्–हम, वीर के पहले ही; वनम् मेवुतुम्–वन जाएँगे; ऍना–कहते हुए; पोर् ऑन्रु ऑल् ऑलि–युद्ध में उठता-सा जोर का शोर; कैमिक–अधिक मचाते हुए; पोयिनार्–गये। ५२९

इतना हो जाने के बाद लोग रोते-कलपते दयनीय बने रहने के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए दुखाक्रान्त सभी एकत्र हुए; निर्णय किया कि हम श्री वीर राघव के जाने से पहले ही वन चले जायँगे। और युद्ध का-सा जोर का शोर करते हुए त्वरित गति से चल पड़े। ५२९

❀ तादै वाशल् कुरुहितन् शार्दलुम्, कोदै वेलवन् ऱायरैक् कुम्बिडा
आदि मन्ननै यार्रुमि नीरॅन्ऱान्, माद रारुम् विळुन्दु मयङ्गिनार् 530

कोतै वेलवन्–माला से अलंकृत भालाधारी श्रीराम; तातै वाचल् कुरुकितन्–पिता के महल के द्वार के निकट; चार्तलुम्–आने पर; तायरै कुम्पिटा–माताओं को नमस्कार करके; नीर्–आप; आति मन्ननै–प्रधान राजा को; आर्रुमिन्–धीरज बँधाइए; ऍन्ऱान्–कहा; मातरारुम्–माताएँ भी; विळुन्तु मयङ्किनार्–गिरकर मूच्छित हुई। ५३०

श्रीराम जो माला से अलंकृत भालाधारी थे, चलते-चलते अपने पिता के महल के द्वार के निकट पहुँचे। तब उन्होंने अपनी माताओं को नमस्कार करके उनसे विनय की कि आप अपने पति चक्रवर्ती को सांत्वना दीजिए। यह सुनकर माताएँ बेहोश होकर गिर गईं। ५३०

❀ वाळ्त्ति नार्दम् महनै मरुहियै, एत्ति नारिळै योनै वळ्त्तिनार्
कात्तु नल्हुमिन् रॅय्वदङ् गाळॅन्ऱार्, नात्त ळुम्ब वरर्रि नडुङ्गुवार् 531

ना तळुम्प–जिह्वों पर घट्ठा पड़ जाय, ऐसा; अरर्रि–प्रलाप करके; नटुङ्कुवार्–काँपनेवाली माताओं ने; तम् मकनै–अपने पुत्र को; वाळ्त्तिनार्–आशीर्वाद दिया; मरुकियै एत्तिनार्–वधू की प्रशंसा की; इळैयोनै–अनुज को; वळुत्तिनार्–साधुवाद दिया; तॅय्वतङ्काळ्–देवताओ; कात्तु नल्कुमिन्–उनकी रक्षा करने की कृपा कीजिए; ऍन्ऱार्–(यह प्रार्थना) कही। ५३१

वे फिर सँभली। "जीभों में घट्ठा पड़ जाए" —इतना विलाप करती हुई रोईं। उन्होंने श्रीराम की प्रशंसा की; वधू सीता को आशीर्वाद दिया और लक्ष्मण को साधुवाद दिया। उन्होंने देवताओं से विनय की कि इन्हें आप रक्षा प्रदान करने की कृपा कीजिए। ५३१

❀ अन्न ताय ररिदिऱ् पिरिन्दपिन्, मुन्नर् निन्ऱ मुनिवनैक् कैदॊळुात्
तन्न दारुयिर्त् तम्बियुन् दामरैप्, पॊन्नुन् दानुमोर् तेर्मिशैप् पोयिनान् 532

अन्न तायर्–वैसी माताएँ; अरितिल् पिरिन्त पिन्–बहुत कष्ट के साथ अलग

हुईं, पश्चात्; मुन्नर् निन्र-अपने सामने स्थित; मुनिवर्नै-महर्षि का; कै तॊऴा-हाथ-जोड़कर नमस्कार करके; तन्नतु अरु उयिर् तम्पियुम्-अपने प्यारे प्राणसम अनुज; तामरै पॊन्नुम्-पंकजा देवी; तानुम्-और स्वयं; ओर् तेर् मिचै पोयिनान्-एक रथ पर (सवार होकर) चले। ५३२

वे बहुत कष्ट के साथ श्रीराम से अलग हुईं। तब श्रीराम अपने सामने स्थित वसिष्ठ महर्षि को नमस्कार करके अपने प्राणसम अनुज और पंकजा श्री लक्ष्मीदेवी के साथ सुमंत्र से लाये गये एक रथ पर आरूढ़ होकर चल पड़े। ५३२

5. तैल माट्टु पडलम् (तैल निमज्जन पटल)

❀ एविय कुरिशिल्पिन् याव रेहिलार्, माविय ळानैयिन् मन्नै नीङ्गलात्
तेवियर् तविर्न्दनर् दॆय्व मानहर्, ओविय मौऴिन्दन वुयिरि लामयाल् 533

मा इयल् तानैयिन्-बड़ी प्रकीर्तित सेना के स्वामी; मन्नै-चक्रवर्ती को; नीङ्क अल्लात-जो छोड़ नहीं जा सकीं; तेवियर् तविर्न्तनर्-वे पत्नियाँ रह गईं; तॆय्वम् मा नकर्-दिव्य विशाल नगर के; ओवियम्-चित्र; उयिर् इलामैयाल्-प्राणहीन रहने से; ऒऴिन्तन-अपवाद हुए; एविय कुरिचिल् पिन्-(वनगमन की) आज्ञा-प्राप्त श्रीराम के पीछे; एकिलार् यावर्-गये कौन नहीं। ५३३

पिता की आज्ञा से वन जानेवाले श्रीराम के साथ कौन-कौन गये ? बहुत यशप्राप्त सेना के स्वामी चक्रवर्ती को जो छोड़ नहीं जा सकती थीं वे उनकी रानियाँ नहीं गईं। फिर उस दिव्य नगर के चित्र नहीं गये क्योंकि वे प्राणवंत नहीं थे। इनको छोड़ कौन थे जो उनके पीछे नहीं गये ? । ५३३

कैहणीर् परन्दुका ळोडरक् कण्णुहुम्, वॆय्यनीर् वॆळ्ळत्तु मॆळ्ळच् चेऱलाल्
उय्यवे ऴुलहुमान् ळान नीरुलाम्, दॆय्वमी नौत्तदच् चॆम्बॊर् ऱेररो 534

अ चॆम् पॊन् तेर्-वह लाल स्वर्ण का रथ; कैकळ्-पार्श्वों में; नीर परन्तु-जल फैलकर; काल् तॊटर-पहियों का पीछा करे, ऐसा; कण् उकुम्-आँखों से बहनेवाला; वॆय्य नीर् वॆळ्ळत्तु-गरम अश्रुप्रवाह में; मॆळ्ळ चेऱलाल्-धीरे-धीरे गया, इसलिए; एऴु उलकुम् ऒन्ऱु आन नीर्-सातों लोकों को अपने अन्दर समा लेनेवाले उस (युगान्त) जल-प्लावन में; उय्य-लोकोद्धरणार्थ; उलाम्-जो घूमता फिरता था; तॆय्वम् मीन् ऒत्तत्तु-उस दिव्य मत्स्य के समान लगता था। ५३४

जब श्रीराम का उत्तमस्वर्ण-रचित रथ चला, तब लोग अधिक रोये। उनके अश्रुजल का विपुल विस्तार हो गया। उसके बीच रथ उस मत्स्य के समान (जो विष्णुदेव का अवतार था) धीरे-धीरे चल रहा था, जो सातों

लोकों को अपने अन्दर समा लेकर फैले हुए प्रलय-जल पर जीवों का उद्धार करते हुए संचार करता था। ५३४

❀ मीन्पुहल् पॅरुवॅयि लॉदुङ्ग मेदियो, डान्पुहक् कदिरव नत्तम् बुक्कनन्
कान्पुहक् काण्गिले नॅन्रु कल्लदर्, तान्पुह मुडुहिन नॅन्नुन् दन्मयान् 535

कतिरवन्–सूर्य; कान् पुक काण्किलेन्–(श्रीराम को) वन जाते न देख सकूँगा; ऍन्रु–सोचकर; तान् कल् अतर् पुक–खुद पर्वत-मार्ग में जाने के लिए; मुट्किनन् ऍन्नुम् तन्मैयान्–त्वरित रहा जैसे; मीन् पुकल् पॅरु–नक्षत्र प्रकट होने देते हुए; वॅयिल् ऑतुङ्क–धूप को छिपने देते हुए; मेतियोटु आन्–भैंसों के साथ गायों के; पुक–(चरागाह से लौटकर) नगर में प्रवेश करते; अत्तम् पुक्कनन्–अस्तगिरि पर पहुँच गया। ५३५

सूर्य अस्ताचल पर जाकर छिप गया मानो श्रीराम का वन जाना देख नहीं सकता हो और वह खुद पर्वतपूर्ण जंगल के रास्ते में जल्दी जाना चाहता हो। तब आकाश में तारे उदित हुए। धूप छिप गई। भैंसें और गायें चरागाहों से नगर के अन्दर आ गईं। ५३५

पहुत्तवान् मदिहॉडु पदुमत् तण्णले, वहुत्तवा णुदलियर् वदन राशिबोल्
उहुत्तकण् णोरिन वॉळियु नीङ्गिड, मुहिळ्त्तळ हिळन्दन मुळरि यीट्टमे 536

पकुत्त वान् मति कॉटु–अर्धचन्द्र से; पतुमत्तु अण्णले–कमलासन ने, जो स्वयं; वकुत्त–रचाया; वाळ् नुतलियर्–उज्ज्वल ललाट वालियों की; वतनम् राचि पोल्–वदनराशियों के समान; मुळरि ईट्टम्–कमल समूह; उकुत्त कण् नीरिन–अश्रु बहाते हुए; ऑळियुम् नीङ्किट–प्रभा-विहीन होकर; मुकिळ्त्तु–बन्द होकर; अळकु इळन्तन–आकर्षण खो गये। ५३६

कमल के पुष्प अयोध्या नगर की स्त्रियों के समान जिनके ललाटों को ब्रह्माजी ने अर्द्धचन्द्र के आधार पर (या चन्द्र के खण्डों को लेकर) बनाया था, आँसू (शहद) बहाते हुए निष्प्रभ होकर मुकुलित हो गये। ("कण्णीर्" में श्लेष है। कण् नीर्— आँसू; कळ् नीर्— मधु का जल।) । ५३६

❀ अन्दियिन् वॅयिलॉळि यळिय वानहम्, नन्दलिल् केहयन् पयन्द नङ्गैतन्
मन्दरै युरैयॅनुङ् गडुविन् मट्किय, शिन्दयि निरुण्डदु शॆम्मै नीङ्गिये 537

अन्तियिन् वॅयिल् ऑळि–सायंकाल की धूप के; अळिय–छिप जाने से; वान् अकम्–आकाश; मन्तरै उरै ऍनुम्–मन्थरा का वचन रूपी; कटुविन् मट्किय–विष के कारण मन्द हुए; नन्तल् इल्–दोषहीन; केकयन् पयन्त नङ्कै–केकय की पुत्री; तन् चिन्तैयिन्–के मन के समान; चॅम्मै नीङ्कि–(सिधाई) लाली से छूटकर; इरुण्टतु–अन्धकार से भर गया। ५३७

सन्ध्याकालीन धूप का प्रकाश भी चला गया। तब आकाश निर्दोष

केकयराज की पुत्री कैकेयी के मन के समान जो मंथरा के विषवाक्य से मैला होकर सिधाई छोड़कर कलुषित हो गया था, लालिमा छोड़कर अँधेरे से आवृत हो गया। (चॆम्मै— लालिमा, सिधाई।)। ५३७

परन्दुमी नरुम्विय पशलै वानहम्
अरन्दयिन् मुनिवर नरैन्द शावत्ताल्
निरन्दर मिमैप्पिला नॆडुङ्ग णीण्डिय
पुरन्दर नुरुवॆनप् पॊलिन्द दॆङ्गुमे 538

मीत् परन्तु अरुम्पिय–नक्षत्रों से व्याप्त; पचलै वान् अकम्–ताजे रंग के आकाश भर में; अरन्तै इल् मुनिवरन्–शोक-रहित मुनि (गौतम) के; अऱैन्त चापत्ताल्–कहे (दिये) शाप से; निरन्तरम्–निरन्तर; इमैप्पु इला–अपलक; नॆट्टु कण् ईट्टिय–लम्बी आँखों से भरे; पुरन्तरन् उरु ऍन–पुरन्दर के शरीर के समान; पॊलिन्तत्तु–दिखा। ५३८

आकाश में सब जगह नक्षत्र उदित हो गये। तब वह पुरन्दर के शरीर के समान दिखा जिस पर दुख से अप्रभावित मन वाले गौतम ऋषि के शाप के फलस्वरूप अपलक लम्बी आँखों से पूर्ण था। ५३८

❀ तिरुनहर्क् कोशनै यिरण्डु शॆन्ऱोरु
विरैशॆऱि शोलैयै विरैवि नॆय्दिनान्
इरदनिन् ऱिऴिन्दुवि निराम निन्ऱुणै
उरैशॆऱि मुऩिवरो डुऱैयुङ् गालये 539

इरामन्–श्रीराम; विरैविन्–जल्दी; तिरुनकर्क्कु–उस श्री-युक्त पुरी को; ओचनै इरण्टु चॆन्ऱु–दो योजन दूर जाकर; विरै चॆऱि–(पुष्प के) सुवासपूर्ण; ओरु चोलैयै–एक उपवन में; ऍय्तिनान्–पहुँचे; पिन्–पश्चात्; इरतम् निन्ऱु–रथ से; इऴिन्तु–उतरकर; इन् तुणै–सत्संगी बनकर; उरै चॆऱि–उपदेश के वचन कहनेवाले; मुनिवरोटु–मुनियों के साथ; उऱैयुम् कालै–ठहरे, तब। ५३९

श्रीराम आगे बढ़ते चले। अयोध्या के श्री-नगर से दो योजन दूर जाकर एक पुष्प-भरे उपवन में पहुँचे। वहाँ रथ से उतरकर वहाँ के ऋषि-मुनियों के सत्संग में उनके उपदेश सुनते हुए ठहरे। तब—। ५३९

❀ वट्टमो रोशनै वळैविऱ् रायनडु
वॆट्टनै यिडवुमो रिडमि लावहे
पुट्टहु शोलैयिन् पुऱत्तैच् चूऴ्न्दुताम्
विट्टिलर् कुरुशिलै वेन्दर् वेऱुळोर् 540

वेन्तर्–राजा लोग; वेऱु उळोर् ताम्–अन्य लोग सभी; वट्टम्–चारों ओर; ओर् ओचनै वळैविऱ्ऱु आय्–एक योजन का विस्तार बनकर; नटु–बीच में; ऍळ् तनै इटवुम्–तिल रखने के लिए भी; ओर् इटम् इला वकै–स्थान न रहा, ऐसा;

पुळ् तकु–खगों से पूर्ण; चोलैयिन् पुऱत्तै चूऴ्न्तु–उपवन के चारों ओर घेरकर; कुरुचिलै विट्टिलर्–युवराज के पास से हटे नहीं। ५४०

राजा और अन्य लोग एक योजन के विस्तृत भू-भाग में ऐसे भर गये कि तिल रखने को भी स्थान नही रह गया। वे खगकुल-कलकल-कलित उस उपवन के चारों ओर घेरे रहे और श्रीराम से अलग नहीं हुए। ५४०

❀ कुयिन्ऱ्त्त कुलमणि नदियिन् कूलत्तिल्
पयिन्ऱुयर् वालुहप् परप्पिऱ् पैम्बुलिल्
वयिन्ऱोरुम् वैहित्ता रोन्ऱुम् वाय्मडुत्
तयिन्ऱिलर् तुयिन्ऱिल रळुदु माळ्हिनार् 541

कुलम् मणि कुयिन्ऱ अन्न–श्रेष्ठ रत्नराशियाँ जटित हों, ऐसा; नतियिन् कूलत्तिल्–नदी के कूलों पर; पयिन्ऱु उयर् वालुकम् परप्पिल्–भरे, ऊँचे बालू के मैदानों पर; पचुमै पुल्लिल्–हरी घास पर; वयिन् तोऱुम्–स्थान-स्थान पर; वैकित्तार्–रहकर; ओन्ऱुम् वाय् मट्टुत्तु–कुछ भी मुख में रखकर; अयिन्ऱु इलर्–बिना खाये; तुयिन्ऱु इलर्–बिना सोये; अळुतु माळ्किनार्–रोये और व्यग्र हुए। ५४१

लोग (तमसा) नदी के कूलों पर, बालू के ऊँचे टीलों पर, हरी घास के मैदानों पर और स्थान-स्थान पर उन पर जड़ित श्रेष्ठ रत्नों की राशियों के समान ठहरे रहे। उन्होंने अपने मुख में (खाने के लिए) कुछ नहीं रखा— भूखे ही रहकर वे रोये और बिना सोये पड़े रहे। ५४१

❀ वाविविरि तामरैयिन् मामलरिन् वाशक्
काविविरि नाण्मलर् मुहिळ्त्तनैय कण्णार्
आविविरि पानुरैयि नाडैयणै याह
नाविविरि कूऴैयिळ नव्वियर् तुयिन्ऱार् 542

वावि विरि–वापियों में खिले हुए; तामरैयिन् मा मलरिन्–कमल के श्रेष्ठ पुष्पों में; वाचम् विरि–सुवास बिखेरनेवाले; कावि नाळ् मलर्–नील कुवलय के सद्य-विकसित फल; मुकिळ्त्त अनैय–खिले हों, जैसे; कण्णार्–ऐसी आँखों वाली; नावि विरि कूऴै–कस्तूरी का वासयुक्त केश वाली; इळ नव्वियर्—बालमृगी-सी तरुणियाँ; आवि विरि—धुआँ-सह; पाल् नुरैयिन् आटै–दूध के फेन के समान (महीन) वस्त्रों को; अणै आक–बिछावन बनाकर; तुयिन्ऱार्–सोईं। ५४२

(बहुत देर के बाद किसी तरह उनको नींद आ गई। तब निद्रा-मग्न उनका वर्णन किया जाता है।) वापियों पर खिले कमलों पर नील कुवलय खिले हों ऐसे लगनेवाले मुखों और आँखों वाली बालमृगी-सी स्त्रियाँ, जिनके केश से कस्तूरी की सुगन्धि छूट रही थी सुगन्धित धुएँ सहित दूध के फेन के समान वस्त्र को ही बिछावन बनाकर सो रहीं। ५४२

पॅरुम्बहल्	वरुन्दिनर्	पिऱङ्गुमलै	तॅङ्गिन्
कुरुम्बैहळ्	पौरुज्जॅविलि	मङ्गयर्	कुऱङ्गिल्
अरुम्बनैय	कौङ्गययि	लम्वनैय	वुण्कण्
करुम्बनैय	शॅञ्जौनविल्	कन्नियर्	तुयिन्ऱार् 543

अरुम्पु अनैय कौङ्कै–(सेमर) फली के समान स्तन; अयिल् अम्पु अनैय–तीक्ष्ण वाण के समान; उण् कण्–काजल-लगी आँखों वाली; करुम्पु अनैय–इक्षु (-रस)-तुल्य; चॅम् चौल् नविल्–मधुरभाषी; कन्नियर्–वालाएँ; पॅरु पकल् वरुन्तिनर्–लम्बे दिन के समय में श्रम उठाकर; पिऱङ्कुम् मुलै–जिनके उभरे स्तन; तॅङ्किन् कुरुम्पैकळ् पौरुम्–नारियल के कच्चे फलों के समान थे; चॅविलि मङ्कैयर्–उन धाइयो के; कुऱङ्किल्–ऊरुओं पर; तुयिन्ऱार्–(सिर रखे) सोईं। ५४३

सेमरकली के समान पयोधरों और तीक्ष्ण भाले के समान आँखों वाली, इक्षुरस-मधुरभाषिणी कन्याएँ दिन भर चलते आने से श्रांत होकर नारियल के कच्चे फलों के समान कुचों वाली धाइयों के ऊरुओं पर सिर रखकर सोयी पड़ी थी। ५४३

पूवह	निऱैन्दपुळि	नत्तिडर्ह	डोऱुम्
मावहिरि	नुण्गणर्	मडप्पिडियिन्	वैहच्
चेवह	मणैन्दशिऱु	हट्करिह	ळॅन्नत्
तूवयि	लिरुन्दमऱ	मन्नर्ह	डुयिन्ऱार् 544

पू अकम् निरैन्त–फूलों से भरे; पुळित्तम् तिटर्कळ् तोऱुम्–नदियों के पुलिनों के टीलो पर; मा वकिरिन् उण् कण्णर्–टिकोरे की फाँक के समान और काजल-लगी आँखों वाली स्त्रियां; मटम् पिटियिन् वैक–छोटी हथिनियों के समान सोईं; तू अयिल् इरुन्त–मांसयुक्त भाले लिये हुए; मऱम् मन्नर्कळ्–वीर राजा लोग; चेवकम् अणैन्त–निद्रा-रत; चिरु कण् करिकळ् अन्न–छोटी आँखों वाले हाथियों के समान; तुयिन्ऱार्–सोये। ५४४

नदी के बीच पुलिन थे जिनमें विकसित पुष्प-सह तरु, लताएँ आदि थीं। उन पर टिकोरे की फाँक-सी और काजल-लगी आँखों वाली स्त्रियाँ (राजकुल की स्त्रियाँ) छोटी हथिनियों के समान सो रही थीं। उनके पास मांसलिप्त भालों वाले वीर राजा लोग छोटी आँखों के गजों के समान सो रहे थे। ५४४

तहवुमिहु	तवमुमिवै	तळुववुयिर्	कौळ्ळुनर्
मुहमुमव	ररुळ्नुहर्	हिलर्तुयरिन्	मूळ्हि
अहवुमिळ	मयिल्हळुयि	रलशियन	वन्नैयार्
महवुमुलै	वरुडविळ	महळिर्ह	डुयिन्ऱार् 545

इळ मकळिर्कळ्–छोटी उम्र की स्त्रियाँ; तकवुम्–निष्पक्ष व्यवहार; मिकु

तवमुम्–और अधिक तपस्या; इवै तळुव–इनसे युक्त; उयर्–श्रेष्ठ; कॉळुनर् मुकमुम्–पतियों का मुख (उनकी कृपादृष्टि); अवर् अरुळुम्–उनकी कृपा (सहानुभूति); नुकर्किलर्–विना भोगे; तुयरिल् मूळ्कि–दुख में मग्न; मकवु मुलै वरुट–शिशु को स्तन सहलाने देते हुए; उयिर् अलचियन्न–प्राण दुर्बल पड़े; अकवुम् इळ मयिल्कळ् अन्नैयार्–नाचनेवाले छोटी उम्र के मयूरों के समान; तुयिन्ऱार्–थककर सो रहीं। ५४५

कुछ (सन्तानवती) स्त्रियाँ अपने पतियों की, जो श्रेष्ठ रीति से तपस्या के समान अपना गार्हस्थ्य जीवन विताते थे, सहानुभूतिपूर्ण कृपा-दृष्टि और उनके कृपा-वचन का सुख उठा न सकीं। वे इतनी व्याकुल थी। उनके शिशु उनके स्तनों के चूचुकों को पकड़कर घुमा रहे थे। उसकी भी उनको सुध नहीं थी। नाचकर थके हुए मोरों के समान वे श्रांत पड़ी सो रही थीं। ५४५

माहमणि वेदिहैयिन् मादविशॅय् पन्दल्
केहय नॅडुङ्गुल मॅन्नच्चिलर् किडन्दार्
पूहवन मूडुपडु हर्प्पुळिन मुन्ऱिल्
तोहैयिळ वन्ननिरै यिऱ्चिलर् तुयिन्ऱार् 546

चिलर्–कुछ लोग; वेतिकैयिन्–चवूतरों पर; माकम् अणि–आकाश तक ऊँचे, वढ़ी हुई; मातवि चॅय् पन्तल्–माधवी लता के वितान के नीचे; नॅटु केकयम् कुलम् अॅन्न–विशाल मयूरों के समूह के समान; किटन्तार्–पड़े रहे; चिलर्–कुछ (स्त्रियाँ); पूकम् वनमूटु–पूगवन-मध्य; पटुकर्–जलाशयों के निकट; पुळिनम् मुन्ऱिल्–वालू के टीलों पर; तोकै इळ अन्नम् निरैयिल्–पंखों वाले वाल-हंसो की श्रेणी के समान; तुयिन्ऱार्–सोती रहीं। ५४६

वहाँ के उद्यानों में चवूतरे थे। उन पर माधवीलताओं के वितानों के नीचे कुछ स्त्रियाँ विशाल मयूरसमूहों के समान पड़ी रही। कुछ स्त्रियाँ पूगवन-मध्य जलाशयों के पास वालू के टीलों पर हंसों की पंक्ति के समान सो रही थीं। ५४६

❀ चम्वह नरुम्पॉळिल्ह ळिऱ्ऱरुण वञ्जिक्
कॉम्बळ हॊशिन्दन वॅनच्चिलर् कुळैन्दार्
वम्बळवु कॊङ्गयॊडु वालुह वळाहत्
तम्बवळ वल्लिह ळॅन्नच्चिल रशैन्दार् 547

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; चम्पकम् नऱु पॊळिल्कळिल्–सुवासित चम्पकवनों में; तरुणम् वञ्चि कॊम्पु–तरुण पुष्पलताएँ; अळकु ऒचिन्तन–मनोरम रीति से लचकी गिरी हों, जैसे; कुळैन्तार्–मुरझाई पड़ी रहीं; चिलर्–और कुछ; वम्पु अळवु कॊङ्कै यॊटु–अँगियाबद्ध स्तनों के साथ; वालुकम् वळाकत्तु–वालू के मैदानों पर; अम् पवळ वल्लिकळ् अॅन्न–सुन्दर प्रवाल-लताओं के समान; अचैन्तार्–शिथिल पड़ी रहीं। ५४७

कुछ चम्पकवनों में मुरझाई पड़ी सुन्दर पुष्पलताओं के समान क्लेश-तप्त पड़ी रहीं। कुछ अन्य स्त्रियाँ अँगिया-बद्ध स्तनों के साथ बालू के मैदानों पर, सुन्दर प्रवाल-लताओं के समान थकी हुई पड़ी रहीं। ५४७

कुङ्गुम मलैक्कुळिर् पनिक्कुळुमि यॅन्नत्
तुङ्गमुलै यिऱ्ऱुह ळुऱच्चिलर् तुयिन्ऱार्
अङ्गयणै यिऱ्पॊलि वळुङ्ग मुहमॅल्लाम्
पङ्गय मुहिळ्त्तन वॅन्नच्चिलर् पडिन्दार् 548

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; कुङ्कुमम् मलै–कुंकुम-पर्वत पर; कुळिर् पनि–शीतल हिम; कुळुमि ॲन्न–जमा रहा, जैसे; तुङ्कम् मुलैयिल्–तुंग स्तनों पर; तुकळ् उऱ–धूलि जमी रही; तुयिन्ऱार्–इस प्रकार सोईं; चिलर्–अन्य कुछ; मुकम् ॲल्लाम्–मुखों के; मुकिळ्त्तन पङ्कयम् ॲन–मुरझाकर बन्द हुए कमल-पुष्पों के समान; पॊलिवु अळुङ्क–प्रभा के छूटते; अम् कै अणैयिन्–सुन्दर हाथों के तकियों पर; पटिन्तार्–(सिर रखकर) भूमि पर लेटी रहीं। ५४८

कुछ स्त्रियाँ अपने तुंग स्तनों को, कुंकुम-पर्वत पर हिम जमा हो जैसे धूल-धूसरित करती हुई सो रही थीं। कुछ स्त्रियाँ बन्द कमलसम, प्रभाहीन मुखों के साथ अपने हाथों पर, तकिये के समान, सिर रखे सो रही थीं। ५४८

तॊडुत्तकलि डॆच्चिलर् तुवण्डनर् तुयिन्ऱार्
अडुत्तवडै यिऱ्चिल रळिन्दन रयर्न्दार्
उडुत्ततुहिल् शुऱ्ऱॊरु तलैच्चिल रुरैन्दार्
पडुत्तकुळै यिऱ्चिलर्हळ् कण्पडै पयिन्ऱार् 549

चिलर्–कुछ (स्त्रियाँ); तॊटुत्त कल् इटै–पास-पास लगे रहे पत्थरों पर; तुवण्टनर् तुयिन्ऱार्–मुरझाई पड़ी सोती रहीं; चिलर्–कुछ; अटुत्त अटैयिल्–नीचे बिखरे रहे पत्तों पर; अळिन्तनर् अयर्न्तार्–मन मारकर सो रही थीं; चिलर् उटुत्त तुकिल् चुऱ्ऱु–पहने हुए वस्त्र की लपेटों से; ऒरु तलै–एक सिरे पर (दामन पर); उरैन्तार्–सोईं; चिलर्कळ्–कुछ लोग; पटुत्त कुळैयिल्–खुद पत्ते बिछाकर उन पर; कण् पटै पयिन्ऱार्–आँख का उन्मीलन किया। ५४९

कुछ पास-पास लगे पड़े रहे पत्थरों पर चूर होकर पड़ी रहीं। कुछ स्त्रियाँ नीचे बिखरे रहे पत्तों पर क्लांत हो लेटी रहीं। कुछ स्त्रियाँ अपनी कमर पर लपेटी हुई साड़ी के दामन को बिछाकर उस पर सिर रखे सो रही थीं। कुछ स्त्रियों ने खुद पत्ते बिछाये और उन पर लेटकर अपने को भूल गईं। ५४९

❀ एनयरु मिन्नण मुरुङ्गिन रुरुङ्गा
मानवन मन्दिरिशु मन्दिरनै वावॆन्

ऱुनमिल् परुङ्गुण मीरुङ्गुडैय वुन्नाल्
मेनिहळ्व दुण्डवुरै केळॆन्न विळम्बुम् 550

एतैयरुम्–अन्य लोग भी; इन्नतणम्–इस तरह; उऱङ्किनर्–सोये; उऱङ्का मानवतुम्–जो नहीं सोये, वे 'मानव' (मनुकुल-सम्भूत) श्रीराम; मन्तिरि चुमन्तिरनै–मन्त्री सुमन्त्र को; वा ऎन्ऱु–आइए कहकर; ऊनम् इल्–दोषहीन; पेरुम् कुणम्–श्रेष्ठ गुण; ऒरुङ्कु उटैय–एक साथ रखनेवाले; उन्नाल्–आपसे; मेल् निकऴ्वतु–आगे करने योग्य; उण्टु–काम है; अ उरै केळ्–वह कथन सुनिए; ऎन–कहकर; विळम्पुम्–कहने लगे। ५५०

अन्य लोग भी कहीं-कहीं किसी विध निद्रारत हो रहे। तब मनुकुल-श्रेष्ठ श्रीराम ने, जो सो नहीं रहे थे, मंत्री सुमंत्र को पास बुलाया और कहा कि निर्दोष और गुण-पूर्ण ! आपके द्वारा एक काम होना है। वह सुनिए। यह कहकर वे आगे बोले। ५५०

❀ पूण्डपे रन्बि नारैप् पोक्कुव दरिदु पोक्का
दीण्डुनिन् ऱेहल् पॊल्ला दॆन्दैनी यिरद मिन्ने
तूण्डिनै मीळ्व दाक्किऱ् चुवट्टैयोर्न् दॆन्नै यङ्गे
मीण्डन ऩॆन्न मीळ्व रिदुनिन्नै वेण्डिऱ् ऱॆन्ऱान् 551

पूण्ट पेर् अन्पिनारै–मेरे ऊपर बड़ा प्रेम रखनेवाले इनको; पोक्कुवतु–अलग कर भेजना; अरितु–सुलभ नहीं है; पोक्कातु–उनको भिजवाये बिना; ईण्टु निन्ऱु–यहाँ से; एकल्–हमारा जाना; पॊल्लातु–अन्याय होगा; ऎन्तै नी–पितृतुल्य आप; इरतम्–रथ को; इन्ने तूण्टिनै–अभी चलाकर; मीळ्वतु आक्किल्–नगर को लौट गया ऐसा करेंगे; चुवट्टै ओर्न्तु–चिह्न देखकर; ऎन्नै अङ्के मीण्टनन् ऎन्न–मुझे वहाँ लौटा हुआ मानकर; मीळ्वर्–वे भी लौटेंगे; निन्नै वेण्टिऱ्ऱु–आपसे प्रार्थना है; इतु–यह; ऎन्ऱान्–कहा। ५५१

मुझ पर अपार प्रेम रखनेवाले इनको वापस भेजना आसान नहीं लगता। उनको लौटा के भेजे बिना यहाँ से आगे जाना भी बुरा होगा। इसलिए मेरे पितृतुल्य आप हमारे रथ को लौटाकर नगर ले जाइए। लोग भी रथ-चिह्न देखकर मुझे अयोध्या लौटा हुआ मानकर अयोध्या चले जाएँगे। यही आपसे प्रार्थना है। (वाल्मीकि और तुलसी के अनुसार सुमंत्र यहाँ से वापस नहीं भेजे जाते। गंगा नदी पहुँचने के बाद भेजे जाते हैं।)। ५५१

चॆव्विय कुरुशिल् कूऱत् तेर्वला नुणर्त्तु वानव्
वॆव्विय तायिऱ् ऱीय विदियिनिन् मेलन् पोलाम्
इव्वयि निन्नै नीक्कि यिन्नुयिर् नीत्ते नल्लेन्
अव्वयि ननैय काण्डऱ् कमैदला लळिय नॆन्ऱान् 552

चॅव्विय कुरुचिल्–सुशील राजा राम के; कूऱ–यह कहने पर; तेर् वल्लान्–रथ-सारथ्य-चतुर; उणर्त्तुवान्–समझाते हुए; अळियन्–दयनीय मैं; इ वयिन् नित्तै नीक्कि–यहाँ, (इस तरह) आपको छोड़कर; .इन् उयिर् नीत्तेन् अल्लेन्–प्यारे प्राणों को बिना छोड़े; अ वयिन्–वहाँ (नगर में); अतैय काण्टऱ्कु–(वहाँ जो होंगे), उन दुख-दृश्यों को देखने के लिए; अमैतलाल्–(आपका कहना) मार्ग बनता है, इसलिए; अ वॅव्विय तायिन्–उन क्रूर माता से भी अधिक; तीय वितियिनिन्–बुरी विधि से भी अधिक; मेलन् पोल् आम्–बढ़ा हुआ क्रूर बनूँगा ही; ॲन्ऱान्–कहा। ५५२

यह सुनकर रथसारथ्य-चतुर सुमंत्र एक दम विचलित हो गये। श्रीराम सुशील राजा थे। उनके कथन का खण्डन हो नहीं सकता। इसलिए सुमंत्र उनको समझाते हुए कहने लगे। मैं बड़ा दयनीय हूँ। आपको इधर छोड़कर बिना जीवन त्यागे, उधर आपके वियोग से जो अनर्थ होंगे —उनको देखने के लिए मैं जाऊँ, यही आपकी सलाह का अर्थ है! तब मैं क्रूर कैकेयी से भी बढ़कर और निर्मम विधि से भी अधिक निष्ठुर हो गया! । ५५२

❀ देवियु मिळवलुन् दॉडरच् चॅल्वनैप्, पूवियल् कानहम् पुहवुय्त् तेन्ॅन्गो
कोविनै युडन्कॉड् कुरुहि नॅन्ॅन्गो, यावदु कूऱुहे निरुम्बि नॅञ्जिनेन् 553

इरुम्पिन् नॅञ्चितेन्–लोहे का दिल वाला मैं; तेवियुम् इळवलुम् तॉटर–देवी और अनुज के अनुसरण करते; चॅल्वनै–श्रीमान (राघव) को; पू इयल्–पुष्प भरे; कानकम् पुक–कानन में प्रविष्ट; उय्त्तेन्–कराया; ॲन्को–कहूँ क्या; कोविनै–राजा को; उटन् कॉटु कुऱुकितेन्–साथ लेकर आया; ॲन्को–कहूँ; यावतु कूऱुकेन्–क्या कहूँगा। ५५३

वहाँ जाकर मै क्या कहूँगा? कहूँ कि लौहदिल वाला, मैंने देवी सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ श्रीराम को पुष्पतरुपूर्ण जंगल में भेज दिया? या यह (झूठ) कहूँ कि राजा राम को साथ लाया हूँ? उनसे क्या कहूँगा? । ५५३

❀ तारुडै मलरिनु मॊदुङ्गत तक्किला, वारुडै मुलैयॉडु मदुहै मैन्दरैप्
पारिडैच् चॅलुत्तिनेन् पळैय नण्बिनेन्, तेरिडै वन्दनॅन् ऱीदि लेनॅन्गो 554

पळैय नण्पिनेन्–बहुत दिनों का स्नेही मैं; तार् उटै (य) मलरितुम्–समान रूप से फैले हुए पुष्पों पर भी; ऑतुङ्क तक्कु इलात–चलने में असमर्थ; वार् उटै मुलैयॉटु–अँगियाबद्ध स्तनों वाली सीता के साथ; मतुकै मैन्तरै–बलिष्ठ नौजवानों को; पार् इटै चॅलुत्तितेन्–भूमि पर चलने देते हुए; तीतु इलेन्–बिना आँच के; तेरिटै वन्तनॅन्–रथ पर सवार होकर आया; ॲन्को–कहूँ। ५५४

सुमंत्रजी आगे पूछते है कि क्या मैं उनसे यह कहूँ कि बहुत दिनों का

स्नेही मैं पुष्प पर भी न चल सकनेवाले मृदुल चरणों की और अँगिया-निविष्ट स्तनों वाली सीताजी के साथ वीर नौजवान श्रीराम और लक्ष्मण को पैदल चलने देकर, विना किसी आँच के रथ पर बैठकर सुखपूर्वक आ गया ? । ५५४

❀ वन्बुलक् कन्मन मदियिल् वञ्जनेन्
ॲन्बुलप् पुरवुडैन् दिरङ्गु मन्नन्पाल्
उन्बुलक् कुरियशॊ लुणर्त्तच् चॅल्हॅनो
तॅन्बुलक् कोमहन् ऱूदिऱ् चॅल्हॅनो 555

वन् पुलम् कल्–कठोर स्थानों के पत्थर के समान; मनम्–मन का; मति इल् सद्बुद्धि-हीन; वञ्चनेन्–वंचक मैं; ॲन्पु उलप्पु उऱ–शरीर शिथिल हो, ऐसे; उडैन्तु–विदीर्णमन होकर; इरङ्कुम्–दुखी रहनेवाले; मन्नन् पाल्–राजा के पास; उन् पुलक्कु उरिय–आपके, अपनी बुद्धि में सही मानकर; चॊल्–वचनों को; उणर्त्त–कहने के लिए; चॅल्कॅन्नो–जाऊँ; तॅन् पुलम् कोमकन्–दक्षिण दिशा के राजा (यम) के; तूतिन्–दूत के समान; चॅल्कॅन्नो–जाऊँ । ५५५

मैं वड़ा कठोर-दिल हूँ । कठोर स्थल के पत्थर से भी कठिन मेरा चित्त है । बुद्धि भी मेरी नीच है । वंचक हूँ ! आपके वियोग से शरीर को दुर्बल और मन को विदीर्ण होने देते हुए शोकसंतप्त रहनेवाले राजा के पास, आप जो अव अपनी सन्मति के अनुसार कह रहे है —उन वातों को कहने के लिए दक्षिण दिशा के देवता यम के दूत के समान जाऊँ मैं ? । ५५५

नाऱ्ऱिशै मान्दरु नहर माक्कळुम्, तेऱ्ऱित्तर् कॊणर्वरॆन् शिऱुवन् रन्नैयॆन्
ऱाऱ्ऱित्त वरशनै यैय वॆय्यवॆन्, कूऱ्ऱुरुळ् शॊऩ्लिनार् कॊलैशॆय् वेन्गॊलो 556

ऐय–प्रभु; नाल् तिचै मान्तरुम्–(आपके साथ) चारों दिशाओं के लोग (जो आये हैं); नकरम् माक्कळुम्–और नगर के लोग; ॲन् चिऱुवन् तन्नै–मेरे वत्स को; तेऱ्ऱित्तर् कॊणर्वर्—समझा-बुझाकर लौटा लाएँगे; ॲन्ऱु–समझकर; आऱ्ऱिन अरचनै–धैर्य अवलम्बित कर रहनेवाले राजा को; वॆय्य–तापक; ॲन्–मेरे; कूऱ्ऱु उरुळ्–यम के समान; चॊल्लिनाल्–वचनों से; कॊलै चॆय्वेनो–हत्या करनेवाला बनूँ । ५५६

हे प्रभु ! चक्रवर्ती यही सोचकर सान्त्वना पा रहे हैं और जीवन धारण कर रहे हैं कि चारों ओर से जो लोग आये थे, वे और अयोध्या नगर के वासी मिलकर मेरे वत्स श्रीराम को समझा-बुझाकर ले आएँगे। मैं जाऊँ और उनसे प्राण सुखानेवाले, यम-सम वचन से उनके प्राण निकाल दूँ ? । ५५६

❀ अङ्गिमेल् वेळ्विशॆय् दरिदि नीपॆऱ्ऱ
शिङ्गवे रहन्ऱदॆन् ऱुणर्त्तच् चॅल्हॅनो

अङ्गळ्को महर्र्किनि यॅन्निर् केहयन्
नङ्गये कडैमुरै नल्लळ् पोलुमाल् 557

ऍङ्कळ् को मकर्कु–हमारे चक्रवर्ती के पास; नी अङ्कि मेल्–आप अग्नि पर; वेळ्वि चॅय्तु–अनेक यज्ञ करके; अरितिन् पॅर्र–अपूर्व रीति से आपने जिनको प्राप्त किया; चिङ्कम् एरु–पुरुषसिंह; अकन्रतु ऍन्रु–विछुड़ गये, यह; उणर्त्त चॅल्कॅन्तो–कहने के लिए जाऊँ; इनि–अव; कटै मुरै–आखिर; केकयन् नङ्कैये–केकयपुत्री ही; ऍन्निन् नल्लळ् पोलुम्–मुझसे भली वनेगी शायद । ५५७

मैं अपने चक्रवर्ती के पास जाऊँ और यह कहूँ कि आपका पुत्र, जिसको आपने अग्नि पर अनेक यज्ञों के अंग-स्वरूप होम करके वहुत कष्ट के साथ प्राप्त किया है, वह पुरुष-सिंह आपको छोड़कर जंगल चला गया ? तव तो आखिर केकयतनया मुझसे भली वनी ! । ५५७

❀ मुडिवुर विन्नन मॉळिन्द पिन्नरुम्
अडियुरत् तळुविन नळुङ्गिप् पैयरा
इडियुरत् तुवळुव दॅन्नु मिन्नलन्
पडियुरप् पुरण्डनन् पलवुम् पन्निनान् 558

इन्नतन मुटिवु उर–ऐसा, पूर्ण रूप से; मॉळिन्त पिन्नरुम्–अपना (विचार) कहने के वाद भी; अळुङ्कि–और दुखी होकर; पैं अरा–फन वाला सर्प; इटि उर–वज्र के गिरने पर; तुवळुवतु ऍन्नुम्–तड़पता हो, जैसी; इन्नलन्–वेदना के साथ; अटि उर तळुवितन्–उनके चरणों को खूब पकड़कर; पटि उर–भूमि पर; पुरण्टनन्–लोटते हुए; पलवुम् पन्निनान्–अनेक वातें कहीं । ५५८

सुमंत्र, जो कहना चाहते थे, वह सब कह चुके । फिर भी उनका दुख कम नहीं हुआ और वज्राहत सर्प जैसे तड़पता है वैसे दुखसंतप्त होकर वे श्रीराम के पैरों पर गिरे और उनको पकड़कर लोटे । और विविध वातें कहते हुए विलाप करने लगे । ५५८

❀ तडक्कया लॅडुत्तवर् रळुविक् कण्णिनीर्
तुडैत्तुवे ररुत्तिवैत् तिन्नैय शॉल्लिनान्
अडक्कुमैम् बॉरियॉडु करणत् तप्पुरम्
कडक्कुम्वा लुणर्विनुक् कणुहुङ् गाट्चियान् 559

अटक्कुम्–दाँत; ऐन्तु पॉरियॉटु–पाँचो इन्द्रियों के साथ (इन्द्रिय-निग्रह करके); करणत्तु अ पुरम्–अन्तःकरणों को पार कर, उस पार; कटक्कुम्–जो गया रहता है; वाळ् उणर्विनुक्कु–शुद्ध ज्ञान के लिए; अणुकुम्–पास आनेवाले; काट्चियान्–रूप के (श्रीराम) ने; अवन्–उनको; तट कैयाल् ऍटुत्तु–विशाल हाथ से उठाकर; तळुवि–गले लगाकर; कण्णिन् नीर् तुटैत्तु–आँखों से आँसू पोंछकर; वेरु इरुत्ति वैत्तु–अलग ले जाकर, विठाकर; इत्तैय चॉल्लिनान्–ये वातें कहीं । ५५९

श्रीराम इन्द्रियनिग्रह के द्वारा सारे अन्तःकरणों के पार जाकर शुद्धज्ञान-प्राप्त तपस्वियों के ही ज्ञानगम्य भगवान हैं। उन्होंने सुमंत्र को अपने विशाल हाथों से उठाया और गले से लगा लिया। उनकी आँखों से बहनेवाले आँसू को पोंछकर उनको अलग ले गये। फिर वे उनसे बोले। ५५९

❀ पिऱत्तलॊन्ऱु उऱ्ऱपिन् पॆऱुव यावैयुम्
तिऱत्तुळि युणर्वदोर् शॆम्मै युळ्ळत्ताय्
पुऱत्तुरु पॆरुम्बऴि पॊदुविन् ऱॆय्दवुम्
अऱत्तिऱ मऱत्तियो ववल मुण्डॆन्ना 560

पिऱत्तल् ऒन्ऱु उऱ्ऱ पिन्–जन्म लेने के बाद; पॆऱुव यावैयुम्–सहज-प्राप्य सभी (सुख-दुखों) को; तिऱत्तु उळ्ळि–खूब सोचकर; अऱिवतु ओर्–समझनेवाले; चॆम्मै उळ्ळत्ताय्–निष्पक्ष विवेकी; पुऱत्तु उऱु–बाहर से आनेवाले; पॆरु पऴि–बड़े अपयश को; पॊतु इन्ऱु–असाधारण रूप से; ऎय्तवुम्–मैं प्राप्त करूँ, इस स्थिति में भी; अवलम् उण्टु ऎन्ना–दुख होगा, इस ख्याल से; अऱम् तिऱम्–धर्म का अंश; मऱत्तियो–भूल जायँगे। ५६०

हे सुमंत्रजी! आप विवेकशील महात्मा ज्ञानी हैं। आप जानते हैं कि जन्म ले लेने के बाद जीव को सुख-दुख प्राप्त होंगे ही। उनके सम्बन्ध में बिना किसी चंचलता के, सोच-समझनेवाले विवेकी! आप यह जानते हुए भी कि जंगल न जाऊँ तो मेरा असाधारण अपयश होगा, दुख से डरकर धर्म का प्रकार भूल जाएँगे? । ५६०

❀ मुन्बुनिन् ऱिशैनिऱीइ मुडिवु मुऱ्ऱिय
पिन्बुनिन् ऱुऱुदियैप् पयक्कुम् पेरऱम्
इन्बमुवन् दुऱुमॆनि लियैव दायिडॆत्
तुन्बमुवन् दुऱुमॆनिऱ् ऱुऱक्कऱ् पालदो 561

मुन्पु निन्ऱु–(पुरुषार्थों में) पहला रहकर; इचै निऱीइ–यश स्थापित करके; मुटिवु मुऱ्ऱिय पिन्पुम्–(जीवन का) अन्त होने के बाद भी; निन्ऱु–उसके साथ रहकर; उऱुतियै पयक्कुम्–(जीव को) परलोक में भी हित करनेवाला; पेर् अऱम्–सम्मान्य धर्म को; इन्पम् वन्तु उऱुम् ऎनिल्–सुख मिलेगा तो; तुऱक्कऱ् पालतो–त्याज्य हो जायगा क्या। ५६१

धर्म प्रथम पुरुषार्थ है। वह इह-जीवन में यश दिलाता है और साथ रहकर पर-जीवन में भी हित करता है। क्या वह श्रेष्ठ धर्म (त्यागने पर), सुख मिलने की सम्भावना हो तो त्याज्य हो जायगा? (न वह दुख के कारण त्याज्य है, न सुख के कारण। वह हमेशा पालनार्ह है।) । ५६१

निऱप्परुम् वडैक्कल निऱत्ति नॆय्दवुम्
मऱप्पयन् विळैक्कुरुम् वन्मै यन्ऱो
इऱप्पिनुन् दिरुवॆला मिळप्प वॆय्दिनुम्
तुऱप्पिल ररमॆनल् शूर रावदे 562

चूरर् आवतु–शूर बनते हैं; निऱम् पॆरु पटै–उज्ज्वल और सबल; कलम्–हथियार; निऱत्तिन् ऎय्तवुम्–वक्ष पर लगें; मऱम् पयन्–और वीरता का पुरस्कार; विळैक्कुरुम्–(विजय) दिलानेवाले; वन्मै अन्ऱु–साहस के कारण नहीं; तिरु ऎल्लाम् इळप्प ऎय्तिनुम्–सारी सम्पत्ति खोनी पड़े, तो भी; इऱप्पिनुम्–मृत्यु हो जाय, तो भी; अऱम् तुऱप्पु इलर्–धर्म न त्यागेंगे; ऎनले–इस यश के कारण ही। ५६२

आखिर शूर कौन होते हैं ? उज्ज्वल भाले आदि का वार अपने वक्ष पर झेलकर वीरता का पुरस्कार, जो विजय है उसको प्राप्त करना ही शूरता है ? नही। पर शूरता सारी सम्पत्ति खोने पर भी, मृत्यु को गले लगाने की नौबत आने पर भी धर्म न त्यागना ही है ! । ५६२

❀ कान्पुऱञ् जेऱलि नरुमै काण्डियाल्
वान्पिऱङ् गियपुहळ् मन्नर् तॊल्हुलम्
यान्पिऱन् दऱत्तिनिन् ऱिळुक्किऱ् ऱॆन्नवो
ऊन्ऱिऱन् दुयिर्गुडित् तॊळिरुम् वेलिनाय् 563

ऊन् तिऱन्तु–(शत्रु का) शरीर चीरकर; उयिर् कुटित्तु–प्राण पी (हर) कर; ऒळिरुम्–शोभनेवाले; वेलिनाय्–भाले वाले; कान् पुऱम् चेऱलिन्–(मेरे) वन जाने में; अरुमै काण्टि–अधिक संकट का अनुमान करते हैं; वान् पिऱङ्किय–आकाश में भी (व्याप्त) रहनेवाले; पुकळ् मन्नर्–यशस्वी राजाओं का; तॊल् कुलम्–प्राचीन कुल; यान् पिऱन्तु–मेरे जन्म लेने से; अऱत्तिन् निन्ऱु–धर्म से; इळुक्किऱ्ऱु–डिग गया; ऎन्नवो–कहा जाय। ५६३

शत्रु-शरीर को चीरकर रक्त पीकर चमकनेवाले भाला के धारक ! आप मेरे वन जाने में दुख देखते है ! पर यह देखते नहीं कि स्वर्ग-व्यापी यशस्वी राजाओं का मेरा प्राचीन कुल मेरे जन्म से (अगर मैं वन नहीं जाऊँ तो, उस हालत मे) धर्म-विमुख हो जाने के अपयश का भागी हो जायगा। क्या लोगो को ऐसा कहने दूँ कि मेरे जन्म से मेरा कुलगौरव नष्ट हो गया ? । ५६३

❀ विनैक्करु मॆय्म्मयिन् वनत्तु विट्टनन्
मनक्करुम् बुदल्वनै यॆन्ऱन् मन्नवन्
तनक्करुन् दवमदु तलैक्कॊण् डेहले
ऎनक्करुन् दवमिदऱ् किरङ्ग लॆन्दैनी 564

विनैक्कु अरु–पालन-दुस्तर; मॆय्म्मैयिन्–सत्य-पालन के लिए; मनक्कु अरु

पुतल्वत्तै–मन (प्राण-)प्यारे पुत्र को; वत्तत्तु विट्टत्तन्–वन में भेज दिया; ॲन्ऱल्–यह कथन (इस कीर्ति के योग्य होना); मन्नवन् तनक्कु–राजा के लिए; अरु तवम्–बहुमूल्य तप है; अतु तलै कॉण्ड्डु–(उनको आज्ञा) वह शिरोधार्य करके; एकले–वन में जाना ही; ॲन्नक्कु अरु तवम्–मेरी तपस्या है; ॲन्तै नी–मेरे पितृतुल्य आप; इतऱ्कु–इसका; इरङ्कल्–दुख न कीजिएगा। ५६४

कष्टसाध्य सत्य पालन के निमित्त अपने मन के बहुत ही प्यारे पुत्र को (राजा ने) वन भेजा; यह लोग कहें —ऐसी स्थिति राजा के लिए तपस्या है। उनकी आज्ञा को सिर पर धारण करके वन में जाना मेरे लिए तपस्या है। पितृतुल्य आप इसका दुख मत कीजिए। ५६४

मुन्दिनै मुनिवनैक् कुऱुहि मुऱ्ऱुमॅन्, वन्दनै मुदलिय माऱ्ऱङ् गूऱिप्पिन्
ॲन्दयै यवनॊडु मॅय्दि यीण्डॅन, शिन्दयै युणर्त्तुदि यॅन्ऱु शॅप्पुवान् 565

मुन्तितै–आप शीघ्र जाकर; मुनिवनै कुऱुकि–मुनि (वसिष्ठ) के पास जाकर; ॲन् वन्तनै मुतलिय माऱ्ऱम् मुऱ्ऱुम् कूऱि–मेरा नमस्कार आदि सभी बातें कहकर; पिन्–उसके बाद; अवनॊटुम् ॲन्तैयै ॲय्ति–उनको साथ लेकर पिता के पास जाकर; ईण्टु ॲन चिन्तैयै–यहाँ के मेरे विचारों को; उणर्त्तुति–समझाइए; ॲन्ऱु–कहकर; चॆप्पुवान्–आगे भी बोले। ५६५

आप जाइएगा। पहले वसिष्ठजी के पास जाकर, उनको मेरा नमस्कार आदि कहिए। बाद उनको साथ लेकर मेरे पिताजी के पास जाइए। उन्हें मेरे विचार समझाइए। —यह कहकर वे आगे भी बोले। ५६५

मुनिवनै	**यॅम्पियै**	**मुऱैयि**	**निन्ऱुम्**
पुनिदवे	**दियर्क्कुमे**	**लुरैपुत्**	**तेळिर्क्कुम्**
इनियन	**विळैत्तियॅन्**	**ऱियम्बि**	**यॅऱ्पिरि**
तनिमयुन्	**दीर्त्तियॅन्**	**ऱुरैत्ति**	**तन्मयोय् 566**

तन्मैयोय्–श्रेष्ठ स्वभाव वाले; ॲम्पियै–मेरे भाई (भरत) को; मुऱैयिल् निन्ऱु–धार्मिक नीति पर रहकर; अरु पुनितम् वेतियर्क्कुम्–श्रेष्ठ, पवित्र वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों के प्रति; मेल् उऱै पुत्तेळिर्क्कुम्–आकाश में रहनेवाले देवताओं के प्रति; इनियन इळैत्ति–मधुर व्यवहार करो; ॲन्ऱु इयम्पि–ऐसा कहकर; ॲन् पिरि–मुझसे विछुड़ने से उत्पन्न; तनिमैयुम् तीर्त्ति–एकाकीपन का दुख भी दूर कीजिए; ॲन्ऱु–ऐसा; मुनिवनै उरैत्ति–मुनिवर से कहिए। ५६६

उत्तम प्रकृति वाले! मुनिवर से कहें कि वे मेरे अनुज भरत को उपदेश दें ताकि वह उत्तम, बहुमूल्य वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों और स्वर्गवासी देवताओं के प्रति मधुर व्यवहार करे। मुनिवर भरत को जो मेरे विछुड़ने से एकाकीपन का क्लेश होगा उसको दूर करा दें। ५६६

वॆव्विय दन्नैयाल् विळैन्द दीण्डॆन
कव्वयॆन् ट्रिऱैयुनुन्न्दन् करुत्ति नोक्कलन्
ऎव्वरु मॆन्वयिन् वॆत्त वॆन्नमोल्लाल्
अव्वरु ळव्वयि नरुळु हॆन्ऱियान् 567

अन्नैयाल्–माता कैकेयी द्वारा; ईण्टु–अब; वॆव्वियतु और कव्वै–भयानक एक दुख; विळैन्ततु ऎन्ऱु–पैदा हो गया, समझकर; तन् करुत्तिल्–अपने मन में; इऱैयुम्–जरा भी; नोक्कलन्–न सोचकर; ऎन् चॊल्लाल्–मेरे वाक्य से; ऎन् वयिन् वत्ततु–मेरे प्रति रखी गई; ऎ अरुळ्–जैसी कृपा; अ अरुळ्–वैसा स्नेह; अ वयिन् अरुळुक–उनके प्रति भी कीजिएगा; ऎन्ऱि–(मुनिवर से) कहें। ५६७

महर्षि यह न सोचें कि मेरी स्नेहशील जननी कैकेयी द्वारा कोई क्रूर काम हो गया है। ऐसा विचार वे किंचित भी न करें। जितनी कृपा वे मुझ पर रखते है उतनी कृपा उन पर भी रखें। —यह मुनिवर से विनय कीजिए। ५६७

वेण्डिनॆ निव्वर मॆन्ऱु वेलवन्
ईण्डरु ळॆम्बिपा निऱुवि यॆन्पिरि
वीण्डिय तुयर्तविर्न् दिरुक्क वॆन्ऱशॊन्
आण्डहैक् कुरॆत्तव नवल माऱ्ऱिप्पिन् 568

इ वरम् वेण्टिनॆन्–यह वर मैंने उनसे माँगा; ऎन्ऱु–कहकर; मेलवन् ईण्टु अरुळ्–श्रेष्ठ उनकी पूर्ण कृपा को; ऎम्पि पाल् निऱुवि–मेरे अनुज पर रखकर; ऎन् पिरिवु इण्टिय–मेरे वियोग के कारण होनेवाले; तुयर् तविर्न्तु–दुख को भूलकर; इरुक्क–रहो; ऎन्ऱ चॊल्–यह बात; आण् तकैक्कु उरैत्तु–पुरुषश्रेष्ठ (मेरे पिता) को कहकर; अवन् अवलम् माऱ्ऱि–उनका दुख कम करके; पिन्–बाद। ५६८

मुनिवर से यह मेरी प्रार्थना कहकर मेरे छोटे भाई भरत पर उनकी दया रखवा लीजिए। फिर मेरे पिता पुरुष-श्रेष्ठ चक्रवर्ती से मेरी विनय कहिए कि वे दुख करना छोड़कर शान्त रहें। उनका दुख भी मुनिवर शान्त करें और मेरा यह वचन कहकर आश्वासन दें कि। ५६८

* एऴिरण डाण्डुनीत् तीण्ड वन्दुनैत्
ताऴ्हुवॆन् ट्रिरुवडि तळर लीण्डॆनच्
चूऴिवॆङ् गळिऱ्ऱिऱै तनक्कुच् चोर्विला
वाऴिमा दवन्शॊलाल् मनन् दॆरुट्टुवाय् 569

एऴ् इरण्टु आण्टु–दो के सात (चौदह) साल; नीत्तु–विताकर; ईण्ट वन्तु–शीघ्र लौटकर; उन्नै तिरुवटि ताऴ्कुवॆन्–आपके चरणों पर विनत हो जाऊँगा; तळरल् ईण्टु ऎन–शोक मत कीजिए, ऐसा; चूऴि वॆम् कळिऱु–मुखपट्ट-पहने भयंकर गजों के; इऱै तनक्कु–स्वामी को; चोर्वु इला मातवन् चॊल्लाल्–अमोघ, महर्षि के वाक्यों द्वारा; मनम् तॆरुट्टुवाय्–मन को निःशंक कर दीजिए। ५६९

"मैं (श्रीराम) चौदह वर्ष व्यतीत करके शीघ्र लौट आऊँगा और आपके चरणों पर विनत हो जाऊँगा, आप शोक मत कीजिए"। वसिष्ठजी मुखपट्टधारी भयंकर गजों के स्वामी राजा दशरथ को मेरी ओर से अपने मुख से कहकर उनके मन को दृढ़ व संशयहीन बना दें। ५६९

❀ मुऱैमया लॅऩ्पयन् दऴुत्त मूवर्क्कुम्
कुऱैविला वॅन्नॅडु वणक्कङ् गूऱिप्पिन्
इऱैमहन् ऱुयर्दुडैत् तिरुत्ति माडॅन्ऱान्
मऱैहळै मऱैन्दुपोय् वनत्तुळ् वैहुवान् 570

मऱैकळै मऱैन्तु–वेदों से भी छिपकर (अज्ञात); पोय्–जाकर; वनत्तुळ् वैकुवान्–वन में रहनेवाले; ॲन् पयन्तु ॲटुत्त मूवर्क्कुम्–मेरी तीनों जननियों को; ॲन्–मेरा; कुऱैवु इल्ला–निर्मल; नॅटु वणक्कम्–दीर्घ नमस्कार; मुऱैयाल् कूऱि–क्रम से कहकर; पिन्–आगे; इऱै मकन् तुयर् तुटैत्तु–चक्रवर्ती के दुख को दूर करते हुए; माटु इरुत्ति–उनके पास रहिए; ॲन्ऱान्–कहा। ५७०

श्रीराम ने, जो वेदों के लिए भी अज्ञात हैं, और अब वन में जाकर लोगों से छिपे हुए हैं, सुमंत्र से कहा कि आप मेरी तीनों जननियों को क्रम से मेरा निर्मल, पवित्र और दीर्घ नमस्कार कहिए। बाद चक्रवर्ती का दुख दूर करते हुए उनके पास रहिए। ५७०

❀ आळ्विनै याणयिऱ् ऱिऱम्ब लन्ऱॅनात्
ताळ्मुदल् वणङ्गियत् तनित्तिण् डेर्वलान्
ऊऴ्विनै वशत्तुयिर् निलैयॅन् ऱुन्नुवान्
वाऴ्विनै नोक्कियै वणङ्गि नोक्किनान् 571

अ तनि तिण् तेर्–अनुपम पक्के रथ के उन; वल्लान्–समर्थ सारथी ने; आळ् वित्तै–किंकर का काम; आणैयिल् तिऱम्पल् अन्ऱु–आज्ञा का उल्लंघन करना नहीं है; ॲन्ना–कहकर; ताळ् मुतल् वणङ्कि–श्रीराम की चरण-वन्दना करके; उयिर् निलै–जीव की स्थिति; ऊऴ् वित्तै वचत्तु ॲन्ऱु–कर्मवश है, यह; उन्नुवान्–सोचकर; वाऴ्वित्तै नोक्कियै–(सुखी) जीवन-दायिनी (सीताजी) को; वणङ्कि–नमन कर के; नोक्कित्तन्–(कुछ सुनने के विचार से) देखा। ५७१

अनुपम और सबल रथ को चलाने में समर्थ सुमंत्र ने, कहा कि किंकर का धर्म स्वामी की आज्ञा टालना नहीं है। उन्होंने श्रीराम को नमस्कार किया। 'आखिर कोई भी जीव अपने कर्म के वश में ही है' यह तथ्य सोचकर वे एक तरह से परिस्थिति को मान गये। तब उन्होंने जीवों पर कृपादृष्टि रखनेवाली सीता की तरफ़ देखा, इस प्रतीक्षा में कि वे कुछ कहेंगी। ५७१

❀ अऩ्ऩवळ् कूऱुवा ळरशर्क् कऩ्ऩयर्क्
कॆऩ्ऩुडै वणक्कमुऩ् नियम्बि यानुडैप्
पॊऩ्निऱप् पूवयुङ् गिळियुम् वोऱ्ऱुमिऩ्
ऍऩ्नमऱ् ऱॆङ्गयर्क् कियम्बु वायॆऩ्ऱाळ् 572

अऩ्ऩवळ् कूऱुवाळ्–वे बोली; अरचर्क्कु–चक्रवर्ती को; अऩ्ऩैयर्क्कु–और सासों को; ऍऩ्ऩुटै वणक्कम्–मेरी विनय; मुऩ् इयम्पि–पहले सुनाकर; ऍङ्कैयर्क्कु–मेरी बहनों से; याऩ् उटैय–मेरी पालित; पॊऩ् निऱम्–सुन्दरवर्ण; पूवैयुम्–सारिका को; किळियुम्–शुक को; पोऱ्ऱुमिऩ् ऍऩ्ऩ–पालो-पोसो, ऐसा; इयम्पुवाय्–कहिए; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ५७२

देवी ने कहा कि चक्रवर्ती और मेरी सासों को मेरा विनीत नमस्कार कहिए। फिर मेरी बहनों से कहें कि वे मेरी पालित सारिका, शुक आदि सुन्दर पक्षियों को पालें-पोसें। ५७२

❀ तेर्वला ऩव्वुरै केट्टुत् तीङ्गुऱिऩ्
यार्वला रुयिर्त्तुऱप् पॊळिदऩ् ऱॆऩ्ऩाप्
पोर्वलाऩ् ऱडुक्कवुम् पॊरुमि विम्मिनाऩ्
शोर्विला ळऱिहिलात् तुयर्क्कुच् चोर्हिऩ्ऱाऩ् 573

तेर्वलाऩ्–रथसारथ्य-चतुर; अ उरै केट्टु–वह वचन सुनकर; चोर्वु इलाळ्–(वनगमन की बात से) न घबड़ानेवाली उनके; अऱिकिलात तुयर्क्कु–अज्ञात कष्टों को सोचकर; चोर्किऩ्ऱाऩ्–शोक करते हुए; तीङ्कु उऱिऩ्–(विधिवशात) हानि हो जाय तो; आर् वल्लार्–कौन रोक सकता है; उयिर् तुऱप्पु–(मेरे लिए) प्राण-त्याग भी; ऍळितु अऩ्ऱे–सुलभ नहीं; ऍऩ्ऩा–यह सोचकर; पोर्वलाऩ् तटुक्कवुम्–युद्ध में निपुण वीर के रोकने पर भी; पॊरुमि विम्मिऩाऩ्–(जी) भरकर रोये। ५७३

उनका यह कथन सुनकर समर्थ सारथी सुमंत्र के मन में ये भाव उठे। ये वनगमन की कोई चिन्ता नहीं करतीं। उनको मालूम नहीं है कि क्या-क्या कष्ट सम्भवनीय है! इनकी कोई हानि हो गई तो कौन उनको बचा सकेंगे? मरना भी आसान नहीं लगता। यह सोचकर उन्हें अपार दुख हुआ। यद्यपि युद्धवीर श्रीराम ने सांत्वना दी और उनको रोका तो भी वे अपने दुख को रोक नहीं सके और फूट-फूटकर रोये। ५७३

❀ आऱिनऩ् पोऱ्चिऱि दवल मव्वऴि, वेऱिला वऩ्बिनाऩ् विडैतऩ् दीॆऩा
एऱुशे वहऱ्ऱॊळु दिळैय मैऩ्दऩैक्, कूऱुव दियादॆऩ विनैय कूऱुवाऩ् 574

वेऱु इला अऩ्पिऩाऩ्–अपरिवर्तनशील प्रेम रखनेवाले; अ वऴि–तब; अवलम् चिऱितु आऱिऩऩ् पोल्–दुख थोड़ा कम हुआ जैसे; एऱु चेवकऩ् तॊऴुतु–वर्धनशील वीरता के श्रीराम के चरणों को नमस्कृत करके; विटै तऩ्तीक ऍऩा–आज्ञा दीजिए, कहकर; इळैय मैन्तऩै–कनिष्ठ पुत्र को; कूऱुवतु यातु ऍऩ–कहना (आपका) क्या है, पूछने पर; इऩैय कूऱुवाऩ्–ये बातें कहीं (उन्होंने)। ५७४

श्रीराम ने उनको धीरज बँधाया। तब उन पर अकम्पन प्रेम रखने वाले सुमंत्र थोड़ा धैर्यशील हुए। और श्रीराम से नमस्कार करके विदा ली। फिर उन्होने छोटे राजकुमार लक्ष्मण से पूछा कि आपका संदेश क्या है ? । ५७४

*** उरैशॅय्दॅङ् गोमहऱ् कुरुदि याक्किय**
तरैशॅरि तिरुविनैत् तविर्त्तु मऱ्ऱॊरु
विरैशॅरि कुळलिमाट् टळित्त मॅय्यनै
अरशनॅन् ऱिन्नमॊन् ऱुरैयऱ् पालदो 575

ऍम् कोमकऱ्कु–मेरे राजकुँअर श्रीराम को; उरै चॅय्तु–वचन देकर; उऱ्ति आक्किय–उनकी बनाई हुई; तरै चॅरि तिरुविनै–भूमि रूपी समृद्ध श्री को; तविर्त्तु–उनको छोड़कर; मऱ्ऱु ऑरु–दूसरी एक; विरै चॅरि कुळलि माट्टु–सुवासित केश वाली के पास; अळित्त–जिन्होंने दे दिया; उन; मॅय्यनै–सत्यवादी को; इन्नम् अरचन् ऍन्ऱु–अब भी राजा मानकर; ऑन्ऱु अरैयल् पालतो–कहने योग्य समाचार भी होगा क्या। ५७५

लक्ष्मण ने निष्ठुरता से पूछा कि क्या उनको मैं अब भी राजा मानूँ, जो हमारे राजकुँवर को अपने ही मुख से राज्य और सम्पत्ति का स्वामी घोषित करने के बाद उनको एक सुवासित केश वाली स्त्री को देकर सत्य व्रती बने है; और कोई सन्देश दूँ ? वे इसके अर्ह है क्या ? । ५७५

*** कानहम् बऱ्ऱिनऱ् पुदल्वन् कायुणप्**
पोनहम् बऱ्ऱुमप् पॊरुविल् मन्नवऱ्
कूनहम् बऱ्ऱिय वुयिरॊ डिन्नम्बोय्
वानहम् बऱ्ऱिला वलिमै कूऱॅन्ऱान् 576

नल् पुतल्वन्–अच्छे कुँवर; कान् अकम् पऱ्ऱि–वन में रहते हुए; काय् उण–(कन्द-मूल-) फल खाते रहें; पोनकम् पऱ्ऱुम्–अच्छा भोजन भुगतनेवाले; अ पॊरुवु इल् मन्नवऱ्कु–उन अनुपम राजा से; ऊन् अकम् पऱ्ऱिय–मांसपिण्ड, शरीर से लगे रहनेवाले; उयिरॊटु–प्राणों के साथ; इन्नम् पोय्–अब भी जाकर; वान् अकम् पऱ्ऱु इला–स्वर्ग में न पहुँच जाने का; वलिमै–कठोर स्वभाव; कूऱु–उनसे कहिए; ऍन्ऱान्–कहा। ५७६

पुत्र वन में वास करते हुए कन्द, मूल फलादि खाते हैं। तब पिता स्वयं महल में रहकर षड्रस भोजन का मौज उठा रहे है ! राजा को प्राण उतने प्यारे है ! शरीर के साथ लगे रहे प्राणों को त्यागकर स्वर्ग जाने का उनके पास मनोबल नहीं है ! उस विषय को उन्हें समझाइए। ५७६

*** मिन्नुडन् पिऱन्दवाट् परद वेन्दऱ्कॅन्**
मन्नुडन् पिऱन्दिलॅन् मणगॊण् डाळ्हिन्ऱ

तऩ्ऩुडऩ् पिऱन्दिलॅऩ् इम्बि मुऩ्ऩलॅऩ्
ऍऩ्ऩुडऩ् पिऱन्दयाऩ् वलिय ऩॆऩ्ऱियाल् 577

मिऩ्ऩुटऩ् पिऱन्त वाळ्–चमक के साथ रहनेवाली तलवार के धारी; परतऩ् वेन्तऱ्कु–राजा भरत से; ऍऩ् मऩ्–अपने राजा राम का; उटऩ् पिऱन्तिलॅऩ्–सहोदर मैं जन्मा नहीं; मण् कॊण्टु–उनकी धरती (राज्य) लेकर; आळ्किऩ्ऱ–शासन करने को रहनेवाले भरत का भी; तऩ् उटऩ् पिऱन्तु इलॅऩ्–सहोदर जन्मा नहीं हूँ; तम्पि मुऩ्ऩलॅऩ–(अपने छोटे) शत्रुघ्न को भी भाई नहीं मानता; ऍऩ् उटऩ् पिऱन्त याऩ्–अपने साथ स्वयं जन्मा (अकेला) मैं; वलियऩ्–बड़ा स्वस्थ हूँ; ऍऩ्ऱि–कहिए; (ऍऩ्ऱाऩ्–कहा)। ५७७

चमकीले तलवार-धारी भरत को मेरा यह सन्देश दे दें। मैं न राजा राम का सहोदर पैदा हुआ हूँ (क्योंकि अपना भायपा मैं निर्वाह नहीं कर पाया); न भरत का मै सहोदर जन्मा हूँ। शत्रुघ्न को भी मैं अपना भाई नही मानता। मैं अपने आप का अकेला सहोदर हूँ (यानी मै एकाकी हो गया।) और मै स्वस्थ सबल हूँ!। ५७७

❀ आरिय निळवलै नोक्कि यैयनी, शीरिय वल्लन शॅप्प लॅन्ऱपिऩ्
पारिडै वणङ्गिनन् परियु नॅञ्जिनऩ्, तेरिडै वित्तहन् शेऱल् मेयिनाऩ् 578

आरियऩ्–आर्य श्रीराम ने; इळवलै नोक्कि–अपने अनुज को देखकर; ऐय–तात; नी चीरिय अल्लऩ–तुम अभद्र बातें; चॅप्पल्–मत कहो; ऍऩ्ऱपिऩ्–कहने के बाद; तेर् इटै वित्तकऩ्–सारथी सुमन्त्र; पार् इटै वणङ्कि–भूमि पर पड़कर दण्डवत करके; परियुम् नॅञ्चिऩऩ्–खिन्नमन हो; चेऱल् मेयिनाऩ्–जाने लगे। ५७८

तब आर्य श्रीराम ने अपने लघुभ्राता से कहा कि लक्ष्मण! तुम अभद्रवचन मत बोलो। उसके बाद समर्थसारथी सुमंत्र दण्डवत करके भारी मन के साथ निकलने को तैयार हो गये। ५७८

❀ कूट्टिनऩ् ऱेर्प्पॊऱि कूट्टिक् कॊण्मुऱै, पूट्टिऩऩ् पुरवियप् पुरवि पोॅनॆऱि
काट्टिऩऩ् काट्टित्तऩ् कल्वि माट्चियाल्, ओट्टिऩ ऩॊरुवरु मुणर्वु ऱामले 579

तेर् पॊऱि कूट्टिऩऩ्–रथ-यन्त्र तैयार किया; कूट्टि–करके; पुरवि–अश्व; कॊळ् मुऱै पूट्टिऩाऩ्–(उनको) मनाकर रथ में जोता; अ पुरवि–उन अश्वों को; पोम् नॆऱि–गम्य मार्ग; काट्टिऩऩ्–बतलाया; काट्टि–मार्ग दिखाकर; तऩ् कल्वि माट्चियाल्–अपनी सारथ्य विद्या के विशेष ज्ञान से; ऒरुवरुम् उणर्वु उऱामल्–किसी के जाने-समझे बिना; ओट्टिऩऩ्–चलाया। ५७९

सुमंत रथ के पास आये। उसका साज-बाज ठीक किया। फिर उसमें अश्वों को किसी तरह मनवाकर जोता। उन्होंने उनको उनके जाने का मार्ग दिखाया। अपनी सारथ्य-कुशलता से रथ को इस भाँति चलाया कि किसी को रथ के जाने का भान नहीं मिले। ५७९

❀ तैयऌत् कऱ्पुन्दन् ऱहवुन् दम्बियुम्, मैयरु करुणयु मुणर्वुम् वाय्मयुम्
शॆय्यतन् विल्लुमे शेम माहक्कॊण्, डैयनुम् बोयिना नल्लि नाप्पणे 580

ऐयनुम्–प्रभु भी; तैयल् तन् कऱ्पुम्–देवी का पातिव्रत्य; तम्पियुम्–अनुज; तन् तकवुम्–अपना श्रेष्ठ आर्जव; मै अऱ करुणैयुम्–निर्मल कृपा; उणर्वुम्–मेधा; वाय्मैयुम्–और सत्य; तन् चॆय्य विल्लुमे–और अपने उत्तम धनुष को; चेमम् आक कॊण्टु–पाथेय (रक्षक) मानकर; अल्लिन् नाप्पण्–अर्धरात्रि में; पोयिनान्–चलते गये। ५८०

उनके जाने के बाद श्रीराम अर्धरात्रि के अन्धकार में वहाँ से रवाना होकर वन की ओर पैदल जाने लगे। उनके साथ उनके सहायक और संबल के रूप में सीताजी का पातिव्रत्य, श्रीराम के भाई, श्रीराम का आर्जव, उनकी पवित्र करुणा, उनकी मेधा, सत्य, और उनके हाथ का श्रेष्ठ धनुष —ये ही थे। ५८०

❀ पॊय्विनैक् कुदवुम् वाऴ्क्कै यरक्करैप् पॊरुन्दि यन्नार्
शॆय्विनैक् कुदवु नट्पार् चॆल्ववर्त् तडुप्प दॊक्कुम्
मैविळक् कियदे यन्न मयङ्गिरु ड़ुरक्क वानम्
कैविळक् कॆडुत्त दॆन्न वुदित्तदु कडवुट् टिङ्गळ् 581

पॊय् विनैक्कु–वंचक कार्यों में; उतवुम् वाऴ्क्कै–सहायक जीवन बितानेवाले; अरक्करै पॊरुन्ति–राक्षसों से मिलकर; अन्नार् चॆय्विनैक्कु–उनके दुष्कृत्यों में; उतवुम् नट्पाल्–सहायता करानेवाली मित्रता के कारण; चॆल्पवर् तटुप्पतु ऒक्कुम्–(उनको मारने) चलनेवाले को रोकता सा; विळक्कियतु मैये अन्न–निखरा अंजन ही सम; मयङ्कु इरुळ्–भ्रामक अन्धकार; तुरक्क–दूर करने के लिए; वानम्–आकाश ने; कै विळक्कु ऎटुत्ततु–हाथ में दीपक लिया; ऎन्न–ऐसा; कटवुळ् तिङ्कळ्–चन्द्र देव; उतित्ततु–उदित हुए। ५८१

तब चन्द्रदेव उदित हुए। वे देवलोक के दीप के समान लगे, जो वंचक कर्म करनेवाले राक्षसों के दुष्कर्मों का सहायक होकर, उनके विरुद्ध जानेवालों को रोकनेवाले काजलसम अन्धकार को दूर करने के लिए जलाया गया था। ५८१

मरुमत्तुत् तन्नै यून्रु मऱक्कॊडुम् बावन् दीर्क्कुम्
उरुमॊत्त शिलैयि नोरै यॊरुप्पडुत् तुदवि निन्ऱ
करुमत्तिन् विळैवै यॆण्णिक् कळप्पॊडुङ् गाण वन्द
तरुमत्तिन् वदन मॆन्नप् पॊलिन्ददु तनिवॆण् डिङ्गळ् 582

तन्नै मरुमत्तु ऊन्रुम्–(धर्म) अपने को मर्म पर आघात करनेवाले; मऱम् कॊटु पावम्–विरुद्ध और क्रूर पाप को; तीर्क्कुम्–मिटा सकनेवाले; उरुम् ऒत्त चिलैयिनारै–वज्रसम धनुर्धरों को; ऒरुप्पटुत्तु–सम्मत कराकर; उतवि निन्ऱ–अपनी सहायता जिसने की; करुमत्तिन् विळैवै ऎण्णि–उस विधि का फल सोचकर;

कळिप्पॉट्टुम्–हर्ष के साथ; काणवन्त–(श्रीराम, लक्ष्मण को) देखने आये हुए; तरुमत्तिन् वतनम् ॲन्न–धर्म के मुख के समान; तत्ति वॅण् तिङ्कळ्–अनुपम श्वेत चन्द्र; पॊलिन्ततु–शोभित रहे। ५८२

और भी वे उस धर्मदेवता के मुख के समान शोभे, जो अपने मर्म पर प्रहार करनेवाले विरोधी क्रूर पाप के नाशक, वज्रसम धनुर्धर और अपने सहायक वीरों को वन जाने से सम्मत करानेवाले सुकृत की बात सोचकर हर्ष के साथ उन वीरों के दर्शनार्थ आया हो। ५८२

काम्बुयर् कानञ् जॅल्लुङ् गरियवन् वरुमै नोक्कित्
तेम्बिन कुविन्द पोलुञ् जॅङ्गळु नीरुम् जेरंप्
पाम्बिन तलैय वाहिप् परिन्दन कुविन्दु शोर्न्द
आम्बलु मॅन्ऱ पोदङ् गम्बुय मलर्व दुण्डो 583

काम्पु उयर्–(जिसमें) बाँस ऊँचे उगे हुए थे; कानम् चॅल्लुम्–उस वन में जानेवाले; करियवन् वरुमै–काले (राम) की (दयनीय दशा) कंगाली; नोक्कि–देखकर; चॅङ्कळु नीरुम्–लाल कुमुद-पुष्प भी; तेम्पित्त–दुखी हुए; कुविन्त पोलुम्–जैसे मुकुलित रहे; आम्पलुम्–कुवलय भी; चेरै पाम्पिन तलैय आकि–"चेरै" नामक (विषहीन) साँप के सिरों के समान संकुचित होकर; परिन्तत–(श्रीराम की) सहानुभूति में; चोर्न्त–झुके रहे; अन्ऱ पोतु–तब तो; अङ्कु–वहाँ; अम्पुयम्–अम्बुजों का; अलर्वतु उण्टो–खिलना हो सकता है क्या। ५८३

जब श्रीराम उस वन में जा रहे थे, जिसमें बाँस के वृक्ष बहुत ऊँचे उगे थे तब रात में खिलनेवाले कुमुद, कुवलय आदि पुष्प कुम्हलाकर मुकुलित थे। उनकी दयनीय दशा देखकर रक्तकुमुद शोक करते-से बन्द रहे। कुवलय भी चेरै नामक (विषहीन) साँप के सिर के समान पिचककर मानो उनसे सहानुभूति करके मुरझाये रहे। रात में खिलनेवाले पुष्पों की यह स्थिति रही तो अम्बुज कैसे मुख खोलेंगे ? । ५८३

*अञ्जनक् कुन्ऱ मन्न वळहनु मळहन् ऱन्नै
ॲञ्जलिल् पॊन्बोर्त् तन्न विळवलु मिन्दु वॅन्बान्
वॅञ्जिलैप् पुरुवत् ताडन् मॅल्लडिक् केऱ्प वॅण्णूऱ्
पञ्जिडैप् पडुत्ता लॅन्न वॅण्णिलाप् परप्पप् पोनार् 584

इन्तु ॲन्पान्–इन्दु नाम के उन (चन्द्र) ने; वॅम् चिलै–कमनीय धनु-सम; पुरुवत्ताळ् तन्–भौंहें वाली सीताजी के; मॅल् अटिक्कु एऱ्प–मृदु चरणों के अनुकूल; वॅळ् नूल पञ्चु–श्वेत-सूत्र-जनक रुई को; इटै पटुत्ताल् ॲन्न–भूमि पर बिछाया हो, जैसे; वॅळ् निला परप्प–श्वेत चाँदनी फैलाई; अञ्चतम् कुन्ऱम् अन्न अळकनुम्–अंजनपर्वत-सम सुन्दरराज; अळकन् तन्नै ॲञ्चल् इल्–उन सुन्दर से किसी विध जो कम नहीं थे; पॊन् पोर्त्त अन्न इळवनुम्–स्वर्णरंग के लघुराज; पोनार्–गये। ५८४

चन्द्रिका खूब फैली। वह ऐसी लगी, मानो इन्दु-संज्ञित चन्द्र ने कमनीय धनुसम ललाट वाली सीता के मृदुचरण-पात के योग्य श्वेत-सूत्रजनक रुई फैला रखी हो। सीताजी के साथ काजलगिरि जैसे सुन्दर-मूर्ति श्रीराम और उनके उतने ही सुन्दर, पर स्वर्णवर्ण लक्ष्मण भी चलते गये। ५८४

शिऱुहिडै वरुन्दक् कॊङ्गै येन्दिय शॆल्व मॆन्ऩुम्
शॆऱियिरुङ् गून्द नङ्गै शीऱडि नीर्क्कॊप् पूळिऩ्
नऱियत्त तॊडर्न्दु शॆन्ऱु नडन्दॆऩि नवैयि नीङ्गुम्
उरुवलि यऩ्बि नूङ्गॊन् ऱुण्डॆऩ वुणर्व दुण्डो 585

चिऱुकु इटै वरुन्त–छोटी कमर दुखी हो, ऐसा; कॊङ्कै एन्तिय–स्तन वहन करनेवाली; चॆरि इरु कून्तल्–घने, काले केश वाली; चॆल्वम् ऎन्ऩुम् नङ्कै–लक्ष्मीदेवी; नीर् कॊप्पूळिऩ्–जल के बुदबुदों से भी अधिक; नऱियत्त चिऱु अटि–मृदुल छोटे चरण; तॊटर्न्तु चॆन्ऱु–श्रीराम के साथ लगे हुए जाकर; नटन्तु ऎऩिऩ्–चले तो; नवैयिन् नीङ्कुम्–दोषहीन; अऩ्पिऩ् ऊङ्कु–प्रेम से बढ़कर; उरु वलि ऒऩ्ऱु उण्टु–अधिक बलयुक्त कुछ है; ऎऩ–ऐसा; उणर्वतु उण्टो–सोचा जाय, ऐसा कुछ है क्या। ५८५

सीताजी स्वयं लक्ष्मीदेवी थी। वे घने-घुँघराले केश वाली अपनी पतली कमर और उसको सतानेवाले पीन स्तनों का वहन करती हुई श्रीराम के साथ बिना किसी शिकायत के चलीं। उनके, जल के बुदबुदों से भी मृदु चरण इतनी दूर चल सके तो उसका कारण प्रेम ही है! प्रेम से भी बलवान या बलदायक कुछ और है —यह समझने के लिए कोई स्थान है क्या ? । ५८५

❀ परुदिवा नवनुङ् गीळ्पार् परुवरै पऱ्ऱा मुऩ्ऩम्
तिरुविऩा यहनुन् दॆन्बाल् योशनै यिरण्डु शॆन्ऱान्
अरुविपाय् कण्णुम् बुण्णा यऴिहिऩ्ऱ मनमुन् दानुम्
तुरिदमान् ऱेरिऱ् पोनान् शॆय्ददु शॊल्ल लुऱ्ऱाम् 586

परुति वातवन्–सूर्यदेव; कीऴ् पाल्–पूर्व दिशा के; परुवरै–बड़े (उदय-) अचल को; पऱ्ऱा मुऩ्ऩम्–पहुँच जाएँ, इसके पहले; तिरुविन् नायकनुम्–श्रीलक्ष्मीपति; तॆन् पाल्–दक्षिण दिशा में; इरण्टु योचनै चॆऩ्ऱाऩ्–दो योजन दूर चले; अरुवि पाय् कण्णुम्–धारा बहानेवाली आँखें; पुण्णाय्–व्रण बनकर; अऴिकिऩ्ऱ मनमुम्–मिटने वाला मन; तानुम्–और स्वयं; तुरितम् मान् तेरिल् पोनान्–(जो) त्वरितगति अश्वों के (जुते) रथ पर गये; चॆय्ततु–उन्होंने जो किया, वह; चॊल्लल् उऱ्ऱाम्–कहेंगे। ५८६

सूर्यदेव के बड़े उदयाचल पर पहुँचने के पहले ही श्रीलक्ष्मी-पति दक्षिण की ओर दो योजन चले गये। धारा-बनी आँखें और व्रण-बना

हृदय और स्वयं वे —ऐसी स्थिति में और जो तीव्रगामी अश्वों के जुते रथ पर गये उनका क्या हुआ —यह बतलाएँगे। ५८६

❀ कडिहयो रिरण्डु मून्ऱिऱ् कडिमदि लयोत्ति कण्डान्
अडियिणै तॊऴुदा ऩादि मुनिवऩै यवनु मुऱ्ऱ
पडियॆलाङ् गेट्टा नॆञ्जिऱ् परुवर लुऴन्दान् मुऩ्ऩम्
मुडिवॆला मुणर्न्दा नन्दो मुडिन्दनऩ् मऩ्ऩ नॆन्ऱान् 587

कटिकै ओर् इरण्टु मून्ऱिल्–छः घड़ी के अन्दर; कटि मतिल् अयोत्ति कण्टान्–सुरक्षित (या रक्षक) प्राचीरों वाली अयोध्या पहुँच गये; आति मुतिवऩै–प्रधान मुनिवर के; इणै अटि तॊऴुतान्–चरणद्वय की वन्दना की; अवऩुम्–उन्होंने भी; उऱ्ऱपटि ॲल्लाम्–घटित सब; केट्टान्–सुना; नॆञ्चिल् परुवरल् उऴन्तान्–मन में क्लेश पाया; मुटिवु ॲल्लाम्–भावी सब; मुऩ्ऩम् उणर्न्तान्–पहले ही मन में अनुमान करके; अन्तो–हाय; मऩ्ऩऩ् मुटिन्ततऩ्–राजा मर ही गये; ॲऩ्ऱान्–कहा। ५८७

वे (दो के तीन) छः (या दो और तीन, पाँच) घड़ियों में सुरक्षा के प्राचीर वाली अयोध्या में पहुँच गये। पहले उन्होंने प्रधान पुरुष, मुनिवर वसिष्ठ से भेंट की और उनको नमस्कार किया। वसिष्ठजी ने भी सारा वृत्तान्त सुना तो दुखसन्तप्त होकर भावी का अनुमान करके समझ लिया कि अब दशरथजी नहीं बचेंगे। 'वे मर ही गये, समझ लो'। ५८७

❀ निन्ऱुयर् पऴियै यञ्जि नेर्न्दिलऩ् ऱडुक्क वळ्ळल्
ऑऩ्ऱुऩा नुरैत्त नोक्काऩ् ऱरुमत्तुक् कुऱुदि पार्प्पाऩ्
वॆऩ्ऱव रुळरो मेलै विदियिऩै यॆऩ्ऱु विम्मिप्
पॊन्ऱिणि मऩ्ऩत् कोयिल् शुमन्दिर नोडुम् बुक्काऩ् 588

वळ्ळल्–श्रीराम; तरुमत्तुक्कु उऱुति पार्प्पान्–धर्म धारणार्थ; निन्ऱु उयर् पऴियै अञ्चि–स्थिर होकर बढ़ सकनेवाले अपयश से डरकर; तटुक्क–(मेरे) रोकने पर भी; नेर्न्तिलऩ्–(रुकने को) सहमत नहीं हुए; नाऩ् उरैत्तल् ऑऩ्ऱुम् नोक्काऩ्–मेरा कहा कुछ नहीं माना; मेलै वितियिऩै–पूर्वकृत कर्मफल को; वॆऩ्ऱवर् उळरो–जीतनेवाले हैं क्या; ॲऩ्ऱु–सोचकर; विम्मि–दुख से भरकर; चुमन्तिरऩोटुम्–सुमन्त्र के साथ; मऩ्ऩऩ्–चक्रवर्ती के; पॊऩ् तिणि कोयिल्–स्वर्णयुक्त महल में; पुक्काऩ्–पहुँचे। ५८८

"मैंने प्रभु श्रीराम से कितना कहा! धर्म को सुस्थिति देनेवाले स्थायी रूप से वर्धित हो सकनेवाले अपयश से डरकर वे, मेरे रोकने पर भी रुकने को सहमत नहीं हुए। मेरा कहा एक न माना। हाँ— पूर्वकृत कर्म के फल को रोक सकनेवाला कौन है?" —यह सोचकर वसिष्ठजी अपार दुख से भरकर, सुमंत्र को साथ लिये हुए चक्रवर्ती के स्वर्णमय महल में पहुँचे। ५८८

❀ तेर्हॉण्डु वळ्ळल् वन्दा नॅन्ऱुदञ् जिन्दै युन्द
ऊर्हॉण्ड तिङ्ग ळॅन्न मन्ननै युळैयर् ज़ुऱ्ऱिक्
कार्हॉण्ड मेनि यानैक् कण्डिलर् कण्णिल् वऱ्ऱा
नीर्हॉण्ड नॅडुन्देर्प् पाह निलैहण्डै निलैयिऱ् ऱीर्न्दार् 589

तेर् कॉण्टु–रथ (का आना) लेकर; उळैयर्–मन्त्री लोग; वळ्ळल् वन्तान्–प्रभु आ गये; ॲन्ऱु–सोचकर; तम् चिनतै उन्त–अपने मन के प्रेरित करने से; तिङ्कळ् ऊर् कॉण्टतु ॲन्न–चन्द्र को परिवेष ने घेरा, जैसे; मन्ननै चुऱ्ऱि–राजा को घेरकर; कार् कॉण्ट मेनियानै–श्यामशरीर (श्रीराम को); कण्टिलर्–न देखकर; कण्णिल्–आँखों में; वऱ्ऱा नीर् कॉण्ट–न सूखनेवाले जल के साथ; नॅटु तेर् पाकन् निलै कण्टु–बड़े रथ के सारथी की दशा देखकर; निलैयिल् तीर्न्तार्–(उत्साह की) स्थिति से बदल गये। ५८६

मंत्री आदि राजा के निकटस्थ लोगों ने रथ को देखा तो अनुमान कर लिया कि प्रभु श्रीराम भी आये होंगे। इसलिए अपने मन के प्रेरित करने से वे दशरथजी के पास आये और चन्द्र को परिवेष जैसे उनको घेरकर खड़े हो गये। पर वहाँ श्यामशरीर श्रीराम नही रहे। उनके स्थान में वे बड़े रथ के सारथी सुमंत्रजी को, जिनकी आँखों से अश्रु की अटूट धारा, जो सूखती नहीं थी, वह रही थी; देखकर उत्साह और हर्ष छोड़कर दुखी हो रहे। ५८९

❀ इरदम्वन् दुऱ्ऱ दॅन्ऱाङ् गियावरु मियम्ब लोडुम्
वरदन्वन् दुऱ्ऱा नॅन्न मन्ननु मयक्कन् दीर्न्दान्
पुरैदबु कमल नाट्टम् बॉरुक्कॅन विळित्तु नोक्कि
विरदमा दवनैक् कण्डान् वीरन्वन् दनतो वॅन्ऱान् 590

इरतम् वन्तु उऱ्ऱतु ॲन्ऱु–रथ आ गया, यह; आङ्कु–वहाँ; यावरुम् इयम्पलोटुम्–सब के कहने पर; वरतन् वन्तु उऱ्ऱान्–वरद-प्रभु पधारे; ॲन्न–सोचकर; मन्ननुम्–राजा भी; मयक्कम् तीर्न्तान्–मूर्च्छा से छूटे; पुरै तपु–निर्मल; कमलम् नाट्टम्–कमल-जैसी आँखों को; पॉरुक्कॅन विळित्तु–झट से खोलकर; नोक्कि–दृष्टि डालकर; विरतम् मातवनै कण्टान्–व्रती और महान तपस्वी को देखा; वीरन्–वीरराघव; वन्तननो ॲन्ऱान्–आया क्या, पूछा। ५९०

वहाँ सबने कहा कि रथ आ गया। यह सुनकर 'वरदप्रभु श्रीराम आ गये' —इस विचार से चक्रवर्ती मूर्च्छा से जागे। अपने निर्मल कमल-सम आँखें खोलकर उन्होंने दृष्टि दौड़ाई। वहाँ महान तपोव्रती वसिष्ठजी ही उनकी दृष्टि में पड़े। राजा ने महर्षि से पूछा कि वीरराघव आ गया क्या? । ५९०

इल्लयॅन् ऱुरैक्क लाऱ्ऱा देङ्गिमा मुनिव निन्ऱान्
वल्लवन् मुहमे नम्बि वन्दिल नॅन्ऱ माऱ्ऱम्

शौल्ललु मरशन् शोरन्दान् ऱुयरुरु मुनिव नानिव्
वल्ललहाण् गिल्ले नॆन्ना वाङ्गुनिन् ऱहलप् पोनान् 591

इल्लै ऍन्ऱु–नहीं, यह; उरैक्कल् आऱ्ऱातु–कहने का साहस न होने के कारण; मा मुनिवन्–उत्तम मुनिवर; एङ्कि निन्ऱान्–व्याकुल खड़े रहे; वल्लवन् मुकमे–(दुख से अप्रभावित रहने में) समर्थ उनके मुख ने ही; नम्पि वन्तिलन्–नायक नहीं आया; ऍन्ऱ माऱ्ऱम् चॊल्ललुम्–यह उत्तर (अपने भावों से) व्यक्त किया तो; अरचन् चोर्न्तान्–राजा शिथिल हो गये; तुयर् उरु मुनिवन्–दुखार्त्त मुनि; नान् इ अल्लल् काण्किल्लेन्–यह दुख देख नहीं सकूँगा; ऍन्ना–कहकर; आङ्कु निन्ऱु–वहाँ से; अकल पोनान्–हट गये। ५९१

महामुनि "नहीं" कहने का साहस नहीं कर सके। दुख-सहन-समर्थ होने पर भी उनका मुख ही बतला गया कि श्रीराम नहीं आये। राजा फिर से मूर्च्छित हो गये। राजा की स्थिति देखकर मुनिवर का मन अत्यधिक दुख से भर गया। यह संकट मैं देख नहीं सकूँगा —यह कहकर वे वहाँ से हट गये। ५९१

❀ नायहन् पिन्नु नऱ्ऱेर्प् पाहनै नोक्कि नम्बि
शेयनो वणिय नोवॆन् ऱुरैत्तलुन् देर्व लानुम्
वेयुयर् कानिऱ् ऱानुन् दम्बियुम् मिदिलैप् पॊन्नुम्
पोयिना नॆन्ऱा नॆन्ऱ पोऴ्दत्ते आवि पोनान् 592

नायकन्–चक्रवर्ती के; पिन्नुम्–और; नल् तेर् पाकनै–श्रेष्ठ सारथी को; नोक्कि–देखकर; नम्पि–नायक; चेयनो–दूर है; अणियनो–या पास है; ऍन्ऱु–ऐसा; उरैत्तलुम्–पूछने पर; तेर् वल्लानुम्–सारथ्यसमर्थ भी; तानुम् तम्पियुम्–(वे) आप, छोटे भाई-और; मितिलै पॊन्नुम्–मिथिला का स्वर्ण; वेय् उयर् कानिल्–उन्नत वंश (बाँस) के वन में; पोयिनान्–गये; ऍन्ऱान्–बोले; ऍन्ऱ पोऴ्तत्ते–वैसा कहते ही; आवि पोनान्–प्राणविमुक्त हो गये। ५९२

नायक दशरथ ने फिर होश में आकर चतुर सारथी सुमंत्र से पूछा कि श्रेष्ठ नायक श्रीराम दूर गये हैं (दूरस्थ है) या पास ही (निकटस्थ) है? सुमंत्र ने उत्तर दिया कि श्रीराम उनके भाई लक्ष्मण और मिथिला की निधि मैथिली तीनों ऊँचे बाँस के पेड़ों से भरे जंगल में चले गये। तभी राजा के प्राणपखेरू उड़ गये। ५९२

इन्दिरन् मुदल्व रान कडवुळर् यारु मीण्डिच्
चन्दिर ननैय दाङ्गोर् मानत्तिऱ् ऱलैयिऱ् ऱाङ्गि
वन्दन नॆन्दै तन्दै यॆनमनङ् गळित्तु वाऴ्त्ति
उन्दिया नुलहि नुम्बर् मीऴ्हिला वुलहत् तुयत्तार् 593

इन्तिरन् मुतल्वर् आन–इन्द्रादि; कटवुळर् यावरुम् ईण्टि–सभी देवता एकत्र होकर; चन्तिरन् अनैयतु–चन्द्र के समान; ओर् मानत्तिल्–एक देवयान में (रख);

तलैयिल् ताङ्कि–अपने सिर पर वहन करके; ऎन्तै तन्तै–हमारे पिता के पिता; वन्तनन् ऎन–पधारे, यह कहते हुए; मत्तम् कळित्तु–हर्षितमन होकर; वाळ्त्ति–संस्तुति करके; उन्तियान् उलकत्तु उम्पर्–नाभी से उत्पन्न ब्रह्मा के लोक के परे; मीळ्किला उलकत्तु–(जहाँ से) लौट आना नहीं होता, उस लोक में; उय्त्तनर्–पहुँचाया। ५९३

देवेन्द्र आदि सभी देवता एकत्र हो आये। चन्द्रसमान एक देवयान पर उनके शरीर को अपने सिर पर ढोकर रखा। "हमारे धाता के पिता आये" यह हर्ष-घोष करते हुए उनको ले जाकर ब्रह्मा के लोक को पार कर उस मोक्षलोक में पहुँचाया, जहाँ से पुनरावर्तन नहीं होता। ५९३

❀ उयिर्प्पिलन् तुडिप्पु मिल्ल नॆन्ऱुणर्न् दुरुवन् दीण्डि
अयिर्त्तन ळोक्कि मन्नर् कारुयि रिन्मै तेऱि
मयिर्कुल मनैय नङ्गै कोशलै मरुहि वीळ्न्दाळ्
वॆयिर्चुडुङ् गोडै तन्निल् लॆन्बिला वुयिरिन् वेवाळ् 594

कुलम् मयिल् अन्नैय–श्रेष्ठ मयूरतुल्य छटा वाली; नङ्कै कोचलै–देवी कौसल्या; अयिर्त्तनळ्–सन्देह करती हुई; उरुवम् तीण्टि नोक्कि–शरीर स्पर्श करके देखकर; उयिर्प्पु इलन्–श्वासहीन है; तुटिप्पुम् इल्लन्–स्पन्दनहीन भी है; ऎन्ऱु उणर्न्तु–यह पहचानकर; मन्नरकु आर् उयिर् इन्मै–राजा की प्राणहीनता; तेऱि–निश्चित रूप से जानकर; मरुकि–उद्विग्न होकर; वीळ्न्ताळ्–गिरीं; वॆयिल् चुटुम्–धूपतप्त; कोटै तन्निल्–ग्रीष्म में; ऎन्पु इला उयिरिन्–अस्थिहीन जीव (कीड़े) के समान; वेवाळ्–तड़पने लगीं। ५९४

श्रेष्ठ कुलीन, और मयूराभा कौसल्या ने सन्देह करके राजा का शरीर स्पर्श कर देखा। 'श्वास नहीं छोड़ते; कोई स्पन्दन नहीं है; इसलिए मर ही गये है', यह निश्चय जानकर शोकाकुल होकर भूमि पर गिर पड़ी। उनकी स्थिति उस अस्थिरहित कीड़े की-सी हो गई, जो ग्रीष्म की धूप में छटपटाता है। ५९४

इरुन्द वन्दणनो डॆल्ला मीन्ऱवन् ऱन्नै यीनप्
पॆरुन्दवञ् जॆय्द नङ्गै कणवनैप् पिरिन्दु दॆय्व
मरुन्दिळन् दवरिन् विम्मि मणिपिरि यरविन् माळ्हि
अरुन्दुणै यिळन्द वन्ऱिऱ् पॆडैयॆन्न वरऱ्ऱ लुऱ्ऱाळ् 595

इरुन्त अन्तणनोटु–(अपनी नाभि में) रहनेवाले ब्रह्मज्ञ (ब्रह्मा) के साथ; ऎल्लाम्–सृष्टि सब; ईन्ऱवन् तन्नै–उत्पन्न करनेवाले (परब्रह्म) को; ईन–जन्म दिलाने योग्य; पॆरु तवम् चॆय्त–जिन्होंने बड़ी तपस्या की थी, वे; नङ्कै–देवी (कौसल्या); कणवनै पिरिन्तु–पति से अलग होकर; तॆय्वम् मरुन्तु–दैवी अमृत को; इळन्तवरिन्–खोनेवाले के समान; विम्मि–दुख से भरकर; मणि पिरि अरविन्–रत्न खोकर विषधर जैसे; माळ्कि–कुम्हलाकर; अरु तुणै–प्यारा साथी;

कावादु नीयॊऴियिऱ् पऴिपॆरिदो वन्ऱेऱ्
करुङ्गडलिऱ् कण्वळर्न्दोय् कैम्माऱु मुण्डो 101

तेवा–देव; करुम् कटलिल्–(आपके रंग के कारण) काले (बने) या विशाल क्षीरसागर में; कण् वळर्न्तोय्–निद्रा करनेवाले; मेवातवर् इल्लै–आपके शत्रु नहीं हैं; मेवित्तरुम् इल्लै–मित्र भी नहीं हैं; वॆळियोटु इरुळ् इल्लै–प्रकाश के साथ अन्धकार भी नहीं है; मेल् कीऴुम् इल्लै–ऊपर, नीचे नहीं है; मूवामैयुम् इल्लै–उमर में कम होना भी नहीं; मूत्तमैयुम् इल्लै–बढ़ना भी नहीं; मुतल् इटै ओटु–आदि, मध्य के साथ; ईऱु इल्लै–अवसान भी नहीं; मुन् ऑट् पिन् इल्लै–पूर्व और पश्चात नहीं हैं; निन् तोऩ्ऱु निलै–आपके स्वरूप के लक्षण; इव्वो–ये हैं क्या; ऎन्ऱाल्–तो; नी चिलै एन्ति–आप धनुष लेकर; चेवटिकळ् नोव–लाल (मनोरम) पैरों को दुख देते हुए; वन्तु कावातु ऑऴियिल्–आकर रक्षा नहीं करेंगे तो; पऴि पॆरितो–बड़ा अपयश होगा क्या; अन्ऱेल्–या; कै माऱुम् उण्टो–प्रत्युपकार भी हो सकता है क्या। १०१

आप काल-देश-वस्तु-परिच्छेद रहित हैं। इसलिए आपके न शत्रु है, न मित्र है। देवाधिदेव ! क्षीरसागरशायी ! आपके लिए न प्रकाश है, न अँधेरा। ऊपर कुछ नहीं है, न आपके नीचे कुछ है (आप सर्वत्र व्याप्त हैं)। आपकी न जवानी होती है, न वार्द्धक्य होता है (आप कालातीत है)। आपका न आदि है, न मध्य, न अन्त। आपके पूर्व या बाद कुछ नहीं होता। आप सभी काल में वर्तमान है। आपके लक्षण ऐसे हैं न ? फिर क्या आश्चर्य है कि आप धनुप लेकर अपने श्रीचरणों को दुखाते हुए हमारे रक्षणार्थ इधर आये हैं। ऐसा रक्षण नहीं करेंगे तो आपका अपयश हो जायगा क्या ? या हम आपका कोई प्रत्युपकार करनेवाले हैं क्या ? । १०१

नाऴि नवैती रुलहमॆला माह
नऴित्तत्तु नीतन्द नाऩ्मुहत्तार् तामे
ऊऴि पलपलवु निन्ऱळन्दा लॆन्ऱु
मुलवाप् पॆरुङ्गुणत्तॆ मुत्तमने मेनाळ्
ताऴि तरैयाहत् तण्डयिर् नीराहत्
तडवरैये मत्ताहत् तामरैक्कै नोव
आऴि कडैन्दमुद मॆङ्गळुक्के यीन्दा
यवुणर्हडा मुन्क्कडिमै यल्लामै युण्डो 102

नी–आपने; नऴित्तत्तु तन्त–अपनी नाभी-कमल से जिनको सृष्ट किया; नाऩ् मुकत्तार् तामे–वे चतुर्मुख; नवै तीर् उलकम् ऎलाम्–निर्दोष प्रपंच सब; नाऴि आक–माप बनाकर; ऊऴि पल पलवुम्–अनेक-अनेक युग; निन्ऱु अळन्ताल्–रहकर मापें तो भी; ऎन्ऱुम् उलवा पॆरुम् कुणत्तु–कभी पूरा न होनेवाले (अमाप) उत्तम गुणों के; ऎम् उत्तमत्ते–हमारे पुरुषश्रेष्ठ; मेल् नाळ्–प्राचीनकाल में; तरै ताऴि

आक–भूमि को मथनी (पात्र) वनाकर; नीर् तण् तयिर् आक–सागरजल को दही बनाकर; मत्तु तटवरैये आक–मथानी, बड़े मन्दरपर्वत को बनाकर; तामरै कै नोव—कमल-सम हाथों को दुखाते हुए; आऴि कटैन्तु–समुद्र को मथकर; अमुतम्–अमृत को; अँङ्कळुक्के ईन्ताय्–हमें ही दे दिया; अवुणर्कळ् ताम्–दानव तो; उनक्कु अटिमै अल्लामै उण्टो–आपके दास नहीं हैं, ऐसा क्या। १०२

आपके, अपनी नाभि से सृजित चतुर्मुख ब्रह्मा स्वयं, निर्दोष लोकों को माप बनाकर अनेक युगों तक आपके गुणों का माप लगाने लगें, तो भी आपके गुणों का माप नहीं मिल सकता। ऐसे अमाप कल्याण-गुणपूर्ण ! पुरुषोत्तम ! प्राचीन काल में सारी पृथ्वी को मथनी बनाकर क्षीरसागरपय को दही बनाकर और मन्दर पर्वत को मथानी बनाकर अपने कमल-सम हाथों को दुखाते हुए मथन किया; पर सुधा निकला तो उसे हम देवों को दे दिया ! तब क्या दानव आपके दास नहीं हैं —यह बात है क्या ? । १०२

ऑन्ऱाहि मूलत् तुरुवम् बलवाहि
युणर्वा युयिराहिप् पिऱिदाहि यूऴि
शॅन्ऱा शरुङ्गालैत् तन्निलैय दाहित्
तीर्न्दुलहन् दानाहिच् चॅव्वेता निन्ऱ
नन्ऱान ञानत् तनिक्कॊऴुन्दे यॆङ्ग
णवैदीर्क्कु नायहने नल्विनैये नोक्कि
निन्ऱारैक् कात्ति ययलारैक् काय्दि
निलैयिल्लात् तीविनैयु नीतन्द दन्ऱे 103

मूलत्तु ऑन्ऱु आकि–मूल में एक रहकर; उरुवम् पल आकि–अनेक रूप बनकर; उणर्वु आय्–ज्ञानगोचर बनकर; उयिर् आकि–प्राण बनकर; पिरितु आकि–इस तरह भिन्न-भिन्न होकर; ऊऴि चॅन्ऱु आच् उरुम् कालै–युगान्त में प्रपंच-नाश के समय; तन् निलैयतु आकि तीर्न्तु–अपनी पूर्व-स्थिति में आ (अपनी लीला) समाप्त करके; उलकम् तान् आकि–तब प्रपंच स्वयं आप होकर; चॅव्वे निन्ऱ–शोभित रहनेवाले; नन्ऱाय ञान तनि कॊऴुन्ते–श्रेष्ठ ज्ञान के पल्लव (सार) समान; अँङ्कळ् नवै तीर्क्कुम्–हमारे अपराधों को दूर करनेवाले; नायकने–नाथ; नल् विनैये नोक्कि निन्ऱारै–अच्छे कर्म ही करते रहनेवाले साधुओं को; कात्ति–आप रक्षा करते हैं; अल्लारै–इतरों को; काय्ति–दण्ड देते हैं; निलै इल्ला तीविनैयुम्–अस्थायी बुरे कर्म भी; नी तन्तत्तु अन्ऱे–आपके ही बने हुए है न। १०३

मूल में एक रहकर फिर अनेक रूप में बदले। भिन्न-भिन्न सृष्टि में ज्ञान से अनुभव में आनेवाले तत्व रहे। उसके प्राण रहे। इस तरह अनेक जीवों में बँटे से रहने के बाद युगांत में फिर आपने उन सबको अपने में समेट लिया। तब प्रपंच सब आप ही हो गया। उस स्थिति में शोभायमान जो रहते है, वे ज्ञानसार ! हमारे अपराधों को मिटानेवाले नायक ! अच्छे कर्म करनेवाले साधुओं को रक्षित और इतरों को दण्डित

करनेवाले हैं आप। पर क्या अस्थायी पाप भी आपके ही कारण स्थिति नहीं पाते ? । १०३

वल्लै वरम्बिल्लाद मायवित्तै तन्नाल्
मयङ्गित्तर् हळोडे मदिमयङ्गि मेन्नाळ्
अल्लै यिरैयवत्ती यादियेंत्तप् पेदुर्
रलमरु वेमुत्तै यरप्पयनुण् डाह
ॲल्लै वलयङ्गळ् नुम्मुळैयेंत् रॅन्ननिन्र
ऑरियोत्तैत् तीण्डि यॅळुव शूळुर्र पोदे
तॉल्लै मुदन्मुनिवर् दुडैत्तिलैयो वॅन्दाय् 104
तोंहैनिन्र वैयन्

ॲन्ताय्–हमारे पिता; वल्लै–वलवती; वरम्पु इल्लात–असीम; माय वित्तै तत्ताल्–माया के कार्य से; मयङ्कित्तर्कळ् ओटु–भ्रमित रहे (देवों) के साथ; मति मयङ्कि–मोहमग्न होकर; मेल् नाळ्–प्राचीन समय में; इरैवन् नी अल्लै–आप आदि भगवान नहीं हैं; आति ॲंत्त–आदिदेव हैं, ऐसा; पेतुर्रु–संशय में पड़कर; अलमरुवेम्–संकट में रहे हमारे; मुन्तै अर पयन् उण्टाक–पूर्वकृत सुकर्म का फल सहायता करने आया; अन्नाळ्–उस दिन; ॲल्लै वलयङ्कळ्–सीमा पर स्थित सारे कुवलय; नुम् उळै ॲंन्रु–आप ही पर स्थित हैं, ऐसा; ॲळुवर् ॲंत निन्र तॉल्लैमुतल् मुनिवर्–"सप्तक" के रूप में प्रख्यात सप्तर्षियों ने; ॲरियोतै तीण्टि–अग्नि को स्पर्श करके; चूळ् उर्र पोते–शपथ कही; तॉकै निन्र ऐयम्–तब घनीभूत रहा संशय; तुटैत्तिलैयो–आपने मिटाया नहीं क्या। १०४

धाता! पहले कुछ देवों ने बलवती और असीम माया के कार्य के वश में होकर आपके परत्व के सम्बन्ध में संशय किया। यह उनका भ्रम था। हम भी उनके साथ भ्रमित होकर आप परब्रह्म आदिदेव हैं, नहीं हैं, ऐसे संशय में पड़कर गड़बड़ा रहे थे। पर हमारा सुकृत था, जिसके फलस्वरूप (अत्रि, भृगु, कुत्स, वसिष्ठ, गौतम, काश्यप, अंगीरस आदि) सप्तर्षियों ने अग्नि में हाथ रखकर शपथ खायी कि सारे कुवलय आपके ही शरीर पर धृत है। तब परब्रह्म कौन है, इस पर उठा घनीभूत सन्देह मिट गया। आप ही न ऐसी व्यवस्था करके हमारा सन्देह मिटाया! (वाल्मीकी में ये बातें पायी नहीं जातीं।)। १०४

इन्नत्त पलनिनैन् देत्तित्त तियम्बात्
तुन्नुद लिडैयुळ दॅत्तननि तुणिवात्
तन्निहर् मुनिवत्तैत् तरविडै यॅत्नाप्
पौन्नोळिर् नॅडुमुडिप् पुरन्दरत् पोनात् 105

पौन् ऑळिर् नॅटु मुटि पुरन्तरन्–स्वर्ण की चमकदार दीर्घकिरीटी पुरन्दर ने; इन्नत्त पल–ऐसी अनेक बातें; नित्तैन्तु–सोचकर; इयम्पा एत्तित्तन्–और कहकर

स्तुति की; इटै तुन्नुतल् उळतु–बीच में होनेवाली एक घटना है; ॲन–ऐसा; नत्ति तुणिवान्–खूब निश्चय करके; तन् निकर् मुनिवत्ते–स्वोपम महर्षि को; विटै तर–विदा दें; ॲन्ता–कहकर (ले); पोत्तान्–सिधारे। १०५

स्वर्ण के कारण जाज्वल्यमान दीर्घ किरीटधारी पुरन्दर ने ऐसी बहुत सी बातों का स्मरण करके उनकी स्तुति की। उन्होंने सोच लिया कि बीच में घटनेवाली एक विशेष घटना है। इसलिए उन्होंने शरभंग मुनि को, जो अपनी उपमा स्वयं आप ही थे, नमस्कार करके विदा ली और वे वहाँ से चले गये। १०५

पोत्तव तहनिलै पुलमयि नुणर्वान्, वात्तवर् तलैवत्तै वरवॅदिर् कॉण्डान्
आत्तव नडितॉळ वरुळ्वर मुनिवन्, तानुडै यिडवहै तळुविन नुळैवान् 106

पोत्तवन् अक निलै–वैसे निर्गत देवेन्द्र का मनोभाव; पुलमैयिन्–अपनी ज्ञान-दृष्टि से; उणर्वान्–समझकर ऋषि ने; वात्तवर् तलैवत्तै–देवदेव श्रीराम को; वरवु ॲतिर् कॉण्टान्–अपने सामने आते पाया; आत्तवन्–(आगत) श्रीराम ने; अटि तॉळ–नमस्कार किया; मुनिवन् अरुळ् वर–मुनि ने कृपापूर्ण होकर; तळुवित्तन्–आलिंगन कर लिया; तानुटै इट वकै–अपने वासस्थान (कुटीर) को; नुळैवान्–प्रवेश करके। १०६

महर्षि ने, वहाँ से जो गये, उन पुरन्दर का मनोभाव अपनी ज्ञानदृष्टि से जान लिया। तब देवाधिदेव श्रीराम उनके सामने पधारे। उन्होंने आकर महर्षि के चरणों में नमन किया। महर्षि उन्हें गले लगाकर अपने आश्रम में लिवा ले जाने लगे। १०६

एळैयु मिळवलुम् वरुहॅन विन्निदा, वाळिय ववरॉडु वळ्ळलु महिळा
ऊळियिन् मुदन्मुनि युऱैयुळै यणुह, आळियि लऱितुयि लवनॅन महिळ्वान् 107

वळ्ळलुम्–श्रीराम ने; एळैयुम् इळवलुम् इत्तिता वरुक ॲन–देवी और छोटे भाई सुख से आवें, कहा, तब; अवरॉटु–उनके साथ; मकिळा–खुश होकर; ऊळियिन् मुतन् मुनि–युग के पूर्व से भी विद्यमान महर्षि के; उऱैयुळै–कुटीर में; अणुक–श्रीराम आये तब; आळियिल् अऱि तुयिल्–क्षीरसागर में योगनिद्रा में लीन रहनेवाले; अवन् ॲन–परब्रह्म, विष्णु भगवान है, समझकर; मकिळ्वान्–हर्षरत हुए। १०७

तब श्रीराम ने अपनी देवी सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मण को अपने साथ आने की आज्ञा दी। युगारम्भ के पहले से ही रहनेवाले मुनिवर उन सबको लेकर अपने कुटीर में आये। वे श्रीराम को क्षीरसागरशायी विष्णु भगवान जानकर अत्यन्त हर्षित हुए। १०७

अव्वयि तळहनु वैहिन नऱिजन्
शॅव्विय वऱिवुरै शॅविवयि नुहरा
नव्वियिन् विळियव ळॉडुननि यिरुळैक्
कव्विय निशियॊरु कडैयुऱु मळविल् 108

अ वयित्–उस आश्रम में; अऴकतुम्–सुन्दरराज; नव्वियित् विऴि अवळॊटु–मृगनयनी सीताजी के साथ; वैकित्तन्–ठहरे; अऱिजन्–ज्ञानी ऋषि के; चॆव्विय अऱिवु उरै–श्रेष्ठ उपदेशों को; चॆवि वयित् नुकरा–कानों से सुनकर; इरुळै नत्ति कव्विय–अन्धकार-ग्रस्त; निचि–निशा; ऒरु कटै उऱुम् अळविल्–अन्त होने को आई, तब। १०८

आश्रम में सुन्दरराज श्रीराम, मृगनयना सीतादेवी के साथ ठहरे। (लक्ष्मण शायद कुटीर के बाहर ही रह गये थे।) महान ज्ञानी शरभंग ने अनेक श्रेष्ठ उपदेश दिये। उपदेशों को ध्यान से श्रीराम ने सुना। यों रात बीती और अन्धकारग्रस्त रात एक तरह से अपने अन्तिम समय में आ गयी। तब—। १०८

विलहिडु निळलित्तन् वॆयिल्विरि ययिल्वाळ्
इलहिडु शुडरव निशैयन तिशैदोय्
अलहिड वरिदॆनु मविर्हर निरैयाल्
उलहिडु निरैयिरु ळुरैयिनै युरिवान् 109

विलकिटु निळलित्तन्–फैलनेवाले प्रकाश के स्वामी; इलकिटु चुटरवन्–व्यक्त गर्मी वाले; इचै अन–अपनी कीर्ति के समान; तिचै तोय्–चारों दिशाओं में व्याप्त; अलकु इट अरितु ॲतुम्–अगणित; वॆयिल् विरि–दीप्तियुत; अयिल् वाळ्–तीक्ष्ण तलवार-सम; अविर् कर निरैयाल्–शोभायमान किरण-हस्तों से; उलकु इटु–संसार पर आच्छादित; निरै इरुळ् उरैयिनै–घने अन्धकार रूपी चादर को; उरिवान्–उधेड़ लेने लगे। १०९

व्यापनेवाले प्रकाश के और जाज्वल्यमान तेज के स्वामी सूर्य ने अपनी ही कीर्ति के समान चारों दिशाओं में व्याप्त तलवार-सम धूप की किरण-करों से भूमि पर आच्छादित अन्धकार रूपी चादर को उधेड़ दिया। (अन्धकार सूर्य-रश्मि के पड़ते ही हट गया।)। १०९

आयिडै यऱिजनु मवनॆदि रळुवत्, तीयिडै नुळैवदोर् तॆळिविनै युडैयान्
नीविडै तरुहॆन निरुविन नॆऱियाल्, कायॆरि वरन्मुऱै कडिदिनि लिडुवान् 110

अ इटै–तब; अऱिजतुम्–ज्ञानी; अवन् ॲतिर्–(श्रीराम) उनके सामने; अळुवम् ती इटै–अधिक पुष्ट अग्नि में; नुळैवतु ओर् तॆळिविनै उटैयान्–प्रवेश करने का एक शुद्ध संकल्प लेकर; काय् ॲरि–जलनेवाली अग्नि को; नॆऱियाल्–यथाक्रम; वरन्मुऱै–शास्त्रोक्त रीति से; कटितितिल् इटुवान्–जल्दी प्रज्वलित करके; नी विटै तरुकॆन–आप आज्ञा दे, यह; निरुवित्तन्–माँग लिया। ११०

तब महान ज्ञानी शरभंग मुनि ने श्रीराम के सामने अधिक परिमाण में अग्नि जलाकर उसमें प्रवेश करने का संकल्प लेकर, उचित क्रम से, शास्त्रोक्त प्रकार से सत्वर प्रज्वलित किया। फिर श्रीराम से विदा माँगी। ११०

वरिशिलै युळवनु मरैयुळ वत्तनी, पुरितोळि लॅत्तैयदु पुहलुदि यॅन्नलुम्
तिरुमह डलैवशॅय् तिरुवित्तै युरुयान्, ॲरिपुह निन्नैहुवॅ न्नरुळॅन्न विरैवन् 111

वरिचिलै उळवनुम्–वन्धनयुक्त धनुष चलाने में दक्ष श्रीराम के; मरै उळवत्तै–वेदकुषक को; नी पुरि तोळिल् ॲत्तै–आप करते है, वह कार्य क्या है; अतु पुकलुति–वह बतलाइए; ॲन्नलुम्–पूछने पर; तिरुमकळ् तलैव–श्रीलक्ष्मीपति; चॅय् इरुवित्तै–मेरे कृत दोनों कर्म; अरु–नष्ट हो जायँ, इसलिए; यान् ॲरि पुक निनैकुवॅन्–मैं अग्निप्रवेश करना चाहता हूँ; अरुळ् ॲन्न–आज्ञा देने की कृपा करें, प्रार्थना करने पर; इरैवन्–भगवान । १११

धनुर्विद्याविदग्ध श्रीराम ने वेदविद्याप्रवीण महर्षि से प्रश्न किया कि यह आप क्या करने जा रहे हैं ? कृपया बताइए तो । तब शरभंग ने कहा कि हे लक्ष्मीपति ! मैं अपने दोनों (पाप-पुण्य) कर्मों का नाश करने के लिए अग्नि में प्रवेश करना चाहता हूँ । आप कृपया अनुमति प्रदान करें । तब भगवान ने— । १११

यान्वरु ममैदियि लिदुशॅय लॅवन्नो, मान्वरु तनियुरि मार्बिनै यॅन्नलुम्
मीन्वरु कॉडियवन् विरलडु मरुवोन्, ऊन्विडु मुवहैय नुरैनन्नि पहर्वान् 112

मान् वरु–मृग के; तन्नि उरि मार्पिनै–श्रेष्ठ चर्म से आच्छादित वक्ष वाले; यान् वरुम् अमैतियिन्–मेरे आगमन के इस समय में; इतु चॅयल् ॲवन्–यह करना क्यों; ॲन्नलुम्–(श्रीराम के) यह पूछने पर; मीन् वरु कॉटि अवन्–मकरध्वज (मन्मथ) का; विरल् अटु–प्रताप नष्ट करनेवाले; मरुवोन्–महर्षि; ऊन् विटुम् उवकै यिन्–शरीर-त्याग से उत्पन्न हर्ष के साथ; उरै–वचन; नन्नि पकर्वान्–खूब बोले । ११२

मृगचर्मालंकृत वक्ष वाले ! यह अग्निप्रवेश का कार्य आप अब करना चाहते हैं, जब मैं इधर आया हूँ ! यह क्यों ? —यह पूछा । तब मकरध्वज मन्मथ के प्रताप-नाशक महर्षि, जो इस उल्लास में थे कि शरीर छूटनेवाला है, बोले । ११२

आयिर युहमुळ तवमयर् हुवॅन्यान्, नीयिवण् वरुहुदि यॅनुन्निलै युडैयेन्
पोयिन्न दरुविनै पुहलुरु विदियान्, मेयिन्नै यिनियॉरु विन्नैयिलै विरलोय् 113

विरलोय्–विजयी वीर; यान्–मैं; आयिरम् उकम् उळ–सहस्र युगपर्यन्त; तवम् अयर्कुवॅन्–तपस्या करता रहा हूँ; नी इवण् वरुकुति–आप इधर पधारेंगे; ॲनुम् निलै उटैयेन्–इस स्थिरता पर रहा; पुकल् उरु वितियान्—शास्त्र-विधि के अनुसार; पोयिततु अरु विनै–मिटे मेरे कठिन कर्म; मेयिनै–आप भी पधारे; इनि ऑरु विनै इलै–अब कोई कर्म नहीं है । ११३

विजयी वीर ! सहस्र युग पर्यन्त मैंने तपस्या की साधना की है। आप इधर पधारेंगे, इस बात की दृढ़ प्रतीक्षा में रहा । शास्त्र-विधान के अनुसार मेरे दोनों कर्म कट गये । तभी तो आप पधारे हैं । आगे मेरा कर्तव्यकर्म कुछ नहीं है । ११३

इन्दिरन् नाळिन दिरुदिहळ् पहर, वन्दनन् मरुवुदि मलरय नुलहम्
तन्दन नेन्नवदु शारलें नुरवोय्, अन्दमि लुयर्पद मडैदलै मुयल्वेन् 114

उरवोय्–बलवान; इन्तिरन्–देवेन्द्र के; नाळिननु इरुतिकळ् पकर–मेरे जीवन का अन्त कहने के लिए; वन्तनन्–आये; मलर् अयन् उलकम्–कमलासन ने अपने लोक का वास; तन्तनन्–दिया; मरुवुति–आ जायँ; अॅन–कहने पर; अतु चारलॅन–वह नहीं चाहते हुए; अन्तम् इल् उयर पतम् अटैतलै–अक्षय परम (मोक्ष) पद प्राप्त करना; मुयल्वेन–साधूँगा। ११४

शक्तिमन्त ! अभी देवेन्द्र आये थे और मेरी आयु का अन्त जताकर उन्होंने कहा कि कमलोद्भव ने आपको अपने लोक में आमन्त्रित किया है। पधारिए। पर मैं वह लोक नहीं चाहता। पर अक्षर परमपद (मुक्ति-लोक) पाने के प्रयास में ही मैं साधना करता रहा हूँ। ११४

आदलि नदुपॅर् वरुळॅन वुरैयाक्, कादलि यवळोडुङ् गदळॅरि मुळुहिप्
पोदलै मरुविन नॉरुनॅरि पुहला, वेदमु मरिवरु मिहुपॉरु ळुणर्वान् 115

ऑरु नॅरि पुकला–(केवल) एक मार्ग प्रतिपादित न करनेवाले; वेतमुम्–वेदों के भी; अरिवरु–अज्ञात; मिकु पॉरुळ् उणर्वोन्–अनेक विषय के ज्ञानी महर्षि; आतलिन्–इसलिए; अतु पॅरल् अरुळ्–उसकी प्राप्ति का वर दीजिए; अॅन उरैया–यह प्रार्थना करके; कातलि अवळॊटुम्–प्रिया के साथ; कतळ् अॅरि मूळ्कि–जलनेवाली आग में प्रवेश करके; पोतलै मरुविनन्–परमपदगमन में प्रवृत्त हुए। ११५

वेद भी, जो निश्चित रूप से एक मार्ग या एक पद की व्याख्या नहीं करते हैं, पर अनेक मार्गों और अनेक पदों का प्रतिपादन करते हैं, परमपद का मार्ग नहीं बताते। लेकिन महर्षि शरभंग उस परमपद (मुक्तिलोक) का लक्षण खूब जानते थे। इसलिए उन्होंने उसी पद-प्राप्ति की श्रीराम से प्रार्थना की और वे अपनी प्रिया पत्नी के साथ ज्वलन्त अग्नि में प्रवेश करके मोक्षपद जाने को उद्यत रहे। ११५

तेवरु मुनिवरु मुरुवतु तॅरिवोर्, मावरु नरुविरै मलरयन् मुदलोर्
एवरु मुडिविनि लिरुविनै यॉरुविप्, पोवदु करुदुमव् वरु नॅरिपुक्कान् 116

उरुवतु तॅरिवोर्–भवितव्य समझनेवाले; मा वरु–गौरवपूर्ण; नरु विरै–सुवासित; मलर् अयन् मुतलोर्–कमलभव अज आदि; तेवर्–देवता लोग; मुनिवरुम्–मुनिगण; एवरुम्–कोई भी; इरुविनै ऑरुवि–दोनों कर्मों का नाश करके; मुटिविनिल्–अन्त में; पोवतु करुतुम्–जाना (जहाँ) चाहेंगे; अ अरु नॅरि–उस परमगति को; पुक्कान्–पहुँचे। ११६

भावी की बातें जाननेवाले मूल्यवान और सुवासित कमल पर आसीन अजादि देवता लोग और मुनिगण —कोई भी अपने पाप-पुण्य दोनों कर्मों के नाश पर अन्तिम गति के रूप में जहाँ जाना चाहते है, उसी गति को शरभंग प्राप्त हो गये। ११६

अण्डमु महिलमु मरिवरु नॅरियाल्, उण्डव: तीरुपॅय रुणर्हुन रुरुपे
रॅण्डव नॅडिदुयि रिरुदियि लवनैक्, कण्डव रुरुपॉरुळ् करुदुव दॅळिदे 117

अण्टमुम्–सारे अण्ड; अकिलमुम्–और सारे लोक; अरिवु अरु नॅरियाल्–अनजानी रीति से; उण्टवन्–जिन्होंने उदरस्थ कर लिया था, उन श्रीराम का; ऑरु पॅयर्–एक (परमपावन) नाम; उणर्कुत्तर्–ध्यान करनेवाले; उरु पेरु–जिसको प्राप्त करते है, वह भाग्य; ॲण् तव नॅटितु–अपार और अत्यधिक है; नॅटितु उयिर् इरुतियिल्–अपनी लम्बी आयु के अन्त में; अवत्तै कण्टवर्–जिन्होंने उनके दर्शन किये, वे; उरु पॉरुळ्–जो प्राप्त करेंगे, वह वस्तु; करुतुवतु ॲळिते–सोचना सुलभ है क्या। ११७

अखिल अण्डों और लोकों को अपने पेट में प्रलयकाल मे समा लेनेवाले विष्णु भगवान के सहस्र रूप हैं और सहस्र नाम है। उनमें एक परम पवित्र नाम है श्रीराम! उसके स्मरण मात्र से लोग जो भाग्य प्राप्त करते हैं, वह कल्पना के भी बाहर है; बहुत श्रेष्ठ है। तो अपनी लम्बी आयु के अन्त में, मरणावसर पर उनके दर्शन करने का भाग्य जिनका हुआ है, वे जिस पद को प्राप्त होंगे उसका महत्त्व कल्पना करना भी आसान है क्या? । ११७

3. अहत्तियप् पडलम् (अगस्त्य पटल)

अन्नैयव निरुदियि नमैवु नोक्कलिन्
इन्नियव रिन्नलि निरङ्गु नॅञ्जिन्नर्
कुनिवरु तिण्शिलैक् कुमरर् कॉम्बॊडुम्
पुन्निदन दुरैयुणिन् ररिदिर् पोयिनार् 118

इनियवर्–सबके प्यारे (सबको सुख देनेवाले); कुनि वरु–नमनीय; तिण् चिलै–और सारयुक्त धनुष के; कुमरर्–(धारण करनेवाले) राजपुत्र; कॉम्पु ओटुम्–पुष्प-शाखा (सीतादेवी) के साथ; अन्नैयवन्–उन महर्षि के; इरुतियिन् अमैव–अन्त की व्यवस्था; नोक्कलिन्–प्रत्यक्ष देखने से; इन्नलिन्–परिताप से; इरङ्कु नॅञ्चित्तर्–खिन्नमन होकर; पुनितनतु उरैयुळ् निन्रु–पवित्रात्मा के आश्रम से; अरितिल् पोयिनार्–निकलकर सायास चले। ११८

सर्वभूतरंजक प्यारे राजकुमार और नमनीय धनुष के धारक श्रीराम और लक्ष्मण, पुष्पलता-समाना श्रीसीतादेवी के साथ शरभंगदेह-वियोग देख रहे थे। उन्हें परिताप हुआ। बड़े खिन्नमन होकर वे उन पवित्र ऋषि के आश्रम से निकले और भारी मन के साथ सायास आगे जाने लगे। ११८

मलैहळु मरङ्गळु मणिक्कर् पारैयुम्
अलैपुन नदिहळु मरुविच् चारलुम्

इलैशॆरि पऴुवमु मिन्निय शूऴ्लुम्
निलैमिहु तडङ्गऴु मिन्निदु नीङ्गिनार् 119

मलैकळुम्–पर्वत; मरङ्कळुम्–और अनेक तरु; मणि कल् पारैयुम्–और सुन्दर अनेक चट्टानों को; अलै पुतल् नतिकळुम्–तरंगसहित जल वाली नदियाँ; अरुवि चारलुम्–सरिताओ के साथ पर्वत-पाद-प्रदेश; इलै चॆरि पऴुवमुम्–पत्तों से पूर्ण वनप्रदेश; इतिय चूऴ्लुम्–और सुन्दर स्थान; इतितिन्–सुख से देखते हुए; नीङ्कितार्–पार करके गये। ११९

वे अनेक पर्वत, वृक्ष, सुन्दर चट्टानें, तरंगसहित जल से पूर्ण नदियाँ, सरिताओं के साथ पर्वतों के पादप्रदेश और अन्य अनेक मनोरम स्थल —इनको देखते हुए सुख से आगे बढ़ते चले। ११९

❀ पण्डैय वयन्ड्रुम् वाल किल्लरुम्
मुण्डरु मोनरु मुदलि त्तोर्हळत्
तण्डह वनत्तुरै तवत्तु ळोरॆलाम्
कण्डन रिरामनैक् कळिक्कुज् जिन्दैयार् 120

पण्टैय अयन् तरुम्–पुरातन ब्रह्माजी से सृष्ट; पालकिल्लरुम्–वालखिल्य; मुण्टरुम्–मुण्डी; मोनरुम्–मौनी; मुतलित्तोर्कळ्–आदि; अ तण्टक वनत्तु उरै–जो उस दण्डक वन में रहते थे; तवत्तु उळ्ळोर्कळ् ॲल्लाम्–सब तपस्वी लोगों ने; इरामनै कण्टनर्–श्रीराम के दर्शन किये; कळिक्कुम् चिन्तैयर्–मुदितमन हुए। १२०

दण्डक वन में अनेक तरह के तपस्वी रहे। सृष्टि के आदिपुरुष ब्रह्माजी के (रोम से उत्पन्न) वालखिल्य (साठ हज़ार), मुण्डी, मौनी आदि तपस्वी थे। वे सब श्रीराम के दर्शन करके बहुत हर्षित हुए। १२०

❀ कनैवरु कडुञ्जिनत् तरक्कर् कायवोर्
विनैपिरि दिन्मैयिन् वॆदुम्बु हिन्ड्रनर्
अनैवरु कान्हत् तमुद ळाविय
पुनैवर वुयिर्वरु मुलवै पोल्हिन्ड्रार् 121

कनै वरु–शीघ्र अभिभूत कर आनेवाले; कटुम् चिनत्तु–अत्यधिक क्रोध वाले; अरक्कर् काय–राक्षसों के सताने से; ओर् वितै पिरितु इन्मैयिन्–अपने पास कोई प्रतीकार-शक्ति न रहने के कारण; वॆतुम्पुकिन्ड्रतर्–तप्त; अनै वरु कानकत्तु–अग्नि-लगे कानन में; अमुतु अळाविय–अमृत-मिश्रित; पुनैवर–जल के आने से; उयिर् वरुम्–प्राणवन्त होनेवाले; उलवै पोल्किन्ड्रार्–ठूँठ के समान बने। १२१

श्रीरामचन्द्र प्रभु का आगमन उनके लिए अग्निदग्ध कानन मे सुधा-मिश्रित जलधारा के प्रवाह के समान रहा। वहाँ के प्राणवन्त बने ठूँठों के समान उन्मत्त क्रोधी राक्षसों से पीड़ित वे निस्सहाय मुनिगण हरे हो उठे। १२१

❀ आय्वरुम् पॅरुवलि यरक्कर् नाममे
वाय्वॅरीइ यलमरु मरुक्क नीङ्गिनार्
तीवरु वत्तत्तिडै विट्टुत् तीर्न्ददोर्
ताय्वर नोक्किय कन्ऱिन् ऱन्मैयार् 122

आय् वरुम्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; पॅरुवलि अरक्कर्–बड़े बल वाले राक्षसों का; नाममे–नाम; वाय् वॅरीइ–कहने से भी डरकर; अलमरुम्–व्याकुल रहने की; मरुक्कम्–उद्विग्नता से; नीङ्किनार्–मुक्त होकर; ती वरु वत्तत्तु इटै–(वे) जलनेवाले जंगल-मध्य; विट्टु–छोड़कर; तीर्न्ततु–जो गई थी; ताय् वरल्–उस माता गाय का आना; नोक्किय–देखते रहे; कन्ऱिन् तन्मैयार्–बछड़े के समान स्थिति वाले हुए। १२२

वे वर्धनशील बल से युक्त राक्षसों का नाम लेने से भी डरते हुए अपार संकटग्रस्त होकर राक्षसों के त्रास के कारण बहुत व्याकुल व उद्विग्न रहते थे। तब श्रीराम पधारे तो उनकी स्थिति उस बछड़े की-सी उत्साहपूर्ण हो गयी, जिसके सामने उसकी माता गाय, जो उसको जलने वाले जंगल में अकेले छोड़कर चली गयी थी, आ गयी हो। १२२

करक्करुङ् गडुन्दॊऴि लरक्कर् काय्दलिल्
पॊरुट्किड मिन्मैयिऱ् पुऴुङ्गिच् चोरुनर्
अरक्करॆन् गडलिडै याऴ्हिन् ऱारॊरु
मरक्कलम् पॆऱ्ऱॆन मरुक्क नीक्किनार् 123

करक्क अरुम्—लुक-छिपकर नहीं पर खुले रूप से; कटुम् तॊऴिल्–नृशंसकारी; अरक्कर्–राक्षस; काय्तलिल्–वैर करके सताते रहे, इसलिए; पॊरुट्कु इटम् इन्मैयिन्–वार करने का मौका न रहने के कारण; पुऴुङ्कि चोरुनर्–तप्त होकर वेदना उठानेवाले; अरक्कर् ऎन् कटल् इटै–राक्षस रूपी सागर में; आऴ्किन्ऱार्–गिरकर डूबनेवाले; ऒरु मरक्कलम् पॆऱ्ऱॆन–एक नाव मिल गई हो, जैसे; मरुक्कम् नीङ्किनार्–संकट से मुक्त हुए। १२३

उनकी स्थिति सागर-मध्य डूबनेवाले को नाव मिल गयी हो, ऐसी भी हो गयी। दिन-दहाड़े वे राक्षस उनको दिक कर रहे थे। इनके पास प्रतीकार का या अपनी रक्षा का कोई साधन नहीं था। इसलिए वे बहुत क्लेशित होकर राक्षस रूपी सागर में डूबते रहे। अब उनको श्रीराम रूपी नौका मिल गयी। १२३

❀ तॆरिञ्जुऱ नोक्कित्तर् शॆय्द शॆय्दवम्, अरुञ्जिऱप् पुदवनल् लऱिवु कैदर
विरिञ्जुऱप् पऱ्ऱिय पिऱवि वॆन्दुयरप्, पॆरुञ्जिऱै वीडुपॆऱ् ऱनैय पऱ्ऱियार् 124

चॆय्त चॆय् तवम्–तब तक किया हुआ श्रेष्ठ तप; अरुम् चिऱप्पु उतव–उत्तम फल देने लगा तो; नल् अऱिवु कै तर–परमज्ञान के फलस्वरूप; तॆरिञ्चु–श्रीराम का परत्व पहचानकर; उऱ नोक्कित्तर–खूब दर्शन करके; विरिञ्चु उऱ पऱ्ऱिय–

(जाल के समान) फैलकर उन्हें जो पकड़े रहा; वॅम् पिऱवि तुयर्—भयंकर भवसंकट रूपी; पॅरुम् चिऱै—बड़ी कारा से; वीट्टु पॅऱ्ऱतैय—मोक्ष पा गये हों, ऐसी; पॅऱ्ऱियार्—दशा वाले हो गये। १२४

उन ऋषियों ने बहुत तप किया था। उसका फल अब उनकी सहायता करने आया। उनका ज्ञान उनका सहायक हुआ। वे पहचान गये कि श्रीराम परब्रह्म ही है। उन्होंने श्रीरामभद्र के खूब दर्शन कर लिये। अब उन्हें यही विश्वास हो गया कि जाल के समान फैलकर जिस भयंकर भवसंकट ने उन्हें ग्रस लिया था, उस बड़ी कारा से उनको मुक्ति मिल गयी। १२४

वेण्डिऩ वेण्डिऩर्क् कळिक्कु मॅय्त्तवम्
पूण्डुळ रायिनुम् पॉऱैयि ऩाऱ्ऱलाल्
मूण्डॅळु वॅहुळियै मुदलि नीक्किनार्
आण्डुऱै यरक्करा ललैप्पुण् डाररो 125

वेण्टिऩवर्क्कु—प्रार्थियों को; वेण्टिऩ अळिक्कुम्—प्रार्थित वस्तु दिलानेवाले; मॅय् तवम् पूण्टुळर्—यथार्थ तप के साधक थे; आयिऩुम्—तो भी; पॉऱैयिऩ् आऱ्ऱलाल्—क्षमा के बल से; मूण्टु ऍळुम् वॅकुळियै—अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को; मुतलिऩ् नीक्किऩार्—जड़ से जिन्होंने काट दिया था, वे; आण्टु उऱैन्तु—(वन में) वहाँ रहकर; अरक्कराल्—राक्षसों द्वारा; अलैप्पु उण्टार्—कष्ट में पड़े रहे। १२५

उनकी तपस्या भी अमोघ थी। इच्छित वस्तु दिला सकनेवाली ही थी। तो भी क्षमा के बल से उन्होंने अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को जड़ से काटकर दूर कर दिया था। इसीलिए वे वहाँ, उस वन में रहकर राक्षसों के हाथ त्रास सहते रहे। १२५

❀ ऍळुन्दन रॅय्दिन रिरुण्ड मेहत्तिन्
कॉळुन्दॅन निन्ऱवक् कुरिशिल् वीरऩैप्
पॉऴिन्दॅळु कादलिऩ् पॉरुन्दि ऩारवन्
तॉळुन्दॊऱुन् दॊळुन्दॊऱु माशि शॊल्लुवार् 126

ऍळुन्तऩर्—(वे) उठे और; ऍय्तिऩर्—श्रीराम के पास आये; इरुण्ट मेकत्तिऩ्—काले मेघ की; कॉळुन्तु ऍऩ—कोंपल के समान; निऩ्ऱ—अपने सामने शोभायमान (खड़े) रहे; अ कुरिचिल् वीरऩै—उन वीर राजकुमार के; पॊऴिन्तु ऍऴु कातलिल्—आप्लावित कर उमड़नेवाले प्रेम के साथ; पॊरुन्तिऩार्—समीप आये; अवऩ् तॊऴुम् तॊऱुम् तॊऴुम् तॊऱुम्—ज्यों-ज्यों वे नमस्कार करते, त्यों-त्यों; आचि चॊल्लुवार्—(ऋषियों ने) आशीर्वचन कहे। १२६

वे उठे और श्रीराम के पास, जो काले मेघ की कोंपल के समान सुन्दर थे, आये। उनके मन में श्रीराम को आप्लावित करते हुए उमड़ने

वाला प्रेम उठा था। श्रीराम ने उनको अलग-अलग एक-एक करके नमस्कार किया। तो उन्होंने भी हर बार उनको आशीर्वाद किया। १२६

❀ इन्नियदोर् शालैकॉण् डेहि यिव्वयिन्
नन्नियुरै यॅन्ऱवर् कमैय नल्हित्ताम्
तन्नियिडञ् जार्न्दन्नर् तङ्गि मऱ्ऱैनाळ्
अनैवरु मॅय्दिन्न रल्लल् शौल्लुवान् 127

अन्नैवरुम्–सभी (ऋषि); इन्निय ओर् चालै कॉण्टु एकि–सुखद एक आश्रम में ले जाकर; इ वयिन्–यहाँ; नन्नि उऱै अॅन्ऱु–खूब विश्राम करें, ऐसा कहकर; अवर्कु अमैय नल्कि–उनको आवश्यक वस्तुएँ देकर; ताम् तन्नि इटम् चार्न्तन्नर्–स्वयं अलग-अलग स्थानों में जाकर; तङ्कि–ठहरे रहने के बाद; अल्लल् चॉल्लुवान्–अपना दुखड़ा कहने; अॅय्तिन्नर्–(श्रीराम के पास) आ पहुँचे। १२७

फिर वे श्रीराम आदि को एक सुखद पर्णशाला में ले गये। 'यहाँ ठहरकर विश्राम करें' —कहकर उन्होंने दिव्य अतिथियों को वहाँ ठहराया। फिर आवश्यक सामग्रियाँ देकर वे अपने-अपने अलग-अलग स्थानों में चले गये। रात विताकर वे सवेरे अपना दुखड़ा श्रीराम से बताने के लिए उनके पास पहुँचे। १२७

❀ अॅय्दिय मुन्निवरै यिऱैञ्जि येत्तुवन्, दैयनु मिरुन्दन्न नरुळॅन् नॅन्ऱलुम्
वैयहङ् गावलन् मैन्द वन्ददोर्, वॅय्यवॅङ् गॉडुन्दॉऴिल् विळैवु केळॅना 128

ऐयन्नुम्–प्रभु ने भी; अॅय्तिय मुन्निवरै–आगत मुनियों का; इऱैञ्चि–नमस्कार करके; एत्तु उवन्तु–उनकी स्तुति करते हुए मुदित हो; इरुन्तन्नन्–रहकर; अरुळ् अॅन्–कृपा की आज्ञा क्या है; अॅन्ऱलुम्–पूछने पर; वैयकम् कावलन् मैन्त–लोकपाल के पुत्र; वन्ततु–हम पर आये; ओर् वॅय्य वॅम् कॉटुम् तॉऴिल्–वहुत ही भयंकर नृशंसकार्य की; विळैवु–अधिकता; केळ्–सुनिए; अॅन्ना–कहकर। १२८

श्रीराम ने आगत मुनियों को नमस्कार किया; स्तुति की और मोद के साथ रहकर पूछा कि आप कौन सी आज्ञा सुनाने की कृपा करेंगे? ऋषियों ने उत्तर में कहा कि लोकपालक पुत्र! हमारे ऊपर जो बीत रहा है, उस भयंकर कष्ट की अधिकता सुनिए। १२८

❀ इरक्कमॅन् ऱॉरुपॉरु ळिलाद नॅञ्जिन्नर्
अरक्करॅन् ऱुळर्शिल रऱत्ति नीङ्गिन्नार्
नॅरुक्कवुम् याम्बडर् नॅऱिय लानॅऱि
तुरक्कवु मरुन्दवत् तुऱैयुम् नीङ्गिनोम् 129

इरक्कम् अॅन्ऱु–करुणा नाम का; ओरु पॉरुळ्–सर्वश्रेष्ठ गुण; इलात–से हीन; नॅञ्चिन्नर्–मन वाले; अऱत्तिन् नीङ्किन्नार्–धर्म-मार्ग से दूर; अरक्कर्–राक्षस; अॅन्ऱु उळर् चिलर्–कहे जानेवाले हैं कुछ लोग; नॅरुक्कवुम्–(उनके) हमें सताने से;

याम्–हम; पटर् नॆऱि–अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अला नॆऱि–विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्–चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुऱैयुम् नीङ्कित्तोम्–उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे है। १२९

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं। इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं। १२९

वल्लियम् बलतिरि वन्नत्तु मात्तॆन
ऎल्लियुम् बहलुनॊन् दिरङ्गि याऱ्ऱलॆम्
शॊल्लिय वऱनॆऱित् तुऱैयि नीङ्गिनेम्
विल्लियन् मॊय्म्बिनाय् वीडु काण्डुमो 130

विल् इयल् मॊय्म्पिन्नाय्–धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल–भयंकर अनेक बाघ; तिरि वन्नत्तु–जहाँ घूमते रहते हैं, उस वन में; मान् ऎन्न–मृगों के समान; ऎल्लियुम् पकलुम्–रात और दिन; नॊन्तु–कृश होकर; इरङ्कि–दुखी होकर; आऱ्ऱलॆम्–अशक्त होकर; चॊल्लिय–शास्त्रोक्त; अऱ नॆऱि—धर्म-मार्ग के; तुऱैयिन्–कर्मो से; नीङ्किनेम्–हट गये; वीटु काण्टुमो–इससे विमोचन मिलेगा क्या। १३०

धनुर्द्धर वीर ! खूनी बाघों के संचार के वन के मृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं। हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है। कष्ट सह नहीं पाते। शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये हैं। क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे ?। १३०

❀ मादवत् तॊऴुहले मऱैहळ् यावैयुम्, ओदलॆ मोदुवार्क् कुदव लाऱ्ऱलॆम्
मूऎरि वळर्क्कलॆ मुऱैयि नीङ्गिनेम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलेम् 131

मा तवत्तु ऒऴुकलॆम्–महत्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मऱैकळ् यावैयुम् ओतलॆम्–सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवार्क्कु–अध्ययन करनेवालों को; उतवल् आऱ्ऱलॆम्–सहायता दे नहीं पाते; मूतु ऎरि वळर्क्किलॆम्–सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुऱैयिन् नीङ्कित्तेम्–अपने कर्मो से हटे रहते हैं; आतलिन्–इसलिए; अन्तणर् एयुम्–ब्राह्मण ही; आकिलेम्–बने नहीं। १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते। वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते। होमादि अग्निसंधान नहीं करते। इस तरह हम अपने योग्य कर्मों से हटे रह गये है। इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये। १३१

❀ इन्दिर नॆनिलव नरक्क रेविन
शिन्दैयिऱ् चॆन्नियिऱ् कॊळ्ळुज् जॆय्हैयान्
ऎन्दैमऱ् ऱियारुळ रिडुक्क णीक्कुवार्
वन्दनै याज्जॆय्द तवत्तिन् माट्चियाल् 132

अँनूतै–हमारे तात; इन्तिरन् ॲत्तिल्–इन्द्र हैं तो; अवन्–वे; अरक्कर् एवित्त–राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्–मन में; चॅन्नियिल्–सिर पर; कॉळ्ळुम् चॅय्कैयान्–धारण करके बजा लानेवाले है; इटुक्कण् नीक्कुवार्–हमारा कष्ट दूर करनेवाले; मऱ्ऱु यार् उळर्–और कौन हैं; यास् चॅय्त तवत्तिन् माट्चियाल्–हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्ततै–आप पधारे। १३२

हमारे प्रभु! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है। क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं। अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे। १३२

❀ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पॉरुळुडै मन्नवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोन्ऱिनाय्, अरुळुडै वीरनिन् नबयम् यामॅन्ऱार् 133

उरुळ् उटै नेमियाल्–सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय–लोक-पालन जिन्होंने किया; पॉरुळ् उटै मन्नवन्–प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व–पुत्र; अरुळ् उटै वीर–करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला–अकाट्य; इरुळ् उटै–अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्–जीवन वाले हैं हम; इरवि तोन्ऱिनाय्–आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निन् अपयम् याम्–आपकी शरण हैं हम; ॲन्ऱार्–कहा (ऋषियों ने)। १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र! कृपालु श्रीरघुवीर! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है। आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं। हम आपकी शरण हैं। —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले। १३३

❀ पुहल्पु हुन्दिलरेऱ् पुऱत्तण् डत्तिन्
अहल्व रेनुमॅन् नम्बॊडुम् वीऴ्वराल्
तहवि ऱुन्बन् दविरुदिर् नीरॅन्ाप्
पहल वन्गुल मैन्दन् पणिक्किन्ऱान् 134

पकलवन् कुल मैन्तन्–दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुकल् पुकुन्तिलरेल्–(वे राक्षस क्षमा माँगते हुए) मेरी शरण नहीं आयँगे तो; पुऱत्तु अण्टत्तु अकल्वरेनुम्–बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; ॲन् अम्पॊटुम् वीऴ्वर् आल्–मेरे बाणों के साथ गिरेंगे; नीर्–आप लोग; तकवु इल् तुन्पम्–अनावश्यक दुख; तविरुतिर्–छोड़ दीजिए; ॲन्ा–कहकर; पणिक्किन्ऱान्–विश्वास दिलाया। १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— "वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक! नहीं तो वे बाह्यांड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूँगा। मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे। आप अनावश्यक दुख छोड़ दें।" ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे। १३४

याम्–हम; पटर् नॅरि–अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अला नॅरि–विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्–चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुरॅयुम् नीङ्कितोम्–उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे हैं। १२६

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं। इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं। १२९

वल्लियम् बलतिरि वनत्तु मानॅन
ऑल्लियुम् बहलुनॉन् दिरङ्गि याऱ्ऱलॅम्
शॊल्लिय वऱनॅरित् तुऱॅयि नीङ्गित्तॅम्
विल्लियन् मॊय्म्बिनाय् वीडु काण्डुमो 130

विल् इयल् मॊय्म्पिनाय्–धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल–भयंकर अनेक बाघ; तिरि वनत्तु–जहाँ घूमते रहते है, उस वन में; मान् ॲन–मृगों के समान; ऑल्लियुम् पकलुम्–रात और दिन; नॉन्तु–कृश होकर; इरङ्कि–दुखी होकर; आऱ्ऱलॅम्–अशक्त होकर; चॊल्लिय–शास्त्रोक्त; अऱ नॅरि—धर्म-मार्ग के; तुऱॅयिन्–कर्मो से; नीङ्कित्तॅम्–हट गये; वीटु काण्टुमो–इससे विमोचन मिलेगा क्या। १३०

धनुर्द्धर वीर! खूनी बाघों के संचार के वन के मृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं। हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है। कष्ट सह नहीं पाते। शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये है। क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे? । १३०

❀ मादवत् तॊऴुहले मऱॅहळ् यावॅयुम्, ओदलॅ मोदुवाऱ्क् कुदव लाऱ्ऱलॅम्
मूॅदॅरि वळर्क्कलॅ मुऱॅयि नीङ्गिनेम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलेम् 131

मा तवत्तु ऑऴुकलॅम्–महत्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मऱॅकळ् यावॅयुम् ओतलॅम्–सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवार्क्कु–अध्ययन करनेवालों को; उतवल् आऱ्ऱलॅम्–सहायता दे नही पाते; मूत्तु ॲरि वळर्क्किलॅम्–सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुऱॅयिन् नीङ्किलॅम्–अपने कर्मो से हटे रहते हैं; आतलिन्–इसलिए; अन्तणर् एयुम्–ब्राह्मण ही; आकिलेम्–बने नहीं। १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते। वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते। होमादि अग्निसंधान नहीं करते। इस तरह हम अपने योग्य कर्मो से हटे रह गये हैं। इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये। १३१

❀ इन्दिर ॅनिलव नरक्क रेविन
शिन्दॅयिऱ् चॅन्निऱिऱ् कॊऴ्ऴुम् जॅय्हैयान्
ॲन्दॅमऱ् ऱियारुळ रिडुक्क णीक्कुवार्
वन्दनॅ याज्जॅय्द तवत्तिन् माट्चियाल् 132

ऎन्तै–हमारे तात; इन्तिरन् ऎत्तिल्–इन्द्र हैं तो; अवन्–वे; अरक्कर् एवित्त–राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्–मन में; चॆन्नियिल्–सिर पर; कॊळ्ळुम् चॆय्कैयान्–धारण करके बजा लानेवाले हैं; इटुक्कण् नीक्कुवार्–हमारा कष्ट दूर करनेवाले; मऱ्ऱु यार् उळर्–और कौन हैं; याम् चॆय्त तवत्तिन् माट्चियाल्–हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्ततै–आप पधारे। १३२

हमारे प्रभु ! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है। क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं। अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं ? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे। १३२

❀ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पॊरुळुडै मन्नवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोन्ऱिनाय्, अरुळुडै वीरनिन् ऩबयम् यामॆन्ऱार् 133

उरुळ् उटै नेमियाल्–सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय–लोक-पालन जिन्होंने किया; पॊरुळ् उटै मन्नवन्–प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व–पुत्र; अरुळ् उटै वीर–करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला–अकाट्य; इरुळ् उटै–अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्–जीवन वाले हैं हम; इरवि तोन्ऱिनाय्–आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निन् अपयम् याम्–आपकी शरण हैं हम; ऎन्ऱार्–कहा (ऋषियों ने)। १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र ! कृपालु श्रीरघुवीर ! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है। आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं। हम आपकी शरण हैं। —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले। १३३

❀ पुहल्पु हुन्दिलरेऱ् पुऱत्तण् डत्तिन्
अहल्व रेनुमॆन् ऩम्बीडुम् वीळ्वराल्
तहवि ऩुन्बन् दविरुदिर् नीरॆन्ऩाप्
पहल वन्गुल मैन्दन् पणिक्किन्ऱान् 134

पकलवन् कुल मैन्तन्–दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुकल् पुकुन्तिलरेल्–(वे राक्षस क्षमा माँगते हुए) मेरी शरण नहीं आयेंगे तो; पुऱत्तु अण्टत्तु अकल्वरेनुम्–बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; ऎन् अम्पोटुम् वीळ्वर् आल्–मेरे बाणों के साथ गिरेंगे; नीर्–आप लोग; तकवु इल् तुन्पम्–अनावश्यक दुख; तविरुतिर्–छोड़ दीजिए; ऎन्ना–कहकर; पणिक्किन्ऱान्–विश्वास दिलाया। १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— "वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक ! नहीं तो वे बाह्यांड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूँगा। मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे। आप अनावश्यक दुख छोड़ दें।" ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे। १३४

❀ वेन्दन् वीयवुम् यायुतुयर् मेववुम्, एन्द लॅम्बि वरुन्दवु मॅन्नहर्
मान्दर् वन्ऱुयर् कूरवुम् यान्वनम्, पोन्द दॅन्नुडैप् पुण्णियत् तालॅन्ऱान् 135

वेन्तन् वीयवुम्–चक्रवर्ती दिवंगत हुए; याय् तुयर् मेववुम्–और मेरी माता दुखग्रस्त हुईं; एन्तल् ॲम्पि–महिमायुक्त मेरे लघु भ्राता भरत; वरुन्तवुम्–संकटग्रस्त है; ॲन् नकर् मान्तर्–मेरे नगर के लोग; वन् तुयर् कूरवुम्–कठोर वेदना का अनुभव करते है; यान् वनम् पोन्ततु–(यह स्थिति पैदा करते हुए) मेरा वन में आगमन; ॲन्नुटै पुण्णियत्ताल्–मेरे सुकृत (पुण्य) से ही; ॲन्ऱान्–कहा। १३५

मुझे वन में आना पड़ा जिसके कारण मेरे पिता चक्रवर्ती दिवंगत हो गये। मेरी माता कौसल्यादेवी दुखग्रस्त हो गयीं। महिमावान मेरा लघुभ्राता भरत शोकपीड़ित हो गया। मेरे नगर के वासी दुख में पड़ गये। तो भी मैं समझता हूँ कि मेरा वन में आगमन मेरे सुकृत का ही फल है। १३५

❀ अऱन्द वानॅऱि यन्दणर् तन्मैयै, मऱन्द पुल्लर् वलितॉलै येॅनॅनिल्
इऱन्दु पोहिनु नन्ऱिदु वल्लदु, पिऱन्दि यान्बॅऱुम् बेऱॅन्वदि यावदो 136

अऱम् तवा नॅऱि–धर्म से न हटनेवाले आचरण में लीन; अन्तणर् तन्मैयै–ब्राह्मणों के महत्व को; मऱन्त–भूलकर (कष्ट देनेवाले); पुल्लर्–नीच राक्षसों का; वलि तॉलैयेन्–वल नहीं मिटाऊँगा; ॲनिल्–तो; इऱन्तु पोकितुम्–मर जाना भी; नन्ऱितु–अच्छा; अल्लतु–नहीं तो; पिऱन्तु यान् पॅऱुम् पेऱु–जन्म लेकर पाने का भाग्य; यावतो–और क्या होगा। १३६

वे नीच राक्षस आपकी महिमा और आपका स्वभाव नहीं जानते और आपको बहुत कष्ट दे रहे है। उनका वल न मिटाऊँ तो मर जाना भी भला है। नही तो मैंने जन्म लेकर क्या पाया ? और कौन सा लाभ है जो मैं पाऊँ ? । १३६

निवन्द वेदियर् नीयिरुन् दीयवर्, कवन्द बन्दक् कळिनडङ् गण्डिड
अमैन्द विल्लु मरुङ्गणैत् तूणियुम्, शुमन्द तोळुम् पॉऱैत्तुयर् तीरुमाल् 137

निवन्त–गुणोन्नत; वेतियर् नीयिरुम्–वेदज्ञ विप्र आप; तीयवर्–खलों के; कपन्त पन्तम्–कवन्ध-वृन्द का; कळि नटम् कण्टिट–मुदित नाच देखें तव; अमैन्त विल्लुम्–मेरे पास वेकार रहा धनु; अरुम् कणै तूणियुम्–अपूर्व शरों का तूणीर; चुमन्त–इनको ढोनेवाली; तोळुम्–मेरी भुजाएँ; पॉऱै तुयर् तीरुम्–भार उठाने का दुख दूर होगा। १३७

आप गुणोन्नत ब्राह्मण उन खलों के कबन्ध-वृन्दों का मुदित नाच देख कर आनन्द मनावे, तभी भारस्वरूप वेकार यह धनु और उत्तम शरों का तूणीर —इनका बोझ व्यर्थ जो ढोती रही उन भुजाओं के भारवहन का दुख दूर होगा। १३७

आवुक् कायिनु मन्दणर्क् कायिनुम्, यावर्क् केनु मॅळियवर्क् कायिनुम्
शावप् पॅऱ्ऱव रेतहै वानुरै, देवर्क् कुन्दॉळुन् देवर्ह ळाहुवार् 138

आवुक्कु आयिनुम्–गायों के रक्षणार्थ हो; अन्तणर्क्कु आयिनुम्–या ब्राह्मणों के लिए हो; ऍळियवर् यावर्क्केनुम् आयिनुम्–निर्बल किसी के लिए भी हो; चाव पॅऱ्ऱवरे–जिनको मरने का भाग्य होता है, वे ही; तकै वान् उऱै–महिमायुक्त स्वर्ग में वास करनेवाले; तेवर्क्कुम्–देवों के लिए भी; तॉळुम्–वन्द्य; तेवर्कळ् आकुवार्–देव बनेंगे। १३८

वे ही मनुष्य देववन्द्य देव बनते हैं, जो गाय, ब्राह्मण या किसी और निर्बल की रक्षा में अपने प्राण खोते है। १३८

शूर रुत्त वनुञ्जुडर् नेमियुम्, ऊर रुत्त वॉरुवनु मोम्बिनुम्
आर रत्तिनीं डन्ऱिनिन् ऱारवर्, वेर रुप्पॅन् वॅरुवन्मि नीरॅन्ऱान् 139

चूर् अऱुत्तवऩुम्–शूरपद्म के संहारक (कार्तिकेय) और; चुटर् नेमियुम्–ज्वलन्त चक्रधारी (विष्णुदेव); ऊर् अऱुत्त ऑरुवनुम्–और त्रिपुरांतक (शिवजी); ओम्पिनुम्–उनकी रक्षा करने आएँ (तो भी); आर्–जो; अऱत्तिनीट्टु अन्ऱि–धर्म से अलग होकर; निन्ऱार्–(पाप-कर्म में प्रवृत्त) रहते है; अवर्–उनको; वेर् अऱुप्पॅन्–जड़ से काट (मिटा) दूँगा; नीर् वॅरुवन्मिन्–आप मत डरिए; ऍन्ऱान्–कहा। १३९

शूरपद्म के संहारक कार्तिकेय, दीप्तचक्रधारी विष्णु, त्रिपुरान्तक शिव —ये सब सहायतार्थ क्यों न आएँ तो भी अधर्मी लोगों को निर्मूल करके ही छोड़ूँगा। आप डरें नहीं। श्रीराम ने यह सुदृढ़ आश्वासन दिया। १३९

उरैत्त वाशहङ् गेट्टुवन् दोङ्गिड, इरैत्त कादल रेहिय विन्नलर्
तिरित्त कोलिनर् तेमरै पाडिनर्, निरुत्त माडिनर् निन्ऱु विळम्बुवार् 140

उरैत्त वाचकम् केट्टु–श्रीराम का कहा हुआ कथन सुनकर; उवन्तु–सन्तुष्ट होकर; ओङ्किट इरैत्त कातलर्–उत्कृष्ट और मुखर प्रेम वाले होकर; एकिय इन्नलर्–मुक्तदुख हो; तिरित्त कोलितर्–दण्ड को घुमाते हुए; ते मऱै पाटितर्–दिव्य वेदगान किया; निरुत्तम् आटिनर्–नृत्य किया और; निन्ऱु विळम्पुवार्–फिर खड़े होकर (वे) बोले। १४०

ये आश्वासन के वचन सुनकर मुनिगण तृप्त हुए। उनका प्रेम उमड़ा और मुखर हुआ। चिन्ताविमुक्त होकर उन्होंने अपने दण्डों को घुमाया, वेदगान और नृत्य किया। बाद वे बोले। १४०

तोन्ऱ नीमुनि यिऱ्पुव नत्तॊहै, मून्ऱु पोल्वन मुप्पदु कोडिवन्
देन्ऱ पोदु मॅदिरल वॅन्ऱलिन्, शान्ऱु वेदम् तवप्पॅरु ञानमे 141

तोन्ऱल्–नायक; नी मुनितियिल्–आप कुपित हों तो; मून्ऱु पुवन तॊकै पोल्वत–तीन लोकों के समूह के समान; मुप्पतु कोटि वन्तु एन्ऱ पोतुम्–तीस करोड़ आकर

लड़े तो भी; ऍतिर् इलै ऍन्ऩ्ऱलिऩ्–सामना नहीं कर सकेंगे, इसके; चाऩ्ऱु–साक्षी; वेतम् तव पॆरु ञात्तमे–वेदों का ज्ञान और उससे प्राप्त ज्ञान ही हैं; अरो–ऐसा है न। १४१

प्रभु ! आप कुपित हो जायें तो यह एक लोकत्रय क्या तीस करोड़ लोकत्रय भी आपका सामना नहीं कर सकते। इसके साक्षी वेद हैं और उनके ज्ञान से प्राप्त ज्ञान हैं। १४१

अऩ्ऩ दादलि नेयिन वाण्डॆलाम्, इन्ऩल् कात्तिङ् गिनिदुऱै वायॆऩ्ऩच्
चॊन्ऩ मादवर् पादन् दॊऴुदुयर्, मन्ऩर् मन्ऩवन् मैन्दनुम् वैहिऩाऩ् 142

अऩ्ऩतु आतलिऩ्–ऐसा है, इसलिए; एयिन आण्टु ऍलाम्–वनवास के लिए नियत सारे दिन; इऩ्ऩल् कात्तु–हमारी संकट से रक्षा करने; इङ्कु इऩितु उऱैवाय्–यहाँ सुख से रहें; ऍऩ्ऩ–ऐसा; चॊऩ्ऩ–जिन्होंने कहा, उन; मातवर् पातम् तॊऴुतु–महान तपस्वियों के चरणों पर नमस्कार करके; उयर् मऩ्ऩर् मऩ्ऩवऩ्–सर्वश्रेष्ठ राजाधिराज (चक्रवर्ती) के; मैन्तनुम्–पुत्र भी; वैकिऩाऩ्–वहाँ ठहरे। १४२

बात ऐसी है। अतः आप वनवास के लिए निर्धारित अवधि भर यहीं सुख से वास करें और हमारी संकट से रक्षा करें। ऋषियों की यह प्रार्थना सुनकर सर्वश्रेष्ठ चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र उनके चरणों पर विनत हुए और वहीं वास करने लगे। १४२

❀ ऐन्दु मैन्दु ममैदियि नाण्डवण्, मैन्दर् तीदिलर् वैहिऩर् मादवर्
शिन्दै यॆण्णि यहत्तियऩ् चेर्हॆन्ऩ, इन्दु नन्नुद ऱन्ऩॊडु मेहिऩार् 143

मैन्तर्–राजकुमार; अवण्–उस तपोवन में; ऐन्तुम् ऐन्तुम् आण्टु–पाँच और पाँच (दस) साल; तीतु इलर्–बिना किसी कठिनाई के; अमैतियिऩ्–शान्ति के साथ; वैकिऩर्–ठहरे; मातवर्–महान तपस्वियों के; चिन्तै ऍण्णि–मन में सोचकर; अकत्तियऩ् चेर्क–अगस्त्य से जा मिले; ऍऩ्ऩ–कहने पर; इन्तु नल् नुतल् तऩ्ऩॊटुम्–इन्दु-सम भाल वाली सीताजी-सह; एकिऩार्–चले। १४३

वे राजकुमार पाँच और पाँच (दस) साल वहीं ठहरे। कोई असुविधा या कष्ट नहीं था। वे शान्ति के साथ वहाँ रहे। पश्चात उन ऋषियों ने मन में सोचकर श्रीराम को सुझाया कि आप अगस्त्यजी से जाकर मिलें। तब श्रीराम और लक्ष्मण इन्दुसम सुन्दर भाल वाली सीताजी के साथ चले। १४३

विडर हङ्गळुम् वेय्ञॆऱि कानमुम्, पडरुञ् जिन्ऩॆऱि पयप्पय नीङ्गिऩार्
शुडरु मेनिच् चुदीक्कण ऩॆन्ऩुमव्, इडरि लाऩुऱै शोलैशॆन् ऱॆय्दिनार् 144

विटर् अकङ्कळुम्–पर्वत-घाटियाँ; वॆय् चॆऱि कान्ऩमुम्–बाँसतरु-संकुल वन; पटरुम्–इनमें जानेवाले; चिल् नॆऱि–सँकरे मार्ग; पय पय नीङ्किऩार्–(तीनों ने)

धीरे-धीरे तय किये; चुटरुम् मेति-तेजोमय शरीर वाले; चुतीक्कणन् ॲंतुम्-सुतीक्ष्ण नाम के; अ इटर् इलान् उऱै-उत्तम दुख-निर्लिप्त ऋषि के वास के; चोलै चॅन्ऱु-आश्रम जाकर; ॲय्तित्तार्-पहुँचे। १४४

पर्वत प्रदेशों, बाँस के वनों आदि से होकर जानेवाले सँकरे मार्ग धीरे-धीरे तय करके वे तेजोमय शरीरी सुतीक्ष्ण नाम के ऋषि के आश्रम में पधारे। १४४

अरुक्क नन्न मुनिवनै यव्वऴि, शॅरुक्किल् शिन्दैयर् शेवडि ताऴ्दलुम्
इरुक्क वीण्डॅन् ऱिनियन कूऱिनान्, मरुक्कोऴ् शोलैयिल् मैन्दरुम् वैहिनार् 145

चॅरुक्कु इल् चिन्तैयर्-घमण्डरहित मन वालों (श्रीराम और लक्ष्मण) के; अ वऴि-वहाँ; अरुक्कन् अन्न मुनिवनै-सूर्योपम मुनि के; चे अटि-मनोहर चरणों पर; ताऴ्तलुम्-नमन करने पर; ईण्टु इरुक्क ॲन्ऱु-यहाँ रहें, ऐसा; इनियन कूऱितान्-मधुर वचन कहे; मैन्तरुम्-राजकुमार भी; मरु कोऴ् चोलैयिल्-सुबासपूर्ण तपोवन में; वैकितार्-ठहरे। १४५

अहंकारशून्य श्रीराम और लक्ष्मण सूर्य-सम तेजोवान उन ऋषि के उत्तम चरणों पर विनत हुए। तब ऋषि ने उन्हें आसन देकर विराजमान कराया। मधुर स्वागत-वचन कहे। सत्कारप्राप्त श्रीराम और लक्ष्मण भी अच्छे बास से युक्त उस आश्रम में ठहरे। १४५

वैहुम् वैहलिन् मादवन् मैन्दर्बाल्, शॅय्है यावैयुञ् जॅय्दिवण् शॅल्वनी
ॲय्द यान्शॅय्द दॅत्तव मॅन्ऱनन्, ऐय नुम्मवर् कन्बन कूऱिनान् 146

मातवन्-महान तपस्वी (सुतीक्ष्ण) के; वैकुम् वैकलिन्-वास के आश्रम में; मैन्तर् पाल्-राजकुमारों को; चॅय्कै यावैयुम् चॅय्तु-सत्कार सब करके; चॅल्व-धनवन्त; नी इवण् ॲय्त-आप इधर पधारे, इसके लिए; यान् चॅय्ततु ॲ तवम्-मेरा किया कौन सा तप था; ॲन्ऱनन्-बोले; ऐयनुम्-प्रभु ने भी; अवर्कु-उनसे; अन्पन-स्नेहपूर्ण; कूऱितान्-बातें कहीं। १४६

ऋषि ने अपने आश्रम में आगत दिव्य अतिथियों का खूब सत्कार किया। फिर कहा कि धनवन्त ! आप इधर पधारे हैं, तो मैंने कितनी विशिष्ट तपस्या की होगी और मेरी तपस्या का कितना ही शुभ फल मिला है ! श्रीराम इसके उत्तर में मधुर वचन बोले। १४६

शॊन्न नान्मुहन् ऱन्वऴित् तोन्ऱिनर्, मुन्नै योरुण् मुयऱव मुऱ्ऱिनार्
उन्निल् यारुळ रुन्नरु ळॅय्दिय, ॲन्निन् यारुळ रिऱ्पिऱन् दारॅन्ऱान् 147

चॊन्न-प्रकीर्तित; नान्मुकन् तन् वऴि तोन्ऱितर्-चतुर्मुख के वंश में उत्पन्न; मुन्नैयोरुळ्-प्राचीन मुनियों में; मुयल् तवम् मुऱ्ऱितार्-कठिन तपस्या करके सुसम्पन्न करनेवाले; उन्तिन् यार् उळर्-आपके समान कौन है; उन् अरुळ् ॲय्तिय-आपकी कृपा के पात्र; इल् पिऱन्तार्-गृहस्थों में; ॲन्तिल् यार् उळर्-मेरे समान कौन हैं; ॲन्ऱान्-कहा। १४७

प्रकीर्तित ब्रह्मा के वंश में उदित अग्रगण्य महर्षियों में कौन हैं, जिन्होने आपके समान तप सम्पन्न किया है ? वैसे ही गृहस्थों में कौन ऐसा है, जिसे आपकी कृपा मिली है, जैसे मुझे ? । १४७

उवमै नीड्गिय तोऩ्ऱ लुरैक्कॅदिर्, नवमै तोऩ्ऱिय नऱ्ऱवन् शॊल्लुवाऩ्
अवमि लाविरुन् दाहियॆऩ् ऩालमै, तवमॆ लाङ्गॊळत् तक्कनै यालॆऩ्ऱाऩ् 148

उवमै नीङ्किय–अनुपमेय; तोऩ्ऱल् उरैक्कु–प्रभु के कथन के; ॲतिर्–उत्तर में; नवमै तोऩ्ऱिय नल् तवऩ्–नये प्रकार की तपस्या के श्रेष्ठ तपस्वी; चॊल्लुवाऩ्–बोले; अवम् इला विरुनतु आकि–अमोघ अतिथि बने आप; ॲऩ्ऩाल् अमै–मेरे अब तक सुसम्पन्न; तवम् ॲलाम्–तप सब; कॊळ तक्कनै–ग्रहण करने अर्ह हैं आप; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा । १४८

श्रीराम थे उपमाहीन । ऋषि थे अपूर्व और नयी तपस्या के कर्ता । ऋषि ने श्रीराम से कहा कि आप अमोघ अतिथि हैं । आप मेरी की हुई तपस्या का सारा फल ग्रहण कर लीजिए । आप इसके अर्ह हैं । १४८

मऱैव लाऩॆदिर् वळ्ळलुङ् गूऱुवाऩ्, इऱैव निऩ्ऩरु ळॆत्तवत् तिऱ्कॊळि
तऱैव दीण्डुण् डहत्तियर् काण्बदोर्, कुऱैहि डन्द दिनियॆनक् कूऱिऩाऩ् 149

वळ्ळलुम्–उदार प्रभु; मऱैवलाऩ् ॲतिर्–वेदज्ञ उनके सामने; कूऱुवाऩ्–बोले; इऱैव–स्वामी; निऩ् अरुळ्–आपका अनुग्रह; ॲ तवत्तिऱ्कु ॲळितु–किस तप के लिए सुलभ (प्राप्य) है; ईण्टु–अब; अऱैवतु उण्टु–कथनीय एक विषय है; इत्ति–अब; अकत्तियर् काण्पतु–अगस्त्य के दर्शन का; ओर् कुऱै किटन्ततु–एक इच्छा अपूर्ण रहती है; ॲन कूऱिऩाऩ्–ऐसा कहा । १४९

वेदव्युत्पन्न मुनिवर से प्रभु ने कहा कि स्वामी ! आपकी कृपा मुझ पर हुई —वह क्या कम है ? कितनी ही बड़ी तपस्या का फल है वह उपलब्धि ! अब आपसे एक निवेदन करना है । अगस्त्यजी के दर्शन की इच्छा अभी पूर्ण नहीं हुई । १४९

नल्ल देनितैन् दायदु नानुमुन्, शॊल्लु वाऩ्ऱुणि हिन्ऱदु तोन्ऱनी
शॆल्दि याण्डवर् चेरुदि शेर्न्दपिऩ्, इल्लै निऩ्वयि नॆय्दहि लादवे 150

तोऩ्ऱल्–प्रभु; नी नल्लते निऩैन्ताय्–आपने अच्छा ही सोचा है; अतु–वही; नाऩुम्–मेरे द्वारा भी; मुऩ् चॊल्लुवाऩ्–पहले कहने का; तुणिकिऩ्ऱतु–निश्चय किया हुआ था; आण्टु चॆल्ति–वहाँ पधारें; अवऩ् चेरुति–उनसे मिलें; चेर्न्तपिऩ्–उनसे मिलने के बाद; निऩ् वयिऩ्–आपके; ॲय्त किल्लातवे–अप्राप्य कोई हित; इल्लै–नहीं ही होंगे । १५०

मुनि ने उत्तर में कहा कि राजकुमार ! आपने ठीक ही सोचा है । मेरा भी वह अभिप्राय था । उधर पधारिए, उनसे मिलिए । उसके बाद आपको प्राप्त न हों, ऐसे कोई मंगल रहेंगे ही नही ! । १५०

अऩ्ऱि युऩ्ऩिऩ् वरविऩै यादरित्, तिऩ्ऱु हाऱुनिऩ् ऱेमुऱु मालवर्
चॅऩ्ऱु शेरुदि शेरुदल् शॅव्वियोय्, नऩ्ऱु दॆवर्क्कुम् यावर्क्कु नऩ्ऱॆना 151

अऩ्ऱियुम्–इसके अलावा; चॅव्वियोय्–पुरुषश्रेष्ठ; निऩ् वरविनै–आपके आगमन की; आतरित्तु–प्रतीक्षा करके; इऩ्ऱु काऱुम्–आज तक; निऩ्ऱु–रहकर; एम् उरुमाल्–तरसते होंगे; चॅऩ्ऱु–जाकर; अवर् चेरुति–उनसे मिलिए; चेर्ऩ्त पिऩ्–मिलने के पश्चात; तेवर्क्कुम् नऩ्ऱु–देवों के लिए भी मंगल है; यावर्क्कुम् नऩ्ऱु–सबके लिए लाभकर है; ऎऩ्ऩा–कहकर। १५१

और भी आपके आगमन की प्रतीक्षा में वे उतावले हो रहे होंगे। इसलिए आप उनसे जाकर मिलिए। उनसे आपका मिलन देवों के लिए भी भला करनेवाला है और अन्य सभी के लिए भी। १५१

❀ **वऴियुङ् गूऱि वरम्बिल वाशिहऴ्**
मॊऴियु मादवऩ् मॊय्मलर्त् ताऴॊऴाप्
पिऴियुऩ् देऩिऱ् पिऱङ्गरु वित्तिरळ्
पॊऴियुज् जोलै विरैविऩिऱ् पोयिऩार् 152

वऴियुम् कूऱि–मार्ग बताकर; वरम्पु इल–निस्सीम; आचिकऴ् मॊऴियुम्–आशीर्वाद देनेवाले; मातवऩ्–महान तपस्वी के; मॊय् मलर् ताऴ् तॊऴा–घना-कमल-सम चरणों की पूजा करके; पिऴियुम् तेऩिल्–छत से निचोड़े जानेवाले शहद की धारा के समान; पिऱङ्कु–वहाँ रहनेवाली; अरुवि तिरळ्–सरिताओं की राशि; पॊऴियुम्–जहाँ जल बहाती थी, उस; चोलै–आश्रम को छोड़कर; विरैविऩिल्–वेग के साथ; पोयिऩार्–आगे चले। १५२

ऐसा कहकर उन्होंने श्रीराम को अगस्त्याश्रम जाने का मार्ग भी बताया। उन्हें पुष्कल आशीर्वाद भी किया। श्रीराम, उनके घने कमल-समान चरणों की वन्दना करके वहाँ से चल पड़े। उस आश्रम में शहद की धारा के समान स्वच्छ सरिताओं की राशि जल बहा रही थी। श्रीराम उस आश्रम से निकलकर वेग के साथ चलने लगे। १५२

❀ **आण्डहैय रव्वयि ऩडैन्दमै यऱिन्दाऩ्**
ईण्डुवहै वेलैतुणै येऴुलह मॆय्द
माण्डवर दऩ्शरण् वणङ्गवॆदिर् वन्दाऩ्
नीण्डतमि ऴालुहै नेमियि ऩळन्दाऩ् 153

नेमियिऩ्–चक्रधारी के त्रिविक्रम अवतार के समान; उलकै–(ज्ञान) लोक को; नीण्ट तमिऴाल्–बहुत प्राचीन तमिऴ भाषा से; अळन्ताऩ्–नापनेवाले (अगस्त्य); आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम का; अ वयिऩ् अटैन्तमै–वहाँ आगमन; अऱिन्ताऩ्–जानकर; तुणै एऴु उलकम्–चौदहों भुवनों को; ईण्टु उवकै वेलै ऎय्त–इधर सुखसमुद्र में मग्न करते हुए; माण्ट वरतऩ्–महिमावान वरद श्रीराम; चरण् वणङ्क–अपने चरण में वन्दना करें, यह सुविधा करते हुए; ऎतिर् वन्ताऩ्–श्रीराम के सामने (अपने कुटीर से निकलकर) आये। १५३

(वाल्मीकी में श्रीराम का पहले अगस्त्य के भाई सुदर्शन के आश्रम में जाने की चर्चा है। अगस्त्याश्रम जाने से पहले सीताजी ने श्रीराम को बताया कि अकारण राक्षसों को मारना पाप है —यह भी वृत्तान्त है।) अब वे अगस्त्याश्रम आ गये। अगस्त्य जिन्होंने, जैसे त्रिविक्रम ने तीनों लोकों को नापा था, तमिळ भाषा द्वारा ज्ञानलोक को मापा था यानी तमिळ में ज्ञान को समाहित किया था, जान गये कि श्रीराम अपने आश्रम में पधारे हैं। वे स्वयं उनके सामने आ गये ताकि महिमावान वरद श्रीराम चौदहों भुवनों को सन्तोष-सागर में मग्न करते हुए उनके चरणों पर विनत हों। १५३

❀ पण्डवुणर् मूळ्हित्तर् पडार्हळॆन्न वाऩोर्
ॲण्डव वॆमक्करुळ हॆन्नक्कुऱै यिरप्पक्
कण्डोर्हॆ वारित्तऩ्मु हन्दुकड लॆल्लाम्
उण्डवर्हळ् पिऩ्नुमिळ्ह वॆन्ऱलु मुमिळ्न्दान् 154

वाऩोर्—देव; पण्टु—पहले; अवुणर्—असुर लोग; मूळ्कित्तर्—समुद्र में डूबे; पटार्कळ्—नहीं मरेंगे; ॲन्न—सोचकर; ॲण् तव—सम्मान्य तपोधन; ॲमक्कु अरुळ्क—हम पर कृपा करें; ॲन कुऱै इरप्प—ऐसा कष्ट निवेदन करने पर; कण्टु—विषय समझकर; कटल् ॲल्लाम्—सातों समुद्रों को; ऒरु कै-वारित्तन् मुकन्तु—एक हाथ में उठा लेकर; उण्टु—घूँट लेकर; पिन् अवर्कळ् उमिळ्क ॲन्ऱलुम्—फिर उनके 'बाहर उगल दीजिए' कहने पर; उमिळ्न्तान्—बाहर थूक दिया। १५४

पहले कभी, वृत्रासुर आदि समुद्र में जाकर छिप गये। देवेन्द्र और अन्य देव समझ गए कि ये समुद्र में छिपे हैं। उनको मारना असम्भव है। इसलिए वे अगस्त्य के पास आये और प्रार्थना की कि सम्मान्य तपोधन! हम पर कृपा कीजिए। अगस्त्य ने बात समझ ली। उन्होंने सातों समुद्रों का जल अपने चुल्लू में भरकर घूँट लिया। फिर देवों के प्रार्थना करने पर ही उसे थूका और समुद्रों को जल-भरा बनाया। ऐसे महिमावान थे वे। १५४

तूयकड नीरैमुळ्ळ दुण्डवै तुरन्दान्
आयवव नालमरु मॆय्युडैय नन्नान्
मायविऩै वाळवुणन् वादवितन् वन्मैक्
कायमिनि दुण्डुलहि नारिडर् कळैन्दान् 155

तूय कटल् नीरै—पवित्र सागर-जल को; मुळ्ळुतु उण्टु—पूरा घूँटकर; अवै तुरन्तान्—उसे थूकनेवाले; आयवतुम्—वे ऋषि भी; आल् अमरुम् मॆय् उटैयन्—वट-बीज-सम छोटी आकृति वाले हैं; अन्नतान्—उन्होंने; माय विऩै—मायावी कार्य करनेवाले; वाळ् अवुणन्—तलवारधारी असुर; वातपि—वातापि नाम के; वन्मै—शक्तियुक्त; कायम् इनितु उण्टु—शरीर को सुखपूर्वक खाकर; उलकिन् आर् इटर्—संसार का घोर संकट; कळैन्तान्—दूर किया था। १५५

सागरजल सारा एक घूँट में पीनेवाले वे आकृति में बहुत छोटे थे और जैसे वट-बीज में उतना बड़ा वटवृक्ष अव्यक्त रहता है, उसी तरह उस आकृति के अन्दर बड़ी महिमा छिपी थी। उन्होंने मायावी, कपटकर्मा वातापि का शरीर भक्षण करके उसकी मृत्यु द्वारा लोकहित किया था। कथा इस प्रकार है— इल्वल और वातापि दो दानव भाई थे। इल्वल वातापि को मेष बनाकर मारता और उसे पका देता। वह ब्राह्मणों को श्राद्ध कहकर निमन्त्रण देता और खिलाने के बाद वातापि को बुलाता। वातापि ब्राह्मण का पेट चीरकर बाहर आ जाता। दोनों मृतक ब्राह्मण को खा जाते। यही चाल उन्होंने अगस्त्य से भी चली। पर अगस्त्य वातापि को जीर्ण कर गये। संसार की आफ़त मिटी। १५५

❀ योहमुरु पेरुयिर्ह डामुलैवु ऱामल्, एहुनॆऱि यादॆन्न मिदित्तडियि नेॆऱि
मेह्नॆंडु मालैतवळ् विन्दमॆनुम् विण्डोय्, नाहमदु नाहमुऱ नाहमॆन्न निन्ऱान् 156

योकम् उरु पेर् उयिर्कळ् ताम्—उद्योगशील बड़ी संख्या के जीव; उलैवु उऱामल्—बिना हानि के; एकुम् नॆऱि यातु—जायँ, ऐसा मार्ग क्या है; ऍन्न—(देवों के) पूछने पर; अटियिन् मितित्तु एऱि—अपने चरणों को रखते हुए उसके ऊपर चढ़कर; मेकम् नॆंटु माले तवळ्—मेघ-मालाएँ जिस पर रेंगती थीं, उस; विन्तम् ऍन्नुम्—विन्ध्य नाम के; विण् तोय्—गगनस्पर्शी; नाकम् अतु—पर्वत को; नाकम् उऱ—नागलोक (पाताल) तक धँसाते हुए; नाकमॆन—एक गज के समान; निन्ऱान्—खड़े रहे। १५६

(विन्ध्य पर्वत सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों से वैर करके ऊँचा बढ़ा और ग्रहों की गति रुक गयी और जीवों का उद्यम भी बेकार होने लगा।) देवों ने अगस्त्य से प्रार्थना की कि इन उद्यमी जीवों का आना-जाना कैसे हो? तब अगस्त्य उस पर पग धरकर चढ़े और गज के समान उसके ऊपर खड़े हो गये। तब वह पर्वत धँसकर नागलोक पहुँच गया। (नाकम् के तीन अर्थ हैं— पर्वत, पाताललोक और गज।)। १५६

❀ मूशरवु शूडुमुद लोनुरैयिन् मूवा, माशिऱव वेॆन्न वडादुदिशै मेन्नाळ्
नीशमुऱ वानिन्नॆंडु मामलय नेरा, ईशनिह रायुलहु शीर्पॆऱ विरुन्दान् 157

मेल् नाळ्—पहले किसी दिन; वटातु तिचै—उत्तर दिशा; नीचम् उऱ—नीचे चली गई, तब; मूचु अरवु चटु मुतलोन—घने नागाभरण देव (शिवजी) ने; मूवा—वार्द्धक्य से अप्रभावित; माचु इल् तव—और अकलंक तपस्वी; एकु ऍन्न—तुम (दक्षिण) जाओ, कहा, तब; वानिन् नॆंटु मा मलयम्—आकाश तक ऊँचे बढ़े मलयपर्वत; नेरा—पहुँचकर; ईचन् निकराय्—शिवजी की समान स्थिति में; उलकु चीर् पॆऱ—भूमि को सम बनाते हुए; इरुन्तान्—बस गये। १५७

(एक बार परमेश्वर के विवाह के अवसर पर सभी जीवराशियाँ उत्तर में आ गयीं और भूमि का उत्तरी भाग नीचा हो गया। भूमि का सन्तुलन बिगड़ गया। तब) अनेक सर्पों को आभरण के रूप में धारण

करनेवाले शिवजी ने अगस्त्यजी से कहा कि हे वार्द्धक्य से अप्रभावित तेज वाले ! अकलंक तपस्वी ! आप दक्षिण में चले जाइए। अगस्त्य दक्षिण गए और गगन तक उन्नत मलय पर्वत में रह गये। भूमि समतल हो गयी और अगस्त्य शिवजी की समानता की स्थिति में मान्य हो गये। १५७

उळक्कुमऱै नालिनु मुयर्न्दुलह मोदुम्
वळक्किनु मदिक्कवैयि नुम्मरवि नाडि
निळर्पोऴि कणिच्चिमणि नेर्ऱियुमिऴ् शॅङ्गण्
तळर्पुरै शुडर्क्कडवु डन्दतमिऴ् तन्दान् 158

निळल् पोऴि–प्रकाश बरसानेवाला; कणिच्चि–परशु (तप्त-आयस ?); मणि नेर्ऱि–सुन्दर भाल पर; उमिऴ् चॅम् कण्–लाली फैलानेवाली आँख; तळल् पुरै चुटर्–अग्नि-सम तेज; कटवुळ्–इनसे युक्त ईश्वर ने; तनृत–जो दिया (सिखाया) था; तमिऴ्–उस तमिऴ को; उळक्कु मऱै नालितुम्–परिश्रम के साथ अध्येय चारों वेदों; उलकम् उयर्न्तु ओतुम् वळक्कित्तुम्–संसार के श्रेष्ठ ज्ञानियों के प्रयोग-प्रणालियों; मति कवैयित्तुम्–और अपनी बुद्धि से किये हुए अन्वेषण के आधार पर; मरपिन्–उचित परिपाटी के अनुसार; नाटि–खूब खोजकर; तन्तात–व्याकरण शुद्ध बनाकर दिया था। १५८

जाज्वल्यमान परशु, सुन्दर भाल का लाल नेत्र और अग्निसम तेजोमय रूप —इनसे युक्त शिवजी ने अगस्त्यजी को तमिऴ सिखायी। (पाणिनी को संस्कृत —ऐसा पुराण कहता है।) तब अगस्त्य ने बहुत परिश्रम से अध्येय वेद, लोकरूढ़ी और अपनी मेधा-शक्ति का प्रयोग कर उचित रीति से अन्वेषण किया और तमिऴ को व्याकरण-बद्ध श्रेष्ठ भाषा बना दिया। १५८

❀ विण्णिनि निलत्तिनिल् विहर्पवुल हिर्पेर्
ऎण्णिनि लिरुक्किनि लिरुक्कुमॆन यारुम्
उण्णिनै करुत्तिनै युऱप्पॆऱुवॆ नाळॆन्
कण्णिनि लॆन्क्कोडु कळिप्पुरु मनत्तान् 159

विण्णितिल्–देवलोक में; निलत्तितिल्–भूलोक में; विकर्प उलकित्–इनसे जुदा अन्य लोकों में; पेर् ऎण्णितिल्–बड़े गणित-शास्त्रों में; इरुक्कितिल्–वेदों के ऋचाओं में; इरुक्कुम् ऎन–विद्यमान हैं, ऐसा; यारुम् उळ् नितै करुत्तितै–सभी जिसका मन में ध्यान करते हैं, उस परमतत्व को; ऎन् कण्णितिल्–अपनी आँखों के; उऱ पॆऱुवॆन्–गोचर बनते देखूँगा; ऎन्न कोटु–यह विचारकर; कळिप्पु उऱु मनत्तान्–हर्षितमन हुए। १५९

ऐसे अगस्त्य अब अपार हर्ष से भर गये। क्या आज मुझे ऐसा भाग्य मिल रहा है जिससे वह तत्व, जिसको देवलोक, भूलोक और इनसे अलग अन्य लोकों के लोग वेदों और श्रेष्ठ गणित (तर्क) शास्त्रों में ढूँढ़ते

हैं और सदा-सर्वदा स्मरण करते हैं, आज दृष्टिगोचर होगा ? इस कल्पना से ही उनके मन में आनन्द उमड़ आया। १५९

❀ इरैत्तमऱै नालिनो डियैन्दपिऱ यावुम्
निरैत्तनॆऱि आन्निमिर् कल्लिनॆडु नाळिट्
टुरैत्तुमय नारुमऱि यादपॊरु ळोविन्
ऱुरैत्तदुवु मालॆन्नु मुणर्च्चियि नुवप्पान् 160

इरैत्त मऱै–उद्‌गीत वेद; नालिन् ओडु–चारों के साथ; इयैन्त पिऱ यावुम्–लगे रहनेवाले अन्य सभी शास्त्र, पुराण आदि में; निरैत्त–अभ्यस्त; नॆऱि आन्म्–सन्मार्ग से प्राप्त ज्ञान की; निमिर् कल्लिल्–उत्कृष्ट कसौटी में; नॆटु नाळ् इट्टु उरैत्तुम्–अनेक दिन कसकर देखने पर भी; अयन्नारुम् अरियात–ब्रह्मदेव को भी अज्ञात; पॊरुळो–वह परवस्तु क्या; इन्ऱु–आज; उरैत्तु–मेरे साथ सम्भाषण करके; उतवुम् आल्–कृपा करेगी; ऍन्नुम्–इस; उणर्च्चियिन्–भावोद्वेग में; उवप्पान्–बहुत आनन्दमग्न हुए। १६०

उद्‌गीत चारों वेद और अन्य शास्त्र, पुराण आदि का खूब अध्ययन, अन्वेषण करके उससे प्राप्त ज्ञान की कसौटी पर बहुत दिन कसकर देखने पर भी ब्रह्मादि देवों से भी जिस परतत्व को वस्तुतः समझना कठिन है, क्या वह परब्रह्म आज मेरे साथ वार्तालाप करेगा और मुझ पर कृपा करेगा! हा! कितना भाग्यवान हूँ! इस भावोद्वेग में वे हर्षविह्वल हो गये। १६०

❀ उयन्दन रिमैप्पिल रुयिर्त्तनर् तवत्तोर्
अन्दण रऱत्तिनॆऱि निन्ऱनरॆह ळान्नार्
वॆन्दिऱ लरक्कर्विड वेर्मुद लऱुप्पान्
वन्दनन् मरुत्तुव नॆनत्तनि वलिप्पान् 161

वॆम् तिऱल् अरक्कर्–भयंकर और शक्तिमन्त राक्षस रूपी; विट वेर् मुतल् अऱुप्पान्–विषैली जड़ को जो निर्मूल करेंगे; मरुत्तुवन्–वे वैद्य; वन्त तन्–आये; इमैप्पु इलर्–निर्निमेष (सुर); उयन्तनर्–तर गये; तवत्तोर् उयिर्त्तनर्–तपस्वी लोग प्राण-रक्षित हो गये; अन्तणर् अऱत्तिन् नॆऱि–ब्राह्मण धर्म-मार्ग में; निन्ऱनर्कळ् आन्नार्–चलनेवाले हो गये; ऍन–ऐसा सोचकर; तनि वलिप्पान्–विशेष साहसपूर्ण हो गये। १६१

भयंकर और बलवान राक्षस रूपी विष की जड़ को ही उखाड़ने के लिए वैद्य के समान श्रीराम आ गये। अब निर्निमेष आँखों वाले देवों का संकट मिट गया और वे दुखनिवृत्त हो गए। तपस्वीजन जीवन्त हो गए। ब्राह्मण लोग धर्ममार्गगामी बने। ऐसी धारणा करके वे उत्साही और साहसी बने। १६१

एनैयुयि रामुलवै यावुमिडै वेवित्, तूनुह ररक्करुर मिऱ्चुडु शिनत्तिऩ्
आऩव ऩलैक्कडि दवित्तुल हळिप्पान्, वाऩमऴै वन्ददेन मैनुदुरु मनत्ताऩ् 162

एऩै उयिराम्–अन्य जीव; उलवै यावुम्–सभी मुरझाए (भयातुर) लोगों को; वेवित्तु–उबालकर; ऊऩ् नुकर्–उनका मांस खानेवाले; अरक्कर्–राक्षस रूपी; उरुमिल् चुट्टु चिनत्तिऩ्–वज्र के समान जलानेवाले क्रोध की; काऩ् अऴलै–दावाग्नि को; कटितु अवित्तु–सत्वर बुझाकर; उलकु अळिप्पाऩ्–लोकों की रक्षा करने के लिए; वान मऴै वन्ततु–मेघों से वारिश आई; ऍऩ्ऩ–ऐसा; मैनुतु उरु मनत्ताऩ्–उत्साह-भरे मन वाले। १६२

राक्षस लोग, पहले ही उनसे डरकर मुरझाते रहे जीवों को पकड़कर उन्हे उबालकर खा लेते थे। वे गाज के समान जलानेवाली दावाग्नि थे। उस दावाग्नि को बुझाने के लिए आकाश के मेघों से गिरनेवाले जल के समान श्रीराम लोकरक्षणार्थ आ गए। यह सोचकर अगस्त्य उत्फुल्लमन हो गए। १६२

❀ कण्डन ऩिरामनै वरक्करुणै कूरप्
पुण्डरिह वाणयन नीरपॊऴिय निऩ्ऱान्
ऍण्डिशैयु मेऴ्लहु मॆव्वुयिरु मुय्यक्
कुण्डिहैयि ऩिऱ्पॊरुविल् काविरि कॊण्रन्दान् 163

ऍण् तिचैयुम्–आठों दिशाएँ; एऴ् उलकुम्–सातों लोक; ऍ उयिरुम्–कोई भी जीव; उय्य–तरें, इसके लिए; कुण्टिकैयिऩिल्–अपने मण्डलु में; पॊरुवु इल्–उपमा-रहित; काविरि कॊणर्न्ताऩ्–कावेरी नदी को (ब्रह्मलोक से) जो लाये, वे अगस्त्य; इरामनै वर कण्टऩऩ्–श्रीराम को आते हुए देखकर; करुणै कूर–कृपा के उमगते; पुण्टरिक–कमलपुष्प के समान; वाळ्–प्रकाशमान; नयऩम्–आँखों से; नीर् पॊऴिय–आँसू बरसाते हुए; निऩ्ऱान्–खड़े रहे। १६३

अगस्त्य आठों दिशाओं और सातों लोकों में रहनेवाले जीवों के उद्धार के लिए ब्रह्मलोक से अपने कमण्डलु में कावेरी नदी को लाये थे। ये श्रीराम को आते देखकर आनन्दवाष्पाकुल कमलनेत्रों के साथ श्रीराम के सामने खड़े रहे। १६३

❀ निऩ्ऱवनै वन्दनॆडि योऩडि पणिन्दान्
अऩ्ऱवनु मन्वीडु तऴीइयऴुद कण्णान्
नऩ्ऱुवर वॆऩ्ऱुपल नल्लुरै पहर्न्दान्
ऍऩ्ऱुमुळ दॆन्ऱमि ऴियम्बियिशै कॊण्डान् 164

निऩ्ऱवनै–वैसे स्थित उनके; वन्त नॆटियोऩ्–उधर जो पधारे, वे विष्णु श्रीराम; अटि पणिन्ताऩ्–चरणों पर नतमस्तक हुए; अऩ्ऱु–तब; ऍऩ्ऱुम् उळ–सदा से रहनेवाली; तॆन् तमिऴ्–(दक्षिणी या) मधुसम तमिऴ; इयम्पि–रचकर; इचै

कॊण्टात्–कीर्ति जो पा चुके; अवत्तुम्–उन्होंने; अन्पॊटु तळीइ–प्रेम के साथ गले लगाकर; अळुत कण्णात्–बाष्पपूरित आँखों वाले बनकर; नन्रु वरवु–शुभ हो आपका आगमन; ॲन्रु–कहकर; पल नल् उरै–अनेक शिष्टाचार-वचन; पकर्न्तात्–कहे। १६४

आत्मविभोर होकर जो खड़े रहे उनके चरणों को, श्रीराम ने, जो वहाँ पधारे और जो त्रिविक्रम देवता ही थे, नमस्कार किया। तब नित्य रहनेवाली मधुर तमिळ देकर जो कीर्तिमान बने, उन अगस्त्य ने उन्हें स्नेह के साथ गले लगाकर नेत्रों से आनन्द का बाष्प बहाते हुए कहा कि आपका आगमन शुभ हो। १६४

❀ वेदियर्हळ् वेदमौळि वेरुपल कूरक्
कादन्मिह निन्रॊळिर् कमण्डलुवि नन्नीर्
मादवर्हळ् वीशिनॆडु मामलर्ह डूवप्
पोदुमण नारुकुळिर् शोलैहॊडु पुक्कान् 165

वेतियर्कळ्–वेदज्ञ ब्राह्मण लोगों ने; वेरु पल–विभिन्न अनेक; वेत मौळि कूर–वेद (के) मंगलाशासन किया; मातवर्कळ्–महान तपस्वियों ने; कातल् मिक–प्रेम के बढ़ते; निन्रु–सामने खड़े होकर; ऑळिर् कमण्टलुविन्–शुभकारी कमण्डलु के; नल् नीर् वीचि–पवित्र जल को (मन्त्रोच्चारण के साथ) छिड़काकर; नॆटु मा मलर्कळ् तूव–सुन्दर फूलों को देर तक बरसाया; पोतु कणम् नारुम्–(तब अगस्त्य) तभी खुले हुए पुष्पों की गन्ध से पूर्ण; कुळिर् चोलै कॊंटु–शीतल आश्रम में ले जाकर; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। १६५

वेदज्ञ ब्राह्मणों ने विविध वेदों के मन्त्र उच्चारण करते हुए मंगलाशासन किया। महान तपस्वियों ने बढ़ते प्रेम के साथ अपने कमण्डलुओं से पवित्र जल लेकर मंगलदायी मंत्रों को कहते हुए श्रीराम पर छिड़का। तब अगस्त्य श्रीराम (आदि) को लेते हुए नवीन, विकसित पुष्पों की सुगन्ध से पूर्ण अपने तपोवन में ले गये। १६५

❀ पौरुन्दवम लन्बॊळि लहत्तिनिदु पुक्कान्
विरुन्दव णमैत्तपिन् विरुम्बिनन् विरुम्बि
इरुन्दव मिळैत्तवॆन् दिल्लिडैयिल् वन्दॆन्
अरुन्दव मुडित्तनै यरुट्करश वॆन्रान् 166

अमलन्–निर्मल श्रीराम; पॊळिल् अकत्तु–तपोवन में; पॊरुन्त–चाव के साथ ठहरने; इनितु पुक्कान्–आनन्द के साथ पहुँचे; अवन्–वे महर्षि; विरुम्पिनन्–प्यार के साथ; विरुन्तु अमैत्त पिन्–भोजन कराने के बाद; अरुट्कु अरच–कृपालु प्रभु; इरुम् तवम् इळैत्त–बड़ी तपस्या जहाँ करता रहा; ॲन्तु इल् इटैयिल्–मेरे इस कुटीर में; विरुम्पि वन्तु–आप ही चाहकर आये; ॲन् अरुम् तवम् मुटित्तनै–और मेरी तपस्या को सम्पन्न बना दिया; ॲन्रान्–बोले। १६६

पवित्र पुरुष श्रीराम भी उधर सुख से रहने का विचार करके आनन्द के साथ गये। महर्षि ने उनको भोजनादि सत्कार करने के बाद उनसे कहा कि कृपालु प्रभु ! मेरे इस तपोवन में, जहाँ मैं लम्बे अरसे से तपस्या कर रहा हूँ, आप पधारे और मेरे कुटीर को अपनी इच्छा से पवित्र किया है। आपने ऐसा करके मेरे तप को सुसंपन्न कराया है ! मेरी तपस्या सफलीभूत हुई। १६६

❀ ऍऩ्ऱमुऩि यॆत्तॊऴु दिराम ऩिमैयोरुम्
निऩ्ऱतव मुऱ्ऱुनॆडि योरिनॆंडि योरुम्
उऩ्ऱनरुळ् पॆऱ्ऱिलर्‌ह ळुऩ्ऩरुळ् शुमन्देऩ्
वॆऩ्ऱऩ ऩनैत्तुलहु मेलिनियॆ ऩॆऩ्ऱाऩ् 167

ऍऩ्ऱ मुऩियै–ऐसा जिन्होंने कहा उन मुनि को; इरामऩ्–श्रीराम; तॊऴुतु–नमस्कार करके; इमैयोरुम्–देवता लोग; निऩ्ऱ तवम् मुऱ्ऱु–क्रियमाण तपस्या को जो पूरा कर चुके; नॆटियोरिऩ् नॆटियोरुम्–श्रेष्ठों से भी श्रेष्ठ वे तपस्वी भी; उऩ्ऱऩ् अरुळ् पॆऱ्ऱिलर्कळ्–आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके; उऩ् अरुळ् चुमन्तेऩ्–मैं आपकी कृपा का पात्र बना हूँ; अनैत्तुलकुम्–सारे लोकों को; वॆऩ्ऱऩऩ्–जीतनेवाला बन गया; मेल्–इससे श्रेष्ठ; इति ऍऩ्–अब क्या चाहिए; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। १६७

ऐसा शिष्टाचारवचन कहनेवाले अगस्त्यजी को नमस्कार करके श्रीराम ने कथन किया कि हे महर्षि ! देव क्या, अपनी तपस्या को सुसंपन्न कर चुके महान से महान तपस्वी क्या —वे भी आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके है। लेकिन मैं आपकी कृपा का पात्र बन गया। इसलिए सर्वलोक-जयी हो गया। इससे बढ़कर कौन सा भाग्य है, जो मैं पाना चाहूँ ? । १६७

❀ तण्डह वऩत्तुऱैदि यॆऩ्ऱुरै तरक्कॊण्
डुण्डुवर वित्तिशै यॆऩप्पॆरि दुवन्देऩ्
ऍण्डहु गुणत्तिऩै यॆऩक्कॊडुयर् शॆऩ्ऩित्
तुण्डमदि वैत्तवऩै यॊत्तमुनि शॊल्लुम् 168

उयर् चॆऩ्ऩि–अपने श्रेष्ठ सिर पर; तुण्ट मति–कलाचन्द्र को; कॊट्टु–लेकर; वैत्तवऩ्–धरनेवाले; ऒत्त–(शिवजी से) तुल्य; मुऩि–महर्षि; ऍण् तकु कुणत्तिऩै–प्रशंसनीय गुण वाले; तण्टक वऩत्तु उऱैति–दण्डकवन में रहते हैं; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उरै तर कॊण्टु–वचन के कहे जाते सुनकर; उण्टु वरवु इ तिचै–आना होगा आपको इस दिशा में; ऍऩ–यह निश्चय करके; पॆरितु उवन्तेऩ्–बहुत आनन्दित हुआ; ऍऩ–कहा और; चॊल्लुम्–और आगे कहा। १६८

अपने सिर पर कलाचन्द्र धारण करनेवाले शिवजी-सदृश अगस्त्य ने कहा कि सबसे प्रशंसनीय गुण वाले श्रीराम ! यहाँ आगत मुनियों से यह समाचार मिला था कि आप दण्डक वन में वास कर रहे हैं। तब

सोचा कि इसी ओर आपका आगमन संभाव्य है। इस विचार से मैं बहुत आनन्दित हुआ। वे आगे बोले। १६८

❀ ईण्डुरैदि यैयविन्नि यिव्वयि न्निरुन्दाल्
वेण्डियन्न मादवम् विरुम्बिनै मुडिप्पाय्
तूण्डुशिन्न वाणिरुदर् तोन्ऱियुळ रॆन्ऱाल्
माण्डुह मलैन्दॆमर् मनत्तुयर् तुडैप्पाय् 169

ऐय–प्रभु; ईण्टु उऱैति–यहाँ ठहरिए; इ वयिन् इरुन्ताल्–इधर रहेंगे तो; इन्नि–आगे; वेण्टियन्न मातवम्–जो चाहेंगे वे महान तप; मुटिप्पाय्–सम्पन्न कर सकेंगे; तूण्टु चिन–उकसाए हुए क्रोध के साथ; वाळ् निरुतर्–तलवारधारी राक्षस; तोन्ऱि उळर् ऍन्ऱाल्–प्रकट हो आयँगे तो; माण्टु उक–उनको मारकर गिराते हुए; मलैन्तु–उनसे लड़कर; ऍमर्–हम जैसों का; मन तुयर्–मन के क्लेश को; तुटैप्पाय्–दूर कर सकेंगे। १६९

प्रभु ! यहीं ठहरिए। इधर रहने से आपको सुविधा होगी। आप अपने इच्छित तप, व्रत आदि का पालन कर सकेंगे। और भी उकसाये क्रोध वाले तलवारधारी राक्षस इधर प्रकट होंगे तो आप उन्हें मार मिटाकर हमारी रक्षा कर सकेंगे और हम जैसे मुनियों का क्लेश दूर कर सकेंगे। १६९

❀ वाऴुमऱै वाऴुमनु नीदियऱम् वाऴम्
ताऴुमिमै योरुयर्वर् तानवर्ह डाऴ्वार्
आऴियुऴ वन्बुदल्व वैयमिलै मॆय्ये
एऴुलहम् वाऴुमिनि यिङ्गुऱैदि यॆन्ऱान् 170

आऴि उऴवन् पुतल्व–आज्ञाचक्र-कृषक चक्रवर्ती के पुत्र; इनि मऱै वाऴुम्–अब वेद जी गए; मनु नीति वाऴुम्–मनुनीति स्थिर हो गई; अऱम् वाऴुम्–(बत्तीस) धर्म जी जायँगे; एऴ् उलकम् वाऴुम्–सातों लोक जी जाएँगे; ताऴुम् इमैयोर्–अवनत देवता लोग; उयर्वर्–उन्नत हो जायँगे; तानवर्कळ् ताऴ्वार्–दानव अवनत हो जायँगे; ऐयम् इलै–सन्देह नहीं; मॆय्ये–यह सत्य है; इङ्कु उऱैति–यहाँ वास कीजिए; ऍन्ऱान्–(अगस्त्य) ऐसा बोले। १७०

आज्ञाचक्र चलानेवाले चक्रवर्ती के पुत्र ! आगे वेद जी जायँगे। मनुनीति सुस्थापित हो जायगी। (बत्तीस ?) धर्म टिक जायँगे। सातों लोक पनपेंगे। अवनत देवता लोग उन्नत हो जायेंगे और राक्षस गिर जायँगे। हाँ, शक नही। यह ध्रुवसत्य है। इसलिए आप यहीं वास कीजिए। १७०

❀ शॆरुक्कुडै यरक्कर्पुरि तीमैशिदै वॆय्दत्
तरुक्कऴि दरक्कडिदु कोल्वदु शमैन्देन्

वरुक्कमरै योयवर् वरुन्दिशैयिन् मुन्दुर्
रिरुक्कैनल तॆर्करुळ्ह वॆन्ऱन निरामन् 171

इरामन्–श्रीराम ने; वरुक्क मरैयोय्—अंग-उपांगों के साथ वेदों के ज्ञाता; चॆरुक्कु उटै अरक्कर्–घमण्डी राक्षस; पुरि–जो करते हैं; तीमै–अत्याचार; चितैव् ऎय्त–उनको मिटाते हुए; तरुक्कु अऴि तर–गर्व चूर करते हुए; कटितु कॊल्वतु चमैन्तॆन्–शीघ्र उनको मारने का संकल्प कर लिया है; अवर् वरुम् तिचैयिल्–उनके आने की दिशा में; मुन्तु उऱ्ऱु–पहले जाकर; इरुक्कै–प्रतीक्षा में रहना; नलन्–अच्छा होगा; ऎऱ्कु अरुळ्क–हमें आज्ञा देने की कृपा करें; ऎन्ऱनन्–यह इच्छा सुनाई। १७१

श्रीराम ने अगस्त्य से कहा कि हे श्रेणीबद्ध वेदों के ज्ञाता ! मैंने इन गर्वीले राक्षसों के अत्याचारों का अन्त करने के लिए उनके घमण्ड को चूर करते हुए उन्हें मिटाने का संकल्प किया है। इसलिए उनके आने के मार्ग में सामने जाकर प्रतीक्षा में रहना सुविधाजनक होगा —ऐसा समझता हूँ। आप मुझे आशीर्वाद के साथ आज्ञा दें। १७१

❀ विऴुमियदु शॊऱ्ऱनैयिव् विल्लिदिवण् मेन्नाळ्
मुळ्मुदल्वन् वैत्तुळदु मूवुलहुम् यानुम्
वऴिपड विरुप्पदिदु तन्नॊवडि वाळिक्
कुऴुवऴुविल् पुट्टिलॊडु कोडियॆन नल्हि 172

विऴुमियतु चॊऱ्ऱै–श्रेष्ठ बात कही; इवण्–यहाँ; इ विल् इतु–यह धनु; मेल् नाळ्–पहले किसी दिन; मुळु मुतल्वन् वैत्तु उळतु–परात्पर ब्रह्म ने रखा था; मू उलकुम्–त्रिभुवन; यानुम्–और मैं; वऴि पट इरुप्पतु–इसकी पूजा करते हैं, ऐसा; इतु तन्नै–इसको; वटि वाळि कुऴु–तीक्ष्ण शर-राशि; वऴुवु इल्–अक्षय; पुट्टिल् ऒटु–तूणीर के साथ; कोटि–ग्रहण कर लें; ऎन–कहकर; नल्कि–उन्हें प्रदान करके। १७२

अगस्त्यजी ने उत्तर में कहा कि हे श्रीराम ! आपने अच्छा सोचा है ! यहाँ यह जो धनुष है, यह परात्पर विष्णुदेव के पास रहा था। यह मेरे और त्रिभुवन द्वारा पूजित है। इसको और तीक्ष्ण अनेक शरों को अक्षय तूणीरों के साथ आप ग्रहण कर लीजिए। यह कहकर उन्होंने उनको श्रीराम के पास समर्पित किया। १७२

❀ इप्पुवन मुऱ्ऱुमॊरु तट्टिनिडै यिट्टाल्
ऒप्पुर विऱ्ऱॆन्न वुरैप्परिय वाळुम्
वॆप्पुरुवु पॆऱ्ऱवरन् मेरुवरै विल्ला
मुप्पुर मेरित्तदनि मॊय्हणैयु नल्हा 173

इ पुवनम् मुऱ्ऱुम्–इस भुवन भर को; ऒरु तट्टिन् इटै–एक (तराजू के) पलड़े में रखकर; इट्टाल्–(इसको दूसरे पलड़े में) रखें तो; ऒप्पु वरविऱ्ऱु ऎन्न–समान

होंगे; उरैप्पु अरिय–ऐसा कहने न योग्य; वाळ्म्–एक तलवार को; वॅप्पु उरुवु पॅर्र–अग्नि रूप के; अरन्–हरदेव ने; मेरु वरै विल्ला–मेरुपर्वत को धनुष बनाकर; मुप्पुरम् ऍरितृत–त्रिपुर को जिससे जलाया; तत्ति मोय् कणैयुम्–उस अनुपम सारयुक्त शर को भी; नल्का–देकर। १७३

और भी एक तलवार है। उसे तराजू के एक पलड़े में और तीनों लोकों को एक पलड़े में रखेंगे तो दोनों समान होंगे —ऐसा कहना सही नहीं होगा क्योंकि तलवार तीनों लोकों की विजय करने की शक्ति रखती है और महिमामय है। उन्होंने वह तलवार श्रीराम के पास दी। और अग्निमूर्ति शिवजी ने महामेरु को धनुष बनाकर जिस अप्रतिम शर से त्रिपुरदाह कराया था, उस बाण को भी उनके पास दिया। १७३

❀ ओङ्गुमर नोङ्गिमलै योङ्गिमण लोङ्गिप्
पूङ्गुलै कुलावुहुळिर् शोलैपुडै विम्मित्
तूङ्गुदिरै यारुतवळ् शूळ्लदोर् कुन्ऱिन्
पाङ्गरुळ दालुरैयुळ् पञ्जवडि मञ्ज 174

मञ्च–राजकुमार; ओङ्कु मरन् ओङ्कि–ऊँचे पेड़ जहाँ ऊँचे उगे हैं; मलै ओङ्कि–उन्नत पर्वत हैं; मणल् ओङ्कि–बालू के ऊँचे टीले पाये जाते हैं; पूम् कुलै कुलावु–पुष्पों के गुच्छे मिलते है; कुळिर् चोलै–शीतल उपवन; पुटै विम्मि–पार्श्वों में उगे रहते हैं; तूङ्कु तिरै आरु–हिलनेवाली लहरों से युक्त नदियाँ; तवळ्–बहती है; चूळ्लतु–ऐसे पार्श्वस्थलों के; ओर् कुन्ऱिन् पाङ्कर्–एक पर्वत के पास; पञ्चवटि–पंचवटी नाम का; उऱै उळ्–एक वासयोग्य स्थान; उळतु–है। १७४

यह सब देने के बाद अगस्त्य ने सुझाया कि श्रीराम! पंचवटी नाम का एक स्थान है। वहाँ ऊँचे तरु हैं, उन्नत पर्वत है, उच्च सिक्ता-टीले हैं। वह ऐसे पर्वत पर है, जिसके पार्श्वों में पुष्प-भरे उपवन हैं और झलमलाती लहरों वाली नदियाँ बहती हैं। वह पंचवटी वासयोग्य स्थान है। १७४

कन्ऩियिळ वाळैकनि यीवकदिर् वालिन्, शॅन्नॅलुळ तेनॊळ्हु पोदुमुळ दॅय्वप्
पॊन्ऩियॅन लायपुत लारुमुळ पोदा, अन्नमुळ पॊन्ऩिवळॊ डन्बिन्विळै याड 175

कन्ऩि इळ वाळै–वाल-कदलियाँ; कनि ईव–फल देनेवाली हैं; कतिर् वालिन्–प्रकाशमय पूँछ जैसे छोटे भाग के साथ; चॅन्नॅल् उळ–शालि के धान मिलेंगे; तेन् ऒळ्कु पोतुम् उळ–मधु बरसानेवाले पुष्प है; तॅय्व पॊन्ऩि ॲन्ऩल् आय–दिव्य कावेरी नदी के ही समान रहनेवाली; पुऩल् आऱुम् उळ–अच्छे जल की नदियाँ भी हैं; पॊन् इवळॊटु–श्रीलक्ष्मी इनके साथ; अन्पिन् विळैयाट–प्रेम के साथ मनोरंजन करने के लिए; पोता–सारस; अन्नम्–और हंस पक्षी; उळ–है। १७५

और भी वहाँ आपको कदली के वालवृक्ष मिलेंगे, जो मधुर फल दिलाएँगे। द्रुम के समान पतले अंग के साथ रहनेवाले लाल रंग के शालि के धान वहाँ पाये जाते हैं। मधु बरसानेवाले नवीन पुष्प हैं। दैवी

कावेरी नदी के समान पवित्र और मनोरम जल वाली नदियाँ हैं। इन श्रीलक्ष्मीदेवी (सीताजी) के साथ प्रेमसहित खेलने के लिए सारस और हंस पक्षी रहते हैं। १७५

❀ ऐहियिऩि यव्वयि निरुन्दुऱैमि ऩॆऩ्ऱाऩ्
मेहनिऱ वण्णऩुम् वणङ्गिविडै कॊण्डाऩ्
पाहऩैय शॊल्लियॊडु तम्बिपरि विऱ्पिऩ्
पोहमुऩि शिन्दैतॊड रक्कडिदु पोऩाऩ् 176

इऩि–आगे; अ वयिऩ् एकि–उधर जाकर; इरुन्तु उऱैमिऩ्–रहकर वास कीजिए; ऍऩ्ऱाऩ्–(अगस्त्य ने) कहा; मेक निऱ वण्णतुम्–मेघवर्ण श्रीराम ने भी; वणङ्कि–नमन करके; विटै कॊण्टाऩ्–विदा ली; पाकु अतैय चॊल्लि ऒटु–चासनी-सम बोली वाली श्री सीताजी के साथ; तम्पि–अनुज लक्ष्मण भी; परिविऩ्–श्रद्धा के साथ; पिऩ् पोक–उनका पीछा करते गये; मुऩि चिन्तै तॊटर–(अगस्त्य) मुनि का मन भी पीछा करता चला; कटितु पोऩाऩ्–वे शीघ्र वहाँ से गये। १७६

आप आगे वहीं जाकर वास करें। —अगस्त्य ने कहा। मेघवर्ण श्रीराम ने भी उनको नमस्कार करके उनसे विदा ली। जब वे जाने लगे, तो चासनी-सम बोली वाली देवी सीताजी और कनिष्ठ भ्राता लक्ष्मण उनके पीछे गये। अगस्त्य का मन भी उनका पीछा करता गया। श्रीराम शीघ्र चले। १७६

4. शडायु काण् पडलम् (जटायु-दर्शन पटल)

❀ नडन्दऩर् कावदम् बलवु नऩ्ऩदि
किडन्दन निऩ्ऱन गिरिहळ् केण्मैयिल्
तॊडर्न्दन तुवऩ्ऱिऩ शूळल् यावैयुम्
कडन्दऩर् कण्डऩर् कळुहिऩ् वेन्दैये 177

कावतम् पलवुम्–अनेक 'काद' (कोस) दूर; नटन्ततर्–पैदल चलकर; किटन्तत नल् नति–मार्ग में पड़ी रही अनेक श्रेष्ठ नदियाँ; निऩ्ऱत–(अकेले) स्थित; केण्मैयिऩ् तॊटर्न्तत–मित्रों के समान परस्पर मिले रहे; किरिकळ्–अनेक पर्वत; तुवऩ्ऱिऩ चूळल् यावैयुम्–(बीच-बीच में) घने उपवन; कटन्ततर्–पार करके; कळुकिऩ् वेन्तै–गृध्रराज को; कण्टतर्–(उन्होंने) देखा। १७७

श्रीराम आदि तीनों अनेक कोस दूर गये। रास्ते में अनेक नदियाँ पड़ी थी। पर्वत और पर्वतश्रेणियाँ पाई गयी। अनेक उपवन मिले। उन सबको पार करके उन्होंने जटायु के दर्शन किये। १७७

❀ मुन्दैरु करुमलै मुहट्टु मुऩ्ऱिलिल्
शन्दिर नॊळियॊडु तळवच् चात्तिय

अन्दमिल् कन्नैहड लमरर् नाट्टिय
मन्दर गिरियॆन्न वयङ्गु वान्ऱन्नै 178

मुन्नु–पहले; अमरर्–सुर; अन्तम् इल्–अपार; कनै कटल्–गर्जनशील सागर में; चन्तिरन् ऒळि ऒटु तळुव–चन्द्र-किरण के साथ मिलाकर; चात्तिय नाट्टिय–आधार-स्तम्भ के रूप में स्थापित; मन्तर किरि ऎन–मन्दरपर्वत के समान; ऒरु करु मलै मुकट्टु मुन्ऱिलिल्–एक काली गिरि की चोटी पर खुले थल में; वयङ्कुवान् तन्नै–शोभायमान उनको। १७८

वे (जटायु) उस मन्दरपर्वत के समान शोभित थे, जिसको अमृतमंथन के उस समय गर्जनशील सागर-मध्य चन्द्र की किरणों से लगाते हुए आधार-स्तम्भ के रूप में गाड़ दिया गया था। वे एक काले (या बड़े) पर्वत की चोटी पर आँगन-सम खुले थल में शान के साथ विराजमान थे। १७८

उरुक्किय शुवणमॊत् तुदयत् तुच्चिशेर्
अरुक्कनि निऴल्पडैत् तलङ्गु तिक्कॆलाम्
तॆरिप्पुरु शॆऱिशुडर्च् चिऱैयि नाऱ्ऱिशै
विरित्तिरुन् दन्नॆन विळङ्गु वान्ऱनै 179

उरुक्किय चुवणम् ऒत्तु–पिघले हुए सोने के समान; उतयत्तु उच्चि चेर्–उदयगिरि के शृंग पर पहुँचे हुए; अरुक्कतिल्–सूर्य के समान; निळल् पटैत्तु–कान्ति से युक्त होकर; अलङ्कु तिक्कु ऎलाम्–अन्धकार के कारण व्यथित रहनेवाली सभी दिशाओं को; तॆरिप्पु उऱु–प्रकाश दिलानेवाले; चॆऱि चुटर् चिऱैयिनाल्–घनी दीप्ति वाले पक्षों को; तिचै विरित्तु इरुन्ततन्–सभी दिशाओं में फैलाये रहे; ऎन्न–ऐसा कहने योग्य रीति से; विळङ्कुवान् तन्नै–दृश्यमान उनको। १७९

वे पिघला-स्वर्ण-सम थे। उदयगिरि पर आये सूर्य के समान कान्ति-युक्त थे। अन्धकार से आक्रान्त दिशाओं में प्रकाश करते हुए मानो वे अपने पक्ष फैलाए हुए थे, ऐसे दृश्यमान उनको श्रीराम आदि ने देखा। १७९

वानिऱ विशुम्बॆऴिन् मऱैयत् तन्मणिक्
कानिऱच् चेयॊळि कतुवक् कण्णहल्
नीनिऱ वरैयिनिऱ् पवळ नीळ्हॊडि
पोनिऱम् बॊलिन्दिडप् पॊलिहिन् ऱान्ऱनै 180

वाल् निऱ विचुम्पु–विशाल और प्रभावान आकाश की; ऎळिल् मऱैय–छटा को छिपाते हुए; कण् अकल्–विस्तृत; नील् निऱ वरैयितिल्–नीलवर्ण पर्वत पर; तन् काल् निऱ–अपने पैरों का रंग; मणि चॆय् ऒळि–लाल सुन्दर आभा; कतुव–फैलाते हुए; पवळ नीळ् कॊटि पोल्–प्रवाल की लम्बी लताओं के समान; निऱम् पॊलिन्तिट–वहाँ शोभायमान करते हुए; पॊलिकिन्ऱान् तन्नै–तेज के साथ रहनेवाले उनको। १८०

उनके तेज के सामने विशाल और आभायुक्त आकाश की शोभा छिप

गयी थी। नीले पर्वत पर उनके लाल पैर माणिक की-सी प्रभा कर रहे थे। वे प्रवाललता-समान शोभ रहे थे। ऐसे विराजमान उनको; । १८०

❀ तूय्मैय निरुड्गलै, तुणिन्द केळ्वियन्
वाय्मैयन् मरुविलन् मदियिन् कूर्मैयन्
आय्मैयिन् मन्दिरत् तरिञ आमॆन्तच्
चेय्मैयि नोक्कुरु शिरुह णान्रनै 181

तूय्मैयन्–शुचिकर्मा; इरुम् कलै तुणिन्त केळ्वियन्–गम्भीर अध्ययन-ज्ञान के साथ श्रवण-ज्ञान से युक्त; वाय्मैयन्–सत्यसंध; मरु इलन्–निर्दोष; मतियिन् कूर्मैयन्–सूक्ष्ममति; आय्मैयिन्–दीर्घदर्शी; मन्तिरत्तु अरिञन् आम् अॅन–मंत्रणा में कुशल मन्त्री के समान; चेय्मैयिन् नोक्कु उरुम्–दूर तक देख सकनेवाले; चिरु कण्णान् तनै–छोटे नेत्रों वाले उनको। १८१

वे शुचिपूर्ण थे। अध्ययन और श्रवण से प्राप्त गम्भीर ज्ञान से युक्त थे। सत्यसंध थे और निर्दोष थे। सूक्ष्मबुद्धि थे। दीर्घदर्शिता रखनेवाले मंत्रणा में निपुण मन्त्री के समान उनके बहुत दूर तक देख सकनेवाली छोटी आँखें थीं। १८१

❀ वीट्टिवा ळवुणरै विरुन्दु कूर्रिनै
ऊट्टिवीळ् मिच्चिरा नुण्डु नाडॊरुम्
तीट्टिमे विन्दिरन् शिरुहण् यानैयिन्
तोट्टिपोऱ् ऱेय्न्दॊळिर् तुण्डत् तान्रनै 182

वाळ् अवुणरै–तलवारधारी दानवों को; वीट्टि–मारकर; कूर्रिनै विरुन्तु ऊट्टि–यम को दावत में खिलाकर; वीळ्–बचकर गिरनेवाले; मिच्चिल्–जूठन को; नाळ् तॊरुम् उण्टु–प्रतिदिन खाकर; चिरु कण् यानैयिन् मेवु इन्तिरन्–छोटी आँखों वाले (ऐरावत-संज्ञित) गज पर आसीन इन्द्र के; तोट्टि पोल्–अंकुश के समान; तीट्टि–पैनायी जाकर; तेय्न्तु ऒळिर्–उस कारण से घिसकर उज्ज्वल दिखनेवाली; तुण्टत्तान् तनै–चोंच के उनको। १८२

रोज वे तलवारधारी राक्षसों को युद्ध में मारकर यम को खिलाते थे और बचेखुचे जूठन को खाते थे। उनकी चोंचे छोटी-छोटी आँखों वाले ऐरावत गज पर सवार इन्द्र के अंकुश के समान पैनाई गयी और घिसी हुई थी और उससे चमकदार लगती थीं। १८२

❀ कोळिरु नालिनो डॊन्रु कूडिय, आळुरु तिहिरिबो लारत् तान्रनै
नीळुयर् मेनियि नॆर्रि मुर्रिय, वाळिर वियिर्पोलि मवुलि यान्रनै 183

इरु नालिन् ओटु–दो के चार के साथ; ऒन्रु कूटिय–एक मिलाकर (नौ) रहे; कोळ्–ग्रहों को; आळ् उरु तिकिरि पोल्–चालित करनेवाले (शिशुमार नामक या

विष्णु के) चक्र के समान शोभायमान; आरत्तान् तत्तै–हार से अलंकृत उनको; नीळ् उयर् मेत्तियिन्–विशाल और दीर्घ शरीर के; नेंड्रि–शिखर पर; मुड्रिय–रखे गये; वाळ् इरवियिन्–उज्ज्वल सूर्य के समान; पोलि–शोभनेवाला; मवुलियान् तत्तै–किरीटधारी को। १८३

उनके वक्ष पर एक हार था। वह शिशुमार या विष्णु के चक्र और उसके अधीन घूमनेवाले नवग्रहों के समान शोभायमान था। उनके सिर पर उज्ज्वल सूर्य के समान किरीट सजा हुआ था। ऐसे हार और किरीटधारी को (श्रीराम ने देखा)। १८३

❀ शोंड्पङ्ग मुड्निमि रिशैयिन् शुम्मैयै, अड्पङ्ग मुड्वरु मरुणन् शॅम्मलैच्
चिड्पङ्गोळ् पहलॅनक् कडिदु शॅन्ड्रुतीर्, कड्पङ्ग ळॅन्नैप्पल कण्डु ळान्ड्रनै 184

चोंल् पङ्कम् उड़–शब्द (भाषा) को भग्न (पंगु) करते हुए; निमिर् इचैयिन् चुम्मैयै–उठे हुए यश की राशि के समान; अल् पङ्कम् उड़–अन्धकार को मिटाते हुए; वरुम्–आनेवाले; अरुणन् चॅम्मलै–अरुण के पुत्र (जटायु) को; कटितु चॅन्ड्रु तीर्–शीघ्र व्यतीत होनेवाले; चिड्पम् कोळ् पकल् अॅन्न–अल्प दिन के समान; कड्पङ्कळ् अॅन्नै–कल्प कहलानेवाले काल; पल–अनेक; कण्टु उळान् तन्नै–जो देख चुके, उनको। १८४

उनका यश इतना बड़ा था कि शब्द में उसको समझाने की शक्ति नहीं थी; शब्द भग्न हो जाते थे। वे अन्धकार को मिटाते हुए आनेवाले (सूर्य-सारथी) अरुण के पुत्र थे। उन्होंने कई कल्प देखे थे, जो छोटे-छोटे दिनों के समान व्यतीत हो चुके थे। ऐसे उनको; । १८४

❀ ओङ्गुयर् नॅडुवरै योन्ड्रि निन्ड्रदु, ताङ्गल दिरुनिलन् दाळ्न्दु ताळ्वुड़
वीङ्गिय वलियिन् निरुन्द वीरनै, आङ्गव रणुहिन रयिर्क्कुञ् जिन्दैयार् 185

ओङ्कु उयर्–ऊँचे बढ़े हुए; नॅटु वरै ओन्ड्रिन्–बड़े पर्वत पर; निन्ड्रु–रहकर; अतु ताङ्कलतु–वह बोझ उठा न सककर; इरु निलम् ताळ्न्तु–विशाल भूमि में धँसकर; ताळ्वु उड़–अन्दर चला गया, ऐसा; वीङ्किय वलियित्तिन् इरुन्त–बढ़े हुए बल के साथ रहे; वीरनै–वीर जटायु को; आङ्कु–वहाँ; अवर्–वे तीनों; अयिर्क्कुम् चिन्तैयर्–शंकितमन होकर; अणुकिनर्–उनके समीप गए। १८५

वे एक उन्नत पर्वत पर विराजमान थे। वह पर्वत उनके बोझ से भूमि के अन्दर धँस गया था। उतने वलवान उन वीर पर श्रीराम आदि ने शंकित मन से दृष्टिपात किया। १८५

❀ इरुदियैत् तन्वयि नियड्ड़ वॅय्दिनान्
अड़िविलि यरक्कना मल्ल ना मॅन्निल्
अॅरुळ्वलिक् कलुळने यॅन्न वुन्नियच्
चॅड़िहळल् वीररुञ् जॅयिर्त्तु नोक्किनार् 186

चॅऱिकऴल् वीररुम्–ठोस पायलधारी वीर; तन् वयिन्–अपना; इऱुतियै–अन्त; इयऱ्ऱ–कराने के लिए; ॲय्तिनान्–जो आया; अऱिवु इलि अरक्कन् आम्–यह बुद्धिहीन राक्षस है; अल्लन् आम्–नहीं; ॲनिल–तो; ॲऱुऴ् वलि–अत्यधिक बलशाली; कलुऴन् आम्–गरुड़ होगा; ॲन्न उन्नि–ऐसा सोचकर; चॅयिर्त्तु–कोप करके; नोक्किनार्–उनको देखा। १८६

भारी चरणवलय-धारी वीरों ने अनुमान लगाया— "यह अपना अन्त कराने के लिए आया हुआ एक राक्षस ही होगा! नही तो वह बलवान गरुड़ हो!" उन्होंने जटायु को खूब देखा। १८६

❀ वत्तैहऴल् वरिशिलै मदुहै मैन्दरै
अत्तैयदन् ऱानुङ्गण् डयिर्त्तु नोक्किनान्
विनैयऱु नोन्बिन रल्लर् विल्लिनर्
पुत्तैशडै मुडियिनर् पुलव रोवॅन्ना 187

अत्तैयवन् तानुम्–जटायु भी; वत्तै कऴल् वरि चिलै–पहनी हुई पायल और बन्धनयुक्त धनु के धारक; मतुकै मैन्तरै–बलवान राजकुमारों को; कण्टु–देखकर; वित्तै अऱु नोन्पिनर् अल्लर्–कर्म काटने के व्रती (तपस्वी) नहीं हैं; विल्लिनर्–धनुर्धर है; पुत्तै चटै मुटियिनर्–निर्मित जटाधारी है; पुलवरो–देव हैं क्या; ॲन्न–ऐसा अयिर्त्तु–सन्देह करके; नोक्किनान्–देखा। १८७

जटायु ने भी पायलधारी धनुर्द्धर वीरों को देखा। प्रतापी उनको देखकर जटायु के मन में प्रश्न उठा कि ये कौन है? 'ये कर्मनाशार्थ तप करनेवाले तपोव्रती नहीं है!- उनके हाथों में चाप है और सिरों पर जटा है। क्या ये देवता है?' सन्देह के साथ उन्होंने उन पर दृष्टि दौड़ाई। १८७

❀ पुरन्दरन् मुदलिय पुलवर् यारैयुम्, निरन्दर नोक्कुवॅ नेमि यानुमव्
वरन्दरु मिऱैवनु मऴुव लाळनुम्, करन्दिल रॅन्नैया नॅन्ऱुङ् गाण्बॅनाल् 188

पुरन्तरन् मुतलिय पुलवर् यारैयुम्–पुरन्दर आदि सभी देवों को; निरन्तरम् नोक्कुवेन्–प्रतिदिन देख रहा हूँ; नेमियानुम्–चक्रधारी विष्णु और; अ वरम् तरु इऱैवनुम्–वे वरदायी भगवान ब्रह्मा और; मऴुवलाळनुम्–'मऴु' नामक (परशु?) हथियारधारी (शिवजी) के भी; यान् ॲन्ऱुम् काण्पॅन् आल्–मै रोज दर्शन करता हूँ, इसलिए; ॲन्नै करन्तिलर्–मुझसे अपना रूप नहीं छिपाएँगे। १८८

जटायु आगे भी सोचने लगे। पुरन्दर आदि देवों को तो मैं रोज देख रहा हूँ। चक्रधारी विष्णु, भक्तों को इच्छित वर देनेवाले ब्रह्मा, मऴु (परशु या तप्तलौह) आयुधधारी शिव—इनके तो प्रतिदिन दर्शन कर रहा हूँ। वे हमसे अपना यथार्थ रूप नही छिपा सकते। १८८

❀ कामनैन् बवनैयुङ् गण्णि नोक्किनेन्
तामरैच् चॅङ्गणित् तडक्कै वीरर्हऴ्

पूमरु पौलङ्गळङ् पौडियि त्तोडुमौप्
पामलन् वरुवव रार्हौ लामिवर् 189

कामन् अन्नपवत्तैयुम्–मन्मथ को भी; कण्णिन् नोक्किनेन्–आँखों से देखा है; तामरै चॅम् कण्–कमलदल-सम लाल आँखें; तट कै–दीर्घ भुजाएँ; इ वीरर्कळ्–(इनसे युक्त) इन वीरों के; पू मरु पौलन् कळ्ल्–कमलगन्ध-युक्त उज्ज्वल चरणों की; पॉटियित्तोटुम्–धूलि के साथ भी; ओप्पु आम् अलन्–तुल्य नहीं हो सकता; वरुपवर् इवर्–आनेवाले ये; आर् कोल्–कौन हैं। १८९

मैंने कामदेव को भी अपनी आँखों से देखा है। वह मन्मथ कमलदल के समान अरुण आँखें और दीर्घ विशाल हाथों के साथ मनोरम आभायुक्त इनके पास पायलधारी चरण पर लगी धूलि से भी तुल्य नहीं हो सकता। फिर ये कौन हैं, जो इस तरफ़ आ रहे हैं? । १८९

❀ उलहौरु मून्रुन्दम् मुडैमै याक्कुरुम्
अलहरु मिलक्कण ममैन्द मॅय्यित्तर्
मलर्महट् कुवमैया ळोडुम् वन्दविच्
चिलैवलि वीररैत् तॅरिहि लेन्ना 190

उलकु ओरु मून्रुम्–स्वर्ग, भूतल और पाताल के तीनों लोकों को; तम् उटैमै आक्कुरुम्–अपने अधीन बना सकनेवाला; अलकु अरुम्–अमाप; इलक्कणम् अमैन्त–सामुद्रिका लक्षणों से युक्त; मॅय्यिनर्–दिव्य रूप वाले हैं; मलर् मकट्कु उवमैयाळोटुम्–कमलजा से तुल्य देवी के साथ; वन्त–जो इधर आये हैं; इ चिलै वलि वीररै–इन धनुर्धर बलवान वीरों को; तॅरिकिलेन्–जान नहीं पाता; ॲन्ना–कहकर। १९०

इनके दिव्यशरीर अपार लावण्यमयी हैं। सभी सामुद्रिका लक्षणों के अनुसार सुघड़ बने हैं। उनकी सुन्दरता तीनों लोकों को अपने अधीन करनेवाली है। इनके साथ जो देवी आती हैं, वह कमलजा लक्ष्मीदेवी के समान हैं। ये वीर धनुर्धर कौन हैं? मैं समझ नहीं पाता। १९०

❀ करुमलै शॅम्मलै यन्नैय काट्चियर्
तिरुमहिळ् मार्बित्तर् शॅङ्गण् वीरर्दाम्
अरुमैशॅय् गुणत्तितॅन् रुणैव नाळियान्
ऑरुवनै यिरुवरु मौत्तु ळाररो 191

करुमलै चॅम्मलै अन्नैय–काली गिरि और लाल गिरि के समान; काट्चियर्–दर्शन देनेवाले; तिरु मकिळ् मार्पिनर्–वीरश्री जिन पर मोद के साथ वास करती थी, वैसे वक्ष वाले; चॅङ्कण् वीरर्–अरुणाक्ष वली; अरुमै चॅय्–अभूतपूर्व रूप से प्राप्त; कुणत्तिन्–श्रेष्ठ गुणों के; ॲन् तुणैवन्–मेरे मित्र; आळियान्–चक्रवर्ती; ऑरुवनै–उन अद्वितीय (दशरथ) के ही; इरुवरुम्–ये दोनों; ऑत्तुळार्–सदृश दिखाई देते है। १९१

ये काले पर्वत और लाल स्वर्ण-पर्वत के समान दर्शन देते हैं। इनके

वक्षस्थल वीरश्री का वासस्थान-सा लगते हैं। अरुणाक्ष ये दोनों अच्छे श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण मेरे अत्यन्त मित्र चक्रवर्ती दशरथ के ही सदृश लगते हैं। १९१

❀ अॅऩ्ऩप्पल निऩैप्पिनऩ् मनत्तु ळॅण्णुवान्
शिऩ्ऩप्पडै वीरर्मेऱ् चॅल्लु मऩ्विनान्
कनप्पडै वरिशिलैक् काळै यीर्हळ्यार्
मनप्पड वॅऩ्क्कुरै वळङ्गु वीरॅन्ऱाऩ् 192

अॅऩ्ऩ—ऐसे-ऐसे; मनत्तुळ् अॅण्णुवान्—मन में सोचते हुए; पल निऩैप्पिऩऩ्—विविध अनुमान करनेवाले; चिऩम् पटै वीरर् मेल्—क्रोधशील हथियारधारी उन वीरों पर; चॅल्लुम् अऩ्पिऩाऩ्—सहज उठते हुए प्रेम के साथ; कऩ पटै—भारी हथियार; वरि चिलै—और बन्धनसहित धनु के साथ रहनेवाले; काळै यीर्कळ्—ऋषभ-सम तरुण वीर; यार्—कौन हो; मऩम् पट—मेरे मन को समझाते हुए; अॅऩक्कु उरै वळङ्कुवीर्—मुझे उत्तर दो; अॅऩ्ऱाऩ्—(जटायु ने) कहा। १९२

इस तरह जटायु उधेड़बुन में लगे हुए अनेक विचार करते रहे। उन्होंने अनुभव किया, सहज ही उन भयंकर क्रोधशील हथियारधारी वीरों पर प्रेम पैदा हो रहा है। उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण से पूछ ही लिया कि भारी हथियार और बन्धनयुक्त शरासन रखनेवाले वीर! ऋषभ-सम तरुण तुम लोग कौन हो? मेरे मन में साफ़ ज्ञान हो, ऐसा मुझे प्रत्युत्तर दो। १९२

❀ विऩ्ऩविय कालैयिऩ् मॅय्म्मै यल्लदु, पुऩ्मलर्त् तारवर् पुहल्हि लामैयाल्
कऩ्हडल् नॅडुनिलङ् गाव लाळियान्, वऩ्हळऱ् ऱयरदऩ् मैन्दर् यामॅऩ्ऱार् 193

विऩविय कालैयिऩ्—जब जटायु ने पूछा, तब; पुऩ् मलर् तार् अवर्—सुन्दर पुष्पमाला से अलंकृत उन्होंने; मॅय्म्मै अल्लतु—सत्य के सिवा; पुकल्किलामैयाल्—नहीं बोल सकते, इसलिए; याम्—हम; कऩ् कटल् नॅटु निलम्—गर्जनशील समुद्र से वलयित इस विशाल भूमि के; कावल्—रक्षक; आळियाऩ्—चक्रवर्ती; वऩ् कळल् तयरतऩ्—वीर-चरण-कंकणधारी दशरथ के; मैन्तर्—पुत्र है; अॅऩ्ऱार्—कहा। १९३

जब जटायु ने यह प्रश्न किया, तब उन्होंने सच्ची बात कह दी। वे सत्य के सिवा असत्य बोलनेवाले नहीं थे। इसलिए उन्होंने बताया कि गरजते सागर से वलयित भूलोक के भर्त्ता चक्रवर्ती, वीरचरणकंकण-धारी दशरथ के पुत्र है। १९३

❀ उरैत्तलुम् पॊङ्गिय वुवहै वेलैयऩ्
तरैत्तलै यिळिन्दवर्त् तळुवु कादलऩ्
विरैत्तडन् दारिऩाऩ् वेन्दर् वेन्दऩ्ऱऩ्
विरैत्तडन् दोळिणै वलिय वोवॅऩ्ऱाऩ् 194

उरैत्तलुम्–कहते ही; पोङ्किय उवकै वेलैयन्–उमड़नेवाले मोद-सागर के समान जटायु; तरै तलै इऴिन्तु–भूमि पर उतर आकर; अवर् तऴुवुन् कातलन्–उनको आलिंगन करके प्रेमातुर होकर; विरै तटम् तारित्तान्–सुवासित और बड़ी माला से अलंकृत; वेन्तर् वेन्तन् तन्–राजाधिराज के; वरै तटम् तोळ् इणै—पर्वत-सम बड़े कंधे दोनों; वलियवो–बल से पूर्ण हैं क्या; अन्ऩान्–(जटायु ने) पूछा। १९४

ज्योंही राजकुमारों ने यह उत्तर दिया, त्योंही जटायु के मन में आनन्द उठा और सागर-सा बढ़ गया। वे नीचे भूमि पर उतर आये। उनको गले से लगाकर प्रेम के साथ जटायु ने प्रश्न किया कि सुवासित और बड़ी माला से शोभित राजाधिराज दशरथ की पर्वत-सम विशाल भुजाओं का जोड़ा बल संयुक्त है ? । १९४

❀ मऱक्कमुड् ऱाददन् वाय्मै कात्तवन्
तुऱक्कमुड् ऱाऩॆन विरामन् चॊल्ललुम्
इऱक्कमुड् ऱाऩॆन वॆक्क मॆय्दिनान्
उऱक्कमुड् ऱाऩॆन वुणर्वु नीङ्गिनान् 195

अवन्–वे; मऱक्क मुड्ऱात–अविस्मरणीय; तन् वाय्मै कात्तु–अपनी वचनसत्यता का; कात्तु–पालन करके; तुऱक्कम् उड्ऱान्–स्वर्गवासी हो गये; ऎन–ऐसा; इरामन् चॊल्ललुम्–श्रीराम के कहते ही; इऱक्कम् उड्ऱान् ऎन–(दशरथ) मर गये, कहकर; एक्कम् ऎय्तिनान्–तरस खाकर; उऱक्कम् उड्ऱान् ऎन–निद्रामग्न हुए जैसे; उणर्वु नीङ्कितान्–अचेत हुए। १९५

चक्रवर्तीतनय श्रीराम ने उत्तर दिया कि चक्रवर्ती अविस्मरणीय अपनी सत्यवादिता के संरक्षण में स्वर्गवासी हो गये। ज्योंही श्रीराम ने यह कहा, त्योंही जटायु तरस खाकर निद्रामग्न हुए-से अचेत हो गये। १९५

❀ तऴुविन रॆडुत्तनर् तडक्कै यान्मुहम्, कऴुविन रिरुवरुङ् गण्णि नीरिनाल्
वऴुविय तन्नुयिर् वन्द मन्नतुम्, अऴिवुऱु नॆञ्जिन ऩरऱ्ऱि नान्ऩरो 196

इरुवरुम्–दोनों ने; तटम् कैयाल्–विशाल हाथों से; तऴुविनर्–लपेटकर; ऎटुत्तनर्–उठाया; कण्णिन् नीरिनाल्–आँखों के जल से; कऴुविनार्–(जटायु के मुख को) धोया; वऴुविय–खोई हुई; तन् उयिर्–अपनी जान को; वन्त मन्नतुम्–फिर से प्राप्त करके गृध्रराज भी; अऴिवु उऱु नॆञ्चिनन्–विगलित मन के होकर; अरऱ्ऱिनान्–विलाप करने लगे। १९६

श्रीराम और लक्ष्मण ने गिरे हुए उनको अपने हाथों से लपेटकर उठाया। उनकी आँखों से अश्रुजल उनके मुख को धुलाते हुए बहा। तब जटायु की खोयी हुई प्राणता फिर आयी। गृध्रराज विकलमन होकर विलापने लगे। १९६

❀ परवलरुङ् गॊडैक्कुनिन्ऱन् ऱलिक्कुडैक्कुम् बॊऱैक्कुनॆडुम् बण्बु तोऱ्ऱक्
करवलरुङ् गऱ्पहमु मुडुपतियुङ् गडलिडमुङ् गळित्तु वाऴप्

पुरवलर्दम् पुरवलने पॉय्प्पहैये मॅय्क्कणिये पुहऴिन् वाऴ्वे
इरवलरु नल्लऱमुम् यानुमिनि यॅन्बडनीत् तेहि नाये 197

पुरवलर् तम् पुरवलत्ते–पालकों के पालक; पॉय् पकैये–असत्य के शत्रु; मॅय्क्कु अणिये–सत्य के भूषण; पुकऴिन् वाऴ्वे–यश के वासस्थान; निन् तन्–आपकी; परवल् अरु–अप्रशंसनीय; कॉटैक्कुम्–दानशीलता और; तनि कुटैक्कुम्–अद्वितीय छत्र; पॉरैक्कुम्–और क्षमाशीलता, इनके सामने; नॅटुम् पण्पु तोऱ्ऱ–अपने उच्च गुणों में जो हार गये, वे; करवल् अरु कऱ्पकमुम्–अवंचक कल्पवृक्ष; उटुपतियुम्–चन्द्र; कटल् इटमुम्–समुद्र की घिरी यह भूमि; कळित्तु वाऴ–(अपने प्रतिद्वन्द्वी के अभाव में) गर्व-मोद के साथ रहें, ऐसा; इरवलरुम्–याचक लोग; नल् अऱमुम्–श्रेष्ठ धर्म को; यातुम्–और मुझे; इति ऍन् पट–अब कौन सा दुख भोगने देकर; नीत्तु–हमें छोड़कर; एकिताय्–चले गये। १९७

हे राजाधिराज ! असत्य के शत्रु ! सत्य के भूषण ! कीर्ति के वासस्थान ! आपकी अवर्णनीय दानशीलता, शीतल श्वेतछत्र और क्षमाशीलता के सामने क्रमशः अवंचक कल्पतरु, उडुपति और समुद्र की घिरी भूमि जो हार गयी थी, अब प्रतिद्वन्द्वी से रहित होकर उत्साह के साथ रह रही है। और याचक, श्रेष्ठ धर्म और मैं —तीनों को कौन सा दुख भोगने के लिए छोड़कर आप स्वर्गवासी हुए है ? । १९७

अलङ्गार मॅनवुलहुक् कमुदळिक्कुन् दनिक्कुडैया याऴि शूऴ्न्द
निलङ्गाव लदुकिडक्क निलैयाद निलैयुडैये नेय नॅञ्जिन्
नलङ्गाण नडनदनैयो नायहने तीवितैये नण्बि नित्तूम्
विलङ्गाने नादलिनाल् विलङ्गिने नित्तुमुयिर् विट्टि लेनाल् 198

नायकत्ते–नायक; अलङ्कारम् ऍन्न—साज-शृंगार है ऐसा; उलकुक्कु अमुतु अळिक्कुम्–(माने जाते हुए, पर असल में) लोकवासियों को कृपासुधा दिलानेवाला; तनि कुटैयाय्–अप्रतिम छत्रधारी; आऴि चूऴ्न्त निलम् कावल्–समुद्रवलयित पृथ्वी का शासन; अतु किटक्क–वह एक ओर रहे; निलैयात निलैयुटैयेन्–चंचल स्थिति वाले मेरे; नेय नॅञ्चिन् नलम्–प्रेमपूर्ण मन की (सच्चाई) स्थिति; काण ओ–परखने के लिए क्या; नटन्तने–आप चल बसे; तीवितैयेन्–पापी मैं; विलङ्कु आनेन्–जानवर रह गया; आतलिनाल्–इसलिए; नण्पिन् नित्तूम्–उत्तम मित्रता से; विलङ्कितेन्–अलग रह गया; उयिर् विट्टिलेन्–और प्राण नहीं त्यागे। १९८

नायक ! आपका श्वेतछत्र केवल अलंकार की वस्तु नहीं था। सुधासम कृपा बरसानेवाले शासन का प्रतीक था। ऐसे छत्रधारी ! अब समुद्रमेखला भूमि अनाथ हो गयी; वह एक ओर रहे ! क्या आप मेरे मन के प्रेम की स्थिरता की परीक्षा करने के हेतु चले गये क्योंकि मैं चंचलमन हूँ ! मै पापी हूँ ! जानवर पैदा हुआ हूँ। तभी तो उत्तम मित्रता के अनुरूप उचित व्यवहार से डिगकर अब भी प्राण त्याग किये बिना जीवित रहता हूँ ! । १९८

❀ तयिरुडैक्कु मत्तॅन्न वुलहैनलि शम्बरनैत् तडिन्द वन्नाळ्
अयिर्हिडक्कुड् गडल्वलयत् तवरऱिय नीयुडल् यानावि यॅन्नच्
चॅयिर्हिडत्तल् शॅय्याद तिरुमनत्ताय् शॅप्पिनाय् तिरम्बाय् निन्शॊल्
उयिरहिडक्क वुडलैविशुम् बेऱ्ऱिना रुणर्विरन्द कूऱ्ऱि नारे 199

चॅयिर् किटत्तल् चॅय्यात–दोष को स्थान न देनेवाले; तिरु मनत्ताय्–पवित्र मन के स्वामी; तयिर् उटैक्कुम् मत्तु ॲन्न–दही मथनेवाली मथानी के समान; उलकै नलि–लोकत्रासक; चम्परनै–शंबरासुर को; तटिन्त अ नाळ्–जिस दिन काट गिराया, उस दिन; अयिर् किटक्कुम्–काले बालू से युक्त; कटल् वलयत्तवर्–समुद्रवलयित भूतलवासियों को; अऱिय–जताते हुए; नी उटल् यान् आवि–तुम (दशरथ) शरीर, मै प्राण; ॲन्न–ऐसा; चॅप्पिनाय्–कहा; निन् चॊल् तिरम्पाय्–आप अपना वचन भंग करनेवाले नहीं है; उणर्वु इरन्त–भावना न समझ सकनेवाले; कूऱ्ऱितार्–यमदेव भी; उयिर् किटक्क विट्टु–प्राणों को इधर रहने देकर; उटलै–शरीर, आपको; विचुम्पु एऱ्ऱितारे–स्वर्ग पर चढ़ा ले गये। १९९

अकलंक पवित्र मन वाले! दही को विलोडित करनेवाली मथानी के समान शंबरासुर लोगों को त्रास दे रहा था। जब आपने उनको मारा, उस दिन आपने सूक्ष्म काले बालुओं से युक्त समुद्र से वलयित भूमि के सारे लोगों के सामने उनके जाने, यह कहा कि जटायु तुम प्राण हो, मैं तुम्हारा शरीर हूँ। आप वचन भंग करनेवाले नहीं हैं। उस भावना की पवित्रता जड़मति यमदेव नहीं समझ सके। इसलिए प्राण— मुझे छोड़कर, शरीर— आपको उठा ले गये हैं। १९९

❀ ॲळुवदो रिशैपॅरुह विप्पॊळुदे यॊप्परिय वॅरियुन् दीयिल्
विळुवदे निऱ्कमड मॅल्लियलार् तम्मैप्पो निलत्तिन् मेल्वीळ्न्
दळुवदो यानॅन्ना वऱिवुऱ्ऱा नॅन्नॅळुन् दवरै नोक्कि
मुळुवदे ळुलहुडैयान् मैन्दन्मीर् केण्मिनॅन मुऱैयिर् चॊन्नान् 200

ॲळुवतु ओर् इचै पॅरुक–उन्नत यश के बढ़ते; इप्पॊळुते–अभी; ऒप्पु अरिय–उपमाहीन; ॲरियुम् तीयिल्–जलनेवाली आग में; विळुवते निऱ्क–गिरना छोड़कर; मट मॅल्लियलार् तम्मै पोल्–अबोध सुकुमारी नारियों के समान; निलत्तिन् मेल् विळुन्तु–धरती पर गिरकर; यान् अळुवतो–मै रोता रहूँ; ॲन्ना–कहकर; अऱिवु उऱ्ऱान् ॲन्न–सूझ पा गये हों, ऐसा; ॲळुन्तु–उठकर; अवरै नोक्कि–उनको देखकर; एळ् उलकु मुळुवतु उटैयान्–सातों लोकों के अकेले स्वामी; मैन्तत्मीर्–(दशरथ के) पुत्र; केण्मिन्–सुनिए; ॲन–ऐसा; मुऱैयिल्–(निम्नोक्त) प्रकार से; चॊन्नान्–बोले। २००

मुझे अभी खूब जलती आग में प्रवेश करके मरना चाहिए, उससे यश मिलेगा और मैं यशस्वी हो जाऊँगा। वह काम छोड़कर मैं अब अबोध सुकुमारी नारियों के समान भूमि पर गिरकर रोता-कलपता रहता हूँ।

क्या यह मुझे सोहता है ? फिर वे सहसा कोई बात सूझ गई हो ऐसे उठे। राजकुमारों को सम्बोधित किया— सातों लोकों के शासक दशरथ के तनयो ! सुनो मेरी बात ! फिर वे निम्नप्रकार से बोले। २००

❀ अरुणन्ऱन् बुदल्वन्या नवन्पडरु मुलहॅलाम् पडर्वॅ ऩाऴि
इरुण्मॊय्म्बु कॅडत्तुरन्द तयरदऱ्किन् नुयिर्त्तुणैव ऩिमैयो रोडुम्
वरुणङ्गळ् विरिहिऩ्ऱ कालत्ते वन्दुदित्तेन् कऴुहिन् वेन्दन्
तरुणङ्गॊळ् पेरॊळियोर् शम्बादि पिन्पिऱन्द जडायु वॆन्ऱान् 201

तरुणम् कॊळ् पेर् ऒळियोर्—तरुणाई से युक्त बड़े तेजोमय; यान्—मैं; अरुणन् तन् पुतल्वन्—अरुण का पुत्र हूँ; अवन् पटरुम्—वे जहाँ जाते हैं; उलकु ॲल्लाम्—उन सभी लोकों में; पटर्वेन्—जाने की शक्ति रखता हूँ; इमैयोर् ओटुम्—देवों के साथ; वरुणङ्कळ्—अनेक वर्ण-भेद; विरिकिन्ऱ कालत्ते—जब बँटे उसी (आदि) काल में; वन्तु उतित्तेन्—जनमा, वह मैं; कऴुकिन् वेन्तन्—गृध्रराज; चम्पाति—सम्पाति; पिन् पिऱन्त—का अनुज; चटायु—जटायु हूँ; इरुळ् मॊय्म्पु—(शत्रु रूपी) अन्धकार का बल; कॅट—नाश करते हुए; आऴि तुरन्त—आज्ञाचक्र-चालक; तयरतऱ्कु—दशरथ का; इन् उयिर् तुणैवन्—प्राण-प्यारा मित्र हूँ; ॲन्ऱान्—कहा। २०१

तरुण तेजोमय वीर ! मैं अरुण का पुत्र हूँ। अरुण जहाँ चलते है, उन सभी स्थानों में जाने की मेरी शक्ति है। देवों के साथ जिस दिन सभी विविध जातियों के जीवों का प्रादुर्भाव हुआ, उसी प्राचीनकाल में मेरा जन्म हो गया। गीधों के राजा सम्पाति का अनुज हूँ मैं। शत्रु रूपी अन्धकार को नाश करते हुए जिन्होंने आज्ञाचक्र चलाया, उन दशरथ का प्राण-प्यारा मित्र हूँ। २०१

[इसके बाद पाँच पद्य पाये जाते है, जो क्षेपक माने जाते है। उनमें जटायु की वंशावली का विवरण पाया जाता है। जानकारी हेतु उनका सार यहाँ दिया जाता है— दक्ष प्रजापति की पचास उभरे उरोजों वाली सुताओं में तेरह पुत्रियों से काश्यप का विवाह हुआ। उनमें अदिति ने तेंतीस करोड़ देवों को जन्म दिया। कजरारी आँखों वाली दिति ने दुगुने दैत्यों को जनाया।

दनु ने दानवों को, मति ने अपने अवयवों से मनुष्य की जातियों को और सुरभी ने धेनु, अश्व और अन्य जानवरों को पैदा किया। क्रोधवशा ने गर्दभ, मृग, उष्ट्र आदि को पैदा किया।

अभ्रकुंतला विनता से वज्र, अरुण, वैनतेय (गरुड़), उल्लू-गीध आदि बड़े-बड़े पक्षी जनमे। ताम्रा ने गौरैये, तीतर, बटेर आदि पक्षियों को जन्म दिया। कळा नाम की कोमलांगी ने तरु, लता आदि को जन्म दिया।

कद्रू ने फनियों और व्यालों को जन्म दिया। सुधा से भुजंग उत्पन्न

हुए। अरिष्ठा द्वारा गिरगिट, घोरपड़ आदि आये। इला ने जलचरों को जन्म दिया।

अदिति, दिति, दनु, अरिष्ठा, सुधा, कळा, सुरभी, विनता, मति, इला, कद्रू, क्रोधवशा और ताम्रा —इन स्त्रियों ने ये सब जीव-जन्तु पैदा किये। विनता-सुत अरुण ने रम्भा से विवाह किया और हम भूमि पर पैदा हुए।]

❀ आण्डवऩ्ऩी दुरैशॅय्य वञ्जलित्त मलर्क्कैया रऩ्बि ऩोडुम्
मूण्डपॅडरुऩ् दुऩ्बत्ताऩ् मुरैमुरैयि निरैमलर्क्कण् मॊय्त्त नीरार्
पूण्डपॅरुम् बुहऴ्निऱुवित् तम्बॊरुट्टाऱ् पॊऩ्ऩुलहम् पुक्क तादै
मीण्डनऩ्ऩवऩ् दाऩवनैक् कण्डनऱे यॊत्तनरव् विलङ्गऱ् ऱोळार् 202

आण्टु—वहाँ; अवऩ्—उनके; ईतु उरै चॅय्य—यह कहते ही; विलङ्कल् तोळार्—पर्वत-सम कंधों वाले; अञ्चलित्त मलर् कैयार्—अञ्जलिवद्ध कमल-हस्त (वाले); अऩ्पिऩ् ओटुम्—प्रेम के साथ; मूण्ट—बढ़नेवाले; पॅरुम् तुऩ्पत्ताल्—बड़े दुख से; मुरै मुरैयिऩ्—उत्तरोत्तर; मलर् कण् निरै—कमल-सम आँखों में भर आनेवाले; मॊय्त्त नीरार्—अधिक अश्रुजल के साथ; पूण्ट पॅरुम् पुकऴ् निऱुवि—अपना धृत बड़ा यश इधर स्थापित करके; तम् पॊरुट्टाल्—अपने कारण; पॊऩ् उलकम् पुक्क—स्वर्ण (स्वर्ग) लोक जो गये, उन; तातै—अपने पिता ही; मीण्टऩऩ् वऩ्ताऩ् अवनै—लौट आये जो, उनको; कण्टऩरे ऒत्तऩर्—देख लिया हो, ऐसा हुए। २०२

जब जटायु ने यह वृत्तान्त कहा, तब पर्वत-सम कन्धों वाले श्रीराम और लक्ष्मण ने अपने कमल-हाथ जोड़ लिये। स्नेह-विह्वल उनकी आँखों से अश्रुकण बारी-बारी से भर आये। उनकी स्थिति ऐसी हो रही, मानो वे दशरथ से ही प्रत्यक्ष मिल रहे हों, जो अब स्वर्ग से अपने उन पुत्रों को देखने के लिए लौट आये हों जिनके (वियोग के ही) कारण वे इस संसार में बड़ा यश स्थापित करके स्वर्गवासी हो गये थे। २०२

❀ मरुविऩिय कुणत्तवरै यिरुशिऱहा लुऱत्तऴुवि मक्का णीरे
उरियकडऩ् विऩैयेऱ्कु मुदवुवी रुडलिरण्डुक् कुयिरॊऩ् ऱाऩाऩ्
पिरियवुन्दाऩ् पिरियादे यिऩिदिरुक्कु मुडऱ्पॊरैयाम् बीऴै पारा
तॅरियदऩि लिऩ्ऱेपुक् किऱवेऩे लित्तुयर मऱवे ऩॆऩ्ऱाऩ् 203

मरुवु इतिय—अपनाने-योग्य मधुर; कुणत्तु अवरै—स्वभाव वाले उनको (श्रीराम आदि को); इरु चिऱकाल्—अपने दोनों पक्षों से; उऱ तऴुवि—आलिंगन करते हुए; मक्काळ्—पुत्रो; नीरे—तुम ही; विऩैयेऱ्कुम्—पापी मेरा भी; उरिय कटऩ्—आवश्यक शवकर्म; उतवुवीर्—करा दो; उटल् इरण्टुक्कु—दो शरीर का; उयिर् ऒऩ्ऱु आनाऩ्—जो प्राण एक रहे; पिरियवुम्—उनके मरने पर; ताऩ् पिरियाते—खुद मरे बगैर; इतितु इरुक्कुम्—सुख से जीता रहने का; उटल् पॊऱै आम्—शरीर-वहन का; पीऴै पारातु—दुख देखते हुए; ऎरि अततिल्—आग में; इऩ्ऱे—अभी; पुक्कु—प्रवेश कर; इऱवेऩ् एल्—न मरूँगा तो; इ तुयरम् मऱवेऩ्—यह दुख भूल नहीं पाऊँगा। २०३

पश्चात जटायु ने अपनाने योग्य अच्छे गुणों वाले उन कुँअरों को अपने विशाल पक्षों के अन्दर लेते हुए आलिंगन किया और कहा कि पुत्रो ! मैं बड़ा पापी हूँ। मेरा भी शव-संस्कार कर दो। यह मेरे प्रति उपकार होगा। दशरथ मेरे और उनके दोनों शरीरों का एकप्राण-सम रहे। उनकी मृत्यु होने के बाद मैं बिना मरे यह शरीर ढोता रहूँ, यह मेरे लिए असह्य है! यह शरीरभार-वहन-दुख दूर करने के लिए आग में प्रवेश करके अभी मर जाऊँगा। नहीं तो यह वेदना भूल नहीं सकूँगा। २०३

❀ ऍऩ्ऱु रैत्त वॅरुवै यरशऩैत्, तुऩ्ऱु तारवर् नोक्कित् तॊऴुदुहण्
ऒऩ्ऱु मुत्त मुऱैमुऱै यायुह, निऩ्ऱु मऱ्ऱिऩ्ऩ नीर्मै निहऴ्त्तिऩार् 204

ऍऩ्ऱु उरैत्त–ऐसा कहनेवाले; ऍरुवै अरचऩै–गृध्रराज को; तुऩ्ऱु तार् अवर्–घनी माला से अलंकृत श्रीराम और लक्ष्मण; तॊऴुतु–विनय करके; कण् ऒऩ्ऱुम्–आँखों में लगी; मुत्तम्—मुक्तापंक्ति-सम अश्रुकण; मुऱै मुऱैयाय्–क्रम से; उक–टपके, ऐसा; निऩ्ऱु–जटायु के सामने स्थित होकर; इऩ्ऩ नीर्मै–इस प्रकार से; निकऴ्त्तिऩार्–बहस की। २०४

जब गृध्रराज जटायु ने अपना यह संकल्प सुनाया, तब मनोरम माला-धारी श्रीराम और लक्ष्मण शोकाकुल हुए। आँखों से मोतियों के समान अश्रुकण बहाते हुए उन्होंने जटायु के सामने खड़े होकर यों कहा। २०४

❀ उय्विडत् तुदवर् कुरिया नुन्दन्, मॅय्वि डक्करु दादुविण् णॆऱिनात्
इव्वि डत्तिनि लॅम्बॅरु माअॅऩैक्, कैवि डिऱ्पिऩ्ऩै यार्कळै कण्णुळार् 205

उय्वु इटत्तु–रक्षा के अवसर पर; उतवऱ्कु उरियातुम्–रक्षा करनेवाले चक्रवर्ती भी; तऩ् मॅय् विट करुतातु–अपना वचन-परिपालन छोड़ना न चाहकर; विण् एऱिऩाऩ्–स्वर्गवासी हुए; इ इटत्तिऩिल्–इस स्थान (जंगल) में; ऍम् पॅरुमा अऩ्–हमारे नाथ; ऍमै कै विटिल्–हमको असहाय छोड़ जाएँगे तो; पिऩ्ऩै–फिर; कळै कण् उळार्–हमारे अवलम्ब (सहायक) रहनेवाले; यार्–कौन हैं। २०५

तात ! हमारी सहायता और रक्षण करने का भार जिन पर स्वयमेव था, वे हमारे सहायक और नाथ अपने वचन को छोड़ना न चाहकर स्वर्ग-वासी हो गए। हे हमारे नाथ ! यहाँ इस जंगल में आप भी हमें निस्सहाय करके छोड़ेंगे तो हमारे आधार कौन हैं ? । २०५

❀ तायि ऩीङ्गरुन् दन्दैयिऱ् ऱुण्णहर्, वायि ऩीङ्गि वनम् बुहुन् दॅय्दिय
नोयु नीङ्गिनॅ नुन्निनॅन् नॅङ्गळै, नीयु नीङ्गुदि योनॅऱि नीङ्गलाय् 206

नॅऱि नीङ्कलाय्–धर्म-मार्ग से न हटनेवाले; नीङ्कु अरु–जिनसे अलग होना कठिन है, उन; तायिऩ्–माता से; तन्तैयिल्–पिता से; तन् नकर् वायिऩ्–अपने नगर के द्वार से; नीङ्कि–अलग होकर; वतम् पुकुन्तु–जंगल में प्रवेश करके; ऍय्तिय–अब तक जो हमने भुगता है; नोयिऩ्–उस दुख से; नुऩ्ऩिऩ्–आपके मिलने

के कारण; नीङ्किर्रम्–विमुक्त हुए; अँङ्कळै–ऐसे हमको; नीयुम्–आप भी; ॲन्नु नीङ्कुतियो–क्यों छोड़ जाएँगे । २०६

हे धर्म से कभी न हटनेवाले ! जिनसे अलग होना कठिन है उन माता से, पिता से और अपने नगर के द्वार से अलग होकर हम इधर आए। उससे हमारे मन में जो व्यथा हुई उससे, आपको देखने के बाद हम मुक्त हो पाये। इस स्थिति में आप हमें क्यों छोड़कर जायँगे ? । २०६

❀ ॲन्नुरु शॉल्ल विरुन्दळि नॆञ्जितन्, निन्नुरु वीररै नोक्कि निनैन्दवन्
अन्नुर् ॲन्नि लयोत्तियि लैयनीर्, शॅन्नु पिन्नवर् चेर्हुवॆन् यान्ॆन्ऱान् 207

ॲन्नुरु चॊल्ल–ऐसा (श्रीराम और लक्ष्मण के) कहने पर; इरुन्तु अळि नॆञ्चित्तन्–जो दुख से विगलित मन वाले रहे, उन जटायु ने; निन्नुरु वीररै–सामने खड़े रहे वीरों को; नोक्कि–देखकर; निनैन्तवन्–विचार करते हुए; अतु अन्नुरु ॲतिन्–वह तुमको (पसन्द) नहीं तो; ऐय नीर्–प्यारो; नीविर्–तुम लोगों के; अयोत्तियिल् चॆन्ऱपिन्–अयोध्या में लौट जाने के बाद; यान् अवन् चेर्कुवॆन्–मैं उनके पास जाऊँगा; ॲन्ऱान्–कहा । २०७

जब श्रीराम और लक्ष्मण ने दुख के साथ अपनी यह बात कही, तब व्याकुलता से निर्बल हुए मन के जटायु ने उनको देखा और कुछ सोचा। फिर मन बदलकर उन्होंने कहा कि पुत्रो ! अगर मेरा मरना आपको ठीक नहीं लगता तो लो मेरे प्यारो ! तुम्हारे अयोध्या लौट जाने के बाद मैं अपने मित्र के पास जाऊँगा । २०७

❀ वेन्दन् विण्णडैन् दाॅनिल् वीररनीर्, एन्दु ञाल मिनिदळि यादिवण्
पोन्द ॅन्नै पुहुन्दवॅन् बुन्दिपोय्क्, कान्दु हिन्ऱदु कट्टुरै यीरॆन्ऱान् 208

वेन्तन्–चक्रवर्ती; विण् अटैन्तान् ॲतिल्–स्वर्ग सिधार गये तो; वीरर् नीर्–वीर तुम; एन्तु ञालम्–भरणयोग्य राज्य को; इनितु अळियातु–सुख से पालन किये बिना; इवण्–यहाँ; पोन्ततु ॲन्नै–आये क्यों; ॲन् पुन्ति–मेरा मन; पोय्–अस्थिर होकर; कान्तुकिन्ऱतु–दुखतप्त होता है; पुकुन्त ॲन्–बीच में हुए कौन से; कट्टुरैयीर्–समझाकर कहो; ॲन्ऱान्–पूछा । २०८

फिर जटायु को विचार आया कि ये जंगल क्यों आये हैं ? उन्होंने पूछा कि चक्रवर्ती स्वर्गवासी हुए तो वीर तुम्हारा कर्तव्य था कि भरण योग्य राज्य का पालन करो। पर सन्तोष के साथ राज्य-पालन करना छोड़कर यहाँ क्यों आये हो ? मेरा मन इधर-उधर भटककर दुखतप्त है ! क्या अनर्थ बीच में आये ? खूब खोलकर कहो । २०८

❀ तेवर् तानवर् तिण्डिर् नाहर्वे, ड्रेव राह विडरिळैत् तारॅनिल्
पूव रावु पॊलङ्गदिर् वेलिनीर्, शाव राक्कित् तरुवॅ नरशॅन्ऱान् 209

पू अरावु–रेतकर तेज किए हुए; पॊलन् कतिर् वेलितीर्–स्वर्ण-सम कान्ति

छिटकानेवाले भालों का धारण करनेवाले; तिण् तिऱल्–कठोर शक्तिमन्त; तेवर्–देव हों चाहे; तानवर्–दानव; नाकर्–नागलोक-वासी; वेऱु एवर् आक–अन्य कोई भी हों; इटर् इऴैत्तार् ॲनिल्–दुख दिया हो तो; चावर् आक्कि–उनको मृतक बनाकर; अरचु तरुवॅन्–राज्य दिला दूंगा; ॲन्ऱान्–कहा। २०९

खूब रेतकर तीक्ष्ण और स्वर्ण-सम कान्ति देनेवाले भाले के धारक कुँअर! आपको देवों ने कष्ट दिया हो, चाहे दानव; नागलोकवासी हों या और कोई —कहो कि अमुकों ने कष्ट दिया तो उनको मृतक बनाकर आपको राज्य दिला दूंगा। २०९

❀ तादै कूऱलुन् दम्बियै नोक्किनान्, शीदै केळ्व नवनुन्दन् शिऱ्ऱवै
माद राल्वन्द शॅय्है वरम्बिला, ओद वेलै यॊऴिविन् ऱुणर्त्तिनान् 210

तातै कूऱलुम्–पिता के कहने पर; चीतै केळ्वनुम्–सीतापति ने भी; तम्पियै नोक्कितान्–अनुज को देखा; अवनुम्–उन्होंने भी; तन् चिऱ्ऱवै मातराल्–अपनी छोटी माता देवी कैकेयी द्वारा; वन्त चॅय्कै–किया हुआ कार्य; वरम्पु इला ओत–जो निस्सीम घोषयुक्त; वेलै–दुख-सागर था वह; ऒऴिवु इन्ऱु–बिना अन्तर के; उणर्त्तितान्–बताया। २१०

जब पिता-सम जटायु ने यह वचन कहा तब सीतापति ने अपने अनुज के प्रति अर्थभरी दृष्टि फेरी। लक्ष्मण ने भी अपनी सौतेली माता देवी कैकेयी के कृत्य का घोषपूर्ण समुद्र-सा दुखवृत्तान्त पूर्ण रूप से, बिना कुछ छोड़े-छुड़ाये, कह सुनाया। २१०

❀ उन्दै युण्मैय नाक्कियुन् शिऱ्ऱवै, तन्द शॊल्लैत् तलैक्कॊण्डु तारणि
वन्द तम्बिक् कुदविय वळ्ळले, ॲन्दै वल्ल दियावर्वल् लारॅन्ना 211

उन्तै उण्मैयन् आक्कि–अपने पिता को सत्यनिष्ठ बनाकर; उन् चिऱ्ऱवै तन्त चॊल्लै–अपनी सौतेली माता की आज्ञा; तलै कॊण्टु–सिर पर धारण करके; तारणि–(अपने स्वत्व के) राज्य को; वन्त तम्पिक्कु–अपने अनुज भरत को देकर; उतविय–उपकार करनेवाले; वळ्ळले–दानी प्रभु; ॲन्तै वल्लतु–मेरे तात (तुम) जो कर सके; यावर् वल्लार्–ऐसा कौन कर सकता है; ॲन्ना–कहकर। २११

यह सुनकर जटायु ने साधुवाद दिया! हे राम! तुमने अपने पिता को सत्यसंध बनाया और अपनी सौतेली माता की आज्ञा शिरोधार्य करके धरणी को अपने कनिष्ठ भ्राता के पास सौंप दिया! तुम दानियों में श्रेष्ठ दानी हो! हे मेरे तात! हा! मेरा पुत्र जो कर चुका वह कौन कर सकता है?। २११

❀ अल्लित् तामरैक् कण्णनै यन्बुऱप्
पुल्लि मोन्द पॊऴिन्दकण् णीरिनन्

वल्लै मैन्दवम् मन्नैयु मॆन्नैयुम्
ऍल्लै यिल्पुह ऴॆय्दुवित् तायॆन्ऱान् 212

अल्लि तामरै कण्णनै–पंखुड़ियों सहित कमल-सम आँखों वाले श्रीराम को; अन्पु उऱ पुल्लि–प्रेम के साथ आलिंगित करके; मोन्तु–माथे पर चूमकर; पॊऴिन्त कण् नीरितन्–अश्रु वहानेवाले नेत्रों के साथ; मैन्त–पुत्र; अ मन्नैयुम्–उन चक्रवर्ती को; ऍन्नैयुम्–और मुझे भी; ऍल्लै इल् पुकऴ्–असीम यश; ऍय्तुवित्ताय्–दिला दिया; वल्लै–तुम समर्थ हो; ऍन्ऱान्–कहा (जटायु ने)। २१२

जटायु ने हर्षातिरेक से पद्मदलाक्ष श्रीराम को गले लगाया और सिर सूँघा (माथा चूमा)। आँखों से आनन्दबाष्प बहाते हुए जटायु ने कहा—पुत्र! तुमने चक्रवर्ती को और मुझे, दोनों को अपार यश दिला दिया! तुम बड़े समर्थ हो!। २१२

❀ पिन्न रुम्मप् पॆरियवन् पॆय्वळै, अन्न मन्न वणङ्गिनै नोक्किनान्
मन्नर् मन्नवन् मैन्दविव् वाणुदल्, इन्न ळॆन्न वियम्बुदि यालॆन्ऱान् 213

पिन्नरुम्–फिर भी; अ पॆरियवन्–उन बड़े ने; पॆय्वळै–कंकणधारिणी; अन्नम् अन्न–हंसिनी-सदृश; अणङ्कितै–देवी सीता को; नोक्कितान्–देखकर; मन्नर् मन्नवन् मैन्त–राजाधिराज के पुत्र; इ वाळ् नुतल्–यह उज्ज्वल ललाट वाली; इन्नळ–अमुक (कौन) है ऐसा; इयम्पुति–बतलाओ; ऍन्ऱान्–कहा। २१३

फिर भी उन वृद्ध जटायु ने कंकणधारिणी मरालीतुल्य देवी सीता को देखा और श्रीराम से कहा कि राजाधिराज के पुत्र! यह उज्ज्वल ललाट वाली कौन है? यह बताओ। २१३

अल्लि रुत्तन ताडहै यादिया
विल्लि रुत्तङ् गरिवैयै मेलैनाळ्
पुल्लु रुत्तदि यावुम् बुहन्रुत्तन्
शॊल्लि रुत्तनन् ऱॊन्ऱल्पिन् ऱोन्ऱिनान् 214

तोन्ऱल् पिन् तोन्ऱिनान्–श्रीराम के अनुज (लक्ष्मण) ने; मेलै नाळ्–पहले, आरम्भ में; अल् इरुत्तु अन्न–अन्धकारालय-सी; ताटकै आतिया–ताड़का (वृत्तान्त) आदि; विल् इरुत्तु–धनुभंग करके; अङ्कु–उधर; अरिवैयै–सीतादेवी से; पुल् उरुत्ततु–विवाह करना; यावुम् पुकन्रु–सभी सुनाकर; तन् चॊल् इरुत्तनन्–अपना कथन पूरा किया। २१४

तब श्रीराम के अनुज लक्ष्मण ने सारा श्रीराम-चरित सुनाया। अन्धकार के आगार-सी ताड़का का वध, मिथिला में शिव-धनुष तोड़ना, सीताजी का विवाह आदि सभी घटनाएँ वर्णन करके श्रीलक्ष्मण ने अपना कथन समाप्त किया। २१४

केट्टु वन्द किळरोळि मोलियान्, तोट्ट लङ्गलि नीर्तुऱन् दीर्वळम्
नाट्टु नीरिनि नण्णुदल् काऱुमिक्, काट्टिल् वैहुदिर् काक्कुवॅन् यानॆन्ऱान् 215

केट्टु उवन्त–सुनकर आनन्दित हुए; किळर् ऑळि मोलियान्–वर्धनशील प्रभा के किरीट के धारी; तोट्टु अलङ्कलित्तीर्–पुष्पमाला वाले; वळम् तुऱन्तीर्–धन-समृद्धि छोड़ आये हो; नाटु–अपने राज्य में; नीर् इनि नण्णुतल् काऱुम्–तुम लोगों के आगे पहुँचते तक; इ काट्टिल् वैकुतिर्–इस जंगल में रहो; यान् काक्कुवॅन्–मैं रक्षा करूँगा; ॲन्ऱान्–कहा ।_२१५

जाज्वल्यमान किरीट से शोभायमान जटायु ने तुष्ट होकर वादा किया कि हे पुष्पदलमाला-धारी वीरो ! तुम लोग धन आदि वैभव त्यागकर आये हो ! जब तक तुम अयोध्या लौट नहीं जाओगे, तब तक इसी वन में वास करो । मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा । २१५

इऱैव वॅण्णि यहत्तिय नीन्दुळ, तऱैयु नन्मणि याऱ्ऱि नहन्गरैत्
तुऱैयि नुण्डोरु शूळ्लच् शूळ्ल्पुक्, कुऱैदु मॅन्ऱन नुळ्ळत् तुऱैहुवान् 216

उळ्ळत्तुत्तु उऱैकुवान्–अन्तर्यामी भगवान श्रीराम; इऱैव–नाथ; अकत्तियन्–अगस्त्य का; ॲण्णि–विचारकर; ईन्तु उळतु–बतलाया हुआ स्थान; अऱैयुम् नल् मणि–कलरवयुक्त सुन्दर; आऱ्ऱिन् अकन् करै–गोदावरी नदी के विशाल तट पर; ओरु चूळ्ल् उण्टु–एक स्थान है; अ चूळ्ल् पुक्कु–उस स्थान में जाकर; उऱैतुम्–रहेंगे; ॲन्ऱनन्–कहा । २१६

सर्वान्तिर्यामी भगवान श्रीराम ने उत्तर में कहा कि हे नाथ ! अगस्त्य ने वासयोग्य कोई स्थान बताया है । वह कलरव सहित बहनेवाली श्रेष्ठ गोदावरी नदी के विशाल तट पर स्थित एक स्थान है । वहीं जाकर हम वास करेंगे । २१६

❀ पॅरिदु नन्ऱप् पॅरुन्दुऱै वैहिनीर्, पुरिदिर् मादवम् बोदुमिन् यानदु
तॅरिवु ऱुत्तुवॅ नॅन्ऱवर् तिण्शिऱै, विरियु नीळ्लिन् मेवविण् शॅन्ऱनन् 217

पॅरितुम् नन्ऱु–बड़ा अच्छा है; नीर् अ पॅरुम् तुऱै वैकि–तुम उस नदी के श्रेष्ठ घाट पर रहकर; मा तवम् पुरितिर्–महान तप करो; पोतुमिन्–चलो; यान् अतु तॅरिवुऱुत्तुवॅन्–मै वह स्थान दिखाऊँगा; ॲन्ऱु–कहकर; तिण् चिऱै निळ्लिल्–बलवान अपने पक्षों की छाया में; अवर् मेव–उनको आने देते हुए; विण् चॅन्ऱनन्–आकाश में उड़ता चला । २१७

जटायु ने उसे उचित समझा । कहा कि वह स्थान अवश्य बड़ा अच्छा है । तुम उसी घाट पर जाकर रहो और बड़ी तपस्या करो । चलो, मै भी तुम्हारे साथ चलूँगा और वह स्थान दिखा आऊँगा । वे आकाश पर उड़ते चले और उनके बलवान और विशाल पक्षों की छाया के नीचे श्रीराम आदि सुख से गये २१७

❀आय शूळ्‌ लरिय वुणर्त्तिय, तूय शिन्दैयत् तोमिल् गुणत्तवन्
पोय पिन्नैप् पॊरुशिलै वीररुम्, एय शोलै यिनिदुशॆन् ऱॆय्दिनार् 218

आय चूळल्–उस (पंचवटी के) स्थान को; अरिय उणर्त्तिय–समझा-बुझाकर; अ तूय चिन्तै–वे पवित्रमन; तोम् इल् कुणत्तु–निर्मल गुणों वाले; अवन्–वे जटायु; पोय पिन्नै–चले गये, उसके बाद; पॊरु विलै वीररुम्–युद्धोपयोगी धनुओं के स्वामी श्रीराम आदि; एय चोलै–वहाँ रहनेवाले एक उपवन में; इनितु चॆन्ऱु ऎय्तिनार्–सुख से जाकर रहे। २१८

उस स्थान, पंचवटी को दिखाकर और उसके सम्बन्ध में समझाकर पवित्रमन और उत्तम, निर्मल गुणों वाले जटायु चले गये। उसके बाद युद्धोपयोगी धनुष के रखनेवाले दोनों वीर देवी सीता के साथ वहाँ स्थित एक उपवन में गये। २१८

❀वार्प्पॊऱ् कॊङ्गै मरुहियै मक्कळै
एर्प्पच् चिन्दनै यिट्टव् वरक्कर्दम्
शीर्प्पैच् चिक्करत् तेरिनन् शेक्कैयिल्
पार्प्पैप् पार्क्कुम् बऱवैयिऱ् पार्क्कित्ऱान् 219

अ अरक्कर् तम् चीर्प्पै–वहाँ के राक्षसों की बलविशिष्टता को; चिक्कु अऱ–संशय के बिना; एऱ्प–खूब; चिन्ततै इट्टु–सोचकर; तेरितन्–जो निश्चित रूप से जानते थे, वे जटायु; वार् पॊन् कॊङ्कै–अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली; मरुकियै–पुत्रवधू सीताजी को; मक्कळै–और अपने पुत्रों को; चेक्कैयिल् पार्प्पै पार्क्कुम्–घोंसलों में पोटों की देखरेख करनेवाली; पऱवैयिल्–मादा पक्षी के समान; पार्क्कित्ऱात्–देखते रहे। २१९

जटायु राक्षसों के बल का पूरा ज्ञान रखते थे। उन्होंने खूब सोचा और मन में धारणा बना ली (कि इनकी रक्षा का खूब ध्यान रखना आवश्यक है)। अतः वे अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली पुत्रवधू सीताजी और दोनों कुमारों पर, सावधानी से अपने बच्चों की देखरेख करनेवाली मादा पक्षी के समान उन पर निगरानी रखते थे। २१९

5. शूर्प्पणहैप् पडलम् (शूर्पणखा पटल)

पुवियिनुक् कणिया यान्ऱ पॊरुडन्दु पुलत्तिऱ् ऱाहि
आवियहत् तुऱैह डाङ्गि यैन्दिणै नॆऱियळाविच्
चवियुऱत् तॆळिन्दु तण्णॆन् ऱॊळुक्कमुन् दळुविच् चान्ऱोर्
कवियॆनक् किडन्द कोदा वरियिनै वीरर् कण्डार् 220

पुवियित्तुक्कु अणियाय्–भूलोक का श्रृंगार (भूषण) बनकर; आन्ऱ पॊरुळ् तन्तु–श्रेष्ठ वस्तुएँ (पुरुषार्थ) प्रदान करते हुए; पुलत्तिऱ्ऱु आकि–खेतों (बुद्धि) का

पोषक रहकर; अवि अक तुऱैकळ् ताङ्कि–अपने में बने हुए अनेकों घाटों के साथ (प्रसादगुणपूर्ण अनेक कथाप्रसंगों के साथ); ऐ तिणै नॆऱि अळावि–पाँचों भूभागों पर से बहती हुई (पाँचों अंगों का वर्णन करती हुई); चवि उऱ तॆळिन्तु–छविमान रूप से साफ़ रहते हुए (जल्दी समझ में आकर ज्ञान दिलानेवाले रूप से साफ़ रहते हुए); तण् अॆन्ऱ ऒऴुक्कमुम् तऴुवि–शीतल धारा-प्रवाह के साथ (रम्य शैली के साथ); चान्ऱोर् कवि अॆन्न–उत्तम कवियों के काव्य के समान; किटन्त–दृश्यमान; कोतावरियिनै–गोदावरी नदी को; वीरर् कण्टार्–वीरों ने देखा। २२०

(इस पद में गोदावरी नदी और उत्तम कवि के रचे काव्य का श्लिष्ट वर्णन है।) वीरों (सीताजी के साथ श्रीराम और लक्ष्मण) ने उस गोदावरी को देखा, जो उत्तम कवि के रचे काव्य के समान पड़ी (वहती) थी।

[भुवि का शृंगार, चारों पुरुषार्थों का दायक, बुद्धि का पोषक, शृंगार रस के सुन्दर उपांगों के प्रसंगों का वर्णनकारी, (शृंगार) रस भरे काव्य के प्रधान अंगों का (तिणै) चित्रण करनेवाला, मनोहारी छटा के साथ स्वच्छ और शीतल प्रवाहमयी शैली के साथ रहनेवाले उत्तम कवि के काव्य के समान भुवि का शृंगार वनकर अनेक पदार्थों को देती हुई या पैदा करने में सहायता देती हुई, खेतों की पोषक, ताप शान्त करनेवाले अनेक घाटों से युक्त, पाँचों (पर्वत, वन, नदी की कछार, समुद्र तट और मरु के) प्रदेशों से होकर सुन्दर रूप से स्वच्छ और शीतल सुखावह प्रवाह के साथ वहनेवाली गोदावरी नदी को वीरों ने देखा।]

[पॊरुळ्–पुरुषार्थ या पदार्थ; पुलम्–बुद्धि (ज्ञान) या खेत; तुऱैहळ–शृंगार-रस-कथा के उपांगों का वर्णन या घाट; तिणै–प्रधान भाग, प्रधान भूभाग]। २२०

वण्डुऱै कमलच् चव्वि वाण्मुहम् वॊलिय वाशम्
उण्डुऱै कुवळै यॊण्ग णॊरुङ्गुऱ नोक्कि यूऴिऩ्
तॆण्डिरैक् करत्तिऩ् वारित् तिरुमलर् तूविच् चॆल्वर्क्
कण्डडि पणिव दॆऩ्ऩप् पोलिन्ददक् कडवुळ् याऱु 221

अ कटवुळ् याऱु–वह दिव्य नदी; चॆल्वर् कण्टु–उन श्रीमानों को देखकर; वण्टु उऱै कमलम्–अलिकुलावृत कमल रूपी; चॆव्वि वाळ् मुकम्–सुन्दर उज्ज्वल मुख; पॊलिय–आनन्द से शोभित करके; वाचम् उण्टु–सुगन्धियुक्त; उऱै–वहाँ रहनेवाले; कुवळै ऒण् कण्–कुवलय रूपी प्रभापूर्ण आँखों से; ऒरुङ्कु उऱ नोक्कि–एकाग्रता से खूब देखकर; ऊऴिऩ् तॆळ् तिरै करत्तिऩ्–क्रम से उठनेवाली तरंग रूपी हाथों से; तिरु मलर् वारि–सुन्दर पुष्पों को लेकर; तूवि–बरसाकर; अटि पणिवतु अॆन्न–चरणों पर विनत हो रही हो, ऐसा; पॊलिन्ततु–दर्शनीय रही। २२१

उस दिव्य नदी ने उन श्रीमंत कुमारों को देखा तो उसका अलिकुल-कलित कमल रूपी मुख विकसित हुआ। वह सुवासित वनप्राय कुवलय रूपी

आँखों द्वारा देखते हुए क्रमानुक्रम में उठनेवाली स्वच्छ तरंगों रूपी हाथों से पुष्पों को लेकर उनके चरणों पर डालते हुए प्रणमन कर रही हो —ऐसा लगा। २२१

अॅळ्वुरु कादलारि निरैत्तिरैत् तेङ्गि येङ्गिप्
पळ्वनाट् कुवळैच् चॅव्विक् कण्बनि परन्दु शोर
वळ्विला वाय्मै मैन्दर् वनत्तुरै वरुत्त नोक्कि
अळ्वतु मॊत्त दालव् वलङ्गु नीराऱु मन्नो 222

अलङ्कु नीर्—हिलती बहनेवाली जलधारा की; अ आरु—वह नदी; वळु इला वाय्मै मैन्तर्—अचल सत्यसंध उन कुमारों का; वनत्तु उरै वरुत्तम् नोक्कि—वनवास का दुख देखकर; अॅळु उरु कातलाल्—उठे हुए प्रेम के साथ; इरैत्तु इरैत्तु—लम्बी साँस लेते-लेते; एङ्कि एङ्कि—तरस खाते-खाते; पळुव—वन-सम घने; नाळ् कुवळै—उसी दिन विकसित कुवलय रूपी; चॅव्वि कण्—आकर्षक आँखों से; पनि—जलकण; परन्तु चोर—बरसाकर बहाते हुए; अळुवतु ऑत्ततु—रोती हो, ऐसा लगी। २२२

वह हिलती हुई बहनेवाली नदी सत्यनिष्ठ उन वीरों के वनवास-जनित दुख को देखकर लम्बी आहें भरते हुए तरस के साथ रो रही हो, ऐसा भी लगा। उनके वनप्राय कुवलय रूपी नेत्रों में हिमकण दिखाई दिये। २२२

नाळङ्गॊ णळिनप् पळ्ळि नयनङ्ग ळमैय नेमि
वाळङ्ग ळुरैव कण्डु मङ्गैतन् कॊङ्गै नोक्क
नीळङ्गॊळ् शिलैयोन् मट्रन् नेरिळै नॅडिय नम्बि
तोळिनुग णयनम् वैत्ताळ् शुडर्मणित् तडङ्गळ् कण्डाळ् 223

नीळम् कॊळ् चिलैयोन्—दीर्घ धनु के धारक श्रीराम ने; नाळम् कॊळ्—नाल सहित; नळिन पळ्ळि—कमल रूपी शय्या पर; नयनङ्कळ् अमैय—आँखें उन्मीलित करके; नेमि वाळङ्कळ्—चक्रवाक पक्षियों को; उरैव कण्टु—रहते देखकर; मङ्कै तन् कॊङ्कै नोक्क—देवी के स्तनों पर दृष्टि लगाई, तब; अ नेरिळै—उन आभरणभूषिता देवी ने; चुटर् मणि—कान्तियुक्त नीले रत्नों से भरे; तटङ्कळ् कण्टाळ्—टीलों को देखकर; नॅटिय नम्पि—उन्नत नायक श्रीराम के; तोळिन् कण्—कन्धों पर; नयनम् वैत्ताळ्—आँखें डालीं। २२३

(पति-पत्नी दोनों विविध दृश्य देखते हैं और परस्पर अर्थभरी निगाहें डालकर रसानुभव प्राप्त करते हैं।) दीर्घ-धनुर्धर श्रीराम ने कमलों पर आँखें उन्मीलित करते हुए चक्रवाक पक्षियों के जोड़े को देखा और अपनी अर्द्धांगिनी के उरोजों पर दृष्टि चलायी। तो श्रेष्ठ आभरणालंकृता सीताजी ने उज्ज्वल नीले रत्नों से युक्त बालू के टीलों को देखा और सहज रूप से अपनी दृष्टि श्रीराम के सुडौल दीर्घ कंधों पर डाली। २२३

❀ ओदिम मींदुङ्गक् कण्ड वुत्तम नुळैय ळाहुम्
शीदैतन् नडैयै नोक्किच् चिऱियदोर् मुऱुवल् शॅय्दान्
मादव डानु माण्डु वन्दुनी रुण्डु मीळुम्
पोदह नडप्प नोक्किप् पुदियदोर् मुऱुवल् पूत्ताळ् 224

ओतिमम्–हंस को; मींतुङ्क कण्ट–किनारा खींचते देखकर; उत्तमन्–पुरुषोत्तम श्रीराम; उळैयळ् आकुम्–पास आनेवाली; चीतै तन् नटैयै नोक्कि–सीताजी की चाल देखते हुए; चिऱियतु ओर् मुऱुवल्–एक मन्दहास; चॅय्तान्–किया; मातु अवळ् तानुम्–देवी, उन्होंने भी; आण्टु–(उस नदी पर) वहाँ; वन्तु नीर् उण्टु मीळुम्–आकर जल पीकर लौटनेवाले; पोतकम् नटप्प नोक्कि–गज को डग भरते देखकर; पुतियतु ओर् मुऱुवल्–नया (विचित्र) एक हास; पूत्ताळ्–विकसित किया। २२४

वहाँ एक हंस (सीताजी की चाल देखकर) हटकर जाने लगा। श्रीराम ने वह देखा और पास आनेवाली सीताजी की चाल देखकर मन्दहास किया। देवी ने एक गज को देखा जो नदी पर आकर पानी पीने के बाद लौट जा रहा था और अनोखा अर्थ-भरा हास हँसीं। २२४

❀ विल्लियर् ऱडक्कै वीरन् वीङ्गु नीराऱ्ऱिन् पाङ्गर्
वल्लिह णुडङ्गक् कण्डान् मङ्गैदन् मरुङ्गु नोक्क
ऍल्लियङ् गुवळैक् कानत् तिडैयिडै मलर्न्दु निन्ऱ
अल्लियङ् गमलङ् गण्डा ळण्णऱन् वडिवङ् गण्डाळ् 225

विल् इयल्–धनुर्विद्या में अभ्यस्त; तट कै वीरन्–विशालहस्त वीर; वीङ्कु नीर् आऱ्ऱिन् पाङ्कर्–समृद्ध-जल नदी के पास; वल्लिकळ्–लताओं को; नुटङ्क कण्टान्–लचकते देखा; मङ्कैल् तन्–देवी की; मरुङ्कुल् नोक्क–कमर पर दृष्टि डाली तो; ऍल्लि अम् कुवळै कानत्तु–अन्धकार के समान फैले पड़े कुवलय वन के; इटै इटै–बीच-बीच में; मलर्न्तु निन्ऱ–विकसित रहे; अल्लि अम् कमलम्–पंखुड़ियों से भरे कमलों को; कण्टाळ्–देखनेवाली (देवी) ने; अण्णल् तन् वटिवु कण्टाळ्–महिमावान नायक के शरीर पर दृष्टि दौड़ाई। २२५

धनुर्धर श्रीराम ने समृद्धजल वाली नदी के पास लताओं को देखा और उसी स्मृति में सुमध्यमा की कमर निहारी! तब देवी ने अंधकार-सम रंग वाले कुवलय-वन को बीच-बीच में कमलों के साथ देखा और लगे हाथ महिमावान प्रभु के शरीर पर उनकी दृष्टि जा जमी। २२५

अनैयदोर् तन्मै यान वरुविनी राऱ्ऱिन् पाङ्गर्प्
पनिदरु दॅय्वप् पञ्ज वडियॅनुम् वरुवच् चोलैत्
तनियिड मदनै नण्णित् तम्बियार् चमैक्कप् पट्ट
इनियपूञ् जाल यॅय्दि यिरुन्दन निराम निप्पाल् 226

इरामन्-श्रीराम; अनैयतु ओर् तऩ्मैयात्-वैसी एक स्थिति की; अरुवि नीर् आऱ्ऱिऩ् पाङ्कर्-सरिताओं की मिलकर बनी गोदावरी नदी के पास; पत्ति तरु तॆय्व-शीतल और दिव्य; पञ्चवटि ऎऩ्ऩुम्-पंचवटी नाम के; परुव चोलै-सभी ऋतुओं में मनोरम रहनेवाले उपवन में; तऩि इटम् अतऩै-एकान्त स्थान को; नण्णि-जाकर; तम्पियाल् चमैक्क पट्ट-छोटे भाई द्वारा निर्मित; इऩिय पूम् चालै ऎय्ति-प्यारी मनोरम, पर्णशाला में पहुँचकर; इरुन्ततऩ्-रहे; इप्पाल्-इसके बाद। २२६

ऐसी गोदावरी नदी के किनारे पंचवटी नाम के स्थान में एक उपवन में, जो सभी ऋतुओं में मनोरम और सुखद रहता था, श्रीराम आदि गये। वहाँ छोटे भाई लक्ष्मण ने एक सुन्दर पर्णशाला निर्मित की। श्रीराम उसमें (अपनी प्रिया के साथ) रहने लगे। तब शूर्पणखा वहाँ आयी। २२६

नीलमा मणिनिऱ निरुदर् वेन्दऩै
मूलना शम्बॆऱ मुडिक्कु मुऩ्बिऩाल्
मेलैना ळुयिरॊडुम् पिऱन्दु ताऩ्विळै
कालमोर्न् दुडनुऱै कडिय नोयऩाळ् 227

मा नील मणि निऱ निरुतर् वेन्तऩै-बड़े नीले रत्न के समान रंग वाले राक्षस-राजा (रावण) को; मूल नाचम् पॆऱ-समूल नाश करने के लिए; मुटिक्कुम्-उपाय कर चुकने की; मुऩ्पिऩाल्-प्रेरणा से; मेलै नाळ्-आरम्भ के दिन में ही; उयिरॊटुम् पिऱन्तु-जन्म के साथ पैदा होकर; ताऩ् विळै कालम् ओर्न्तु-फलदान का समय देखकर; उटऩ् उऱै-(जीव के) साथ रहनेवाली; कटिय नोय् अऩाळ्-कठोर व्याधि के समान जो रही, ऐसी। २२७

शालीन नीले रत्न के समान काले रंग के राक्षस रावण का समूल नाश करने का उपाय करनेवाली विधि की प्रेरणा से शूर्पणखा वहाँ आयी। वह ऐसे रोग के समान थी, जो शरीर के साथ-साथ जन्म के अवसर पर पैदा हो जाता है और ऐन समय की प्रतीक्षा में उसके साथ लगा रहता है। २२७

शॆम्बरा हम्बडच् चॆऱिन्द कून्दलाळ्
वॆम्बरा हन्दनि विळैन्द मॆय्यिनाळ्
उम्बरा नवर्क्कुमोण् डवर्क्कु मोदनीर्
इम्बरा नवर्क्कुमो रुऱुदि योट्टुवाळ् 228

चॆम्पु अराकम् पट-ताम्र का रंग बिछुड़ जाय, ऐसे लाल; चॆऱिन्त-और घने; कून्तलाळ्-केश वाली; वॆम्पु-उष्णतप्त; अराकम् तऩि विळैन्त-कामराग-विवर्धित; मॆय्यिनाळ्-शरीर वाली; उम्पर् आऩवर्क्कुम्-देवों का; ऒण् तवर्क्कुम्-और श्लाघ्य तपस्वियों का; ओतम् नीर्-समुद्रजल से; इम्पर् आऩवर्क्कुम्-(वलयित) इस लोक के वासियों का; ओर् उऱुति ईट्टुवाळ्-एक अपूर्व हित साधन करनेवाली। २२८

उसके केश ताँबे के रंग को मात देनेवाले अरुण वर्ण के थे। उसका

शरीर कामेच्छा के उष्ण से तप्त था। वह अनजान में ही देवों, श्रेष्ठ तपस्वी लोगों और इस समुद्र-मेखला पृथ्वी के वासियों का हित करनेवाली बनी आयी। २२८

❀ वॆय्यदोर् कारण मुण्मै मेविन्ऩाळ्
वैहलुन् दमियळव् वन्ऩत्तु वैहुवाळ्
नॊय्दिऩिव् वुलहॆला नुऴैयु नोन्मैयाळ्
ऐय्दिऩ ळिराहव ऩिरुन्द शूऴल्वाय् 229

वॆय्यतु ओर् कारणम्–अनर्थकारी एक कारण (कामवासना) के; उण्मै मेविऩाळ्–अस्तित्व को अपनानेवाली; तमियळ्–अकेली; अ वऩत्तिल्–उस वन में; वैकुवाळ्–वास करनेवाली; नॊय्तिऩ्–अनायास; इ–इस; उलकु ऎलाम् नुऴैयुम्–लोक में सर्वत्र पहुँचने का; नोन्मैयाळ्–सामर्थ्य वाली; इराकवऩ् इरुन्त चूऴल् वाय्–(जहाँ) श्रीराघव रहे, उस स्थान में; ऎय्तिऩळ्–आई। २२९

भयंकर एक कारण था, जिसके संपादनार्थ वह वन में अकेली रहती थी। (वह कारण उसकी कामलिप्सा हो सकता है या अपने पति को मारने वाले अपने भाई रावण के प्रति उसका क्रोध भी हो सकता है।) वह सारे लोक में घुसकर चलने की शक्ति और साहस रखती थी। वह अकस्मात उस स्थान पर आयी, जहाँ श्रीराम रहते थे। २२९

❀ ऒण्डरु मिमैयव ररक्क रॆङ्गण्मेल्
विण्डनर् विलक्कुदि यॆऩ्ऩ मेलन्ऩाळ्
अण्डशत् तरुन्दुयि ऱुऱन्द वैयऩैक्
कण्डन ळिऩ्गिळैक् किऱुदि काट्टुवाळ् 230

तऩ् किळैक्कु–अपने परिवारों को; इऱुति काट्टुवाळ्–अन्त दिखाने (दिलाने) वाली ने; मेलै नाळ्–पहले कभी; ऒण् तरुम् इमैयवर्–सबसे प्रशंसित सुर लोगों के; अरक्कर् ऎङ्कळ् मेल् विण्टतर्–राक्षसों ने हमसे वैर किया है; विलक्कुति ऎऩ्ऩ–मिटाइए यह प्रार्थना करने पर; अण्टचत्तु–अण्डज नाग पर; अरुन्तुयिल् तुऱन्त–अपूर्व योगनिद्रा-त्यागी (अवतरित हुए); ऐयऩै–महाप्रभु को; कण्टऩळ्–देखा। २३०

अपने बन्धु-बान्धवों को अंत दरसानेवाली उसने श्रीराम पर दृष्टि लगायी। किस श्रीराम पर? एक समय पूजनीय देवों ने विष्णु भगवान से प्रार्थना की कि राक्षस हमसे वैर करते है; हमें बचा लीजिए। तब परमात्मा ने अण्डज नाग पर अपना शयन और योगनिद्रा त्यागकर इस संसार पर श्रीराम का अवतार लिया था। ऐसे श्रीराम को उसने देखा। २३०

❀ शिन्दैयि लुऱैबवर् कुऱुवन् दीय्न्ददाल्
इन्दिरऱ् कायिर नयऩ मीशऱ्कु

मुन्दिय मलर्क्कणोर् मून्ऱु नान्गुतोळ्
उन्दियि लुलहळित् ताऱ्कॅन् ऱुन्नुवाळ् 231

चिन्तैयिल् उऱैपवऱ्कु–मन में वास करनेवाले (मन्मथ) का; उरुवम् तीय्न्ततु–शरीर जल गया; इन्दिरऱ्कु–देवेन्द्र के तो; आयिरम् नयनम्–सहस्र आँखें हैं; इचऱ्कु–ईश्वर शिव के; मुन्तिय–अपूर्व; मलर् कण्–कमल-सम नेत्र; ओर् मून्ऱु–तीन हैं; उन्तियिन्–नाभी से; उलकु अळित्तार्क्कु–लोकों को दिलानेवाले (विष्णुदेव) के; नान्कु तोळ्–चार हाथ हैं; ऍन्ऱु–ऐसा; उन्नुवाळ्–सोचती। २३१

वह विचार करने लगी कि ये कौन हैं ? मनोवासी मन्मथ है क्या ? पर उसका शरीर तो जल गया और वह अशरीरी है ! देवेन्द्र ? उसके तो सहस्र नेत्र हैं। शिवजी हैं क्या ? उनके तो तीन आँखें हैं। विष्णु भी नहीं हो सकते, जिन्होंने अपनी नाभि से लोकों की सृष्टि की क्योंकि उनके चार हाथ होते हैं और इसके तो दो ही है। २३१

❀ कऱ्ऱैयन् जडैयवन् कण्णिऱ् कायदलाल्
इऱ्ऱव नन्ऱुतॊट् टिन्ऱु काऱुन्दान्
नऱ्ऱव मियऱ्ऱियव् वनङ्ग नल्लुरुप्
पॆऱ्ऱन नामॆनप् पॆयर्त्तु मॆण्णुवाळ् 232

कऱ्ऱै अम् चटैयवन्–जूट बनी सुन्दर जटा वाले की; कण्णिल्–(भाल की) आँख (की अग्नि) से; कायतलाल्–जला देने से; इऱ्ऱवन्–अरूप बना; अ अनङ्कन् तान्–वह अनंग ही; अन्ऱु तॊट्टु इन्ऱु काऱुम्–उस दिन से आज तक; नल् तवम् इयऱ्ऱि–अच्छा तप करके; नल् उरु पॆऱ्ऱतन् आम्–यह सुन्दर रूप पा गया हो; ऍन–ऐसा; पॆयर्त्तुम्–फिर भी; ऍण्णुवाळ्–सोचती। २३२

वह आगे सोचती— जटाधारी शिवजी के भाल के नेत्र से निकली आग से जलकर जो अरूप बन गया था, वह अनंग उस दिन से आज तक तपस्या करके यह सुन्दर रूप पा गया क्या ? । २३२

❀ तरङ्गळि नमैन्दुताळ्न् दुयर्न्द तालमा
मरङ्गळु निहर्क्किल मलैयुम् बुल्लिय
उरङ्गळि नुयर्दिशै योम्बु मानैयिन्
करङ्गळे यिवन्मणिक् करमॆन् ऱुन्नुवाळ् 233

इवन् मणि करम्–इसके सुन्दर हाथ; तरङ्कळिन् अमैन्तु–सम और श्रेष्ठ बनकर; ताळ्न्तु–दीर्घ रहते है; उयर्न्त ताल मा मरङ्कळुम्–ऊँचे तालवृक्ष भी; निकर्क्किल–तुलना नहीं कर सकते; मलैयुम् पुल्लिय–पर्वत भी अल्प है; उरङ्कळिल् उयर्–बल में बढ़े-चढ़े; तिचै ओम्पु–दिशाओं में रहकर पालन करनेवाले; यानैयिन्–गजों के; करङ्कळे–कर ही हैं; ऍन्ऱु उन्नुवाळ्–ऐसा सोचती। २३३

इसके सुन्दर हाथ परस्पर सम, वडे ही सुन्दर और आजानु लम्बे हैं।

इनकी उपमा बड़े तालवृक्ष नहीं कर सकते; पर्वत भी अलग रह जायेंगे। इसलिए बल में बढ़े हुए दिग्गजों के कर ही हैं इनके हाथ! । २३३

विल्मलै वल्लवन् वीरत् तोळोट्टम्
कल्मलै निकर्क्किल कनिन्द नीलत्तिन्
नन्मलै यल्लदु नाम मेरुवुम्
पोन्मलै यादलाल् पोरुवि लादेन्बाळ् 234

विल् मलै वल्लवन्–धनुर्युद्धसमर्थ इनके; वीर तोळ् ओट्टम्–वीरता-भरे कन्धों से; कल मलै निकर्क्किल–मामूली पत्थर के पर्वत तुल नहीं सकते; कनिन्त नीलत्तिन्–पपके नीले रत्नों के; नन् मलै अल्लदु–सुन्दर पर्वत के सिवा; नाम मेरुवुम्–नामी मेरु पर्वत भी; पोन मलै आतलाल्–स्वर्ण-पर्वत होने के कारण; पोरुवलादु–समान नहीं बन सकता; ऍन्पाळ्–कहती। २३४

धनुर्युद्ध में समर्थ इसके वीरतापूर्ण सबल कंधों की समता साधारण पत्थर का पर्वत नहीं कर सकता। पर प्रवृद्ध नीली मणि का श्रेष्ठ पर्वत कर सकता है। उसके सिवा नामी मेरु पर्वत भी नहीं कर सकता क्योंकि वह स्वर्णमय है। —ऐसी राय कहती वह शूर्पणखा। २३४

ताळुयर् तामरैत् तळङ्ग ळम्मोट्टम्
केळुयर् नाट्टत्तन् गिरियिन् ऱोऱ्ऱत्तान्
तोळोडु तोळिनैत् तोडर्न्दु नोक्कुऱिन्
नीळिय वल्लकण् णॅडिदु मार्बॅन्बाळ् 235

ताळ् उयर्–नाल के कारण ऊँचे रहनेवाले; तामरै तळङ्ङळ् तम् ओट्टम्–कमल की पंखुड़ियों सहित; केळ् उयर्–उज्ज्वलता में बढ़ी; नाट्टत्तन्–आँखों वाला है; किरियिन् तोऱ्ऱत्तान्–गिरि-सम आकार का है; तोळ् ओटु तोळिनै–एक कन्धे के साथ दूसरे कन्धे को; तोटर्न्तु नोक्कुऱिन्–बराबर एक ही दृष्टि में देखना चाहूँ तो; कण् नीळिय अल्ल–मेरी आँखें लम्बी नहीं हैं (दृष्टि में सामर्थ्य नहीं है); नॅटितु मार्पु ऍन्पाळ्–विशाल वक्ष वाला है, कहती। २३५

वह उनके रूप को अंग-अंग देखती और सराहती। इनकी आँखें कमलदल की शोभा लिये बहुत मनोरम हैं। पर्वत-समान आकार के इसके दोनों कंधों को एक साथ, एक दृष्टि में देखना कठिन है क्योंकि मेरी आँखें उतनी लम्बी नहीं रहतीं। इसका वक्ष बहुत विशाल है। २३५

अदिहनिन् ऱोळिरुमिव् वळहन् वाण्मुहम्
वॊदियविळ् तामरैप् पूवै यॊप्पदो
कदिर्मदि यामॆनिऱ् कलैह ळेयुमम्
मदियॆनिन् मदिक्कुमोर् मरुवण् डॆन्नुमाल् 236

निन्नूरु अतिकम् ऑळिरुम्–स्थिर रूप से अधिक दीप्तिमान; इ अळकन् वाळ् मुकम्–इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल मुख; पॉति अविळ् तामरै पूवै ऑप्पतो–पंखुड़ियाँ जिसकी विकसित हो रही हैं, उस कमल की उपमा वन सकता है; कतिर् मति आस्–(शीतल-) किरण (पूर्ण) चन्द्र है (कहूँ); ऍन्निल्–तो; कलैकळ् तेयुम्–कलाएँ लुप्त होती जाती हैं; अ मति ऍन्निल्–वह चन्द्र (सम) है, कहा भी जाय तो; मतिक्कुम्–पूर्ण चन्द्र में भी; ओर् मरु उण्टु–एक कलंक है; ऍन्नुम्–ऐसा कहती। २३६

स्थिर रूप से अत्यधिक शोभायमान रहनेवाले इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल आनन विकासशील कमल से उपमित हो सकता है क्या? नहीं। उज्ज्वल किरणों वाला पूर्ण-चन्द्र उपमान वन सकता है क्या? नहीं। क्योंकि दूसरे दिन से वह क्षीण होने लग जाता है। पूर्णता स्थायी न होने पर भी राका-चन्द्र की उपमा मान जायँ तो भी उसमें कलंक है। अतः राका-चन्द्र भी इसकी उपमा नहीं वन सकता। २३६

❀ ऍवन्शॅय विनियविव् वळहै यॅय्दिनान्
अवञ्जॅय्दु तिरुवुडम् बलश नोर्किन्रान्
नवञ्जॅयत् तहैयविन् नळिन नाट्टत्तान्
तवञ्जॅयत् तवञ्जॅय्द तवमॅ ऍन्गिराळ् 237

इत्तिय इ अळकै–मधुर इस सुन्दरता को; ऍय्तित्तान्–जो प्राप्त है, यह; अवम् चॅय–अपना रूप विगाड़ने के लिए; तिरु उटम्पु–श्रीशरीर; अलच–कष्ट उठाए, ऐसा; ऍवन् चॅय–क्या साधने के लिए; नोर्किन्रान्–तप करता है; नवम् चॅयत्तकैय–नित-नवीन; इ नळित नाट्टत्तान्–यह कमल-सम आँखों वाला; तवम् चॅय–तपस्या करे, इसके लिए; तवम् चॅय्त तवम् ऍन्–तप ने किया कैसा तप है; ऍन्किन्राळ्–कहती। २३७

इतनी सुन्दरता पाने का भाग्यशाली यह अपने लावण्य को नष्ट करते हुए और श्री शरीर को दुख देते हुए कौन सा कार्य साधने के लिए तपस्या करता है? हा! नितनवीन कमलसम आँखों वाला यह तप करे, इसके लिए तप ने क्या ही तप किया है? —यह आश्चर्य करती! । २३७

उडुत्तनी राडैय ळुरुवच् चॅव्वियळ्
पिडित्तरु नडैयिनळ् पॅण्मै नन्रिवन्
अडित्तलन् दीण्डलि नवनिक् कम्मयिर्
पॉडित्तल पोलुमिप् पुल्लॅन् रुन्नुवाळ् 238

उट्टुत्त नीर् आटैयळ्–समुद्रवसना; उरुव चॅव्वियळ्–रूपसौंदर्यवती; पिटितरु नटैयितळ्–हथिनी-सम चाल वाली (भूदेवी का); पॅण्मै नन्रु–स्त्रीत्व श्लाघनीय है; इ पुल्–ये घासें; इवन् अटित्तलम् तीण्टलिन्–इसके चरणों के स्पर्श से; अ मयिर्–उसके रोंगटे; पॉटित्तत पोलुम्–खड़े हुए हों, ऐसी लगती हैं; ऍन्रु उन्नुवाळ्–ऐसा सोचती। २३८

समुद्रवसना, सौन्दर्यवती और हथिनी-सी चाल वाली भूमिदेवी का स्त्रीत्व भाग्यवान हो गया। इन घासों को देखो। भूमि के रोम के समान हैं जो इसके चरण-स्पर्श से पुलकित हो खड़े रहते हैं —यह कवित्वपूर्ण विचार करती। २३८

वाणिला मरुवलान् वयङ्गु शोदियैक्
काणल नेर्कोलाङ् कदिरि नायहन्
शेणॅलाम् बुल्लॊळि शॅलुत्तिच् चिन्दैयिल्
नाणिलन् मीमिशै नडक्कु मॅन्गिन्ड्राळ् 239

वाळ् निला मुरुवलान्–उज्ज्वल चाँदनी-सम दाँतों वाले इसकी; वयङ्कु चोतियै–शोभायमान प्रभा को; कतिरिन् नायकन्–किरणनायक सूर्य ने; काणलते कॊलाम्–देखा नहीं है शायद; चेण् ऎलाम् पुल् ऒळि चॅलुत्ति–(तभी तो) दूर-दूर तक अपनी मन्द प्रभा फैलाते हुए; चिन्तैयिल्–मन में; नाण् इलन्–लाज-रहित; मी मिचै–आकाश में; नटक्कुम्–संचार करता है; ऎन्किन्ड्राळ्–यह निंदा करती। २३९

उज्ज्वल चाँदनी के समान दाँत वाले इसके शरीर की ज्योति को रश्मिपति सूर्य ने देखा नहीं है शायद क्या? तभी तो वह दूर-दूर तक अपना मंद प्रकाश फैलाते हुए, निर्लज्ज होकर, आकाश में संचार करता है! —ऐसा कहती। २३९

कुप्पुड्रर् करियमाक् कुन्ड्रै वॅन्ड्रुयर्, इप्पॅरुन् दोळव निदळ्ळुक् केड्रपदोर्
ऒप्पॅन वुलहमे युरैक्कि नॊण्णुमो, तुप्पिनिड्र् ड्रुप्पुडै यादैच् चॊल्लुहेन् 240

कुप्पुड्रड्कु अरिय–जिसको लाँघना मुश्किल है, उस; मा कुन्ड्रै वॅन्ड्रु–बड़े पर्वत को हराकर; उयर्–उन्नत हुए; इ पॅरुम् तोळवन्–बड़े कन्धों वाले इसके; इतळ्क्कु–अधरों की; ओप्पु ऎन–समता करनेवाला ऐसा; उलकमे उरैक्किन्–सारी दुनिया कहे तो भी; ऒण्णुमे–वह समान हो सकता है क्या; तुप्पितिल्–प्रवाल से बढ़कर; तुप्पु उटै–(उपमा होने का) सामर्थ्य रखनेवाला; यातै चॊल्लुकेन्–किसको कह सकूँगी। २४०

अलंघ्य पर्वत को भी नीचा दिखानेवाले कन्धों से शोभायमान इसके अधरों की तुलना प्रवाल से लोक करते है। तो क्या प्रवाल में वह सामर्थ्य है? लेकिन प्रवाल से बढ़कर समर्थ उपमा कहाँ खोजूँ? (तुप्पु—प्रवाल; सामर्थ्य)। २४०

नड्कलै मदियुड्र वयङ्गु नम्बितन्, ऎड्कलै तिरुवरै यॅय्दि येमुड्र
वड्कलै नोड्रन्र माशि लामणिप्, पॊड्कलै नोड्रिल पोलु मालॅन्ड्राळ् 241

नल् कलै मति–पूर्ण-(कला)-चन्द्र की; उड्र–तुलना करते हुए; वयङ्कुम्–शोभायमान; नम्पि तन्–इस पुरुष-नायक की; ऎल् कलै–सूर्य (प्रभा-) हारी; तिरु अरै–श्रीयुक्त कमर को; अय्ति–प्राप्त करके; एम् उड्र–आनन्द भोगने के लिए;

वऱ्कलै नोऱ्ऱत–वल्कल ने तप किया था; माचु इला मणि–निर्दोष और श्रेष्ठ; पॊन् कलै–स्वर्ण-वस्त्र ने; नोऱ्ऱिल पोलुम्–तप नहीं किया शायद; अॅन्ऱाळ्–कहती। २४१

वह वल्कल का भाग्य सराहती। कहती— सारी कलाओं से पूर्ण चन्द्र के समान शोभायमान 'इस पुरुषनायक की सूर्यप्रभाहारी श्रीकमर को लपेटकर सुखभोग करने का भाग वल्कल ने ही अपने तप द्वारा प्राप्त किया है। क्या स्वर्ण-वस्त्र ने तपस्या नहीं की है शायद ? । २४१

तॊडैयमै नॆडुमळैत् तॊड्ग लामॆनक्
कडैहुळन्ऱ् इडैनॆरि करिय कुञ्जियैच्
चडैयॆनप् पुऩैन्दिल नॆन्निऱ् ऱैयलार्
उडैयुयिर् यावैयु मुडैयु मालॆन्ऱाळ् 242

तॊटै अमै–बराबर और; नॆटु मळै तॊड्कल् आम् ॲॆन–लम्बी बारिश की धार के समान; कटै कुळन्ऱु–छोर कुंचित होकर; इटै नॆरि–बीच में खूब घने; करिय कुञ्चियै–काले केश को; चटै ॲॆन पुऩैन्तिलन् ॲॆन्तिल्–जटा बनाकर नहीं रखता तो; तैयलार् उटै–स्त्रियों के; उयिर् यावैयुम्–सारे प्राण; उटैयुमाल्–मिट जाते; ॲॆन्ऱाळ्–कहती। २४२

वह स्त्रियों पर तरस खाती, कहती। इनके काले केश मेघ से बराबर गिरनेवाली धार के समान लम्बे और छोर में कुंचित हैं। वे घने हैं। अगर यह उनको जटा के रूप में नहीं बाँधता तो स्त्रियों के प्राण मिट जाते (स्त्रियों के मन टूट जाते)। २४२

नाऱिय नहैयणि नल्ल पुल्लिऩाल्
एऱिय शॆव्वियै यियऱ्ऱु मोवॆना
माऱहन् मुळ्ळमणिक् करशिन् माट्चिदान्
वेऱोरु मणियिनाल् विळङ्गु मोवॆन्ऱाळ् 243

नाऱिय–शोभायमान; अणि नकै–सुन्दर आभरणों में; नल्ल–श्रेष्ठ; पुल्लिऩाल्–इसके शरीर का आलिंगन करें; एऱिय चॆव्वियै–(तो वे) और अधिक सुन्दरता को; इयऱ्ऱुमो–प्रदान कर सकेंगे क्या; ॲॆना–सोचकर; माऱु अकल्–लाजवाब; मुळ्ळु मणिक्कु अरचिन्–सारे रत्नों के राजा श्रीकौस्तुभ का; माट्चि–शान; वेऱु ऒरु मणियिऩाल्–दूसरी एक मणि से; विळङ्कुमो–प्रकाशित हो सकता है क्या; ॲॆन्ऱाळ्–कहती। २४३

वह उनको आभरणभूषित के रूप में कल्पना करती है और पूछती है कि क्या अति सुन्दर आभरणों में अति श्रेष्ठ आभरणों को चुनकर इसको पहनाएँ तो वे आभरण इसकी दर्शनीयता को बढ़ा सकेंगे ? वह निश्चय करती कि मणियों में श्रेष्ठ श्रीकौस्तुभमणि का शान और रूप-गौरव अन्य रत्नों द्वारा वढ़ाया जा नहीं सकता। २४३

करन्दिल ऩिलक्कण मॅडुत्तुक् काट्टिय
परन्दरु नान्मुहऩ् पऴिप्पुड् ऱाऩरो
इरन्दिव ऩिणैयडिप् पॉडियु मेऱ्किलाप्
पुरन्दर नुलहॅलाम् पुरक्किन् ऱाऩॆन्ऱाऴ् 244

इवऩ् इणै अटि—इसके चरणद्वय को; पॉटियुम्—धूलि की महिमा; इरन्तुम् एऱ्किला—याचना करने पर भी जो प्राप्त न कर सकेगा; पुरन्तरऩ्—वह पुरन्दर; उलकु ॲलाम्—सारे लोकों का; पुरक्किन्ऱाऩ्—पालन करता है; करन्तिलऩ्—बिना छिपाये; इलक्कणम् ॲटुत्तु काट्टिय—(सामुद्रिका-) लक्षणों के साथ इनकी रचना करनेवाले; परम् तरु नान्मुकऩ्—महिमायुक्त ब्रह्मा; पऴिप्पु उड्ऱाऩ् अरो—अपराधी हो गया न; ॲऩ्ऱाऴ्—कहती। २४४

इसके चरणद्वय की धूलि के समान भी पुरन्दर नहीं बन सकता। वह याचना कर पा लेने का प्रयास करे तो भी उसे इसकी-सी महिमा नहीं हो सकती। तो भी वह तीनों लोकों का पालन करता है! ब्रह्मा ने बिना किसी दुराव के सारे लक्षणों से युक्त कराके इसको रचा है तो क्या लाभ है? इसको तपस्वी बनाने से ब्रह्मा को अपयश मिल गया है। २४४

नीत्तमुम् वाऩमुङ् गुऱुह नॅञ्जिडैक्
कोत्तवऩ् बुणर्विडैक् कुऴित्तु मीक्कॊऴ
एत्तवुम् बरिविऩ्ऩीन् ऱीह लाऩ्बॊरुऴ्
कात्तवऩ् बुहऴॆनत् तेयुङ् गड्पिऩाऴ् 245

नीत्तमुम्—समुद्रजल; वाऩमुम्—और आकाश को; कुऱुक—छोटा दिखने देते हुए; नॅञ्चु इटै कोत्त—अपने मन में अंकित; अऩ्पु उणर्वु इटै—कामेच्छा में; कुऴित्तु—मग्न होकर; मी कॊऴ—उस राग के बढ़ने से; एत्तवुम्—याचकों की प्रार्थना सुनकर भी; परिविऩ्—अनुताप करके; ऑऩ्ऱु ईकलाऩ्—कुछ न देनेवाले; पॉरुऴ् कात्तवऩ् पुकऴ् ॲऩ—धन के परिग्रही (रक्षक) के यश के समान; तेयुम् कड्पिऩाऴ्—क्षीणप्राय स्त्रीत्व (शील-संयम) वाली। २४५

शूर्पणखा के मन में कामसागर इतना भर आया कि उसके विस्तार के सामने समुद्र का जल और आकाश का फैलाव छोटे दिखे। उसमें मग्न उसके मन में ज्यों-ज्यों कामेच्छा बढ़ती गयी, त्यों-त्यों उसका स्त्रीसहज शील और संयम उस लोभी धनवान के यश के समान छीजने लगे, जो प्रार्थना करनेवाले याचक से सहानुभूति नहीं करता और न ही कुछ देता और धन की रक्षा करता है। २४५

❀ वाऩ्ऱनिल् वरैन्ददोऱ् माद रोवियम्
पोऩ्ऱऩ ळिऩ्ऱऩऴ् पुऴङ्गु नॅञ्जिऩाऴ्
तोऩ्ऱडन् शुडर्मणित् तोऴि ऩाट्टङ्गऴ्
ऊऩ्ऱिऩ पऱिक्कवो रूड्ऱम् बॅऱ्ऱिलाऴ् 246

पुळुङ्कुम् नॅञ्चित्ताळ्—(काम-) तप्तमना; तोन्ऱल् तन्—चक्रवर्ती-तनय के; टर् मणि तोळित्—दीप्त-मणि-सम भुजाओं में; ऊन्ऱित्त नाट्टङ्कळ्—गड़ी आँखों को; रिक्क—निकालने की; ओर् ऊऱ्ऱम् पॅऱ्ऱिलाळ्—आवश्यक शक्ति नहीं रखती थी; वान् तन्निल् वरैन्त—आकाश में खींचे हुए; ओर् मातर् ओवियम् पोन्ऱत्ताळ्—एक स्त्री (प्रेम की स्त्री) के चित्र के समान लगी; निन्ऱत्ताळ्—खड़ी रही। २४६

उसका मन कामतप्त हो गया। उसमें अपनी दृष्टि को, जो श्रीराम के कांतिमय कंधों पर गड़ गयी थी, उखाड़ लेने की क्षमता नहीं रह गयी थी। इसलिए वह बीच आकाश में ही निस्पंद-सी खड़ी रह गयी। तब वह आकाश में खींचे गये स्त्रीचित्र (या प्रेमचित्र) के समान दिखी। २४६

❀ निन्ऱ्त्त ळिरुन्दव नडिय मार्बहम्
ऑन्ऱुवॅ न्न्ऱॅन्ति लमुद मुण्णितुम्
पॉन्ऱुवॅन् पोक्किन्ति यरिदु पोलॅनाच्
चॅन्ऱॅदिर् निऱ्पदोर् शॅय्है तेडुवाळ् 247

निन्ऱत्ताळ्—स्तब्ध खड़ी रही; इरुन्तवन्—वहाँ स्थित उसका; नॅटिय मार्पु अकम्—विशाल वक्षस्थल पर; ऑन्ऱुवॅन्—लग जाऊँगी; अन्ऱु ऍन्निल्—(वह) नहीं (हो सका) तो; अमुतम् उण्णितुम्—अमृत खाऊँगी तो भी; पॉन्ऱुवॅन्—(इस काम-वेदना के कारण) मर जाऊँगी; पोक्कु इन्ति अरितु पोल् ऍन्ता—कोई गति दूसरी नहीं शायद, यह सोचकर; ऍतिर् चॅन्ऱु निऱ्पतु—सामने जाकर स्थित होने का; ओर् चॅय्कै तेटुवाळ्—एक बहाना ढूँढ़ती। २४७

चित्र के समान स्थिर जो खड़ी रही, उस शूर्पणखा के मन में यह संकल्प उठा। वहाँ रहनेवाले उस पुरुष के विशाल वक्षस्थल में लिपट जाऊँगी। अगर वह नहीं हो सकता तो अमृत भी मुझे जीवित नहीं रख सकता— मैं मर जाऊँगी। कोई दूसरा चारा नहीं दीखता। अब श्रीराम के सामने आकर खड़ी होने के लिए मन में एक योग्य बहाना ढूँढ़ने लगी। २४७

❀ ऍयिरुडै यरक्कियॅव् वुयिरु मीट्टदोर्
वयिरुडै याळॅन्न मरुक्कु मादलाल्
कुयिरॉडर् कुदलैयोर् कॉव्वै वायिळ
मयिरॉड रियलॅळिल् मरुव नन्ऱॅन्ना 248

ऍयिऱु उटै अरक्कि—वक्रदाँत वाली राक्षसी; ऍ उयिरुम् इट्टतु—सभी जीवों को जिसमें दफ़ना लिया है, उस; ओर् वयिऱु उटैयाळ्—उदर वाली है यह; ऍन्न—समझकर; मरुक्कुम् आतलाल्—इनकार कर देगा, इसलिए; कुयिल् तॉटर्—कोयल-सम; कुतलै—मधुर वाणी; ओर् कॉव्वै वाय्—बिम्बाधर; इळमयिल् तॉटर्—(इनके साथ) बालमयूर की-सी छटा वाली; इयल् ऍळिल्—स्वाभाविक शोभा को; मरुवल्—अपनाना; नन्ऱु ऍन्ना—अच्छा, समझकर। २४८

उसे संशय था कि श्रीराम से इस रूप में मिलूँ तो वे अस्वीकार कर देंगे। वे यह सोचेंगे कि इस राक्षसी का पेट सभी जीवों को जीवित ही गाड़ देने का गड्ढा है। इसलिए उसने विचार किया कि मैं एक सुन्दरी का रूप धारण करूँगी। उसकी वाणी कोकिल की-सी होगी। उसके अधर बिंबफल के समान लाल होंगे। उसकी चमक-दमक बाल-मयूर की-सी होगी। और समूची सुन्दरता स्वाभाविक होगी। हाँ वही अच्छा कार्य होगा। २४८

❀ पङ्गयच् चॅल्वियै मऩत्तुप् पाविया
अङ्गैयि ऩायमऩ् दिरत्तै यायॢदत्तळ्
तिङ्गळिऱ् चिऱन्दॊळिर् मुहत्तळ् चॅव्वियळ्
पॊङ्गॊळि विशुम्बिऩिऱ् पॊलियत् तोऩ्ऱिऩाळ् 249

पङ्कय चॅल्वियै–पंकज की स्वामिनी श्रीलक्ष्मी को; मऩत्तु पाविया–मन में ध्यान करके; अम् कैयिऩ् आय–खूब वश में रहे; मऩ्तिरत्तै–श्रीलक्ष्मी-मन्त्र को; आय्न्ततऩळ्–जपा; तिङ्कळिल् चिऱन्तु–चन्द्र से बढ़कर; ऑळिर् मुकत्तळ्–शोभायमान मुख वाली; चॅव्वियळ्–और तरुण सुन्दरी बनी; पॊङ्कु ऑळि–अपनी छिटकती छटा को; विचुम्पिऩिल् पॊलिय–आकाश में फैलने देते हुए; तोऩ्ऱिऩाळ्–प्रकट हुई। २४९

उसने पंकजा श्रीलक्ष्मीदेवी का ध्यान किया। उसने लक्ष्मीदेवी का मंत्र वश कर रखा था। उसने वह मंत्र जपा। तब वह पूर्ण-चन्द्र से भी बढ़कर प्रभा छिटकानेवाला मुख, तरुण सौन्दर्य —इनसे युक्त होकर आकाश में अपना रूप-लावण्य-प्रकाश फैलाती हुई प्रकट हो गयी। २४९

पञ्जियॊळि विञ्जुकुळिर् पल्लव मऩुङ्गच्
चॅञ्जॅविय कञ्जनिहर् शीऱडि पॆयर्प्पाळ्
अञ्जॊलिळ मञ्ञैयॆऩ वऩ्ऩमॆऩ मिऩ्ऩुम्
वञ्जियॆऩ नञ्जमॆऩ वञ्जमहळ् वन्दाळ् 250

ऑळि विञ्चु–आभा में बढ़कर; पञ्चि–लाल रुई व; कुळिर् पल्लवम्–शीतल पल्लव को; अऩुङ्क–(परास्तता का) दुख देते हुए; चॅम् चॅविय–लाल और सुन्दर; कञ्चम् निकर्—कंज-सम; चीऱटि–अपने छोटे पैरों को; पॆयर्प्पाळ्–रखती हुई; अम् चॊल् इळ मञ्ञै ऎऩ–सुन्दर बोली वाले बालमयूर के समान (छटा वाली); अऩ्ऩम् ऎऩ–हंस के समान (चाल वाली); मिऩ्ऩुम् वञ्चि ऎऩ–चमकती बिजली के समान; नञ्चम् ऎऩ–और विष के समान; वञ्च मकळ्–वंचकी नारी; वन्ताळ्–आई। २५०

फिर वह वंचकी निशाचरी श्रीराम के सामने आयी। कैसे? उसके लाल, कंजतुल्य छोटे पैर लाल रुई और शीतल पल्लवों को मात दे रहे थे। वह कोकिल के समान मधुर-मधुर बोलनेवाले बालमयूर के

मान आभा वाली थी। वह बिजली की लता के समान और विषतुल्य
। ऐसी वह मनोरम रूप से पग धरती हुई आयी। २५०

पॊऩ्ऩॊळुहु पूविऩ्ऩॊडु पूविलुऱै पूवै
पिऩ्ऩॆऩ्ऩिल्हॊळ् वाळिणै पिऱऴ्न्दॊळिर् मुहत्ताळ्
कऩ्ऩियॆऩ्ऩिल् कॊण्डदु कलैत्तड मणित्तेर्
मिऩ्ऩिळिव तऩ्मैयदु विण्णिळिव दॆऩ्ऩ 251

पॊऩ् ऑळुकु—स्वर्ण-वर्ण के साथ; पूविन् ऑटु—और कान्ति के साथ; पूविल् उऱै—कमल के फूल पर रहनेवाली; पूवै—देवी, श्रीलक्ष्मी को; पिन् ऍऩ्ऩिल् कॊळ्—सौंदर्य में पीछे ढकेलनेवाली सुन्दरता लेकर; वाळ् इणै—तलवार (-सम आँखों) के जोड़े; पिऱऴ्न्तु ऑळिर्—जिसमें चलित होकर छवि दे रहे थे, वह; मुकत्ताळ्—मुख वाली; कन्ऩि ऍऩ्ऩिल् कॊण्टतु—एक अनोखी सुन्दरता लिये; कलै तट मणि तेर्—चित्रमयी विशाल सुन्दर रथ; मिन् इळिव तन्मैयतु—बिजली गिरती-सी; विण् इळिवतु ऍन्न—आकाश से उतरता हो, ऐसा। २५१

शूर्पणखा स्वर्णवर्ण, कमलजा से भी बढ़कर सुन्दरी बन गयी। उसका मुख दो चंचल और तलवार-सम आँखों के साथ बहुत ही छविमान दिखा। वह आकाश से नीचे जब उतरती आयी तब वह एक अनोखे, चित्र-प्रतिमाओं से अलंकृत विशाल और सुन्दर रथ के समान लगी, जो बिजली उतरती हो ऐसा आकर्षण लेकर आकाश से उतर रहा था। २५१

❀ कात्तिलुयर् कऱ्पह मुयिर्त्त कदिर्वल्लि
मेत्तिनत्ति पॆऱ्ऱुविळै कामनॆऱि वाशत्
तेत्तिऩ्मॊऴि युऱ्ऱिनिय शॆव्विनत्ति कॊण्डोर्
मात्तिऩ्विऴि पॆऱ्ऱुमयिल् वन्ददॆऩ्ऩ वन्दाळ् 252

ओर् मयिल्—एक मोर; कात्तिल् उयर्—सुगन्धि में बढ़े हुए; कऱ्पकम् उयिर्त्त—कल्पकतरु-सृष्ट; कतिर् वल्लि—उज्ज्वल कामलता का; मेत्ति नत्ति पॆऱ्ऱु—रूप-सौंदर्य पाकर; काम नॆऱि—काम-मार्ग में; वाच तेनिन् मॊऴि उऱ्ऱु—सुवासपूर्ण शहद की-सी बोली के साथ; इनिय चॆव्वि नत्ति कॊण्टु—मनोरम छटा से खूब पूर्ण होकर; मान् विऴि पॆऱ्ऱु—मृग के-से नयन ले; वन्ततु ऍन्न—आया हो, ऐसा; वन्ताळ्—आई। २५२

फिर वह भूमि पर एक विचित्र मयूर के समान चलती आयी। कैसा मयूर? समझिए कि एक मयूर को सुवासित कल्पतरु द्वारा सृजित आभा-युक्त कल्पवल्ली का रूप मिल गया। सुवासपूर्ण शहद-सी मधुर बोली, बड़ी ही आकर्षक सुन्दरता और हरिण की-सी आँखें प्राप्त हो गयीं। ऐसा एक मयूर पैदल आता हो ऐसे आकर्षण के साथ वह आयी। २५२

❀ नूबुरमु मेहलैयु नूलुमऱ लोदिप्
पूमुरलुम् वणडमिवै पूशलिड मोदै

तामुरैशॅय् हिन्ऱदॊरु तैयल्वरु मन्ऩाक्
कोमहऩ्ऱु मत्तिशै कुऱित्तनऩ् विऴित्ताऩ् 253

नूपुरमुम्–नूपुर और; मेकलैयुम्–और मेखला; नूलुम्–हार; अऱल् ओति–काले वालू के समान केश के; पू मुरलुम्–पुष्पों पर गुंजार करनेवाले; वण्टुम्–भ्रमर; इवै–इनके; पूचल् इटुम् ओतै–जो मचाते थे, वह शब्द; ऑरु तैयल् वरुम् ॲन्ऩा–एक स्त्री आ रही है, ऐसा; उरै चॅय्किन्ऱतु–घोषणा कर रहा है; कोमकऩुम्–चक्रवर्ती-सुत ने भी; अ तिचै–उस दिशा; कुरित्तनऩ्–को लक्ष्य करके; विऴित्ताऩ्–देखा। २५३

उसके नूपुर, मेखला, हार, केशालंकार के पुष्प पर गुंजार करनेवाले अलिकुल सब हर्षरव कर रहे थे। वह शब्द यह घोषणा कर रहा था कि कोई स्त्री आ रही है। चक्रवर्तीसुत दाशरथी ने यह जाना और उस दिशा में दृष्टि दौड़ाई, जहाँ से यह ध्वनि आ रही थी। (तुलसीदासजी ने इस ध्वनि को मदनदुंदुभी कहा है, पर वह सीताजी के मिलन के मंगलमयी पवित्र प्रसंग में।)। २५३

❀ विण्णरुळ वन्ददॊरु मॅल्लमुद मॅन्ऩ
वण्णमुलै कॊण्डिडै वणङ्गवरु पॊऴ्दत्
तॅण्णरुळि येऴुमै तुडैत्तॆऴुमॅय्ज् ञानक्
कण्णरुळ्शॅय् कण्णनिरु कण्णिनॆदिर् कण्डान् 254

विण्–आकाश (स्वर्ग); ऑरु मॅल् अमुतम्–अनुपम और नरम सुधा; अरुळ वन्ततु ॲन्ऩ–देने की कृपा करने आया जैसे; वण्ण मुलै कॊण्टु–आकर्षक उरोजों के साथ; इटै वणङ्क–कमर लचकाते हुए; वरु पॊऴ्ततु–जब वह आई तब; ऑण् अरुळि–बुद्धिशक्ति प्रदान कर; एऴैमै तुटैत्तु–अज्ञान दूर करके; ॲऴुम्–ऊपर उगने-वाली; मॅय् ञात्त कण् अरुळुम्–सच्ची ज्ञान-दृष्टि दिलाने की कृपा करनेवाले; कण्णऩ्–सर्वनेत्र श्रीराम ने; इरु कण्णिऩ् ॲतिर् कण्टाऩ्–अपनी दोनों आँखों से (उसको) देखा। २५४

स्वर्ग अमृत दिलाने लाया हो, ऐसे स्तनों वाली और लचकती कमर वाली, शूर्पणखा जब आ रही थी तब श्रीराम ने, जो जीवों को विवेक देकर, तद्वारा अज्ञान मिटाकर, फलस्वरूप ज्ञानदृष्टि दिलानेवाले, सब नेत्रों के नेत्र, परब्रह्म हैं, अपनी दोनों आँखों से उसको देखा। २५४

❀ पेरुळैय नाहरुल हिऱ्पिऱिदु वाऩिल्
पारुळैयि ऩिल्लदॊरु मॅल्लुरुवु पारा
आरुळैय डङ्गुमळ हिऱ्कवदि युण्डो
नेरिळैयर् यावरिव णॊरॆन्ऩ निनैन्दान् 255

पेर् उळैय–बहुत विशाल थल वाला; नाकर् उलकिल्–नागलोक में; पिऱितु वाऩिल्–उससे भिन्न स्वर्गलोक में; पार् उळैयिल्–भूतल में; इल्लतु–अप्राप्य; ऑरु–

अनुपम एक; मॅल् उरुवु पारा–कोमल रूप को देखकर; आर्–कौन; उळै अटङ्कुम् अळकिऱ्कु–इसमें समाविष्ट सुन्दरता का; अवति उण्टो–ठिकाना है क्या; नेरिऴैयर्–आभरणधारिणी नारियाँ; यार् इवळ् नेर्–कौन इसके समान हैं; ॲन्न निनैन्तान्–ऐसा सोचा (श्रीराम ने)। २५५

विस्तृत नागलोक में, उससे भिन्न स्वर्ग में, या भूलोक में कहीं भी अप्राप्य था एक ऐसा कोमल रूप। श्रीराम सोचने लगे कि यह कौन है ? इसमें समाविष्ट सुन्दरता का ठिकाना भी है ? कौन आभरणभूषिता नारियाँ हैं जो इसकी समानता कर सकती हैं ? । २५५

❀ अव्वयिन्नव् वाशैतन हत्तुडैय वन्नाळ्
शॅव्विमुह मुत्तियडि शॅङ्गैयि निरैञ्जा
वॅव्विय नॅडुङ्गणयिल् वीशिययल् पारा
नव्वियि नॉदुङ्गियिरै नाणियय निन्ऱाळ् 256

अ वयिन्–उस समय; अ आचै–वह राग; तन्नतु अकत्तु उटैय–अपने मन में रखनेवाली; अन्नाळ्–वह (शूर्पणखा); चॅव्वि मुकम् मुन्नि–श्रीराम के मनोहर मुख को देख; अटि–उनके श्रीचरणों को; चॅम् कैयिन् इरैञ्चा–लाल हाथ जोड़कर नमस्कार करके; वॅव्विय–सालनेवाला; नॅटुम् कण्–दीर्घ आँखों का; अयिल्–(दृष्टि रूपी) भाला; वीचि–फेंककर; अयल् पारा–ऑख चुराकर दूसरी ओर देखती हुई; नव्वियिन् ऑतुङ्कि–हरिण के समान एक ओर हटकर; इरै नाणि–थोड़ा लजाती हुई; अयल् निन्ऱाळ्–(श्रीराम के) पास खड़ी रही। २५६

तब तक शूर्पणखा श्रीराम के मुख के सामने आ गयी। उसने अपने मनोरम हाथ जोड़कर श्रीराम के चरणों को नमस्कार किया। अपने लाल डोरों सहित नेत्रों की भाला-सम दृष्टि श्रीराम पर फेंकी। झट आँख चुराकर दूसरी ओर देखने लगी। भीरु मृगी के समान थोड़ा हटी। लाज का किंचित प्रदर्शन किया। इन सब नखरों के साथ वह उनके पास खड़ी रही। २५६

❀ तीदिल्वर वाहलिरु निन्वरवु शेयोय्
पोदवुळ दॅम्मुळैयॉर् पुण्णियम दन्ऱो
एदुपदि येदुपॅयर् यावरुऱ वॅन्ऱान्
वेदमुदल् पेदैयव ळन्निलै विरिप्पाळ् 257

चेयोय्–अपरिचित (या श्रीलक्ष्मी-सम) स्त्री; निन् तिरु वरवु–तुम्हारा श्रेष्ठ आगमन; तीतु इल्–अमंगलहीन (शुभ); वरवु आक–आगमन हो; पोत–तुम आओ इसका; ॲम् उळै–हमारे पास; ओर् पुण्णियम् अतु अन्ऱो–एक सुकृत रहा है न; एतु पति–कौन सा स्थान; एतु पॅयर्–कौन सा नाम; यावर् उऱवु–रिश्तेदार कौन हैं; वेत मुतल्–वेदमूल ने; ॲन्ऱान्–पूछा; पेतै अवळ्–अबोध ने; तन् निलै–अपना वृत्तान्त; विरिप्पाळ्–विस्तार से कहा। २५७

श्रीराम ने सम्भाषण आरम्भ किया। आगन्तुक अजनबी! (चेयोय् का अर्थ लक्ष्मी भी हो सकता है।) तुम्हारा वर आगमन अमंगलरहित शुभ आगमन हो! हमने पुण्य किया है, यह सच है तभी तो तुम आयी हो! तुम्हारा वासस्थान कौन सा? नाम क्या? तुम्हारे रिश्तेदार कौन हैं? —वेदमूल (बोध का आधार) श्रीराम ने प्रश्न किया। अबोध (बोध-हीन) शूर्पणखा अपना वृत्तान्त विस्तार से सुनाने लगी। २५७

❀ पूविलोऩ् पुदल्वऩ् मैन्दऩ् पुदल्विमुप् पुरङ्गळ् शॅट्ऱ
शेवलोऩ् तुणैव ऩाऩ शॅङ्गैयोऩ् ऱङ्गै तिक्किऩ्
मावॅलाऩ् दॉलैत्तु वॅळ्ळि मलैयॅडुत् तुलह मूऩ्ऱुम्
कावलोऩ् पिऩ्ऩै काम वल्लियाङ् गऩ्ऩि यॅऩ्ऱाळ् 258

पूविलोऩ्–कमलासन के; पुतल्वऩ् मैन्तऩ्–पुत्र के पुत्र की; पुतल्वि–दुहिता हूँ; मु पुरङ्कळ् चॅट्ऱ–त्रिपुरदाहक; चे वलोऩ्–ऋषभवाहन के; तुणैवऩ् आऩ–मित्र; चॅम् कैयोऩ्–लाल (दान देते-देते लाल बने) हाथ वाले कुबेर की; तङ्कै–छोटी बहिन; तिक्किऩ् मा–दिग्गज; ॲलाम् तॉलैत्तु–सारे भगाकर; वॅळ्ळि मलै ॲटुत्तु–चाँदी के पर्वत (कैलास) को उठाया (जिसने); उलकम् मूऩ्ऱुम् कावलोऩ्–लोकत्रयी का पालक; पिऩ्ऩै–उस रावण की अनुजा; काम वल्लि–कामवल्ली; आम्–नाम की; कऩ्ऩि–कन्या; ॲऩ्ऱाळ्–(अपना परिचय) कहा। २५८

कमलासन ब्रह्मा के पुत्र (पुलस्त्य) के पुत्र (विश्रवा) की पुत्री हूँ। त्रिपुर जलानेवाले ऋषभवाहन शिवजी के मित्र दान देते-देते लाल बने हाथ वाले कुबेर की बहिन हूँ। दिग्गजों को भगानेवाले, चाँदी के पर्वत (कैलास) को उखाड़नेवाले त्रिलोकाधिपति रावण की अनुजा हूँ। मेरा नाम कामवल्ली है। (बार-बार शिवजी की चर्चा त्रिपुरांतक, त्रिपुरदाहक आदि के साथ आयी है। उसका संक्षिप्त विवरण यों है— तारकासुर के पुत्र विद्युन्माली, तारकाक्ष और कमलाक्ष थे। इन्होंने कठोर तपस्या की और अपार बल-वैभव पा लिया। मय ने इनके लिए स्वर्ण, चाँदी और लोहों के प्राचीरों से युक्त तीन नगर निर्मित किये। ये नगर जहाँ चाहे उड़े जा सकते थे। वे तीनों असुर इनका उपयोग कर सर्वत्र जाते और सितम ढाते। देवों और मुनियों ने मिलकर शिवजी से प्रार्थना की। शिवजी ने भूमि को रथ, वेदों को चार अश्व, ब्रह्मा को सारथी, मेरु को धनुष, आदिशेषनाग को प्रत्यंचा, विष्णु रूपी पंखों से युक्त अग्नि को अस्त्र और अन्य देवों को अन्य अस्त्र-शस्त्र बना लिया। फिर युद्धसन्नद्ध हो चले। उन्होंने एक विचित्र हास के साथ उन असुरों को मय उनके नगरों के जला डाला। शूर्पणखा ने अपनी वंशावली की तीन पीढ़ियों की चर्चा की। क्योंकि उसका उद्देश्य 'विवाह' था।)। २५८

अव्वुरै केट्ट वीर नैयुरु मनत्तान् शॅय्है
शॅव्विदन् ऱिरियलाहुम् जिऱिदि नॅन्रु णराच् चॅङ्गण्
वॅव्वुरु वमैन्दोन् ऱङ्गै यॅन्ऱदु सॅय्म्मै याहिल्
इव्वुरु वमैन्द तन्मै यियम्बुदि विरैवि नॅन्ऱान् 259

अ उरै केट्ट–वह कथन सुनकर; ऐ उरु मनत्तान्–शंकितमन होकर; चॅय्कै चॅव्वितु अन्रु–इसके (हाव-भाव और) कार्य अच्छे नहीं; चिऱितिन् अऱितल् आकुम्–थोड़ा समझना आवश्यक है; ॲन्रु उणरा–ऐसा महसूस करके; चॅम् कण्–रक्तिम आँखों और; वॅम् उरु अमैन्तोन्–भयंकर रूप वाले (रावण) की; तङ्कै ॲन्ऱतु–बहिन कहा जो, सो; मॅय्मै आकिल्–सच है तो; इ उरु अमैन्त तन्मै–यह रूप (कैसे) मिला, वह प्रकार; विरैविन् इयम्पुति–शीघ्र बताओ; ॲन्ऱान्–पूछा। २५९

शूर्पणखा का यह कथन सुनकर (उसकी अदाओं से) श्रीराम के मन में कुछ सन्देह पैदा हुआ। श्रीवीरराघव ने सोचा कि इसका कार्य भला नहीं लगता। थोड़ा जाँचकर समझा जा सकता है। यह सोचकर उन्होंने शूर्पणखा से पूछा कि लाल आँखों वाले और भयंकर रूप वाले रावण की बहिन होने की बात सत्य है, तो तुम्हें यह रूप कैसे मिला ? शीघ्र बताओ। २५९

तूयवन् पणिया मुन्नम् जॉल्लुवाळ् शोर्वि लाळम्
मायवल् लरक्क रोडुम् वाळ्वितै मदिक्कि लादे
आय्वुरु मनत्ते नाहि यऱन्दलै निऱपदानेन्
तीविनै तीय नोऱ्ऱुत् तेवरिऱ् पॅऱ्ऱ दॅन्ऱाळ् 260

तूयवन् पणिया मुन्नम्–पवित्र पुरुष श्रीराम के पूछने पर; चोर्वु इलाळ्–उत्सुक उसने; अ माय वल् अरक्करोटुम्–उन माया में समर्थ राक्षसों के साथ; वाळ्वितै–जीवन को; मतिक्किलाते–उचित न मानकर; आय्वु उरु मनत्तेन् आकि–विवेक से भरे मन वाली होकर; अऱम् तलै निऱ्पतु आतेन्–धर्मावलम्बी बनी; तीवितै तीय–पाप जलाने (मिटाने) के लिए; नोऱ्ऱु–तपस्या करके; तेवरिल्–देवों की कृपा से; पॅऱ्ऱतु–(जो) पाया (वह) यह है; ॲन्ऱाळ्–उत्तर दिया। २६०

पवित्र मन वाले श्रीराम ने जब ऐसा प्रश्न किया, तो शूर्पणखा समझ सकती थी कि श्रीराम इसके मन की बात माननेवाले अपवित्र-चरित्र नहीं है। तो भी वह हतोत्साह होनेवाली नहीं थी। उसने उत्तर दिया कि मैं उन मायाकार्य में प्रवृत्त और चतुर राक्षसों के साथ रहना उचित नहीं समझकर विवेकशीला बन गयी हूँ। धर्ममार्गावलम्बी हो गयी। अपने सभी पापों को, तपस्या करके जला दिया। देवों की कृपा से प्राप्त यह रूप है। २६०

इमैयवर् तलैव नेयु मॅळिमैयि नेवल् शॅय्युम्
अमैदियि नुलह मून्रु माळ्बवन् ऱङ्गै याहिल्

शुमैयुरु शॅल्वत् तोडुन् दोन्ऱलै तुणैयु मिन्ऱित्
तमियणी वरुदऱ् कौत्त तन्मैयॅन् ऱॆय लॅन्ऱान् 261

तैयल्–नारी; इमैयवर् तलैवन् ए उम्–देवेन्द्र भी; ऑळिमैयिन्–दीन बनकर; एवल् चॅय्युम्–जिसकी सेवा करता है; अमैतियिन्–उस स्थिति में; उलकम् मून्ऱुम् आळ्पवन्–जो त्रिलोकाधिपत्य करता है, उस रावण की; तङ्कै आकिल्–बहिन हो तो; चुमै उरु–गुरु; चॅल्वत्तोटुम्–धन-वैभव के साथ; तोन्ऱलै–नहीं दिखाई देतीं; तुणैयुम् इन्ऱि–सहायक से रहित; तमियळ्–अकेली; वरुतऱ्कु–आओ, इसका; औत्त तन्मै–योग्य कारण; ऍत्–कौन सा है; ऍन्ऱान्–पूछा। २६१

श्रीराम ने आगे पूछा— हे नारी ! तुम कहती हो कि रावण की भगिनी हूँ। रावण त्रिलोकाधिपति है। देवों के राजा देवेन्द्र भी उसका किंकर होकर उसकी सेवा-टहल करता है। वह बड़ा ही श्रीमंत है। उसके भारी धन-वैभव के योग्य रूप में तुम नहीं दिखाई देतीं। और भी तुम अकेली और कोई साथी-संगी के बिना आयी हो। ऐसा दीन-हीन और असहाय आना क्योंकर हुआ ? कारण क्या है ? । २६१

वीरनः(ह्) दुरैत्त लोडु मॅय्यिलाळ् विमल यानच्
चीरिय रल्लार् माट्टुच् चॅर्हिलॅन् ऱेवर् पालुम्
आरिय मुनिवर् पालु मडैन्दनॅ निऱॆव वीण्डोर्
कारिय मुण्मै निन्नैक् काणिय वन्दे नॅन्ऱाळ् 262

वीरन्–वीर के; अ.·.तु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहने पर; मॅय् इलाळ–असत्यवादी ने; विमल–निर्मल; यान्–मैं; अ चीरियर् अल्लार् माट्टु–उन श्रेष्ठताहीन (नीच) लोगों से; चेर्किलॅन्–नहीं मिल सकती; तेवर् पालुम्–देवों के पास और; आरिय मुनिवर् पालुम्–सुशील मुनियों के पास; अटैन्तनॅन्–आकर रहती हूँ; इऱैव–नाथ; ईण्टु ओर् कारियम् उण्मै–इधर मेरा एक कार्य है, इसलिए; निन्नै काणिय वन्तेन्–तुमको देखने आई; ऍन्ऱाळ्–कहा। २६२

श्रीवीरराघव के इस प्रश्न के उत्तर में उस मिथ्याभाषिणी ने कहा कि विमल वीर ! मैं उन नीच लोगों से नहीं मिलती। देवों और मुनियों से ही सम्पर्क रखती हूँ। प्रभु ! मेरा एक कार्य है। उसी के सिलसिले में मैं तुमसे भेंट करने आयी हूँ। २६२

अन्नव ळुरैत्त लोडु मैयनु मऱिदऱ् कौव्वा
नन्नुदन् महळिर् शिन्दै नन्नॆरिप् पाल वल्ल
पिन्निदु तॅरियु मॅन्नाप् पॅय्वळैत् तोळि यॅन्बाल्
ऍन्नका रियत्तै शौल्लः(ह्) दियैयुमे लिळ्ळैप्प लॅन्ऱान् 263

अन्नवळ्–उसके; उरैत्तलोटुम्–कह चुकते ही; ऐयतुम्–प्रभु ने भी; नल् नुतल् मकळिर् चिन्तै–सुन्दर भाल वाली इस स्त्री का अभिप्राय; अऱितऱ्कु औव्वा–

जानने में आनेवाला नहीं होता; नल् नॅरि पाल अल्ल–अच्छे पथ पर जानेवाला नहीं लगता; इतु–यह (इसका सत्य); पिन् तॅरियुम्–पीछे मालूम होगा; ॲन्ना–विचार करके; पॅय् वळै तोळि–भुजवलय-भूषित कंधों वाली; ॲन् पाल्–मेरे पास; ॲन्न कारियत्तै–कौन से कार्य की अपेक्षा करती हो; चॉल्–कहो; अ.'.तु इयैयुमेल्–वह युक्त हो तो; इळैप्पल्–करूँगा; ॲन्ऱान्–कहा। २६३

उसका वह उत्तर सुनकर श्रीराम ने सोचा कि इस सुन्दर भाल वाली के (मन के अंदर रहनेवाले) विचार हमारे जानने में नहीं आते। पर वे सन्मार्गगामी नहीं लगते। इसका सत्य पीछे मालूम होगा। फिर उन्होंने उससे कहा— हे अंगदालंकृत कंधों वाली ! मेरे पास क्या उद्देश्य ले आयी हो ? बताओ। अगर वह उचित और कार्यसाध्य होगा, तो अवश्य करूँगा। २६३

तामुरु कामत् तन्मै ताङ्गळे युरैप्प दॅन्ब
दामॅन्न लाव दन्ऱा लरुङ्गुल महळिर्क् कम्मा
एमुरु मुयिर्क्कु नोवे नॅन्शॅय्हेन् यारु मिल्लेन्
कामनॅन् ऱॅरुवन् शॅय्युम् वन्मैयैक् कात्ति यॅन्ऱाळ् 264

ताम् उरु–आप में उठी; काम तन्मै–कामेच्छा की स्थिति; ताङ्कळे उरैप्पतु ॲन्पतु–स्वयं कहना, यह; अरुम् कुल मकळिर्क्कु–उत्तम कुल की स्त्रियों के लिए; आम् ॲनल्–हो सकेगा, ऐसा कहना; आवतु अन्ऱु–होनेवाला नहीं है; एम् उरुम्–मोहमग्न; उयिर्क्कु–अपना जीवन रखने के लिए; नोवेन्–तड़प रही हूँ; ॲन् चॅय्केन्–क्या कर सकूँगी; यारुम् इल्लेन्–(अपना) कोई नहीं रखती; कामन् ॲन्ऱु ऒरुवन्–मन्मथ नाम का कोई; चॅय्युम्–(जो) करता है; वन्मैयै–उस अत्याचार को; कात्ति–रोककर (मुझे) बचाओ; (अम्मा–री मैया); ॲन्ऱाळ्–कहा। २६४

उसके उत्तर में शूर्पणखा ने कहा कि कुलीन स्त्रियों के लिए अपने काम की चर्चा स्वयं करना साध्यकाम समझना ठीक नहीं है। री मैया ! वह कठिन है। मेरा प्राण अब मोहमग्न होकर क्षीण हो रहा है। उसे बचाने को तरस रही हूँ। क्या करूँ ? मेरे कोई सहायक भी नहीं हैं। अब काम नाम का वह मेरे ऊपर अत्याचार कर रहा है। उसकी क्रूरता को रोको और मेरी रक्षा करो। २६४

शेणुऱ नीण्डु मीण्डु शव्वरि शिदऱि वॅव्वे
ऱेणुऱ मिळिर्न्दु नाना विदम्बुरण् डिरुण्ड वाट्कण्
पूणियल् कॊङ्गै यन्ना ळम्मॊऴि पुहल लोडुम्
नाणिल ळैय नॊय्य णल्लळु मल्ल ळॅन्ऱान् 265

चेण् उऱ नीण्टु–दूर तक जाकर; मीण्टु–(स्थानाभाव से) लौटकर; चॅम् अरि चितऱि–लाल डोरे (जिनमें) फैले रहे; वॅव्वेऱु एण् उऱ–विविध वैशिष्ट्यों से भरे; मिळिर्न्तु–चलित होकर; नाना वितम् पुरण्टु–नाना प्रकार से घूमकर; इरुण्ट–

अन्धकार के समान काले; वाळ् कण्—तलवार-सम नेत्रों वाली; पूण् इयल् कोङ्कै—आभरणभूषित स्तनों वाली; अन्ताळ्—उस (शूर्पणखा) के; अ मॊऴि—वह वचन; पुकललोटुम्—कहने पर; नाण् इलळ्—निर्लज्ज है; ऐय नॊय्यळ्—बहुत ही नीच है; नल्लळुम् अल्लळ्—भली भी नहीं है; ॲन्ऱान्—(श्रीराम ने) समझा। २६५

यह कहते हुए उसने जो नखरे दिखाये, वे उसकी निर्लज्जता को साफ़ प्रकट करते थे। उसकी आँखें, लम्बी जाकर स्थानाभाव के कारण मुड़ी हों, इतनी लम्बी थीं और विचित्र अदाएँ दिखाती हुई विविध प्रकार से चलित होती थीं। वे अन्धकार के समान काली थीं और तलवार के समान तीक्ष्ण थीं। उसके स्तन आभरणों से शोभित थे। ऐसी उसने जब वह कथन किया तब, श्रीराम समझे कि यह अतीव निर्लज्ज है। यही नहीं, वह बड़ी ओछी भी है। भली स्त्री नहीं है। २६५

पेशल तिरुन्द वळ्ळ लुळ्ळत्तिन् पॆऱ्ऱि योराळ्
पूशलवण् डरऱ्ऱुङ् गून्दऱ् पॊय्म्महळ् पुहन्ऱ वॆन्गण्
आशैकण् डरुळिऱ् ऱुण्डो वन्ऱॆन्न लुण्डो वॆन्नुम्
ऊशलि नुलावु हिन्ऱाण् मीट्टुमो ऱुरैयैच् चॊन्नाळ् 266

पेचलन् इरुन्त वळ्ळल्—(विचारमग्न) बिना कुछ कहे जो रहे, उन उदार प्रभु के; उळ्ळत्तिन् पॆऱ्ऱि ओराळ्—मन की स्थिति समझ नहीं सकी; वण्टु पूचल् अरऱ्ऱुम्—भ्रमर नाद करते हैं (जिस पर बैठकर); कून्तल्—वैसा केश वाली; पॊय् मकळ्—मायाविनी; पुकन्ऱ—(इसके) कथित वचन; ॲन् कण्—मेरे प्रति; आचै कण्टु—प्रेम करके; अरुळिऱ्ऱु उण्टो—कृपा करने के फलस्वरूप हैं; अन्ऱु ॲन्तल् उण्टो—'न' ऐसा कहना है; ॲन्नुम्—ऐसे (दो); ऊचलिन्—विचारों के बीच में झूलने में जैसे; उलावुकिन्ऱाळ्—डोलायमान रहनेवाली; मीट्टुम् ओर् उरैयै चॊन्नाळ्—फिर एक बात कहने लगी। २६६

यह सोचते हुए वे मौन रह गये। मायाविनी शूर्पणखा, जिसके केश पर सज्जित पुष्पों पर अलिकुल गुंजार कर रहे थे, श्रीराम के मन के भाव को समझ नहीं सकी। 'इसने जो कहा क्या वह मेरे ऊपर प्रेम करने की कृपा के फलस्वरूप था? या वह इन्कार करने के लिए था?' इन दो विचारों के बीच उसका मन झूले के समान झूलने लगा। फिर उसने एक बात कही। २६६

ॲऴुदरु मेनि यायीण् डॆय्दिय दरिन्दि लादेन्
मुऴुदुणर् मुनिव रेवऱ् चॆय्दॊऴिन् मुऱैयिन् मुऱ्ऱिप्
पऴुदरु पॆण्मै योडु मिळमैयुम् बयन्तिन् ऱेहप्
पॊऴुदॊडु नाळुम् वाळा कऴिन्दन पोलु मॆन्ऱाळ् 267

ॲऴुतु अरु मेनियाय्—(जिसका) चित्र खींचना कठिन है, वैसे रूपधर; ईण्टु

अॅय्तियतु–तुम्हारा यहाँ आगमन; अड़िन्तिलातेन्–नहीं जानती मैं; मुळ्ळुतु उणर्–सर्वज्ञ; मुनिवर् एवल्–महर्षियों की आज्ञा से; चॅय् तॉळिल्–उनकी सेवा-टहल; मुड़ैयिन् मुड्रि–यथाविधि पूरा करके; पळुतु अऱु पॅण्मैयोटुम्–अकलंकित स्त्रीत्व के साथ; इळमैयुम्–यौवन को भी; पयन् इन्ड्रि एक–व्यर्थ बीतने देते हुए; पॉळुतॉटु नाळुम्–समयों के साथ दिन भी; वाळा कळिन्तन–व्यर्थ बीत गये; ॲन्ड्राळ्–कहा। २६७

ऐसे सुन्दर रूप वाले, जिसका चित्र खींचना कठिन है! तुम इधर आये, यह मैं नहीं जानती थी। इसलिए सर्वज्ञ मुनियों की सेवा-टहल में श्रद्धा के साथ लगी रह गयी और मेरे अकलंक चरित्र के साथ मेरे यौवन को भी निरर्थक बनाते हुए अनेक काल यों ही व्यर्थ वीत गये। २६७

निन्दतै यरक्कि नीदि निलैयिलाळ् विनैमड्ड् ऱॅण्णि
वन्दन ळाहु मॅन्ड्रे वळ्ळलु मनत्तुट् कॉण्डान्
सुन्दरि मणत्तिड् कॉत्त तॉन्मैयिन् ड्रुणिविड् ड्रन्ड्राल्
अन्दणर् पावै नीया नरशरिल् वन्दे नॅन्ड्रान् 268

वळ्ळलुम्–उदार प्रभु ने भी; निन्ततै अरक्कि–निन्द्य निशाचरी है; नीति निलै इलाळ्–नैतिक स्थिति वाली नहीं; मड्ऱु वितै ॲण्णि–कोई दूसरा (बुरा) कार्य सोचकर; वन्तनळ् आकुम्–आयी हुई है, यही होना चाहिए; ॲन्ड्रे–ऐसे ही; मनत्तुळ् कॉण्टान्–मन में धारणा कर ली; चुन्तरी–सुन्दरी; नी अन्तणर् पावै–तुम ब्राह्मण-कन्या हो; यान्–मैं; अरचरिल् वन्तेन्–राजाओं (के कुल) में पैदा हुआ (क्षत्रिय) हूँ; मणत्तिड्कु ऑत्त–विवाह-क्रम के योग्य; तॉन्मैयिन् तुणिपिड्ऱु अन्ऱु–प्राचीन प्रथा को पुष्ट करनेवाला नहीं; ॲन्ड्रान्–कहा। २६८

प्रभु को विश्वास हो गया कि यह निन्द्य निशाचरी है। न्याय-मार्ग पर जानेवाली नहीं है। कोई भयंकर उद्देश्य लेकर इधर आयी है। यह दृढ़ धारणा करके प्रभु ने समझाया कि सुन्दरी! तुम ब्राह्मण-कुल-कन्या हो। मैं तो क्षत्रिय राजकुल का हूँ। विवाह सम्बन्धी जो क्रम निर्धारित हुए हैं, उन प्राचीन क्रमों के अनुसार हमारा विवाह होने योग्य नहीं है। २६८

आरण मड़ैयो नॅन्दै यरुन्ददिक् कड्पि नॅम्मोय्
तारणि पुरन्द शाल कडङ्गडर् मरबिड् ड्रैयल्
पोरणि पॉलङ्गॊळ् वेलोय् पॊरुन्दलै यिहळ्दड् कॊत्त
कारण मिदुवे याहि लॅन्तुयिर् काण्बॅ नॅन्ड्राळ् 269

पोर् अणि–युद्ध ही जिसका श्रृंगार हो, ऐसे; पॉलन् कॉळ् वेलोय्–सुन्दर शक्ति-धारी; ॲन्तै–मेरे पिता; आरण मड़ैयोन्–वेदज्ञ विप्र हैं; अरुन्तति कड्पिन्–अरुन्धती-सम पतिव्रता; ॲम् ओय्–मेरी माँ; तारणि पुरन्त–धरणीपालक; चालकटङ्कटर्–सालकटंकट के; मरपिल् तैयल्–वंश की पुत्री है; पॊरुन्तलै–सम्मत

न होकर; इकऴ्तर्कु ऒत्त–उपेक्षा करने के लिए युक्त; कारणम् इतुवे आकिल्–कारण यही है, तो; ऎन् उयिर् काण्पॆन्–अपनी जान को (बचा हुआ) पा जाऊँगी; ऎन्ड्राळ्–कहा। २६९

शूर्पणखा ने उत्तर में कहा कि युद्ध ही जिसका शृंगार है, ऐसे उज्ज्वल भाला के धारी ! तुम यह जान लो कि मेरे पिता वेदज्ञ ब्राह्मण थे, पर अरुन्धती ही सम पतिव्रता मेरी माता धरणी के पालक 'सालकटंकट' नाम के राजवंश की संतान थी। (अध्यात्म रामायण के अनुसार तृणविंदु राजा के सालकटंकटा नाम की लड़की थी। उसके पेट से विश्रवस के वर से शूर्पणखा पैदा हुई। दूसरा वृत्तान्त है कि राक्षस-कुल के हेति का पुत्र विद्युतकेश था। उसने सालकटंकटा से विवाह किया और उनके पुत्र माल्यवान, मालि और सुमालि थे। उनमें सुमाली की पुत्री कैकशी थी, जिसके रावण, शूर्पणखा आदि सन्तानें थीं।) अगर तुम्हारी अस्वीकृति का कारण इतना ही था तो मैं बच गयी। क्षत्रिय से विवाह करने का मेरा अधिकार स्वतः सिद्ध है। इसलिए तुमसे विवाह न होने की हालत में जीवन त्यागने का विचार जो मैंने किया था अब उस विचार को त्याग दूंगी और अपने को जीवित रखूंगी। २६९

अरुत्तिय ळन्न कूऱ वहत्तुरु नहैयिन् वॆळ्ळैक्
कुरुत्तॆळु हिन्ऱ नीलक् कॊण्डलुण् डाट्टङ् गॊण्डान्
वरुत्तनीङ् गरक्कर् तम्मिन् मानुडर् मणत्त नङ्गै
पॊरुत्तमन् ऱॆन्ऱु शालप् पुलैमैयोर् पुहल्व रॆन्ऱान् 270

अरुत्तियळ्–अर्थिनी के; अन्न कूऱ–ऐसा कहने पर; अकत्तु उरु नकैयिन्–अन्दर उठे हास के; वॆळ्ळै कुरुत्तु–श्वेत अंकुर; ऎऴुकिन्ऱ–फूट निकलते हों, ऐसे मन्दहास के साथ; नील कॊण्टल्–श्यामलमेघ-सम श्रीराम ने; उण्टाट्टम् कॊण्टान्–एक लीला रची; नङ्कै–वाले; वरुत्तम् नीङ्कु–जो दुख से दूर है, उन; अरक्कर् तम्मिन्–राक्षसो से; मानुटर् मणत्तल्–मानवों का विवाह करना; पॊरुत्तम् अन्ऱु–उचित नहीं; ऎन्ऱु–ऐसा; चाल पुलैमैयोर्–गम्भीर विद्वान; पुकल्वर्–कहेंगे; ऎन्ऱान्–कहा। २७०

अर्थिनी शूर्पणखा ने यह कहा तो श्रीराम को हँसी आ गयी। वह हँसी अन्दर गड़ी हास-बीज के श्वेत अंकुर के समान बाहर प्रकट हुई। मेघश्याम ने एक लीला रचने का विचार किया। उन्होंने कहा कि अंगने ! राक्षस दुख से अभिभूत न होनेवाले हैं। मनुष्य तो विविध संकटों से ग्रस्त रहनेवाले हैं। मनुष्य-राक्षस का विवाह उचित नहीं होता। यह गम्भीर विद्वानों का मत है। २७०

परावरुञ् जिरत्तै यारुम् पत्तियिन् पयत्तै योरा
दिरावणन् ऱङ्गै यॆन्ऱ देळैमैप् पाल दॆन्ना

अरावणै यमल नन्ना यरिवित्तेन् मुन्नन् देवरप्
परावित्तॅ नीङ्गि नेनप् पळिपडु पिरवि यॅन्राळ् 271

अरावणै अमलन् अन्नाय्–शेषशायी निर्मल(विष्णु) देव के समान रहनेवाले; परावु अरुम्–जिसका विस्तार से कहना कठिन है; चिरत्तै आरुम्–श्रद्धा से युक्त; पत्तियिन् पयत्ते–उस भक्ति के फल को (जो मुझे मिला है); ओरातु–नहीं सोचकर; इरावणन् तङ्कै–रावण-भगिनी; ऍन्ऱतु–कहना (और उपेक्षा करना); एळैमै पालतु–अज्ञता से सम्बन्धित है; ऍन्ना–कहकर; तेवर् परावित्तेन्–देवों की स्तुति की (मैंने); अ पळि पटु पिऱवि–उस निन्दा योग्य जन्म से; नीङ्कित्तेन्–अलग हो गई हूँ; मुन्नम् अऱिवित्तेन्–पहले ही समझा दिया (मैंने); ऍन्ऱाळ्–कहा। २७१

शूर्पणखा ने तर्क प्रस्तुत किया कि हे शेषशायी विमल विष्णु-सम राम! तुम मुझे रावण की भगिनी के रूप में ही देखते हो। मैंने कितनी श्रद्धा के साथ कैसी भक्ति की है, इसका यथार्थ विस्तार ही कठिन है। उसको भूल जाते हो और रावण की वहिन कहकर उपेक्षा दिखाते हो। यह तुम्हारी अज्ञता है! उसने आगे विश्वास दिलाया कि मैंने देवों की स्तुति-पूजा आदि करके वह जन्म-कलंक धुला दिया है! यह पहले ही मैंने तुमको वताया था। २७१

ऑरुवनो वुलह मून्रिऱ् कोङ्गोरु तलैव नूङ्गिल्
ऑरुवनो कुवेर निन्नि नुडन्पिऱन् दारह ळन्नार्
तरुवरेऱ् कोडु मन्ऱेऱ् ऱमियवे ऱिडत्तुच् चारल्
वॅरुवुवॅ नङ्गै यॅन्ऱान् मीट्टव ळिनैय शॉन्नाळ् 272

नङ्कै–नारीरत्न; निन्ऩिन् उटन् पिऱन्तार्कळ्–तुम्हारे सहोदरों में; ऑरुवत्तो–एक तो; उलकम् मून्ऱिऱ्कु–तीनों लोकों का; ओङ्कु ऑरु तलैवन्–उन्नत और अकेला अधिपति है; ऊङ्किल्–वैभव में; ऑरुवत्तो–और एक तो; कुपेरन्–धनद (कुवेर) है; अन्नार् तरुवरेल्–वे कन्यादान कर देंगे; कोटुम्–मैं ग्रहण कर सकूँगा; अन्ऱेल्–नहीं तो; तमियै–अकेली तुम; वेऱु इटत्तु चारल्–दूसरे की हो जाओ; वॅरुवुवॅन्–उससे डरता हूँ; ऍन्ऱान्–कहा; अवळ्–वह; मीट्टु–फिर; इनैय चॉन्नाळ्–यों बोली। २७२

श्रीराम ने वहस की। हे नारी-रत्न! तुम्हारे सहोदरों में एक तो तीनों लोकों का निर्द्वन्द्व अधिपति रावण है। दूसरा धन-देवता कुवेर है। वे तुमको मेरे पास कन्यादान में दे देंगे, तो मै तुमको ग्रहण कर सकूँगा। नहीं तो, तुम अपनी इच्छा से किसी परपुरुष को वरो, यह मुझे अच्छा नहीं लगता और मुझे डर पैदा होता है। तव शूर्पणखा ने यों उत्तर दिया। २७२

ॐ कान्दर्प्प मॅन्ब दुण्डाऱ् कादलिऱ् कलन्द शिन्दै
मान्दर्क्कु मडन्दै मार्क्कु मऱैहळे वहुत्त कूट्टम्

एन्दर् पॉरु् ड्रोळि नायि:(ह) दियैन्दपि ऩ्नैनक्कु मूत्त
वेन्दर्क्कुम् विरुप्पिरु् ड्राहुम् वेरुमो ररैयुण् डॅन्ऱाळ् 273

एन्तल् पॊन् तोळिनाय्—पर्वत-सम सुन्दर कंधों वाले; कातलिल् कलन्त चिन्तै—प्रेम से परस्पर अनुरक्त मन वाले; मान्तर्क्कुम्—पुरुषों और; मटन्तै मार्क्कुम्—स्त्रियों के लिए; कान्तरुप्पम् ॲन्पतु—गान्धर्व प्रकार का; मऱैकळे वकुत्त—वेदों से ही निर्दिष्ट; कूट्टम्—विवाह; उण्टु—है; इ.˙.तु इयैन्त पिन्—(ऐसा विवाह) यह (हममें) हो जाने के बाद; ॲॅनक्कु मूत्त वेन्तर्क्कुम्—मेरे बड़े भाइयों को भी; विरुप्पिऱ्ऱु आकुम्—पसन्द आयगा; अन्ऱियुम्—इसके अलावा; वेऱुन् ओर् उरै उण्टु—दूसरी एक बात भी है; ॲॅन्ऱाळ्—कहा। २७३

पर्वत-सम मनोरम कंधे वाले! परस्पर प्रेम में संयुक्त मन वाले पुरुष और स्त्रियाँ गान्धर्व विवाह कर ले सकते हैं। यह वेदसम्मत विवाहरीति ही है। पहले हम विवाह कर ले तो देखोगे कि मेरे अग्रज इसे चाव के साथ स्वीकार कर लेगे। और भी एक लाभ है, इसमें। सुनो। २७३

❀ मुनिवरो डुडैय मुऩ्ऩे मुदिर्पहै मुऱैमै नोक्कार्
तनियैनी याद लान्मरु् ऱवरोडुन् दळ्वर् कॊत्त
विनैयमी दल्ल दिल्लै विण्णुनिन् ऩाट्चि याक्कि
इऩियवर् महिळ्न्दु वन्दुन् ऩेवलि निऱ्प रॅन्ऱाळ् 274

अवर्—वे (मेरे अग्रज); मुन्ऩे—पहले; मुनिवरोटु उटैय—मुनियों के साथ जो रखते हैं; मुतिर् पकै मुऱैमै—वह वैर की रीति; नोक्कार्—नहीं रखेंगे; नी तनियै आतलाल्—तुम एकाकी हो, इसलिए; अवरोटुम्—उनके साथ; तळुवर्कु—मिलकर रहने के लिए; ऑत्त—अनुकूल; विनैयम्—उपाय; ईतु अल्लतु इल्लै—इसके सिवा कुछ नहीं है; इनि—आगे; विण्णुम् निन् आट्चि आक्कि—स्वर्ग को तुम्हारे शासन के अधीन बनाकर; अवर् मकिळ्न्तु वन्तु—वे आनन्द के साथ आकर; उन् एवलिन्—तुम्हारे आदेश की प्रतीक्षा में; निऱ्पर्—रहेंगे; ॲॅन्ऱाळ्—कहा। २७४

हमारा विवाह हो जायगा तो मेरे भाई रावण आदि मुनियों को वैर की दृष्टि से नही देखेंगे। तुम इस जंगल में एकाकी रहते हो और राक्षसों की मैत्री तुम्हारे कुशल के लिए आवश्यक है। उनसे मित्रता के साथ रहने का एक मात्र उपाय यही— हमारा विवाह ही —हो सकता है। कोई दूसरा मार्ग नही। अब वे स्वर्ग को भी तुम्हारे अधीन करके स्वयं तुम्हारे पास सहर्ष आयेंगे और अधीन किंकर रहेंगे। तुम्हारी आज्ञाएँ मन लगा कर मानेंगे। २७४

❀ निरुदर्त मरुळुम् बॅऱ्ऱे नित्तलम् बॅऱ्ऱे निन्ऩो
डॊरुवरुञ् जॅल्वत् तियाण्डु मुऱैयवुम् बॅऱ्ऱे ऩॊन्ऱो
तिरुनहर् तीरुन्द पिन्नरुच् चॅय्दवम् बयन्द दॅन्ऩा
वरिशिलै वडित्त तोळान् वाळॅयि ऱ्रिलङ्ग नक्कान् 275

वरिचिलै वट्टित्त तोळान्–बन्धनयुक्त धनुष चलाने में अभ्यस्त भुजा वाले; निरुतर् तम् अरुळुम् पॅट्रेन्–राक्षसों का अनुग्रह पा गया; निन् नलम् पॅट्रेन्–तुम्हारी कृपा प्राप्त हो गई; याण्टुम्–कभी भी; ओरुवु अरुम् चॅल्वत्तु–क्षय न होनेवाले धन-वैभव के साथ; निन्नॉटुम् उरैयवुम् पॅट्रेन्–तुम्हारे संग रहना भी प्राप्त हो गया; तिरुनकर् तीर्न्त पिन्नर्–सुन्दर अयोध्या नगर छोड़ आने के बाद; चॅय् तवम्–मेरे किये हुए तप ने; पयन्तत्तु ऑन्रो–क्या एक (पर अनेक) फल प्रदान कर दिया है; ॲन्ना–(व्यंग्य से) कहकर; वाळ् ॲयिरु–उज्ज्वल दाँत; इलङ्क–प्रकट करते हुए; नक्कान्–हँसे। २७५

बन्धनयुक्त कठोर धनुष के प्रयोग में अभ्यस्त श्रीराम ने व्यंग्य किया। हा! मेरा अहोभाग्य! राक्षसों का अनुग्रह मिल गया! तुम्हारी कृपा मिल गयी! अक्षय धन-दौलत के साथ तुम्हारी संगति का भी बड़ा भाग्य हाथ आ गया! श्रीनगर अयोध्या छोड़कर आने के बाद मैंने जो तपस्या की थी, उसका फल क्या एक है (अनेक हैं)! यह कहकर श्रीराम सुन्दर दाँतों को प्रकट करते हुए हँसे। २७५

❀ विण्णिडै यिम्बर् नाहर् विरिञ्जने मुदलोर्क् कॅल्लाम्
कण्णिडै यॊळियिन् पाङ्गर्क् कडिहमळ् शालै निन्रुम्
पॅण्णिडै यरशि तेवर् पॅट्रनल् वरत्तार् पिन्नर्
मण्णिडै मणियिन् वन्द वञ्जियै पोलवाळ् वन्दाळ् 276

विण् इटै–व्योम में; इम्पर्–भू पर; नाकर्–नागलोक में; विरिञ्चने–विरंचि; मुतलोर्क्कु ॲल्लाम्–आदि सबके लिए; कण् इटै–नेत्रों को; ऑळियिन् पाङ्कर्–ज्योतिस्वरूप श्रीराम के पास; पॅण् इटै अरचि–स्त्रियों में रानी; तेवर् पॅट्र नल् वरत्ताल्–देवों के प्राप्त वर से; पिन्नर्–बाद; मण् इटै–पृथ्वी पर; मणियिन् वन्त वञ्चियै पोल्वाळ्–मणि से निकली लता के समान (अवतरित) सीतादेवी; कटि कमळ् चालै निन्रुम्–सुगन्धि बिखेरनेवाली पर्णशाखा से; वन्ताळ्–आने लगी। २७६

श्रीराम स्वर्ग, भूलोक और पाताल मे रहनेवाले ब्रह्मा से लेकर सभी जीवों के नेत्रों के ज्योति-स्वरूप थे। उनके पास आने के लिए सीताजी तभी पर्णशाला के बाहर निकली। वे स्त्रियों में रानी थीं। देवों के वर को पूरा करने के लिए भूमि पर अवतरित हुई थीं। वे रत्न-वल्ली के समान सुबास से पूरित पर्णशाला के बाहर प्रकट हुईं। २७६

❀ ऊन्शुड वुणङ्गु पेळ्वा युणर्विलि युरुवि नारुम्
वान्शुडरच् चोदि वॅळ्ळम् वन्दिडै वयङ्ग नोक्कि
मीन्शुडर् विण्णु मण्णुम् विरिन्द पोररक्क रॅन्नुम्
कान्शुड मुळैत्त कट्पिन् कन्नलियैक् कण्णिर् कण्डाळ् 277

ऊन्–शरीर को; चुट–काम ने तपाया, उससे; उणङ्कु–मुरझाये रहनेवाली; पेळ् वाय्–बड़ा मुख वाली; उणर्वु इलि–मतिहीन शूर्पणखा; उरुविन्–भगवती के

रूप में; नाऱुम्–प्रकट हुई; वान् चुटर्–बड़ी कान्तिमय; चोति वॆळ्ळम्—ज्योति-प्रवाह; वन्तु इटै वयङ्क–आकर उनके मध्य प्रकट हुआ तो; नोक्कि–उसको देखकर; मीन् चुटर् विण्णुम्—नक्षत्र-ज्योतित आकाश में; मण्णुम्–धरती में; विरिन्त–फैले हुए; पोर् अरक्कर् ऎन्नुम्–झगड़ालू राक्षस रूपी; कान् चुट–जंगल को जलाने; मुळैत्त–उद्भूत; कऱ्पिन् कनलियै–पातिव्रत्य रूपी अग्निशिखा को; कण्णिल् कण्टाळ्–अपनी आँखों से देखा (देखती ऐसा अनुभव किया)। २७७

शूर्पणखा ने, जिसका शरीर कामाग्नि से तप्त होकर मुरझा-सा गया था, जिसका मुख बहुत बड़े बिल के समान था और जो अपनी बुद्धि खो चुकी थी, सीताजी के रूप में उनके मध्य आनेवाली बड़ी कान्तिमय ज्योति के प्रवाह को देखा। वह ऐसी थीं, मानो वह पातिव्रत्य की अग्निशिखा हैं, जो नक्षत्रोज्वल आकाश में और भूमि में फैले रहे राक्षस-कानन को जलाने के लिए उद्भूत हैं। २७७

❀ पण्बुऱ नॆडिदु नोक्किप् पडैक्कुनर् शिऱुमै यल्लाल्
ऎण्बिऱङ् गळहुक् कॆल्लै यिल्लैया मॆन्ऱु निन्ऱाळ्
कण्बिऱ पॊरुळिऱ् चॆल्ला करुत्तॆनि नः(ह)दे कण्ड
पॆण्बिऱन् दॆनुक् कॆन्ऱा लॆन्बडुम् पिऱरुक् कॆन्ऱाळ् 278

पण्पु उऱ–खूब आँख लगाकर; नॆटितु नोक्कि–दीर्घकाल तक देखकर; पटैक्कुनर् चिऱुमै अल्लाल्–सृष्टिकर्ता की गलती है, नहीं तो; ऎण् पिऱङ्कु–कल्पना में आनेवाली; अऴकुक्कु ऎल्लै इल्लै आम्–सुन्दरता की सीमा नहीं होता, इस बात को साबित करती हुई; निन्ऱाळ्–यह शोभायमान (खड़ी) रहती है; कण् पिऱ पॊरुळिल् चॆल्ला–दृष्टि दूसरे पदार्थ पर नहीं जाती; करुत्तु ऎनिन् अ.'.ते–मन भी वही है; कण्ट–इसे जो देखती; पॆण् पिऱन्तेनुक्कु–स्त्री पैदा हुई मेरी स्थिति यह है; ऎन्ऱाल्–तो; पिऱर्क्कु ऎन् पटुम्–दूसरे (पुरुषों) की क्या होगी; ऎन्ऱाळ्–(आश्चर्य के साथ) कहा। २७८

उसने खूब आँखे फाड़कर बहुत देर तक देखा। उसे एक नया तथ्य सूझा। प्रपंचसृजक ब्रह्मा की ही असमर्थता है कि उसकी सृष्टि में सुन्दरता भी सीमित रहती है। नहीं तो सत्य यह है कि सुन्दरता की कोई सीमा नहीं! यह तथ्य साबित करती हुई सीताजी उनके सामने खड़ी थीं। शूर्पणखा ने विस्मय के साथ सोचा कि इस सुन्दरता के खजाने को जो देखता है वह उस पर से आँख नहीं हटा सकता। उसके मन की भी वही हालत होगी। मैं स्त्री हूँ। इसको देखकर मेरी भी यह हालत हो गयी तो अन्य (पुरुष) लोगों की क्या स्थिति होगी ?। २७८

❀ पॊरुदिऱल् तानै नोक्किप् पूवैयै नोक्कि निन्ऱाळ्
करुदमर् ऱिनिवे ऱिल्लै कमलत्तुक् कडवु ळानुम्
ऒरुतिऱत् तुणर नोक्कि युरुविनुक् कुलह मून्ऱिल्
इरुतिऱत् तार्क्कुञ जॆय्द वरम्बिव ळिरुव रॆन्ऱाळ् 279

पौरु तिऱ्ऱुत्तानै–युद्धदक्ष श्रीराम को; नोक्कि–देखकर; पूवैयै नोक्कि–फिर देवी को देखती; निन्ऱाळ्–विस्मित खड़ी (जो) रही; कमलत्तु कटवुळ् तानुम्–कमलासन देवता (ब्रह्मा) भी; ओरु तिऱत्तु–अपूर्व रीति से; उणर नोक्कि–विवेक से देखकर; उलकम् मून्ऱिन्–तीनों लोकों के; इरु तिऱत्तार्क्कुम्–पुरुष-स्त्री दोनों वर्गों के लिए; इवर् इरुवर्–ये दोनों; उरुविनुक्कु चॅय्त वरम्पु–रूपसौंदर्य की रची सीमाएँ है; मऱ्ऱु करुत–दूसरा सोचने के लिए; इनि वेऱु इल्लै–अब कुछ नहीं; ॲन्ऱाळ्–धारणा बना ली। २७९

शूर्पणखा ने युद्धसमर्थ श्रीराम को देखा। फिर एक बार सीताजी पर दृष्टि डाली। विस्मयविमूढ़ खड़ी रह गयी। उसने विचार किया कि ब्रह्मा ने खूब सोचकर अच्छी तैयारी के साथ इन दोनों को पुरुष और स्त्री के सौन्दर्य के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप मे सरजा है। तीनों लोकों में पुरुष के सौन्दर्य की सीमा श्रीराम हैं और स्त्री-सौन्दर्य की सीमा यह स्त्री है। उसने दृढ़ धारणा बना ली, इसके सिवा सोचने के लिए गुंजाइश नहीं है। २७९

मरुवॊन्ऱु कून्द लाळै वनत्तिवन् कॊण्डु वारान्
उरुविङ्गि दुडैय राह मऱ्ऱैयोर् यारु मिल्लै
अरविन्द मलरु णीङ्गि यडियिणै पडियिऱ् ऱोयत्
तिरुविङ्गु वरुव दॆन्नो वॆन्ऱहन् दिहैत्तु निन्ऱाळ् 280

मरु ऑन्ऱु–सुबास-लगे; कून्तलाळै–केश वाली (इस) को; इवन् वनत्तु कॊण्टु वारान्–यह वन में नहीं लायगा; इतु उरुवम् उटैयर् आक–ऐसी रूपवती; मऱ्ऱैयोर् यारुम्–दूसरी कोई; इङ्कु इल्लै–यहाँ नहीं है; तिरु–श्रीलक्ष्मीदेवी; अरविन्त मलर् उळ्–अरविन्द-मध्य वास; नीङ्कि–छोड़कर; अटि इणै–चरणद्वय; पटियिल् तोय–भूमि पर पड़ने देते हुए; इङ्कु वरुवतु–यहाँ आती; ॲन्नो–क्योंकर; ॲन्ऱु–यह सोचकर; अकम् तिकैत्तु–मन में चकित होकर; निन्ऱाळ्–खड़ी रही। २८०

उसने तर्क किया कि सुबासित केश वाली इसको यह पुरुष वन में अपने साथ नहीं लाया होगा। इतनी रूपवती स्त्रियाँ कोई अन्य हैं भी नहीं। इसलिए यह श्रीदेवी ही होगी, जो अपना कमल पर वास छोड़कर अपने चरणद्वय को भूमि पर पड़ने देती हुई आयी है। पर उसका इधर आगमन किस हेतु हुआ है? ऐसा विस्मय करती हुई चकितमन होकर शूर्पणखा खड़ी रही। २८०

※ पॊन्नैप् पोलॊळिरु मेनि पूवैपोल् वण्णत् तानिम्
मिन्नैप्पो लिडैया ळोडु मेवुम् वेडत्त नल्लन्
तन्नैप्पोर् ऱहैयो रिल्लात् तळिरैप्पो लडियि नाळुम्
ॲन्नैप्पो लिडैये वन्दा ळिहळ्विप्पे निवळै यॆन्ना 281

पूवै पोल् वण्णत्तान्–अतसी पुष्प का-सा वर्ण-वाला; पॊन्नै पोल् ऑळिरुम्

मेनि–स्वर्ण की-सी कान्ति का शरीर; मिऩ्ऩै पोल्—बिजली-सम; इटैयाळोटुम्–कमर वाली के साथ; मेवुम् वेटत्तऩ् अल्लऩ्–मिलकर रहे, ऐसे गृहस्थ धर्मोचित वेश का नहीं; तऩ्ऩै पोल् तकैयोर् इल्ला–जिसके समान श्रेष्ठ स्त्रियाँ नहीं होतीं (जो अप्रतिम है); तळिरै पोल् अटियिऩाळुम्–जिसके पल्लव के समान चरण हैं; इटैये–(यह) बीच में; ऍऩ्ऩै पोल् वऩ्ताळ्–मेरे समान आई हुई होनी चाहिए; इवळै–इसको; इकऴ्विप्पेऩ्–उपेक्षित करा दूँगी; ऍऩ्ऩा–ऐसा निश्चय करके। २८१

अतसी-पुष्प का-सा रंग वाला यह स्वर्ण की-सी चमक वाली और बिजली-सी कमर वाली इसके साथ गृहस्थी चलाता नहीं लगता। इसका वेश गृहस्थी योग्य नहीं है। तपस्वी का वेश है। यह अप्रमेय स्त्री, पल्लव-चरणा नारी मेरे समान बीच में आयी हुई है। हाँ, वही होना चाहिए। अब मैं उसको निन्दित कर उपेक्षित करवा दूँगी। —शूर्पणखा ने यह संकल्प किया। २८१

❀ वरुमिवळ् मायम् वल्लळ् वञ्जऩै यरक्कि नॆञ्जम्
तॆरिविल तेरुन् दऩ्मै शीरियोय् शॆव्वि दऩ्ऱाल्
उरुविदु मॆय्य दऩ्ऱा लूऩुहर् वाऴ्क्कै याळै
वॆरुविनॆऩ् नॆय्दि डामल् विलक्कुदि वीर वॆऩ्ऱाळ् 282

चीरियोय्–हे अच्छे गुण वाले; वरुम् इवळ्–जो आ रही है, यह; मायम् वल्लळ्–माया में निपुण है; वञ्चऩै अरक्कि–वंचक राक्षसी है; नॆञ्चम् तॆरिवु इल–इसका मन अगम्य है; तेरुम् तऩ्मै–इसको अच्छा मानना; चॆव्वितु अऩ्ऱु–ठीक नहीं; उरु इतु मॆय्यतु अऩ्ऱु–उसका यह रूप भी सच्चा नहीं; ऊऩ् नुकर् वाऴ्क्कैयाळै–मांसाहारी जीवन वाली इसे; वॆरुविऩॆऩ्–(देखकर) डरती हूँ; ऍय्तिटामल्–पास न आने दो; वीर–हे वीर; विलक्कुति–हटाओ; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। २८२

ऐसा संकल्प करके शूर्पणखा श्रीराम से बोली। हे अच्छे गुण वाले! यह जो आ रही है माया में निपुण है। वंचकी निशाचरी है। इसके मन के भाव गूढ़ हैं और हमारी समझ में नहीं आ सकेंगे। इसको अच्छा मानना भला नहीं होगा। इसका रूप भी सच्चा नहीं है। मांस खाकर जीवन चलानेवाली इसको देखकर मेरे मन में भय पैदा होता है। हे वीर! उसको पास आने मत दो। रोको और भगाओ। २८२

❀ ऑळिदुन् नुणर्वु मिऩ्ऩे युऩ्ऩैया रॊळिक्कु मीट्टार्
तॆळिय नलत्ति नालुऩ् शिन्दऩै तॆरिन्द दम्मा
कळ्ळवल् लरक्कि पोला मिवळॆऩी काण्डि यॆऩ्ऩा
वॆळ्ळिय मुरुवऩ् मुत्तम् वॆळिप्पड वीर ऩक्काऩ् 283

वीरऩ्–वीर राघव; मिऩ्ऩे–विद्युत (-सम स्त्री); उऩ् उणर्वु ऑळितु–तुम्हारी समझ बड़ी साफ़ है; उऩ्ऩै यार् ऑळिक्कुम् ईट्टार्–तुमसे छिपने की किसके पास शक्ति है; तॆळिय नलत्तिनाल्–सुलझी हुई शक्ति से; उऩ् चिन्तऩै–तुम्हारी

बुद्धि ने; तॆरिन्ततु–यह बात जान ली; अम्मा–री माँ; इवळुम्–यह भी; कळ्ळ-चोर; वल् अरक्कि–भयंकर राक्षसी; पोल् आम्–होगी, अवश्य; नी काण्टि–तुम देख लो; ऎन्ऩा–कहकर; वॆळ्ळिय मुळ्वल् मुत्तम्–श्वेत दन्तमुक्ता; वॆळिप्पट–प्रकट करके; नक्कान्–हँसे। २८३

श्रीवीरराघव ने इसके उत्तर में कहा कि विद्युत के समान लगनेवाली नारी! तुम्हारी सूझ भी बड़ी साफ़ है! कौन तुमसे छिपने-छिपाने की क्षमता रखता है? तुम्हारी बूझ ने अपने सामर्थ्य से सच्चाई जान ली! हा! री मैया! यह अवश्य चोरनी, भयंकर राक्षसी ही होगी शायद! तुम भी देख लो। ऐसा कहकर मोती-समान मनोरम दाँतों को प्रकट करते हुए श्रीराम हँसे। २८३

❀ आयिडै यमुदिन् वन्द वरुन्ददिक् कर्पि नञ्जॊल्
वेयिडै तोळि नाळुम् वीरनैच् चेरुम् वेलै
नीयिडै वन्द दॆन्नै निरुदर्तम् बावै यॆन्ऩाक्
कायॆरि यनैय कळ्ळ वुळ्ळत्ताळ् कदित्त लोडुम् 284

अ इटै–उस समय; अमुतिन् वन्त–अमृत के समान आगत; अरुन्तति कर्पिन्–अरुन्धती के समान पातिव्रत्य; अम् चॊल्–मधुर बोली; वेय् इटै–बाँस को पीछे करनेवाले (बाँस से भी सुडौल); तोळिनाळुम्–कन्धे, इनसे युक्त सीताजी भी; वीरनै–श्रीवीरराघव के पास; चेरुम् वेलै–आई तब; काय् ऎरि अनैय–जलती आग के समान; कळ्ळ उळ्ळत्ताळ्—कपट-भरे मन वाली के; निरुतर् तम् पावै–हे राक्षसी स्त्री; इटै नी वन्ततु–बीच में तुम्हारा आना; ऎन्नै–कैसा; ऎन्ऩा–कहकर; कतित्तलोटुम्–कोप के साथ बढ़ने पर। २८४

तब तक सुधा-सम वहाँ जो आयीं, वे अरुन्धती-सी पतिव्रता, मधुर-वाणी और बाँस के समान कंधों वाली सीताजी श्रीराम के पास आ गयीं। झट जलती आग के समान वंचना मन में रखनेवाली शूर्पणखा ने ताड़ना दी कि राक्षस-कुमारी! तुम हमारे बीच में कैसी आयीं? यह कहकर वह कोप के साथ श्रीसीता की तरफ़ बढने लगी। २८४

❀ अञ्जिनळ् वञ्जि यन्न मिन्निडै यलश वोडिप्
पञ्जिन्मॆल् लडिह णोवप् पदैत्तनळ् परुवक् काल
मञ्जिडै वयङ्गित् तोन्ऱुम् पवळत्तिन् वल्लि येपोऱ्
कुञ्जर मनैय वीरन् कुववुत्तो डळुविक् कॊण्डाळ् 285

अञ्चिनळ्–भयभीत (सीताजी); मिन् इटै—बिजली-सी कमर को; वञ्चि अन्न–लता के समान; अलच–बल खाने देती हुई; ओटि–दौड़कर; पञ्चिन् मॆल् अटिकळ्—रुई-समान चरणों को; नोव–कष्ट देते हुए; पतैत्तनळ्–सिहरकर; परुव काल मञ्चु इटै–वर्षाकालीन मेघ के बीच; वयङ्कि तोन्ऱुम्–साफ़ दिखनेवाली; पवळत्तिन् वल्लिये पोल्—प्रवाल-लता ही के समान; कुञ्चरम् अनैय वीरन्—कुंजर-

सम वीर श्रीराम के; कुववु तोळ्-पुष्ट और उन्नत कन्धों से; तळुवि कॊण्टाळ्-लिपट गईं। २८५

शूर्पणखा को अपने पास आते देखकर श्री सीताजी भयभीत हो गयीं। अपनी बिजली-सी कमर को लता के समान लचकाती हुई दौड़ीं। रुई-समान पैरों को दुख देती हुई हड़बड़ाहट के साथ वह दौड़ी और कुंजर-सम श्रीराम के सबल और पुष्ट कंधों से ऐसे लग गयीं जैसे वर्षाकालीन मेघ के मध्य प्रवाललता लग गयी हो। २८५

❀ वळैयॆयिऱ् ऱवरुह ळोडु वरुम्विळै याट्टॆन् ऱालुम्
विळैवन तीमै येया मॆन्वदै युणर्न्दु वीरन्
उळैवन वियर्ऱ लॊल्लै युन्निलै युणरु मायिन्
इळैयवन् मुनियु नङ्गै येहुदि विरैवि नॆन्ऱान् 286

वळै ऎयिऱ्ऱु-वक्रदाँत वाले; अवर्कळोटुम्-उन (राक्षसों) के साथ; वरुम् विळैयाट्टु ऎन्ऱालुम्-होनेवाले खेल भी हों; विळैवन तीमैये आम्-फल बुरे ही होंगे; ऎन्पतै उणर्न्तु-यह महसूस कर; वीरन्-श्रीवीरराघव; नङ्कै-नारी; उळैवन इयर्ऱल्-मन को संकट देनेवाले काम न करो; इळैयवन्-मेरा अनुज; उन् निलै उणरुम् आयिन्-तुम्हारी बात जान लेगा तो; ऒल्लै मुनियुम्-तुरन्त तुमसे कुपित हो जायगा; विरैविन् एकुति-शीघ्र चली जाओ; ऎन्ऱान्-कहा। २८६

अब श्रीराम महसूस करने लग गये कि वक्रदन्त राक्षसों के साथ विनोद भी अनर्थकारी है। वीर श्रीराम ने शूर्पणखा से कहा कि नारी! तुम ऐसा काम मत करो, जिससे मन को क्लेश पहुँचे। मेरा छोटा भाई तुम्हारी स्थिति जानेगा तो तुरन्त कुपित हो जायगा। तुम शीघ्र यहाँ से चली जाओ। २८६

पॊऱ्पुडै यरक्कि पूविऱ् पुनलिनिऱ् पॊरुप्पिल् वाळुम्
अऱ्पुडै युळ्ळत् तारु मनङ्गनु ममरर् मऱ्ऱुम्
ऎऱ्पॆऱत् तवञ्जॆय् हिन्ऱा रॆन्नैनी यिहळ्व दॆन्ने
नऱ्पॊऱै नॆञ्जि लिल्लाक् कळ्वियै नच्चि यॆन्ऱाळ् 287

पॊऱ्पुटै अरक्कि-सुन्दर वेश में जो रही, उस राक्षसी ने; पूविल्-(कमल) पुष्प पर; पुनलिल्-(क्षीरसागर के) पथ पर; पॊरुप्पिल्-(कैलास) पर्वत पर; वाळुम्-वास करनेवाले; अऱ्पु उटै उळ्ळत्तारुम्-प्रेम-मन के (तीनों देवता) और; अनङ्कनुम्-मन्मथ और; मऱ्ऱुम् अमरर्-अन्य देवता लोग; ऎन् पॆऱ-मुझे पाने के लिए; तवम् चॆय्किन्ऱार्-तपस्या करते हैं; नल् पॊऱै-श्रेष्ठ क्षमा नामक गुण; नॆञ्चिल् इल्ला-जिसके मन में नहीं है, उस; कळ्वियै-चोरनी को; नच्चि-चाहकर; ऎन्नै नी इकळ्वतु-मेरी तुम्हारा उपेक्षा करना; ऎन्ने-क्यों; ऎन्ऱाळ्-पूछा। २८७

शूर्पणखा जानेवाली नहीं थी। मायारूपिणी उसने श्रीराम से

कहा— कमलपुष्प पर रहनेवाले ब्रह्मा, क्षीरसागरवासी विष्णु, कैलासपर्वत-पति शिव, अनंग और अन्य देवता लोग मुझ पर प्रेम रखते है और मुझे प्राप्त करने हेतु तपस्या कर रहे हैं, वात ऐसी है तब तुम असह्यशीला इस नारी को चाहकर मेरी उपेक्षा करते हो ! इसका कारण क्या है ? —शूर्पणखा ने पूछा। २८७

❀ तन्ऩॊडुन् दॊडर्वि लादॆ मॆऩ्ऩवुन् दविरा डाऩिक्
कन्ऩॆडु मऩत्ति शॊल्लुङ् गळ्ळवा शहङ्ग ळॆऩ्ऩा
मिन्ऩॊडु तॊडर्न्दु शॆल्लु मेहम्बोल् मिदिलै वेन्दन्
पॊन्ऩॊडुम् बुऩिदऩ् बोयप् पूम्बॊळिऱ् चालै पुक्कान् 288

इ कल् नॆंटुम् मनत्ति तन्ऩॊटु—इस पत्थर-सम मन वाली के साथ; तॊटर्वु इलातेम्—हमारा कोई सम्वन्ध नहीं है; ॲन्ऩवुम्—कहने पर भी; तविराळ्—यहाँ से नहीं हटती; चॊल्लुम्—इसके वचन भी; कळ्ळ वाचकङ्कळ्—वंचना-भरे वचन हैं; ॲन्ऩा—यह सोचकर; पुनितन्—पवित्र श्रीराम; मिन् ओटुम्—विजली के साथ; तॊटर्न्तु चॆल्लुम्—लगे जानेवाले; ऑरु मेकम् पोल—मेघ के समान; मितिलै वेन्तन् पॊन् ऑटुम्—मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ; पोय्—वहाँ से जाकर; अ पूम् पॊऴिल्—उस उपवन में रहनेवाली; चालै—पर्णशाला में; पुक्कान्—प्रविष्ट हुए। २८८

श्रीराम ने निश्चय कर लिया कि यह पत्थर-सम मन वाली है। इस कठोरमन स्त्री से हमने कह दिया कि हमारा-तुम्हारा रिश्ता कुछ नहीं हो सकता। तो भी वह हटती नहीं। इसके कथन भी कपट के वचन लगते हैं। यह सोचकर पवित्रचरित्र श्रीराम मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ जाकर उस उपवन में रही अपनी पर्णशाला में घुस गये। सीताजी जब उनके पीछे गयीं, तब ऐसा लगा कि मेघ के पीछे बिजली जा रही हो। २८८

❀ पुक्कपिन् बोऩ्ऩ दॆन्ऩु मुणर्विनळ् पॊऱैयि नीङ्गि
उक्कदा मुयिर ळॊऩ्ऱु मुयिर्त्तिल ळॊडुङ्गि निऩ्ऱाळ्
तक्किलन् मऩत्तुळ् यादुन् दळ्ळुविलन् शलमुङ् गॊण्डान्
मैक्करुङ् गुळलि ऩाण्माट् टऩ्बिनिल् वलिय नॆन्ऱाळ् 289

पुक्क पिन्—उनके पर्णशाला में प्रविष्ट होने के बाद; पोन्तु ॲन्ऩुम् उणर्विनळ्—बेसुध-सी; पॊऱैयिन् नीङ्कि—शरीर से छूटकर; उक्कतु आम् उयिरळ्—ध्वस्त हुए हों, ऐसे प्राणों वाली होकर; ऑन्ऱुम् उयिर्त्तिलळ्—साँस ही नहीं छोड़ी; ऑटुङ्कि निन्ऱाळ्—सन्न खड़ी रही; तक्किलन्—मेरे योग्य नहीं; मऩत्तुळ् यातुम् तळ्ळुविलन्—मन में कोई लगाव पैदा नहीं हुआ है; चलमुम् कॊण्टान्—कोप भी करता है; मै करुम् कुळलिनाळ् माट्टु—अंजन-सम काला केश वाली के साथ; अन्पिनिल् वलियन्—प्रेम में दृढ़ है; ॲन्ऱाळ्—अपने आप से कहा। २८९

उनके पर्णशाला में प्रवेश के बाद शूर्पणखा की दशा बहुत बिगड़

गयी। सुधि खोकर वह क्षीण-प्राणा-सी रह गयी। साँस भी नहीं छोड़ती थी। सन्न खड़ी रही। फिर उसने आप ही आप कहा कि यह मेरे योग्य नहीं लगता। अपने मन में किंचित भी स्नेह का भाव नहीं लाता। वही नहीं, मेरे प्रति कुपित भी है। उसका इस अंजन-सम काले केश वाली स्त्री पर प्रेम दृढ़ है। २८९

❀ निन्ऱिल ळवत्तैच् चेरु नॅऱियिनै निनैन्दु पोऩाळ्
इन्ऱिव नाहम् बुल्ले नॅनिलुयि रिळप्पे नॅन्नाप्
पॊन्ऱिणि शारऱ् चीदप् पळिक्करैप् पॊदुम्बर्प् पुक्काळ्
शॅन्ऱदु परिदि मेल्पाऱ् चॅक्कर्वन् दिऱुत्त दन्ऱे 290

निन्ऱिलळ्–(शूर्पणखा) खड़ी नहीं रही; अवत्तै–उसको; चेरुम् नॅऱियिनै–प्राप्त करने का उपाय; निनैन्तु–सोचते हुए; पोऩाळ्–गई; इन्ऱु–आज; इवन् आकम् पुल्लेन्–इसके वक्ष को आलिंगन नहीं करूँगी; ॲतिल्–तो; उयिर् इऴप्पॅन्–प्राण छोड़ दूंगी; ॲन्ऩा–ऐसा सोचकर; पॊन् तिणि–स्वर्णमिश्रित; चारल्–एक तराई में; चीत पळिक्कु अरै–शीतल स्फटिक-चट्टान सहित रहनेवाले; पॊतुम्पर्–उद्यान में; पुक्काळ्–घुसी; परिति मेल्पाल् चॅन्ऱतु–सूर्य पश्चिम दिशा में (अस्त हो) चला; चॅक्कर् वन्तु इऱुत्ततु–लालिमा आ फैली। २९०

फिर वह वहाँ खड़ी नहीं रही। उसका मन श्रीराम को भूल नहीं सका। उनसे मिलने का उपाय सोचने लगी। 'अगर मैं इसके वक्ष का आलिंगन नहीं करूँगी तो मैं प्राण त्याग दूंगी।' —यह संकल्प करती हुई वह एक उपवन मे गयी, जो तराई में था, और जिसमें शीतल स्फटिक-चट्टान थी। तब तक सूर्य पश्चिम में अस्त हो गया और गगन में लाली फैल गयी। २९०

❀ अऴिन्द शिन्दैय ळाययर् वाळ्वयिन्
मॊऴिन्द कासक् कडुङ्गनल् मूण्डदाल्
वऴिन्द नाहत्तिन् वन्ऱॊळै वाळॅयिऱ्
ऱिऴिन्द कार्विड मेऱिय दॅन्नवे 291

वऴिन्त–छलककर; नाकत्तिन्–सर्प के; वन्–दृढ़; तॊळै–रंध्रसहित; वाळ्–उज्ज्वल; ॲयिऱ्ऱु–विषदाँत का; इऴिन्त कार् विटम्–बाहर आया विष; एऱियतु ॲन्न–सिर पर चढ़ गया, जैसे; अऴिन्त चिन्तैयळाय्–संज्ञाशून्य होकर; अयर्वाळ् वयिऩ्–शिथिल रहनेवाली शूर्पणखा के अन्दर; मॊऴिन्त–पूर्वोक्त; काम कटुम् कनल्–काम की भयंकर अग्नि; मूण्टतु–उद्दीप्त हुई। २९१

शूर्पणखा की स्थिति बहुत बुरी हो गयी। किसी सर्प के रंध्रसहित दृढ़ दाँत द्वारा निकले विष का असर सिर पर चढ़ गया हो, ऐसा वह स्वस्थता खोकर श्रांत हो गयी। पूर्वोक्त काम का कठोर ज्वर उसके शरीर को ताप देने लगा। २९१

❀ ताड हैक्कोंडि याडड मार्बिडै, आड वर्क्कर शन्नयि लम्बुपोल्
पाड वत्तोंळिन् मन्मदन् वाय्कणै, ओड वुट्कि युयिरुळैन् दाळरो 292

तातकै कोंटियाळ्–ताड़का, क्रूरी; तट मार्पु इटै–के विशाल वक्ष के मध्य; आटवर्क्कु अरचन्–पुरुषों में राजा श्रीराम के; अयिल् अम्पु पोल्–तीक्ष्ण शर जैसे; पाटवम् तोंळिल् मन्मतन्–कार्य-पटु मन्मथ के; पाय् कणै–प्रेषित शर; ओट–निफर गए तो; उट्कि–सिहरकर; उयिर् उळैन्ताळ्–प्राणविह्वल हुई। २६२

मन्मथ कार्यपटु था। उसका प्रेषित शर इसकी छाती को ऐसा निफर गया, जैसे पुरुषोत्तम श्रीराम का तीक्ष्ण शर क्रूरी ताड़का के वक्ष को वेधकर चला गया था। शूर्पणखा सिहर उठी और वह मर्मान्तक पीड़ा का अनुभव करने लगी। २९२

❀ कलैयु वामदि येकरि याहवन्, शिलैय मारनैत् तिन्नु निनैप्पिनाळ्
मलैय मारुद मानॆडुङ् गालवेल्, उलैय मार्बिडै यून्ड्रिड वोयुमाल् 293

कलै उवा मतियै–कलाओं से पूर्ण चन्द्र को ही; करि आक–व्यंजन बनाकर; वन् चिलैय मारनै–कठोर धनुर्धर मारदेव को; तिन्नुम् निनैप्पिनाळ्–खाने का विचार किया; मलय मारुतम् आम्–मलयमारुत रूपी; नॆटुम् काल वेल्–दीर्घ यम-शूल; उलैय्–सालते हुए; मार्पु इटै ऊन्ड्रिट–छाती पर घुसा तो; ओयुम्–श्रान्त खो गई। २६३

वह सोचती कि मैं पूर्णचन्द्र को व्यंजन बनाकर कठोर धनुर्धर कामदेव को ही भक्षण कर लूँ। पर मलयपवन रूपी सशक्त शक्ति के उसके वक्ष पर गड़ने से वह निर्बल रह जाती। २९३

❀ अलैक्कु माळि यडङ्गिड वङ्गैयाल्
मलैक्कु लङ्गळिऩ् ऱूर्क्कु मनत्तिन्नाळ्
निलैक्कुम् वानि नॆडुमदि नीणिला
वलैक्कु नीङ्गु मिडुक्किलण् मान्दुवाळ् 294

अलैक्कुम्–उसको सालनेवाले; आळि–समुद्र को; अटङ्किट–चुप कराने के लिए; अम् कैयाल्–अपनी हथेली से; मलै कुलङ्कळिन्–गिरियों की राशि उखाड़कर उनसे; तूर्क्कुम् मनत्तिन्नाळ्–पाटने का संकल्प किया; वानिल् निलैक्कुम् नॆटु मति–आकाश में स्थिर रहे चन्द्र की; नीळ् निला वलैक्कु–विस्तृत चाँदनी के जाल से; नीङ्कुम्–बच जाने को; मिटुक्कु इलळ्–शक्ति नहीं रखती थी; मान्तुवाळ्–क्षोभ करती। २६४

समुद्र-गर्जन उसे सालने लगा। उसने सोचा कि अपने हाथों से गिरिराशियों को उखाड़कर समुद्र में डालूँ और उसे पाट दूँ। पर आकाश में निरन्तर (चलते) रहनेवाले चन्द्र की किरणों के जाल से बच निकलने की शक्ति उसमें नहीं थी। इसलिए विक्षुब्ध हो जाती। २९४

❀ पूवॅ लाम्बॉडि याहविप् पूमियिल्, कावॅ लामॉडिप् पॆन्नॆनक् कान्दुवाळ्
शेव लोडुऱै शॅन्दलै यन्ऱिलिन्, नावि नाल्वलि यॆञ्ज नडुङ्गुवाळ् 295

पू ॲलाम् पॉटियाक–सारे पुष्पों को चूर्ण बनाते हुए; इ पूमियिल्–इस पृथ्वी पर रहनेवाले; का ॲलाम्–उद्यान सब; ऑटिप्पेन् ॲन्न–तोड़-फोड़ दूँगी, ऐसा; कानुतुवाळ्–कोप करती; चेवलोटु उऱै–नर (क्रौंच) के साथ रहनेवाली; चॅम् तलै अन्ऱिलिन्–लाल सिर की मादा क्रौंच पक्षी के; नाविन्नाल्–(मिलन-सुख-सूचक) बोली से; वलि ॲञ्च–अपनी शक्ति खोकर; नटुङ्कुवाळ्–काँप उठती। २९५

कभी वह सोचती कि सारे उद्यानों को तहस-नहस कर डालूँ ताकि सभी पुष्प चूर्ण-चूर्ण हो जायँ। पर अपने नर के साथ रहती हुई मादा क्रौंच अपने सुख-संभोग से उत्पन्न आनन्द का नाद करती तो उससे इसका बल छूट जाता और वह काँप उठती। २९५

अणॆवि ऱिङ्गळै नुङ्ग वराविन्नैक्, कॉणर्वॆ न्नोडि यॆन्नक्कॉदित् तुन्नुवाळ्
पणैयिन् मॆन्मुलै मेऱ्पनि मारुदम्, पुणर वारुयिर् वॆन्दु पुळुङ्गुमाल् 296

अणॆवु इल् तिङ्कळै–प्रतिकूल चाँद को; नुङ्क–निगलने के लिए; अराविन्नै–(राहु या केतु) सर्प को; ओटि कॉणर्वॆन्–दौड़ जाकर लाऊँगा; ॲन्न–ऐसा; कॉतित्तु–खौल उठती; उन्नुवाळ्–सोचती; पणैयिन् मॆन् मुलै मेल्–पीन और नरम स्तनों पर; पनि मारुतम् पुणर–शीतल पवन के लगने से; आरुयिर् वॆन्तु–मर्मतप्त होकर; पुळुङ्कुम्–ताप से पीड़ित होती। २९६

वह कभी संकल्प करती कि यह चन्द्र मेरे अनुकूल नही है। उसे (राहु या केतु) सर्प द्वारा निगलवा लूँगी। बड़े क्रोध के साथ उसको पकड़ लाने की बात सोचती। पर उसके पीन और कोमल स्तनों पर शीतल पवन आकर लगता और उत्तेजित कामवासना से तप्त होकर थक जाती। उसके प्राण जर्जर हो जाते और वह वेदना का अनुभव करती। २९६

❀ कैह ळाऱ्ऱन्न कदिरिळङ् गॊङ्गै मेल्, ऐय तण्वनि यळ्ळिन ळप्पिन्नाळ्
मॊय्हॊ डोयिडै वॆन्दु मुरुङ्गिय, वॆय्य पाऱैयिल् वॆण्णॆय् निहर्क्कुमाल् 297

तन कतिर् इळम् कॊङ्कै मेल्–अपने छटामय तरुण उरोजों पर; कैकळाल्–अपने हाथों से; ऐय तण् पनि–छोटे शीतल हिमखण्डों को; अळ्ळितळ् अप्पिनाळ्–उठाकर (शूर्पणखा ने) लगा लिया; ती इटै–अग्नि में; वॆन्तु मुरुङ्किय–तपकर गरम बनी; वॆय्य पाऱैयिल्–उष्ण चट्टान पर (रखे); वॆण्णॆय् निकर्क्कुम्–मक्खन के समान (वाष्प) बना। २९७

उसने अपना ज्वर शान्त करने की इच्छा से शीतल हिमकणों को लेकर अपने मनोरम तरुण स्तनों पर डाल लिया। पर वे इस तरह अदृश्य हो गये, जैसे आग से तप्त गरम चट्टान पर डाला गया मक्खन पिघलकर लुप्त हो जाता है। २९७

❀ अळिक्कु मॅय्युयिर् कान्दळ् लज्जिन्नळ्
कुळिक्कु नीरुङ् गौदित्तॅळक् कूशुमाल्
विळिक्कुम् वेलैये वॅङ्गण तङ्गत्तै
औळिक्क लामिड मामॅन्न वुन्नुमाल् 298

अळिक्कुम्–संरक्षणीय; मॅय्–शरीर को और; उयिर्–प्राणों को; कान्तु–जलानेवाली; अळल्–कामाग्नि से; अञ्चिन्नळ्–डरकर; कुळिक्क–नहायी; नीरुम्–वह जल भी; कॉतित्तु ॲळ–खौल उठा; कूचुम्–नहाने से सकुचाती; विळिक्कुम् वेलैयै–निनादी समुद्र को; वॅम् कण् अतङ्कतै–भयंकर मन्मथ को; औळिक्कल् आम् इटम्–छिपाये रखनेवाला स्थान; आम् अन उन्नुवाळ्–होगा, ऐसा सोचती। २६८

वह अपने शरीर और प्राणों की रक्षा करना चाहती थी। पर उसकी कामेच्छा उनका शत्रु बनी थी। उस आग को शान्त करने की इच्छा से वह स्नान करने चली तो जल ही गरम हो गया। तो बेचारी नहाने से कतराती। वह गरजनेवाले सागर को कठोरमन मन्मथ का छिपकर रहने का स्थान मानती। २९८

❀ वन्दु कार्मळै तोन्ऱिनु मामणिक्, कन्दु काणिनुङ् गैत्तलङ् गूप्पुमाल्
इन्दु कान्दत्ति न्नीर नॅडुङ्गलुम्, वॅन्दु कान्द वेदुम्बुरु मेनियाळ् 299

इन्तु कान्ततूतिन्–चन्द्रकान्त के; ईर नॅटुम् कलुम्–शीतल और विशाल पत्थर को भी; वॅन्तु कान्त–जलाकर भस्म करे, ऐसे; वॅतुम्पु उरु मेनियाळ्–तापशील शरीर वाली; कार् मळै वन्तु तोन्ऱिनुम्–काला मेघ आकर दिखे तो भी; मा मणि कन्तु काणिनुम्–श्रेष्ठ रत्नस्तम्भ को देखे, तब भी; कै तलम् कूप्पुम्–करतल जोड़ती। २६६

उसका शरीर इतना जलता था कि चन्द्रकान्त का बड़ा पत्थर भी उससे लगे तो जलकर राख बन जाय! ऐसी कामाग्नि से दग्ध शरीर वाली वह काले मेघ को या रत्न-स्तम्भ को देखती तो हाथ जोड़कर नमस्कार करती (श्रीराम के रंग-साम्य के कारण)। २९९

वाम मामदि युम्बन्नि वाडैयुम्, काम नुन्दनैक् कण्डुण रावहै
नाम वाळॅयिड्ऱोरुहद नाहमायच्, चेम माल्वरै यिन्मुळैच् चेरुमाल् 300

वाम मा मतियुम्–सुन्दर पूर्णचन्द्र और; पन्नि वाटैयुम्–शीतल पवन; कामनुम्–कामदेव; तन्नै कण्टु उणरा वकै–अपने को देख न पाये, इस तरह; नाम वाळ् ॲयिऱु ऒरु कत नाकम् आय्–भयंकर दाँत वाला कुपित सर्प बनकर; चेम माल् वरैयिन्–सुरक्षित एक बड़े पर्वत की; मुळै–गुफा में; चेरुम्–जा पहुँचती। ३००

वह सुन्दर पूर्ण-चन्द्र, शीतल (उदीची) हवा और कामदेव से डरती थी। वह चाहती थी कि वे उसे देख न,, ले। इसलिए वह एक भयंकर तीक्ष्ण दाँतों का सर्प बनकर सुरक्षित एक पर्वत की गुफा में जाकर छिप

गयी। क्यों ? नाग चन्द्र को ग्रसनेवाला है और हवा को खानेवाला। वह शिवजी का अलंकार था और मन्मथ शिवजी से डरता था। इसलिए शूर्पणखा सर्प बनकर छिप गयी। ३००

अऩ्ऩ कालै यऴऩ्मिहुत् तेऱ्वुम्, मुऩ्ऩ मेऩिय ळाय्मुलै वॆऩ्दुह
इऩ्ऩ वाऱॆय्वॆ ऩॆऩ्ऱऱि यादिळम्, पॊऩ्ऩिऩ् वार्दळि रिऱ्पुरण् डाळरो 301

अऩ्ऩ कालै–तव; अऴल् मिकुत्तु एऱ्वुम्–कामाग्नि चढ़ी; मुऩ्ऩ मेतियळाय्–पहले का रूप लेकर; मुलै वॆऩ्तु उक–स्तनों से अंगारे निकालते हुए; इऩ्ऩवा चॆय्वॆऩ्–किस प्रकार क्या करूँ; ॲऩ्ऱु अऱियातु–यह न जानकर; पॊऩ्ऩिऩ् वार् इळम् तळिरिल्–स्वर्ण के रंग वाले पल्लवों पर; पुरण्टाळ्–लेटकर लोटी। ३०१

पर वहाँ भी गरमी बढ़ी तो उसने अपना सर्प-रूप छोड़ दिया। अपना निजी रूप लिया। उसके स्तन इतने तपने लगे कि उनसे आग-सी निकली। क्या करे, कैसे करे ? किंकर्तव्यमूढ़ होकर वह स्वर्णवर्ण पल्लवों पर गिरकर लोटने लगी। ३०१

❀ वीरऩ् मेऩि वॆळिप्पड वॆय्दवऩ्, कार्हॊण् मेऩियैक् कण्डऩ ळामॆऩ्ऩ
चोरुम् वॆळ्हुन् दुणुक्कॆनु मव्वुरुप्, पेरुङ् गालप् पिणियिऱै पेर्हलाळ् 302

वीरऩ् मेऩि वॆळिप्पट–तव वीर श्रीराम का (भ्रान्ति का) रूप उसे दिखाई दिया; वॆय्तु–चाव के साथ; अवऩ् कार्कॊळ् मेऩियै–उनके मेघ-सम शरीर को; कण्टऩळ् आम् ॲऩ–सचमुच देख लिया हो जैसे; चोरुम्–शिथिल हो जाती; वॆळ्कुम्–लजाती; तुणक्कु ॲऩुम्–दलक जाती; अ उरु–वह (कल्पित) रूप; पेरुम् काल्–जब अदृश्य हो जाता, तब; अ पिणि–उस काम-रोग से; इऱै पेर्कलाळ्–जरा भी छूट नहीं सकती थी। ३०२

तब उसे श्रीराम का भ्रान्ति का रूप शून्य में दिखाई दिया। उसके मन में प्रेम उमड़ आया। मेघश्याम को प्रत्यक्ष देखती हो, ऐसा भ्रम हो गया। वह शिथिल हुई, लाज से भरी; फिर सिहर उठी। वह रूप ओझल हो गया तो उसने अनुभव किया कि उसका रोग ज्यों का त्यों है और वह उससे थोड़ा भी छूट नहीं पायी है। ३०२

❀ आहक् कॊङ्गैयि ऩैयऩॆऩ् ऱञ्जऩ, मेहत् तैत्तऴु वुम्मवै वॆन्दऩ
पोहक् कण्डु पुलम्बुमप् पुऩ्मैयाळ्, मोहत् तुक्कोर् मुडिवुमुण् डाङ्गॊलो 303

अञ्चऩ मेकत्तै–कजरारे (काले) मेघ को; ऐयऩ् ॲऩ्ऱु–प्रभु श्रीराम समझकर; आक कॊङ्कैयिऩ्–वक्ष के स्तनों के साथ; तऴुवुम्–लगा लेती; अवै वॆन्तऩ–वे जलकर; पोक–मिट जाते; कण्टु–देखकर; पुलम्पुम्–विलाप करती; अ पुऩ्मैयाळ् मोकत्तिऱ्कु–उस ओछी स्त्री के काम का; ओर् मुटिवु उण्टाम् कॊलो–अन्त भी है क्या। ३०३

वह काले मेघों को प्रभु, कान्त श्रीराम समझकर अपने वक्षस्थल से स्तनों पर लगाकर कसकर पकड़ती। पर काले मेघ गरमी के कारण

बाष्प बनकर मिट जाते। तब वह मुख खोलकर विलाप करती, नीच शूर्पणखा के मोह का कोई अन्त है ? । ३०३

❀ ऊऴि वॅङ्गत्त लुऱ्ऱत्त ळॊत्तुमव्, वेऴै यावि यिऴन्दिलळ् शॅङ्गैयिन्
आऴि यानै यडैन्दवळ् पित्तरुम्, वाऴला मॅनु माशै मरुन्दिते 304

ऊऴि वॅम् कत्तल् उऱ्ऱत्तळ् ऑत्तुम्–युगान्त की अग्नि में पड़ गई हो ऐसा हो गई, तो भी; चॅम् कैयिन्–लाल (श्रेष्ठ) हाथों वाले; आऴियान् अटैन्तु–(आज्ञा) चक्रधारी श्रीराम को प्राप्त करके; अवळ्–वह; पित्तरुम् वाऴलाम्–फिर भी जी सकेगी; ॲतुम् आचै मरुन्तित्–ऐसी आशा रूपी दवा के कारण; एऴै–उस अबोध ने; आवि इऴन्तिलळ्–प्राण नहीं त्यागे। ३०४

उस काममोह के कारण उसकी स्थिति युगान्त के अनल-प्रवाह में पड़ी हुई सी हो गयी। तो भी आशा बँधी थी कि लाल (मनोरम) हाथों वाले श्रीराम से मिलन होगा और वह मिलकर जिएगी। वही आशा दवा बनी और उसी से उसके प्राण बचे रहे। ३०४

वञ्ज नैक्कॊडु मायै वळर्क्कुमॅत्, नॅञ्जु पुक्कॅत्त दावत्तै नीक्कॅनुम्
अञ्ज नक्किरि येयरु ळायॅनुम्, नञ्जु नक्कित्तर् पोल नडुङ्गुवाळ् 305

नञ्चु नक्कित्तर् पोल–जिसने विष चाट लिया हो, उसके समान; नटुङ्कुवाळ्–काँपती (हुई); अञ्चत्त किरिये–अंजनगिरि (-सम राम); अरुळाय् ॲतुम्–कृपा करो, कहती; वञ्चतै–वंचना और; कॊटु मायै वळर्क्कुम्–क्रूर माया को पालनेवाले; ॲत् नॅञ्चु पुक्कु–मेरे मन में प्रवेश करके; ॲत्तु आवत्तै नीक्कु–मेरी विपदा दूर करो; ॲतुम्–कहती। ३०५

विष को जो चाट चुका हो, उसके समान उसका शरीर काँपने लगा। वह मन में श्रीराम से प्रार्थना करने लगी कि हे अंजनपर्वत ! मुझ पर कृपा करो। वह यह भी कहती कि मेरा मन कपटी है और माया को पालने-वाला है। उसमें तुम घुस जाओ और मुझे आफ़त से बचाओ। ३०५

❀ कावि योहय लोवॅनुङ् गण्णिणैत्, तेवि योतिरु मङ्गैयिर् चॅव्वियाळ्
पावि येत्नैयुम् पार्क्कुङ्गॊ लोवॅनुम्, आवि योयिनु माशैयि त्तोय्विलाळ् 306

आवि ओयित्तुम्–प्राण छूट जायँ, तो भी; आचैयित् ओय्वु इलाळ्–जिसका राग नहीं थमता, वह; कावियो–नीला पुष्प है; कयलो–या 'कयल' मछली है; ॲतुम्–ऐसा कहलानेवाली; कण् इणै–आँखों का जोड़ा; तेवियो–जिसका है वह (उसकी) देवी तो; तिरुमङ्कैयिल् चॅव्वियाळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी से भी सुन्दर है; पावियेत्नैयुम्–मुझ पापिनी पर; पार्क्कुम् कॊलो–दृष्टि लगाएगा क्या; ॲतुम्–(यह नैराश्य वचन) कहती। ३०६

चाहे उसके प्राण ही क्यों न छोड़ जायँ, वह तो श्रीराम पर काम को छोड़नेवाली नहीं थी। उसे सीतादेवी का स्मरण आया। 'नीलोत्पल

है या कयल नाम की मछली ? ऐसा सन्देह उत्पन्न करनेवाली आँखों के जोड़े से युक्त उसकी पत्नी श्रीलक्ष्मीदेवी से भी वढ़कर सुन्दरी है। वह क्या मेरी ओर आँख उठाकर भी देखेगा ?' ऐसा प्रश्न करके वह दुखी हुई। ३०६

❀ आऩ्ऱ काद लः(ह्)दुऱ वॆय्दुळि, मूऩ्ऱु लोहमु मूडु मरक्कराम्
एऩ्ऱ कारिरु णीक्क विराहवऩ्, तोऩ्ऱि ऩाऩॆऩ वॆय्यवऩ् ऱोऩ्ऱिऩाऩ् 307

आऩ्ऱ कातल् अ.ः.तु–गहरे काम-रोग से; उऱ ऎय्तुळि–खूब पीड़ित होकर जब रही; मूऩ्ऱु लोकमुम् मूटुम्–(स्वर्ग-मध्य-पाताल) तीनों लोकों को आच्छादित कर जो रहे; अरक्कर् आम्–उन राक्षस रूपी; एऩ्ऱ कार् इरुळ्–अन्धकार को, जो सामने आया था; नीक्क–दूर करने के लिए; इराकवऩ् तोऩ्ऱिऩाऩ् ऎऩ–श्रीराघव आये, ऐसा; वॆय्यवऩ् तोऩ्ऱिऩाऩ्–उष्णकिरण (सूर्य) उदित हुए। ३०७

रात भर वह इसी तरह काम के वढ़ने से उद्विग्न रही। तव सूर्य अन्धकार को दूर करते हुए उदित हुए, जैसे श्रीराघव तीनों लोकों पर छाये रहे राक्षस रूपी अन्धकार को मिटाने के लिए अवतार ले आये। ३०७

❀ विडियल् काण्डलु माण्डुत्तऩ् ऩुयिर्हण्ड वॆय्याळ्
पडियि लाण्मरुङ् गुळ्ळॆऩि ऩॆऩ्ऩैयवऩ् बाराऩ्
कडिदि ऩोडिऩ्ऩै ऩॆडुत्तोल्लॆक् करन्दवळ् कादल्
वडिवि ऩाऩुडऩ् वाळ्वदे मदियॆऩ मदिया 308

विटियल् काण्टलुम्–सवेरा होते ही; आण्टु तऩ् उयिर् कण्ट–तब अपनी प्राणता को प्राप्त कर; वॆय्याळ्–नृशंस निशाचरी; पटि इलाळ्–उपमा-हीन देवी; मरुङ्कु उळळ् ऎऩिल्–पास रही तो; अवऩ् ऎऩ्ऩै पाराऩ्–वह मेरी ओर ध्यान नहीं देगा; कटितिऩ् ओटिऩ्ऩ्–सवेग दौड़कर; ऎटुत्तु–उसको उठाकर; ऒल्लै करन्तु–जल्दी छिपाये रखकर; कातल् अवळ् वटिविल्–उसकी प्रिया के रूप में; नाऩ् उटऩ् वाळ्वते–मेरा उसके साथ रहना ही; मति ऎऩ–बुद्धिमानी है, ऐसा; मतिया–निश्चय करके। ३०८

सवेरा हुआ और शूर्पणखा ने देखा कि उसके प्राण वचे है। उसने सोचा कि जव तक वह स्त्री, जो अनुपम सुन्दरी है, उसके साथ रहेगी तब तक वह मेरी ओर दृष्टि देगा ही नहीं। इसलिए शीघ्र भागकर जाऊँगी और उसे उठा ले जाकर कहीं छिपा दूँगी। फिर राम की प्रिया उसका रूप लेकर उसके साथ रहूँगी। ऐसा जीना ही बुद्धिमत्ता है। ऐसा संकल्प करके ; । ३०८

❀ वन्दु ऩोक्किऩळ् वळ्ळल्पो यॊरुमणित् तडत्तिल्
शन्दि ऩोक्किऩ ऩिरुन्ददु कण्डऩ डम्बि

इनृदु नोक्किय नुदलियैक् कात्तय लिरुण्ड
कन्द नोक्किय शोलैयि लिरुन्दद्दु काणाळ् 309

वन्तु नोक्किनळ्–आकर देखा; वळ्ळल्–प्रभु श्रीराम; पोय्–जाकर; ओरु मणि तटत्तिल्–एक सुन्दर घाट पर; चन्ति नोक्किनन्–संध्यावन्दन में लगे; इरुन्ततु–रहे; कण्टनळ्–देखा; तम्पि–कनिष्ठ (लक्ष्मण); इनृतु नोक्किय नुतलियै–चन्द्र-सम भाल वाली सीताजी का; कात्तु–रक्षण करते हुए; अयल्–पास; कन्तम् नोक्किय–सुवास निकालनेवाले; इरुण्ट चोलैयिल्–घने उपवन में; इरुन्ततु–रहे, वह; काणाळ्–नहीं देखा। ३०९

वह आयी। आश्रम के पास आकर उसने देखा कि प्रभु वहाँ से दूर मनोहर घाट पर संध्यावन्दन में दत्तचित्त है। उसका भाई इन्दु-सम ललाट वाली सीता के सरक्षण में ही पास में सुबास देनेवाले उस आश्रम के एक छाया के कारण अँधेरे स्थान में विराजे थे। पर शूर्पणखा ने लक्ष्मण को नहीं देखा। ३०९

❀ तनियि रुन्दनळ् शमैन्ददॆन् करुत्तॆनत् ताळ्वुऱ्
ऱिनियि रुन्दॆनक् कॆण्णुव दिल्लॆन वॆण्णात्
तुनियि रुन्दवन् मनत्तिन डोहैयैत् तॊडर्न्दाळ्
कनियि रुम्बॊळिल् कात्तय लिरुन्दवन् कण्डान् 310

तनि इरुन्तनळ्–एकाकिनी रहती है; ऍन् करुत्तु–मेरा विचार; चमैन्ततु–चरितार्थ हुआ; ऍन–ऐसा और; इनि ताळ्वु उऱ्ऱु इरुन्तु–अब विलम्ब करते रहने से; ऍनक्कु ऍण्णुवतु इल्–मुझे सोचने के लिए कुछ नहीं है; ऍन–ऐसा; ऍण्णा–निश्चय करके; तुनि इरुन्त–घृणा से भरे; वन् मनत्तिनळ्–कठोर मन वाली; तोकैयै तॊटर्न्ताळ्–मयूराभा सीताजी की ओर गई; कनि–फलों से युक्त; इरुम् पॊळिल् कात्तु–विशाल उपवन में पहरा जो देते; अयल् इरुन्तवन्–पास रहे लक्ष्मण ने; कण्टान्–देखा। ३१०

शूर्पणखा को आश्वासन हो गया। 'सीता अकेली है! मेरा संकल्प पूर्ण हो गया। अब विलम्ब करके सोचते रहने के लिए कुछ नही है।' ऐसा घृणा से भरे कठोर मन वाली ने निश्चय किया। वह मयूराभा सीता की तरफ़ सवेग जाने लगी। लक्ष्मण ने, जो उस फलदार तरुओं से भरे विशाल आश्रम में पहरा देते हुए वैठे रहे, उसको देख लिया। ३१०

❀ निल्ल डीयॆनक् कडुहिनन् पॆण्णॆन निनैन्दान्
विल्लॆ डादवळ् वीङ्गॊरि यामॆन विरिन्द
शिल्ल लोदियैच् चिक्कुऱच् चॆङ्गैयाऱ् पऱ्ऱि
ऑल्लै यीर्त्तुदैत् तॊळिहिलऱ् शुऱ्ऱुवा ळुरुवि 311

अटी निल् ऍन–री खड़ी रह कहकर; कटुकिनन्–तेज चाल आये; पॆण् ऍन निनैन्तान्–स्त्री है, समझे; विल् ऍटातु–धनुष न लेकर; अवळ्–उस (शूर्पणखा) के;

वीङ्कु ॲरि आम् ॲन्न–खूब अधिक जलती आग के समान; विरिन्त–विस्तृत रूप से सिर के चारों ओर बिखरे रहनेवाले; चिल्लल् ओतियै–कम लम्बे केश-जाल को; चॅङ्कैयाल्–लाल हाथ से; चिक्कु उऱ पऱ्ऱि–हाथ को लपेट ले, ऐसा पकड़कर; ऑल्लै–तेजी से; ईर्त्तु–खींचकर; उतैत्तु–उसके लात मारकर; ऑळि किळर्–कान्तिमय; चुऱ्ऱुवाळ् उरुवि–कटार निकालकर। ३११

लक्ष्मण तुरन्त, 'री खड़ी रह।' —डाँटते हुए उठ आये। वह स्त्री थी, इसलिए उसने धनुष नही लिया। उसने आकर जलती आग के समान उसके सिर पर बिखरे रहे केश को अपने हाथ से मरोड़कर पकड़ा, उसको झटका देकर खीचा और लात मारी। फिर उन्होंने अपनी उज्ज्वल कटार निकालकर; । ३११

❀ ऊक्कित् ताङ्गिविण् पडर्वॅन्नॅन् रुरुत्तॅळु वाळै
नूक्कि नॊय्दिनिल् वॅय्दिळै येलॅन्न नुवला
मूक्कुङ् गादुम्वॅम् मुरण्मुलैक् कण्गळु मुऱैयाल्
पोक्किप् पोक्किय शिनत्तॊडुम् बुरिहुळल् विट्टान् 312

ऊक्कि–प्रयत्न करके; ताङ्कि–(इसको) उठाते हुए; विण् पटर्वॅन्–आकाश में उड़ जाऊँगी; ॲन्रु–ऐसा; उरुत्तु ॲळुवाळै–कोप के साथ उछलनेवाली को; नॊय्तिनिल् नूक्कि–आसानी से नीचे पछाड़कर; वॅय्तु इळैयेल् ॲन्न–ऐसा बुरा काम मत करो, यह; नुवला–कहकर; मूक्कुम् कातुम्–नाक और कानों को; वॅम् मुरण् मुलै–भयंकर कुरूपी स्तनों के; कण्कळुम्–चूचुकों को; मुऱैयाल् पोक्कि–एक के बाद एक क्रम से काटकर; पोक्किय चिनत्तॊटुम्–शान्त हुए कोप के साथ; पुरि कुळल् विट्टान्–ऐंठा केश छोड़ दिया। २१२

उस शूर्पणखा को, जो उन्हें भी सयत्न उठाते हुए आकाश में उड़ जाने का विचार कर रही थी, नीचे पटक दिया। फिर 'ऐसे बुरे कार्य मत करो' कहते हुए उन्होंने उसकी नाक, कान और विकृत और भयंकर स्तनों के चूचुकों को क्रम से काट दिया। (यह चूचुक काटने की बात 'भागवत' में ही आयी है।) तभी जाकर उनका क्रोध शान्त हुआ और उन्होंने अपने हाथ में ऐंठे रहे उसके केश को छोड़ा। ३१२

अक्क णत्तवळ् वाय्तिऱन् दरऱ्ऱिय वमलै
तिक्क नैत्तिनुञ् जॅन्ऱ्ऱु तेवर्तञ् जॅवियुम्
पुक्क दुऱ्ऱु पुहल्वदॅन् मूक्कॅनुम् बुळैयू
डुक्क शोरियि नीरमुड् रुऱुहिय दुलहम् 313

अ कणत्तु–उस समय; अवळ्–शूर्पणखा ने; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱिय–जो विलाप किया, वह; अमलै–शोर; तिक्कु अनैत्तिनुम् चॅन्ऱ्ऱु–सारी दिशाओं में गया; तेवर् तम् चॅवियुम्–देवों के कानों में भी; पुक्कतु–घुसा; उऱ्ऱु पुकल्वतु ॲन्–वहाँ जो हुआ उसका क्या कहा जाय; मूक्कु ॲनुम्–नाक रूपी; पुळै

ऊट्टु–विवरों द्वारा; उक्क–वहनेवाले; चोरियिन्–रक्त में; ईरम् उऱ्‌‌उ–भीगकर; उलकम् मुळुवतुम् उरुकियतु–सारा लोक गल गया। ३१३

तब शूर्पणखा अपना मुख खोलकर उच्च स्वर में रोने-चिल्लाने लगी। वह शोर सभी दिशाओं में व्यापा और देवों के कानों में भी जाकर भर गया। जो हुआ उसका क्या कहा जाय? नासिका-विवर से जो रक्त बहा, वह इतना अधिक था कि विशाल भूमि ही गल गयी। ३१३

कॉलैतु मित्तुयर् कॉडुङ्गदिर् वाळिन्नक् कॉडियाळ
मुलैतु मित्तुयर् मूक्किनै नीक्किय मुऱ्‌मै
मलैतु मित्तॅन्न विरावणन् मणियुडै महुडत्
तलैतु मित्तऱ्‌कु नाट्कॉण्ड दॉत्तदोर् तन्मै 314

कॉलै तुमित्तु–मारना रोककर; उयर् कतिर् कॉटुम् वाळिन्–अधिक चमकदार भयंकर कटार द्वारा; अ कॉटियाळ्–उस अत्याचारिणी का; मुलै तुमित्तु–स्तनों (के चूचुकों) को काटकर; उयर् मूक्कित्तै नीक्किय–उठी हुई नाक को काटने का; मुऱ्‌मै–कार्य; मलै तुमित्तु अॅन्न–पर्वत को काटने के समान; इरावणन् मणि उटै मकुटम्–रावण के मणिमण्डित किरीटधारी; तलै तुमित्तऱ्‌कु–सिरों को काट लेने के लिए; नाळ् कॉण्टतोर् तन्मै–'मुहूर्त' (शुभारम्भ) करने के; ऑत्ततु–समान रहा। ३१४

लक्ष्मण ने शूर्पणखा को नहीं मारा। पर उसके स्तनों के अग्रभाग और नाक के उठे हुए भाग को काट दिया। वह कार्य पीछे होनेवाले रावण-वध का शुभ आरम्भ-सा था। पर्वतशिखरों के समान रावण के मणिमय किरीटधारी सिर काटकर अलग किये जायँगे। उसका आरम्भ करने का मुहूर्त अब मनाया गया। ३१४

अदिर मानिलत् तडिपदैत् तरऱ्‌ऱिय वरक्कि
कदिर्हॉळ् कालवेऱ् करन्मुद निरुदर्वॅङ् गदप्पोर्
ॲदिरि लादव रिऱुदियि निमित्तमा यॅळुन्दाण्
डुदिर मारिपॅय् कार्निऱ मेहमॉत् तुयर्न्दाळ् 315

अतिर–थर्राते हुए; मा निलत्तु–विशाल भूमि पर; अटि पतैत्तु–कोप और दुख के कारण पैर पटककर; अरऱ्‌ऱिय–जो दहाड़ मारकर रोने लगी, वह; अरक्कि–राक्षसी; काल–यम के समान; कतिर् कॉळ् वेल्–(और) चमकदार शक्ति-धारी; करन् मुतल्–खर आदि; वॅम् कत पोर्–भयंकर और घमासान युद्ध में; ॲतिर् इलातवर्–जो सानी नहीं रखते थे, उन; निरुतर्–राक्षसों के; इऱुतियिन् निमित्तमाय्–अन्त कराने के निमित्त; ॲळुन्तु–उठी और; आण्टु–वहाँ; उतिर मारि पॅय्–रक्तवर्षा करनेवाले; कार् निऱ मेकम् ऑत्तु–काले मेघ के समान; उयर्न्ताळ्–सिर ऊँचा कर खड़ी हुई। ३१५

शूर्पणखा वेदना से थर्रा उठी। भूमि पर पैर पटकने लगी। वह

दहाड़ मारकर रोयी। फिर वह सिर तानकर खड़ी हुई, तब वह रक्त बहानेवाले काले मेघ के समान लगी। कठोर युद्ध में निर्द्वन्द्व और यम के समान घातक और चमकदार भालों वाले खर आदि राक्षसों के नाश के लिए तत्पर हुई हो, ऐसा वह निशाचरी जोश के साथ उठी। ३१५

उयरुम् विण्णिडै मण्णिडै विळुङ्गिडन् दुळैक्कुम्
अयरुङ् गैहुलैत् तलमरु मारुयिर् शोरुम्
पॅयरुम् पॅण्बिरन् दियात्बट्ट पळियॅनप् पिदरुम्
तुयरु मञ्जिमुन् डौडर्न्दिलात् तॉल्हुडिप् पिऱन्दाळ् 316

तुयरुम्–दुख नामक कुछ; अञ्चि–डर से; मुन् तॉटर्न्तिला–जिसके पास पहले नहीं गया था; तॉल् कुटि पिऱन्ताळ्–उस प्राचीन (राक्षस-) कुल में जो पैदा हुई थी, वह; विण् इटै उयरुम्–आकाश में उठती; मण् इटै विळुम्–भूमि पर गिरती; किटन्तु उळैक्कुम्–पड़ी चिल्लाती; अयरुम्–थकती; कै कुलैत्तु–हाथ मलकर; अलमरुम्–उद्विग्न होती; आर् उयिर् चोरुम्–क्षीणप्राण हो जाती; पॅयरुम्–सुध पाकर चलने लगती; पॅण् पिऱन्त–स्त्री पैदा होकर; यान्–मुझे; पट्ट पळि–मिली निन्दा है; ऍन–ऐसा; पितऱुम्–बकती। ३१६

वह शूर्पणखा उस राक्षसकुल की थी, जिसके पास दुख भी डर के कारण नहीं आया था। अब उसे अपार दुख मिल गया। अत्यधिक वेदना का अनुभव करने लगी। वह ऊपर उठती पर भूमि पर गिर जाती। भूमि पर पड़ी रहकर चिल्लाती। थक जाती। हाथ मलकर उद्विग्न होती। प्राण-हीन-सी मूर्च्छित हो जाती। कुछ देर बाद सुध पाती और विलापती कि स्त्री पैदा होकर कैसी निन्द्य स्थिति को प्राप्त हो गयी? । ३१६

❀ ऑऱ्ऱुम् मूक्किनै युलैयुऱ तीयॅन वुयिर्क्कुम्
ऍऱ्ऱुङ् . गैयिनै निलत्तिनि लिणैत्तडङ् गॉङ्गै
पऱ्ऱिप् पार्क्कुमॅय् वेर्क्कुन्दन् बरुवरन् मयक्काल्
शुऱ्ऱु मोडुम्बोय्च् चोरिनीर् शॉरिदरच् चोरुम् 317

मूक्किनै–नाक को; ऑऱ्ऱुम्–पोंछती; उलै उऱु ती ऍन–भट्ठी की आग के समान; उयिर्क्कुम्–गरम साँस छोड़ती; कैयिनै–हाथों को; निलत्तिनिल्–भूमि पर; ऍऱ्ऱुम्–मारती; इणै तट कॉङ्कै–जोड़े के बड़े स्तनों को; पऱ्ऱि पार्क्कुम्–हाथों में ले देखती; मेय् वेर्क्कुम्–स्वेद-पूर्ण शरीर हो जाती; तन् परुवरल् मयक्काल्–अपने दुख से उत्पन्न भ्रम के कारण; चुऱ्ऱुम् ओटुम्–चारों ओर दौड़ती; पोय्–जाकर; चोरि नीर्–रक्त को; चॉरि तर–बहाती हुई; चोरुम्–शिथिल पड़ जाती। ३१७

वह अपना दामन लेकर नाक को पोंछती। ऐसा गरम निश्वास छोड़ती, मानो भट्ठी से आग की ज्वाला निकल रही हो। हाथों से भूमि पर मारती। अपने दोनों स्तनों को हाथ से पकड़कर उन पर दृष्टि

दौड़ाती। उसका शरीर पसीने से भर जाता। असह्य वेदना के कारण उसका चित्त भ्रमित हो जाता और वह इधर चारों ओर घूमती। पर रक्त वहाते हुए निर्बल हो गिर जाती। ३१७

ऊऱ्ऱु मिक्कनी ररुवियि नीऴ्हिय कुरुदिच्
चेऱ्ऱु वॆळ्ळत्तुट् टिरिबव डेवरु मिरियक्
कूऱ्ऱु मुट्कुन्दन् कुलत्तिनोर् पॆयरॆलाङ् गूऱि
आऱ्ऱु हिऱ्किलळ् पऱ्पल पन्निनिन् ऱळैत्ताळ् 318

ऊऱ्ऱु मिक्क–सोते से अधिक वहनेवाले; नीर् अरुवियिन्–जल की पर्वत-सरिता के समान; ऒऴुकिय–वहनेवाले; कुरुति चेरु–रक्त के पंकिल; वॆळ्ळत्तु उळ्–प्रवाह के अन्दर; तिरिपवळ्–जो घूमती थी, वह; आऱ्ऱुकिऱ्ऱिलळ्–सह नहीं सकी और; तेवरुम् इरिय–देव भाग जाएँ, ऐसा; कूऱ्ऱुम् उट्कुम्–यम को भी भयभीत करते हुए; तन् कुलत्तित्तोर् पॆयर् ऎलाम्–अपने कुल के सभी के नाम; कूऱि–लेते हुए; पल् पल–अनेक प्रलाप; पन्नि निन्ऱु–करते हुए खड़ी रहकर; अळैत्ताळ्–बुलाया (शूर्पणखा ने)। ३१८

सोते से वहनेवाले जल की पर्वतसरिता के समान उसके कटे अंगों से पंकिल रक्त वह रहा था। वह उसके साथ वेचैनी से संचार करती थी। दुख उसे असह्य था। तव वह अपने कुल के राक्षसों के नाम लेकर विलापती हुई पुकार मचाने लगी। उसे सुनकर देव भाग गये और यम भी भयभीत हो गया। ३१८

निलैयॆडुत्तु नॆडुनिलत्तु नीयिरुक्कत् तावदर्हळ्
शिलैयॆडुत्तुत् तिरियुमिदु शिऱ्ऱिदन्ऱो देवरॆदिर्
तलैयॆडुत्तु विऴियामै शमैप्पदे तळलॆडुत्तान्
मलैयॆडुत्त तनिमलैये यिवैहाण वारायो 319

तळल् ऎट्टुत्तान्–अग्निज्वाला को हाथ में रखनेवाले (शिवजी) के; मलै–कैलासपर्वत को; ऎट्टुत्त–जिसने उखाड़ लिया, वह; तत्ति मलैये–अनुपम पर्वत-सम (भाई रावण); नी–तुम; नॆट्टु निलत्तु–विशाल भूमि पर; निलै ऎट्टुत्तु इरुक्क–स्थायी यश के साथ रहते हो, तभी; तापतर्कळ्–तपस्वी; चिलै ऎट्टुत्तु तिरियुम् इतु–धनुष लेकर घूमते हैं, यह; चिऱ्ऱितु अन्ऱो–तुम्हारे गौरव में कमी नहीं है क्या; तेवर् ऎतिर्–देवों के सामने; तलै ऎट्टुत्तु–सिर उठाकर; विऴियामै–देख न सकना; चमैप्पते–साध्य हो जाय क्या; इवै काण वारायो–ये देखने न आओगे क्या। ३१९

अनलधर शिवजी के कैलासपर्वत को उखाड़नेवाले पर्वत-सम मेरे भाई रावण! तुम इस भूमि पर अभी स्थायी यश के साथ हो! तो भी तापस लोग धनु लेकर घूम रहे हैं! यह तुम्हारे यश को छोटा बनानेवाला नहीं है क्या? और अव हम देवों के सामने सिर उठा नहीं सकेंगे? उनकी दृष्टि से दृष्टि न मिला सकेंगे। ऐसी स्थिति भी आ जायगी

शायद ? इनको देखने नहीं आओगे क्या ? (दारुका वन के ऋषियों ने शिवजी पर अग्नि को भेजा था। उन्होंने उसे अपने हाथ में रख लिया। उसको 'मऴु' कहते हैं। मऴु का अर्थ परशु भी है। अतः मऴु-धारी शब्द के दोनों अर्थ— परशुधर, अनलधर किये जाते हैं।)। ३१९

पुलितानै पुऱत्ताहक् कुट्टिकोट् पडादॆऩ्ऩुम्
ऑलियाऴि युलहुरैक्कु मुरैपॊय्यो वूऴियिऩुम्
शलियाद मूवरुक्कुन् दानवर्क्कुम् वाऩवर्क्कुम्
वलियातै यान्पट्ट वलिहाण वारायो 320

ऊऴियितुम् चलियात—कल्पान्त में भी अचल रहनेवाले; मूवर्क्कुम्—त्रिदेवों से और; तानवर्क्कुम्—असुरों से; वानवर्क्कुम्—देवों से; वलियातै—बढ़कर बली; पुलि पुऱत्तु आफ—मादा व्याघ्र के पास रहते; कुट्टि—उसका शावक; कोळ् पटातु—किसी की पकड़ में नहीं आयगा; ऍन्नुम्—ऐसा; ऑलि आऴि उलकु—गर्जनशील सागर-वलयित भूतल (वासी); उरैक्कुम् उरै—जो कहता है, वह मसल; पॉय्यो—असत्य है क्या; यान् पट्ट—मुझ पर आया; वलि काण—संकट देखने के लिए; वारायो—नहीं आओगे क्या। ३२०

हे भाई ! तुम कल्पान्त में भी अमिट रहनेवाले त्रिदेवों, दानवों और देवों से भी अधिक बली हो। तुम्हारे रहते मेरी यह दुर्गति हो गयी। लोकोक्ति है कि मादा व्याघ्र के पास रहते व्याघ्रशावक को कोई ग्रस नहीं सकता। क्या वह कथन असत्य है ? मुझ पर जो बीता है, वह बड़ी विपदा देखो, आओ। नहीं आओगे ? । ३२०

आर्त्तानैक् करचुन्दि यमरर्कणत् तॊडुमडर्त्त
पोर्त्तानै यिन्दिरनैप् पॊरुदवनैप् पोर्तॊलैत्तु
वेर्त्तानै युयिर्हॊण्डु मीण्डानै वॆरिन्पण्डु
पार्त्तानै यान्पट्ट पऴिवन्दु पारायो 321

पण्टु—पहले; आर्त्तु—बड़े हुल्लड़ के साथ; आतैक्कु अरचु उन्ति—गजराज ऐरावत को चलाते हुए; अमरर् कणत्तोटुम्—देवगणों के साथ मिलकर; अटर्त्त—(तुमसे) जिसने लड़ाई की; पोर् तातै इन्तिरतै—उस युद्धसन्नद्ध सेना के स्वामी इन्द्र से; पॊरुतु—लड़कर; अवतै—उसको; पोर् तॊलैत्तु—युद्ध में हराकर; वेर्त्तातै—डर से स्वेदयुक्त होकर; उयिर् कॊण्टु मीण्टातै—जान लेकर भागनेवाले उसको; पण्टु—पहले; वॆरिन् पार्त्तातै—पीठ को जिसने देखा, ऐसे रावण; यान् पट्ट पऴि—मुझे मिली दुर्गति को; वन्तु पारायो—तुम आकर नहीं देखोगे क्या। ३२१

पहले दिग्विजय के अवसर पर, हे रावण ! गजराज ऐरावत को चलाते हुए इन्द्र अपने देवगणों को साथ लेकर तुमसे लड़ने आया। युद्धसन्नद्ध सेना उसके साथ आयी थी। तुमने उससे लड़ाई की और समरभूमि में उसको हराया। वह पसीना-पसीना होकर जान लेकर तुमको

अपनी पीठ दिखाते हुए भागा ! ऐसे रावण ! क्या तुम इधर आकर मेरी दुर्गति नहीं देखोगे ? । ३२१

काऱ्ऱित्तैयुम् पुऩलित्तैयुम् कऩलित्तैयुङ् गडुङ्गालक्
कूऱ्ऱित्तैयुम् विण्णियङ्गु कोळित्तैयुम् पणिकोडऱ्
काऱ्ऱित्तैनी यीण्डिरुवर् मानिडवर्क् काऱ्ऱादु
माऱ्ऱित्तैयो वुऩ्वलत्तैच् चिवऩ्ऱडक्कै वाळ्हॊण्डाय् 322

चिवऩ् तट कै वाळ्–शिवजी के दीर्घ हाथ से दी गई तलवार (चन्द्रहास); कॊण्टाय्–रखनेवाले; काऱ्ऱित्तैयुम्–वायुदेव को; पुऩलित्तैयुम्–और वरुण को; कऩलित्तैयुम्–अग्निदेव को; कटुम् काल कूऱ्ऱित्तैयुम्–कठोर काल के देव यम को; विण् इयङ्कु–आकाश में संचार करनेवाले; कोळित्तैयुम्–नवग्रहों को; पणि कोटऱ्कु–सेवा लेने के लिए; आऱ्ऱित्तै–नियत किया; नी–तुमने; ईण्टु इरुवर् मानिटवर्क्कु–यहाँ दो मनुष्यों के सामने; आऱ्ऱातु–अशक्त होकर; उऩ् वलत्तै माऱ्ऱित्तैयो–अपना बल खो दिया है क्या । ३२२

शिवजी के हाथ से तुमको चन्द्रहास नाम की तलवार मिली । उस तलवार के धारक रावण ! तुमने वायुदेव, वरुण, अग्निदेव, कठोर कालदेव और आकाशचारी नवग्रह इन सबको अपने सेवक बना रखा है ! ऐसे बली अब इन दो मामूली मनुष्यों के सामने अशक्त होकर तुम अपना बल खो चुके क्या ? । ३२२

उरुप्पॊडिया मऩ्मदऩै यॊत्तुळरे याऩालुम्
शॆरुप्पडियिऱ् पॊडियॊव्वा माऩिडरैच् चीऱुदियो
नॆरुप्पॊडियप् पॊडिशिदऱ निऱैमदत्त तिशैयाऩै
मरुप्पॊडियप् पॊरुप्पिडियत् तोणिमिर्त्त वलियोऩे 323

निऱै मतत्त–पूर्ण मद वाले; तिचैयाऩै–दिग्गजों के; मरुप्पु ऒटिय–दाँत तोड़ते हुए; पॊरुप्पु इटिय–कैलास को ढहते हुए; नॆरुप्पु ऒटिय–अग्निदेव को तोड़कर; पॊटि चितऱ–चूर-चर कर छितराते हुए; तोळ् निमिर्त्त–(दिग्विजय के अवसर पर) भुजाओं का बल दिखाकर जिसने लड़ाई की, ऐसे; वलियोऩे–बलवान (रावण); उरु पॊटिया–शरीर जिसका नष्ट नहीं हुआ हो, ऐसे; मऩ्मतऩै–मन्मथ के; ऒत्तु उळरे आऩालुम्–समान हैं तो भी; चॆरु पटियिल्–युद्धभूमि में (या जूते के तल की); पॊटि ऒव्वा–धूलि-सम भी जो नहीं हैं; माऩिटरै–उन मनुष्यों पर; चीऱुतियो–कोप करोगे क्या । ३२३

दिग्विजय के अवसर पर तुमने मदमत्त दिग्गजों के दाँतों को तोड़ा, कैलास को गिराया और अग्निदेव को चूर कर छितराया । ऐसे तुमने भुजाओं के बल का प्रदर्शन किया । ऐसे बली रावण ! ये दोनों सशरीर मन्मथ के समान हैं तो भी (चॆरु पटियिल =) युद्धभूमि में, या

(चॅरुप्पटियिल् =) जूते के तल की धूलि के समान भी नहीं होंगे। वे इतने दुर्बल हैं। उन पर कोपकर उनसे लड़ोगे भी ? । ३२३

तेनुडैय नरुन्दॅरियऱ् ऱेवरैयुन् दॅरुमाऱ्ऱल्
तानुडैय विरावणऱ्कुन् दम्बियर्क्कुन् दविर्न्ददो
ऊनुडैय वुडम्बिनरा यॅङ्गुलत्तोर्क् कुणवाय
मानुडवर् मरुङ्गेपुक् कॊडुङ्गिनदो वलियम्मा 324

तेन् उटैय–शहद-भरे; नऱुम् तॅरियल्–मधुर सुगन्धयुक्त मालाधारी; तेवरैयुम्–देवों को भी; तॅरुम्–आक्रान्त करनेवाले; आऱ्ऱल् तान् उटैय–शक्तिसम्पन्न; इरावणऱ्कुम्–रावण का और; तम्पियर्क्कुम्–उसके छोटे भाइयों का; वलि–बल; तविर्न्ततो–छूट गया क्या; ऊन् उटैय उटम्पितर् आय्–मांसयुक्त शरीर के बनकर; ऍम् कुलत्तोर्क्कु–हमारे राक्षसकुल के लोगों का; उणवु आय–भोजन बननेवाले; मानुटवर् मरुङ्के पुक्कु–मनुष्यों के अन्दर घुसकर; ऑटुङ्कित्तो–समा गया क्या; अम्मा–आश्चर्य। ३२४

अब जो हुआ है, उसका अर्थ क्या समझा जाय ? यह समझा जाय कि मधुयुक्त सुवासित मालाधारी देवो को आक्रान्त करनेवाले रावण का और उसके भाइयों का बल क्षीण हो गया ? और वह बल हमारे कुल के लोगों का भोज्य मांसधारी मानवों के शरीर के अन्दर प्रवेश कर समा गया ? । ३२४

मरत्तेयु नॅडुङ्गानिन् मऱैन्दुऱैयुन् दापदर्हळ्
उरत्तेयो वडलरक्क रोय्वेयो वुऱ्ऱॅदिर्न्दार्
अरनेयो वरियेयो वयत्तेयो वॅन्नुमाऱ्ऱल्
करत्तेयो यान्पट्ट कैयऱवु काणायो 325

मरन् एयुम्–वृक्षाकीर्ण; नॅटुम् कानिल्–विस्तृत वन में; मऱैन्तु उऱैयुम्–छिपकर रहनेवाले; तापतर्कळ्–तपस्वी लोगों का; वलिये ओ–बल है यह; अटल् अरक्कर्–(या) बली राक्षसों की; ओय्वेयो–शक्तिहीनता है; उऱ्ऱु ऍतिर्न्तार्–लड़ने आये हुए (लोग); अरत्ते ओ–हर है क्या; अरिये ओ–हरि है क्या; अयत्ते ओ–अज है क्या; ऍनुम्–ऐसा माने उतना; आऱ्ऱल्–बली; करत्ते ओ–हे खर; यान् पट्ट–मैंने जो पाया है; कै अऱवु–वह संकट; काणाय् ओ–आकर देखोगे नहीं क्या। ३२५

यह घटना तरुसंकुल वन में छिपे रहनेवाले तपस्वियों के बल का द्योतक है ? या बली राक्षसों की शक्ति के क्षीण हो जाने का ? हे खर ! जिसको युद्ध में देखकर शत्रु यह सन्देह करते थे कि यह क्या हर ही है या हरि या अज ! ऐसी शक्ति वाले खर ! आकर मुझे क्या हो गया है —यह अनर्थ तुम नहीं देखोगे क्या ? । ३२५

इन्दिरन्नु मलरयन्नु मिमैयवरुम् बणिकेट्पच्
चुन्दरिपल् लाण्टिशैप्प वुलहेळुन् दोळ्देत्तच्
चन्दिरन्पोट् कुडैनिळ्ट्ट विशैन्दिरुन्द शवैनडुवे
वन्दडियेन् नाणादु मुहङ्गाट्ट वल्लेनो 326

इन्तिरन्नुम्–देवेन्द्र और; मलर् अयन्नुम्–सरोजासन ब्रह्मा; इमैयवरुम्–और अन्य देव; पणि केट्प–सेवाएँ करते हैं; चुन्तरि–सुन्दरी शची देवी; पल्लाण्टु इचैप्प–'जयजीव' गाती है, तब; उलकु एळुम् तोळुतु एत्त–सातों लोक विनय करके स्तुति करते; चन्तिरन्–चन्द्र के; पोन् कुटै–स्वर्णछत्र; निळ्ट्र–ले छाया करते; इचैन्तु इरुन्त–तुम ऐसा जिस सभा में उल्लास के साथ रहते हो; चपै नटुवे–उस सभा के मध्य; अटियेन् वन्तु–दासी मै आकर; नाणातु–विना शरमाये; मुकम् काट्ट वल्लेनो–मुख दिखा सकूँगी क्या। ३२६

हे रावण ! तुम अपनी सभा में बड़े ठाट-बाट के साथ बैठते हो। तब इन्द्र, सरसिजासन ब्रह्मा और अन्य देव तुम्हारी आज्ञाएँ मानते हुए सेवक के रूप में रहते है। सुन्दरी शची जयजीव का गान गाती है। सातों लोक तुम्हारी संस्तुति करते हैं। चन्द्र तुम्हारा स्वर्णछत्र धारण कर छाया बनाता है। ऐसी सभा में अब आकर बेशरम की तरह अपना मुख दिखाने योग्य रहती हूँ क्या ? । ३२६

❀ उरन्नेरिन्दु विळ्वेन्नै युदैत्तुरुट्टि मूक्करिन्द
नरन्निरुन्दु तोळ्पार्क्क नान्निरुन्दु पुलम्बुवदो
करन्निरुन्द वनमन्ड्रो विवैपडवुङ् गडवेनो
अरन्निरुन्द मलैयॆडुत्त वैयावो वैयावो 327

अरन् इरुन्त मलै ॲटुत्त–हर जिसमें रहे, उस गिरि को उखाड़नेवाले; ऐयाओ ऐयाओ–प्रभु, प्रभु; उरन् नॆरिन्तु विळ–मेरी छाती विदीर्ण हुई और मैं नीचे गिर गई, ऐसा; ॲन्नै उतैत्तु उरुट्टि–मुझे लात मारकर, गिराकर और लुढ़काकर; मूक्कु अरिन्त–(जिसने) मेरी नाक काटी; नरन् इरुन्तु तोळ् पार्क्क–वह नर अभिमान के साथ अपने कंधों को देख रहा है, तव; नान् इरुन्तु पुलम्पुवतो–मैं बैठी विलाप करूँ (क्या यह ठीक है); करन् इरुन्त वरम् अन्ड्रो–खर के वास का वन है न; इवै पटवुम् कटवेनो–यह (अन्याय) सहने अर्ह हूँ क्या। ३२७

हे प्रभु ! हे रावण ! तुमने हरनिलय कैलास को उखाड़ लिया था ! मुझे मेरी छाती विदीर्ण करते हुए नीचे गिरा दिया एक नर ने ! उसने मेरी नाक काट दी और वह आत्माभिमान के साथ अपने कन्धों को देख रहा है, अपने बल पर इठला रहा है ! और मैं असहाय की तरह विलाप कर रही हूँ। क्या यह ठीक लगता है ? यह खर के शासनाधीन वन है। इधर मेरी ऐसी दुर्गति हो —मैं इसके अर्ह हूँ क्या ? । ३२७

❀ नशैयाले मूक्किळन्दु नाणमिला नान्वट्ट
वशैयाले निन्पुहळ् माशुण्ड दाहादो
दिशैयानै विशैहलङ्गच् चॅरुच्चॅय्दु मरुप्पॉशित्त
इशैयाले वॅळ्दुपॅय रिरावणवो यिरावणवो 328

तिचै यानै–दिग्गजों के; विचै कलङ्क–क्रोधोद्वेग को मिटाते हुए; चॅरु चॅय्तु–लड़कर; मरुप्पु ऑचित्त–उनके दाँतों को तोड़ा (जिसने); इचैयाले पॅयर् ऍळुतु–यश से (जिसने) अपना नाम अंकित किया; इरावण ओ इरावण ओ–हे वह रावण, वह रावण; नचैयालै–इच्छा के कारण; मूक्किळन्तु–नाक खोकर; नाणम् इला–लाज खोकर; नान् पट्ट वचैयाले–मुझे जो अपमान मिला, उससे; निन् पुकळुम्–तुम्हारा यश भी; माचु उण्टतु आकातो–कलंकित नहीं होगा क्या। ३२८

हे रावण ! तुमने दिग्गजों के क्रोध को मिटाकर उनसे लड़कर उनके दाँत तोड़ दिये और अपना नाम यश से अंकित किया है। ऐसे हे रावण ! क्या प्रेम करना बुरा है ? अपने प्रेम के कारण मैंने अपनी नाक खोयी, लाज खोयी और मैं अपमानित हो गयी हूँ। इस मेरी निन्द्य स्थिति से तुम्हारे यश में भी बट्टा नहीं लगेगा क्या ? । ३२८

❀ कानदनि निडैयॊरुवर् कादॊडुमूक् कुडनरिय
मानमदाऴ् पाविये निवण्मडियक् कडवेनो
तानवरैक् करुवरुत्तुप् पुरन्दरनैत् तळैयिट्टु
वानवरैप् पणिहॊण्ड मरुहावो मरुहावो 329

तानवरै करु अरुत्तु–दानवों का मान नाश कर; पुरन्तरनै–पुरन्दर को; तळैयिट्टु–बेड़ी पहनाकर; वानवरै–देवों को; पणि कॊण्ट–नौकर (जिसने) बना लिया; मरुका ओ मरुका ओ–हे वह भतीजे, भतीजे; कान् अततिन् इटै–जंगल में; ऑरुवर्–एक मानव ने; कातु ओटु मूक्कु उटन् अरिय–कान के साथ नाक एक साथ काट दिया, तब; पावियेन्–पापिनी मैं; मानम् अताल्–अपमान से; इवण् मटिय कटवेनो–इधर मर जाने अर्ह हो गई क्या। ३२९

(अब वह इन्द्रजित् को पुकार रही है।) हे मेरे भतीजे ! भतीजे ! तुमने दानवों का मान मिटाया, पुरन्दर को बेड़ियाँ पहनाकर कारागृह में रखा और देवों को नौकर बनाया और अपनी सेवा-टहल करायी। ऐसे भतीजे ! जंगल में एक नर ने मेरे नाक और कान एक साथ काट दिये। पापिनी मैं अपमान से यहीं मर जाऊँ —इसी के योग्य हूँ क्या मैं ? । ३२९

ऑरुहालत् तुलहेळु मुरुत्तिरिय तनुवॊन्डाल्
तिरुहाद शिनन्दिरुहित् तिशैतिशैये शॆलनूरि
इरुहालप् पुरन्दरनै यिरुञ्जिरैयि लिट्टलैत्त
मरुहावो मानिडवर् वलिहाण वारायो 330

और कालत्तु–पहले (दिग्विजय के समय) कभी; तत्तु ऑन्ड्राल्–एक धनु द्वारा; तिरुकात चित्तम् तिरुकि–अदम्य क्रोध बढ़कर; उलकु एळुम् उरुत्तु–सातों लोकों पर कोप प्रदर्शित करके; इरिय–उनको अस्तव्यस्त करते हुए; तिचै तिचैये चेल–दिशा-दिशा में भगाते हुए; नूरि–उनको मारकर; अ पुरन्तरनै–उस पुरन्दर को; इरु काल्–दो बार; इरुम् चिरै इट्टु–भयंकर कारा में डालकर; अलैत्तत–(जिसने) सताया वह; मरुका ओ–भतीजे; मानिटवर्–इन मानवों का; वलि काण–बल देखने; वारायो–आओगे नहीं क्या। ३३०

हे भतीजे! अपने पिता के दिग्विजय के समय में तुमने क्या-क्या साहस दिखाये। एक ही धनुष के सहारे तुमने बढ़ते क्रोध के साथ सातों लोकों पर कोप उतारकर उनके वासियों को भयभीत किया और वे भागने लगे। उनको तुमने मारा। फिर उस इन्द्र को दो वार कारागृह में डालकर दुख दिया। ऐसे तुम अब आकर दो अल्प नरों का बल देखो। देखने नहीं आओगे? । ३३०

❀ कल्लीरुम् बडैत्तडक्कै यडड्करतू डणर्मुदला
अल्लीरुञ् जुडर्मणिप्पू णरक्कर्कुलत् तवदरित्तीर्
कॉल्लीरुम् बडैक्कुम्ब करुणत्तैप्पोर् कॉडियीर्हाळ्
ऑल्लीरु मुरङ्गुदिरो यान्ळैप्प केळीरो 331

कल् ईरुम्–पत्थर को भी बेधनेवाले; पटै तट कै–हथियारों को लिये हुए विशाल हाथों के; अटल्–बली; कर तूटणर् मुतला–खर, दूषण आदि; अल् ईरुम्–अन्धकार को भेदनेवाली; चुटर्मणि पूण्–कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित; अरक्कर् कुलत्तु अवतरित्तीर्–राक्षसकुल में जात (राक्षसो); कॉटियीर्काळ्–क्रूर; ऑल्लीरुम्–तुम लोग सब; कॉल् ईरुम् पटै–लुहार से रेतकर तेज किए हुए आयुधों के; कुम्पकरुणत्तै पोल्–कुम्भकर्ण की तरह; उरङ्कुतिरो–सो रहे हो क्या; यान् अळैप्प–मैं पुकार रही हूँ; केळीरो–वह नहीं सुनते क्या। ३३१

(खर-दूषण आदि राक्षसों को पुकारती है।) कठोर पत्थर को भी वेधनेवाले हथियारधारी खर-दूषण आदि राक्षसो! अन्धकार को भेदने वाली कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित राक्षसकुलोद्भूत निशाचरो! तुम सब क्रूर राक्षस क्या उस कुम्भकर्ण के समान सो रहे हो, जिसके पास लुहार से रेती द्वारा तेज किए हुए हथियार (बेकार) पड़े हैं! मैं बुला रही हूँ— तुम सुन नहीं रहे हो क्या? । ३३१

ऑन्ड्रिन्न पलपन्नि यिहलरक्कि यळैत्तिरङ्गि
पॊन्रुन्नुम् बडियहत्तुप् पुरळ्हिन्ड्र पॊळुदत्तु
निन्ड्रन्द नदियहत्तु निरैतवत्तिन् तुरैमुडित्तु
वन्ड्रिणगैच् चिलैनॅडुन्दोण् मरहदत्तिन् मलैवन्दान् 332

ऑन्ड्र–ऐसा; इन्न पल–ऐसे विविध प्रलाप; पन्नि–कहते; इकल् अरक्कि–

वैर रखनेवाली राक्षसी के; अऴैत्तु इरङ्कि–पुकारते और रोते हुए; पॊन् तुन्नुम्–बहुत मनोहर; पटि अकत्तु–भूमि पर; पुरळ्किन्ऱ पॊऴुतत्तु–लोटते समय; वन् तिण् कै–वलिष्ठ और सारयुक्त हाथों; चिलै नॆट्टम् तोळ्–धनु धारण करनेवाले उन्नत कंधों के; मरकतत्तिन् मलै–मरकत गिरि (-सम श्रीराम); अन्त नति अकत्तु–उस नदी के घाट पर; निऱै तवत्तिन् कुऱै मुटित्तु–यथावत कर्म अशेष पूरा करके; निन्ऱु–वहाँ से; वन्तान्–आश्रम की ओर पधारे। ३३२

वैर रखनेवाली शूर्पणखा ने इस तरह ऐसी विविध बातें कहती हुई अपने बन्धुओं को पुकार-पुकारकर विलाप किया। बिलापते हुए वह आश्रम की पवित्र भूमि पर गिरकर लोटी। तब श्रीराम, जिनके हाथ दीर्घ और बलवान थे और जिनके सबल कन्धे को धनु अलंकृत कर रहा था, नदी-घाट में सन्ध्या का नित्यकर्म यथावत अशेष रूप से सम्पन्न करके वहाँ से निकलकर इस स्थान पर आ गये। ३३२

वन्दानै मुहनोक्कि वयिऱलैत्तु मऴैक्कणणीर्
शॆन्दारैक् कुरुदियॊडु शॆऴुनिलत्तैच् चेऱाक्कि
अन्दोवुन् ऱिरुमेनिक् कन्बिऴैत्त वन्बिऴैयाल्
ऎन्दायान् पट्टपडि यिदुहाणॆन् ऱॆदिर्वीऴ्न्दाळ् 333

वन्तानै–आये उनका; मुकम् नोक्कि–श्रीमुख देखकर; वयिऱु अलैत्तु–पेट (छाती) पीटकर; मऴै कण् नीर्–वर्षा के समान अश्रु; चॆम् तारै कुरुति ऒटु–और धार रूप में बहनेवाले रक्त के साथ; चॆऴु निलत्तै चेऱु आक्कि–श्रेष्ठ भूमि को कीचड़ बनाते हुए; ऎन्ताय्–मेरे नाथ; अन्तो–हाय; उन् तिरुमेनिक्कु–तुम्हारे श्रीशरीर पर; अन्पु इऴैत्त–आसक्ति रखने के; वन् पिऴैयाल्–कठोर अपराध के कारण; इतु–यह; यान् पट्ट पटि इतु–मुझे मिला प्रकार (संकट) यह; काण् ऎन्ऱु–देखो, कहकर; ऎतिर् वीऴ्न्ताळ्–उनके सामने गिरी। ३३३

शूर्पणखा ने श्रीराम को देखा। उनके मुख के सामने अपना पेट (अपनी छाती को) पीटा। आँखों से अश्रुजल की धारा बहायी और शरीर से लाल रक्त की धारा। उनसे वहाँ की श्रेष्ठ भूमि पंकिल बन गयी। उसने श्रीराम से शिकायत की कि देखो! मेरे नाथ! हाय! तुम्हारे रूप पर मेरा जी ललचाया। इस घोर अपराध का फल मुझे भोगना पड़ा, वह यह देखो! यह कहते हुए वह श्रीराम के सामने भूमि पर गिर पड़ी। ३३३

विरिन्दाय कून्दलाळ् वॆय्यविनै यादानुम्
पुरिन्दाळॆन् बदुन्दनदु पॊरुवरिय तिरुमनत्ताल्
तॆरिन्दानिन् ऱिऴैयोने यिवळैनॆडुम् जॆवियॊडुमूक्
करिन्दानॆन् बदुमुणर्न्दा नवळैनी यारॆन्ऱान् 334

विरिन्ताय कून्तलाळ्–बिखरे केश वाली ने; वॆय्य विनै–क्रूर काम; यातेनुम् पुरिन्ताळ्–कुछ किया है; ऎन्पतुम्–यह; तनतु–अपने; पॊरुवु अरिय तिरुमनत्ताल्–

अनुपम श्रीमन में; तेरिन्तान्-समझकर; इळैयोत्ते-छोटे भाई ने; इवळै-इसके; इन्रु-अभी; नेंट्टुम् चॅवि ऑट्टु-बड़े कानों के साथ; मूक्कु-नाक को; अरिन्तान् ऎन्नपतुम्-काट लिया है, यह भी; उणर्न्तान्-जानकर; अवळै-उससे; नी यार्-तुम कौन हो; ऎन्ड्रान्-पूछा। ३३४

श्रीराम ने अपने श्रीमन में सोचा कि बिखरे केश वाली इसने नृशंस कोई काम किया होगा और अनुज लक्ष्मण ने अभी-अभी इसकी नाक और इसके कान काटे हैं। उन्होंने उससे प्रश्न किया कि तुम कौन हो? । ३३४

अव्वुरैकेट्ट् टडलरक्कि यरियायो नीयॅन्नतॅत्
तॅव्वुरैयॅन् ड्रॅव्वुलहु मिल्लाद शीड्रत्तान्
वॅव्विलैवे लिरावणताम् विण्णुलह मुदलाय
ऍव्वुलहु मुडैयानुक् कुडन्पिरन्देन् यानॅन्ड्राळ् 335

अ उरै केट्टु-वह वचन सुनकर; अटल् अरक्कि-सशक्त राक्षसी ने; ऎन्नै नी अरियायो-मुझे नहीं पहचानते क्या; ऍ उलकुम्-सभी लोकों में; तॅव् उरै ऎन्ड्रु इल्लात-जिसके शत्रु नहीं होते (सभी हराये गये हैं); चीड्रत्तान्-जो क्रोधी है; वॅम् इलै वेल्-भयंकर पत्राकार सिर वाला भालाधारी; इरावणन् आम्-रावण कहलानेवाले; विण् उलकम् मुतल् आय-स्वर्गलोक आदि; ऍ उलकुम् उटैयानुक्कु-सभी लोकों के स्वामी की; उटन् पिरन्तेन्-सहोदरा हूँ; यान्-मैं; ऎन्ड्राळ्-कहा। ३३५

वह प्रश्न सुनकर शूर्पणखा को आश्चर्य हो गया। उस क्रूर राक्षसी ने उत्तर में कहा कि क्या तुम मुझे नहीं जानते? मैं उस रावण की बहिन हूँ, जिसका किसी भी लोक में कोई शत्रु नहीं है (क्योंकि उसने शत्रुओं को मिटा दिया है और कोई भी उससे वैर मोल लेने से डरते हैं), जो बड़ा क्रोधी है और जो पत्राकार सिर के भाले का धारी है और जो स्वर्गादि लोकों में हर किसी लोक का स्वामी है। मैं उसकी सहोदरा हूँ। ३३५

तामिरुन्द तहैयरक्कर् पुहलॊळियत् तवमियड्र
यामिरुन्द नॅडुञ्जूळर् कॅन्शेयवन् दायॅन्तलुम्
वेमिरुन्दै यॅन्नक्कनलु मॆरिहाम वॅम्बिणिक्कु
मामरुन्दे नॆरुनलित्तुम् वन्दिलॅनो यानॅन्ड्राळ् 336

तकै अरक्कर्-निषिद्ध राक्षस; ताम् इरुन्त-जहाँ रहते हैं; पुकल् ऑळिय-उन स्थानों को छोड़कर; याम्-हम; तवम् इयट्र-तपस्या करते हुए; इरुन्त-जहाँ रहते हैं; नॅटुम् चूळल्-इस विशाल आश्रम में; ऎन् चॅय वन्ताय्-क्या करने आई; ऎन्तलुम्-पूछने पर; वेम् इरुन्तै ऎन्न-कोयले के समान; कत्तलुम्-जलनेवाले; ऎरि काम-तापक काम रूपी; वॅम् पिणिक्कु-तपानेवाले भयंकर रोग की; मा मरुन्ते-श्रेष्ठ औषध; नॆरुनलित्तुम्-कल भी; यान् वन्तिलॅनो-मैं नहीं आई थी क्या; ऎन्ड्राळ्-पूछा। ३३६

तब श्रीराम ने पूछा कि निषिद्ध राक्षसों के वासस्थानों को छोड़कर इस श्रेष्ठ आश्रम में तुम क्यों आयी, जहाँ हम तपस्या कर रहे हैं? उसके उत्तर में शूर्पणखा श्रीराम से बोली— अग्नि में जलते कोयले के समान तपानेवाले काम रूपी रोग की श्रेष्ठ औषध ! क्या तुम भूल गए कि मैं कल भी आयी थी। कल आयी थी न ? । ३३६

शॅङ्गयल्पोऱ् करुनॅडुङ्गट् टेमरुदा मरैयुऱैयुम्
नङ्गैयिव रॆन्नॆरुनल् नडन्दवरो नामॆन्नक्
कॊङ्गैहळुङ् गुळैहाडुङ् कॊडिमूक्कुङ् गुरैत्तळित्ताल्
अङ्गणर शेयोरुवर्क् कळियादो वळहॆन्ऱाळ् 337

चॅम् कयल् पोल्—लाल 'कयल' मीनों के समान; करु नॅटुम् कण्—काली और आयत आँखों वाली; तेमरु तामरै—शहद से युक्त कमल पर; उऱैयुम्—रहनेवाली; नङ्कै अॅत—श्रीलक्ष्मीदेवी के समान; नॆरुनल्—कल; नटन्तवरो—आई जो थी; नाम् ऍन्न—वही हम है (तुम हो) क्या, यह पूछने पर; अरचे—राजा; कॊङ्कैकळुम्—स्तन और; कुऴै कातुम्—लचकदार कान; कॊटि मूक्कुम्—और लता-समान नाक को; कुरैत्तु अळित्ताल्—काटकर दूर करने से; अङ्कण्—तब; अऴकु अळियातो—सौंदर्य मिट नहीं जायगा क्या; ॲन्ऱाळ्—पूछा। ३३७

श्रीराम ने कहा— ओफ़ ओह ! कल जो श्रीलक्ष्मी के समान लाल कयल-सी आँखों वाली कमलनिवासिनी है, इधर आयी, वह तुम्हीं हो क्या ? शूर्पणखा ने निष्ठुरता से कहा कि लटकनेवाले कानों को और लता-समान नाक को काट दिया गया तो क्या सौन्दर्य मिट नहीं जायगा ? (कल और आज के रूप में अन्तर क्या नहीं आ जायगा ?)। ३३७

मुरन्मूऱ वलनिळैय मॊय्म्बिनान् मुहनोक्कि
वीरवॅहुण् डनैयिवडन् विडुहादुङ् गॊडिमूक्कुम्
ईरनिनैन् दिवळिळैत्त पिळैयॆन्नॆन् ऱिऱैविनवच्
चूरनॆडुन् दहैयवनै यडिवणङ्गिच् चॊल्लुवान् 338

इऱै—भगवान श्रीराम के; मूरल् मऊवलत्—मन्दहास के साथ; इळैय मॊय्म्पितान्—पराक्रमी छोटे भाई के; मुकम् नोक्कि—मुख को देखकर; वीर—वीर; इवळ् तन्—इसके; विटु कातुम्—लटकनेवाले कानों और; कॊटि मूक्कुम्—लम्बी नाक को; वॅकुण्टतै—क्रोध करते हुए; ईर—काटने के लिए; इवळ् निनैन्तु इळैत्त—इसने सोचकर जो किया; पिऴै—वह अपराध; ॲन्—क्या; ॲन्ऱु वितव—यह पूछने पर; चूर नॅटुम् तकै—शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण; अवतै अटि वणङ्कि—उनको पैरों पर नमस्कार करके; चॊल्लुवान्—बोले। ३३८

प्रभु श्रीराम को हँसी आ गयी। मन्दहास के साथ उन्होंने अपने भाई लक्ष्मण से प्रश्न किया कि वीर ! इसके लटकते कानों और दीर्घ नाक को गुस्से के साथ इस तरह काटो, ऐसा इसने जान-बूझकर क्या अपराध

किया ? शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण ने श्रीराम को नमस्कार करके यों उत्तर दिया । ३३८

तेट्टन्दान् वाळॅयिऱ्ऱिऱ् ऱिन्नवो तीवित्तैयोर्
कूट्टन्दान् पुऱत्तुळदो कुऱित्तपोरु ळऱिन्दिलॅन्नाल्
नाट्टन्दा नॅरियुमिळ् नल्लाण्मेऱ् पोल्लादाळ्
ओट्टन्दा ळरिदिन्निव ळुयिर्हवर्न्दा ळॅनवन्दाळ् 339

तेट्टम् तान्–इसका इधर खोजते हुए आना; वाळ् ऍयिऱ्ऱिल् तिन्नवो–(वक्र और) उज्ज्वल दाँतों से काटकर खाने के लिए था, या; ती वित्तैयोर्–नृशंसकारी; कूट्टम् तान्–राक्षसों का दल ही; पुऱत्तु उळतो–पास रहता है; कुऱित्त पोरुळ्–जो उद्देश्य ले आई थी, वह बात; अऱिन्तिलॅन्–मैंने नहीं जाना; नाट्टम् तान् ऍरि उमिळ्–आँखों से अग्नि प्रकट करते हुए; पोल्लाताळ्–यह क्रूरी; नल्लाळ् मेल्–साध्वी (भाभी) पर; अरितिन्–अप्रत्याशित रीति से; इवळ् उयिर् कवर्न्ताळ् ऍन्न–इनका प्राण हर लिया हो, ऐसा; ओट्टन्ताळ्–भागती; वन्ताळ्–आई । ३३९

प्रभु ! इसका उद्देश्य क्या था ? भाभी की खोज में यह आयी—उनको अपने सफ़ेद दाँतों से चबाकर खाने के लिए ? या क्रूरकर्मा राक्षसों का दल पास में कहीं है ? यह क्या करने आयी —मैं जान नहीं पाया । पर यह बुरी स्त्री आँखों से अग्नि निकालती हुई साध्वी देवी पर ऐसी झपटी कि मानो उसने उनकी जान ही हर ली हो ! वह तीव्र गति से भागती आयी । ३३९

एऱ्ऱवळै वरिशिलैयो नियम्बामुन् निहलरक्कि
शेऱ्ऱवळै तन्कणव नरुहिरुप्पच् चिनन्दिरुहिच्
चूऱ्ऱवळै तुनियुळक्कुन् दुऱैहॅळ्नीर् वळनाड
माऱ्ऱवळैक् कण्डक्का लळलादो मनमॅन्ऱाळ् 340

एऱ्ऱ–(हाथ में) धृत; वळै वरि चिलैयोन्–झुके हुए और बन्धनयुक्त धनुष वाले (लक्ष्मण) के; इयम्पा मुन्–कहने से पूर्व ही (कहते ही); इकल् अरक्कि–वैरमना राक्षसी; चूल् तवळै–गाभिन मेंढकी; तन् कणवन् अरुकु–अपने पति मेंढक के पास; चेऱ्ऱ वळै इरुप्प–कीचड़ में एक शंखकीट को रहते देख; चिनम् तिरुकि–कोप में बढ़कर; तुनि उळक्कुम्–बहुत रूठकर जहाँ दुखी होती है; तुऱै कॅळ्–ऐसे घाटों से भरे; नीर् नाटा–जलाशय जिसमें रहते हैं, ऐसे देश के अधिपति; माऱ्ऱवळै कण्ट काल्–सौत को देखकर; मनम् अळलातो–मन तप्त नहीं होगा क्या; ऍन्ऱाळ्–कहा । ३४०

झुके हुए और बन्धनयुक्त धनुष को हाथ में जो लिये रहे, उन लक्ष्मण के यह कह चुकने के पूर्व ही शूर्पणखा बोल उठी । हे अयोध्या देश के अधिपति, जहाँ ऐसे जलाशय बहुतायत से पाये जाते हैं, जिनमें गाभिन मेंढकियाँ कीच में अपने मेंढक के पास शंखकीट को देखकर मान करके बहुत दुखी हो रहती है ! सौत को देखने पर किसी का मन जल नहीं उठेगा

क्या ? (इस पद में सम्बोधन जो है, उसमें सौत के मनोभाव की चर्चा अप्रत्यक्ष रूप से हुई है। यह तमिऴ काव्य की विशेषता है। शूर्पणखा अपने को मेंढकी और सीताजी को मादा शंखकीट मानती है। यानी अपने को पत्नी और सीता को सौत।)। ३४०

पेडिप्पोर् वल्लरक्कर् पॅरुङ्गुलत्तै यॊरुङ्गविप्पान्
तेडिप्पोन् दनमिन्रु तीमाऱ्ऱज् जिलविळम्बि
वीडिप्पो हादेयिव् वॅव्वनत्तै विट्टहल
ओडिप्पो वॅन्रुरैत्त वुरैहडन्दार् कवळुरैप्पाळ् 341

पेटि पोर्–भयजनक युद्ध में; वल्–समर्थ; अरक्कर् पॅरुम् कुलत्तै–राक्षसों के बड़े कुल को; ऑरुङ्कु अविप्पान्–एक साथ मिटाने के लिए; तेटि पोन्तनम्–ढूँढ़ते हुए हम आये हैं; इन्रु–अब; ती माऱ्ऱम्–बुरी बातें; चिल विळम्पि–कुछ कहकर; वीटि पोकाते–मिटो मत; इ वॅव् वनत्तै विट्टु–इस प्यारे वन को छोड़कर; अकल–दूर; ओटि पो–भाग जाओ; ॲन्रु उरैत्त–यह जिन्होंने कहा; उरै कटन्तारक्कु–उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम से; अवळ् उरैप्पाळ्–वह बोली (उत्तर में)। ३४१

श्रीराम ने गम्भीरता से चेतावनी दी। हम इधर उन भयंकर युद्ध-समर्थ राक्षसों को एक साथ समूल नाश करने आये हैं। हम उन्हीं की खोज में इधर रहते हैं। अब तुम कुछ अंड-संड कहकर अपना अन्त मत करा लो। चलो इस प्यारे आश्रम को छोड़कर दूर भाग जाओ। उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम के ये वचन सुनकर शूर्पणखा उन्हीं को उपदेश देने लगी। ३४१

नरैतिरैयॊन्रिल्लाद नान्मुहने मुदलमरर्
करैयिऱन्दो रिरावणऱ्कुक् करनिऱुक्कुङ् गुडियन्ऱो
विरैयुमदु नन्ऱन्ऱु वेऱाह यानुरैक्कुम्
उरैयुळदु नुमक्कुऱुदि युणरुदिरे लॅन्ऱुरैप्पाळ् 342

नरै तिरै–बाल का पकना और खाल का झुर्रियों सहित हो जाना; ऑन्रु इल्लात–कुछ जिनका नहीं है; नान्मुकन्ने मुतल्–वे चतुर्मुख आदि; अमरर्–देव; करै इऱन्तोर्–असीम लोग; इरावणऱ्कु–रावण को; करन् इऱुक्कुम्–कर देनेवाले; कुटि अन्ऱो–प्रजा है न; विरैयुम् अतु–तुम जिसके करने में त्वरा दिखाते हो वह; नन्ऱु अन्ऱु–अच्छा नहीं है; उऱुति उणरुतिरेल्–अपना हित चाहते हो तो; नुमक्कु–तुम लोगों को; वेऱु आक–अलग; यान् उरैक्कुम् उरै–मेरे समझाने की एक बात; उळतु–है; ॲन्ऱु–कहकर; उरैप्पाळ्–बताने लगी। ३४२

ब्रह्मा आदि देव सब, जो कभी बुढ़ापे को प्राप्त नहीं होते, जब बाल पक जाते हैं और खाल पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, रावण को कर देनेवाले प्रजाजन हैं। यह तुम नहीं जानते क्या ? तुम जो काम करने में तत्पर

रहते हो और जल्दी दिखाते हो, वह तुम्हारे हित में नहीं होगा। अगर तुम अपना भला सोचो तो मुझे तुमसे विशेष रूप से कहने की एक बात है। सुनो।' वह कहने लगी। ३४२

आक्करिय मूक्कुङ्गै यरियुण्डा ळॆन्ड्रारै
नाक्करियुन् दयमुहनार् नाहरिह रल्लामै
मूक्करिन्दु नुङ्गुलत्तै मुदलरिन्दी रित्तियुमक्कुप्
पोक्करिदिव् वळहैयॆल्लाम् पुल्लिडैये युहुत्तीरे 343

उङ्कै–तुम्हारी छोटी बहिन; आक्कु अरिय–फिर से ठीक कराने के लिए कठिन रीति से; मूक्कु अरि उण्टाळ्–नाक की कटी हो गई; ॲन्ड्रारै–यह समाचार कहनेवाले की; नाक्कु अरियुम्–नाक जो काट देंगे वे; तयमुकत्तार्–दशग्रीव; नाकरिकर् अल्लामै–दाक्षिण्य दिखानेवाले नहीं है, इसलिए; मूक्कु अरिन्तु–नाक काटकर; नुम् कुलत्तै–अपने कुल को; मुतल् अरिन्तीर्–जड़ से काट लिया (तुमने); इत्ति–अब; उमक्कु पोक्कु अरितु–तुम्हारा कोई मार्ग नहीं है; इ अळकु ॲल्लाम्–यह सब सौंदर्य; पुल् इटैये–घास के मध्य; उकुत्तीर्–गिरा दिया (तुमने)। ३४३

कोई जाकर दशमुख से कहे कि तुम्हारी बहिन की नाक एकदम कट गयी और उसका कोई इलाज नहीं हो सकता तो झट वे उस कहनेवाले की जीभ काट देंगे। ऐसे वे दशग्रीव दया-दाक्षिण्य दिखानेवाले नहीं हैं। तुमने मेरी नाक क्या कटवायी, अपने कुल को जड़ से काट दिया समझो! अब तुम्हारे बचाव का कोई मार्ग नहीं है। हन्त! अपना यह सारा सौन्दर्य तुमने धूल में मिला लिया! (घास में छितराना मुहावरा है।)। ३४३

वान्गाप्पोर् मण्गाप्पोर् मानाहर् वाळुलहम्
तान्गाप्पो रिन्नित्तङ्ग डलैकात्तु निन्ड्रुङ्गळ
ऊन्गाक्क वुरियार्या रॆन्नैयुयिर् नीर्हाक्किन्
यान्गाप्पॅ नल्लालव् विरावणना रुळरॆन्ड्राल् 344

इरावणतार् उळर्–रावण है; ॲन्ड्राल्–इसलिए; नीर् ॲन्नै उयिर् काक्किन्–तुम मेरे प्राण बचाओगे तो; यान् काप्पॅन्–मैं तुमको (रावण से) बचा लूँगी; अल्लाल्–नहीं तो; वान् काप्पोर्–स्वर्गपालक; मण् काप्पोर्–भूपति; मा नाकर् वाळ्–बड़े नाग जहाँ रहते हैं; उलकम् तान्–उस लोक के; काप्पोर्–राजा लोग; इन्नि–अब; तङ्कळ् तलै कात्तु–अपने सिरों को बचा लेकर; उङ्कळ् ऊन् काक्क–तुम्हारा शरीर भी बचाने की; उरियर् यार्–क्षमता रखनेवाले कौन हैं। ३४४

रावण हैं, इसका अर्थ है कि तुम बच नहीं सकते। हाँ, तुम मेरी बात मानकर मेरे प्राण बचाओगे तो मैं तुम्हें बचा सकूँगी। नहीं तो स्वर्ग, भूमि या नागलोक के राजाओं में अपने सिरों को बचा लेकर तुम्हारा शरीर भी बचा ले, ऐसे शक्तिसम्पन्न कौन होते हैं? (कोई नहीं!)। ३४४

कावऱ्ऱित् कऱ्पमैन्दार् तम्बॅरुमै ताङ्गळ्ऱार्
आवऱ्पे रन्बिना लऱ्ऱैहिन्ऱ्ऱे नामन्ऱो
देवर्क्कुम् वलियान्ऱन् ड्रिरुत्तङ्गै यािवळीण्
डेवर्क्कु वलियाळॆन्ऱ् ड्रिळैयानुक् कियम्बीरो 345

तिण् कावल् कऱ्पु अमैन्तार्–अपने स्त्रीत्व.का सबल रक्षक जो पातिव्रत्य है, उससे युक्त पतिव्रता स्त्रियाँ; तम् पॅरुमै–अपनी बड़ाई; ताम् कळ्ऱार्–खुद नहीं कहतीं; आवल् पेर् अन्पिताल्–इच्छा और गम्भीर प्रेम के कारण; अऱ्ऱैकिन्ऱेन् आम् अन्ऱो–इन बातों को खोलकर कह रही हूँ न; इवळ्–यह; तेवर्क्कुम् वलियान् तन्–देवों से भी अधिक शक्तिशाली की; तिरु तङ्कैयाळ्–प्यारी बहिन है; ईण्टु–इधर; एवर्क्कुम् वलियाळ्–किसी से भी अधिक बलशालिनी है; ॲन्ऱु–ऐसा; इळैयात्तुक्कु–अपने भाई को; इयम्पीरो–नहीं समझाओगे क्या। ३४५

यह मेरे लिए बहुत संकोच की बात है। अपने स्त्रीत्व की रक्षा में जो पातिव्रत्य में दृढ़ है, वे कुलीन स्त्रियाँ अपनी बड़ाई अपने मुख से नहीं कह सकतीं। पर मेरा तुम पर इच्छा और प्रेम अगाध है। इसलिए मैं साफ़-साफ़ ये बातें कह रही हूँ। तुम अपने भाई को समझाओ कि यह शूर्पणखा देवों से भी अधिक शक्तिशाली रावण की भगिनी है और वह स्वयं किसी से भी बढ़कर बलवान है। यह नहीं बताओगे क्या ? । ३४५

माप्पोरिऱ् पुऱङ्गाप्पॅन् वानूशुमन्दु शॅलवल्लेन्
तूप्पोलक् कनिपलवुज् जुवैयुडैय तरवल्लेन्
काप्पारैक् कॅत्तेनीर् करुदियदे तरुवेनिप्
पूप्पोलु मॅय्यिवळाऱ् पॊरुळॅन्ने पुहल्वीराल् 346

मा पोरिल्–घोर युद्ध में; पुऱम् काप्पॅन्–पास रहकर रक्षा करूँगी; वान्–आकाश में; चुमन्तु चॅल वल्लेन्–ढोते हुए ले जा सकूँगी; तू पोल–मांस के समान; चुवै उटैय–स्वादिष्ट; कनि पलवुम्–फल अनेक; तर वल्लेन्–लाकर दे सकूँगी; काप्पोरै कॅत्तु–रक्षक को मिटाकर; ॲन् नीर् करुतियते–तुम जो चाहते हो, वह; तरुवेन्–लाकर दूँगी; इ पू पोलुम् मॅय्–इस सुमन सदृश शरीर वाली; इवळ् आल्–इस स्त्री से; पॊरुळ् ॲन्ने–लाभ क्या है; पुकल्वीर्–बताओ। ३४६

और भी सुनो। किसी से घोर युद्ध छिड़ा तो मैं तुम्हारे पास रहकर तुमको बचाऊँगी। तुमको उठाकर आकाश में संचार कर सकूँगी। श्रेष्ठ मांस के समान स्वादिष्ट फल संग्रह कर ला दूँगी। समझो कि तुम्हारा मन किसी वस्तु पर ललचाता है। उस वस्तु को, उसकी रक्षा करनेवाला कोई भी हो उसे मारकर, तुम्हारे लिए ला दूँगी। ऐसी शक्तिशालिनी मुझको छोड़कर तुम इस सुमन-समान कोमल शरीर वाली के पास क्यों रहो ? इस अबला से तुम्हारा क्या मिलेगा ? बताओ तो देखें। ३४६

कुलत्तालु नलत्तालुङ् गुऱित्तनवे कॊणर्दक्क
वलत्तालु मदियालुम् वडिवालु मडत्तालुम्
निलत्तारुम् विशुम्बारु नेरिळैया रॆन्नैप्पोल्
शॊलत्तानिङ् गुरियारैच् चॊल्लीरो वल्लीरेल् 347

कुलत्तालुम्–जाति से; नलत्तालुम्–गुणों से; कुऱित्तनवे–तुमसे निर्दिष्ट वस्तुएँ; कॊणर् तक्क–लाने की; वलत्तालुम्–क्षमता में; मतियालुम्–बुद्धि में; वटिवालुम्–रूप-सौंदर्य में; मटत्तालुम्–सुकुमारता में; निलत्तारुम्–भूलोकवासी; विचुम्पारुम्–स्वर्गवासी; ऍन्नै पोल् नेरिळैयार्–मेरे समान कोई स्त्री; चॊल तान्–कहने के लिए; उरियारै–योग्य हो तो उसे; वल्लीरेल्–कह सकते हो तो; चॊल्लीर्–कहो। ३४७

जाति, श्रेष्ठ गुण, तुम्हारी इच्छित वस्तु ला देने की क्षमता, बुद्धि, रूप-सौन्दर्य और सुकुमारता में मेरे समान भूलोक, स्वर्ग और नागलोक के वासियों द्वारा मान्य योग्यता रखनेवाली कोई स्त्री हो और तुम उसे जानते हो तो वताओ तो सही ! । ३४७

पोक्किनी रॆन्नाशि पोयत्तॆन्नीर् पॊरुक्किलिरेल्
आक्कुवॆन्नोर् नॊडिवरैयि लळहमैवॆ नरुळ्हूरुम्
पाक्कियमुण् डॆनिलदनाल् पॆण्मैक्कोर् पळुदुण्डो
मेक्कुयरु नॆडुमूक्कु मडन्दैयर्क्कु मिहैयन्ऱो 348

ऍन् नाचि पोक्किनीर्–मेरी नाक कटा दी; पोय्त्तु ऍन्–गया क्या; नीर् पॊरुक्किलिरेल्–तुम इसे सह नहीं सको तो; अरुळ् कूरुम् पाक्कियम् उण्टु–कृपा मिलने का भाग्य दिया; ऍऩिल्–तो; ओर् नॊटि वरैयिल्–एक ही क्षण के अन्दर; आक्कुवॆन्–वना लूंगी; अळकु अमैवॆन्–सौंदर्यवती वन जाऊँगी; अतनाल्–बिना नाक की रह जाऊँ तो; पॆण्मैक्कु–स्त्रीत्व में; ओर पळिप्पु उण्टो–कमी होगी क्या; मेक्कु उयरुम्–उभरकर उगनेवाली; नॆटु मूक्कुम्–दीर्घ नाक भी; मटन्तैयर्क्कु–नारियों के लिए; मिकै अन्ऱो–अनावश्यक नहीं है क्या। ३४८

तुमने मुझे नासिका से हीन कर दिया। छोड़ दो ! उससे क्या नष्ट हुआ ? तो भी अगर तुमको मेरा नासिका बिना रहना असह्य हो तो फिर से अपनी नाक पूर्ववत वना लूंगी इस शर्त पर कि तुम मुझ पर कृपा करो। वचन दो, देखो एक क्षण में ठीक हो जायगा। वही नहीं तुम जैसा रूप चाहो वैसा रूप ले लूंगी। नाक के न रहने से क्या स्त्रीत्व में कोई कमी होगी ? उभरकर उगी हुई लम्वी नाक आवश्यकता से अधिक नहीं है ? । ३४८

विण्डारे यल्लारो वेण्डादार् मनम्वेण्ड
उण्डाय कादलिलॆन् नुयिरॆन्ब दुमदन्ऱो

कण्डारे कादलिक्कुङ् गट्टऴहुम् विडमन्ऱो
कौण्डारे कौण्डाडु मुरुप्पॆऱ्ऱाऱ् कौळ्ळीरो 349

वेण्टातार्–जिनको हम नहीं चाहते; विण्टारे अल्लारो–वे न हमारे शत्रु बन जाते है; मत्तम् वेण्ट–मन के लगने से; उण्टाय–जो उत्पन्न होता है; कातलिन्–उस प्रेम से; ऍन् उयिर्–मेरे प्राण; ऍन्पतु–जो है; उमतु अन्ऱो–वे तुम्हारे नहीं है क्या; कण्टारे कातलिक्कुम्–जो भी देखे वह प्रेम करे; कट्टऴकुम्–ऐसा रूप-सौंदर्य भी; विटम् अन्ऱो–विष नहीं होगा क्या; कौण्टारे कौण्टाटुम्–जिसने अपना बना लिया है, वही सराहे; उरु पॆऱ्ऱाल्–ऐसा रूप धरूँ तो; कौळ्ळीरो–तुम नहीं अपनाओगे क्या। ३४९

लोग, जिनको हम पसन्द नहीं करते, हमारे शत्रु हो जाते हैं। पर मेरा मन तुम पर आसक्त है, इसलिए तुमसे मेरा गाढ़ा प्रेम हो गया है और इससे क्या मेरे प्राण भी अब तुम्हारे नहीं हुए ? जो भी देखे, वही अनुरक्त हो जाय, ऐसा रूप-सौन्दर्य भी विष (के समान हानिकारक) नहीं है ? जिसकी मैं हो गयी, उसको जो भावे वही रूप मैं लूँ तो क्या तुम मुझे नहीं अपनाओगे ? । ३४९

शिवनुमलर्त् तिशैमुहनुन् दिरुमालुन् दॆऱुकुलिशत्
तवनुमॆऴुन् दौन्ऱाहि निन्ऱन्न वुरुवोने
पुवनमनैत् तैयुमीरुवत् पूङ्गणैया लुयिर्वाङ्गुम्
अवनुमुनक् किळैयानो विवनेपो लरुळिलनाल् 350

चिवनुम्–शिवजी और; मलर् तिचै मुकनुम्–कमलासन चतुर्मुख; तिरुमालुम्–और श्रीविष्णु; तॆऱु कुलिचत्तु अवनुम्–शत्रुसंहारक वज्र रखनेवाला वह (इन्द्र); ऍऴुन्तु–सब अपना-अपना अलग शरीर छोड़कर; ऑन्ऱु आकि–एकाकार बनकर; निन्ऱु अन्न–खड़े हो (मानो); उरुवोने–ऐसे दर्शन देनेवाले; पुवनम् अनैत्तैयुम्–सारे भुवनों को; ऑरु वन् पूम् कणैयाल्–एक असरदार पुष्पशायक से; उयिर् वाङ्कुम्–प्राण हरनेवाला; अवनुम्–वह (मनोज) भी; इवने पोल्–इस तुम्हारे भाई के समान; अरुळ् इलनाल्–दयाहीन लगता है, इसलिए; उनक्कु इळैयानो–(वह मन्मथ भी) तुम्हारा लघु-भ्राता है क्या। ३५०

हे राम ! तुम ऐसे रूपवान हो मानो शिव, कमलासन, श्रीविष्णु और संहारक वज्रपाणी सबने अपना-अपना रूप त्यागकर एकाकार होकर तुम्हारा रूप लिया हो ! सुन्दर राम ! तुमसे एक बात पूछूँ ? अपने एक अपार दुखदायी पुष्पास्त्र से सारे भुवनों के प्राण हरनेवाला (मर्मांतक पीड़ा पहुँचानेवाला) मन्मथ भी तुम्हारे इस भाई के समान कृपालु नहीं रहता। तो क्या वह भी तुम्हारा ही छोटा भाई है ? । ३५०

पौन्नुरुवप् पौरुहळ्ळीर् पिळैकाणीर् मूक्करिवान् पौरुळ्वेरुण्डो
ऍन्नुरुवैक् कैक्कौण्डो रिरुन्दौळियु नम्मरुङ्गे येहाळप्पाल्

पिऴ्ऴैयिवळै ययलोरुवर् पारारा मॆनवरिन्दीर् पिऴैशॆय् दीरो
अन्ननदनै यरिन्दन्ऱो वन्बिरट्टि कॊण्डदुना नऱिवि लेनो 351

पॊन्न् उरुव–स्वर्ण की; पॊरु कऴलीर्–वीरपायलधारी; पिऴै काणीर्–तुम अपराध करनेवाले नहीं हो; ऍन्न् उरुवै–मेरे शरीर को; कै कॊण्टीर्–अपने अधीन कर लिया है; नम् मरुङ्के–हमारे ही पास; इरुन्तु ऒऴियुम्–ठहर जायगी; पिन्नै–फिर; अप्पाल् एकाळ्–कहीं नहीं जायगी; इवळै अयल् ऒरुवर् पारार् आम्–इस पर कोई अन्य दृष्टि नहीं डालेगा; ऍन्न अरिन्तीर्–ऐसा सोचकर ही मेरी नाक काट ली है; मूक्कु अरिवान् पॊरुळ्–(नहीं तो) नाक काटने का अर्थ; वेऱु उण्टो–दूसरा है क्या; पिऴै चॆय्तीरो–तुमने कोई गलती की है क्या (नहीं); अन्नत तनै–उसको; अरिन्तु अन्ऱो–जानकर ही तो; नान् अन्पु इरट्टि कॊण्टतु–दुगुना प्रेम रखती; नान् अऱिवु इलेनो–क्या मै बुद्धिहीन हूँ । ३५१

स्वर्णनिर्मित वीर पायलधारी ! तुम लोग अपराध करनेवाले नहीं हो । तुमने मेरे शरीर और रूप को अपना वना लिया है ! 'यह हमारे पास रह जायगी । अब उसके पास कोई चारा नहीं है । यह विकृत रूप लेकर वह कहीं नहीं जा सकेगी । इसको कोई दूसरा नहीं देखेगा ।' —यही सोचकर तुमने मेरी नाक काट दी है । नहीं तो मेरी नाक काट देने का कोई प्रयोजन है क्या ? तव क्या तुम अपराधी बन सकोगे ? नहीं । उस सच्चे अभिप्राय को मैं जान गयी । तभी तो मेरा तुम पर प्रेम दुगुना हो गया ! क्या मैं बुद्धिहीन हूँ ? । ३५१

वॆप्पऴिया नॆडुवॆहुळि वेलरक्क रीदरिन्दु वॆहुण्डु नोक्किन्
अप्पऴिया लुलहन्नैत्तु मुम्बॊरुट्टा लऴिन्दनवा मऱत्तै नोक्किन्
ऒप्पऴियच् चॆय्हिला रुयर्हुलत्तै तोन्ऱिना रुणर्न्दु नोक्किन्
इप्पऴियैत् तुडैत्तुदवि यिन्निदिरुत्ति रॆन्नॊडुमॆन् ऱिरैञ्जि निन्ऱाळ् 352

वॆप्पु अऴिया–उग्रता से मिले; वॆकुळि–क्रोधी; नॆटुवेल् अरक्कर्–लम्बे भालों के धारक राक्षस; ईतु अरिन्तु–यह जानकर; वॆकुण्टु नोक्किन्–कोप करके देखें तो; अ पऴियाल्–उनके वदला लेने से; उलकु अनैत्तुम्–सारे लोक; उम् पॊरुट्टाल्–तुम्हारे कारण; अऴिन्तन आम्–मिट जाते होंगे; अऱत्तै नोक्किल्–धर्म देखा जाय तो; उयर् कुलत्तु तोन्ऱिनीर्–उच्च कुल में जात तुम; ओप्पु अऴिय–लोक-असम्मत कार्य; चॆय्किलीर्–करोगे नही; उणर्न्तु नोक्कि–खूब सोचकर देखकर; इ पऴियै तुटैत्तु–इस अपमान को दूर करके; उतविट–सहायता करने के लिए; ऍन्नॊटुम् इनितु इरुत्तिर्–मेरे साथ सुख से रह जाओ; ऍन्ऱु इरैञ्चि निन्ऱाळ्–ऐसी विनय कर खड़ी रही । ३५२

राक्षस उग्र क्रोधी हैं । वे यह जानेंगे तो कुपित होंगे और बदला लेनें आयँगे । उनके बदला लेने के सिलसिले में सारे लोक मिट जायँगे और तुम ही उस नाश के निमित्त रह जाओगे । तुम लोग उच्चकुल-जात हो ! लोकों का असम्मत कार्य नहीं करोगे । धर्म की वात सोचो और खूब

विचार करो। मेरा अपमान दूर करके मेरी सहायता करने के लिए मेरे साथ सुखपूर्वक रह जाओ। —शूर्पणखा ने यह प्रार्थना की और खड़ी रही। ३५२

नाडयरत् तुयरिऴैत्त नवैयरक्कि निन्ऩन्ऩै तन्ऩै नल्हुम्
ताडहैये युयिर्हवर्न्द शरमिरुन्द दन्ऩ्रियुनाऩ् ऱवमेऱ् कॊण्डु
तोडशैयत् तुरुमलर्त्ता रिहलरक्कर् कुलन्दॊलैप्पाऩ् ऱोन्ऱि निन्ऱेन्
पाडहल पुल्लॊऴुक्किन् वल्लरक्कि यॆन्ऱिरैवन् पहरुम् पिन्ऩुम् 353

नाट्टु अयर—संसार को त्रस्त करते हुए; तुयर् इऴैत्त—अत्याचार जो करती रही; नवै अरक्कि—अपराधिनी राक्षसी; निन् अन्ऩै तन्ऩै नल्कुम्—तुम्हारी माता की जननी; ताटकैयै—ताड़का के; उयिर् कवर्न्त—प्राण हर चुका वह; चरम् इरुन्ततु—शर मेरे पास अब भी है; अन्ऩ्रियुम्—अलावा; नान्—मैं; तवम् मेल् कॊण्टु—तपोव्रती बनकर; तोट्टु अचै—दल-सहित; अ मलर् तुरु तार्—पुष्पों की बनी मालाधारी; इकल् अरक्कर्—शत्रु राक्षसों का; कुलम् तॊलैप्पान्—कुल का नाश करने के लिए; तोन्ऱि निन्ऱेन्—आया हूँ (इधर); पुल् ऒऴुक्किन्—नीच चरित्र की; वल् अरक्कि—बलवान राक्षसी; पाट्टु अकल—दूर चली जाओ; ऎन्ऱु—कहकर; इऱैवन्—प्रभु श्रीराम; पिन्ऩुम् पकरुम्—आगे बोले। ३५३

श्रीराम ने डाँट बतायी। री राक्षसी! लोकों को त्रस्त करते हुए ऊधम जो मचाती रही, उस तुम्हारी माता की माता ताड़का का वध मैंने ही किया था। जिस शर से उसको मैंने मारा वह शर अब भी मेरे पास सुरक्षित है। और भी ध्यान रखो। मैं तपोव्रती होकर इधर आया हूँ पुष्पमालाधारी उन वैरी राक्षसों के कुल को ही मिटाने हेतु! नीच चरित्र वाली क्रूर राक्षसी! दूर हट जाओ, भागो, भागो! फिर प्रभु और भी बोले। ३५३

तरैयळित्त तनिनेमित् तयरदन्ऱन् पुदल्वर्यान् तायशॊऱ् ऱाङ्गि
विरैयळित्त कान्बुहुन्देम् वेदियरु मादवरुम् वॆण्ड निन्ऱ
करैयळित्तऱ् करियपडैक् कडलरक्कर् कुलन्दॊलैत्तुक् कण्डाय् पण्डै
वरैयळित्त कुलमाड नहर्पुहुवे मिवैतॆरिय मनक्कॊ ळॆन्ऱान् 354

याम्—हम; तरै अळित्त—पृथ्वीपालक; तनि नेमि—एकचक्राधिपति; तयरतन् तन् पुतल्वर्—दशरथ के पुत्र हैं; ताय् चॊल् ताङ्कि—माता का वचन मानकर; विरै अळित्त—सुवास बरसानेवाले; कान् पुकुन्तेम्—जंगल में आये; वेतियरुम्—वेदज्ञ और; मा तवरुम्—महान तपस्वियों के; वेण्ट—प्रार्थना करने से; निन्ऱ—यहाँ स्थित; करै अळित्तऱ्कु अरिय—अपार; कटल् पटै अरक्कर्—समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों का; कुलम् तॊलैत्तु—दल मिटाकर; पण्टै—प्राचीन; वरै अळित्त—पर्वत-सम; कुल माट नकर्—अधिक संख्या में प्रासादों से पूर्ण (अयोध्या) नगर; पुकुवेम्—पहुँचेंगे; इवै—यह सब; तॆरिय मनम् कॊळ्—खूब जानकर मन में धरो; ऎन्ऱान्—श्रीराम ने समझाया। ३५४

हम उन दशरथ के पुत्र हैं, जो एकचक्राधिकार के साथ भूमि का पालन करते थे। अपनी (सौतेली) माता की आज्ञा सिर पर धारण करके हम सुबास से पूर्ण इस वन में आये। यहाँ के वेदवित ब्राह्मणों और महान तपस्वियों ने हमसे प्रार्थना की। उसको मानकर हमने यहाँ रहनेवाले असीम समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों के दल को मिटा चुककर अपने प्राचीन और पर्वत-सम ऊँचे सौधों से पूर्ण अयोध्या नगर लौट जाने का संकल्प किया है। ये बातें भी तुम ध्यान में रख लो। श्रीराम ने चेतावनी देते हुए यह कहा। ३५४

नॅऱित्तारै शॅल्लाद निरुदरॅदिर् निल्लाद नॅडिय तेवर्
मऱित्तारीण् डिरुवरिवर् मानिडव रॅन्नाडु वल्लै याहिल्
वॅऱित्तारै वेलरक्कर् विऱलियक्कर् मुदलिनर्त्ती मिडलो रॅन्ऱु
कुऱित्तारै यावरैयुम् कॉणरुदिये नित्नॅदिरे कोऱु मॅन्ऱान् 355

नॅऱि तारै चॅल्लात–धर्म-मार्ग पर न जानेवाले; निरुतर्–राक्षसों के; ऍतिर्–सामने; निल्लाते–न खड़े होकर; नॅटिय तेवर्—बड़े-बड़े देव भी; मऱित्तार्–मुड़कर भाग गये; ईण्टु इवर् इरुवर्–यहाँ ये दो; मात्तिटवर्–मनुष्य; ॲन्नातु–यह न सोचकर; वल्लै आकिल्–समर्थ हो तो; वॅऱि तार्–सुबासपूर्ण मालाधारी; ऐ वेल् अरक्कर्–सुन्दर भालों वाले राक्षस; विऱल् इयक्कर्–पराक्रमी यक्ष; मुतलित्तर्–आदि में; नी मिटलोर् ॲन्ऱु कुऱित्तोरै–तुम जिनको शक्तिशाली मानती हो, उन; यावरैयुम्–सभी को; कॉणरुतियेल्–लाओगी, तो; निन् ॲतिरे–तुम्हारे सामने ही; कोऱुम्–मारूँगा; ॲन्ऱान्–श्रीराम ने कहा। ३५५

श्रीराम ने आगे अपनी बात पर उसका विश्वास पैदा करने के लिए कहा— 'धर्म-मार्ग पर न जानेवाले राक्षसों के सामने चिरप्रतिष्ठित देव टिक नहीं सके। लौटकर भाग गये। यहाँ ये दोनों अल्पशक्ति मनुष्य हैं।' तुम ऐसा सोचोगी। ऐसा मत सोचो। तुम्हारे पास सामर्थ्य हो तो जाओ, सुबासपूर्ण मालाधारी राक्षस, शक्तिशाली यक्ष आदि लोगों में जिनको तुम पराक्रमी मानती हो, उन सबों को बुला लाओ। देखो, मैं तुम्हारी आँखों के सामने ही उनको मार दूँगा। ३५५

कॉल्लला मायङ्गळ् कुऱित्तनवे कॉळ्ळलाङ् गीऱ्ऱ मुऱ्ऱ
वॅल्लला मवरियऱ्ऱुम् वित्तैयमॅल्लाङ् गडक्कला मेल्वाय् नीङ्गिप्
पल्लॅला मुऱत्तोन्ऱुम् बहुवाय ॲन्नाडु पाऱ्ऱुति याहिल्
नॅल्लॅलाञ् जुरन्दुदवु नीर्नाड केळॅन्ऱु निरुदि कूऱुम् 356

नॅल् ॲलाम् चुरन्तु–धान आदि खाद्य पदार्थ सब पैदा करके; उतवुम्–देनेवाले; नीर् नाट–जल-समृद्ध कोसल देश के राजा; केळ्–सुनो; मेल् वाय् नीङ्कि–मुख (अधरों) को हटाकर; पल् ॲलाम्–सारे दाँतों को; उऱ तोन्ऱुम्–खूब प्रकट होने देनेवाले; पकुवायळ्–बड़ा मुख वाली; ॲन्नातु–ऐसा न सोचकर; पाऱ्ऱुति आयिन्–

मुझ पर प्रेम की दृष्टि रखोगे तो; कॊल्लल् आम्–मारना हो सकता है; कुऱित्तत्तवे मायङ्कळ्–वे जो भी माया सोचेंगे; कॊळ्ळल् आम्–उनको पहले ही समझना सम्भव होगा; कॊऱ्ऱम्–विजय; मुऱ्ऱ–पूरी हमारी हो ऐसा; वॆल्ललाम्–उनको हरा सकते है; अवर् इयऱ्ऱुम् विनैयम् ऎलाम्–वे जो भी षड्यन्त्र रचेंगे, उन सबको; कटक्कलाम्–मिटा सकेंगे; ऎन्ऱु–ऐसा; निरुति कूऱुम्–निशाचरी ने कहा। ३५६

शूर्पणखा हार मानने के लिए प्रस्तुत नहीं थी। उसने बहस की। धान आदि खाद्य पदार्थ कसरत से पैदा करनेवाले, जलसमृद्ध कोसल देश के अधिपति ! सुनो ! तुम इस छोटी सी बात को भूल जाओ कि मेरे दाँत बाहर निकले हुए है और मेरा मुख-विवर अधिक बड़ा है। मुझ पर कृपा-दृष्टि रखो तो तुम जिनको मारना चाहते हो, उन राक्षसों को अवश्य मार सकोगे। हम उनके माया कार्यो का पूर्व-ज्ञान प्राप्त करके उन पर पूर्ण रूप से विजय पा सकेंगे। उनके सभी षड्यन्त्रों को असफल बना सकेंगे। ३५६

काम्बुऱऴुन् दोळाळैक् कैविडी रॆन्ऩिनुम्यान् मिहैयो कळ्वर्
आम्बॊरियि लडलरक्क रवरोडे शॆरुच्चॆय्वा ऩमैन्दी राहिल्
ताम्बॊऱियिर् पलमायन् दरुम्बॊऱिह ळऱिन्दवऱ्ऱैत् तडुप्पे नऩ्ऱे
पाम्बऱियुम् पाम्बिनगा लॆऩ्ऩमॊऴियुम् पऴमॊऴियुम् बार्क्कि लीरो 357

काम्पु उऱऴुम्–बाँस की समानता करनेवाले; तोळाळै–कंधे वाली को; कै विटीर् ऎन्ऩितुम्–नहीं छोड़ोगे तो भी; यान् मिकैयो–मैं अधिक हो जाऊँगी क्या; कळ्वर् आम्–चोर; पॊरि इल्–श्रीहीन; अटल् अरक्कर् आम्–पराक्रमी राक्षसों; अवरोटे–के साथ (विरुद्ध); वॆरु चॆय्वान्–लड़ने के लिए; अमैन्तीर् आकिल्–प्रस्तुत हुए तो; पॊऱियिल्–इन्द्रियों के समान; पल मायम् तरुम्–विविध माया के कार्य करनेवाले; पॊऱिकळ् अऱिन्तु–उनके रहस्यों को पहले ही जानकर; अवऱ्ऱै तटुप्पेन् अन्ऱे–उनको रोक दूँगी न; पाम्पु–सर्प; पाम्पित काल्–सर्प का पैर; अऱियुम्–जानता है; ऎन मॊऴियुम्–ऐसा कहनेवाली; पऴमॊऴियुम्–लोकोक्ति; पार्क्किलीरो–नहीं जानते क्या। ३५७

तुम बाँस की समानता करनेवाले कन्धों की इस स्त्री को छोड़ना नही चाहते तो भी मैं तुम्हारे लिए अधिक हो जाऊँगी या निरर्थक हो जाऊँगी ? नही। राक्षस बुरे है और पराक्रमी है। उनके विरुद्ध जब लड़ोगे, तब वे इन्द्रियों के समान अनेक अनर्थकारी मायाकार्य करेंगे। मैं उनका रहस्य जानकर उनको रोक लूँगी। क्या तुम यह लोकोक्ति नहीं जानते, जो यह बताती है कि सर्प, सर्प का पैर जानता है। राक्षसी हूँ, राक्षसों की चाल जानती हूँ। इस पर विचार नहीं करोगे। ३५७

उळङ्गोडर् कऩ्बिऴैत्ता ऴुण्डॊरुत्ति यॆन्ऩुदिये निरुद रोडुङ्
कळङ्गोडर् करियशॆरुक् कण्णियक्का लॊरुमूवेङ गलन्द पोदु

कुळङ्गोडु मन्ऱेयक् कॊडियविऱल् वीरर्तमैक् कॊन्ऱ पिन्नर्
इळङ्गोवो डॆन्नैयिरुत्ति यिरुकोळुञ् जिऱैवैत्ताऱ् किळैया ळॆन्ऱे 358

उळम् कोटर्कु–मन में स्थान देने के लिए; अन्पु इळैत्ताळ् ऑरुत्ति–मुझसे प्रेम करनेवाली एक स्त्री; उण्टु–पहले से है; ऍन्ऩुतियेल्–कहोगे तो; निरुतरोटुम्–राक्षसों के साथ; कळम् कोटर्कु अरिय–समरांगण में जो दुस्तर करा देगा, ऐसा; चॆरु कण्णियक्काल्–युद्ध करना चाहोगे तो; ऑरु मूवेम् कलन्त पोतु–हम तीनों मिले रहें तो; कुळम् कोटुम् अन्ऱे–वह समरभूमि रक्त का तालाव बन जायगी न; अ कॊटिय–उन निर्मम; विऱल् वीरर् तम्मै–बली वीरों को; कॊन्ऱ पिन्नर्–मारने के बाद; इरु कोळुम् चिऱै वैत्ताऱ्कु–दोनों ग्रहों (सूर्य और चन्द्र) को कारागृह में जिसने बन्द कर रखा था, उस रावण की; इळैयाळ् ऍन्ऱे–भगिनी के मान की रक्षा करते हुए; इळम् को ओटु–लघुराज लक्ष्मण के साथ; ऍन्नै इरुत्ति–मुझे बिठा दो, (उसकी पत्नी बना लो)। ३५८

तुम कह सकते हो कि मेरे मन में स्थान पाकर मेरे साथ प्रेम करने के लिए पहले ही एक स्त्री है। तब एक काम करें। राक्षसों के साथ हम तीनों मिलकर युद्ध करेंगे। तब साधारण रूप से समरांगण में जाना भी जिसमें कठिन होगा, उस भयंकर युद्ध में हम रणभूमि को ही रक्त का तालाव बना देंगे और विजयी बनेंगे। उन वीर राक्षसों को मारने के बाद मुझे इतना मान दो कि मैं सूर्य-चन्द्र दोनों ग्रहों को कारागृह में जिसने बन्द कर दिया, उस रावण की भगिनी हूँ और मुझे अपने लघुराज लक्ष्मण के घर में (उसकी स्त्री के रूप में) बिठा दो। ३५८

पॆरुङ्गुला वुरुनहर्क्के पॆयरुनाळ् वेण्डुमुरुप् पिडिप्पे नन्ऱेल्
अरुङ्गला मुऱ्ऱिरुन्दा नॆन्ऱालु मिळैयवन्ऱा नरिन्द नाशि
ऑरुङ्गिला विवळोडु मुऱैवदो वॆन्बाने लिऱैव वॊन्ऱु
मरुङ्गिला दवळोडु मन्ऱेयान् नॆडुङ्गालम् वाळ्न्दे नॆन्बाय् 359

इऱैव–सरदार; पॆरुम् कुला उरु–बड़े कोलाहलमय; नकर्क्के–नगर (अयोध्या) को; पॆयरु नाळ्–लौटते दिन; इळैयवन्–तुम्हारा छोटा भाई; अरुम् कलाम् उऱ्ऱु इरुन्तान्–गहरा कोप करता होता; ऍन्ऱालुम्–तो भी; तान् अरिन्त नाचि ऑरुङ्कु इला–खुद जो उसने काटी, उस नाक से हीन; इवळोटुम् उऱैवतो–इसके साथ रहूँगा क्या; ऍन्पातेल्–कहेगा तो; ऑन्ऱु मरुङ्कु इलातवळोटुम् अन्ऱे–युक्त कमर से हीन स्त्री के साथ तो; यान् नॆटुम् कालम् वाळ्न्तेन्–मैं बहुत काल से रहता हूँ; ऍन्पाय्–कहो; अन्ऱेल्–वह तब भी न माने तो; वेण्टुम् उरु पिटिप्पेन्–उसके पसन्द का रूप धारण कर लूँगी। ३५९

नाथ! जब तुम लोग बड़े कोलाहलमय अयोध्या नगर को लौटोगे, तब लक्ष्मण क्रोध न छोड़कर यह कहे कि यह नासिका से हीन है, यद्यपि उसी ने मुझे नाक से हीन कर दिया था तो तुम उससे समाधान कहो कि क्या मैं कमर से हीन स्त्री के साथ बहुत दिन से नहीं रह रहा? नहीं तो

मैं वह जैसा चाहे वैसा रूप धारण कर लूँगी; नही तो भी मैं उसका चाहा रूप धर लूँगी। ३५९

ऎऩ्ऱलुमे यिळैयवऩ्ऱा निलङ्गिलैवेल् कडैक्कणिया यिवळै योण्डु
कॊऩ्ऱुहळै योमॆऩ्ऩिऩ् ऩॆडिदलैक्कु मरुळऩ्गोल् कोवे यॆऩ्ऩ
नऩ्ऱदुवे यामऩ्ऱो पोहाळे लाहवॆऩ् नादऩ् कूऱ
ऒऩ्ऱुमिव ऱॆऩ्क्किरङ्गा ऱुयिरिऴप्पॆ ऩिऱ्किलॆऩ वरक्कि युऩ्ऩा 360

ऎऩ्ऱलुमे–उसके ऐसा कहते ही; इळैयवऩ्–कनिष्ठ ने; इलङ्कु इलै वेल्–दृश्यमान पत्राकार सिर वाले भाले को; कटैक्कणिया–आँख की कोर से दिखाकर; कोवे–स्वामी; इवळै कॊऩ्ऱु–इसको मारकर; कळैयोम् ऎऩ्ऩिल्–नहीं मिटायेंगे तो; नॆटितु अलैक्कुम्–बड़ा ऊधम मचायगी; अरुळ् ऎऩ् कोल्–कृपापूर्ण आज्ञा क्या है; ऎऩ्ऩ–यह पूछने पर; नातऩ्–नायक श्रीराम के; पोकाळेल्–नहीं जायगी तो; अतुवे–वही; नऩ्ऱु आम् अऩ्ऱो–भला होगा न; आक ऎऩ–वही हो, कहने पर; कूऱ–कहने पर; इवर् ऎऩ्क्कु ऒऩ्ऱुम् इरङ्कार्–ये मेरी दया कुछ नहीं करेंगे; निऱ्किऩ्–खड़ी रहूँ तो; उयिर् इऴप्पॆऩ्–प्राण गँवा दूंगी; ऎऩ–ऐसा; अरक्कि उऩ्ऩा–राक्षसी सोचकर। ३६०

लक्ष्मण ने यह बात सुनी। उनकी सहनशीलता जाती रही। उन्होंने श्रीराम का ध्यान आकर्षित करते हुए अपने दृश्यमान, पत्रसिर-भाले को अपनी आँखों की कोरों से देखा। फिर कहा— हे स्वामी! अगर हम इसे मारकर दूर नहीं करेंगे तो यह बड़ा अनर्थ करा देगी। आपकी आज्ञा क्या है? तब नायक श्रीराम ने मान लिया। कहा कि हाँ! अगर यह जानेवाली नही है तो क्या वैसा करना ही न भला होगा? वही हो! शूर्पणखा ने सुना तो वह समझ गयी कि ये हमारे ऊपर कृपा नहीं करेंगे। इधर ठहरूँगी तो प्राण से हाथ धोना पड़ जायगा। (यह सोचकर)। ३६०

एऱ्ऱनॆडुङ् गोडिमूक्कु मिरुकादु मुलैयिरण्डु मिऴन्दु वाऴल्
आऱ्ऱुवतॆ वञ्जत्तैया लुमैयुळ्ळ परिशऱिवा नमैन्द दऩ्ऱो
काऱ्ऱिऩिलुङ् कऩलिऩुङ् कडियानैक् कॊडियानैक् करनै युङ्गळ्
कूऱ्ऱुवतै यिप्पॊऴुदे कॊणर्हिऩ्ऱे ऩॆऩ्ऱुशलङ् गॊण्डु पोनाळ् 361

एऱ्ऱ–युक्त; नॆटुम् कोटि मूक्कुम्–लम्बी, लता-सम नाक को; इरु कातुम्–दोनो कानों को; मुलै इरण्टुम्–दोनों स्तनों को; इऴन्तुम्–खोने के बाद भी; वाऴल् आऱ्ऱुवतॆ–जीना सह सकूँगी क्या; उमै उळ्ळ परिचु–तुम्हारे गूढ़ अभिप्राय; वञ्चत्तैयाल्–कपट से; अऱिवाऩ्–जानने को; अमैन्ततु अऩ्ऱो–रचा गया (नाटक) न; काऱ्ऱिऩिलुम् कटियातै–वायु से अधिक तीव्र और बलवान; कऩलिऩुम् कॊटियातै–अग्नि से भी बढ़कर निर्मम; करतै–खर को; उङ्कळ् कूऱ्ऱुवतै–तुम्हारे यम को; इ पॊऴुते कॊणर्किऩ्ऱेऩ्–यहाँ अभी लाऊँगी; ऎऩ्ऱु–कहकर; चलम् कॊण्टु पोताळ्–वैर लेकर चली। ३६१

जाते-जाते शूर्पणखा यह कह गयी कि मेरी लम्बी लता-सी नाक मेरे रूप के योग्य सुन्दर थी। उसको, दोनों कानों और स्तनों को खोने के बाद कोई अपने जीवन को सह सकेगा क्या? मैं जीवित रहने की क्षमता रख सकूँगी क्या? यह सब जो मैंने तुमसे कहा, वह तुम्हारे गूढ़ अभिप्रायों को जानने के लिए रचा गया कपट नाटक था। अब मैं जा रही हूँ और वायु से भी तीव्रगामी और बलवान, अग्नि से भी निर्मम खर को, जो तुम्हारा यम होगा, अभी ले आऊँगी। ३६१

6. करन् वदैप् पडलम् (खर-वध पटल)

❀ इरुन्द माक्करन् ड्राळिणै यिन्मिशैच्
चॊरिन्द शोरियळ् कून्दल डूम्बॆत्तत्
तॆरिन्द मूक्कित्तळ् वायित्तळ् शॆक्कर्मेल्
विरिन्द मेह मॆत्तविळ्न् दाळरो 362

चॊरिन्त चोरियळ्–बहते हुए रक्त के साथ; कून्तलळ्–बिखरे केश वाली; तूम्पु अॆत्त–मोरी की नली के द्वार के समान; तॆरिन्त मूक्कित्तळ्–दिखनेवाली नाक की; वायित्तळ्–(मोरी के द्वार के समान) बड़ा मुख वाली; चॆक्कर् मेल् विरिन्त–लाल गगन पर फैले; मेकम् अॆत्त–मेघ के समान; इरुन्त मा करन्–(जनस्थान में) रहनेवाले प्रख्यात खर के; ताळ् इणैयिन् मिचै–जोड़े के पैरों पर; विळ्न्ताळ्–जा गिरी। ३६२

शूर्पणखा के शरीर के कटे अंगों से रक्त बह रहा था। उसका केश खुला और बिखरा हुआ था। उसकी नाक और मुख मोरी के द्वार के समान खुले थे। वह भागी और जनस्थान में रहे प्रख्यात खर के चरणों पर लाल गगन के ऊपर छाये हुए मेघ के समान गिरी। ३६२

❀ अळुङ्गु नाळिदॆन् ड्रन्दह नाणैयाल्, तळुङ्गु पेरि यॆन्तत्तनित् तेङ्गुवाळ्
मुळुङ्गु मेह मिडित्तवॆन् दीयिनाल्, पुळुङ्गु नाह मॆत्तप्पुरण् डाळरो 363

अन्तकन् आणैयाल्–यम की आज्ञा से; अळुङ्कु नाळ् इतु–अन्त होने का काल यह है; अॆन्ऱु–ऐसा घोषित करते हुए; तळुङ्कु पेरि अॆत्ति–पिटनेवाली भेरी के समान; तत्तित्तु एङ्कुवाळ्–विचित्र रूप से रोने का स्वर करती हुई; मुळुङ्कुम् मेकम्–गरजनेवाले मेघ से; इटित्त वॆम् तीयिनाल्–गिरी गाज की अग्नि से; पुळुङ्कुम् नाकम् अॆत्त–व्यग्र नाग के समान; पुरण्टाळ्–लोटने लगी। ३६३

उसका अनोखा रुदन का गम्भीर स्वर यम की आज्ञा के अनुसार राक्षसों के अन्त की घोषणा करनेवाली भेरी के नाद के समान था। वह उस सर्प के समान छटपटाकर लोटने लगी, जो गरजते मेघ से गिरी गाज की अग्नि से तप रहा हो। ३६३

❀ वाक्किऱ् कौप्पप् पुहैमुन्दु वायिनान्
नोक्किक् कूशलर् नुन्तैयित् तन्मैयै
आक्किप् पोनव रार्हॊलॆन् ड्रानवऴ्
मूक्किऱ् चोरि मुऴीइक्कॊण्ड कण्णिनान् 364

अवऴ् मूक्किल् चोरि—उसकी नाक से बहते हुए रक्त में; मुऴीइ कॊण्ट—मग्न रही; कण्णिनान्—आँखों का; वाक्किऱ्कु ऒप्प—शब्द के अनुकूल; पुकै मुनुतु—धुआँ निकालनेवाले; वायिनान्—मुख का (खर); नोक्कि—देखकर; कूचलर्—निस्संकोच होकर; नुन्तै—तुम्हारी; इ तन्मै आक्कि—इस दुर्गति में पहुँचाकर; पोन्तवर्—जानेवाले; आर् कॊल्—कौन हैं तो; ऍन्ऱान्—पूछा। ३६४

खर की दृष्टि शूर्पणखा की नाक से निकलनेवाले रक्त के प्रवाह में मानो डूब सी गयी। उसके मुख से ज्यों-ज्यों शब्द निकलते, त्यों-त्यों धुआँ भी निकलता। उतने क्रोध के साथ उसने शूर्पणखा से प्रश्न किया कि ऐसा निस्संकोच होकर तुम्हारी दुर्गति कर गये जो वे कौन है? । ३६४

❀ इरुवर् मानिडर् तापद रेन्दिय, वरिविल् वाट्कैयर् मन्मदन् मेनियर्
तरुम नीरर् तयरदन् कादलर्, शॆरुवि नेरु निरुदरैत् तेडुवार् 365

इरुवर् मानिटर्—दो मानव; तापतर्—तपस्वी; एन्तिय—धृत; वरिविल्—बन्धनयुक्त धनु; वाळ्—तलवार के; कैयर्—हाथ वाले; मन्मतन् मेनियर्—मन्मथ के समान रूप वाले; तरुम नीरर्—धर्मपथचारी; तयरतन् कातलर्—दशरथ के प्यारे पुत्र; चॆरुविल् नेरुम्—युद्ध में लड़नेवाले; निरुतरै—राक्षसों को; तेटुवार्—ढूँढ़नेवाले। ३६५

(शूर्पणखा का उत्तर भी देखिये!) वे दोनों मानव हैं तप में लीन! हाथ में धनुष और तलवार रखते हैं। उनका रूप मन्मथ का-सा है। धर्मपथचारी है। दशरथ के प्यारे पुत्र हैं और युद्ध में लड़नेवाले राक्षसों की खोज मे लगे रहनेवाले हैं। ३६५

❀ ऒन्ऱु नोक्कल रुन्वलि योङ्गरम्, निन्ऱु नोक्कि निऱुत्तु निनैप्पिनर्
वॆन्ऱि वेऱ्कै निरुदरै वेरऱक्, कॊन्ऱु नीक्कुदु मॆन्ऱुणर् कॊळ्हैयार् 366

ओङ्कु अऱम् निन्ऱु—उत्कृष्ट धर्म खुद अवलम्बन कर; नोक्कि—उनकी गति शोधकर; निऱुत्तुम् निनैप्पिनर्—स्थापित करने का संकल्प करते हुए; उन् वलि ऒन्ऱुम् नोक्कलर्—तुम्हारे बल की परवाह नहीं करते; वॆन्ऱि वेल्—विजयशील भालेधारी; कै—हस्त वाले; निरुतरै—राक्षसों को; वेर् अऱ—निर्मूल करके; कॊन्ऱु नीक्कुतुम् ऍन्ऱु—मार मिटाएँगे, ऐसा; उणर्—निश्चय जिसमें हो; कॊळ्कैयार्—ऐसे संकल्प वाले। ३६६

वे उत्कृष्ट धर्म के मार्ग में खुद रहते हुए, धर्म की गति को शोधकर उसकी संस्थापना में दत्तचित्त रहनेवाले है। वे तुम्हारे बल का कोई महत्त्व न देते। यही संकल्प रखनेवाले है कि हम विजयशील भालों के धारी राक्षसों का उन्मूलन करके मिटा देंगे। ३६६

❀ मण्णि नोक्करु वानिनिन् मट्रिनिल्
एण्णि नोक्कुरिल् यावरु नेर्हिलाप्
पॅण्णि नोक्कुडै याळोरु पेदैयॅन्
कण्णि नोक्कि युरैप्परुङ् गाट्चियाळ् 367

मण्णिल्—धरती पर; नोक्कु अरु—दर्शन-दुर्लभ; वानिनिल्—आकाश में; मट्रिनिल्—अन्य लोकों में; ऍण्णि—सोचकर; नोक्कुरिल्—देखने पर; यावरुम् नेर्किला—कोई उसकी समानता न कर सके, ऐसी; पॅण्णिन् नोक्कु उटैयाळ्—स्त्री-सौंदर्य वाली; ऍन् कण्णिन् नोक्कि—अपनी आँखों से देखकर; उरैप्पु अरुम्—अवर्णनीय; काट्चियाळ्—आकार-प्रकार वाली। ३६७

और भी, उनके साथ एक स्त्री है। स्वर्ग, भूलोक, पाताल आदि कहीं भी ढूँढ़ो, उसकी समानता करनेवाली कोई नहीं मिलेगी। बड़ी सुन्दरी स्त्री है। उसका आकर्षण इतना अधिक है कि मैं अपनी आँखों से देखा उसके मनोहारी रूप का वर्णन करूँ, इतनी क्षमता मेरे शब्दों में नहीं है। ३६७

❀ कण्डु नोक्कुरुङ् गारिहै याडनैक्, कॉण्डु पोवॅ निलङ्गैयर् कोक्कॅना
विण्डु मेलॅळुन् देनै वॅहुण्डवर्, तुण्ड माक्किनर् मूक्कॅनच् चॉल्लिनाळ् 368

नोक्कु उरुम् कारिकैयाळ् तनै—सुन्दरी उस स्त्री को; कण्टु—देखकर; इलङ्कैयर् कोक्कु—लंकेश्वर के लिए; कॉण्टु पोवॅन् ऍन्ना—ले जाऊँगी कहकर; विण्टु—शत्रुता दिखाकर; मेल् ऍळुन्ततै—उस पर लपकनेवाली मुझे; अवर्—उन दोनों ने; वॅकुण्टु—गुस्सा करके; मूक्कु तुण्टम् आक्कितर्—नाक के टुकड़े कर लिये; ऍन्न—ऐसा; चॉल्लिताळ्—शूर्पणखा ने कहा। ३६८

मैंने उस अनुपम सुन्दरी को देखा तो सोचा कि उसको लंकेश के लिए ले जाऊँ। इसी विचार से मैं उसकी ओर लपकी। तब उन दोनों मनुष्यों ने मेरी नाक काट दी। —शूर्पणखा ने घटना का अपनी रीति से वर्णन किया। ३६८

❀ केट्ट ननुरै कण्डनन् कण्णिनाल्, तोट्ट नुङ्गिर् ट्रॊळैयुरु मूक्किनैक्
काट्टॆ नावॅळुन् दानॆदिर् कण्डनर्, नाट्टन् दीय वुलहै नडुक्कुवान् 369

ऍतिर् कण्टवर् नाट्टम्—सामने से देखनेवालों की दृष्टि को; तीय—जलाते हुए; उलकै नटुक्कुवान्—लोक को कम्पित करनेवाले खर ने; उरै केट्टनन्—शूर्पणखा का कथन सुना; तोट्ट नुङ्किल्—कोए निकालने के बाद ताल-फल जैसे हो जाता है, वैसे; तॊळै उरु—गड्ढों सहित; मूक्किनै—नाक को; कण्णिनाल्—अपनी आँखों से; कण्टनन्—देखा; काट्टु—उनको दिखाओ; ऍन्ना—कहते हुए; ऍळुन्तान्—उठा। ३६९

खर ऐसा भयंकर और उग्र राक्षस था कि उसको सामने से देखनेवाले की आँखें जलकर भस्म हो जातीं और लोक काँप उठते। उसने शूर्पणखा के मुख को गौर से देखा, जो कोए से हीन ताल-फल के

समान लगता था। देखकर उसने तैश में आकर कहा कि दिखाओ उन्हें। यह कहते हुए वह उठा। ३६९

❀ अॅऴुन्दु नित्रुल हॅऴु मॅरिन्दुहप्, पॉऴिन्द कोवक् कनलिनिऱ् पॉङ्गुवान्
कऴिन्दु पोयिनर् मानिड रॅन्नुङ्गाल्, अऴिन्द दोविव् वरुम्बऴि अॅन्नुमाल् 370

अॅऴुन्तु नित्रू–उठकर खड़ा होकर; उलकु एऴुम् अॅरिन्तु उक–सातों लोकों को भस्म होकर चूने देते हुए; पॉऴिन्त–बढ़नेवाली; कोप कत्तलितिल्–कोपाग्नि में; पॉङ्कुवान्–जो भड़क उठा, उसने; मात्तिटर् कऴिन्तु पोयितर्–(ये) मनुष्य मिट चले; अॅन्नुम् काल्–ऐसी स्थिति में भी; इ अरुम् पऴि–यह कठोर अपयश; अऴिन्ततो–मिटेगा क्या; अॅन्नुम्–कहा। ३७०

उठकर खड़ा हुआ वह खर ऐसी कोपाग्नि के साथ भड़क उठा, जो सातों लोकों को जला दे और भस्म करके छितरा दे। उसे इतना क्षोभ हुआ कि उसके मुख से प्रश्न उठा। अगर मैं उन मानवों को मार भी दूं और वे मिट जायँ तो भी यह अपयश दूर हो सकेगा क्या ? । ३७०

❀ वरुह तेरॅन्नु मात्तिरै माडुळोर्, इरुहै माल्वरै येऴिनो डेऴनार्
ऑरुहै यालुल हेन्दु मुरत्तिनार्, तरुह विप्पणि यॅम्वयिऱ् ट्रानॅन्ट्रार् 371

तेर् वरुक–रथ आ जायँ; अॅन्नुम् मात्तिरै–ऐसा (आज्ञा) सुनाते ही तत्क्षण; माट्टु उळोर्–पास रहनेवाले; इरु कै माल्वरै–दो-दो हाथों के साथ बड़े-बड़े पर्वत; एऴितोटु एऴु अनार्–सात और सात (चौदह) के समान जो थे; ऑरु कैयाल्–अपने एक हाथ से; उलकु एन्तुम्–भूलोक को उठाने की; उरत्तितार्–शक्ति रखनेवाले; इ पणि–यह काम; अॅम् वयिन् तान् तरुक–हमारे पास छोड़ दें; अॅन्ट्रार्–बोले। ३७१

फिर उसने आज्ञा दी कि रथ आ जाय। तब उसके पास चौदह सेनापति थे। वे ऐसे पर्वतों के समान थे जिनके दो-दो हाथ हों। वे अपने एक हाथ पर ही धरणी को उठा सकनेवाले थे। उन्होंने प्रार्थना की कि यह काम हमें सौंप दें। ३७१

❀ चूलम् वाण्मऴुत् तोमरञ् जक्करम्, काल पाशङ् गदैपॊरुङ् गैयिनार्
वेलै ञालम् वॅरुवुरु मार्प्पिनार्, आल कालन् दिरण्डन्न वाक्कैयार् 372

चूलम् वाळ्–शूल और तलवार; मऴु तोमरम्–परशु और तोमर; चक्करम् कालपाचम्–चक्र, कालपाश; कतै–गदा; पॊरुम् कैयितार्–इनको लेकर लड़नेवाले हाथों के; वेलै ञालम्–समुद्रवलयित भूतल को; वॅरुवु उरुम् आर्प्पितार्–डराते हुए शोर मचानेवाले; आल कालम् तिरण्टु अन्न–हलाहल रूप ले आया हो ऐसा; आक्कैयार्–शरीर वाले। ३७२

(वाल्मीकी में इनके नाम दिये गये हैं।) वे शूल, तलवार, परशु, तोमर, कालपाश और गदा इनका उपयोग कर लड़ सकते थे। जब वे

उच्च स्वर उठाते तब समुद्र और उसके मध्य रहनेवाली भूमि थर्रा उठती थीं। उनके शरीर हलाहल के पिण्डों के समान थे। ३७२

❀ वॆम्बु वेलैक् कऩलऩ्ऩ वॆम्मैयार्, नम्बि नम्मडि मैत्तॊऴिऩ् ऩऩ्ऱॆऩा
उम्बर् मेलु मुरुत्तऩै पोदियो, इम्बर् मेलिऩि यामुळ मॆऩ्ऱार् 373

वॆम्पु वेलै–गरम और समुद्र से निकली; कऩल् अऩ्ऩ–(वड़वा) आग के समान (वे); वॆम्मैयार्–क्रोधशील; नम्पि–नायक; नम् अटिमै तॊऴिल्–हमारी सेवकाई भी; नऩ्ऱु ऎऩा–अच्छी रही, कहके; उम्पर् मेलुम्–देवों पर; उरुत्तऩै–गुस्सा कर; पोतियो–जा रहे हो क्या; इम्पर् मेल्–इस लोकवासी पर (आक्रमण करने); इऩि याम् उळमे–अब हम तो हैं; ऎऩ्ऱार्–बोले। ३७३

अत्यन्त गरम बड़वाग्नि के समान क्रोध से भरे उन्होंने खर को देखकर कहा कि नायक! हमारी सेवकाई भी कितनी खूब है (कि हमारे रहते आप लड़ने चलें)! और भी क्या वे देव हैं कि आप क्रोध के साथ लड़ने जायँ? वे धरती के मानव हैं और हम इधर प्रस्तुत हैं। ३७३

❀ नऩ्ऱु शॆल्लुदिर् नाऩिच् चिऱार्कण्मेल्
शॆऩ्ऱु पोर्शॆयिऩ् ऱेवर् शिरिप्पराल्
कॊऩ्ऱु शोरि कुडित्तवर् कॊळ्हैयै
वॆऩ्ऱु मीळुदिर् मॆल्लिय लोडॆऩ्ऱाऩ् 374

नऩ्ऱु–ठीक है; चॆल्लुतिर्–चलो; नाऩ्–मैं; इ चिऱार्कळ् मेल्–इन लड़कों पर; चॆऩ्ऱु पोर् चॆयिऩ्–जाकर युद्ध करूँ तो; तेवर् चिरिप्पर्–सुर लोग हँसेंगे; कॊऩ्ऱु–मारकर; चोरि कुटित्तु–रक्त पीकर; अवर् कॊळ्कैयै–उनका संकल्प; वॆऩ्ऱु–वृथा करके (उन्हें जीतकर); मॆल्लियलोटु–कोमल नारी को साथ ले; मीळुतिर्–लौट आओ; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ३७४

खर ने भी उसे ठीक माना। उसने कहा कि तुम ठीक कहते हो। तुम ही जाओ। मैं इन मानव-बालकों के विरुद्ध लड़ने जाऊँ तो देव मेरी हँसी उड़ायेंगे। तुम जाओ उन्हें मारो, उनका खून पिओ और उनका संकल्प हरा दो। फिर उस कोमल नारी को साथ लेकर लौट आओ। ३७४

❀ ऎऩ्ऩ लोडुम् विरुम्बि यिऱैञ्जिऩार्, शॊऩ्ऩ नाणिलि यऩ्दहऩ् ऱूदॆऩ
अऩ्ऩळ् पिऩ्पडर् वारॆऩ वायिऩार्, मऩ्ऩऩ् कादलर् वैहिड नण्णिऩार् 375

ऎऩ्ऩलोटुम्–उसके यों कहते ही; विरुम्पि–खुश होकर; इऱैञ्चिऩार्–विनय करके; चॊऩ्ऩ–जिसने उनके सम्बन्ध में कहा था, उस; नाण् इलि–निर्लज्ज (शूर्पणखा) को; अन्तकऩ् तूतु ऎऩ–यम का दूत मानकर; अऩ्ऩळ् पिऩ् पटर्वार् ऎऩ–उसके पीछे जानेवाले; आयिऩार्–बनकर वे; मऩ्ऩऩ् कातलर्–(दशरथ-) राज के पुत्र; वैकु इटम्–जहाँ रहे, वह स्थान; नण्णिऩार्–पहुँचे। ३७५

यह अनुमति पाकर वे हर्षित हुए। खर को नमस्कार करके

निकले। यम के भेजे दूत के समान वह निर्लज्ज शूर्पणखा आगे-आगे गयी और ये उसका अनुकरण करते गये। वे दाशरथि जहाँ रहे वहाँ आये। ३७५

❀ तुमिलप् पोर्वल् लरक्कर्क्कुच् चुट्टिये
अमलत् तॊल्पॆय राथिरत् ताऴियान्
निमलप् पाद निनैवि लिरुन्दवक्
कमलक्क् कण्णनैक् कैयिनिऱ् काट्टिनाळ् 376

अमलम् तॊल्–निर्मल और प्राचीन; पॆयर् आयिरत्तु–सहस्रनाम-धारी; आऴियान्–चक्रपाणी के; निमल पात निनैविल् इरुन्त–पवित्र चरण-स्मरण में रहे; अ कमल कण्णनै–उन कमलाक्ष को; तुमिलम् पोर् वल्–तुमुल युद्ध करने में समर्थ; अरक्कर्क्कु–राक्षसों को; कैयिनिल् चुट्टिये–हाथ के इशारे से; काट्टिनाळ्–दिखाया (शूर्पणखा ने)। ३७६

वे प्राचीन और सहस्र नामों से भूषित चक्रपाणी श्रीविष्णु के निर्मल पवित्र चरणों का स्मरण करके ध्यानमग्न थे। शूर्पणखा ने अपने हाथ से उन कमलाक्ष को उन तुमुल युद्ध-निपुण राक्षसों को दिखाया। ३७६

❀ ऍऱ्ऱु वाय्बिडित् तेन्दुदु मॆन्गुनर्, पऱ्ऱु वानॆडुम् बाशत्ति नॆन्गुनर्
मुऱ्ऱु वामिऱै शॊन्मुऱै यालॆनाच्, चुऱ्ऱि नार्वरै शूळ्न्दन्न तोऱ्ऱत्तार् 377

ऍऱ्ऱुवाम्–उसको ढकेलकर उछालेंगे; पिटित्तु एन्तुतुम्–पकड़कर धारण करेंगे; ऍन्कुनर्–कहनेवाले; नॆटुम् पाचत्तिन्–लम्बे पाश से; पऱ्ऱुवाम्–कस लेंगे; ऍन्कुनर्–कहनेवाले; इऱै चॊल् मुऱैयाल्–हमारे राजा के कहे प्रकार; मुऱ्ऱुवाम्–कार्य पूरा करेंगे; ऍना–कहते हुए; वरै चूळ्न्तन्न तोऱ्ऱत्तार्–पहाड़ घेर आये हों, ऐसे दृश्य वाले; चुऱ्ऱिनार्–घेर गये। ३७७

उनको देखते ही कुछ ने कहा कि हम उसे उछालेंगे और हाथों में पकड़ लेंगे। कुछ ने कहा कि लम्बे पाश से उसे बाँध देंगे। और कुछ ने कहा कि हम अपने राजा का आशय पूरा करेंगे। ऐसी-ऐसी बातें शोर के साथ कहते हुए पर्वतों के समान जो रहे वे उन्हें घेर गये। ३७७

❀ एत्तु वाय्मै यिराम निळवलैक्, कात्ति तैयलै यॆन्ऱुतन् कऱ्पहम्
पूत्त दन्न पॊरुवि इडक्कैयाल्, आत्त नाणि नरुवरै वाङ्गिनान् 378

एत्तु वाय्मै इरामन्–प्रशंसित सत्यसन्ध श्रीराम ने; इळवलै–अपने अनुज से; तैयलै कात्ति–देवी की रक्षा करो; ऍन्ऱु–कहकर; कऱ्पकम् पूत्तत्तु अन्न–कल्पतरु पुष्पित हो, ऐसे; तन् पॊरुवु इल् तट कैयाल्–अपने उपमाहीन विशाल हाथ से; आत्त नाणिन्–चढ़ी हुई प्रत्यंचा के साथ; अरु वरै–श्रेष्ठ पर्वत-सम धनुष को; वाङ्किनान्–ले लिया। ३७८

(श्रीराम ने देखा।) प्रशंसित सत्यसंध श्रीराम ने अपने कनिष्ठ से

कहा कि लक्ष्मण ! तुम सीताजी की रक्षा करो। उन्होंने अपने पुष्पित कल्पतरु के समान विशाल हाथ में प्रत्यंचा-चढ़े और पर्वतसम धनुष को ले लिया। ३७८

❀ वाङ्गि वाळॊडु वाळिपॅय् पुट्टिलुम्, ताङ्गित् तामरैक् कण्णनच् चालैयै
नीङ्गि यिव्वयि नेर्मि नडावॆना, वीङ्गु तोळन् मलैदलै मेयिनान् 379

तामरै कण्णन्–कमलाक्ष; वाळ् ऒट्टु–तलवार के साथ; वाळि पॅय् पुट्टिलुम्–शरों के साथ तूणीर भी; वाङ्कि–लेकर; अ चालैयै नीङ्कि–उस पर्णशाला के बाहर आकर; इ वयिन् नेर्मिन् अटा–इस ओर आकर लड़ो रे; ऎना–ललकारते हुए; वीङ्कु तोळन्–(युद्धोत्साह में) विवृद्ध कन्धों वाले (श्रीराम); मलैतलै मेयिनान्–युद्ध में प्रवृत्त हुए। ३७९

कमलाक्ष ने तलवार और शर-भरे तूणीर भी लिया। आश्रम से बाहर आये और उन्होंने ललकारा कि रे आओ इधर ! लड़ो। युद्धोत्साह के कारण उनके कंधे फूल उठे। वे युद्ध में प्रवृत्त हो गये। ३७९

मळ्वुम् वाळुम् वयङ्गॆरि मुच्चिहैक्
कळुवुङ् गालवॆन् दीयनन् काट्चियार्
ऎळुवि नीडक् कैयॆळु नान्गैयुन्
दळुवुम् वाळिह ळाड्डलज् जार्त्तिनान् 380

काल वॆम् ती अन्न–युगान्तकालीन भयंकर आग के समान; काट्चियार्–दृश्यमान; मळुवुम्–परशु; वाळुम्–और तलवारें; वयङ्कु ऎरि–जलती आग के समान; मु चिकै कळुवुम्–त्रि (सिर) शूल, इनके साथ; ऎळुविन् नीळ्–स्तम्भ-सम लम्बे; तट–और विशाल; कै ऎळु नान्कैयुम्–(सात के चार) अट्ठाईस हाथों को; तळुवुम् वाळिकळाल्–निशाने पर अचूक लगनेवाले शरों से; तलम् चार्त्तितान्–काटकर भूमि पर गिराया। ३८०

श्रीराम ने उनके स्तम्भ-सम लम्बे और मोटे अट्ठाईस हाथों को अपने अचूक बाणों से विद्ध कर गिराया। युगान्तकालीन अग्नि के समान क्रोधी उन राक्षसों के हाथों में परशु, तलवारें, अग्नि के समान उज्ज्वल त्रिशूल आदि थे। उनके साथ वे हाथ कट कर गिर गये। ३८०

❀ मरङ्गळ् पोॆन्डु वाळॊडु तोळ्विळ, उरङ्ग ळालडर्त् तारुर वोन्विडुम्
शरङ्ग ळोडिन तैत्त वरक्कर्दम्, शिरङ्ग ळोडिन तीयव ळोडिनाळ् 381

नॆट्ट वाळॊट्टु–लम्बी तलवारों के साथ; तोळ्–हाथ; मरङ्कळ् पोल्–पेड़ों के समान; विळ–गिरे, तब; उरङ्कळाल् अटर्त्तार्–छातियों से टकराये; उरवोन् विटुम् चरङ्कळ्–बलवान श्रीराम से प्रेषित शर; ओटिन तैत्त–चलकर घुसे; अरक्कर् तम् चिरङ्कळ्–राक्षसों के सिर; ओटिन–कट कर दौड़े (दूर गये); तीयवळ् ओटिनाळ्–दुराचारिणी भागी। ३८१

लम्बी तलवारों (व अन्य हथियारों) के साथ हाथों के अलग हो पेड़ों के समान गिरने के बाद भी वे सेनानायक लड़ने लगे। अपनी छाती से उन्होंने प्रहार किया। तब प्रबल प्रतापी श्रीराम ने तेजी से शर प्रेषित किये, जिन्होंने जाकर उनके सिरों को धड़ों से अलग कर दिया। शूर्पणखा ने देखा और वह नृशंस राक्षसी वहाँ से भाग चली। ३८१

❀ ऑळिरु वेऱ्करऱ् कुऱ्ऱ् दुणर्त्तिन्नाळ्, कुळिरु कोबवॅङ् गॉळरि मावडक्
कळिरॆ लाम्बडक् कैदलै मेलुरप्, पिळिऱि योडुम् बिडियनन् पॅऱ्ऱियाळ् 382

कुळिरु–गरजनेवाले; कोप वॅम् कोळ् अरि मा–क्रोधी, भयंकर सिंह के; अट–प्रहार करने से; कळिरु ऍलाम् पट–सभी गज मर गये और; कै तलै मेल् उऱ्–हाथ सिर पर रखते हुए; पिळिऱि ओटुम्–चिघाड़ती भागनेवाली; पिटि अन्न–हथिनी के समान; पॅऱ्ऱियाळ्–स्थिति वाली ने; ऑळिरु वेल्–चमकीले भाले के; करऱ्कु–खर को; उऱ्ऱतु उणर्त्तिन्नाळ्–जो हुआ वह सुनाया। ३८२

वह उस हथिनी के समान सिर पर हाथ रखे भागी, जो गरजनेवाले क्रोधी भयंकर सिंह के युद्ध में प्रहार से सभी गजों के मर जाने पर अपने सिर पर सूँड़ रखकर चिघाड़ती हुई भाग रही हो। जाज्वल्यमान भाला-धारी खर के पास जाकर उसने समाचार सुनाया। ३८२

❀ अङ्ग रक्क रविन्दॉळिन् दारॆनप्, पॉङ्ग रत्तम् विळिवळिप् पोन्दुह
वॅङ्ग रप्पॅय रोन्वॅहुण् डान्विडैच्, चङ्ग रऱ्कुन् दडुप्परुन् दन्मैयान् 383

विटै चङ्करऱ्कुम्–ऋषभवाहन शंकर से भी; तटुप्पु अरुम् तन्मैयान्–जो रोका नहीं जा सकता, वैसा; वॅम् कर पॅयरोन्–क्रूर खर नाम का राक्षस; अङ्कु अरक्कर् अविन्तु ऑळिन्तार् ऍन्न–वहाँ राक्षस मर मिटे; ऍन्न–यह सुनकर; पॉङ्कु अरत्तम्–उफन उठनेवाला रक्त; विळि वळि–आँखों द्वारा; पोन्तु उक–निकलने देते हुए; वॅकुण्टान्–क्रुद्ध हुआ। ३८३

खर नामक वह राक्षस ऐसा दुर्द्धर्ष था कि ऋषभवाहन शंकर से भी हराया न जा सके। उसने जब सुना कि राक्षस वहाँ हत हो मिट गये, तो उसे बड़ा क्रोध हुआ। उसकी आँखें लाल हो गयीं। उसकी आँखें ऐसी लगीं, मानो रक्त खौल उठा हो और वह आँखों से बाहर निकल रहा हो। ३८३

❀ अळैयॅन् ऱेरॆनक् काक्कुहॆन् पोर्प्पडै, उळैय रोडि यॉरुनॊडि युम्बल्मेल्
मळैयिन् मामुर शॆऱ्ऱुदिर् वल्लॆन्ऱान्, मुळैयिन् वाळरि यन्ज मुळङ्गुवान् 384

मुळैयिन् वाळ् अरि–गुफा में रहनेवाले सिंह को भी; अन्च मुळङ्कुवान्–भयभीत करते हुए दहाड़नेवाले खर ने; ऍन् तेर् अळै–मेरे रथ को बुलाओ; ऍन् पोर् पटै–मेरी युद्ध-सन्नद्ध सेना को; ऍनक्कु आक्कुक–मेरे साथ करो; वल्–सत्वर; उळैयर्–सेवक; ओटि–भाग जाकर; ऑरु कोटि उम्पल् मेल्–उत्तम पताका से अलंकृत गज

पर; मळैयिन्–मेघ के समान; मा मुरचु–बड़ा ढोल; अॅऱ्ऱुतिर्–पिटवा दें; अॅन्ऱान्–कहा। ३८४

ख़र भीषण स्वर वाला था। उसका नाद सुनकर गुफा के अन्दर सुरक्षित रहनेवाले सिंह भी सिहर उठते थे। उसने आज्ञा निकाली कि मेरा रथ बुला लो। मेरी सेनाओं को मेरे साथ कर दो। जल्दी सेवक जायँ और ध्वजासहित गज पर ढोल रखकर यह मुनादी पिटवा दें। वह ठनक मेघ के गर्जन के समान उच्च हो। ३८४

※ पेरि योशै पिऱत्तलुम् बॅट्पुरु, मारि मेहम् वरम्बिल वन्दॅन्नत्
तेरिन् शेनै तिरण्डदु तेवर्दम्, ऊरु नाह रुलहु मुलैयवे 385

पेरि ओचै पिऱत्तलुम्—भेरी-नाद के उठते ही; पॅट्पु उरु—विपुल; मारि मेकम्—वर्षाकालीन मेघ; वरम्पु इल—असीम; वन्त अॅन्न—आये हों ऐसा; तेवर् तम् ऊरुम्—देवों का लोक; नाकर् उलकुम्—नागों का (पाताल) लोक; उलैय—अस्तव्यस्त करते हुए; तेरिन् चेनै—रथों की सेना; तिरण्टतु—जुट आई। ३८५

भेरी का नाद हुआ कि गुरुत्वपूर्ण वर्षाकालीन मेघों के समान अगणित रथ आ गये। उनकी भीड़ और उनके शब्द के कारण आकाश और पाताल अस्तव्यस्त हो गये। ३८५

※ पोर्प्पॅ रुम्बणै बोम्मॅन् मुळक्कमा
नीर्त्त रङ्ग नॅडुन्दडन् दोळ्हळा
आर्त्तॅ ळुन्द दिरुदियि नार्हलिक्
कार्क्क रुङ्गडल् काल्हिळर्न् दॅन्नवे 386

इऱुतियिन्–कल्पान्त में; आर् कलि–सघोष; कार् करुम् कटल्–अति विशाल काला सागर; काल् किळर्न्तु अॅन्न–पवनोद्वेलित हुआ हो, ऐसा; पोर् पॅरुम् पणै–युद्धसूचक बड़े ढोलों का नाद; पोम् अॅनु मुळक्कमा–'भों' का उच्च नाद हुआ; नॅटुम् तटम् तोळ्कळ्–दीर्घ और विशाल भुजाएँ; नीर् तरङ्कमा–जल-तरंगें हुईं; आर्त्तु अॅळुन्ततु–(रथ-सेना) कोलाहल के साथ उठी। ३८६

वह सेना युगान्तकाल में पवनाद्वेलित हो उमड़नेवाले सघोष समुद्र के समान तुमुल नाद के साथ उठ आयी। युद्धसूचक ढोल ही उस समुद्र का गर्जन था। वीरों की सबल और लम्बी भुजाएँ उसकी तरंगें थीं। ३८६

※ काडु तुन्ऱि विशुम्बु करन्दॅन्न, नीडि यॅङ्गु निमिर्न्द नॅडुङ्गोडि
ऑडु मॅङ्गळ् पशियॅन् रुवन्दॅळुन्, दाडु हिन्ऱ वलहैयि नाडवे 387

काटु तुन्ऱि–सब वनों ने मिलकर; विचुम्पु–करन्तॅन्न–आकाश को ढक दिया हो, ऐसा; अॅङ्कुम्–सर्वत्र; नीटि–फैलकर; निमिर्न्त–ऊँची उठीं; नॅटुम् कॉटि–लम्बी ध्वजाएँ; अॅङ्कळ् पचि ओटुम्–हमारी भूख मिट जायगी; अॅन्ऱु–मानकर; उवन्तु अॅळुन्तु आटुकिन्ऱ–हर्ष के साथ उठकर नाचनेवाले; अलकैयिन्–प्रेतों के समान; आट–फहरती हैं, ऐसी स्थिति में। ३८७

रथ की ध्वजाएँ इतनी विपुल थीं कि वनों ने मिलकर आकाश को ढक दिया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित होता था। वे ध्वजाएँ ऐसा दृश्य प्रस्तुत करते हुए फहरीं कि 'हमारी भूख मिट गयी' —यह कहते हुए प्रेत नाच रहे हों। ३८७

❀ तऱियि नीङ्गिय ताऴ्दडक् कैत्तुणैक्
कुऱिहॉ ळामद वेऴक् कुऴुवनार्
शॆऱिविऩ् वाळॊडु वाळिडैत् तेय्न्दुहुम्
पॊऱियिऱ् कान्ऱॆङ्गुम् वॆङ्गनल् पॊङ्गवे 388

तऱियिन् नीङ्किय–खूँटों से अलग हुए; कुऱि कॊळा–किसी की परवाह न करनेवाले; ताऴ् तट कै तुणै–नीचे तक लटकनेवाली बड़ी दो सूँड़ों वाले; मत वेऴ कुऴु अतार्–मत्तगजों के झुण्ड के समान राक्षसों की; चॆऱिविन्–भरी भीड़ से; इटै–बीच में; वाळॊटु वाळ् तेय्न्तु–तलवारों के टकराने से; उकुम्–गिरनेवाले; पॊऱियिल्–अग्निकणों से; कान् ऍङ्कुम्–वन में सर्वत्र; वॆम् कतल् पॊङ्क–जलानेवाली आग के उमड़ते। ३८८

(सेनाओं का वर्णन जारी है।) खूँटों से अलग छूटे हुए और बेपरवाह और नीचे लटकनेवाली दो मोटी सूँड़ों के मत्त गजदल के समान राक्षसों की भीड़ में तलवारें परस्पर टकरायीं। तब अग्निकण नीचे गिरे। उनके कारण जंगल भर में गरम आग प्रज्वलित हुई। (ऐसी सेना)। ३८८

मुरुडि रण्डु मुऴङ्गु मुऴक्कॊलि, उरुडि रण्डॆऴुन् देरॊलि युट्पुह
अरुडि रण्ड वरुक्कन्ऱऩ् मेलऴऩ्, ऱिरुडि रण्डुवन् दीण्डिय वॆन्ऩवे 389

इरण्टु–दोनों बाजुओं में; मुरुटु मुऴक्कु–'मुरुडु' नामक ढोल की; मुऴक्कु ऑलि–ठनक का शब्द; उरुळ् तिरण्टु ऍऴुम्–चलनेवाले पहियों से उठनेवाले; तेर् ऑलियितुळ्–रथ के शब्दों से; पुक–मिल गया, इस प्रकार; अरुळ् तिरण्ट–घनीभूत कृपा के समान; अरुक्कन् तन् मेल्–सूर्य पर; अऴन्ऱु–कोप करके; इरुळ्–अन्धकार; तिरण्टु वन्तु–मिल आकर; ईण्टियतु ऍन्न–धावा बोल रहा हो ऐसा। ३८९

दोनों बाजुओं में 'मुरुडु' नाम के ढोलों का नाद उठा और वह चलनेवाले अनेक रथों के पहियों से उठे हुए नाद में समा गया। सभी जीवों पर होनेवाली दया घनीभूत हो उठी हो, ऐसा दिखनेवाले सूर्य पर सारे अन्धकार ने मानो दल बाँधकर आक्रमण किया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करती हुई (वह सेना आई)। ३८९

❀ तलैयिऩ् माशुणन् दाङ्गिय तारणि, निलैनि लादु मुदुहै नॆळिप्पुऱ
उलैवि लेऴुल हत्तिनु मोङ्गिय, मलैयॆ लामॊरु माडुतॊक् कॆन्ऩवे 390

माचणम् तलैयिल् ताङ्किय–शेषनाग के सिर पर धृत; तारणि–धरणी के;

निलै निलातु–अस्थिर होकर; मुतुकै नॅळिप्पु उऱ–अपनी पीठ पर वल खाते; एळ् उलकत्तिनुम्–सातों लोकों में; ओङ्किय मलै ॲलाम्–ऊँचे उगे पर्वत सभी; ऑरु माट्ु–एक ही स्थान पर; तॉक्कतु अन्न–एकत्रित हो आये हों, ऐसा। ३९०

आदिशेष के द्वारा उसके सिर पर धारण की हुई भूमि की पीठ पर वल पड़ गयी; ऐसा सातों लोकों के अति ऊँचे सभी पहाड़ एक स्थान पर जुट आये हों (ऐसा वह सेना आई)। ३९०

आळिहळ् पूण्डन्न वरिहळ् पूण्डन्न, मीळिहळ् पूण्डन वेङ्गै पूण्डन्न
ञाळिहळ् पूण्डन नरिहळ् पूण्डन, कूळिहळ् पूण्डन्न कुदिरै पूण्डन 391

आळिकळ् पूण्टन्न–'याळियों' (अप्राप्य भयंकर सिंहों) से युक्त; अरिकळ् पूण्टन्न–सिंहों के साथ जुते हुए; मीळिकळ् पूण्टन्न–प्रेतों से युक्त; वेङ्कै पूण्टन्न–बाघों से युक्त; ञाळिकळ् पूण्टन–कुत्तों से जुते हुए; नरिकळ् पूण्टन्न–सियारों से युक्त; कूळिकळ् पूण्टन्न–भूतों से युक्त; कुतिरै पूण्टन्न–घोड़ों से युक्त (रथ आये)। ३९१

रथों में शरभों ('याळि' नामक अब अप्राप्य केसरी जाति के भयंकर जानवरों) से युक्त, सिंहों से जुते हुए, प्रेतों, भूतों, व्याघ्रों, कुत्तों, सियारों और अश्वों से जुते हुए रथ थे। ३९१

वल्लियक् कुळाङ्गळो मळैयि नीट्टमो
ऑल्लिबत् तॉहुदियो वोङ्गु मॊङ्गलो
अल्लमर् ररिहळि नन्हि मोवॅन्नप्
पल्पदि नायिरम् पडैक्कै वीररे 392

वल्लिय कुळाङ्कळो–बाघों के दल या; मळैयिन् ईट्टमो–मेघ-समूह या; ऑल् इप तॉकुतियो–तेज चाल के गजों के झुण्ड या; ओङ्कुम् ओङ्कलो–ऊँचे पर्वत; अल्ल–जो नहीं थे; अरिकळिन् अनिकमो–सिंहों की सेना क्या; ॲन्न–ऐसे कहने योग्य; पल् पतिनायिरम्–अनेक दस सहस्र; पटै कै वीरर्–शस्त्रधारी वीर (आये)। ३९२

अनेक सहस्र वीर आये, जिनकी व्याघ्रों का समूह, मेघमण्डल, त्वरित-गति गज, ऊँचे पर्वत या सिंहों की सेनाओं से तुलना की जा सकती थी। वे हाथों में हथियार लिये आये। ३९२

एऱ्ऱिन मार्त्तन्न वेन्न मार्त्तन, काऱ्ऱिन्न मार्त्तन्न कळुदै यार्त्तन
तोऱ्ऱिन्न मात्तिरत् तुलहु शूळ्वरुम्, पाऱ्ऱिन मार्त्तन्न पणिल मार्त्तन 393

एऱु इनम् आर्त्तन्न–सिंहों के 'लेंहड़े' (झुण्ड) गरजे; एनम् आर्त्तन्न–सुअर चिल्लाये; काऱु इनम् आर्त्तन–प्रेतों के दलों ने शोर मचाया; कळुतै आर्त्तन्न–गधे रेंके; तोऱ्ऱिन्न मात्तिरत्तु–(भाव) उठते ही; उलकु चूळ् वरुम्–संसार भर में घूम आनेवाले; पाऱु इनम्–गीधों के समूह; आर्त्तन–बोले; पणिलम् आर्त्तन्न–शंख बजे। ३९३

उनमें सिंह गरजे, सुअर चीखे; प्रेत चिल्लाए और गधे रेंके। विचार

करते ही सारी दुनिया घूम आ सकनेवाले गीध जोर से बोले। शंख बजे। (आर्त्तन का अर्थ 'बँधे थे' भी ह)। ३९३

तेरिन्नन् दुवन्ऱिन शिऱुहट् चॅम्मुहक्, कारिन्न नॅरुङ्गिन्न कालिऱ् काऱ्परित्
तारिनङ् गुळ्विन दडैयिल् कूऱ्ऱॅनप्, पेरिन्नङ् गडलॅनप् पॅयरुङ् गालेये 394

पेर् इत्तम्–पदाति ने; तटैयिल् कूऱ्ऱु ॲंत–दुर्द्धर्ष यम के समान; कटल् ॲंत–समुद्र के समान; पॅयरुम् काले–जब कूच किया; तेर् इत्तम् तुवन्ऱिन्न–रथदल मिल आये; चिऱु कण्–छोटी आँखों और; चॅम् मुक–लाल मुख के; कार् इत्तम्–गज-समूह; नॅरुङ्कित्त–आ जुटे; कालिल्–वायु के समान; काल् परि–पैर रखनेवाले (दौड़नेवाले) अश्वों की; तार् इत्तम्–सेना के दल; कुळुवित्त–भीड़ लगाते आये। ३९४

पदाति वीर आये। वे अप्रतिहत यम के समान, सघोष समुद्र के समान कूच कर आये। तब उनके साथ रथों, छोटी आँखों के और लाल मुखों के गजों और वायुवेग से चलनेवाले अश्वों की सेनाएँ भी आ सम्मिलित हुईं। ३९४

मळुक्कळु मयिल्हळुम् वयिर वाट्कळुम्
ॲळुक्कळुन् दोमरत् तॉहैयु मीट्टियुम्
मुळक्कलु मुशुण्डियुन् दण्डु मत्तलेक्
कळुक्कळु मुलक्कैयुङ् गाल पाशमुम् 395

मळुक्कळुम्–परशु; अयिल्कळुम्–भाले; वयिर वाट्कळुम्–सुदृढ़ तलवारें; ॲळुक्कळुम्–लोहे के मूसल; तोमर तॉकैयुम्–तोमर-समूह; ईट्टियुम्–बर्छियाँ; मुळुक्कलुम्–वर्तुल पत्थर; मुचुण्टियुम्–'भुशुंडी' नाम के हथियार; तण्टुम्–दण्ड; मु तले ॲळुक्कळुम्–तीन सिर वाले शूल; उलक्कैयुम्–और मुद्गर; काल पाचमुम्–काल-पाश। ३९५

उनके पास निम्नलिखित हथियार थे। परशु, भाले, सुदृढ़ असियाँ, लोहे के मूसल, तोमर-समूह, वर्तुल पत्थर, भुशुण्डी नामक हथियार, दण्डायुध, त्रिशूल व काले पाश; । ३९५

कुन्दमुङ् गुलिशमुङ् कोलुम् पालमुम्
अन्दमिल् शाबमुम् शरमु माळियुम्
वॅन्दॉळिल् वलयमुम् विळङ्गुश् जङ्गमाम्
पन्दमुम् कप्पणप् पडैयुम् पल्लमुम् 396

कुन्तमुम्–साँग; कुलिचमुम्–कुलिश; कोलुम्–छड़ियाँ; पालमुम्–भिंडिपाल; अन्तम् इल् चापमुम्–बेशुमार चाप; चरमुम्–शर; आळियुम्–चक्र; वॅम् तॉळिल् वलयमुम्–भयंकर वलय; विळङ्कु चङ्कमाम्–श्वेत शंखों की; पन्तमुम्–राशियाँ; कप्पण पटैयुम्–'कप्पण' नामक हथियार; पल्लमुम्–बल्लम। ३९६

कुंत, कुलिश, छड़ियाँ, भिण्डिपाल, असंख्यक चाप, शर, चक्र, भयंकर वलय, श्वेत शंखबंद, कप्पण नामक हथियार और बल्लम। ३९६

आदियि लरुक्कनु मनलु मञ्जुरुम्, शोदिय शोरियुन् तूवुन् दुन्निन
एदिहण् मिडैन्दन विमैय वर्क्कॅलाम्, वेदनै कॉडुत्तन वाहै वेय्न्दन 397

एतिकळ्–हथियार; आति इल् अरुक्कनुम्–अनादि सूर्य; अनलुम्–अग्नि भी; अञ्चु उरुम्–(जिसको देख) भयभीत हो जायँ, ऐसी; चोतिय–ज्योति वाले; चोरियुम् तूवुम्–रक्त और मांस से; तुन्नित्त–लिप्त थे; इमैयवर्क्कु ॲलाम्–सभी देवों को; वेतनै कॉट्टुत्तन–जिन्होंने वेदना दी थी, ऐसे; वाकै वेय्न्तत–अनेक विजय पा चुके हैं, वे; मिटैन्तत्त–भरे रहे। ३९७

ये ऐसे हथियार थे, जिनकी ज्योति के सामने अनादि सूर्य और अनल भी डरते थे; जो मांस और रक्त से लिप्त थे; जिन्होंने देवों को त्रास दिया था और जो हर बार उन राक्षसों को विजय दिला चुके थे। ३९७

आयिर मायिरङ् गळिऱ्ऱि नाऱ्ऱलर्, मायिरु ञालत्तै विळुङ्गुम् वायिनर्
तीयॅरि विळियिनर् निरुदर् शेनैयिन्, नायहर् पदिन्मरो डडुत्त नाल्वरे 398

निरुतर् चेनैयिन् नायकर्–राक्षस-सेना के नायक; पतिन्मरोटु अटुत्त नाल्वर्–दस और चार चौदह; आयिरम् आयिरम् कळिऱ्ऱिन्–सहस्र (अनेक) सहस्र गजों के; आऱ्ऱलर्–बल वाले; मा इरु ञालत्तै–बहुत बड़े लोक को; विळुङ्कुम् वायिनर्–निगल सकनेवाले मुखों के; ती ॲरि विळियिनर्–आग उगलती दृष्टि वाले। ३९८

इन सेनाओं के चौदह सेनानायक थे। वे एक-एक सहस्र-सहस्र गजों का बल रखते थे। वे एक-एक सारी धरती को निगल सकें, ऐसा बड़ा मुख रखते थे। उनकी आँखें आग बरसाती थीं। ३९८

आऱ्ऱिनो डायिर मम्मैन्द वायिरम्, कूऱ्ऱिन दॉरुपडै कुऱित्त वप्पडै
एऱ्ऱिन देळिन दिरट्टि यॅन्बराल्, ऊऱ्ऱिन शेनैयिन् ऱॉहुदि युन्नुवार् 399

ऊऱ्ऱ चेनैयिन् तॉकुति–युद्ध-निपुण सेना की संख्या का; उन्नुवार्–हिसाब लगानेवालों का; कूऱ्ऱितु–कहना है; ऑरु पटै–एक पलटन; आऱ्ऱितोटु आयिरम् अमैन्त–छः हजार के; आयिरम्–हजार (छः लाख); कुऱित्त अ पटै–जिसकी गणना हुई, उस पूरी सेना की संख्या; एळित्तु इरट्टि–चौदह (पलटनों का कुल); ॲन्पर–कहते हैं। ३९९

उस सेना में चौदह सेनाएँ मिली थीं। किसी ने गिनकर बताया कि हर सेना में साठ लाख संख्या के वीर थे। ऐसी चौदह सेनाओं का मेल था वह बड़ी सेना। ३९९

उरत्तिन रुरुमॅन वुरऱ्ऱुम् वायिनर्
करत्तॅडि पडैयिनर् कमलत् तोन्ऱरुम्
वरत्तिनर् मलैयॅन मळैतु यिन्ऱॅळुम्
शिरत्तिनर् तरुक्किनर् शॅरुक्कुज् जिन्दैयार् 400

उरत्तिनर्–वीर्यवान; उरुम् ॲन उरऱ्ऱुम् वायिनर्–वज्र के समान नाद करनेवाली

बोली के; करत्तु ऍऱि पटैयिऩर्–हाथ से फेंके जानेवाले हथियार-धारी; कमलत्तोन तरुम् वरत्तित्तर्–ब्रह्माजी से प्राप्त वर वाले; मलै ऍऩ–पर्वत समझकर; मऴै तुयिऩ्ऱु ऍऴुम्–मेघ जिन पर सोकर उठ जाते हैं, वैसे; चिरत्तित्तर्–सिर वाले; तरुक्किनर्–गर्वीले; चॅरुक्कुम् चिन्तैयार्–युद्धोत्साही मन वाले। ४००

उस सेना के वीर बड़े ही वली थे। वज्र के समान वोली वाले थे। हाथों से हथियार चलाकर लड़नेवाले थे। उन्हें ब्रह्माजी से वर मिले थे। उनके सिर ऐसे थे कि मेघ भी उन्हें पर्वत समझकर उन पर आकर ठहरते, सोते और उनसे उठकर चले जाते। वड़े गर्वीले थे और शत्रुओं को मिटाने का अभिमान व उत्साह रखते थे। ४००

विण्णळ विडनिमिर्न् दुयर्न्द मेऩियर्
कण्णळ विडलरु मार्बर् कालिनाल्
मण्णळ विडुनॅडु वलत्तर् वाऩिडै
ऍण्णळ विडलरुञ् जॅरुवॆऩ् ऱेऱिनार् 401

विण् अळवु इट–आकाश को नापने के लिए; निमिर्न्तु उयर्न्त–सीधे और ऊँचे हुए; मेऩियर्–शरीर वाले; कण् अळव इटल् अरुम्–दृष्टि से नापना कठिन; मार्पर–ऐसे छाती वाले; कालिऩाल्–पैरों से; मण् अळवु इट–पृथ्वी को नाप सकनेवाली; नॆटुवलत्तर्–अधिक शक्ति वाले; वाऩ् इटै–आकाश में; ऍण् अळवु इट अरुम्–गिनना कठिन; चॅरु वॆऩ्ऱु–उतने युद्ध में जीतकर; एऱिऩार्–वढ़े-चढ़े थे। ४०१

उनके शरीर इतने ऊँचे थे कि वे आकाश को नाप सकते थे। वे दृष्टि माप न सके ऐसे विशाल वक्ष वाले थे। उनके पैरो में इतना वल था कि भूमि को नाप सकते थे। गिनती असम्भव हो, उतनी लड़ाई में विजय पाकर वे वढ़े-चढ़े हो गये थे। ४०१

इन्दिरऩ् मुदलिऩो रॅऱिन्द मापडै, शिन्दिन तॅऱित्तुहच् चॅऱिन्द तोळिनार्
अन्दह ऩडितॊऴु दडङ्गु माणैयार्, वॆन्दिऱ लुरुवुहॊण् डऩैय मेऩियार् 402

इन्तिरऩ् मुतलिऩोर्–इन्द्रादि देव; ऍऱिन्त–जो फेंकते थे; मा पटै–उन श्रेष्ठ हथियारों को; तॆऱित्तु चिन्तित्त उक–झेलकर तोड़कर छितरा दिया (जिन्होंने), ऐसे; चॅऱिन्त तोळिऩार्–कठोर कन्धों वाले; अन्तकऩ्–यम; अटितॊऴुतु अटङ्कुम्–चरण-वन्दना करके अधीन रहेगा; आणैयार्–ऐसे रोबीले; वॆम् तॊऴिल्–क्रूर काम ने ही; उरुवु कॊण्टऩैय–रूप धर लिया हो, ऐसे; मेऩियार्–शरीर वाले। ४०२

उनके सारयुक्त सबल कंधे ऐसे थे कि इन्द्रादि देवों द्वारा फेंके गये सशक्त हथियार उनसे लगकर टूट गये और विखर गये। यम भी विनत होकर उनकी आज्ञा मानता था, ऐसे रोबीले थे। क्रूर कार्य ने ही एक रूप धर लिया हो, ऐसे रूप वाले थे। ४०२

चूलमुस् पाशमुन् दॊडर्न्द शॆम्मयिर्च्
चालमुन् दरुहणु मॆयिरुल् दाङ्गिनार्
आलमुस् वॆळिदॆनु निरत्त राऱ्ऱलाल्
कालनुङ् गाललॆन् ऱयिर्क्कुङ् गाट्चियार् 403

चूलमुम् पाचमुम्–शूल और पाश; तॊटर्न्त–मिले रहे; चॆम् मयिर् चालमुम्–लाल बाल-जाल; तरुकणुम्–भयंकर आँखें; ऎयिरुम्–और वक्र दाँत; ताङ्किनार्–धारण करनेवाले; आलमुम् वॆळितु ऎनुम्–इसके सामने हलाहल श्वेत है, ऐसा; निरत्तर्–रंग वाले; आऱ्ऱलाल्–शक्ति में; कालनुम्–यम भी; कालन् ऎन्ऱु–अपना काल समझे; अयिर्क्कुम् काट्चियार्–संशय और भय करेगा, ऐसे आकार वाले। ४०३

उनके पास शूल, पाश आदि हथियार थे। शरीर पर लाल बाल घने रूप से उगे थे। भयंकर आँखें थीं। उनका रंग इतना काला था कि हलाहल भी श्वेत लगता था। शक्ति में वे इतने बढ़े थे कि यम भी उन्हें अपने यम की शंका करता और भय मानता। ४०३

कऴलिनर् तारिनर् कवश मार्बिनर्, निऴलुरु पूणिनर् नॆरित्त नॆऱ्ऱियर्
अऴलुरु कुञ्जिय रमरै वेट्टुवन्, दॆऴलुरु मनत्तिन रॊरुमै यॆय्दिनार् 404

कऴलिनर्–पायलधारी; तारिनर्–मालाधारी; कवच मार्पिनर्–कवचवक्ष; निऴल् उरु पूणिनर्–प्रभापूर्ण आभरणधारी; नॆरित्त नॆऱ्ऱियर्–कोप से कुंचित भाल वाले; अऴल् उरु कुञ्चियर्–अग्निशिखा के समान घने केश वाले; अमरै वेट्टु–युद्ध चाहकर; उवन्तु ऎऴल् उरु–चाव लिये उमँगनेवाले; मनत्तिनर्–मन के; ऒरुमै ऎय्तिनार्–आपस में मेल रखनेवाले। ४०४

उनके पैरों में वीर कंकण पड़े थे। छाती पर कवच थे। वे कान्ति-पूर्ण आभरण पहने हुए थे। उनके भाल कोप-कुंचित थे। केश अग्नि-शिखा के समान लाल और डरावने थे। युद्ध करना चाहकर चाव के साथ उमंगित होनेवाले मन के वे परस्पर मेल रखते थे। ४०४

मरुप्पिऱ मदक्कळिऱ् ऱमरर् मन्ननुम्
विरुप्पुऱ मुहत्तॆदिर् विऴिक्किन् वॆन्निडुम्
उरुप्पॆऱ दुलैवुऱ मुलह मून्ऱिनुम्
शॆरुप्पॆऱात् तिनवुऱ शिहरत् तोळिनार् 405

इऱ मरुप्पु–अटूट (सबल) दाँतों के; मत कळिऱ्ऱु–मत्तगज (ऐरावत) पर सवार; अमरर् मन्ननुम्–देवेन्द्र भी; मुकत्तु ऎतिर्–इनके मुख के सामने; विऴिक्किन्–आँख खोल देखेगा तो; विरुप्पु उऱा–सामने रहना न चाहकर; वॆन् इटुम्–पीठ दिखाते हुए भाग जायगा; उरु पॆऱातु–अस्थिर और; उलैवुऱुम्–चंचल; उलकम् मून्ऱिनुम्–तीनों लोकों में; चॆरु पॆऱा–युद्ध प्राप्त न करके; तिनवु उऱु–खुजली से भरे; चिकर तोळिनार्–पर्वतशिखर-सम कन्धों वाले। ४०५

वे राक्षस ऐसे (वीर) थे कि देवेन्द्र भी, जो अक्षुण्ण, सबल दाँतों वाले ऐरावत गज का स्वामी है, उनको सामने से देखे तो ठहरना न चाहकर पीठ दिखाते हुए भाग जाय ! नश्वर तीनों (स्वर्ग, मध्य और पाताल) लोकों में उन्हें युद्ध का अवसर नहीं मिला था अतः पर्वतशिखर-सम उनके कंधों में खुजली (युद्ध की प्यास) हो गयी थी। ४०५

कुञ्जरङ् गुदिरैपेय् कुरङ्गु कोळरि
वॅम्जिनक् करडिनाय् वेङ्गै याळियॅन्
ड्ऱ्ञ्जुऱक् कनल्बुरै मुहत्त राऱ्हलि
नञ्जुदीक् कॅन्नप्पुरै नयनत् ताऱ्हळुम् 406

कुञ्चरम् कुतिरै–कुंजर, अश्व; पेय्–प्रेत; कुरङ्कु–वानर; कोळ् अरि–सबल सिंह; वॅम् चितम् करटि–भयंकर क्रुद्ध रीछ; नाय्–कुत्ता; वेङ्कै–व्याघ्र; याळि–'याळि' (शरभ) नामक जानवर; ऍन्ऱु–समझकर; अञ्चु उऱ–भय खाए ऐसा; कतल् पुरै मुकत्तर्—अनल-सम मुख वाले; आर्कलि नञ्चु–सघोष सागर से (मंथन के समय) उत्पन्न विष; तोक्कॅन्न पुरै–घनीभूत हुआ हो ऐसे; नयतत्तार्कळुम्–नेत्र वाले थे। ४०६

किसी का मुख कुंजर के समान था, किसी का अश्व के समान। प्रेत, वानर, बली सिंह, भयंकर और क्रुद्ध रीछ, कुत्ता, व्याघ्र और शरभ के समान लगनेवाले उनके डरावने मुख अनल-सदृश थे। समुद्र से (क्षीरसागर-मन्थन के अवसर पर) उत्पन्न हलाहल के समान उनकी आँखें थीं। ४०६

ऍण्गैय रॅळुहैय रेळु मॅट्टुमायक्
कण्गनल् शॊरिदरु मुहत्तर् कालिनर्
वण्गैयिल् वळैत्तुयिर् वारि वायिलिट्
टुण्गैयि नुवहैय रुलप्पि लार्हळुम् 407

ऍण् कैयर्–आठ हाथ वाले; ऍळु कैयर्–सात हाथ वाले; एळुम् ऍट्टुम् आय्–सात-सात और आठ-आठ; कण्–आँखें; कतल् चॊरि तरु–अंगार उगलती थीं (जिनमें); मुकत्तर्–ऐसे मुख वाले; कालितर–वैसे ही पैरों वाले; उयिर्–जीवों को; वण् कैयिल्–सबल हाथों से; वळैत्तु वारि–समेट लेकर; वायिल् इट्टु–मुख में डालकर; उण्कैयिल्–खाने में; उवकैयर्–आनन्द पानेवाले; उलप्पु इलार्कळुम्–असंख्यक लोग। ४०७

किसी के आठ हाथ थे, किसी के सात। वैसे ही सात-सात, आठ-आठ आँखों के द्वारा उनके मुख आग बरसा रहे थे। वैसे ही उनके पैर सात-सात या आठ-आठ थे। उनको जीवों को अपने सबल हाथों से समेट ले अपने मुख में डालकर खाने में बड़ा आनन्द आता था। वे अगणित थे। ४०७

इयक्करिऱ् परित्तत्त ववुण रिट्टत्त
मयक्कुरुत् तमररै वलियिऩ् वाङ्गिऩ
तुयक्किल्हल् दिरुवरैत् तुरन्दु वारिऩ
नयप्पुरु शित्तरै नलिन्दु वव्विन 408

इयक्करिल् परित्तत्त–यक्षों से छीन लिये गये; अवुणर् इट्टत्त–दानवों से (भागते वक्त) नीचे डाले हुए; अमररै–सुरों को; मयक्कुरुत्तु–माया से मोहित करके; वलियिन् वाङ्कित्त–अपने बल से लिये गये; तुयक्कु इल्–अथक; कन्तिरुवरै–गन्धर्वों को; तुरन्तु वारिन–(डरा-धमकाकर उनको) भगाकर उनसे लिये गये; नयप्पु उरु चित्तरै–सुलह करनेवाले सिद्धों से; नलिन्तु वव्विन–दुख देकर उगाह लिये गये (झण्डे आदि)। ४०८

उनके पास झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने यक्षों के पास से छीन लिया था; दानवों ने युद्धभूमि में छोड़ दिया था; देवों को भ्रमित करके ले लिया था; अथक गन्धर्वों को भगाकर उनसे ग्रस लिया था। वे भी झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने सन्धि करने को उत्सुक सिद्धों को सताकर छीन लिया था। ४०८

कॉडिदळै कविहैवान् ड़ॉङ्गल् कुञ्जरम्
पडियुरु पदाहैमी विदानम् बल्मणि
इडैमिळिर् शामरैक् कुळाङ्गॉण् डॅङ्गणुम्
मिडैदलि नुलहॅलाम् वॅयिलि ळन्दवे 409

कॉटि—वस्त्र-झण्डे; तळै–मोरछल; कविकै–छत्र; वान् तॉङ्कल्–बड़े हार; कुञ्चम् मेल् पटि उरु–झालरों से युक्त; पताकै–बड़ी पताकाएँ; मी वितानम्–उच्च वितान; पल् मणि इटै मिळिर्–अनेक रत्न बीच-बीच में चमकते हैं, ऐसे; चामरै कुळाम्–चँवर-समूह; कॉण्टु–इनको लेकर; ऍङ्कणुम् मिटैतलिल्–सब जगह भीड़ लगाते रहे, इसलिए; उलकु ऍलाम्–सारी धरती; वॅयिल् इळन्त–धूप से वंचित हो गई। ४०९

उस विपुल सेना के पास झण्डे थे, मोरछल थे और छत्र थे। बड़े-बड़े हार, झालरों सहित बड़ी-बड़ी पताकाएँ, वितान और ऐसे चामरों की राशियाँ जो रत्नों से सजे थे। ये सब लिये हुए वह सेना भूमि पर सर्वत्र फैली रही। इसलिए भूतल धूप से वंचित रह गया। ४०९

ऍळुवरी डॅळुवर्नी ळुलह मेळॊडेळ्
तळुविय वॅन्ऱियर् तलैवर् तानैयर्
मळुविनर् वाळिनर् वयङ्गु शूलत्तार्
उळुवैयी डरियॅन वुडऱ्ऱुञ् जीऱ्ऱत्तार् 410

तानैयिन् तलैवर्–सेनानायक; ऍळुवरॊटु ऍळुवर्–सात और सात (चौदह); नीळ् उलकम्–विस्तृत लोक; एळॊटु एळ्–सात और सात; तळुविय–(इनमें) व्याप्त;

वॆन्ऱियर्–विजय के स्वामी; मऴुवित्तर्–परशु; वाळित्तर्–तलवार; वयङ्कु चूलत्तर्–और उज्ज्वल शूलधारी; उऴुवैयॊटु अरि अॅत–व्याघ्र और केसरी के समान; उटऱ्ऱुम्–दुखानेवाले; चीऱ्ऱत्तर्–क्रोधी। ४१०

सेनानायक चौदह थे। उनकी विजय चौदहों भुवनों पर व्याप्त थी। उनके पास परशु तलवारें और चमकदार शूल आदि हथियार थे। वे व्याघ्र और सिंहों के समान लोगो को अपार दुख देनेवाले क्रोधशील राक्षस थे। ४१०

विल्लिनर् वाळिन रिदऴै मेलिडुम्
पल्लिनर् मेरुवैप् पऱिक्कु माऱ्ऱलर्
पुल्लिनर् तिशैदॊऱुम् पुरवित् तेरिनर्
शॊल्लिन मुडिक्कुरुन् दुणिवि नॆञ्जिनार् 411

विल्लित्तर्–धनुर्धर; वाळिनर्–तलवारधारी; इतऴै मेलिटुम् पल्लिनर्–अधरों पर टिके दाँत वाले; मेरुवै पऱिक्कुम् आऱ्ऱलर्–मेरु को उखाड़ लेने की शक्ति रखनेवाले; पुरवि तेरित्तर्—अश्व-जुते रथ वाले; चॊल्लित्त् मुटिक्कुरुम्–कहे हुए कार्य को पूरा करने का; तुणिवित्त् नॆञ्चित्तार्–साहस रखनेवाले मन के; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; पुल्लित्तर्–आ जुटे। ४११

वे सेनानायक धनुष और तलवारों से लैस थे। उनके दाँत अधरों को काट रहे थे। मेरु को भी उखाड़ सकनेवाले वे अश्व-जुते रथों पर सवार थे। जो कहते वही कर दिखाने का साहस रखते थे। वे सभी दिशाओं में घेरकर खड़े रहे। ४११

तूडणन् ऱिरिशिरात् तॊऩ्ऱ लादियर्
कोडणै मुरशिनङ् गुळिरुञ् जेनैयर्
आडव रुयिर्हव रलङ्गल् वेलिनार्
पाडव निलैयिनर् पलरुम् जुऱ्ऱिनार् 412

आटवर् उयिर् कवर्–(सामने लड़नेवाले) वीरों की जान हर लेनेवाली; अलङ्कल् वेलिनार्–माला से अलंकृत बर्छी वाले; पाटव निलैयित्तर्–पटु स्थिति में रहनेवाले; कोटणै मुरचु इतम्–गम्भीर नादयुक्त ढोलों के समूह; कुळिरुम्–जिसमें ठनक उठते थे, ऐसी; चेतैयर–सेना वाले; तूटणत्त् तिरिचिरा तोऩ्ऱल् आतियर्–दूषण, त्रिशिरा आदि नायकों को पुरस्सर करते हुए; पलरुम्–अनेक सेनानी; चुऱ्ऱित्तार्–आ जुटे। ४१२

उनके पास माला से अलंकृत भाले थे, जो सामने आये शत्रुओं के प्राण हर लेते थे। वे दक्षता में वढ़ी-चढ़ी स्थिति में थे। उनके पास बड़ी सेनाएँ थीं, जिनमे ढोलो की उच्च ठनक सुनाई देती थी। दूषण, त्रिशिरा आदि अधिपतियों को पुरस्सर करके वे आ एकत्र हुए। ४१२

आन्ऱमै यॅरिपडै यळुवत् तारहलि, वान्ऱॊडर् मेरुवै वळैत्त दामॅन्न
ऊन्ऱिन तेरिन् नुयर्न्द तोळिनन्, तोन्ऱिनन् करन्नमन् ऱुणुक्क मॅय्दवे 413

आन्ऱु अमै–खूब मिली रही; ऍरि पटै–शत्रुघातक सेनाएँ रूपी; अळुवत्तु आर् कलि–गम्भीर सघोष सागर; वान् तॊटर् मेरुवै–गगनस्पर्शी मेरु को घेर आया हो, ऐसा; ऊन्ऱिय तेरितन्–मध्य में स्थापित रथ वाला; उयर्न्त तोळितन्–उन्नत भुजाओं वाला; करन्–खर; नमन् तुणुक्कम् ऍय्त–यम को आतंकित करते हुए; तोन्ऱितन्–प्रकट हुआ (दिखाई दिया) । ४१३

वे सेनाएँ, जो बड़ी थीं और वीरों से भरी थी, गम्भीर समुद्रों के समान थीं। उनके मध्य खर का रथ स्थापित था। यह दृश्य ऐसा लगा, मानो समुद्र ने मेरु को घेर लिया हो ! वह रथ आकाश तक ऊँचा था और मेरु के समान था। उसमें बैठे हुए उन्नत कंधों वाला खर, यम को भी भयभीत करते हुए दिखाई दिया। ४१३

अशुम्बुरु मदहरि पुरवि याडहत्, तशुम्बुरु शयन्दन्न मरक्कर् ताडर
विशुम्बुरु तूळियाल् वॅण्मै मेयिन्न, पशुम्बरि पहलवन् बॅम्बॊर् ऱेररो 414

अचुम्पु उरु–मद बहानेवाले; मत करि–मत्तगज; पुरवि–अश्व; आटक तचुम्पु उरु–स्वर्णकलशों वाले; चयन्तनम्–स्यंदन; अरक्कर् ताळ्–पदाति राक्षस वीरों के; ताळ्–अपने पैरों से; तर–उठनेवाली; विचुम्पु उरु तूळियाल्–व आकाश पर जमी धूलि से; पकलवन्–दिनकर के; पचुम् करि–हरे घोड़े; पॆम् पॊन् तेर्–व चोखे स्वर्ण का रथ; वॆण्मै मेयित्त–धवलता से ढक गये। ४१४

मद बहानेवाले मत्तगज, अश्व, स्वर्णकलशों वाले रथ, पदाति के राक्षस वीर —इन सबके पदाघात से धूलि जो उड़ी, उससे दिनकर के हरे घोड़ों और स्वर्णरथ पर भी धवलता छा गयी। यानी वे श्वेत दिखे। ४१४

वन्नन्दुहळ् पट्टन्न मलैयिन् वानुयर्, कन्नन्दुहळ् पट्टन्न कडलह डूर्न्दन्न
इन्नन्दॊहु तूळिया लिशैप्प दॆन्निन्च्, चिन्नन्दॊहु नॆडुङ्गडर् चेनै शॆल्लवे 415

चित्तम् तॊकु–उमड़ते क्रोध की; नॆटुम् कटल् चेत्तै–विशाल सागर-सी सेना; चॆल्ल–जब (जनस्थान से पंचवटी की ओर) चली तब; इत्तम् तॊकु तूळियाल्–विपुल राशि में उठी धूलि से; वत्तम्–वे वन; तुकळ् पट्टत्त–सर्वत्र धूलि से ढक गये; वान् उयर्–आकाश में ऊँचे उठे; मलैयिन् कत्तम्–पर्वतों पर के घन; तुकळ् पट्टत्त–धूलि से भर गये; कटल्कळ्–समुद्र; तूर्न्तत्त–भरकर धरती बन गये; इनि ऍन् इचैप्पतु–आगे क्या कहा जाय। ४१५

जब क्रोधोन्मत्त, विशाल सागर-सम सेना जनस्थान से पंचवटी जाने लगी, तब धूलि की राशि इतनी उठी कि वन सब धूलिधूसरित हो गये। आकाशस्पर्शी पर्वतों पर के मेघ ढक गये। समुद्र भी पटकर धरती बन गये। इससे बढ़कर क्या कहा जाय ? । ४१५

निलमिशै विशुम्बिडै नॆरुक्क लानॆड्डु
मलैमिशै मलैयिनम् वरुव पोन्मलैत्
तलैमिशैत् तलैमिशैत् ताविच् चॆन्ऱनर्
कॊलैमिशै नञ्जॆनक् कॊदिक्कु नॆञ्जिनार् 416

कॊलै मिचै–मारने के उत्साह में; नञ्चु ॲन–विष के समान; कॊतिक्कुम् नॆञ्चिनार्–खौलते मन वाले; निलमिचै–भूमि पर; विचुम्पु इटै–आकाश पर; नॆरुक्फलाल्–स्थानाभाव हो जाने से; नॆटु मलै मिचै–बड़े पर्वतों पर; मलै इतम् वरुव पोल्–पर्वत-समूह आ रहा हो, ऐसा; मलै तलै मिचै तलै मिचै–पर्वत-शिखर से शिखर पर; तावि चॆन्ऱतर्–लपकते चले। ४१६

युद्ध में शत्रुसंहार करने के उत्साह के साथ, खौलता विष-सम मन लेकर जो वीर जा रहे थे, उनको पर्वतों के शिखरों पर चलनेवाले अन्य पर्वतों के समान शिखर से शिखर उछलकर जाना पड़ता था; क्योंकि सारी भूमि वीरों से भर गयी थी। ४१६

❀ वन्ददु शेनै वॆळ्ळम् वळ्ळियोन् मरुङ्गिन् माया
बन्दमा विनैयम् माळप् पट्रऱु पॆरिय योर्क्कुम्
उन्दरु निलैय दाहि युडनुडैन् दुयिर्ह ळम्मै
अन्दहर्क् कळिक्कु नोय्पो लरक्किमुन् नाह वम्मा 417

माया–अनंत; पन्त मा वितैयम्–बन्धन जो कर्म हैं, उनके; माळ–मिटने पर; पट्रु अऱु–राग-हीन; पॆरियोर्क्कुम्–श्रेष्ठ ज्ञानियों के लिए भी; उन्तु अरु निलैयतु आकि–अप्रतिहत बन; उटन् उऱैन्तु–शरीर के साथ रहकर; उयिर्कळ् तम्मै–जीवों को; अन्तकर्क्कु अळिक्कुम्–यम के हाथ सौंप देनेवाले; नोय् पोल्–रोग के समान; अरक्कि मुन्नाक–राक्षसी शूर्पणखा को आगे करके; वळ्ळियोन् मरुङ्किन्–उदार प्रभु के पास; चेनै वॆळ्ळम् वन्ततु–सेना-प्रवाह आया। ४१७

वह सेना-सागर प्रभु श्रीराम के सम्मुख आ गयी। उसको शूर्पणखा आगे रहकर ले आयी। वह उस रोग के समान थी, जो कर्मबन्धननाशक रागरहित ज्ञानियों के लिए भी अप्रतिहत बनकर शरीर के साथ रहता है और जीवों को यम के हाथ सौंप देता है। ४१७

तूरियक् कुरलिन् वानिन् मुहिर्क्कणन् दुणुक्कङ् गॊळ्ळ
वार्शिलै यॊलियि नञ्जि युरुमॊरु मरुक्कङ् गॊळ्ळ
आर्हलि तानु मुट्कि यशैवुर वरक्कर् शेनै
पोरुवन् दिरुन्द वीर नुऱैविडम् बुक्क दन्ऱे 418

तूरिय कुरलिन्–बाजों के नाद से; वातिन् मुकिल् कणम्–आकाश के मेघ-समूहों को; तुणुक्कम् कॊळ्ळ–कँपाते हुए; वार् चिलै ऑलियिन्–लम्बे धनुष की टंकार की ध्वनियों से; अञ्चि–डरकर; उरुम्–वज्र भी; ऒरु मरुक्कम् कॊळ्ळ–व्यग्र हों,

ऐसा; आर् कलि तानुम्–गरजते सागर भी; उट्कि–भीतर से काँपकर; अचैवु उड़–उद्वेलित हों, ऐसे; अरक्कर् चेत्तै–राक्षस-सेना; पोर् उवनृतु इरुनृत–युद्ध की सानन्द प्रतीक्षा में जो रहे; वीरन्–श्रीरघुवीर के; उरैवु इटम्–रहने के स्थान को; पुक्कतु–जा पहुँचीं। ४१८

मारू वाजे बजे और आकाश के मेघसमूह वह सुनकर काँप उठे। दीर्घ धनुषों की टंकारें निकलीं तो वज्र भी उनसे डर गये और समुद्र भी भीतर से उद्वेलित होकर मथ गये। इस ठाट-वाट के साथ वे राक्षस-सेनाएँ उस पर्णशाला के पास आयीं, जिसमें रघुकुलवीर श्रीराम युद्ध की, आनन्द के साथ प्रतीक्षा करते हुए रह रहे थे। ४१८

वायुबुलर्न् दळिन्द मॅय्यिन् वरुत्ततत्त वळियिल् याण्डुम्
ऑय्विल निमिर्न्दु वीङ्गु मुयिर्प्पिन वुलैन्द कण्ण
तीयवर् शेत्तै वन्दु शेर्न्दमै तॅरियच् चॅन्रु
वेय्दॅरिन् दुरैप्प पोन्ऱ पुळ्ळोडु विलङ्गु मम्मा 419

पुळ् ऑटु विलङ्कुम्–पक्षी और जानवर; वाय् पुलर्न्तु–मुख सूखकर; अळिन्त–मिटे जो; मॅय्यिन् वरुत्ततत–शरीर में रुग्ण हुए जो; वळियिल् याण्टुम् ओय्वु इल–मार्ग में कहीं विश्राम न लेकर; निमिर्न्तु वीङ्कुम् उयिर्प्पिन–मुख ऊपर कर लम्बी साँसें छोड़नेवाले; उलैन्त कण्ण–प्रभाहीन आँख वाले; तीयवर् चेत्तै वन्तु चेर्न्तमै–खलों की सेना के आगमन का समाचार; तॅरिय चॅन्रु–पहले जानकर दौड़कर; वेय् तेरिन्तु उरैप्प पोन्ऱ–चर जाकर खबर देते हों जैसे (वने)। ४१९

इस विपुल सेना से आक्रांत होकर पक्षी और जानवर भागे। उनके मुख भय के मारे सूख गये। शरीर रुग्ण हो गये। बीच में वे कहीं विश्राम नहीं कर सके। मुख ऊपर उठाकर लम्बी साँसें छोड़ते हुए वे भागे और उनकी आँखें प्रभाहीन हो गयीं। वे चरों का काम करते हुए बुरे लोगों की सेना के आगमन की खबर सुनाने आये हों —ऐसे भागते आये। ४१९

तूळियिन् पडलै वन्दु तॊडर्वुऱ मरमुन् दूरुम्
ताळिडै यॊडियु मोशै शडशड वॊलिप्पक् कानत्
ताळियु मरियु मञ्जि यिरिदरु ममलै नोक्कि
मोळिमॊय्म् बिनरुञ् जेत्तै मेल्वन्द दुळदॅन् ऱुन्ना 420

तूळियिन् पटलै–धूलि-पटल; वन्तु तॊटर्वु उऱ–आकर जमे, इसलिए; मरमुम् तूरुम्–पेड़ और झाड़; ताळ् इटै–उनके पैरों के नीचे; ऑटियुम् ओचै–टूटते हैं, वह नाद; चटचट ऑलिप्प–तड़-तड़ शब्द उठाते हैं; कानत्तु–वन में; आळियुम् अरियुम्–शरभ और सिंह; अञ्चि–डरकर; इरि तरुम्–दूर भागते हैं; अमलै नोक्कि–वह शब्द सुनकर; मोळि मॊय्म्पिनरुम्–सबल भुजा वाले श्रीराम और लक्ष्मण भी; चेत्तै मेल् वन्तु उळतु–सेना हम पर चढ़ आई है; ऍन्ऱु उन्ना–यह सोचकर। ४२०

धूलिपटल आकर तरुओं और झाड़ों पर जम गया। वे वीरों के पैरों के नीचे और मध्य पड़कर टूटे। उस तड़-तड़ शब्द से शरभ और सिंह डरकर भागे। उनके हड़बड़ाकर भागने का शोर सुनकर सबल कंधे वाले वीरों (श्रीराम और लक्ष्मण) ने ताड़ लिया कि सेना हम पर चढ़ आयी है। (ऐसा सोचकर —)। ४२०

❀ मरम्बडर् कान मॅङ्गु मदर्वड वन्द शेनै
करन्वडै यॅन्ब दॅण्णिक् करुनिऱक् कमलक् कण्णन्
शरम्बडर् पुट्टिल् कट्टिच् चाबमुन् दरित्तान् ऱळ्ळा
उरम्बडर् तोळिन् मोळाक् कवशमिट् टुडैवा ळार्त्तान् 421

मरम् पटर् कानम् ऍङ्कुम्–तरुसंकुल वन में सर्वत्र; अतर् पट–मार्ग बनाते हुए; वन्त चेनै–जो सेना आई वह; करन् पटै ऍन्पतु–खर की सेना है, यह; करु निऱ–नीले वर्ण के; कमल कण्णन्–कमलाक्ष श्रीराम ने; ऍण्णि–निश्चय करके; चरम् पटर् पुट्टिल् कट्टि–शरबहुल तूणीर बाँधकर; चापमुम् तरित्तान्–धनुष भी उठा लिया; तळ्ळा उरम् पटर्–अटल वीरता से युक्त; तोळिन्–कन्धों पर; मोळा–अटूट; कवचम् इट्टु–कवच बाँधकर; उटैवाळ् आर्त्तान्–कटार बाँध ली। ४२१

कमलाक्ष और नीलवर्ण श्रीराम ने यह भी निश्चय कर लिया कि वन में सर्वत्र मार्ग बनाते हुए जो आयी है, वह विपुल सेना खर की है। उन्होंने युद्ध में जाने की तैयारी की। तूणीर, चाप, अक्षय सबल कंधों से कसा हुआ कवच और तलवार आदि को यथोचित रीति से यथास्थान धारण कर लिया। ४२१

मिन्निन्ऱ शिलैयन् वीरक् कवशत्तन् विशित्त वाळन्
पॊन्निन्ऱ वडिम्बिन् वाळिप् पुट्टिलन् पुहैयु नॅञ्जन्
इन्निन्ऱु काण्डि यान्शॅय् निलैयॅन विरुम्बि नेरा
मुन्निन्ऱ पिन्वन् दानै नोक्किनन् मॊऴिय लुऱ्ऱान् 422

मिन् निन्ऱ चिलैयन्–बिजली ने धनु का रूप धर लिया हो, ऐसे धनुष के धारक; वीर कवचत्तन्–वीरोचित कवच से अलंकृत; विचित्त वाळन्–बँधी हुई तलवार वाले; पॊन् निन्ऱ वटिम्पिन्–स्वर्णमय कोरों के; वाळि पुट्टिलन्–तूणीर वाले; पुकैयुम् नॆञ्चन्–क्रोधाग्नि के धुएँ से भरा मन वाले (लक्ष्मण); विरुम्पि–(स्वयं जाना) चाहकर; यान् चॆय् निलै–मेरे (युद्ध) कार्य की स्थिति; इन् इन्ऱु काण्टि–आज अभी देखिए; ऍन–कहकर; मुन् नेरा निन्ऱ–जो अग्रस्थ हुए उन; पिन् वन्तानै–अनुज को; नोक्किनन्–देखकर; मॊऴियल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ४२२

तब लक्ष्मण उनके सामने आये। बिजली के अवतार-सा धनुष, वीरोचित (दृढ़) कवच, तलवार, स्वर्णमुख तूणीर आदि के साथ मन में धुआँ निकालनेवाली कोपाग्नि लेकर जो आये, उन्होंने श्रीराम से कहा कि आज मेरा युद्ध-सामर्थ्य देखिए। ऐसा कहते हुए अग्रस्थ अनुज से श्रीराम बोले। ४२२

कावादु नीयोंऴियिऱ् पऴिपॆरिदो वन्ऱेऱ्
करुङ्गडलिऱ् कण्वळर्न्दोय् कैम्माऱु मुण्डो 101

तेवा–देव; करुम् कटलिल्–(आपके रंग के कारण) काले (बने) या विशाल क्षीरसागर में; कण् वळर्न्तोय्–निद्रा करनेवाले; मेवातवर् इल्लै–आपके शत्रु नहीं है; मेविऩरुम् इल्लै–मित्र भी नहीं हैं; वॆऴियोटु इरुळ् इल्लै–प्रकाश के साथ अन्धकार भी नहीं है; मेल् कीऴुम् इल्लै–ऊपर, नीचे नहीं है; मूवामैयुम् इल्लै–उमर में कम होना भी नहीं; मूत्तमैयुम् इल्लै–बढ़ना भी नहीं; मुतल् इटै ओटु–आदि, मध्य के साथ; ईऱु इल्लै–अवसान भी नहीं; मुऩ् ओटु पिऩ् इल्लै–पूर्व और पश्चात नहीं हैं; निऩ् तोऩ्ऱु निलै–आपके स्वरूप के लक्षण; इव्वो–ये हैं क्या; ऎऩ्ऱाल्–तो; नी चिलै एन्ति–आप धनुष लेकर; चेवटिकळ् नोव–लाल (मनोरम) पैरों को दुख देते हुए; वन्तु कावातु ऒऴियिल्–आकर रक्षा नहीं करेंगे तो; पऴि पॆरितो–बड़ा अपयश होगा क्या; अऩ्ऱेल्–या; कै माऱुम् उण्टो–प्रत्युपकार भी हो सकता है क्या। १०१

आप काल-देश-वस्तु-परिच्छेद रहित हैं। इसलिए आपके न शत्रु है, न मित्र है। देवाधिदेव! क्षीरसागरशायी! आपके लिए न प्रकाश है, न अँधेरा। ऊपर कुछ नहीं है, न आपके नीचे कुछ है (आप सर्वत्र व्याप्त हैं)। आपकी न जवानी होती है, न वार्द्धक्य होता है (आप कालातीत है)। आपका न आदि है, न मध्य, न अन्त। आपके पूर्व या बाद कुछ नहीं होता। आप सभी काल में वर्तमान है। आपके लक्षण ऐसे हैं न? फिर क्या आश्चर्य है कि आप धनुष लेकर अपने श्रीचरणों को दुखाते हुए हमारे रक्षणार्थ इधर आये हैं। ऐसा रक्षण नहीं करेंगे तो आपका अपयश हो जायगा क्या? या हम आपका कोई प्रत्युपकार करनेवाले हैं क्या? । १०१

नाऴि नवैती रुलहमॆला माह
नऴिऩत्तु नीतन्द नाऩ्मुहत्ताऱ् तामे
ऊऴि पलपलवु निऩ्ऱळन्दा लॆऩ्ऱु
मुलवाप् पॆरुङ्गुणत्तॆ मुत्तमने मेनाळ्
ताऴि तरैयाहत् तण्डयिऱ् नीराहत्
तडवरैये मत्ताहत् तामरैक्कै नोव
आऴि कडैन्दमुद मॆङ्गळुक्के योन्दा
यवुणर्हडा मुऩ्क्कडिमै यल्लामै युण्डो 102

नी–आपने; नऴिऩत्तु तन्त–अपनी नाभी-कमल से जिनको सृष्ट किया; नाऩ् मुकत्ताऱ् तामे–वे चतुर्मुख; नवै तीर् उलकम् ऎलाम्–निर्दोष प्रपंच सब; नाऴि आक–माप बनाकर; ऊऴि पल पलवुम्–अनेक-अनेक युग; निऩ्ऱु अळन्ताल्–रहकर मापें तो भी; ऎऩ्ऱुम् उलवा पॆरुम् कुणत्तु–कभी पूरा न होनेवाले (अमाप) उत्तम गुणों के; ऎम् उत्तमते–हमारे पुरुषश्रेष्ठ; मेल् नाळ्–प्राचीनकाल में; तरै ताऴि

आक–भूमि को मथनी (पात्र) बनाकर; नीर् तण् तयिर् आक–सागरजल को दही बनाकर; मत्तु तटवरैये आक–मथानी, वड़े मन्दरपर्वत को बनाकर; तामरै कै नोव—कमल-सम हाथों को दुखाते हुए; आऴि कटैन्तु–समुद्र को मथकर; अमुतम्–अमृत को; ॲङ्कळुक्के ईन्ताय्–हमें ही दे दिया; अवुणर्कळ् ताम्–दानव तो; उनक्कु अटिमै अल्लामै उण्टो–आपके दास नहीं हैं, ऐसा क्या। १०२

आपके, अपनी नाभि से सृजित चतुर्मुख ब्रह्मा स्वयं, निर्दोष लोकों को माप बनाकर अनेक युगों तक आपके गुणों का माप लगाने लगें, तो भी आपके गुणों का माप नहीं मिल सकता। ऐसे अमाप कल्याण-गुणपूर्ण ! पुरुषोत्तम ! प्राचीन काल में सारी पृथ्वी को मथनी बनाकर क्षीरसागरपय को दही बनाकर और मन्दर पर्वत को मथानी बनाकर अपने कमल-सम हाथों को दुखाते हुए मथन किया; पर सुधा निकला तो उसे हम देवों को दे दिया ! तब क्या दानव आपके दास नहीं हैं —यह बात है क्या ? । १०२

ऒन्ऱाहि मूलत् तुरुवम् बलवाहि
युणर्वा युयिराहिप् पिऱिदाहि यूऴि
शॆन्ऱा शरुङ्गालैत् तन्निलैय दाहित्
तीर्न्दुलहन् दानाहिच् चॆव्वेता निन्ऱ
नन्ऱान ज्ञानत् तळिक्कॊऴुन्दे यॆङ्ग
णवैदीर्क्कु नायहने नल्विनैये नोक्कि
निन्ऱारैक् कात्ति ययलारैक् काय्दि
निलैयिल्लात् तीविनैयु नीतन्द दन्ऱे 103

मूलत्तु ऒन्ऱु आकि–मूल में एक रहकर; उरुवम् पल आकि–अनेक रूप बनकर; उणर्वु आय्–ज्ञानगोचर बनकर; उयिर् आकि–प्राण बनकर; पिऱितु आकि–इस तरह भिन्न-भिन्न होकर; ऊऴि चॆन्ऱु आचु उरुम् कालै–युगान्त में प्रपंच-नाश के समय; तन् निलैयतु आकि तीर्न्तु–अपनी पूर्व-स्थिति में आ (अपनी लीला) समाप्त करके; उलकम् तान् आकि–तव प्रपंच स्वयं आप होकर; चॆव्वे निन्ऱ–शोभित रहनेवाले; नन्ऱाय ज्ञान तळि कॊऴुन्ते–श्रेष्ठ ज्ञान के पल्लव (सार) समान; ॲङ्कळ् नवै तीर्क्कुम्–हमारे अपराधों को दूर करनेवाले; नायकन्ने–नाथ; नल् विनैये नोक्कि निन्ऱार्–अच्छे कर्म ही करते रहनेवाले साधुओं को; कात्ति–आप रक्षा करते हैं; अल्लारै–इतरों को; काय्ति–दण्ड देते हैं; निलै इल्ला तीविनैयुम्–अस्थायी बुरे कर्म भी; नी तन्ततु अन्ऱे–आपके ही बने हुए है न। १०३

मूल में एक रहकर फिर अनेक रूप में बदले। भिन्न-भिन्न सृष्टि में ज्ञान से अनुभव में आनेवाले तत्व रहे। उसके प्राण रहे। इस तरह अनेक जीवों में बँटे से रहने के बाद युगांत में फिर आपने उन सबको अपने में समेट लिया। तव प्रपंच सब आप ही हो गया। उस स्थिति में शोभायमान जो रहते है, वे ज्ञानसार ! हमारे अपराधों को मिटानेवाले नायक ! अच्छे कर्म करनेवाले साधुओं को रक्षित और इतरों को दण्डित

करनेवाले हैं आप। पर क्या अस्थायी पाप भी आपके ही कारण स्थिति नहीं पाते ? । १०३

वल्लै वरम्बिल्लाद मायविऩ्ऩै तऩ्ऩाल्
मयङ्गिऩर् हळोडे मदिमयङ्गि मेऩाळ्
अल्लै यिऱैयवऩी यादियॆऩ्ऩप् पेदुऱ्
ऱलमरु वेमुऩ्ऩै यऱ्पयऩुण् डाह
ऱऩ्ऩा ऎल्लै वलयङ्गळ् नुम्मुळैयॆऩ्
ऱॆऩ्ऩिऩ्ऱ ऴॆरियोऩैत् तीण्डि यॆऴुव
तॊल्लै मुदऩ्मुऩिवर् शूळुऱ्ऱ पोदे
तॊहैनिऩ्ऱ वैयन् दुडैत्तिलैयो वॆन्दाय् 104

ऎन्ताय्–हमारे पिता; वल्लै–बलवती; वरम्पु इल्लात–असीम; माय विऩ्ऩै तऩ्ऩाल्–माया के कार्य से; मयङ्किऩर्कळ् ओटु–भ्रमित रहे (देवों) के साथ; मति मयङ्कि–मोहमग्न होकर; मेल् नाळ्–प्राचीन समय में; इऱैवऩ् नी अल्लै–आप आदि भगवान नहीं हैं; आति ऎऩ्ऩ–आदिदेव हैं, ऐसा; पेतुऱ्ऱु–संशय में पड़कर; अलमरुवेम्–संकट में रहे हमारे; मुऩ्ऩै अऱ्ऱ पयऩ् उण्टाक–पूर्वकृत सुकर्म का फल सहायता करने आया; अन्नाळ्–उस दिन; ऎल्लै वलयङ्कळ्–सीमा पर स्थित सारे कुवलय; नुम् उळ् ऎऩ्ऱु–आप ही पर स्थित हैं, ऐसा; ऎऴुवर् ऎऩ्ऩ निऩ्ऱ तॊल्लैमुतल् मुऩिवर्–"सप्तक" के रूप में प्रख्यात सप्तर्षियों ने; ऎरियोऩै तीण्टि–अग्नि को स्पर्श करके; चूळ् उऱ्ऱ पोते–शपथ कही; तॊकै निऩ्ऱ ऐयम्–तब घनीभूत रहा संशय; तुटैत्तिलैयो–आपने मिटाया नहीं क्या। १०४

धाता! पहले कुछ देवों ने बलवती और असीम माया के कार्य के वश में होकर आपके परत्व के सम्बन्ध में संशय किया। यह उनका भ्रम था। हम भी उनके साथ भ्रमित होकर आप परब्रह्म आदिदेव हैं, नहीं हैं, ऐसे संशय में पड़कर गड़बड़ा रहे थे। पर हमारा सुकृत था, जिसके फलस्वरूप (अत्रि, भृगु, कुत्स, वसिष्ठ, गौतम, काश्यप, अंगीरस आदि) सप्तर्षियों ने अग्नि में हाथ रखकर शपथ खायी कि सारे कुवलय आपके ही शरीर पर धृत है। तब परब्रह्म कौन है, इस पर उठा घनीभूत सन्देह मिट गया। आप ही न ऐसी व्यवस्था करके हमारा सन्देह मिटाया! (वाल्मीकी में ये बातें पायी नही जातीं।)। १०४

इऩ्ऩऩ्ऩ पलनिऩैन् देत्तिऩ ऩियम्बात्
तुऩ्ऩुद लिडैयुळ दॆऩ्ऩनि तुणिवाऩ्
तऩ्ऩिहर् मुऩिवऩैत् तरविडै यॆऩ्ऩाप्
पॊऩ्ऩॊळिर् नॆडुमुडिप् पुरन्दरऩ् पोनाऩ् 105

पॊऩ् ऒळिर् नॆटु मुटि पुरन्तरऩ्–स्वर्ण की चमकदार दीर्घकिरीटी पुरन्दर ने; इऩ्ऩऩ्ऩ पल–ऐसी अनेक बातें; निऩैन्तु–सोचकर; इयम्पा एत्तिऩऩ्–और कहकर

स्तुति की; इटै तुन्नुतल् उळतु–बीच में होनेवाली एक घटना है; ॲन–ऐसा; नत्ति तुणिवान्–खूब निश्चय करके; तन् निकर् मुनिवनै–स्वोपम महर्षि को; विटै तर–बिदा दें; ॲन्ना–कहकर (ले); पोतान्–सिधारे। १०५

स्वर्ण के कारण जाज्वल्यमान दीर्घ किरीटधारी पुरन्दर ने ऐसी बहुत सी बातों का स्मरण करके उनकी स्तुति की। उन्होंने सोच लिया कि बीच में घटनेवाली एक विशेष घटना है। इसलिए उन्होंने शरभंग मुनि को, जो अपनी उपमा स्वयं आप ही थे, नमस्कार करके विदा ली और वे वहाँ से चले गये। १०५

पोतव नहनिलै पुलमयि नुणर्वान्, वानवर् तलैवनै वरवॆदिर् कॊण्डान्
आनव नडितॊऴ वरुऴ्वर मुनिवन्, तानुडै यिडवहै तऴुविन नुऴैवान् 106

पोतवन् अक निलै–वैसे निर्गत देवेन्द्र का मनोभाव; पुलमैयिन्–अपनी ज्ञान-दृष्टि से; उणर्वान्–समझकर ऋषि ने; वानवर् तलैवनै–देवदेव श्रीराम को; वरवु ॲतिर् कॊण्टान्–अपने सामने आते पाया; आनवन्–(आगत) श्रीराम ने; अटि तॊऴ–नमस्कार किया; मुनिवन् अरुऴ् वर–मुनि ने कृपापूर्ण होकर; तऴुविनन्–आलिंगन कर लिया; तानुटै इट वकै–अपने वासस्थान (कुटीर) को; नुऴैवान्–प्रवेश करके। १०६

महर्षि ने, वहाँ से जो गये, उन पुरन्दर का मनोभाव अपनी ज्ञानदृष्टि से जान लिया। तब देवाधिदेव श्रीराम उनके सामने पधारे। उन्होंने आकर महर्षि के चरणों में नमन किया। महर्षि उन्हें गले लगाकर अपने आश्रम में लिवा ले जाने लगे। १०६

एऴैयु मिळवलुम् वरुहॆन विनिदा, वाऴिय ववरॊडु वऴ्ळलु महिऴा
ऊऴियिन् मुदन्मुनि युऱैयुऴै यणुह, आऴियि लरितुयि लवनॆन महिऴ्वान् 107

वऴ्ळलुम्–श्रीराम ने; एऴैयुम् इळवलुम् इनिता वरुक ॲन–देवी और छोटे भाई सुख से आवें, कहा, तब; अवरॊटु–उनके साथ; मकिऴा–खुश होकर; ऊऴियिन् मुतन् मुनि–युग के पूर्व से भी विद्यमान महर्षि के; उऱैयुऴै–कुटीर में; अणुक–श्रीराम आये तब; आऴियिल् अरि तुयिल्–क्षीरसागर में योगनिद्रा में लीन रहनेवाले; अवन् ॲन–परब्रह्म, विष्णु भगवान है, समझकर; मकिऴ्वान्–हर्षरत हुए। १०७

तब श्रीराम ने अपनी देवी सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मण को अपने साथ आने की आज्ञा दी। युगारम्भ के पहले से ही रहनेवाले मुनिवर उन सबको लेकर अपने कुटीर में आये। वे श्रीराम को क्षीरसागरशायी विष्णु भगवान जानकर अत्यन्त हर्षित हुए। १०७

अव्वयि नऴहनु वैहिन नऱिञन्
शॆव्विय वऱिवुरै शॆविवयि नुहरा
नव्वियिन् विऴियव ळॊडुननि यिरुऴैक्
कव्विय निशियॊरु कडैयुरु मळविल् 108

अ वयिऩ्–उस आश्रम में; अळकत्तुम्–सुन्दरराज; नव्वियिऩ् विऴि अवळोटु–मृगनयनी सीताजी के साथ; वैकिऩ्ऩ्–ठहरे; अऱिञऩ्–ज्ञानी ऋषि के; चॅव्विय अऱिवु उरै–श्रेष्ठ उपदेशों को; चॅवि वयिऩ् नुकरा–कानों से सुनकर; इरुळै नऩि कव्विय–अन्धकार-ग्रस्त; निचि–निशा; ऑरु कटै उऱम् अळविल्–अन्त होने को आई, तब । १०८

आश्रम में सुन्दरराज श्रीराम, मृगनयना सीतादेवी के साथ ठहरे। (लक्ष्मण शायद कुटीर के वाहर ही रह गये थे।) महान ज्ञानी शरभंग ने अनेक श्रेष्ठ उपदेश दिये। उपदेशों को ध्यान से श्रीराम ने सुना। यों रात बीती और अन्धकारग्रस्त रात एक तरह से अपने अन्तिम समय में आ गयी। तब— । १०८

विलहिडु निळलिनऩ् वॅयिल्विरि ययिल्वाळ्
इलहिडु शुडरव तिशैयन तिशैदोय्
अलहिड वरिदॅनु मविर्हर निरैयाल्
उलहिडु निरैयिरु ळुरैयिनै युरिवाऩ् 109

विलकिटु निळलिऩ्ऩ्–फैलनेवाले प्रकाश के स्वामी; इलकिटु चुटरवऩ्–व्यक्त गर्मी वाले; इचै अऩ्–अपनी कीर्ति के समान; तिचै तोय्–चारों दिशाओं में व्याप्त; अलकु इट अरितु ॲऩुम्–अगणित; वॅयिल् विरि–दीप्तियुत; अयिल् वाळ्–तीक्ष्ण तलवार-सम; अविर् कर निरैयाल्–शोभायमान किरण-हस्तों से; उलकु इटु–संसार पर आच्छादित; निरै इरुळ् उरैयिऩै–घने अन्धकार रूपी चादर को; उरिवाऩ्–उधेड़ लेने लगे । १०९

व्यापनेवाले प्रकाश के और जाज्वल्यमान तेज के स्वामी सूर्य ने अपनी ही कीर्ति के समान चारों दिशाओं में व्याप्त तलवार-सम धूप की किरण-करों से भूमि पर आच्छादित अन्धकार रूपी चादर को उधेड़ दिया। (अन्धकार सूर्य-रश्मि के पड़ते ही हट गया।) । १०९

आयिडै यऱिञनु मवनॅदि रळुवत्, तीयिडै नुळैवदोर् तॅळिविनै युडैयाऩ्
नीविडै तरुहॅन निऱुविन नॅऱियाल्, कायॅरि वरऩ्मुऱै कडिदिनि लिडुवाऩ् 110

अ इटै–तब; अऱिञऩुम्–ज्ञानी; अवऩ् ॲतिर्–(श्रीराम) उनके सामने; अळुवम् ती इटै–अधिक पुष्ट अग्नि में; नुळैवतु ओर् तॅळिविऩै उटैयाऩ्–प्रवेश करने का एक शुद्ध संकल्प लेकर; काय् ॲरि–जलनेवाली अग्नि को; नॅऱियाल्–यथाक्रम; वरऩ्मुऱै–शास्त्रोक्त रीति से; कटितितिल् इटुवाऩ्–जल्दी प्रज्वलित करके; नी विटै तरुक–आप आज्ञा दें, यह; निऱुवितऩ्–माँग लिया । ११०

तब महान ज्ञानी शरभंग मुनि ने श्रीराम के सामने अधिक परिमाण में अग्नि जलाकर उसमें प्रवेश करने का संकल्प लेकर, उचित क्रम से, शास्त्रोक्त प्रकार से सत्वर प्रज्वलित किया। फिर श्रीराम से विदा माँगी। ११०

वरिशिलै युळवनु मऱैयुळ वत्तैनी, पुरितॊऴिलॆत्तैयदु पुहलुदि यॆन्नलुम्
तिरुमह डलैवशॆय् तिरुविन्नै युऱयान्, ऎरिपुह निन्नैहुवॆन् नरुळॆन्न विऱैवन् 111

वरिचिलै उळवत्तुम्–वन्धनयुक्त धनुष चलाने में दक्ष श्रीराम के; मऱै उळवत्तै–वेदकृषक को; नी पुरि तॊऴिल् ऎत्तै–आप करते है, वह कार्य क्या है; अतु पुकलुति–वह बतलाइए; ऎन्नलुम्–पूछने पर; तिरुमकळ् तलैव–श्रीलक्ष्मीपति; चॆय् इरुविन्नै–मेरे कृत दोनों कर्म; अऱ–नष्ट हो जायँ, इसलिए; यान् ऎरि पुक निनैकुवॆन्–मैं अग्निप्रवेश करना चाहता हूँ; अरुळ् ऎन्न–आज्ञा देने की कृपा करें, प्रार्थना करने पर; इऱैवन्–भगवान। १११

धनुर्विद्याविदग्ध श्रीराम ने वेदविद्याप्रवीण महर्षि से प्रश्न किया कि यह आप क्या करने जा रहे हैं ? कृपया बताइए तो। तब शरभंग ने कहा कि हे लक्ष्मीपति ! मैं अपने दोनों (पाप-पुण्य) कर्मों का नाश करने के लिए अग्नि में प्रवेश करना चाहता हूँ। आप कृपया अनुमति प्रदान करें। तब भगवान ने—। १११

यान्वरुममैदियि लिदुशॆय लॆवन्नो, मान्वरु तन्नियुरि मार्बिनै यॆन्नलुम्
मीन्वरु कॊडियवन् विऱलडु मऱवोन्, ऊन्विडु मुवहैय नुरैनन्नि पहर्वान् 112

मान् वरु–मृग के; तन्नि उरि मार्पिन्नै–श्रेष्ठ चर्म से आच्छादित वक्ष वाले; यान् वरुम् अमैतियिन्–मेरे आगमन के इस समय में; इतु चॆयल् ऎवन्–यह करना क्यों; ऎन्नलुम्–(श्रीराम के) यह पूछने पर; मीन् वरु कॊटि अवन्–मकरध्वज (मन्मथ) का; विऱल् अटु–प्रताप नष्ट करनेवाले; मऱवोन्–महर्षि; ऊन् विटुम् उवकै यिन्–शरीर-त्याग से उत्पन्न हर्ष के साथ; उरै–वचन; नन्नि पकर्वान्–खूब बोले। ११२

मृगचर्मालंकृत वक्ष वाले ! यह अग्निप्रवेश का कार्य आप अब करना चाहते हैं, जब मैं इधर आया हूँ ! यह क्यों ? —यह पूछा। तब मकरध्वज मन्मथ के प्रताप-नाशक महर्षि, जो इस उल्लास में थे कि शरीर छूटनेवाला है, बोले। ११२

आयिर युहमुळ तवमयर् हुवॆन्यान्, नीयिवण् वरुहुदि यॆनुन्निलै युडैयेन्
पोयिन्न दरुविनै पुहलुरु विदियान्, मेयिन्नै यिनियॊरु विन्नैयिलै विऱलोय् 113

विऱलोय्–विजयी वीर; यान्–मैं; आयिरम् उकम् उळ–सहस्र युगपर्यन्त; तवम् अयर्कुवॆन्–तपस्या करता रहा हूँ; नी इवण् वरुकुति–आप इधर पधारेंगे; ऎन्नुम् निलै उटैयेन्–इस स्थिरता पर रहा; पुकल् उऱु वितियान्—शास्त्र-विधि के अनुसार; पोयिततु अरु विन्नै–मिटे मेरे कठिन कर्म; मेयिन्नै–आप भी पधारे; इनि ऒरु विन्नै इलै–अब कोई कर्म नहीं है। ११३

विजयी वीर ! सहस्र युग पर्यन्त मैंने तपस्या की साधना की है। आप इधर पधारेंगे, इस बात की दृढ़ प्रतीक्षा में रहा। शास्त्र-विधान के अनुसार मेरे दोनों कर्म कट गये। तभी तो आप पधारे हैं। आगे मेरा कर्तव्यकर्म कुछ नहीं है। ११३

इन्दिरन् नाळिन्न दिरुदिहळ् पहर, वन्दनन् मरुवुदि मलरय नुलहम्
तन्दन नॅन्नवदु शारलॅ नुरवोय्, अन्दमि लुयर्पद मडैदलै मुयल्वेन् 114

उरवोय्–बलवान; इन्तिरन्–देवेन्द्र के; नाळिन्नतु इरुतिकळ् पकर–मेरे जीवन का अन्त कहने के लिए; वन्तनन्–आये; मलर् अयन् उलकम्–कमलासन ने अपने लोक का वास; तन्तनन्–दिया; मरुवुति–आ जायँ; ॲन–कहने पर; अतु चारलॅन–वह नहीं चाहते हुए; अन्तम् इल् उयर पतम् अटैतलै–अक्षय परम (मोक्ष) पद प्राप्त करना; मुयल्वेन–साधूँगा। ११४

शक्तिमन्त ! अभी देवेन्द्र आये थे और मेरी आयु का अन्त जताकर उन्होंने कहा कि कमलोद्भव ने आपको अपने लोक में आमन्त्रित किया है। पधारिए। पर मैं वह लोक नहीं चाहता। पर अक्षर परमपद (मुक्ति-लोक) पाने के प्रयास में ही मैं साधना करता रहा हूँ। ११४

आदलि नदुपॅऱ वरुळॅन वुरैयाक्, कादलि यवळॊडुङ् गदळॅरि मुळ्हिप्
पोदलै मरुविन नॊरुनॅऱि पुहला, वेदमु मऱिवरु मिहुपॊरु ळुणर्वान् 115

ऒरु नॅऱि पुकला–(केवल) एक मार्ग प्रतिपादित न करनेवाले; वेतमुम्–वेदों के भी; अऱिवरु–अज्ञात; मिकु पॊरुळ् उणर्वोन्–अनेक विषय के ज्ञानी महर्षि; आतलिन्–इसलिए; अतु पॅऱल् अरुळ्–उसकी प्राप्ति का वर दीजिए; ॲन उरैया–यह प्रार्थना करके; कातलि अवळॊटुम्–प्रिया के साथ; कतळ् ॲरि मूळ्कि–जलनेवाली आग में प्रवेश करके; पोतलै मरुविनन्–परमपदगमन में प्रवृत्त हुए। ११५

वेद भी, जो निश्चित रूप से एक मार्ग या एक पद की व्याख्या नहीं करते हैं, पर अनेक मार्गों और अनेक पदों का प्रतिपादन करते हैं, परमपद का मार्ग नहीं बताते। लेकिन महर्षि शरभंग उस परमपद (मुक्तिलोक) का लक्षण खूब जानते थे। इसलिए उन्होंने उसी पद-प्राप्ति की श्रीराम से प्रार्थना की और वे अपनी प्रिया पत्नी के साथ ज्वलन्त अग्नि में प्रवेश करके मोक्षपद जाने को उद्यत रहे। ११५

तेवरु मुनिवरु मुरुवतु तॅरिवोर्, मावरु नऱुविरै मलरयन् मुदलोर्
एवरु मुडिविनि लिरुविनै यॊरुविप्, पोवदु करुदुमव् वरु नॅऱिपुक्कान् 116

उऱुवतु तॅरिवोर्–भवितव्य समझनेवाले; मा वरु–गौरवपूर्ण; नऱु विरै–सुवासित; मलर् अयन् मुतलोर्–कमलभव अज आदि; तेवर्–देवता लोग; मुनिवरुम्–मुनिगण; एवरुम्–कोई भी; इरुविनै ऒरुवि–दोनों कर्मों का नाश करके; मुटिविनिल्–अन्त में; पोवतु करुतुम्–जाना (जहाँ) चाहेंगे; अ अरु नॅऱि–उस परमगति को; पुक्कान्–पहुँचे। ११६

भावी की बातें जाननेवाले मूल्यवान और सुवासित कमल पर आसीन अजादि देवता लोग और मुनिगण —कोई भी अपने पाप-पुण्य दोनों कर्मों के नाश पर अन्तिम गति के रूप में जहाँ जाना चाहते है, उसी गति को शरभंग प्राप्त हो गये। ११६

अण्डमु महिलमु मरिवरु नॅरियाल्, उण्डव: तॊरुपॆय रुणर्हुन् रुरुपे
ऱॆण्डव नॅडिदुयि रिरुदियि लवनैक्, कण्डव रुरुपॊरुळ् करुदुव दॆळिदे 117

अण्टमुम्—सारे अण्ड; अकिलमुम्—और सारे लोक; अरिवु अरु नॅरियाल्—अनजानी रीति से; उण्टवन्—जिन्होंने उदरस्थ कर लिया था, उन श्रीराम का; ऑरु पॅयर्—एक (परमपावन) नाम; उणर्कुनर्—ध्यान करनेवाले; उरु पेरु—जिसको प्राप्त करते है, वह भाग्य; ऍण् तव नॅटितु—अपार और अत्यधिक है; नॅटितु उयिर् इरुतियिल्—अपनी लम्बी आयु के अन्त में; अवनै कण्टवर्—जिन्होंने उनके दर्शन किये, वे; उरु पॊरुळ्—जो प्राप्त करेंगे, वह वस्तु; करुतुवतु ऍळिते—सोचना सुलभ है क्या। ११७

अखिल अण्डों और लोकों को अपने पेट में प्रलयकाल मे समा लेनेवाले विष्णु भगवान के सहस्र रूप हैं और सहस्र नाम है। उनमें एक परम पवित्र नाम है श्रीराम ! उसके स्मरण मात्र से लोग जो भाग्य प्राप्त करते हैं, वह कल्पना के भी बाहर है; बहुत श्रेष्ठ है। तो अपनी लम्बी आयु के अन्त में, मरणावसर पर उनके दर्शन करने का भाग्य जिनका हुआ है, वे जिस पद को प्राप्त होंगे उसका महत्त्व कल्पना करना भी आसान है क्या ? । ११७

3. अहत्तियप् पडलम् (अगस्त्य पटल)

अन्नैयव निरुदियि नमैवु नोक्कलिन्
इन्नियव रिन्नलि निरङ्गु नॅञ्जिनर्
कुनिवरु तिण्शिलैक् कुमरर् कॊम्बोडुम्
पुनिदन् दुऱैयुणिन् ऱरिदिर् पोयिनार् 118

इनियवर्—सबके प्यारे (सबको सुख देनेवाले); कुनि वरु—नमनीय; तिण् चिलै—और सारयुक्त धनुष के; कुमरर्—(धारण करनेवाले) राजपुत्र; कॊम्पु ओटुम्—पुष्प-शाखा (सीतादेवी) के साथ; अन्नैयवन्—उन महर्षि के; इरुतियिन् अमैव—अन्त की व्यवस्था; नोक्कलिन्—प्रत्यक्ष देखने से; इन्नलिन्—परिताप से; इरङ्कु नॅञ्चिनर्—खिन्नमन होकर; पुनितनतु उऱैयुळ् निन्ऱु—पवित्रात्मा के आश्रम से; अरितिल् पोयिनार्—निकलकर सायास चले। ११८

सर्वभूतरंजक प्यारे राजकुमार और नमनीय धनुष के धारक श्रीराम और लक्ष्मण, पुष्पलता-समाना श्रीसीतादेवी के साथ शरभंगदेह-वियोग देख रहे थे। उन्हें परिताप हुआ। बड़े खिन्नमन होकर वे उन पवित्र ऋषि के आश्रम से निकले और भारी मन के साथ सायास आगे जाने लगे। ११८

मलैहळु मरङ्गळु मणिक्कर् पारैयुम्
अलैपुन नदिहळु मरुविच् चारलुम्

इलैशॅऱि पऴुवमु मिऩिय शूऴ्लुम्
निलैमिहु तडङ्गऴु मिऩिदु नीङ्गिऩार् 119

मलैकळुम्–पर्वत; मरङ्कळुम्–और अनेक तरु; मणि कल् पाऱैयुम्–और सुन्दर अनेक चट्टानों को; अलै पुऩल् नतिकळुम्–तरंगसहित जल वाली नदियाँ; अरुवि चारलुम्–सरिताओ के साथ पर्वत-पाद-प्रदेश; इलै चॅऱि पऴुवमुम्–पत्तों से पूर्ण वनप्रदेश; इऩिय चूऴ्लुम्–और सुन्दर स्थान; इऩितिऩ्–सुख से देखते हुए; नीङ्किऩार्–पार करके गये। ११६

वे अनेक पर्वत, वृक्ष, सुन्दर चट्टानें, तरंगसहित जल से पूर्ण नदियाँ, सरिताओं के साथ पर्वतों के पादप्रदेश और अन्य अनेक मनोरम स्थल —इनको देखते हुए सुख से आगे वढ़ते चले। ११९

❀ पण्डैय वयऩ्ऱरुम् वाल किल्लरुम्
मुण्डरु मोनरु मुदलि ऩोर्हळत्
तण्डह वनत्तुऱै तवत्तु ळोरॅलाम्
कण्डन रिरामनैक् कळिक्कुञ् जिन्दैयार् 120

पण्टैय अयऩ् तरुम्–पुरातन ब्रह्माजी से सृष्ट; पालकिल्लरुम्–वालखिल्य; मुण्टरुम्–मुण्डी; मोऩरुम्–मौनी; मुतलिऩोर्कळ्–आदि; अ तण्टक वऩत्तु उऱै–जो उस दण्डक वन में रहते थे; तवत्तु उळ्ळोर्कळ् ॲल्लाम्–सब तपस्वी लोगों ने; इरामऩै कण्टऩर्–श्रीराम के दर्शन किये; कळिक्कुम् चिन्तैयर्–मुदितमन हुए। १२०

दण्डक वन में अनेक तरह के तपस्वी रहे। सृष्टि के आदिपुरुष ब्रह्माजी के (रोम से उत्पन्न) बालखिल्य (साठ हज़ार), मुण्डी, मौनी आदि तपस्वी थे। वे सब श्रीराम के दर्शन करके बहुत हर्षित हुए। १२०

❀ कऩैवरु कडुञ्जिनत् तरक्कर् कायवोर्
विनैपिऱि दिऩ्मैयिऩ् वॅदुम्बु हिऩ्ऱनर्
अऩैवरु काऩहत् तमुद ळाविय
पुऩैवर वुयिर्वरु मुलवै पोल्हिऩ्ऱार् 121

कऩै वरु–शीघ्र अभिभूत कर आनेवाले; कटुम् चिऩत्तु–अत्यधिक क्रोध वाले; अरक्कर् काय–राक्षसों के सताने से; ओर् विऩै पिऱितु इऩ्मैयिऩ्–अपने पास कोई प्रतीकार-शक्ति न रहने के कारण; वॅतुम्पुकिऩ्ऱऩर्–तप्त; अऩै वरु काऩकत्तु–अग्नि-लगे कानन में; अमुतु अळाविय–अमृत-मिश्रित; पुऩैवर–जल के आने से; उयिर् वरुम्–प्राणवन्त होनेवाले; उलवै पोल्किऩ्ऱार्–ठूँठ के समान बने। १२१

श्रीरामचन्द्र प्रभु का आगमन उनके लिए अग्निदग्ध कानन में सुधा-मिश्रित जलधारा के प्रवाह के समान रहा। वहाँ के प्राणवन्त बने ठूँठों के समान उन्मत्त क्रोधी राक्षसों से पीड़ित वे निस्सहाय मुनिगण हरे हो उठे। १२१

❀ आय्वरुम् बॆरुवलि यरक्कर् नाममे
वाय्वॆरीइ यलमरु मरुक्क नीङ्गित्तार्
तीवरु वत्तत्तिडै विट्टुत् तीर्न्ददोर्
ताय्वर नोक्किय कन्ऱिन् ऱन्मैयार् 122

आय् वरुम्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; पॆरुवलि अरक्कर्–बड़े बल वाले राक्षसों का; नाममे–नाम; वाय् वॆरीइ–कहने से भी डरकर; अलमरुम्–व्याकुल रहने की; मरुक्कम्–उद्विग्नता से; नीङ्किनार्–मुक्त होकर; ती वरु वत्तत्तु इटै–(वे) जलनेवाले जंगल-मध्य; विट्टु–छोड़कर; तीर्न्ततु–जो गई थी; ताय् वरल्–उस माता गाय का आना; नोक्किय–देखते रहे; कन्ऱिन् तन्मैयार्–बछड़े के समान स्थिति वाले हुए। १२२

वे वर्धनशील बल से युक्त राक्षसों का नाम लेने से भी डरते हुए अपार संकटग्रस्त होकर राक्षसों के त्रास के कारण बहुत व्याकुल व उद्विग्न रहते थे। तब श्रीराम पधारे तो उनकी स्थिति उस बछड़े की-सी उत्साहपूर्ण हो गयी, जिसके सामने उसकी माता गाय, जो उसको जलने वाले जंगल में अकेले छोड़कर चली गयी थी, आ गयी हो। १२२

करक्करुङ् गडुन्दॊऴि लरक्कर् काय्दलिल्
पॊरुट्किड मिन्मैयिऱ् पुऴुङ्गिच् चोरुनर्
अरक्करॆन् गडलिडै याऴ्हिन् ऱारॊरु
मरक्कलम् पॆऱ्ऱॆन मरुक्क नोक्कित्तार् 123

करक्क अरुम्—लुक-छिपकर नहीं पर खुले रूप से; कटुम् तॊऴिल्–नृशंसकारी; अरक्कर्–राक्षस; काय्तलिल्–वैर करके सताते रहे, इसलिए; पॊरुट्कु इटम् इन्मैयित्–वार करने का मौका न रहने के कारण; पुऴुङ्कि चोरुनर्–तप्त होकर वेदना उठानेवाले; अरक्कर् ऎन् कटल् इटै–राक्षस रूपी सागर में; आऴ्किन्ऱार्–गिरकर डूबनेवाले; ऒरु मरक्कलम् पॆऱ्ऱॆत्त–एक नाव मिल गई हो, जैसे; मरुक्कम् नीङ्कित्तार्–संकट से मुक्त हुए। १२३

उनकी स्थिति सागर-मध्य डूबनेवाले को नाव मिल गयी हो, ऐसी भी हो गयी। दिन-दहाड़े वे राक्षस उनको दिक कर रहे थे। इनके पास प्रतीकार का या अपनी रक्षा का कोई साधन नहीं था। इसलिए वे बहुत क्लेशित होकर राक्षस रूपी सागर में डूबते रहे। अब उनको श्रीराम रूपी नौका मिल गयी। १२३

❀ तॆरिञ्जुऱ नोक्कित्तर् शॆय्द शॆय्दवम्, अरुञ्जिऱप् पुदवनल् लऱिवु कैदर
विरिञ्जुऱप् पऱ्ऱिय पिऱवि वॆन्दुयरप्, पॆरुञ्जिऱै वीडुपॆऱ् ऱनैय पऱ्ऱियार् 124

चॆय्त चॆय् तवम्–तब तक किया हुआ श्रेष्ठ तप; अरुम् चिऱप्पु उतव–उत्तम फल देने लगा तो; नल् अऱिवु कै तर–परमज्ञान के फलस्वरूप; तॆरिञ्चु–श्रीराम का परत्व पहचानकर; उऱ नोक्कित्तर–खूब दर्शन करके; विरिञ्चु उऱ पऱ्ऱिय–

(जाल के समान) फैलकर उन्हें जो पकड़े रहा; वॆम् पिऱवि तुयर्–भयंकर भवसंकट रूपी; पॆरुम् चिऱै–बड़ी कारा से; वीट्टु पॆऱ्ऱत्तैय–मोक्ष पा गये हों, ऐसी; पॆऱ्ऱियार्–दशा वाले हो गये। १२४

उन ऋषियों ने बहुत तप किया था। उसका फल अब उनकी सहायता करने आया। उनका ज्ञान उनका सहायक हुआ। वे पहचान गये कि श्रीराम परब्रह्म ही है। उन्होंने श्रीरामभद्र के खूब दर्शन कर लिये। अब उन्हें यही विश्वास हो गया कि जाल के समान फैलकर जिस भयंकर भवसंकट ने उन्हें ग्रस लिया था, उस बड़ी कारा से उनको मुक्ति मिल गयी। १२४

वेण्डित्त वेण्डित्तर्क् कळिक्कु मॆय्त्तवम्
पूण्डुळ रायिनुम् पॊऱैयि ऩाऱ्ऱलाल्
मूण्डॆऴु वॆहुळियै मुदलि नीक्किनार्
आण्डुऱै यरक्करा ललैप्पुण् डाररो 125

वेण्टित्तवर्क्कु–प्रार्थियों को; वेण्टित्त अळिक्कुम्–प्रार्थित वस्तु दिलानेवाले; मॆय् तवम् पूण्टुळर्–यथार्थ तप के साधक थे; आयित्तुम्–तो भी; पॊऱैयिऩ् आऱ्ऱलाल्–क्षमा के बल से; मूण्टु ऎऴुम् वॆकुळियै–अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को; मुतलिऩ् नीक्कित्तार्–जड़ से जिन्होंने काट दिया था, वे; आण्टु उऱैन्तु–(वन में) वहाँ रहकर; अरक्कराल्–राक्षसों द्वारा; अलैप्पु उण्टार्–कष्ट में पड़े रहे। १२५

उनकी तपस्या भी अमोघ थी। इच्छित वस्तु दिला सकनेवाली ही थी। तो भी क्षमा के बल से उन्होंने अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को जड़ से काटकर दूर कर दिया था। इसीलिए वे वहाँ, उस वन में रहकर राक्षसों के हाथ त्रास सहते रहे। १२५

❀ ऎऴुन्दन रॆय्दिन रिरुण्ड मेहत्तिन्
कॊऴुन्दॆन निन्ऱवक् कुरिशिल् वीरऩैप्
पॊऴिन्दॆऴु कादलिऱ् पॊरुन्दि ऩारवन्
तॊऴुन्दॊऱुन् दॊऴुन्दॊऱु माशि शॊल्लुवार् 126

ऎऴुन्तऩर्–(वे) उठे और; ऎय्तिऩर्–श्रीराम के पास आये; इरुण्ट मेकत्तिऩ्–काले मेघ की; कॊऴुन्तु ऎऩ–कोंपल के समान; निऩ्ऱ–अपने सामने शोभायमान (खड़े) रहे; अ कुरिचिल् वीरऩै–उन वीर राजकुमार के; पॊऴिन्तु ऎऴु कातलिल्–आप्लावित कर उमड़नेवाले प्रेम के साथ; पॊरुन्तिऩार्–समीप आये; अवऩ् तॊऴुम् तॊऱुम् तॊऴुम् तॊऱुम्–ज्यों-ज्यों वे नमस्कार करते, त्यों-त्यों; आचि चॊल्लुवार्–(ऋषियों ने) आशीर्वचन कहे। १२६

वे उठे और श्रीराम के पास, जो काले मेघ की कोंपल के समान सुन्दर थे, आये। उनके मन में श्रीराम को आप्लावित करते हुए उमड़ने

वाला प्रेम उठा था। श्रीराम ने उनको अलग-अलग एक-एक करके नमस्कार किया। तो उन्होंने भी हर बार उनको आशीर्वाद किया। १२६

❀ इन्नियदोर् शालैकोण् डेहि यिव्वयिन्
नन्नियुरै यॅन्ऱवर् कमैय नल्हित्ताम्
तन्नियिडम् जार्न्दनर् तङ्गि मर्ऱैनाळ्
अन्नैवरु मॅय्दिन रल्लल् शॊल्लुवान् 127

अन्नवरुम्–सभी (ऋषि); इन्निय ओर् चालै कोण्टु एकि–सुखद एक आश्रम में ले जाकर; इ वयिन्–यहाँ; नन्नि उरै ॲन्ऱु–खूब विश्राम करें, ऐसा कहकर; अवर्कु अमैय नल्कि–उनको आवश्यक वस्तुएँ देकर; ताम् तन्नि इटम् चार्न्तनर्–स्वयं अलग-अलग स्थानों में जाकर; तङ्कि–ठहरे रहने के बाद; अल्लल् चॊल्लुवान्–अपना दुखड़ा कहने; ॲय्तिनर्–(श्रीराम के पास) आ पहुँचे। १२७

फिर वे श्रीराम आदि को एक सुखद पर्णशाला में ले गये। 'यहाँ ठहरकर विश्राम करें' —कहकर उन्होंने दिव्य अतिथियों को वहाँ ठहराया। फिर आवश्यक सामग्रियाँ देकर वे अपने-अपने अलग-अलग स्थानों में चले गये। रात विताकर वे सवेरे अपना दुखड़ा श्रीराम से बताने के लिए उनके पास पहुँचे। १२७

❀ ॲय्दिय मुनिवरै यिऱैञ्जि येत्तुवन्, दैयनु मिरुन्दन नरुळॆन् नॆन्ऱलुम्
वैयहङ् गावलन् मैन्द वन्ददोर्, वॆय्यवॆङ् गॊडुन्दॊऴिल् विळैवु केळॆना 128

ऐयनुम्–प्रभु ने भी; ॲय्तिय मुनिवरै–आगत मुनियों का; इऱैञ्चि–नमस्कार करके; एत्तु उवन्तु–उनकी स्तुति करते हुए मुदित हो; इरुन्तनन्–रहकर; अरुळ् ॲन्–कृपा की आज्ञा क्या है; ॲन्ऱलुम्–पूछने पर; वैयकम् कावलन् मैन्त–लोकपाल के पुत्र; वन्ततु–हम पर आये; ओर् वॆय्य वॆम् कॊटुम् तॊऴिल्–बहुत ही भयंकर नृशंसकार्य की; विळैवु–अधिकता; केळ्–सुनिए; ॲना–कहकर। १२८

श्रीराम ने आगत मुनियों को नमस्कार किया; स्तुति की और मोद के साथ रहकर पूछा कि आप कौन सी आज्ञा सुनाने की कृपा करेंगे? ऋषियों ने उत्तर में कहा कि लोकपालक पुत्र! हमारे ऊपर जो बीत रहा है, उस भयंकर कष्ट की अधिकता सुनिए। १२८

❀ इरक्कमॆन् ऱॊरुपॊरु ळिलाद नॆञ्जित्तर्
अरक्करॆन् ऱुळर्शिल रऱत्ति नीङ्गिनार्
नॆरुक्कवुम् यामबडर् नॆरिय लाऩॆऱि
तुरक्कवु मरुन्दवत् तुऱैयुम् नीङ्गिनोम् 129

इरक्कम् ॲन्ऱु–करुणा नाम का; ऑरु पॊरुळ्–सर्वश्रेष्ठ गुण; इलात–से हीन; नॆञ्चित्तर्–मन वाले; अऱत्तिन् नीङ्कितार्–धर्म-मार्ग से दूर; अरक्कर्–राक्षस; ॲन्ऱु उळर् चिलर्–कहे जानेवाले हैं कुछ लोग; नॆरुक्कवुम्–(उनके) हमें सताने से;

याम्–हम; पटर् नॆंरि–अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अला नॆंरि–विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्–चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुरैयुम् नीङ्कित्तोम्–उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे है। १२९

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं। इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं। १२९

वल्लियम् बलतिरि वन्नत्तु मान्नॆन
ऑल्लियुम् बहलुनॉन् दिरङ्गि याऱ्ऱलॆम्
शॊल्लिय वऱनॆरित् तुऱैयि नीङ्गिनेम्
विल्लियन् मॊय्म्बिनाय् वीडु काण्डुमो 130

विल् इयल् मॊय्म्पिनाय्–धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल–भयंकर अनेक बाघ; तिरि वन्नत्तु–जहाँ घूमते रहते हैं, उस वन में; मान् ॲन–मृगों के समान; ऍल्लियुम् पकलुम्–रात और दिन; नॊन्तु–कृश होकर; इरङ्कि–दुखी होकर; आऱ्ऱलॆम्–अशक्त होकर; चॊल्लिय–शास्त्रोक्त; अऱ नॆरि–धर्म-मार्ग के; तुऱैयिन्–कर्मों से; नीङ्किनेम्–हट गये; वीटु काण्टुमो–इससे विमोचन मिलेगा क्या। १३०

धनुर्द्धर वीर! खूनी बाघों के संचार के वन के मृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं। हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है। कष्ट सह नहीं पाते। शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये हैं। क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे? । १३०

❀ मादवत् तॊऴुहले मऱैहळ् यावैयुम्, ओदलॆ मोदुवार्क् कुदव लाऱ्ऱलॆम्
मूवॆरि वळर्क्कलॆ मुऱैयि नीङ्गिनेम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलेम् 131

मा तवत्तु ऑऴुकलॆम्–महत्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मऱैकळ् यावैयुम् ओतलॆम्–सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवार्क्कु–अध्ययन करनेवालों को; उतवल् आऱ्ऱलॆम्–सहायता दे नहीं पाते; मूतु ॲरि वळर्क्किलॆम्–सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुऱैयिन् नीङ्कित्तेम्–अपने कर्मों से हटे रहते हैं; आतलिन्–इसलिए; अन्तणर् एयुम्–ब्राह्मण ही; आकिलेम्–बने नहीं। १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते। वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते। होमादि अग्निसंधान नहीं करते। इस तरह हम अपने योग्य कर्मों से हटे रह गये है। इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये। १३१

❀ इन्दिर नॆंनिलव नरक्क रेविन्
शिन्दॆयिऱ् चॆन्नियिऱ् कॊऴ्ळुञ् जॆय्हैयान्
ऍन्दैमऱ् ऱियारुळ रिडुक्क णीक्कुवार्
वन्दनै याज्जॆय्द तवत्तिन् माट्चियाल् 132

अॅनूतै–हमारे तात; इनृतिरन् अॅतिल्–इन्द्र हैं तो; अवन्–वे; अरक्कर् एवित्त–राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्–मन में; चॅन्निियिल्–सिर पर; कॉळ्ळुम् चॅय्कैयान्–धारण करके बजा लानेवाले हैं; इट्टुक्कण् नीक्कुवार्–हमारा कष्ट दूर करनेवाले; मऱ्ऱु यार् उळर्–और कौन हैं; यास् चॅय्त तवत्तिन् माट्चियाल्–हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्ततै–आप पधारे। १३२

हमारे प्रभु ! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है। क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं। अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं ? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे। १३२

❀ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पॉरुळुडै मन्नवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोन्ऱिताय्, अरुळुडै वीरनिन् नबयम् यामॅन्ऱार् 133

उरुळ् उटै नेमियाल्–सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय–लोक-पालन जिन्होंने किया; पॉरुळ् उटै मन्नवन्–प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व–पुत्र; अरुळ् उटै वीर–करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला–अकाट्य; इरुळ् उटै–अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्–जीवन वाले हैं हम; इरवि तोन्ऱिताय्–आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निन् अपयम् याम्–आपकी शरण हैं हम; अॅन्ऱार्–कहा (ऋषियों ने)। १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र ! कृपालु श्रीरघुवीर ! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है। आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं। हम आपकी शरण हैं। —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले। १३३

❀ पुहल्पु हुन्दिलरेऱ् पुऱत्तण् डत्तिन्
अहल्व रेनुमॅन् नम्बॉडुम् वीळ्वराल्
तहवि ऱुन्बन् दविरुदिर् नीरॅन्ाप्
पहल वन्गुल मैन्दन् पणिक्किन्ऱान् 134

पकलवन् कुल मैन्तन्–दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुकल् पुकुन्तिलरेल्–(वे राक्षस क्षमा माँगते हुए) मेरी शरण नहीं आयेंगे तो; पुऱत्तु अण्टत्तु अकल्वरेनुम्–बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; अॅन् अम्पॉटुम् वीळ्वर् आल्–मेरे बाणों के साथ गिरेंगे; नीर्–आप लोग; तकवु इल् तुन्पम्–अनावश्यक दुख; तविरुतिर्–छोड़ दीजिए; अॅना–कहकर; पणिक्किन्ऱान्–विश्वास दिलाया। १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— "वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक ! नहीं तो वे बाह्यांड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूँगा। मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे। आप अनावश्यक दुख छोड़ दें।" ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे। १३४

याम्–हम; पटर् नॆऱि–अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अलग नॆऱि–विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्–चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुऱैयुम् नीङ्कित्तोम्–उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे हैं। १२९

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं। इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं। १२९

वल्लियम् बलतिरि वऩत्तु माऩॆऩ
ऎल्लियुम् बहलुनोन् दिरङ्गि याऱ्ऱलेम्
शॊल्लिय वऱनॆऱित् तुऱैयि नीङ्गिऩेम्
विल्लियऩ् मॊय्म्बिनाय् वीडु काण्डुमो 130

विल् इयल् मॊय्म्पिऩाय्–धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल–भयंकर अनेक बाघ; तिरि वऩत्तु–जहाँ घूमते रहते है, उस वन में; माऩ् ऎऩ–मृगों के समान; ऎल्लियुम् पकलुम्–रात और दिन; नॊन्तु–कृश होकर; इरङ्कि–दुखी होकर; आऱ्ऱलेम्–अशक्त होकर; चॊल्लिय–शास्त्रोक्त; अऱ नॆऱि–धर्म-मार्ग के; तुऱैयिऩ्–कर्मो से; नीङ्कित्तेम्–हट गये; वीटु काण्टुमो–इससे विमोचन मिलेगा क्या। १३०

धनुर्द्धर वीर! खूनी बाघों के संचार के वन के मृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं। हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है। कष्ट सह नहीं पाते। शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये है। क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे? । १३०

❀ मादवत् तॊऴुहले मऱैहळ् यावैयुम्, ओदलॆ मोदुवाऱ्क् कुदव लाऱ्ऱलॆम्
मूऎरि वळर्क्कलॆ मुऱैयि नीङ्गिनेम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलेम् 131

मा तवत्तु ऒऴुकलेम्–महत्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मऱैकळ् यावैयुम् ओतलेम्–सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवाऱ्क्कु–अध्ययन करनेवालों को; उतवल् आऱ्ऱलॆम्–सहायता दे नही पाते; मूनु ऎरि वळर्क्किलॆम्–सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुऱैयिऩ् नीङ्कित्तेम्–अपने कर्मो से हटे रहते हैं; आतलिऩ्–इसलिए; अन्तणर् एयुम्–ब्राह्मण ही; आकिलेम्–बने नहीं। १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते। वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते। होमादि अग्निसंधान नहीं करते। इस तरह हम अपने योग्य कर्मो से हटे रह गये हैं। इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये। १३१

❀ इन्दिर ऩॆनिलव नरक्क रेविऩ
शिन्दैयिऱ् चॆऩ्ऩियिऱ् कॊऴ्ळुज् जॆय्हैयान्
ऎन्दैमऱ् ऱियारुळ रिडुक्क णीक्कुवार्
वन्दऩै याऩ्जॆय्द तवत्तिन् माट्चियाल् 132

ऍन्तै–हमारे तात; इन्तिरन् ऍतिल्–इन्द्र हैं तो; अवन्–वे; अरक्कर् एवित–राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्–मन में; चॅन्तियिल्–सिर पर; कॉळ्ळुम् चॅय्कैयान्–धारण करके बजा लानेवाले हैं; इटुक्कण् नीक्कुवार्–हमारा कष्ट दूर करनेवाले; मट्रु यार् उळर्–और कौन हैं; याम् चॅय्त तवत्तिन् माट्चियाल्–हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्ततै–आप पधारे। १३२

हमारे प्रभु ! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है। क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं। अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं ? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे। १३२

❀ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पॉरुळुडै मन्नवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोन्ऱिनाय्, अरुळुडै वीरनिन् नबयम् यामॅन्ऱार् 133

उरुळ् उटै नेमियाल्–सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय–लोक-पालन जिन्होंने किया; पॉरुळ् उटै मन्नवन्–प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व–पुत्र; अरुळ् उटै वीर–करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला–अकाट्य; इरुळ् उटै–अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्–जीवन वाले हैं हम; इरवि तोन्ऱिनाय्–आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निन् अपयम् याम्–आपकी शरण हैं हम; ऍन्ऱार्–कहा (ऋषियों ने)। १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र ! कृपालु श्रीरघुवीर ! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है। आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं। हम आपकी शरण हैं। —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले। १३३

❀ पुहल्पु हुन्दिलरेऱ् पुऱत्तण् डत्तिन्
अहल्व रेनुमॅन् नम्बीडुम् वीळ्वराल्
तहवि ऱुन्बन् दविरुदिर् नीरॅनाप्
पहल वन्गुल मैन्दन् पणिक्किन्ऱान् 134

पकलवन् कुल मैन्तन्–दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुकल् पुकुन्तिलरेल्–(वे राक्षस क्षमा माँगते हुए) मेरी शरण नहीं आयँगे तो; पुऱत्तु अण्टत्तु अकल्वरेनुम्–बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; ऍन् अम्पॉटुम् वीळ्वर् आल्–मेरे बाणों के साथ गिरेंगे; नीर्–आप लोग; तकवु इल् तुन्पम्–अनावश्यक दुख; तविरुतिर्–छोड़ दीजिए; ऍना–कहकर; पणिक्किन्ऱान्–विश्वास दिलाया। १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— "वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक ! नहीं तो वे बाह्यांड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूँगा। मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे। आप अनावश्यक दुख छोड़ दें।" ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे। १३४

❀ वेन्दत् वीयवुम् याय्तुयर् मेववुम्, एन्द लॅम्बि वरुन्दवु मॅन्नहर्
मान्दर् वन्ऱुयर् कूरवुम् यान्वनम्, पोन्द दॅन्नुडैप् पुण्णियत् तालॅन्ड्रान् 135

वेन्तन् वीयवुम्–चक्रवर्ती दिवंगत हुए; याय् तुयर् मेववुम्–और मेरी माता दुखग्रस्त हुईं; एन्तल् ॲम्पि–महिमायुक्त मेरे लघु भ्राता भरत; वरुन्तवुम्–संकटग्रस्त है; ॲन् नकर् मान्तर्–मेरे नगर के लोग; वन् तुयर् कूरवुम्–कठोर वेदना का अनुभव करते है; यान् वतम् पोन्ततु–(यह स्थिति पैदा करते हुए) मेरा वन में आगमन; ॲन्तुटै पुण्णियत्ताल्–मेरे सुकृत (पुण्य) से ही; ॲन्ऱान्–कहा। १३५

मुझे वन में आना पड़ा जिसके कारण मेरे पिता चक्रवर्ती दिवंगत हो गये। मेरी माता कौसल्यादेवी दुखग्रस्त हो गयीं। महिमावान मेरा लघुभ्राता भरत शोकपीड़ित हो गया। मेरे नगर के वासी दुख में पड़ गये। तो भी मैं समझता हूँ कि मेरा वन में आगमन मेरे सुकृत का ही फल है। १३५

❀ अऱन्द वानॅऱि यन्दणर् तन्मैयै, मऱन्द पुल्लर् वलितॊलै येनॅनिल्
इऱन्दु पोहिनु नन्ऱिदु वल्लदु, पिऱन्दि यान्पॅऱुम् वेऱॆन्वदि यावदो 136

अऱम् तवा नॅऱि–धर्म से न हटनेवाले आचरण में लीन; अन्तणर् तन्मैयै–ब्राह्मणों के महत्व को; मऱन्त–भूलकर (कष्ट देनेवाले); पुल्लर्–नीच राक्षसों का; वलि तॊलैयेन्–बल नहीं मिटाऊँगा; ॲतिल्–तो; इऱन्तु पोकितुम्–मर जाना भी; नन्ऱितु–अच्छा; अल्लतु–नहीं तो; पिऱन्तु यान् पॅऱुम् पेऱु–जन्म लेकर पाने का भाग्य; यावतो–और क्या होगा। १३६

वे नीच राक्षस आपकी महिमा और आपका स्वभाव नहीं जानते और आपको बहुत कष्ट दे रहे है। उनका बल न मिटाऊँ तो मर जाना भी भला है। नही तो मैंने जन्म लेकर क्या पाया ? और कौन सा लाभ है जो मैं पाऊँ ? । १३६

निवन्द वेदियर् नीयिरुन् दीयवर्, कवन्द वन्दक् कळिनडङ् गण्डिड
अमैन्द विल्लु मरुङ्गणैत् तूणियुम्, शुमन्द तोळुम् पॊऱैत्तुयर् तीरुमाल् 137

निवन्त–गुणोन्नत; वेतियर् नीयिरुम्–वेदज्ञ विप्र आप; तीयवर्–खलों के; कपन्त पन्तम्–कबन्ध-वृन्द का; कळि नटम् कण्टिट–मुदित नाच देखें तव; अमैन्त विल्लुम्–मेरे पास वेकार रहा धनु; अरुम् कणै तूणियुम्–अपूर्व शरों का तूणीर; चुमन्त–इनको ढोनेवाली; तोळुम्–मेरी भुजाएँ; पॊऱै तुयर् तीरुम्–भार उठाने का दुख दूर होगा। १३७

आप गुणोन्नत ब्राह्मण उन खलों के कबन्ध-वृन्दों का मुदित नाच देख कर आनन्द मनावे, तभी भारस्वरूप वेकार यह धनु और उत्तम शरों का तूणीर —इनका बोझ व्यर्थ जो ढोती रही उन भुजाओं के भारवहन का दुख दूर होगा। १३७

आवुक् कायिनु मन्दणर्क् कायिनुम्, यावर्क् केनु मॅळियवर्क् कायिनुम्
शावप् पॅर्रव रेतहै वानुरै, देवर्क् कुन्दॉळुन् देवर्ह ळाहुवार् 138

आवुक्कु आयिनुम्–गायों के रक्षणार्थ हो; अन्तणर्क्कु आयिनुम्–या ब्राह्मणों के लिए हो; ॲळियवर् यावर्क्केनुम् आयिनुम्–निर्बल किसी के लिए भी हो; चाव पॅर्रवरे–जिनको मरने का भाग्य होता है, वे ही; तकै वान् उरै–महिमायुक्त स्वर्ग में वास करनेवाले; तेवर्क्कुम्–देवों के लिए भी; तॉळुम्–वन्द्य; तेवर्कळ् आकुवार्–देव बनेंगे। १३८

वे ही मनुष्य देववन्द्य देव बनते हैं, जो गाय, ब्राह्मण या किसी और निर्बल की रक्षा में अपने प्राण खोते है। १३८

शूर रुत्त वनुत्जुडर् नेमियुम्, ऊर रुत्त वॉरुवनु मोम्बिनुम्
आर रत्तिनों डन्रिनिन् रारवर्, वेर रुप्पॅन् वॅरुवन्मि नीरॅन्रान् 139

चूर् अरुत्तवनुम्–शूरपद्म के संहारक (कार्तिकेय) और; चुटर् नेमियुम्–ज्वलन्त चक्रधारी (विष्णुदेव); ऊर् अरुत्त ऑरुवनुम्–और त्रिपुरांतक (शिवजी); ओम्पिनुम्–उनकी रक्षा करने आएँ (तो भी); आर्–जो; अरत्तितोटु अन्रि–धर्म से अलग होकर; निन्रार्–(पाप-कर्म में प्रवृत्त) रहते है; अवर्–उनको; वेर् अरुप्पॅन्–जड़ से काट (मिटा) दूंगा; नीर् वॅरुवन्मिन्–आप मत डरिए; ॲन्रान्–कहा। १३९

शूरपद्म के संहारक कार्तिकेय, दीप्तचक्रधारी विष्णु, त्रिपुरान्तक शिव —ये सब सहायतार्थ क्यों न आएँ तो भी अधर्मी लोगों को निर्मूल करके ही छोड़ूँगा। आप डरें नहीं। श्रीराम ने यह सुदृढ़ आश्वासन दिया। १३९

उरैत्त वाशहङ् गेट्टुवन् दोङ्गिड, इरैत्त कादल रेहिय विन्नलर्
तिरित्त कोलिनर् तेमरै पाडिनर्, निरुत्त माडिनर् निन्रु विळम्बुवार् 140

उरैत्त वाचकम् केट्टु–श्रीराम का कहा हुआ कथन सुनकर; उवन्तु–सन्तुष्ट होकर; ओङ्किट इरैत्त कातलर्–उत्कृष्ट और मुखर प्रेम वाले होकर; एकिय इन्नलर्–मुक्तदुख हो; तिरित्त कोलिनर्–दण्ड को घुमाते हुए; ते मरै पाटिनर्–दिव्य वेदगान किया; निरुत्तम् आटिनर्–नृत्य किया और; निन्रु विळम्पुवार्–फिर खड़े होकर (वे) बोले। १४०

ये आश्वासन के वचन सुनकर मुनिगण तृप्त हुए। उनका प्रेम उमड़ा और मुखर हुआ। चिन्ताविमुक्त होकर उन्होंने अपने दण्डों को घुमाया, वेदगान और नृत्य किया। बाद वे बोले। १४०

तोन्रल् नीमुनि यिर्पुव नत्तोंहै, मून्रु पोल्वन मुप्पदु कोडिवन्
देन्र पोदु मॅदिरल वॅन्रलिन्, शान्रु वेदम् तवप्पॅरु जानमे 141

तोन्रल्–नायक; नी मुनियिल्–आप कुपित हों तो; मून्रु पुवन तॉकै पोल्वन–तीन लोकों के समूह के समान; मुप्पतु कोटि वन्तु एन्र पोतुम्–तीस करोड़ आकर

लड़े तो भी; ॲतिर् इलै ॲऩ्ऱलिऩ्–सामना नहीं कर सकेंगे, इसके; चाऩ्ऱु–साक्षी; वेतम् तव पॅरु ञातमे–वेदों का ज्ञान और उससे प्राप्त ज्ञान ही हैं; अरो–ऐसा है न। १४१

प्रभु ! आप कुपित हो जायँ तो यह एक लोकत्रय क्या तीस करोड़ लोकत्रय भी आपका सामना नहीं कर सकते। इसके साक्षी वेद हैं और उनके ज्ञान से प्राप्त ज्ञान हैं। १४१

अऩ्ऩ दादलि नेयिन वाण्डॅलाम्, इऩ्ऩल् कात्तिङ् गिनिदुऱै वायॅऩच्
चॊऩ्ऩ मादवर् पादन् दॊऴुदुयर्, मऩ्ऩर् मऩ्ऩवन् मैन्दनुम् वैहिऩाऩ् 142

अऩ्ऩतु आतलिऩ्–ऐसा है, इसलिए; एयिन आण्टु ॲलाम्–वनवास के लिए नियत सारे दिन; इऩ्ऩल् कात्तु–हमारी संकट से रक्षा करने; इङ्कु इतितु उऱैवाय्–यहाँ सुख से रहें; ॲऩ–ऐसा; चॊऩ्ऩ–जिन्होंने कहा, उन; मातवर् पातम् तॊऴुतु–महान तपस्वियों के चरणों पर नमस्कार करके; उयर् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩ्–सर्वश्रेष्ठ राजाधिराज (चक्रवर्ती) के; मैन्तनुम्–पुत्र भी; वैकिऩाऩ्–वहाँ ठहरे। १४२

बात ऐसी है। अतः आप वनवास के लिए निर्धारित अवधि भर यहीं सुख से वास करें और हमारी संकट से रक्षा करें। ऋषियों की यह प्रार्थना सुनकर सर्वश्रेष्ठ चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र उनके चरणों पर विनत हुए और वहीं वास करने लगे। १४२

❀ ऐन्दु मैन्दु ममैदियि ऩाण्डवण्, मैन्दर् तीदिलर् वैहिऩर् मादवर्
शिन्दै यॅण्णि यहत्तियऩ् चेर्हॅऩ, इन्दु नऩ्नुद ऱत्तॊडु मेहिऩार् 143

मैन्तर्–राजकुमार; अवण्–उस तपोवन में; ऐन्तुम् ऐन्तुम् आण्टु–पाँच और पाँच (दस) साल; तीतु इलर्–बिना किसी कठिनाई के; अमैतियिऩ्–शान्ति के साथ; वैकिऩर्–ठहरे; मातवर्–महान तपस्वियों के; चिन्तै ॲण्णि–मन में सोचकर; अकत्तियऩ् चेर्क–अगस्त्य से जा मिले; ॲऩ–कहने पर; इन्तु नल् नुतल् तऩ्ऩॊटुम्–इन्दु-सम भाल वाली सीताजी-सह; एकिऩार्–चले। १४३

वे राजकुमार पाँच और पाँच (दस) साल वहीं ठहरे। कोई असुविधा या कष्ट नहीं था। वे शान्ति के साथ वहाँ रहे। पश्चात उन ऋषियों ने मन में सोचकर श्रीराम को सुझाया कि आप अगस्त्यजी से जाकर मिलें। तब श्रीराम और लक्ष्मण इन्दुसम सुन्दर भाल वाली सीताजी के साथ चले। १४३

विडर हङ्गळुम् वेय्शॅऱि कानमुम्, पडरुञ् जिऩ्ऩॅऱि पयप्पय नीङ्गिऩार्
शुडरु मेनिच् चुदीक्कण ऩॅऩ्नुमव्, इडरि लानुऱै शोलैशॅऩ् ऱॅय्दिनार् 144

विटर् अकङ्कळुम्–पर्वत-घाटियाँ; वॅय् चॅऱि कानमुम्–बाँसतरु-संकुल वन; पटरुम्–इनमें जानेवाले; चिल् नॅऱि–सँकरे मार्ग; पय पय नीङ्किऩार्–(तीनों ने)

धीरे-धीरे तय किये; चुटरुम् मेऩि–तेजोमय शरीर वाले; चुतीक्कणऩ् ॲऩुम्–सुतीक्ष्ण नाम के; अ इटर् इलाऩ् उऱै–उत्तम दुख-निर्लिप्त ऋषि के वास के; चोलै चॆऩ्ऱु–आश्रम जाकर; ॲय्तिऩार्–पहुँचे। १४४

पर्वत प्रदेशों, बाँस के वनों आदि से होकर जानेवाले सँकरे मार्ग धीरे-धीरे तय करके वे तेजोमय शरीरी सुतीक्ष्ण नाम के ऋषि के आश्रम में पधारे। १४४

अरुक्क ऩऩ्ऩ मुनिवऩै यव्वऴि, शॆरुक्किल् शिन्दैयर् शेवडि ताऴ्दलुम्
इरुक्क वीण्डॆऩ् ऱिनियऩ कूऱिऩाऩ्, मरुक्कोऴ् शोलैयिऩ् मैन्दरुम् वैहिऩार् 145

चॆरुक्कु इल् चिन्तैयर्–घमण्डरहित मन वालों (श्रीराम और लक्ष्मण) के; अ वऴि–वहाँ; अरुक्कऩ् अऩ्ऩ मुऩिवऩै–सूर्योपम मुनि के; चे अटि–मनोहर चरणों पर; ताऴ्तलुम्–नमन करने पर; ईण्टु इरुक्क ॲऩ्ऱु–यहाँ रहें, ऐसा; इऩियऩ कूऱिऩाऩ्–मधुर वचन कहे; मैन्तरुम्–राजकुमार भी; मरु कोऴ् चोलैयिल्–सुबासपूर्ण तपोवन में; वैकिऩार्–ठहरे। १४५

अहंकारशून्य श्रीराम और लक्ष्मण सूर्य-सम तेजोवान उन ऋषि के उत्तम चरणों पर विनत हुए। तब ऋषि ने उन्हें आसन देकर विराजमान कराया। मधुर स्वागत-वचन कहे। सत्कारप्राप्त श्रीराम और लक्ष्मण भी अच्छे बास से युक्त उस आश्रम में ठहरे। १४५

वैहुम् वैहलिऩ् मादवन् मैन्दर्बाल्, शॆय्है यावैयुञ् जॆय्दिवण् शॆल्वनी
ॲय्द याऩ्शॆय्द दॆऩ्तव मॆऩ्ऱऩऩ्, ऐय नुम्मवर्क् कऩ्बऩ कूऱिऩाऩ् 146

मातवऩ्–महान तपस्वी (सुतीक्ष्ण) के; वैकुम् वैकलिऩ्–वास के आश्रम में; मैन्तर् पाल्–राजकुमारों को; चॆय्कै यावैयुम् चॆय्तु–सत्कार सब करके; चॆल्व–धनवन्त; नी इवण् ॲय्त–आप इधर पधारे, इसके लिए; याऩ् चॆय्ततु ॲ तवम्–मेरा किया कौन सा तप था; ॲऩ्ऱऩऩ्–बोले; ऐयऩुम्–प्रभु ने भी; अवर्कु–उनसे; अऩ्पऩ–स्नेहपूर्ण; कूऱिऩाऩ्–बातें कहीं। १४६

ऋषि ने अपने आश्रम में आगत दिव्य अतिथियों का खूब सत्कार किया। फिर कहा कि धनवन्त! आप इधर पधारे हैं, तो मैंने कितनी विशिष्ट तपस्या की होगी और मेरी तपस्या का कितना ही शुभ फल मिला है! श्रीराम इसके उत्तर में मधुर वचन बोले। १४६

शॊऩ्ऩ नाऩ्मुहऩ् ऱऩ्वऴित् तोऩ्ऱिऩर्, मुऩ्ऩै योरुण् मुयऱ्ऱव मुऱ्ऱिऩार्
उऩ्ऩिल् यारुळ रुऩ्ऩरु ळॆय्दिय, ॲऩ्ऩिऩ् यारुळ रिऱ्पिऱऩ् दारॆऩ्ऱाऩ् 147

चॊऩ्ऩ–प्रकीर्तित; नाऩ्मुकऩ् तऩ् वऴि तोऩ्ऱिऩर्–चतुर्मुख के वंश में उत्पन्न; मुऩ्ऩैयोरुळ्–प्राचीन मुनियों में; मुयल् तवम् मुऱ्ऱिऩार्–कठिन तपस्या करके सुसम्पन्न करनेवाले; उऩ्ऩिऩ् यार् उळर्–आपके समान कौन है; उऩ् अरुळ् ॲय्तिय–आपकी कृपा के पात्र; इल् पिऱन्तार्–गृहस्थों में; ॲऩ्ऩिल् यार् उळर्–मेरे समान कौन हैं; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। १४७

प्रकीर्तित ब्रह्मा के वंश में उदित अग्रगण्य महर्षियों में कौन हैं, जिन्होने आपके समान तप सम्पन्न किया है ? वैसे ही गृहस्थों में कौन ऐसा है, जिसे आपकी कृपा मिली है, जैसे मुझे ? । १४७

उवमै नीड्गिय तोन्ऱ लुरैक्कॆदिर्, नवमै तोन्ऱिय नऱ्ऱवन् शॊल्लुवान्
अवमि लाविरुन् दाहियॆन् ऱालमै, तवमॆ लाङ्गॊळत् तक्कनै यालॆन्ऱान् 148

उवमै नीङ्किय–अनुपमेय; तोन्ऱल् उरैक्कु–प्रभु के कथन के; ऎतिर्–उत्तर में; नवमै तोन्ऱिय नल् तवन्–नये प्रकार की तपस्या के श्रेष्ठ तपस्वी; चॊल्लुवान्–बोले; अवम् इला विरुन्तु आकि–अमोघ अतिथि बने आप; ऎन्ऩाल् अमै–मेरे अब तक सुसम्पन्न; तवम् ऎलाम्–तप सब; कॊळ तक्कनै–ग्रहण करने अर्ह हैं आप; ऎन्ऱान्–कहा । १४८

श्रीराम थे उपमाहीन । ऋषि थे अपूर्व और नयी तपस्या के कर्ता । ऋषि ने श्रीराम से कहा कि आप अमोघ अतिथि हैं । आप मेरी की हुई तपस्या का सारा फल ग्रहण कर लीजिए । आप इसके अर्ह हैं । १४८

मऱैव लानॆदिर् वळ्ळलुङ् गूऱुवान्, इऱैव निन्ऩरु ळॆत्तवत् तिऱ्कॊळि
तऱैव दीण्डुण् डहत्तियर् काण्बदोर्, कुऱैहि डन्द दिनियॆनक् कूऱिनान् 149

वळ्ळलुम्–उदार प्रभु; मऱैवलान् ऎतिर्–वेदज्ञ उनके सामने; कूऱुवान्–बोले; इऱैव–स्वामी; निन् अरुळ्–आपका अनुग्रह; ऎ तवत्तिऱ्कु ऎळितु–किस तप के लिए सुलभ (प्राप्य) है; ईण्टु–अब; अऱैवतु उण्टु–कथनीय एक विषय है; इति–अब; अकत्तियर् काण्पतु–अगस्त्य के दर्शन का; ओर् कुऱै किटन्ततु–एक इच्छा अपूर्ण रहती है; ऎन कूऱिनान्–ऐसा कहा । १४९

वेदव्युत्पन्न मुनिवर से प्रभु ने कहा कि स्वामी ! आपकी कृपा मुझ पर हुई —वह क्या कम है ? कितनी ही बड़ी तपस्या का फल है वह उपलब्धि ! अब आपसे एक निवेदन करना है । अगस्त्यजी के दर्शन की इच्छा अभी पूर्ण नहीं हुई । १४९

नल्ल देनिन्ऩैन् दायदु नानुमुन्, शॊल्लु वान्ऱुणि हिन्ऱदु तोन्ऱनी
शॆल्दि याण्डवर्ऱ् चेरुदि शेर्न्दपिन्, इल्लै निन्वयि नॆय्दहि लादवे 150

तोन्ऱल्–प्रभु; नी नल्लते निऩैन्ताय्–आपने अच्छा ही सोचा है; अतु–वही; नानुम्–मेरे द्वारा भी; मुन् चॊल्लुवान्–पहले कहने का; तुणिकिन्ऱतु–निश्चय किया हुआ था; आण्टु चॆल्ति–वहाँ पधारें; अवर् चेरुति–उनसे मिलें; चेर्न्तपिन्–उनसे मिलने के बाद; निन् वयिन्–आपके; ऎय्त किल्लातवे–अप्राप्य कोई हित; इल्लै–नहीं ही होंगे । १५०

मुनि ने उत्तर में कहा कि राजकुमार ! आपने ठीक ही सोचा है । मेरा भी वह अभिप्राय था । उधर पधारिए, उनसे मिलिए । उसके बाद आपको प्राप्त न हों, ऐसे कोई मंगल रहेंगे ही नहीं ! । १५०

अन्ऱि युन्निन् वरविनै यादरित्, तिन्ऱु हाऱुनिन् ऱेमुऱु मालवर्
चॆन्ऱु शेरुदि शेरुदल् शॆव्वियोय्, नन्ऱु देवर्क्कुम् यावर्क्कु नन्ऱॆना 151

अन्ऱियुम्–इसके अलावा; चॆव्वियोय्–पुरुषश्रेष्ठ; निन् वरविनै–आपके आगमन की; आतरित्तु–प्रतीक्षा करके; इन्ऱु काऱुम्–आज तक; निन्ऱु–रहकर; एम् उऱुमाल्–तरसते होंगे; चॆन्ऱु–जाकर; अवर् चेरुति–उनसे मिलिए; चेर्न्त पिन्–मिलने के पश्चात; तेवर्क्कुम् नन्ऱु–देवों के लिए भी मंगल है; यावर्क्कुम् नन्ऱु–सबके लिए लाभकर है; ऎंता–कहकर। १५१

और भी आपके आगमन की प्रतीक्षा में वे उतावले हो रहे होंगे। इसलिए आप उनसे जाकर मिलिए। उनसे आपका मिलन देवों के लिए भी भला करनेवाला है और अन्य सभी के लिए भी। १५१

❀ वऴियुङ् गूऱि वरम्बिल वाशिहऴ्
मॊऴियु मादवन् मॊय्म्मलर्त् ताडॊऴाप्
पिऴियुन् देऩिऱ् पिऱङ्गरु वित्तिरऴ्
पॊऴियुञ् जोलै विरैविऩिऱ् पोयिऩार् 152

वऴियुम् कूऱि–मार्ग बताकर; वरम्पु इल–निस्सीम; आचिकऴ् मॊऴियुम्–आशीर्वाद देनेवाले; मातवन्–महान तपस्वी के; मॊय् मलर् ताऴ् तॊऴा–घना-कमल-सम चरणों की पूजा करके; पिऴियुम् तेऩिल्–छत से निचोड़े जानेवाले शहद की धारा के समान; पिऱङ्कु–वहाँ रहनेवाली; अरुवि तिरऴ्–सरिताओं की राशि; पॊऴियुम्–जहाँ जल बहाती थी, उस; चोलै–आश्रम को छोड़कर; विरैवित्तिल्–वेग के साथ; पोयित्तार्–आगे चले। १५२

ऐसा कहकर उन्होंने श्रीराम को अगस्त्याश्रम जाने का मार्ग भी बताया। उन्हें पुष्कल आशीर्वाद भी किया। श्रीराम, उनके घने कमल-समान चरणों की वन्दना करके वहाँ से चल पड़े। उस आश्रम में शहद की धारा के समान स्वच्छ सरिताओं की राशि जल बहा रही थी। श्रीराम उस आश्रम से निकलकर वेग के साथ चलने लगे। १५२

❀ आण्डहैय रव्वयि ऩडैन्दमै यऱिन्दान्
ईण्डुवहै वेलैतुणै येऴुलह मॆय्द
माण्डवर दऩ्शरण् वणङ्गवॆदिर् वन्दान्
नीण्डतमि ऴालुहै नेमियि ऩळन्दान् 153

नेमियिन्–चक्रधारी के त्रिविक्रम अवतार के समान; उलकै–(ज्ञान) लोक को; नीण्ट तमिऴाल्–बहुत प्राचीन तमिऴ भाषा से; अळन्तान्–नापनेवाले (अगस्त्य); आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम का; अ वयिन् अटैन्तमै–वहाँ आगमन; अऱिन्तान्–जानकर; तुणै एऴु उलकम्–चौदहों भुवनों को; ईण्टु उवकै वेलै ऎय्त–इधर सुखसमुद्र में मग्न करते हुए; माण्ट वरतन्–महिमावान वरद श्रीराम; चरण् वणङ्क–अपने चरण में वन्दना करें, यह सुविधा करते हुए; ऎतिर् वन्तान्–श्रीराम के सामने (अपने कुटीर से निकलकर) आये। १५३

(वाल्मीकी में श्रीराम का पहले अगस्त्य के भाई सुदर्शन के आश्रम में जाने की चर्चा है। अगस्त्याश्रम जाने से पहले सीताजी ने श्रीराम को बताया कि अकारण राक्षसों को मारना पाप है —यह भी वृत्तान्त है।) अब वे अगस्त्याश्रम आ गये। अगस्त्य जिन्होंने, जैसे त्रिविक्रम ने तीनों लोकों को नापा था, तमिऴ भाषा द्वारा ज्ञानलोक को मापा था यानी तमिऴ में ज्ञान को समाहित किया था, जान गये कि श्रीराम अपने आश्रम में पधारे हैं। वे स्वयं उनके सामने आ गये ताकि महिमावान वरद श्रीराम चौदहों भुवनों को सन्तोष-सागर में मग्न करते हुए उनके चरणों पर विनत हों। १५३

❀ पण्डवुणर् मूऴ्हित्तर् पडार्हळॆन्न वात्तोर्
ऒण्डव वॆम्मक्करुळ् हॆन्नक्कुऱै यिरप्पक्
कण्डोरुहै वारित्तन्मु हन्दुकड लॆल्लाम्
उण्डवर्हळ् पिन्नुमिऴ्ह वॆन्ऱलु मुमिऴ्न्दान् 154

वात्तोर्–देव; पण्डु–पहले; अवुणर्–असुर लोग; मूऴ्कित्तर्–समुद्र में डूबे; पटार्कळ्–नहीं मरेंगे; ऍन्न–सोचकर; ऒण् तव–सम्मान्य तपोधन; ऍमक्कु अरुळ्क–हम पर कृपा करें; ऍन कुऱै इरप्प–ऐसा कष्ट निवेदन करने पर; कण्टु–विषय समझकर; कटल् ऍल्लाम्–सातों समुद्रों को; ऒरु कै वारित्तन् मुकन्तु–एक हाथ में उठा लेकर; उण्टु–घूँट लेकर; पिन्न् अवर्कळ् उमिऴ्क ऍन्ऱलुम्–फिर उनके 'बाहर उगल दीजिए' कहने पर; उमिऴ्न्तान्–बाहर थूक दिया। १५४

पहले कभी, वृत्रासुर आदि समुद्र में जाकर छिप गये। देवेन्द्र और अन्य देव समझ गए कि ये समुद्र में छिपे हैं। उनको मारना असम्भव है। इसलिए वे अगस्त्य के पास आये और प्रार्थना की कि सम्मान्य तपोधन! हम पर कृपा कीजिए। अगस्त्य ने बात समझ ली। उन्होंने सातों समुद्रों का जल अपने चुल्लू में भरकर घूँट लिया। फिर देवों के प्रार्थना करने पर ही उसे थूका और समुद्रों को जल-भरा बनाया। ऐसे महिमावान थे वे। १५४

तूयकड नीरैमुऴु दुण्डवै तुरन्दान्
आयवव नालमरु मॆय्युडैय नन्नान्
मायविनै वाळवुणन् वादवितन् वन्मैक्
कायमिति दुण्डुलहि नारिडर् कळैन्दान् 155

तूय कटल् नीरै–पवित्र सागर-जल को; मुऴुतु उण्टु–पूरा घूँटकर; अवै तुरन्तान्–उसे थूकनेवाले; आयवन्तुम्–वे ऋषि भी; आल् अमरुम् मॆय् उटैयन्–वट-बीज-सम छोटी आकृति वाले हैं; अन्नान्–उन्होंने; माय विनै–मायावी कार्य करनेवाले; वाळ् अवुणन्–तलवारधारी असुर; वातपि–वातापि नाम के; वन्मै–शक्तियुक्त; कायम् इनितु उण्टु–शरीर को सुखपूर्वक खाकर; उलकिन् आर् इटर्–संसार का घोर संकट; कळैन्तान्–दूर किया था। १५५

सागरजल सारा एक घूँट में पीनेवाले वे आकृति में बहुत छोटे थे और जैसे वट-बीज में उतना बड़ा वटवृक्ष अव्यक्त रहता है, उसी तरह उस आकृति के अन्दर बड़ी महिमा छिपी थी। उन्होंने मायावी, कपटकर्मा वातापि का शरीर भक्षण करके उसकी मृत्यु द्वारा लोकहित किया था। कथा इस प्रकार है— इल्वल और वातापि दो दानव भाई थे। इल्वल वातापि को मेष बनाकर मारता और उसे पका देता। वह ब्राह्मणों को श्राद्ध कहकर निमन्त्रण देता और खिलाने के बाद वातापि को बुलाता। वातापि ब्राह्मण का पेट चीरकर बाहर आ जाता। दोनों मृतक ब्राह्मण को खा जाते। यही चाल उन्होंने अगस्त्य से भी चली। पर अगस्त्य वातापि को जीर्ण कर गये। संसार की आफ़त मिटी। १५५

❀ योहमुरु पेरुयिर्‌ह डामुलैवु ड़ामल्, एहुनॅड़ि यार्दॅन्न मिदित्तडियि नॅड़ि
मेहॅन्डु मालैतवळ् विन्दर्मॅनुम् विण्डोय्, नाहमदु नाहमुड़ नाहमॅन्न निन्ड़ान् 156

योकम् उरु पेर् उयिर्कळ् ताम्—उद्योगशील बड़ी संख्या के जीव; उलैवु उड़ामल्—बिना हानि के; एकुम् नॅड़ि यातु—जायँ, ऐसा मार्ग क्या है; ऍन्न—(देवों के) पूछने पर; अटियिन् मितित्तु एड़ि—अपने चरणों को रखते हुए उसके ऊपर चढ़कर; मेकम् नॅट्टु मालै तवळ्—मेघ-मालाएँ जिस पर रेंगती थीं, उस; विन्तम् ऍन्नुम्—विन्ध्य नाम के; विण् तोय्—गगनस्पर्शी; नाकम् अतु—पर्वत को; नाकम् उड़—नागलोक (पाताल) तक धँसाते हुए; नाकमॅन्न—एक गज के समान; निन्ड़ान्—खड़े रहे। १५६

(विन्ध्य पर्वत सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों से वैर करके ऊँचा बढ़ा और ग्रहों की गति रुक गयी और जीवों का उद्यम भी बेकार होने लगा।) देवों ने अगस्त्य से प्रार्थना की कि इन उद्यमी जीवों का आना-जाना कैसे हो? तब अगस्त्य उस पर पग धरकर चढ़े और गज के समान उसके ऊपर खड़े हो गये। तब वह पर्वत धँसकर नागलोक पहुँच गया। (नाकम् के तीन अर्थ हैं— पर्वत, पाताललोक और गज।)। १५६

❀ मूशरवु शूडुमुद लोनुरैयिन् मूवा, माशिड़व वेॅह्न वडादुदिशै मेन्नाळ्
नीशमुड़ वानिॅन्डु मामलय नेरा, ईशनिह रायुलहु शीर्पॅड़ विरुन्दान् 157

मेल् नाळ्—पहले किसी दिन; वटातु तिचै—उत्तर दिशा; नीचम् उड़—नीचे चली गई, तब; मूचु अरवु चट्टु मुतलोन—घने नागाभरण देव (शिवजी) ने; मूवा—वार्द्धक्य से अप्रभावित; माचु इल् तव—और अकलंक तपस्वी; एकु ऍन्न—तुम (दक्षिण) जाओ, कहा, तब; वानिन् नॅट्टु मा मलयम्—आकाश तक ऊँचे बढ़े मलयपर्वत; नेरा—पहुँचकर; ईचन् निकराय्—शिवजी की समान स्थिति में; उलकु चीर् पॅड़—भूमि को सम बनाते हुए; इरुन्तान्—बस गये। १५७

(एक बार परमेश्वर के विवाह के अवसर पर सभी जीवराशियाँ उत्तर में आ गयीं और भूमि का उत्तरी भाग नीचा हो गया। भूमि का सन्तुलन बिगड़ गया। तब) अनेक सर्पों को आभरण के रूप में धारण

करनेवाले शिवजी ने अगस्त्यजी से कहा कि हे वार्द्धक्य से अप्रभावित तेज वाले ! अकलंक तपस्वी ! आप दक्षिण में चले जाइए। अगस्त्य दक्षिण गए और गगन तक उन्नत मलय पर्वत में रह गये। भूमि समतल हो गयी और अगस्त्य शिवजी की समानता की स्थिति में मान्य हो गये। १५७

उऴक्कुमरै नालिनु मुयर्न्दुलह मोदुम्
वऴक्किनु मदिक्कवैयि नुम्मरवि ऩाडि
निऴऱ्पॊऴि कणिच्चिमणि नॆऱ्ऱियुमिऴ् शॆङ्गण्
तऴऱ्पुरै शुडर्क्कडवु डन्दतमिऴ् तन्दान् 158

निऴल् पॊऴि–प्रकाश वरसानेवाला; कणिच्चि–परशु (तप्त-आयस ?); मणि नॆऱ्ऱि–सुन्दर भाल पर; उमिऴ् चॆम् कण्–लाली फैलानेवाली आँख; तऴल् पुरै चुटर्–अग्नि-सम तेज; कटवुळ्–इनसे युक्त ईश्वर ने; तन्त–जो दिया (सिखाया) था; तमिऴ्–उस तमिऴ को; उऴक्कु मरै नालिनुम्–परिश्रम के साथ अध्येय चारों वेदों; उलकम् उयर्न्तु ओतुम् वऴक्कितुम्–संसार के श्रेष्ठ ज्ञानियों के प्रयोग-प्रणालियों; मति कवैयितुम्–और अपनी बुद्धि से किये हुए अन्वेषण के आधार पर; मरपिऩ्–उचित परिपाटी के अनुसार; नाटि–खूब खोजकर; तन्तात–व्याकरण शुद्ध बनाकर दिया था। १५८

जाज्वल्यमान परशु, सुन्दर भाल का लाल नेत्र और अग्निसम तेजोमय रूप —इनसे युक्त शिवजी ने अगस्त्यजी को तमिऴ सिखायी। (पाणिनी को संस्कृत —ऐसा पुराण कहता है।) तब अगस्त्य ने बहुत परिश्रम से अध्येय वेद, लोकरूढ़ी और अपनी मेधा-शक्ति का प्रयोग कर उचित रीति से अन्वेषण किया और तमिऴ को व्याकरण-बद्ध श्रेष्ठ भाषा बना दिया। १५८

❀ विण्णिनिऩ् निलत्तिनिल् विहर्पवुल हिऱ्पेर्
ऎण्णिनि लिरुक्किनि लिरुक्कुमॆन यारुम्
उण्णिनै करुत्तिनै युऱप्पॆरुवॆ नाॅॆन्
कण्णिनि लॆंनक्कॊडु कळिप्पुरु मनत्तान् 159

विण्णिनिल्–देवलोक में; निलत्तिनिल्–भूलोक में; विकऱ्प उलकिल्–इनसे जुदा अन्य लोकों में; पेर् ऍण्णितिल्–बड़े गणित-शास्त्रों में; इरुक्कितिल्–वेदों के ऋचाओं में; इरुक्कुम् ऍन–विद्यमान हैं, ऐसा; यारुम् उळ् निनै करुत्तिनै–सभी जिसका मन में ध्यान करते हैं, उस परमतत्व को; ऍन् कण्णिनिल्–अपनी आँखों के; उऱ पॅरुवॅन्–गोचर बनते देखूंगा; ऍन्न कोटु–यह विचारकर; कळिप्पु उरु मनत्तान्–हर्षितमन हुए। १५९

ऐसे अगस्त्य अब अपार हर्ष से भर गये। क्या आज मुझे ऐसा भाग्य मिल रहा है जिससे वह तत्व, जिसको देवलोक, भूलोक और इनसे अलग अन्य लोकों के लोग वेदों और श्रेष्ठ गणित (तर्क) शास्त्रों में ढूंढ़ते

हैं और सदा-सर्वदा स्मरण करते हैं, आज दृष्टिगोचर होगा ? इस कल्पना से ही उनके मन में आनन्द उमड़ आया । १५९

❀ इरैत्तमऱै नालिऩॊ डियैन्दपिऱ यावुम्
निरैत्तनॆऱि ञाननिमिर् कल्लिनॆडु नाळिट्
टुरैत्तुमय ऩारुमऱि यादपॊरु ळोविऩ्
ऱुरैत्तदुवु माॅन्नु मुणर्च्चियि नुवप्पाऩ् 160

इरैत्त मऱै–उद्गीत वेद; नालिऩ् ओटु–चारों के साथ; इयैन्त पिऱ यावुम्–लगे रहनेवाले अन्य सभी शास्त्र, पुराण आदि में; निरैत्त–अभ्यस्त; नॆऱि ञातम्–सन्मार्ग से प्राप्त ज्ञान की; निमिर् कल्लिल्–उत्कृष्ट कसौटी में; नॆटु नाळ् इट्टु उरैत्तुम्–अनेक दिन कसकर देखने पर भी; अयऩारुम् अरियात–ब्रह्मदेव को भी अज्ञात; पॊरुळो–वह परवस्तु क्या; इऩ्ऱु–आज; उरैत्तु–मेरे साथ सम्भाषण करके; उतवुम् आल्–कृपा करेगी; ऍन्नुम्–इस; उणर्च्चियिऩ्–भावोद्वेग में; उवप्पाऩ्–बहुत आनन्दमग्न हुए । १६०

उद्गीत चारों वेद और अन्य शास्त्र, पुराण आदि का खूब अध्ययन, अन्वेषण करके उससे प्राप्त ज्ञान की कसौटी पर बहुत दिन कसकर देखने पर भी ब्रह्मादि देवों से भी जिस परतत्व को वस्तुतः समझना कठिन है, क्या वह परब्रह्म आज मेरे साथ वार्तालाप करेगा और मुझ पर कृपा करेगा ! हा ! कितना भाग्यवान हूँ ! इस भावोद्वेग में वे हर्षविह्वल हो गये । १६०

❀ उयन्दऩ रिमैप्पिल रुयिर्त्तऩर् तवत्तोर्
अन्दण रऱत्तिऩॆऱि निऩ्ऱऩर्ह ळाऩार्
वॆन्दिऱ लरक्कर्विड वेर्मुद लऱुप्पान्
वन्दऩन् मरुत्तुव ऩॆऩत्तऩि वलिप्पाऩ् 161

वॆम् तिऱल् अरक्कर्–भयंकर और शक्तिमन्त राक्षस रूपी; विट वेर् मुतल् अऱुप्पाऩ्–विषैली जड़ को जो निर्मूल करेंगे; मरुत्तुवऩ्–वे वैद्य; वन्त तऩ्–आये; इमैप्पु इलर्–निर्निमेष (सुर); उयन्तऩर्–तर गये; तवत्तोर् उयिर्त्तऩर्–तपस्वी लोग प्राण-रक्षित हो गये; अन्तणर् अऱत्तिऩ् नॆऱि–ब्राह्मण धर्म-मार्ग में; निऩ्ऱऩर्कळ् आऩार्–चलनेवाले हो गये; ऍऩ–ऐसा सोचकर; तऩि वलिप्पाऩ्–विशेष साहसपूर्ण हो गये । १६१

भयंकर और बलवान राक्षस रूपी विष की जड़ को ही उखाड़ने के लिए वैद्य के समान श्रीराम आ गये । अब निर्निमेष आँखों वाले देवों का संकट मिट गया और वे दुखनिवृत्त हो गए । तपस्वीजन जीवन्त हो गए । ब्राह्मण लोग धर्ममार्गगामी बने । ऐसी धारणा करके वे उत्साही और साहसी बने । १६१

एनैयुयि रामुलवै यावुमिडै वेवित्, तूनुह ररक्करुर मिरुचुडु शिनत्तिन्
आन्व नलैक्कडि दवित्तुल हळिप्पान्, वानमळै वनुदर्दन मैनुदुरु मनत्तान् 162

एनै उयिराम्–अन्य जीव; उलवै यावुम्–सभी मुरझाए (भयातुर) लोगों को; वेवित्तु–उबालकर; ऊन्. नुकर्–उनका मांस खानेवाले; अरक्कर्–राक्षस रूपी; उरुमिल् चुट्टु चिनत्तिन्–वज्र के समान जलानेवाले क्रोध की; कान अळलै–दावाग्नि को; कटितु अवित्तु–सत्वर बुझाकर; उलकु अळिप्पान्–लोकों की रक्षा करने के लिए; वान मळै वन्ततु–मेघों से वारिश आई; ऍन्न–ऐसा; मैनूतु उरु मनत्तान्–उत्साह-भरे मन वाले। १६२

राक्षस लोग, पहले ही उनसे डरकर मुरझाते रहे जीवों को पकड़कर उन्हे उबालकर खा लेते थे। वे गाज के समान जलानेवाली दावाग्नि थे। उस दावाग्नि को बुझाने के लिए आकाश के मेघों से गिरनेवाले जल के समान श्रीराम लोकरक्षणार्थ आ गए। यह सोचकर अगस्त्य उत्फुल्लमन हो गए। १६२

❀ कण्डन निरामनै वरक्करुणै कूरप्
पुण्डरिह वाणयन नीरपॉळिय निन्ऱान्
ऍण्डिशैयु मेळुलहु मॅव्वुयिरु मुय्यक्
कुण्डिहैयि निरुपॉरुविल् काविरि कॉण्र्न्दान् 163

ऍण् तिचैयुम्–आठों दिशाएँ; एळ् उलकुम्–सातों लोक; ऍ उयिरुम्–कोई भी जीव; उय्य–तरें, इसके लिए; कुण्टिकैयिनिल्–अपने मण्डलु में; पॉरुवु इल्–उपमा-रहित; काविरि कॉणर्न्तान्–कावेरी नदी को (ब्रह्मलोक से) जो लाये, वे अगस्त्य; इरामनै वर कण्टनन्–श्रीराम को आते हुए देखकर; करुणै कूर–कृपा के उमगते; पुण्टरिक–कमलपुष्प के समान; वाळ्–प्रकाशमान; नयनम्–आँखों से; नीर् पॉळिय–आँसू बरसाते हुए; निन्ऱान्–खड़े रहे। १६३

अगस्त्य आठों दिशाओं और सातों लोकों में रहनेवाले जीवों के उद्धार के लिए ब्रह्मलोक से अपने कमण्डलु में कावेरी नदी को लाये थे। ये श्रीराम को आते देखकर आनन्दबाष्पाकुल कमलनेत्रों के साथ श्रीराम के सामने खड़े रहे। १६३

❀ निन्ऱवनै वन्दनॅडि योनडि पणिन्दान्
अन्ऱवनु मन्बॊडु तळीइयळुद कण्णान्
नन्ऱुवर वॅन्ऱुपल नल्लुरै पहर्न्दान्
ऍन्ऱुमुळ दॅन्ऱमि ळियम्बियिशै कॊण्डान् 164

निन्ऱवनै–वैसे स्थित उनके; वन्त नॅटियोन्–उधर जो पधारे, वे विष्णु श्रीराम; अटि पणिन्तान्–चरणों पर नतमस्तक हुए; अन्ऱु–तव; ऍन्ऱुम् उळ–सदा से रहनेवाली; तॅन् तमिळ्–(दक्षिणी या) मधुसम तमिऴ; इयम्पि–रचकर; इचै

कॊण्टान्–कीर्ति जो पा चुके; अवत्तुम्–उन्होंने; अन्पॊटु तऴीइ–प्रेम के साथ गले लगाकर; अऴुत कण्णान्–वाष्पपूरित आँखों वाले बनकर; नन्रु वरवु–शुभ हो आपका आगमन; ॲन्रु–कहकर; पल नल् उरै–अनेक शिष्टाचार-वचन; पकर्न्तान्–कहे। १६४

आत्मविभोर होकर जो खड़े रहे उनके चरणों को, श्रीराम ने, जो वहाँ पधारे और जो त्रिविक्रम देवता ही थे, नमस्कार किया। तब नित्य रहनेवाली मधुर तमिऴ देकर जो कीर्तिमान बने, उन अगस्त्य ने उन्हें स्नेह के साथ गले लगाकर नेत्रों से आनन्द का बाष्प बहाते हुए कहा कि आपका आगमन शुभ हो। १६४

❀ वेदियर्हळ् वेदमॊऴि वेरुपल कूरक्
कादन्मिह निन्रॊऴिर् कमण्डलुवि नन्नीर्
मादवर्हळ् वीशिनॆडु मामलर्ह डूवप्
पोदुमण नाऱुकुळिर् शोलैहॊडु पुक्कान् 165

वेतियर्कळ्–वेदज्ञ ब्राह्मण लोगों ने; वेरु पल–विभिन्न अनेक; वेत मॊऴि कूर–वेद (के) मंगलाशासन किया; मातवर्कळ्–महान तपस्वियों ने; कातल् मिक–प्रेम के बढ़ते; निन्रु–सामने खड़े होकर; ऒळिर् कमण्टलुविन्–शुभकारी कमण्डलु के; नल् नीर् वीचि–पवित्र जल को (मन्त्रोच्चारण के साथ) छिड़काकर; नॆटु मा मलर्कळ् तूव–सुन्दर फूलों को देर तक वरसाया; पोतु कणम् नाऱुम्–(तब अगस्त्य) तभी खुले हुए पुष्पों की गन्ध से पूर्ण; कुळिर् चोलै कॊंटु–शीतल आश्रम में ले जाकर; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। १६५

वेदज्ञ ब्राह्मणों ने विविध वेदों के मन्त्र उच्चारण करते हुए मंगलाशासन किया। महान तपस्वियों ने बढ़ते प्रेम के साथ अपने कमण्डलुओं से पवित्र जल लेकर मंगलदायी मंत्रों को कहते हुए श्रीराम पर छिड़का। तब अगस्त्य श्रीराम (आदि) को लेते हुए नवीन, विकसित पुष्पों की सुगन्ध से पूर्ण अपने तपोवन में ले गये। १६५

❀ पॊरुन्दवम लन्बॊऴि लहत्तिनिदु पुक्कान्
विरुन्दव णमैत्तपिन् विरुम्बिनन् विरुम्बि
इरुन्दव मिऴैत्तवॆन दिल्लिडैयिल् वन्दॆन्
अरुन्दव मुडित्तनै यरुट्करश वॆन्ड्रान् 166

अमलन्–निर्मल श्रीराम; पॊऴिल् अकत्तु–तपोवन में; पॊरुन्त–चाव के साथ ठहरने; इनितु पुक्कान्–आनन्द के साथ पहुँचे; अवन्–वे महर्षि; विरुम्पितन्–प्यार के साथ; विरुन्तु अमैत्त पिन्–भोजन कराने के बाद; अरुट्कु अरच–कृपालु प्रभु; इरुम् तवम् इऴैत्त–बड़ी तपस्या जहाँ करता रहा; ॲन्नतु इल् इटैयिल्–मेरे इस कुटीर में; विरुम्पि वन्तु–आप ही चाहकर आये; ॲन् अरुम् तवम् मुटित्तनै–और मेरी तपस्या को सम्पन्न बना दिया; ॲन्ड्रान्–बोले। १६६

पवित्र पुरुष श्रीराम भी उधर सुख से रहने का विचार करके आनन्द के साथ गये। महर्षि ने उनको भोजनादि सत्कार करने के बाद उनसे कहा कि कृपालु प्रभु ! मेरे इस तपोवन में, जहाँ मैं लम्बे अरसे से तपस्या कर रहा हूँ, आप पधारे और मेरे कुटीर को अपनी इच्छा से पवित्र किया है। आपने ऐसा करके मेरे तप को सुसंपन्न कराया है ! मेरी तपस्या सफलीभूत हुई। १६६

❀ ऍऩ्ऱमुऩि यॆत्तॊऴु दिराम ऩिमैयोरुम्
निऩ्ऱतव मुऱ्ऱुनॆंडि योरिऩ्ऩॆंडि योरुम्
उऩ्ऱनरुळ् पॆऱ्ऱिलरह ळुऩ्ऩरुळ् शुमऩ्देऩ्
वॆऩ्ऱऩ ऩऩैत्तुलहु मेलिऩियॆ ऩॆऩ्ऱाऩ् 167

ऍऩ्ऱ मुऩियै–ऐसा जिन्होंने कहा उन मुनि को; इरामऩ्–श्रीराम; तॊऴुतु–नमस्कार करके; इमैयोरुम्–देवता लोग; निऩ्ऱ तवम् मुऱ्ऱु–क्रियमाण तपस्या को जो पूरा कर चुके; नॆंटियोरिऩ् नॆंटियोरुम्–श्रेष्ठों से भी श्रेष्ठ वे तपस्वी भी; उऩ्ऱऩ् अरुळ् पॆऱ्ऱिलर्कळ्–आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके; उऩ् अरुळ् चुमन्तेऩ्–मैं आपकी कृपा का पात्र बना हूँ; अनैत्तुलकुम्–सारे लोकों को; वॆऩ्ऱऩऩ्–जीतनेवाला बन गया; मेल्–इससे श्रेष्ठ; इऩि ऍऩ्–अब क्या चाहिए; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। १६७

ऐसा शिष्टाचारवचन कहनेवाले अगस्त्यजी को नमस्कार करके श्रीराम ने कथन किया कि हे महर्षि ! देव क्या, अपनी तपस्या को सुसंपन्न कर चुके महान से महान तपस्वी क्या —वे भी आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके हैं। लेकिन मैं आपकी कृपा का पात्र बन गया। इसलिए सर्वलोक-जयी हो गया। इससे बढ़कर कौन सा भाग्य है, जो मैं पाना चाहूँ ? । १६७

❀ तण्डह वऩत्तुऱैदि यॆऩ्ऱुरै तरक्कॊण्
डुण्डुवर वित्तिशै यॆऩप्पॆरि दुवन्देऩ्
ऍण्डहु गुणत्तिऩै यॆऩक्कॊडुयर् शॆऩ्ऩित्
तुण्डमदि वैत्तवऩै यॊत्तमुनि शॊल्लुम् 168

उयर् चॆऩ्ऩि–अपने श्रेष्ठ सिर पर; तुण्ट मति–कलाचन्द्र को; कॊटु–लेकर; वैत्तवऩ्–धरनेवाले; ऒत्त–(शिवजी से) तुल्य; मुऩि–महर्षि; ऍण् तकु कुणत्तिऩै–प्रशंसनीय गुण वाले; तण्टक वऩत्तु उऱैति–दण्डकवन में रहते हैं; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उरै तर कॊण्टु–वचन के कहे जाते सुनकर; उण्टु वरवु इ तिचै–आना होगा आपको इस दिशा में; ऍऩ–यह निश्चय करके; पॆरितु उवन्तेऩ्–बहुत आनन्दित हुआ; ऍऩ–कहा और; चॊल्लुम्–और आगे कहा। १६८

अपने सिर पर कलाचन्द्र धारण करनेवाले शिवजी-सदृश अगस्त्य ने कहा कि सबसे प्रशंसनीय गुण वाले श्रीराम ! यहाँ आगत मुनियों से यह समाचार मिला था कि आप दण्डक वन में वास कर रहे हैं। तब

सोचा कि इसी ओर आपका आगमन संभाव्य है। इस विचार से मैं बहुत आनन्दित हुआ। वे आगे बोले। १६८

❀ ईण्डुरैदि यैयविन्नि यिव्वयि न्निरुन्दाल्
वेण्डियत्न मादवम् विरुम्बिनै मुडिप्पाय्
तूण्डुशिन्न वाणिरुदर् तोन्ऱियुळ रॅन्ऱाल्
माण्डुह मलैन्दॅमर् मन्नत्तुयर् तुडैप्पाय् 169

ऐय–प्रभु; ईण्टु उऱैति–यहाँ ठहरिए; इ वयिन् इरुन्ताल्–इधर रहेंगे तो; इन्नि–आगे; वेण्टियत्त मातवम्–जो चाहेंगे वे महान तप; मुटिप्पाय्–सम्पन्न कर सकेंगे; तूण्टु चिन–उकसाए हुए क्रोध के साथ; वाळ् निरुतर्–तलवारधारी राक्षस; तोन्ऱि उळर् ॲन्ऱाल्–प्रकट हो आयँगे तो; माण्टु उक–उनको मारकर गिराते हुए; मलैन्तु–उनसे लड़कर; ॲमर्–हम जैसों का; मन्न तुयर्–मन के क्लेश को; तुटैप्पाय्–दूर कर सकेंगे। १६९

प्रभु! यहीं ठहरिए। इधर रहने से आपको सुविधा होगी। आप अपने इच्छित तप, व्रत आदि का पालन कर सकेंगे। और भी उकसाये क्रोध वाले तलवारधारी राक्षस इधर प्रकट होंगे तो आप उन्हें मार मिटाकर हमारी रक्षा कर सकेंगे और हम जैसे मुनियों का क्लेश दूर कर सकेंगे। १६९

❀ वाऴुमऱै वाऴुमनु नीदियऱम् वाऴम्
ताऴुमिमै योरुयर्वर् तान्नवर्ह डाऴ्वार्
आऴियुळ वन्बुदल्व वैयमिलै मॅय्ये
एऴुलहम् वाऴुमिनि यिङ्गुऱैदि यॅन्ऱान् 170

आऴि उळवन् पुतल्व–आज्ञाचक्र-कृषक चक्रवर्ती के पुत्र; इन्नि मऱै वाऴुम्–अब वेद जी गए; मनु नीति वाऴुम्–मनुनीति स्थिर हो गई; अऱम् वाऴुम्–(बत्तीस) धर्म जी जायँगे; एऴ् उलकम् वाऴुम्–सातों लोक जी जाएँगे; ताऴुम् इमैयोर्–अवनत देवता लोग; उयर्वर्–उन्नत हो जायँगे; तान्नवर्कळ् ताऴ्वार्–दानव अवनत हो जायँगे; ऐयम् इलै–सन्देह नहीं; मॅय्ये–यह सत्य है; इङ्कु उऱैति–यहाँ वास कीजिए; ॲन्ऱान्–(अगस्त्य) ऐसा बोले। १७०

आज्ञाचक्र चलानेवाले चक्रवर्ती के पुत्र! आगे वेद जी जायँगे। मनुनीति सुस्थापित हो जायगी। (बत्तीस?) धर्म टिक जायँगे। सातों लोक पनपेंगे। अवनत देवता लोग उन्नत हो जायेंगे और राक्षस गिर जायँगे। हाँ, शक नही। यह ध्रुवसत्य है। इसलिए आप यहीं वास कीजिए। १७०

❀ शॅरुक्कुडै यरक्करपुरि तीमैशिदै वॅय्दत्
तरुक्कऴि दरक्कडिदु कोल्वदु शमैन्देन्

वरुक्कमऱै योयवर् वरुन्दिशैयिन् मुन्दुऱ्
ऱिरुक्कैनल नॆऱ्करुळ्ह वॆन्ऱन निरामन् 171

इरामन्–श्रीराम ने; वरुक्क मऱैयोय्–अंग-उपांगों के साथ वेदों के ज्ञाता; चॆरुक्कु उऱै अरक्कर्–घमण्डी राक्षस; पुरि–जो करते हैं; तीमै–अत्याचार; चितैवु ऍय्त–उनको मिटाते हुए; तरुक्कु अऴि तर–गर्व चूर करते हुए; कटितु कॊल्वतु चमैन्तेन्–शीघ्र उनको मारने का संकल्प कर लिया है; अवर् वरुम् तिचैयिल्–उनके आने की दिशा में; मुन्तु उऱ्ऱु–पहले जाकर; इरुक्कै–प्रतीक्षा में रहना; नलन्–अच्छा होगा; ऍऱ्कु अरुळ्क–हमें आज्ञा देने की कृपा करें; ऍन्ऱनन्–यह इच्छा सुनाई। १७१

श्रीराम ने अगस्त्य से कहा कि हे श्रेणीवद्ध वेदों के ज्ञाता! मैंने इन गर्वीले राक्षसों के अत्याचारों का अन्त करने के लिए उनके घमण्ड को चूर करते हुए उन्हें मिटाने का संकल्प किया है। इसलिए उनके आने के मार्ग में सामने जाकर प्रतीक्षा में रहना सुविधाजनक होगा—ऐसा समझता हूँ। आप मुझे आशीर्वाद के साथ आज्ञा दें। १७१

❀ विऴुमियदु शॊऱ्ऱनैयिव् विल्लिदिवण् मेनाळ्
मुऴुमुदल्वन् वैत्तुळदु मूवुलहुम् यानुम्
वऴिपड विरुप्पदिदु तन्नॊवडि वाळिक्
कुऴुवऴुविल् पुट्टिलोडु कोडियॆन नल्हि 172

विऴुमियतु चॊऱ्ऱै–श्रेष्ठ वात कही; इवण्–यहाँ; इ विल् इतु–यह धनु; मेल् नाळ्–पहले किसी दिन; मुऴु मुतल्वन् वैत्तु उळतु–परात्पर ब्रह्म ने रखा था; मू उलकुम्–त्रिभुवन; यानुम्–और मैं; वऴि पट इरुप्पतु–इसकी पूजा करते हैं, ऐसा; इतु तन्नै–इसको; वटि वाळि कुऴु–तीक्ष्ण शर-राशि; वऴुवु इल्–अक्षय; पुट्टिल् ऒटु–तूणीर के साथ; कोटि–ग्रहण कर लें; ऍन–कहकर; नल्कि–उन्हें प्रदान करके। १७२

अगस्त्यजी ने उत्तर में कहा कि हे श्रीराम! आपने अच्छा सोचा है! यहाँ यह जो धनुष है, यह परात्पर विष्णुदेव के पास रहा था। यह मेरे और त्रिभुवन द्वारा पूजित है। इसको और तीक्ष्ण अनेक शरों को अक्षय तूणीरों के साथ आप ग्रहण कर लीजिए। यह कहकर उन्होंने उनको श्रीराम के पास समर्पित किया। १७२

❀ इप्पुवन मुऱ्ऱुमॊरु तट्टिनिडै यिट्टाल्
ऑप्पुर विऱ्ऱॆन वुरैप्परिय वाळुम्
वॆप्पुरुवु पॊऱ्ऱवरन् मेरुवरै विल्ला
मुप्पुर मेरित्तदनि मॊय्हणैयु नल्हा 173

इ पुवनम् मुऱ्ऱुम्–इस भुवन भर को; ऒरु तट्टिन् इटै–एक (तराजू के) पलड़े में रखकर; इट्टाल्–(इसको दूसरे पलड़े में) रखें तो; ऒप्पु वरविऱ्ऱु ऍन–समान

होंगे; उरॅप्पु अरिय–ऐसा कहने न योग्य; वाळ्म्–एक तलवार को; वॅप्पु उरुवु वॅड्रू–अग्नि रूप के; अरन्–हरदेव ने; मेरु वरै विल्ला–मेरुपर्वत को धनुष बनाकर; मुप्पुरम् ऑरितृत–त्रिपुर को जिससे जलाया; तत्ति मॉय् कणॅयुम्–उस अनुपम सारयुक्त शर को भी; नल्का–देकर। १७३

और भी एक तलवार है। उसे तराजू के एक पलड़े में और तीनों लोकों को एक पलड़े में रखेंगे तो दोनों समान होंगे—ऐसा कहना सही नहीं होगा क्योंकि तलवार तीनों लोकों की विजय करने की शक्ति रखती है और महिमामय है। उन्होंने वह तलवार श्रीराम के पास दी। और अग्निमूर्ति शिवजी ने महामेरु को धनुष बनाकर जिस अप्रतिम शर से त्रिपुरदाह कराया था, उस बाण को भी उनके पास दिया। १७३

❀ ओङ्गुमर नोङ्गिमलै योङ्गिमण लोङ्गिप्
पूङ्गुलै कुलावुहुळिर् शोलैपुडै विम्मित्
तूङ्गुदिरै यारुतवळ् शूळलदोर् कुन्ऱित्
पाङ्गरुळ दालुरैयुळ् पञ्जवडि मञ्ज 174

मञ्च–राजकुमार; ओङ्कु मरन् ओङ्कि–ऊँचे पेड़ जहाँ ऊँचे उगे हैं; मलै ओङ्कि–उन्नत पर्वत हैं; मणल् ओङ्कि–बालू के ऊँचे टीले पाये जाते हैं; पूम् कुलै कुलावु–पुष्पों के गुच्छे मिलते हैं; कुळिर् चोलै–शीतल उपवन; पुटै विम्मि–पार्श्वों में उगे रहते हैं; तूङ्कु तिरै आरु–हिलनेवाली लहरों से युक्त नदियाँ; तवळ्–बहती है; चूळलतु–ऐसे पार्श्वस्थलों के; ओर् कुन्ऱित् पाङ्कर्–एक पर्वत के पास; पञ्चवटि–पंचवटी नाम का; उरै उळ्–एक वासयोग्य स्थान; उळतु–है। १७४

यह सब देने के बाद अगस्त्य ने सुझाया कि श्रीराम! पंचवटी नाम का एक स्थान है। वहाँ ऊँचे तरु हैं, उन्नत पर्वत है, उच्च सिक्ता-टीले हैं। वह ऐसे पर्वत पर है, जिसके पार्श्वों में पुष्प-भरे उपवन हैं और झलमलाती लहरों वाली नदियाँ बहती हैं। वह पंचवटी वासयोग्य स्थान है। १७४

कन्ऩियिळ वाळैकनि यीवकदिर् वालित्, शॅन्ऩॅलुळ तेऩॊळुहु पोदुमुळ दॅय्वप्
पॊन्ऩियॅन लायपुऩ लारुमुळ पोदा, अऩ्ऩमुळ पॊन्ऩिवळॊ डन्बिन्विळै याड 175

कन्ऩि इळ वाळै–बाल-कदलियाँ; कनि ईव–फल देनेवाली हैं; कतिर् वालिऩ्–प्रकाशमय पूँछ जैसे छोटे भाग के साथ; चॅन्ऩॅल् उळ–शालि के धान मिलेंगे; तेन् ऑळुकु पोतुम् उळ–मधु बरसानेवाले पुष्प है; तॅय्व पॊन्ऩि ऑऩल् आय–दिव्य कावेरी नदी के ही समान रहनेवाली; पुऩल् आरुम् उळ–अच्छे जल की नदियाँ भी हैं; पॊन् इवळॊटु–श्रीलक्ष्मी इनके साथ; अन्पिन् विळैयाट–प्रेम के साथ मनोरंजन करने के लिए; पोता–सारस; अऩ्ऩम्–और हंस पक्षी; उळ–है। १७५

और भी वहाँ आपको कदली के बालवृक्ष मिलेंगे, जो मधुर फल दिलाएँगे। दुम के समान पतले अंग के साथ रहनेवाले लाल रंग के शालि के धान वहाँ पाये जाते हैं। मधु बरसानेवाले नवीन पुष्प हैं। दैवी

कावेरी नदी के समान पवित्र और मनोरम जल वाली नदियाँ हैं। इन श्रीलक्ष्मीदेवी (सीताजी) के साथ प्रेमसहित खेलने के लिए सारस और हंस पक्षी रहते हैं। १७५

❀ ऐहियिनि यव्वयि निरुन्दुऱैमि नॆन्ऱान्
मेहनिऱ वण्णनुम् वणङ्गिविडै कॊण्डान्
पाहनैय शॊल्लियॊडु तम्बिपरि विऱ्पिन्
पोहमुनि शिन्दैतॊड रक्कडिदु पोनान् 176

इनि–आगे; अ वयिन् एकि–उधर जाकर; इरुन्तु उऱैमिन्–रहकर वास कीजिए; ऍन्ऱान्–(अगस्त्य ने) कहा; मेक निऱ वण्णनुम्–मेघवर्ण श्रीराम ने भी; वणङ्कि–नमन करके; विटै कॊण्टान्–विदा ली; पाकु अनैय चॊल्लि ऒटु–चासनी-सम बोली वाली श्री सीताजी के साथ; तम्पि–अनुज लक्ष्मण भी; परिविन्–श्रद्धा के साथ; पिन् पोक–उनका पीछा करते गये; मुनि चिन्तै तॊटर–(अगस्त्य) मुनि का मन भी पीछा करता चला; कटितु पोनान्–वे शीघ्र वहाँ से गये। १७६

आप आगे वहीं जाकर वास करें। —अगस्त्य ने कहा। मेघवर्ण श्रीराम ने भी उनको नमस्कार करके उनसे विदा ली। जब वे जाने लगे, तो चासनी-सम बोली वाली देवी सीताजी और कनिष्ठ भ्राता लक्ष्मण उनके पीछे गये। अगस्त्य का मन भी उनका पीछा करता गया। श्रीराम शीघ्र चले। १७६

4. शडायु काण् पडलम् (जटायु-दर्शन पटल)

❀ नडन्दनर् कावदम् बलवु नन्नदि
किडन्दन निन्ऱन गिरिहळ् केण्मैयिल्
तॊडर्न्दन तुवन्ऱिन शूऴल् यावैयुम्
कडन्दनर् कण्डनर् कऴुहिन् वेन्दैये 177

कावतम् पलवुम्–अनेक 'काद' (कोस) दूर; नटन्तनर्–पैदल चलकर; किटन्तन नल् नति–मार्ग में पड़ी रही अनेक श्रेष्ठ नदियाँ; निन्ऱन–(अकेले) स्थित; केण्मैयिन् तॊटर्न्तन–मित्रों के समान परस्पर मिले रहे; किरिकळ्–अनेक पर्वत; तुवन्ऱिन चूऴल् यावैयुम्–(बीच-बीच में) घने उपवन; कटन्तनर्–पार करके; कऴुकिन् वेन्तै–गृध्रराज को; कण्टनर्–(उन्होंने) देखा। १७७

श्रीराम आदि तीनों अनेक कोस दूर गये। रास्ते में अनेक नदियाँ पड़ी थी। पर्वत और पर्वतश्रेणियाँ पाई गयी। अनेक उपवन मिले। उन सबको पार करके उन्होंने जटायु के दर्शन किये। १७७

❀ मुन्दॊरु करुमलै मुहट्टु मुन्ऱिलिल्
शन्दिर नॊळियॊडु तळवच् चात्तिय

अन्दमिल् कनैहड लमरर् नाट्टिय
मन्दर गिरियैन वयङ्गु वान्ऱनै 178

मुन्तु—पहले; अमरर्—सुर; अन्तम् इल्—अपार; कनै कटल्—गर्जनशील सागर में; चन्तिरन् ऑळि ऑटु तळुव—चन्द्र-किरण के साथ मिलाकर; चात्तिय नाट्टिय—आधार-स्तम्भ के रूप में स्थापित; मन्तर किरि ॲन—मन्दरपर्वत के समान; ऑरु करु मलै मुकट्टु मुन्ऱिलिल्—एक काली गिरि की चोटी पर खुले थल में; वयङ्कुवान् तन्नै—शोभायमान उनको। १७८

वे (जटायु) उस मन्दरपर्वत के समान शोभित थे, जिसको अमृतमंथन के उस समय गर्जनशील सागर-मध्य चन्द्र की किरणों से लगाते हुए आधार-स्तम्भ के रूप में गाड़ दिया गया था। वे एक काले (या बड़े) पर्वत की चोटी पर आँगन-सम खुले थल में शान के साथ विराजमान थे। १७८

उरुक्किय शुवणमॊत् तुदयत् तुच्चिशेर्
अरुक्कनि निऴल्पडैत् तलङ्गु तिक्कॆलाम्
तॆरिप्पुरु शॆऱिशुडर्च् चिऱैयि नाऱ्ऱिशै
विरित्तिरुन् दन्नॆन विळङ्गु वान्ऱनै 179

उरुक्किय चुवणम् ऑत्तु—पिघले हुए सोने के समान; उतयत्तु उच्चि चेर्—उदयगिरि के शृंग पर पहुँचे हुए; अरुक्कनिल्—सूर्य के समान; निऴल् पटैत्तु—कान्ति से युक्त होकर; अलङ्कु तिक्कु ऍलाम्—अन्धकार के कारण व्यथित रहनेवाली सभी दिशाओं को; तॆरिप्पु उरु—प्रकाश दिलानेवाले; चॆऱि चुटर् चिऱैयिनाल्—घनी दीप्ति वाले पक्षों को; तिचै विरित्तु इरुन्तनन्—सभी दिशाओं में फैलाये रहे; ॲन—ऐसा कहने योग्य रीति से; विळङ्कुवान् तन्नै—दृश्यमान उनको। १७९

वे पिघला-स्वर्ण-सम थे। उदयगिरि पर आये सूर्य के समान कान्ति-युक्त थे। अन्धकार से आक्रान्त दिशाओं में प्रकाश करते हुए मानो वे अपने पक्ष फैलाए हुए थे, ऐसे दृश्यमान उनको श्रीराम आदि ने देखा। १७९

वानिऱ विशुम्बॆळिल् मऱैयत् तन्मणिक्
कानिऱच् चॆयॊळि कतुवक् कण्णहल्
नीनिऱ वरैयिनिऱ् पवळ नीळ्कॊडि
पोनिऱम् बॊलिन्दिडप् पॊलिहिन् ऱान्ऱनै 180

वाल् निऱ विचुम्पु—विशाल और प्रभावान आकाश की; ऍळिल् मऱैय—छटा को छिपाते हुए; कण् अकल्—विस्तृत; नील् निऱ वरैयिनिल्—नीलवर्ण पर्वत पर; तन् काल् निऱ—अपने पैरों का रंग; मणि चॆय् ऑळि—लाल सुन्दर आभा; कतुव—फैलाते हुए; पवळ नीळ् कॊटि पोल्—प्रवाल की लम्बी लताओं के समान; निऱम् पॊलिन्तिट—वहाँ शोभायमान करते हुए; पॊलिकिन्ऱान् तन्नै—तेज के साथ रहनेवाले उनको। १८०

उनके तेज के सामने विशाल और आभायुक्त आकाश की शोभा छिप

गयी थी। नीले पर्वत पर उनके लाल पैर माणिक की-सी प्रभा कर रहे थे। वे प्रवाललता-समान शोभ रहे थे। ऐसे विराजमान उनको; । १८०

❀ तूय्मैय निरुड्गलै तुणिन्द केळ्वियन्
वाय्मैयन् मरुविलन् मदियिन् कूर्मैयन्
आय्मैयिन् मन्दिरत् तरिज्ञ नामैत्तच्
चेय्मैयि नोक्कुरु शिरुह णान्रत्तै 181

तूय्मैयन्–शुचिकर्मा; इरुम् कलै तुणिन्त केळ्वियन्–गम्भीर अध्ययन-ज्ञान के साथ श्रवण-ज्ञान से युक्त; वाय्मैयन्–सत्यसंध; मरु इलन्–निर्दोष; मतियिन् कूर्मैयन्–सूक्ष्ममति; आय्मैयिन्–दीर्घदर्शी; मन्तिरत्तु अरिञन् आम् अँत–मंत्रणा में कुशल मन्त्री के समान; चेय्मैयिन् नोक्कु उरुम्–दूर तक देख सकनेवाले; चिरु कण्णान् तत्तै–छोटे नेत्रों वाले उनको। १८१

वे शुचिपूर्ण थे। अध्ययन और श्रवण से प्राप्त गम्भीर ज्ञान से युक्त थे। सत्यसंध थे और निर्दोष थे। सूक्ष्मबुद्धि थे। दीर्घदर्शिता रखनेवाले मंत्रणा में निपुण मन्त्री के समान उनके बहुत दूर तक देख सकनेवाली छोटी आँखें थीं। १८१

❀ वीट्टिवा ळवुणरै विरुन्दु कूररित्तै
ऊट्टिवीऴ् मिच्चिरा नुण्डु नाडोरुम्
तोट्टिमे विन्दिरन् शिरुहण् यानैयिन्
तोट्टिपोऱ् रेय्न्दोळिर् तुण्डत् तान्रत्तै 182

वाळ् अवुणरै–तलवारधारी दानवों को; वीट्टि–मारकर; कूररित्तै विरुन्तु ऊट्टि–यम को दावत में खिलाकर; वीऴ्–बचकर गिरनेवाले; मिच्चिल्–जूठन को; नाळ् तोरुम् उण्टु–प्रतिदिन खाकर; चिरु कण् यानैयिन् मेवु इन्तिरन्–छोटी आँखों वाले (ऐरावत-संज्ञित) गज पर आसीन इन्द्र के; तोट्टि पोल्–अंकुश के समान; तीट्टि–पैनायी जाकर; तेय्न्तु ऑळिर्–उस कारण से घिसकर उज्ज्वल दिखनेवाली; तुण्टत्तान् तत्तै–चोंच के उनको। १८२

रोज वे तलवारधारी राक्षसों को युद्ध में मारकर यम को खिलाते थे और बचेखुचे जूठन को खाते थे। उनकी चोंचे छोटी-छोटी आँखों वाले ऐरावत गज पर सवार इन्द्र के अंकुश के समान पैनाई गयी और घिसी हुई थी और उससे चमकदार लगती थीं। १८२

❀ कोळिरु नालिनो डोन्रु कूडिय, आळुरु तिहिरिबो लारत् तान्रत्तै
नीळुयर् मेनियि नेर्रि मुर्रिय, वाळिर वियिर्पोलि मवुलि यान्रत्तै 183

इरु नालिन् ओटु–दो के चार के साथ; ऑन्रु कूटिय–एक मिलाकर (नौ) रहे; कोळ्–ग्रहों को; आळ् उरु तिकिरि पोल्–चालित करनेवाले (शिशुमार नामक या

विष्णु के) चक्र के समान शोभायमान; आरत्तान् तत्तै–हार से अलंकृत उनको; नीळ् उयर् मेत्तियिन्–विशाल और दीर्घ शरीर के; नॆर्रिर–शिखर पर; मुर्रिय–रखे गये; वाळ् इरवियिन्–उज्ज्वल सूर्य के समान; पॊलि–शोभनेवाला; मवुलियान् तत्तै–किरीटधारी को। १८३

उनके वक्ष पर एक हार था। वह शिशुमार या विष्णु के चक्र और उसके अधीन घूमनेवाले नवग्रहों के समान शोभायमान था। उनके सिर पर उज्ज्वल सूर्य के समान किरीट सजा हुआ था। ऐसे हार और किरीटधारी को (श्रीराम ने देखा)। १८३

❀ शॊर्पङ्ग मुऱनिमि रिशैयिन् शुम्मैयै, अऱ्पङ्ग मुऱवरु मरुणन् शॆम्मलैच्
चिऱ्पङ्गॊळ् पहलॆन्नक् कडिदु शॆन्ऱुतीर्, कऱ्पङ्ग ळॆन्नैप्पल कण्डु ळान्ऱन्ने 184

चॊल् पङ्कम् उऱ–शब्द (भाषा) को भग्न (पंगु) करते हुए; निमिर् इचैयिन् चुम्मैयै–उठे हुए यश की राशि के समान; अल् पङ्कम् उऱ–अन्धकार को मिटाते हुए; वरुम्–आनेवाले; अरुणन् चॆम्मलै–अरुण के पुत्र (जटायु) को; कटितु चॆन्ऱु तीर्–शीघ्र व्यतीत होनेवाले; चिऱ्पम् कॊळ् पकल् ऎन्न–अल्प दिन के समान; कऱ्पङ्कळ् ऎन्नै–कल्प कहलानेवाले काल; पल–अनेक; कण्टु उळान् तन्नै–जो देख चुके, उनको। १८४

उनका यश इतना बड़ा था कि शब्द में उसको समझाने की शक्ति नहीं थी; शब्द भग्न हो जाते थे। वे अन्धकार को मिटाते हुए आनेवाले (सूर्य-सारथी) अरुण के पुत्र थे। उन्होंने कई कल्प देखे थे, जो छोटे-छोटे दिनों के समान व्यतीत हो चुके थे। ऐसे उनको; । १८४

❀ ओङ्गुयर् नॆडुवरै यॊन्ऱिऱ् निन्ऱदु, ताङ्गल दिरुनिलन् दाळ्न्दु ताळ्वुऱ
वीङ्गिय वलियिन् निरुन्द वीरनै, आङ्गव रणुहिन रयिर्क्कुज् जिन्दैयार् 185

ओङ्कु उयर्–ऊँचे बढ़े हुए; नॆटु वरै ऒन्ऱिन्–बड़े पर्वत पर; निन्ऱु–रहकर; अतु ताङ्कलतु–वह बोझ उठा न सककर; इरु निलम् ताळ्न्तु–विशाल भूमि में धँसकर; ताळ्वु उऱ–अन्दर चला गया, ऐसा; वीङ्किय वलियित्तिन् इरुन्त–बढ़े हुए बल के साथ रहे; वीरनै–वीर जटायु को; आङ्कु–वहाँ; अवर्–वे तीनों; अयिर्क्कुम् चिन्तैयर्–शंकितमन होकर; अणुकिनर्–उनके समीप गए। १८५

वे एक उन्नत पर्वत पर विराजमान थे। वह पर्वत उनके बोझ से भूमि के अन्दर धँस गया था। उतने बलवान उन वीर पर श्रीराम आदि ने शंकित मन से दृष्टिपात किया। १८५

❀ इरुदियैत् तन्वयि नियऱ्ऱ वॆय्दिनान्
अऱिविलि यरक्कना मल्ल ना मॆन्निल्
ऎरुळ्वलिक् कलुळने यॆन्न वुन्नियच्
चॆरिहळल् वीररुज् जॆयिर्त्तु नोक्किनार् 186

चॅऱिकऴल् वीररुम्–ठोस पायलधारी वीर; तन्न् वयिऩ्–अपना; इऱुतियै–अन्त; इयऱ्ऱ–कराने के लिए; ॲय्तिऩान्–जो आया; अऱिवु इलि अरक्कऩ् आम्–यह बुद्धिहीन राक्षस है; अल्लऩ् आम्–नहीं; ॲतिल–तो; ॲऱुऴ् वलि–अत्यधिक बलशाली; कलुऴऩ् आम्–गरुड़ होगा; ॲऩ्ऩ उऩ्ऩि–ऐसा सोचकर; चॅयिर्त्तु–कोप करके; नोक्किऩार्–उनको देखा। १८६

भारी चरणवलय-धारी वीरों ने अनुमान लगाया— "यह अपना अन्त कराने के लिए आया हुआ एक राक्षस ही होगा! नही तो वह बलवान गरुड़ हो!" उन्होंने जटायु को खूब देखा। १८६

❀ वनैहळल् वरिशिलै मङ्है मैन्दरै
अनैयवन् ऱानुङ्गण् डयिर्त्तु नोक्किनान्
विनैयरु नोऩ्बिन रल्लर् विल्लिनर्
पुनैशडै मुडियिनर् पुलव रोवॆन्ना 187

अनैयवऩ् तानुम्–जटायु भी; वनै कऴल् वरि चिलै–पहनी हुई पायल और बन्धनयुक्त धनु के धारक; मङ्कै मैन्तरै–बलवान राजकुमारों को; कण्टु–देखकर; विनै अऱु नोऩ्पिनर् अल्लर्–कर्म काटने के व्रती (तपस्वी) नहीं हैं; विल्लिनर्–धनुर्धर हैं; पुनै चटै मुटियिनर्–निर्मित जटाधारी हैं; पुलवरो–देव हैं क्या; ॲन्न–ऐसा अयिर्त्तु–सन्देह करके; नोक्किनान्–देखा। १८७

जटायु ने भी पायलधारी धनुर्द्धर वीरों को देखा। प्रतापी उनको देखकर जटायु के मन में प्रश्न उठा कि ये कौन है? 'ये कर्मनाशार्थ तप करनेवाले तपोव्रती नहीं है!- उनके हाथों में चाप है और सिरों पर जटा है। क्या ये देवता है?' सन्देह के साथ उन्होंने उन पर दृष्टि दौड़ाई। १८७

❀ पुरन्दरन् मुदलिय पुलवर् यारैयुम्, निरन्दर नोक्कुवॆ ऩेमि यानुमव्
वरन्दरु मिऱैवनु मऴुव लाळनुम्, करन्दिल रॆन्नैया नॆन्ऱुङ् गाण्बॆनाल् 188

पुरन्तरन् मुतलिय पुलवर् यारैयुम्–पुरन्दर आदि सभी देवों को; निरन्तरम् नोक्कुवेन्–प्रतिदिन देख रहा हूँ; नेमियानुम्–चक्रधारी विष्णु और; अ वरम् तरु इऱैवनुम्–वे वरदायी भगवान ब्रह्मा और; मऴुवलाळनुम्–'मऴु' नामक (परशु ?) हथियारधारी (शिवजी) के भी; यान् ॲन्ऱुम् काण्पॆन् आल्–मै रोज दर्शन करता हूँ, इसलिए; ॲन्नै करन्तिलर्–मुझसे अपना रूप नहीं छिपाएँगे। १८८

जटायु आगे भी सोचने लगे। पुरन्दर आदि देवों को तो मैं रोज देख रहा हूँ। चक्रधारी विष्णु, भक्तों को इच्छित वर देनेवाले ब्रह्मा, मऴु (परशु या तप्तलौह) आयुधधारी शिव —इनके तो प्रतिदिन दर्शन कर रहा हूँ। वे हमसे अपना यथार्थ रूप नही छिपा सकते। १८८

❀ कामनॆन् बवनैयुङ् गण्णि नोक्किनेन्
तामरैच् चॆङ्गणित् तडक्कै वीरर्हळ्

पूमरु पॉलङ्गळर् पॉडियि त्तोडुमॉप्
पामलन् वरुबव राऱ्हॉ लामिवर् 189

कामन् ॲन्नपवत्तैयुम्–मन्मथ को भी; कण्णिन् नोक्किनेन्–आँखों से देखा है; तामरै चॅम् कण्–कमलदल-सम लाल आँखें; तट कै–दीर्घ भुजाएँ; इ वीरर्कळ्–(इनसे युक्त) इन वीरों के; पू मरु पॉलन् कळल्–कमलगन्ध-युक्त उज्ज्वल चरणों की; पॉटियित्तोटुम्–धूलि के साथ भी; ऑप्पु आम् अलन्–तुल्य नहीं हो सकता; वरुपवर् इवर्–आनेवाले ये; आर् कॉल्–कौन हैं। १८६

मैंने कामदेव को भी अपनी आँखों से देखा है। वह मन्मथ कमलदल के समान अरुण आँखें और दीर्घ विशाल हाथों के साथ मनोरम आभायुक्त इनके पास पायलधारी चरण पर लगी धूलि से भी तुल्य नहीं हो सकता। फिर ये कौन हैं, जो इस तरफ़ आ रहे हैं ? । १८९

❀ उलहॉरु मून्ऱुन्दम् मुडैमै याक्कुरुम्
अलहरु मिलक्कण समैन्द मॅय्यिनर्
मलर्महट् कुवमैया ळोडुम् वन्दविच्
चिलैवलि वीररैत् तॅरिहि लेनॅना 190

उलकु ऑरु मून्ऱुम्–स्वर्ग, भूतल और पाताल के तीनों लोकों को; तम् उटमै आक्कुरुम्–अपने अधीन बना सकनेवाला; अलकु अरुम्–अमाप; इलक्कणम् अमैन्त–सामुद्रिका लक्षणों से युक्त; मॅय्यिनर्–दिव्य रूप वाले हैं; मलर् मकट्कु उवमैयाळोटुम्–कमलजा से तुल्य देवी के साथ; वन्त–जो इधर आये हैं; इ चिलै वलि वीररै–इन धनुर्धर वलवान वीरों को; तॅरिकिलेन्–जान नहीं पाता; ॲन्ना–कहकर। १६०

इनके दिव्यशरीर अपार लावण्यमयी हैं। सभी सामुद्रिका लक्षणों के अनुसार सुघड़ वने हैं। उनकी सुन्दरता तीनों लोकों को अपने अधीन करनेवाली है। इनके साथ जो देवी आती हैं, वह कमलजा लक्ष्मीदेवी के समान हैं। ये वीर धनुर्धर कौन हैं ? मैं समझ नहीं पाता। १९०

❀ करुमलै शॅम्मलै यन्नैय काट्चियर्
तिरुमहिळ् मार्बिन्नर् शॅङ्गण् वीरर्दाम्
अरुमैशॅय् गुणत्तिन्नॅन् ऱुणैव नाळियान्
ऑरुवन्नै यिरुवरु मॉत्तु ळाररो 191

करुमलै चॅम्मलै अन्नैय–काली गिरि और लाल गिरि के समान; काट्चियर्–दर्शन देनेवाले; तिरु मकिळ् मार्पिनर्–वीरश्री जिन पर मोद के साथ वास करती थी, वैसे वक्ष वाले; चॅङ्कण् वीरर्–अरुणाक्ष वली; अरुमै चॅय्–अभूतपूर्व रूप से प्राप्त; कुणत्तिन्–श्रेष्ठ गुणों के; ॲन् तुणैवन्–मेरे मित्र; आळियान्–चक्रवर्ती; ऑरुवनै–उन अद्वितीय (दशरथ) के ही; इरुवरुम्–ये दोनों; ऑत्तुळार्–सदृश दिखाई देते है। १६१

ये काले पर्वत और लाल स्वर्ण-पर्वत के समान दर्शन देते हैं। इनके

वक्षस्थल वीरश्री का वासस्थान-सा लगते हैं। अरुणाक्ष ये दोनों अच्छे श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण मेरे अत्यन्त मित्र चक्रवर्ती दशरथ के ही सदृश लगते हैं। १९१

❀ ऍऩ्ऩप्पल निऩैप्पिऩऩ् मऩत्तु ळॅण्णुवाऩ्
शिऩ्ऩप्पडै वीरर्मेऱ् चॅल्लु मऩ्विऩाऩ्
कऩप्पडै वरिशिलैक् काळै यीर्हळ्यार्
मऩप्पड वॅऩ्ऩक्कुरै वळङ्गु वीरॅऩ्ऱाऩ् 192

ऍऩ्ऩ—ऐसे-ऐसे; मऩत्तुळ् ऍण्णुवाऩ्—मन में सोचते हुए; पल निऩैप्पिऩऩ्—विविध अनुमान करनेवाले; चिऩम् पडै वीरर् मेल्—क्रोधशील हथियारधारी उन वीरों पर; चॅल्लुम् अऩ्पिऩाऩ्—सहज उठते हुए प्रेम के साथ; कऩ पडै—भारी हथियार; वरि चिलै—और बन्धनसहित धनु के साथ रहनेवाले; काळै यीर्कळ्—ऋषभ-सम तरुण वीर; यार्—कौन हो; मऩम् पड—मेरे मन को समझाते हुए; ऍऩक्कु उरै वळङ्कुवीर्—मुझे उत्तर दो; ऍऩ्ऱाऩ्—(जटायु ने) कहा। १९२

इस तरह जटायु उधेड़बुन में लगे हुए अनेक विचार करते रहे। उन्होंने अनुभव किया, सहज ही उन भयंकर क्रोधशील हथियारधारी वीरों पर प्रेम पैदा हो रहा है। उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण से पूछ ही लिया कि भारी हथियार और बन्धनयुक्त शरासन रखनेवाले वीर! ऋषभ-सम तरुण तुम लोग कौन हो? मेरे मन में साफ़ ज्ञान हो, ऐसा मुझे प्रत्युत्तर दो। १९२

❀ विऩ्विय कालैयिऩ् मॅय्म्मै यल्लदु, पुऩैमलर्त् तारवर् पुहल्हि लामैयाल्
कऩ्ऩैहडल् नॅडुनिलङ् गाव लाळियाऩ्, वऩ्ऩैहळ्ऱ् ऱयरदऩ् मैन्दर् यामॅऩ्ऱार् 193

विऩविय कालैयिऩ्—जब जटायु ने पूछा, तब; पुऩै मलर् तार् अवर्—सुन्दर पुष्पमाला से अलंकृत उन्होंने; मॅय्म्मै अल्लतु—सत्य के सिवा; पुकल्किलामैयाल्—नहीं बोल सकते, इसलिए; याम्—हम; कऩै कटल् नॅटु निलम्—गर्जनशील समुद्र से वलयित इस विशाल भूमि के; कावल्—रक्षक; आळियाऩ्—चक्रवर्ती; वऩै कऴल् तयरतऩ्—वीर-चरण-कंकणधारी दशरथ के; मैन्तर्—पुत्र है; ऍऩ्ऱार्—कहा। १९३

जब जटायु ने यह प्रश्न किया, तब उन्होंने सच्ची बात कह दी। वे सत्य के सिवा असत्य बोलनेवाले नहीं थे। इसलिए उन्होंने बताया कि गरजते सागर से वलयित भूलोक के भर्त्ता चक्रवर्ती, वीरचरणकंकण-धारी दशरथ के पुत्र है। १९३

❀ उरैत्तलुम् पोङ्गिय वुवहै वेलैयऩ्
तरैत्तलै यिऴिन्दवर्त् तऴुवु कादलऩ्
विरैत्तडन् दारिऩाऩ् वेन्दर् वेन्दऩॅऩ्
विरैत्तडन् दोळिणै वलिय वोवॅऩ्ऱाऩ् 194

उरैत्तलुम्–कहते ही; पॊङ्किय उवकै वेलैयन्–उमड़नेवाले मोद-सागर के समान जटायु; तरै तलै इऴिन्तु–भूमि पर उतर आकर; अवर् तऴुवुन् कातलन्–उनको आलिंगन करके प्रेमातुर होकर; विरै तटम् तारिऩान्–सुवासित और बड़ी माला से अलंकृत; वेन्तर् वेन्तन् तन्–राजाधिराज के; वरै तटम् तोळ् इणै–पर्वत-सम बड़े कंधे दोनों; वलियवो–वल से पूर्ण हैं क्या; ऎन्ऱान्–(जटायु ने) पूछा। १६४

ज्योंही राजकुमारों ने यह उत्तर दिया, त्योंही जटायु के मन में आनन्द उठा और सागर-सा वढ़ गया। वे नीचे भूमि पर उतर आये। उनको गले से लगाकर प्रेम के साथ जटायु ने प्रश्न किया कि सुवासित और बड़ी माला से शोभित राजाधिराज दशरथ की पर्वत-सम विशाल भुजाओं का जोड़ा वल संयुक्त है ? । १९४

❀ मऱक्कमुऱ् ऱाददन् वाय्मै कात्तवन्
तुऱक्कमुऱ् ऱाऩॆऩ विरामन् चॊल्ललुम्
इऱक्कमुऱ् ऱाऩॆऩ वॆक्क मॆय्दिऩान्
उऱक्कमुऱ् ऱाऩॆऩ वुणर्वु नीङ्गिऩान् 195

अवन्–वे; मऱक्क मुऱ्ऱात–अविस्मरणीय; तन् वाय्मै कात्तु–अपनी वचनसत्यता का; कात्तु–पालन करके; तुऱक्कम् उऱ्ऱान्–स्वर्गवासी हो गये; ऎऩ–ऐसा; इरामन् चॊल्ललुम्–श्रीराम के कहते ही; इऱक्कम् उऱ्ऱान् ऎऩ–(दशरथ) मर गये, कहकर; एक्कम् ऎय्तिऩान्–तरस खाकर; उऱक्कम् उऱ्ऱान् ऎऩ–निद्रामग्न हुए जैसे; उणर्वु नीङ्किऩान्–अचेत हुए। १६५

चक्रवर्तीतनय श्रीराम ने उत्तर दिया कि चक्रवर्ती अविस्मरणीय अपनी सत्यवादिता के संरक्षण में स्वर्गवासी हो गये। ज्योंही श्रीराम ने यह कहा, त्योंही जटायु तरस खाकर निद्रामग्न हुए-से अचेत हो गये। १९५

❀तऴुविन रॆडुत्तनर् तडक्कै यान्मुहम्, कऴुविन रिरुवरुङ् गण्णि ऩीरिऩाल्
वऴुविय तन्नुयिर् वन्द मन्ननुम्, अऴिवुऱु नॆञ्जिन ऩरऱ्ऱि ऩाऩरो 196

इरुवरुम्–दोनों ने; तटम् कैयाल्–विशाल हाथों से; तऴुविऩर्–लपेटकर; ऎटुत्तऩर्–उठाया; कण्णिन् नीरिऩाल्–आँखों के जल से; कऴुविऩार्–(जटायु के मुख को) धोया; वऴुविय–खोई हुई; तन् उयिर्–अपनी जान को; वन्त मन्ऩऩुम्–फिर से प्राप्त करके गृध्रराज भी; अऴिवु उऱु नॆञ्चिऩन्–विगलित मन के होकर; अरऱ्ऱिऩान्–विलाप करने लगे। १६६

श्रीराम और लक्ष्मण ने गिरे हुए उनको अपने हाथों से लपेटकर उठाया। उनकी आँखों से अश्रुजल उनके मुख को धुलाते हुए वहा। तव जटायु की खोयी हुई प्राणता फिर आयी। गृध्रराज विकलमन होकर विलापने लगे। १९६

❀ परवलरुङ् गॊडैक्कुनिन्ऱन् ऱिक्कुडैक्कुम् वीरैक्कुनॆडुम् वण्बु तोऱ्ऱक्
करवलरुङ् गऱ्पहमु मुडुपतियुङ् गडलिडमुङ् गऴित्तु वाऴप्

पुरवलर्दम् पुरवलने पॊय्प्पहैये मॆय्क्कणिये पुहऴिन् वाऴ्वे
इरवलरु नल्लऱमुम् यानुमिनि यॆन्नबडनीत् तेहि नाये 197

पुरवलर् तम् पुरवलत्ते–पालकों के पालक; पॊय् पकैये–असत्य के शत्रु; मॆय्क्कु अणिये–सत्य के भूषण; पुकऴिन् वाऴ्वे–यश के वासस्थान; निन् तन्–आपकी; परवल् अरु–अप्रशंसनीय; कॊटैक्कुम्–दानशीलता और; तनि कुटैक्कुम्–अद्वितीय छत्र; पॊऱैक्कुम्–और क्षमाशीलता, इनके सामने; नॆटुम् पण्पु तोऱ्ऱ–अपने उच्च गुणों में जो हार गये, वे; करवल् अरु कऱ्पकमुम्–अवंचक कल्पवृक्ष; उटुपतियुम्–चन्द्र; कटल् इटमुम्–समुद्र की घिरी यह भूमि; कळित्तु वाऴ–(अपने प्रतिद्वन्द्वी के अभाव में) गर्व-मोद के साथ रहें, ऐसा; इरवलरुम्–याचक लोग; नल् अऱमुम्–श्रेष्ठ धर्म को; यानुम्–और मुझे; इति ऎन् पट–अब कौन सा दुख भोगने देकर; नीत्तु–हमें छोड़कर; एकिनाय्–चले गये। १९७

हे राजाधिराज ! असत्य के शत्रु ! सत्य के भूपण ! कीर्ति के वासस्थान ! आपकी अवर्णनीय दानशीलता, शीतल श्वेतछत्र और क्षमाशीलता के सामने क्रमशः अवंचक कल्पतरु, उडुपति और समुद्र की घिरी भूमि जो हार गयी थी, अब प्रतिद्वन्द्वी से रहित होकर उत्साह के साथ रह रही है। और याचक, श्रेष्ठ धर्म और मैं —तीनों को कौन सा दुख भोगने के लिए छोड़कर आप स्वर्गवासी हुए है ? । १९७

अलङ्गार मॆनवुलहुक् कमुदळिक्कुन् दनिक्कुडैया याऴि शूऴ्न्द
निलङ्गाव लदुकिडक्क निलैयाद निलैयुडैये नॆय नॆञ्जिन्
नलङ्गाण नडन्दनैयो नायहने तीविनैये नण्बि निन्ऱुम्
विलङ्गाने नादलिनाल् विलङ्गिने निन्नुमुयिर् विट्टि लेनाल् 198

नायकने–नायक; अलङ्कारम् ऎन्न–साज-श्रृंगार है ऐसा; उलकुक्कु अमुतु अळिक्कुम्–(माने जाते हुए, पर असल में) लोकवासियों को कृपासुधा दिलानेवाला; तनि कुटैयाय्–अप्रतिम छत्रधारी; आऴि चूऴन्त निलम् कावल्–समुद्रवलयित पृथ्वी का शासन; अतु किटक्क–वह एक ओर रहे; निलैयात निलैयुटैयेन्–चंचल स्थिति वाले मेरे; नेय नॆञ्चिन् नलम्–प्रेमपूर्ण मन की (सच्चाई) स्थिति; काण ओ–परखने के लिए क्या; नटन्तनै–आप चल बसे; तीविनैयेन्–पापी मैं; विलङ्कु आनेन्–जानवर रह गया; आतलिनाल्–इसलिए; नण्पिन् निन्ऱुम्–उत्तम मित्रता से; विलङ्किनेन्–अलग रह गया; उयिर् विट्टिलेन्–और प्राण नहीं त्यागे। १९८

नायक ! आपका श्वेतछत्र केवल अलंकार की वस्तु नहीं था। सुधासम कृपा बरसानेवाले शासन का प्रतीक था। ऐसे छत्रधारी ! अब समुद्रमेखला भूमि अनाथ हो गयी; वह एक ओर रहे ! क्या आप मेरे मन के प्रेम की स्थिरता की परीक्षा करने के हेतु चले गये क्योंकि मैं चंचलमन हूँ ! मै पापी हूँ ! जानवर पैदा हुआ हूँ। तभी तो उत्तम मित्रता के अनुरूप उचित व्यवहार से डिगकर अब भी प्राण त्याग किये बिना जीवित रहता हूँ ! । १९८

❀ तयिरुडैक्कु मत्तॆन्न वुलहैनलि शम्बरनैत् तडिन्द वन्नाळ्
अयिर्हिडक्कुङ् गडल्वलयत् तवरऱिय नीयुडल् यानावि यॆन्नच्
चॆयिर्हिडत्तल् शॆय्याद तिरुमनत्ताय् शॆप्पिनाय् तिऱम्बाय् निन्शॊल्
उयिरहिडक्क वुडलैविशुम् बेऱ्ऱिना रुणर्विरन्द कूऱ्ऱि नारे 199

चॆयिर् किटत्तल् चॆय्यात–दोष को स्थान न देनेवाले; तिरु मनत्ताय्–पवित्र मन के स्वामी; तयिर् उटैक्कुम् मत्तु ऍन्न–दही मथनेवाली मथानी के समान; उलकै नलि–लोकत्रासक; चम्परनै–शंबरासुर को; तटिन्त अ नाळ्–जिस दिन काट गिराया, उस दिन; अयिर् किटक्कुम्–काले बालू से युक्त; कटल् वलयत्तवर्–समुद्रवलयित भूतलवासियों को; अऱिय–जताते हुए; नी उटल् यान् आवि–तुम (दशरथ) शरीर, मैं प्राण; ऍन्न–ऐसा; चॆप्पिनाय्–कहा; निन् चॊल् तिऱम्पाय्–आप अपना वचन भंग करनेवाले नहीं है; उणर्वु इऱन्त–भावना न समझ सकनेवाले; कूऱ्ऱिनार्–यमदेव भी; उयिर् किटक्क विट्टु–प्राणों को इधर रहने देकर; उटलै–शरीर, आपको; विचुम्पु एऱ्ऱिनारे–स्वर्ग पर चढ़ा ले गये। १९९

अकलंक पवित्र मन वाले ! दही को विलोडित करनेवाली मथानी के समान शंबरासुर लोगों को त्रास दे रहा था। जब आपने उनको मारा, उस दिन आपने सूक्ष्म काले बालुओं से युक्त समुद्र से वलयित भूमि के सारे लोगों के सामने उनके जाने, यह कहा कि जटायु तुम प्राण हो, मैं तुम्हारा शरीर हूँ। आप वचन भंग करनेवाले नहीं हैं। उस भावना की पवित्रता जड़मति यमदेव नहीं समझ सके। इसलिए प्राण— मुझे छोड़कर, शरीर— आपको उठा ले गये हैं। १९९

❀ ऍळुवदो रिशैपॆरुह विप्पॊळुदे यॊप्परिय वॆरियुन् दीयिल्
विळुवदे निऱ्कमड मॆल्लियलार् तम्मैप्पो निलत्तिन् मेल्वीळ्न्
दळुवदो यानॆन्ना वऱिवुऱ्ऱा नॆन्नॆळुन् दवरै नोक्कि
मुळुवदे ळुलहुडैयान् मैन्दन्मीर् केण्मिनॆन्न मुऱैयिन् शॊन्नान् 200

ऍळुवतु ओर् इचै पॆरुक–उन्नत यश के बढ़ते; इप्पॊळुते–अभी; ऑप्पु अरिय–उपमाहीन; ऍरियुम् तीयिल्–जलनेवाली आग में; विळुवते निऱ्क–गिरना छोड़कर; मट मॆल्लियलार् तम्मै पोल्–अबोध सुकुमारी नारियों के समान; निलत्तिन् मेल् विळुन्तु–धरती पर गिरकर; यान् अळुवतो–मैं रोता रहूँ; ऍन्ना–कहकर; अऱिवु उऱ्ऱान् ऍन्न–सूझ पा गये हों, ऐसा; ऍळुन्तु–उठकर; अवरै नोक्कि–उनको देखकर; एळ् उलकु मुळुवतु उटैयान्–सातों लोकों के अकेले स्वामी; मैन्तन्मीर्–(दशरथ के) पुत्र; केण्मिन्–सुनिए; ऍन्न–ऐसा; मुऱैयिल्–(निम्नोक्त) प्रकार से; चॊन्तान्–बोले। २००

मुझे अभी खूब जलती आग में प्रवेश करके मरना चाहिए, उससे यश मिलेगा और मैं यशस्वी हो जाऊँगा। वह काम छोड़कर मैं अब अबोध सुकुमारी नारियों के समान भूमि पर गिरकर रोता-कलपता रहता हूँ।

क्या यह मुझे सोहता है ? फिर वे सहसा कोई बात सूझ गई हो ऐसे उठे। राजकुमारों को सम्बोधित किया— सातों लोकों के शासक दशरथ के तनयो ! सुनो मेरी बात ! फिर वे निम्नप्रकार से बोले। २००

❀ अरुणऩ्ऱऩ् बुदल्वऩ्या ऩवऩ्पडरु मुलहॅलाम् पडर्वॅ ऩाऴि
इरुण्मीय्म्बु कॅडत्तुरन्द तयरदऱ्किऩ् ऩुयिर्त्तुणैव ऩिमैयो रोडुम्
वरुणङ्गळ् विरिहिऩ्ऱ कालत्ते वऩ्दुदित्तेऩ् कऴुहिऩ् वेन्दऩ्
तरुणङ्गॊळ् पेरॊळियोर् शम्बादि पिऩ्पिऱन्द जडायु वॆऩ्ऱाऩ् 201

तरुणम् कॊळ् पेर् ऑळियोर्—तरुणाई से युक्त बड़े तेजोमय; याऩ्—मैं; अरुणऩ् तऩ् पुतल्वऩ्—अरुण का पुत्र हूँ; अवऩ् पटरुम्—वे जहाँ जाते हैं; उलकु ॲल्लाम्—उन सभी लोकों में; पटर्वेऩ्—जाने की शक्ति रखता हूँ; इमैयोर् ओटुम्—देवों के साथ; वरुणङ्कळ्—अनेक वर्ण-भेद; विरिकिऩ्ऱ कालत्ते—जब बँटे उसी (आदि) काल में; वऩ्तु उतित्तेऩ्—जनमा, वह मै; कऴुकिऩ् वेन्तऩ्—गृध्रराज; चम्पाति—सम्पाति; पिऩ् पिऱन्त—का अनुज; चटायु—जटायु हूँ; इरुळ् मॊय्म्पु—(शत्रु रूपी) अन्धकार का बल; कॅट—नाश करते हुए; आऴि तुरन्त—आज्ञाचक्र-चालक; तयरतऱ्कु—दशरथ का; इऩ् उयिर् तुणैवऩ्—प्राण-प्यारा मित्र हूँ; ॲऩ्ऱाऩ्—कहा। २०१

तरुण तेजोमय वीर ! मैं अरुण का पुत्र हूँ। अरुण जहाँ चलते है, उन सभी स्थानों में जाने की मेरी शक्ति है। देवों के साथ जिस दिन सभी विविध जातियों के जीवों का प्रादुर्भाव हुआ, उसी प्राचीनकाल में मेरा जन्म हो गया। गीधों के राजा सम्पाति का अनुज हूँ मैं। शत्रु रूपी अन्धकार को नाश करते हुए जिन्होंने आज्ञाचक्र चलाया, उन दशरथ का प्राण-प्यारा मित्र हूँ। २०१

[इसके बाद पाँच पद्य पाये जाते है, जो क्षेपक माने जाते है। उनमें जटायु की वंशावली का विवरण पाया जाता है। जानकारी हेतु उनका सार यहाँ दिया जाता है— दक्ष प्रजापति की पचास उभरे उरोजों वाली सुताओं में तेरह पुत्रियों से काश्यप का विवाह हुआ। उनमें अदिति ने तैंतीस करोड़ देवों को जन्म दिया। कजरारी आँखों वाली दिति ने दुगुने दैत्यों को जनाया।

दनु ने दानवों को, मति ने अपने अवयवों से मनुष्य की जातियों को और सुरभी ने धेनु, अश्व और अन्य जानवरों को पैदा किया। क्रोधवशा ने गर्दभ, मृग, उष्ट्र आदि को पैदा किया।

अभ्रकुंतला विनता से वज्र, अरुण, वैनतेय (गरुड़), उल्लू-गीध आदि बड़े-बड़े पक्षी जनमे। ताम्रा ने गौरैये, तीतर, बटेर आदि पक्षियों को जन्म दिया। कळा नाम की कोमलांगी ने तरु, लता आदि को जन्म दिया।

कद्रू ने फनियों और व्यालों को जन्म दिया। सुधा से भुजंग उत्पन्न

हुए। अरिष्ठा द्वारा गिरगिट, घोरपड़ आदि आये। इला ने जलचरों को जन्म दिया।

अदिति, दिति, दनु, अरिष्ठा, सुधा, कळा, सुरभी, विनता, मति, इला, कद्रू, क्रोधवशा और ताम्रा —इन स्त्रियों ने ये सव जीव-जन्तु पैदा किये। विनता-सुत अरुण ने रम्भा से विवाह किया और हम भूमि पर पैदा हुए।]

❀ **आण्डवन्नी दुरैशॅय्य वज्जलित्त मलर्क्कैया रत्बि त्तोडुम्**
मूण्डपॅडरुन् दुन्बत्तान् मुरैमुरैयि निरैमलर्क्कण् मॊय्त्त नीरार्
पूण्डपॅरुम् बुहळ्निरुवित् तम्बॊरुट्टार् पॊन्नुलहम् पुक्क तादै
मीण्डनन्वन् दातवनैक् कण्डन्नरे यॊत्तन्नरव् विलङ्गर् ड्रोळार् 202

आण्टु—वहाँ; अवन्—उनके; ईतु उरै चॅय्य—यह कहते ही; विलङ्कल् तोळार्—पर्वत-सम कंधों वाले; अञ्चलितूत मलर् कैयार्—अञ्जलिवद्ध कमल-हस्त (वाले); अन्पिन् ओटुम्—प्रेम के साथ; मूण्ट—वढ़नेवाले; पॅरुम् तुन्पत्ताल्—वड़े दुख से; मुरै मुरैयिन्—उत्तरोत्तर; मलर् कण् निरै—कमल-सम आँखों में भर आनेवाले; मॊय्त्त नीरार्—अधिक अश्रुजल के साथ; पूण्ट पॅरुम् पुकळ् निरुवि—अपना धृत वड़ा यश इधर स्थापित करके; तम् पॊरुट्टाल्—अपने कारण; पॊन् उलकम् पुक्क—स्वर्ण (स्वर्ग) लोक जो गये, उन; तातै—अपने पिता ही; मीण्टतन् वन्तान् अवनै—लौट आये जो, उनको; कण्टतरे ऒत्तत्तर्—देख लिया हो, ऐसा हुए। २०२

जव जटायु ने यह वृत्तान्त कहा, तव पर्वत-सम कन्धों वाले श्रीराम और लक्ष्मण ने अपने कमल-हाथ जोड़ लिये। स्नेह-विह्वल उनकी आँखों से अश्रुकण वारी-वारी से भर आये। उनकी स्थिति ऐसी हो रही, मानो वे दशरथ से ही प्रत्यक्ष मिल रहे हों, जो अव स्वर्ग से अपने उन पुत्रों को देखने के लिए लौट आये हों जिनके (वियोग के ही) कारण वे इस संसार में वड़ा यश स्थापित करके स्वर्गवासी हो गये थे। २०२

❀ **मरुविनिय कुणत्तवरै यिरुशिऱहा लुऱत्तळुवि मक्का णीरे**
उरियकडन् विनैयेऱ्कु मुदवुवी रुडलिरण्डुक् कुयिरॊन् ड्रानान्
पिरियवुन्दान् पिरियादे यिनिदिरुक्कु मुडऱ्पॊऱैयाम् वीळै पारा
तॅरियदनि लिन्ऱेपुक् किऱवेने लित्तुयर मऱवे नॆन्ड्रान् 203

मरुवु इतिय—अपनाने-योग्य मधुर; कुणत्तु अवरै—स्वभाव वाले उनको (श्रीराम आदि को); इरु चिऱकाल्—अपने दोनों पक्षों से; उऱ तळुवि—आलिंगन करते हुए; मक्काळ्—पुत्रो; नीरे—तुम ही; वितैयेऱ्कुम्—पापी मेरा भी; उरिय कटन्—आवश्यक शवकर्म; उतवुवीर्—करा दो; उटल् इरण्टुक्कु—दो शरीर का; उयिर् ऒन्ऱु आनात्—जो प्राण एक रहे; पिरियवुम्—उनके मरने पर; तान् पिरियाते—खुद मरे वगैर; इतितु इरुक्कुम्—सुख से जीता रहने का; उटल् पॊऱै आम्—शरीर-वहन का; पीळै पारातु—दुख देखते हुए; ऎरि अततिल्—आग में; इन्ऱे—अभी; पुक्कु—प्रवेश कर; इऱवेन् एल्—न मरूँगा तो; इ तुयरम् मऱवेन्—यह दुख भूल नहीं पाऊँगा। २०३

पश्चात जटायु ने अपनाने योग्य अच्छे गुणों वाले उन कुँअरों को अपने विशाल पक्षों के अन्दर लेते हुए आलिंगन किया और कहा कि पुत्रो ! मैं बड़ा पापी हूँ । मेरा भी शव-संस्कार कर दो । यह मेरे प्रति उपकार होगा । दशरथ मेरे और उनके दोनों शरीरों का एकप्राण-सम रहे । उनकी मृत्यु होने के बाद मैं बिना मरे यह शरीर ढोता रहूँ, यह मेरे लिए असह्य है ! यह शरीरभार-वहन-दुख दूर करने के लिए आग में प्रवेश करके अभी मर जाऊँगा । नहीं तो यह वेदना भूल नहीं सकूँगा । २०३

❀ ॲऩ्ऱु रैत्त वॅरुवै यरशऩैत्, तुऩ्ऱु तारवर् नोक्कित् तॊऴुदुहण्
ऑऩ्ऱु मुत्त मुऱैमुऱै यायुह, निऩ्ऱु मड्ऱिऩ्ऩ नीर्मै निहऴ्त्तिऩार् 204

ॲऩ्ऱु उरैत्त–ऐसा कहनेवाले; ॲरुवै अरचतै–गृध्रराज को; तुऩ्ऱु तार् अवर्–घनी माला से अलंकृत श्रीराम और लक्ष्मण; तॊऴुतु–विनय करके; कण् ऑऩ्ऱुम्–आँखों में लगी; मुत्तम्—मुक्तापंक्ति-सम अश्रुकण; मुऱै मुऱैयाय्–क्रम से; उक–टपके, ऐसा; निऩ्ऱु–जटायु के सामने स्थित होकर; इऩ्ऩ नीर्मै–इस प्रकार से; निकऴ्त्तिऩार्–वहस की । २०४

जब गृध्रराज जटायु ने अपना यह संकल्प सुनाया, तब मनोरम माला-धारी श्रीराम और लक्ष्मण शोकाकुल हुए । आँखों से मोतियों के समान अश्रुकण बहाते हुए उन्होंने जटायु के सामने खड़े होकर यों कहा । २०४

❀ उय्विडत् तुदवऱ् कुरिया नुन्दन्, मॅय्वि डक्करु दादुविण् णॆऱिनाऩ्
इव्वि डत्तिनि ॲम्बॅरु माअॅऩैक्, कैवि डिऱ्पिऩै यार्कळै कण्णुळार् 205

उय्वु इटत्तु–रक्षा के अवसर पर; उतवऱ्कु उरियातुम्–रक्षा करनेवाले चक्रवर्ती भी; तऩ् मॅय् विट करुतातु–अपना वचन-परिपालन छोड़ना न चाहकर; विण् एऱितान्–स्वर्गवासी हुए; इ इटत्तिऩिल्–इस स्थान (जंगल) में; ॲम् पॆरुमा अऩ्–हमारे नाथ; ॲमै कै विटिल्–हमको असहाय छोड़ जाएँगे तो; पिऩै–फिर; कळै कण् उळार्–हमारे अवलम्ब (सहायक) रहनेवाले; यार्–कौन है । २०५

तात ! हमारी सहायता और रक्षण करने का भार जिन पर स्वयमेव था, वे हमारे सहायक और नाथ अपने वचन को छोड़ना न चाहकर स्वर्ग-वासी हो गए । हे हमारे नाथ ! यहाँ इस जंगल में आप भी हमें निस्सहाय करके छोड़ेंगे तो हमारे आधार कौन है ? । २०५

❀ तायि ऩीङ्गरुन् दन्दैयिऱ् ऱण्णहर्, वायि नीङ्गि वनम् बुहुन् दॅय्दिय
नोयु नीङ्गिनै नुन्निनैत् नॅङ्गळै, नीयु नीङ्गुदि योनॅऱि नीङ्गलाय् 206

नॅऱि नीङ्कलाय्—धर्म-मार्ग से न हटनेवाले; नीङ्कु अरु–जिनसे अलग होना कठिन है, उन; तायिऩ्–माता से; तन्तैयिल्–पिता से; तन् नकर् वायिऩ्–अपने नगर के द्वार से; नीङ्कि–अलग होकर; वतम् पुकुन्तु–जंगल में प्रवेश करके; ॲय्तिय–अब तक जो हमने भुगता है; नोयिऩ्–उस दुख से; नुन्तिऩ्–आपके मिलने

के कारण; नीङ्कितॆम्–विमुक्त हुए; ॲङ्कळै–ऐसे हमको; नीयुम्–आप भी; ॲन्न् नीङ्कुतियो–क्यों छोड़ जाएँगे। २०६

हे धर्म से कभी न हटनेवाले! जिनसे अलग होना कठिन है उन माता से, पिता से और अपने नगर के द्वार से अलग होकर हम इधर आए। उससे हमारे मन में जो व्यथा हुई उससे, आपको देखने के बाद हम मुक्त हो पाये। इस स्थिति में आप हमें क्यों छोड़कर जायेंगे? । २०६

❀ ॲन्ऱु शॊल्ल विरुन्दळि नॆञ्जितन्, निन्ऱ वीररै नोक्कि निनैन्दवन्
अन्ऱ दॆन्नि लयोत्तियि लैयनीर्, शॆन्ऱ पिन्नवर् चेर्हुवॆन् यानॆन्ऱान् 207

ॲन्ऱु चॊल्ल–ऐसा (श्रीराम और लक्ष्मण के) कहने पर; इरुन्तु अळि नॆञ्चितन्–जो दुख से विगलित मन वाले रहे, उन जटायु ने; निन्ऱ वीररै–सामने खड़े रहे वीरों को; नोक्कि–देखकर; निनैन्तवन्–विचार करते हुए; अतु अन्ऱु ॲनिन्–वह तुमको (पसन्द) नहीं तो; ऐय नीर्–प्यारो; नीविर्–तुम लोगों के; अयोत्तियिल् चॆन्ऱपिन्–अयोध्या में लौट जाने के बाद; यान् अवन् चेर्कुवॆन्–मै उनके पास जाऊँगा; ॲन्ऱान्–कहा। २०७

जब श्रीराम और लक्ष्मण ने दुख के साथ अपनी यह बात कही, तब व्याकुलता से निर्बल हुए मन के जटायु ने उनको देखा और कुछ सोचा। फिर मन बदलकर उन्होंने कहा कि पुत्रो! अगर मेरा मरना आपको ठीक नहीं लगता तो लो मेरे प्यारो! तुम्हारे अयोध्या लौट जाने के बाद मैं अपने मित्र के पास जाऊँगा। २०७

❀ वेन्दन् विण्णडैन् दानॆनिल् वीरर्नीर्, एन्दु ञाल मिनिदळि यादिवण्
पोन्द दॆन्नै पुहुन्दवॆन् बुन्दिपोय्क्, कान्दु हिन्ऱदु कट्टुरै यीरॆन्ऱान् 208

वेन्तन्–चक्रवर्ती; विण् अटैन्तान् ॲनिल्–स्वर्ग सिधार गये तो; वीरर् नीर्–वीर तुम; एन्तु ञालम्–भरणयोग्य राज्य को; इनितु अळियातु–सुख से पालन किये बिना; इवण्–यहाँ; पोन्तते ॲन्नै–आये क्यों; ॲन् पुन्ति–मेरा मन; पोय्–अस्थिर होकर; कान्तुकिन्ऱतु–दुखतप्त होता है; पुकुन्त ॲन्–बीच में हुए कौन से; कट्टुरैयीर्–समझाकर कहो; ॲन्ऱान्–पूछा। २०८

फिर जटायु को विचार आया कि ये जंगल क्यों आये हैं? उन्होंने पूछा कि चक्रवर्ती स्वर्गवासी हुए तो वीर तुम्हारा कर्तव्य था कि भरण योग्य राज्य का पालन करो। पर सन्तोष के साथ राज्य-पालन करना छोड़कर यहाँ क्यों आये हो? मेरा मन इधर-उधर भटककर दुखतप्त है! क्या अनर्थ बीच में आये? खूब खोलकर कहो। २०८

❀ तेवर् तानवर् तिण्डिऱ ताहर्वे, ऱेव राह विडरिळैत् तारॆनिल्
पूव रावु पॊलङ्गदिर् वेलिनीर्, शाव राक्कित् तरुवॆ नरशॆन्ऱान् 209

पू अरावु–रेतकर तेज किए हुए; पॊलन् कतिर् वेलितीर्–स्वर्ण-सम कान्ति

छिटकानेवाले भालों का धारण करनेवाले; तिण् तिऱल्–कठोर शक्तिमन्त; तेवर्–देव हों चाहे; तानवर्–दानव; नाकर्—नागलोक-वासी; वेऱु एवर् आक–अन्य कोई भी हों; इटर् इऴैत्तार् ॲनिल्–दुख दिया हो तो; चावर् आक्कि–उनको मृतक बनाकर; अरचु तरुवॅन्–राज्य दिला दूंगा; ॲन्ऱान्–कहा। २०९

खूब रेतकर तीक्ष्ण और स्वर्ण-सम कान्ति देनेवाले भाले के धारक कुँअर ! आपको देवों ने कष्ट दिया हो, चाहे दानव; नागलोकवासी हों या और कोई —कहो कि अमुकों ने कष्ट दिया तो उनको मृतक बनाकर आपको राज्य दिला दूंगा। २०९

❀ तादै कूऱलुन् दम्बियै नोक्किनान्, शीदै केळ्व नवनुन्दन् शिऱ्ऱवै
मादर् राल्वन्द शॅय्है वरम्बिला, ओद वॅलै यॊऴिविन् ऱुणर्त्तिनान् 210

तातै कूऱलुम्–पिता के कहने पर; चीतै केळ्वनुम्–सीतापति ने भी; तम्पियै नोक्किनान्–अनुज को देखा; अवनुम्–उन्होंने भी; तन् चिऱ्ऱव्वै मातराल्–अपनी छोटी माता देवी कैकेयी द्वारा; वन्त चॅय्कै–किया हुआ कार्य; वरम्पु इला ओत–जो निस्सीम घोषयुक्त; वेलै—दुख-सागर था वह; ऑऴिवु इन्ऱु–बिना अन्तर के; उणर्त्तिनान्–बताया। २१०

जब पिता-सम जटायु ने यह वचन कहा तब सीतापति ने अपने अनुज के प्रति अर्थभरी दृष्टि फेरी। लक्ष्मण ने भी अपनी सौतेली माता देवी कैकेयी के कृत्य का घोषपूर्ण समुद्र-सा दुखवृत्तान्त पूर्ण रूप से, बिना कुछ छोड़े-छुड़ाये, कह सुनाया। २१०

❀ उन्दै युण्मैय नाक्कियुन् शिऱ्ऱवै, तन्द शॊल्लैत् तलैक्कॊण्डु तारणि
वन्द तम्बिक् कुदविय वळ्ळले, ॲन्दै वल्ल दियावर्वल् लारॅन्ना 211

उन्तै उण्मैयत् आक्कि–अपने पिता को सत्यनिष्ठ बनाकर; उन् चिऱ्ऱवै तन्त चॊल्लै–अपनी सौतेली माता की आज्ञा; तलै कॊण्टु–सिर पर धारण करके; तारणि–(अपने स्वत्व के) राज्य को; वन्त तम्पिक्कु–अपने अनुज भरत को देकर; उतविय–उपकार करनेवाले; वळ्ळले–दानी प्रभु; ॲन्तै वल्लतु–मेरे तात (तुम) जो कर सके; यावर् वल्लार्–ऐसा कौन कर सकता है; ॲन्ना–कहकर। २११

यह सुनकर जटायु ने साधुवाद दिया ! हे राम ! तुमने अपने पिता को सत्यसंध बनाया और अपनी सौतेली माता की आज्ञा शिरोधार्य करके धरणी को अपने कनिष्ठ भ्राता के पास सौंप दिया ! तुम दानियों में श्रेष्ठ दानी हो ! हे मेरे तात ! हा ! मेरा पुत्र जो कर चुका वह कौन कर सकता है ? । २११

❀ अल्लित् तामरैक् कण्णनै यन्नुऱप्
पुल्लि मोन्द पॊऴिन्दकण् णीरिनन्

वल्लै मैन्दवम् मन्नैयु मॅन्नैयुम्
ॲल्लै यिल्पुह ऴॅय्दुवित् तायॅन्ऱान् 212

अल्लि तामरै कण्णनै–पंखुड़ियों सहित कमल-सम आँखों वाले श्रीराम को; अन्पु उऱ पुल्लि–प्रेम के साथ आलिंगित करके; मोन्तु–माथे पर चूमकर; पोऴिन्त कण् नीरित्तन्–अश्रु बहानेवाले नेत्रों के साथ; मैन्त–पुत्र; अ मन्नैयुम्–उन चक्रवर्ती को; ॲन्नैयुम्–और मुझे भी; ॲल्लै इल् पुकऴ्–असीम यश; ॲय्तुवित्ताय्–दिला दिया; वल्लै–तुम समर्थ हो; ॲन्ऱान्–कहा (जटायु ने)। २१२

जटायु ने हर्षातिरेक से पद्मदलाक्ष श्रीराम को गले लगाया और सिर सूँघा (माथा चूमा)। आँखों से आनन्दबाष्प बहाते हुए जटायु ने कहा—पुत्र! तुमने चक्रवर्ती को और मुझे, दोनों को अपार यश दिला दिया! तुम बड़े समर्थ हो!। २१२

❀ पिन्न रुम्मप् पॅरियवन् पॅय्वळै, अन्न मन्न वणङ्गिनै नोक्किनान्
मन्नर् मन्नवन् मैन्दविव् वाणुदल्, इन्न ळॅन्न वियम्बुदि यालॅन्ऱान् 213

पिन्नरुम्–फिर भी; अ पॅरियवन्–उन बड़े ने; पॅय्वळै–कंकणधारिणी; अन्नम् अन्न–हंसिनी-सदृश; अणङ्कितै–देवी सीता को; नोक्कितान्–देखकर; मन्नर् मन्नवन् मैन्त–राजाधिराज के पुत्र; इ वाळ् नुतल्–यह उज्ज्वल ललाट वाली; इन्नळ–अमुक (कौन) है ऐसा; इयम्पुति–बतलाओ; ॲन्ऱान्–कहा। २१३

फिर भी उन वृद्ध जटायु ने कंकणधारिणी मरालीतुल्य देवी सीता को देखा और श्रीराम से कहा कि राजाधिराज के पुत्र! यह उज्ज्वल ललाट वाली कौन है? यह बताओ। २१३

अल्लि रुत्तन्न ताडहै यादिया
विल्लि रुत्तङ् गरिवैयै मेलैनाळ्
पुल्लु रुत्तदि यावुम् बुहन्ऱुतन्
शॊल्लि रुत्तनन् ऱोन्ऱल्पिन् ऱोन्ऱिनान् 214

तोन्ऱल् पिन् तोन्ऱितान्–श्रीराम के अनुज (लक्ष्मण) ने; मेलै नाळ्–पहले, आरम्भ में; अल् इरुत्तु अन्न–अन्धकारालय-सी; ताटकै आतिया–ताड़का (वृत्तान्त) आदि; विल् इरुत्तु–धनुभँग करके; अङ्कु–उधर; अरिवैयै–सीतादेवी से; पुल् उरुत्ततु–विवाह करना; यावुम् पुकन्ऱु–सभी सुनाकर; तन् चॊल् इरुत्तनन्–अपना कथन पूरा किया। २१४

तब श्रीराम के अनुज लक्ष्मण ने सारा श्रीराम-चरित सुनाया। अन्धकार के आगार-सी ताड़का का वध, मिथिला में शिव-धनुष तोड़ना, सीताजी का विवाह आदि सभी घटनाएँ वर्णन करके श्रीलक्ष्मण ने अपना कथन समाप्त किया। २१४

केट्टु वन्द किळरॉळि मोलियान्, तोट्ट लङ्गलि नीर्तुऱन् दीर्वळम्
नाट्टु नीरिनि नण्णुदल् काऱमिक्, काट्टिल् वैहुदिर् काक्कुवॅन् यानॆन्ऱान् 215

केट्टु उवन्त–सुनकर आनन्दित हुए; किळर् ऑळि मोलियान्–वर्धनशील प्रभा के किरीट के धारी; तोट्टु अलङ्कलितीर्–पुष्पमाला वाले; वळम् तुऱन्तीर्–धन-समृद्धि छोड़ आये हो; नाट्टु–अपने राज्य में; नीर् इनि नण्णुतल् काऱम्–तुम लोगों के आगे पहुँचते तक; इ काट्टिल् वैकुतिर्–इस जंगल में रहो; यान् काक्कुवॆन्–मैं रक्षा करूँगा; ऍन्ऱान्–कहा ।२१५

जाज्वल्यमान किरीट से शोभायमान जटायु ने तुष्ट होकर वादा किया कि हे पुष्पदलमाला-धारी वीरो ! तुम लोग धन आदि वैभव त्यागकर आये हो ! जब तक तुम अयोध्या लौट नहीं जाओगे, तब तक इसी वन में वास करो । मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा । २१५

इऱैव ऍण्णि यहत्तिय नीन्दुळ, तऱैयु नन्मणि याऱ्ऱि नहन्नगरैत्
तुऱैयि नुण्डोरु शूळ्ळलच् शूळ्ळल्पुक्, कुऱैदु मॆन्ऱनन् नुळ्ळल् तुऱैहुवान् 216

उळ्ळत्तु उऱैकुवान्–अन्तर्यामी भगवान श्रीराम; इऱैव–नाथ; अकत्तियन्–अगस्त्य का; ऍण्णि–विचारकर; ईन्तु उळतु–बतलाया हुआ स्थान; अऱैयुम् नल् मणि–कलरवयुक्त सुन्दर; आऱ्ऱिन् अकन् करै–गोदावरी नदी के विशाल तट पर; ओरु चूळल् उण्टु–एक स्थान है; अ चूळल् पुक्कु–उस स्थान में जाकर; उऱैतुम्–रहेंगे; ऍन्ऱनन्–कहा । २१६

सर्वान्तिर्यामी भगवान श्रीराम ने उत्तर में कहा कि हे नाथ ! अगस्त्य ने वासयोग्य कोई स्थान बताया है । वह कलरव सहित बहनेवाली श्रेष्ठ गोदावरी नदी के विशाल तट पर स्थित एक स्थान है । वहीं जाकर हम वास करेंगे । २१६

❀ पॅरिदु नन्ऱप् पॅरुन्दुऱै वैहिनीर्, पुरिदिर् मादवम् बोदुमिन् यानदु
तॅरिवु ऱुत्तुवॅ नॆन्ऱवर् तिण्शिऱै, विरियु नीळ्ळलिन् मेववि्ण् शॆन्ऱनन् 217

पॅरितुम् नन्ऱु–बड़ा अच्छा है; नीर् अ पॅरुम् तुऱै वैकि–तुम उस नदी के श्रेष्ठ घाट पर रहकर; मा तवम् पुरितिर्–महान तप करो; पोतुमित्–चलो; यान् अतु तॅरिवुऱुत्तुवॅन्–मै वह स्थान दिखाऊँगा; ऍन्ऱु–कहकर; तिण् चिऱै निळ्लिल्–बलवान अपने पक्षों की छाया में; अवर् मेव–उनको आने देते हुए; विण् चॆन्ऱनन्–आकाश में उड़ता चला । २१७

जटायु ने उसे उचित समझा । कहा कि वह स्थान अवश्य बड़ा अच्छा है । तुम उसी घाट पर जाकर रहो और बड़ी तपस्या करो । चलो, मै भी तुम्हारे साथ चलूँगा और वह स्थान दिखा आऊँगा । वे आकाश पर उड़ते चले और उनके बलवान और विशाल पक्षों की छाया के नीचे श्रीराम आदि सुख से गये २१७

❀आय शूळ् लरिय वुणर्त्तिय, तूय शिन्दैयत् तोमिल् गुणत्तवन्
पोय पिन्नैप् पॉरुशिलै वीररुम्, एय शोलै यिनिदुशॅन् ऱॅय्दिनार् 218

आय चूळ्ल्–उस (पंचवटी के) स्थान को; अरिय उणर्त्तिय–समझा-बुझाकर; अ तूय चिन्तै–वे पवित्रमन; तोम् इल् कुणत्तु–निर्मल गुणों वाले; अवन्–वे जटायु; पोय पिन्नै–चले गये, उसके बाद; पॉरु चिलै वीररुम्–युद्धोपयोगी धनुओं के स्वामी श्रीराम आदि; एय चोलै–वहाँ रहनेवाले एक उपवन में; इनितु चॅन्ऱु ॲय्तिनार्–सुख से जाकर रहे। २१८

उस स्थान, पंचवटी को दिखाकर और उसके सम्बन्ध में समझाकर पवित्रमन और उत्तम, निर्मल गुणों वाले जटायु चले गये। उसके बाद युद्धोपयोगी धनुष के रखनेवाले दोनों वीर देवी सीता के साथ वहाँ स्थित एक उपवन में गये। २१८

❀वार्प्पॉऱ् कॉङ्गै मरुहियै मक्कळै
एऱ्प्पच् चिन्दनै यिट्टव् वरक्कर्दम्
शीर्प्पैच् चिक्कऱत् तेऱिनन् शेक्कैयिल्
पार्प्पैप् पार्क्कुम् बऱवैयिऱ् पार्क्किन्ऱान् 219

अ अरक्कर् तम् चीर्प्पै–वहाँ के राक्षसों की बलविशिष्टता को; चिक्कु अऱ–संशय के बिना; एऱ्प–खूब; चिन्तनै इट्टु–सोचकर; तेऱिनन्–जो निश्चित रूप से जानते थे, वे जटायु; वार् पॉन् कॉङ्कै–अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली; मरुकियै–पुत्रवधू सीताजी को; मक्कळै–और अपने पुत्रों को; चेक्कैयिल् पार्प्पै पार्क्कुम्–घोंसलों में पोटों की देखरेख करनेवाली; परवैयिल्–मादा पक्षी के समान; पार्क्किन्ऱान्–देखते रहे। २१९

जटायु राक्षसों के बल का पूरा ज्ञान रखते थे। उन्होंने खूब सोचा और मन में धारणा बना ली (कि इनकी रक्षा का खूब ध्यान रखना आवश्यक है)। अतः वे अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली पुत्रवधू सीताजी और दोनों कुमारों पर, सावधानी से अपने बच्चों की देखरेख करनेवाली मादा पक्षी के समान उन पर निगरानी रखते थे। २१९

5. शूर्प्पणहैप् पडलम् (शूर्पणखा पटल)

पुवियिनुक् कणिया यान्ऱ पॉरुडन्दु पुलत्तिऱ् ऱाहि
आवियहत् तुऱैह डाङ्गि यैन्दिणै नॆऱियळाविच्
चवियुऱत् तॆळिन्दु तण्णॆन् ऱॊळुक्कमुन् दळुविच् चान्ऱोर्
कवियॆनक् किडन्द कोदा वरियिनै वीरर् कण्डार् 220

पुवियिनुक्कु अणियाय्–भूलोक का शृंगार (भूषण) बनकर; आन्ऱ पॉरुळ् तन्तु–श्रेष्ठ वस्तुएँ (पुरुषार्थ) प्रदान करते हुए; पुलत्तिऱ्ऱु आकि–खेतों (बुद्धि) का

पोषक रहकर; अवि अक तुऱैकळ् ताङ्कि—अपने में बने हुए अनेकों घाटों के साथ (प्रसादगुणपूर्ण अनेक कथाप्रसंगों के साथ); ऐ तिणै नॆऱि अळावि—पाँचों भूभागों पर से बहती हुई (पाँचों अंगों का वर्णन करती हुई); चवि उऱ तॆळिन्तु—छविमान रूप से साफ़ रहते हुए (जल्दी समझ में आकर ज्ञान दिलानेवाले रूप से साफ़ रहते हुए); तण् ॲन्ऱ ऑऴुक्कमुम् तऴुवि—शीतल धारा-प्रवाह के साथ (रम्य शैली के साथ); चान्ऱोर् कवि ॲन्न—उत्तम कवियों के काव्य के समान; किटन्त—दृश्यमान; कोतावरियित्तै—गोदावरी नदी को; वीरर् कण्टार्—वीरों ने देखा। २२०

(इस पद में गोदावरी नदी और उत्तम कवि के रचे काव्य का श्लिष्ट वर्णन है।) वीरों (सीताजी के साथ श्रीराम और लक्ष्मण) ने उस गोदावरी को देखा, जो उत्तम कवि के रचे काव्य के समान पड़ी (वहती) थी।

[भुवि का श्रृंगार, चारों पुरुषार्थों का दायक, बुद्धि का पोषक, श्रृंगार रस के सुन्दर उपांगों के प्रसंगों का वर्णनकारी, (श्रृंगार) रस भरे काव्य के प्रधान अंगों का (तिणै) चित्रण करनेवाला, मनोहारी छटा के साथ स्वच्छ और शीतल प्रवाहमयी शैली के साथ रहनेवाले उत्तम कवि के काव्य के समान भुवि का श्रृंगार वनकर अनेक पदार्थों को देती हुई या पैदा करने में सहायता देती हुई, खेतों की पोषक, ताप शान्त करनेवाले अनेक घाटों से युक्त, पाँचों (पर्वत, वन, नदी की कछार, समुद्र तट और मरु के) प्रदेशों से होकर सुन्दर रूप से स्वच्छ और शीतल सुखावह प्रवाह के साथ वहनेवाली गोदावरी नदी को वीरों ने देखा।]

[पॊरुळ्—पुरुषार्थ या पदार्थ; पुलम्—बुद्धि (ज्ञान) या खेत; तुऱैहळ—श्रृंगार-रस-कथा के उपांगों का वर्णन या घाट; तिणै—प्रधान भाग, प्रधान भूभाग]। २२०

वण्डुऱै कमलच् चव्वि वाण्मुहम् बॊलिय वाशम्
उण्डुऱै कुवळै यॊण्ग णॊरुङ्गुऱ नोक्कि यूऴित्
तॆण्डिरैक् करत्तिऩ् वारित् तिरुमलर् तूविच् चॆल्वर्क्
कण्डडि पणिव दॆऩ्ऩप् पोलिऩ्ददक् कडवुळ् याऱु 221

अ कटवुळ् याऱु—वह दिव्य नदी; चॆल्वर् कण्टु—उन श्रीमानों को देखकर; वण्टु उऱै कमलम्—अलिकुलावृत कमल रूपी; चॆव्वि वाळ् मुकम्—सुन्दर उज्ज्वल मुख; पॊलिय—आनन्द से शोभित करके; वाचम् उण्टु—सुगन्धियुक्त; उऱै—वहाँ रहनेवाले; कुवळै ऑण् कण्—कुवलय रूपी प्रभापूर्ण आँखों से; ऑरुङ्कु उऱ नोक्कि—एकाग्रता से खूब देखकर; ऊऴिऩ् तॆळ् तिरै करत्तिऩ्—क्रम से उठनेवाली तरंग रूपी हाथों से; तिरु मलर् वारि—सुन्दर पुष्पों को लेकर; तूवि—बरसाकर; अटि पणिवतु ॲन्ऩ—चरणो पर विनत हो रही हो, ऐसा; पॊलिन्ततु—दर्शनीय रही। २२१

उस दिव्य नदी ने उन श्रीमंत कुमारों को देखा तो उसका अलिकुल-कलित कमल रूपी मुख विकसित हुआ। वह सुवासित वनप्राय कुवलय रूपी

आँखों द्वारा देखते हुए क्रमानुक्रम में उठनेवाली स्वच्छ तरंगों रूपी हाथों से पुष्पों को लेकर उनके चरणों पर डालते हुए प्रणमन कर रही हो —ऐसा लगा। २२१

ॲळुवुरु कादलारि निरैत्तिरैत् तेङ्गि येङ्गिप्
पळुवनाट् कुवळैच् चॅव्विक् कण्बनि परन्दु शोर
वळुविला वाय्मै मैन्दर् वनत्तुरै वरुत्त नोक्कि
अळुवतु मॊत्त दालव् वलङ्गु नीराऱु मन्नो 222

अलङ्कु नीर्—हिलती बहनेवाली जलधारा की; अ आरु—वह नदी; वळु इला वाय्मै मैन्तर्—अचल सत्यसंध उन कुमारों का; वनत्तु उरै वरुत्तम् नोक्कि—वनवास का दुख देखकर; ॲळु उरु कातलाल्—उठे हुए प्रेम के साथ; इरैत्तु इरैत्तु—लम्बी साँस लेते-लेते; एङ्कि एङ्कि—तरस खाते-खाते; पळुव—वन-सम घने; नाळ् कुवळै—उसी दिन विकसित कुवलय रूपी; चॅव्वि कण्—आकर्षक आँखों से; पत्ति—जलकण; परन्तु चोर—बरसाकर बहाते हुए; अळुवतु ऒत्तततु—रोती हो, ऐसा लगी। २२२

वह हिलती हुई बहनेवाली नदी सत्यनिष्ठ उन वीरों के वनवास-जनित दुख को देखकर लम्बी आहें भरते हुए तरस के साथ रो रही हो, ऐसा भी लगा। उनके वनप्राय कुवलय रूपी नेत्रों में हिमकण दिखाई दिये। २२२

नाळङ्गॊ णळित्तप् पळ्ळि नयनङ्ग ळमैय नेमि
वाळङ्ग ळुरैव कण्डु मङ्गैतन् कॊङ्गै नोक्क
नीळङ्गॊळ् शिलैयोन् मट्रन् नेरिळै नॆडिय नम्बि
तोळिन्ग णयनम् वैत्ताळ् शुडर्मणित् तडङ्गळ् कण्डाळ् 223

नीळम् कॊळ् चिलैयोन्—दीर्घ धनु के धारक श्रीराम ने; नाळम् कॊळ्—नाल सहित; नळित्त पळ्ळि—कमल रूपी शय्या पर; नयनङ्कळ् अमैय—आँखें उन्मीलित करके; नेमि वाळङ्कळ्—चक्रवाक पक्षियों को; उरैव कण्टु—रहते देखकर; मङ्कै तन् कॊङ्कै नोक्क—देवी के स्तनों पर दृष्टि लगाई, तब; अ नेरिळै—उन आभरणभूषिता देवी ने; चुटर् मणि—कान्तियुक्त नीले रत्नों से भरे; तटङ्कळ् कण्टाळ्—टीलों को देखकर; नॆटिय नम्पि—उन्नत नायक श्रीराम के; तोळिन् कण्—कन्धों पर; नयनम् वैत्ताळ्—आँखें डालीं। २२३

(पति-पत्नी दोनों विविध दृश्य देखते हैं और परस्पर अर्थभरी निगाहें डालकर रसानुभव प्राप्त करते हैं।) दीर्घ-धनुर्धर श्रीराम ने कमलों पर आँखें उन्मीलित करते हुए चक्रवाक पक्षियों के जोड़े को देखा और अपनी अर्द्धांगिनी के उरोजों पर दृष्टि चलायी। तो श्रेष्ठ आभरणालंकृता सीताजी ने उज्ज्वल नीले रत्नों से युक्त बालू के टीलों को देखा और सहज रूप से अपनी दृष्टि श्रीराम के सुडौल दीर्घ कंधों पर डाली। २२३

❀ ओदिम मॊंदुङ्गक् कण्ड वुत्तम नुळैय ळाहुम्
शीदैतन् नडैयै नोक्किच् चिऱियदोर् मुऱुवल् शॆय्दान्
मादव डानु माण्डु वन्दुनी रुण्डु मीळुम्
पोदह नडप्प नोक्किप् पुदियदोर् मुऱुवल् पूत्ताळ् 224

ओतिमम्–हंस को; ऒंतुङ्क कण्ट–किनारा खींचते देखकर; उत्तमन्–पुरुषोत्तम श्रीराम; उळैयळ् आकुम्–पास आनेवाली; चीतै तन् नटैयै नोक्कि–सीताजी की चाल देखते हुए; चिऱियतु ओर् मुऱुवल्–एक मन्दहास; चॆय्तान्–किया; मातु अवळ् तानुम्–देवी, उन्होंने भी; आण्टु–(उस नदी पर) वहाँ; वन्तु नीर् उण्टु मीळुम्–आकर जल पीकर लौटनेवाले; पोतकम् नटप्प नोक्कि–गज को डग भरते देखकर; पुतियतु ओर् मुऱुवल्–नया (विचित्र) एक हास; पूत्ताळ्–विकसित किया। २२४

वहाँ एक हंस (सीताजी की चाल देखकर) हटकर जाने लगा। श्रीराम ने वह देखा और पास आनेवाली सीताजी की चाल देखकर मन्दहास किया। देवी ने एक गज को देखा जो नदी पर आकर पानी पीने के बाद लौट जा रहा था और अनोखा अर्थ-भरा हास हँसीं। २२४

❀ विल्लियऱ् ऱडक्कै वीरन् वीङ्गु नीराऱ्ऱिन् पाङ्गर्
वल्लिह णुडङ्गक् कण्डान् मङ्गैदन् मरुङ्गु नोक्क
ऎल्लियङ् गुवळैक् कानत् तिडैयिडै मलर्न्दु निन्ऱ
अल्लियङ् गमलङ् गण्डा ळण्णऱ्ऱन् वडिवङ् गण्डाळ् 225

विल् इयल्–धनुर्विद्या में अभ्यस्त; तट कै वीरन्–विशालहस्त वीर; वीङ्कु नीर् आऱ्ऱिन् पाङ्कर्–समृद्ध-जल नदी के पास; वल्लिकळ्–लताओं को; नुटङ्क कण्टान्–लचकते देखा; मङ्कैल् तन्–देवी की; मरुङ्कुल् नोक्क–कमर पर दृष्टि डाली तो; ऎल्लि अम् कुवळै कानत्तु–अन्धकार के समान फैले पड़े कुवलय वन के; इटै इटै–बीच-बीच में; मलर्न्तु निन्ऱ–विकसित रहे; अल्लि अम् कमलम्–पंखुड़ियों से भरे कमलों को; कण्टाळ्–देखनेवाली (देवी) ने; अण्णल् तन् वटिवु कण्टाळ्–महिमावान नायक के शरीर पर दृष्टि दौड़ाई। २२५

धनुर्धर श्रीराम ने समृद्धजल वाली नदी के पास लताओं को देखा और उसी स्मृति में सुमध्यमा की कमर निहारी! तब देवी ने अंधकार-सम रंग वाले कुवलय-वन को बीच-बीच में कमलों के साथ देखा और लगे हाथ महिमावान प्रभु के शरीर पर उनकी दृष्टि जा जमी। २२५

अन्नैयदोर् तन्मै यान वरुविनी राऱ्ऱिन् पाङ्गर्प्
पन्निदरु दॆय्वप् पन्ज वडियॆन्नुम् वरुवच् चोलैत्
तन्नियिड मदनै नण्णित् तम्बियाऱ् चमैक्कप् पट्ट
इनियपूञ् जाल यॆय्दि यिरुन्दन निराम निप्पाल् 226

इरामन्–श्रीराम; अनैयतु ओर् तन्मैयाल्–वैसी एक स्थिति की; अरुवि नीर् आऱ्ऱिन् पाङ्कर्–सरिताओं की मिलकर बनी गोदावरी नदी के पास; पनि तरु तॅय्व–शीतल और दिव्य; पञ्चवटि ऍन्नुम्–पंचवटी नाम के; परुव चोलै–सभी ऋतुओं में मनोरम रहनेवाले उपवन में; तन्नि इटम् अतनै–एकान्त स्थान को; नण्णि–जाकर; तम्पियाल् चमैक्क पट्ट–छोटे भाई द्वारा निर्मित; इन्निय पूम् चालै ऍय्ति–प्यारी मनोरम, पर्णशाला में पहुँचकर; इरुन्तनन्–रहे; इप्पाल्–इसके बाद। २२६

ऐसी गोदावरी नदी के किनारे पंचवटी नाम के स्थान में एक उपवन में, जो सभी ऋतुओं में मनोरम और सुखद रहता था, श्रीराम आदि गये। वहाँ छोटे भाई लक्ष्मण ने एक सुन्दर पर्णशाला निर्मित की। श्रीराम उसमें (अपनी प्रिया के साथ) रहने लगे। तब शूर्पणखा वहाँ आयी। २२६

नीलमा मणिनिऱ निरुदर् वेन्दनै
मूलना शम्बॅऱ मुडिक्कु मुन्बिन्नाल्
मेलैना ळुयिरॊडुम् पिऱन्दु तान्विळै
कालमोर्न् दुडनुऱै कडिय नोयन्नाळ् 227

मा नील मणि निऱ निरुतर् वेन्तनै–बड़े नीले रत्न के समान रंग वाले राक्षस-राजा (रावण) को; मूल नाचम् पॆऱ–समूल नाश करने के लिए; मुटिक्कुम्–उपाय कर चुकने की; मुन्पिन्नाल्–प्रेरणा से; मेलै नाळ्–आरम्भ के दिन में ही; उयिरॊटुम् पिऱन्तु–जन्म के साथ पैदा होकर; तान् विळै कालम् ओर्न्तु–फलदान का समय देखकर; उटन् उऱै–(जीव के) साथ रहनेवाली; कटिय नोय् अन्नाळ्–कठोर व्याधि के समान जो रही, ऐसी। २२७

शालीन नीले रत्न के समान काले रंग के राक्षस रावण का समूल नाश करने का उपाय करनेवाली विधि की प्रेरणा से शूर्पणखा वहाँ आयी। वह ऐसे रोग के समान थी, जो शरीर के साथ-साथ जन्म के अवसर पर पैदा हो जाता है और ऐन समय की प्रतीक्षा में उसके साथ लगा रहता है। २२७

शॅम्बरा हम्बडच् चॅऱिन्द कून्दलाळ्
वॅम्बरा हन्दनि विळैन्द मॅय्यिन्नाळ्
उम्बरा न्नवर्क्कुमॊण् डवर्क्कु मोदनीर्
इम्बरा न्नवर्क्कुमो रुऱुदि यीट्टुवाळ् 228

चॅम्पु अराकम् पट–ताम्र का रंग बिछुड़ जाय, ऐसे लाल; चॅऱिन्त–और घने; कून्तलाळ्–केश वाली; वॅम्पु–उष्णतप्त; अराकम् तनि विळैन्त–कामराग-विवर्धित; मॅय्यिन्नाळ्–शरीर वाली; उम्पर् आनवर्क्कुम्–देवों का; ऑण् तवर्क्कुम्–और श्लाघ्य तपस्वियों का; ओतम् नीर्–समुद्रजल से; इम्पर् आनवर्क्कुम्–(वलयित) इस लोक के वासियों का; ओर् उऱुति ईट्टुवाळ्–एक अपूर्व हित साधन करनेवाली। २२८

उसके केश ताँबे के रंग को मात देनेवाले अरुण वर्ण के थे। उसका

शरीर कामेच्छा के उष्ण से तप्त था। वह अनजान में ही देवों, श्रेष्ठ तपस्वी लोगों और इस समुद्र-मेखला पृथ्वी के वासियों का हित करनेवाली बनी आयी। २२८

❀ वॅय्यदोर्	कारण	मुण्मै	मेविन्नाळ्
वैहलुन्	दमियळव्	वन्नत्तु	वैहुवाळ्
नॉय्दिनिव्	वुलहॅला	नुळैयु	नोन्मैयाळ्
ऑय्दिन	ळिराहव	न्निरुन्द	शूळल्वाय् 229

वॅय्यतु ओर् कारणम्–अनर्थकारी एक कारण (कामवासना) के; उण्मै मेविन्नाळ्–अस्तित्व को अपनानेवाली; तमियळ्–अकेली; अ वनत्तिल्–उस वन में; वैकुवाळ्–वास करनेवाली; नॉय्तिन्–अनायास; इ–इस; उलकु ॲलाम् नुळैयुम्–लोक में सर्वत्र पहुँचने का; नोन्मैयाळ्–सामर्थ्य वाली; इराकवन् इरुन्त चूळल् वाय्–(जहाँ) श्रीराघव रहे, उस स्थान में; ॲय्तिनळ्–आई। २२९

भयंकर एक कारण था, जिसके संपादनार्थ वह वन में अकेली रहती थी। (वह कारण उसकी कामलिप्सा हो सकता है या अपने पति को मारने वाले अपने भाई रावण के प्रति उसका क्रोध भी हो सकता है।) वह सारे लोक में घुसकर चलने की शक्ति और साहस रखती थी। वह अकस्मात उस स्थान पर आयी, जहाँ श्रीराम रहते थे। २२९

❀ ऑण्डरु	मिमैयव	ररक्क	रॅङ्गण्मेल्
विण्डनर्	विलक्कुदि	यॅन्न	मेलन्नाळ्
अण्डशत्	तरुन्दुयि	रुरुन्द	वैयनैक्
कण्डन	डन्गिळैक्	किरुदि	काट्टुवाळ् 230

तन् किळैक्कु–अपने परिवारों को; इरुति काट्टुवाळ्–अन्त दिखाने (दिलाने) वाली ने; मेलै नाळ्–पहले कभी; ऑण् तरुम् इमैयवर्–सबसे प्रशंसित सुर लोगों के; अरक्कर् ॲङ्कळ् मेल् विण्टतर्–राक्षसों ने हमसे वैर किया है; विलक्कुति ॲन्न–मिटाइए यह प्रार्थना करने पर; अण्टचत्तु–अण्डज नाग पर; अरुन्तुयिल् तुऱन्त–अपूर्व योगनिद्रा-त्यागी (अवतरित हुए); ऐयनै–महाप्रभु को; कण्टनळ्–देखा। २३०

अपने बन्धु-बान्धवों को अंत दरसानेवाली उसने श्रीराम पर दृष्टि लगायी। किस श्रीराम पर? एक समय पूजनीय देवों ने विष्णु भगवान से प्रार्थना की कि राक्षस हमसे वैर करते हैं; हमें बचा लीजिए। तब परमात्मा ने अण्डज नाग पर अपना शयन और योगनिद्रा त्यागकर इस संसार पर श्रीराम का अवतार लिया था। ऐसे श्रीराम को उसने देखा। २३०

❀ शिन्दैयि	लुऱैबवर्	कुरुवन्	दीय्न्ददाल्
इन्दिरऱ्	कायिर	नयन्न	मीशऱ्कु

मुन्दिय मलर्क्कणोर् मून्ड़ नान्गुतोळ्
उन्दियि लुलहळित् तार्कॅन् ड्रुन्नुवाळ् 231

चिन्तैयिल् उर्रैपवर्कु–मन में वास करनेवाले (मन्मथ) का; उरुवम् तीयन्ततु–शरीर जल गया; इन्तिरर्कु–देवेन्द्र के तो; आयिरम् नयतम्–सहस्र आँखें हैं; इचर्कु–ईश्वर शिव के; मुन्तिय–अपूर्व; मलर् कण्–कमल-सम नेत्र; ओर् मून्ड़–तीन हैं; उन्तियिन्–नाभी से; उलकु अळित्तार्क्कु–लोकों को दिलानेवाले (विष्णुदेव) के; नान्कु तोळ्–चार हाथ है; ॲन्ड़–ऐसा; उन्नुवाळ्–सोचती। २३१

वह विचार करने लगी कि ये कौन हैं ? मनोवासी मन्मथ है क्या ? पर उसका शरीर तो जल गया और वह अशरीरी है ! देवेन्द्र ? उसके तो सहस्र नेत्र हैं। शिवजी हैं क्या ? उनके तो तीन आँखें हैं। विष्णु भी नहीं हो सकते, जिन्होंने अपनी नाभि से लोकों की सृष्टि की क्योंकि उनके चार हाथ होते हैं और इसके तो दो ही है। २३१

* कर्रैयन् जडैयवन् कण्णिर् काय्दलाल्
इर्रव नन्ड्रतॉट् टिन्ड़ काडुन्दान्
नर्रव मियर्रियव् वनङ्ग नल्लुरुप्
पॅर्रन नामॅन्प् पॅयर्त्तु मॅण्णुवाळ् 232

कर्रै अम् चटैयवन्–जूट बनी सुन्दर जटा वाले की; कण्णिल्–(भाल की) आँख (की अग्नि) से; काय्तलाल्–जला देने से; इर्रवन्–अरूप बना; अ अनङ्कन् तान्–वह अनंग ही; अन्ड्र तॉट्टु इन्ड्र काडम्–उस दिन से आज तक; नल् तवम् इयर्रि–अच्छा तप करके; नल् उरु पॅर्रतन् आम्–यह सुन्दर रूप पा गया हो; ॲन–ऐसा; पॅयर्त्तुम्–फिर भी; ॲण्णुवाळ्–सोचती। २३२

वह आगे सोचती— जटाधारी शिवजी के भाल के नेत्र से निकली आग से जलकर जो अरूप बन गया था, वह अनंग उस दिन से आज तक तपस्या करके यह सुन्दर रूप पा गया क्या ? । २३२

* तरङ्गळि नमैन्दुताळ्न् दुयर्न्द तालमा
मरङ्गळु निहर्क्किल मलैयुम् बुल्लिय
उरङ्गळि नुयर्दिशै योम्बु मात्तैयिन्
करङ्गळे यिवन्मणिक् करमॅन् ड्रुन्नुवाळ् 233

इवन् मणि करम्–इसके सुन्दर हाथ; तरङ्कळिन् अमैन्तु–सम और श्रेष्ठ बनकर; ताळ्न्तु–दीर्घ रहते है; उयर्न्त ताल मा मरङ्कळुम्–ऊँचे तालवृक्ष भी; निकर्क्किल–तुलना नहीं कर सकते; मलैयुम् पुल्लिय–पर्वत भी अल्प है; उरन्कळिल् उयर्–बल में बढ़े-चढ़े; तिचै ओम्पु–दिशाओं में रहकर पालन करनेवाले; यात्तैयिन्–गजों के; करङ्कळे–कर ही हैं; ॲन्ड़ उन्नुवाळ्–ऐसा सोचती। २३३

इसके सुन्दर हाथ परस्पर सम, बडे ही सुन्दर और आजानु लम्बे हैं।

इनकी उपमा बड़े तालवृक्ष नहीं कर सकते; पर्वत भी अलग रह जायेंगे। इसलिए बल में बढ़े हुए दिग्गजों के कर ही हैं इनके हाथ ! । २३३

विल्मलै वल्लवन् वीरत् तोळोट्टम्
कल्मलै निहर्क्किल कनिनन्द नीलत्तिन्
नन्मलै यल्लदु नाम मेरुवुम्
पोन्मलै यादलाऱ् पोरुवि लादेन्पाळ् 234

विल् मलै वल्लवन्–धनुर्युद्धसमर्थ इसके; वीर तोळ् ओट्टम्–वीरता-भरे कन्धों से; कल मलै निकर्क्किल–मामूली पत्थर के पर्वत तुल नहीं सकते; कनिनृत नीलत्तिन्–पपके नीले रत्नों के; नन् मलै अल्लदु–सुन्दर पर्वत के सिवा; नाम मेरुवुम्–नामी मेरु पर्वत भी; पोन मलै आतलाल्–स्वर्ण-पर्वत होने के कारण; पोरुवलादु–समान नहीं बन सकता; ऍन्पाळ्–कहती। २३४

धनुर्युद्ध में समर्थ इसके वीरतापूर्ण सबल कंधों की समता साधारण पत्थर का पर्वत नहीं कर सकता। पके प्रवृद्ध नीली मणि का श्रेष्ठ पर्वत कर सकता है। उसके सिवा नामी मेरु पर्वत भी नहीं कर सकता क्योंकि वह स्वर्णमय है। —ऐसी राय कहती वह शूर्पणखा। २३४

ताळुयर् तामरैत् तळङ्ग ळम्मोट्टम्
केळुयर् नाट्टत्तन् गिरियिन् ळोऱ्ऱत्तान्
तोळोटु तोळिन्त् तोडर्नुदु नोक्कुऱिन्
नीळिय वल्लकण् णेडिदु मार्बेन्पाळ् 235

ताळ् उयर्–नाल के कारण ऊँचे रहनेवाले; तामरै तळङ्कळ् तम् ओट्टम्–कमल की पंखुड़ियों सहित; केळ् उयर्–उज्ज्वलता में बड़ी; नाट्टत्तन्–आँखों वाला है; किरियिन् तोऱ्ऱत्तान्–गिरि-सम आकार का है; तोळ् ओटु तोळिन्–एक कन्धे के साथ दूसरे कन्धे को; तोटर्न्तु नोक्कुऱिन्–बराबर एक ही दृष्टि में देखना चाहूँ तो; कण् नीळिय अल्ल–मेरी आँखें लम्बी नहीं हैं (दृष्टि में सामर्थ्य नहीं है); नेटितु मार्पु ऍन्पाळ्–विशाल वक्ष वाला है, कहती। २३५

वह उनके रूप को अंग-अंग देखती और सराहती। इनकी आँखें कमलदल की शोभा लिये बहुत मनोरम हैं। पर्वत-समान आकार के इसके दोनों कंधों को एक साथ, एक दृष्टि में देखना कठिन है क्योंकि मेरी आँखें उतनी लम्बी नहीं रहती। इसका वक्ष बहुत विशाल है। २३५

अदिहनिन् ऱोळिरुमिव् वळहन् वाण्मुहम्
वोदियविळ् तामरैप् पूवै योप्पदो
कदिर्मदि यामेनिऱ् कलैह ळेयुमम्
मदियेनिन् मदिक्कुमोर् मरुवण् डेन्नमाल् 236

निन्ऱु अतिकम् ऑळिरुम्–स्थिर रूप से अधिक दीप्तिमान; इ अळकन् वाळ् मुकम्–इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल मुख; पोति अविळ् तामरै पूवै ऑप्पतो–पंखुड़ियाँ जिसकी विकसित हो रही हैं, उस कमल की उपमा बन सकता है; कतिर् मति आस्–(शीतल-) किरण (पूर्ण) चन्द्र है (कहूँ); ऑन्निल्–तो; कलैकळ् तेयुम्–कलाएँ लुप्त होती जाती हैं; अ मति ऑत्तिल्–वह चन्द्र (सम) है, कहा भी जाय तो; मतिक्कुम्–पूर्ण चन्द्र में भी; ओर् मऱु उण्टु–एक कलंक है; ऑन्नुम्–ऐसा कहती। २३६

स्थिर रूप से अत्यधिक शोभायमान रहनेवाले इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल आनन विकासशील कमल से उपमित हो सकता है क्या ? नहीं। उज्ज्वल किरणों वाला पूर्ण-चन्द्र उपमान बन सकता है क्या? नहीं। क्योंकि दूसरे दिन से वह क्षीण होने लग जाता है। पूर्णता स्थायी न होने पर भी राका-चन्द्र की उपमा मान जायँ तो भी उसमें कलंक है। अतः राका-चन्द्र भी इसकी उपमा नहीं बन सकता। २३६

❀ ऑवन्ऱॅय विन्नियविव् वळहै यॅय्दिन्नान्
अवम्जॅय्दु तिरुवुडम् बलश नोऱ्किन्ऱान्
नवम्जॅय्त् तहैयविन् नळिन नाट्टत्तान्
तवम्जॅयत् तवम्जॅय्द तवमॅ ऩ्ऩुगिऱाळ् 237

इत्तिय इ अळकै–मधुर इस सुन्दरता को; ऍय्तिनान्–जो प्राप्त है, यह; अवम् चॅय–अपना रूप बिगाड़ने के लिए; तिरु उटम्पु–श्रीशरीर; अलच–कष्ट उठाए, ऐसा; ऑवन् चॅय–क्या साधने के लिए; नोऱ्किन्ऱान्–तप करता है; नवम् चॅयत्तकैय–नित-नवीन; इ नळिन नाट्टत्तान्–यह कमल-सम आँखों वाला; तवम् चॅय–तपस्या करे, इसके लिए; तवम् चॅय्त तवम् ऑन्–तप ने किया कैसा तप है; ऑन्किन्ऱाळ्–कहती। २३७

इतनी सुन्दरता पाने का भाग्यशाली यह अपने लावण्य को नष्ट करते हुए और श्री शरीर को दुख देते हुए कौन सा कार्य साधने के लिए तपस्या करता है ? हा ! नितनवीन कमलसम आँखों वाला यह तप करे, इसके लिए तप ने क्या ही तप किया है ? —यह आश्चर्य करती ! । २३७

उडुत्तनी राडैय ळुरुवच् चॅव्वियळ्
पिडित्तरु नडैयिनळ् पॅण्मै नन्ऱिवन्
अडित्तलन् दीण्डलि ऩवनिक् कम्मयिर्
पॉडित्तन पोलुमिप् पुल्लॅन् ऱुन्नुवाळ् 238

उडुत्त नीर् आटैयळ्–समुद्रवसना; उरुव चॅव्वियळ्–रूपसौंदर्यवती; पिटित्तरु नटैयितळ्–हथिनी-सम चाल वाली (भूदेवी का); पॅण्मै नन्ऱु–स्त्रीत्व श्लाघनीय है; इ पुल्–ये घासें; इवन् अटित्तलम् तीण्टलिन्–इसके चरणों के स्पर्श से; अ मयिर्–उसके रोंगटे; पॉटित्तन पोलुम्–खड़े हुए हों, ऐसी लगती है; ऑन्ऱु उन्नुवाळ्–ऐसा सोचती। २३८

समुद्रवसना, सौन्दर्यवती और हथिनी-सी चाल वाली भूमिदेवी का स्त्रीत्व भाग्यवान हो गया। इन घासों को देखो। भूमि के रोम के समान हैं जो इसके चरण-स्पर्श से पुलकित हो खड़े रहते हैं —यह कवित्वपूर्ण विचार करती। २३८

वाणिला मुरुवलान् वयङ्गु शोदियैक्
काणल नेकॊलाङ् कदिरि नायहन्
शेणॆलाम् बुल्लॊळि शॆलुत्तिच् चिन्दैयिल्
नाणिलन् मीमिशै नडक्कु मॆन्गिन्ड्राळ् 239

वाळ् निला मुरुवलान्—उज्ज्वल चाँदनी-सम दाँतों वाले इसकी; वयङ्कु चोतियै—शोभायमान प्रभा को; कतिरिन् नायकन्—किरणनायक सूर्य ने; काणलन् कॊलाम्—देखा नहीं है शायद; चेण् ऎलाम् पुल् ऒळि चॆलुत्ति—(तभी तो) दूर-दूर तक अपनी मन्द प्रभा फैलाते हुए; चिन्तैयिल्—मन में; नाण् इलन्—लाज-रहित; मी मिचै—आकाश में; नटक्कुम्—संचार करता है; ऎन्किन्ड्राळ्—यह निंदा करती। २३९

उज्ज्वल चाँदनी के समान दाँत वाले इसके शरीर की ज्योति को रश्मिपति सूर्य ने देखा नहीं है शायद क्या? तभी तो वह दूर-दूर तक अपना मंद प्रकाश फैलाते हुए, निर्लज्ज होकर, आकाश में संचार करता है! —ऐसा कहती। २३९

कुप्पुरड् करियमाक् कुन्ड्रै वॆन्ड्रुयर्, इप्पॆरुन् दोळव निदळ्क् केड्पदोर्
ऒप्पॆन वुलहमे युरैक्कि नॊण्णुमो, तुप्पिनिड् ड्रुप्पुडै यादैच् चॊल्लुहेन् 240

कुप्पुरड्कु अरिय—जिसको लाँघना मुश्किल है, उस; मा कुन्ड्रै वॆन्ड्रु—बड़े पर्वत को हराकर; उयर्—उन्नत हुए; इ पॆरुम् तोळवन्—बड़े कन्धों वाले इसके; इतळ्क्कु—अधरों की; ओप्पु ऎन—समता करनेवाला ऐसा; उलकमे उरैक्किन्—सारी दुनिया कहे तो भी; ऒण्णुमे—वह समान हो सकता है क्या; तुप्पितिल्—प्रवाल से बढ़कर; तुप्पु उटै—(उपमा होने का) सामर्थ्य रखनेवाला; यातै चॊल्लुकेन्—किसको कह सकूँगी। २४०

अलंघ्य पर्वत को भी नीचा दिखानेवाले कन्धों से शोभायमान इसके अधरों की तुलना प्रवाल से लोक करते हैं। तो क्या प्रवाल में वह सामर्थ्य है? लेकिन प्रवाल से बढ़कर समर्थ उपमा कहाँ खोजूँ? (तुप्पु—प्रवाल; सामर्थ्य)। २४०

नड्कलै मदियुड वयङ्गु नम्बितन्, ऎड्कलै तिरुवरै यॆय्दि येमुड
वड्कलै नोड्डन माशि लामणिप्, पॊड्कलै नोड्रिल पोलु मालॆन्ड्राळ् 241

नल् कलै मति—पूर्ण-(कला)-चन्द्र की; उड—तुलना करते हुए; वयङ्कुम्—शोभायमान; नम्पि तन्—इस पुरुष-नायक की; ऎल् कलै—सूर्य (प्रभा-) हारी; तिरु अरै—श्रीयुक्त कमर को; अय्ति—प्राप्त करके; एम् उड—आनन्द भोगने के लिए;

वऱ्कलै नोऱ्ऱत–वल्कल ने तप किया था; माचु इला मणि–निर्दोष और श्रेष्ठ; पॉन् कलै—स्वर्ण-वस्त्र ने; नोऱ्ऱिल पोलुम्–तप नहीं किया शायद; अॅन्ऱाळ्–कहती। २४१

वह वल्कल का भाग्य सराहती। कहती— सारी कलाओं से पूर्ण चन्द्र के समान शोभायमान 'इस पुरुषनायक की सूर्यप्रभाहारी श्रीकमर को लपेटकर सुखभोग करने का भाग वल्कल ने ही अपने तप द्वारा प्राप्त किया है। क्या स्वर्ण-वस्त्र ने तपस्या नहीं की है शायद ? । २४१

तॉडैयमै नॅडुमऴैत् तॉड्ग लामॅन्नक्
कडैहुळन् ऱिडैनॅरि करिय कुऴ्जियैच्
चडैयॅन्नप् पुनैन्दिल नॅन्निऱ् ऱैयलार्
उडैयुयिर् यावैयु मुडैयु मालॅन्ऱाळ् 242

तॉटै अमै–बराबर और; नॅटु मऴै तॉड्कल् आम् अॅन्न–लम्बी बारिश की धार के समान; कटै कुऴन्ऱु–छोर कुंचित होकर; इटै नॅरि–बीच में खूब घने; करिय कुऴ्चियै–काले केश को; चटै अॅन्न पुनैन्तिलन् अॅन्निल्–जटा बनाकर नहीं रखता तो; तॅयलार् उटै–स्त्रियों के; उयिर् यावैयुम्–सारे प्राण; उटैयुमाल्–मिट जाते; अॅन्ऱाळ्–कहती। २४२

वह स्त्रियों पर तरस खाती, कहती। इनके काले केश मेघ से बराबर गिरनेवाली धार के समान लम्बे और छोर में कुंचित हैं। वे घने हैं। अगर यह उनको जटा के रूप में नहीं बाँधता तो स्त्रियों के प्राण मिट जाते (स्त्रियों के मन टूट जाते)। २४२

नाऱिय नहैयणि नल्ल पुल्लिन्ऩाल्
एऱिय शॅव्वियै यियऱ्ऱु मोवॅन्ना
माऱहन् मुऴुमणिक् करशिन् माट्चिदान्
वेऱोरु मणियिन्ऩाल् विळड्गु मोवॅन्ऱाळ् 243

नाऱिय–शोभायमान; अणि नकै–सुन्दर आभरणों में; नल्ल–श्रेष्ठ; पुल्लिन्ऩाल्–इसके शरीर का आलिंगन करें; एऱिय चॅव्वियै–(तो वे) और अधिक सुन्दरता को; इयऱ्ऱुमो–प्रदान कर सकेंगे क्या; अॅन्ना–सोचकर; माऱु अकल्–लाजवाब; मुऴु मणिक्कु अरचिन्–सारे रत्नों के राजा श्रीकौस्तुभ का; माट्चि–शान; वेऱु ओरु मणियिन्ऩाल्–दूसरी एक मणि से; विळड्कुमो–प्रकाशित हो सकता है क्या; अॅन्ऱाळ्–कहती। २४३

वह उनको आभरणभूषित के रूप में कल्पना करती है और पूछती है कि क्या अति सुन्दर आभरणों में अति श्रेष्ठ आभरणों को चुनकर इसको पहनाएँ तो वे आभरण इसकी दर्शनीयता को बढ़ा सकेंगे ? वह निश्चय करती कि मणियों में श्रेष्ठ श्रीकौस्तुभमणि का शान और रूप-गौरव अन्य रत्नों द्वारा बढ़ाया जा नहीं सकता। २४३

करन्दिल तिलक्कण मॆंडुत्तुक् काट्टिय
परन्दरु नान्मुहन् पळिप्पुडू डान्रो
इरन्दिव निणैयडिप् पॊडियु मेड्किलाप्
पुरन्दर नुलहॆलाम् पुरक्किन् डानॆन्डाळ् 244

इवन् इणै अटि–इसके चरणद्वय की; पॊटियुम्–धूलि की महिमा; इरन्तुम् एड्किला–याचना करने पर भी जो प्राप्त न कर सकेगा; पुरन्तरन्–वह पुरन्दर; उलकु ऎलाम्–सारे लोकों का; पुरक्किन्ड्रान्–पालन करता है; करन्तिलन्–बिना छिपाये; इलक्कणम् ऎंडुत्तु काट्टिय–(सामुद्रिका-) लक्षणों के साथ इनकी रचना करनेवाले; परम् तरु नान्मुकन्–महिमायुक्त ब्रह्मा; पळिप्पु उड्डान् अरो–अपराधी हो गया न; ऎन्ड्राळ्–कहती। २४४

इसके चरणद्वय की धूलि के समान भी पुरन्दर नहीं बन सकता। वह याचना कर पा लेने का प्रयास करे तो भी उसे इसकी-सी महिमा नहीं हो सकती। तो भी वह तीनों लोकों का पालन करता है! ब्रह्मा ने बिना किसी दुराव के सारे लक्षणों से युक्त कराके इसको रचा है तो क्या लाभ है? इसको तपस्वी बनाने से ब्रह्मा को अपयश मिल गया है। २४४

नीत्तमुम् वान्मुड् गुरुह नॆञ्जिडैक्
कोत्तवन् बुणर्विडैक् कुळित्तु मीक्कॊळ
एत्तवुम् बरिविन्नॊन् डीह लान्बॊरुळ्
कात्तवन् बुहळॆनत् तेयुड् गड्पिनाळ् 245

नीत्तमुम्–समुद्रजल; वानमुम्–और आकाश को; कुडक–छोटा दिखने देते हुए; नॆञ्चु इटै कोत्त–अपने मन में अंकित; अन्पु उणर्वु इटै–कामेच्छा में; कुळित्तु–मग्न होकर; मी कॊळ–उस राग के बढ़ने से; एत्तवुम्–याचकों की प्रार्थना सुनकर भी; परिविन्–अनुताप करके; ऒन्रु ईकलान्–कुछ न देनेवाले; पॊरुळ् कात्तवन् पुकळ् ऎन–धन के परिग्रही (रक्षक) के यश के समान; तेयुम् कड्पिनाळ्–क्षीणप्राय स्त्रीत्व (शील-संयम) वाली। २४५

शूर्पणखा के मन में कामसागर इतना भर आया कि उसके विस्तार के सामने समुद्र का जल और आकाश का फैलाव छोटे दिखे। उसमें मग्न उसके मन में ज्यों-ज्यों कामेच्छा बढ़ती गयी, त्यों-त्यों उसका स्त्रीसहज शील और संयम उस लोभी धनवान के यश के समान छीजने लगे, जो प्रार्थना करनेवाले याचक से सहानुभूति नहीं करता और न ही कुछ देता और धन की रक्षा करता है। २४५

❀ वान्डनिल् वरैन्ददोर् माद रोवियम्
पोन्ड्रन णिन्ड्रनळ् पुळङ्गु नॆञ्जिनाळ्
तोन्ड्रन् शुडर्मणित् तोळि नाट्टङ्गळ्
ऊन्ड्रित पड्क्कवो रूड्डम् बॆड्डिलाळ् 246

पुळुङ्कुम् नॅन्चित्ताळ्–(काम-) तप्तमना; तोन्ड़ल् तन्–चक्रवर्ती-तनय के; ढुटर् मणि तोळिन्–दीप्त-मणि-सम भुजाओं में; ऊन्ड़िन नाट्टङ्कळ्–गड़ी आँखों को; ड़िक्क–निकालने की; ओर् ऊट्रम् पॅड्रिलाळ्–आवश्यक शक्ति नहीं रखती थी; वान् तन्निल् वरैन्त–आकाश में खींचे हुए; ओर् मातर् ओवियम् पोन्ड्रत्ताळ्–एक स्त्री (प्रेम की स्त्री) के चित्र के समान लगी; निन्ड्रनाळ्–खड़ी रही। २४६

उसका मन कामतप्त हो गया। उसमें अपनी दृष्टि को, जो श्रीराम के कांतिमय कंधों पर गड़ गयी थी, उखाड़ लेने की क्षमता नहीं रह गयी थी। इसलिए वह बीच आकाश में ही निस्पंद-सी खड़ी रह गयी। तब वह आकाश में खींचे गये स्त्रीचित्र (या प्रेमचित्र) के समान दिखी। २४६

❀ निन्ड्रन ळिरुन्दव नडिय मार्बहम्
ऑन्रुवॅ नन्ड्रॅनि लमुद मुण्णिनुम्
पॉन्रुवॅन् पोक्किनि यरिदु पोलॅनाच्
चॅन्ड्रॅदिर् निऱ्पदोर शॅय्है तेडुवाळ् 247

निन्ड्रनाळ्–स्तब्ध खड़ी रही; इरुन्तवन्–वहाँ स्थित उसका; नॅटिय मार्पु अकम्–विशाल वक्षस्थल पर; ऑन्रुवॅन्–लग जाऊँगी; अन्ड्रु ॲतिल्–(वह) नहीं (हो सका) तो; अमुतम् उण्णिनुम्–अमृत खाऊँगी तो भी; पॉन्रुवॅन्–(इस कामवेदना के कारण) मर जाऊँगी; पोक्कु इनि अरितु पोल् ॲना–कोई गति दूसरी नहीं शायद, यह सोचकर; ॲतिर् चॅन्ड्रु निऱ्पतु–सामने जाकर स्थित होने का; ओर् चॅय्कै तेडुवाळ्–एक बहाना ढूँढ़ती। २४७

चित्र के समान स्थिर जो खड़ी रही, उस शूर्पणखा के मन में यह संकल्प उठा। वहाँ रहनेवाले उस पुरुष के विशाल वक्षस्थल में लिपट जाऊँगी। अगर वह नहीं हो सकता तो अमृत भी मुझे जीवित नहीं रख सकता— मैं मर जाऊँगी। कोई दूसरा चारा नहीं दीखता। अब श्रीराम के सामने आकर खड़ी होने के लिए मन में एक योग्य बहाना ढूँढ़ने लगी। २४७

❀ ॲयिरुडै यरक्कियॅव् वुयिरु मीट्टदोर्
वयिरुडै याळॅन मरुक्कु मादलाल्
कुयिरॅडिर् कुदलैयोर् कॉव्वै वायिळ
मयिरॅड रियलॅळिल् मरुव नन्ड्रॅना 248

ॲयिरु उटै अरक्कि–वक्रदाँत वाली राक्षसी; ॲ उयिरुम् इट्टतु–सभी जीवों को जिसमें दफ़ना लिया है, उस; ओर् वयिरु उटैयाळ्–उदर वाली है यह; ॲन–समझकर; मरुक्कुम् आतलाल्–इनकार कर देगा, इसलिए; कुयिल् तॉटर्–कोयलसम; कुतलै–मधुर वाणी; ओर् कॉव्वै वाय्–बिम्बाधर; इळमयिल् तॉटर्–(इनके साथ) बालमयूर की-सी छटा वाली; इयल् ॲळिल्–स्वाभाविक शोभा को; मरुवल्–अपनाना; नन्ड्रु ॲना–अच्छा, समझकर। २४८

उसे संशय था कि श्रीराम से इस रूप में मिलूँ तो वे अस्वीकार कर देंगे। वे यह सोचेंगे कि इस राक्षसी का पेट सभी जीवों को जीवित ही गाड़ देने का गड्ढा है। इसलिए उसने विचार किया कि मैं एक सुन्दरी का रूप धारण करूँगी। उसकी वाणी कोकिल की-सी होगी। उसके अधर बिंबफल के समान लाल होंगे। उसकी चमक-दमक बाल-मयूर की-सी होगी। और समूची सुन्दरता स्वाभाविक होगी। हाँ वही अच्छा कार्य होगा। २४८

❀ पङ्गयच् चॅल्वियै मऩत्तुप् पाविया
अङ्गैयि ऩायमन् दिरत्तै यायन्दनळ्
तिङ्गळिऩ् चिऱन्दॊळिर् मुहत्तळ् चॅव्वियळ्
पॊङ्गॊळि विशुम्बिऩिऩ् पॊलियत् तोन्ऱिऩाळ् 249

पङ्कय चॅल्वियै–पंकज की स्वामिनी श्रीलक्ष्मी को; मऩत्तु पाविया–मन में ध्यान करके; अम् कैयिऩ् आय–खूब वश में रहे; मन्तिरत्तै–श्रीलक्ष्मी-मन्त्र को; आय्न्तऩळ्–जपा; तिङ्कळिल् चिऱन्तु–चन्द्र से बढ़कर; ऒळिर् मुकत्तळ्–शोभायमान मुख वाली; चॅव्वियळ्–और तरुण सुन्दरी बनी; पॊङ्कु ऒळि–अपनी छिटकती छटा को; विचुम्पिऩिल् पॊलिय–आकाश में फैलने देते हुए; तोन्ऱिऩाळ्–प्रकट हुई। २४९

उसने पंकजा श्रीलक्ष्मीदेवी का ध्यान किया। उसने लक्ष्मीदेवी का मंत्र वश कर रखा था। उसने वह मंत्र जपा। तब वह पूर्ण-चन्द्र से भी बढ़कर प्रभा छिटकानेवाला मुख, तरुण सौन्दर्य —इनसे युक्त होकर आकाश में अपना रूप-लावण्य-प्रकाश फैलाती हुई प्रकट हो गयी। २४९

पञ्जियॊळि विञ्जुकुळिर् पल्लव मनुङ्गच्
चॅञ्जॅविय कञ्जनिहर् शीऱडि यॆयर्प्पाळ्
अञ्जॊलिळ मञ्जैयॆऩ वऩ्ऩमॆऩ मिऩ्ऩुम्
वञ्जियॆऩ नञ्जमॆऩ वञ्जमहळ् वन्दाळ् 250

ऒळि विञ्चु–आभा में बढ़कर; पञ्चि–लाल रुई व; कुळिर् पल्लवम्–शीतल पल्लव को; अऩुङ्क–(परास्तना का) दुख देते हुए; चॅम् चॅविय–लाल और सुन्दर; कञ्चम् निकर्—कंज-सम; चीऱटि–अपने छोटे पैरों को; पॆयर्प्पाळ्–रखती हुई; अम् चॊल् इळ मञ्ञै ऎऩ–सुन्दर बोली वाले बालमयूर के समान (छटा वाली); अऩ्ऩम् ऎऩ–हंस के समान (चाल वाली); मिऩ्ऩुम् वञ्चि ऎऩ–चमकती बिजली के समान; नञ्चम् ऎऩ–और विष के समान; वञ्च मकळ्–वंचकी नारी; वन्ताळ्–आई। २५०

फिर वह वंचकी निशाचरी श्रीराम के सामने आयी। कैसे ? उसके लाल, कंजतुल्य छोटे पैर लाल रुई और शीतल पल्लवों को मात दे रहे थे। वह कोकिल के समान मधुर-मधुर बोलनेवाले बालमयूर के

मान आभा वाली थी। वह बिजली की लता के समान और विषतुल्य था। ऐसी वह मनोरम रूप से पग धरती हुई आयी। २५०

पॊन्तॊळुहु पूविन्तोडु पूविलुऱै पूवै
पिन्नॆळिल्हॊळ् वाळिणै पिऱळ्न्दॊळिर् मुहत्ताळ्
कन्नियॆळिल् कॊण्डदु कलैत्तड मणित्तेर्
मिन्निळिव तन्मैयदु विण्णिळिव दॆन्न 251

पॊन् ऒळुकु—स्वर्ण-वर्ण के साथ; पूविन् ऒट्टु—और कान्ति के साथ; पूविल् उऱै—कमल के फूल पर रहनेवाली; पूवै—देवी, श्रीलक्ष्मी को; पिन् ऎळिल् कॊळ्—सौंदर्य में पीछे ढकेलनेवाली सुन्दरता लेकर; वाळ् इणै—तलवार (-सम आँखों) के जोड़े; पिऱळ्न्तु ऒळिर्—जिसमें चलित होकर छवि दे रहे थे, वह; मुकत्ताळ्—मुख वाली; कन्नि ऎळिल् कॊण्टतु—एक अनोखी सुन्दरता लिये; कलै तट मणि तेर्—चित्रमयी विशाल सुन्दर रथ; मिन् इळिव तन्मैयतु—बिजली गिरती-सी; विण् इळिवतु ऎन्न—आकाश से उतरता हो, ऐसा। २५१

शूर्पणखा स्वर्णवर्ण, कमलजा से भी बढ़कर सुन्दरी बन गयी। उसका मुख दो चंचल और तलवार-सम आँखों के साथ बहुत ही छविमान दिखा। वह आकाश से नीचे जब उतरती आयी तब वह एक अनोखे, चित्र-प्रतिमाओं से अलंकृत विशाल और सुन्दर रथ के समान लगी, जो बिजली उतरती हो ऐसा आकर्षण लेकर आकाश से उतर रहा था। २५१

❀ कात्तिलुयर् कऱ्पह मुयिर्त्त कदिर्वल्लि
मेत्तिनत्ति पॆऱ्ऱुविळै कामनॆऱि वाशत्
तेनिन्मॊळि युऱ्ऱिनिय शॆव्विनत्ति कॊण्डोर्
मानिन्विळि पॆऱ्ऱुमयिल् वन्ददॆन्न वन्दाळ् 252

ओर् मयिल्—एक मोर; कात्तिल् उयर्—सुगन्धि में बढ़े हुए; कऱ्पकम् उयिर्त्त—कल्पकतरु-सृष्ट; कतिर् वल्लि—उज्ज्वल कामलता का; मेत्ति नत्ति पॆऱ्ऱु—रूप-सौंदर्य पाकर; काम नॆऱि—काम-मार्ग में; वाच तेनिन् मॊळि उऱ्ऱु—सुवासपूर्ण शहद की-सी बोली के साथ; इत्तिय चॆव्वि नत्ति कॊण्टु—मनोरम छटा से खूब पूर्ण होकर; मान् विळि पॆऱ्ऱु—मृग के-से नयन ले; वन्ततु ऎन्न—आया हो, ऐसा; वन्ताळ्—आई। २५२

फिर वह भूमि पर एक विचित्र मयूर के समान चलती आयी। कैसा मयूर? समझिए कि एक मयूर को सुवासित कल्पतरु द्वारा सृजित आभा-युक्त कल्पवल्ली का रूप मिल गया। सुवासपूर्ण शहद-सी मधुर बोली, बड़ी ही आकर्षक सुन्दरता और हरिण की-सी आँखें प्राप्त हो गयीं। ऐसा एक मयूर पैदल आता हो ऐसे आकर्षण के साथ वह आयी। २५२

❀ नूबुरमु मेहलैयु नूलुमऱ लोदिप्
पूमुरलुम् वण्डमिवै पूशलिड मोदै

तामुरैशॅय् हिन्ऱदॊरु तैयल्वरु मऩ्ऩाक्
कोमहऩु मत्तिशै कुऱित्तनऩ् विऴित्ताऩ् 253

नूपुरमुम्–नूपुर और; मेकलैयुम्–और मेखला; नूलुम्–हार; अऱल् ओति–काले बालू के समान केश के; पू मुरलुम्–पुष्पों पर गुंजार करनेवाले; वण्टुम्–भ्रमर; इवै–इनके; पूचल् इटुम् ओतै–जो मचाते थे, वह शब्द; ऑरु तैयल् वरुम् ऍऩ्ऩा–एक स्त्री आ रही है, ऐसा; उरै चॅय्किन्ऱतु–घोषणा कर रहा है; कोमकऩुम्–चक्रवर्ती-सुत ने भी; अ तिचै–उस दिशा; कुरित्ततऩ्–को लक्ष्य करके; विऴित्ताऩ्–देखा। २५३

उसके नूपुर, मेखला, हार, केशालंकार के पुष्प पर गुंजार करनेवाले अलिकुल सब हर्षरव कर रहे थे। वह शब्द यह घोषणा कर रहा था कि कोई स्त्री आ रही है। चक्रवर्तीसुत दाशरथी ने यह जाना और उस दिशा में दृष्टि दौड़ाई, जहाँ से यह ध्वनि आ रही थी। (तुलसीदासजी ने इस ध्वनि को मदनदुंदुभी कहा है, पर वह सीताजी के मिलन के मंगलमयी पवित्र प्रसंग में।)। २५३

❀ विण्णरुळ वन्ददॊरु मॆल्लमुद मॆऩ्ऩ
वण्णमुलै कॊण्डिडै वणङ्गवरु पोऴ्दत्
तॆण्णरुळि येऴ्मै तुडैत्तॆऴुमॆय्ज् ञानक्
कण्णरुळ्शॆय् कण्णनिरु कण्णिनॆदिर् कण्डान् 254

विण्–आकाश (स्वर्ग); ऑरु मॅल् अमुतम्–अनुपम और नरम सुधा; अरुळ वन्ततु ऍऩ्–देने की कृपा करने आया जैसे; वण्ण मुलै कॊण्टु–आकर्षक उरोजों के साथ; इटै वणङ्क–कमर लचकाते हुए; वरु पॊऴ्ततु–जब वह आई तब; ऍण् अरुळि–बुद्धिशक्ति प्रदान कर; एऴैमै तुटैत्तु–अज्ञान दूर करके; ऍऴुम्–ऊपर उगने-वाली; मॅय् ञात कण् अरुळुम्–सच्ची ज्ञान-दृष्टि दिलाने की कृपा करनेवाले; कण्णऩ्–सर्वनेत्र श्रीराम ने; इरु कण्णिऩ् ऍतिर् कण्टाऩ्–अपनी दोनों आँखों से (उसको) देखा। २५४

स्वर्ग अमृत दिलाने लाया हो, ऐसे स्तनों वाली और लचकती कमर वाली, शूर्पणखा जब आ रही थी तब श्रीराम ने, जो जीवों को विवेक देकर, तद्वारा अज्ञान मिटाकर, फलस्वरूप ज्ञानदृष्टि दिलानेवाले, सब नेत्रों के नेत्र, परब्रह्म हैं, अपनी दोनों आँखों से उसको देखा। २५४

❀ पेरुळैय नाहरुल हिऱ्पिऱिदु वाऩिल्
पारुळैयि निल्लदॊरु मॆल्लुरुवु पारा
आरुळैय डङ्गुमऴ हिऱ्कवदि युण्डो
नेरिऴैयर् यावरिव णेरॆऩ निनैन्दाऩ् 255

पेर् उळैय–बहुत विशाल थल वाला; नाकर् उलकिल्–नागलोक में; पिऱितु वाऩिल्–उससे भिन्न स्वर्गलोक में; पार् उळैयिल्–भूतल में; इल्लतु–अप्राप्य; ऑरु–

अनुपम एक; मॅल् उरुवु पारा–कोमल रूप को देखकर; आर्–कौन; उळै अटङ्कुम् अळकिऱ्कु–इसमें समाविष्ट सुन्दरता का; अवति उण्टो–ठिकाना है क्या; नेरिळैयर्–आभरणधारिणी नारियाँ; यार् इवळ् नेर्–कौन इसके समान हैं; ॲॅत्त नित्तैन्तान्–ऐसा सोचा (श्रीराम ने)। २५५

विस्तृत नागलोक में, उससे भिन्न स्वर्ग में, या भूलोक में कहीं भी अप्राप्य था एक ऐसा कोमल रूप। श्रीराम सोचने लगे कि यह कौन है? इसमें समाविष्ट सुन्दरता का ठिकाना भी है? कौन आभरणभूषिता नारियाँ हैं जो इसकी समानता कर सकती हैं? । २५५

❀ अव्वयिऩव् वाशैतन हत्तुडैय वन्ऩाळ्
शॅव्विमुह मुत्ऩियडि शॅङ्गैयि ऩिऱैञ्जा
वॅव्विय नॅडुङ्गणयिल् वीशिययल् पारा
नव्वियि नॉदुङ्गियिऱै नाणियय निऩ्ऱाळ् 256

अ वयित्–उस समय; अ आचै–वह राग; तत्तु अकत्तु उटैय–अपने मन में रखनेवाली; अन्ताळ्–वह (शूर्पणखा); चॅव्वि मुकम् मुन्ति–श्रीराम के मनोहर मुख को देख; अटि–उनके श्रीचरणों को; चॅम् कैयित् इऱैञ्चा–लाल हाथ जोड़कर नमस्कार करके; वॅव्विय–सालनेवाला; नॅटुम् कण्–दीर्घ आँखों का; अयिल्–(दृष्टि रूपी) भाला; वीचि–फेंककर; अयल् पारा–आँख चुराकर दूसरी ओर देखती हुई; नव्वियित् ऑतुङ्कि–हरिण के समान एक ओर हटकर; इऱै नाणि–थोड़ा लजाती हुई; अयल् निऩ्ऱाळ्–(श्रीराम के) पास खड़ी रही। २५६

तब तक शूर्पणखा श्रीराम के मुख के सामने आ गयी। उसने अपने मनोरम हाथ जोड़कर श्रीराम के चरणों को नमस्कार किया। अपने लाल डोरों सहित नेत्रों की भाला-सम दृष्टि श्रीराम पर फेंकी। झट आँख चुराकर दूसरी ओर देखने लगी। भीरु मृगी के समान थोड़ा हटी। लाज का किंचित प्रदर्शन किया। इन सब नखरों के साथ वह उनके पास खड़ी रही। २५६

❀ तीदिल्वर वाहतिरु निन्वरवु शेयोय्
पोदवुळ दॅम्मुळैयॉर् पुण्णियम दन्ऱो
एदुपदि येदुपॅयर् यावरुऱ वॅन्ऱान्
वेदमुदल् पेदैयव ळन्निलै विरिप्पाळ् 257

चेयोय्–अपरिचित (या श्रीलक्ष्मी-सम) स्त्री; निन् तिरु वरवु–तुम्हारा श्रेष्ठ आगमन; तीतु इल्–अमंगलहीन (शुभ); वरवु आक–आगमन हो; पोत–तुम आओ इसका; ॲम् उळै–हमारे पास; ओर् पुण्णियम् अतु अन्ऱो–एक सुकृत रहा है न; एतु पति–कौन सा स्थान; एतु पॅयर्–कौन सा नाम; यावर् उऱवु–रिश्तेदार कौन हैं; वेत मुतल्–वेदमूल ने; ॲन्ऱान्–पूछा; पेतै अवळ्–अबोध ने; तन् निलै–अपना वृत्तान्त; विरिप्पाळ्–विस्तार से कहा। २५७

श्रीराम ने सम्भाषण आरम्भ किया। आगन्तुक अजनवी ! (चेयोय् का अर्थ लक्ष्मी भी हो सकता है।) तुम्हारा वर आगमन अमंगलरहित शुभ आगमन हो ! हमने पुण्य किया है, यह सच है तभी तो तुम आयी हो ! तुम्हारा वासस्थान कौन सा ? नाम क्या ? तुम्हारे रिश्तेदार कौन हैं ? —वेदमूल (वोध का आधार) श्रीराम ने प्रश्न किया। अवोध (वोध-हीन) शूर्पणखा अपना वृत्तान्त विस्तार से सुनाने लगी। २५७

❀ पूविलोऩ् पुदल्वऩ् मैन्दऩ् पुदल्विमुप् पुरङ्गळ् शॅऱ्ऱ
शेवलोऩ् तुणैव ऩाऩ शॅङ्गैयोऩ् ऱङ्गै तिक्किऩ्
मावॅलान् दॉलैत्तु वॅळ्ळि मलैयॅडुत् तुलह मूऩ्ऱुम्
कावलोऩ् पिऩ्ऩै काम वल्लियाङ् गऩ्ऩि यॅऩ्ऱाळ् 258

पूविलोऩ्—कमलासन के; पुतल्वऩ् मैन्तऩ्—पुत्र के पुत्र की; पुतल्वि—दुहिता हूँ; मु पुरङ्कळ् चॅऱ्ऱ—त्रिपुरदाहक; चे वलोऩ्—ऋषभवाहन के; तुणैवऩ् आऩ—मित्र; चॅम् कैयोऩ्—लाल (दान देते-देते लाल बने) हाथ वाले कुबेर की; तङ्कै—छोटी वहिन; तिक्किऩ् मा—दिग्गज; ॲलाम् तॉलैत्तु—सारे भगाकर; वॅळ्ळि मलै ॲडुत्तु—चाँदी के पर्वत (कैलास) को उठाया (जिसने); उलकम् मूऩ्ऱुम् कावलोऩ्—लोकत्रयी का पालक; पिऩ्ऩै—उस रावण की अनुजा; काम वल्लि—कामवल्ली; आम्—नाम की; कऩ्ऩि—कन्या; ॲऩ्ऱाळ्—(अपना परिचय) कहा। २५८

कमलासन ब्रह्मा के पुत्र (पुलस्त्य) के पुत्र (विश्रवा) की पुत्री हूँ। त्रिपुर जलानेवाले ऋषभवाहन शिवजी के मित्र दान देते-देते लाल बने हाथ वाले कुबेर की बहिन हूँ। दिग्गजों को भगानेवाले, चाँदी के पर्वत (कैलास) को उखाड़नेवाले त्रिलोकाधिपति रावण की अनुजा हूँ। मेरा नाम कामवल्ली है। (वार-बार शिवजी की चर्चा त्रिपुरांतक, त्रिपुरदाहक आदि के साथ आयी है। उसका संक्षिप्त विवरण यों है— तारकासुर के पुत्र विद्युन्माली, तारकाक्ष और कमलाक्ष थे। इन्होंने कठोर तपस्या की और अपार वल-वैभव पा लिया। मय ने इनके लिए स्वर्ण, चाँदी और लोहों के प्राचीरों से युक्त तीन नगर निर्मित किये। ये नगर जहाँ चाहे उड़े जा सकते थे। वे तीनों असुर इनका उपयोग कर सर्वत्र जाते और सितम ढाते। देवों और मुनियों ने मिलकर शिवजी से प्रार्थना की। शिवजी ने भूमि को रथ, वेदों को चार अश्व, ब्रह्मा को सारथी, मेरु को धनुष, आदिशेषनाग को प्रत्यंचा, विष्णु रूपी पंखों से युक्त अग्नि को अस्त्र और अन्य देवों को अन्य अस्त्र-शस्त्र वना लिया। फिर युद्धसन्नद्ध हो चले। उन्होंने एक विचित्र हास के साथ उन असुरों को मय उनके नगरों के जला डाला। शूर्पणखा ने अपनी वंशावली की तीन पीढ़ियों की चर्चा की। क्योंकि उसका उद्देश्य 'विवाह' था।)। २५८

अव्वुरै केट्ट वीर नैयुरु मनत्तान् शॅय्है
शॅव्विदन् ड्रियलाहुम् जिरिदि नॅन्रु णराच् चॅङ्गण्
वॅव्वुरु वमैन्दोन् ड्ङ्गै यॅन्रदु मॅय्म्मै याहिल्
इव्वुरु वमैन्द तन्मै यियम्बुदि विरैवि नॅन्रान् 259

अ उरै केट्ट–वह कथन सुनकर; ऐ उरु मनत्तान्–शंकितमन होकर; चॅय्कै चॅव्वितु अन्रु–इसके (हाव-भाव और) कार्य अच्छे नहीं; चिरिदिन् अरितल् आकुम्–थोड़ा समझना आवश्यक है; ऍन्रु उणरा–ऐसा महसूस करके; चॅम् कण्–रक्तिम आँखों और; वॅम् उरु अमैन्तोन्–भयंकर रूप वाले (रावण) की; तङ्कै ऍन्रतु–बहिन कहा जो, सो; मॅय्म्मै आकिल्–सच है तो; इ उरु अमैन्त तन्मै–यह रूप (कैसे) मिला, वह प्रकार; विरैविन् इयम्पुति–शीघ्र बताओ; ऍन्रान्–पूछा। २५९

शूर्पणखा का यह कथन सुनकर (उसकी अदाओं से) श्रीराम के मन में कुछ सन्देह पैदा हुआ। श्रीवीरराघव ने सोचा कि इसका कार्य भला नहीं लगता। थोड़ा जाँचकर समझा जा सकता है। यह सोचकर उन्होंने शूर्पणखा से पूछा कि लाल आँखों वाले और भयंकर रूप वाले रावण की बहिन होने की बात सत्य है, तो तुम्हें यह रूप कैसे मिला? शीघ्र बताओ। २५९

तूयवन् पणिया मुन्नम् जॊल्लुवाळ् शोर्वि लाळम्
मायवल् लरक्क रोडुम् वाळ्विनै मदिक्कि लादे
आय्वुरु मनत्ते नाहि यरनुदलै निरुपदानेन्
तीविनै तीय नोर्रुत् तेवरिर् पॅर्र दॅन्राळ् 260

तूयवन् पणिया मुन्नम्–पवित्र पुरुष श्रीराम के पूछने पर; चोर्वु इलाळ्–उत्सुक उसने; अ माय वल् अरक्करोटुम्–उन माया में समर्थ राक्षसों के साथ; वाळ्विनै–जीवन को; मतिक्किलाते–उचित न मानकर; आय्वु उरु मनत्तेन् आकि–विवेक से भरे मन वाली होकर; अरम् तलै निर्पतु आनेन्–धर्मावलम्बी बनी; तीविनै तीय–पाप जलाने (मिटाने) के लिए; नोर्रु–तपस्या करके; तेवरिल्–देवों की कृपा से; पॅर्रतु–(जो) पाया (वह) यह है; ऍन्राळ्–उत्तर दिया। २६०

पवित्र मन वाले श्रीराम ने जब ऐसा प्रश्न किया, तो शूर्पणखा समझ सकती थी कि श्रीराम इसके मन की बात माननेवाले अपवित्र-चरित्र नहीं है। तो भी वह हतोत्साह होनेवाली नहीं थी। उसने उत्तर दिया कि मैं उन मायाकार्य में प्रवृत्त और चतुर राक्षसों के साथ रहना उचित नहीं समझकर विवेकशीला बन गयी हूँ। धर्ममार्गावलम्बी हो गयी। अपने सभी पापों को, तपस्या करके जला दिया। देवों की कृपा से प्राप्त यह रूप है। २६०

इमैयवर् तलैव नेयु मॅळिमैयि नेवल् शॅय्युम्
अमैदियि नुलह मून्रु माळ्बवन् ड्ङ्गै याहिल्

शुमैयुरु शॆल्वत् तोडुन् दोन्ऱलै तुणैयु मिन्ऱित्
तमियणी वरुदऱ् कॊत्त तन्मैयॆन् ऱॆय लॆन्ऱान् 261

तैयल्–नारी; इमैयवर् तलैवन् ए उम्–देवेन्द्र भी; ऑऴिमैयिन्–दीन बनकर; एवल् चॆय्युम्–जिसकी सेवा करता है; अमैतियिन्–उस स्थिति में; उलकम् मून्ऱुम् आऴ्पवन्–जो त्रिलोकाधिपत्य करता है, उस रावण की; तङ्कै आकिल्–बहिन हो तो; चुमै उरु–गुरु; चॆल्वत्तोटुम्–धन-वैभव के साथ; तोन्ऱलै–नहीं दिखाई देतीं; तुणैयुम् इन्ऱि–सहायक से रहित; तमियळ्–अकेली; वरुतऱ्कु–आओ, इसका; ऑत्त तन्मै–योग्य कारण; ऎन्–कौन सा है; ऎन्ऱान्–पूछा। २६१

श्रीराम ने आगे पूछा— हे नारी ! तुम कहती हो कि रावण की भगिनी हूँ। रावण त्रिलोकाधिपति है। देवों के राजा देवेन्द्र भी उसका किंकर होकर उसकी सेवा-टहल करता है। वह बड़ा ही श्रीमंत है। उसके भारी धन-वैभव के योग्य रूप में तुम नहीं दिखाई देतीं। और भी तुम अकेली और कोई साथी-संगी के बिना आयी हो। ऐसा दीन-हीन और असहाय आना क्योंकर हुआ ? कारण क्या है ? । २६१

वीरनः(ह्) दुरैत्त लोड् मॆय्यिलाळ् विमल यानच्
चीरिय रल्लार् माट्टुच् चॆर्हिलॆन् ऱेवर् पालुम्
आरिय मुनिवर् पालु मडैन्दत्तॆ निऱैव वीण्डोर्
कारिय मुण्मै निन्नैक् काणिय वन्दे नॆन्ऱाळ् 262

वीरन्–वीर के; अः.तु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहने पर; मॆय् इलाळ–असत्यवादी ने; विमल–निर्मल; यान्–मै; अ चीरियर् अल्लार् माट्टु–उन श्रेष्ठताहीन (नीच) लोगों से; चेर्किलॆन्–नहीं मिल सकती; तेवर् पालुम्–देवों के पास और; आरिय मुनिवर् पालुम्–सुशील मुनियों के पास; अटैन्ततॆन्–आकर रहती हूँ; इऱैव–नाथ; ईण्टु ओर् कारियम् उण्मै–इधर मेरा एक कार्य है, इसलिए; निन्नै काणिय वन्तेन्–तुमको देखने आई; ऎन्ऱाळ्–कहा। २६२

श्रीवीरराघव के इस प्रश्न के उत्तर में उस मिथ्याभाषिणी ने कहा कि विमल वीर ! मैं उन नीच लोगों से नहीं मिलती। देवों और मुनियों से ही सम्पर्क रखती हूँ। प्रभु ! मेरा एक कार्य है। उसी के सिलसिले में मैं तुमसे भेंट करने आयी हूँ। २६२

अन्नव ळुरैत्त लोडु मैयनु मऱिदऱ् कॊव्वा
नन्नुदन् महळिर् शिन्दै नन्नॆऱिप् पाल वल्ल
पिन्निदु तॆरियु मॆन्नाप् पॆय्वळैत् तोळि यॆन्बाल्
ऎन्नका रियत्तै शॊल्लः(ह्) दियैयुमे लिळ्ैप्प लॆन्ऱान् 263

अन्नवळ्–उसके; उरैत्तलोटुम्–कह चुकते ही; ऐयतुम्–प्रभु ने भी; नल्नुतल् मकळिर् चिन्तै–सुन्दर भाल वाली इस स्त्री का अभिप्राय; अऱितऱ्कु ऑव्वा–

जानने में आनेवाला नहीं होता; नल् नॅरि पाल अल्ल–अच्छे पथ पर जानेवाला नहीं लगता; इतु–यह (इसका सत्य); पिन् तॅरियुम्–पीछे मालूम होगा; ॲन्ऩा–विचार करके; पॅय् वळै तोळि–भुजवलय-भूषित कंधों वाली; ॲन् पाल्–मेरे पास; ॲन्ऩ कारियत्तै–कौन से कार्य की अपेक्षा करती हो; चॉल्–कहो; अ.·.तु इयैयुमेल्–वह युक्त हो तो; इक्कैप्पल्–करूँगा; ॲन्ऱान्–कहा। २६३

उसका वह उत्तर सुनकर श्रीराम ने सोचा कि इस सुन्दर भाल वाली के (मन के अंदर रहनेवाले) विचार हमारे जानने में नहीं आते। पर वे सन्मार्गगामी नहीं लगते। इसका सत्य पीछे मालूम होगा। फिर उन्होंने उससे कहा— हे अंगदालंकृत कंधों वाली ! मेरे पास क्या उद्देश्य ले आयी हो ? बताओ। अगर वह उचित और कार्यसाध्य होगा, तो अवश्य करूँगा। २६३

तामुरु कामत् तन्मै ताङ्गळे युरैप्प दॅन्ब
दामॅन्ऩ लाव दन्ऱा लरुङ्गुल महळिर्क् कम्मा
एमुरु मुयिर्क्कु नोवे नॅन्शॅय्हेन् यारु मिल्लेन्
कामनॅन् ऱॅरुवन् शॅय्युम् वन्मैयैक् कात्ति यॅन्ऱाळ् 264

ताम् उरु–आप में उठी; काम तन्मै–कामेच्छा की स्थिति; ताङ्कळे उरैप्पतु ॲन्पतु–स्वयं कहना, यह; अरुम् कुल मकळिर्क्कु–उत्तम कुल की स्त्रियों के लिए; आम् ॲन्ऱल्–हो सकेगा, ऐसा कहना; आवतु अन्ऱु–होनेवाला नहीं है; एम् उरुम्–मोहमग्न; उयिर्क्कु–अपना जीवन रखने के लिए; नोवेन्–तड़प रही हूँ; ॲन् चॅय्केन्–क्या कर सकूँगी; यारुम् इल्लेन्–(अपना) कोई नहीं रखती; कामन् ॲन्ऱु ऑरुवन्–मन्मथ नाम का कोई; चॅय्युम्–(जो) करता है; वन्मैयै–उस अत्याचार को; कात्ति–रोककर (मुझे) बचाओ; (अम्मा–री मैया); ॲन्ऱाळ्–कहा। २६४

उसके उत्तर में शूर्पणखा ने कहा कि कुलीन स्त्रियों के लिए अपने काम की चर्चा स्वयं करना साध्यकाम समझना ठीक नहीं है। री मैया ! वह कठिन है। मेरा प्राण अब मोहमग्न होकर क्षीण हो रहा है। उसे बचाने को तरस रही हूँ। क्या करूँ ? मेरे कोई सहायक भी नहीं हैं। अब काम नाम का वह मेरे ऊपर अत्याचार कर रहा है। उसकी क्रूरता को रोको और मेरी रक्षा करो। २६४

शेणुऱ नीण्डु मीण्डु शव्वरि शिदऱि वॅव्वे
ऱेणुऱ मिळिर्न्दु नाना विदम्बुरण् डिरुण्ड वाट्कण्
पूणियल् कॉङ्गै यन्ना ळम्मॉऴि पुहल लोडुम्
नाणिल ळैय नॉय्य णल्लळु मल्ल ळॅन्ऱान् 265

चेण् उऱ नीण्टु–दूर तक जाकर; मीण्टु–(स्थानाभाव से) लौटकर; चॅम् अरि चितऱि–लाल डोरे (जिनमें) फैले रहे; वॅव्वेऱु एण् उऱ–विविध वैशिष्ट्यों से भरे; मिळिर्न्तु–चलित होकर; नाना वितम् पुरण्टु–नाना प्रकार से घूमकर; इरुण्ट–

अन्धकार के समान काले; वाळ् कण्—तलवार-सम नेत्रों वाली; पूण् इयल् कोङ्कै—आभरणभूषित स्तनों वाली; अन्नाळ्—उस (शूर्पणखा) के; अ मोऴि—वह वचन; पुकललोटुम्—कहने पर; नाण् इलळ्—निर्लज्ज है; ऐय नीय्यळ्—बहुत ही नीच है; नल्लळुम् अल्लळ्—भली भी नहीं है; ॲन्ऩ्ऱान्—(श्रीराम ने) समझा। २६५

यह कहते हुए उसने जो नखरे दिखाये, वे उसकी निर्लज्जता को साफ़ प्रकट करते थे। उसकी आँखें, लम्बी जाकर स्थानाभाव के कारण मुड़ी हों, इतनी लम्बी थीं और विचित्र अदाएँ दिखाती हुई विविध प्रकार से चलित होती थीं। वे अन्धकार के समान काली थीं और तलवार के समान तीक्ष्ण थीं। उसके स्तन आभरणों से शोभित थे। ऐसी उसने जब वह कथन किया तब, श्रीराम समझे कि यह अतीव निर्लज्ज है। यही नहीं, वह बड़ी ओछी भी है। भली स्त्री नहीं है। २६५

पेशल तिरुन्द वळ्ळ लुळ्ळत्तिऩ् पॆऱ्ऱि योराळ्
पूशलवण् डरऱ्ऱुङ् गून्दऱ् पॊय्म्मकळ् पुहऩ्ऱ वॆन्गण्
आशैकण् डरुळिऱ् ऱुण्डो वऩ्ऱॆऩ्ऩ लुण्डो वॆऩ्ऩुम्
ऊशलि नुलावु हिन्ऱाण् मीट्टुमो रुरैयैच् चॊन्नाळ् 266

पेचलन् इरुन्त वळ्ळल्—(विचारमग्न) बिना कुछ कहे जो रहे, उन उदार प्रभु के; उळ्ळत्तिऩ् पॆऱ्ऱि ओराळ्—मन की स्थिति समझ नहीं सकी; वण्टु पूचल् अरऱ्ऱुम्—भ्रमर नाद करते है (जिस पर बैठकर); कून्तल्—वैसा केश वाली; पॊय् मकळ्—मायाविनी; पुकऩ्ऱ—(इसके) कथित वचन; ॲन् कण्—मेरे प्रति; आचै कण्टु—प्रेम करके; अरुळिऱ्ऱु उण्टो—कृपा करने के फलस्वरूप हैं; अन्ऱु ॲन्तल् उण्टो—'न' ऐसा कहना है; ॲन्ऩुम्—ऐसे (दो); ऊचलिन्—विचारों के बीच में झूलने में जैसे; उलावुकिन्ऱाळ्—डोलायमान रहनेवाली; मीट्टुम् ओर् उरैयै चॊन्नाळ्—फिर एक बात कहने लगी। २६६

यह सोचते हुए वे मौन रह गये। मायाविनी शूर्पणखा, जिसके केश पर सज्जित पुष्पों पर अलिकुल गुंजार कर रहे थे, श्रीराम के मन के भाव को समझ नहीं सकी। 'इसने जो कहा क्या वह मेरे ऊपर प्रेम करने की कृपा के फलस्वरूप था? या वह इन्कार करने के लिए था?' इन दो विचारों के बीच उसका मन झूले के समान झूलने लगा। फिर उसने एक बात कही। २६६

ॲऴुदरु मेनि यायीण् डॆय्दिय दऱिन्दि लादेन्
मुऴुदुणर् मुनिव रेवऱ् चॆय्दॊऴिन् मुऱैयिन् मुऱ्ऱिप्
पऴुदऱु पॆण्मै योडु मिळमैयुम् बयनिन् ऱेहप्
पॊऴुदॊडु नाळुम् वाळा कऴिन्दन पोलु मॆन्ऱाळ् 267

ॲऴुतु अरु मेनियाय्—(जिसका) चित्र खींचना कठिन है, वैसे रूपधर; ईण्टु

ॲय्तियतु–तुम्हारा यहाँ आगमन; अऱिन्तिलातेऩ्–नहीं जानती मैं; मुऴुतु उणर्–सर्वज्ञ; मुनिवर् एवल्–महर्षियों की आज्ञा से; चॅय् तॊऴिल्–उनकी सेवा-टहल; मुऱैयिऩ् मुऱ्ऱि–यथाविधि पूरा करके; पऴुतु अऱु पॅण्मैयोटुम्–अकलंकित स्त्रीत्व के साथ; इळमैयुम्–यौवन को भी; पयऩ् इऩ्ऱि एक–व्यर्थ बीतने देते हुए; पॊऴुतॊटु नाळुम्–समयों के साथ दिन भी; वाळा कऴिन्तन–व्यर्थ बीत गये; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। २६७

ऐसे सुन्दर रूप वाले, जिसका चित्र खींचना कठिन है! तुम इधर आये, यह मैं नहीं जानती थी। इसलिए सर्वज्ञ मुनियों की सेवा-टहल में श्रद्धा के साथ लगी रह गयी और मेरे अकलंक चरित्र के साथ मेरे यौवन को भी निरर्थक बनाते हुए अनेक काल यों ही व्यर्थ वीत गये। २६७

निन्दनै यरक्कि नीदि निलैयिलाळ् विनैमऱ् ऱॅण्णि
वन्दन ळाहु मॅन्ऱे वळ्ळलु मनत्तुटु कॊण्डाऩ्
सुन्दरि मणत्तिऱ् कॊत्त तॊऩ्मैयिन् ऱुणिविऱ् ऱन्ऱाल्
अन्दणर् पावै नीया नरशरिल् वन्दे नॆऩ्ऱाल् 268

वळ्ळलुम्–उदार प्रभु ने भी; निन्तनै अरक्कि–निन्द्य निशाचरी है; नीति निलै इलाळ्–नैतिक स्थिति वाली नहीं; मऱ्ऱु वित्तै ॲण्णि–कोई दूसरा (बुरा) कार्य सोचकर; वन्तनळ् आकुम्–आयी हुई है, यही होना चाहिए; ॲऩ्ऱे–ऐसे ही; मनत्तुळ् कॊण्टाऩ्–मन में धारणा कर ली; चुन्तरी–सुन्दरी; नी अन्तणर् पावै–तुम ब्राह्मण-कन्या हो; याऩ्–मैं; अरचरिल् वन्तेऩ्–राजाओं (के कुल) में पैदा हुआ (क्षत्रिय) हूँ; मणत्तिऱ्कु ऒत्त–विवाह-क्रम के योग्य; तॊऩ्मैयिऩ् तुणिपिऱ्कु अऩ्ऱु–प्राचीन प्रथा को पुष्ट करनेवाला नहीं; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। २६८

प्रभु को विश्वास हो गया कि यह निन्द्य निशाचरी है। न्याय-मार्ग पर जानेवाली नहीं है। कोई भयंकर उद्देश्य लेकर इधर आयी है। यह दृढ़ धारणा करके प्रभु ने समझाया कि सुन्दरी! तुम ब्राह्मण-कुल-कन्या हो। मैं तो क्षत्रिय राजकुल का हूँ। विवाह सम्बन्धी जो क्रम निर्धारित हुए हैं, उन प्राचीन क्रमों के अनुसार हमारा विवाह होने योग्य नहीं है। २६८

आरण मऱैयो नॆन्दै यरुन्ददिक् कऱ्पि नॆम्मोय्
तारणि पुरन्द शाल कडङ्गडर् मरबिऱ् ऱैयल्
पोरणि पॊलङ्गॊळ् वेलोय् पॊरुन्दलै यिहळ्दर् कॊत्त
कारण मिदुवे याहि लॆन्नुयिर् काणबे नॆन्ऱाळ् 269

पोर् अणि–युद्ध ही जिसका शृंगार हो, ऐसे; पॊलन् कॊळ् वेलोय्–सुन्दर शक्ति-धारी; ॲन्तै–मेरे पिता; आरण मऱैयोन्–वेदज्ञ विप्र हैं; अरुन्तति कऱ्पिन्–अरुन्धती-सम पतिव्रता; ॲम् ओय्–मेरी माँ; तारणि पुरन्त–धरणीपालक; चालकटङ्कटर्–सालकटंकट के; मरपिल् तैयल्–वंश की पुत्री है; पॊरुन्तलै–सम्मत

न होकर; इकऴ्तर्कु ऒत्त–उपेक्षा करने के लिए युक्त; कारणम् इतुवे आकिल्–कारण यही है, तो; ऎन् उयिर् काण्पॆन्–अपनी जान को (बचा हुआ) पा जाऊँगी; ऎन्ऱाळ्–कहा। २६८

शूर्पणखा ने उत्तर में कहा कि युद्ध ही जिसका शृंगार है, ऐसे उज्ज्वल भाला के धारी ! तुम यह जान लो कि मेरे पिता वेदज्ञ ब्राह्मण थे, पर अरुन्धती ही सम पतिव्रता मेरी माता धरणी के पालक 'सालकटंकट' नाम के राजवंश की संतान थी। (अध्यात्म रामायण के अनुसार तृणविंदु राजा के सालकटंकटा नाम की लड़की थी। उसके पेट से विश्रवस के वर से शूर्पणखा पैदा हुई। दूसरा वृत्तान्त है कि राक्षस-कुल के हेति का पुत्र विद्युतकेश था। उसने सालकटंकटा से विवाह किया और उनके पुत्र माल्यवान, मालि और सुमालि थे। उनमें सुमाली की पुत्री कैकशी थी, जिसके रावण, शूर्पणखा आदि सन्तानें थीं।) अगर तुम्हारी अस्वीकृति का कारण इतना ही था तो मैं वच गयी। क्षत्रिय से विवाह करने का मेरा अधिकार स्वतः सिद्ध है। इसलिए तुमसे विवाह न होने की हालत में जीवन त्यागने का विचार जो मैंने किया था अब उस विचार को त्याग दूँगी और अपने को जीवित रखूँगी। २६९

अरुत्तिय ळन्न कूऱ वहत्तुऱ नहैयिन् वॆळ्ळैक्
कुरुत्तॆळ हिन्ऱ नीलक् कॊण्डलुण् डाट्टङ् गॊण्डान्
वरुत्तनीङ् गरक्कर् तम्मिन् मानुडर् मणत्त नङ्गै
पॊरुत्तमन् ऱॆन्ऱु शालप् पुलैमैयोर् पुहल्व रॆन्ऱान् 270

अरुत्तियळ्–अर्थिनी के; अन्न कूऱ–ऐसा कहने पर; अकत्तु उऱु नकैयिन्–अन्दर उठे हास के; वॆळ्ळै कुरुत्तु–श्वेत अंकुर; ऎऴुकिन्ऱ–फूट निकलते हों, ऐसे मन्दहास के साथ; नील कॊण्टल्–श्यामलमेघ-सम श्रीराम ने; उण्टाट्टम् कॊण्टान्–एक लीला रची; नङ्कै–वाले; वरुत्तम् नीङ्कु–जो दुख से दूर है, उन; अरक्कर् तम्मिन्–राक्षसो से; मानुटर् मणत्तत्–मानवों का विवाह करना; पॊरुत्तम् अन्ऱु–उचित नहीं; ऎन्ऱु–ऐसा; चाल पुलैमैयोर्–गम्भीर विद्वान; पुकल्वर्–कहेंगे; ऎन्ऱान्–कहा। २७०

अर्थिनी शूर्पणखा ने यह कहा तो श्रीराम को हँसी आ गयी। वह हँसी अन्दर गड़ी हास-बीज के श्वेत अंकुर के समान वाहर प्रकट हुई। मेघश्याम ने एक लीला रचने का विचार किया। उन्होंने कहा कि अंगने ! राक्षस दुख से अभिभूत न होनेवाले हैं। मनुष्य तो विविध संकटों से ग्रस्त रहनेवाले हैं। मनुष्य-राक्षस का विवाह उचित नहीं होता। यह गम्भीर विद्वानों का मत है। २७०

परावरुञ् जिरत्तै यारुम् पत्तियिन् पयत्तै योरा
दिरावणत् तुङ्गै यॆन्ऱु देळैमैप् पाल दॆन्ना

अरावणै यमल तन्ना यरिवित्तेन् मुन्नन् देवर्प्
परावित्ते नीङ्गि नेनप् पळिपडु पिरवि येन्राळ् 271

अरावणै अमलन् अन्नाय्–शेषशायी निर्मल (विष्णु) देव के समान रहनेवाले; परावु अरुम्–जिसका विस्तार से कहना कठिन है; चिरत्तै आरुम्–श्रद्धा से युक्त; पत्तियिन् पयत्ते–उस भक्ति के फल को (जो मुझे मिला है); ओरातु–नहीं सोचकर; इरावणन् तङ्कै–रावण-भगिनी; ऍन्नुरतु–कहना (और उपेक्षा करना); एळ्मै पालतु–अज्ञता से सम्बन्धित है; ऍन्ना–कहकर; तेवर् परावित्तेन्–देवों की स्तुति की (मैंने); अ पळि पटु पिरवि–उस निन्दा योग्य जन्म से; नीङ्कित्तेन्–अलग हो गई हूँ; मुन्नम् अरिवित्तेन्–पहले ही समझा दिया (मैंने); ऍन्राळ्–कहा। २७१

शूर्पणखा ने तर्क प्रस्तुत किया कि हे शेषशायी विमल विष्णु-सम राम ! तुम मुझे रावण की भगिनी के रूप में ही देखते हो। मैंने कितनी श्रद्धा के साथ कैसी भक्ति की है, इसका यथार्थ विस्तार ही कठिन है। उसको भूल जाते हो और रावण की बहिन कहकर उपेक्षा दिखाते हो। यह तुम्हारी अज्ञता है ! उसने आगे विश्वास दिलाया कि मैंने देवों की स्तुति-पूजा आदि करके वह जन्म-कलंक धुला दिया है ! यह पहले ही मैंने तुमको बताया था। २७१

ऑरुवन्नो वुलह मून्रिर् कोङ्गॊरु तलैव नूङ्गिल्
ऑरुवन्नो कुबेर नित्रि नुडन्पिरन् दारह ळत्नार्
तरुवरेऱ् कोडु मन्रेऱ् रमियवे रिडत्तुच् चारल्
वॆरुवुवॆ नङ्गै यॆन्रान् मीट्टव ळिनैय शॊन्नाळ् 272

नङ्कै–नारीरत्न; नित्तिलि उटन् पिरन्तार्कळ्–तुम्हारे सहोदरों में; ऑरुवन्नो–एक तो; उलकम् मून्रिर्कु–तीनों लोकों का; ओङ्कु ऑरु तलैवन्–उन्नत और अकेला अधिपति है; ऊङ्किल्–वैभव में; ऑरुवन्नो–और एक तो; कुपेरन्–धनद (कुबेर) है; अन्नार् तरुवरेल्–वे कन्यादान कर देंगे; कोटुम्–मैं ग्रहण कर सकूँगा; अन्रेल्–नहीं तो; तमियै–अकेली तुम; वेऱु इटत्तु चारल्–दूसरे की हो जाओ; वॆरुवुवॆन्–उससे डरता हूँ; ऍन्रान्–कहा; अवळ्–वह; मीट्टु–फिर; इनैय चॊन्नाळ्–यों बोली। २७२

श्रीराम ने बहस की। हे नारी-रत्न ! तुम्हारे सहोदरों में एक तो तीनों लोकों का निर्द्वन्द्व अधिपति रावण है। दूसरा धन-देवता कुबेर है। वे तुमको मेरे पास कन्यादान में दे देंगे, तो मै तुमको ग्रहण कर सकूँगा। नहीं तो, तुम अपनी इच्छा से किसी परपुरुष को वरो, यह मुझे अच्छा नहीं लगता और मुझे डर पैदा होता है। तब शूर्पणखा ने यों उत्तर दिया। २७२

❀ कान्दर्प्प मॆन्ब दुण्डार् कादलिऱ् कलन्द शिन्दै
मान्दर्क्कु मडन्दै मार्क्कु मऱैहळे वहुत्त कूट्टम्

एऩ्दऱ् पॊऩ् ऱोळि नायि:(ह) दियॆऩ्दपि ऩ्ऩैऩक्कु मूत्त
वेऩ्दर्क्कुम् विरुप्पिऱ् ऱाहुम् वेऱुमो ऱुरैयुण् डॆऩ्ऱाळ् 273

एऩ्तल् पॊऩ् तोळिनाय्—पर्वत-सम सुन्दर कंधों वाले; कातलिल् कलन्त चिन्तै—प्रेम से परस्पर अनुरक्त मन वाले; माऩ्तर्क्कुम्—पुरुषों और; मटन्तै मार्क्कुम्—स्त्रियों के लिए; काऩ्तर्प्पम् ऎऩ्पतु—गान्धर्व प्रकार का; मऱैकळे वकुत्त—वेदों से ही निर्दिष्ट; कूट्टम्—विवाह; उण्टु—है; इ.·.तु इयैन्त पिऩ्—(ऐसा विवाह) यह (हममें) हो जाने के बाद; ऎऩ्ऩैक्कु मूत्त वेन्तर्क्कुम्—मेरे बड़े भाइयों को भी; विरुप्पिऱ्ऱु आकुम्—पसन्द आयगा; अऩ्ऱियुम्—इसके अलावा; वेऱुम् ओर् उरै उण्टु—दूसरी एक बात भी है; ऎऩ्ऱाळ्—कहा। २७३

पर्वत-सम मनोरम कंधे वाले ! परस्पर प्रेम में संयुक्त मन वाले पुरुष और स्त्रियाँ गान्धर्व विवाह कर ले सकते हैं। यह वेदसम्मत विवाहरीति ही है। पहले हम विवाह कर ले तो देखोगे कि मेरे अग्रज इसे चाव के साथ स्वीकार कर लेंगे। और भी एक लाभ है, इसमें। सुनो। २७३

❀ मुनिवरो डुडैय मुऩ्ऩे मुदिर्पहै मुऱैमै नोक्कार्
तनियैनी याद लाऩ्मऱ् ऱवरोडुन् दळ्वर् कौत्त
विऩैयमी दल्ल दिल्लै विण्णुनिऩ् नाट्चि याक्कि
इऩियवर् महिळ्न्दु वन्दुऩ् ऩेवलि निऱ्प रॆऩ्ऱाळ् 274

अवर्—वे (मेरे अग्रज); मुऩ्ऩे—पहले; मुऩिवरोटु उटैय—मुनियों के साथ जो रखते हैं; मुतिर् पकै मुऱैमै—वह वैर की रीति; नोक्कार्—नहीं रखेंगे; नी तऩियै आतलाल्—तुम एकाकी हो, इसलिए; अवरोटुम्—उनके साथ; तळुवर्कु—मिलकर रहने के लिए; ऒत्त—अनुकूल; विऩैयम्—उपाय; ईतु अल्लतु इल्लै—इसके सिवा कुछ नहीं है; इऩि—आगे; विण्णुम् निऩ् आट्चि आक्कि—स्वर्ग को तुम्हारे शासन के अधीन बनाकर; अवर् मकिळ्न्तु वन्तु—वे आनन्द के साथ आकर; उऩ् एवलिऩ्—तुम्हारे आदेश की प्रतीक्षा में; निऱ्पर्—रहेंगे; ऎऩ्ऱाळ्—कहा। २७४

हमारा विवाह हो जायगा तो मेरे भाई रावण आदि मुनियों को वैर की दृष्टि से नही देखेंगे। तुम इस जंगल में एकाकी रहते हो और राक्षसों की मैत्री तुम्हारे कुशल के लिए आवश्यक है। उनसे मित्रता के साथ रहने का एक मात्र उपाय यही— हमारा विवाह ही —हो सकता है। कोई दूसरा मार्ग नही। अब वे स्वर्ग को भी तुम्हारे अधीन करके स्वयं तुम्हारे पास सहर्ष आयेंगे और अधीन किंकर रहेंगे। तुम्हारी आज्ञाएँ मन लगा कर मानेंगे। २७४

❀ निरुदर्त मरुळुम् बॆऱ्ऱे निऩ्ऩलम् बॆऱ्ऱे ऩिऩ्ऩो
डीरुवरुम् जॆल्वत् तियाण्डु मुऱैयवुम् बॆऱ्ऱे ऩॊऩ्ऱो
तिरुनहर् तोऱ्ऩ्द पिऩ्ऩर्च्च् चॆय्दवम् बयन्द दॆऩ्ऩा
वरिशिलै वडित्त तोळाऩ् वाळॆयि ऱिलङ्ग नक्काऩ् 275

वरिचिलै वट्टिलुत्त तोळाऩ्–बन्धनयुक्त धनुष चलाने में अभ्यस्त भुजा वाले; निरुतर् तम् अरुळुम् पॅर्ऱेऩ्–राक्षसों का अनुग्रह पा गया; निऩ्ऩ् नलम् पॅर्ऱेऩ्–तुम्हारी कृपा प्राप्त हो गई; याण्टुम्–कभी भी; ऑरुवु अरुम् चॅल्वत्तु–क्षय न होनेवाले धन-वैभव के साथ; निऩ्ऩॊटुम् उऱैयवुम् पॅर्ऱेऩ्–तुम्हारे संग रहना भी प्राप्त हो गया; तिरुनकर् तीर्न्त पिऩ्ऩर्–सुन्दर अयोध्या नगर छोड़ आने के बाद; चॅय् तवम्–मेरे किये हुए तप ने; पयन्तत्तु ऑन्ऱो–क्या एक (पर अनेक) फल प्रदान कर दिया है; ऍन्ऩा–(व्यंग्य से) कहकर; वाळ् ऍयिऱु–उज्ज्वल दाँत; इलङ्क–प्रकट करते हुए; नक्काऩ्–हँसे। २७५

बन्धनयुक्त कठोर धनुष के प्रयोग में अभ्यस्त श्रीराम ने व्यंग्य किया। हा! मेरा अहोभाग्य! राक्षसों का अनुग्रह मिल गया! तुम्हारी कृपा मिल गयी! अक्षय धन-दौलत के साथ तुम्हारी संगति का भी बड़ा भाग्य हाथ आ गया! श्रीनगर अयोध्या छोड़कर आने के बाद मैंने जो तपस्या की थी, उसका फल क्या एक है (अनेक हैं)! यह कहकर श्रीराम सुन्दर दाँतों को प्रकट करते हुए हँसे। २७५

❀ विण्णिडै यिम्बर् नाहर् विरिञ्जने मुदलोर्क् कॅल्लाम्
कण्णिडै यॊळियिऩ् पाङ्गर्क् कडिहमऴ् शालै निऩ्ऱुम्
पॅण्णिडै यरशि तेवर् पॅर्ऱनल् वरत्ताऱ् पिऩ्ऩर्
मण्णिडै मणियिऩ् वन्द वञ्जियै पोलवाळ् वन्दाळ् 276

विण् इटै–व्योम में; इम्पर्–भू पर; नाकर्–नागलोक में; विरिञ्चऩे–विरंचि; मुतलोर्क्कु ऍल्लाम्–आदि सबके लिए; कण् इटै–नेत्रों को; ऑळियिऩ् पाङ्कर्–ज्योतिस्वरूप श्रीराम के पास; पॅण् इटै अरचि–स्त्रियों में रानी; तेवर् पॅर्ऱ नल् वरत्ताल्–देवों के प्राप्त वर से; पिऩ्ऩर्–बाद; मण् इटै–पृथ्वी पर; मणियिऩ् वन्त वञ्चियै पोल्वाळ्–मणि से निकली लता के समान (अवतरित) सीतादेवी; कटि कमऴ् चालै निऩ्ऱुम्–सुगन्धि बिखेरनेवाली पर्णशाखा से; वन्ताळ्–आने लगी। २७६

श्रीराम स्वर्ग, भूलोक और पाताल मे रहनेवाले ब्रह्मा से लेकर सभी जीवों के नेत्रों के ज्योति-स्वरूप थे। उनके पास आने के लिए सीताजी तभी पर्णशाला के बाहर निकली। वे स्त्रियों में रानी थीं। देवों के वर को पूरा करने के लिए भूमि पर अवतरित हुई थीं। वे रत्न-वल्ली के समान सुबास से पूरित पर्णशाला के बाहर प्रकट हुईं। २७६

❀ ऊऩ्शुड वुणङ्गु पेऴ्वा युणर्विलि युरुवि ऩाऱुम्
वाऩ्शुडर्च् चोदि वॅळ्ळम् वन्दिडै वयङ्ग नोक्कि
मीऩ्शुडर् विण्णु मण्णुम् विरिन्द पोररक्क ऱॅऩ्ऩुम्
काऩ्शुड मुळैत्त कर्पिऩ् कऩलियैक् कण्णिऱ् कण्डाळ् 277

ऊऩ्–शरीर को; चुट–काम ने तपाया, उससे; उणङ्कु–मुरझाये रहनेवाली; पेऴ् वाय्–बड़ा मुख वाली; उणर्वु इलि–मतिहीन शूर्पणखा; उरुविऩ्–भगवती के

रूप में; नाऱ्म्–प्रकट हुई; वाऩ् चुटर्–बड़ी कान्तिमय; चोति वॆळ्ळम्–ज्योति-प्रवाह; वन्तु इटै वयङ्क–आकर उनके मध्य प्रकट हुआ तो; नोक्कि–उसको देखकर; मीऩ् चुटर् विण्णुम्–नक्षत्र-ज्योतित आकाश में; मण्णुम्–धरती में; विरिन्त–फैले हुए; पोर् अरक्कर् ऎऩ्ऩुम्–झगड़ालू राक्षस रूपी; काऩ् चुट–जंगल को जलाने; मुळैत्त–उद्भूत; कऱ्पिऩ् कऩलियै–पातिव्रत्य रूपी अग्निशिखा को; कण्णिल् कण्टाळ्–अपनी आँखों से देखा (देखती ऐसा अनुभव किया)। २७७

शूर्पणखा ने, जिसका शरीर कामाग्नि से तप्त होकर मुरझा-सा गया था, जिसका मुख बहुत बड़े बिल के समान था और जो अपनी बुद्धि खो चुकी थी, सीताजी के रूप में उनके मध्य आनेवाली बड़ी कान्तिमय ज्योति के प्रवाह को देखा। वह ऐसी थीं, मानो वह पातिव्रत्य की अग्निशिखा हैं, जो नक्षत्रोज्वल आकाश में और भूमि में फैले रहे राक्षस-कानन को जलाने के लिए उद्भूत हैं। २७७

❀ पण्बुऱ नॆडिदु नोक्किप् पडैक्कुनर् शिऱुमै यल्लाल्
ऍण्बिऱङ् गळहुक् कॆल्लै यिल्लैया मॆऩ्ऱु निऩ्ऱाळ्
कण्बिऱ पॊरुळिऱ् चॆल्ला करुत्तॆऩि ऩः(ह)दे कण्ड
पॆण्बिऱन् दॆऩुक् कॆऩ्ऱा लॆऩ्ऩबडुम् पिऱरुक् कॆऩ्ऱाळ् 278

पण्पु उऱ–खूब आँख लगाकर; नॆटितु नोक्कि–दीर्घकाल तक देखकर; पटैक्कुनर् चिऱुमै अल्लाल्–सृष्टिकर्ता की गलती है, नहीं तो; ऍण् पिऱङ्कु–कल्पना में आनेवाली; अऴकुक्कु ऍल्लै इल्लै आम्–सुन्दरता की सीमा नहीं होता, इस बात को साबित करती हुई; निऩ्ऱाळ्–यह शोभायमान (खड़ी) रहती है; कण् पिऱ पॊरुळिल् चॆल्ला–दृष्टि दूसरे पदार्थ पर नहीं जाती; करुत्तु ऍनिऩ् अ.·.ते–मन भी वही है; कण्ट–इसे जो देखती; पॆण् पिऱन्तेनुक्कु–स्त्री पैदा हुई मेरी स्थिति यह है; ऍऩ्ऱाळ्–तो; पिऱर्क्कु ऍऩ् पटुम्–दूसरे (पुरुषों) की क्या होगी; ऍऩ्ऱाळ्–(आश्चर्य के साथ) कहा। २७८

उसने खूब आँखे फाड़कर बहुत देर तक देखा। उसे एक नया तथ्य सूझा। प्रपंचसृजक ब्रह्मा की ही असमर्थता है कि उसकी सृष्टि में सुन्दरता भी सीमित रहती है। नहीं तो सत्य यह है कि सुन्दरता की कोई सीमा नहीं! यह तथ्य साबित करती हुई सीताजी उनके सामने खड़ी थी। शूर्पणखा ने विस्मय के साथ सोचा कि इस सुन्दरता के खजाने को जो देखता है वह उस पर से आँख नहीं हटा सकता। उसके मन की भी वही हालत होगी। मैं स्त्री हूँ। इसको देखकर मेरी भी यह हालत हो गयी तो अन्य (पुरुष) लोगों की क्या स्थिति होगी ?। २७८

❀ पॊरुदिऱल् ताऩै नोक्किप् पूवैयै नोक्कि निऩ्ऱाळ्
करुदमऱ् ऱिनिवे ऱिल्लै कमलत्तुक् कडवु ळाऩुम्
ऒरुतिऱत् तुणर नोक्कि युरुविनुक् कुलह मूऩ्ऱिल्
इरुतिऱत् तार्क्कुञ जॆय्द वरम्बिव रिरुव रॆऩ्ऱाळ् 279

पौरु तिऱ्ऱुतान्नै–युद्धदक्ष श्रीराम को; नोक्कि–देखकर; पूवैयै नोक्कि–फिर देवी को देखती; निन्ऱाळ्–विस्मित खड़ी (जो) रही; कमलत्तु कटवुळ् तानुम्–कमलासन देवता (ब्रह्मा) भी; ऑरु तिऱत्तु–अपूर्व रीति से; उणर नोक्कि–विवेक से देखकर; उलकम् मून्ऱिऩ्–तीनों लोकों के; इरु तिऱत्तार्क्कुम्–पुरुष-स्त्री दोनों वर्गों के लिए; इवर् इरुवर्–ये दोनों; उरुविऩुक्कु चॅय्त वरम्पु–रूपसौंदर्य की रची सीमाएँ है; मऱ्ऱु करुत–दूसरा सोचने के लिए; इऩि वेऱु इल्लै–अब कुछ नहीं; ऍन्ऱाळ्–धारणा बना ली। २७९

शूर्पणखा ने युद्धसमर्थ श्रीराम को देखा। फिर एक बार सीताजी पर दृष्टि डाली। विस्मयविमूढ़ खड़ी रह गयी। उसने विचार किया कि ब्रह्मा ने खूब सोचकर अच्छी तैयारी के साथ इन दोनों को पुरुष और स्त्री के सौन्दर्य के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप मे सरजा है। तीनों लोकों में पुरुष के सौन्दर्य की सीमा श्रीराम हैं और स्त्री-सौन्दर्य की सीमा यह स्त्री है। उसने दृढ़ धारणा बना ली, इसके सिवा सोचने के लिए गुंजाइश नहीं है। २७९

मरुवॊन्ऱु कून्द लाळै वऩत्तिवऩ् कॊण्डु वाराऩ्
उरुविङ्गि दुडैय राह मऱ्ऱैयोर् यारु मिल्लै
अरविन्द मलरु णीङ्गि यडियिणै पडियिऱ् ऱोयत्
तिरुविङ्गु वरुव दॆन्ऩो वॆन्ऱहन् दिहैत्तु निऩ्ऱाळ् 280

मरु ऑन्ऱु–सुवास-लगे; कून्तलाळै–केश वाली (इस) को; इवऩ् वऩत्तु कॊण्टु वाराऩ्–यह वन में नहीं लायगा; इतु उरुवम् उटैयर् आक–ऐसी रूपवती; मऱ्ऱैयोर् यारुम्–दूसरी कोई; इङ्कु इल्लै–यहाँ नहीं है; तिरु–श्रीलक्ष्मीदेवी; अरविन्त मलर् उळ्–अरविन्द-मध्य वास; नीङ्कि–छोड़कर; अटि इणै–चरणद्वय; पटियिल् तोय–भूमि पर पड़ने देते हुए; इङ्कु वरुवतु–यहाँ आती; ऍन्ऩो–क्योंकर; ऍन्ऱु–यह सोचकर; अकम् तिकैत्तु–मन में चकित होकर; निन्ऱाळ्–खड़ी रही। २८०

उसने तर्क किया कि सुवासित केश वाली इसको यह पुरुष वन में अपने साथ नहीं लाया होगा। इतनी रूपवती स्त्रियाँ कोई अन्य हैं भी नहीं। इसलिए यह श्रीदेवी ही होगी, जो अपना कमल पर वास छोड़कर अपने चरणद्वय को भूमि पर पड़ने देती हुई आयी है। पर उसका इधर आगमन किस हेतु हुआ है ? ऐसा विस्मय करती हुई चकितमन होकर शूर्पणखा खड़ी रही। २८०

❀ पॊन्ऩैप् पोलॊळिरु मेनि पूवैपोल् वण्णत् तानिम्
मिऩ्ऩैप्पो लिडैया ळोडु मेवुम् वेडत्त नल्लन्
तन्ऩैप्पोऱ् ऱहैयो रिल्लात् तळिरैप्पो लडियि नाळुम्
ऍन्ऩैप्पो लिडैये वन्दा ळिहळ्विप्पे ऩिवळे यॆऩ्ऩा 281

पूवै पोल् वण्णत्तान्–अतसी पुष्प का-सा वर्ण-वाला; पॊन्नै पोल् ऑळिरुम्

मेनि–स्वर्ण की-सी कान्ति का शरीर; मिन्नै पोल्–बिजली-सम; इटैयाळोटुम्–कमर वाली के साथ; मेवुम् वेटत्तन् अल्लन्–मिलकर रहे, ऐसे गृहस्थ धर्मोचित वेश का नहीं; तन्नै पोल् तकैयोर् इल्ला–जिसके समान श्रेष्ठ स्त्रियाँ नहीं होतीं (जो अप्रतिम है); तळिरै पोल् अटियित्ताळुम्–जिसके पल्लव के समान चरण हैं; इटैये–(यह) बीच में; ॲन्नै पोल् वन्ताळ्–मेरे समान आई हुई होनी चाहिए; इवळै–इसको; इकळ्विप्पेन्–उपेक्षित करा दूँगी; ॲन्ना–ऐसा निश्चय करके। २८१

अतसी-पुष्प का-सा रंग वाला यह स्वर्ण की-सी चमक वाली और बिजली-सी कमर वाली इसके साथ गृहस्थी चलाता नहीं लगता। इसका वेश गृहस्थी योग्य नहीं है। तपस्वी का वेश है। यह अप्रमेय स्त्री, पल्लव-चरणा नारी मेरे समान बीच में आयी हुई है। हाँ, वही होना चाहिए। अब मैं उसको निन्दित कर उपेक्षित करवा दूँगी। —शूर्पणखा ने यह संकल्प किया। २८१

❀ वरुमिवळ् मायम् वल्लळ् वञ्जनै यरक्कि नॆञ्जम्
तॆरिविल तेरुन् दन्मै शीरियोय् शॆव्वि दन्ड्राल्
उरुविदु मॆय्य दन्ड्रा लूनुहर् वाऴ्क्कै याळै
वॆरुविनॆन् नॆय्दि डामल् विलक्कुदि वीर वॆन्ड्राळ् 282

चीरियोय्–हे अच्छे गुण वाले; वरुम् इवळ्–जो आ रही है, यह; मायम् वल्लळ्–माया में निपुण है; वजचनै अरक्कि–वंचक राक्षसी है; नॆञ्चम् तॆरिवु इल–इसका मन अगम्य है; तेरुम् तन्मै–इसको अच्छा मानना; चॆव्वितु अन्ऱु–ठीक नहीं; उरु इतु मॆय्यतु अन्ऱु–उसका यह रूप भी सच्चा नहीं; ऊन् नुकर् वाऴ्क्कैयाळै–मांसाहारी जीवन वाली इसे; वॆरुविनॆन्–(देखकर) डरती हूँ; ॲय्तिटामल्–पास न आने दो; वीर–हे वीर; विलक्कुति–हटाओ; ॲन्ऱाळ्–कहा। २८२

ऐसा संकल्प करके शूर्पणखा श्रीराम से बोली। हे अच्छे गुण वाले! यह जो आ रही है माया में निपुण है। वंचकी निशाचरी है। इसके मन के भाव गूढ़ हैं और हमारी समझ में नहीं आ सकेंगे। इसको अच्छा मानना भला नहीं होगा। इसका रूप भी सच्चा नहीं है। मांस खाकर जीवन चलानेवाली इसको देखकर मेरे मन में भय पैदा होता है। हे वीर! उसको पास आने मत दो। रोको और भगाओ। २८२

❀ ऒळ्ळिदुन् नुणर्वु मिन्ने युन्नैया रॊळिक्कु मीट्टार्
तॆळ्ळिय नलत्ति नालुन् शिन्दनै तॆरिन्द दम्मा
कळ्ळवल् लरक्कि पोला मिवळुनी काण्डि यॆन्ना
वॆळ्ळिय मुरुवल् मुत्तम् वॆळिप्पड वीर नक्कान् 283

वीरन्–वीर राघव; मिन्ने–विद्युत (-सम स्त्री); उन् उणर्वु ऒळ्ळितु–तुम्हारी समझ बड़ी साफ़ है; उन्नै यार् ऒळिक्कुम् ईट्टार्–तुमसे छिपने की किसके पास शक्ति है; तॆळ्ळिय नलत्तिनाल्–सुलझी हुई शक्ति से; उन् चिन्तनै–तुम्हारी

बुद्धि ने; तॅरिन्ततु–यह बात जान ली; अम्मा–री माँ; इवळुम्–यह भी; कळ्ळ–चोर; वल् अरक्कि–भयंकर राक्षसी; पोल् आम्–होगी, अवश्य; नी काण्टि–तुम देख लो; ॲन्ऩा–कहकर; वॅळ्ळिय मुरुवल् मुत्तम्–श्वेत दन्तमुक्ता; वॅळिप्पट–प्रकट करके; नक्कान्–हँसे। २८३

श्रीवीरराघव ने इसके उत्तर में कहा कि विद्युत के समान लगनेवाली नारी! तुम्हारी सूझ भी बड़ी साफ़ है! कौन तुमसे छिपने-छिपाने की क्षमता रखता है? तुम्हारी बूझ ने अपने सामर्थ्य से सच्चाई जान ली! हा! री मैया! यह अवश्य चोरनी, भयंकर राक्षसी ही होगी शायद! तुम भी देख लो। ऐसा कहकर मोती-समान मनोरम दाँतों को प्रकट करते हुए श्रीराम हँसे। २८३

❀ आयिडै यमुदिन् वन्द वरुन्ददिक् कऱ्पि नञ्जॊल्
वेयिडै तोळि नाळुम् वीरनैच् चेरुम् वेलै
नीयिडै वन्द दॆन्नै निरुदर्तम् बावै यॆन्ऩाक्
कायॆरि यनैय कळ्ळ वुळ्ळत्ताळ् कदित्त लोडुम् 284

अ इटै–उस समय; अमुतिन् वन्त–अमृत के समान आगत; अरुन्तति कऱ्पिन्–अरुन्धती के समान पातिव्रत्य; अम् चॊल्–मधुर बोली; वेय् इटै–बाँस को पीछे करनेवाले (बाँस से भी सुडौल); तोळिनाळुम्–कन्धे, इनसे युक्त सीताजी भी; वीरनै–श्रीवीरराघव के पास; चेरुम् वेलै–आईं तब; काय् ऍरि अनैय–जलती आग के समान; कळ्ळ उळ्ळत्ताळ्–कपट-भरे मन वाली के; निरुतर् तम् पावै–हे राक्षसी स्त्री; इटै नी वन्ततु–बीच में तुम्हारा आना; ॲन्ऩै–कैसा; ॲन्ऩा–कहकर; कतित्तलोटुम्–कोप के साथ बढ़ने पर। २८४

तब तक सुधा-सम वहाँ जो आयीं, वे अरुन्धती-सी पतिव्रता, मधुर-वाणी और बाँस के समान कंधों वाली सीताजी श्रीराम के पास आ गयीं। झट जलती आग के समान वंचना मन में रखनेवाली शूर्पणखा ने ताड़ना दी कि राक्षस-कुमारी! तुम हमारे बीच में कैसी आयीं? यह कहकर वह कोप के साथ श्रीसीता की तरफ़ बढने लगी। २८४

❀ अञ्जिनळ् वञ्जि यन्न मिन्निडै यलश वोडिप्
पञ्जिन्मॆल् लडिह णोवप् पदैत्तनळ् परुवक् काल
मञ्जिडै वयङ्गित् तोन्ऱुम् पवळत्तिन् वल्लि येपोऱ्
कुञ्जर मनैय वीरन् कुववुत्तो डळुविक् कॊण्डाळ् 285

अञ्चिनळ्–भयभीत (सीताजी); मिन् इटै–बिजली-सी कमर को; वञ्चि अन्न–लता के समान; अलच–बल खाने देती हुई; ओटि–दौड़कर; पञ्चिन् मॆल् अटिकळ्–रुई-समान चरणों को; नोव–कष्ट देते हुए; पतैत्तनळ्–सिहरकर; परुव काल मञ्चु इटै–वर्षाकालीन मेघ के बीच; वयङ्कि तोन्ऱुम्–साफ़ दिखनेवाली; पवळत्तिन् वल्लिये पोल्–प्रवाल-लता ही के समान; कुञ्चरम् अनैय वीरन्–कुंजर-

सम वीर श्रीराम के; कुववु तोळ्-पुष्ट और उन्नत कन्धों से; तऴुवि कॉण्टाळ्-लिपट गईं । २८५

शूर्पणखा को अपने पास आते देखकर श्री सीताजी भयभीत हो गयीं । अपनी बिजली-सी कमर को लता के समान लचकाती हुई दौड़ीं । रुई-समान पैरों को दुख देती हुई हड़बड़ाहट के साथ वह दौड़ी और कुंजर-सम श्रीराम के सबल और पुष्ट कंधों से ऐसे लग गयीं जैसे वर्षाकालीन मेघ के मध्य प्रवाललता लग गयी हो । २८५

❀ वळैयॅयिऱ् ऱवर्ह ळोडु वरुम्विळै याट्टॅन् ऱालुम्
विळैवन तीमै येया मॅन्पदै युणर्न्दु वीरन्
उळैवन वियऱ्ऱ लॉल्लै युन्निलै युणरु मायिन्
इळैयवन् मुनियु नङ्गै येहुदि विरैवि नॅन्ऱान् 286

वळै ऍयिऱ्ऱु-वक्रदाँत वाले; अवर्कळोटुम्-उन (राक्षसों) के साथ; वरुम् विळैयाट्टु ऍन्ऱालुम्-होनेवाले खेल भी हों; विळैवन तीमैये आम्-फल बुरे ही होंगे; ऍन्पतै उणर्न्तु-यह महसूस कर; वीरन्-श्रीवीरराघव; नङ्कै-नारी; उळैवन इयऱ्ऱल्-मन को संकट देनेवाले काम न करो; इळैयवन्-मेरा अनुज; उन् निलै उणरुम् आयिन्-तुम्हारी बात जान लेगा तो; ऑल्लै मुनियुम्-तुरन्त तुमसे कुपित हो जायगा; विरैविन् एकुति-शीघ्र चली जाओ; ऍन्ऱान्-कहा । २८६

अब श्रीराम महसूस करने लग गये कि वक्रदन्त राक्षसों के साथ विनोद भी अनर्थकारी है । वीर श्रीराम ने शूर्पणखा से कहा कि नारी ! तुम ऐसा काम मत करो, जिससे मन को क्लेश पहुँचे । मेरा छोटा भाई तुम्हारी स्थिति जानेगा तो तुरन्त कुपित हो जायगा । तुम शीघ्र यहाँ से चली जाओ । २८६

पॊऱ्पुडै यरक्कि पूविऱ् पुनलिनिऱ् पॊरुप्पिल् वाऴुम्
अऱ्पुडै युळ्ळत् तारु मनङ्गनु ममरर् मऱ्ऱुम्
ऍऱ्पॆऱत् तवञ्जॅय् हिन्ऱा रॅन्नैनी यिहऴ्व दॅन्ने
नऱ्पॊऱै नॅञ्जि लिल्लाक् कळ्वियै नच्चि यॅन्ऱाळ् 287

पॊऱ्पुटै अरक्कि-सुन्दर वेश में जो रही, उस राक्षसी ने; पूविल्-(कमल) पुष्प पर; पुनलिल्-(क्षीरसागर के) पथ पर; पॊरुप्पिल्-(कैलास) पर्वत पर; वाऴुम्-वास करनेवाले; अऱ्पु उटै उळ्ळत्तारुम्-प्रेम-मन के (तीनों देवता) और; अनङ्कनुम्-मन्मथ और; मऱ्ऱुम् अमरर्-अन्य देवता लोग; ऍन् पॆऱ-मुझे पाने के लिए; तवम् चॅय्किन्ऱार्-तपस्या करते हैं; नल् पॊऱै-श्रेष्ठ क्षमा नामक गुण; नॅञ्चिल् इल्ला-जिसके मन में नहीं है, उस; कळ्वियै-चोरनी को; नच्चि-चाहकर; ऍन्नै नी इकऴ्वतु-मेरी तुम्हारा उपेक्षा करना; ऍन्नै-क्यों; ऍन्ऱाळ्-पूछा । २८७

शूर्पणखा जानेवाली नहीं थी । मायारूपिणी उसने श्रीराम से

कहा— कमलपुष्प पर रहनेवाले ब्रह्मा, क्षीरसागरवासी विष्णु, कैलासपर्वत-पति शिव, अनंग और अन्य देवता लोग मुझ पर प्रेम रखते है और मुझे प्राप्त करने हेतु तपस्या कर रहे हैं, बात ऐसी है तब तुम असह्यशीला इस नारी को चाहकर मेरी उपेक्षा करते हो ! इसका कारण क्या है ? —शूर्पणखा ने पूछा । २८७

❀ तन्नॊडुन् दॊडर्वि लादे मॆन्नवुन् दविरा डानिक्
कन्तॆडु मनत्ति शॊल्लुङ् गळ्ळवा शहङ्ग ळॆन्ना
मिन्नॊडु तॊडर्न्दु शॆल्लु मेहम्बोल् मिदिलै वेन्दन्
पॊन्नॊडुम् बुनिदन् बोयप् पूम्बॊळिर् चालै पुक्कान् 288

इ कल् नॆट्टुम् मनत्ति तन्नॊटु–इस पत्थर-सम मन वाली के साथ; तॊटर्वु इलातेम्–हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है; ऎन्नवुम्–कहने पर भी; तविराळ्–यहाँ से नहीं हटती; चॊल्लुम्–इसके वचन भी; कळ्ळ वाचकङ्कळ्—वंचना-भरे वचन हैं; ऎन्ना–यह सोचकर; पुनितन्–पवित्र श्रीराम; मिन् ओटुम्–बिजली के साथ; तॊटर्न्तु चॆल्लुम्–लगे जानेवाले; ऒरु मेकम् पोल–मेघ के समान; मितिलै वेन्तन् पॊन् ऒटुम्–मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ; पोय्–वहाँ से जाकर; अ पूम् पॊळिल्–उस उपवन में रहनेवाली; चालै–पर्णशाला में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। २८८

श्रीराम ने निश्चय कर लिया कि यह पत्थर-सम मन वाली है। इस कठोरमन स्त्री से हमने कह दिया कि हमारा-तुम्हारा रिश्ता कुछ नहीं हो सकता। तो भी वह हटती नहीं। इसके कथन भी कपट के वचन लगते हैं। यह सोचकर पवित्रचरित्र श्रीराम मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ जाकर उस उपवन में रही अपनी पर्णशाला में घुस गये। सीताजी जब उनके पीछे गयीं, तब ऐसा लगा कि मेघ के पीछे बिजली जा रही हो। २८८

❀ पुक्कपिन् बोन्न दॆन्नु मुणर्विनळ् पॊरैयि नीङ्गि
उक्कदा मुयिर ळॊन्रु मुयिर्त्तिल ळॊडुङ्गि निन्राळ्
तक्किलन् मनत्तुळ् यादुन् दळुविलन् शलमुङ् गॊण्डान्
मैक्करुङ् गुळलि नाण्माट् टन्बिनिल् वलिय नॆन्राळ् 289

पुक्क पिन्–उनके पर्णशाला में प्रविष्ट होने के बाद; पोन्तु ऎन्नुम् उणर्वितळ्–बेसुध-सी; पॊरैयिन् नीङ्कि–शरीर से छूटकर; उक्कतु आम् उयिरळ्–ध्वस्त हुए हों, ऐसे प्राणों वाली होकर; ऒन्रुम् उयिर्त्तलळ्–साँस ही नहीं छोड़ी; ऒटुङ्कि निन्राळ्–सन्न खड़ी रही; तक्किलन्–मेरे योग्य नहीं; मनत्तुळ् यातुम् तळुविलन्–मन में कोई लगाव पैदा नहीं हुआ है; चलमुम् कॊण्टान्–कोप भी करता है; मै करुम् कुळलिनाळ् माट्टु—अंजन-सम काला केश वाली के साथ; अन्पिनिल् वलियन्–प्रेम में दृढ़ है; ऎन्राळ्–अपने आप से कहा। २८९

उनके पर्णशाला में प्रवेश के बाद शूर्पणखा की दशा बहुत बिगड़

गयी। सुधि खोकर वह क्षीण-प्राणा-सी रह गयी। साँस भी नहीं छोड़ती थी। सन्न खड़ी रही। फिर उसने आप ही आप कहा कि यह मेरे योग्य नहीं लगता। अपने मन में किंचित भी स्नेह का भाव नहीं लाता। वही नहीं, मेरे प्रति कुपित भी है। उसका इस अंजन-सम काले केश वाली स्त्री पर प्रेम दृढ़ है। २८९

❀ निन्ऱिल ळवत्तैच् चेरु नॆऱियिनै निऩैन्दु पोऩाळ्
इन्ऱिव ऩाहम् बुल्ले नॆनिलुयि रिऴप्पे ऩॆन्नाप्
पॊन्ऱिणि शारऱ् चीदप् पळिक्करैप् पॊदुम्बरप् पुक्काळ्
शॆन्ऱदु परिदि मेल्पाऱ् चॆक्कर्वन् दिऱुत्त दन्ऱे 290

निन्ऱिलळ्-(शूर्पणखा) खड़ी नहीं रही; अवत्तै-उसको; चेरुम् नॆऱियित्तै-प्राप्त करने का उपाय; निऩैन्तु-सोचते हुए; पोऩाळ्-गई; इन्ऱु-आज; इवऩ् आकम् पुल्लेऩ्-इसके वक्ष को आलिंगन नहीं करूँगी; ऎऩिल्-तो; उयिर् इऴप्पॆऩ्-प्राण छोड़ दूँगी; ऎऩ्ऩा-ऐसा सोचकर; पॊऩ् तिणि-स्वर्णमिश्रित; चारल्-एक तराई में; चीत पळिक्कु अऱै-शीतल स्फटिक-चट्टान सहित रहनेवाले; पॊतुम्पर्-उद्यान में; पुक्काळ्-घुसी; परिति मेल्पाल् चॆऩ्ऱतु-सूर्य पश्चिम दिशा में (अस्त हो) चला; चॆक्कर् वन्तु इऱुत्ततु-लालिमा आ फैली। २९०

फिर वह वहाँ खड़ी नहीं रही। उसका मन श्रीराम को भूल नहीं सका। उनसे मिलने का उपाय सोचने लगी। 'अगर मैं इसके वक्ष का आलिंगन नहीं करूँगी तो मैं प्राण त्याग दूँगी।' —यह संकल्प करती हुई वह एक उपवन मे गयी, जो तराई में था, और जिसमें शीतल स्फटिक-चट्टान थी। तब तक सूर्य पश्चिम में अस्त हो गया और गगन में लाली फैल गयी। २९०

❀ अऴिन्द शिन्दैय ळाययर् वाळ्वयिन्
मॊऴिन्द कामक् कडुङ्गनन् मूण्डदाल्
वऴिन्द नाहत्तिन् वन्ऱॊळै वाळॆयिऱ्
ऱिऴिन्द कार्विड मेऱिय दॆन्नवे 291

वऴिन्त-छलककर; नाकत्तिऩ्-सर्प के; वऩ्-दृढ़; तॊळै-रंध्रसहित; वाळ्-उज्ज्वल; ऎयिऱु-विषदाँत का; इऴिन्त कार् विटम्-बाहर आया विष; एऱियतु ऎऩ्ऩ-सिर पर चढ़ गया, जैसे; अऴिन्त चिन्तैयळाय्-संज्ञाशून्य होकर; अयर्वाळ् वयित्-शिथिल रहनेवाली शूर्पणखा के अन्दर; मॊऴिन्त-पूर्वोक्त; काम कटुम् कऩल्-काम की भयंकर अग्नि; मूण्टतु-उद्दीप्त हुई। २९१

शूर्पणखा की स्थिति बहुत बुरी हो गयी। किसी सर्प के रंध्रसहित दृढ़ दाँत द्वारा निकले विष का असर सिर पर चढ़ गया हो, ऐसा वह स्वस्थता खोकर श्रांत हो गयी। पूर्वोक्त काम का कठोर ज्वर उसके शरीर को ताप देने लगा। २९१

❀ ताड हैक्कोंडि याडड मार्बिडै, आड वर्क्कर शन्नयि लम्बुपोल्
पाड वत्तोंळिन् मन्मदन् वाय्कणै, ओड वुट्कि युयिरुळैन् दाळरो 292

तादकै कोंटियाळ्–ताड़का, क्रूरी; तट मार्पु इटै–के विशाल वक्ष के मध्य; आटवर्क्कु अरचन्–पुरुषों में राजा श्रीराम के; अयिल् अम्पु पोल्–तीक्ष्ण शर जैसे; पाटवम् तोंळिल् मन्मतन्–कार्य-पटु मन्मथ के; पाय् कणै–प्रेषित शर; ओट–निफर गए तो; उट्कि–सिहरकर; उयिर् उळैन्ताळ्–प्राणविह्वल हुई। २९२

मन्मथ कार्यपटु था। उसका प्रेषित शर इसकी छाती को ऐसा निफर गया, जैसे पुरुषोत्तम श्रीराम का तीक्ष्ण शर क्रूरी ताड़का के वक्ष को वेधकर चला गया था। शूर्पणखा सिहर उठी और वह मर्मान्तिक पीड़ा का अनुभव करने लगी। २९२

❀ कलैयु वामदि येकऱि याहवन्, शिलैय मारनैत् तिन्नु निनैप्पिनाळ्
मलैय मारुद मानॆडुङ् गालवेल्, उलैय मार्बिडै यून्ऱिड वोयुमाल् 293

कलै उवा मतियै–कलाओं से पूर्ण चन्द्र को ही; कऱि आक–व्यंजन बनाकर; वन् चिलैय मारनै–कठोर धनुर्धर मारदेव को; तिन्नुम् निनैप्पिनाळ्–खाने का विचार किया; मलय मारुतम् आम्–मलयमारुत रूपी; नॆटुम् काल वेल्–दीर्घ यम-शूल; उलैय्–सालते हुए; मार्पु इटै ऊन्ऱिट–छाती पर घुसा तो; ओयुम्–श्रान्त खो गई। २९३

वह सोचती कि मैं पूर्णचन्द्र को व्यंजन बनाकर कठोर धनुर्धर कामदेव को ही भक्षण कर लूँ। पर मलयपवन रूपी सशक्त शक्ति के उसके वक्ष पर गड़ने से वह निर्बल रह जाती। २९३

❀ अलैक्कु माळि यडङ्गिड वङ्गैयाल्
मलैक्कु लङ्गळिऱ् ऱूर्क्कु मनत्तिनाळ्
निलैक्कुम् वानि नॆडुमदि नीणिला
वलैक्कु नीङ्गु मिडुक्किलण् मानुवाळ् 294

अलैक्कुम्–उसको सालनेवाले; आऴि–समुद्र को; अटङ्किट–चुप कराने के लिए; अम् कैयाल्–अपनी हथेली से; मलै कुलङ्कळिन्–गिरियों की राशि उखाड़कर उनसे; तूर्क्कुम् मनत्तिनाळ्–पाटने का संकल्प किया; वानिल् निलैक्कुम् नॆटु मति–आकाश मे स्थिर रहे चन्द्र को; नीळ् निला वलैक्कु–विस्तृत चाँदनी के जाल से; नीङ्कुम्–बच जाने को; मिटुक्कु इलळ्–शक्ति नहीं रखती थी; मानुवाळ्–क्षोभ करती। २९४

समुद्र-गर्जन उसे सालने लगा। उसने सोचा कि अपने हाथों से गिरिराशियों को उखाड़कर समुद्र में डालूँ और उसे पाट दूँ। पर आकाश में निरन्तर (चलते) रहनेवाले चन्द्र की किरणों के जाल से बच निकलने की शक्ति उसमें नहीं थी। इसलिए विक्षुब्ध हो जाती। २९४

❀ पूवॅ लाम्वॊडि याहविप् पूमियिल्, कावॅ लामॊडिप् पेॅन्नक् कानुदुवाळ्
शेव लोडुइ शॅन्दलै यन्ट्रिलिन्, नावि नाल्वलि यॅञ्ज नडुङ्गुवाळ् 295

पू ॲलाम् पॊटियाक–सारे पुष्पों को चूर्ण बनाते हुए; इ पूमियिल्–इस पृथ्वी पर रहनेवाले; का ॲलाम्–उद्यान सब; ऑटिप्पेन् ॲन्न–तोड़-फोड़ दूंगी, ऐसा; कानुतुवाळ्–कोप करती; चेवलोटु उड़ै–नर (क्रौंच) के साथ रहनेवाली; चॅम् तलै अन्ट्रिलिन्–लाल सिर की मादा क्रौंच पक्षी के; नाविन्नाल्–(मिलन-सुख-सूचक) बोली से; वलि ॲञ्च–अपनी शक्ति खोकर; नटुङ्कुवाळ्–काँप उठती । २६५

कभी वह सोचती कि सारे उद्यानों को तहस-नहस कर डालूं ताकि सभी पुष्प चूर्ण-चूर्ण हो जायँ। पर अपने नर के साथ रहती हुई मादा क्रौंच अपने सुख-संभोग से उत्पन्न आनन्द का नाद करती तो उससे इसका बल छूट जाता और वह काँप उठती। २९५

अणॅवि ड्रिङ्गळै नुङ्ग वराविनैक्, कॊणर्वॅ न्नोडि यॅन्नक्कॊदित् तुन्नुवाळ्
पणैयिन् मॅन्मुलै मेऱ्पत्ति मारुदम्, पुणर वारुयिर् वॅन्दु पुळुङ्गुमाल् 296

अणैवु इल् तिङ्कळै–प्रतिकूल चाँद को; नुङ्क–निगलने के लिए; अरावित्तै–(राहु या केतु) सर्प को; ओटि कॊणर्वॅन्–दौड़ जाकर लाऊँगा; ॲन्न–ऐसा; कॊतित्तु–खौल उठती; उन्नुवाळ्–सोचती; पणैयिन् मॅन् मुलै मेल्–पीन और नरम स्तनों पर; पनि मारुतम् पुणर–शीतल पवन के लगने से; आरुयिर् वॅन्तु–मर्मतप्त होकर; पुळुङ्कुम्–ताप से पीड़ित होती। २६६

वह कभी संकल्प करती कि यह चन्द्र मेरे अनुकूल नही है। उसे (राहु या केतु) सर्प द्वारा निगलवा लूंगी। बड़े क्रोध के साथ उसको पकड़ लाने की बात सोचती। पर उसके पीन और कोमल स्तनों पर शीतल पवन आकर लगता और उत्तेजित कामवासना से तप्त होकर थक जाती। उसके प्राण जर्जर हो जाते और वह वेदना का अनुभव करती। २९६

❀ कैह ळाऱ्ऱन्न कदिरिळङ् गॊङ्गै मेल्, ऐय तण्वनि यळ्ळिन ळप्पिनाळ्
मॊय्हॊ डोयिडै वॅन्दु मुरुङ्गिय, वॅय्य पाऱैयिल् वॅण्णॅय् निहर्क्कुमाल् 297

तन्न कतिर् इळम् कॊङ्कै मेल्–अपने छटामय तरुण उरोजों पर; कैकळाल्–अपने हाथों से; ऐय तण् पनि–छोटे शीतल हिमखण्डों को; अळ्ळित्तळ् अप्पिनाळ्–उठाकर (शूर्पणखा ने) लगा लिया; ती इटै–अग्नि में; वॅन्तु मुरुङ्किय–तपकर गरम बनी; वॅय्य पाऱैयिल्–उष्ण चट्टान पर (रखे); वॅण्णॅय् निकर्क्कुम्–मक्खन के समान (वाष्प) बना। २६७

उसने अपना ज्वर शान्त करने की इच्छा से शीतल हिमकणों को लेकर अपने मनोरम तरुण स्तनों पर डाल लिया। पर वे इस तरह अदृश्य हो गये, जैसे आग से तप्त गरम चट्टान पर डाला गया मक्खन पिघलकर लुप्त हो जाता है। २९७

❀ अळिक्कु मॅय्युयिर् कान्दळ् लञ्जिनळ्
कुळिक्कु नीरुङ् गॉदित्तॆळक् कूशुमाल्
विळिक्कुम् वेलैये वॆंङ्गण नङ्गनै
ऑळिक्क लामिड मामॆन वुन्नुमाल् 298

अळिक्कुम्–संरक्षणीय; मॅय्–शरीर को और; उयिर्–प्राणों को; कान्तु–जलानेवाली; अळल्–कामाग्नि से; अञ्चिनळ्–डरकर; कुळिक्क–नहायी; नीरुम्–वह जल भी; कॉतित्तु ॲळ–खौल उठा; कूचुम्–नहाने से सकुचाती; विळिक्कुम् वेलैयै–निनादी समुद्र को; वॅम् कण् अनङ्कनै–भयंकर मन्मथ को; ऑळिक्कल् आम् इटम्–छिपाये रखनेवाला स्थान; आम् अन उन्नुवाळ्–होगा, ऐसा सोचती। २६८

वह अपने शरीर और प्राणों की रक्षा करना चाहती थी। पर उसकी कामेच्छा उनका शत्रु बनी थी। उस आग को शान्त करने की इच्छा से वह स्नान करने चली तो जल ही गरम हो गया। तो बेचारी नहाने से कतराती। वह गरजनेवाले सागर को कठोरमन मन्मथ का छिपकर रहने का स्थान मानती। २९८

❀ वन्दु कार्मळै तोन्ऱिनु मामणिक्, कन्दु काणिनुङ् गैत्तलङ् गूप्पुमाल्
इन्दु कान्दत्ति नीर नॆडुङ्गलुम्, वॆन्दु कान्द वेदुम्बुरु मेनियाळ् 299

इन्तु कान्तत्तिन्–चन्द्रकान्त के; ईर नॆटुम् कलुम्–शीतल और विशाल पत्थर को भी; वॆन्तु कान्त–जलाकर भस्म करे, ऐसे; वॆतुम्पु उरु मेनियाळ्–तापशील शरीर वाली; कार् मळै वन्तु तोन्ऱिनुम्–काला मेघ आकर दिखे तो भी; मा मणि कन्तु काणिनुम्–श्रेष्ठ रत्नस्तम्भ को देखे, तब भी; कै तलम् कूप्पुम्–करतल जोड़ती। २६६

उसका शरीर इतना जलता था कि चन्द्रकान्त का बड़ा पत्थर भी उससे लगे तो जलकर राख बन जाय! ऐसी कामाग्नि से दग्ध शरीर वाली वह काले मेघ को या रत्न-स्तम्भ को देखती तो हाथ जोड़कर नमस्कार करती (श्रीराम के रंग-साम्य के कारण)। २९९

वाम मामदि युम्बन्ति वाडैयुम्, काम नुन्दनैक् कण्डुण रावहै
नाम वाळॆयिऱ् ऱोरुहद नाहमाय्च्, चेम माल्वरै यित्मुळैच् चेरुमाल् 300

वाम मा मतियुम्–सुन्दर पूर्णचन्द्र और; पनि वाटैयुम्–शीतल पवन; कामतुम्–कामदेव; तनै कण्टु उणरा वकै–अपने को देख न पाये, इस तरह; नाम वाळ् ॲयिऱ्ऱु ऑरु कत नाकम् आय्–भयंकर दाँत वाला कुपित सर्प बनकर; चेम माल् वरैयिन्–सुरक्षित एक बड़े पर्वत की; मुळै–गुफा में; चेरुम्–जा पहुँचती। ३००

वह सुन्दर पूर्ण-चन्द्र, शीतल (उदीची) हवा और कामदेव से डरती थी। वह चाहती थी कि वे उसे देख न" ले। इसलिए वह एक भयंकर तीक्ष्ण दाँतों का सर्प बनकर सुरक्षित एक पर्वत की गुफा में जाकर छिप

गयी। क्यों ? नाग चन्द्र को ग्रसनेवाला है और हवा को खानेवाला। वह शिवजी का अलंकार था और मन्मथ शिवजी से डरता था। इसलिए शूर्पणखा सर्प बनकर छिप गयी। ३००

अन्न कालै यळऩ्मिहुत् तेऱवुम्, मुन्न मेनिय ळाय्मुलै वॅन्दुह
इन्न वार्शॅय्वॅ नॅन्ऱऱि यादिळम्, पॊन्निन् वार्दळि रिऱ्पुरण् डाळरो 301

अन्न कालै–तब; अऴल् मिकुत्तु एऱवुम्–कामाग्नि चढ़ी; मुन्न मेत्तियळाय्–पहले का रूप लेकर; मुलै वॅन्तु उक–स्तनों से अंगारे निकालते हुए; इन्नवा चॅय्वॅन्–किस प्रकार क्या करूँ; ऍन्ऱु अऱियातु–यह न जानकर; पॊन्निन् वार् इळम् तळिरिल्–स्वर्ण के रंग वाले पल्लवों पर; पुरण्टाळ्–लेटकर लोटी। ३०१

पर वहाँ भी गरमी बढ़ी तो उसने अपना सर्प-रूप छोड़ दिया। अपना निजी रूप लिया। उसके स्तन इतने तपने लगे कि उनसे आग-सी निकली। क्या करें, कैसे करे ? किंकर्तव्यमूढ़ होकर वह स्वर्णवर्ण पल्लवों पर गिरकर लोटने लगी। ३०१

❀ वीरन् मेनि वॅळिप्पड वॅय्दवन्, कार्हॊण् मेनियैक् कण्डन्न ळामॅनच्
चोरुम् वॅळ्हुन् दुणुक्कॅनु मव्वुरुप्, पेरुङ् गालप् पिणियिऱै पेर्हलाळ् 302

वीरन् मेत्ति वॅळिप्पट–तब वीर श्रीराम का (भ्रान्ति का) रूप उसे दिखाई दिया; वॅय्तु–चाव के साथ; अवन् कार्कॊळ् मेत्तियै–उनके मेघ-सम शरीर को; कण्टनळ् आम् ऍन–सचमुच देख लिया हो जैसे; चोरुम्–शिथिल हो जाती; वॅळ्कुम्–लजाती; तुणक्कु ऍनुम्–दलक जाती; अ उरु–वह (कल्पित) रूप; पेरुम् काल्–जब अदृश्य हो जाता, तब; अ पिणि–उस काम-रोग से; इऱै पेर्कलाळ्–जरा भी छूट नहीं थी। ३०२

तब उसे श्रीराम का भ्रान्ति का रूप शून्य में दिखाई दिया। उस मन में प्रेम उमड़ आया। मेघश्याम को प्रत्यक्ष देखती हो, ऐसा भ्रम गया। वह शिथिल हुई, लाज से भरी; फिर सिहर उठी। वह ओझल हो गया तो उसने अनुभव किया कि उसका रोग ज्यों का त्यों और वह उससे थोड़ा भी छूट नहीं पायी है। ३०२

❀ आहक् कॊङ्गैयि नैयनॅन् ऱञ्जन, मेहत् तैत्तळु वुम्मवै वॅन्दन
पोहक् कण्डु पुलम्बुमप् पुन्मैयाळ्, मोहत् तुक्कॊर् मुडिवुमुण् डाङ्गॊलो

अञ्चन मेकत्तै–कजरारे (काले) मेघ को; ऐयन् ऍन्ऱु–प्रभु श्रीराम .. आक कॊङ्कैयिन्–वक्ष के स्तनों के साथ; तऴुवुम्–लगा लेती; अवै वॅन्तन–वे पोक–मिट जाते; कण्टु–देखकर; पुलम्पुम्–विलाप करती; अ पुन्मैयाळ् मे उस ओछी स्त्री के काम का; ओर् मुटिवु उण्टाम् कॊलो–अन्त भी है क्या। ३

वह काले मेघों को प्रभु, कान्त श्रीराम समझकर अपने स्तनों पर लगाकर कसकर पकड़ती। पर काले मेघ गरमी के

बाष्प बनकर मिट जाते। तब वह मुख खोलकर विलाप करती, नीच शूर्पणखा के मोह का कोई अन्त है ? । ३०३

❀ ऊऴि वॅङ्गन्न लुड्ऱन्न ळॊत्तुमव्, वेऴै यावि यिऴन्दिलळ् शॅङ्गैयिन्
आऴि यानै यडैन्दवळ् पिन्नरुम्, वाऴला मॅनु माशै मरुन्दिन्ने 304

ऊऴि वॅम् कनल् उड्ऱनळ् ऑत्तुम्–युगान्त की अग्नि में पड़ गई हो ऐसा हो गई, तो भी; चॅम् कैयिन्–लाल (श्रेष्ठ) हाथों वाले; आऴियान् अटैन्तु–(आज्ञा) चक्रधारी श्रीराम को प्राप्त करके; अवळ्–वह; पिन्नरुम् वाऴलाम्–फिर भी जी सकेगी; ऍन्नुम् आचै मरुन्तिन्–ऐसी आशा रूपी दवा के कारण; एऴै–उस अबोध ने; आवि इऴन्तिलळ्–प्राण नहीं त्यागे । ३०४

उस काममोह के कारण उसकी स्थिति युगान्त के अनल-प्रवाह में पड़ी हुई सी हो गयी। तो भी आशा बँधी थी कि लाल (मनोरम) हाथों वाले श्रीराम से मिलन होगा और वह मिलकर जिएगी। वही आशा दवा बनी और उसी से उसके प्राण बचे रहे । ३०४

वञ्ज नैक्कॊडु मायै वळर्क्कुमॅन्, नॅञ्जु पुक्कॅन्न दावत्तै नीक्कॅनुम्
अञ्ज नक्किरि येयरु ळायॅनुम्, नञ्जु नक्किनर् पोल नडुङ्गुवाळ् 305

नञ्चु नक्किनर् पोल–जिसने विष चाट लिया हो, उसके समान; नटुङ्कुवाळ्–काँपती (हुई); अञ्चन किरिये–अंजनगिरि (-सम राम); अरुळाय् ऍन्नुम्–कृपा करो, कहती; वञ्चनै–वंचना और; कॊटु मायै वळर्क्कुम्–क्रूर माया को पालनेवाले; ऍन् नॅञ्चु पुक्कु–मेरे मन में प्रवेश करके; ऍन्नतु आवत्तै नीक्कु–मेरी विपदा दूर करो; ऍन्नुम्–कहती । ३०५

विष को जो चाट चुका हो, उसके समान उसका शरीर काँपने लगा। वह मन में श्रीराम से प्रार्थना करने लगी कि हे अंजनपर्वत ! मुझ पर कृपा करो। वह यह भी कहती कि मेरा मन कपटी है और माया को पालनेवाला है। उसमें तुम घुस जाओ और मुझे आफ़त से बचाओ । ३०५

❀ कावि योहय लोवॅन्नुङ् गण्णिणैत्, तेवि योतिरु मङ्गैयिर् चॅव्वियाळ्
पावि येन्नैयुम् पार्क्कुङ्गॊ लोवॅनुम्, आवि योयिनु माशैयि नोय्विलाळ् 306

आवि ओयित्तुम्–प्राण छूट जायँ, तो भी; आचैयिन् ओय्वु इलाळ्–जिसका राग नहीं थमता, वह; कावियो–नीला पुष्प है; कयलो–या 'कयल' मछली है; ऍन्नुम्–ऐसा कहलानेवाली; कण् इणै–आँखों का जोड़ा; तेवियो–जिसका है वह (उसकी) देवी तो; तिरुमङ्कैयिल् चॅव्वियाळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी से भी सुन्दर है; पावियेन्नैयुम्–मुझ पापिनी पर; पार्क्कुम् कॊलो–दृष्टि लगाएगा क्या; ऍन्नुम्–(यह नैराश्य वचन) कहती । ३०६

चाहे उसके प्राण ही क्यों न छोड़ जायँ, वह तो श्रीराम पर काम को छोड़नेवाली नहीं थी। उसे सीतादेवी का स्मरण आया। 'नीलोत्पल

है या कयल नाम की मछली ? ऐसा सन्देह उत्पन्न करनेवाली आँखों के जोड़े से युक्त उसकी पत्नी श्रीलक्ष्मीदेवी से भी बढ़कर सुन्दरी है। वह क्या मेरी ओर आँख उठाकर भी देखेगा ?' ऐसा प्रश्न करके वह दुखी हुई। ३०६

❀ आऩ्ऱ काद लः(ह्)दुऱ वॆय्दुऴि, मूऩ्ऱु लोहमु मूडु मरक्कराम्
एऩ्ऱ कारिरु णीक्क विराहवऩ्, तोऩ्ऱि नाऩॆऩ वॆय्यवऩ् ऱोऩ्ऱिऩाऩ् 307

आऩ्ऱ कातल् अ:.तु–गहरे काम-रोग से; उऱ ऎय्तुऴि–खूब पीड़ित होकर जब रही; मूऩ्ऱु लोकमुम् मूटुम्–(स्वर्ग-मध्य-पाताल) तीनों लोकों को आच्छादित कर जो रहे; अरक्कर् आम्–उन राक्षस रूपी; एऩ्ऱ कार् इरुळ्–अन्धकार को, जो सामने आया था; नीक्क–दूर करने के लिए; इराकवऩ् तोऩ्ऱिऩाऩ् ऎऩ–श्रीराघव आये, ऐसा; वॆय्यवऩ् तोऩ्ऱिऩाऩ्–उष्णकिरण (सूर्य) उदित हुए। ३०७

रात भर वह इसी तरह काम के बढ़ने से उद्विग्न रही। तब सूर्य अन्धकार को दूर करते हुए उदित हुए, जैसे श्रीराघव तीनों लोकों पर छाये रहे राक्षस रूपी अन्धकार को मिटाने के लिए अवतार ले आये। ३०७

❀ विडियल् काण्डलु माण्डुलत्तऩ् नुयिर्हण्ड वॆय्याळ्
पडियि लाण्मरुङ् गुळ्ळॆऩि लॆऩ्ऩैयवऩ् बाराऩ्
कडिदि नोडिऩ्ऩे ऩॆडुत्तोल्लॆक् करन्दवळ् कादल्
वडिवि ऩाऩुडऩ् वाऴ्वदे मदियॆऩ मदिया 308

विटियल् काण्टलुम्–सवेरा होते ही; आण्टु तऩ् उयिर् कण्ट–तब अपनी प्राणता को प्राप्त कर; वॆय्याळ्–नृशंस निशाचरी; पटि इलाळ्–उपमा-हीन देवी; मरुङ्कु उळळ् ऎऩिल्–पास रही तो; अवऩ् ऎऩ्ऩै पाराऩ्–वह मेरी ओर ध्यान नहीं देगा; कटितिऩ् ओटिऩ्ऩॆऩ्–सवेग दौड़कर; ऎटुत्तु–उसको उठाकर; ओल्लै करन्तु–जल्दी छिपाये रखकर; कातल् अवळ् वटिविल्–उसकी प्रिया के रूप में; नाऩ् उटऩ् वाऴ्वते–मेरा उसके साथ रहना ही; मति ऎऩ–बुद्धिमानी है, ऐसा; मतिया–निश्चय करके। ३०८

सवेरा हुआ और शूर्पणखा ने देखा कि उसके प्राण बचे है। उसने सोचा कि जब तक वह स्त्री, जो अनुपम सुन्दरी है, उसके साथ रहेगी तब तक वह मेरी ओर दृष्टि देगा ही नहीं। इसलिए शीघ्र भागकर जाऊँगी और उसे उठा ले जाकर कहीं छिपा दूँगी। फिर राम की प्रिया उसका रूप लेकर उसके साथ रहूँगी। ऐसा जीना ही बुद्धिमत्ता है। ऐसा संकल्प करके ; । ३०८

❀ वन्दु नोक्किऩळ् वळ्ळल्पो यॊरुमणित् तडत्तिल्
शन्दि नोक्किऩ ऩिरुन्ददु कण्डऩ डम्बि

इन्दु नोक्किय नुदलियैक् कात्तय लिरुण्ड
कन्द नोक्किय शोलैयि लिरुन्दवु काणाळ् 309

वन्तु नोक्किनळ्–आकर देखा; वळ्ळल्–प्रभु श्रीराम; पोय्–जाकर; ओरु मणि तटत्तिल्–एक सुन्दर घाट पर; चन्ति नोक्किनन्–संध्यावन्दन में लगे; इरुन्ततु–रहे; कण्टनळ्–देखा; तम्पि–कनिष्ठ (लक्ष्मण); इन्तु नोक्किय नुतलियै–चन्द्र-सम भाल वाली सीताजी का; कात्तु–रक्षण करते हुए; अयल्–पास; कन्तम् नोक्किय–सुवास निकालनेवाले; इरुण्ट चोलैयिल्–घने उपवन में; इरुन्ततु–रहे, वह; काणाळ्–नहीं देखा। ३०९

वह आयी। आश्रम के पास आकर उसने देखा कि प्रभु वहाँ से दूर मनोहर घाट पर संध्यावन्दन में दत्तचित्त है। उसका भाई इन्दु-सम ललाट वाली सीता के सरक्षण में ही पास में सुबास देनेवाले उस आश्रम के एक छाया के कारण अँधेरे स्थान में विराजे थे। पर शूर्पणखा ने लक्ष्मण को नहीं देखा। ३०९

❀ तन्नियि रुन्दनळ् शमैन्ददॆन् करुत्तॆनत् ताळ्वुड्
रिन्नियि रुन्दॆनक् कॆण्णुव दिल्लॆन वॆण्णात्
तुन्नियि रुन्दवन् मनत्तिन डोहैयैत् तॊडर्न्दाळ्
कन्नियि रुम्बॊळिल् कात्तय लिरुन्दवन् कण्डान् 310

तन्नि इरुन्तनळ्–एकाकिनी रहती है; ऍन् करुत्तु–मेरा विचार; चमैन्ततु–चरितार्थ हुआ; ऍन–ऐसा और; इन्नि ताळ्वु उऱ्ऱु इरुन्तु–अब विलम्ब करते रहने से; ऍनक्कु ऍण्णुवतु इल्–मुझे सोचने के लिए कुछ नहीं है; ऍन–ऐसा; ऍण्णा–निश्चय करके; तुन्नि इरुन्त–घृणा से भरे; वन् मनत्तिनळ्–कठोर मन वाली; तोकैयै तॊटर्न्ताळ्–मयूराभा सीताजी की ओर गई; कन्नि–फलों से युक्त; इरुम् पॊळिल् कात्तु–विशाल उपवन में पहरा जो देते; अयल् इरुन्तवन्–पास रहे लक्ष्मण ने; कण्टान्–देखा। ३१०

शूर्पणखा को आश्वासन हो गया। 'सीता अकेली है! मेरा संकल्प पूर्ण हो गया। अब विलम्ब करके सोचते रहने के लिए कुछ नही है।' ऐसा घृणा से भरे कठोर मन वाली ने निश्चय किया। वह मयूराभा सीता की तरफ़ सवेग जाने लगी। लक्ष्मण ने, जो उस फलदार तरुओं से भरे विशाल आश्रम में पहरा देते हुए वैठे रहे, उसको देख लिया। ३१०

❀ निल्ल डीयॆनक् कडुहिनन् पॆण्णॆन निनैन्दान्
विल्लॆ डादवळ् वीङ्गॊरि यामॆन विरिन्द
शिल्ल लोदियैच् चिक्कुऱच् चॆङ्गैयाऱ् पऱ्ऱि
ऑल्लै यीर्त्तुदैत् तॊळिहिळर् शुऱ्ऱुवा ळुरुवि 311

अटी निल् ऍन–री खड़ी रह कहकर; कटुकिनन्–तेज चाल आये; पॆण् ऍन्न निनैन्तान्–स्त्री है, समझे; विल् ऍटातु–धनुष न लेकर; अवळ्–उस (शूर्पणखा) के;

वीङ्कु ऎरि आम् ऎन्न–खूब अधिक जलती आग के समान; विरिन्त–विस्तृत रूप से सिर के चारों ओर बिखरे रहनेवाले; चिल्लल् ओतियै–कम लम्बे केश-जाल को; चॆङ्कैयाल्–लाल हाथ से; चिक्कु उऱ पऱ्ऱि–हाथ को लपेट ले, ऐसा पकड़कर; ऒल्लै–तेजी से; ईर्त्तु–खींचकर; उतैत्तु–उसके लात मारकर; ऒळि किळर्–कान्तिमय; चुऱ्ऱुवाळ् उरुवि–कटार निकालकर। ३११

लक्ष्मण तुरन्त, 'री खड़ी रह।' —डाँटते हुए उठ आये। वह स्त्री थी, इसलिए उसने धनुष नही लिया। उसने आकर जलती आग के समान उसके सिर पर बिखरे रहे केश को अपने हाथ से मरोड़कर पकड़ा, उसको झटका देकर खीचा और लात मारी। फिर उन्होंने अपनी उज्ज्वल कटार निकालकर; । ३११

ॐ ऊक्कित् ताङ्गिविण् पडर्वॆन्नॆन् ऱुरुत्तॆळु वाळै
नूक्कि नीय्दिनिल् वॆय्दिळै येलॆन्न नुवला
मूक्कुङ् गादुम्वॆम् मुरण्मुलैक् कण्गळु मुऱैयाल्
पोक्किप् पोक्किय शिन्नत्तोडुम् बुरिहुळल् विट्टान् 312

ऊक्कि–प्रयत्न करके; ताङ्कि–(इसको) उठाते हुए; विण् पटर्वॆन्–आकाश में उड़ जाऊँगी; ऎन्नु–ऐसा; उरुत्तु ऎळुवाळै–कोप के साथ उछलनेवाली को; नीय्तित्तिल् नूक्कि–आसानी से नीचे पछाड़कर; वॆय्तु इळैयेल् ऎन्न–ऐसा बुरा काम मत करो, यह; नुवला–कहकर; मूक्कुम् कातुम्–नाक और कानों को; वॆम् मुरण् मुलै–भयंकर कुरूपी स्तनों के; कण्कळुम्–चूचुकों को; मुऱैयाल् पोक्कि–एक के बाद एक क्रम से काटकर; पोक्किय चिनत्तोटुम्–शान्त हुए कोप के साथ; पुरि कुळल् विट्टान्–ऐंठा केश छोड़ दिया। २१२

उस शूर्पणखा को, जो उन्हें भी सयत्न उठाते हुए आकाश में उड़ जाने का विचार कर रही थी, नीचे पटक दिया। फिर 'ऐसे बुरे कार्य मत करो' कहते हुए उन्होंने उसकी नाक, कान और विकृत और भयंकर स्तनों के चूचुकों को क्रम से काट दिया। (यह चूचुक काटने की बात 'भागवत' में ही आयी है।) तभी जाकर उनका क्रोध शान्त हुआ और उन्होंने अपने हाथ में ऐंठे रहे उसके केश को छोड़ा। ३१२

अक्क णत्तवळ् वाय्तिऱन् दरऱ्ऱिय वमलै
तिक्क नैत्तिनुज् जॆन्ऱदु तेवर्तज् जॆवियुम्
पुक्क दुऱ्ऱदु पुहल्वदॆन् मूक्कॆनुम् बुळैयू
डुक्क शोरियि नीरमुऱ् ऱुरुहिय दुलहम् 313

अ कणत्तु–उस समय; अवळ्–शूर्पणखा ने; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱिय–जो विलाप किया, वह; अमलै–शोर; तिक्कु अनैत्तिनुम् चॆन्ऱतु–सारी दिशाओं में गया; तेवर् तम् चॆवियुम्–देवों के कानों में भी; पुक्कतु–घुसा; उऱ्ऱतु पुकल्वतु ऎन्–वहाँ जो हुआ उसका क्या कहा जाय; मूक्कु ऎनुम्–नाक रूपी; पुळै

ऊट्टु–विवरों द्वारा; उक्क–वहनेवाले; चोरियिन्–रक्त में; ईरम् उऱ्ऱु–भीगकर; उलकम् मुळुवतुम् उरुकियतु–सारा लोक गल गया। ३१३

तव शूर्पणखा अपना मुख खोलकर उच्च स्वर में रोने-चिल्लाने लगी। वह शोर सभी दिशाओं में व्यापा और देवों के कानों में भी जाकर भर गया। जो हुआ उसका क्या कहा जाय? नासिका-विवर से जो रक्त वहा, वह इतना अधिक था कि विशाल भूमि ही गल गयी। ३१३

कॊलैतु मित्तुयर् कॊडुङ्गदिर् वाळिन्क् कॊडियाळ
मुलैतु मित्तुयर् मूक्किनै नीक्किय मुऱ्ऱैमै
मलैतु मित्तॆन्न विरावणन् मणियुडै महुडत्
तलैतु मित्तऱ्कु नाट्कॊण्ड दॊत्तदोर् तन्मै 314

कॊलै तुमित्तु–मारना रोककर; उयर् कतिर् कॊटुम् वाळिन्–अधिक चमकदार भयंकर कटार द्वारा; अ कॊटियाळ्–उस अत्याचारिणी का; मुलै तुमित्तु–स्तनों (के चूचुकों) को काटकर; उयर् मूक्कित्तै नीक्किय–उठी हुई नाक को काटने का; मुऱ्ऱैमै–कार्य; मलै तुमित्तु ॲन्न–पर्वत को काटने के समान; इरावणन् मणि उटै मकुटम्–रावण के मणिमण्डित किरीटधारी; तलै तुमित्तऱ्कु–सिरों को काट लेने के लिए; नाळ् कॊण्टतोर् तन्मै–'मुहूर्त' (शुभारम्भ) करने के; ऒत्ततु–समान रहा। ३१४

लक्ष्मण ने शूर्पणखा को नहीं मारा। पर उसके स्तनों के अग्रभाग और नाक के उठे हुए भाग को काट दिया। वह कार्य पीछे होनेवाले रावण-वध का शुभ आरम्भ-सा था। पर्वतशिखरों के समान रावण के मणिमय किरीटधारी सिर काटकर अलग किये जायँगे। उसका आरम्भ करने का मुहूर्त अब मनाया गया। ३१४

अदिर मानिलत् तडिपदैत् तरऱ्ऱिय वरक्कि
कदिर्हॊळ् कालवेऱ् करन्मुद निरुदर्वॆङ् गदप्पोर्
ऎदिरि लादव रिरुदियि निमित्तमा यॆळुन्दाण्
डुदिर मारिपॆय् कार्निऱ मेहमॊत् तुयर्न्दाळ् 315

अतिर–थर्राते हुए; मा निलत्तु–विशाल भूमि पर; अटि पतैत्तु–कोप और दुख के कारण पैर पटककर; अरऱ्ऱिय–जो दहाड़ मारकर रोने लगी, वह; अरक्कि–राक्षसी; काल–यम के समान; कतिर् कॊळ् वेल्–(और) चमकदार शक्ति-धारी; करन् मुतल्–खर आदि; वॆम् कत पोर्–भयंकर और घमासान युद्ध में; ऎतिर् इलातवर्–जो सानी नहीं रखते थे, उन; निरुतर्–राक्षसों के; इऱुतियिन् निमित्तमाय्–अन्त कराने के निमित्त; ऎळुन्तु–उठी और; आण्टु–वहाँ; उतिर मारि पॆय्–रक्तवर्षा करनेवाले; कार् निऱ मेकम् ऒत्तु–काले मेघ के समान; उयर्न्ताळ्–सिर ऊँचा कर खड़ी हुई। ३१५

शूर्पणखा वेदना से थर्रा उठी। भूमि पर पैर पटकने लगी। वह

दहाड़ मारकर रोयी। फिर वह सिर तानकर खड़ी हुई, तब वह रक्त बहानेवाले काले मेघ के समान लगी। कठोर युद्ध में निर्द्वन्द्व और यम के समान घातक और चमकदार भालों वाले खर आदि राक्षसों के नाश के लिए तत्पर हुई हो, ऐसा वह निशाचरी जोश के साथ उठी। ३१५

उयरुम् विण्णिडै मण्णिडै विऴुङ्गिडन् दुळैक्कुम्
अयरुङ् गैहुलैत् तलमरु मारुयिर् शोरुम्
पॅयरुम् पॅण्बिऱन् दियान्बट्ट पऴियॅनप् पिदऱ्ऱुम्
तुयरु मञ्जिमुन् ऱॊडर्न्दिलात् तॊल्हुडिप् पिऱन्दाळ् 316

तुयरुम्–दुख नामक कुछ; अन्चि–डर से; मुन् तॊटर्न्तिला–जिसके पास पहले नहीं गया था; तॊल् कुटि पिऱन्ताळ्–उस प्राचीन (राक्षस-) कुल में जो पैदा हुई थी, वह; विण् इटै उयरुम्–आकाश में उठती; मण् इटै विऴुम्–भूमि पर गिरती; किटन्तु उळैक्कुम्–पड़ी चिल्लाती; अयरुम्–थकती; कै कुलैत्तु–हाथ मलकर; अलमरुम्–उद्विग्न होती; आर् उयिर् चोरुम्–क्षीणप्राण हो जाती; पॅयरुम्–सुध पाकर चलने लगती; पॅण् पिऱन्त–स्त्री पैदा होकर; यान्–मुझे; पट्ट पऴि–मिली निन्दा है; ॲन–ऐसा; पितऱ्ऱुम्–बकती। ३१६

वह शूर्पणखा उस राक्षसकुल की थी, जिसके पास दुख भी डर के कारण नहीं आया था। अब उसे अपार दुख मिल गया। अत्यधिक वेदना का अनुभव करने लगी। वह ऊपर उठती पर भूमि पर गिर जाती। भूमि पर पड़ी रहकर चिल्लाती। थक जाती। हाथ मलकर उद्विग्न होती। प्राण-हीन-सी मूर्च्छित हो जाती। कुछ देर बाद सुध पाती और विलापती कि स्त्री पैदा होकर कैसी निन्द्य स्थिति को प्राप्त हो गयी? । ३१६

❀ ऒऱ्ऱुम् मूक्किनै युलैयुऱु तीयॆन वुयिर्क्कुम्
ॲऱ्ऱुङ् . गैयिनै निलत्तिनि लिणैत्तडङ् गॊङ्गै
पऱ्ऱिप् पार्क्कुमॆय् वेर्क्कुन्दन् बरुवरन् मयक्काल्
शुऱ्ऱु मोडुम्बोय्च् चोरिनीर् शॊरिदरच् चोरुम् 317

मूक्किनै–नाक को; ऒऱ्ऱुम्–पोंछती; उलै उऱु ती ॲन–भट्ठी की आग के समान; उयिर्क्कुम्–गरम साँस छोड़ती; कैयिनै–हाथों को; निलत्तिनिल्–भूमि पर; ॲऱ्ऱुम्–मारती; इणै तट कॊङ्कै–जोड़े के बड़े स्तनों को; पऱ्ऱि पार्क्कुम्–हाथों में ले देखती; मेय् वेर्क्कुम्–स्वेद-पूर्ण शरीर हो जाती; तन् परुवरल् मयक्काल्–अपने दुख से उत्पन्न भ्रम के कारण; चुऱ्ऱुम् ओटुम्–चारों ओर दौड़ती; पोय्–जाकर; चोरि नीर्–रक्त को; चॊरि तर–बहाती हुई; चोरुम्–शिथिल पड़ जाती। ३१७

वह अपना दामन लेकर नाक को पोंछती। ऐसा गरम निश्वास छोड़ती, मानो भट्ठी से आग की ज्वाला निकल रही हो। हाथों से भूमि पर मारती। अपने दोनों स्तनों को हाथ से पकड़कर उन पर दृष्टि

दौड़ाती। उसका शरीर पसीने से भर जाता। असह्य वेदना के कारण उसका चित्त भ्रमित हो जाता और वह इधर चारों ओर घूमती। पर रक्त वहाते हुए निर्बल हो गिर जाती। ३१७

❀ ऊऱ्ऱु मिक्कनी रुविथि नीऴ्हिय कुरुदिच्
चेऱ्ऱु वॆळ्ळत्तुद् टिरिबव डेवरु मिरियक्
कूऱ्ऱु मुट्कुन्दत् कुलत्तिनोर् पॆयरॆलाङ् गूऱि
आऱ्ऱु हिऱ्किलळ् पऱ्पल पन्नितिनिन्ऱ् ऱळैत्ताळ् 318

ऊऱ्ऱु मिक्क–सोते से अधिक बहनेवाले; नीर् अरुवियिन्–जल की पर्वत-सरिता के समान; ऒऴुकिय–बहनेवाले; कुरुति चेरु–रक्त के पंकिल; वॆळ्ळत्तु उळ्–प्रवाह के अन्दर; तिरिपवळ्–जो घूमती थी, वह; आऱ्ऱुकिऱ्ऱिलळ्–सह नहीं सकी और; तेवरुम् इरिय–देव भाग जाएँ, ऐसा; कूऱ्ऱुम् उट्कुम्–यम को भी भयभीत करते हुए; तन् कुलत्तिनोर् पॆयर् ऎलाम्–अपने कुल के सभी के नाम; कूऱि–लेते हुए; पल् पल–अनेक प्रलाप; पन्नि निन्ऱु–करते हुए खड़ी रहकर; अऴैत्ताळ्–बुलाया (शूर्पणखा ने)। ३१८

सोते से बहनेवाले जल की पर्वतसरिता के समान उसके कटे अंगों से पंकिल रक्त वह रहा था। वह उसके साथ बेचैनी से संचार करती थी। दुख उसे असह्य था। तब वह अपने कुल के राक्षसों के नाम लेकर विलापती हुई पुकार मचाने लगी। उसे सुनकर देव भाग गये और यम भी भयभीत हो गया। ३१८

निलैयॆडुत्तु नॆडुनिलत्तु नीयिरुक्कत् तावदर्हळ्
शिलैयॆडुत्तुत् तिरियुमिदु शिऱ्ऱिदन्ऱो दॆवरॆदिर्
तलैयॆडुत्तु विऴियामै शमैप्पदे तऴलॆडुत्तान्
मलैयॆडुत्त तनिमलैये यिवैहाण वारायो 319

तऴल् ऎट्टुत्तान्–अग्निज्वाला को हाथ में रखनेवाले (शिवजी) के; मलै–कैलासपर्वत को; ऎट्टुत्त–जिसने उखाड़ लिया, वह; तनि मलैये–अनुपम पर्वत-सम (भाई रावण); नी–तुम; नॆट्टु निलत्तु–विशाल भूमि पर; निलै ऎट्टुत्तु इरुक्क–स्थायी यश के साथ रहते हो, तभी; तापतर्कळ्–तपस्वी; चिलै ऎट्टुत्तु तिरियुम् इतु–धनुष लेकर घूमते हैं, यह; चिऱ्ऱितु अन्ऱो–तुम्हारे गौरव में कमी नहीं है क्या; तेवर् ऎतिर्–देवों के सामने; तलै ऎट्टुत्तु–सिर उठाकर; विऴियामै–देख न सकना; चमैप्पते–साध्य हो जाय क्या; इवै काण वारायो–ये देखने न आओगे क्या। ३१९

अनलधर शिवजी के कैलासपर्वत को उखाड़नेवाले पर्वत-सम मेरे भाई रावण! तुम इस भूमि पर अभी स्थायी यश के साथ हो! तो भी तापस लोग धनु लेकर घूम रहे हैं! यह तुम्हारे यश को छोटा बनानेवाला नहीं है क्या? और अब हम देवों के सामने सिर उठा नहीं सकेंगे? उनकी दृष्टि से दृष्टि न मिला सकेंगे। ऐसी स्थिति भी आ जायगी

शायद ? इनको देखने नहीं आओगे क्या ? (दारुका वन के ऋषियों ने शिवजी पर अग्नि को भेजा था। उन्होंने उसे अपने हाथ में रख लिया। उसको 'मऴु' कहते हैं। मऴु का अर्थ परशु भी है। अतः मऴु-धारी शब्द के दोनों अर्थ— परशुधर, अनलधर किये जाते हैं।)। ३१९

पुलिताने पुऱ्त्ताहक् कुट्टिकोट् पडादॆऩ्ऩुम्
ऑलियाऴि युलहुरैक्कु मुरैपॊय्यो वूऴियिऩुम्
शलियाद मूवरुक्कुन् दानवर्क्कुम् वानवर्क्कुम्
वलियाते यान्पट्ट वलिहाण वारायो 320

ऊऴियिऩुम् चलियात–कल्पान्त में भी अचल रहनेवाले; मूवर्क्कुम्–त्रिदेवों से और; तानवर्क्कुम्–असुरों से; वानवर्क्कुम्–देवों से; वलियात्ते–बढ़कर बली; पुलि पुऱ्त्तु आक–मादा व्याघ्र के पास रहते; कुट्टि–उसका शावक; कोऴ् पटातु–किसी की पकड़ में नहीं आयगा; ऍऩ्ऩुम्–ऐसा; ऑलि आऴि उलकु–गर्जनशील सागर-वलयित भूतल (वासी); उरैक्कुम् उरै–जो कहता है, वह मसल; पॊय्यो–असत्य है क्या; यान् पट्ट–मुझ पर आया; वलि काण–संकट देखने के लिए; वारायो–नहीं आओगे क्या। ३२०

हे भाई! तुम कल्पान्त में भी अमिट रहनेवाले त्रिदेवों, दानवों और देवों से भी अधिक बली हो। तुम्हारे रहते मेरी यह दुर्गति हो गयी। लोकोक्ति है कि मादा व्याघ्र के पास रहते व्याघ्रशावक को कोई ग्रस नहीं सकता। क्या वह कथन असत्य है ? मुझ पर जो बीता है, वह बड़ी विपदा देखो, आओ। नहीं आओगे ? । ३२०

आर्त्तानैक् करशुन्दि यमरर्क्कणत् तॊडुमडर्त्त
पोर्त्तानै यिन्दिरनैप् पॊरुदवनैप् पोर्तॊलैत्तु
वेर्त्तानै युयिर्हॊण्डु मीण्डाऩै वॆरिन्पण्डु
पार्त्ताने यान्पट्ट पऴिवन्दु पारायो 321

पण्टु–पहले; आर्त्तु–बड़े हुल्लड़ के साथ; आनैक्कु अरचु उन्ति–गजराज ऐरावत को चलाते हुए; अमरर् कणत्तॊटुम्–देवगणों के साथ मिलकर; अटर्त्त–(तुमसे) जिसने लड़ाई की; पोर् तानै इन्तिरनै–उस युद्धसन्नद्ध सेना के स्वामी इन्द्र से; पॊरुतु–लड़कर; अवनै–उसको; पोर् तॊलैत्तु–युद्ध में हराकर; वेर्त्तानै–डर से स्वेदयुक्त होकर; उयिर् कॊण्टु मीण्टानै–जान लेकर भागनेवाले उसको; पण्टु–पहले; वॆरिन् पारत्ताने–पीठ को जिसने देखा, ऐसे रावण; यान् पट्ट पऴि–मुझे मिली दुर्गति को; वन्तु पारायो–तुम आकर नहीं देखोगे क्या। ३२१

पहले दिग्विजय के अवसर पर, हे रावण! गजराज ऐरावत को चलाते हुए इन्द्र अपने देवगणों को साथ लेकर तुमसे लड़ने आया। युद्धसन्नद्ध सेना उसके साथ आयी थी। तुमने उससे लड़ाई की और समरभूमि में उसको हराया। वह पसीना-पसीना होकर जान लेकर तुमको

अपनी पीठ दिखाते हुए भागा ! ऐसे रावण ! क्या तुम इधर आकर मेरी दुर्गति नहीं देखोगे ? । ३२१

कार्ऱितैयुम् पुन्नलित्तैयुम् कत्तलित्तैयुङ् गडुङ्गालक्
कूऱ्ऱित्तैयुम् विण्णियङ्गु कोळित्तैयुम् बणिहोडऱ्
काऱ्ऱितैनी यीण्डिरुवर् मानिडवर्क् काऱ्ऱादु
माऱ्ऱितैयो वुन्वलत्तैच् च्चिवन्नुडक्कै वाळ्होण्डाय् 322

चिवन् तट कै वाळ्–शिवजी के दीर्घ हाथ से दी गई तलवार (चन्द्रहास); कॊण्टाय्–रखनेवाले; काऱ्ऱित्तैयुम्–वायुदेव को; पुनलित्तैयुम्–और वरुण को; कत्तलित्तैयुम्–अग्निदेव को; कटुम् काल कूऱ्ऱित्तैयुम्–कठोर काल के देव यम को; विण् इयङ्कु–आकाश में संचार करनेवाले; कोळित्तैयुम्–नवग्रहों को; पणि कोटऱ्कु–सेवा लेने के लिए; आऱ्ऱित्तै–नियत किया; नी–तुमने; ईण्टु इरुवर् मानिटवर्क्कु–यहाँ दो मनुष्यों के सामने; आऱ्ऱातु–अशक्त होकर; उन् वलत्तै माऱ्ऱितैयो–अपना बल खो दिया है क्या । ३२२

शिवजी के हाथ से तुमको चन्द्रहास नाम की तलवार मिली । उस तलवार के धारक रावण ! तुमने वायुदेव, वरुण, अग्निदेव, कठोर कालदेव और आकाशचारी नवग्रह इन सबको अपने सेवक बना रखा है ! ऐसे बली अब इन दो मामूली मनुष्यों के सामने अशक्त होकर तुम अपना बल खो चुके क्या ? । ३२२

उरुप्पॊडिया मन्नमदन्नै यॊत्तुळरे यान्नालुम्
शॆरुप्पडियिऱ् पॊडियॊव्वा मान्निडरैच् चीऱुदियो
नॆरुप्पॊडियप् पॊडिशिदऱ निऱैमदत्त तिशैयान्नै
मरुप्पॊडियप् पॊरुप्पिडियत् तोळ्निमिर्त्त वलियोन्ने 323

निऱै मतत्त–पूर्ण मद वाले; तिचैयान्नै–दिग्गजों के; मरुप्पु ऒटिय–दाँत तोड़ते हुए; पॊरुप्पु इटिय–कैलास को ढहते हुए; नॆरुप्पु ऒटिय–अग्निदेव को तोड़कर; पॊटि चितऱ–चूर-चर कर छितराते हुए; तोळ् निमिर्त्त–(दिग्विजय के अवसर पर) भुजाओं का बल दिखाकर जिसने लड़ाई की, ऐसे; वलियोन्ने–बलवान (रावण); उरु पॊटिया–शरीर जिसका नष्ट नहीं हुआ हो, ऐसे; मन्मतन्नै–मन्मथ के; ऒत्तु उळरे आनालुम्–समान हैं तो भी; चॆरु पटियिल्–युद्धभूमि में (या जूते के तल की); पॊटि ऒव्वा–धूलि-सम भी जो नहीं हैं; मानिटरै–उन मनुष्यों पर; चीऱुतियो–कोप करोगे क्या । ३२३

दिग्विजय के अवसर पर तुमने मदमत्त दिग्गजों के दाँतों को तोड़ा, कैलास को गिराया और अग्निदेव को चूर कर छितराया । ऐसे तुमने भुजाओं के बल का प्रदर्शन किया । ऐसे बली रावण ! ये दोनों सशरीर मन्मथ के समान हैं तो भी (चॆरु पटियिल =) युद्धभूमि में, या

(चॆरुप्पटियिल् =) जूते के तल की धूलि के समान भी नहीं होंगे। वे इतने दुर्बल हैं। उन पर कोपकर उनसे लड़ोगे भी ? । ३२३

तेनुडैय नऱुन्दॆरियऱ् ऱेवरैयुन् दॆऱुमाऱ्ऱल्
तानुडैय विरावणऱ्कुन् दम्बियर्क्कुन् दविर्न्ददो
ऊनुडैय वुडम्बिनरा यॆङ्गुलत्तोर्क् कुणवाय
मानुडवर् मरुङ्गेपुक् कॊडुङ्गिनदो वलियम्मा 324

तेऩ् उटैय–शहद-भरे; नऱुम् तॆरियल्–मधुर सुगन्धयुक्त मालाधारी; तेवरैयुम्–देवों को भी; तॆऱुम्–आक्रान्त करनेवाले; आऱ्ऱल् ताऩ् उटैय–शक्तिसम्पन्न; इरावणऱ्कुम्–रावण का और; तम्पियर्क्कुम्–उसके छोटे भाइयों का; वलि–बल; तविर्न्ततो–छूट गया क्या; ऊऩ् उटैय उटम्पितर् आय्–मांसयुक्त शरीर के बनकर; ॲम् कुलत्तोर्क्कु–हमारे राक्षसकुल के लोगों का; उणवु आय–भोजन बननेवाले; मातुटवर् मरुङ्के पुक्कु–मनुष्यों के अन्दर घुसकर; ऒटुङ्कित्तो–समा गया क्या; अम्मा–आश्चर्य। ३२४

अब जो हुआ है, उसका अर्थ क्या समझा जाय ? यह समझा जाय कि मधुयुक्त सुवासित मालाधारी देवों को आक्रान्त करनेवाले रावण का और उसके भाइयों का बल क्षीण हो गया ? और वह बल हमारे कुल के लोगों का भोज्य मांसधारी मानवों के शरीर के अन्दर प्रवेश कर समा गया ? । ३२४

मरऩ्ऩेयु नॆडुङ्गानिऩ् मऱैन्दुऱैयुन् दापदर्हळ्
उरऩ्ऩेयो वडलरक्क रोय्वेयो वुऱ्ऱॆदिर्न्दार्
अरऩेयो वरियेयो वयऩ्ऩेयो वॆऩ्ऩुमाऱ्ऱल्
करऩ्ऩेयो याऩ्पट्ट कैयऱवु काणायो 325

मरऩ् एयुम्–वृक्षाकीर्ण; नॆट्टुम् कातिल्–विस्तृत वन में; मऱैन्तु उऱैयुम्–छिपकर रहनेवाले; तापतर्कळ्–तपस्वी लोगों का; वलिये ओ–बल है यह; अटल् अरक्कर्–(या) बली राक्षसों की; ओय्वेयो–शक्तिहीनता है; उऱ्ऱु ॲतिर्न्तार्–लड़ने आये हुए (लोग); अरऩे ओ–हर है क्या; अरिये ओ–हरि है क्या; अयऩे ओ–अज है क्या; ॲऩुम्–ऐसा माने उतना; आऱ्ऱल्–बली; करऩे ओ–हे खर; याऩ् पट्ट–मैंने जो पाया है; कै अऱवु–वह संकट; काणाय् ओ–आकर देखोगे नहीं क्या। ३२५

यह घटना तरुसंकुल वन में छिपे रहनेवाले तपस्वियों के बल का द्योतक है ? या बली राक्षसों की शक्ति के क्षीण हो जाने का ? हे खर ! जिसको युद्ध में देखकर शत्रु यह सन्देह करते थे कि यह क्या हर ही है या हरि या अज ! ऐसी शक्ति वाले खर ! आकर मुझे क्या हो गया है —यह अनर्थ तुम नहीं देखोगे क्या ? । ३२५

इन्दिरनु मलरयनु मिमैयवरुम् बणिकेट्पच्
चुन्दरिपल् लाण्टिशैप्प वुलहेळ्न् दोळ्देत्तच्
चन्दिरनुपोंऱ् कुडैनिळ्ऱ्ऱ विशैन्दिरुन्द शवैनडुवे
वन्दडियेे नाणादु मुहङ्गाट्ट वल्लेनो 326

इन्तिरनुम्–देवेन्द्र और; मलर् अयनुम्–सरोजासन ब्रह्मा; इमैयवरुम्–और अन्य देव; पणि केट्प–सेवाएँ करते हैं; चुन्तरि–सुन्दरी शची देवी; पल्लाण्टु इचैप्प–'जयजीव' गाती है, तब; उलकु एळुम् तोळुतु एत्त–सातों लोक विनय करके स्तुति करते; चन्तिरन्–चन्द्र के; पोन् कुटै–स्वर्णछत्र; निळ्ऱ्ऱ–ले छाया करते; इचैन्तु इरुन्त–तुम ऐसा जिस सभा में उल्लास के साथ रहते हो; चपै नटुवे–उस सभा के मध्य; अटियेन वन्तु–दासी मैं आकर; नाणातु–विना शरमाये; मुकम् काट्ट वल्लेनो–मुख दिखा सकूँगी क्या। ३२६

हे रावण ! तुम अपनी सभा में बड़े ठाट-बाट के साथ बैठते हो। तब इन्द्र, सरसिजासन ब्रह्मा और अन्य देव तुम्हारी आज्ञाएँ मानते हुए सेवक के रूप में रहते है। सुन्दरी शची जयजीव का गान गाती हैं। सातों लोक तुम्हारी संस्तुति करते हैं। चन्द्र तुम्हारा स्वर्णछत्र धारण कर छाया बनाता है। ऐसी सभा में अब आकर बेशरम की तरह अपना मुख दिखाने योग्य रहती हूँ क्या ? । ३२६

❀ उरनॅरिन्दु विळ्वॅन्नै युदैत्तुरुट्टि मूक्करिन्द
नरनिरुन्दु तोळ्पार्क्क नानिरुन्दु पुलम्बुवदो
करनिरुन्द वनमन्ऱो विवैपडवुङ् गडवेनो
अरनिरुन्द मलैयॅडुत्त वैयावो वैयावो 327

अरन् इरुन्त मलै ॲटुत्त–हर जिसमें रहे, उस गिरि को उखाड़नेवाले; ऐयाओ ऐयाओ–प्रभु, प्रभु; उरन् नॅरिन्तु विळ–मेरी छाती विदीर्ण हुई और मैं नीचे गिर गई, ऐसा; ॲन्नै उतैत्तु उरुट्टि–मुझे लात मारकर, गिराकर और लुढ़काकर; मूक्कु अरिन्त–(जिसने) मेरी नाक काटी; नरन् इरुन्तु तोळ् पार्क्क–वह नर अभिमान के साथ अपने कंधों को देख रहा है, तब; नान् इरुन्तु पुलम्पुवतो–मैं बैठी विलाप करूँ (क्या यह ठीक है); करन् इरुन्त वरम् अन्ऱो–खर के वास का वन है न; इवै पटवुम् कटवेनो–यह (अन्याय) सहने अर्ह हूँ क्या। ३२७

हे प्रभु ! हे रावण ! तुमने हरनिलय कैलास को उखाड़ लिया था ! मुझे मेरी छाती विदीर्ण करते हुए नीचे गिरा दिया एक नर ने ! उसने मेरी नाक काट दी और वह आत्माभिमान के साथ अपने कन्धों को देख रहा है, अपने बल पर इठला रहा है ! और मैं असहाय की तरह विलाप कर रही हूँ। क्या यह ठीक लगता है ? यह खर के शासनाधीन वन है। इधर मेरी ऐसी दुर्गति हो—मैं इसके अर्ह हूँ क्या ? । ३२७

❀ नशैयाले मूक्किळन्दु नाणमिला
वशैयाले निन्पुहळ्ळु माशुण्ड
दिशैयालै विशैहलङ्गच् चॅरुच्चॅय्दु
इशैयाले वॅळ्ळुर्पॅय रिरावणवो

तिचै यातै–दिग्गजों के; विचै कलङ्क–क्रोधोद्वेग को मिटाते हुए; चॅरु लड़कर; मरुप्पु ऑचित्त–उनके दाँतों को तोड़ा (जिसने); इचैयाले पॅयर् यश से (जिसने) अपना नाम अंकित किया; इरावण ओ इरावण ओ–हे वह वह रावण; नचैयालै–इच्छा के कारण; मूक्किळन्तु–नाक खोकर; नाणम् लाज खोकर; नान् पट्ट वचैयाले–मुझे जो अपमान मिला, उससे; निन् तुम्हारा यश भी; माचु उण्टतु आकातो–कलंकित नहीं होगा क्या। ३२८

हे रावण! तुमने दिग्गजों के क्रोध को मिटाकर उनसे लड़कर उन दाँत तोड़ दिये और अपना नाम यश से अंकित किया है। ऐसे हे रावण! क्या प्रेम करना बुरा है? अपने प्रेम के कारण मैंने अपनी नाक खोयी, लाज खोयी और मैं अपमानित हो गयी हूँ। इस मेरी निन्द्य स्थिति से तुम्हारे यश में भी बट्टा नहीं लगेगा क्या? । ३२८

❀ कानदनि निडैयॉरुवर् कादॊडुमूक् कुडनरिय
मानमदाऌ पाविये निवण्मडियक् कडवेनो
तानवरैक् करुवरुत्तुप् पुरन्दरनैत् तळैयिट्टु
वानवरैप् पणिहॉण्ड मरुहावो मरुहावो 329

तानवरै करु अऱुत्तु–दानवों का मान नाश कर; पुरन्तरनै–पुरन्दर को; तळैयिट्टु–बेड़ी पहनाकर; वानवरै–देवों को; पणि कॉण्ट–नौकर (जिसने) बना लिया; मरुका ओ मरुका ओ–हे वह भतीजे, भतीजे; कान् अतनिन् इटै–जंगल में; ऑरुवर्–एक मानव ने; कातु ओटु मूक्कु उटन् अरिय–कान के साथ नाक एक साथ काट दिया, तब; पावियेन्–पापिनी मैं; मानम् अताल्–अपमान से; इवण् मटिय कटवेनो–इधर मर जाने अर्ह हो गई क्या। ३२९

(अब वह इन्द्रजित् को पुकार रही है।) हे मेरे भतीजे! भतीजे! तुमने दानवों का मान मिटाया, पुरन्दर को बेड़ियाँ पहनाकर कारागृह में रखा और देवों को नौकर बनाया और अपनी सेवा-टहल करायी। ऐसे भतीजे! जंगल में एक नर ने मेरे नाक और कान एक साथ काट दिये। पापिनी मैं अपमान से यहीं मर जाऊँ—इसी के योग्य हूँ क्या मैं? । ३२९

ऑरुहालत् तुलहेळु मुरुत्तिरिय तनुवीन्ऱाल्
तिरुहाद शिन्नदिरुहित् तिशैतिशैये शॅलनूऱि
इरुहालप् पुरन्दरनै यिरुञ्जिऱैयि लिट्टलैत्त
मरुहावो मानिडवर् वलिहाण वारायो 330

औरु कालत्तु–पहले (दिग्विजय के समय) कभी; तनु ऑन्ऱाल्–एक धनु द्वारा; तिरुकात चिन्नम् तिरुकि–अदम्य क्रोध बढ़कर; उलकु एळुम् उरुत्तु–सातों लोकों पर कोप प्रदर्शित करके; इरिय–उनको अस्तव्यस्त करते हुए; तिचै तिचैये चॅल–दिशा-दिशा में भगाते हुए; नूरि–उनको मारकर; अ पुरन्तरनै–उस पुरन्दर को; इरु काल्–दो वार; इरुम् चिऱै इट्टु–भयंकर कारा में डालकर; अलैत्त–(जिसने) सताया वह; मरुका ओ–भतीजे; मानिटवर्–इन मानवों का; वलि काण–बल देखने; वारायो–आओगे नहीं क्या। ३३०

हे भतीजे ! अपने पिता के दिग्विजय के समय में तुमने क्या-क्या साहस दिखाये। एक ही धनुष के सहारे तुमने बढ़ते क्रोध के साथ सातों लोकों पर कोप उतारकर उनके वासियों को भयभीत किया और वे भागने लगे। उनको तुमने मारा। फिर उस इन्द्र को दो वार कारागृह में डालकर दुख दिया। ऐसे तुम अब आकर दो अल्प नरों का बल देखो। देखने नहीं आओगे ? । ३३०

❀ कल्लीरुम् बडैत्तडक्कै यडङ्करत्तू डणर्मुदला
अल्लीरुञ् जुडर्मणिप्पू णरक्कर्कुलत् तवदरित्तीर्
कॉल्लीरुम् बडैक्कुम्ब करुणनैप्पोर् कॉडियीर्हाळ्
ऍल्लीरु मुऱङ्गुदिरो यानळैप्प केळीरो 331

कल् ईरुम्–पत्थर को भी बेधनेवाले; पटै तट कै–हथियारों को लिये हुए विशाल हाथों के; अटल्–बली; कर तूटणर् मुतला–खर, दूषण आदि; अल् ईरुम्–अन्धकार को भेदनेवाली; चुटर्मणि पूण्–कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित; अरक्कर् कुलत्तु अवतरित्तीर्–राक्षसकुल में जात (राक्षसो); कॉटियीर्काळ्–क्रूर; ऍल्लीरुम्–तुम लोग सब; कॉल् ईरुम् पटै–लुहार से रेतकर तेज किए हुए आयुधों के; कुम्पकरुणनै पोल्–कुम्भकर्ण की तरह; उऱङ्कुतिरो–सो रहे हो क्या; यान् अळैप्प–मैं पुकार रही हूँ; केळीरो–वह नहीं सुनते क्या। ३३१

(खर-दूषण आदि राक्षसों को पुकारती है।) कठोर पत्थर को भी वेधनेवाले हथियारधारी खर-दूषण आदि राक्षसो ! अन्धकार को भेदने वाली कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित राक्षसकुलोद्भूत निशाचरो ! तुम सव क्रूर राक्षस क्या उस कुम्भकर्ण के समान सो रहे हो, जिसके पास लुहार से रेती द्वारा तेज किए हुए हथियार (बेकार) पड़े हैं ! मैं बुला रही हूँ— तुम सुन नहीं रहे हो क्या ? । ३३१

ऍन्ऩिन्न पलपन्नि यिहलरक्कि यळैत्तिरङ्गि
पॊन्ऩुऱ्ऩुम् बडियहत्तुप् पुरळ्हिन्ऱ पॊळुदत्तु
निन्ऱन्द नदियहत्तु निऱैतवत्तिन् तुऱैमुडित्तु
वन्ऱिणगैच् चिलैनॅडुन्दोण् मरहदत्तिन् मलैवन्दान् 332

ऍन्ऩ–ऐसा; इन्न पल–ऐसे विविध प्रलाप; पन्नि–कहते; इकल् अरक्कि–

वैर रखनेवाली राक्षसी के; अळैत्तु इरङ्कि—पुकारते और रोते हुए; पोन् तुन्तुम्—बहुत मनोहर; पटि अकत्तु—भूमि पर; पुरळ्कित्तृ पोळुतत्तु—लोटते समय; वन् तिण् कै—वलिष्ठ और सारयुक्त हाथों; चिलै नेंटुम् तोळ्—धनु धारण करनेवाले उन्नत कंधों के; मरकतत्तिन् मलै—मरकत गिरि (-सम श्रीराम); अन्त नति अकत्तु—उस नदी के घाट पर; निरै तवत्तिन् कुरै मुटित्तु—यथावत कर्म अशेष पूरा करके; नित्रु—वहाँ से; वन्तात्—आश्रम की ओर पधारे। ३३२

वैर रखनेवाली शूर्पणखा ने इस तरह ऐसी विविध बातें कहती हुई अपने बन्धुओं को पुकार-पुकारकर विलाप किया। बिलापते हुए वह आश्रम की पवित्र भूमि पर गिरकर लोटी। तब श्रीराम, जिनके हाथ दीर्घ और बलवान थे और जिनके सबल कन्धे को धनु अलंकृत कर रहा था, नदी-घाट में सन्ध्या का नित्यकर्म यथावत अशेष रूप से सम्पन्न करके वहाँ से निकलकर इस स्थान पर आ गये। ३३२

वन्दान् मुहनोक्कि वयिऱलैत्तु मळैक्कण्णीर्
शॅन्दारैक् कुरुदियोडु शॅळुनिलत्तैच् चेऱाक्कि
अन्दोवुन् ऱिरुमेनिक् कन्बिळैत्त वन्बिळैयाल्
ऍन्दायान् पट्टपडि यिदुहाणॅन् ऱॅदिर्वीळ्न्दाळ् 333

वन्तान्—आये उनका; मुकम् नोक्कि—श्रीमुख देखकर; वयिरु अलैत्तु—पेट (छाती) पीटकर; मळै कण् नीर्—वर्षा के समान अश्रु; चॅम् तारै कुरुति ओटु—और धार रूप में बहनेवाले रक्त के साथ; चॅळु निलत्तै चेरु आक्कि—श्रेष्ठ भूमि को कीचड़ बनाते हुए; ऍन्ताय्—मेरे नाथ; अन्तो—हाय; उन् तिरुमेनिक्कु—तुम्हारे श्रीशरीर पर; अन्पु इळैत्त—आसक्ति रखने के; वन् पिळैयाल्—कठोर अपराध के कारण; इतु—यह; यान् पट्ट पटि इतु—मुझे मिला प्रकार (संकट) यह; काण् ऍन्रु—देखो, कहकर; ऍतिर् वीळ्न्ताळ्—उनके सामने गिरी। ३३३

शूर्पणखा ने श्रीराम को देखा। उनके मुख के सामने अपना पेट (अपनी छाती को) पीटा। आँखों से अश्रुजल की धारा बहायी और शरीर से लाल रक्त की धारा। उनसे वहाँ की श्रेष्ठ भूमि पंकिल बन गयी। उसने श्रीराम से शिकायत की कि देखो! मेरे नाथ! हाय! तुम्हारे रूप पर मेरा जी ललचाया। इस घोर अपराध का फल मुझे भोगना पड़ा, वह यह देखो! यह कहते हुए वह श्रीराम के सामने भूमि पर गिर पड़ी। ३३३

विरिन्दाय कून्दलाळ् वॅय्यविनै यादानुम्
पुरिन्दाळॅन् बदुन्दनदु पोरुवरिय तिरुमनत्ताल्
तॅरिन्दानिन् ऱिळैयोने यिवळैनॅडुम् जॅवियोडुमूक्
करिन्दानॅन् बदुमुणर्न्दा नवळैनी यारॅन्ऱान् 334

विरिन्ताय कून्तलाळ्—बिखरे केश वाली ने; वॅय्य विनै—क्रूर काम; यातॆनुम् पुरिन्ताळ्—कुछ किया है; ऍन्पतुम्—यह; तनतु—अपने; पोरुवु अरिय तिरुमनत्ताल्—

अनुपम श्रीमन में; तॆरिन्तान्–समझकर; इळैयोत्ते–छोटे भाई ने; इवळै–इसके; इन्ऱु–अभी; नॆट्टुम् चॆवि ओट्टु–बड़े कानों के साथ; मूक्कु–नाक को; अरिन्तान् ऎन्ऱपतुम्–काट लिया है, यह भी; उणर्न्तान्–जानकर; अवळै–उससे; नी यार्–तुम कौन हो; ऎन्ऱान्–पूछा। ३३४

श्रीराम ने अपने श्रीमन में सोचा कि बिखरे केश वाली इसने नृशंस कोई काम किया होगा और अनुज लक्ष्मण ने अभी-अभी इसकी नाक और इसके कान काटे हैं। उन्होंने उससे प्रश्न किया कि तुम कौन हो? । ३३४

अव्वुरैकेट् टडलरक्कि यऱियायो नीयॆन्ऱनैत्
तॆव्वुरैयॆन् ऱॆव्वुलहु मिल्लाद शीऱ्ऱत्तान्
वॆव्विलैवे लिरावणताम् विण्णुलह मुदलाय
ऎव्वुलहु मुडैयानुक् कुडन्पिऱन्देन् यानॆन्ऱाळ् 335

अ उरै केट्टु–वह वचन सुनकर; अटल् अरक्कि–सशक्त राक्षसी ने; ऎन्ऩै नी अऱियायो–मुझे नहीं पहचानते क्या; ऎ उलकुम्–सभी लोकों में; तॆव् उरै ऎन्ऱु इल्लात–जिसके शत्रु नहीं होते (सभी हराये गये हैं); चीऱ्ऱत्तान्–जो क्रोधी है; वॆम् इलै वेल्–भयंकर पत्राकार सिर वाला भालाधारी; इरावणन् आम्–रावण कहलानेवाले; विण् उलकम् मुतल् आय–स्वर्गलोक आदि; ऎ उलकुम् उटैयानुक्कु–सभी लोकों के स्वामी की; उटन् पिऱन्तेन्–सहोदरा हूँ; यान्–मैं; ऎन्ऱाळ्–कहा। ३३५

वह प्रश्न सुनकर शूर्पणखा को आश्चर्य हो गया। उस क्रूर राक्षसी ने उत्तर में कहा कि क्या तुम मुझे नहीं जानते? मैं उस रावण की बहिन हूँ, जिसका किसी भी लोक में कोई शत्रु नहीं है (क्योंकि उसने शत्रुओं को मिटा दिया है और कोई भी उससे वैर मोल लेने से डरते हैं), जो बड़ा क्रोधी है और जो पत्राकार सिर के भाले का धारी है और जो स्वर्गादि लोकों में हर किसी लोक का स्वामी है। मैं उसकी सहोदरा हूँ। ३३५

तामिरुन्द तहैयरक्कर् पुहलॊळियत् तवमियऱ्ऱ
यामिरुन्द नॆडुञ्जूळऱ् कॆन्शेयवन् दायॆन्तलुम्
वेमिरुन्दै यॆन्नक्कनलु मॆरिहाम वॆम्बिणिक्कु
मामरुन्दै नॆरुनलिनुम् वन्दिलॆनो यानॆन्ऱाळ् 336

तकै अरक्कर्–निषिद्ध राक्षस; ताम् इरुन्त–जहाँ रहते हैं; पुकल् ऒऴिय–उन स्थानों को छोड़कर; याम्–हम; तवम् इयऱ्ऱ–तपस्या करते हुए; इरुन्त–जहाँ रहते हैं; नॆटुम् चूऴल्–इस विशाल आश्रम में; ऎन् चॆय वन्ताय्–क्या करने आई; ऎन्तलुम्–पूछने पर; वेम् इरुन्तै अन्न–कोयले के समान; कनलुम्–जलनेवाले; ऎरि काम–तापक काम रूपी; वॆम् पिणिक्कु–तपानेवाले भयंकर रोग की; मा मरुन्ते–श्रेष्ठ औषध; नॆरुनलिनुम्–कल भी; यान् वन्तिलॆनो–मैं नहीं आई थी क्या; ऎन्ऱाळ्–पूछा। ३३६

तब श्रीराम ने पूछा कि निषिद्ध राक्षसों के वासस्थानों को छोड़कर इस श्रेष्ठ आश्रम में तुम क्यों आयी, जहाँ हम तपस्या कर रहे हैं ? उसके उत्तर में शूर्पणखा श्रीराम से बोली— अग्नि में जलते कोयले के समान तपानेवाले काम रूपी रोग की श्रेष्ठ औषध ! क्या तुम भूल गए कि मैं कल भी आयी थी। कल आयी थी न ? । ३३६

शॅङ्गयल्पोऱ्	करुनॅडुङ्गट्	टेमरुदा	मरैयुऱैयुम्
नङ्गैयिव	रॅन्ननॅरुनल्	नडन्दवरो	नामॅन्नक्
कॊङ्गैहळुङ्	गुऴैहादुङ्	कॊडिमूक्कुङ्	गुऱैत्तऴित्ताल्
अङ्गणर	शेयोरुवरक्	कऴियादो	वऴहॅन्ऱाळ् 337

चॅम् कयल् पोल्–लाल 'कयल' मीनों के समान; करु नॅटुम् कण्–काली और आयत आँखों वाली; तेमरु तामरै–शहद से युक्त कमल पर; उऱैयुम्–रहनेवाली; नङ्कै अॅन्न–श्रीलक्ष्मीदेवी के समान; नॅरुनल्–कल; नटन्तवरो–आई जो थी; नाम् अॅन्न्न–वही हम है (तुम हो) क्या, यह पूछने पर; अरचे–राजा; कॊङ्कैकळुम्–स्तन और; कुऴै कातुम्–लचकदार कान; कॊटि मूक्कुम्–और लता-समान नाक को; कुऱैत्तु अऴित्ताल्–काटकर दूर करने से; अङ्कण्–तब; अऴकु अऴियातो–सौंदर्य मिट नहीं जायगा क्या; अॅन्ऱाळ्–पूछा। ३३७

श्रीराम ने कहा— ओफ़ ओह ! कल जो श्रीलक्ष्मी के समान लाल कयल-सी आँखों वाली कमलनिवासिनी है, इधर आयी, वह तुम्हीं हो क्या ? शूर्पणखा ने निष्ठुरता से कहा कि लटकनेवाले कानों को और लता-समान नाक को काट दिया गया तो क्या सौन्दर्य मिट नहीं जायगा ? (कल और आज के रूप में अन्तर क्या नहीं आ जायगा ?) । ३३७

मुरन्मूऱ	वलनिळैय	मॉय्म्बिनान्	मुहनोक्कि
वीरवॅहुण्	डनैयिवडन्	विडुहादुङ्	गॉडिमूक्कुम्
ईरनिनैन्	दिवळिऴैत्त	पिऴैयॅन्नॅन्	ऱिरैवित्तवच्
चूरनॅडुन्	दहैयवत्तै	यडिवणङ्गिच्	चॊल्लुवान् 338

इऱै–भगवान श्रीराम के; मूरल् मरुवलन्–मन्दहास के साथ; इळैय मॉय्म्पिनान्–पराक्रमी छोटे भाई के; मुकम् नोक्कि–मुख को देखकर; वीर–वीर; इवळ् तन्–इसके; विटु कातुम्–लटकनेवाले कानों और; कॊटि मूक्कुम्–लम्बी नाक को; वॅकुण्टत्तै–क्रोध करते हुए; ईर–काटने के लिए; इवळ् नितैन्तु इऴैत्तत–इसने सोचकर जो किया; पिऴै–वह अपराध; अॅन्–क्या; अॅन्ऱु वित्तव–यह पूछने पर; चूर नॅटुम् तकै–शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण; अवत्तै अटि वणङ्कि–उनको पैरों पर नमस्कार करके; चॊल्लुवान्–बोले। ३३८

प्रभु श्रीराम को हँसी आ गयी। मन्दहास के साथ उन्होंने अपने भाई लक्ष्मण से प्रश्न किया कि वीर ! इसके लटकते कानों और दीर्घ नाक को गुस्से के साथ इस तरह काटो, ऐसा इसने जान-बूझकर क्या अपराध

किया ? शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण ने श्रीराम को नमस्कार करके यों उत्तर दिया। ३३८

तेट्टन्दान् वाळॅयिऱ्ऱिऱ् ऱिन्नवो तीविनैयोर्
कूट्टन्दान् पुऱत्तुळदो कुऱित्तपोरु ळऱिन्दिलॅन्नाल्
नाट्टन्दा नॅरियुमिळ नल्लाण्मेऱ् पॉल्लादाळ्
ओट्टन्दा ळरिदिनिव ळुयिर्हवर्न्दा ळॅनवन्दाळ् 339

तेट्टम् तान्–इसका इधर खोजते हुए आना; वाळ् ऍयिऱ्ऱिल् तिन्नवो–(वक्र और) उज्ज्वल दाँतों से काटकर खाने के लिए था, या; ती विनैयोर्–नृशंसकारी; कूट्टम् तान्–राक्षसों का दल ही; पुऱत्तु उळतो–पास रहता है; कुऱित्त पॉरुळ्–जो उद्देश्य ले आई थी, वह बात; अऱिन्दिलॅन्–मैंने नहीं जाना; नाट्टम् तान् ऍरि उमिळ–आँखों से अग्नि प्रकट करते हुए; पॉल्लाताळ्–यह क्रूरी; नल्लाळ् मेल्–साध्वी (भाभी) पर; अरितिन्–अप्रत्याशित रीति से; इवळ् उयिर् कवर्न्ताळ् ऍन्न–इनका प्राण हर लिया हो, ऐसा; ओट्टन्ताळ्–भागती; वन्ताळ्–आई। ३३९

प्रभु ! इसका उद्देश्य क्या था ? भाभी की खोज में यह आयी—उनको अपने सफ़ेद दाँतों से चबाकर खाने के लिए ? या क्रूरकर्मा राक्षसों का दल पास में कहीं है ? यह क्या करने आयी —मैं जान नहीं पाया। पर यह बुरी स्त्री आँखों से अग्नि निकालती हुई साध्वी देवी पर ऐसी झपटी कि मानो उसने उनकी जान ही हर ली हो ! वह तीव्र गति से भागती आयी। ३३९

एऱ्ऱवळै वरिशिलैयो नियम्बामुन् निहलरक्कि
शेऱ्ऱवळै तन्कणव नरुहिरुप्पच् चिनन्दिरुहिच्
चूऱ्ऱवळै तुनियुळक्कुन् दुऱैहॅळ्नीर् वळनाड
माऱ्ऱवळैक् कण्डक्का लळलादो मनमॅन्ऱाळ् 340

एऱ्ऱ–(हाथ में) धृत; वळै वरि चिलैयोन्–झुके हुए और बन्धनयुक्त धनुष वाले (लक्ष्मण) के; इयम्पा मुन्–कहने से पूर्व ही (कहते ही); इकल् अरक्कि–वैरसना राक्षसी; चूल् तवळै–गाभिन मेंढकी; तन् कणवन् अरुकु–अपने पति मेंढक के पास; चेऱ्ऱु वळै इरुप्प–कीचड़ में एक शंखकीट को रहते देख; चिनम् तिरुकि–कोप में बढ़कर; तुनि उळक्कुम्–बहुत रूठकर जहाँ दुखी होती है; तुऱै कॅळ्–ऐसे घाटों से भरे; नीर् नाटा–जलाशय जिसमें रहते हैं, ऐसे देश के अधिपति; माऱ्ऱवळै कण्ट काल्–सौत को देखकर; मनम् अळलातो–मन तप्त नहीं होगा क्या; ऍन्ऱाळ्–कहा। ३४०

झुके हुए और बन्धनयुक्त धनुष को हाथ में जो लिये रहे, उन लक्ष्मण के यह कह चुकने के पूर्व ही शूर्पणखा बोल उठी। हे अयोध्या देश के अधिपति, जहाँ ऐसे जलाशय बहुतायत से पाये जाते है, जिनमें गाभिन मेंढकियाँ कीच में अपने मेंढक के पास शंखकीट को देखकर मान करके बहुत दुखी हो रहती है ! सौत को देखने पर किसी का मन जल नहीं उठेगा

क्या ? (इस पद में सम्बोधन जो है, उसमें सौत के मनोभाव की चर्चा अप्रत्यक्ष रूप से हुई है। यह तमिऴ काव्य की विशेषता है। शूर्पणखा अपने को मेंढकी और सीताजी को मादा शंखकीट मानती है। यानी अपने को पत्नी और सीता को सौत।)। ३४०

पेडिप्पोर् वल्लरक्कर् पॅरुङ्गुलत्तै यॉरुङ्गविप्पान्
तेडिप्पोन् दनमिन्रु तीमाऱ्ऱज् जिलविळम्बि
वीडिप्पो हादेयिव् वॅव्वनत्तै विट्टहल
ओडिप्पो वॅन्ऱुरैत्त वुरैहडन्दार् कवळुरैप्पाळ् 341

पेटि पोर्–भयजनक युद्ध में; वल्–समर्थ; अरक्कर् पॅरुम् कुलत्तै–राक्षसों के बड़े कुल को; ऑरुङ्कु अविप्पान्–एक साथ मिटाने के लिए; तेटि पोन्तनॅम्–ढूँढ़ते हुए हम आये हैं; इन्ऱु–अब; ती माऱ्ऱम्–बुरी बातें; चिल विळम्पि–कुछ कहकर; वीटि पोकाते–मिटो मत; इ वॅव् वनत्तै विट्टु–इस प्यारे वन को छोड़कर; अकल–दूर; ओटि पो–भाग जाओ; ऍन्ऱु उरैत्त–यह जिन्होंने कहा; उरै कटन्तार्क्कु–उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम से; अवळ् उरैप्पाळ्–वह बोली (उत्तर में)। ३४१

श्रीराम ने गम्भीरता से चेतावनी दी। हम इधर उन भयंकर युद्ध-समर्थ राक्षसों को एक साथ समूल नाश करने आये हैं। हम उन्हीं की खोज में इधर रहते हैं। अब तुम कुछ अंड-संड कहकर अपना अन्त मत करा लो। चलो इस प्यारे आश्रम को छोड़कर दूर भाग जाओ। उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम के ये वचन सुनकर शूर्पणखा उन्हीं को उपदेश देने लगी। ३४१

नरैतिरैयॉन् ड्रिल्लाद नान्मुहत्ते मुदलमरर्
करैयिड्रन्दो रिरावणऱ्कुक् करनिरुक्कुङ् गुडियन्ऱो
विरैयुमदु नन्ऱन्ऱु वेऱाह यानुरैक्कुम्
उरैयुळदु नुमक्कुरुदि युणरुदिरे लॅन्ऱुरैप्पाळ् 342

नरै तिरै–बाल का पकना और खाल का झुर्रियों सहित हो जाना; ऑन्ऱु इल्लात–कुछ जिनका नहीं है; नान्मुकत्ते मुतल्–वे चतुर्मुख आदि; अमरर्–देव; करै इऱन्तोर्–असीम लोग; इरावणऱ्कु–रावण को; करन् इरुक्कुम्–कर देनेवाले; कुटि अन्ऱो–प्रजा है न; विरैयुम् अतु–तुम जिसके करने में त्वरा दिखाते हो वह; नन्ऱु अन्ऱु–अच्छा नहीं है; उरुति उणरुतिरेल्–अपना हित चाहते हो तो; नुमक्कु–तुम लोगों को; वेऱु आक–अलग; यान् उरैक्कुम् उरै–मेरे समझाने की एक बात; उळतु–है; ऍन्ऱु–कहकर; उरैप्पाळ्–बताने लगी। ३४२

ब्रह्मा आदि देव सब, जो कभी बुढ़ापे को प्राप्त नहीं होते, जब बाल पक जाते हैं और खाल पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, रावण को कर देनेवाले प्रजाजन हैं। यह तुम नहीं जानते क्या ? तुम जो काम करने में तत्पर

रहते हो और जल्दी दिखाते हो, वह तुम्हारे हित में नहीं होगा। अगर तुम अपना भला सोचो तो मुझे तुमसे विशेष रूप से कहने की एक बात है। सुनो। वह कहने लगी। ३४२

आक्करिय मूक्कुङ्गै यरियुण्डा ळॅन्ऱारै
नाक्करियुन् दयमुहनार् नाहरिह रल्लामै
मूक्करिन्दु नुङ्गुलत्तै मुदलरिन्दी रिन्ऱियुमक्कुप्
पोक्करिदिव् वळहैयॅल्लाम् पुल्लिडैये युहुत्तीरे 343

उङ्कै–तुम्हारी छोटी बहिन; आक्कु अरिय–फिर से ठीक कराने के लिए कठिन रीति से; मूक्कु अरि उण्टाळ्–नाक की कटी हो गई; ॲन्ऱारै–यह समाचार कहनेवाले की; नाक्कु अरियुम्–नाक जो काट देंगे वे; तयमुकत्तार्–दशग्रीव; नाकरिकर् अल्लामै–दाक्षिण्य दिखानेवाले नही है, इसलिए; मूक्कु अरिन्तु–नाक काटकर; नुम् कुलत्तै–अपने कुल को; मुतल् अरिन्तीर्–जड़ से काट लिया (तुमने); इन्ऱि–अब; उमक्कु पोक्कु अरितु–तुम्हारा कोई मार्ग नहीं है; इ अळकु ॲल्लाम्–यह सब सौंदर्य; पुल् इटैये–घास के मध्य; उकुत्तीर्–गिरा दिया (तुमने)। ३४३

कोई जाकर दशमुख से कहे कि तुम्हारी बहिन की नाक एकदम कट गयी और उसका कोई इलाज नहीं हो सकता तो झट वे उस कहनेवाले की जीभ काट देंगे। ऐसे वे दशग्रीव दया-दाक्षिण्य दिखानेवाले नहीं हैं। तुमने मेरी नाक क्या कटवायी, अपने कुल को जड़ से काट दिया समझो! अब तुम्हारे बचाव का कोई मार्ग नहीं है। हन्त! अपना यह सारा सौन्दर्य तुमने धूल में मिला लिया! (घास में छितराना मुहावरा है।)। ३४३

वान्गाप्पोर् मण्गाप्पोर् मानाहर् वाळुलहम्
तान्गाप्पो रिन्ऱित्तङ्ग डलैकात्तु निन्ऱुङ्गळ
ऊन्गाक्क वुरियार्या रॅन्नैयुयिर् नीर्हाक्किन्
यान्गाप्पॅ नल्लालव् विरावणना रुळरॅन्ऱाल् 344

इरावणनार् उळर्–रावण है; ॲन्ऱाल्–इसलिए; नीर् ॲन्नै उयिर् काक्किन्–तुम मेरे प्राण बचाओगे तो; यान् काप्पॅन्–मैं तुमको (रावण से) बचा लूँगी; अल्लाल्–नहीं तो; वान् काप्पोर्–स्वर्गपालक; मण् काप्पोर्–भूपति; मा नाकर् वाळ्–बड़े नाग जहाँ रहते हैं; उलकम् तान्–उस लोक के; काप्पोर्–राजा लोग; इन्ऱि–अब; तङ्कळ् तलै कात्तु–अपने सिरों को बचा लेकर; उङ्कळ् ऊन् काक्क–तुम्हारा शरीर भी बचाने को; उरियर् यार्–क्षमता रखनेवाले कौन हैं। ३४४

रावण हैं, इसका अर्थ है कि तुम बच नहीं सकते। हाँ, तुम मेरी बात मानकर मेरे प्राण बचाओगे तो मैं तुम्हें बचा सकूँगी। नहीं तो स्वर्ग, भूमि या नागलोक के राजाओं में अपने सिरों को बचा लेकर तुम्हारा शरीर भी बचा ले, ऐसे शक्तिसम्पन्न कौन होते हैं? (कोई नहीं!)। ३४४

कावऱ्ऱित्‌ कऱ्पमैन्दार्‌ तम्बॅरुमै ताङ्गळ्ऱार्‌
आवऱ्पे रत्बिना लऱ्हिन्ऱे नामन्ऱो
देवर्क्कुम्‌ वलियान्ऱन्‌ ऱिरुत्तङ्गै याळिवळीण्‌
डेवर्क्कु वलियाळॅन्‌ ऱिळैयानुक्‌ कियम्बीरो 345

तिण्‌ कावल्‌ कऱ्पु अमैन्तार्‌–अपने स्त्रीत्व का सबल रक्षक जो पातिव्रत्य है, उससे युक्त पतिव्रता स्त्रियाँ; तम्‌ पॅरुमै–अपनी बड़ाई; ताम्‌ कळ्ऱार्‌–खुद नहीं कहतीं; आवल्‌ पेर्‌ अन्पित्ताल्‌–इच्छा और गम्भीर प्रेम के कारण; अऱ्किन्ऱेन्‌ आम्‌ अन्ऱो–इन बातों को खोलकर कह रही हूँ न; इवळ्‌–यह; तेवर्क्कुम्‌ वलियान्‌ तन्‌–देवों से भी अधिक शक्तिशाली की; तिरु तङ्कैयाळ्‌–प्यारी बहिन है; ईण्टु–इधर; एवर्क्कुम्‌ वलियाळ्‌–किसी से भी अधिक बलशालिनी है; ॲन्ऱु–ऐसा; इळैयानुक्कु–अपने भाई को; इयम्पीरो–नहीं समझाओगे क्या। ३४५

यह मेरे लिए बहुत संकोच की बात है। अपने स्त्रीत्व की रक्षा में जो पातिव्रत्य में दृढ़ है, वे कुलीन स्त्रियाँ अपनी बड़ाई अपने मुख से नहीं कह सकतीं। पर मेरा तुम पर इच्छा और प्रेम अगाध है। इसलिए मैं साफ़-साफ़ ये बातें कह रही हूँ। तुम अपने भाई को समझाओ कि यह शूर्पणखा देवों से भी अधिक शक्तिशाली रावण की भगिनी है और वह स्वयं किसी से भी बढ़कर बलवान है। यह नहीं बताओगे क्या ? । ३४५

माप्पोरिऱ्‌ पुऱङ्गाप्पॅन्‌ वान्शुमन्दु शॅलवल्लेन्‌
तूप्पोलक्‌ कनिपलवुञ्‌ जुवैयुडैय तरवल्लेन्‌
काप्पारैक्‌ कॅत्तेनीर्‌ करुदियदे तरुवेनिप्‌
पूप्पोलु मॅय्यिवळाऱ्‌ पॉरुळॅन्ने पुहल्वीराल्‌ 346

मा पोरिल्‌–घोर युद्ध में; पुऱम्‌ काप्पॅन्‌–पास रहकर रक्षा करूँगी; वान्‌–आकाश में; चुमन्तु चॅल वल्लेन्‌–ढोते हुए ले जा सकूँगी; तू पोल–मांस के समान; चुवै उटैय–स्वादिष्ट; कनि पलवुम्‌–फल अनेक; तर वल्लेन्‌–लाकर दे सकूँगी; काप्पोरै कैत्तु–रक्षक को मिटाकर; ॲन्‌ नीर्‌ करुतियते–तुम जो चाहते हो, वह; तरुवेन्‌–लाकर दूँगी; इ पू पोलुम्‌ मॅय्‌–इस सुमन सदृश शरीर वाली; इवळ्‌ आल्‌–इस स्त्री से; पॉरुळ्‌ ॲन्ने–लाभ क्या है; पुकल्वीर्‌–बताओ। ३४६

और भी सुनो। किसी से घोर युद्ध छिड़ा तो मैं तुम्हारे पास रहकर तुमको बचाऊँगी। तुमको उठाकर आकाश में संचार कर सकूँगी। श्रेष्ठ मांस के समान स्वादिष्ट फल संग्रह कर ला दूँगी। समझो कि तुम्हारा मन किसी वस्तु पर ललचाता है। उस वस्तु को, उसकी रक्षा करनेवाला कोई भी हो उसे मारकर, तुम्हारे लिए ला दूँगी। ऐसी शक्ति-शालिनी मुझको छोड़कर तुम इस सुमन-समान कोमल शरीर वाली के पास क्यों रहो ? इस अबला से तुम्हारा क्या मिलेगा ? बताओ तो देखें। ३४६

कुलत्तालु नलत्तालुङ् गुरित्तनवे कोणर्दक्क
वलत्तालु मदियालुम् वडिवालु मडत्तालुम्
निलत्तारुम् विशुम्बारु नेरिळैया रॅन्नैप्पोल्
शॊलत्तानिङ् गुरियारैच् चॊल्लीरो वल्लीरेल् 347

कुलत्तालुम्–जाति से; नलत्तालुम्–गुणों से; कुरित्तनवे–तुमसे निर्दिष्ट वस्तुएँ; कोणर् तक्क–लाने की; वलत्तालुम्–क्षमता में; मतियालुम्–बुद्धि में; वटिवालुम्–रूप-सौंदर्य में; मटत्तालुम्–सुकुमारता में; निलत्तारुम्–भूलोकवासी; विचुम्पारुम्–स्वर्गवासी; ऍन्नै पोल् नेरिळैयार्–मेरे समान कोई स्त्री; चॊल तान्–कहने के लिए; उरियारै–योग्य हो तो उसे; वल्लीरेल्–कह सकते हो तो; चॊल्लीर्–कहो। ३४७

जाति, श्रेष्ठ गुण, तुम्हारी इच्छित वस्तु ला देने की क्षमता, बुद्धि, रूप-सौन्दर्य और सुकुमारता में मेरे समान भूलोक, स्वर्ग और नागलोक के वासियों द्वारा मान्य योग्यता रखनेवाली कोई स्त्री हो और तुम उसे जानते हो तो वताओ तो सही ! । ३४७

पोक्किनी रॅन्नाशि पोय्त्तॅन्नीर् पॊरुक्किलिरेल्
आक्कुवॅन्नोर् नॊडिवरैयि लळ्हमैवॅ नरुळ्हूरुम्
पाक्कियमुण् डॅनिलदनाल् पॅण्मैक्कोर् पळुदुण्डो
मेक्कुयरु नॆडुमूक्कु मडन्दैयर्क्कु मिहैयन्ड्रो 348

ऍन् नाचि पोक्किनीर्–मेरी नाक कटा दी; पोय्त्तु ऍन्–गया क्या; नीर् पॊरुक्किलिरेल्–तुम इसे सह नहीं सको तो; अरुळ् कूरुम् पाक्कियम् उण्टु–कृपा मिलने का भाग्य दिया; ऍनिल्–तो; ओर् नॊटि वरैयिल्–एक ही क्षण के अन्दर; आक्कुवॅन्–वना लूंगी; अळ्कु अमैवॅन्–सौंदर्यवती वन जाऊँगी; अतनाल्–बिना नाक की रह जाऊँ तो; पॅण्मैक्कु–स्त्रीत्व में; ओर पळिप्पु उण्टो–कमी होगी क्या; मेक्कु उयरुम्–उभरकर उगनेवाली; नॆटु मूक्कुम्–दीर्घ नाक भी; मटन्तैयर्क्कु–नारियों के लिए; मिकै अन्ड्रो–अनावश्यक नहीं है क्या। ३४८

तुमने मुझे नासिका से हीन कर दिया। छोड़ दो ! उससे क्या नष्ट हुआ ? तो भी अगर तुमको मेरा नासिका बिना रहना असह्य हो तो फिर से अपनी नाक पूर्ववत वना लूंगी इस शर्त पर कि तुम मुझ पर कृपा करो। वचन दो, देखो एक क्षण में ठीक हो जायगा। वही नहीं तुम जैसा रूप चाहो वैसा रूप ले लूँगी। नाक के न रहने से क्या स्त्रीत्व में कोई कमी होगी ? उभरकर उगी हुई लम्वी नाक आवश्यकता से अधिक नहीं है ? । ३४८

विण्डारे यल्लारो वेण्डादार् मनम्वेण्ड
उण्डाय कादलिलॅन् नुयिरॅन्ब दुमदन्ड्रो

कण्डारे कादलिक्कुङ् गट्टळहुम् विडमन्ऱो
कॉण्डारे कॉण्डाडु मुरुप्पॅर्ऱाऱ् कॉळ्ळीरो 349

वेण्टातार्–जिनको हम नहीं चाहते; विण्टारे अल्लारो–वे न हमारे शत्रु बन जाते हैं; मत्तम् वेण्ट–मन के लगने से; उण्टाय–जो उत्पन्न होता है; कातलिन्–उस प्रेम से; ॲन् उयिर्–मेरे प्राण; ॲन्पतु–जो है; उमतु अन्ऱो–वे तुम्हारे नहीं है क्या; कण्टारे कातलिक्कुम्–जो भी देखे वह प्रेम करे; कट्टळकुम्–ऐसा रूप-सौंदर्य भी; विटम् अन्ऱो–विष नहीं होगा क्या; कॉण्टारे कॉण्टाटुम्–जिसने अपना बना लिया है, वही सराहे; उरु पॅऱ्ऱाल्–ऐसा रूप धरूँ तो; कॉळ्ळीरो–तुम नहीं अपनाओगे क्या। ३४९

लोग, जिनको हम पसन्द नहीं करते, हमारे शत्रु हो जाते हैं। पर मेरा मन तुम पर आसक्त है, इसलिए तुमसे मेरा गाढ़ा प्रेम हो गया है और इससे क्या मेरे प्राण भी अब तुम्हारे नहीं हुए? जो भी देखे, वही अनुरक्त हो जाय, ऐसा रूप-सौन्दर्य भी विष (के समान हानिकारक) नहीं है? जिसकी मैं हो गयी, उसको जो भावे वही रूप मैं लूँ तो क्या तुम मुझे नहीं अपनाओगे? । ३४९

शिवनुमलर्त् तिशैमुहनुन् दिरुमालुन् दॅऱुकुलिशत्
तवनुमॅळुन् दॉन्ऱाहि निन्ऱन्न वुरुवोने
पुवनमनैत् तैयुमीरुवन् पूङ्गणैया लुयिर्वाङ्गुम्
अवनुमुनक् किळैयानो विवनेपो लरुळिलन्ऱाल् 350

चिवतुम्–शिवजी और; मलर् तिचै मुकतुम्–कमलासन चतुर्मुख; तिरुमालुम्–और श्रीविष्णु; तॅऱु कुलिचत्तु अवनुम्–शत्रुसंहारक वज्र रखनेवाला वह (इन्द्र); ॲळुन्तु–सब अपना-अपना अलग शरीर छोड़कर; ऑन्ऱु आकि–एकाकार बनकर; निन्ऱु अन्न–खड़े हो (मानो); उरुवोने–ऐसे दर्शन देनेवाले; पुवनम् अनैत्तैयुम्–सारे भुवनों को; ऑरु वन् पूम् कणैयाल्–एक असरदार पुष्पशायक से; उयिर् वाङ्कुम्–प्राण हरनेवाला; अवतुन्–वह (मनोज) भी; इवने पोल्–इस तुम्हारे भाई के समान; अरुळ् इलन्ऱाल्–दयाहीन लगता है, इसलिए; उनक्कु इळैयानो–(वह मन्मथ भी) तुम्हारा लघु-भ्राता है क्या। ३५०

हे राम! तुम ऐसे रूपवान हो मानो शिव, कमलासन, श्रीविष्णु और संहारक वज्रपाणी सबने अपना-अपना रूप त्यागकर एकाकार होकर तुम्हारा रूप लिया हो! सुन्दर राम! तुमसे एक बात पूछूँ? अपने एक अपार दुखदायी पुष्पास्त्र से सारे भुवनों के प्राण हरनेवाला (मर्मांतक पीड़ा पहुँचानेवाला) मन्मथ भी तुम्हारे इस भाई के समान कृपालु नही रहता। तो क्या वह भी तुम्हारा ही छोटा भाई है? । ३५०

पॉन्नुरुवप् पॉरुहळलीर् पिळैकाणीर् मूक्करिवान् पॉरुळ्वेऱुण्डो
ॲन्नुरुवैक् कैक्कॉण्डी रिरुन्दॉळियु नम्मरुङ्गे येहाळप्पाल्

पिऴ्त्तिवळै ययलीरुवर् पारारा मैन्वरिन्दोर् पिऴैशॅय्दीरो
अत्तनदनै यरिन्दनऱो वन्बिरट्टि कॊण्डदुना नऱिवि लेत्तो 351

पॊन् उरुव–स्वर्ण की; पॊरु कऴलीर्–वीरपायलधारी; पिऴै काणीर्–तुम अपराध करनेवाले नहीं हो; ऍन् उरुवै–मेरे शरीर को; कै कॊण्टीर्–अपने अधीन कर लिया है; नम् मरुङ्के–हमारे ही पास; इरुन्तु ऒऴियुम्–ठहर जायगी; पिन्तै–फिर; अप्पाल् एकाळ्–कहीं नहीं जायगी; इवळै अयल् ऒरुवर् पारार् आम्–इस पर कोई अन्य दृष्टि नहीं डालेगा; ऍन्न अरिन्तीर्–ऐसा सोचकर ही मेरी नाक काट ली है; मूक्कु अरिवान् पॊरुळ्–(नहीं तो) नाक काटने का अर्थ; वेऱु उण्टो–दूसरा है क्या; पिऴै चॅय्तीरो–तुमने कोई गलती की है क्या (नहीं); अन्न तत्तै–उसको; अऱिन्तु अन्ऱो–जानकर ही तो; नान् अन्पु इरट्टि कॊण्टतु–दुगुना प्रेम रखती; नान् अऱिवु इलेत्तो–क्या मैं बुद्धिहीन हूँ। ३५१

स्वर्णनिर्मित वीर पायलधारी! तुम लोग अपराध करनेवाले नहीं हो। तुमने मेरे शरीर और रूप को अपना वना लिया है! 'यह हमारे पास रह जायगी। अब उसके पास कोई चारा नहीं है। यह विकृत रूप लेकर वह कहीं नहीं जा सकेगी। इसको कोई दूसरा नहीं देखेगा।' —यही सोचकर तुमने मेरी नाक काट दी है। नहीं तो मेरी नाक काट देने का कोई प्रयोजन है क्या? तव क्या तुम अपराधी बन सकोगे? नहीं। उस सच्चे अभिप्राय को मैं जान गयी। तभी तो मेरा तुम पर प्रेम दुगुना हो गया! क्या मैं बुद्धिहीन हूँ? । ३५१

वॅप्पऴिया नॅडुवॅहुऴि वेलरक्क रीदऱिन्दु वॅहुण्डु नोक्किन्
अप्पऴिया लुलहत्तैत्तु मुम्बॊरुट्टा लऴिन्दनवा मऱत्तै नोक्किन्
ऒप्पऴियच् चॅय्हिला रुयर्हुलत्तै तोन्ऱिना रुणर्न्दु नोक्किन्
इप्पऴियैत् तुडैत्तुदवि यिन्निदिरुत्ति रॅन्नॊडुमॅन् ऱिरैञ्जि निन्ऱाळ् 352

वॅप्पु अऴिया–उग्रता से मिले; वॅकुऴि–क्रोधी; नॅटुवेल् अरक्कर्–लम्बे भालों के धारक राक्षस; ईतु अऱिन्तु–यह जानकर; वॅकुण्टु नोक्किन्–कोप करके देखें तो; अ पऴियाल्–उनके वदला लेने से; उलकु अत्तैत्तुम्–सारे लोक; उम् पॊरुट्टाल्–तुम्हारे कारण; अऴिन्तन आम्–मिट जाते होंगे; अऱत्तै नोक्किन्–धर्म देखा जाय तो; उयर् कुलत्तु तोन्ऱिनीर्–उच्च कुल में जात तुम; ओप्पु अऴिय–लोक-असम्मत कार्य; चॅय्किलीर्–करोगे नहीं; उणर्न्तु नोक्कि–खूब सोचकर देखकर; इ पऴियै तुटैत्तु–इस अपमान को दूर करके; उतविट–सहायता करने के लिए; ऍन्नॊटुम् इनितु इरुत्तिर्–मेरे साथ सुख से रह जाओ; ऍन्ऱु इरैञ्चि निन्ऱाळ्–ऐसी विनय कर खड़ी रही। ३५२

राक्षस उग्र क्रोधी हैं। वे यह जानेंगे तो कुपित होंगे और बदला लेने आयँगे। उनके वदला लेने के सिलसिले में सारे लोक मिट जायँगे और तुम ही उस नाश के निमित्त रह जाओगे। तुम लोग उच्चकुल-जात हो! लोकों का असम्मत कार्य नहीं करोगे। धर्म की वात सोचो और खूब

विचार करो। मेरा अपमान दूर करके मेरी सहायता करने के लिए मेरे साथ सुखपूर्वक रह जाओ। —शूर्पणखा ने यह प्रार्थना की और खड़ी रही। ३५२

नाडयरत् तुयरिऴैत्त नवैयरक्कि निन्नन्नै तन्नै नल्हुम्
ताडहैये युयिर्हवर्न्द शरमिरुन्द दन्नॖियुनान् ऱवमेऱ् कॊण्ड्
तोडशैयत् तुरुमलर्त्ता रिहलरक्कर् कुलन्दॊलैप्पान् ऱोन्ऱि निन्ऱेन्
पाडहल पुल्लॊऴुक्किन् वल्लरक्कि यॆन्ऱिरैवन् पहरुम् बिन्नुम् 353

नाट्ट अयर–संसार को त्रस्त करते हुए; तुयर् इऴैत्त–अत्याचार जो करती रही; नवै अरक्कि–अपराधिनी राक्षसी; निन् अन्नै तन्नै नल्कुम्–तुम्हारी माता की जननी; ताटकैयै–ताड़का के; उयिर् कवर्न्त–प्राण हर चुका वह; चरम् इरुन्ततु–शर मेरे पास अब भी है; अन्ऱियुम्–अलावा; नान्–मैं; तवम् मेल् कॊण्टु–तपोव्रती बनकर; तोटु अचै–दल-सहित; अ मलर् तुऱु तार्–पुष्पों की बनी मालाधारी; इकल् अरक्कर्–शत्रु राक्षसों का; कुलम् तॊलैप्पान्–कुल का नाश करने के लिए; तोन्ऱि निन्ऱेन्–आया हूँ (इधर); पुल् ऒऴुक्किन्–नीच चरित्र की; वल् अरक्कि–बलवान राक्षसी; पाटु अकल–दूर चली जाओ; ऎन्ऱु–कहकर; इऱैवन्–प्रभु श्रीराम; पिन्नुम् पकरुम्–आगे बोले। ३५३

श्रीराम ने डाँट बतायी। री राक्षसी! लोकों को त्रस्त करते हुए ऊधम जो मचाती रही, उस तुम्हारी माता की माता ताड़का का वध मैंने ही किया था। जिस शर से उसको मैंने मारा वह शर अब भी मेरे पास सुरक्षित है। और भी ध्यान रखो। मैं तपोव्रती होकर इधर आया हूँ पुष्पमालाधारी उन वैरी राक्षसों के कुल को ही मिटाने हेतु! नीच चरित्र वाली क्रूर राक्षसी! दूर हट जाओ, भागो, भागो! फिर प्रभु और भी बोले। ३५३

तरैयळित्त तनिनेमित् तयरदन्ऱन् पुदल्वर्यान् ताय्शॊऱ् ऱाङ्गि
विरैयळित्त कान्बुहुन्देम् वेदियरु मादवरुम् वॆण्ड निन्ऱ
करैयळित्तऱ् करियपडैक् कडलरक्कर् कुलन्दॊलैत्तुक् कण्डाय् पण्डै
वरैयळित्त कुलमाड नहर्पुहुवे मिवैतॆरिय मनक्कॊ ळॆन्ऱान् 354

याम्–हम; तरै अळित्त–पृथ्वीपालक; तनि नेमि–एकचक्राधिपति; तयरतन् तन् पुतल्वर्–दशरथ के पुत्र हैं; ताय् चॊल् ताङ्कि–माता का वचन मानकर; विरै अळित्त–सुवास बरसानेवाले; कान् पुकुन्तेम्–जंगल में आये; वेतियरुम्–वेदज्ञ और; मा तवरुम्–महान तपस्वियों के; वेण्ट–प्रार्थना करने से; निन्ऱ–यहाँ स्थित; करै अळित्तऱ्कु अरिय–अपार; कटल् पटै अरक्कर्–समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों का; कुलम् तॊलैत्तु–दल मिटाकर; पण्टै–प्राचीन; वरै अळित्त–पर्वत-सम; कुल माट नकर्–अधिक संख्या में प्रासादों से पूर्ण (अयोध्या) नगर; पुकुवेम्–पहुँचेंगे; इवै–यह सब; तॆरिय मनम् कॊळ्–खूब जानकर मन में धरो; ऎन्ऱान्–श्रीराम ने समझाया। ३५४

हम उन दशरथ के पुत्र हैं, जो एकचक्राधिकार के साथ भूमि का पालन करते थे। अपनी (सौतेली) माता की आज्ञा सिर पर धारण करके हम सुबास से पूर्ण इस वन में आये। यहाँ के वेदवित ब्राह्मणों और महान तपस्वियों ने हमसे प्रार्थना की। उसको मानकर हमने यहाँ रहनेवाले असीम समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों के दल को मिटा चुककर अपने प्राचीन और पर्वत-सम ऊँचे सौधों से पूर्ण अयोध्या नगर लौट जाने का संकल्प किया है। ये बातें भी तुम ध्यान में रख लो। श्रीराम ने चेतावनी देते हुए यह कहा। ३५४

नॆऱित्तारै शॆल्लाद निरुदरॆदिर् निल्लाद नॆडिय तेवर्
मऱित्तारीण् डिरुवरिवर् मानिडव रॆन्नादु वल्लै याहिल्
वॆऱित्तारै वेलरक्कर् विऱलियक्कर् मुदलिनर्नी मिडलो रॆन्ऱु
कुऱित्तारै यावरैयुम् कॊणरुदिये निन्नॆदिरे कोऱु मॆन्ऱान् 355

नॆऱि तारै चॆल्लात–धर्म-मार्ग पर न जानेवाले; निरुतर्–राक्षसों के; ऍतिर्–सामने; निल्लाते–न खड़े होकर; नॆटिय तेवर्—बड़े-बड़े देव भी; मऱित्तार्–मुड़कर भाग गये; ईण्टु इवर् इरुवर्–यहाँ ये दो; मात्तिटवर्–मनुष्य; ऍन्नातु–यह न सोचकर; वल्लै आकिल्–समर्थ हो तो; वॆऱि तार्–सुबासपूर्ण मालाधारी; ऐ वेल् अरक्कर्–सुन्दर भालों वाले राक्षस; विऱल् इयक्कर्–पराक्रमी यक्ष; मुतलित्तर्–आदि में; नी मिटलोर् ऍन्ऱु कुऱित्तोरै–तुम जिनको शक्तिशाली मानती हो, उन; यावरैयुम्–सभी को; कॊणरुतियेल्–लाओगी, तो; निन् ऍतिरे–तुम्हारे सामने ही; कोऱुम्–मारूँगा; ऍन्ऱान्–श्रीराम ने कहा। ३५५

श्रीराम ने आगे अपनी बात पर उसका विश्वास पैदा करने के लिए कहा— 'धर्म-मार्ग पर न जानेवाले राक्षसों के सामने चिरप्रतिष्ठित देव टिक नहीं सके। लौटकर भाग गये। यहाँ ये दोनों अल्पशक्ति मनुष्य हैं।' तुम ऐसा सोचोगी। ऐसा मत सोचो। तुम्हारे पास सामर्थ्य हो तो जाओ, सुबासपूर्ण मालाधारी राक्षस, शक्तिशाली यक्ष आदि लोगों में जिनको तुम पराक्रमी मानती हो, उन सबों को बुला लाओ। देखो, मैं तुम्हारी आँखों के सामने ही उनको मार दूँगा। ३५५

कॊल्लला मायङ्गळ् कुऱित्तनवे कॊळ्ळलाङ् गॊऱ्ऱ मुऱ्ऱ
वॆल्लला मवरियऱ्ऱुम् विनैयमॆल्लाङ् गडक्कला मेल्वाय् नीङ्गिप्
पल्लॆला मुऱत्तोन्ऱुम् बहुवाय ळॆन्नादु पाऱ्ऱि याहिल्
नॆल्लॆलाज् जुरन्दुदवु नीर्नाड कॆळॆन्ऱु निरुदि कूऱुम् 356

नॆल् ऍलाम् चुरन्तु–धान आदि खाद्य पदार्थ सब पैदा करके; उतवुम्–देनेवाले; नीर् नाट—जल-समृद्ध कोसल देश के राजा; केळ्–सुनो; मेल् वाय् नीक्कि–मुख (अधरों) को हटाकर; पल् ऍलाम्–सारे दाँतों को; उऱ तोन्ऱुम्–खूब प्रकट होने देनेवाले; पकुवायळ्–बड़ा मुख वाली; ऍन्नातु–ऐसा न सोचकर; पाऱ्ऱि आयिन्–

मुझ पर प्रेम की दृष्टि रखोगे तो; कॉल्लल् आम्–मारना हो सकता है; कुरित्तवे मायङ्कळ्–वे जो भी माया सोचेंगे; कॉळ्ळल् आम्–उनको पहले ही समझना सम्भव होगा; कॉर्रम्–विजय; मुर्र–पूरी हमारी हो ऐसा; वॅल्ललाम्–उनको हरा सकते है; अवर् इयर्रुम् विनैयम् ॲलाम्–वे जो भी षड्यन्त्र रचेंगे, उन सबको; कटक्कलाम्–मिटा सकेगे; ॲन्रु–ऐसा; निरुति कूरुम्–निशाचरी ने कहा। ३५६

शूर्पणखा हार मानने के लिए प्रस्तुत नहीं थी। उसने बहस की। धान आदि खाद्य पदार्थ कसरत से पैदा करनेवाले, जलसमृद्ध कोसल देश के अधिपति! सुनो! तुम इस छोटी सी बात को भूल जाओ कि मेरे दाँत बाहर निकले हुए है और मेरा मुख-विवर अधिक बड़ा है। मुझ पर कृपा-दृष्टि रखो तो तुम जिनको मारना चाहते हो, उन राक्षसों को अवश्य मार सकोगे। हम उनके माया कार्यो का पूर्व-ज्ञान प्राप्त करके उन पर पूर्ण रूप से विजय पा सकेगे। उनके सभी षड्यन्त्रों को असफल बना सकेंगे। ३५६

काम्बुरळुन् दोळाळैक् कैविडी रॅन्निनुम्यान् मिहैयो कळ्वर्
आम्बॉरियि लडलरक्क रवरोडे शॅरुच्चॅय्वा नमैन्दी राहिल्
ताम्बॉरियिर् पलमायन् दरुम्बॉरिह ळरिन्दवर्रैत् तडुप्पे नन्रे
पाम्बरियुम् पाम्बिनगा लॅन्नमॉळियुम् पळमॉळियुम् बार्क्कि लीरो 357

काम्पु उरळुम्–बाँस की समानता करनेवाले; तोळाळै–कंधे वाली को; कै विटीर् ॲन्रित्तुम्–नहीं छोड़ोगे तो भी; यान् मिकैयो–मैं अधिक हो जाऊँगी क्या; कळ्वर् आम्–चोर; पॉरि इल्–श्रीहीन; अटल् अरक्कर् आम्–पराक्रमी राक्षसों; अवरोटे–के साथ (विरुद्ध); चॅरु चॅय्वान्–लड़ने के लिए; अमैन्तीर् आकिल्–प्रस्तुत हुए तो; पॉरियिल्–इन्द्रियों के समान; पल मायम् तरुम्–विविध माया के कार्य करनेवाले; पॉरिकळ् अरिन्तु–उनके रहस्यों को पहले ही जानकर; अवर्रै तटुप्पेन् अन्रे–उनको रोक दूँगी न; पाम्पु–सर्प; पाम्पिन काल्–सर्प का पैर; अरियुम्–जानता है; ॲन्न मॉळियुम्–ऐसा कहनेवाली; पळमॉळियुन्–लोकोक्ति; पार्क्किलीरो–नहीं जानते क्या। ३५७

तुम बाँस की समानता करनेवाले कन्धों की इस स्त्री को छोड़ना नही चाहते तो भी मैं तुम्हारे लिए अधिक हो जाऊँगी या निरर्थक हो जाऊँगी? नही। राक्षस बुरे है और पराक्रमी है। उनके विरुद्ध जब लड़ोगे, तब वे इन्द्रियों के समान अनेक अनर्थकारी मायाकार्य करेंगे। मैं उनका रहस्य जानकर उनको रोक लूँगी। क्या तुम यह लोकोक्ति नहीं जानते, जो यह बताती है कि सर्प, सर्प का पैर जानता है। राक्षसी हूँ, राक्षसों की चाल जानती हूँ। इस पर विचार नहीं करोगे। ३५७

उळङ्गोडर् कन्बिळैत्ता ळुण्डॉरुत्ति यॅन्नुदिये निरुद रोडुङ्
कळङ्गोडर् करियशॅरुक् कण्णियक्का लॅरुमुवेड गलन्द पोदु

कुळङ्गोडु मनूरैयक् कॊडियविरल् वीररतमैक् कॊन्ऱ पिन्नर्
इळङ्गोवो डॆनैयिरुत्ति यिरुकोळुम् जिऱैवैत्ताऱ् किळैया ळॆन्ऱे 358

उळम् कोटऱ्कु–मन में स्थान देने के लिए; अन्पु इळैतूताळ् ऑरुत्ति–मुझसे प्रेम करनेवाली एक स्त्री; उण्टु–पहले से है; ऍन्नुतियेल्–कहोगे तो; निरुतरोटुम्–राक्षसों के साथ; कळम् कोटऱ्कु अरिय–समरांगण में जो दुस्तर करा देगा, ऐसा; चॆरु कण्णियक्काल्–युद्ध करना चाहोगे तो; ऑरु मूवेम् कलन्त पोतु–हम तीनों मिले रहें तो; कुळम् कोटुम् अन्ऱे–वह समरभूमि रक्त का तालाब बन जायगी न; अ कॊटिय–उन निर्मम; विरल् वीरर् तम्मै–बली वीरों को; कॊन्ऱ पिन्तर्–मारने के बाद; इरु कोळुम् चिऱै वैतूताऱ्कु–दोनों ग्रहों (सूर्य और चन्द्र) को कारागृह में जिसने बन्द कर रखा था, उस रावण की; इळैयाळ् ऍन्ऱे–भगिनी के मान की रक्षा करते हुए; इळम् को ओटु–लघुराज लक्ष्मण के साथ; ऍनै इरुत्ति–मुझे बिठा दो, (उसकी पत्नी बना लो)। ३५८

तुम कह सकते हो कि मेरे मन में स्थान पाकर मेरे साथ प्रेम करने के लिए पहले ही एक स्त्री है। तब एक काम करें। राक्षसों के साथ हम तीनों मिलकर युद्ध करेंगे। तब साधारण रूप से समरांगण में जाना भी जिसमें कठिन होगा, उस भयंकर युद्ध में हम रणभूमि को ही रक्त का तालाब बना देंगे और विजयी बनेंगे। उन वीर राक्षसों को मारने के बाद मुझे इतना मान दो कि मैं सूर्य-चन्द्र दोनों ग्रहों को कारागृह में जिसने बन्द कर दिया, उस रावण की भगिनी हूँ और मुझे अपने लघुराज लक्ष्मण के घर में (उसकी स्त्री के रूप में) बिठा दो। ३५८

पॆरुङ्गुला वुरुनहर्क्के पॆयरुनाळ् वेण्डुमुरुप् पिडिप्पे नन्ऱेल्
अरुङ्गला मुऱ्ऱिरुन्दा नॆन्ऱालु मिळैयवन्ऱा नरिन्द नाशि
ऑरुङ्गिला विवळोडु मुऱैवदो वॆन्वाने लिऱैव वॊन्ऱु
मरुङ्गिला दवळोडु मनूऱैयाल् नॆडुङ्गालम् वाळ्न्दे नॆन्बाय् 359

इऱैव–सरदार; पॆरुम् कुला उरु–बड़े कोलाहलमय; नकर्क्के–नगर (अयोध्या) को; पॆयरु नाळ्–लौटते दिन; इळैयवन्–तुम्हारा छोटा भाई; अरुम् कलाम् उऱ्ऱु इरुन्तान्–गहरा कोप करता होता; ऍन्ऱालुम्–तो भी; तान् अरिन्त नाचि ऑरुङ्कु इला–खुद जो उसने काटी, उस नाक से हीन; इवळोटुम् उऱैवतो–इसके साथ रहूँगा क्या; ऍन्पातेल्–कहेगा तो; ऑन्ऱु मरुङ्कु इलातवळोटुम् अन्ऱे–युक्त कमर से हीन स्त्री के साथ तो; यान् नॆटुम् कालम् वाळ्न्तेन्–मैं बहुत काल से रहता हूँ; ऍन्पाय्–कहो; अन्ऱेल्–वह तब भी न माने तो; वेण्टुम् उरु पिटिप्पेन्–उसके पसन्द का रूप धारण कर लूँगी। ३५९

नाथ! जब तुम लोग बड़े कोलाहलमय अयोध्या नगर को लौटोगे, तब लक्ष्मण क्रोध न छोड़कर यह कहे कि यह नासिका से हीन है, यद्यपि उसी ने मुझे नाक से हीन कर दिया था तो तुम उससे समाधान कहो कि क्या मैं कमर से हीन स्त्री के साथ बहुत दिन से नहीं रह रहा? नहीं तो

मैं वह जैसा चाहे वैसा रूप धारण कर लूँगी; नही तो भी मैं उसका चाहा रूप धर लूँगी। ३५९

ऍन्ऱलुमे यिळैयवन्ऱा निलङ्गिलेवेल् कडैक्कणिया यिवळै योण्ड्
कॊन्ऱहळै योमॆन्निऩ् नॆडिदलैक्कु मरुळन्गॊल् कोवे यॆन्ऩ
नन्ऱदुवे यामन्ऱो पोहाळे लाहवॆन नादन् कूऱ
ऒन्ऱुमिव रॆनक्किरङ्गा रुयिरिऴप्पॆ निऱ्किलॆन वरक्कि युन्ऩा 360

ऍन्ऱलुमे–उसके ऐसा कहते ही; इळैयवन्–कनिष्ठ ने; इलङ्कु इलै वेल्–दृश्यमान पत्राकार सिर वाले भाले को; कटैक्कणिया–आँख की कोर से दिखाकर; कोवे–स्वामी; इवळै कॊन्ऱु–इसको मारकर; कळैयोम् ऍन्ऩिल्–नहीं मिटायेंगे तो; नॆटितु अलैक्कुम्–बड़ा ऊधम मचायगी; अरुळ् ऍन् कोल्–कृपापूर्ण आज्ञा क्या है; ऍन्ऩ–यह पूछने पर; नातन्–नायक श्रीराम के; पोकाळेल्–नहीं जायगी तो; अतुवे–वही; नन्ऱु आम् अन्ऱो–भला होगा न; आक ऍन–वही हो, कहने पर; कूऱ–कहने पर; इवर् ऍऩक्कु ऒन्ऱुम् इरङ्कार्–ये मेरी दया कुछ नहीं करेंगे; निऱ्किन्–खड़ी रहूँ तो; उयिर् इऴप्पॆन्–प्राण गँवा दूँगी; ऍन–ऐसा; अरक्कि उन्ऩा–राक्षसी सोचकर। ३६०

लक्ष्मण ने यह बात सुनी। उनकी सहनशीलता जाती रही। उन्होंने श्रीराम का ध्यान आकर्षित करते हुए अपने दृश्यमान, पत्रसिर-भाले को अपनी आँखों की कोरों से देखा। फिर कहा— हे स्वामी! अगर हम इसे मारकर दूर नहीं करेंगे तो यह बड़ा अनर्थ करा देगी। आपकी आज्ञा क्या है? तब नायक श्रीराम ने मान लिया। कहा कि हाँ! अगर यह जानेवाली नही है तो क्या वैसा करना ही न भला होगा? वही हो! शूर्पणखा ने सुना तो वह समझ गयी कि ये हमारे ऊपर कृपा नहीं करेंगे। इधर ठहरूँगी तो प्राण से हाथ धोना पड़ जायगा। (यह सोचकर)। ३६०

एऱ्ऱनॆडुङ् गॊडिमूक्कु मिरुकादु मुलैयिरण्डु मिऴन्दु वाऴल्
आऱ्ऱुवन्ने वञ्जत्तैया लुमैयुळ्ळ परिशऱिवा नमैन्द दन्ऱो
काऱ्ऱिनिलुङ् कनलिनुङ् कडियानैक् कॊडियानैक् करत्तै युङ्गळ्
कूऱ्ऱुवत्तै यिप्पॊऴुदे कॊणर्हिन्ऱे नॆन्ऱुशलङ् गॊण्डु पोनाळ् 361

एऱ्ऱ–युक्त; नॆटुम् कॊटि मूक्कुम्–लम्बी, लता-सम नाक को; इरु कातुम्–दोनों कानों को; मुलै इरण्टुम्–दोनों स्तनों को; इऴन्तुम्–खोने के बाद भी; वाऴल् आऱ्ऱुवत्ते–जीना सह सकूँगी क्या; उमै उळ्ळ परिचु–तुम्हारे गूढ़ अभिप्राय; वञ्चत्तैयाल्–कपट से; अऱिवान्–जानने को; अमैन्ततु अन्ऱो–रचा गया (नाटक) न; काऱ्ऱिनिलुम् कटियात्तै–वायु से अधिक तीव्र और बलवान; कनलिनुम् कॊटियात्तै–अग्नि से भी बढ़कर निर्मम; करत्तै–खर को; उङ्कळ् कूऱ्ऱुवत्ते–तुम्हारे यम को; इ पॊऴुते कॊणर्किन्ऱेन्–यहाँ अभी लाऊँगी; ऍन्ऱु–कहकर; चलम् कॊण्टु पोनाळ्–वैर लेकर चली। ३६१

जाते-जाते शूर्पणखा यह कह गयी कि मेरी लम्बी लता-सी नाक मेरे रूप के योग्य सुन्दर थी। उसको, दोनों कानों और स्तनों को खोने के बाद कोई अपने जीवन को सह सकेगा क्या ? मैं जीवित रहने की क्षमता रख सकूँगी क्या ? यह सब जो मैंने तुमसे कहा, वह तुम्हारे गूढ़ अभिप्रायों को जानने के लिए रचा गया कपट नाटक था। अब मैं जा रही हूँ और वायु से भी तीव्रगामी और बलवान, अग्नि से भी निर्मम खर को, जो तुम्हारा यम होगा, अभी ले आऊँगी। ३६१

6. करन् वदैप् पडलम् (खर-वध पटल)

❀ इरुन्द माक्करन् ड्राळिणै यिन्मिशैच्
चॊरिन्द शोरियळ् कून्दल डुम्बॆन्न्
तॆरिन्द सूक्किनळ् वायिनळ् शॆक्कर्मेल्
विरिन्द मेह मॆन्नविळुन् दाळरो 362

चॊरिन्त चोरियळ्–बहते हुए रक्त के साथ; कून्तलळ्–बिखरे केश वाली; तूम्पु अॆन्न–मोरी की नली के द्वार के समान; तॆरिन्त मूक्किनळ्–दिखनेवाली नाक की; वायिनळ्–(मोरी के द्वार के समान) बड़ा मुख वाली; चॆक्कर् मेल् विरिन्त– लाल गगन पर फैले; मेकम् अॆन्न–मेघ के समान; इरुन्त मा करन्–(जनस्थान में) रहनेवाले प्रख्यात खर के; ताळ् इणैयिन् मिचै–जोड़े के पैरों पर; विळुन्ताळ्–जा गिरी। ३६२

शूर्पणखा के शरीर के कटे अंगों से रक्त बह रहा था। उसका केश खुला और बिखरा हुआ था। उसकी नाक और मुख मोरी के द्वार के समान खुले थे। वह भागी और जनस्थान में रहे प्रख्यात खर के चरणों पर लाल गगन के ऊपर छाये हुए मेघ के समान गिरी। ३६२

❀ अळुङ्गु नाळिदॆन् ड्रन्दह नाणैयाल्, तळुङ्गु पेरि यॆन्नत्तनित् तेङ्गुवाळ्
मुळङ्गु मेह मिडित्तॆन् दीयिनाल्, पुळुङ्गु नाह मॆन्नप्पुरण् डाळरो 363

अन्तकन् आणैयाल्–यम की आज्ञा से; अळुङ्कु नाळ् इतु–अन्त होने का काल यह है; अॆन्ऱु–ऐसा घोषित करते हुए; तळुङ्कु पेरि अॆन्नि–पिटनेवाली भेरी के समान; तनित्तु एङ्कुवाळ्–विचित्र रूप से रोने का स्वर करती हुई; मुळङ्कुम् मेकम्–गरजनेवाले मेघ से; इटित्त वॆम् तीयिनाल्–गिरी गाज की अग्नि से; पुळुङ्कुम् नाकम् अॆन्न–व्यग्र नाग के समान; पुरण्टाळ्–लोटने लगी। ३६३

उसका अनोखा रुदन का गम्भीर स्वर यम की आज्ञा के अनुसार राक्षसों के अन्त की घोषणा करनेवाली भेरी के नाद के समान था। वह उस सर्प के समान छटपटाकर लोटने लगी, जो गरजते मेघ से गिरी गाज की अग्नि से तप रहा हो। ३६३

❀ वाक्किऱ् कोप्पप् पुहैमुनुदु वायिनान्
नोक्किक् कूशलर् नुन्नैयित् तन्मैयै
आक्किप् पोनव रार्होलॆन् ड्रानवळ्
मूक्किऱ् चोरि मुऴोइक्कोण्ड कण्णिनान् 364

अवळ् मूक्किल् चोरि–उसकी नाक से बहते हुए रक्त में; मुऴोइ कॊण्ट–मग्न रही; कण्णिनान्–आँखों का; वाक्किऱ्कु ऑप्प–शब्द के अनुकल; पुकै मुनुतु–धुआँ निकालनेवाले; वायिनान्–मुख का (खर); नोक्कि–देखकर; कूचलर्–निस्संकोच होकर; नुन्नै–तुम्हारी; इ तन्मै आक्कि–इस दुर्गति में पहुँचाकर; पोन्तवर्–जानेवाले; आर् कॊल्–कौन हैं तो; ऎन्ऱान्–पूछा। ३६४

खर की दृष्टि शूर्पणखा की नाक से निकलनेवाले रक्त के प्रवाह में मानो डूब सी गयी। उसके मुख से ज्यों-ज्यों शब्द निकलते, त्यों-त्यों धुआँ भी निकलता। उतने क्रोध के साथ उसने शूर्पणखा से प्रश्न किया कि ऐसा निस्संकोच होकर तुम्हारी दुर्गति कर गये जो वे कौन है? । ३६४

❀ इरुवर् मानिडर् तापद रेन्दिय, वरिविल् वाट्कैयर् मन्मदन् मेनियर्
तरुम नीरर् तयरदन् कादलर्, शॆरुदि नेरु निरुदरैत् तेडुवार् 365

इरुवर् मानिटर्–दो मानव; तापतर्–तपस्वी; एन्तिय–धृत; वरिविल्–बन्धनयुक्त धनु; वाळ्–तलवार के; कैयर्–हाथ वाले; मन्मतन् मेनियर्–मन्मथ के समान रूप वाले; तरुम नीरर्–धर्मपथचारी; तयरतन् कातलर्–दशरथ के प्यारे पुत्र; चॆरुविल् नेरुम्–युद्ध में लड़नेवाले; निरुतरै–राक्षसों को; तेटुवार्–ढूँढ़नेवाले। ३६५

(शूर्पणखा का उत्तर भी देखिये!) वे दोनों मानव हैं तप में लीन! हाथ में धनुष और तलवार रखते हैं। उनका रूप मन्मथ का-सा है। धर्मपथचारी है। दशरथ के प्यारे पुत्र हैं और युद्ध में लड़नेवाले राक्षसों की खोज मे लगे रहनेवाले हैं। ३६५

❀ ऑन्ऱु नोक्कल रुन्वलि योङ्गरम्, निन्ऱु नोक्कि निऱुत्तु निनैप्पिनर्
वॆन्ऱि वेऱ्कै निरुदरै वेरऱक्, कॊन्ऱु नीक्कुदु मॆन्ऱुणर् कॊळ्हैयार् 366

ओङ्कु अऱम् निन्ऱु–उत्कृष्ट धर्म खुद अवलम्बन कर; नोक्कि–उनकी गति शोधकर; निऱुत्तुम् निनैप्पिनर्–स्थापित करने का संकल्प करते हुए; उन् वलि ऑन्ऱुम् नोक्कलर्–तुम्हारे बल की परवाह नहीं करते; वॆन्ऱि वेल्–विजयशील भालेधारी; कै–हस्त वाले; निरुतरै–राक्षसों को; वेर् अऱ–निर्मूल करके; कॊन्ऱु नीक्कुतुम् ऎन्ऱु–मार मिटाएँगे, ऐसा; उणर्–निश्चय जिसमें हो; कॊळ्कैयार्–ऐसे संकल्प वाले। ३६६

वे उत्कृष्ट धर्म के मार्ग में खुद रहते हुए, धर्म की गति को शोधकर उसकी संस्थापना में दत्तचित्त रहनेवाले है। वे तुम्हारे बल का कोई महत्त्व न देते। यही संकल्प रखनेवाले हैं कि हम विजयशील भालों के धारी राक्षसों का उन्मूलन करके मिटा देंगे। ३६६

❀ मण्णि नोक्करु वानिनिन् मऱ्ऱिनिल्
एण्णि नोक्कुऱिल् यावरु नेर्हिलाप्
पॅण्णि नोक्कुडै याळीरु पेदैयॅन्
कण्णि नोक्कि युरैप्परुङ् गाट्चियाळ् 367

मण्णिल्–धरती पर; नोक्कु अरु–दर्शन-दुर्लभ; वानित्तिल्–आकाश में; मऱ्ऱित्तिल्–अन्य लोकों में; ऍण्णि–सोचकर; नोक्कुऱिल्–देखने पर; यावरुम् नेर्किला–कोई उसकी समानता न कर सके, ऐसी; पॅण्णिन् नोक्कु उटैयाळ्–स्त्री-सौंदर्य वाली; ऍन् कण्णिन् नोक्कि–अपनी आँखों से देखकर; उरैप्पु अरुम्–अवर्णनीय; काट्चियाळ्–आकार-प्रकार वाली। ३६७

और भी, उनके साथ एक स्त्री है। स्वर्ग, भूलोक, पाताल आदि कहीं भी ढूँढ़ो, उसकी समानता करनेवाली कोई नहीं मिलेगी। बड़ी सुन्दरी स्त्री है। उसका आकर्षण इतना अधिक है कि मैं अपनी आँखों से देखा उसके मनोहारी रूप का वर्णन करूँ, इतनी क्षमता मेरे शब्दों में नहीं है। ३६७

❀ कण्डु नोक्कुरुङ् गारिहै याडनैक्, कॉण्डु पोवॅ निलङ्गैयर् कोक्कॅना
विण्डु मेलॅळुन् देनै वॅहुण्डवर्, तुण्ड माक्कित्तर् मूक्कॅनच् चॉल्लिनाळ् 368

नोक्कु उरुम् कारिकैयाळ् तत्तै–सुन्दरी उस स्त्री को; कण्टु–देखकर; इलङ्कैयर् कोक्कु–लंकेश्वर के लिए; कॉण्टु पोवॅन् ऍत्ता–ले जाऊँगी कहकर; विण्टु–शत्रुता दिखाकर; मेल् ऍळुन्तेतै–उस पर लपकनेवाली मुझे; अवर्–उन दोनों ने; वॅकुण्टु–गुस्सा करके; मूक्कु तुण्टम् आक्कित्तर्–नाक के टुकड़े कर लिये; ऍत्त–ऐसा; चॉल्लित्ताळ्–शूर्पणखा ने कहा। ३६८

मैंने उस अनुपम सुन्दरी को देखा तो सोचा कि उसको लंकेश के लिए ले जाऊँ। इसी विचार से मैं उसकी ओर लपकी। तब उन दोनों मनुष्यों ने मेरी नाक काट दी। —शूर्पणखा ने घटना का अपनी रीति से वर्णन किया। ३६८

❀ केट्ट तनुरै कण्डनन् कण्णिनाल्, तोट्ट नुङ्गिर् ऱॊळैयुरु मूक्किनैक्
काट्टॅ नावॅळुन् दानॅदिर् कण्डनर्, नाट्टन् दीय वुलहै नडुक्कुवान् 369

ऍतिर् कण्टवर् नाट्टम्–सामने से देखनेवालों की दृष्टि को; तीय–जलाते हुए; उलकै नटुक्कुवान्–लोक को कम्पित करनेवाले खर ने; उरै केट्टतन्–शूर्पणखा का कथन सुना; तोट्ट नुङ्किल्–कोए निकालने के बाद ताल-फल जैसे हो जाता है, वैसे; तॊळै उरु–गड्ढों सहित; मूक्कित्तै–नाक को; कण्णिताल्–अपनी आँखों से; कण्टनन्–देखा; काट्टु–उनको दिखाओ; ऍत्ता–कहते हुए; ऍळुन्तान्–उठा। ३६९

खर ऐसा भयंकर और उग्र राक्षस था कि उसको सामने से देखनेवाले की आँखें जलकर भस्म हो जातीं और लोक काँप उठते। उसने शूर्पणखा के मुख को गौर से देखा, जो कोए से हीन ताल-फल के

समान लगता था। देखकर उसने तैश में आकर कहा कि दिखाओ उन्हें। यह कहते हुए वह उठा। ३६९

❀ ॲऴुन्दु निन्ऱुल हॅऴु मॅरिन्दुहप्, पॉङिन्द कोवक् कनलिनिड् पॉङ्गुवान्
कऴिन्दु पोयिनर् मानिड रॅन्नुङ्गाल्, अऴिन्द दोविव् वरुम्बऴि ॲन्नुमाल् 370

ॲऴुन्तु निन्ऱु–उठकर खड़ा होकर; उलकु एऴुम् ॲरिन्तु उक–सातों लोकों को भस्म होकर चूने देते हुए; पॉङिन्त–बढ़नेवाली; कोप कत्तलितिल्–कोपाग्नि में; पॉङ्कुवान्–जो भड़क उठा, उसने; मानिटर् कऴिन्तु पोयितर्–(ये) मनुष्य मिट चले; ॲन्तुम् काल्–ऐसी स्थिति में भी; इ अरुम् पऴि–यह कठोर अपयश; अऴिन्ततो–मिटेगा क्या; ॲन्तुम्–कहा। ३७०

उठकर खड़ा हुआ वह खर ऐसी कोपाग्नि के साथ भड़क उठा, जो सातों लोकों को जला दे और भस्म करके छितरा दे। उसे इतना क्षोभ हुआ कि उसके मुख से प्रश्न उठा। अगर मैं उन मानवों को मार भी दूं और वे मिट जायँ तो भी यह अपयश दूर हो सकेगा क्या ? । ३७०

❀ वरुह तेरॆनु मात्तिरै माड्डुळोर्, इरुहै माल्वरै येऴिनो डेऴनार्
ऑरुहै यालुल हेन्दु मुरत्तिनार्, तरुह विप्पणि यॅम्वयिड् डानॆन्ड्रार् 371

तेर् वरुक–रथ आ जायँ; ॲतुम् मात्तिरै–ऐसा (आज्ञा) सुनाते ही तत्क्षण; माट्टु उळोर्–पास रहनेवाले; इरु कै माल्वरै–दो-दो हाथों के साथ बड़े-बड़े पर्वत; एऴितोटु एऴु अत्तार्–सात और सात (चौदह) के समान जो थे; ऑरु कैयाल्–अपने एक हाथ से; उलकु एन्तुम्–भूलोक को उठाने की; उरत्तितार्–शक्ति रखनेवाले; इ पणि–यह काम; ॲम् वयिन् तान् तरुक–हमारे पास छोड़ दें; ॲन्ड्रार्–बोले। ३७१

फिर उसने आज्ञा दी कि रथ आ जाय। तब उसके पास चौदह सेनापति थे। वे ऐसे पर्वतों के समान थे जिनके दो-दो हाथ हों। वे अपने एक हाथ पर ही धरणी को उठा सकनेवाले थे। उन्होंने प्रार्थना की कि यह काम हमें सौंप दें। ३७१

❀ चूलम् वाण्मऴुत् तोमरञ् जक्करम्, काल पाशङ् गदैपोरुङ् गैयिनार्
वेलै ञालम् वॆरुवुरु मार्प्पिनार्, आल कालन् दिरण्डन्न वाक्कैयार् 372

चूलम् वाळ्–शूल और तलवार; मऴु तोमरम्–परशु और तोमर; चक्करम् कालपाचम्–चक्र, कालपाश; कतै–गदा; पॊरुम् कैयितार्–इनको लेकर लड़नेवाले हाथों के; वेलै ञालम्–समुद्रवलयित भूतल को; वॆरुवु उरुम् आर्प्पित्तार्–डराते हुए शोर मचानेवाले; आल कालम् तिरण्टु अन्न–हलाहल रूप ले आया हो ऐसा; आक्कैयार्–शरीर वाले। ३७२

(वाल्मीकी में इनके नाम दिये गये हैं।) वे शूल, तलवार, परशु, तोमर, कालपाश और गदा इनका उपयोग कर लड़ सकते थे। जब वे

उच्च स्वर उठाते तब समुद्र और उसके मध्य रहनेवाली भूमि थर्रा उठती थीं। उनके शरीर हलाहल के पिण्डों के समान थे। ३७२

❀ वॅम्बु वेलैक् कन्नलन्न वॅम्मैयार्, नम्बि नम्मडि मैत्तोंळि नन्रॅना
उम्बर् मेलु मुरुत्तनै पोदियो, इम्बर् मेलिनि यामुळॅ मेयॅन्ड्रार् 373

वॅम्पु वेलै–गरम और समुद्र से निकली; कन्नल् अन्न–(बड़वा) आग के समान (वे); वॅम्मैयार्–क्रोधशील; नम्पि–नायक; नम् अटिमै तॉळिल्–हमारी सेवकाई भी; नन्रु ऍना–अच्छी रही, कहके; उम्पर् मेलुम्–देवों पर; उरुत्ततै–गुस्सा कर; पोतियो–जा रहे हो क्या; इम्पर् मेल्–इस लोकवासी पर (आक्रमण करने); इनि याम् उळमे–अब हम तो है; ऍन्ड्रार्–बोले। ३७३

अत्यन्त गरम बड़वाग्नि के समान क्रोध से भरे उन्होंने खर को देखकर कहा कि नायक ! हमारी सेवकाई भी कितनी खूब है (कि हमारे रहते आप लड़ने चलें) ! और भी क्या वे देव हैं कि आप क्रोध के साथ लड़ने जायँ ? वे धरती के मानव हैं और हम इधर प्रस्तुत हैं। ३७३

❀ नन्रु शॅल्लुदिर् नानिच् चिरार्कण्मेल्
शॅन्रु पोर्शॅयिड् ड्रेवर् शिरिप्पराल्
कॉन्रु शोरि कुडित्तवर् कॉळ्हैयै
वॅन्रु मीळुदिर् मॅल्लिय लोडॅन्ड्रान् 374

नन्रु–ठीक है; चॅल्लुतिर्–चलो; नान्–मैं; इ चिरार्कळ् मेल्–इन लड़कों पर; चॅन्रु पोर् चॅयिन्–जाकर युद्ध करूँ तो; तेवर् चिरिप्पर्–सुर लोग हँसेंगे; कॉन्रु–मारकर; चोरि कुटित्तु–रक्त पीकर; अवर् कॉळ्कैयै–उनका संकल्प; वॅन्रु–वथा करके (उन्हें जीतकर); मॅल्लियलोटु–कोमल नारी को साथ ले; मीळुतिर्–लौट आओ; ऍन्ड्रान्–कहा। ३७४

खर ने भी उसे ठीक माना। उसने कहा कि तुम ठीक कहते हो। तुम ही जाओ। मैं इन मानव-बालकों के विरुद्ध लड़ने जाऊँ तो देव मेरी हँसी उड़ायेंगे। तुम जाओ उन्हें मारो, उनका खून पिओ और उनका संकल्प हरा दो। फिर उस कोमल नारी को साथ लेकर लौट आओ। ३७४

❀ ऍन्न लोडुम् विरुम्बि यिरैञ्जिनार्, शॉन्न नाणिलि यन्दहन् रूदॅन
अन्नळ् पिऩ्पडर् वारॅन वायिनार्, मन्नन् कादलर् वैहिड नण्णिनार् 375

ऍन्नलोटुम्–उसके यों कहते ही; विरुम्पि–खुश होकर; इरैञ्चिनार्–विनय करके; चॉन्न–जिसने उनके सम्बन्ध में कहा था, उस; नाण् इलि–निर्लज्ज (शूर्पणखा) को; अन्तकन् तूतु ऍन–यम का दूत मानकर; अन्नळ् पिन् पटर्वार् ऍन–उसके पीछे जानेवाले; आयिनार्–बनकर वे; मन्नन् कातलर्–(दशरथ-) राज के पुत्र; वैकु इटम्–जहाँ रहे, वह स्थान; नण्णिनार्–पहुँचे। ३७५

यह अनुमति पाकर वे हर्षित हुए। खर को नमस्कार करके

निकले। यम के भेजे दूत के समान वह निर्लज्ज शूर्पणखा आगे-आगे गयी और ये उसका अनुकरण करते गये। वे दाशरथि जहाँ रहे वहाँ आये। ३७५

❀ तुमिलप् पोर्वल् लरक्कर्क्कुच् चुट्टिये
अमलत् तॉल्पॅय रायिरत् ताऴियान्
निमलप् पाद निनैंवि लिरुन्दवक्
कमलक् कण्णनैक् कैयिनिऱ् काट्टिनाळ् 376

अमलम् तॉल्–निर्मल और प्राचीन; पॅयर् आयिरत्तु–सहस्रनाम-धारी; आऴियान्–चक्रपाणी के; निमल पात निनैंविल् इरुन्त–पवित्र चरण-स्मरण में रहे; अ कमल कण्णनै–उन कमलाक्ष को; तुमिलम् पोर् वल्–तुमुल युद्ध करने में समर्थ; अरक्कर्क्कु–राक्षसों को; कैयिनिल् चुट्टिये–हाथ के इशारे से; काट्टिनाळ्–दिखाया (शूर्पणखा ने)। ३७६

वे प्राचीन और सहस्र नामों से भूषित चक्रपाणी श्रीविष्णु के निर्मल पवित्र चरणों का स्मरण करके ध्यानमग्न थे। शूर्पणखा ने अपने हाथ से उन कमलाक्ष को उन तुमुल युद्ध-निपुण राक्षसों को दिखाया। ३७६

❀ ऍऱ्ऱु वाम्बिडित् तेन्दुदु मॅन्गुनर्, पऱ्ऱु वानॅडुम् बाशत्ति नॅन्गुनर्
मुऱ्ऱु वामिऱै शॊन्मुऱै यालॅन्नाच्, चुऱ्ऱि नार्वरै शूऴ्न्दन्न तोऱ्ऱत्तार् 377

ऍऱ्ऱुवाम्–उसको ढकेलकर उछालेंगे; पिटित्तु एन्तुतुम्–पकड़कर धारण करेंगे; ऍन्कुनर्–कहनेवाले; नॅटुम् पाचत्तिन्–लम्बे पाश से; पऱ्ऱुवाम्–कस लेंगे; ऍन्कुनर्–कहनेवाले; इऱै चॊल् मुऱैयाल्–हमारे राजा के कहे प्रकार; मुऱ्ऱुवाम्–कार्य पूरा करेंगे; ऍन्ना–कहते हुए; वरै चूऴ्न्तन्न तोऱ्ऱत्तार्–पहाड़ घेर आये हों, ऐसे दृश्य वाले; चुऱ्ऱिनार्–घेर गये। ३७७

उनको देखते ही कुछ ने कहा कि हम उसे उछालेंगे और हाथों में पकड़ लेंगे। कुछ ने कहा कि लम्बे पाश से उसे बाँध देंगे। और कुछ ने कहा कि हम अपने राजा का आशय पूरा करेंगे। ऐसी-ऐसी बातें शोर के साथ कहते हुए पर्वतों के समान जो रहे वे उन्हें घेर गये। ३७७

❀ एत्तु वाय्मै यिराम निळवलैक्, कात्ति तैयलै यॅन्ऱुतन् कऱ्पहम्
पूत्त दन्न पॊरुवि ऱडक्कैयाल्, आत्त नाणि नरुवरै वाङ्गिनान् 378

एत्तु वाय्मै इरामन्–प्रशंसित सत्यसन्ध श्रीराम ने; इळवलै–अपने अनुज से; तैयलै कात्ति–देवी की रक्षा करो; ऍन्ऱु–कहकर; कऱ्पकम् पूत्तत्तु अन्न–कल्पतरु पुष्पित हो, ऐसे; तन् पॊरुवु इल् तट कैयाल्–अपने उपमाहीन विशाल हाथ से; आत्त नाणिन्–चढ़ी हुई प्रत्यंचा के साथ; अरु वरै–श्रेष्ठ पर्वत-सम धनुष को; वाङ्कितान्–ले लिया। ३७८

(श्रीराम ने देखा।) प्रशंसित सत्यसंध श्रीराम ने अपने कनिष्ठ से

कहा कि लक्ष्मण ! तुम सीताजी की रक्षा करो। उन्होंने अपने पुष्पित कल्पतरु के समान विशाल हाथ में प्रत्यंचा-चढ़े और पर्वतसम धनुष को ले लिया। ३७८

❀ वाङ्गि वाळॊडु वाळिपॆय् पुट्टिलुम्, ताङ्गित् तामरैक् कण्णनच् चालैयै
नीङ्गि यिव्वयि नॆऱ्मि नडावॆन्ना, वीङ्गु तोळन् मलैदलै मेयिनान् 379

तामरै कण्णन्–कमलाक्ष; वाळ् ओटु–तलवार के साथ; वाळि पॆय् पुट्टिलुम्–शरों के साथ तूणीर भी; वाङ्कि–लेकर; अ चालैयै नीङ्कि–उस पर्णशाला के बाहर आकर; इ वयित् नेऱ्मिन् अटा–इस ओर आकर लड़ो रे; ऍन्ना–ललकारते हुए; वीङ्कु तोळन्–(युद्धोत्साह में) विवृद्ध कन्धों वाले (श्रीराम); मलैतलै मेयिनान्–युद्ध में प्रवृत्त हुए। ३७९

कमलाक्ष ने तलवार और शर-भरे तूणीर भी लिया। आश्रम से बाहर आये और उन्होंने ललकारा कि रे आओ इधर ! लड़ो। युद्धोत्साह के कारण उनके कंधे फूल उठे। वे युद्ध में प्रवृत्त हो गये। ३७९

मळुवुम्	वाळुम्	वयङ्गॆरि	मुच्चिहैक्
कळुवुङ्	गालवॆन्	दीयन्न	काट्चियार्
ऍळुवि	नीडडक्	कैयॆळु	नान्गैयुन्
दळुवुम्	वाळिह	ळाऱ्ऱलज्	जाऱ्ऱितान् 380

काल वॆम् ती अन्न–युगान्तकालीन भयंकर आग के समान; काट्चियार्–दृश्यमान; मळुवुम्–परशु; वाळुम्–और तलवारें; वयङ्कु ऍरि–जलती आग के समान; मु चिकै कळुवुम्–त्रि(सिर) शूल, इनके साथ; ऍळुविन् नीळ्–स्तम्भ-सम लम्बे; तट–और विशाल; कै ऍळु नान्कैयुम्–(सात के चार) अट्ठाईस हाथों को; तळुवुम् वाळिकळाल्–निशाने पर अचूक लगनेवाले शरों से; तलम् चाऱ्ऱितान्–काटकर भूमि पर गिराया। ३८०

श्रीराम ने उनके स्तम्भ-सम लम्बे और मोटे अट्ठाईस हाथों को अपने अचूक बाणों से विद्ध कर गिराया। युगान्तकालीन अग्नि के समान क्रोधी उन राक्षसों के हाथों में परशु, तलवारें, अग्नि के समान उज्ज्वल त्रिशूल आदि थे। उनके साथ वे हाथ कट कर गिर गये। ३८०

❀ मरङ्गळ् पोॆन्डु वाळॊडु तोळ्विळ, उरङ्ग ळालडऱ्ऱ् तारुर वोन्विडुम्
शरङ्ग ळोडिन तैत्त वरक्करदम्, शिरङ्ग ळोडिन तीयव ळोडिनाळ् 381

नॆंटु वाळोटु–लम्बी तलवारों के साथ; तोळ्–हाथ; मरङ्कळ् पोल्–पेड़ों के समान; विळ–गिरे, तब; उरङ्कळाल् अटऱ्ऱुतार्–छातियों से टकराये; उरवोन् विटुम् चरङ्कळ्–बलवान श्रीराम से प्रेषित शर; ओटिन् तैत्त–चलकर घुसे; अरक्कर् तम् चिरङ्कळ्–राक्षसों के सिर; ओटिन–कट कर दौड़े (दूर गये); तीयवळ् ओटिनाळ्–दुराचारिणी भागी। ३८१

लम्बी तलवारों (व अन्य हथियारों) के साथ हाथों के अलग हो पेड़ों के समान गिरने के बाद भी वे सेनानायक लड़ने लगे। अपनी छाती से उन्होंने प्रहार किया। तब प्रबल प्रतापी श्रीराम ने तेजी से शर प्रेषित किये, जिन्होंने जाकर उनके सिरों को धड़ों से अलग कर दिया। शूर्पणखा ने देखा और वह नृशंस राक्षसी वहाँ से भाग चली। ३८१

❀ ऑळिरु वेऱ्करऱ् कुऱ्ऱ् दुणर्त्तिनाळ्, कुळिरु कोबवॅङ् गोळरि मावडक्
कळिरॅ लाम्बडक् कैदलै मेलुरप्, पिळिऱि योडुम् बिडियन्न पॅऱ्ऱियाळ् 382

कुळिरु–गरजनेवाले; कोप वॅम् कोळ् अरि मा–क्रोधी, भयंकर सिंह के; अट–प्रहार करने से; कळिरु ॲलाम् पट–सभी गज मर गये और; कै तलै मेल् उऱ–हाथ सिर पर रखते हुए; पिळिऱि ओटुम्–चिघाड़ती भागनेवाली; पिटि अन्न–हथिनी के समान; पॅऱ्ऱियाळ्–स्थिति वाली ने; ऑळिरु वेल्–चमकीले भाले के; करऱ्कु–खर को; उऱ्ऱतु उणर्त्तिनाळ्–जो हुआ वह सुनाया। ३८२

वह उस हथिनी के समान सिर पर हाथ रखे भागी, जो गरजनेवाले क्रोधी भयंकर सिंह के युद्ध में प्रहार से सभी गजों के मर जाने पर अपने सिर पर सूँड़ रखकर चिघाड़ती हुई भाग रही हो। जाज्वल्यमान भाला-धारी खर के पास जाकर उसने समाचार सुनाया। ३८२

❀ अङ्ग रक्क रविनुदॊळिन् दारॆनप्, पॊङ्ग रत्तम् विळिवळिप् पोन्दुह
वॅङ्ग रप्पॅय रोन्वॅहुण् डात्विडैच्, चङ्ग रऱ्कुन् दडुप्परुन् दन्मैयान् 383

विटै चङ्करऱ्कुम्–ऋषभवाहन शंकर से भी; तटुप्पु अरुम् तन्मैयान्–जो रोका नहीं जा सकता, वैसा; वॅम् कर पॅयरोन्–क्रूर खर नाम का राक्षस; अङ्कु अरक्कर् अविन्तु ऒळिन्तार् ॲन–वहाँ राक्षस मर मिटे; ॲन–यह सुनकर; पॊङ्कु अरत्तम्–उफन उठनेवाला रक्त; विळि वळि–आँखों द्वारा; पोन्तु उक–निकलने देते हुए; वॅकुण्टान्–क्रुद्ध हुआ। ३८३

खर नामक वह राक्षस ऐसा दुर्द्धर्ष था कि ऋषभवाहन शंकर से भी हराया न जा सके। उसने जब सुना कि राक्षस वहाँ हत हो मिट गये, तो उसे बड़ा क्रोध हुआ। उसकी आँखें लाल हो गयीं। उसकी आँखें ऐसी लगीं, मानो रक्त खौल उठा हो और वह आँखों से बाहर निकल रहा हो। ३८३

❀ अळैयॆन् ऱेरॆनक् काक्कुहॆन् पोर्प्पडै, उळैय रोडि यॊरुनोडि युम्बल्मेल्
मळैयित् मामुर शॆऱ्ऱुदिर् वल्लॆन्ऱान्, मुळैयित् वाळरि यञ्ज मुळङ्गुवान् 384

मुळैयिन् वाळ् अरि–गुफा में रहनेवाले सिंह को भी; अञ्च मुळङ्कुवान्–भयभीत करते हुए दहाड़नेवाले खर ने; ॲन् तेर् अळै–मेरे रथ को बुलाओ; ॲन् पोर् पटै–मेरी युद्ध-सन्नद्ध सेना को; ॲनक्कु आक्कुक–मेरे साथ करो; वल्–सत्वर; उळैयर्–सेवक; ओटि–भाग जाकर; ऒरु कोटि उम्पल् मेल्–उत्तम पताका से अलंकृत गज

पर; मळैयिऩ्–मेघ के समान; मा मुरचु–बड़ा ढोल; अऱ्ऱतिर्–पिटवा दें; अॅऩ्ऱाऩ्–कहा। ३८४

खर भीषण स्वर वाला था। उसका नाद सुनकर गुफा के अन्दर सुरक्षित रहनेवाले सिंह भी सिहर उठते थे। उसने आज्ञा निकाली कि मेरा रथ बुला लो। मेरी सेनाओं को मेरे साथ कर दो। जल्दी सेवक जायँ और ध्वजासहित गज पर ढोल रखकर यह मुनादी पिटवा दें। वह ठनक मेघ के गर्जन के समान उच्च हो। ३८४

❀ पेरि योशै पिऱत्तलुम् बॆट्पुरु, मारि मेहम् वरम्बिल वन्दॆन्नत्
तेरिऩ् शेऩै तिरण्डदु तेवर्दम्, ऊरु नाह रुलहु मुलैयवे 385

पेरि ओचै पिऱत्तलुम्—भेरी-नाद के उठते ही; पॅट्पु उरु—विपुल; मारि मेकम्—वर्षाकालीन मेघ; वरम्पु इल—असीम; वन्त अॅन्न—आये हों ऐसा; तेवर् तम् ऊरुम्—देवों का लोक; नाकर् उलकुम्—नागों का (पाताल) लोक; उलैय—अस्तव्यस्त करते हुए; तेरिऩ् चेऩै—रथों की सेना; तिरण्टतु—जुट आई। ३८५

भेरी का नाद हुआ कि गुरुत्वपूर्ण वर्षाकालीन मेघों के समान अगणित रथ आ गये। उनकी भीड़ और उनके शब्द के कारण आकाश और पाताल अस्तव्यस्त हो गये। ३८५

❀ पोर्प्पॆ रुम्बणै बॊम्मॆन् मुळक्कमा
नीर्त्त रङ्ग नॆडुन्दडन् दोळ्हळा
आर्त्तॆ ळुन्द दिरुदियि ऩार्हलिक्
कार्क्क रुङ्गडल् काल्हिळर्न् दॆन्नवे 386

इऱुतियिऩ्—कल्पान्त में; आर् कलि—सघोष; कार् करुम् कटल्—अति विशाल काला सागर; काल् किळर्न्तु अॅन्न—पवनोद्वेलित हुआ हो, ऐसा; पोर् पॅरुम् पणै—युद्धसूचक बड़े ढोलों का नाद; पॉम् अॅऩ् मुळक्कमा—'भों' का उच्च नाद हुआ; नॅटुम् तटम् तोळ्कळ्—दीर्घ और विशाल भुजाएँ; नीर् तरङ्कमा—जल-तरंगें हुईं; आर्त्तु अॅळुन्ततु—(रथ-सेना) कोलाहल के साथ उठी। ३८६

वह सेना युगान्तकाल में पवनोद्वेलित हो उमड़नेवाले सघोष समुद्र के समान तुमुल नाद के साथ उठ आयी। युद्धसूचक ढोल ही उस समुद्र का गर्जन था। वीरों की सबल और लम्बी भुजाएँ उसकी तरंगें थीं। ३८६

❀ काडु तुऩ्ऱि विशुम्बु करन्दॆऩ्ऩ, नीडि यॆङ्गु निमिर्न्द नॆडुङ्गॊडि
ऒडु मॆङ्गळ् पशियॆऩ् ऱुवन्दॆळुन्, दाडु हिऩ्ऱ वलहैयि ऩाडवे 387

काटु तुऩ्ऱि—सब वनों ने मिलकर; विचुम्पु—करन्तॅन—आकाश को ढक दिया हो, ऐसा; अॅङ्कुम्—सर्वत्र; नीटि—फैलकर; निमिर्न्त—ऊँची उठी; नॅटुम् कॉटि—लम्बी ध्वजाएँ; अॅङ्कळ् पचि ओटुम्—हमारी भूख मिट जायगी; अॅऩ्ऱु—मानकर; उवन्तु अॅळुन्तु आटुकिऩ्ऱ—हर्ष के साथ उठकर नाचनेवाले; अलकैयिऩ्—प्रेतों के समान; आट—फहरती हैं, ऐसी स्थिति में। ३८७

रथ की ध्वजाएँ इतनी विपुल थीं कि वनों ने मिलकर आकाश को ढक दिया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित होता था। वे ध्वजाएँ ऐसा दृश्य प्रस्तुत करते हुए फहरीं कि 'हमारी भूख मिट गयी' —यह कहते हुए प्रेत नाच रहे हों। ३८७

❀ तऱियि नीङ्गिय ताऴदडक् कैत्तुणैक्
कुऱिहों ळामद वेऴक् कुऴुवनार्
शॅऱिविन् वाळीडु वाळिडैत् तेय्न्दुहुम्
पॊऱियिऱ् कान्ऱॆङ्गुम् वॅङ्गनल् पॊङ्गवे 388

तऱियिन् नीङ्किय–खूँटों से अलग हुए; कुऱि कॊळा–किसी की परवाह न करनेवाले; ताऴ् तट कै तुणै–नीचे तक लटकनेवाली बड़ी दो सूँड़ों वाले; मत वेऴ कुऴु अत्तार्–मत्तगजों के झुण्ड के समान राक्षसों की; चॆऱिविन्–भरी भीड़ से; इटै–बीच में; वाळॊटु वाळ् तेय्न्तु–तलवारों के टकराने से; उकुम्–गिरनेवाले; पॊऱियिल्–अग्निकणों से; कान् ऎङ्कुम्–वन में सर्वत्र; वॆम् कनल् पॊङ्क–जलानेवाली आग के उमड़ते। ३८८

(सेनाओं का वर्णन जारी है।) खूँटों से अलग छूटे हुए और बेपरवाह और नीचे लटकनेवाली दो मोटी सूँड़ों के मत्त गजदल के समान राक्षसों की भीड़ में तलवारें परस्पर टकरायीं। तब अग्निकण नीचे गिरे। उनके कारण जंगल भर में गरम आग प्रज्वलित हुई। (ऐसी सेना)। ३८८

मुरुडि रण्डु मुऴङ्गु मुऴक्कॊलि, उरुडि रण्डॆऴुन् देरॊलि युट्पुह
अरुडि रण्ड वरुक्कन्ऱन् मेलऴन्, ड्रिरुडि रण्डुवन् दीण्डिय वॆन्नवे 389

इरण्टु–दोनों बाजुओं में; मुरुटु मुऴक्कु–'मुरुडु' नामक ढोल की; मुऴक्कु ऒलि–ठनक का शब्द; उरुळ् तिरण्टु ऎऴुम्–चलनेवाले पहियों से उठनेवाले; तेर् ऒलियिनुळ्–रथ के शब्दों से; पुक–मिल गया, इस प्रकार; अरुळ् तिरण्ट–घनीभूत कृपा के समान; अरुक्कन् तन् मेल्–सूर्य पर; अऴन्ऱु–कोप करके; इरुळ्–अन्धकार; तिरण्टु वन्तु–मिल आकर; ईण्टियतु ऎन्न–धावा बोल रहा हो ऐसा। ३८९

दोनों बाजुओं में 'मुरुडु' नाम के ढोलों का नाद उठा और वह चलने वाले अनेक रथों के पहियों से उठे हुए नाद में समा गया। सभी जीवों पर होनेवाली दया घनीभूत हो उठी हो, ऐसा दिखनेवाले सूर्य पर सारे अन्धकार ने मानो दल बाँधकर आक्रमण किया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करती हुई (वह सेना आई)। ३८९

❀ तलैयिन् माशुणन् दाङ्गिय तारणि, निलैनि लादु मुदुहै नॆळिप्पुऱ
उलैवि लेऴुल हत्तिनु मोङ्गिय, मलैयॆ लामॊरु माडुतॊक् कॊन्नवे 390

माचणम् तलैयिल् ताङ्किय–शेषनाग के सिर पर धृत; तारणि–धरणी के;

निलै निलातु–अस्थिर होकर; मुतुकै नॆळिप्पु उऱ–अपनी पीठ पर बल खाते; एळ् उलकत्तितुम्–सातों लोकों में; ओङ्किय मलै ऎलाम्–ऊँचे उगे पर्वत सभी; ऒरु माट्टु–एक ही स्थान पर; तॊक्कतु अन्न–एकत्रित हो आये हों, ऐसा। ३६०

आदिशेष के द्वारा उसके सिर पर धारण की हुई भूमि की पीठ पर बल पड़ गयी; ऐसा सातों लोकों के अति ऊँचे सभी पहाड़ एक स्थान पर जुट आये हों (ऐसा वह सेना आई)। ३९०

आळिहळ् पूण्डन्न वरिहळ् पूण्डन, मीळिहळ् पूण्डन वेङ्गै पूण्डन्न
ञाळिहळ् पूण्डन नरिहळ् पूण्डन, कूळिहळ् पूण्डन कुदिरै पूण्डन 391

आळिकळ् पूण्टन–'याळियों' (अप्राप्य भयंकर सिंहों) से युक्त; अरिकळ् पूण्टन–सिंहों के साथ जुते हुए; मीळिकळ् पूण्टन–प्रेतों से युक्त; वेङ्कै पूण्टन–बाघों से युक्त; ञाळिकळ् पूण्टन–कुत्तों से जुते हुए; नरिकळ् पूण्टन–सियारों से युक्त; कूळिकळ् पूण्टन–भूतों से युक्त; कुतिरै पूण्टन–घोड़ों से युक्त (रथ आये)। ३६१

रथों में शरभों ('याळि' नामक अब अप्राप्य केसरी जाति के भयंकर जानवरों) से युक्त, सिंहों से जुते हुए, प्रेतों, भूतों, व्याघ्रों, कुत्तों, सियारों और अश्वों से जुते हुए रथ थे। ३९१

वल्लियक् कुळाङ्गळो सळैयि नीट्टमो
ऒल्लिबत् तॊहुदियो वोङ्गु मीङ्गलो
अल्लमर् ऱरिहळि नन्निह मोवॆन्नप्
पल्पदि नायिरम् पडैक्कै वीररे 392

वल्लिय कुळाङ्कळो–बाघों के दल या; मळैयिन् ईट्टमो–मेघ-समूह या; ऒल् इप तॊकुतियो–तेज चाल के गजों के झुण्ड या; ओङ्कुम् ओङ्कलो–ऊँचे पर्वत; अल्ल–जो नहीं थे; अरिकळिन् अनिकमो–सिंहों की सेना क्या; ऎन–ऐसे कहने योग्य; पल् पतिन्नायिरम्–अनेक दस सहस्र; पटै कै वीरर्–शस्त्रधारी वीर (आये)। ३६२

अनेक सहस्र वीर आये, जिनकी व्याघ्रों का समूह, मेघमण्डल, त्वरित-गति गज, ऊँचे पर्वत या सिंहों की सेनाओं से तुलना की जा सकती थी। वे हाथों में हथियार लिये आये। ३९२

एऱ्ऱिन मार्त्तन्न वेन मार्त्तन, काऱ्ऱिन मार्त्तन्न कळुदै यार्त्तन
तोऱ्ऱिन मात्तिरत् तुलहु शूळ्वरुम्, पाऱ्ऱिन मार्त्तन्न पणिल मार्त्तन 393

एऱु इनम् आर्त्तन–सिंहों के 'लेंहड़े' (झुण्ड) गरजे; एनम् आर्त्तन–सुअर चिल्लाये; काऱु इनम् आर्त्तन–प्रेतों के दलों ने शोर मचाया; कळुतै आर्त्तन–गधे रेंके; तोऱ्ऱिन मात्तिरत्तु–(भाव) उठते ही; उलकु चूळ् वरुम्–संसार भर में घूम आनेवाले; पाऱु इनम्–गीधों के समूह; आर्त्तन–बोले; पणिलम् आर्त्तन–शंख बजे। ३६३

उनमें सिंह गरजे, सुअर चीखे; प्रेत चिल्लाए और गधे रेंके। विचार

करते ही सारी दुनिया घूम आ सकनेवाले गीध जोर से बोले। शंख बजे। (आर्त्तन का अर्थ 'बँधे थे' भी है)। ३९३

तेरित्तन् दुवन्ऱिन शिऱुहट् चॅम्मुहक्, कारिन नॅरुङ्गित्त कालिड़् काड़्परित्
तारिनङ् गुळुविन दडैयिल् कूड़्ड़ॅनप्, पेरिनङ् गडलॅनप् पॅयरुङ् गालेये 394

पेर् इतम्–पदाति ने; तटैयिल् कूड़्ड़ु ॲन–दुर्द्धर्ष यम के समान; कटल् ॲन–समुद्र के समान; पॅयरुम् काले–जब कूच किया; तेर् इत्तम् तुवन्ऱित्त–रथदल मिल आये; चिऱु कण्–छोटी आँखों और; चॅम् मुक–लाल मुख के; कार् इतम्–गज-समूह; नॅरुङ्कित्त–आ जुटे; कालिल्–वायु के समान; काल् परि–पैर रखनेवाले (दौड़नेवाले) अश्वों की; तार् इत्तम्–सेना के दल; कुळुवित्त–भीड़ लगाते आये। ३९४

पदाति वीर आये। वे अप्रतिहत यम के समान, सघोष समुद्र के समान कूच कर आये। तब उनके साथ रथों, छोटी आँखों के और लाल मुखों के गजों और वायुवेग से चलनेवाले अश्वों की सेनाएँ भी आ सम्मिलित हुईं। ३९४

मळुक्कळु मयिल्हळुम् वयिर वाट्कळुम्
ॲळुक्कळुन् दोमरत् तॉहैयु मीट्टियुम्
मुळुक्कलु मुशुण्डियुन् दण्डु मत्तलैक्
कळुक्कळु मुलक्कैयुङ् गाल पाशमुम् 395

मळुक्कळुम्–परशु; अयिल्कळुम्–भाले; वयिर वाट्कळुम्–सुदृढ़ तलवारें; ॲळुक्कळुम्–लोहे के मूसल; तोमर तॉकैयुम्–तोमर-समूह; ईट्टियुम्–बर्छियाँ; मुळुक्कलुम्–वर्तुल पत्थर; मुचुण्टियुम्–'भुशुंडी' नाम के हथियार; तण्टुम्–दण्ड; मु तलै ॲळुक्कळुम्–तीन सिर वाले शूल; उलक्कैयुम्–और मुद्गर; काल पाचमुम्–काल-पाश। ३९५

उनके पास निम्नलिखित हथियार थे। परशु, भाले, सुदृढ़ असियाँ, लोहे के मूसल, तोमर-समूह, वर्तुल पत्थर, भुशुण्डी नामक हथियार, दण्डायुध, त्रिशूल व काले पाश; । ३९५

कुन्दमुङ् गुलिशमुङ् कोलुम् पालमुम्
अन्दमिल् शावमुम् शरमु माळियुम्
वॅन्दॉळिल् वलयमुम् विळङ्गुञ् जङ्गमाम्
पन्दमुम् कप्पणप् पडैयुम् पल्लमुम् 396

कुन्तमुम्–साँग; कुलिचमुम्–कुलिश; कोलुम्–छड़ियाँ; पालमुम्–भिंडिपाल; अन्तम् इल् चापमुम्–बेशुमार चाप; चरमुम्–शर; आळियुम्–चक्र; वॅम् तॉळिल् वलयमुम्–भयंकर वलय; विळङ्कु चङ्कमाम्–श्वेत शंखों की; पन्तमुम्–राशियाँ; कप्पण पटैयुम्–'कप्पण' नामक हथियार; पल्लमुम्–बल्लम। ३९६

कुंत, कुलिश, छड़ियाँ, भिण्डिपाल, असंख्यक चाप, शर, चक्र, भयंकर वलय, श्वेत शंखबंद, कप्पण नामक हथियार और बल्लम। ३९६

आदियि लरुक्कनु मन्नलु मञ्जुरुम्, शोदिय शोरियुन् तूवुन् दुन्नितिन
एदिहण् मिडैन्दन विमैय वर्क्कॅलाम्, वेदनै कोडुत्तन वाहै वेय्न्दन 397

एतिकळ्–हथियार; आति इल् अरुक्कनुम्–अनादि सूर्य; अन्नलुम्–अग्नि भी; अञ्चु उरुम्–(जिसको देख) भयभीत हो जायँ, ऐसी; चोतिय–ज्योति वाले; चोरियुम् तूवुम्–रक्त और मांस से; तुन्नतिन–लिप्त थे; इमैयवर्क्कु ॲलाम्–सभी देवों को; वेततै कोट्टुतत–जिन्होंने वेदना दी थी, ऐसे; वाकै वेय्न्तत–अनेक विजय पा चुके हैं, वे; मिटैन्तत–भरे रहे। ३९७

ये ऐसे हथियार थे, जिनकी ज्योति के सामने अनादि सूर्य और अनल भी डरते थे; जो मांस और रक्त से लिप्त थे; जिन्होंने देवों को त्रास दिया था और जो हर बार उन राक्षसों को विजय दिला चुके थे। ३९७

आयिर मायिरङ् गळिड्रिॅ ताड्रलर्, मायिरु ञालत्तै विळुङ्गुम् वायिनर्
तीयॅरि विळियिनर् निरुदर् शेनैयिन्, नायहर् पदिन्मरो डडुत्त नाल्वरे 398

निरुतर् चेनैयिन् नायकर्–राक्षस-सेना के नायक; पतिन्मरोटु अटुत्त नाल्वर्–दस और चार चौदह; आयिरम् आयिरम् कळिड्रिन्–सहस्र (अनेक) सहस्र गजों के; आड्रलर्–वल वाले; मा इरु ञालत्तै–वहुत बड़े लोक को; विळुङ्कुम् वायिनर्–निगल सकनेवाले मुखों के; ती ॲरि विळियिनर्–आग उगलती दृष्टि वाले। ३९८

इन सेनाओं के चौदह सेनानायक थे। वे एक-एक सहस्र-सहस्र गजों का बल रखते थे। वे एक-एक सारी धरती को निगल सकें, ऐसा बड़ा मुख रखते थे। उनकी आँखें आग बरसाती थीं। ३९८

आड्रिनो डायिर ममैन्द वायिरम्, कूड्रिन दोरुपडै कुड्रित्त वप्पडै
एड्रित देळ्ळिन दिरट्टि यॅन्बराल्, ऊड्रित शेनैयिन् ऱॉहुदि युन्नुवार् 399

ऊड्रित चेनैयिन् तोकुति—युद्ध-निपुण सेना की संख्या का; उन्नुवार्–हिसाब लगानेवालों का; कूड्रित्तु–कहना है; ओरु पटै–एक पलटन; आड्रितोटु आयिरम् अमैन्त–छः हजार के; आयिरम्–हजार (छः लाख); कुड्रित्त अ पटै–जिसकी गणना हुई, उस पूरी सेना की संख्या; एळ्ळित्तु इरट्टि–चौदह (पलटनों का कुल); ॲन्पर–कहते हैं। ३९९

उस सेना में चौदह सेनाएँ मिली थीं। किसी ने गिनकर बताया कि हर सेना में साठ लाख संख्या के वीर थे। ऐसी चौदह सेनाओं का मेल था वह बड़ी सेना। ३९९

उरत्तिन	**रुमॅन**	**वुरड्रुम्**	**वायिन्नर्**
करत्तॅड्रि	**पडैयिन्नर्**	**कमलत्**	**तोन्ड्रुम्**
वरत्तिनर्	**मलैयॅन**	**मळैतु**	**यिन्ड्रॅळुम्**
शिरत्तिनर्	**तरुक्किनर्**	**शॅरुक्कुञ्**	**जिन्दैयार् 400**

उरत्तिनर्–वीर्यवान; उरुम् ॲन उरड्रुम् वायिनर्–वज्र के समान नाद करनेवाली

वोली के; करत्तु ॲऱि पटैयित्तर्–हाथ से फेंके जानेवाले हथियार-धारी; कमलत्तोन तरुम् वरत्तित्तर्–ब्रह्माजी से प्राप्त वर वाले; मलै ॲत–पर्वत समझकर; मऴै तुयिन्ऱु ॲऴुम्–मेघ जिन पर सोकर उठ जाते हैं, वैसे; चिरत्तित्तर्–सिर वाले; तरुक्किनर्–गर्वीले; चॅरुक्कुम् चिन्तैयार्–युद्धोत्साही मन वाले। ४००

उस सेना के वीर बड़े ही बली थे। वज्र के समान बोली वाले थे। हाथों से हथियार चलाकर लड़नेवाले थे। उन्हें ब्रह्माजी से वर मिले थे। उनके सिर ऐसे थे कि मेघ भी उन्हें पर्वत समझकर उन पर आकर ठहरते, सोते और उनसे उठकर चले जाते। बड़े गर्वीले थे और शत्रुओं को मिटाने का अभिमान व उत्साह रखते थे। ४००

विण्णळ	विडनिमिर्न्	दुयर्न्द	मेन्नियर्
कण्णळ	विडलरु	मार्बर्	कालिनाल्
मण्णळ	विडुनॅडु	वलत्तर्	वानिडै
ॲण्णळ	विडलरुञ्	जॅरुवॅन्	ऱेऱिनार् 401

विण् अळवु इट–आकाश को नापने के लिए; निमिर्न्तु उयर्न्त–सीधे और ऊँचे हुए; मेन्नियर्–शरीर वाले; कण् अळव इटल् अरुम्–दृष्टि से नापना कठिन; मार्पर–ऐसे छाती वाले; कालिनाल्–पैरों से; मण् अळवु इट–पृथ्वी को नाप सकनेवाली; नॅटुवलत्तर्–अधिक शक्ति वाले; वान् इटै–आकाश में; ॲण् अळवु इट अरुम्–गिनना कठिन; चॅरु वॅन्ऱु–उतने युद्ध में जीतकर; एऱिनार्–बढ़े-चढ़े थे। ४०१

उनके शरीर इतने ऊँचे थे कि वे आकाश को नाप सकते थे। वे दृष्टि माप न सके ऐसे विशाल वक्ष वाले थे। उनके पैरों में इतना बल था कि भूमि को नाप सकते थे। गिनती असम्भव हो, उतनी लड़ाई में विजय पाकर वे बढ़े-चढ़े हो गये थे। ४०१

इन्दिरन् मुदलिनो रॅऱिन्द मापपडै, शिन्दिन तॅऱित्तुहच् चॅऱिन्द तोळिनार्
अन्दह नडितॊऴु दडङ्गु माणैयार्, वॅन्दिऱ लुरुवुहॊण् डनैय मेन्नियार् 402

इन्तिरन् मुतलिनोर्–इन्द्रादि देव; ॲऱिन्त–जो फेंकते थे; मा पटै–उन श्रेष्ठ हथियारों को; तॅऱित्तु चिन्तिन उक–झेलकर तोड़कर छितरा दिया (जिन्होंने), ऐसे; चॅऱिन्त तोळिनार्–कठोर कन्धों वाले; अन्तकन्–यम; अटितॊऴुतु अटङ्कुम्–चरण-वन्दना करके अधीन रहेगा; आणैयार्–ऐसे रोबीले; वॅम् तॊऴिल्–क्रूर काम ने ही; उरुवु कॊण्टनैय–रूप धर लिया हो, ऐसे; मेन्नियार्–शरीर वाले। ४०२

उनके सारयुक्त सबल कंधे ऐसे थे कि इन्द्रादि देवों द्वारा फेंके गये सशक्त हथियार उनसे लगकर टूट गये और बिखर गये। यम भी विनत होकर उनकी आज्ञा मानता था, ऐसे रोबीले थे। क्रूर कार्य ने ही एक रूप धर लिया हो, ऐसे रूप वाले थे। ४०२

चूलमुम् पाशमुन् तॊडर्न्द शॆम्मयिर्च्
चालमुन् दरुहणु मॆयिरुन् दाङ्गिनार्
आलमुम् वॆळिदॆनु निरत्त राऱ्ऱलाल्
कालनुङ् गालनॆन् ऱयिर्क्कुङ् गाट्चियार् 403

चूलमुम् पाचमुम्–शूल और पाश; तॊटर्न्त–मिले रहे; चॆम् मयिर् चालमुम्–लाल बाल-जाल; तरुकणुम्–भयंकर आँखें; ऍयिरुम्–और वक्र दाँत; ताङ्कितार्–धारण करनेवाले; आलमुम् वॆळितु ऍतुम्–इसके सामने हलाहल श्वेत है, ऐसा; निऱत्तर्–रंग वाले; आऱ्ऱलाल्–शक्ति में; कालनुम्–यम भी; कालन् ऍन्ऱु–अपना काल समझे; अयिर्क्कुम् काट्चियार्–संशय और भय करेगा, ऐसे आकार वाले। ४०३

उनके पास शूल, पाश आदि हथियार थे। शरीर पर लाल बाल घने रूप से उगे थे। भयंकर आँखें थीं। उनका रंग इतना काला था कि हलाहल भी श्वेत लगता था। शक्ति में वे इतने बढ़े थे कि यम भी उन्हें अपने यम की शंका करता और भय मानता। ४०३

कऴलिनर् तारिनर् कवश मार्बिनर्, निऴलुरु पूणिनर् नॆरित्त नॆऱ्ऱियर्
अऴलुरु कुञ्जिय रमरै वेट्टुवन्, दॆऴलुरु मनत्तिन रॊरुमै यॆय्दिनार् 404

कऴलिनर्–पायलधारी; तारिनर्–मालाधारी; कवच मार्पिनर्–कवचवक्ष; निऴल् उरु पूणिनर्–प्रभापूर्ण आभरणधारी; नॆरित्त नॆऱ्ऱियर्–कोप से कुंचित भाल वाले; अऴल् उरु कुञ्चियर्–अग्निशिखा के समान घने केश वाले; अमरै वेट्टु–युद्ध चाहकर; उवन्तु ऍऴल् उरु–चाव लिये उमँगनेवाले; मनत्तिनर्–मन के; ऒरुमै ऍय्तिनार्–आपस में मेल रखनेवाले। ४०४

उनके पैरों में वीर कंकण पड़े थे। छाती पर कवच थे। वे कान्तिपूर्ण आभरण पहने हुए थे। उनके भाल कोप-कुंचित थे। केश अग्निशिखा के समान लाल और डरावने थे। युद्ध करना चाहकर चाव के साथ उमंगित होनेवाले मन के वे परस्पर मेल रखते थे। ४०४

मरुप्पिऱा मदक्कळिऱ् ऱमरर् मन्ननुम्
विरुप्पुऱा मुहत्तॆदिर् विऴिक्किन् वॆन्निडुम्
उरुप्पॆऱा दुलैवुऱ मुलह मून्ऱिनुम्
शॆरुप्पॆऱात् तिनवुऱु शिहरत् तोळिनार् 405

इऱा मरुप्पु–अटूट (सबल) दाँतों के; मत कळिऱ्ऱु–मत्तगज (ऐरावत) पर सवार; अमरर् मन्ननुम्–देवेन्द्र भी; मुकत्तु ऍतिर्–इनके मुख के सामने; विऴिक्किन्–आँख खोल देखेगा तो; विरुप्पु उऱा–सामने रहना न चाहकर; वॆन् इटुम्–पीठ दिखाते हुए भाग जायगा; उरु पॆऱातु–अस्थिर और; उलैवुऱुम्–चंचल; उलकम् मून्ऱिनुम्–तीनों लोकों में; चॆरु पॆऱा–युद्ध प्राप्त न करके; तिनवु उऱु–खुजली से भरे; चिकर तोळिनार्–पर्वतशिखर-सम कन्धों वाले। ४०५

वे राक्षस ऐसे (वीर) थे कि देवेन्द्र भी, जो अक्षुण्ण, सबल दाँतों वाले ऐरावत गज का स्वामी है, उनको सामने से देखे तो ठहरना न चाहकर पीठ दिखाते हुए भाग जाय ! नश्वर तीनों (स्वर्ग, मध्य और पाताल) लोकों में उन्हें युद्ध का अवसर नहीं मिला था अतः पर्वतशिखर-सम उनके कंधों में खुजली (युद्ध की प्यास) हो गयी थी। ४०५

कुञ्जरङ् गुदिरैपेय् कुरङ्गु कोळरि
वॅम्जिनक् करडिनाय् वेङ्गै याळियॅन्
ऱञ्जुरक् कन्नल्बुरै मुहत्त रार्हलि
नञ्जुदीक् कॅन्नप्पुरै नयनत् तार्हळुम् 406

कुञ्चरम् कुतिरै–कुंजर, अश्व; पेय्–प्रेत; कुरङ्कु–वानर; कोळ् अरि–सबल सिंह; वॅम् चितम् करटि–भयंकर क्रुद्ध रीछ; नाय्–कुत्ता; वेङ्कै–व्याघ्र; याळि–'याळि' (शरभ) नामक जानवर; ॲन्ऩ–समझकर; अञ्चु उऱ–भय खाए ऐसा; कत्तल् पुरै मुकत्तर्–अनल-सम मुख वाले; आर्कलि नञ्चु–सघोष सागर से (मंथन के समय) उत्पन्न विष; तीक्कॅत्त पुरै–घनीभूत हुआ हो ऐसे; नयतत्तार्कळुम्–नेत्र वाले थे। ४०६

किसी का मुख कुंजर के समान था, किसी का अश्व के समान। प्रेत, वानर, बली सिंह, भयंकर और क्रुद्ध रीछ, कुत्ता, व्याघ्र और शरभ के समान लगनेवाले उनके डरावने मुख अनल-सदृश थे। समुद्र से (क्षीरसागर-मन्थन के अवसर पर) उत्पन्न हलाहल के समान उनकी आँखें थीं। ४०६

ॲणगैय रॅळहैय रेळु मॅट्टुमायक्
कणगनल् शॊरिदरु मुहत्तर् कालिनर्
वणगैयिल् वळैत्तुयिर् वारि वायिलिट्
टुणगैयि नुवहैय रुलप्पि लार्हळुम् 407

ॲण् कैयर्–आठ हाथ वाले; ॲळु कैयर्–सात हाथ वाले; एळुम् ॲट्टुम् आय्–सात-सात और आठ-आठ; कण्–आँखें; कनल् चॊरि तरु–अंगार उगलती थीं (जिनमें); मुकत्तर्–ऐसे मुख वाले; कालितर–वैसे ही पैरों वाले; उयिर्–जीवों को; वण् कैयिल्–सबल हाथों से; वळैत्तु वारि–समेट लेकर; वायिल् इट्टु–मुख में डालकर; उण्कैयिल्–खाने में; उवकैयर्–आनन्द पानेवाले; उलप्पु इलार्कळुम्–असंख्यक लोग। ४०७

किसी के आठ हाथ थे, किसी के सात। वैसे ही सात-सात, आठ-आठ आँखों के द्वारा उनके मुख आग बरसा रहे थे। वैसे ही उनके पैर सात-सात या आठ-आठ थे। उनको जीवों को अपने सबल हाथों से समेट ले अपने मुख में डालकर खाने में बड़ा आनन्द आता था। वे अगणित थे। ४०७

इयक्करिऱ् परिऱ्ुतत्त अवुण रिट्टत्त
मयक्कुरुत् तमररै वलियिऩ् वाङ्गिन
तुयक्किल्हन् दिरुवरैत् तुरन्दु वारिन
नयप्पुरु शित्तरै नलिन्दु वव्वित 408

इयक्करिल् परिलुतत्त–यक्षों से छीन लिये गये; अवुणर् इट्टत्त–दानवों से (भागते वक्त) नीचे डाले हुए; अमररै–सुरों को; मयक्कुरुत्तु–माया से मोहित करके; वलियिऩ् वाङ्कित्त–अपने बल से लिये गये; तुयक्कु इल्–अथक; कन्तिरुवरै–गन्धर्वों को; तुरन्तु वारिन–(डरा-धमकाकर उनको) भगाकर उनसे लिये गये; नयप्पु उरु चित्तरै–सुलह करनेवाले सिद्धों से; नलिन्तु वव्वित्त–दुख देकर उगाह लिये गये (झण्डे आदि)। ४०८

उनके पास झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने यक्षों के पास से छीन लिया था; दानवों ने युद्धभूमि में छोड़ दिया था; देवों को भ्रमित करके ले लिया था; अथक गन्धर्वों को भगाकर उनसे ग्रस लिया था। वे भी झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने सन्धि करने को उत्सुक सिद्धों को सताकर छीन लिया था। ४०८

कोडिदळै कविहैवान् ड्रोङ्गल् कुञ्जरम्
पडियुरु पदाहैमी विदानम् बन्मणि
इडैमिळिर् शामरैक् कुळाङ्गोण् डॆङ्गणुम्
मिडैदलि नुलहॆलाम् वॆयिलि ळन्दवे 409

कोटि—वस्त्र-झण्डे; तळै–मोरछल; कविकै–छत्र; वात् तोङ्कल्–बड़े हार; कुञ्चम् मेल् पटि उरु–झालरों से युक्त; पताकै–बड़ी पताकाएँ; मी वितातम्–उच्च वितान; पल् मणि इटै मिळिर्–अनेक रत्न बीच-बीच में चमकते हैं, ऐसे; चामरै कुळाम्–चँवर-समूह; कोण्टु–इनको लेकर; ऍङ्कणुम् मिटैतलिल्–सब जगह भीड़ लगाते रहे, इसलिए; उलकु ऍलाम्–सारी धरती; वॆयिल् इळन्त–धूप से वंचित हो गई। ४०९

उस विपुल सेना के पास झण्डे थे, मोरछल थे और छत्र थे। बड़े-बड़े हार, झालरों सहित बड़ी-बड़ी पताकाएँ, वितान और ऐसे चामरों की राशियाँ जो रत्नों से सजे थे। ये सब लिये हुए वह सेना भूमि पर सर्वत्र फैली रही। इसलिए भूतल धूप से वंचित रह गया। ४०९

ऍळुवरी डॆळुवर्नी ळुलह मेळॊडॆळ्
तळुविय वॆन्ऱियर् तलैवर् तानैयर्
मळुवितर् वाळितर् वयङ्गु शूलत्तार्
उळुवैयॊ डॆरियॆन वुडऱ्ऱुञ् जीऱ्ऱत्तार् 410

तानैयिन् तलैवर्–सेनानायक; ऍळुवरोटु ऍळुवर्–सात और सात (चौदह); नीळ् उलकम्–विस्तृत लोक; एळोटु एळ्–सात और सात; तळुविय–(इनमें) व्याप्त;

वॆन्ऱियर्–विजय के स्वामी; मळुविऩर्–परशु; वाळिऩर्–तलवार; वयङ्कु चूलत्तर्–और उज्ज्वल शूलधारी; उळुवैयॊटु अरि ॲऩ–व्याघ्र और केसरी के समान; उटऱ्ऱुम्–दुखानेवाले; चीऱ्ऱत्तर्–क्रोधी। ४१०

सेनानायक चौदह थे। उनकी विजय चौदहों भुवनों पर व्याप्त थी। उनके पास परशु तलवारें और चमकदार शूल आदि हथियार थे। वे व्याघ्र और सिंहों के समान लोगो को अपार दुख देनेवाले क्रोधशील राक्षस थे। ४१०

विल्लिऩर् वाळिऩ रिदऴै मेलिडुम्
पल्लिऩर् मेरुवैप् पऱिक्कु माऱ्ऱलर्
पुल्लिऩर् तिशैदॊऱुम् पुरवित् तेरिऩर्
शॊल्लिऩ मुडिक्कुरुन् दुणिवि नॆञ्जिनार् 411

विल्लिऩर्–धनुर्धर; वाळिऩर्–तलवारधारी; इतऴै मेलिटुम् पल्लिऩर्–अधरों पर टिके दाँत वाले; मेरुवै पऱिक्कुम् आऱ्ऱलर्–मेरु को उखाड़ लेने की शक्ति रखनेवाले; पुरवि तेरिऩर्—अश्व-जुते रथ वाले; चॊल्लिऩ मुटिक्कुरुम्–कहे हुए कार्य को पूरा करने का; तुणिविऩ् नॆञ्चिऩार्–साहस रखनेवाले मन के; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; पुल्लिऩर्–आ जुटे। ४११

वे सेनानायक धनुष और तलवारों से लैस थे। उनके दाँत अधरों को काट रहे थे। मेरु को भी उखाड़ सकनेवाले वे अश्व-जुते रथों पर सवार थे। जो कहते वही कर दिखाने का साहस रखते थे। वे सभी दिशाओं में घेरकर खड़े रहे। ४११

तूडणन् ऱिरिशिरात् तोऩ्ऱ लादियर्
कोडणै मुरशिऩङ् गुळिरुञ् जेऩैयर्
आडव रुयिर्हव रलङ्गल् वेलिनार्
पाडव निलैयिऩर् पलरुञ् जुऱ्ऱिनार् 412

आटवर् उयिर् कवर्–(सामने लड़नेवाले) वीरों की जान हर लेनेवाली; अलङ्कल् वेलिनार्–माला से अलंकृत बर्छी वाले; पाटव निलैयिऩर्–पटु स्थिति में रहनेवाले; कोटणै मुरचु इऩम्–गम्भीर नादयुक्त ढोलों के समूह; कुळिरुम्–जिसमें ठनक उठते थे, ऐसी; चेऩैयर–सेना वाले; तूटणऩ् तिरिचिरा तोऩ्ऱल् आतियर्–दूषण, त्रिशिरा आदि नायकों को पुरस्सर करते हुए; पलरुम्–अनेक सेनानी; चुऱ्ऱिऩार्–आ जुटे। ४१२

उनके पास माला से अलंकृत भाले थे, जो सामने आये शत्रुओं के प्राण हर लेते थे। वे दक्षता में बढ़ी-चढ़ी स्थिति में थे। उनके पास बड़ी सेनाएँ थीं, जिनमे ढोलो की उच्च ठनक सुनाई देती थी। दूषण, त्रिशिरा आदि अधिपतियों को पुरस्सर करके वे आ एकत्र हुए। ४१२

आऩ्ऱमै यॅऱिपडै यळुवत् तार्हलि, वान्ऱॉडर् मेरुवै वळैत्त दामॅऩ
ऊऩ्ऱिन तेरित्त ऩुयर्न्द तोळिनऩ्, तोन्ऱिनऩ् करऩ्नमन् ऱुणुक्क मॅय्दवे 413

आऩ्ऱु अमै–खूब मिली रही; ॲऱि पटै–शत्रुघातक सेनाएँ रूपी; अळुवत्तु आर् कलि–गम्भीर सघोष सागर; वान् तॉटर् मेरुवै–गगनस्पर्शी मेरु को घेर आया हो, ऐसा; ऊऩ्ऱिय तेरितऩ्–मध्य में स्थापित रथ वाला; उयर्न्त तोळितऩ्–उन्नत भुजाओं वाला; करऩ्–खर; नमन् तुणुक्कम् ॲय्त–यम को आतंकित करते हुए; तोऩ्ऱितऩ्–प्रकट हुआ (दिखाई दिया)। ४१३

वे सेनाएँ, जो बड़ी थीं और वीरों से भरी थी, गम्भीर समुद्रों के समान थीं। उनके मध्य खर का रथ स्थापित था। यह दृश्य ऐसा लगा, मानो समुद्र ने मेरु को घेर लिया हो ! वह रथ आकाश तक ऊँचा था और मेरु के समान था। उसमें बैठे हुए उन्नत कंधों वाला खर, यम को भी भयभीत करते हुए दिखाई दिया। ४१३

अशुम्बुरु मदहरि पुरवि याडहत्, तशुम्बुरु शयन्दऩ मरक्कर् ताडर
विशुम्बुरु तूळियाल् वॅण्मै मेयिऩ, पशुम्बरि पहलवन् बॆम्बॊन् ऱेररो 414

अचुम्पु उरु–मद बहानेवाले; मत करि–मत्तगज; पुरवि–अश्व; आटक तचुम्पु उरु–स्वर्णकलशों वाले; चयन्तनम्–स्यंदन; अरक्कर् ताळ्–पदाति राक्षस वीरों के; ताळ्–अपने पैरों से; तर–उठनेवाली; विचुम्पु उरु तूळियाल्–व आकाश पर जमी धूलि से; पकलवऩ्–दिनकर के; पचुम् करि–हरे घोड़े; पैम् पॊऩ् तेर्–व चोखे स्वर्ण का रथ; वॅण्मै मेयिऩ–धवलता से ढक गये। ४१४

मद बहानेवाले मत्तगज, अश्व, स्वर्णकलशों वाले रथ, पदाति के राक्षस वीर —इन सबके पदाघात से धूलि जो उड़ी, उससे दिनकर के हरे घोड़ों और स्वर्णरथ पर भी धवलता छा गयी। यानी वे श्वेत दिखे। ४१४

वऩन्दुहळ् पट्टऩ मलैयिऩ् वाऩुयर्, कऩन्दुहळ् पट्टऩ कडल्ह डूर्न्दऩ
इऩन्दॊहु तूळिया लिशैप्प दॆन्ऩिऩिच्, चिऩन्दॊहु नॆडुङ्गडर् चेऩै शॆल्लवे 415

चिऩम् तॊकु–उमड़ते क्रोध की; नॆटुम् कटल् चेऩै–विशाल सागर-सी सेना; चॆल्ल–जब (जनस्थान से पंचवटी की ओर) चली तब; इनम् तॊकु तूळियाल्–विपुल राशि में उठी धूलि से; वऩम्–वे वन; तुकळ् पट्टऩ–सर्वत्र धूलि से ढक गये; वाऩ् उयर्–आकाश में ऊँचे उठे; मलैयिऩ् कऩम्–पर्वतों पर के घन; तुकळ् पट्टऩ–धूलि से भर गये; कटल्कळ्–समुद्र; तूर्न्तऩ–भरकर धरती बन गये; इऩि ॲऩ्ऩ इचैप्पतु–आगे क्या कहा जाय। ४१५

जब क्रोधोन्मत्त, विशाल सागर-सम सेना जनस्थान से पंचवटी जाने लगी, तब धूलि की राशि इतनी उठी कि वन सब धूलिधूसरित हो गये। आकाशस्पर्शी पर्वतों पर के मेघ ढक गये। समुद्र भी पटकर धरती बन गये। इससे बढ़कर क्या कहा जाय ? । ४१५

निलमिशै विशुम्बिडै नॆरुक्क लानॆडु
मलैमिशै मलैयिन्नम् वरुव पोन्मलैत्
तलैमिशैत् तलैमिशैत् ताविच् चॆन्ऱनर्
कॊलैमिशै नञ्जॆनक् कॊदिक्कु नॆञ्जिनार् 416

कॊलै मिचै–मारने के उत्साह में; नञ्चु ॲत्त–विष के समान; कॊतिक्कुम् नॆञ्चिन्नार्–खौलते मन वाले; निलमिचै–भूमि पर; विचुम्पु इटै–आकाश पर; नॆरुक्कलाल्–स्थानाभाव हो जाने से; नॆटु मलै मिचै–बड़े पर्वतों पर; मलै इनम् वरुव पोल्–पर्वत-समूह आ रहा हो, ऐसा; मलै तलै मिचै तलै मिचै–पर्वत-शिखर से शिखर पर; तावि चॆन्ऱतर्–लपकते चले। ४१६

युद्ध में शत्रुसंहार करने के उत्साह के साथ, खौलता विष-सम मन लेकर जो वीर जा रहे थे, उनको पर्वतों के शिखरों पर चलनेवाले अन्य पर्वतों के समान शिखर से शिखर उछलकर जाना पड़ता था; क्योंकि सारी भूमि वीरों से भर गयी थी। ४१६

❀ वन्ददु शेनै वॆळ्ळम् वळ्ळियोन् मरुङ्गिन् माया
वन्दमा विनैयम् माळप् पट्रुरु पॆट्रि योर्क्कुम्
उन्दरु निलैय दाहि युडन्नुडॆन् दुयिर्ह डम्मै
अन्दहर् कळिक्कु नोय्पो लरक्किमुन् नाह वम्मा 417

माया–अनंत; पन्त मा वितैयम्–वन्धन जो कर्म हैं, उनके; माळ–मिटने पर; पट्रु अऱ–राग-हीन; पॆट्रियोर्क्कुम्–श्रेष्ठ ज्ञानियों के लिए भी; उन्तु अरु निलैयतु आकि–अप्रतिहत वन; उटन् उडॆन्तु–शरीर के साथ रहकर; उयिर्कळ् तम्मै–जीवों को; अन्तकर्कु अळिक्कुम्–यम के हाथ सौंप देनेवाले; नोय् पोल्–रोग के समान; अरक्कि मुन्नाक–राक्षसी शूर्पणखा को आगे करके; वळ्ळियोन् मरुङ्कित्–उदार प्रभु के पास; चेनै वॆळ्ळम् वन्ततु–सेना-प्रवाह आया। ४१७

वह सेना-सागर प्रभु श्रीराम के सम्मुख आ गयी। उसको शूर्पणखा आगे रहकर ले आयी। वह उस रोग के समान थी, जो कर्मवन्धननाशक रागरहित ज्ञानियों के लिए भी अप्रतिहत वनकर शरीर के साथ रहता है और जीवों को यम के हाथ सौंप देता है। ४१७

तूरियक् कुरलिन् वानिन् मुहिट्कणन् दुणुक्कङ् गॊळ्ळ
वार्शिलै यॊलियि नञ्जि युरुमॊरु मरुक्कङ् गॊळ्ळ
आर्हलि तानु मुट्कि यशॆवुड् वरक्कर् शेनै
पोरुवन् दिरुन्द वीर नुडॆविडम् बुक्क दन्ऱे 418

तूरिय कुरलिन्–बाजों के नाद से; वानिन् मुकिल् कणम्–आकाश के मेघ-समूहों को; तुणुक्कम् कॊळ्ळ–कँपाते हुए; वार् चिलै ऒलियिन्–लम्बे धनुष की टंकार की ध्वनियों से; अञ्चि–डरकर; उरुम्–वज्र भी; ऒरु मरुक्कम् कॊळ्ळ–व्यग्र हों,

ऐसा; आर् कलि तानुम्–गरजते सागर भी; उट्कि–भीतर से काँपकर; अचैवु उड़–उद्वेलित हों, ऐसे; अरक्कर् चेत्तै–राक्षस-सेना; पोर् उवन्तु इरुन्त–युद्ध की सानन्द प्रतीक्षा में जो रहे; वीरन्–श्रीरघुवीर के; उर्रैवु इटम्–रहने के स्थान को; पुक्कतु–जा पहुँचीं। ४१८

मारू वाजे बजे और आकाश के मेघसमूह वह सुनकर काँप उठे। दीर्घ धनुषों की टंकारें निकलीं तो वज्र भी उनसे डर गये और समुद्र भी भीतर से उद्वेलित होकर मथ गये। इस ठाट-वाट के साथ वे राक्षस-सेनाएँ उस पर्णशाला के पास आयीं, जिसमें रघुकुलवीर श्रीराम युद्ध की, आनन्द के साथ प्रतीक्षा करते हुए रह रहे थे। ४१८

वायुबुलर्न् दऴिन्द मॅय्यिन् वरुत्तत्त वऴियिल् याण्डुम्
ऑय्विल निमिर्न्दु वीङ्गु मुयिर्प्पिन वुलैन्द कण्ण
तीयवर् शेत्तै वन्दु शेर्न्दमै तॅरियच् चॅन्रु
वेय्दॅरिन् दुरैप्प पोन्र पुळ्ळॊडु विलङ्गु मम्मा 419

पुळ् ऑटु विलङ्कुम्–पक्षी और जानवर; वाय् पुलर्न्तु–मुख सूखकर; अऴिन्त–मिटे जो; मॅय्यिन् वरुत्तत्त–शरीर में रुग्ण हुए जो; वऴियिल् याण्टुम् ओय्वु इल–मार्ग में कहीं विश्राम न लेकर; निमिर्न्तु वीङ्कुम् उयिर्प्पित–मुख ऊपर कर लम्बी साँसें छोड़नेवाले; उलैन्त कण्ण–प्रभाहीन आँख वाले; तीयवर् चेत्तै वन्तु चेर्न्तमै–खलों की सेना के आगमन का समाचार; तॅरिय चॅन्रु–पहले जानकर दौड़कर; वेय् तेरिन्तु उरैप्प पोन्र–चर जाकर खबर देते हों जैसे (वने)। ४१९

इस विपुल सेना से आक्रांत होकर पक्षी और जानवर भागे। उनके मुख भय के मारे सूख गये। शरीर रुग्ण हो गये। बीच में वे कहीं विश्राम नहीं कर सके। मुख ऊपर उठाकर लम्बी साँसें छोड़ते हुए वे भागे और उनकी आँखें प्रभाहीन हो गयीं। वे चरों का काम करते हुए बुरे लोगों की सेना के आगमन की खबर सुनाने आये हों—ऐसे भागते आये। ४१९

तूळियिन् पडलै वन्दु तॊडर्वुर मरमुन् दूरुम्
ताळिडै यॊडियु मोशै शडशड वॊलिप्पक् कान्त्
ताळियु मरियु मञ्जि यिरिदरु ममलै नोक्कि
मोळिमॊय्म् बिन्नरुम् जेत्तै मेल्वन्द दुळदॆन् रुन्ना 420

तूळियिन् पटलै–धूलि-पटल; वन्तु तॊटर्वु उर–आकर जमे, इसलिए; मरमुम् तूरुम्–पेड़ और झाड़; ताळ् इटै–उनके पैरों के नीचे; ऑटियुम् ओचै–टूटते हैं, वह नाद; चटचट ऑलिप्प–तड़-तड़ शब्द उठाते हैं; कानत्तुतु–वन में; आळियुम् अरियुम्–शरभ और सिंह; अञ्चि–डरकर; इरि तरुम्–दूर भागते हैं; अमलै नोक्कि–वह शब्द सुनकर; मोळि मॊय्म्पित्तरुम्–सबल भुजा वाले श्रीराम और लक्ष्मण भी; चेत्तै मेल् वन्तु उळतु–सेना हम पर चढ़ आई है; ऍन्रु उन्ना–यह सोचकर। ४२०

धूलिपटल आकर तरुओं और झाड़ों पर जम गया। वे वीरों के पैरों के नीचे और मध्य पड़कर टूटे। उस तड़-तड़ शब्द से शरभ और सिंह डरकर भागे। उनके हड़बड़ाकर भागने का शोर सुनकर सबल कंधे वाले वीरों (श्रीराम और लक्ष्मण) ने ताड़ लिया कि सेना हम पर चढ़ आयी है। (ऐसा सोचकर —)। ४२०

❀ मरम्बडर् कान् ऍङ्गु मदर्बड वन्द शेनै
करन्बडै यॅन्ब दॅण्णिक् करुनिरक् कमलक् कण्णन्
शरम्बडर् पुट्टिल् कट्टिच् चाबमुन् दरित्तान् ऱळ्ळा
उरम्बडर् तोळिन् मीळाक् कवशमिट् टुडैवा ळार्त्तान् 421

मरम् पटर् कानम् ऍङ्कुम्–तरुसंकुल वन में सर्वत्र; अतर् पट–मार्ग बनाते हुए; वन्त चेनै–जो सेना आई वह; करन् पटै ऍन्पतु–खर की सेना है, यह; करु निऱ–नीले वर्ण के; कमल कण्णन्–कमलाक्ष श्रीराम ने; ऍण्णि–निश्चय करके; चरम् पटर् पुट्टिल् कट्टि–शरबहुल तूणीर बाँधकर; चापमुम् तरित्तान्–धनुष भी उठा लिया; तळ्ळा उरम् पटर्–अटल वीरता से युक्त; तोळिन्–कन्धों पर; मीळा–अटूट; कवचम् इट्टु–कवच बाँधकर; उटैवाळ् आर्त्तान्–कटार बाँध ली। ४२१

कमलाक्ष और नीलवर्ण श्रीराम ने यह भी निश्चय कर लिया कि वन में सर्वत्र मार्ग बनाते हुए जो आयी है, वह विपुल सेना खर की है। उन्होंने युद्ध में जाने की तैयारी की। तूणीर, चाप, अक्षय सबल कंधों से कसा हुआ कवच और तलवार आदि को यथोचित रीति से यथास्थान धारण कर लिया। ४२१

मिन्निन्ऱ शिलैयन् वीरक् कवशत्तन् विशित्त वाळन्
पॊन्निन्ऱ वडिम्बिन् वाळिप् पुट्टिलन् पुहैयु नॅञ्जन्
इन्निन्ऱु काण्डि यान्शॅय् निलैयॅन विरुम्बि नेरा
मुन्निन्ऱ पिन्वन् दानै नोक्किनन् मॊऴिय लुऱ्ऱान् 422

मिन् निन्ऱ चिलैयन्–बिजली ने धनु का रूप धर लिया हो, ऐसे धनुष के धारक; वीर कवचत्तन्–वीरोचित कवच से अलंकृत; विचित्त वाळन्–बँधी हुई तलवार वाले; पॊन् निन्ऱ वटिम्पिन्–स्वर्णमय कोरों के; वाळि पुट्टिलन्–तूणीर वाले; पुकैयुम् नॅञ्चन्–क्रोधाग्नि के धुएँ से भरा मन वाले (लक्ष्मण); विरुम्पि–(स्वयं जाना) चाहकर; यान् चॅय् निलै–मेरे (युद्ध) कार्य की स्थिति; इन् इन्ऱु काण्टि–आज अभी देखिए; ऍन–कहकर; मुन् नेरा निन्ऱ–जो अग्रस्थ हुए उन; पिन् वन्तानै–अनुज को; नोक्किनन्–देखकर; मॊऴियल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ४२२

तब लक्ष्मण उनके सामने आये। बिजली के अवतार-सा धनुष, वीरोचित (दृढ़) कवच, तलवार, स्वर्णमुख तूणीर आदि के साथ मन में धुआँ निकालनेवाली कोपाग्नि लेकर जो आये, उन्होंने श्रीराम से कहा कि आज मेरा युद्ध-सामर्थ्य देखिए। ऐसा कहते हुए अग्रस्थ अनुज से श्रीराम बोले। ४२२

नॅरिक्कॊण्मा दवर्क्कु मुन्नॆ नेर्न्दनॆ निरुद रावि
परिक्कुवॆन् यानॆ यॆन्नु मम्मॊऴि पऴुदु ड्रामे
वॆरिक्कोऴ्बूङ् गुऴलि नाऴै वीरनॆ वेण्डि नॆन्यान्
कुरिक्कॊण्डु कात्ति यिन्नॆ कॊल्वॆनिक् कुऴुवै यॆन्ड्रान् 423

नॅरि कोऴ् मातवर्क्कु–तपोमार्गरत महान तपस्वियों को; मुन्नॆ नेर्न्ततॆन्–पहले ही (मैंने) वचन दिया है; यानॆ निरुतर् आवि–मैं ही राक्षसों की जान; परिक्कुवॆन्–हरूँगा; ॲन्नुम् अ मॊऴि–ऐसा वह वचन; पऴुतु उड्रामे–व्यर्थ न जाए; यान् वेण्टित्तॆन्–मैं याचना करता हूँ; वीरनॆ–हे वीर; वॆरि कोऴ्–सुगन्ध-युक्त; पू कुऴलिनाऴै–पुष्पालंकृत केश वाली (सीताजी) को; कुरि कॊण्टु कात्ति–सावधानी से रक्षा करो; इ कुऴुवै ॲल्लाम्–इन सेनादलों को; इन्नॆ कॊल्वेन्–अभी मार देता हूँ; ॲन्ड्रान्–कहा (श्रीराम ने)। ४२३

लक्ष्मण ! मैंने तपोरत महात्मा मुनिवरों को वचन दिया है कि मैं उन राक्षसों के प्राण हरूँगा। वह वचन वृथा न हो यही मैं तुमसे याचना करता हूँ। वीर लक्ष्मण ! तुम सुबासित केश वाली सीता की सावधानी से रक्षा करते रहो। मैं अभी इन दलों का नाश किये देता हूँ। ४२३

❀ मीळरुज् जॆरुविल् विण्णु मण्णुमॆन् मेल्वन् दालुम्
नाळुलन् दऴियु मन्ड्रे नानुनक् कुरैप्प दॆन्नॆ
आळियिन् मॊय्म्बि नायिव् वमरॆनक् करुळि यिन्ड्रॆन्
तोळिनैत् तिन्नुहिन्ऱ शोम्बिनैत् तुडैत्ति यॆन्ड्रान् 424

आळियिन् मॊय्म्पिनाय्–शरभ-समान बली; विण्णुम् मण्णुम्–आकाशलोकवासी और पृथ्वीवासी; मेल् वन्तालुम्–मुझ पर चढ़ आएँ तो भी; मीळ् अरुम् चॆरुविल्–जिससे लौट जाना मुश्किल है, उस युद्ध में; नाळ् उलन्तु–(आयु के) दिन खोकर; अऴियुम् अन्ड्रे–मर जायेंगे न; नान् उनक्कु उरैप्पतु ॲन्नॆ–मैं तुमको कहूँ क्या; इ अमर् ॲनक्कु अरुळि–यह युद्ध मुझे दे दो; ॲन् तोळिनै तिन्नुकिन्ड्र–मेरे कन्धों को खानेवाले; चोम्पिनै–आलस्य को; तुटैत्ति ॲन्ड्रान्–मिटाओ, कहा। ४२४

श्रीराम ने आगे कहा। शरभ-सम बली भाई ! क्यों डरते हो ? आकाश और भूलोकवासी सभी चढ़ आवें तो भी उनकी आयु शेष नहीं रहेगी और वे समाप्त हो जायँगे। तुमसे अधिक क्या कहूँ ? यह युद्ध मुझे प्रदान करने की कृपा करो। मेरे कंधों को आलस्य से (युद्धाभाव पर) उत्पन्न क्लेश खा रहा है। उसको मिटा दो। [इसको लक्ष्मण का कहा माननेवाले भी हैं। उनको 'प्रदान करने की कृपा करो' की प्रार्थना श्रीराम के मुख से निकली मानना असह्य है। विवाद में हम नहीं पड़ेंगे। वही अर्थ लिया गया तो आगे के ४२५वें पद्य में 'ॲन्ड्रलुम्' जो है, जिसका अर्थ 'कहने पर' है। उसका पाठान्तर ॲन्ड्रनन् (कहा) होगा]। ४२४

❀ ऍन्ऱलु मिळैय वीर ऩिशैन्दन निराम ऩॆन्दु
कुन्ऱऩ तोळि नाऱ्ऱ लुळ्ळत्ति नुणरक् कॊण्डान्
अन्ऱियु मण्ण लाणै मरुक्किल ऩङ्गै कूप्पि
निन्ऱऩ निरुन्दु कण्णीर् निलम्बुहप् पुलर्हिन् ऱाळ्बाल् 425

ऍन्ऱलुम्–यह कहने पर; इळैय वीरन्–वीर अनुज ने; इचैन्तनन्–मान लिया; इरामन् एन्नुम् कुन्ऱु अन–श्रीराम के पर्वत के समान; तोळिन् आऱ्ऱल्–कन्धों का वल; उळ्ळत्तिन् उणर कॊण्टान्–मन में समझ लिया; अन्ऱियुम्–और भी; अण्णल् आणै मऱुक्किलन्–प्रभु की आज्ञा अस्वीकार नहीं की; इरुन्तु–(पर्णशाला में) रहकर; कण् नीर्–अश्रुजल; निलम् पुक–भूमि को पहुँचाते हुए; पुलर्किन्ऱाळ् पाल्–दुखनेवाली देवी के पास; अम् कै कूप्पि–सुन्दर हाथ जोड़े; निन्ऱनन्–खड़े रहे। ४२५

श्रीराम के यह कहने पर लघुभ्राता सहमत हो गये। उन्होंने श्रीराम के पर्वत से उन्नत स्कन्धों की शक्ति का भी स्मरण कर लिया। और भी ज्येष्ट भ्राता है, उनकी बात अस्वीकार करना नहीं चाहा। इसलिए वे पर्णशाला में अंजलिबद्ध हो आँखों से आँसू बहाती हुई रहने वाली सीता की रक्षा में खड़े रहे। ४२५

❀ कुळैयुरु मदियम् बूत्त कॊम्बऩाळ् कुळैन्दु शोरत्
तळैयुरु शालै निन्ऱुम् तऩिच्चिलै तरित्त मेरु
मळैयॆऩ मुळङ्गु हिन्ऱ वाळॆयिऱ् ऱरक्कर् काण
मुळैयिऩिऩ् ऱॆळुन्दु शॆल्लु मडङ्गलिन् मुऩिन्दु शॆन्ऱान् 426

कुळै उरु–कुण्डलधारिणी; मतियम् पूत्त–चन्द्र जैसा वदन जिस लता का खिला फूल हो, ऐसी; कॊम्पु अनाळ्–लता-सदृश सीताजी; कुळैन्तु चोर–मुरझाकर शिथिल हुईं; तळै उरु चालै निन्ऱुम्–पर्णशाला से; तनि चिलै तरित्त–अनुपम धनु लिये हुए; मेरु–मेरुपर्वत (श्रीराम); मळै ऍन मुळङ्कुकिन्ऱ–मेघ के समान शोर मचानेवाले; वाळ् ऍयिऱु–खड्ग-समान दाँत वाले; अरक्कर् काण–राक्षसों को देखने देते हुए; मुळैयिन् निन्ऱु–गुफा से; ऍळुन्तु चॆल्लुम्–निकल आनेवाले; मटङ्कलिन्–सिंह के समान; मुनिन्तु चॆन्ऱान्–क्रोध के साथ गये। ४२६

सीताजी कुण्डल-पत्र और चन्द्रवदनमुख-सुमन के साथ लता के समान रहीं। वह लता अब मुरझायी। उनको उसी दशा में छोड़कर श्रीराम पर्णशाला से बाहर आये। उनके हाथ में अनुपम कोदण्ड था। वे मेरु-सम लगे। उनको मेघों के समान शोर मचानेवाले खड्गवक्रदन्त राक्षसों ने देखा। श्रीराम गुफा से निकलकर आनेवाले सिंह के समान कोप के साथ उनके सामने गये। ४२६

तोन्ऱिय तोन्ऱ रन्नैच् चुट्टिनळ् काट्टिच् चॊन्नाळ्
वान्ऱॊडर् मूङ्गि ऱन्द वयङ्गुवॆन् दीयदॆन्नत्

तान्ड्रोडर् कुलत्तै यॅल्लान् दॉलैक्कुमा शमैन्दु निन्ड्राळ्
ॲन्रुवन् दॆदिर्न्द वीर निवनिह लिराम नॆन्ड्रे 427

तोन्ड्रिय–ऐसे प्रकट हुए; तोन्ड्रल् तन्नै–प्रभु श्रीराम को; वान् तॉटर् मूङ्किल् तनृत–आकाश तक उन्नत बाँसों (के रगड़ने) से उत्पन्न; वयङ्कु वॆम् ती अतु ॲन्त–जलनेवाली भयंकर आग ही सम; तान् तॉटर् कुलत्तै ॲल्लाम्–अपने रिश्ते के सारे कुल को; तॉलैक्कुम् आ चमैन्तु निन्ड्राळ्–मिटाने के काम में जो प्रवृत्त रही; चुट्टितळ् काट्टि–संकेत करके; एन्ड्र वन्तु–युद्धसन्नद्ध हो जो आया है; ॲतिर्न्त वीरन्–और सामने प्रकट हुआ है वीर; इवन्–यह; इकल् इरामन्–शत्रु राम है; ॲन्ड्र चॊन्नाळ्–ऐसा कहा। ४२७

आकाश तक उन्नत बाँसों का नाश वही अग्नि कर देती है जो उन्हीं से (उनके आपस में हवा के कारण टकराने से) उत्पन्न होती है, वैसे ही यह शूर्पणखा भी अपने कुल की नाशक शक्ति निकली। वह मानो उस कार्य में दत्तचित्त और तत्पर रही। ऐसी उसने उनके सामने प्रकट हुए श्रीराम को अपने हाथ के इशारे से दिखाया और कहा कि देखो! जो युद्धसन्नद्ध होकर सामने आ रहा है वही वीर राम है, जिसने हमारे साथ वैर ठाना है! । ४२७

कण्डनन् कनहत् तेर्मेड् कदिरवन् कलङ्गि नीङ्ग
विण्डन निन्ड्र वॆन्ड्रिक् करनॆनुम् विलङ्गड् ड्रोळान्
मण्डमर् याने शॅय्दिम् मानिडन् वलियै नीक्किक्
कॉण्डनॆन् वाहै यॆन्रु पडैजरैक् कुड्रित्तुच् चॊन्नान् 428

कनक तेर् मेल्–स्वर्ण-रथ पर; कतिरवन्–सूर्य; कलङ्कि–व्यग्र होकर; नीङ्क–हटे; विण्टनन् निन्ड्र–वैर के साथ स्थित; वॆन्ड्रि–विजयशील; करन् ॲन्नुम्–खर नाम के; विलङ्कल् तोळान्–पर्वत-सम कन्धों वाले ने; कण्टनन्–श्रीराम को देखा (देखकर); पटैजरै कुड्रित्तु–सेनावीरों को उद्दिश्य करके; याने–मैं स्वयं; मण्टु अमर् चॆय्तु–यह बड़ा युद्ध करके; इ मानिटन् वलियै नीक्कि–इस मनुष्य का बल मिटाकर; वाकै कॊण्टनॆन्–विजय पा लूंगा; ॲन्ड्र–ऐसा; चॊन्नान्–कहा। ४२८

खर भी कम वैर नहीं रखता था। उसके वैर के सामने कनकरथ सूर्य भी डरकर हट गया। पर्वत-सम कन्धे वाले विजयशील खर ने श्रीराम को देखकर अपनी सेना के वीरो से कहा कि मैं ही बड़ा युद्ध करके इस मनुजपुत्र का बल मिटा दूँगा और विजय पाऊँगा। ४२८

मानिड नॊरुवन् वन्द वलिहॆळु शेनैक् कम्मा
कानिड मिल्लै यॆन्नुङ् गट्टुरै कलन्द कालै
यानुडै वॆन्ड्रि यॆन्नाम् यावरुङ् गण्डु निड्रिर्
ऊनुडै यिवनै याने युणगुवॆ नुयिरै यॆन्ड्रान् 429

माऩिटऩ् ऑरुवऩ्–एक मनुज; वन्त–(उससे लड़ने) आई; वलि कॉळ् चेऩैक्कु–सशक्त सेना के लिए; काऩ् इटम् इल्लै–जंगल में स्थान नहीं है; ॲऩ्ऩुम्–ऐसी; कट्टुरै–बात; कलन्त कालै–जब फैल जायगी; याऩ् उटै वॅऩ्ऱि–मेरी विजय का (महत्त्व); ॲऩ्ऩाम्–क्या होगा; यावरुम् कण्टु निऱ्ऱिर्–सब देखते रहो; याऩे–मैं अकेला ही; ऊऩ् उटै इवऩै–(हमारे खाने योग्य) मांसधारी इसको; उयिरै उण्कुवॅऩ्–प्राण अशन कर लूँगा; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ४२९

लोग यह जानने लगें और यह बात फैल जाय कि एक अकेला मनुष्य आया था और उसके विरुद्ध इतनी बड़ी सेना ने युद्ध किया जिसके लिए वन में खड़े होने को भी स्थान नहीं मिला, तो मेरी जीत का क्या महत्त्व होगा ? इसलिए सब चुप देखते खड़े रहो। अकेला मैं ही इस मांसपिंड का प्राण पी लूँगा। खर ने ऐसा कहा। ४२९

अव्वुरै केट्टु वन्दा नहम्बऩॆऩ् ऱमैन्द कल्विच्
चॆव्वियाऩ् ऱोरुव ऩैय चॆप्पुवॆऩ् चॆरुविऱ् चाल
वॆव्विय राद ऩऩ्ऱे वीररि लाण्मै वीर
इव्वयि ऩुळदाऩ् दीय निमित्तमॆऩ् ऱियम्ब लुऱ्ऱाऩ् 430

अकम्पऩ् ॲऩ्ऱु–अकम्पन नाम के; अमैन्त कल्वि चॆव्वियाऩ्–युक्त विद्या-विदग्ध; ऑरुवऩ्–एक राक्षस ने; अ उरै केट्टु–वह वचन सुनकर; वन्ताऩ्–पास आकर; ऐय–प्रभु; वीररुळ् आण्मै वीर–वीरों में सर्वश्रेष्ठ वीर; चॆप्पुवॆऩ्–विनय करता हूँ; चॆरुविल् चाल वॆव्वियर् आतल्–युद्ध में बड़ा उत्साही रहना; नऩ्ऱे–अच्छा ही है; इ वयिऩ्–इस संदर्भ में; तीय निमित्तम् उळ आम्–बुरे शकुन होते हैं; ॲऩ्ऱु–कहकर; इयम्पल् उऱ्ऱाऩ्–विस्तार किया। ४३०

यह खर का वचन सुनकर अकंपन नाम का राक्षस सामने आया। वह विद्वान था। उसने कहा— स्वामी ! एक विनयवचन है— सुनाऊँगा। युद्ध में उत्साह दिखाना अच्छा ही है। पर शकुन बुरे दिखते हैं। उसने आगे उस बात का विस्तार किया। ४३०

कुरुदि मासमऴै चॊरिन्दन मेहङ्गळ् कुमुऱिप्
परुदि वाऩव ऩूऱ्वळैप् पुण्डदु पाराय्
करुदु वीरनिऩ् गॊडिमिशैक् काक्कैयिऩ् कणङ्गळ्
पॊरुदु वीऴ्वन पुलम्बुव निलम्बडप् पुरळ्व 431

करुतु वीर–प्रतिष्ठित वीर; मेकङ्कळ् कुमुऱि–मेघ गर्जन करते हुए; कुरुति मा मऴै चॊरिन्तत–बड़ी रक्त-वर्षा बरसायी; परिति वाऩवऩ्–सूर्यदेव; ऊर् वळैप्पुण्टतु–परिवेश से घिरे हुए हो गये; काक्कैयिऩ् कणङ्कळ्–कौओं के समूह; निऩ् कॊटि मिचै–तुम्हारी ध्वजा पर; पॊरुतु वीऴ्वत–आपस में लड़ते हुए गिरते और; पुलम्पुव–चीखते-चिल्लाते हैं; निलम्पट पुरळ्व–भूमि पर गिरकर लोटते हैं; पाराय्–तुम देखो। ४३१

प्रतिष्ठित वीर ! मेघ गरजते हुए रक्तवर्षा कर रहे हैं। सूर्य के परिवेश बना है। काकवृन्द आपस में लड़ते हुए ध्वजा पर गिरते हैं, फिर चिल्लाते हुए नीचे गिरते हैं और भूमि पर गिरकर लोटते हैं। देखो। ४३१

वाळि वाय्हळै यीवळैक् किन्ड्रन्न वयवर्
तोळु नाट्टमु मिडन्दुडिक् किन्ड्रन्न तूड्गि
मीळि मीय्म्बुडै यिवुळिहळ् विळुवन्न विड्रलोय्
आळि योडुनिन् ड्रळैप्पन्न नरिक्कुलम् बलवाल् 432

विड्रलोय्–विजयी वीर; वाळि वाय्कळै–वाणों के मुखों पर; ई वळैक्किन्ड्रन्न–मक्खियाँ मँड़राती हैं; वयवर्–वीरों की; तोळुम् नाट्टमुम्–भुजाएँ और आँखें; इटम् तुटिक्किन्ड्रन्न–वाईं ओर (की) फड़कती हैं; मीळि मीय्म्पु उटै–अपार शक्ति वाले; इवुळिकळ्–अश्व; तूङ्कि विळुवन–सोते हुए गिरते हैं; नरि कुलम्–सियारों के झुण्ड; पल–अनेक; आळियोटु निन्ड्रु–कुत्तों के साथ खड़े होकर; उळैप्पन्न–रुदन-स्वर में भूंकते हैं; पाराय्–देखो। ४३२

वीर ! वाणों के फलों पर मक्खियाँ मँड़रा रही हैं। वीरों के वाम नेत्र और हाथ फड़क रहे हैं। ताकतवर अश्व सोते और गिर पड़ते हैं। सियारों के झुण्ड आकर कुत्तों से मिल गये हैं और दोनों रुदन कर रहे हैं। तुम देखो। ४३२

पिडियॆ लामदम् बॆय्दिडप् पॆरुङ्गवुळ् वेळम्
ऒडियुम् मान्मरुप् पुलहमुङ् गम्बिक्कु मुयर्वाळ्
इडियुम् वीळ्न्दिडु मॆरिन्दिडुम् बॆरुन्दिशै यॆवर्क्कुम्
मुडियिन् मालैहळ् पुलालॊडु मुळ्मुडै नाऱुम् 433

पिटि ऍलाम्–हथिनियाँ, सभी; मतम् पॅय्तिट–मद वहाते हुए; पॅरुम् कवुळ् वेळम्–वड़े-वड़े गण्डस्थल वाले गजों के; माल् मरुप्पु ऑटियुम्–वड़े दाँत टूट जाते हैं; उलकमुम् कम्पिक्कुम्–पृथ्वी में कम्पन होता है; उयर् वान् इटियुम्–ऊँचे आकाश से गाज; वीळ्न्तिटुम्–गिरती है; पॅरुम् तिचै–लम्बी दिशाएँ; ऍरिन्तिटुम्–जलती हैं; ऍवर्क्कुम्–सभी की; मुटियिन् मालैकळ्–सिर की मालाएँ; पुलाल् ऑटु–मांसगन्ध के साथ; मुटै नाऱुम्–दुर्गन्ध निःसृत करती हैं। ४३३

हथिनियाँ मद वहा रही हैं और बड़े गाल वाले हाथियों के दाँत टूट जाते हैं। भूकम्प होता है। आकाश से गाज गिरती है। दिशाएँ जलती हैं। सबके सिर की मालाओं से सड़े मांस की-सी गन्ध और दुर्गन्ध निकलती है। ४३३

इन्नैय वाहलिन् मानिड नौरुवन्नॆ रिवन्नै
निन्नैय लावदिङ् गेळ्मै नीयमरक् कियन्ड्र

विन्नैयॆं लाऩ्ऱॆय्दु वॆल्ललान् दन्मैय नल्लन्
पुन्नैयुम् वाहैयाय् पॊरुत्तियॆन् नुरैयॆनप् पुहन्ऱान् 434

पुन्नैयुम् वाकैयाय्–'वाहै' (विजय-सूचक) मालाधारी; इन्नैय आकलिन्–ऐसे हैं (शकुन) इसलिए; इवन्नै–इसको; मानिटन् ऒरुवन्–केवल एक मनुष्य है; ॲन्ऩ–ऐसा; इङ्कु निनैयल् आवतु–यहाँ सोचना; एळ्मै–अज्ञता होगा; नी अमर्क्कु इयन्ऱ–तुम युद्ध-योग्य; विनै ॲलाम् चॆय्तु–सभी कार्य करके; वॆल्लल् आम्–उस पर विजय पाओ; तन्मैयन् अल्लन्–ऐसा मनुष्य नहीं; ॲन् उरै पॊरुत्ति–मेरी बात के लिए क्षमा करो; ॲन्न पुकन्ऱान्–ऐसा कहा (अकम्पन ने)। ४३४

ये सब बुरे शकुन हैं। ये हो रहे हैं। इसलिए इसको मामूली अल्प मानव समझना अज्ञता होगा। तुम्हारे युद्ध-तन्त्र और सामर्थ्य द्वारा वह जीता जानेवाला नहीं लगता। मैं यह कह रहा हूँ, उसके लिए क्षमा कर दो। अकंपन ने विनय के साथ यों बताया। ४३४

उरैत्त वाशहङ् गेट्टलु मुलहॆला मुलैयच्
चिरित्तु नन्ऱिदॆन् शेवहन् देवरैत् तेय
अरैत्त वम्मिया मलङ्गॊळिर् ऱोळमर् वॆण्डि
इरैत्तु वीङ्गुव मानिडर् कॆळियवो वॆन्ऱान् 435

उरैत्त वाचकम् केट्टलुम्–(उसका) कहा वचन सुनकर; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों को; उलैय–कँपाते हुए; चिरित्तु–ठठाकर (हँसकर; तेवरै तेय अरैत्त–देवों को पिचकाते हुए पीसनेवाले; अम्मि आम्–सिल है, ऐसा; अलङ्कु ऒळिल् तोळ्–हिलनेवाले सुन्दर मेरे ये कन्धे; अमर् वेण्टि–युद्ध माँगते हुए; इरैत्तु वीङ्कुव–फूले और उभरे हैं; मानिटर्कु ऎळियवो–मनुष्य के लिए अल्प (जेय) हो गये क्या; नम् चेवकम् नन्ऱितु–हमारी वीरता भी बड़ी भली; ॲन्ऱान्–कहा। ४३५

यह सुनते ही खर ऐसा ठठाया कि सारे लोक काँप गये। उसने कहा— अकंपन ! इन मेरे अनुपम कन्धों को देखो जो मेरे हँसते समय हिलते हैं। और सिल के समान इनसे देव पिसे और पिचक गये थे। ये फूले हुए पुष्ट कन्धे उस अल्प मानव के लिए क्षुद्र हो गये क्या ? हमारी वीरता भी भली रही ! । ४३५

ऎन्नु मात्तिरत् तॆरिपडै पिडियॆन्न विडिया
मन्नर् मन्नवत् मदलैयै वळैन्दन वळैन्दु
मिन्नुम् वालुळै मडङ्गलै मुनिन्दन्न वेळम्
तुन्नि नालॆन्नच् चुडुशिनत् तरक्कर्दन् दॊहुदि 436

ॲन्नुम् मात्तिरत्तु–(खर के) यह कहते ही; मिन्नुम् वाल् उळै मटङ्कलै–प्रकाशमय लम्बे अयाल वाले सिंह को; मुनिन्तन्न–वैर करके; वेळम् वळैन्तु तुन्निनाल् ॲन्न–गजों ने घेर लिया हो, ऐसा; चुटु चिनत्तु–तापक क्रोधशील; अरक्कर् तम् तॊकुति–राक्षसों के दल; ॲरि पटै–आपस में टकरानेवाले हथियारों के; इटि ॲन्न इटिया–

वज्र के समान नाद करते; मन्नर् मन्नवन् मतलैयै–राजाधिराज के पुत्र श्रीराम को; वळैन्तत–घेर गये । ४३६

खर के यह कहते ही अग्नि के समान क्रोधी राक्षसों की सेना ने आकर चक्रवर्तीसुत श्रीराम को घेर लिया, मानो उज्ज्वल अयाल वाले सिंह से वैर करके गजों ने आकर घेर लिया हो । तब उनके हथियार आपस में टकराये और वज्र के समान नाद पैदा हुआ । ४३६

वळैन्द	**कालैयिल्**	**वळैन्ददव्**	**विरामन्गै**	**वरिविल्**
विळैन्द	**पोरैयु**	**मावदुम्**	**विळम्बुदुम्**	**विशैयाल्**
पुळैन्द	**पाय्बरि**	**पुरण्डन**	**पुहर्मुहप्**	**पूट्कै**
उळैन्द	**माल्वरै**	**युरुमिडि**	**पडवोडिन्**	**दॅन्न 437**

वळैन्त कालैयिल्–जब घिर गये तब; इरामन् कै वरि विल्–श्रीराम के हाथ का बन्धनयुक्त धनुष भी; वळैन्ततु–झुका; विळैन्त पोरैयुम्–तब जो युद्ध हुआ, उसको; आवतुम्–उसके फल को; विळम्पुतुम्–कहेंगे; विचैयाल् पुळैन्त–अपनी तीव्र गति से जो विद्ध हुए वे; पाय् परि–तीव्रगामी अश्व; पुरण्टत–नीचे गिरकर लोटे; माल् वरै–बड़े-बड़े पर्वत; उरुम् इटि पट–घोर वज्र के गिरने से; ऑटिन्तॅन्त–टूट जाते हों जैसे; पुकर् मुक पूट्कै–बिन्दियों सहित मुख वाले गज; उळैन्त–दुखी हो गिरे । ४३७

जब वे घेर आये तब श्रीराम ने अपने प्रतापी चाप को झुकाया और युद्ध छिड़ गया । उसके फलस्वरूप क्या-क्या आश्चर्य हुए ? हम उनका वर्णन करेंगे । एक दम विद्ध होकर दुलकी चलनेवाले अश्व गिरे और भूमि पर लोटे । गज, जिनके माथाओं पर बिन्दियाँ थीं, ऐसे पर्वतों के समान टूटकर गिरे जिन पर वज्र-पात हुआ हो । ४३७

शूल	**मर्रन**	**वर्रन**	**शुडर्मळु्**	**तोहैवाळ्**
मूल	**मर्रन**	**वर्रन**	**मुरट्टण्डु**	**पिण्डि**
पाल	**मर्रन**	**वर्रन**	**पहळिवॅम्**	**बहुवाय्**
वेलु	**मर्रन**	**वर्रन**	**विल्लोडु**	**पल्लम् 438**

चूलम् अर्रन–शूल कटे; चुटर् मळु तोकै–उज्ज्वल परशु-वृन्द; अर्रन–बेकार हुए; वाळ् मूलम्–तलवारों के मूल; अर्रन–छिन्न हुए; मुरण् तण्टु अर्रन–सुदृढ़ दण्डायुध नष्ट हुए; पिण्टिपालम् अर्रन–भिंडिपाल मिटे; वॅम् पकुवाय्–चीरकर जानेवाले फल के; वेलुम्–भाले भी; अर्रन–नष्ट हुए; विल् ओटु पल्लम्–धनुष के साथ बल्लम व्यर्थ हुए । ४३८

और भी राक्षसों के शूल और कान्तियुक्त परशुसमूह नष्ट हुआ । तलवारों के मूल (या रूप) छिन्न हुए । सुदृढ़ दण्डायुध टूटे । भिण्डिपाल, भेदनेवाले शूल, चाप और बल्लम सभी तहस-नहस हुए । ४३८

तॊडितु णिन्दन तोळॊडुन् दोमरन् दुणिन्द
अडितु णिन्दन कडहळि रुच्चॊडु नॆडुन्देर्क्
कॊडितु णिन्दन कुरहदन् दुणिन्दन कुलमा
मुडितु णिन्दन तुणिन्दन मुळैयॊडु मुशलम् 439

तॊटि तुणिन्तत–वीरकंकण टूटे; तोळॊटु तोमरम् तुणिन्तत–कन्धों के साथ तोमर खण्ड-खण्ड हुए; कट कळिऱ्‌ अटि–मत्तगजों के पैर; तुणिन्तत–कटे; नॆटुम् तेर्–बड़े रथ; अच्चॊटु कॊटि–धुरों के साथ ध्वजाएँ; तुणिन्तत–कटीं; कुरकतम् तुणिन्तत–घोड़े कटे; कुल मा मुटि–बड़ी संख्या में एक साथ बड़े किरीट; तुणिन्तत–खण्डित हुए; मुळैयॊटु–मुद्गरों के साथ; मुचलम् तुणिन्तत–मूसल टूटे। ४३९

और भी अंगवलय आदि वलय कटकर गिरे और भुजाओं के साथ तोमर आदि कटे। मत्तगजों के पैर, ऊँचे रथों की धुरियाँ और ध्वजाएँ आदि छिन्न हो गयीं। घोड़े टुकड़े-टुकड़े हुए। दण्ड और मुद्गर छिन्न-भिन्न हुए। ४३९

करुवि मावॊडु कार्मदक् कैम्मलैक् कणत्तो
डुरुवि मादिरत् तोडिऩ शुडुशर मुदिरम्
अरुवि मालैयिऱ् पिऱङ्गिय दवऩियि लरक्कर्
तिरुविऩ् मार्बहन् दिऱन्दन तुऱन्दन शिरङ्गळ् 440

चुटु चरम्–श्रीराम के भयंकर शर; करुवि मा ऒटु–जीन वाले घोड़ों के साथ; कार्–काले; मत कै मलै–मत्तगजों के; कणत्तॊटु–दलों को; उरुवि–आर-पार होकर; मातिरत्तु ओटिऩ–(बाहर निकल) दिशाओं में चले; उतिरम् अरुवि–रक्त नदियों; मालैयिल् पिऱङ्कित–के रूप में वहा; अवऩियिल्–भूमि में; अरक्कर्–राक्षसों के; तिरु इल् मार्पु अकम्–श्रीहीन वक्षस्थलों को; तिऱन्तत–खोलकर (रक्त) बाहर आया; चिरङ्कळ् तुऱन्तऩ–सिर (धड़ों से) अलग हुए। ४४०

श्रीराम के सन्तापी शर जीन वाले अश्वों और काले रंग के मत्तगजों को निफरकर आगे सभी दिशाओं मे गए। रक्त की सरिताएँ वह चलीं। शरों ने राक्षसों के श्रीहीन वक्षों को विदीर्ण कर दिया और उनके सिरों को काटकर धड़ों से अलग कर दिया। ४४०

ऒन्ऱु पत्तुनू ऱायिरङ् गोडियॆन् ऱुणरात्
तुन्ऱु पत्तिय विराहवन् शुडशरन् दुरक्कच्
चॆन्ऱु पत्तिरत् तलैयिऩ मलैदिरण् डॆन्नक्
कॊन्ऱु पत्तियिऱ् कुविन्दन पिणप्पॆरुङ् गुऩ्ऱम् 441

ऒन्ऱु पत्तु नूऱु–एक, दस, सौ; आयिरम् कोटि–सहस्र, करोड़; ऎन्ऱु उणरा–ऐसा अगण्य; तुन्ऱु पत्तिय–बहुत मिली हुई पंक्तियों में; चुटु चरम्–जला डालनेवाले शरों को; इराकवन् तुरक्क–श्रीराघव ने चलाया तब; चॆन्ऱु–जाकर; कॊन्ऱु–मारकर; पत्तिर तलैयिऩ्–शरसहित सिरों को; मलै तिरण्ट ऎन्ऩ–पर्वत

एकत्र हुए हों, जैसे; पिण पॅरुम् -कुन्ऱम्-लाशों के बड़े पर्वतों को; पत्तियिल् कुवित्तन-श्रेणियों में लगा दिया (शरों ने)। ४४१

श्रीराघव ने कितने शर लगातार छोड़े ? एक, दस, सौ, हज़ार, करोड़…? कोई गणना नहीं थी ! उनके भयंकर अस्त्र धनुष से छूटे और गये। राक्षस मरे और उनके सिरों पर वे अस्त्र गड़े रहे। उन अस्त्रों के साथ उन राक्षसों की लाशों के ढेर के ढेर पंक्तियों में बन गये। ४४१

काडु कॊण्डहा रुलवैहळ् कायॅरि कदुवच्
चूडु कॊण्डत्त वॅनत्तॊडर् कुरुदिमीत् तोन्ऱ
आडु हिन्ऱत्त वरुहुरै ययिलम्बु विण्सेल्
ऒडु हिन्ऱत्त वुयिरैयुन् दॊडर्वत्त वौत्त 442

काटु कॊण्ट-वन में भरे; कार् उलवैकळ्-काले ठूँठ; काय् ऍरि कतुव-जलती आग के लगने से; चूटु कॊण्टत्त ऍत्त-गरम हो गए जैसे; अऱु कुऱै-सिर-कटे राक्षसों के कबन्ध; तॊटर् कुरुति मी तोन्ऱ-रक्त की धार के ऊपर उछलते रहने से; आटुकिन्ऱत्त-और नाचते हैं, तब; अयिल् अम्पु-श्रीराम के तीक्ष्ण शर; विण् मेल् ओटुकिन्ऱत्त उयिरैयुम्-आकाश में जानेवाले उनके प्राणों को भी; तॊटर्वत्त ऒत्त-(पकड़ने के लिए) पीछे जाते थे, ऐसे लगा। ४४२

राक्षसों के सिर-रहित कबन्ध नाचे। उनके शरीरों पर से लाल रक्त उछल रहा था। उनको देखकर ऐसा लगता था, मानो वन के ठूँठ आग से जल रहे हों। उछलते रक्त के फौवारे श्रीराम के बाणों के समान दिखे, जो स्वर्गगामी राक्षसों के प्राणों का पीछा कर रहे हों। ४४२

कैहळ् वाळॊडु कळप्पड कळुत्तऱुक् कवश
मॅय्हळ् पोळ्बडत् ताळ्विळ मिहनॅडु निरुदर्
शॅय्य मात्तलै शिन्दिडत् तिशैयुऱच् चॅन्ऱ
तैय लार्नॅडु विळियॅत्तक् कॊडियत्त शरङ्गळ् 443

तैयलार् नॅटु विऴि ऍत्त-दयिताओं के आयत नेत्रों के समान; कॊटियत्त-घातक; चरङ्कळ्-श्रीराम के शर; मिक नॅटु निरुतर्-बहुत ऊँचे कद के राक्षसों के; कैकळ् वाळॊटु कळम् पट-हाथों को तलवारों के साथ युद्धभूमि पर गिराते हुए; कळुत्तु अऱ-गलाओं को काटते हुए; कवच मॅय्कळ्-कवचसहित शरीरों को; पोळ् पट-चीरते हुए; ताळ् विऴ-पैरों को काटते; चॅय्य मा तलै चिन्तिट-लाल सिरों को छितराते हुए; तिचै उऱ चॅन्ऱ-दिशाओं में लगे हुए उड़ चले। ४४३

श्रीराम के वाण दयिताओं के आयत नेत्रों के समान थे। वे अत्यन्त भयंकर थे। वे चारों दिशाओं में बड़ा उत्पात मचाते हुए उड़े। ऊँचे कद के राक्षसों के हाथ तलवारों के साथ कटकर गिरे। उन शरों से गर्दनें कटीं। कवच विदीर्ण हुए। बड़े और लाल सिर अलग हुए। ४४३

मारि याक्किय वडिक्कणै वरैपुरै निरुदर्
पेरि याक्कैयिन् पॅरुङ्गरै वयिन्रॊरुम् बिरङ्ग
एरि याक्किन वारुह ळाक्किन विरैक्कुम्
शोरि याक्किन पोक्किन वनमॆनुन् दॊन्मै 444

मारि आक्किय–वर्षा हो रही हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करनेवाले; वटि कणै–(श्रीराम के) तीक्ष्ण बाणों ने; वरै पुरै निरुतर्—पर्वत-सम राक्षसों के; पेर् याक्कैयिन्–बड़े शरीरों के (रूपी); पॅरुम् करै–बड़े तटों के; वयिन् तॊरुम् पिरङ्क—स्थान-स्थान पर दृश्यमान होते; एरि आक्किन–झीलें बनाईं; आऱुकळ् आक्किन–नदियों की सृष्टि की; इरैक्कुम् चोरि आक्किन–उनको खून से भरा बना दिया; वनम् ऍनुम् तॊन्मै पोक्किन–वन का प्राचीन प्रकार मिटा दिया। ४४४

श्रीराम के तीक्ष्ण बाणों की वर्षा ने बड़ी-बड़ी नदियाँ और झीलें बनायीं, जिनके तट पर्वत-सम राक्षसों के बड़े शरीरों के बनाये और उनमें रक्त भर दिया। अब वन का प्राचीन रूप बदल गया। ४४४

अलैमि दन्दन कुरुदियिन् बॅरुङ्गड लरक्कर्
तलैमि दन्दन नॆडुन्दडि मिदन्दन तडक्कै
मलैमि दन्दन वाम्बरि मिदन्दन वयप्पोर्च्
चिलैमि दन्दन कॊडियॊडु तेर्हळ् 445

अलै मितन्तन–लहरें जिसमें उठती थीं, उस; कुरुतियिन् पॅरुम् कटल्–रक्त के बड़े सागर पर; अरक्कर् तलै मितन्तन–राक्षसों के सिर तैरे; नॆटुम् तटि मितन्तन–लम्बे मांसखण्ड तैरे; तट कै मलै–विशाल हाथों (सूँड़ों) के गज बहे; वाम् परि मितन्तन–फाँदकर चलनेवाले अश्व बहे; वय पोर् चिलै मितन्तन–सारयुक्त युद्ध-धनु बहे; कॊटि ऑटु तेर्कळ् मितन्तन–ध्वजाओं-सहित रथ बहे। ४४५

रक्त का सागर-सा बन गया और उस पर तरंगें भी उठीं। उस रक्त पर राक्षसों के सिर, उनके बड़े-बड़े मांसखण्ड, अनेक करी, अश्व, बलवान चाप और ध्वजाओं के साथ रथ उतराये। ४४५

आय कालैयि लन्नल्विळित् तार्त्तिरैत् तरक्कर्
तीय वार्हणै मुदलिय तॆरुशिनप् पडैहळ्
मेय माल्वरै यॊन्ऱिनै वळैत्तिन मेहम्
तूय तारैहळ् शॊरिवन वामॆनच् चॊरिन्दार् 446

आय कालैयिल्–तब; अरक्कर्–राक्षसों ने (जो बचे रहे); मेय माल् वरै–स्थायी, बड़े एक पर्वत; ऑन्ऱिनै–एक को; इन्न मेकम् वळैत्तु–श्रेणीबद्ध मेघ घेरकर; तूय तारैकळ् चॊरिवन आम्–शुद्ध धारें गिरा रहे हों; ऍन–ऐसा; तीय वार् कणै–भयंकर लम्बे अस्त्र; मुतलिय–आदि; चिन तॆऱु पटैकळ्–क्रोध के साथ फेंके, घातक हथियार; चॊरिन्तार्–बरसाये। ४४६

तब राक्षसों ने श्रीराम को घेर लिया और भयंकर अस्त्र आदि

चलाये। वह दृश्य ऐसा था, मानो मेघों के समूहों ने एक पर्वत को घेर लिया हो और वे उस पर शुद्ध जलधारें वरसा रहे हों। राक्षसों ने क्रोध के साथ अस्त्र चलाये और वे अस्त्र भयंकर और घातक थे। ४४६

शोरिन्द पल्पडै तुणिबडत् तुणिबडच् चरत्ताल्
अरिन्दु वॅन्दन्न शिन्दिडत् तिशैतिशै यहङ्ङि
नॅरिन्दु पार्मह णॅळिवुङ् वनमुङ्ङु निङ्रैय
विरिन्द शॅम्मयिर्क् करुन्दलै मलैयॅन्न वीऴ्त्तान् 447

चरत्ताल्–शरों द्वारा (श्रीराम ने); चोरिन्त पल् पटै–(राक्षसों के) बरसाये अनेक हथियारों को; तुणि पट तुणि पट—आते-आते खण्डित करके; अरिन्तु–काटकर; वॅन्तत्त चिन्तिट–जलाकर छितराया; तिचै तिचै अकङ्ङि—दिशा-दिशा में फिंकवा दिया; पार् मकळ्–भूदेवी को; नॅरिन्तु नॅळिवु उङ्–कुचलकर झुकने देते हुए; वतम् मुङ्ङुम् निङ्रैय–सारे वन को भरते हुए; विरिन्त चॅम्मयिर्–बिखरे लाल केशों के; करुम् तलै–काले सिरों को; वीऴ्त्तान्–गिराया। ४४७

श्रीराम ने अपने शरों से उन हथियारों को, जो राक्षसों द्वारा अत्यधिक परिमाण में उन पर चलाये गये, आते-आते काट दिया। उनको जलाकर छितराया। उनको सभी दिशाओं में दूर-दूर तक फेंक दिया। उन्होंने राक्षसों के लाल वालों से भरे काले सिरों को काट गिराया। उन सिरों की इतनी भारी संख्या थी कि उनके भार से भूदेवी कुचल गयीं और वह लचक गयीं। वन में सर्वत्र सिर ही सिर दिखाई दिये। ४४७

कवन्द पन्दङ्गळ् कळित्तन्न कुळित्तकैम् मलैहळ्
शिवन्दु पायन्दवॅङ् गुरुदियिर् ड्रिरुहिन्न शिन्नत्ताल्
निवन्द वॅन्दॊऴि निरुदर्दम् नॅडुनिणन् दॅविट्टि
उवन्द वन्गळु डुयिर्शुमन् दुळुक्किय दुम्बर् 448

कवन्त पन्तङ्कळ्–कवन्धराशियाँ; कळित्तन्न–मुदित हुए; कै मलैकळ्–'सूँड़ वाले पर्वत' (करी); चिवन्तु पायन्त वॅम् कुरुतियिल्–लाल और बहते रक्त-प्रवाह में; कुळित्त–नहाये; तिरुकित्त चित्तत्ताल्–भयंकर क्रोध के कारण; निवन्त–उभरे; वॅम् तॊऴिल्–भयंकर काम करनेवाले; निरुतर् तम्–राक्षसों के; नॅटु निणम्–अधिक मांसों को खाकर; तिवट्टि–अघाकर; वन् कळुतु–वलवान प्रेत; उवन्त–हर्षित हुए; उम्पर–देवलोक; उयिर् चुमन्तु–(राक्षसों के) प्राणों को ढोते हुए; उळुक्कियतु–लचक उठा। ४४८

भयंकर युद्ध में कवन्धराशियाँ मुदित हुईं। करी रक्त-प्रवाह में नहाये। वलवान प्रेतों ने क्रुद्ध राक्षसों के मांस खाकर अघाकर आनन्द मनाया। देवलोक में इतने राक्षसों के प्राण आ भर गये कि लोक ही झुक गया। ४४८

मरुड रुङ्गळि वञ्जनै वळैयॆयिऱ् ऱरक्कर्
गरुड नञ्जुरु कण्मणि काहमुङ् गवर्न्द
इरुड रुम्बुऱत् तिऴ्दैयर् पऴ्दुऱऱ् कॆळिदे
अरुड रुन्दिऱत् तऱनन्ऱि वलियदुण् डामो 449

मरुळ् तरुम्–मोह में डालनेवाले (मायावी); कळि–मत्त; वञ्चनै–कपटी; वळै ऍयिऱ्ऱु–वक्रदांत वाले; अरक्कर्–राक्षसों की; करुटन् अञ्चुरु–गरुड़ को भी भयभीत करनेवाली; कण्मणि–आँखों की पुतलियों को; काकमुम् कवर्न्त–कौओं ने छीन लिया; इरुळ् तरुम् पुऱत्तु–अन्धकार-सम काले शरीरों के; इऴितयर्–नीच लोग; पऴुतु उऱऱ्कु ऍळिते–नष्ट होंगे, यह सुलभ ही है; अरुळ् तरुम् तिऱत्तु–कृपा देनेवाले; अऱन् अन्ऱि–धर्म के सिवा; वलियतु–वलवान; उण्टामो–कोई दूसरा होगा क्या। ४४९

उन मायावी, मत्त, कपटी और वक्रदाँत वाले राक्षसों की आँखों की पुतलियों को अब कौए नोचकर खाने लगे। पहले उन आँखों को देखकर स्वयं गरुड़ भी डरता था। अब उनकी स्थिति ऐसी हो गयी! क्यों? उन नीचों की अवनति सुगमता से हो जाती है, जो अन्धकार के समान काले होते है! धर्म कृपा का जनक है। उससे वढ़कर वलवान और क्या है? । ४४९

पल्लायिर मिरुळ् कीऱिय पहलोऩ्ऩ वॊळिरुम्
विल्लाळऩै मुऩियावॆयि लयिलामॆऩ विऴियाक्
कल्लार्मऴै कणमामुहिल् कडैनाळ्विऴ् वऩवोल्
ऍल्लामॊरु तॊडैयावुड नॆय्दार्विऩै शॆय्दार् 450

पल् आयिरम् इरुळ्–अनेक सहस्र अन्धकार पुंजों को; कीऱिय–चीरनेवाले; पकलोन् अॅन ऑळिरुम्–सूर्य के समान प्रभावान; विल्लाळऩै–कोदण्डपाणी श्रीराम को; ऍल्लारुम् ऑरु तॊटैया–सभी (वचे हुए) राक्षसो ने एक साथ मिलकर; मुऩिया–कोप करके; वॆयिल् अयिल् आम् ॲन–चमकदार भाले के समान; विऴिया–तरेरकर; कण मा मुकिल्–समूहों में मिले वड़े-वड़े मेघ; कटै नाळ्–युगान्त में; कल् आर् मऴै–पत्थर की वर्षा; विट्टवऩ पोल्–गिराते हों, जैसे; ऍल्लाम् उटन् ऍय्तार्–सभी अस्त्र एक साथ चलाते हुए; विऩै चॆय्तार्–(युद्ध-) कार्य किया। ४५०

श्रीराम अन्धकार के समूहों को चीरकर हटानेवाले सूर्य के समान प्रभावान थे। उन कोदण्डपाणी पर सभी (वचे हुए) राक्षसों ने एक साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। उनकी तरेरती आँखों ने भयंकर भालों के समान दृष्टि चलायी। युगान्त में पत्थर वरसानेवाले मेघों के समान वे सभी अस्त्रों को एक साथ चलाने लगे। ४५०

ऍऱिन्दारॆऩ वॆय्दारॆऩ वऴियानिनैन् दऩवुम्
अऱिन्दारॆऩ वऴियावहै ययिल्वाळियि नऱुत्ताऩ्

शॅरिन्दारैयुम् विरिन्दारैयुञ् जॅरुत्तारैयुन् दिरत्ताल्
मरिन्दारैयुम् वलित्तारैयु मडित्तान्शिलै पिडित्तान् 451

चिलै पिटित्तान्–कोदण्डपाणी श्रीराम ने; चॅरिन्तारैयुम्–दलों में आनेवालों को; पिरिन्तारैयुम्–अलग-अलग आनेवालों को; चॅरुत्तारैयुम्–द्वेष करके आनेवालों को; चितत्ताल् मरिन्तारैयुम्–(जो भागे थे पर) क्रोध के कारण मुड़ आये उनको; वलित्तारैयुम्–अन्याय करनेवालों को; मटित्तान्–मिटाया; ऍरिन्तार् ऍत्त–ये शस्त्र फेंकनेवाले; ऍय्तार् ऍत्त–ये अस्त्र चलानेवाले; अरिया निनैन्ततवुम्–चलाने योग्य हथियारों को; अरिन्तार् ऍत्त–परखकर लेनेवाले थे; अरिया वकै–ऐसा पहचाना न जा सके, ऐसा; अयिल् वाळियिन् अरुत्तान्–तीक्ष्ण अपने शरों से छिन्न-भिन्न कर दिया। ४५१

कोदण्डपाणी श्रीराम ने सब राक्षसों को मार दिया। उनमें दल बाँधकर आनेवाले, पृथक-पृथक आनेवाले, क्रुद्ध राक्षस, भाग जाकर वैर-प्रेषित हो लौट आनेवाले और अन्यायी सभी थे। इस तेजी से वे हत हुए कि यह जानना भी कठिन हो गया कि कौन क्या कर रहा था। अस्त्र चलानेवाले, शस्त्र चलानेवाले, चलाने के लिए चुनाव में लगे रहनेवाले सभी थे। वे भी कुछ करने से पहले ही हत हो गये। ४५१

वानत्तन कडलिन्बुर वलयत्तन मदिशूळ्
मीनत्तन मिळिर्होण्डलिन् मिशैयत्तन मिडल्वॅम्
कानत्तन मलैयत्तन तिशैमुरिय करियिन्
तानत्तन काहुत्तन शरमुन्दिय शिरमे 452

काकुत्तन–काकुत्स्थ के; चरम् उन्तिय–शरों द्वारा उकसाये गये; चिरमे–राक्षसों के सिर; वानत्तन–आकाश में गये; कटलिन् पुर वलयत्तन–समुद्र के पार के चक्रवाल में गये; मति चूळ्–चन्द्रवलयित; मीनत्तन–नक्षत्र-मण्डल में गये; मिळिर् कॊण्टलिन्–दृश्यमान मेघमण्डलों के; मिचैयत्तन–ऊपर वाले हो गये; मिटल् वॅम् कानत्तन–घने भयंकर वनों में गये रहे; मलैयत्तन–पर्वतों पर के हुए; तिचै मुरिय–दिशाओं के छोर में रहनेवाले; करियिन्–करियों के; तानत्तन–स्थानों पर गये। ४५२

काकुत्स्थ के शरों से कटे हुए राक्षसों के सिर कहाँ-कहाँ दिखे! आकाश, समुद्र पार चक्रवाल पर्वत, चन्द्र को मध्य में लिये रहे मीनमण्डल, सुदृश्य मेघमण्डल, घने भयंकर वन, पर्वत, दिशाओं के अन्त में रहनेवाले दिग्गजों के स्थान —सभी स्थानों पर गये रहे। ४५२

मण्मेलन मलैमेलन मळैमेलन मदितोय्
विण्मेलन नॅडुवेलैयि निडमेलन मिडलोर्
पुण्मेलन कुरुदिप्पॊरु तिरैयारुहळ् पॊङ्गत्
तिण्मेरुवै नहुमार्बिनॆ युरुवुन्दॆरि शरमे 453

तिण् मेरुवै नकु–सुदृढ़ मेरु का परिहास करनेवाली; मार्पिन्–(राक्षसों की) छातियों को; उरुवुम् तॅरि चरम्–वेध जानेवाले (श्रीराम के) चुने हुए शर; पोर तिरै कुरुति आऱुकळ्–आपस में टकरानेवाली तरंगों से युक्त रक्त-नदियाँ; पोङ्क– उमँगकर बहें, ऐसा; मण् मेलत–पृथ्वी में गये; मलै मेलत–पर्वतों पर गये; मऴै मेलत–मेघों पर गये; मति तोय् विण् मेलत–चन्द्राश्रयी आकाश पर के हो रहे; नॅटु वेलैयिन् इटम् मेलत–विस्तृत समुद्रतलों के हो रहे; मिटलोर् पुण् मेलत–वली (राक्षसों) के व्रणों पर रहनेवाले बने। ४५३

जो मेरु-समान कठिन छाती वाले राक्षसों को भेद चले, वे श्रीराम के चुने हुए शर कहाँ-कहाँ पाये गये! राक्षसों के रक्त की नदियों को उमँगकर बहने देते हुए वे शर पृथ्वी पर, पर्वतों पर, मेघमण्डल पर, चन्द्राश्रयी आकाश पर, समुद्र पर और वली राक्षसों के व्रणों पर रहनेवाले बने। ४५३

पॉलन्दारिन रऩलिऩ्शिहै पॉऴिहण्णिऩ ऐवरुम्
वलन्दाङ्गिय वडिवॅम्बडै विडुवार्शर मऴैयाल्
उलन्दारुडल् कडलोडुऱ वुलवाउड लुऱ्ऱार्
अलन्दार्निशि शररामॅन विमैयोरॊडु मार्त्तार् 454

पॉलम् तारिऩर्–मनोरम मालाधारी; अऩलिऩ् चिकै पॉऴि कण्णिऩर्–अग्नि की ज्वालाएँ-सी निकालनेवाली आँखों के; वटि वॅम् पटै विटुवार्–तीक्ष्ण भयंकर हथियार चलानेवाले; ऐवरुम्–सभी राक्षस; चर मऴैयाल्–शर-वर्षा से; उटल् कटल् ओटु उऱ–शरीर जाकर समुद्र में मिल गये, इस रीति से; उलन्तार्–मरे; उलवा उटल् उऱ्ऱार्–अमर शरीर पाकर; इमैयोर् ओटुम्–देवों के साथ मिलकर; निचिचरर् अलन्तार् आम् ॲॅन–निशिचर मरे, यह कहकर; आर्त्तार्–सन्तोषरव उत्पन्न किया। ४५४

मनोरम मालाधारी सभी राक्षस, जिनकी आँखों से अग्निज्वालाएँ निकलती थीं और जो भयंकर तीक्ष्ण हथियार चलाते थे, श्रीराम की शरवर्षा के सामने मर गये। उनकी लाशें समुद्र में जाकर मिल गयीं। अब उन्हें अमर शरीर मिल गया। वे देवों मे मिल गये। अब वे नीचे देखते हैं और मरते हुए राक्षसों को देखकर हर्षरव निकालते हैं कि वाह! राक्षस मर गये। ४५४

ईरऱ्चॅऱि कमलत्तन विरदक्कुऱै पुळिऩम्
वीरक्करि मुदलैक्कुल विडुपाय्परि कुरम्बाप्
पारक्कुडर् मिडैपाशडै पडर्हिऩ्ऱऩ पलवा
मूरित्तिरै युदिरक्कुळ मुळुहिक्कळ् दॅळुमे 455

ईरल्–यकृत् (रूपी); चॅऱि कमलत्तत–दलसंकुल कमल वाले; इरत कुऱै–टूटे रथ; पुळिऩम्–पुलिन; वीर करि–साहसी गज; मुतलै कुलम्–नक्रसमूह; ₹ परि–अश्व; विटु–बँधे; कुरम्पा–बाँध; पार कुटर्–भारी आँतें; मिटै–लसे

रहनेवाले; पल् पाचटै आ—अनेक ताजे पत्ते, इनसे युक्त; मूरि तिरै—बड़ी-बड़ी तरंगों वाले; उतिर कुळम्—रक्त के तालाबों में; कळुतु—भूत; मुळुकि ॲळुव—नहा उठते हैं। ४५५

युद्धभूमि में एक अनोखा तालाब बन गया। उसमें रक्त भरा था। यकृत् कमल बने, टूटे रथ पुलिन। साहस के साथ मरे गज नक्र बने और अश्व की लाशें बाँध बनीं। भारी आँतों ने विविध पत्तों का स्थान लिया! ऐसे तालाब में, जिसमें बड़ी-बड़ी तरंगें उठ रही थीं, प्रेत नहा उठते थे। ४५५

अळैत्तार्शिल रार्त्तार्शिल रळिन्दार्शिलर् कळिन्दार्
उळैत्तार्शिल रुयिर्त्तार्शिल रुरुण्डार्शिलर् पुरण्डार्
कुळैत्ताळ्दिरैक् कुरुदिक्कडऱ् कुळित्तार्शिलर् कॊलैवाय्
मळैत्तारैहळ् पडप्पारिडै मडिन्दार्शिल रुडैन्दार् 456

कॊलै वाय्—मारक; मळै तारैकळ् पट—शरवर्षा के लगने से; चिलर्—कुछ राक्षसों ने; अळैत्तार्—पुकार मचायी; चिलर् आर्त्तार्—कुछ ने (भीषण) गर्जन किया; चिलर् अळिन्तार्—कुछ मिटे; चिलर् कळिन्तार्—कुछ भागे; चिलर् उळैत्तार्—कुछ तड़पे; चिलर् उयिर्त्तार्—कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी; चिलर् उरुण्टार्—कुछ लोटे; चिलर् पुरण्टार्—कुछ लुढ़के; कुळै ताळ्—गहरे पंक के साथ; तिरै कुरुति कटल्—लहरों से युक्त रक्त-सागर में; चिलर् कुळित्तार्—कुछ डूबे; चिलर् पार् इटै मटिन्तार्—कुछ भूमि पर गिरकर मरे; उटैन्तार्—हारे। ४५६

श्रीराम के संहारक वर्षा-धारों के समान शरों के आकर लगने से कुछ राक्षस त्राहि! त्राहि! पुकारने लगे। कुछ राक्षसों ने घोर शब्द किया। कुछ राक्षस वहीं ढेर हो गये। कुछ जान लेकर भागे। कुछ तड़पकर रह गये। कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी। कुछ लुढ़कते हुए गये। कुछ करवट बदलते बेचैन रहे। कुछ लोग कीच से भरे रक्त-सागर में डूबकर संकटग्रस्त हो रहे। कुछ लोग भूमि पर ही गिरकर मरे। कुछ लोग हारकर हटे। ४५६

उडैत्तारहळै नहैशॆय्दन रुरुडेरित्त रुडनाय्
अडैन्दार्पडैत् तलैवीरर्हळ् पदिनाल्वरु मयिल्वाळ्
मिडैन्दार्नॆडुङ् गडऱ्रातैयर् मिडल्विल्लिनर् विरिनीर्
कडैन्दार्वॆरु वुऱ्मीदॆळु कडुवामॆनक् कॊडियार् 457

विरि नीर्—विस्तृत (क्षीर-) सागर को; कटैन्तार्—जिन्होंने मथा उन (देवों और असुरों) को; वॆरुवु उऱ्—भयभीत करते हुए; मीतु ॲळु—ऊपर उठ आये; कटु आम् ॲन्न—विष के समान; कॊटियार्—निर्मम; पटै तलै वीरर्कळ् पतिनाल्वरुम्—सेनापति चौदहों ने; उटनाय्—एक साथ; उटैन्तार्कळै—हारकर भागनेवालों की; नकै चॆय्ततर्—हँसी उड़ाई; उरुळ् तेरितर्—पहियों वाले रथ पर सवार हो; अयिल् वाळ् मिटैन्तु आर्—भालों और तलवारों को लिये हुए मिल आनेवाली; नॆटुम् कटल्

तातैयार्–विशाल समुद्र-सम सेना के साथ; मिटल् विल्लित्तर्–सबल धनु वाले हो; उटताय्–एक साथ; अटैन्तार्–(वे) आये। ४५७

चौदहों सेनापतियों ने यह देखा तो उनका परिहास किया। देवों और असुरों को भयभीत करते हुए जो विष क्षीरसागर से उठ आया था, उस विष के समान बड़े ही भयंकर और खूनी वे सेनापति एक साथ निकलकर रथों पर युद्धभूमि में आये। उनके साथ बड़ी सेना आयी, जिसके वीर भालों और तलवारों से युक्त थे। सेना विपुल सागर के समान थी और वीरों से खूब भरी थी। ४५७

नाहत्तत्ति	यॊरुविल्लियै	नळिमुप्पुर	मुन्नाळ्
माहत्तिडै	वळैयुङ्ड्रन	वॆन्नवळ्ळलै	मदियार्
आहत्तॆळ्	कनल्हण्वळि	युहवॆड्रॆदि	रळन्ड्रार्
मेहत्तनि	नॆडुविल्लियै	वळैत्तार्शॆरु	विळैत्तार् 458

मुन्ताळ्–प्राचीनकाल में; नाकम् तत्ति ओरु विल्लियै–(मेरु) पर्वत को श्रेष्ठ धनु बनाकर जिन्होंने लिया था, उन (मेरुधन्वा) को; नळि मुप्पुरम्–बड़े त्रिपुरों ने; माकत्तु इटै–आकाश में; वळैवुड्रन ॲन–घेर लिया हो ऐसा; मेक तत्ति नॆटु विल्लियै–मेघश्याम, उत्तम दीर्घ धनु के स्वामी कोदण्डपाणी; वळ्ळलै–प्रभु श्रीराम को; मतियार्–कुछ न माननेवाले; आकत्तु ॲळु कनल्–शरीर के अन्दर उठनेवाली आग को; कण् वळि उक उड्रु–आँखों द्वारा निकलने देते हुए; ॲतिर् अळन्ड्रार्–सामने द्वेष करते हुए; वळैत्तार्–घेरकर; चॆरु विळैत्तार्–युद्ध किया। ४५८

वे श्रीराम का महत्त्व जान नहीं पाये। उनके मन में उनके प्रति आदर ही नहीं था। मेघसम दीर्घ धनु के साथ दृश्यमान उन उदार प्रभु श्रीराम को उन्होंने आकर ऐसा घेरा, जैसा मेरुधन्वा शिवजी को त्रिपुरों ने आकाश में घेर लिया था। उनकी आँखों से मानो उनके अन्दर की कोपाग्नि निकल रही थी। बड़े वैर के साथ वे घेर गये। ४५८

ॲय्दार्पल	रॆरिन्दार्पल	रॆळुवोच्चित्तर्	मळुवाल्
पॊय्दार्पलर्	पडैत्तार्पलर्	किडैत्तार्पलर्	पॊरुप्पाल्
पॆय्दार्मळै	पिदिर्त्तारॆरि	पिड्रैवाळॆयिर्	ड्ररक्कर्
वैदार्पलर्	तॆळित्तार्पलर्	मलैयामॆन	वळैत्तार् 459

पिड्रै वाळ् ॲयिड्रु–अपूर्ण चन्द्र-सम वक्रदाँत वाले; अरक्कर्–राक्षसों में; पलर्–अनेकों ने; ॲय्तार्–शर चलाये; पलर्–अनेकों ने; ॲळु–दण्ड; ओच्चित्तर्–फेंके; पलर् मळुवाल् पॊय्तार्–अनेकों ने परशुओं से वार किया; पलर् पुटैत्तार्–अनेकों ने मारा; पलर् किटैत्तार्–अनेक पास आये; पलर् पॊरुप्पाल् मळै पॆय्तार्–अनेकों ने पर्वतों को वर्षा के समान लगातार फेंके; ॲरि पितिर्त्तार्–(अनेकों ने) आग बरसायी; पलर् वैतार्–अनेकों ने गाली दी; पलर् तॆळित्तार्–अनेक डाँटे; मलै आम् ॲन वळैत्तार्–पर्वत के समान घेर लिया। ४५९

उनके साथ कितने ही राक्षस-वीर आये थे। चन्द्रकला के समान श्वेत और वक्रदाँत वाले उनमें अनेकों ने श्रीराम पर बाण चलाये। कितनों ने दण्ड फेंके। परशु और अन्य हथियार चलानेवाले भी अनेक, अनेक थे। अनेक उन पर झपटने आये। अनेक राक्षसों ने पर्वतों को उठाकर वर्षा के समान निरन्तर फेंका। अनेकों ने आग बरसायी। अनेकों ने गालियाँ दीं और अनेक डाँटे। अनेक पर्वतों के समान श्रीराम के चारों ओर आकर उनको घेर गये। ४५९

तेर्पूण्डऩ विलङ्गियावैयुम् जिलैपूण्डॆऴु कणैयाल्
पार्पूण्डऩ मदमाकरि पलिपूण्डन परिमात्
तार्पूण्डऩ वुडल्पूण्डिल तलैवॆङ्गदिर् तऴिवन्
दूर्पूण्डन पिरिन्दालॆऩ विरिन्दारुयि रुलन्दार् 460

चिलै पूण्टु ऍऴु–(श्रीराम के) कार्मुक से छूटे हुए; कणैयाल्–शरों से; तेर् पूण्टऩ–रथों में जुते हुए; विलङ्कु यावैयुम्–जानवर सब; पार् पूण्टऩ–भूमि पर गिरकर मरे; मत मा करि–मत्त, बड़े-बड़े गज; पलि पूण्टऩ–बलि चढ़े; तार् पूण्टऩ परि मा–हारों से युक्त अश्व; उटल् तलै पूण्टिल–शरीरों से सिर-जुड़े नहीं रहे; चॆरु विळैत्तार्–युद्ध करने जो आये थे, वे; वॆम् कतिर् तऴि वन्तु–गरम सूर्य को घेर जो आया; ऊर् पूण्टऩ–उस परिवेश के; पिरिन्ताल् ऍऩ–हटने के समान; उयिर् उलन्तार्–प्राण खोकर; विरिन्तार्–सब जगह अलग-अलग पड़े रहे। ४६०

श्रीराम ने तब शर चलाये। उनके कोदण्ड से निकले बाणों के लगने से राक्षसों के रथों में जुते हुए जानवर भूमि पर गिरकर मर गये। मत्तगज बलि चढ़े। हारों से भूषित अश्व सिर से विहीन हो गये। उनको घेर आये हुए राक्षस सूर्य के परिवेश के समान, जो जल्दी दूर हो जाता है, मर गये। उनकी लाशें सर्वत्र फैली पड़ी रहीं। ४६०

माल्पोत्तिय मऱवोरुडन् मलैयोत्तुड ऩऴिशॆम्
पाल्पोत्तिऩ नदियिऩ्किळर् पडियोत्तदु पऩिवान्
मेल्पोत्तिय कुऴुविण्णवर् विऴिपोत्तिऩर् विरैवॆम्
काल्पोत्तिनर् नमऩ्तूदुवर् कडिदुऱ्ऱुयिर् कवर्वार् 461

माल् पोत्तिय–मूर्च्छा में पड़े रहे; मऱवोर् उटल्–वीरों के शरीर; मलै ऒत्तु–पर्वतों से तुले; उटल् अऴि–उन शरीरों से निकलनेवाले; चॆम् पाल् पोत्तित्त–रक्त से भरी; नतियिल्–नदियों के कारण; किळर् पटि ऒत्ततु–दृश्यमान भूमि के समान लगे; पऩि वाऩ् मेल्–शीतल आकाश पर; पोत्तिय कुऴु विण्णवर्–एकत्रित हुए देवों ने; विऴि पोत्तिऩर्–अपनी आँखें मूँद ली; नमऩ् तूतुवर्–यमदूतों ने; कटितु उऱ्ऱु–जल्दी आकर; उयिर् कवर्वार्–(राक्षसों के) प्राण हरकर; मिटल् वॆम्–सशक्त और भयंकर; काल् पोत्तिऩर्–अपने पैरों से (युद्धभूमि को) आच्छादित कर दिया। ४६१

मूच्छित वीरों के शरीर पर्वतों के समान लगे। उनके शरीरों से निकलनेवाले रक्त की भरी नदियों के कारण भूमि शोभित लगी। आकाश में देवों ने भीड़ लगायी थी। उन्होंने यह दृश्य देखकर अपनी आँखें मूंद लीं। उस युद्धभूमि को यम के दूतों के पैरों ने ढँक दिया। वे जल्दी-जल्दी राक्षसों के प्राण लेने आ-जा रहे थे। ४६१

पेयेऱिनर् शॅरुवेट्टॅऴु पित्तेऱिऩर् पिलवाय्त्
तीयेऱिह लरियेऱित्तर् करियेऱिऩर् शॅऱिवाय्
नायेऱिऩ तलैमेनॅडु नरियेऱिऩ वॅरिहाल्
वायेऱिय वडिवाळियिऩ् वाऩेऱिऩर् वन्दार् 462

पिल वाय्–बिल के समान मुख वाले; ती एऱु इकल्–बड़ी आग के समान लड़नेवाले; अरि एऱित्तर्–सिहों पर सवार; करि एऱिऩर्–गजों पर सवार; चॅरु वेट्टु ॲऴु–युद्ध चाहते हुए आये; पेय् एऱित्तर्–भूतग्रस्त; पित्तु एऱित्तर्–उन्मत्त (राक्षसों के); तलै मेल्–सिरों पर; चॅऱिवाय्–भीड़ लगाकर; नाय् एऱिऩ–कुत्ते चढ़े; नॅटु नरि एऱिऩ–लम्बी कतार में सियार चढ़े; ॲरि काल्–आग उगलनेवाले; वाय् एऱिय–मुखों से युक्त; वटि वाळिऩ्–तीक्ष्ण वाणों से; वाऩ् एऱित्तर्–(हत होकर) आकाश में चढ़े; वन्तार्–आये। ४६२

राक्षस, जिनके मुख बिल के समान थे, भयंकर सिहों पर और गजों पर सवार होकर चाव के साथ भूतग्रस्त या उन्मत्त के समान युद्ध करने आये थे। पर वे मर गये। उनकी लाशों पर अब कुत्ते, सियार आदि चढ़ रहे थे। वे राक्षस श्रीराम के अग्निमुख और तीक्ष्ण वाणों से हत हुए थे। इसलिए उनकी आत्माएँ स्वर्ग पहुँच गयीं। ४६२

तलैशिन्दिऩ विऴिशिन्दिन तऴल्शिन्दिन तरैमेल्
मलैशिन्दिन पडिशिन्दिन वरुशिन्दुर मऴैबोल्
शिलैशिन्दिऩ कणैशिन्दिऩ तेर्शिन्दिऩ तिशैयू
डुलैशिन्दिऩ पॉऱिशिन्दिऩ वुयिर्शिन्दिऩ वुडलम् 463

मऴै पोल्–मेघ (वर्षा) के समान; चिलै चिन्तित्त–धनु से निकले; कणै चिन्तित्त–शर फैले; तलै चिन्तिन–सिर गिरे; विऴि चिन्तित्त–आँखें बिखरीं; तऴल् चिन्तित्त–आग फैली; वरु चिन्तुरम्–आगत गज; तरै मेल्–भूमि पर; मलै चिन्तित्त पटि पोल्–पर्वत बिखरे पड़े हों, इस प्रकार; चिन्तित्त–बिखरे पड़े थे; तेर् चिन्तित्त–रथ टूटकर छितराये; तिचै ऊटु–दिशाओं में सर्वत्र; उलै चिन्तिऩ–भट्ठी से निकली; पॉऱि चिन्तित्त–आग के कणों के समान अंगार बिखरे; उटलम्–शरीरों ने; उयिर् चिन्तित्त–प्राण छोड़ दिये। ४६३

श्रीराम के कोदण्ड ने वर्षा की धारों के समान शर बरसाये। इसलिए राक्षसों के सिर छितरे; आँखें बिखरीं और उन आँखों से अंगार छितरे। उन शरों से आहत होकर गज पर्वत के समान यत्र-तत्र पड़े रहे और रथ

टूटकर गिरे। दिशाओं में अंगारे उड़े और राक्षसों के शरीरों ने प्राण त्याग दिये। ४६३

पडैत्तलै वरुमवर् पडैत्त तेर्हळुम्
उडैत्तडम् बडैहळु मौळिय वुड्रॅदिर्
विडैत्तडर्न्दवर् वीरन् वाळियाल्
मुडैत्तवॅङ् गुरुदियिन् कडलिन् मूळ्हिनार् 464

पटै तलैवरुम्–सेनापति; अवर् पटैत्त तेर्कळुम्–उनके अपने रथ; उटै तटम् पटैक्कळुम्–उनके अपने बड़े-बड़े युद्ध-हथियार; ऒऴिय–इनको छोड़कर; उड्रु–(युद्धभूमि में) आकर; ऍतिर्–(श्रीराम के) सम्मुख; विटैत्तु–तनकर; अटर्त्तु–युद्ध करके; ऍतिर्न्तवर्–सामना जिन्होंने किया, वे सब; वीरन् वाळियाल्–वीर (श्रीराम) के शरों द्वारा; मुटैत्त–दुर्गन्धपूर्ण; कुरुतियिन्–रक्त के; कटलिन्–समुद्र में; मूऴ्कितार्–डब (मिट) गये। ४६४

सब मर-मिट गये। केवल वे चौदह सेनापति, उनके रथ और उनके पास रहे हथियार —ये ही बचे। अन्य सभी, जो दम्भ के साथ श्रीराम के सामने लड़ने आये थे, श्रीराम के बाणों से आहत हुए और दुर्गन्धपूर्ण रक्त-सागर में डूबकर मर गये। ४६४

शुड्रुड़ नोक्किनर् तॉडर्न्द शेनैयिल्, अड्रिल तलैयॅनु माक्कै कण्डिलर्
तॅड्रिन रॅयिरुह डिरुहि नार्शिन, मुड्रिन रिरामनै मुडुहु तेरिनार् 465

चुड्रु उड़ नोक्कित्तर्–सिर घुमाकर देखा; तॊटर्न्त चेत्तैयिल्–अनुगामिनी सेना में; तलै अड्रिल ऍतुम्–सिर न कटे ऐसा कहने योग्य; आक्कै कण्टिलर्–शरीर नहीं देखे; चितम् तिरुकित्तार्–क्रोध से ऐंठे; ऍयिरुकळ् तॅड्रितर्–दाँत चबाये; मुटुकु तेरित्तार्–तेजी से चलाये जानेवाले रथों के होकर; इरामतै मुड्रित्तर्–श्रीराम को घेर लिया (चौदहों सेनापतियों ने)। ४६५

सेनापतियों ने सिर घुमाकर चारों ओर देखा। अपनी सेना के किसी वीर को नहीं देख सके, जिसके शरीर का सिर कटा नहीं हो! उनके कोप का पारा चढ़ गया। दाँत पीसे। और रथ को सवेग चलाते हुए उन्होंने श्रीराम को चारों ओर से घेर लिया। ४६५

एऴिरु तेरुम्वन् दिमैप्पिन् मुन्विडैच्, चूऴ्वन कणैहळिर् ऱुणिय नूड्रिनान्
आऴियु माणियुम् माळु मड्रवै, ऊऴिवॅङ् गालॅरि योङ्ग लॊत्तवे 466

वन्तु इटै चूऴ्वत–पास आकर घेरनेवाले; एऴ् इरु तेरुम्–(सात के दो) चौदहों रथों को; इमैप्पित् मुन्–पलक मारने के अन्दर; कणैकळिल्–अपने बाणों से; तुणिय नूड्रितात्–(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न कर दिया; आऴियुम् आणियुम् आळुम्–चक्रों, धुर और सारथी से; अड्रु–हीन होकर; अवै–वे; ऊऴि वॅम् काल् ऍरि–भयंकर युगान्तकालीन झंझा द्वारा प्रताड़ित; ओङ्कल् ऒत्त–पर्वत-समान नष्ट हुए। ४६६

पल भर में श्रीराम ने उनके चौदहों रथों को अपने बाणों से तोड़कर चूर-चूर कर दिया। पहिये और धुर ही नहीं, सारथी भी नहीं बचे। युगान्त के झंझे से जर्जर हुए पर्वतों के समान वे रथ (नष्ट) हो गये। ४६६

अऴिन्दन तेरव रवनि कीण्डुह
इऴिन्दनर् वरिशिलै येन्दुत्त कैयिनर्
ऑऴिन्दिलर् शरङ्गळै युरुमि नेरुप्प्
पॊऴिन्दनर् पॊऴिहनल् पॊडिक्कुङ् गण्णिनार् 467

तेर् अऴिन्तत अवर्—रथ-नष्ट हुए वे; अवनि कीण्टु उक—भूमि में दरार बनाते हुए (उतनी उग्रता से); इऴिन्तनर्—उतरे; वरि चिलै एन्टुत्त कैयिनर्—बन्धनयुक्त धनु हाथ में लेकर; मिकु कनल् पॊटिक्कुम् कण्णितार्—अधिक अंगार निकालनेवाली आँखों के साथ; चरङ्कळै—शरों को; ऒऴिन्तिलर् पॊऴिन्तनर्—निरन्तर चलाये। ४६७

रथों को नष्ट-भ्रष्ट पाकर वे सेनापति जल्दी-जल्दी रथों पर से ऐसे कूदे कि भूमि पर दरार पड़ गयी! धनुर्धर उन्होंने आँखों से अंगार उगलते हुए श्रीराम पर निरन्तर बाणवर्षा की। ४६७

नूऱिय शरमॆला नुरुक्कु वाळियाल्
ईरुशॆय् दवर्शिलै येळी रेळैयुम्
आऱिनो डाऱुमो रिरण्डु मम्बिनाल्
कूऱुशॆय् दमर्त्तॊऴिऱ् कॊदिप्पै नीक्किनान् 468

चरम् ऎलाम्—सभी बाण; नूऱिय नुरुक्क—मिटकर चूर हुए; वाळियाल् ईरु चॆय्तु—ऐसा अपने बाणों द्वारा मिटाकर; अवर् चिलै एऴोटु एऴैयुम्—उनके चौदहों चापों को; आऱिन् ओटु आऱुम् ओर् इरण्टुम्—छः छः और दो (= चौदह); अम्पिताल्—बाणों से; कूऱु चॆय्तु—खण्ड-खण्ड करके; अमर् तॊऴिल् कॊतिप्पै—उनके युद्ध-कर्म की भयंकरता को; नीक्कितान्—दूर किया (श्रीराम ने)। ४६८

श्रीराम ने न केवल उन बाणों को नहीं मिटाया बल्कि उनके चौदहों चापों के भी चौदह बाण चलाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उन वीरों के युद्धोत्साह को और युद्ध की भयंकरता को दूर कर दिया। ४६८

विल्लिऴन् दनैवरुम् वॆहुळि मीक्कॊळक्
कल्लुयर् नॆडुवरै कडिदि नॆन्दिनार्
ऑल्लैयि नुरुत्तुयर् विशुम्बि नोङ्गिनिऩ्
ऱॆल्लैयिल् पॊऱियुह वॆऱिदन् मेयिनार् 469

अनैवरुम्—वे सब; विल् इऴन्तु—चाप खोकर; वॆकुळि मी कॊळ—क्रोध के उमड़ने से; कल् उयर् नॆटु वरै—पत्थर के बड़े पर्वतों को; कटितिन् एन्तितार्—वेग के साथ उठाकर; ऒल्लैयिन्—जल्दी; उरुत्तु—कोप करके; उयर् विचुम्पिन् ओङ्कि निन्ऱु—आकाश में ऊपर स्थित होकर; ऎल्लैयिल् पॊऱि उक—अगणित अंगार छितराते हुए; ऎऱितल् मेयिनार्—फेंकने लगे। ४६९

उन सेनापतियों को धनुष-विहीन होने से अपार क्रोध हुआ। वे पत्थर के बड़े पर्वतों को उठा-उठाकर ऊपर आकाश में खड़े होकर श्रीराम पर फेंकने लगे। उनकी गति इतनी तीव्र थी कि उनसे अंगार निकले और फैले। ४६९

कलैहळिन् परुङ्गडल् कडन्द विल्लित्तान्
इलैहॉळ्वॅम् बहळियै ळिरण्डु वाङ्गित्तान्
कॉलैहॉळ्वॅञ् जिलैयॊडु पुरुवङ् गोट्टित्तान्
मलैहळुन् दलैहळुम् विळुन्द मण्णिले 470

कलैकळिन् पॅरुम् कटल्-(६४) कलाओं के बड़े सागरों को; कटन्त-जिन्होंने पार किया था (निपुण); विल्लितान्-उन कोदण्डपाणी ने; इलै कॉळ्-पत्र-सम फल वाले; वॅम् पकळि-भयंकर अस्त्र; एळ् इरण्टु-सात के दो; वाङ्कितान्-लेकर; कॉलै कॉळ् वॅम् चिलै ओटु-मारक धनुष और; पुरुवम्-भौंहों को; कोट्टितान्-झुकाया (कुंचित किया); मलैकळुम् तलैकळुम्-पर्वत और सिर; मण्णिले विळुन्त-भूमि पर गिर गये। ४७०

श्रीराम चौंसठ कलाओं के पारंगत धनुर्धर थे। उन्होंने चौदह पत्ताकार सिर वाले बाण लिये। उन भयंकर बाणों को मारक धनु पर रखा। धनु को झुकाया जब उनकी भौहें भी झुकीं! उसके फलस्वरूप पर्वत और सेनापतियों के सिर एक साथ भूमि पर गिर गये। ४७०

पडैत्तलै वीरर्हळ् पडलुम् बल्पडै
पुडैत्तडर्त् तार्त्तॅरि पुहैयुङ् गण्णिनार्
किडैत्तन रर्क्कर्हळ् कीळु मेलुमॊय्त्
तडैत्तनर् तिशैहळै यमर रञ्जिनार् 471

पटै तलै वीरर्कळ्-सेनापति वीरों के; पटलुम्-हत हो जाने पर; अरक्कर्कळ्-(बचे रहे) राक्षस; पल् पटै पुटैत्तु-अनेक हथियारों से प्रहार करके; आर्त्तु-नारे लगाकर; ॲरि पुकैयुम् कण्णितार्-आग और धुएँ सहित आँखों के साथ; किटैत्तनर्-(श्रीराम के) समीप आकर; तिचैकळै-चारों दिशाओं में; कीळुम् मेलुम् मॊय्त्तु-नीचे और ऊपर भीड़ लगाकर; अटैत्तनर्-भर गए; अमरर् अञ्चितार्-देव डरे। ४७१

सेनापति वीर हत हो गये तो अन्य बचे हुए राक्षस क्रोध करके श्रीराम के समीप पिल पड़े और सभी दिशाओं में सर्वत्र भर गये। उनकी आँखों से आग और धुआँ-सा निकल रहा था। वे विविध प्रकार के अनेक हथियार चलाने लगे। उनकी संख्या, उनका क्रोध और युद्ध देखकर देव भी डर गये। ४७१

मुळङ्गिन पॅरुम्वणै मूरि माल्हरि
मुळङ्गिन वरिशिलै मुडुहु नाणॊलि

मुऴङ्गिऩ शङ्गोलि पुरवि मॊय्त्तुउ
मुऴङ्गिऩ वरक्करदम् मुहिलि ऩाऱ्प्परो 472

पॆरुम् पणै—बड़े-बड़े मारू ढोल; मूरि माल् करि—बड़े और बलवान करी; मुऴङ्कित—नाद कर उठे; वरि चिलै—बन्धनयुक्त धनुओं की; मुट्कु नाण् ऑलि—कठोर प्रत्यंचा की टंकार; मुऴङ्कित—उठी; चङ्कु ऑलि—शंखनाद मुऴङ्कित—हुए; पुरवि मॊय्त्तु उऱ—अश्व ठस मिलकर आये; अरक्कर् तम् मुकिलिऩ् आर्प्पु—राक्षसों का मेघगर्जन; मुऴङ्कित—उच्च स्वर में उठा। ४७२

बड़े ढोलों का नाद, गजों की चिंघाड़, भयंकर बलवान चापों की टंकार, शंखध्वनि आदि तुमुल नाद उठा। अश्व ठस जुट आये और राक्षसों का मेघ-सा गर्जन उच्च रहा। ४७२

वॆम्बडै निरुदर् वीश विण्णिडै मिडैन्द वीरऩ्
अम्बिडै यऱुक्कच् चिन्दि यऱ्ऱऩ विऴुमॆऩ् ऱञ्जि
उम्बरु मिरियल् पोऩा रुलहॆला मुलैन्दु शायन्द
कम्बमि ल्तिशैयि निऩ्ऱ कळिऱुकण् णिमैत्त वऩ्ऱे 473

निरुतर्—राक्षसों के; वीच—फेंकने से; वॆम् पटै—(वे) भयंकर हथियार; विण् इटै मिटैन्त—जो आकाश में घने रूप से भरे; वीरऩ्—वीर श्रीराम के; अम्पु इटै अऱुक्क—शरों के मध्य घुसकर काटने से; चिन्ति अऱ्ऱऩ—छितरकर बेकार हुए; विऴुम्—वे गिरेंगे; ऎऩ्ऱु अञ्चि—ऐसा डरकर; उम्परुम्—देव; इरियल्—अलग; पोऩार्—हट गये; उलकु ऎलाम्—सारे लोक; उलैन्तु—अस्त-व्यस्त होकर; चायन्त—अस्थिर हुए; कम्पम् इल्—अचल; तिचैयिल् निऩ्ऱ—दिशाओं में खड़े रहे; कळिऱुम्—गजों ने भी; कण् इमैत्त—आँखें मूँद लीं। ४७३

राक्षसों ने जो भयंकर हथियार फेंके, वे आकाश में घने रूप से भरे आये। पर वीर श्रीराम ने उनको बीच में ही खण्डित कर बेकार करा दिया। 'वे बेकार खण्ड हम पर गिरेंगे' —इस डर से देव भी हटकर भाग गये। सारे लोकों के वासी भी अस्तव्यस्त होकर शिथिल पड़ गये। अचल रहनेवाले दिग्गजों ने भी डर से अपनी आँखें मूँद लीं। ४७३

❀ अत्तलैत् तानैयन् नळवि लाऱ्ऱलऩ्
मुत्तलैक् कुरिशिल्बॊन् मुडियन् मुक्कणाऩ्
कैत्तलैच् चूलमे यऩैय काट्चियाऩ्
वैत्तलैप् पहळियाऩ् मऴैशॆय् विल्लिऩाऩ् 474

अ तलै—तब; अळविल् तानैयन्—अपार सेना वाले; आऱ्ऱलऩ्—शक्तिमान; पॊऩ् मुटियऩ्—स्वर्णकिरीटधारी; मुत्तलै कुरिचिल्—तीन सिरों का राजा त्रिशिरा; मुक्कणाऩ्—त्रिनेत्र (शिवजी) के; कै तलै—हाथ में रहनेवाले; चूलमे अऩैय—त्रिशूल की ही तरह; काट्चियाऩ्—दृश्यमान; वै तलै पकऴियाऩ्—तीक्ष्ण सिर (फल) वाले बाणों का रखनेवाला; मऴै चॆय्—(शर-) वर्षक; विल्लिऩाऩ्—धनुर्धर। ४७४

तब त्रिशिरा अपनी सेना के साथ बढ़ आया। कैसा था वह ? अपार सेना का स्वामी, अगाध शक्ति का नाथ; स्वर्णकिरीट-धारी और तीन सिरों वाला था वह। वह त्रिनेत्र शिवजी के हाथ के त्रिशूल के समान दृश्यमान था। उसके पास तीक्ष्णमुखी भयंकर शर थे। उसका शरासन भयंकर रूप से शरवर्षक था। ४७४

अऩ्ऩव ऩडुवुऱ वूऴि याऴियी
ऍऩ्ऩवन् दॅङ्गणु मिरॆत्त शेऩैयुळ्
तऩ्ऩिहर् वीरऩुन् दमियन् विल्लिऩऩ्
तुऩ्ऩिरु ळिडैयदोर् विळक्किऩ् ऱोऩ्ऱिऩाऩ् 475

अऩ्ऩवऩ्–वह; नडुवु उऱ–मध्य में रहा; ऊऴि आऴि–युगान्त समुद्र; ईतु ऍऩ्ऩ–यह है, ऐसा; वन्तु–आकर; ऍङ्कणुम् इरॆत्तु–सब जगह शोर के साथ आ गई; चेऩै उळ्–उस सेना के अन्दर; तऩ् निकर् वीरऩुम्–स्वोपम वीर भी; तमियऩ् विल्लिऩऩ्–अकेले, धनु के साथ; तुऩ् इरुळ् इडै–घने अन्धकार के मध्य; ओर् विळक्किल्–एक दीप के समान; तोऩ्ऱिऩाऩ्–शोभित रहे। ४७५

उसको मध्य में रखते हुए उसकी अपार सेना युगान्तकालीन समुद्र के समान उमड़ी आयी। सब स्थानों पर उसका विस्तार था। उस सेना के मध्य श्रीराम, जिनकी तुलना का वीर और कोई नहीं था, हाथ में धनुष लिये अकेले स्थित थे। वे घने अंधकार के मध्य रहनेवाले दीप के समान शोभे। ४७५

ऒङ्गिय वाळिऩ नुरुमि नार्प्पिऩऩ्
वीङ्गिय वेहत्तन् वॅय्य कण्णिऩऩ्
आङ्गव ऩणिक्कॆदि रणिह ळाहनेर्
ताङ्गिन ऩिरामऩुञ् जरत्तिन् ऱाऩैयाल् 476

ओङ्किय वाळिऩऩ्–उठाई हुई तलवार वाले; उरुमिऩ् आर्प्पिऩऩ्–वज्रनिनादी; वीङ्किय वेकत्तऩ्–बहुत वेगवान; वॅय्य कण्णिऩऩ्–भयंकर आँखों वाला; आङ्कु अवऩ्–वहाँ (जो आया) उस (त्रिशिरा) की; अणिक्कु–सेना भागों के; नेर्–सामने; अणिकळ् आक–सेनाओं के रूप में; चरत्तिऩ् ताऩैयाल्–शरों की सेनाओं (पंक्तियों) से; नेर् ताङ्किऩऩ्–श्रीराम ने सामना किया। ४७६

त्रिशिरा तलवार उठाये हुए तुमुल नाद के साथ नारे लगाते हुए आया। वह बड़ा वेगवान था। उसकी आँखें क्रूर और भयंकर थीं। उसकी सेना के सामने श्रीराम खड़े रहे। श्रीराम ने उसकी सेना के भागों के सामने अपने शरों की पंक्तियों को ही पलटनों के रूप में स्थापित किया और युद्ध किया। ४७६

ताळिडै यर्र्रन तलैयु मर्र्रन, तोळिडै यर्र्रन तोँडैह ळर्र्रन
वाळिडै यर्र्रन मऴुवु मर्र्रन, कोळिडै यर्र्रन कुडैह ळर्र्रन 477

ताळ् इटै अर्र्रन–(राक्षसों के) पैर बीच से कटे; तलैयुम् अर्र्रन–सिर अलग हुए; तोळ् इटै अर्र्रन–भुजाएँ बीच से कटीं; तोँटैकळ् अर्र्रन–ऊरु कटे; वाळ् इटै अर्र्रन–तलवारें नष्ट हुईं; मऴुवुम् अर्र्रन–परशु भी मिटे; कोळ् इटै अर्र्रन–उनका बल भी मध्य में बेकार हुआ; कुटैयुम् अर्र्रन–छत्र भी छिन्न हुए। ४७७

राक्षसों का क्या हाल हुआ ? पैर कटे, सिर लुढ़के, हाथ कटे और ऊरु खण्डित हुए। तलवारें कटीं, परशु मिटे और छत्र नष्ट हुए। राक्षसों का बल भी बेकार हुआ। ४७७

कौडियोडु कौडिञ्जिर्र्प् पुरविक् कूट्टर्प्
पडियोडु पडिन्दन परुदित् तेर्प्पणै
नॅडियवॅङ् गडहरि पुरण्ड नॅर्र्रिवीऴ्
इडियोडु मिडिन्दुवीऴ् शिहर मॅन्नवे 478

परुति तेर् पणै–चक्रव्यूह में रहे रथों के समूह; कौटि ओटु–ध्वजाओं के साथ; कौटिञ्च–'कौडिञ्जु' (रथी के स्थान के सामने रहनेवाला कमल के आकार का वह अवलम्ब, जिस पर हाथ रखकर आराम लिया जाता है); इऱ्–टूटे, इसलिए; पुरवि कूट्टु अऱ्–अश्व अलग हुए और मिटे, इसलिए; पटि ओटु पटिन्तन–भूमि पर गिरकर नष्ट हुए; नॅर्र्रि वीऴ्–अपने ऊपर गिरे; इटि ओटु–वज्र के साथ; इटिन्तु वीऴ्–टूटकर गिरनेवाले; चिकरम् ॲन्नवे–पर्वतशिखरों के समान; नॅटिय वॅम् कट करि–बड़े, भयंकर और मत्त गज; पुरण्ट–लोट गये। ४७८

चक्रव्यूह में रथ थे। उनकी ध्वजाएँ कटीं। उनके अन्दर रहने वाले कमलाकार अवलम्ब (जिनका रथी अपनी थकन मिटाने के लिए सहारा लिया करते है) खण्ड हुए। अश्व भी मरकर अलग हो गये। फलस्वरूप रथ ही भूमि पर सिर के बल गिरे और टूट गये। बड़े-बड़े भयंकर मत्तगज भी वज्राहत पर्वत-शिखरों के समान, जो वज्र के साथ ही नीचे गिरते हैं, नीचे गिरकर लुढ़क गये। ४७८

अर्र्रन शिरमॅन वरिद रॅर्र्रलर्
कौर्र्रवॅञ् जिलैच्चरङ् गोत्तु वाङ्गुवार्
इर्र्रिल ताळॅन वॅळुन्दु विण्णित्तैप्
पर्र्रितर् मळैयॅन्तप् पडैव ळङ्गुवार् 479

चिरम् अर्र्रन ॲन–सिर कट गये, यह बात; अरितल् तेर्र्रलर्–(जो) समझ न सके, वे; कौर्र्र वॅम् चिलै–बलवान भयंकर धनुषों में; चरम् कोत्तु वाङ्कुवार्–शर-संधान करते थे; ताळ् इर्र्रिल–पैरों को न कटा; ॲन–समझकर; ॲळुन्तु विण्णित्तै पर्र्रितर्–उठकर आकाश में खड़े होकर; मळै ॲन्त–वर्षा के समान; पटै वळङ्कुवार्–हथियार फेंके (कुछ राक्षसों ने)। ४७९

राक्षसों की विचित्र शक्ति और श्रीराम के शरों की तीव्रगति की विशेषता देखिए। सिर कटकर गिर गये तो भी राक्षस धनुष पर शर-संधान कर रहे हैं, मानो उनको विदित ही नहीं हुआ हो कि उनके सिर कट गये। कुछ राक्षसों के पैर कट गए; पर वे बिना उसकी सुध लिये ही आकाश में उछल उठे और वहाँ से वर्षा के समान हथियार बरसा रहे हैं! । ४७९

केडहत् तडक्कैय किरियिन् ऱोऱ्ऱत्त, आडहक् कवशत्त कवन्द माडुव
पाडहत् तरम्बैयर् मरुळप् पल्विद, नाडहत् तौळिलत्त नान्द हत्तत्त 480

कवन्तम् आटुव–कबन्ध (सिर कटे रुण्ड) जो नाच रहे थे; केटक तट कैय–ढाल सहित विशाल हाथों वाले थे; किरियिन् तोऱ्ऱत्त–पर्वत-सम आकार के थे; आटक कवचत्त–हाटक-कवच वाले थे; नान्तकत्तत्त–तलवारधारी थे; पाटकत्तु अरम्पैयर्–पाटक (पैंजनी ?) पहनी हुई अप्सराओं को; मरुळ–विस्मित करते हुए; पल् वित–विविध अनेक; नाटक तौळिलत्त–नृत्य-कर्म में लीन थे । ४८०

युद्धभूमि में कबन्ध ऐसे नाच रहे हैं कि पैंजनीविभूषित अप्सराएँ भी उनके विविध नाच देखकर विस्मय से हार मान लेती हैं! गिरि के समान उन कबन्धों के एक हाथ में ढाल और दूसरे हाथ में तलवार है। वे हाटक-कवच-धारी हैं । ४८०

कवरिवॆण् कुडैयॆनु नुरैय कैम्मलैच्, चुवरिन कवन्दमाळ् शुळिय तण्डुऱैप्
पवरित्तप् पडुमणि कुविक्कुम् बण्णैय, उवरियैप् पुदुक्कित्त वुदिर वाऱ्ऱो 481

उतिर आऱु–रक्त-नदियाँ; कवरि वॆण् कुटै ॲन्नुम्–चँवर और छत्र रूपी; नुरैय–झागों वाली थीं; कैम् मलै चुवरित्त–गज रूपी तटों की; कवन्तम् आळ् चुळिय–कबन्ध जिनमें डूब जायँ, ऐसे आवर्त वाली; तण् तुऱै–शीतल घाटों की; पवर् इत्त–विविध प्रकार के समूहों के; पटु मणि–दिखनेवाले रत्न; कुविक्कुम्–जिनमें आकर ढेरों में पाये जाते हैं, उन; पण्णैय–समीपवर्ती खेतों वाली; उवरियै पुतुक्कित्त–समुद्र को नया रंग-रूप देनेवाली हैं । ४८१

राक्षसों के मृत-शरीरों से जो रक्त बहा, वह नदियाँ बन गया। उन नदियों में चामर और श्वेत छत्र झाग के स्थान में थे। गज तट बने। आवर्त ऐसे थे जिनमें कबन्ध डूब जाते थे। शीतल घाट थे। उस नदी द्वारा अनेक रत्न बहते आये, जो पास के खेतों में जा पड़े रहे। उन नदियों ने समुद्र को नया रंग-रूप दिला दिया । ४८१

चण्डवॆङ् गडुङ्गणै तडियत् ताऴ्जिल
तिण्डिऱल् वळैयॆयिऱ् ऱरक्कर् तेवराय्
वण्डुळल् पुरिहुळल् मडन्दै मारोडुम्
कण्डत्तर् तम्मुडैक् कवन्द नाडहम् 482

चण्ट वॆम् कटुम् कणै–प्रचण्ड और अति कठोर (श्रीराम के) वाणों ने; ताम् तटिय–प्रहार कर हत किया, इसलिए; चिल–कुछ; तिण् तिऱल्–अति बली; वळै ऎयिऱ्ऱु अरक्कर–वक्रदांत वाले राक्षस; तेवराय्–देव बनकर; वण्टु उऴल्–भ्रमरावृत; पुरि कुऴल्–वेणी वाले केशों की; मटन्तैमार् ओटुम्–(देव-) स्त्रियों के साथ; तम् उटॅ कवन्त–अपने ही कबन्धों के; नाटकम्–नृत्य; कण्टत्तर्–देखकर आनन्दित हो रहे थे। ४८२

श्रीराम के शरों का यह गुण था कि उनसे आहत शत्रु वीर-स्वर्ग पहुँच जाया करते थे। यहाँ भी उनके प्रचण्ड वाणों से आहत वक्रदाँतों वाले राक्षस स्वर्ग के देव बन गये। वे वहाँ उन अप्सराओं के साथ, जिनकी वेणी वाले केश पर भ्रमर मँड़रा रहे थे, युद्धभूमि देखने लगे। अपने ही कबन्धों को नाचते देखकर उन्हें मजा आया। ४८२

आय्वळै महळिरो डमर रीट्टत्तर्, तूयवॆङ् गडुङ्गणै तुणित्त तङ्गडोळ्
पेयॊरु तलैहॊळप् पिणङ्गि वाय्विडा, नायॊरु तलैहॊळ नहैयुऱ् ऱार्शिलर् 483

आय् वळै मकळिरोटु–चुने हुए कंकणधारिणी अप्सराओं के साथ; अमरर् ईट्टत्तार्–देवगण बने (जो थे, वे) राक्षस; तूय वॆम् कटुम् कणै–पवित्र और भयंकर (श्रीराम के) अस्त्रों से; तुणित्त–कटे; तङ्कळ् तोळ्–अपने कन्धों को; ऒरु तलै पेय् कॊळ–एक ओर प्रेत के खींचते; पिणङ्कि–उससे झगड़कर; वाय् विटा–अपने मुख से न जाने देते हुए; नाय्–कुत्ते को; ऒरु तलै कॊळ–दूसरी ओर छीनते; नकैयुऱ्ऱार्–देखकर हँस रहे थे। ४८३

चुने हुए कंकण-धारिणी अप्सराओं के साथ वे यह भी देख रहे थे कि श्रीराम के पवित्र और प्रचण्ड बाणों से कटे उनके हाथों को कुत्तों ने अपने मुख में ग्रस लिया है; और एक ओर प्रेत उनको छीनने का प्रयास करते हैं और उस ओर कुत्ते अपने मुख से छीनने न देते हुए खींच लेने के प्रयास में लगे हैं। यह देखकर उन्हें मनोरंजन हुआ। ४८३

तॆरिहणै मूऴ्हलिऱ् ऱिरन्द मार्बिनर्
इरुविनै कडन्दुपो युम्ब रॆय्दिनार्
निरुदर्दम् बॆरुम्बडै नॆडिदु निन्ऱवन्
ऒरुवनॆन् ऱुळ्ळत्ति नुलैवुऱ् ऱार्शिलर् 484

तॆरि कणै–चुने हुए (श्रेष्ठ) शरों के; मूऴ्कलिल्–घुस जाने से; तिऱन्त मार्पिनर् चिलर्–विदीर्ण छाती वाले कुछ राक्षस; इरु विनै कटन्तु–दोनों कर्मों का निराकरण करके; पोय् उम्पर् ऎय्तिनार्–स्वर्ग जो जा पहुँचे थे; निरुतर् तम् पॆरुम् पटै–राक्षसों की सेना; नॆटितु–अतिविशाल है; निन्ऱवन्–(सामना करके) स्थित रहनेवाले; ऒरुवन्–एकाकी है; ऎन्ऱु–सोचकर; उळ्ळत्तिन् उलैवु उऱ्ऱार्–मन में चिंतित हुए। ४८४

श्रीराम के उत्तम बाणों के राक्षसों के शरीर के आर-पार होने से उनकी छातियाँ विदीर्ण हो गयीं। वे पाप-पुण्य दोनों कर्मों का निराकरण हो जाने से स्वर्ग पहुँच गये। वहीं से वे देखते हैं कि युद्धभूमि की स्थिति बड़ी विषम है। राक्षसों की सेना अत्यधिक विशाल है और उनके सम्मुख श्रीराम अकेले खड़े हैं। वे श्रीराम से सहानुभूति करके दुखी हुए। ४८४

कैक्कळि इऩैयवऩ् पहळि कण्डहर्
मॅय्क्कुलम् वेरोडुम् दुडैत्तु वीळ्त्तिऩ
मैक्करु मऩत्तॊरु वञ्जऩ् माण्बिलऩ्
पॊय्क्करि कूऱिय कॊडुञ्जॊऱ् पोलवे 485

मैं करु मनत्तु—अंजन-सम काले मन के; ओरु वञ्चन्—एक वंचक; माण्पु इलन्—गुण-हीन मनुष्य को; पॊय् करि—झूठी गवाही (देते हुए); कूऱिय कॊडुम् चॊल्—जो कहा, उस घातक वचन; पोलवे—के समान; कै कळिऱु अनैयवन्—सूँड़ वाला जानवर (गज) सम श्रीराम के; पकळि—शरों ने; कण्टकर्—लोककंटक; मॅय्कुलम्—राक्षसों के शरीरों की राशि को; वेर् ओटुम्—समूल; तुटैत्तु वीळ्त्तिन—मार-मिटाया। ४८५

सूँड़ वाले जानवर करी के समान दर्शनीय श्रीराम के बाणों ने लोक-कंटक राक्षसों के शरीरों को समूल मिटा दिया। उनका क्षय होना ऐसा था जैसे अंजन के समान काले मन वाले, कपटी और नीच प्रकृति के आदमी के झूठी गवाही के वचन कहने पर उसका नाश हो जाता है। ४८५

अञ्जुदऱ् कुऱुपहै यऱुत्त नीदियर्
तञ्जॅऩत् तऩ्मय माक्कुम् तऩ्मैपोल्
वञ्जहत् तरक्करै वळैत्तु वळ्ळऱाऩ्
शॆञ्जरत् तूय्मैयाऱ् ऱेव राक्किऩाऩ् 486

वळ्ळल्—उदार प्रभु श्रीराम ने; अञ्चुतऱ्कु उरु—भयावह; पकै अऱुत्त—अंतश्शत्रु के नाशक; नीतियर्—नीतिमान ज्ञानियों से; तञ्चु अॅन—शरण कहने पर; तन् मयम् आक्कुम् तन्मै पोल्—(ज्ञानी) अपने ही समान (शरणागतों को) बना लेते हैं, उसी प्रकार; वञ्चकत्तु अरक्करै—कपटी राक्षसों को; वळैत्तु—लपेट में लेकर; चॆम् चर तूय्मैयाल्—श्रेष्ठ शरों की पवित्रता द्वारा; तेवर् आक्कितान्—देव बना दिया। ४८६

सबको भयातुर करनेवाले कामादि दुर्गुण रूपी शत्रुओं को मिटाकर रहनेवाले ज्ञानियो के पास कोई जाकर यह कहे कि मैं आपकी शरण में आया हूँ, तो वे उसे अपने समान बना लेते हैं। वैसे ही श्रीराम ने उन कपटी राक्षसों को अपने शरों के दायरे के अन्दर बलात लाकर उन्हें मारा और उन्हें देव बना दिया। ४८६

वलङ्गॉळ्पोर् मानिडन् वलिन्दु कॉन्ऱमै
अलङ्गल्वे लिरावणऱ् करिविप् पामॅन्ऱच्
चलङ्गॉळ्पो ररक्करद मुरुक्क डाङ्गिन
इलङ्गॅयि लुय्त्तदक् कुरुदि याऱरो 487

वलम् कॉळ्–वलशाली; पोर् मानिटन्–योद्धा, एक मनुष्य का; वलिन्तु कॉन्ऱमै–(अनेक राक्षसों को) बलात मारना; अलङ्कल्–मालाधारी; वेल्–भाला वाले; इरावणऱ्कु–रावण को; अऱिविप्पाम् ऍन्ऱ–जाकर सुनायेंगे, सोचकर; कुरुति आऱु–रक्तनदी ने; चलम् कॉळ्–आवेग के साथ; पोर्–लड़नेवाले; अरक्कर् तम् उरुक्कळ्–राक्षसों के शरीरों को; ताङ्कित–वहा ले जाकर; इलङ्कॅयिन्–लंका में; उय्त्ततु–पहुँचाया। ४८७

प्राण या जीव देव बन गये। पर राक्षसों के मृत शरीरों का क्या हुआ ? रक्त की नदी उन्हें वहा ले गयी और वे लाशें लंका पहुँच गयीं। वे, मानो माला से भूषित और भालाधारी रावण को यह सन्देशा देने चलीं कि एक बलवान मनुष्य ने ही इन राक्षसों को वलात मारा था ! । ४८७

शूऴ्न्दुयर् नॅडुम्बडै पहऴि शुऱ्ऱुऱप्
पोऴ्न्दुयिर् कुडित्तलिऱ् पुरळप् पॉङ्गिनान्
ताऴ्न्दिलन् मुत्तलैत् तलैवन् शोरियिन्
आऴ्न्दते रम्बरत् तोट्टि यार्क्किन्ऱान् 488

चूऴ्न्तु उयर्–अपने को घेरकर बढ़ी; नॅटुम् पटै–विशाल सेना (के वीरों) के; पकऴि–श्रीराम के बाणों ने; चुऱ्ऱु उऱ–चारों ओर से; पोऴ्न्तु–चीरकर; उयिर् कुटित्तलिल्–प्राण हर लिये; पुरळ–वे लोट गये, इसलिए; मुत्तलै तलैवन्–त्रिशिरा नामक सेनापति; पॉङ्किनान्–उबल पड़ा; ताऴ्न्तिलन्–विलम्ब नहीं किया; चोरियिन् आऴ्न्त तेर्–रक्त में मग्न अपने रथ को; अम्परत्तु ओट्टि–अन्तरिक्ष में चलाते हुए; आर्क्किन्ऱान्–गरज उठा। ४८८

श्रीराम के बाणों ने उनको घेरे आये सभी राक्षसों को लपेटकर उनको मार दिया। वे सब लोट गये। त्रिशिरा नामक तीन सिर वाले राक्षस ने यह देखा और वह बौखला गया। बिना विलम्ब के उसने रक्त में मग्न रहे अपने रथ को ऊपर आकाश में चलाया। उसने भीषण गर्जन किया। ४८८

ऊन्ऱिय तेरिन नुरुमिन् वॅङ्गणै
वान्ऱॉडर् मऴैयॅन वाय्मै यावर्क्कुम्
शान्ऱन निन्ऱवत् तरुम मन्नवन्
तोन्ऱऱन् ऱिरुवुरु मऱैयत् तूवितान् 489

ऊन्ऱिय तेरितन्–सुस्थापित रथ वाले ने; उरुमिन्–वज्र के समान; वॅम् कणै–भयंकर अस्त्र; वान् तॊटर् मऴै ऍन–मेघ-वर्षित निरन्तर धारों के समान; वाय्मै

यावर्क्कुम्–सभी सत्यप्रिय लोगों के लिए; चान्‌रु अँत्त नित्‌र–दृष्टान्त के समान विद्यमान; तरुमम् अन्‌नवन्–धर्म-मूर्ति; तोन्‌रल् तन्–(दशरथ के) पुत्र श्रीराम के; तिरु उरु–श्रीशरीर को; मऱैय–आवृत करते हुए; तूविनान्–बरसाये। ४८९

अपने रथ को अन्तरिक्ष में स्थिर रूप से खड़ा करके उसने वज्र के समान शरों को मेघ-वर्षा की धारों के समान निरन्तर चलाया। उन शरों में सत्यवादियों के दृष्टान्तस्वरूप और धर्मावतार दशरथ के पुत्र श्रीराम का दिव्य शरीर छिप गया। ४८९

❀ तूविय शरमॅलान् दुणिय वङ्गणै
एवित्त निरामनु मेवि येऴिरु
पूवियल् वाळियाऱ् पॊलङ्गॊ डेरऴित्
ताविवॅम् बाहत्तै यऴित्तु माऱ्ऱिनान् 490

तूविय चरम् ऍलाम्–वर्षित सभी अस्त्र; तुणिय–खण्डित करते हुए; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; वॅम् कणै एवित्तन्–भयंकर शर चलाये; एवि–चलाकर; एऴ् इरु–(और) चौदह; पू इयल् वाळियाल्–तीक्ष्ण शरों से; पॊलन् कॊळ् तेर्–स्वर्ण-निर्मित रथ को; अऴित्तु–नष्ट करके; वॅम् पाकन्–पराक्रमी सारथी को; आवि अऴित्तु–जान से मारकर; माऱ्ऱिनान्–युद्ध की स्थिति में परिवर्तन पैदा कर लिया। ४९०

तब श्रीराम ने बाण चलाकर उन सभी तीरों को काट दिया। फिर उन्होंने चौदह अतितीक्ष्ण तीर चलाये और उसके रथ को ध्वस्त कर दिया और सारथी को भी मार दिया। तब युद्ध का रवैया ही बदल गया। ४९०

❀ अन्‌ऱियु मक्कणत् तमर रार्त्तॅऴप्
पॊन्‌ऱॆरि वडिम्बुडैप् पॊरुविल् वाळियाल्
वन्‌ऱॊऴिऱ् ऱीयवन् महुड मात्तलै
यॊन्‌ऱॊऴित् तिरण्डैयु मुरुट्टि नानरो 491

अन्‌ऱियुम्–उसके अलावा; अ कणत्तु–उसी क्षण में; अमरर् आर्त्तु ऍऴ–देवों को हर्षरव करने देते हुए; पॊन् तॆरि–सुनहले; वटिम्पु उटै–किनारों वाले; पॊरुवु इल् वाळियाल्–अनुपम अस्त्रों से; वन् तॊऴिल् तीयवन्–नृशंसकारी क्रूर के; मकुटम् मा तलै–किरीटधारी (तीन) बड़े सिरों में; ऒन्‌ऱु ऒऴित्तु–एक को छोड़कर; इरण्टैयुम्–अन्य दोनों को; उरुट्टिनान्–लुढ़काया। ४९१

श्रीराम वहीं तक नहीं रुके। उसी क्षण उन्होंने अपने रुक्मपंख अस्त्र चलाकर उस नृशस पापी के किरीटधारी बड़े सिरों में एक को छोड़कर बाकी दोनो को काट दिया। वे सिर भूमि पर गिरकर लोटने लगे। इसको देखकर देवगण सन्तोष का नाद कर उठे। ४९१

❀ तेरऴिन् दव्वऴित् तिरिशि रावॆन्नुम्
पेरऴिन् दॆन्ऩिनु मरुम्बि ऴैत्तिलन्
नारिऴिन् दुमिऴ्शिलै वान नाट्टुऴिक्
कारिऴिन् दालॆनक् कणैहळ् शिन्दिनान् 492

अ वऴि–उस स्थान में; तेर् अऴिन्दु–रथ खो गया; तिरिचिरा–त्रिशिरा; ऍन्नुम् पेर्–का नाम; अऴिन्दॆन्ऩिनुम्–मिट (निरर्थक हो) गया तो भी; मरुम् पिऴैत्तिलन्–वीरता से वंचित न होकर; चिलै–धनु से; नार् इऴिन्दु उमिऴ्–प्रत्यंचा द्वारा प्रेषित; कणैकळ्–शरों को; वान नाट्टु उऴि–आकाशलोक से; कार् इऴिन्दाल् ऍन–मेघ (पानी) गिरता हो जैसे; चिन्दिनान्–चलाया। ४६२

अब त्रिशिरा त्रिशिरा नहीं रहा। दो सिर खोकर उसने अपना नाम ही खो दिया। उसका रथ भी बेकार हो गया। तो भी उसने अपनी वीरता और साहस नहीं छोड़ा, पर अपने धनुष के डोरे खींचकर, व्योमनगर से मेघ-वर्षा गिरती हो, ऐसा अस्त्र निरन्तर छोड़े। ४९२

❀ एऱ्ऱिय नुदलिन निरुण्ड कार्मऴै
तोऱ्ऱिय विल्लॊडुन् दॊडर मीमिशैक्
काऱ्ऱिडै यऴित्तॆनक् कार्मु हत्तैयुम्
माऱ्ऱरुम् बहऴिया लऱुत्तु माऱ्ऱिनान् 493

एऱ्ऱिय नुतलिनन्–चढ़ी हुई भौंहों के भाल वाले (श्रीराम) ने; इरुण्ट कार्–काले मेघ ने; मऴै तोऱ्ऱिय–वर्षा कराई जैसे; विल् ओट्टुम्–अपने धनु से; तॊटर–शर चलाकर युद्ध किया; मी मिचै–आकाश में; काऱ्ऱु इटै अऴित्तु ऍन–वायु ने प्रवेश कर मिटा दिया जैसे; कार्मुकत्तैयुम्–त्रिशिरा के धनु को भी; माऱ्ऱु अरुम् पकऴियाल्–अलंघ्य बाणों से; अऱुत्तु माऱ्ऱिनान्–काटकर ध्वस्त कर दिया। ४६३

श्रीराम की भी त्योरियाँ चढ़ीं। उन्होंने भी काले मेघ के समान जो वर्षा कराता है, अपने धनुष के साथ युद्ध किया और अपने अमोघ और अवार्य अस्त्रों से त्रिशिरा के धनुष को काट दिया। धनु बिल्कुल नष्ट हो गया। ४९३

❀ विल्लि ऴन्दन ऩॆन्ऩिनुम् विळङ्गुवाण् मुहत्तिन्
ऍल्लि ऴन्दिल ऩिऴन्दिलन् वॆङ्गद मिडिक्कुम्
शॊल्लि ऴन्दिलन् ऱोळ्वलि यिऴन्दिलन् शॊरियुम्
कल्लि ऴन्दिल ऩिऴन्दिलन् करुङ्गॊन्त तिरिदल् 494

विल् इऴन्तनन् ऍन्ऩिनुम्–धनु गँवा दिया तो भी; विळङ्कु वाळ् मुकत्तिन्–शोभनेवाले उज्ज्वल चेहरे का; ऍल् इऴन्तिलन्–प्राकृतिक सौंदर्य न खोया; वॆम् कतम् इऴन्तिलन्–भयंकर क्रोध भी न गँवाया; इटिक्कुम् चॊल्–वज्र-सम बोली; इऴन्तिलन्–न गँवायी; तोळ् वलि–भुजबल; इऴन्तिलन्–न खोया; चॊरियुम्

कल्–पत्थर बरसाना; इळन्तिलन्–न छोड़ा; करङ्कु अँन–वातचक्र के समान; तिरितल्–घूमना; इळन्तिलन्–न छोड़ा। ४९४

त्रिशिरा ने अब धनुष भी गँवा दिया। तो भी उसके उज्ज्वल मुख की प्रभा नहीं गयी। उसका क्रोध दूर नहीं हुआ और उसके वचन की वज्र की-सी कड़क और उग्रता भी नहीं गयी। उसका भुजबल भी नहीं गया और उसने पत्थर बरसाना नहीं छोड़ा। (पतंग या) वातचक्र के समान वह घूमता हुआ लड़ा। ४९४

❀ आळि रण्डुनू रुळवँन वन्दरत् तॉरुवन्
मूळि रुम्बॅरु मायैयिन् शॅरुमुयल् वानैत्
ताळि रण्डॅयु मिरण्डुवॅङ् गणैहळाड् ड्डिन्दु
तोळि रण्डॅयु मिरण्डुवॅञ् जरङ्गळाड् डुणित्तान् 495

अन्तरत्तु–अन्तरिक्ष में; ऑरुवन्–एकाकी; सूळ् इरुम्–छानेवाली बड़ी; पॅरु मायैयिन्–विस्तृत माया से; आळ् इरण्टु नूरु उळ–योद्धा दो सौ हैं; अँन–ऐसा; चॅरु मुयल्वानै–युद्ध करनेवाले उसके; ताळ् इरण्टैयुम्–दोनों पैरों को; इरण्टु वॅम् कणैकळाल् तटिन्तु–दो घातक बाणों से काटकर; तोळ् इरण्टैयुम्–दोनों भुजाओं को; इरण्टु वॅम् चरङ्कळाल् दो भयंकर बाणों द्वारा; तुणित्तान्–काट लिया। ४९५

अन्तरिक्ष में एकाकी रहकर त्रिशिरा ऐसी माया के साथ लड़ा कि यह भ्रम हो जाता था कि दो सौ राक्षस एक साथ युद्ध कर रहे थे। अदम्य उत्साह के साथ वह युद्ध कर रहा था। श्रीराम ने दो-दो अस्त्र चलाकर उसके दोनों हाथों और दोनों पैरों को काटकर अलग कर दिया। ४९५

❀ अऱ्ऱ ताळॊडु तोळिन नयिलॅयि ऱिलङ्गप्
पॊऱ्ऱै मामुळैप् पुलालुडै वायिनिऱ् पुहुन्दु
पऱ्ऱ वादरिप् पान्ऱनै नोक्किनन् परियान्
कॊऱ्ऱ वार्शरत् तॊळिन्ददोर् शिरत्तैयुङ् गुऱैत्तान् 496

अऱ्ऱ ताळ् ऑटु तोळिनन्–पैरों और हाथों से हीन; अयिल् ऍयिऱु इलङ्क–तेज दाँतों को प्रकट करते हुए; पॊऱ्ऱै मा मुळै–पर्वत की बड़ी कन्दरा के समान; पुलाल् उटै वायितिल्–मांस की गन्ध निकालनेवाले मुख में; पुकुन्तु पऱ्ऱल्–जाकर ग्रसने का; आतरिप्पात तनै–प्रयत्न करनेवाले उसको; नोक्कितन्–(श्रीराम ने) देखकर; परियान्–कृपा न करके; कॊऱ्ऱ वार् चरत्तु–दृढ़ एक लम्बे वाण से; ऑळिन्तत्तु ओर् चिरत्तैयुम्–वचे रहे एक सिर को भी; कुऱैत्तान्–काटकर अलग किया। ४९६

हाथ और पैर खोकर राक्षस ने अपने तीक्ष्ण दाँतों को निकालते हुए श्रीराम को अपने मांस-गन्ध-पूर्ण, बिलसदृश मुख से ग्रसने का उपक्रम किया। श्रीराम ने उसको देखा, दया नहीं की और एक लम्बा और बलवान अस्त्र चलाकर उसका वचा हुआ सिर भी धड़ से अलग कर दिया। ४९६

❀ तिरिशि रावॅनुऱ् जिह्रमण् चेर्दलुऱ् जिदऱि
निरुद रोडिनर् तूडणन् विलक्कवु निल्लार्
परुदि वाळिनर् केडहत् तडक्कैयर् परन्द
कुरुदि नीरिडै वार्हुळल् कॉळुङ्गुडर् तॉडक्क 497

तिरिचिरा ॲनम् चिकरम्–त्रिशिरा रूपी शिखर; मण् चेर्तलुम्–धराशायी हुआ तो; परुति वाळित्तर्–सूर्यप्रभ तलवारधारी; केटक तट कैयर्–ढाल लिये बड़े हाथ वाले; निन्ऱ निरुतर्–विद्यमान राक्षस; चितऱि–अस्तव्यस्त होकर; तूटणन् विलक्कवुम्–दूषण के रोकने पर भी; निल्लार्–न रुके; परन्त–फैले रहे; कुरुति नीर् इटै–रक्त-प्रवाह के मध्य; कॉळुम् कुटर्–मोटी आँतों के; वार् कऴल्–लम्बे पैरों से; तॉटक्क–उलझकर रोकते; ओटिनर्–(उनको भी खींचते हुए) भागे। ४९७

त्रिशिरा रूपी शिखर (शिखर-सम नेता) मरकर भूमि पर गिर गया, तो अर्क-सम प्रकाशमान तलवारें और ढाल रखनेवाले विशाल हाथों के राक्षस भय से अस्तव्यस्त होकर भागे। दूषण ने रोकना चाहा तो भी वे नहीं रुके। सारी युद्धभूमि रक्त और कीच से भरी थी। वे उसी में घुसकर भागे। आँतों ने उनके पैरों से उलझकर वाधा डाली। तो भी लस्टम-पस्टम वे भागे ही। ४९७

कणत्तिन् मेनिन्ऱ वानवर् कैबुडैत् तार्प्पप्
पणत्तिन् मेनिलङ् गुलैवुऱक् काल्हॉडु पऱप्पार्
निणत्तिन् मेल्विळुन् दळुन्दिनर् शिलर्शिलर् निवन्द
पिणत्तिन् मेल्विळुन् दुरुण्डन रुयिर्हॉडु पिळैप्पार् 498

मेल्–अन्तरिक्ष में; कणत्तिन् निन्ऱ–दलबद्ध स्थित; वानवर्–देवों ने; कै पुटैत्तु आर्प्प–तालियाँ पीटकर आनन्दरव किया; पणत्तिन मेल् निलम्–शेषनाग पर भूमि; कुलैवु उऱ–थर्रा उठी, तव; काल् कॉटु पऱप्पार्–पैरों के सहारे उड़नेवाले; चिलर्–(राक्षसों में) कुछ; निणत्तिन् मेल् विळुन्तु–मांस-पंक में गिरकर; अळुन्तिनर–मग्न हुए; चिलर्–कुछ; निवन्त पिणत्तिन् मेल् विळुन्तु–ढेर वनी रही लाशों पर गिरकर; उरुण्टनर्–लुढ़के; उयिर् कॉटु पिळैप्पार्–किसी विध जान से वचे। ४९८

वे राक्षस ऐसे दौड़े, मानो उनके पैर ही पंख हों। उनको देखकर आकाश में देवगण तालियाँ पीटकर हँसे। शेषनाग पर धृत यह भूमि राक्षसों के पदाघातों से डोल उठी। उनमें कुछ रक्त-कीच में मग्न होकर डूब गये। कुछ ढेर वनी पड़ी रही लाशों पर टकराकर गिरे और किसी तरह वचकर भागे। ४९८

वेयन्द वाळॉडु वेलिडै मिडैन्दन वॅट्ट
ओयन्दु ळार्शिल रुलन्दन रुदिरनीर् याऱ्ऱिल्
पायन्दु काल्पदिन् दळुन्दिनर् शिलर्शिलर् पयत्ताल्
नीन्दि नार्नॅडुङ् गुरुदियङ् गडल्पुक्कु निलैयार् 499

चिलर्–कुछ; इटै–बीच में; वेय्न्त–पड़ी रही; वाळ् ओट्टु वेल्–तलवारों और भालों के; मिटैन्तन–जो सटे हुए थे; वॅट्ट–काटने से; ओय्न्तुळार्–(दौड़ नहीं सके) शिथिल हुए; उलन्तनर्–मरे; चिलर्–और कुछ; उतिर नीर् आऱ्ऱिल् पाय्न्तु–रक्त-नदी में गिरकर; काल् पतिन्तु–पैरों के गड़ जाने से; अळुन्तिनर्–डूब मरे; चिलर् पयतुताल्–कुछ, डरते हुए; नीन्तिनार्–तैरे; कुरुति अम् कटल् पुक्कु–रक्त-सागर में पहुँचकर; निलैयार्–चंचल रहे। ४९९

राक्षसों के मार्ग में तलवारें, भाले आदि कसरत से पड़े थे। कुछ राक्षसों के पैर उनसे कट गये और वे राक्षस निर्बल होकर गिरे और मरे। कुछ रक्त-प्रवाह में घुसे और कीच मे पैरों के गड़ जाने से मरे। कुछ भयातुर होकर उस रक्त-नदी में उतरे और बहते जाकर रक्त-सागर में पहुँचे। वहाँ वे डूब-उतराये। ४९९

❀ मण्डि योडिनर् शिलर्नॅडुङ् गडहरि वयिऱ्ऱिल्
पुण्डि ऱन्दमा मुळैयिडै वाळोडुम् बुहुवार्
तॉण्डै नीङ्गिय कवन्दत्तैत् तुणैवनी यॅम्मैक्
कण्डि लेन्नॅनप् पुहलॅन्क् कैदलैक् कॉळ्वार् 500

मण्टि ओटिन्नर् चिलर्–तेज जो भागे, वे कुछ; नॅटुम् कट करि वयिऱ्ऱिल्–मत्तगजों के पेट में; पुण् तिऱन्त–व्रण जो खुले थे; मा मुळै इटै–उन बिलों में; वाळ् ओटुम् पुकुवार्–तलवारों के साथ घुसे; तॉण्टै नीङ्किय–गले से (कटकर) हीन; कवन्तत्तै–कबन्ध को; तुणैव–मित्र; नी ॲम्मै कण्टिलेन्–तुम 'मुझे नहीं देखा'; ॲन–यह; पुकल् ॲन–(श्रीराम के बाणों से) कहो, ऐसा; कै तलै कॉळ्वार्–सिर पर हाथ (जोड़कर) रख लेते। ५००

कुछ राक्षस दौड़े। बचने का कोई स्थान नहीं मिला। वहाँ हाथी मरे पड़े थे, जिनके पेट बिलों के समान खुले थे। राक्षस अपनी तलवारों के साथ उन्हीं में घुस गये। कुछ राक्षस भागते जा रहे थे। उनको डर था कि श्रीराम के शर पीछा करके आ रहे हैं। उन्होंने कवन्धों को देखा और अंजलिबद्ध हाथ अपने सिरों पर रखते हुए उनसे प्रार्थना की कि तुम श्रीराम के बाणों से मत कहो कि तुमने हमें देखा था। ५००

❀ कच्चुम् वाळुन्दङ् गाऱ्ऱोडइन् दीर्प्पन काणार्
अच्च मॅन्नदीर् ऱुरुवुहोण् डालॅन्न वळिवार्
उच्च वीरन्गैच् चुडुशर निरुदर्नॅञ् जुरुवित्
तच्चु निन्ऱन्न कण्डन्न रव्वळित् तविर्न्दार् 501

उच्च वीरन्–सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के; कै–हाथ के; चुट्टु चरम्–मारक बाण; निरुतर् नॅञ्चु उरुवि–राक्षसों की छाती में घुसकर; तच्चु निन्ऱ–गड़े रहे; कण्टनर्–उनको देखकर; अ वळि तविर्न्तार्–उस मार्ग को बचाकर; कच्चुम् वाळुम्–कमरबन्द और तलवार; तम् काल् तॉटर्न्तु ईर्प्पन–उनके पैरों को काटती

रहती है; काणार्–उसकी भी सुध न लेते हुए; अच्चम् अँन्पतु ओर् उरुवु कॊण्टाल् अॅन्न–मानो भय नामक वस्तु ने रूप लिया हो, ऐसा; अऴिवार्–वहीं रहकर मरते। ५०१

कुछ वीरों ने देखा कि मार्ग में सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के हाथ के प्रेरित भयानक शर राक्षसों के वक्षों में घुसकर वहीं गड़े रहे। वे उस मार्ग से नहीं गये। वे इतने भयभीत हो गये कि उनके कमरबन्द और उनकी तलवारें उन्हें निरन्तर काट रही थी—इसकी भी उन्होंने सुध नहीं ली। वे बिल्कुल भय के मूर्त आकार थे। वे जहाँ-तहाँ रहकर मरने लगे। ५०१

❀ अनैय राहिय वरक्करै याण्डॉऴिड़् कमैन्द
विनैय नीङ्गिय मनित्तरै वॅरुवन्मि नॅन्ना
निनैयु यानींनूरु निरप्पुव दुण्डॅन्न निन्ड्रान्
तुनैयुम् वाम्बरित् तेरितन् रूडणन् शॊन्नान् 502

तूटणन्–दूषण; तुनैयुम्–तीव्रगामी; वाम् परि–अश्व-जुते; तेरितन्–रथ पर सवार; अनैयर् आकिय अरक्करै–वैसे भागते हुए राक्षसों को; आण् तॊऴिऱ्कु अमैन्त–पुरुष के कार्य योग्य; विनैयम् नीङ्किय–काम जिनके पास नहीं, उन; मनित्तरै–मानवों से; वॅरुवल्मिन्–मत डरो; अॅन्ना–कहकर; यान् निनैयुम् ऑन्ऱु–मैं सोचता हूँ एक बात; निरप्पुवतु उण्टु–जो कहती है; अॅन–ऐसा; निन्ड्रान्–खड़ा होकर; चॊन्नान्–बोला। ५०२

तब दूषण नामक सेनापति ने, जो तीव्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार था, भागनेवाले राक्षसों को रोकते हुए कहा कि हे वीरो! मत डरो, मत भागो। आखिर तुम्हारा शत्रु मनुष्य है। वह साहसपूर्ण वीरता युक्त (राक्षस) पुरुष का काम करने की शक्ति नहीं रखता। उससे मत डरो। फिर उसने वहीं खड़ा रहकर कहा कि मुझे तुमसे एक बात कहनी है। सुनो। ५०२

❀ वच्चै यामॅनुम् वयमनत् तुण्डॅन वाऴुम्
कॊच्चै मान्दरैक् कोल्वळै महळिरुङ् गूशार्
निच्च यमॅनुङ् गवशत्ता निलैनिऱ्कु मन्ड्रेल्
अच्च मॅन्नुमो दारुयिरक् करुन्दुणै यामो 503

वच्चै आम् अॅनुम् पयम्–अपमान योग्य यह भय; मनत्तु उण्टु अॅन वाऴुम्–मन में रखते हुए जो जीते हैं; कॊच्चै मान्तरै–उन क्षुद्र मनुष्यों से; कोल् वळै मकळिरुम्–सुन्दर चूड़ियाँ जो पहनती है, वे स्त्रियाँ भी; कूचार्–नहीं शरमाती हैं (आदर नहीं करतीं); निच्चयम् अॅनुम्–धैर्य रूपी; कवचत्ताल्–कवच धारण करने से ही; निलै निऱ्कुम्–प्राण स्थायी रहेगा; अन्ड्रेल्–नहीं तो; अच्चम् अॅन्नुम् अतु–भय का यह गुण; आर् उयिरुक्कु–प्यारे प्राणों के लिए; अरुम् तुणै आमो–श्रेष्ठ सहायक होगा क्या। ५०३

भय अपयश है। उसके साथ रहनेवाले हैं मानव लोग। उनको

देखकर सुन्दर कंकणधारिणी स्त्रियाँ भी नहीं डरतीं, उनसे नहीं शरमातीं। और भी एक बात है। वीरता के कवच के अन्दर ही प्राण सुरक्षित रह सकते हैं। अब जो भीरुता तुम दिखा रहे हो, क्या वह तुम्हारे प्राणों का रक्षण कर सकेगी ?। ५०३

❀ पूव रावुवेऱ् पुरन्दरऩ् इऩ्नॊडु पॊऩ्ऱा
मूव रोडुदाऩ् मुऩ्निऩ्ऱु मुट्टिय मुनैयिल्
एव रोडिऩा रिराक्कदर् नुमक्किडैन् दोडुम्
देव रोडुहऱ् ऱरिऩ्दुळि रोमऩऩ् दिहैत्तीर् 504

पू अराव् वेल्–तीक्ष्ण किये हुए भाले वाले; पुरन्तरऩ् तऩ्ऩॊटु–पुरन्दर के साथ और; पॊऩ्ऱा–अमर; मूवरोटु–त्रिदेवों के साथ; मुऩ् निऩ्ऱु मुट्टिय–सामने स्थित जो की; मुनैयिल्–उस युद्धभूमि में; इराक्कतर् एवर् ओटिऩार्–राक्षस कौन भागे; मऩम् तिकैत्तीर्–यहाँ चित्त-भ्रमित हुए; नुमक्कु इटैन्तु–तुमसे (हारकर) त्रस्त होकर; ओटुम्–जो भागते हैं; तेवरोटु–उन देवों से; कऱ्ऱु अऱिन्तु उळिर् ओ–सीख ले गये हो क्या। ५०४

तीक्ष्ण भालाधारी पुरन्दर से और अमर रहनेवाले त्रिदेव से भी युद्ध हुआ था न ? उनके सामने डटकर जिन राक्षसों ने युद्ध किया, उनमे कौन थे जो मैदान छोड़कर भागे ? कोई नहीं ! अब क्यो विकलमन हुए हो ? क्या यह गुण तुमने उन देवों से सीख लिया है जो तुमको देखकर भयभीत होकर भाग जाते हैं ?। ५०४

इङ्गॊर् माऩिडऱ् कित्तनै वीरर्ह ळिडैन्दीर्
उङ्गै वाळॊडु पुहऴ्विऴ वूर्पुह वुवन्दीर्
कॊङ्गै मार्बिडैक् कुळिप्पुरक् कळिप्पुरु कॊऴुङ्गण्
नङ्गै मार्हळैप् पुल्लुदि रोनल नुहर्वीर् 505

इङ्कु ओर् माऩिटऱ्कु–यहाँ एक मनुज के सामने; इत्तऩै वीरर्कळ्–इतने वीर; इटैन्तीर्–हार मान गये; उम् कै वाळ् ओटु–अपने हाथ की तलवार के साथ; पुकऴ् विऴ–यश को नीचे डालते हुए; ऊर् पुक उवन्तीर्–गाँव जाना पसन्द किया; नलम् नुकर्वीर्–सुख-भोग चाहते हो; कळिप्पु उरु–मदमत्त; कॊऴुम् कण्–बड़ी आँखों की; नङ्कैमार्कळै–अपनी स्त्रियों को; कॊङ्कै–उनके स्तन; मार्पु इटै कुळिप्पु उऱ–तुम्हारे वक्षों में दवें, ऐसा; पुल्लुतिरो–गले से लगाओगे क्या। ५०५

अकेले एक मनुज के सामने इतने राक्षस हार मानकर भागते हो ! युद्धस्थल में तलवारों के साथ अपने यश को गिराकर अपने स्थान में जा प्रविष्ट होना चाहते हो ! क्या सुख-भोग की इच्छा हो गयी और तुम जाकर उन मत्त और विशाल आँखों की अपनी स्त्रियों को इतना कसकर गले लगाना चाहते हो कि उनके पुष्ट स्तन तुम्हारे वक्षों में दब जायँ ?। ५०५

❀ शेंवु काट्टिय कण्णिणै पालैनन् तेळिन्दोर्
वेंगुवु काट्टिडै तुळैन्दोरुम् वेरिनुळ्प् पायुन्द
कोमुवु काट्टुदि तोगैर् मार्बिडैप् कुळिन्त
असुवु काट्टुदि रोहुम मरुगिरक् कमुमा 506

चेंवुपु काट्टिय-ताम्र (क्रोध से लाल) बनी; कण् इणै-आँखों के जोड़े; पाल् अन-दूध के समान; तेळिन्दोर्-स्वच्छ हो गये, ऐसी आँखों के हो गये; कुल मट्मयिर्क्कु-तुम्हारे कुल की स्त्रियों को; वेंगुवु काट्टु इडै-विकट संगर में; तुळैन्दोरुम्-घुसकर दौड़ते समय; वेरिन-पीठ में; उर पायुन्द-घुसी शरों; कोमुवु काट्टुतिरो-दिखाओगे; मट मार्पु इडै कुळिन्त-(या) विशाल वक्ष में घुसे; असुवु काट्टुतिरो-बाणों को दिखाओगे। ५०६

तुम्हारी आँखों को लाल होना चाहिए! पर अब वे स्वच्छ दिखती हैं—डर से, क्रोध छोड़ देने से! जब तुम अपने-अपने आवास पर जाओगे तो अपनी पत्नियों को क्या दिखाओगे अपनी वीरता के चिह्नों के रूप में? उन टहनियों और शाखाओं को दिखाओगे जो घने वन में डर से भागते समय तुम्हारी पीठ में चुभ जायेंगे? या अपने वक्षस्थल पुष्ट मार को? । ५०६

इफ्फ निरुमिदत् मेनुयुप् ओविहुन् मनिदर्
काफ्फुन् वेंजुगत् नाणुरियन् यमरक्कुकु मरिदाल्
ताफ्फ यनुवुयन् तुरुगुनत् तानैमहुन् उफुनै
मूक्कों उन्ट्रिनुम् मुदुगोडुम् वोमुचक्रि मुयन्ड्रोर् 507

इफल् मनितर्क्कु आक्कुम्—शत्रु-मनुष्य से जो किया जाता है; वेंम् समरत्तु-उस भीषण युद्ध में; नाणुम्-(तुम्हारा) पौरुष; अ अमरर्क्कुम्-उन अमरों के लिए भी; अरितु-दुर्लभ है; इदर्कु एफ्फनम् इतन् मेल् उळदो-यहाँ हमारा सन्ताप इससे बढ़कर हो सकता है क्या; ताक्कु अरुम्-जिन पर प्रहार करना कठिन है, ऐसी; पुयत्तु-भुजाओं के स्वामी; उम् कुल तानैमन्नन्-तुम्हारे कुल के उच्च नायक; तङ्गै-(रावण की) छोटी बहिन की; मूक्कु ओट अन्ड्रि-नाक के साथ ही नहीं बल्कि; उम् मुदुकु ओडुम्-तुम्हारी पीठ के साथ भी; पोम् पळि-लगनेवाला अपयश; मुयन्ड्रोर्-हो, उसका उपक्रम किया है तुमने। ५०७

आखिर शत्रु मनुज के साथ जो हो रहा, उस युद्ध में तुम ऐसा पौरुष (पौरुष-हीनता) दिखा रहे हो! यह देवों के लिए भी दुर्लभ है। हन्त! इससे अधिक दुःखदायिनी बात क्या होगी? तुम कैसा कार्य कर रहे हो, उसका अर्थ क्या होगा? —मालूम है? तुम्हारे कुलनायक, जो अलंघ्य भुजाबल रखते हैं, उन रावण की बहिन की नाक ही नहीं कटी, बल्कि तुम्हारी पीठ पर अपयश लगेगा! यही प्रयत्न तुम कर रहे हो। ५०७

❀ आर वाळ्क्कॅयिर् वणिहरा यमैदिरो वयिल्वेल्
वीर वाट्कोळु वेंतमडुत् तुळ्ळदिरो वेंड्रिप्पोरत्

तीर वाळ्क्कैयिर् ऱेवरैच् चॅरुविडैप् परित्त
वीर वाट्कैयी रॅङ्ङनम् वाळ्दिरो विळम्बीर् 508

वॅरि पोर्–उन्मत्तकारी युद्ध में; तीर वाळ्क्कैयिल्–साहसपूर्ण जीवन के कारण; तेवरै चॅरु इटै परित्त–देवों से युद्ध में छीनी हुई; वीर वाळ्–वीरता की तलवारें; कैयीर्–जिनमें हैं, ऐसे हाथों के राक्षसो; वाळ्क्कैयिन् वणिकराय्–जीवन में व्यापारी; आर–वनकर; अमैतिरो–रहोगे क्या; अयिल् वेल्–तीक्ष्ण भाले; वीर वाळ्–वीरता की सहायक तलवारें; कॉळु अॅत मट्टुत्तु–हल की फाल बनाकर भूमि में खोदकर; उळुतिरो–जोतनेवाले हो; अॅङ्ङनम् वाळ्तिरो–कैसे जीवन बिताओगे; विळम्पीर्–कहो। ५०८

उन्मत्तकारी युद्ध में अपूर्व धैर्य दिखाते हुए तुमने देवों के हाथों से उनकी तलवारें छीन ली थीं। ऐसी तलवारों के धारक ! अब जीवन वणिकों का बिताने का विचार किया है ? या तीक्ष्ण भालों और प्रतापी तलवारों को हल का फाल बनाकर भूमि की खेती करोगे और कृषक वनोगे ? बताओ तो सही। ५०८

❀ अॅन्ऱु तानुन्द नॅरिहडर् चेनैयु मिड्रैनीर्
निन्ऱु काण्डिरॅन् नॅडुञ्जिलै वलियॅन नेराच्
चॅन्ऱु ताक्किनन् ऱेवरु मरुळ्हॉण्डु तिहैत्तार्
नन्ऱु कात्तियॅन् ऱिरामनु मॅदिर् शॅल नडन्दान् 509

अॅन्ऱु–ऐसा कहकर; नीर्–तुम लोग; इडै–कुछ देर; निन्ऱु–खड़े होकर; अॅन् नॅट्टुम् चिलै–मेरे लम्बे धनुष का; वलि–पराक्रम; काण्टिर्–देखो; अॅन–समझाकर; तानुम्–स्वयं और; तन् अॅरि कटल् चेनैयुम्–उसकी तरंगाकुल समुद्र-सम सेना ने; नेरा चॅन्ऱु ताक्किनन्–श्रीराम के सामने जाकर उन पर आक्रमण किया; तेवरुम् मरुळ् कॉण्टु–देव भी चकराकर; तिकैत्तार्–भ्रमित हुए; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; नन्ऱु कात्ति अॅन्ऱु–अच्छा सावधान, बचा लो कहकर; अॅतिर् चॅल–उसके सामने; नटन्तान्–चलते आये। ५०९

दूषण ने यह वचन कहा। आगे यह बोला कि तुम मत भागो। ज़रा देर खड़े रहो और मेरे धनुष का अतुल प्रताप देखो। फिर वह आगे गया और उसकी सेना भी साथ गयी। उन्होंने जाकर श्रीराम पर आक्रमण किया। देवों को भी भय हो गया कि यह राक्षस वीर अनर्थ कर देगा। तब श्रीराम भी यह कहते हुए सामने आये कि ठहरो, अपनी रक्षा के लिए तैयार हो जाओ। सावधानी से अपनी रक्षा कर लो। ५०९

ऊड रुप्पुण्ड मॉय्बडैक् कैयॉडु मुयर्न्द
कोड रुप्पुण्ड कुञ्जरङ् गॉडिञ्जॉडु कॉडियिन्
काड रुप्पुण्ड कालिय ऱेर्हदिर्च् चालि
शूड रुप्पुण्ड वॅन्नक्कळुत् तरुप्पुण्ड तुरहम् 510

मोय् पटै–सबल हथियार; ऊटु अऱ्प्पुण्ट–बीच में कटे; कुञ्चरम्–हाथी; कै ओटुम्–सूँड़ों सहित; उयर्न्त–उभर आये; कोटु–दाँतों के; अऱ्प्पुण्ट–कटे हो गये; काल् इयल् तेर्–हवा के समान चलनेवाले रथ; कॉटिञ्चु ओटु–पीठ के सामने के 'कोंडिञ्जु' नाम के हस्तावलम्ब के साथ; कॉटियिऩ् काटु–ध्वजाओं के वन के साथ; अऱ्प्पुण्ट–कटे हो गये; तुरकम्–अश्व; कतिर् चालि चूटु–शालि-पौधों की बालें; अऱ्प्पुण्ट ऍऩ्ऩ–कट गई हों, ऐसे; कळुत्तु अऱ्प्पुण्ट–गर्दन-कटे हो गये। ५१०

उस युद्ध में बलवान हथियार कटे। हाथी की सूँड़ें और दाँत कटे और वे गिर गये। रथ ध्वस्त हुए। ध्वजाएँ और पीठ के सामने के भाग आदि कटे। अश्वों के सिर धान की बालियों के समान गले से काट दिये गये। ५१०

तुरुवि योडिन वुयिर्निलै शुडुशरन् दुरन्द
करुवि योडुवन् कच्चैयुङ् गवशमुङ् गळल
अरुवि योडिऩ वॅन्ऩविळि कुरुदिया ऱलैप्प
उरुवि योडिऩ केडहत् तट्टोडु मुडलम् 511

चुटु चरम् तुरन्त–तापक शर (जो श्रीराम ने) छोड़े; उयिर् निलै–राक्षसों का मर्म स्थान; तुरुवि–ढूँढ़ते हुए; ओटिऩ–चले; करुवि ओटु–हथियारों के साथ; वन् कच्चैयुम्–दृढ़ बन्दो और; कवचमुम् कळल–कवचों को उतारते हुए; अरुवि ओटिऩ ऍऩ–नदियाँ बहती हों जैसे; इळि कुरुति आऱु–(राक्षसों के शरीरों से) निकलनेवाले रक्त की नदियाँ; अलैप्प–उनको इधर-उधर हिलातीं ऐसा; केटक तट्टु ओटुम्–ढालों के थालों के साथ; उटलम्–शरीरों को भी; उरुवि ओटिऩ–निफरकर चले। ५११

श्रीराम से प्रेरित सन्तापक बाण राक्षसों के मर्मस्थल की खोज में चले। उनके लगते ही राक्षसों के हथियार कमरबन्द और कवच आदि कटकर गिर गये। वे अस्त्र ढालों को भेदकर और राक्षसों के शरीरों के आर-पार हो गये। उनके शरीर से निकलकर रक्त बहा और उसकी नदियाँ बहीं। उन नदियों में कवच, कमरबन्द आदि उतराये और इधर-उधर चालित हुए। ५११

आय्न्द कङ्गपत् तिरङ्गळ्पुक् करक्कर्दम् मावि
तोय्न्द लोय्विल पिऱैमुहच् चरञ्जिरन् दुमित्त
काय्न्द वॅञ्जरम् निरुदर्तङ् गवशमार् बुरुवप्
पाय्न्द वञ्जह रिदयङ्गळ् पिळन्दन पल्लम् 512

आय्न्त–चुनकर प्रेरित; कङ्क पत्तिरङ्कळ्–कंक-पत्र (चील के पंख से युक्त शर) बाण; पुक्कु–(राक्षसों के शरीरों के अन्दर) प्रविष्ट होकर; अरक्कर् तम् आवि तोय्न्त–राक्षसों के प्राणों में लगे; तोय्वु इल–ऐसा जो प्रविष्ट नहीं हुए वे; पिऱै मुक चरम्–अर्द्धचन्द्र बाणों ने; चिरम् तुमित्त–सिर खण्डित कर दिये; काय्न्त

वॆम् चरम्–उग्र और प्रचण्ड शर; निरुतर् तम्–राक्षसों के; कवच मार्पु—कवच-सज्जित वक्षों के; उरुव पायुन्ऩ—आर-पार गये; पल्लम्–अन्य शरों ने; वञ्चकर्–वंचकों के; इतयङ्कळ् पिळन्तत्त–हृदय को फोड़ दिया। ५१२

श्रीराम के कंकपत्न नाम के चील के पंख से युक्त तीक्ष्ण शर राक्षसों के मर्म पर जा लगे। ऐसे जो जाकर नहीं लगे, उन अर्द्धचन्द्र बाणों ने राक्षसों के सिरों को काट दिया। कुछ उग्र वाण जो तेजी से गये कवच सहित शरीरों को निफरकर वाहर आ गये। अन्य अस्त्रों ने उनके हृदय (वक्षस्थल) को विदीर्ण कर दिया। ५१२

तूड गन्विडु शरमवै यावैयुन् दुणिया
माडु निन्ऱवर् वळङ्गिय पडैहळु माऱ्ऱा
आडल् कॊण्डऩ नळप्परुम् बॆरुवलि यरक्कर्
कूडि निऩ्ऱवक् कुरैहडल् वऱळ्वडक् कुरैत्तान् 513

तूटणन्–दूषण ने; विटु–जो चलाया; चरम् अवै यावैयुम्–उन सभी वाणों को; तुणिया–(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न करके; माटु निन्ऱवर्–पास जो खड़े रहे; वळङ्किय पटैकळुम्–उनके चलाये हुए शरों को भी; माऱ्ऱा–लौटवा देकर; अळप्पु अरुम्–अगणित; पॆरु वलि अरक्कर्–बड़े वलवान राक्षस; कूटि निन्ऱ–जिसमें मिले रहे; कुरै कटल्–उस गर्जनशील सागर-सम सेना को; वऱळ् पट–सुखाते हुए; कुरैत्तान्–मिटाकर; आटल्–विजय; कॊण्टतन्–प्राप्त की। ५१३

श्रीराम ने दूषण-प्रेरित सभी शरों के खण्ड-खण्ड कर दिये। पास जो रहे, उन राक्षसों के प्रेरित शरों को बेकार करके फिरा दिया। इस तरह गर्जनशील सागर के समान जो सेना राक्षसों से भरी थी उसको श्रीराम ने सुखा दिया। वे विजयी हो गये। ५१३

आर्त्तॆ ऴुन्दनर् वानव रुवरै मरत्तो
डीर्त्तॆ ऴुन्दन कुरुदियिन् पॆरुनदि यिरामन्
तूर्त्त शॆञ्जरन् दिशैतॊऱुन् दिशैतॊऱुन् दॊडर्न्दु
पोर्त्त वॆञ्जिनत् तरक्करैप् पुरट्टिन पुवियिल् 514

वानवर्–देव; आर्त्तु ऍऴुन्तनर्–हल्ला मचा उठे; कुरुतियिन् पॆरु नति–रक्त की बड़ी नदियाँ; अरु वरै–बड़े पर्वतों को; मरत्तॊटु–पेड़ों के साथ; ईर्त्तु ऍऴुन्तत–बहाते हुए वहीं; इरामन्–प्रभु श्रीराम ने; तूर्त्त–जो ठूँसे; चॆम् चरम्–उन उत्तम वाणों ने; तिचै तॊऱुम् तिचै तॊऱुम्—दिशा-दिशा में सर्वत्र; तॊटर्न्तु–(राक्षसों का) पीछा करके जाकर; पोर्त्त–उन दिशाओं को आच्छादित करते हुए जो रहे, उन; वॆम् चिनत्तु अरक्करै–भयंकर, क्रुद्ध राक्षसों को; पुवियिल्–भूमि पर; पुरट्टिन–लुढ़का दिया। ५१४

देवगण इससे हर्षित हो गये और उन्होंने हल्ला मचाया। रक्त की बड़ी-बड़ी नदियाँ बड़े-बड़े पर्वतों को तरुओ सहित बहाते हुए वहीं।

श्रीराम लगातार शर चला रहे थे। वे हर दिशा में राक्षसों का पीछा करते गये और वहाँ भरे रहे क्रुद्ध राक्षसों के सिर कटकर भूमि पर लुढ़क गये। ५१४

तोऩ्ऱु	माल्वरैत्	तॉहैयॅऩत्	तुवऩ्ऱिय	निणच्चे
ऱाऩ्ऱ	पाऴ्वयिऱ्	ऱलहैयॅप्	पुहऴ्वदॅ	नमर्वेट्
टूऩ्ऱि	ऩारॅला	मुलऩ्दऩ	रॉल्लॅयिऩ्	मडिऩ्दार्
काऩ्ऱ	वव्वुयिर्क्	कालऩुम्	वलित्तुमॅय्	कवऩ्ऱाऩ् 515

तोऩ्ऱु माल् वरै–दृश्यमान वड़े पर्वतों के; तॉकै ऍऩ–समूहों के समान; तुवऩ्ऱिय–घने रूप से रहे; निण चेऱु–मांस-पंक; आऩ्ऱ–खूब खाकर जो रहे; पाऴ् वयिऱ्ऱु अलकैयै–उन रिक्त-पेट वाले प्रेतो की; पुकऴ्वतु ऍऩ्–प्रशंसा क्या हो; अमर् वेट्टु–युद्ध चाहकर; ऊऩ्ऱिऩार् ऍलाम्–जो रहे वे सभी (राक्षस); ऑल्लैयिऩ्–जल्दी; उलऩ्तऩर्–मरे; काऩ्ऱ–(प्रेतों से पेट भर जाने के कारण जो) थूके गये; अ उयिर्–उन प्राणों को; कालऩुम्–यम भी; वलित्तु–छीन ले जाते-जाते; मॅय् कवऩ्ऱाऩ्–श्रान्त-शरीर हो गया। ५१५

चर्बी के पर्वतों के समान ढेर वने रहे। उसको खाकर प्रेत वड़े ही मजे में रहे। अव तक रिक्तपेट रहे उनको मनमाने ढंग से खाने को मिल गया। उनकी प्रशंसा क्या की जाय? उससे वढ़कर यम की स्थिति कहना अधिक युक्त होगा, क्योंकि उसी से युद्धभूमि की स्थिति का सच्चा रूप मिलेगा। युद्ध में मन लगाकर जो राक्षस आये वे सब मरे। उनको प्रेतों ने खाया और जो पेट के भर जाने से उनके द्वारा त्यक्त थे, उन जीवों को उठाते-उठाते यम का शरीर थक गया। ५१५

कळिऱु	तेर्परि	कडुत्तवर्	मुडित्तलै	कवन्दम्
ऑळिऱु	पल्पडैत्	तॆङ्गुलत्	तरक्करद	मुडलम्
वळिऱु	शेर्निणम्	विऱङ्गिय	वडुक्कलिऩ्	मीदिल्
कुळिऱु	तेर्हडि	दोट्टिनऩ्	ऱूडणऩ्	कोदित्ताऩ् 516

तूटणऩ्–दूषण; कळिऱु–हाथी; तेर्–रथ; परि–अश्व; कटुत्तवर्–(साथ लेकर) क्रोध के साथ जो लड़े; तऩ् कुलत्तु अरक्कर् तम्–अपने कुल के राक्षसों के; मुटि तलै–किरीटधारी सिरों; कवऩ्तम्–कबन्धों; ऑळिऱु पल् पटै–शोभायमान अनेक हथियारों; वॆळिऱु चेर् निणम्–श्वेत चर्वी; पिऱङ्किय–के वने; अटुक्कलिऩ् मीते–पर्वतों पर ही; कुळिऱु तेर्–शब्दायमान रथ को; कटितु ओट्टिऩऩ्–सवेग चलाता गया; कॊतित्ताऩ्–क्रुद्ध रहा। ५१६

दूषण ने अव अपने रथ को आगे बढ़ाया। सामने हाथी, अश्व, राक्षसों के किरीटधारी सिर, उनके कबन्ध, अनेक उज्ज्वल हथियार श्वेत चर्बी आदि के पर्वतों के समान ढेर बने पड़े थे। क्रोध से उन्मत्त दूषण का रथ इन्हीं के ऊपर से चला और गरगराहट करता गया। ५१६

अऱङ्गोळ् ळादव राक्कैह ळडुक्किय वडुक्कल्
पिऱङ्ग नोण्डऩ कणिप्पिल पॅरुङ्गडु विशैयाल्
कऱङ्गु पोऩ्ऱुळ दायित्तुम् बिणप्पॅरुङ् गडत्तिल्
इऱङ्गु मेरुमत् तेर्पट्ट दियाॅदॅन विशैप्पाम् 517

अऱम् कॉळ्ळातवर्–अधर्मी (राक्षसों) के; आक्कैकळ्–शरीर; अट्टुक्किय अट्टुक्कल्–जिनमें परतों के रूप में चुने गये थे, वे पर्वत; पिऱङ्क नीण्टऩ–सब जगह दिखाई देते हुए विस्तृत रूप से पड़े रहे; कणप्पिल–हिसाब में नहीं आये (अगणित रहे); पिणम् पॅरुम् कटत्तिल्–लाशों के उस बड़े वन में; पॅरुम् कट्टुम् विचैयाल्–अधिक वेग के साथ; कऱङ्कु पोऩ्ऱु–लट्टू के समान; उळतु आयित्तुम्–घूमता रहा तो भी; इऱङ्कुम् एऱुम्–उतरता-चढ़ता गया; अ तेर् पट्टतु–उस रथ का हाल; यातु ऍऩ–क्या (था यह); इचैप्पाम्–कहें। ५१७

अधर्मी राक्षसों की असंख्य लाशें परतों में पहाड़ों के समान पड़ी रहीं। दूषण का रथ जब उन लाशों के वन-समान युद्धभूमि में लट्टू के समान वेग से घूमता हुआ चला तो भी चढ़ावों और उतारों के कारण उसे बहुत संकट उठाना पड़ा। उसकी क्या गति हुई, उसका क्या कहा जाय ? । ५१७

अरिदि ऩॅय्दिऩ ऩैयैन्दु कॉय्युळैप् परियाल्
उरुळु माळिय दॉरुदनित् तेरिनऩ् मेहत्
तिरुळि नीङ्गिय विन्दुविऱ् पॉलिहिऩ्ऱ विरामऩ्
ऩॅरुळुम् वार्हणैक् कूऱ्ऱॅवि राविशॅऩ् ऱॅन्ऩ 518

ऐ ऐन्तु–(पाँच के पाँच =) पचीस; कॉय् उळै परियाल्–सुन्दर रूप से कटे अयालों से भूषित अश्वों द्वारा; उरुळुम्–(खींचकर चलने से) चलनेवाले; आळियतु ऑरु तऩि तेरिऩऩ्–चक्रों के अनुपम रथ पर आरूढ़ दूषण; मेकत्तु इरुळिऩ् नीङ्किय–मेघों के कारण बने अन्धकार से छूटकर जो आया है; इन्तुविल्–उस इन्दु के समान; पॉलिकिऩ्ऱ–शोभायमान; इरामऩ्–श्रीराम के; ऩॅरुळुम्–साफ़; वार्–दीर्घ; कणै कूऱ्ऱु ऍतिर्–बाण रूपी यम के सामने; आवि चॅऩ्ऱु ऍऩ्ऩ–जीव पहुँचा हो, ऐसा; अरितिऩ् ऍय्तित्तऩ्–सायास पहुँचा। ५१८

उसके रथ में पचीस सुन्दर रूप से कटे (सजे) अयालों से भूषित अश्व जुते थे। उस पर आरूढ़ दूषण सायास श्रीराम के सामने, यम के सामने जानेवाले जीव के समान (अपने प्राण सौंपने के लिए) जा पहुँचा। श्रीराम मेघान्धकारनिवृत्त इन्दु के समान शोभायमान थे। ५१८

❀ शॅऩ्ऱ तेरॅयुऩ् जिलैयुडै मलैयॅनत् तेर्मेल्
निऩ्ऱ तूडणऩ् ऱऩ्ऩैयु नेडियव ऩोक्कि
नऩ्ऱु नऩ्ऱुनित् ऩिलैयॅऩ वरुळुरै नयन्दान्
ऍऩ्ऱ कालत्तव् वॅय्यवऩ् पहळिमूऩ् ऱॅय्दान् 519

नॅटियवन्–विक्रमी श्रीराम ने; चॅन्ऱ तेरैयुम्–आगत रथ को; चिलै उटै मलै अॅन्न–धनुर्धर पर्वत के समान; तेर् मेल् निन्ऱ–रथ पर स्थित; तूटणन् तन्नैयुम्–दूषण को; नोक्कि–देखकर; निन् निलै नन्ऱु नन्ऱु–तुम्हारा धैर्य अच्छा है, अच्छा है; अॅन्न–ऐसा; अरुळ् उरै नयन्तान्–कृपा-वचन कहे; अॅन्ऱ कालत्तु–जव उन्होंने यह कहा, तब; अ वॅय्यवन्–उस दुराचारी ने; पकळि मून्ऱु–शर तीन; अॅय्तान्–चलाये। ५१९

विक्रमी श्रीराम ने सामने आये रथ को और उस पर आरूढ़, धनुर्धर भूधर के समान दूषण को भी देखा। उन्होंने वाहवाही की— "तुम्हारा धैर्य धन्य है, धन्य है।" जब वे कृपा के साथ यह वचन कह रहे थे, तभी उस दुराचारी दूषण ने तीन भयंकर शर लेकर उन पर चला दिये। ५१९

तूर वट्टवॅण् डिशैहळैत् तनित्तनि शुमक्कुम्
पार वॅट्टिनो डिरण्डिनि लॊन्ऱुपार् पुरक्कल्
पेर विट्टवन् करिनुद लोडैयिऱ् पिऱङ्गुम्
वीर पट्टत्तिऱ् पट्टन विण्णवर् वॅरुव 520

तूर वट्ट–दूर, मण्डलाकार; अॅण् तिचैकळै–आठों दिशाओं को; तनि तनि चुमक्कुम्—अलग-अलग धारण करनेवाले; पार अॅट्टित् ओटु–वली अष्ट (दिग्गजों) के साथ; इरण्टितिल् ऑन्ऱु–और (शेष व कूर्म में) एक (शेष) अपनी पादुकाओं को; पार् पुरक्क–लोकभरणार्थ; पेर विट्टवन्–जिन्होंने अलग भेजा था, उन (श्रीराम) के; करि नुतल् ओटैयिल्–गज के भाल पर शोभनेवाले पट्ट के समान; पिऱङ्कुम्–मनोरम रूप से विद्यमान; वीर पट्टत्तिल्–वीरोचित पट्टी पर; विण्णवर् वॅरुव–देवों को सिहरने देते हुए; पट्टन–(वे तीनों शर) लगे। ५२०

वे जाकर श्रीराम के भाल की वीरपट्टी पर लगे, जिसे देखकर देवगण सहम उठे। वह पट्टी गज के भाल पर सज्जित मुखपट्ट के समान शोभायमान थी। श्रीराम कौन थे ? वे स्वयं विष्णु भगवान थे, जिन्होंने अष्टदिग्गजो के भूभार-वहन के कार्य में सहायता देने के लिए अपनी पादुकाओं को अपने से अलग करके भेजा था। वे पादुकाएँ शेषनाग के अवतार थी, जो भूमि के भारवाही दो (शेष और कूर्म) में एक (माना जाता) है। ५२०

❀ अॅय्द कालमुम् वलियुनन् ऱॅन्ननिनैन् दिरामन्
शॅय्द शेयॊळि मुऱुवलन् कडुङ्गणै तॅरिन्दान्
नॊय्दि नङ्गव नॊऱिल्परित् तेर्बड नूऱिक्
कैयिल् वॅञ्जिलै यऱुत्तॊळिर् कवशमुङ् गडिन्दान् 521

इरामन्–श्रीराम ने; अॅय्त कालमुम्–(दूषण के) शर चलाने का काल; वलियुम्–और उसका बल; नन्ऱु अॅन्न–श्लाघ्य, यह; निनैन्तु–समझकर; चॅय्त चेय् ऑळि–लाल (सुन्दर) उज्ज्वल; मुऱुवलन्–हँसी के साथ; कटुम् कणै तॅरिन्तान्–कठोर एक अस्त्र चुनकर चलाया; नॊय्तिन्–सुगम रीति से (या जल्दी); अङ्कु–वहाँ; अवन्–उसके; नॊऱिल् परि–तीव्रगति अश्व के; तेर्–रथ को; पट नूऱि—तहस-नहस

करके; कैयिन् वॅम् चिलै अऱुत्तु–(उसके) हाथ में रहे धनुष को भी काटकर; **ऑळिर् कवचमुम्**–चमकदार कवच को भी; **कटिन्तान्**–तोड़ दिया। ५२१

तीनों शर श्रीराम के सिर की पट्टी पर लगे। श्रीराम मुस्कराये। उन्होंने मन में सोचा कि वाह! उसका शरप्रेषणकाल यानी उसके बाण की गति और उसका बल प्रशंसनीय है! फिर श्रीराम ने एक भयावह बाण चुन लिया और उससे उसके रथ को और उसमें जुते तीव्रगामी अश्वों को ध्वस्त किया; उसके हाथ में रहे भयंकर धनु को तोड़ा और उसके कवच को भी नष्ट कर दिया। ५२१

❀ तेव रार्त्तॅळ मुनिवर्ह डिशैतॉरुञ् जिलम्बुम्
ओविल् वाळ्त्तॊलि कार्क्कडन् मुळक्कॅन्न वोङ्गक्
काव डाविदु वल्लैये नीयॅन्नक् कणैयॊन्
ऱेवि नानव नॅयिऱुडै नॅडुन्दलै यिळन्दान् 522

तेवर् आर्त्तु ॲळ–देवों ने उठकर कोलाहल मचाया; **मुनिवर्कळ्**–मुनियों का; **तिचै तॊऱुम्**–दिशा-दिशा में; **चिलम्पुम्**–कहा हुआ; **ओवु इल्**–निरन्तर; **वाळ्त्तु ऑलि**–आशीर्वाद का स्वर; **कार् कटल् मुळक्कु ॲन**–काले समुद्र के गर्जन के समान; **ओङ्क**–भर उठा; **वल्लैयेल्**–समर्थ हो तो; **इतु का अटा नी**–इसको बचा रे तू; **ॲन्न**–कहकर; **कणै ऑन्ऱु**–एक बाण; **एविनान्**–चलाया; **अवन्**–उसने भी; **ॲयिऱुटै नॅटुम् तलै**–(भयंकर वक्र) दाँतों से युक्त अपना बड़ा सिर; **इळन्तान्**–गँवाया। ५२२

श्रीराम ने फिर एक अस्त्र छोड़ा। छोड़ते-छोड़ते उन्होंने ललकारा कि रे दुष्ट! हो सके तो तू बचा ले इसे। दूषण बेचारा क्या करता? उसने अपना सिर गँवाया। तब देव हर्षरव मचा उठे। चारों ओर ऋषियों ने साधुवाद और आशीर्वाद किया, जिसका स्वर काले समुद्र के गर्जन के समान सब ओर भर उठा। ५२२

❀ तम्बितलै यऱ्ऱपडि युन्दय रदन्शेय्
अम्बुपडै यॅत्तुणि पडुत्तदु मऱिन्दान्
वॅम्बुपडै विऱ्कैविश यक्करन् वॅहुण्डान्
कॊम्बुतलै कट्टिय कॊलैक्करि कडुप्पान् 523

कॊम्पु तलै कट्टिय–जिसके दाँत, सिर जितना ऊँचा उगे हुए थे; **कॊलै करि**–उस भयंकर गज को; **कटुप्पान्**–समता करनेवाला; **वॅम्पु पटै**–भयंकर हथियार; **विल्**–धनुष को; **कै**–रखनेवाले हाथ का; **विचय करन्**–विजयी खर; **तम्पि तलै अऱ्ऱ पटियुम्**–भाई (दूषण) के सिर के कटने का प्रकार; **तयरतन् चेय्**–दशरथ के पुत्र के; **अम्पु**–बाणों का; **पटैयै तुणि पटुत्ततुम्**–उसकी सेना का नाश करना; **अऱिन्तान्**–जानकर; **वॅकुण्टान्**–नाराज हुआ। ५२३

विजयी खर को यह समाचार मिला। खर ऐसे खूनी गज के समान

भयंकर आकार का था, जिसके दाँतों के छोर सिर तक ऊँचे उगे थे। वह अपने हाथों में वड़े ही घातक हथियार और धनुष रखता था। उसके भाई दूषण का सिर कैसे कटा ? दशरथसुत, दाशरथी श्रीराम के बाणों ने राक्षस-सेना को कैसे हत कर मिटाया ? —यह उसने सुना। उसे अपार क्रोध हुआ। ५२३

❀ अन्दहत्तु मुट्किट वरक्कर्हड लोडुम्
शिन्दुरम् वयप्पुरवि तेर्दिशै परप्पि
इन्दुवै वळैक्कुमॆळि लिक्कुल मॆन्नत्तान्
वन्दुवरि विऱ्कैमद यानैयै वळैत्तान् 524

अन्तकनुम् उट्किट—यम को भी भयभीत करते हुए; अरक्कर् कटल् ओटुम्—राक्षसों की सेना के सागर के साथ; चिन्तुरम्—गजों; वय पुरवि—बलवान अश्वों; तेर्—रथों को; तिचै परप्पि—चारों दिशाओं में वितरित करके; इन्तुवै वळैक्कुम्—इन्दु को घेरनेवाले; ऍळिलि कुलम् ऍन—मेघ-समूह के समान; वरि विल्कै—बन्धन-युक्त धनुर्धर-हस्त; मत यानैयै—मत्तगज-सम (श्रीराम) को; तान् वन्तु—स्वयं आकर; वळैत्तान्—घेर लिया (खर ने)। ५२४

वह तुरन्त उठकर अपनी सेना के साथ श्रीराम के पास आया और उसने अपनी सेना के साथ उन्हें घेर लिया। उस सेना में पदाति वीरों का दल सागर के समान था। उसमें गज, बलवान अश्व, रथ आदि की सेनाएँ भी थीं। वह सेना चन्द्र को घेर आनेवाले मेघमण्डलों के समान चारों ओर फैली रही। खर ने अपने दल-बल सहित धनुर्धर, मत्तगज-सम श्रीराम को घेरा। ५२४

❀ अडङ्गलिल् कॊडुन्दॊळि लरक्करव् वनन्दन्
पडङ्गिळि वुऱप्पडि पडप्पल विदप्पोर्
कडङ्गलुळ् तडङ्गळिऱु तेर्परि कडावित्
तॊडङ्गिनर् नॆडुन्दहैयुम् वॆङ्गणै तुरन्दान् 525

अटङ्कल् इल्—अदम्य; कॊटुम् तॊळिल्—दुराचारी; अरक्कर्—राक्षसों ने; अ अनन्तन्—उस अनन्तनाग के; पटम् किळिवु उऱ—फनों को फाड़ते हुए; पटि पट—भूमि को मेटते हुए; पल वित—विविध; कटम् कलुळ्—मद बहानेवाले; तटम् कळिऱु—वड़े हाथियों; तेर्—रथों और; परि—अश्वों को; कटावि—चलाते हुए; पोर् तॊटङ्कितर्—युद्ध आरम्भ किया; नॆटुम् तकैयुम्—विक्रमी प्रभु ने भी; वॆम् कणै—भयंकर अस्त्र; तुरन्तान्—चलाये। ५२५

वे अदम्य दुराचारी राक्षस घोर युद्ध करने लगे। भूमि का धारण करनेवाले आदिशेषनाग का फन ही फट गया; भूमि भी ध्वस्त हो गयी! वे राक्षस विविध वड़े-बड़े गज हाँकते आये। वे गज अपने गालों पर

मदनीर वहा रहे थे। वीर अश्वों के साथ रथ चलाते आये। विक्रमी श्रीराम ने वलवान अस्त्र छोड़े। ५२५

तुडित्तन कडक्करि तुडित्तन परित्तेर्
तुडित्तन मुडित्तलै तुडित्तन तोंडित्तोळ्
तुडित्तन मणिक्कुडर् तुडित्तन तशैत्तोल्
तुडित्तन कळ्ळरुणै तुडित्तन विडत्तोळ् 526

कटम् करि तुटित्तन–(उनके लगने से) मत्तगज तड़पे; परि तेर्—अश्व-जुते रथ; तुटित्तन–उछले; मुटि तलै–किरीटधारी सिर; तुटित्तन–छटपटाये; तोंटि तोळ्–वलयभूषित कन्धे; तुटित्तन–कटकर छटपटाये; मणि कुटर्–उनकी छोटी आँतें; तुटित्तन–फड़कीं; तचै तोल् तुटित्तन–मांससहित खालें फड़कीं; कळल् तुणै–पैरों के जोड़े; तुटित्तन–फड़के; इटम् तोळ्–बायें हाथ। ५२६

मत्तगज तड़पकर गिरे। रथ उछलकर गिरे और टूटे। अश्व छटपटाते हुए गिरे। किरीटधारी राक्षसों के सिर तड़पे। वलयधारी कन्धे लुढ़के। राक्षसों की छोटी आँतें फड़कीं। दोनों पैर फड़फड़ाये। बायें हाथ फड़के। (तुडित्तन = शरीर के अंग जब शरीर से कटकर अलग होते हैं, तब कुछ देर तक उछलते-गिरते, तड़पते हैं और छटपटाते हैं। या जीवित शरीर के अंगों का फड़कना भी कहते हैं।)। ५२६

❀ वाळित्वनम् वेलित्वनम् वार्शिलै वनन्दिण्
तोळिन्वन मॅन्नरिवै तुवन्नुरुनिरु दप्पेर्
आळिन्वन निन्नदलै यम्बिन्वन मॅन्नुम्
कोळिन् मळैवनगुळ् विनिर्कुरै पडुत्तान् 527

वाळिन् वनम्–तलवारों का कानन (समूह); वेलिन् वनम्–बर्छियों का जंगल; वार् चिलै वनम्–दीर्घ धनुषों का वन; तिण् तोळिन् वनम्–सुदृढ़ कन्धों का समूह; अन्नवै तुवन्नु–वे सब खूब मिले रहे (जिसमें), उस; निरुत पेर् आळिन् वनम्–राक्षसों के वीरों का जंगल (अनीक); निन्नदनै–जो सामने खड़ा था, उसे; अम्पिन् वनम् अॅन्नुम्–शरों का वन रूपी; कोळिन्–बलवान; मळैयिन्–वर्षा द्वारा; कुळुविनिल् कुरैपटुत्तान्–दल के दल श्रीराम ने काट गिराये। ५२७

युद्ध के मैदान में तलवारों की बहुलता थी। भालों का जंगल था। लम्बे धनुषों की भरमार थी। सबल कन्धों की विपुल भीड़ थी। इनसे भरी राक्षसों के पैदल वीरों की विशाल सेना थी। उसको श्रीराम ने शरों की वर्षा से ध्वस्त कर दिया। (तमिळ् में वनम् = वन, कानन या जंगल किसी चीज़ की भीड़ या बड़े वृंद को द्योतित करता है।)। ५२७

तानुरुवु कॊण्डदरु मन्दॆरि शरन्दान्, मीनुरुवु मेरुवै विरैन्दुरुवु मेलाम्
वानुरुवु मण्णुरुवुम् वाळुरुवि वन्दार्, ऊनुरुवु मॆन्नुमि दुणर्त्तवु मुरित्ते 528

तान् उरुवु कॊण्ट तरुमम्–धर्मरूप श्रीराम के; तॆरि चरम् तान्–चुने हुए शर; मीन् उरुवुम्–नक्षत्रमण्डल को भेदकर जायँगे; मेरुवै विरैन्तु उरुवुम्–मेरु को तुरन्त भेद जायँगे; मेल् आन् वान् उरुवुम्–ऊपर के आकाश के आर-पार जायँगे; मण् उरुवुम्–भूमि को भी विद्ध कर जायँगे; वाळ् उरुवि वन्तार्–तलवार लेकर आनेवाले; ऊन् उरुवुम्–राक्षसों के शरीरों को निफर जायँगे; ऎन्नुम् इतु–यह बात; उणर्त्तवुम् उरित्तो–कहने अर्ह है क्या। ५२८

धर्मावतार श्रीराम के चुनकर प्रेषित शर तारामण्डलों को, मेरु को, आकाश को और भूमि को भी अनायास भेद चल सकते हैं। फिर तलवार-धारी राक्षसों के शरीरों को निफर सकते हैं —यह कहना क्या उनकी प्रशंसा करना होगा क्या ? । ५२८

अन्ऱिडर् विळैत्तवर् कुलङ्गळॊडु उडङ्गच्
चॆन्ऱुलै वुऱुम्वडि तॆरिन्दुहणै शिन्दा
मन्ऱिडै नलिन्दुवलि योर्हळॊळि योरैक्
कॊन्ऱनर् कवर्न्दपॊरु ळिऱ्कडिदु कॊन्ऱान् 529

अन्ऱु–तब; इटर् विळैत्तवर्–कष्ट देनेवाले राक्षसों को; कुलङ्कळ् ओटु अटङ्क–कुल के साथ एक दम; चॆन्ऱु उलैवु उऱुम्पटि–जाकर मिटाते हुए; तॆरिन्तु कणै चिन्ता–श्रीराम ने चुनकर अस्त्र छोड़े तो; मन्ऱु इटै–न्यायालय में; वलियोर्–शक्तिमन्त; ऎळियोरै–दीनों को; नलिन्तु–त्रास देकर; कॊन्ऱवर्–मारकर; कवर्न्त पॊरुळिल्–जो धन ग्रस लेते है, उसकी (मिटने की) से भी; कटितु–अधिक तीव्र गति से; कॊन्ऱान्–मारा। ५२९

श्रीराम ने अस्त्र चुनकर उन राक्षसों पर चलाया जो इनको कष्ट देने आये थे और इस संकल्प के साथ चलाया कि राक्षसों का उनके कुलों के साथ नाश हो। समझिए कि कोई सबल आदमी गरीब आदमी को सताता है। न्यायालय में भी उसके विरुद्ध झूठा मामला चलाता है। अन्त में उसको मारकर उससे धन ग्रस लेता है। तो वह धन नहीं टिकता। वह बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है। उससे भी अधिक तेजी से राक्षसों की सेना को श्रीराम के बाणों ने मिटा दिया। ५२९

❀ कडुङ्गर नॆन्पॆयर् पडैत्त कऴल्वीरन्
अडङ्गलु मरक्करळि वुऱ्ऱिड वळन्ऱान्
ऒडुङ्गलि निणक्कुरुदि योदमदि नुळ्ळान्
नॆडुङ्गडलिन् मन्दर मॆनत्तमिय निन्ऱान् 530

ऒटुङ्कल् इल्–अक्षय; निण कुरुति ओतम् अतिल्–मांस और रक्त के सागर में; उळ्ळान्–जो रहा; नॆटुम् कटलिन्–बड़े (क्षीर-) सागर में; मन्तरम्–मन्दरपर्वत; ऎन–के समान; तमियन् निन्ऱान्–एकाकी जो खड़ा रहा; कटुम् करन् ऎन पॆयर् पटैत्त–प्रखर खर नामक विख्यात; कऴल् वीरन्–पायलधारी वीर; अरक्कर्

अटङ्कलुम्-सारे राक्षसों के; अळिवु उड्रिट-मर-मिटने पर; अळन्ड्राऩ्-क्रुद्ध हुआ। ५३०

सेना-विहीन खर अक्षय मांस और रक्त के सागर के बीच में क्षीरसागर-मध्य स्थित मेरु के समान खड़ा रहा। प्रखर और खर के नाम से विख्यात उस पायलधारी वीर ने देखा कि सारी सेना मिट गयी है। उसे अपार क्रोध हुआ। ५३०

❀ शॅङ्गणॅरि शिन्दवरि विऌपहळि शिन्दप्
पॉङ्गुहुरु दिपुपुणरि युदुपहैयु नॅञ्जन्
कङ्गमॉडु काहमिडै यक्कडलि लोडुम्
वङ्गमॅन लायदॊरु तेरिन्मिशै वन्दान् 531

चॅम् कण्-लाल आँखों से; ॲरि चिन्ल-अंगारे से उगलते हुए; विल् पकळि चिन्त-धनुष से बाण छोड़ते हुए; पोङ्कु कुरुति पुणरि-उमड़नेवाले रक्त का सागर और; उळ् पुकैयुम् नॅञ्चत्-धुआँ जिसमें था, ऐसे मन के साथ; कङ्कम् ओटु काकम् मिटैय-कंक के साथ कौए भी मिल आये; कटलिन् ओटुम् वङ्कम् ॲन्नल् आयतु-समुद्र में चलनेवाले पोतोपम; ऑरु तेरिन् मिचै-एक रथ पर; वन्तान्-आया। ५३१

उसकी लाल-लाल आँखों से अंगारे छूटे। धनुष ने शर छोड़े। रक्त सागर-सा उसके मन में उमग रहा था। उसके मध्य धुआँ उठ रहा था। खर समुद्र में चलनेवाले पोत के समान एक वड़े रथ पर सवार हो आया। उसके रथ के साथ कंक और काग उड़ते आ रहे थे। ५३१

❀ शॅरुत्तिरुदि यिऱ्पुवनि तीयवॅऴु तीयिन्
मरुत्तिलवयि रत्तॊरुवन् वन्दणुहु मुन्दैक्
करुत्तमणि कण्डर्हड वुट्चिलै करत्ताल्
इरुत्तवत्तुम् वॅङ्गणै तॅरिन्दत्त नॅदिर्न्दान् 532

इऱुतियिल्-युगान्त में; पुवऩि तीय-भुवनों को जलाते हुए; चॅरुत्तु ॲऴु-प्रचण्डता के साथ उठनेवाली; तीयिऩ्-आग के समान; मरुत्तिऩ् वयिरत्तु ऑरुवन्-वीरता और शत्रुता में अद्वितीय (खर); वन्तु अणुकुम् मुन्तै-आकर नियराये, इसके पहले ही; करुत्त मणि कण्टर्-नीलकण्ठ श्रीशिवजी के; कटवुळ् चिलै-दिव्य (त्र्यंबक नामक) धनु के; इरुत्तवत्तुम्-भंजक ने भी; वॅम् कणै तॅरिन्तत्तऩ्-तापक अस्त्र लेकर; ॲतिर्न्तान्-सामना किया। ५३२

खर भुवनों का अन्त करनेवाली युगान्त अग्नि के समान क्रूरता और वैर में अद्वितीय था। उसके अपने पास पहुँचने के पूर्व ही नीलकण्ठ शिवजी के धनु के भंजक श्रीराम ने बाण चुन लिये। फिर वे युद्धसन्नद्ध हो उसके सामने आये। ५३२

तीयुरुव कालविशैय शॅव्वियन्न वॅव्वाय्
आयिरम् वडिक्कणै यरक्कर्पदि यॅय्दान्
तीयुरुव कालविशैय शॅव्वियन वॅव्वाय्
आयिरम् वडिक्कणै यिरामन्नु मरुत्तान् 533

ती उरुव–अग्नि के आकार के; काल विचैय–वायु की-सी गति के; चॅव्वि अन्न–श्रेष्ठ; वॅम् वाय्–भयंकर रूप से तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै–सहस्र तीक्ष्ण शर; अरक्कर् पति–राक्षसपति ने; ऍय्तान्–चलाये; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; ती उरुव–अग्नि रूपी; काल् विचैय–पवनगति; चॅव्वियन्न–श्रेष्ठ; वॅम् वाय्–तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै–सहस्र तीक्ष्ण बाण; अरुत्तान्–चलाकर उनको काट दिया। ५३३

खर ने एक सहस्र शर चलाये। वे शर ज्वलन्त अग्नि के आकार के थे। पवनसम तेज चलनेवाले और तीक्ष्णमुखी थे। श्रीराम ने वैसे ही अग्नि रूपी, पवनगति, श्रेष्ठ और तीक्ष्णमुखी, एक सहस्र शर छोड़े और खर के अस्त्रों को काटकर मिटा दिया। ५३३

❀ ऊळियॅरि यिऱ्कॊडिय पाय्पहळि यॊन्बान्
एळुलहि नुक्कुमॊरु नायहन्नु मॅय्दान्
शूळ्शुडर् वडिक्कणै यवऱ्ऱॆदिर् तॊडुत्ते
आळिवरि विऱ्करनु मन्नवै यरुत्तान् 534

ऊळि ऍरियिल् कॊटिय–युगान्त की अग्नि से भी अधिक क्रूर; पाय् पकळि ऒन्पान्–तेज चलनेवाले नौ अस्त्र; एळ् उलकिनुक्कुम् ऒरु नायकनुम्–सातों लोकों के श्रेष्ठ नायक श्रीराम ने; ऍय्तान्–खर पर चलाये; आळि–मण्डलाकार; वरि विल्–वन्धनयुक्त धनु के; करनुम्–खर ने भी; अवऱ्ऱु ऍतिर्–उनके आगे; चुटर् चळ्–ज्वलन्त; वटि कणै–तीक्ष्ण बाण; तॊटुत्ते–चलाकर; अन्नवै–उनको; अरुत्तान्–काट दिया। ५३४

फिर सर्वलोकनायक श्रीराम ने प्रलयकालीन अग्नि के समान तापक और तेज चलनेवाले सात बाण खर पर चलाये। खूब मण्डलाकार झुके धनुष के धारक खर ने भी उनके विरुद्ध ज्वलन्त और तीक्ष्ण अस्त्र भेजकर उन्हें काट दिया। ५३४

❀ कळ्ळविनै मायमवर् कल्वियिन् विळैत्तान्
वळ्ळलुरु वैप्पहळि मारियिन् मऱैत्तान्
उळ्ळमुलै वुऱ्ऱमर रोडिन्न रौळित्तार्
वॆळ्ळॆयि ऱिदळ्प्पिऱळ वीरनुम् वॆहुण्डान् 535

कल्वियिन्–अपनी विद्या में; कळ्ळविनै–वंचनापूर्ण; माय अमर्–मायायुद्ध; विळैत्तान्–करके; वळ्ळल् उरुवै–उदार प्रभु श्रीराम के शरीर को; पकळि मारियिन्–शर-वर्षा से; मऱैत्तान्–छिपा दिया (खर ने); अमरर्–देव; उळ्ळम् उळैवु उऱ्ऱु–

मन में व्याकुल होकर; ओटिन्नर्–भागे और; ऑळिन्दार्–छिप गये; वीरतुम्–वीर श्रीराम ने; वॅळ् ऍयिरु–श्वेत दाँतों से; इतळ् पिऱ्ळ–अधर को दवाते हुए; वॅकुण्टान्–कोप किया। ५३५

खर माया-विद्या में निपुण था। उसने कपटपूर्ण मायायुद्ध करके श्रीराम के श्रीशरीर को शर-वर्षा से छिपा दिया। देव इसको देखकर व्याकुल हुए और दूर भागकर छिप गये। वीर श्रीराम ने भी दाँत पीसते हुए क्रोध का अवलम्बन किया। ५३५

❀ मुडिप्पॅ निन्ऱीरु मॉय्हणै यालॅन्त्, तॉडुत्तु निन्ऱुयर् तोळुऱ वाङ्गिनान्
पिडित्त तिण्शिलै पेरहल् वानिडै, इडिप्पि नोशै पडक्कडि दिऱ्ऱदे 536

इन्ऱु–अभी; ऑरु मॉय् कणैयाल्–एक सारयुक्त वाण से; मुटिप्पॅन् ॲन्त–समाप्त कर दूँगा, यह कहते हुए; तॉटुत्तु निन्ऱु–संधान करके; उयर् तोळ् उऱ–उन्नत कन्धे तक; वाङ्किनान्–डोर खींचा; पिटित्त तिण् चिलै–उनसे ग्रस्त वलवान धनुष; पेर् अकल् वान् इटै–अति विस्तृत आकाश में; इटिप्पिन् ओचै–वज्र का-सा नाद; पट–उठाते हुए; कटितु इऱ्ऱतु–शीघ्र टूट गया। ५३६

श्रीराम ने कहा कि अब एक ही सारयुक्त वाण चलाकर खर का काम तमाम कर दूँगा। उन्होंने शर संधान कर डोर को ऐसा खींचा कि धनुष का छोर उनके कन्धे को स्पर्श करे। बस, वह वलवान धनुष आकाश के वज्र के समान उच्च स्वर निकालते हुए उसी दम भग्न हो गया। ५३६

वॅऱ्ऱि कूऱिय वानवर् वीरन्विल्, इऱ्ऱ पोदु तुणुक्कमुऱ् ऱेङ्गिनार्
मऱ्ऱु वॅञ्जिलै यिन्मै मनक्कॊळा, अऱ्ऱ दालॅम् वलियॅन वञ्जिनार् 537

वॅऱ्ऱि कूऱिय वानवर्–(श्रीराम की) विजय के प्रशंसक देव; वीरन् विल् इऱ्ऱ पोतु–वीर श्रीराम के धनुष के टूटने पर; तुणुक्कम् उऱ्ऱु–डरकर; एङ्किनार्–दुखी हुए; मऱ्ऱुम् वॅम् चिलै इन्मै–अन्य किसी धनुष का अभाव; मनम् कॊळा–मन में सोचकर; ॲम् वलि अऱ्ऱतु–हमारा वल मिटा; ॲन–ऐसा; अञ्चिनार्–भयभीत हुए। ५३७

देव श्रीराम की विजय की प्रशंसा करते रहे। अब उन्होंने देखा कि श्रीवीरराघव का धनुष टूट गया है। कोई दूसरा धनुष नहीं है। वे निस्सहाय खड़े हैं। उन्हें संशय और डर हो गया कि अब हमारा बल गया! । ५३७

❀ ॲन्नु मात्तिरत् तेन्दिय कार्मुहम्, चिन्न मॅन्ऱुन् दनिमैयुञ् जिन्दियान्
मन्नर् मन्नवन् शॅम्मल् मरबिनाल्, पिन्नु ऱत्तन् पॅरुङ्गर नीट्टिनान् 538

ॲन्नुम् मात्तिरत्तु–उनके ऐसा कहते समय; मन्नर् मन्नवन्–राजाधिराज के; चॅम्मल्–पुत्र श्रीराम ने; एन्तिय कार्मुकम्–अपना गृहीत कार्मुक; चिन्नम् ॲन्ऱुम्–टूट गया, इसकी और; तनिमैयुम्–अपनी (एकाकी) निस्सहाय स्थिति की;

चिन्तियान्–चिन्ता न करके; मरपित्ताल्–पूर्व संकेत के अनुसार; तन् पॅरुम् करम्–अपना बड़ा हाथ; पिन् उऱ–पीछे की तरफ़; नीट्टित्तान्–बढ़ाया। ५३८

देव इस प्रकार कह ही रहे थे कि उधर श्रीराम ने एक अद्भुत कार्य किया। दाशरथी ने किंचित भी चिन्ता नहीं की कि मेरा कोदण्ड टूट गया है और मैं विना हथियार के एकाकी खड़ा हूँ। उन्होंने अपना दीर्घ हाथ पीछे की ओर बढ़ाया। उसका पूर्वसंकेत का कोई अर्थ था। ५३८

❀ कण्डु निन्ऱ करुत्तुणर्न्दानॅन, अण्डर् नादन् ऱडक्कैयि नत्तुणै
पण्डु पोर्मऴु वाळियैप् पण्वित्ताल्, कॉण्ड विल्लै वरुणन् कॉडुत्तनन् 539

कण्टु निन्ऱ–उस स्थिति को देखते हुए खड़ा; करुत्तु उणर्न्तात् ॲन–उनका अभिप्राय समझ गया हो ऐसा; पण्टु–पहले; पोर् मऴु आळियै–युद्ध में परशु का प्रयोग करनेवाले परशुराम से; पण्पिनाल्–अपने सामर्थ्य से; कॉण्ट–गृहीत; विल्लै–धनु को; अत्तुणै–तब; वरुणन् तटक्कैयिल् कॉटुत्तनन्–वरुण ने श्रीराम के विशाल हाथ में दिया। ५३९

वरुण यह सब देखते हुए पीछे खड़े थे। पहले जब श्रीराम ने युद्धोपयोगी परशु के धारक परशुराम को हराया था और अपने सामर्थ्य से उनका धनुष ले लिया था, तब उन्होंने वह कार्मुक वरुण के पास दे रखा था। वरुण ने श्रीराम का मन जान लिया और वह धनु श्रीराम के हाथ में धर दिया। ५३९

❀ कॉडुत्त विल्लैयक् कॉण्ड निऱत्तिनान्
ॲडुत्तु वाङ्गि वलङ्गॉण् डिडक्कैयिऱ्
पिडित्त पोदु नॅऱिपिऴैत् तार्क्कॅलाम्
तुडित्त वालिडक् कण्णोडुन् दोळ्हळे 540

कॉटुत्त विल्लै–वरुण-दत्त धनु को; अ कॉण्टल् निऱत्तिनान्–उन मेघश्याम ने; ॲटुत्तु–लेकर; वलम् कॉण्टु वाङ्कि–जोर से झुकाकर; इट कैयिल् पिटित्त पोतु–जब अपने बायें हाथ में धरा, तब; नॅऱि पिऴैत्तार्क्कु ॲल्लाम्–दुराचारी सभी राक्षसों के; इटम् कण् ओटु तोळ्कळ्–बाईं आँखें और उनके साथ बाईं भुजाएँ; तुटित्त–फड़क उठीं। ५४०

मेघवर्ण श्रीराम ने वरुण-दत्त धनु को हाथ में लिया। उसको झुकाकर अपने बायें हाथ मे धरा तो दुराचारी सभी राक्षसों की बायीं आँखें बायीं भुजाओं के साथ फड़क उठीं। ५४०

❀ एऱ्ऱि नाणिमै यामुन् नॅडुत्तदु, कूऱ्ऱि नारुङ् गुनिक्कक् कुनित्तॅदिर्
आऱ्ऱि नानव नाळियन् देर्शरम्, नूऱ्ऱि नानुण् पॉडिपड नूऱिनान् 541

अतु ॲटुत्तु–उस चाप को लेकर; इमैया मुन्–पलक मारती देर से पहले; नाण् एऱ्ऱि–प्रत्यंचा चढ़ाकर; कूऱ्ऱिनारुम् कुनिक्क–यमदेव को भी नाचने देते हुए;

कुनित्तु–उसको झुकाकर; अँतिर् आर्द्रित्तान् अवन्–सामने लड़ने आगत उस (खर) के; आळि अम् तेर्–चक्रसहित सुन्दर रथ को; चरम् नूर्द्रिनाल्–सौ शरों से; नुण् पॉटि पट–बारीक चूर्ण करते हुए; नूर्द्रिनात्–मिटा दिया। ५४१

श्रीराम ने पलक मारने के समय के अन्दर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ायी। शर संधान करके धनु को झुकाया। यम को आनन्द-नृत्य-मग्न करते हुए सौ अस्त्र चलाये। उनके सामने आये खर का सुन्दर पहियेदार रथ चूर-चूर हो गया। रथ ध्वस्त हो गया। ५४१

❀ ॲन्दि रत्तडन् देरिळन् दानिळिन्, दन्द रत्तिडै यार्त्तॅळुन् दम्बॅल्लाम्
सुन्द रत्तनि विल्लिदन् ड्रोळॅन्नुम्, मन्द रत्तिन् मळैयिन् वळङ्गिनान् 542

ॲन्तिर तटम् तेर्–यन्त्रचालित विशाल रथ; इळन्तात्–खोकर; इळिन्तु–(खर) उतरकर; आर्त्तु–नारे लगाते हुए; अन्तरत्तु इटै–अन्तरिक्ष में; ॲळुन्तु–उठ जाकर; अम्पु ॲलाम्–अपने सारे बाण; चुन्तर् तनि विल्लि तन्–सुन्दर कोदण्डपाणी के; तोळ् ॲन्नुम्–भुजाओं रूपी; मन्तरत्तिल्–मन्दरपर्वत पर; मळैयिन्–वर्षा के समान; वळङ्कितान्–बरसाया। ५४२

खर का रथ यन्त्र-चालित था। वह नष्ट हो गया। खर उतरा और अन्तरिक्ष में खड़ा हो गया। भयंकर गर्जन करते हुए उसने अपने पास रहे सभी अस्त्रों को अद्वितीय सुन्दर कोदण्डपाणी पर वर्षा के समान बरसा दिया। ५४२

❀ ताङ्गि निन्ड्र तयरद रामनुम्, तूङ्गु तूणि यिडैच्चुडु शॅञ्जरम्
वाङ्गु हिन्ड्र वलक्कैयै वाळियाल्, वीङ्गु तोळॊडुम् पारिडै वीळ्त्तिनान् 543

ताङ्कि निन्ऱ–उन अस्त्रों का सामना करते हुए जो खड़े रहे, उन; तयरतरामनुम्–दशरथ के पुत्र, श्रीराम ने भी; तूङ्कु तूणियिटै–लटकनेवाले तूणीर में से; चुटु चॅम् चरम्–तापक और श्रेष्ठ बाण; वाङ्कुकिन्ऱ–लेनेवाले; वल कैयै–दक्षिण हस्त को; तोळ् ओटु–कन्धे के साथ; पार् इटै–भूमि पर; वीळ्त्तितान्–काटकर गिरा दिया। ५४३

श्रीराम ने उनको धैर्य के साथ धारण किया। फिर उन्होंने खर के उस हाथ को भुजमूल से काटकर गिराया जो पीठ पर बँधे तूणीर से अस्त्र ले रहा था। ५४३

❀ वलक्कै वीळ्दलु मड्रैक्कै यालॅड्रि
उलक्कै वान्त् तुरुमॅन वीच्चिनान्
इलक्कु वड्कुमुन् वन्द विरामनुम्
विलक्कि नान्रु वॅङ्गदिर् वाळियाल् 544

वलम् कै–दक्षिण हस्त के; वीळ्तलुम्–अलग हो गिरने पर; मऱ्ऱै कैयाल्–दूसरे हाथ से; वॅऱ्ऱि उलक्कै–विजयदायक मूसल को; वानत्तु उरुम् ॲन–आकाश

में वज्र के समान; ओच्चिनान्–(खर ने श्रीराम पर) फेंका; इलक्कुवर्कु मुन्न वन्त इरामनुम्–लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने भी; ओरु वॆम् कतिर् वाळियाल्–एक भयंकर ज्वलन्त बाण से; विलक्किनान्–उसको रोका। ५४४

खर का दक्षिण हस्त कटकर गिर गया। तो उसने बायें हाथ से एक विजयदायक मूसल उठाकर आकाश के वज्र के समान श्रीराम पर फेंका। लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने जाज्वल्यमान और संतापक एक अस्त्र से उसको बीच में रोक दिया। ५४४

❀ विराव रुङ्गडु वॆळ्ळॆयि ऱिऱ्ऱपिन्, अराव ळन्नऱ तनैयव नाऱ्ऱलान्
मराम रङ्गैयिन् वाङ्गि वन्दॆय्दिनान्, इराम नङ्गोर् तनिक्कणै येविनान् 545

अरा–एक सर्प; कटु विरा वरु–विष से पूरित रहनेवाले; वॆळ् ऎयिऱु–श्वेत दाँतों के; इऱ्ऱ पिन्–नष्ट हो जाने के बाद; अळन्नरतु अन्नैयवन्–जैसे क्रुद्ध होता है, वैसा क्रुद्ध; आऱ्ऱलान्–शक्तिशाली (खर); मरामरम्–सालवृक्ष; कैयिल् वाङ्कि वन्तु–अपने हाथ में ले आकर; ऎय्तिनान्–पहुँचा; इरामन्–श्रीराम ने; अङ्कु–वहाँ; ओर् तनि–एक अद्वितीय; कणै–बाण; एविनान्–चलाया। ५४५

खर उस सर्प के समान बिफर उठा, जिसका विषैला श्वेत दाँत उखाड़ लिया गया हो। उस पराक्रमी खर ने एक सालवृक्ष ले लिया। उसके साथ जब वह लड़ने आया तो श्रीराम ने अप्रमेय एक शर छोड़ा। ५४५

❀ वरम रक्कन् पटैत्तलिन् मायैयिन्, उरमुडैत् तन्मै यालुल हेऴैयुम्
परमु ऱुत्तिय पावत्ति नाल्वलक्, करमॆ नक्करन् कण्डमुऱ् ऱानरो 546

अरक्कन्–(रावण) राक्षस को; वरम् पटैत्तलिन्—वर-प्राप्ति से; मायैयिन्–वंचना से; उरम् उटै तन्मैयाल्–बलवान होने से; उलकु एऴैयुम्–सातों लोकों को; परम् उऱुत्तिय–बहुत त्रस्त करनेवाले; पावत्तिनाल्—पापकृत्यों से; वलम् करम् अॆन–दाहिने हाथ के समान; करन्–खर; कण्टम् उऱ्ऱान्–खण्डित हुआ। ५४६

खर रावण का दाहिना हाथ था। अब वह मर गया। यह उसी रावण के किए पाप का फल था। रावण को वर प्राप्त थे और वह मायावी राक्षस था। वर के बल पर उसने अपने कपटी स्वभाव के कारण सातों लोकों पर सितम ढाया। उसका ही फल खर की मौत था। ५४६

❀ आर्त्तॆ ऴुन्दन राडिन्नर् पाडिनर्, तूर्त्त मैन्दनर् वानवर् तूय्मलर्
तीर्त्त नुम्बॊलिन् दान्गदि रोन्ऱिशै, पोर्त्त मॆन्बनि पोक्किय पोलवे 547

वानवर्–सुरलोग; आर्त्तु ऎऴुन्तनर्–हर्षरव कर उठे; आटिनर् पाटिनर्–नाचे-गाये; तूय् मलर्–पवित्र फूल; तूर्त्तु अमैन्तनर्–बरसाये और विश्रब्ध खड़े रहे; तीर्त्तनुम्–तीर्थ श्रीराम भी; कतिरोन्–सूर्य; तिचै पोर्त्त–दिशाओं को ढँके रहे; मॆन् पनि पोक्कियतु–नरम कुहरे को दूर कर शोभित रहे; अन्न–जैसे; पोलिन्तान्–प्रभावान बने रहे। ५४७

खर की मृत्यु पर देव आनन्द का कोलाहल कर उठे। वे नाचे और गाये। पवित्र कल्पसुमन बरसाकर वे प्रसन्नचित्त खड़े रहे। तीर्थ श्रीराम भी दिशाओं में भरे कुहरे को दूर कर शोभनेवाले सूर्यदेव के समान प्रभावान दिखे रहे। ५४७

❀ मुनिवर् वन्दु मुऱैमुऱै मॉय्प्पुऱ, इनिय शिन्दै यिरामनु मेहिनान्
अनिह वॅन्जमत् ताऱुयिर् पोहत्तान्, तनियि रुन्द वुडलन्न तैयल्बाल् 548

मुनिवर् मुऱै मुऱै वन्तु—मुनिगण बारी-बारी से आये और; मॉय्प्पु उऱ—घेरे खड़े रहे; इतिय चिन्तै—प्रसन्नचित्त; इरामतुम्—श्रीराम भी; अतिक वॅम् चमतुतु—राक्षस-सेना के साथ कठोर युद्ध में; तन् आर् उयिर् पोक—अपने प्यारे प्राणों को भेजकर; तनि इरुनत—अलग रहे; उटल् तान् अन्त—शरीर ही के समान जो रहीं; तैयल् पाल्—उन देवी सीताजी के पास; एकितान्—पधारे। ५४८

ऋषियों ने दलों में आकर श्रीराम को घेर लिया। तब श्रीराम वहाँ से चले और देवी सीता के पास पधारे। देवी सीता निष्प्राण शरीर के समान थीं, क्योंकि उनके प्यारे प्राण राक्षसों के साथ कठोर युद्ध में चले गये थे। ५४८

❀ विण्णि नीड्गिय वॅय्यवर् मेनियिल्, पुण्णि नीरुम् पॉडिहळुम् बोयुह
अण्णल् वीरनैत् तम्बियु मन्नमुम्, कण्णि नीरिनिर् पादङ् गळुविनार् 549

विण्णित् नीङ्किय—(वीरों के प्राप्य) स्वर्ग में जो गये; वॅय्यवर्—उन आततायी राक्षसों के; मेनियिल्—शरीर पर; पुण्णित् नीरुम्—व्रणों से निकला रक्त-जल और; पॉटिकळुम्—धूलि; पोय् उक—पोंछते हुए; अण्णल् वीरनै—महिमावान वीर श्रीराम को; तम्पियुम् अन्नमुम्—उनके लघु भाई लक्ष्मण ने और हंसिनी (-सी सीताजी) ने; कण्णित् नीरित्ताल्—आँखों के जल से; पातम् कळुविनार—पाद-प्रक्षालन कराया। ५४९

राक्षस वीर मरकर स्वर्ग चले गये। उनके शरीरों पर लगे व्रणों से जो रक्त-जल बहा उससे श्रीराम का शरीर लिप्त हो गया। उनके शरीर पर धूलि भी जमी हुई थी। उनके लघु भ्राता ने और उनकी देवी हंसिनी-सी सीता ने श्रीराम को देखकर भावातिरेक से अश्रुजल बहाया, जिससे श्रीराम के श्रीचरण धुल गये। ५४९

❀ मूत्त मॉन्ऱिन् मुडिन्दवर् मॉय्पुणीर्, नीत्त मोडि नॅडुन्दिशै नेरुऱ्
कोत्त वेलैक् कुरलॅन वानवर्, एत्त वीर निनिदिरुन् दानरो 550

मूत्तम् ऑन्ऱित्—एक मुहूर्त में; मुटिन्तवर्—जो मरे; मॉय्—(उनका) एकत्रित; पुण्णीर् नीत्तम्—व्रण-जल रक्त का प्रवाह; कोत्त वेलै—मिश्रित समुद्रों के; कुरल् अॅन—घोष के समान; ओटि—बहकर; नॅटुम् तिचै—लम्बी दिशाओं के अन्तों से; नेर् उऱ—टकराकर मुड़ आया; वानवर् एत्त—देवों ने स्तुति की, इस प्रकार; वीरन्—रघुवीर श्रीराम; इतितु इरुन्तान्—ससन्तोष रहे। ५५०

एक ही मुहूर्त में सारे राक्षस मर गये थे। उनके शरीरों से इतना रक्त बहा कि सागर-सा बन गया और उससे सम्मिलित सागरों के गर्जन के समान गर्जन निकला। उसका प्रवाह सभी दिगन्त तक गया और टकराकर मुड़ आया। श्रीराम की विजय पर देव इठलाये। उन्होंने श्रीराम की स्तुति की। श्रीराम विश्रब्धमन और सुख के साथ रहे। ५५०

❀ इङ्गु निन्ऱ्‌ दुरैत्तु मिरावणन्, तङ्गै तन्गै वयिऱु तहर्त्तनळ्
कङ्गु लन्न करत्तैत्त ळ्ोइनॅंडुम्, पौङ्गु वॅंङ्गुरु दिप्पुरण् डाळरो 551

इङ्कु निन्ऱ्तु–यहाँ जो स्थिति है; उरैत्तुम्–कहें; इरावणन् तङ्कै–रावण की बहिन ने; तन् कै–अपने हाथों से; वयिऱु तकर्त्तनळ्–अपना पेट पीट लिया; कङ्कुल अन्न–रात के समान काले; करनै–खर को; तळ्ीइ–आलिंगन करके; पौङ्कु नॅंटुम्–उमड़नेवाले अधिक; वॅम् कुरुति–गरम रक्त में; पुरण्टाळ्–लोटी। ५५१

अब हम (कवि) यहाँ जो हुआ वह कहें। रावण की बहिन ने अपने हाथों से अपना पेट पीट लिया। रात के समान काले खर का आलिंगन किया। उसके शरीर पर, वह निकलनेवाले अधिक रक्त के प्रवाह में लोटी। ५५१

❀ आक्कि नॅन्मनत् ताशैयिव् वाशैयॅन्, मूक्कि नोडु मुडिय मुडिन्दिलेन्
वाक्कि नालुङ्गळ् वाळ्वैयु नाळैयुम्, पोक्कि नॅन्कॉडि येॅन्नॅन्ऱु पोयिनाळ् 552

मनत्तु–अपने मन में; आचै आक्किनॅन्–(श्रीराम के प्रति) प्रेम किया; अ आचै–वह इच्छा; ॲन् मूक्कितोटु–मेरी नाक के साथ; मुटिय–चली जाय; मुटिन्तु इलेन्–ऐसा मरी नहीं; वाक्किनाल्–अपने वचनों से; उङ्कळ् वाळ्वैयुम्–तुम लोगों का जीवन और; नाळैयुम्–आयु को; पोक्किनॅन्–समाप्त कर दिया; कॉटियेन्–निर्मम हूँ; ॲन्ऱु–कहती हुई; पोयिनाळ्–वहाँ से चली। ५५२

वह उठी। अपने को धिक्कारने लगी। मैंने श्रीराम से प्रेम किया। वह इच्छा मेरी नाक के साथ चली जाती तो कोई बात नहीं। वहीं तक बात समाप्त करते हुए मैं मरी नहीं। अपने वचनों से मैंने तुम्हें युद्ध में प्रेरित किया और तुम्हारा जीवन और आयु खतम हो गयी। बड़ी निर्मम निकली मैं। ऐसा विलाप करती हुई वह वहाँ से चली गयी। ५५२

❀ अलङ्गल् वेऱ्कै यरक्करै याशऱक्
कुलङ्गळ् वेररुप् पान्गुरित् ताळ्हडल्
कलङ्गु उैत्तॅळु कालॅनक् कालिनाल्
इलङ्गै मानहर् नॉय्दिऱ्चॅन् ऱॅय्दिनाळ् 553

अलङ्कल् वेल् कै अरक्करै–माला से अलंकृत भाले हाथ में लिये रहनेवाले राक्षसों को; आचु अऱ–निर्मूल करते हुए; कुलङ्कळ् वेर् अऱुप्पान्–राक्षसकुलों की जड़ काटने का; कुऱित्तु–संकल्प लेकर; आळ् कटल् कलम्–गहरे सागर में पोत को;

कुरैत्तु अॅळ्ळु—अस्त-व्यस्त कर उठनेवाले; काल् अॅन्न—झंझे के समान; कालित्ताल्—पैदल चलकर; नोय्तिन्—आयास के साथ; इलङ्कै मा नकर् चॅन्ऱु—लंकानगर जा; अॅय्तिनाळ्—पहुँची । ५५३

वहाँ कहाँ रुकी ? उसका आशय माला से अलंकृत भाले लिये रहनेवाले राक्षसों को निर्मूल करने का, उनके कुलों की जड़ ही खोद लेने का था ! इसलिए वह आयास के साथ पैदल चली और लंका जा पहुँची । वह इस कार्य में गहरे समुद्र में फँसे पोत को हिला देनेवाली आँधी के समान लगी । ५५३

7. शूर्प्पणहै शूळ्च्चिप् पडलम् (शूर्पणखा-योजना पटल)

इरैत्तनॅडुम् बडैयरक्क रिऱन्ददनै मऱन्दनळ्बो रिरामन् ऱुङ्ग
वरैप्पुयत्ति निडैक्किडन्द पेराशै मनङ्गवऱ्ऱ वाऱ्ऱा ळाहित्
तिरैप्परवैप् पेरहळित् तिरुनहरिऱ् कडिदोडिच् चीदै तन्मै
उरैप्पॅन्नच् चूर्प्पणहै वरविरुन्दा निरुन्दपरि शुरैत्तु मन्नो 554

इरैत्त नॅडुम् पडै—शोर मचाते हुए जो चली उस सेना के; अरक्कर्—(खर मिलाकर) सभी वीर; इऱन्ततै—मरे, वह बात; मऱन्तनळ्—भूल गई; पोर् इरामन्—युद्ध-चतुर श्रीराम के; तुङ्क—उन्नत; वरै पुयत्तिन् इडै—पर्वत-सम कन्धों में; किटन्त—बँधे रहे; पेर् आचै—गम्भीर प्रेम के; मतम् कवऱ्ऱ—मन को व्यथित करने से; आऱ्ऱाळ् आकि—असहनशील बनकर; तिरै परवै—तरंग-भरा समुद्र; पेर् अकळि—बड़ी खाई के रूप में जिसे प्राप्त था; तिरु नकरिल् कटितु ओटि—उस श्रीनगर में सवेग दौड़कर; चीतै तन्मै उरैप्पॅन्—सीता का लक्षण बताऊँगी; अॅन्न—सोचकर; चूर्प्पणकै वर—शूर्पणखा के आते समय; इरुन्तान्—वहाँ विद्यमान; इरुन्त परिचु—श्रीरावण के रहने का प्रकार; उरैत्तुम्—कहेंगे । ५५४

शूर्पणखा अब यह बात भूल गयी कि खर और बड़ी धूम मचानेवाली उसकी सेना विनष्ट हो गयी । उसका मन युद्ध-कला-प्रवीण श्रीराम के उन्नत, पर्वतसम मनोरम कन्धों से आकृष्ट हो गया । श्रीराम पर उसका प्रेम उसे व्यग्र करने लगा । वह संयम नहीं रख सकी, काम-ताप सह नहीं सकी । उसने यह सोचा कि मैं लंका में, जिसके चारों ओर तरंगाकुल समुद्र ही खाई के रूप में पड़ा है और जो श्रीसमृद्ध है, शीघ्र जाऊँगी और रावण के पास सीता की स्थिति, उसके लक्षण आदि कहूँगी । जब वह उधर आयी तब लंकेश रावण किस ठाट के साथ शोभायमान था, उसका वर्णन करेंगे । ५५४

निलैयिला वुलहिनिडै निन्ऱनवुन् दिरिन्दनवु नॅऱियि नीन्द
मलरिन्मे नानमुहऱ्कुम् वहुप्परिय नुनिप्पदीरु वरम्बि लाद
उलैविला वहैयिळैत्त दरुममॅन निनैन्दवॅला मुदवुन् दच्चन्
पुलनॅलान् दॅरिप्पदीरु पुनैमणिमण् डबमदनिऱ् पॊलिय मन्नो 555

उलकिऩ् इटै–इस भूमि में; निलै इला–नश्वर; निऩ्ऱऩवुम्–स्थावर; तिरिन्तऩवुम्–और जंगम; नॆऱियिऩ् ईन्त–यथाक्रम सृष्ट करनेवाले; मलरिऩ् मेल्–कमल पर आसीन; नाऩ् मुकऩ्कुम्–चतुर्मुख को; वकुप्परिय–जिसकी सृष्टि नहीं हो सकती; नुनिप्पतु ऒरु वरम्पु इलात–सूक्ष्म रूप से जिसकी सीमा माप करना कठिन है; तरुमम् ऎऩ्ऩ–उस धर्म के समान; निऩैन्त ऎलाम् उतवुम्–इच्छित सभी पदार्थ देनेवाले; तच्चऩ्–देवशिल्पी विश्वकर्मा के; पुलऩ् ऎलाम् तॆरिप्पतु–सारे सामर्थ्य का प्रदर्शक; पुऩै–सुन्दर; उलैवु इला वकै–अमिट रूप से; इऴैत्त–रचित; ऒरु मणि मण्टपम् अतऩिल्–एक मणिमण्डप में; पॊलिय–शोभायमान रहते (रावण के)। ५५५

रावण एक मणिमण्डप में विराजमान था। वह मणिमण्डप देवशिल्पी विश्वकर्मा से बनाया गया था। वह विश्वकर्मा की सारी शक्ति का, शिल्पशास्त्र के गम्भीर और सूक्ष्म ज्ञान का पूर्ण परिचायक था। नश्वर विश्व और उसमें रहनेवाले स्थावर और जंगम —सभी जीवों के सृष्टिकर्ता, कमलवासी ब्रह्मा के लिए भी वह मण्डप अभाव्य था। वह धर्म के समान सभी मनोरथ पूरा करने की शक्ति रखता था। वह बड़ा ही सुन्दर था और अक्षय रूप से शोभायमान रहनेवाला था। ५५५

पुलियिनद ळुडैयाऩुम् पॊऩ्ऩाडै पुऩैन्दाऩुम् पूवि ऩाऩुम्
नलियुमऩऩ् तारल्लर् देवरिलिङ् गियावरिऩि नाट्ट वल्लार्
मॆलियुमिडै तडिक्कुमुलै वेयिळन्दोट् चेयरिक्कण् वॆऩ्ऱि मादर्
वलियनॆडुम् बुलवियिनुम् वणङ्गाद महुडनिरै वयङ्ग मऩ्ऩो 556

पुलियिऩ् अतळ् उटैयाऩुम्–बाघम्बरधारी; पॊऩ् आटै पुऩैन्ताऩुम्–पीताम्बरधारी; पूविऩाऩुम्–और कमलवासी; नलियुम् मऩत्तार्–(रावण के पराक्रम, वैभव आदि देख) आतंकित थे; अल्लर् तेवरिल्–वे ही नहीं तो अन्य देव; इङ्कु–यहाँ; यावर्–कौन; इऩि नाट्टवल्लार्–अब इसकी समता कर सकते है; मॆलियुम् इटै—क्षीण-कटि; तटित्त मुलै–पीन स्तन; वेय् इळम् तोळ्–बाँस के समान और बाल कन्धे; चेय् अरि कण्–लाल डोरों से युक्त आँखें, इनसे शोभित; वॆऩ्ऱि मातर्–मनोहारिणी स्त्रियों के; वलिय नॆटुम् पुलवियिऩुम्–शान्त करने में कठिन और लम्बी रूठन के अवसर में भी; वणङ्कात–जो नहीं झुकती; मकुटम् निरै–मुकुटपंक्ति; वयङ्क–(के) शोभते। ५५६

(५५५वें पद से ५७६वें पद तक रावण की सभा में स्थिति का वर्णन है। पूर्णक्रिया पद आखिरी पद में आता है।) स्वयं बाघम्बर शिव, पीताम्बर विष्णु और कमलवासी ब्रह्मा उसके ठाट-वाट से उद्विग्न थे यानी उनका स्थान भी इसके सामने घटा हुआ लगता था। फिर कौन देव हैं जो इसकी समानता कर सकें ? वह बड़ा अभिमानी था। क्षीण-कटि, पीन-स्तना, छोटे बाँस-सी भुजाओं और लाल डोरों के साथ मनोरम आँखों से भूषित और विजयशीला स्त्रियो की लम्बी और दुर्वह रूठन के अवसर पर भी उसके किरीट (सिर) नहीं झुकते थे। ऐसे (सिरों के) किरीटों की पंक्ति दृश्यमान करते हुए रावण विराजमान था। ५५६

वण्डलङ्गु नुदड़्रिशैय वयक्कळिड़्रिऩ् मरुप्पोडिय वडर्त्त पोऩ्ड़ोळ्
विण्डलङ्ग ळुड़वीङ्गि योङ्गुदय माल्वरैयिऩ् विळङ्ग मीदिल्
कुण्डलङ्गळ् कुलवरैयै वलम्वरुवा निरविहोळुङ् गदिर्शूळ् कड़्ऱै
मण्डलङ्गळ् पन्निरण्डु नालैन्दाय्प् पोलिन्ददॆत्त वयङ्ग मऩ्नो 557

वण्टु अलङ्कु नुतल्–भ्रमरावृत भालों के; तिचैय–दिशाओं में स्थित; वय–विजयशील; कळिऱ्ऱिऩ्–हाथियों के; मरुप्पु ऒटिय–दाँतों को तोड़ते हुए; अटर्त्त–(उन गजों से) जिन्होंने टकराया; पोऩ् तोळ्–वे मनोरम कन्धे; विण् तलङ्कळ् उऱ–आकाश के लोकों में जा लगें, ऐसा; वीङ्कि–फूलकर, बढ़कर; ओङ्कु–उन्नत; उतय माल् वरैयिऩ्–उदयगिरि के समान; विळङ्क–दृश्यमान रहे और; मीतिल्–उन पर; कुण्टलङ्कळ्–कुण्डल; कुल वरैयै–मेरुपर्वत की; वलम् वरुवाऩ्–परिक्रमा करनेवाले; इरवि–सूर्य के; कोळुम्–पुष्कल; कतिर् चूळ्–किरणसंकुल; कऱ्ऱै–पुंज; मण्टलङ्कळ्–मण्डल; पत्तिरण्टुम्–बारह; नालु ऐन्ताय्–(चार के पाँच) बीस बनकर; पोलिन्ततु ऎत्त–प्रकाशमय विद्यमान रहते हों जैसे; वयङ्क–दृश्यमान रहे। ५५७

उसके कन्धों ने दिग्गजों के साथ युद्ध करते हुए उनके दाँतों को तोड़ा था। दिग्गज इतने मदमत्त थे कि हमेशा भ्रमर उनके भालों पर मँड़राते थे। ऐसे बलवान कन्धे बहुत ही दर्शनीय और फूलकर उन्नत उदयगिरि के समान शोभ रहे थे। कानों के कुण्डल, जो उनके कन्धों को स्पर्श करते हुए हिल रहे थे, किरण-पुंज बारह आदित्यों के समान प्रकाशमान थे जो बीस बन गये हों। ५५७

वाळुला मुळुमणियिऩ् वयङ्गोळियिऩ् ड़ोहैवळङ्ग वयिरक् कुऩ्ड़त्
तोळॆलाम् बडिशुमत्त्द विडवरविऩ् बडनिरैयिऩ् ड़ोऩ्ड़ वाऩ्ड़
नाळॆलाम् पडैदयङ्ग नाममनी रिलङ्गैयिड़्ड़ा नलङ्ग विट्ट
कोळॆलाङ् गिडन्दनॆडुज् जिरैयनऩ्न निरैयारङ् गुलव मऩ्नो 558

वाळ् उलाम्–उज्ज्वल; मुळु मणियिऩ्–बड़े-बड़े रत्नों की; वयङ्कु ऒळियिऩ्–छिटकनेवाली कान्ति की; तोकै–राशि; वळङ्क–दृश्यमान रही; वयिर कुऩ्ऱ तोळ् ऎलाम्–वज्र गिरि-सम सब कन्धे; पटि चुमन्त–भू-भार-वाही; विट अरविऩ्–विषैले नाग के; पट निरैयिऩ्–फनों की पंक्ति के समान; तोऩ्ऱ–दिखाई दिये; नाम नीर् इलङ्कैयिल्–भयोत्पादक समुद्रजल सहित लंका में; ताऩ् नलङ्क विट्ट–उससे आक्रान्त; कोळ् ऎलाम्–सब (नव) ग्रह; आऩ्ऱ–श्रेष्ठ; नाळ् ऎलाम्–सभी नक्षत्र; पुटै तयङ्क–पास-पास रहें, ऐसा; किटन्त–(बद्ध) पड़े रहे; नॆटुम् चिऱै अऩ्ऩ–बड़ी कारा के समान; निऱै आरम्–रत्नमय हार; कुलव–शोभ रहा था। ५५८

रावण अनेक आभरण पहने हुए था। उनमें जड़ित रत्न बड़े-बड़े थे और बड़े ही जाज्वल्यमान थे। उनकी ज्योतियों की राशि शोभित थी। उसके वज्रगिरिसम कन्धे भूभारवाही शेषनाग के फनों के समान दर्शनीय थे (वे रत्न उन फनों के ऊपर रहनेवाली मणियों के समान थे।)

उसने एक रत्नहार पहन रखा था, जो उस कारा के समान था जिसमें उसने ग्रहों और नक्षत्रों को हराकर डाल रखा था। यानी वह हार श्रेष्ठ और ज्वलन्त रत्नों का बना था। ५५८

❀ आय्वरुम् बॅरुवलि यरक्क रादियोर्
नायहर् नळिमणि महुड नण्णलाल्
तेय्वुऱत् तेय्वुऱप् पॅयर्नदु शॅम्जुडर्
आय्मणिप् पॉलन्गळ् लडिनिन् ऱार्प्पवे 559

आय्वु अरु–अकूत; पॅरु वलि–बहुत बल से युक्त; अरक्कर् आतियोर्–राक्षस आदि राजा लोगों के; नळि मणि मकुटम्–बहुमूल्य रत्न-जड़ित किरीट; नण्णलाल्–मिले आते हैं, इसलिए; तेय्वु उऱ तेय्वु उऱ–घिसते-घिसते; पॅयर्न्तु–फिर से; चॅम् चुटर्–लाल प्रकाश की; मणि पॉलन् कऴल्–मणिमण्डित पायल; अटि निन्ऱु आर्प्प–उसके पैरों में रहकर क्वणित हो रही थी। ५५९

राक्षस वीर आकर उसके पैरों पर सिर झुकाते थे। उन राक्षसों के बल का अनुमान भी नहीं हो सकता था। उनके मुकुटों के लगने से उसकी पायल घिसी हुई थी और उस पर जड़ित रत्न अधिक निखरे हुए हो गये थे। वह पायल उसके पैरों में क्वणित हो रही थी। ५५९

❀ मूवहै युलहिनु मुदल्वर् मुन्दैयोर्, ओविल रुदविय परिशि नोङ्गल्बोल्
तेवरु मवुणरु मुदलि नोर्दिशै, तूविय नरुमलर्क् कुप्पै तुन्ऩवे 560

मूवकै उलकिनुम्–तीन प्रकार (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों के; मुतल्वर्–नायकों ने; मुन्तैयोर्–मैं पहले, मैं पहले करते हुए; ओविलर्–निरन्तर; उतविय–लाकर जो दिये; परिचिन्–उन उपहारों के; ओङ्कल् पोल्–पर्वत के समान; तेवरुम् अवुणरुम् मुतलिनोर्–देव, असुर और अन्यों के; तिचै–चारों दिशाओं से; तूविय–बरसाये; नऱुमलर्–सुगन्धित फूलों की; कुप्पै–राशियाँ; तुन्न–ठस भरकर पड़ी रहीं। ५६०

तीनों लोकों के नायक लोग पहले आने की स्पर्द्धा करते हुए आकर निरन्तर उपहार देते रहे। उन उपहारों के पर्वत-से ढेर हो गये थे। देवों और राक्षसों द्वारा चारों ओर से बरसाये सुवासित फूलों के ढेर सर्वत्र पाये जाते थे। ५६०

❀ इन्ऩवो दिव्वऴि नोक्कु मॅन्ऩबदै, उन्ऩलर् करदलञ् जुमन्द वुच्चियर्
मिन्ऩविर् मणिमुडि विज्जै वेन्दर्हळ्, तुन्ऩिनर् मुऱैमुऱै तुऱैयिर् चुऱ्ऱवे 561

मिन्न् अविर्–बिजली के समान चमकनेवाले; मणि मुटि–रत्नकिरीट-धारी; विज्चै वेन्तर्कळ्–विद्याधर राजा लोग; इन्न पोतु–कब; इ वऴि नोक्कुम् ऍन्पतै–इस तरफ़ देखेगा, यह; उन्नलर्–नहीं जानते; कर तलम् चुमन्त उच्चियर्–हाथ सिर पर रखे; तुन्नित्तर्–समीपस्थ होकर; मुऱै मुऱै–यथाक्रम; तुऱैयिल्–अपनी-अपनी निर्दिष्ट सेवा में लगे; चुऱ्ऱ–घेरे रहे, ऐसा। ५६१

विद्याधर राजा लोग थे। उनके रत्नकिरीट बिजली के समान चमकते थे। वे अपने हाथों को जोड़े अपने सिरों पर रखे हुए थे। वे हमेशा सतर्क रहते थे, क्योंकि उन्हें मालूम नहीं हो सका कि रावण किस समय किस ओर दृष्टि फेंकेगा। वे अपने-अपने स्थान पर निर्दिष्ट सेवा में लगे हुए, रावण की दृष्टि की भी प्रतीक्षा करते हुए चारों ओर पाये गये। ५६१

❀ मङ्गैयर् तिऱत्तोरु माऱ्ऱङ् गूऱिनुम्, तङ्गळै यामॅन्त् ताळुन् जॅन्निियर्
अङ्गैयु मुळ्ळमुङ् गुविन्द वाक्कैयर्, शिङ्गवे ऱॅनत्तिऱङ् चित्तर् शेरवे 562

चिङ्क एऱु ऍत–पुरुषकेसरी के समान वलिष्ठ; चित्तर्–सिद्ध लोग; मङ्कैयर् तिऱत्तु–अपनी दासियों के प्रति; ओरु माऱ्ऱम् कूऱिनुम्–(रावण) एक बात कहता तो भी; तङ्कळै आम् ऍन–अपने से कहता है, समझ; ताळ्म् चॅन्नियर्–सिर झुकाते हैं (झुके सिर वाले होकर); अम् कैयुम्–हथेलियों; उळ्ळमुम्–और मन को जोड़कर; कुविन्त आक्कैयर्–शरीर झुकाकर (विनय की मुद्रा में); चेरवे–(रावण के चारों ओर) समीप खड़े रहे, ऐसा। ५६२

कभी सिंहसदृश रावण अपने पास स्थित किसी स्त्री से कोई बात कहता तो वहाँ रहे सिद्ध जाती के लोग सोचते कि वह हमारे प्रति ही कुछ कह रहा है! वे हाथ जोड़े। मन को एकाग्र किये और सिर झुकाये बहुत ही विनय के साथ स्थित रहे। 'सिंह-सदृश' सिद्धों पर भी लग सकता है। ५६२

अन्नव नमैच्चरै नोक्कि याण्डोरु
नन्मॊळि पहरिनु नडुङ्गुञ् जिन्दैयर्
ऍन्नैहोल् पणियॅन विऱैञ्जु हिन्नरर्
किन्नरर् पॅरुम्बयङ् गिडन्द नॅञ्जिनार् 563

किन्नरर्–किन्नर जाति के लोग; अन्नवन्–वह (रावण); अमैच्चरै नोक्कि–मन्त्रियों को देखकर; आण्टु ओरु नल् मॊळि–वह एक शिष्ट-वचन; पकरित्तुम्–कहता तो भी; नटुङ्कुम् चिन्तैयर्–कम्पित-मन होकर; पॅरुम्पयम् किटन्त–बहुत भयाक्रान्त; नॅञ्चित्तार्–मन के साथ; ऍन्नै कोल् पणि–क्या सेवा है; ऍन–ऐसा; इऱैञ्चुकिन्ऱनर्–विनय करते। ५६३

किन्नर लोग पाये गये। अगर रावण अपने अमात्यों से कोई मधुर वचन भी कहता तो वे समझ लेते कि वह हमसे कुछ कह रहा है। बस, सिहर उठते। पास आकर पूछते कि कौन सी सेवा है जो बजा लानी है? यह अत्यन्त विनय के साथ पूछते। ५६३

पिरहर नॆडुन्दिशैप् पॅरुन्दण् डेन्दिय
करदलत् तण्णलैक् कण्णि नोक्किय

नरहिन रामॅन नडुङ्गु नाविनर्
उरहरुन् दम्मन मुलैन्दु शूऴ्वे 564

उरकरुम्–नागलोकवासी; पिरकर नॅट्टुम् तिचै–(जीवों को) दण्ड जहाँ दिया जाता है, उस (दक्षिणी) दिशा के देव; पॅरुम् तण्ट्ट एन्तिय–बड़ा कालदण्ड-धारी; करतलत्तु–हाथ के; अण्णलै–राजा (धर्मदेवता) को; कण्णिन् नोक्किय–अपनी आँखों के सामने जिन्होंने देखा हो, ऐसे; नरकर् आम् अॅन्न–नरकवास योग्य पापियों के समान; नट्टुङ्कुम् नावितर्—स्खलित-वचन (लड़खड़ाती-वाणी वाले) होकर; तम् मतम् उळैन्तु–मन में व्यथित होकर; चूऴ–घेरे खड़े रहे। ५६४

नागलोकवासी रावण के सामने इतना डरे हुए खड़े रहे जितना कि नरक-योग्य जीव उस यमलोक के देव दण्डधर यम को देखकर डरते है, जहाँ जीवों को दण्ड का विधान हो, दण्ड दिया जाता है। उनकी जिह्वाएँ लड़खड़ातीं; मन व्यग्र रहता। वे भी रावण को घेरे खड़े रहे। ५६४

❀ तिशैयुरु करिहळैच् चॅऱ्ऱुत् तेवनुम्
वशैयुऱक् कयिलैयै मऱित्तु वानॅलाम्
अशैयुऱप् पुरन्दरऱ् कडन्द तोळ्हळिन्
इशैयिनैत् तुम्बुरु विशैयि नेत्तवे 565

तिचै उरु करिकळै–दिग्गजों को; चॅऱ्ऱु–हराकर; तेवनुम् वचै उऱ–परमेश्वर को भी अपयश दिलाते हुए; कयिलैयै मऱित्तु–कैलास को उखाड़कर; वान् अॅलाम् अचैवु उऱ–सारा आकाश कँपाते हुए; पुरन्तरन् कटन्त–पुरन्दर को जिन्होंने प्रताड़ित किया; तोळ्कळिन् इचैयितै–उन कन्धों की प्रशंसा; तुम्पुरु–तुम्बुरु; इचैयिन् एत्त–गीत गाते (रहे, ऐसा रावण सभा में विराजमान था)। ५६५

रावण ने दिग्गजों का बल दमन किया था। कैलास पर्वत को उखाड़कर परमेश्वर शिव को भी अपयश दिलाया था। पुरन्दर को हराकर आकाश भर को उद्विग्न कराया था। ऐसे रावण के पराक्रम की प्रशंसा तुम्बुरु गा रहे थे। ५६५

❀ शेणुयर् नॅऱिमुऱै तिऱम्ब लिन्ऱिये
पाणिहळ् पणिशॅयप् पऴुदिल् पण्णिऱै
वीणैयि नरम्बिडै विळैन्द तेमऱै
वाणियि नारदन् शॅवियिन् वाक्कवे 566

चेण् उयर्–अत्युन्नत; नॅऱि मुऱै तिऱम्पल् इन्ऱिये—गति-विधि का उल्लंघन किये विना; पाणिकळ् पणि चॅय–ताल काल-निर्णय का काम करते है, ऐसा; पऴुतु इल्–त्रुटिहीन; पण् निऱै—राग-युक्त; वीणैयिन् नरम्पु इटै–वीणा की तन्त्रियों से; विळैन्त–उत्पन्न; ते मऱै—मधुर वेद-रूप संगीत; वाणियिन्–मुख-स्वर के साथ; नारतन्–नारद ऋषि; चॅवियिन् वाक्क–उसके बीसों कानों में भर रहे थे। ५६६

नारद अपनी वीणा से संगीतमय स्वर निकालते हुए ताल-मेल के साथ श्रुति-शुद्ध, लय-शुद्ध रीति से वेदसमान गन्धर्वगान कर रहे थे। रावण के बीसों कान उसे श्रवण कर रहे थे। ५६६

मेहमॅन्‌ रुरुत्ति वीक्कि विण्णवर्‌ तरुवुम्‌ विज्जै
नाहमुज्‌ जुरन्द तीन्दे नरुपुन लोड ळावित्‌
तोहैयर्‌ तुहिलिड्‌ ड्रोय्क्कु मॅन्नबदोर्‌ तुणुक्कत्‌ तोडुज्‌
जीहर महर वेलैक्‌ कावलन्‌ शिन्द मन्तो 567

मकर वेलै कावलन्‌–मकरालय के देवता वरुण; विण्णवर्‌ तरुवुम्‌–देवों का कल्पतरु; विज्चै नाकमुम्‌–विद्याधर लोक का सुरपुन्नाग; चुरन्त–(अपने फूलों से जो) ढलकते थे; तीम्‌ तेन्‌–वह मधुर शहद; नरु पुनलोटु–सुवासित जल के साथ; अळावि–मिश्रित करके; मॅकम्‌ अॅन्‌ तुरुत्ति वीक्कि–मेघ की मशक में भरकर; तोकैयर्‌ तुकिलिल्‌–(रावण के पास रहनेवाली) स्त्रियों के वस्त्र; तोय्क्कुम्‌–गीला हो जायगा; अॅन्नपतोर्‌ तुणुक्कलुतोटुम्‌–इस डर से (अत्यन्त सावधानी के साथ); चीकरम्‌–जल-सीकर; चिन्त–छिड़का रहे थे। ५६७

मकरालय के अधिदेवता वरुण मण्डप में जल छिड़कने का कार्य कर रहे थे। कैसा जल था? उत्तम जल में आकाश के कल्पतरु से झरनेवाला शहद और नागलोक के सुरपुन्नाग तरुओं से मिलनेवाला शहद मिला हुआ था। मेघ की मशक में उसे भरकर सीकरो में छिड़कता था। यह भय लगा हुआ था कि कहीं रावण की नारियों के वस्त्र पर पड़ जायगा तो रावण का कोप अनर्थ कर देगा। इसलिए बहुत सावधानी से वे जल की बौछार कर रहे थे। ५६७

नरैमलर्त्‌ तादुन्‌ देनु नळिनॅडु महुड कोडि
मुरैमुरै यरैयच्‌ चिन्दि मुरिन्दुहु मणियु मुत्तुम्‌
तरैयिडै युहाद मुन्नन्‌ दाङ्गिनन्‌ ड्ळुवि वाङ्गित्‌
तुरैदोरुन्‌ दॉडर्न्दु निन्रु समीरणन्‌ रुडैप्प मन्तो 568

चमीरणन्‌–वायुदेव; नरै मलर्‌ तातुम्‌–सुगन्धपूर्ण पुष्पों का पराग; तेत्तुम्‌–और शहद; नळि–बड़े; नॅटु–लम्बे; मकुट कोटि–किरीट-कोटि के; मुरै मुरै अरैय–बार-बार टकराने से; चिन्ति मुरिन्तु उकु–टूटकर जो गिरे, वे; मणियुम्‌ मुत्तुम्‌–रत्न और मोती; तरैयिटै–भूमि पर; उकात मुन्नम्‌–गिरे, इसके पहले ही; ताङ्कितन्‌–पकड़कर; तळुवि वाङ्कि–समेट लेकर; तुरै तोरुम्‌ तॉटर्न्तु निन्रु–हर स्थान में निरन्तर खड़े होकर; तुटैप्प–झाड़कर शुद्ध कर रहे थे। ५६८

वायुदेव का क्या काम था? सुवासित पुष्पों से मकरन्द चूते थे। उनसे शहद भी गिरता था। रावण से भेंट करने जो आये उनके किरीटों के आपस में टकराने से रत्न और मोती अलग होकर गिरते थे। समीरण

का काम था कि उनको भूमि पर गिरने से पहले ही ग्रहण कर ले। वे सर्वत्र रहकर बुहारने का काम करते रहे। ५६८

मिन्नुडै वेत्तिरक् कैयर् मॅय्बुहत्, तुन्निडु कञ्जुहत् तुहिलर् शोर्विलाप्
पॉन्नॊडु वॆळ्ळियप् पुरन्द रादियर्क्, किन्नियन् मुऱैमुऱै यिरुक्कै यीयवे 569

पॉन् ऑट्टु–बृहस्पति के साथ; वॆळ्ळि–असुर-गुरु शुक्र; मिन् उटै–चमकीले; वेत्तिर कैयर्–वेत्रपाणी होकर; मॅय् पुक–शरीर जिसमें प्रविष्ट हो, ऐसा; तुन्निट्टु–लिये हुए; कञ्चुक तुकिलर्–कंचुक की पोशाक से अलंकृत; चोर्वु इलर्–बिना आलस्य के; पुरन्तरातियर्क्कु–पुरन्दरादि देवता लोगों को; इन् इयल्–मधुर व्यवहार के साथ; मुऱै मुऱै–उचित प्रकार से; इरुक्कै ईय–आसन की व्यवस्था कर रहे थे, ऐसा। ५६९

स्वर्णदेव बृहस्पति, शुक्लदेव शुक्राचार्य दोनों कंचुकी पहने हुए वेत्र हाथ मे लेकर आलस्य त्यागकर पुरन्दर आदि को उनका योग्य स्थान दिखा रहे थे। आगतों का स्वागत करना और उनके आसन की व्यवस्था करना उनका काम था। ५६९

शूलमे मुदलिय तुऱन्दु शुऱ्ऱिय, शेलैयाऱ् चॅय्यवाय् पुदैत्त शेङ्गैयन्
तोलुडै नॅडुम्बणै तुवैक्कुन् दॊरॅलाम्, कालनिन् ऱिशैक्कुनाट् कडिहै कूऱवे 570

कालन्–कालदेव (यम); चूलमे मुतलिय तुऱन्तु–शूल आदि त्यागकर; चुऱ्ऱिय चेलैयाल्–अपने शरीर पर लपेटे वस्त्र के छोर से; चॅय्य वाय्–लाल मुख को; पुतैत्त–जो ढक रहे थे; चॆम् कैयन्–उन अरुण हाथों के साथ; तोल् उटै नॆटुम् पणै–चमड़ा-मढ़े बड़े ढोलो के; तुवैक्कुम् तोऱु ऎलाम्–पिटते हर समय; इचैक्कुम् नाळ् कटिकै–निर्दिष्ट दिन की घड़ी; वन्तु कूऱ–सभा में आकर बता रहे थे। ५७०

यम का क्या हाल था? ढोल बजाकर घड़ी बतायी जाती। यम का काम था कि वे अन्दर आते और अपने वस्त्र से मुख ढाँपे विनय के साथ घड़ी बतावे। समय-सूचक का काम उनका था। वे अपना शूल आदि त्याग चुके थे। ५७०

नयङ्गिळर् नऱुविरै नान नॅय्यळाय्
वियन्गरुप् पूरमॅन् पञ्जिन् मीक्कॊळीइ
कयङ्गळिन् मरैमलर्क् काडु पूत्तॆन
वयङ्गॊरिक् कडवुळुम् विळक्क माट्टवे 571

वयङ्कु–प्रकाशमान; ऎरि कटवुळुम्–अग्निदेव ने भी; नयम् किळर्–श्रेष्ठतायुक्त; नऱु विरै–सुवासपूर्ण; नानम्–कस्तूरी को; नॅय् अळाय्–घृत से मिलाकर; वियन् करुप्पूरम्–उत्तम कर्पूर को; मॆन् पञ्चिल् मी–नरम रुई पर रख के; कॊळीई–(उस बाती को) जलाकर; कयङ्कळिल्–तालाबों में; मरै मलर् काटु–कमलपुष्प-कानन; पूत्तत्त–फूले, जैसे; विळक्कम् माट्ट–दिये जलाये। ५७१

प्रकाशमान अग्निदेव पर दीया जलाने का जिम्मा था। उन्होंने अनेक दीये जलाये, जिनका तेल श्रेष्ठ और सुगन्धित कस्तूरी और उत्तम घृत का मिश्रण था और कर्पूर को रुई में रखकर उसकी बातियाँ जलायी गयीं। उन्होंने उन्हें जलाशयों पर विकसित कमलों के समान सजाए। ५७१

अदिशय मळिप्पदर् करुळ ऱिन्दुनल्, पुदिदलर् कऱ्पहत् तरुवुम् वीय्यिलाक्
कदिर्नॆडु मणिहळुङ् गऱवै यान्गळुम्, निदिहळु मुऱैमुऱै निन्ऱु नीट्टवे 572

नत् पुतितु अलर्–अच्छे और ताजा फूले हुए; कऱ्पक तरुवुम्–कल्पतरु और; पोय् इला–अभंग; नॆटु कतिर्–लम्बी ज्योति से युक्त; मणिकळुम्–(चिंतामणि आदि) रत्न; कऱवै आन्कळुम्–दुधारू गायें (कामधेनु); नितिकळुम्–(शंख आदि नव-) निधियाँ; अतिचयम् अळिप्पतऱ्कु–रावण को विस्मयगर्भित मनोरंजन करने के लिए; अरुळ् अऱिन्तु–उसकी कृपा की ताक में रहकर; मुऱै मुऱै–अपने-अपने क्रम से; निन्ऱु–खड़ा होकर; नीट्ट–अपना उपहार बढ़ातीं, ऐसे संभ्रम के साथ। ५७२

नवविकसित फूलों के साथ कल्प, संतान, मन्दार, पारिजात, हरिचन्दन के तरु, अमन्द और लम्बी ज्योतियुक्त चिन्तामणि, दुधारू कामधेनु आदि गायें, शंख, (पद्म, महापद्म, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, हीरे आदि) निधियाँ —ये सब रावण को प्रसन्न करने के लिए बारी-बारी से अपना-अपना उपहार वढ़ा रही थीं। तब। ५७२

कुण्डल मुदलिय कुलङ्गॊळ् पेरणि, मण्डिय पेरॊळि वयङ्गि वीशलाल्
उण्डुहॊ लिरविनि युलह मेळिनुम्, ऎण्डिशै मरुङ्गिनु मिरुळिन् ऱॆन्नवे 573

कुण्टलम् मुतलिय–कुण्डल आदि; कुलम् कॊळ् पेर् अणि–उत्तम और बहुमूल्य आभरणों की; मण्टिय–परिपूर्ण; पेर् ऒळि–बड़ी कान्ति; वयङ्कि वीचलाल्–भरपूर फैलती है, इसलिए; उलकम् एळिनुम्–सातों लोकों में; इनि–अब; इरवु उण्टु कॊल्–रात भी है क्या; ऎण् तिचै मरुङ्किनुम्–आठों दिशाओं में सर्वत्र; इरुळ् इन्ऱु–अन्धकार नहीं है; ऎन्न–कहा जाय, ऐसा। ५७३

रावण के कर्ण-कुण्डल और अन्य श्रेष्ठ आभरण घनी कान्ति बिखेर रहे थे। वह प्रकाश सर्वत्र फैला हुआ था। इस वजह से ऊपर के और नीचे के सातों लोकों में क्या कभी रात हो सकेगी? आठों दिशाओं में कहीं अन्धकार का नाम तक नहीं था। ५७३

कङ्गैये मुदलिय कडवुट् कन्नियर्, कॊङ्गैहळ् शुमन्दिडै कॊडियि नॊल्हिडच्
चॆङ्गैयि नरिशियुम् मलरुञ् जिन्दिनर्, मङ्गल मुऱैमॊऴि कूऱि वाऴ्त्तवे 574

कङ्कैये मुतलिय–गंगाजी आदि; कटवुळ् कन्नियर्–(नदी की) देव-कन्याएँ; कॊङ्कैकळ् चुमन्तु–स्तनों को ढोने से; इटै–कमर को; कॊटियिन् ऒल्किट–लता के समान झुकने देते हुए; चॆम् कैयिन्–लाल (नरम और सुन्दर) हाथों से; अरिचियुम् मलरुम्–अक्षत और फूल; चिन्तिनर्–(रावण पर) चढ़ाकर; मङ्कल मुऱै मॊऴि कूऱि–मंगलाशासन के वाक्य कहकर; वाऴ्त्त–'जय जीव' कहतीं, ऐसा। ५७४

गंगाजी आदि दिव्य जल-कन्याएँ, जिनकी कमरें भारी स्तनों के बोझ के कारण लचक-लचक जाती थीं, अपने लाल (मनोरम और कोमल) हाथों से चावल और फूल रावण पर चढ़ाकर मंगलाशासन करके स्तुति के गीत गा रही थीं। ५७४

ऊरुविऱ् ऱोऩ्ऱिय वुरुप्प शिप्पॅयर्क्, कारिहै यार्मुदऱ् कलाप मञ्ञैबोल्
वार्विशिक् करुवियोर् वहुत्त पाणियिऩ्, नारिय रुनड नडिप्प नोक्कियॆ 575

ऊरुविल् तोऩ्ऱिय—श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न; उरुप्पचि पॅयर्—उर्वशी नाम की; कारिकैयार् मुतल्—सुरबाला आदि; नारियर्—नारियाँ; कलाप मञ्ञै पोल्—कलापी मोरों के समान; वार् विचि—फीते से कसे; करुवियोर्—मृदंग आदि के वादकों के; वकुत्त पाणियिऩ्—वादन से निर्दिष्ट ताल-लय में; अरु नटम् नटिप्प—श्रेष्ठ नाच नाचतीं, तव। ५७५

वहाँ मृदंग आदि बाजे बज रहे थे। उन्हीं के ताल-मेल में श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न उर्वशी आदि अप्सराएँ नाच रही थीं। उसका रसास्वादन करते हुए— (नर और नारायण बदरिकाश्रम में तपस्या कर रहे थे। देवेन्द्र ने उनके तप को भंग करने के लिए अप्सराओं को भेजा। श्रीमन्नारायण ने अपने ऊरु से उर्वशी को पैदा किया। उसका सौन्दर्य देखकर अप्सराएँ लज्जित होकर चली गयीं।)। ५७५

इरुन्दन तुलहङ्ग ळिरण्डु मॊऩ्ऱुन्दन्
अरुन्दव मुडैमैयि नळवि लाऱ्ऱलिल्
पॊरुन्दिय विरावणऩ् पुरुवक् कार्मुहक्
करुन्दडङ् गण्णियर् कण्णिऩ् वॆळ्ळत्ते 576

उलकङ्कळ् इरण्टुम् ऒऩ्ऱुम्—दो और एक (तीनों) लोकों में; तऩ् अरुम् तवम् उटैमैयिऩ्—अपने अपूर्व तपस्या के होने से; अळवु इल् आऱ्ऱल्—(प्राप्त) अपार पराक्रम का स्वामी; इरावणऩ्—रावण; पुरुव कार्मुक—भौंहें रूपी धनुओं के साथ; करुम् तटम् कण्णियर्—काली और विशाल आँखों की; कण्णिऩ् वॆळ्ळत्ते—दृष्टि रूपी प्रवाह में; इरुन्तऩऩ्—तैरता रहा। ५७६

रावण सभा मे विराजमान था। उसने ऐसा कठोर तप किया था, जैसा तीनों लोकों का और कोई नहीं कर सकता था। अतः उसे अपार बल प्राप्त था। उस पर नारियाँ बड़े प्रेम के साथ दृष्टि दिये रहती थीं। कवि कहते है कि रावण उनकी काली और दीर्घ आँखों की दृष्टि के प्रवाह में तैरता रहा। ५७६

❀ तङ्गैयु मव्वऴि तलैयिऱ् ऱाङ्गिय
शॆङ्गैयळ् शोरियिऩ् ऱारै शॆऱ्न्दिऴि

कॊङ्गैयळ् मूक्किलळ् कुऴैयिऩ् कादिलळ्
मङ्गुलि नॊलिपडत् तिऱन्द वायिऩाळ् 577

अ वऴि–तव; तङ्कैयुम्–(रावण की) बहिन; तलैयिल् ताङ्किय–सिर पर रखे; चॆम् कैयळ्–हाथों के साथ; चोरियिऩ् तारै–रक्त की धारा; चेर्न्तु इऴि–जिन पर बहती रही; कॊङ्कैयळ्–उन स्तनों के साथ; कुऴैयिऩ् कातु इलळ्–कुण्डल सहित कानों से रहित; मङ्कुलिऩ् ऒलि पट–मेघ-गर्जन करते हुए; तिऱन्त वायिऩाळ्–खुले मुख के साथ। ५७७

जब रावण इस ठाट-बाट के साथ राजदरबार में विराजमान रहा, तब (उसकी बहिन शूर्पणखा) हाथ सिर पर रखते हुए, स्तनों पर रक्त को बहने देते हुए नासिकाहीन मुख खोलकर मेघगर्जन-से उच्च स्वर में—। ५७७

❀ मुडैमिडै वायितिऩ् मुऱैयिट् टार्हलि
कडैयुहत् तॆऴुमॊलि काट्टक् कान्दुवाळ्
कुडदिशैच् चॆक्करिऱ् चेन्द कून्दलाळ्
वडदिशै वायिलिऩ् वन्दु तोऩ्ऱिऩाळ् 578

मुटै मिटै—मांस-गन्ध-युक्त; वायितिऩ्–मुख से; मुऱैयिट्टु–शिकायत करते हुए; आर् कलि–सघोष समुद्र से; कटै युकत्तु–युगान्त में; ऎऴुम् ऒलि–जो उठती है, उस ध्वनि को; काट्ट–प्रकट करते हुए; कान्तुवाळ्–जो मुरझायी रही; कुट तिचै चॆक्करिल्–पश्चिमी दिशा के गगन की लालिमा से; चेन्त कून्तलाळ्–अधिक लाल केश वाली; वट तिचै वायिलिऩ्–उत्तर के द्वार पर; वन्तु तोऩ्ऱिऩाळ्–आकर प्रकट हुई (शूर्पणखा)। ५७८

मांसगन्धयुक्त अपने मुख से प्रलाप करती हुई उत्तरी द्वार पर आ प्रकट हुई। उसने जो शोर मचाया वह युगान्त के नाद के समान भयंकर था। अग्नितप्त-सी, लाल सन्ध्या-राग से भी अधिक लाल केश के साथ वह आयी। ५७८

तोऩ्ऱलुन् दॊऩ्ऩह ररक्कर् तोहैयर्
एऩ्ऱॆदिर् वयिऱलैत् तिरङ्गि येङ्गिऩार्
मूऩ्ऱुल हुडैयवऩ् ऱङ्गै मूक्किलळ्
ताऩ्ऱऩि यवळ्वरत् तरिक्क वल्लरो 579

तोऩ्ऱलुम्–प्रकट होते ही; तॊल् नकर्–प्राचीन नगर की; अरक्कर् तोकैयर्–राक्षस-स्त्रियाँ; ऎतिर् एऩ्ऱु–सामने स्थित हो; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटते हुए; इरङ्कि एङ्किऩार्–अनुताप करके रोईं; मूऩ्ऱु उलकु उटैयवऩ्–तीनों लोकों के पति की; तङ्कै–बहिन; मूक्कु इलळ्–नासिका से हीन; तऩि अवळ् ताऩ् वर–अकेली स्वयं आए; तरिक्क वल्लरो–सह सकेंगी क्या। ५७९

उसके उस रूप में प्रकट होने पर उस प्राचीन नगर की राक्षस-नारियाँ सामने आकर (अपनी छाती) अपना पेट पीटते हुए अनुताप के साथ रोयीं।

तीनों लोकों के स्वामी की सगी बहिन थी वह। उसकी यह स्थिति ! उसकी नाक कटी हुई है ! अकेली आ रही है। यह देखकर कोई सब्र कर सकता है क्या ? । ५७९

❀ पॉरुक्कॅन्न नोक्किन्नर् पुहल्व दोर्हिलर्
अरक्करु मिरैत्तन रशन्नि येर्न्नक्
करत्तोडु करड्गळैप् पुडैत्तुक् कण्गळिन्
नॅरुप्पॅळ विळित्तुवाय् मडित्तु निऱ्किन्ऱार् 580

अरक्करुम्–राक्षसों ने भी; पॉरुक्कु ॲन्न नोक्कित्तर्–सहमकर देखा; पुकल्वतु ओर्किलर्–क्या कहना, नहीं जानते; अचनि एऱु ॲन्न–अशनिराज के समान; करत्तु ओटु करङ्कळै–हाथों से हाथों को पीटकर: कण्कळिन् नॅरुप्पु ॲळ–आँखों से अंगार निकालते हुए; विळित्तु–आँख फाड़े देखकर; वाय् मटित्तु–दाँत पीसकर; निऱ्किन्ऱार्–खड़े रहे । ५८०

राक्षसों ने भी सहमकर देखा। क्या कहना —यह भी न सूझा। अशनि का-सा नाद पैदा करते हुए हाथों से हाथ मारे। उनकी आँखों से आग उगलने लगी। दाँत पीसते हुए आँखें फाड़े देखते हुए खड़े के खड़े रह गये। ५८०

❀ इन्दिरन् पालदो वुलह मीन्ऱपेर्, अन्दणन् पालदो वाऴि यान्नदो
शन्दिर मवुलिपाऱ् रड्गु मेहोलो, अन्दर मिदुवॅन्न वळ्ल्हिन् ऱार्शिलर् 581

चिलर्–(उनमें) कुछ; इन्तिरन् पालतु ओ–क्या इन्द्र की तरफ़ से हुआ है; उलकम् ईन्ऱ–लोकों के सर्जक; पेर् अन्तणन् पालतो–बड़े ब्राह्मण (ब्रह्मवित) ब्रह्मा की तरफ़ से क्या; आऴियान् अतो–चक्रधारी (क्षीर-) सागर-निवासी का है; चन्तिर मवुलि पाल्–चन्द्रमौलि पर; तङ्कुमे कॊलो–इसका जिम्मा रहता है; अन्तरम् इतु–सितम है यह; ॲन्न अऴल्किन्ऱार्–समझकर कोप से तपते हैं। ५८१

उनमें कुछ राक्षसों ने बड़े क्रोध के साथ प्रश्न किया कि क्या यह घोर अपराध इन्द्र की तरफ़ से हुआ है ? या विश्व के सृष्टि-कर्ता ब्राह्मण (ब्रह्मवित) द्वारा हो गया ? या क्षीरसागरशायी, चक्रधर श्रीविष्णु के हाथों हो गया है ? (आऴि का अर्थ चक्र भी है, सागर भी।) या चन्द्र-मौलीश्वर पर ही यह लगेगा ? जो हो यह बड़ी आफ़त है ! वे क्रोध से उबले। ५८१

पोरिलान् पुरन्दर नेवल् पूण्डनन्, आरुला नेमिया नाऱ्ऱ ऱोऱ्ऱुप्पोय्
नीरिन्ना नॅरुप्पनान् पॉरुप्पि नान्निनि, यार्होलो मीदॅन्न वरैहिन् ऱार्शिलर् 582

चिलर्–(और) कुछ; पुरन्तरन्–पुरन्दर; पोर् इलान्–युद्ध छोड़कर; एवल् पूण्टनन्–सेवक बन गया; आर् उलाम् नेमियान्–तीक्ष्ण चक्रधारी; आऱ्ऱल् तोऱ्ऱु पोय्–बल मे हारकर; नीरिनान्–(क्षीरसागर का) जलवासी हो गया है; नॅरुप्पु

अत्तान्—अग्नि-समान शिव; पोरुप्पिन्नान्—पर्वतवासी हो गया; इनि—अब; यार् कोल् आम् ईतु—यह कौन हो सकता है; अंन—ऐसा; अइकिन्नार्—पूछते। ५८२

और कुछ राक्षसों ने यों कहा— पुरन्दर तो युद्ध से एक दम विरत होकर रावण का नौकर बन गया है। तीक्ष्ण चक्र के रखनेवाले विष्णु भी रावण से हारकर (क्षीर-सागर-) जलवासी हो गये। अग्नि-सम शिवजी (डर से) पर्वत पर चढ़ बैठे हैं। फिर किसने यह काम किया होगा ? । ५८२

❀ शॅप्पुदड़् कुरियवर् तॅव्व रारुळर्
मुप्पुड़त् तुलहमु मडङ्ग मूड़िय
इप्पुड़त् तण्डत्तोर्क् कियैव दन्ड़ि
अप्पुड़त् तण्डत्ता रारॅन् ड़ार्शिलर् 583

चिलर्—(और) कुछ; तॅव्वर्—शत्रु; चॅप्पुतड़्कु उरियवर्—कहाने योग्य; यार् उळर्—कौन हैं; मु पुड़त्तु उलकमुम्—तीनों लोकों को; अटङ्क मूटिय—पूर्ण रूप से जिसने अपने में समा लिया है; इ पुड़त्तु अण्टत्तोर्क्कु—इस तरफ़ के अण्ड के वासियों का; इतु इयैवतु अन्ड़ु—यह हो सकने का काम नहीं; अ पुड़त्तु—उस तरफ़ के; अण्टत्तोर् आम्—अण्ड के वासियों का ही हो सकता है; आर्—कौन हैं (वे); अॅन्ड़ार्—पूछते। ५८३

और कुछ राक्षसों ने तर्क किया। हमारे रावण का शत्रु कहाने योग्य है कौन ? आकाश, पाताल और भूलोक को अन्तर्निहित रखनेवाले इस अण्डगोल का कोई भी यह नही कर सकता ? अपराण्ड (बहिरण्ड) में भी कौन है ? । ५८३

अॅन्नैये यिरावणन् ड़ङ्गै यॅन्ड़पिन्, अन्नैये यॅन्ड़डि वणङ्ग लन्ड़िये
उन्नवे यॊण्णुमो वॊरुव रालिवळ्, तन्नैये यरिन्दन डाॅन् ड़ार्शिलर् 584

चिलर्—कुछ; अॅन्नैये—यह क्या (आश्चर्य); इरावणन् तङ्कै—रावण की बहिन; अॅन्ड़ पिन्—यह जानने के बाद भी; अन्नैये अॅन्ड़ु—माताजी कहकर; अटि वणङ्कल् इन्ड़ि—चरण में विनत हुए बिना; ऑरुवराल्—किसी से; उन्नवे ऑण्णुमे—(ऐसी बात) सोची भी जा सकेगी क्या; इवळ्—इसने; तन्नैये तान् अरिन्तनळ्—खुद अपने अंगों को काट लिया है; अॅन्ड़नर्—बोले। ५८४

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान लगाया। यह क्या आश्चर्य हो गया ! रावण की छोटी बहिन जानने पर कोई भी 'माताजी' कहकर उसके पैरों पर झुक जायगा। इसको छोड़कर वह ऐसा काम मन में भी नहीं ला सकेगा। इसलिए अवश्य इसने स्वयं अपने अंग काट लिये हैं। ५८४

शीड़्पिड़न् दार्क्किदु तुणिय वॊण्णुमो
इड़्पिड़न् दार्तमक् कियैव शॅय्दिलळ्

कऱ्पिऱन् दाळॅन्नफ् करन्गो लामिवळ्
पॉऱ्पऱै याक्किनन् पोलॅन् ड्राऱ्शिलर् 585

चिलर्–कुछ; चॉल् पिऱन्तार्क्कु–कीर्तिमानों को; इतु तुणिय ऒण्णुमो–(स्त्री के अंग काटने का) यह काम करने योग्य है क्या; इल् पिऱन्तार्क्कु इयॆव–कुलीन स्त्री के लिए उचित काम; चॅय्तिलळ्–इसने नहीं किया; कऱ्पु इऱन्ताळ्–शील को मारा है; ॲन्न–(कुछ ऐसा) देखकर; इवळ् पॉऱ्पु–इसके रूप को; अऱै आक्कितन्–विकृत कर दिया; करन् कॉल् आम्–खर ने ही शायद; ॲन्ड्रार्–बोले। ५८५

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान किया— गौरवपूर्ण कुल में उत्पन्न किसी के लिए भी ऐसा करना सूझ सकता है क्या ? (इसलिए मेरा मत है—) इसने कुलीन स्त्रियों के लिए उचित कार्य नहीं किया होगा। अपना शील त्याग दिया होगा। इसलिए खर ने ही इसका अंग-भंग करके रूप को विकृत करा दिया है। ५८५

तत्तुरु शिन्दैयर् तळरुन् देवरिप्
पित्तुऱ वल्लरे पिळ्ळैप्पिल् शूळ्च्चियार्
मुत्तिऱत् तुलहैयु मुडिक्क वॅण्णुवार्
इत्तिऱम् बुणर्त्तन रॅन्गिन् ड्राऱ्शिलर् 586

तत्तु उरु चिन्तैयार्–मन डगमगाकर; तळरुम्–निर्बल रहनेवाले; तेवर्–देव; इ पित्तु उऱ वल्लरे–यह पागलपन कर सकनेवाले हैं क्या; पिळ्ळैप्पु इल् चूळ्च्चियार्–अचूक तन्त्रशाली; मु तिऱत्तु उलकैयुम्–तीनों तरह (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों को; मुटिक्क ॲण्णुवार्–मिटाना चाहनेवाले कोई; इ तिऱम् पुणर्त्तनर्–यह काम कर चुके होंगे; ॲन्ड्रार्–कहा; चिलर्–कुछ ने। ५८६

देव यह पागलपन नहीं कर सकते, क्योंकि उनका मन रावण के डर से हड़बड़ाता रहता है। वे निर्बल बने हुए हैं। अचूक तन्त्रशाली, तीनों लोकों के नाश को चाहनेवाले किसी ने यह काम किया है। —ऐसा कुछ राक्षसों ने कहा। ५८६

इन्नियॊरु कऱ्पमुण् डॅन्ऩि नन्ड्रिये
वनैहळल् वयङ्गुवाळ् वीरर् वल्लरो
पनिवरु कानिडॅप् पळिप्पि नोन्बुडै
मुनिवरर् वॅहुळियिन् मुडिवॅन् ड्राऱ्शिलर् 587

चिलर्–(और) कुछ (राक्षसों) ने; इनि ऒरु कऱ्पम् उण्टु–अब किसी दूसरे कल्प में होगा; ॲन्निल् अन्ड्रिये–यह बात छोड़कर; वनै कळल्–पायल पहने हुए; वयक्कु वाळ्–प्रकाशमान तलवार धारण किये रहनेवाले; वीरर्–(इस कल्प के) वीर; वल्लरो–समर्थ हैं क्या; पनि वरु कान् इटै–शीतल कानन में; पळिप्पु इल् नोन्पु उटै–अनिन्द्य व्रतधारी; मुनिवरर्–मुनिवरों के; वॅकुळियिन् मुटिव–कोप का फल है; ॲन्ड्रार्–कहा। ५८७

ऐसा काम किसी दूसरे कल्प में हो सकता है तो हो सकता है। इस कल्प का कौन पायलधारी असिहस्त होगा जो यह कर सकेगा ? इसलिए यह अवश्य उन मुनिवरों के कोप का फल है, जो ठण्डे जंगल में अनिन्द्य तपोव्रत में लगे हैं। ५८७

❀ करैयरु तिरुनहर्क् करुङ्ग णङ्गैमार्
निरैवळैत् तळिर्क्कर नॅरित्तु नोक्किनर्
पिरैयुरु पालॅन्न निलैयिड़् पिन्ड़िय
उरैयिन्न रौरुवर्मु न्नॊरुवर् मुन्दिन्नार् 588

करै अरु तिरुनकर्–असीम सम्पत्तिशाली इस श्रीनगर लंका की; करुम् कण् नङ्कैमार्–नीलाक्षी स्त्रियों ने; निरै वळै–पंक्तिवद्ध कंकणों से भूषित; तळिर् करम्–पल्लव-सम हाथों को; नॅरित्तु–मलते हुए; नोक्कित्तर्–देखा; पिरै उरु पाल् ॲन–जामन-लगे दूध की तरह; निलैयिल् पिन्ड़िय–स्खलित (अव्यवस्थित); उरैयित्तर्–बोली बोलते हुए; ऑरुवर् मुन् ऑरुवर्–एक के आगे एक; मुन्तित्तार्–पहले आईं। ५८८

राक्षस पुरुषों की यह बात थी। स्त्रियों ने क्या किया ? इसका वर्णन आगे मिलता है। असीम सम्पत्तिशाली उस नगर की वासिनी, काली आँखों की सुन्दर राक्षसियों ने पंक्ति में कंकणों से भूषित अपने हाथ मलते हुए देखा। जामन-लगे दूध के समान उनकी बोली अव्यवस्थित रही। वे एक के पहले एक दौड़ती आयीं। ५८८

❀ मुळविन्निल् वीणैयित् मुरनल् याळिनिल्
तळुविय कुळलिनिड़् चङ्गिड़् डारैयिल्
ॲळुहुर लन्ड़िये यॅन्ऱु मिल्लदोर्
अळुहुरल् पिरन्ददव् विलङ्गैक् कन्ड़रो 589

मुळविन्निल्–'मत्तळम्' (मृदंग-सम बाजे) से; वीणैयिल्–वीणा से; मुरल् नल् याळिन्निल्–सुरीले श्रेष्ठ 'याळ' नामक वाद्य से; तळुविय कुळलितिल्–संगीतमय बाँसुरी से; चङ्किल्–शंख वाद्य से; तारैयिल्–लगातार; ॲळु कुरल्–उठनेवाला नाद; अन्ड़िये–नहीं आया पर; अन्ऱु–उस दिन; अ इलङ्कैक्कु–उस लंका के लिए; ऍन्ऱुम् इल्लतु ओर्–अभूतपूर्व एक; अळुकुरल् पिरन्ततु–रुदन-स्वर उठा। ५८९

साधारण रूप से लंका में 'मद्दल' (मृदंग-सा वाजा) सुरीला याळ, संगीतमयी बाँसुरी, शंख —इन वाद्यों का निरन्तर गान सुनाई देता था। पर आज इसके विपरीत, अभूतपूर्व रीति से रुदन का स्वर उठा। ५८९

❀ कळ्ळुडै वळ्ळमुड् गळित्तु वॅम्मिय
उळ्ळमु मॊरुवळिक् किडक्क वोडिनार्
वॆळ्ळमु नाणुड़ विरिन्द कण्णिनर्
तळ्ळुरु मरुङ्गिन्नर् तळोइक्कॊण् डेहिन्नार् 590

वॆळ्ळमुम् नाण् उऱ–वाढ़ को भी शरमानेवाले; विरिन्त कण्णितर्–अश्रुप्रवाह से भरी आँखों से युक्त स्त्रियाँ; फळ् उटै वळ्ळमुम्–सुरा-भरे प्यालों और; कळितुतु वॆम्पिय उळ्ळमुम्–सुरापान से गरम हुए मनों को; और वळि किटक्क–एक ओर रहने देकर; ओटित्तार्–दौड़ीं; तळ्ळुऱ–बल खानेवाली; मरुङ्कितर्–कमरों के साथ; तळीइ कॊण्टु–आपस में पकड़ लेते हुए; एकित्तार्–शूर्पणखा के पास गईं। ५९०

स्त्रियाँ सुरापान में लगी रहीं। उन्होंने सुरा का प्याला और पीने से उत्तप्त मन दोनों को एक ओर रख दिया। उनकी आँखें वाढ़ को भी शरमाती हुई अश्रुजल से भर गयीं। वे दौड़ीं। उनकी कमरें लचकीं। एक दूसरे को पकड़ती हुई, सहारा लेती हुई शूर्पणखा के पास गयीं। ५९०

❀ नान्दह वुळ्वर्मे नाडुन् दण्डत्तार्
कान्दिन मनत्तिनर् पुलवि कॆम्मिहच्
चॆन्दह णदिहमुज् जिवन्दु नीरुह
वेन्दनुक् किळैयव डाळिन् वीळ्न्दनर् 591

नान्तक उळवर् मेल्–तलवार-कृषक (अपने पतियों) को; नाटुम् तण्टत्तार्–दण्ड देने को आतुर स्त्रियाँ; कान्तिन मनत्तिनर्–कोपसंतप्त मन के साथ; पुलवि कॆ मिक–मान के बढ़ने से; चॆन्त कण् अतिकमुम् चिवन्तु–लाल आँखों को और अधिक लाल करते हुए; नीर् उक–आँसू निकालकर; वेन्तत्तुक्कु इळैयवळ्–(राक्षस-) राजा की छोटी बहिन के; ताळिल् वीळ्न्तनर्–पैरों पर गिरीं। ५९१

कुछ स्त्रियाँ अपने तलवार के धनी पतियों से खीझ गयी थीं। वे उनको दण्ड देने की खोज में थीं। उनका मन गरम था और आँखें लाल थीं। अब डर के कारण उनकी आँखें अधिक तीव्र लाल हो गयीं। वे आकर अपने राजा की बहिन शूर्पणखा के पैरों पर गिरीं। ५९१

पॊऱ्ऱलै मरहदप् पूह नोवुऱच्, चुऱ्ऱिय मणिवडन् दूङ्गु मूशलिन्
मुऱ्ऱिय पाडलै मुनिवुऱ् ऱेङ्गिनार्, शिऱ्ऱिडै यलमरत् तॆरुवु शेर्हिन्ऱार् 592

पॊन् तलै–सिरों पर स्वर्ण-सदृश फलों से भरे; मरकत पूकम्–मरकतवर्ण पूगतरुओं को; नोवु उऱ–कष्ट देते हुए; चुऱ्ऱिय–लपेटकर बँधे हुए; मणि वटम् तूङ्कुम्–मणिमय जंजीरों से लटकनेवाले; ऊचलिन्–झूलों में रहकर; मुऱ्ऱिय आटलै–उच्चतम वेग से झूलना; मुनिवु उऱ्ऱु–कोप से छोड़कर; एङ्कितार्–दुखित जो हुईं, वे; चिऱ् इटै अलमर–पतली कमरों को दुखने देते हुए; तॆरुवु चेर्कित्ऱार्–वीथी में आ गईं। ५९२

कुछ स्त्रियाँ पूगतरुओं से बँधे झूलों में बैठकर झूल रही थीं। वे पूगतरु मरकततरु के समान हरे और मनोहारी थे और उनके सिरों पर स्वर्ण-सम फल लगे थे। उन तरुओं को संकट देते हुए स्त्रियों का झूलना उच्चतम दशा पर था। जब उन्होंने शूर्पणखा को देखा तो उन्होंने गुस्से के

साथ झूलना छोड़ा। पतली कमर को कष्ट देती हुई वे वीथी में आ गयीं। ५९२

❀ ऍळुवॅन्न	मलैयॅन्न	वॅळुन्द	तोळ्हळैत्
तळुविय	वळैत्तळिर्	नॅहिळ्त्	तामरै
मुळुमुहत्	तिरुहयत्	मुत्ति	न्नालिहळ्
पॉळिदरच्	चिलरुळम्	पॉरुमि	विम्मुवार् 593

चिलर्-(और) कुछ (राक्षसी स्त्रियाँ); ऍळु ॲंत—स्तम्भ-सम; मलै ॲंत—पर्वत-से; ॲंळुन्त—उन्नत; तोळ्कळै-(अपने पतियों के) कन्धों से; तळुविय—लिपटे रहे; वळै तळिर्—वलय-भूषित पल्लवों (हस्तों) को; नॅकिळ—अलग करके; तामरै मुळु मुकत्तु—वदन रूपी पुष्ट कमल पर की; इरु कयल्—दो कयलों (आँखों) में; मुत्तिन् आलिकळ्—मोती-से अश्रुकण; पॉळि तर—भरते हुए; उळम् पॉरुमि—मन को दुख से भरकर; विम्मुवार्—सिसकीं। ५९३

अन्य कुछ राक्षस-नारियाँ अपने पतियों के स्तम्भ और पर्वत-सम कन्धों से लिपटी रहीं। जब उन्हें समाचार मिला तो उनके वलय-भूषित पल्लव-सम हाथ ढीले पड़ गए। पुष्ट कमल-सम मुखों में रही कयल मछली-सी आँखों में मोतियों के समान अश्रुकण ढलक आये। उनका मन दुखी हुआ और वे सिसकियाँ भरने लगीं। ५९३

नॅय्न्निलैय	वेलरश	न्नेरुनरै	यिल्लान्
इन्निलैयु	णर्न्दबोळु	दॅन्निलैय	नॅन्ना
मैन्निलैनॅ	डुङ्गणमळै	वानिलैय	वाहप्
पॉय्न्निलैम	रुङ्गिन्नर्	पुलम्बिन्नर्	पुरण्डार् 594

नेरुनरै इल्लान्—टक्कर लेनेवाला जिसकी कोई नहीं रहा; नॅय् निलैय—घृत-लगे; वेल् अरचन्—भाले का धारण करनेवाला राजा (रावण); इ निलै उणर्न्त पॉळुतु—(शूर्पणखा की) यह स्थिति जब जानेगा; ॲं निलैयन् ॲन्ना—किस स्थिति का होगा, यह सोचकर; मै निलै—अंजनयुक्त; नॅटुम् कण्—आयत आँखों के; मळै वान् निलैयतु आक—जल-वर्षक मेघ की-सी स्थिति में आते; पॉय् निलै मरुङ्कितर्—मिथ्या-कटि स्त्रियाँ; पुरण्टार् पुलम्पित्तर्—लोटीं और विलपीं। ५९४

कुछ स्त्रियों के मन में यह प्रश्न उठा कि अजातशत्रु धृतरंजित भाले के स्वामी, रावण को जब शूर्पणखा की स्थिति मालूम होगी तो उसकी स्थिति क्या होगी? तो उनकी काजल-लगी दीर्घ आँखें जलवर्षक मेघों के समान हो गयीं। नाम-मात्र की कटि से युक्त वे भूमि पर लोटती हुई विलाप करने लगीं। ५९४

मनन्दलै	वरुङ्गत्तलि	निन्शुवै	मरुन्दार्
कनन्दलै	वरुङ्गुळल्	शरिन्दुहलै	शोर

ननन्दलैय कोङ्गैह डदुम्बिड नडन्दार्
अनन्दलिळ मङ्गैय रळुङ्गिययर् हिऩ्ऱार् 595

अत्तन्तल् इळ मङ्कैयर्–सोती रहीं (जो) वे कुछ तरुणी रमणियाँ; मत्तम् तलै–मन में इच्छा करने से; वरु–होनेवाले; कत्तवु इऩ्ऩ् चुवै–सपनों का मधुर रस; मऱन्तार्–भूलकर; कत्तम् तलै वरुम्–घन-सदृश विशिष्ट; कुळल् चरिन्तु–केश को खुलकर बिखरने देते हुए; कलै चोर–वस्त्र को खिसकने देते हुए; नत्तम् तलैय–पृथुल; कोङ्कैकळ्–स्तनों को; ततुम्पिट–उछलने देते हुए; नटन्तार्–पैदल आईं; अळुङ्कि–दुखी होकर; अयर्किऩ्ऱार्–श्रांत हुईं। ५९५

कुछ स्त्रियाँ निद्रा कर रही थीं। उनका मन आनन्द के साथ स्वप्न देखने लगा था। जब उन्हें यह समाचार मिला तो स्वप्न का रस भूलकर उठीं। मेघ-सम केश खुलकर बिखर गये। वस्त्र भी ढीले हो खिसकने लग गये। जब वे पैदल चलने लगीं तो उनके बड़े-बड़े स्तन उछलने लगे। वे बहुत दुखी हुईं। ५९५

अङ्गैयि नरन्गयिलै कोण्डदिऱ लैयन्
तङ्गैनिलै चिङ्गिदुहो लॅन्ऱुतळर् हिऩ्ऱार्
कोङ्गैयिणै शॅङ्गैयिन् मलैन्दुकुलै कोवै
मङ्गैयर्ह णङ्गैयडि वन्दुविळु हिऩ्ऱार् 596

कुलै कोतै मङ्कैयर्कळ्–स्त्रियाँ, जिनके केश छूटे और बिखरे थे; अम् कैयिल्–अपनी हथेलियों में; अरऩ् कयिलै कोण्ट–हर के कैलास को जिसने उखाड़ा था, उस; तिऱल् ऐयऩ्–पराक्रमी राजा की; तङ्कै निलै–बहिन की दशा; इङ्कु इतु कोल्–यहाँ यह हुई तो; ऍऩ्ऱु तळर्किऩ्ऱार्–यह सोचकर क्लान्त हुईं; कोङ्कै इणै–स्तन-द्वय पर; चॅम् कैयिल् मलैन्तु–अपने लाल हाथों से पीटती हुईं; नङ्कै अटि वन्तु–उस नायिका के चरणों पर आकर; विळुकिऩ्ऱार्–गिरती है। ५९६

कुछ स्त्रियाँ, जिनके केश खुले हुए बिखरे थे, अपनी छाती पीटते हुए रोने लगी। उन्हें दुख इस बात का था कि अपनी हथेली में जिसने हर के कैलास पर्वत को उठाया था, उस पराक्रमी स्वामी की बहिन की भी यह हालत हो गयी। रोती हुई आकर वे नायिका के पैरों पर गिरीं। ५९६

इलङ्गैयिल् विलङ्गुमिवै यॆय्दलिल वॆन्ऱुम्
वलङ्गैयि लिलङ्गुमयिन् मन्नऩुळ ऎऩ्ऩा
नलङ्गैयि लहन्ऱदुहो नम्मिऩ्ऩ नॆन्दार्
कलङ्गलिल् करुङ्गणिणै वारिहलुळ् हिऩ्ऱार् 597

वलम् कैयिल् इलङ्कुम् अयिल्–दाहिने हाथ में प्रकाशमान भाला रखनेवाला; मऩ्ऩऩ् उळऩ्–राजा है; ऍऩ्ऩा–यह सोचकर (डर से); ऍऩ्ऱुम्–सदा; इलङ्कैयिल्–लंका के; विलङ्कुम्–जानवर भी; इवै ऍय्तल् इल–ऐसी आफ़त के भागी नहीं होते थे; नम्मिऩ्–हमसे; नलम् कैयिल् अकऩ्ऱतु कोल्–भलाई छोड़कर अलग हो गई

शायद; अँत्–यह सोचकर; नैन्तार्–दुख से क्षीण होती हुई; कलङ्कलिल्–व्यथा के कारण; करुम् कण् इणै–काली दोनों आँखों से; वारि–जल को; कलुळ्कित्तार्–गिराती हैं। ५९७

अपने दाहिने हाथ में भाला लिये हुए राजा रावण विद्यमान था। उसके कारण लंका में किसी जानवर पर भी ऐसा संकट नहीं आया था। 'अब क्या हमारी सुरक्षितता चली गयी ?' यह सोचकर वे व्यथित हुईं। व्याकुलता के कारण उनकी काली आँखों के जोड़ों में अश्रु भर आया। ५९७

❀ अन्‌त्रितैय वन्‌रुय रिलङ्गैनह रॅय्द
नित्‌त्रव रिरुन्दवरो डोडुनॅरि तेडक्
कुन्‌त्रितडि वन्दुपडि कॉण्डलॅन मन्‌नन्
पॊन्‌त्रिणि पॊलन्गळल् विळुन्दनळ् पुरण्डाळ् 598

अँत्‌रु इतैय–ऐसा, ऐसा; इलङ्कै नकर्–लंका नगर; वन् तुयर् अॅय्त–कठोर दुख को प्राप्त हुआ, तब; नित्‌त्रवर् इरुन्तवर् ओटु–सभा में जो खड़े रहे वे, जो बैठे रहे उनके साथ; ओटु नॅरि तेट–भागने का मार्ग देखने लगे; कुन्‌त्रिन् अटि वन्तु पटि–पर्वत के तल में आकर जमनेवाले; कॉण्टल् अँत–घन के समान; मन्‌नन्–(राक्षस) राजा रावण के; पॊन् तिणि–स्वर्णमय; पॊलन् कळल्–सुन्दर पायल से अलंकृत पैरों पर; विळुन्तनळ्–गिरी; पुरण्टाळ्–लोटी (शूर्पणखा)। ५९८

इस तरह लंका का नगर ही व्याकुलता से भर गया। तब रावण की सभा में शूर्पणखा आयी और रावण के स्वर्णमय पायलधारी चरणों पर गिरी। जब वह वहाँ आयी तो सभा में जो खड़े रहे और जो बैठे रहे, सभी भागने का मार्ग ढूँढ़ने लगे। जब वह रावण के पैरों पर गिरी, तब पर्वत के तल में मेघ आकर पड़ा हो, ऐसा लगा। वह गिरकर लोटने लगी। ५९८

मूडिय तिरुट्पडल मूवुलहु मुऱ्‌ऱुच्
चेडनुम् वॅरुक्कोडु शिरत्तॊहै नॅळित्तान्
आडिन कुलक्किरि यरक्कनु मयिर्त्तान्
ओडिन तिशैक्करिह ळुम्बरु मॊळित्तार् 599

मू उलकुम् मुऱ्‌ऱु–तीनों लोकों में सर्वत्र; इरुळ् पटलम् मूटियतु–अँधेरा-पटल ढँक गया; चेटनुम्–शेषनाग ने भी; वॆरु कॊटु–डरकर; चिरम् तॊकै–सिरों की राशि को; नॅळित्तान्–लचकाया; कुल किरि आटिन–कुलपर्वत हिल उठे; अरुक्कनुम् अयिर्त्तान्–सूर्यदेव भी ठिठके; तिचै करिकळ्–दिग्गज; ओटिन–भागे; उम्परुम्–देव भी; ऒळित्तार्–छिप गये। ५९९

तब तीनों लोकों को अन्धकार ढाँप गया। शेषनाग ने डरकर अपने सिरों के समूह को लचका दिया। (कैलास, हिमालय, मन्दर, विन्ध्य,

निषद, हेमकूट, नील, गन्धमादन नाम की) सातों कुलगिरियाँ हिल गयीं। सूर्य भी भयभीत और संशयसहित हो गया। दिग्गज भाग गये और देव भी छिप गये। ५९९

विरिन्दवल यङ्गण्मिडै तोळ्वडर मोदिट्
टॅरिन्दनय नङ्गळॅयिऱ् ऱिऩ्बुऱ मिमैप्प
नॅरिन्दपुरु वङ्गणॅडु नॅऱ्ऱियित्तै मुऱ्ऱत्
तिरिन्दपुव नङ्गळ्वित्तै तेवरु मयिर्त्तार् 600

विरिन्त वलयङ्कळ् मिटै–विशाल वलयों से लसे; तोळ् पटर–कन्धे फूल उठे, तव; मोतु इट्टु–ऊपर उठती; ॲरिन्त नयनङ्कळ्–ज्वाला के साथ जलनेवाली लाल आँखें; ॲयिऱ्ऱिऩ् पुऱम्–वक्रदाँतों के बाजू में; इमैप्प–प्रकाश फैलातीं तो; नॅरिन्त पुरुवङ्कळ्–टेढ़ी हुई भौंहें; नॅटु नॅऱ्ऱियित्तै–लम्बे भालों को; मुऱ्ऱ–ढँक गईं, तो; पुवनङ्कळ्–सारे भुवन; तिरिन्त–गति बदलकर घूम उठे; वित्तै–विपरीत कार्य देख; तेवरुम् अयिर्त्तार्–देवता लोग भी भय करने लगे। ६००

रावण के कन्धे, जिन पर वलय लगे थे, फूल उठे। उसकी आँखों से जो ज्वाला-सी उठी उसका प्रकाश वक्रदन्तों के बाजुओं में फैला। घनी भौंहें तनीं और भाल पर फैल गयीं। सारे भुवन डगमगा गये। यह विपरीत स्थिति देखकर देव सिहर उठे। ६००

तॅन्ऱिशै नमनऱ्ऱनॊडु तेवर्हुल मॅल्लाम्
इऩ्ऱिऱुदि वन्दतु नमक्कॅऩ विरुन्द
निन्ऱुयिर् नडुङ्गवुडल् विम्मनिलै यिल्ला
दॊन्ऱुमुरै याडलिल रुम्बरिनॊ डिम्बर् 601

तॅन् तिचै नमन् तन् ऒटु–दक्षिणी दिशा के (अधिदेवता) यम के साथ; तेवर् कुलम् ॲल्लाम्–देवों के कुल सब; नमक्कु–हमारा; इन्ऱु–आज; इऱुति वन्ततु–अन्त आ गया; ॲन–सोचकर; इरुन्त–रहे; उम्पर् ऒटु–देवों के साथ; इम्पर्–इस लोक के वासी भी; उयिर् नटुङ्क–काँपते प्राणों के साथ; निन्ऱु–खड़े होकर; उटल् विम्म–शरीर-स्पन्दन के साथ; निलै निल्लातु–कहीं स्थिर न रह सके; ऒन्ऱुम् उरै आटल् इलर्–एक शब्द भी नहीं बोल सके। ६०१

दक्षिण दिशा के यम से लेकर सारे देवता भयभीत हो गये कि आज हमारा अन्त आ गया। वे खड़े रह गये। आकाशवासी के साथ इहलोक-वासी भी काँपने लगे। उनके प्राण सूख गये, शरीर काँपने लगे और वे अस्थिर और मौन हो रहे। ६०१

❀ मडित्तपिल वाय्हडॊरुम् वन्दुबुहै मुन्दत्
तुडित्ततॊडर् मीशॆहळ् शुरुक्कॊळ वुयिर्प्पक्
कडित्तहदिर् वाळॆयिरु मित्कवल मेहत्
तिडित्तवुरु मॊत्तुरऱि यावर्शॆय लॆन्ऱान् 602

मटित्तुत पिल वाय्कळ् तीरुम्–(कोप से रावण ने जिनके) अधरों को मोड़कर दाँतों से दबा रखा था, उन मुखों में; पुकै वनुतु मुनुत–धुआँ निकल रहा था; तुटित्तुत–फड़कती; तोटर् मीचैकळ्–मूँछों की शृंखला को; चुरुक्कोळ–झुलसाते (काला बनाते) हुए; उयिर्प्प–साँसें छोड़ रहा था; कटित्तुत–जिनको पीसता था; कतिर् वाळ् अँयिऱ्–प्रकाशमय तलवार-सम वक्र (या खड्ग) दाँतों के; मिन् कजल–विद्युत-से चमकते; मेकत्तु इटित्तुत उरुम् ओत्तु–मेघ में उठनेवाले वज्र-नाद के समान; उररि–स्वर में बोलते हुए; यावर् चॅयल्–किसका काम है; अँनुऱान्–पूछा। ६०२

रावण ओंठ चबा रहा था। उन बिल-समान मुखों से धुआँ उठ रहा था। उसकी मूँछें पंक्ति में हिल रही थीं। और उनको झुलसाते हुए वह गरम साँसें छोड़ रहा था। उसके वक्र दाँत, जो ओंठों को दबा रहे थे, बिजली के समान चमक रहे थे। मेघ में उठनेवाले वज्र के से स्वर में उसने शूर्पणखा से पूछा कि यह किसका काम है? । ६०२

❀ कान्ऱिडै यडैन्दुबुवि कावल्बुरि हिन्ऱार्
मीनुडै नॅडुङ्गॉडियि नोनन्नैयर् मेल्हीळ्
ऊनुडै युडम्बुडैमै योरुवमै यिल्ला
मानिडर् तडिन्दत्तर्हळ् वाळुरुवि यॅन्ऱाळ् 603

पुवि कावल् पुरिकिन्ऱार्–भूपालक; मीन् उटै नॅटुम् कॉटियिन्नोन्–मकरांकित लम्बी ध्वजा वाले के; अन्नैयर्–समान रूप रखनेवाले; मेल् कीळ्–ऊपर और नीचे के लोकों में; ऊन् उटै–मांस सहित; उटम्पु उटैमैयोर्–शरीरधारी; ओर् उवमै इल्ला–अनुपम; मानिटर्–मनुष्य; कान् इटै अटैन्तु–कानन में आकर; वाळ् उरुवि–तलवार खींचकर; तटिन्तनर्कळ्–काट लिया; अँन्ऱाळ्–कहा। ६०३

शूर्पणखा ने उत्तर दिया कि वे भूमि के पालक राजकुमार हैं। मकरकेतु के समान रूपवान हैं। ऊपर के सात और नीचे के सात, चौदहों लोकों में वे मांसधारी मनुष्य अनुपम हैं। वे वन में आये हैं और उन्होंने कटार निकालकर मेरा अंग-भंग कर दिया। ६०३

❀ शॅय्दनर्हण् मानिड रॅनत्तिशै यनैत्तुम्
अँय्दनहै वन्ददॅरि शिन्दिनह णॅल्लाम्
नोय्दवर् वलित्तॊऴि नुवन्ऱमॊऴि योन्ऱा
पॊय्तविर् पयत्तैयॊऴि पुक्कपह लॅन्ऱान् 604

मानिटर् चॅय्तनर्कळ् अँन–मानवों ने किया, यह कहने पर; तिचै अनैत्तुम् अँय्त–दिशाओं भर में गूंजे, ऐसा; नकै–हास; वन्तत–आया; कण् अँल्लाम्–सभी आँखों ने; अँरि–आग; चिन्तिन–बरसायी; नॉय्तवर्–अल्प (मानव); वलि तॊऴिल्–बलवान का कार्य; नुवन्ऱ मॊऴि–तुम्हारा कहा वचन; ऑन्ऱा–मेल नहीं खाता; पॊय् तविर्–झूठ छोड़ो; पयत्तै ऑऴि–भय त्यागो; पुक्क–जो हुआ; पुकल्–बताओ (सच); अँन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ६०४

मनुष्यों ने यह काम किया —यह सुनकर रावण को हँसी आ गयी। उसकी गूँज आठों दिशाओं में भर उठी। आँखों ने आग उगली। उसने शूर्पणखा को डाँटा कि क्या बकती हो ? वे दुर्बल मानव हैं और यह काम बड़े वीरों का काम है। दोनों में मेल नहीं है। असत्य कहना छोड़ो। भय के कारण ऐसा कहती हो तो भय त्याग दो। जो हुआ वह सच-सच बताओ। ६०४

मऩ्मदऩै	यॉप्पर्मणि	मेऩिवड	मेरुत्
तऩ्मद	नळिप्पर्दिर	डोळिऩ्वलि	तऩ्ऩाल्
ऑऩ्ऩदऩै	यिप्पॉळ्	दिशैप्पदुल	हेळिऩ्
नऩ्मदम	ळिप्परॉरि	मैप्पिऩ्ऩि	विल्लाल् 605

मणि मेऩि–सुन्दर रूप में; मऩ्मतऩै ऑप्पर्–मन्मथ की समानता करते हैं; तिरळ् तोळिऩ् वलि तऩ्ऩाल्–पुष्ट भुज-बल के पराक्रम में; वट मेरु तऩ्–उत्तर के मेरु का; मतत् अळिप्पर्–घमण्ड चूर कर देंगे; विऩ्लाल्–धनुर्युद्ध में; ओर् इमैप्पिल्–एक पल में; उलकु एळिऩ्–सातों लोकों का; नल् मतऩ्–बड़ा बल; नति ऑळिप्पर्–खूब नष्ट कर सकेंगे; अतऩै–उसको; इप्पॉळुतु–अब; इचैप्पतु ऑऩ्–कहना कैसा। ६०५

शूर्पणखा फिर उनके सौन्दर्य का वर्णन करने लगी। वे रूप में मन्मथ हैं। पुष्ट कन्धों के बल में मेरु का गर्व चूर करनेवाले हैं। एक ही धनु के बल से एक ही पल में वे सातों लोकों का बल मिटा सकनेवाले हैं। हा ! हा ! उसका अब कैसा वर्णन किया जायगा ? । ६०५

वऩ्दऩैमु	ऩित्तलैवर्	पालुडैयर्	वाऩत्
तिऩ्दुविऩ्मु	हत्तरॆऱि	नीरिलॆळ्	नाळक्
कऩ्दमल	रैप्पॊरुवु	कण्णर्हळल्	कैयर्
अऩ्दमिऱ	वत्तॊळिल	रारवरै	यॊप्पार् 606

मुऩि तलैवर् पाल्–मुनिवरों के प्रति; वऩ्तऩै उटैयर्–पूजा का भाव जो रखते हैं; वाऩत्तु इऩ्तुविऩ् मुकत्तर्–आकाश के चन्द्र के समान मुख वाले; ऍऱि–तरंगाकुल; नीरिल्–जलाशय में; ऍळु–उत्पन्न; नाळ–नालसहित; कऩ्त मलर्–सुवासपूर्ण (कमल-) पुष्प की; पॊरुवु–समानता करनेवाली; कण्णर्–आँखों वाले; कळल्–चरण वाले; कैयर्–हाथों वाले; अऩ्तम् इल्–असीम; तव तॊळिलर्–तपस्या-कार्य में लीन; आर् अवरै ऑप्पार्–कौन उनकी समानता करेगा। ६०६

शूर्पणखा ने आगे कहा कि वे मुनिवरों के प्रति श्रद्धाभाव रखनेवाले हैं। आकाश के चन्द्र के समान उनके मुख प्रकाशमान और मनोरम हैं। उनकी आँखें तरंग-भरे जलाशयों में विकसित नालयुक्त सुगंधित कमल के समान हैं। हा ! हा ! वे कमल-हस्त हैं और कमल-चरण हैं। अपार

तप के कर्म में लगे हुए हैं। उनकी उपमा कहाँ ढूँढ़ी जाय ? कौन उनकी तुलना कर सकेंगे ? । ६०६

वड्कलैयर् वार्हळ्ळर् मार्बिलणि नूलर्
विड्कलैयर् वेदमुडै नावर्तनि मॅय्यर्
उड्कलैय रुन्नैयॊर्दु हट्टुणैयु मुन्नार्
शॊड्कलैयॅ नत्तॊलैवि लूणिहळ् शुमन्दार् 607

वड्कलैयर्—वल्कल-वसन; वार्कळ्ळर्—लम्बी पायलधारी; मार्पिल् अणि—वक्ष में धृत; नूलर्—यज्ञोपवीत वाले; विल् कलैयर्—धनुर्विद्या-विशारद; वेतम् उडै नावर्—वेदाश्रय-जिह्वा; तत्ति मॅय्यर्—अनुपम सत्यसंध; उत् कलैयर्—कला-श्रेष्ठ; चॊल् कलै अॅत्त—शब्द-विद्या के समान; तॊलैवु इल्—अक्षय; तूणिकळ् चुमन्तार्—तूणीर रखनेवाले; उन्नै ओर् तुकळ् तुणैयुम्—तुमको एक धूलि के समान भी; उन्नार्—नहीं समझते । ६०७

वे वल्कलवसन हैं। पायलधारी हैं। उनके वक्ष में यज्ञोपवीत शोभायमान हैं। युद्धविद्याविशारद हैं। उनकी जीभ वेदों का आश्रय हैं। अनुपम सत्यसंध हैं। कलाओं में उत्कृष्ट निपुण हैं। शब्द-शास्त्र के समान उनके तूणीर अक्षय हैं। वे तुमको धूलि के समान भी नहीं मानेंगे । ६०७

❀ माररुळ रेयिरुव रोरुयिरिन् वाळ्वार्
वीररुळ रेयवरिन् विल्लिन्वलि वल्लार्
आरॊरुव रन्नवरै यॊप्पवर्ह ळैया
ओरॊरुव रेमुदल्वर् मूवरैयु मॊप्पार् 608

ऐया—महिमावान; इरुवर् मारर् उळरे—दो मार देव हैं क्या; ओर् उयिरिन् वाळ्वार्—एकप्राण हो रहते है; विल् अमरिल्—धनुर्विद्या में; वल्लार्—कुशल; अवरिन् वीरर्—उनसे बढ़कर वीर; उळरे—हैं क्या; अन्नवरै ओप्पवर्कळ्—उनकी समानता करनेवाले; ऑरुवर् आर्—कोई एक कौन हैं; ओर् ऑरुवरे—उनमें एक-एक; मुतल्वर् मूवरैयुम्—प्रधान त्रिदेवों की; ऑप्पार्—समानता करेंगे । ६०८

हे मेरे तात, प्रभु ! कहीं मन्मथ दो है क्या ? वे एक प्राण हो रहते हैं। धनुर्विद्या में वे बड़े ही समर्थ है। उनसे बढ़कर कोई वीर भी है क्या ? उनकी तुलना करनेवाले कोई कहाँ हैं ? उनमें एक-एक त्रिदेवों की समानता कर सकेंगे । ६०८

❀ आरुमन्न मञ्जिन मरक्करै यॅनच्चॅन्न्
डेरुनॅडि यन्दण रियम्बवुल हॅल्लाम्
वेरुमॅनु नुङ्गळहुलम् वेरॊडु मडङ्गक्
कीरुमॅन्न मुन्दैयॊरु शूळुरवु कॊण्डार् 609

एरु नॅरि अन्तणर्–उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते जानेवाले ब्राह्मणों (ऋषियों) ने; चॅन्रु–उनके पास जाकर; अरक्करै–राक्षसों को; आरुम् मनम्–शान्तमन वाले हम; अञ्चितम्–डरते हैं; ॲन इयम्प–यह कहा, तो; उलकु ॲलाम्–सारे लोक; वेरुम् ॲनुम्–हराकर मिटा देंगे, कहनेवाले; उङ्कळ् कुलम्–तुम्हारे कुल का; अटङ्क–सारा; वेर् ओट्टुम् कोरुम् ॲन–समूल नाश करेंगे, ऐसा; मुन्तै–पहले; ओरु चूळ्–एक शपथ; उरवु कॉण्टार्–कर ली है। ६०९

उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते चलनेवाले मुनिवरों ने उन मानवों के पास जाकर बताया कि हम शान्त-प्रकृति हैं और हमें इन राक्षसों से भय है। तब उन्होंने शपथ खायी कि 'संसार का नाश कर देंगे' —यह कहनेवाले राक्षसों के कुल को ही हम समूल नाश कर देंगे। पहले की हुई उस शपथ से वे बद्ध हैं। ६०९

* तरावलय नेमियुऴ वन्रयर दप्पेर्प्
परावरु नलत्तॊरुवन् मैन्दर्पळि यिल्लार्
विरावरुम् वनत्तवन् विळम्बवुरै हिन्रार्
इरामनु मिलक्कुवनु मॅन्बर्पॅय रॅन्राळ् 610

तरा वलयम्–भूमण्डल का; नेमि उळवन्–चक्रवर्ती राजा; तयरत पेर्–दशरथ नाम का; परावरु नलत्तु ऒरुवन्–प्रशंसनीय गुण वाला एक; मैन्तर्–उसके पुत्र; पळि इल्लार्–अनिन्द्य; अवन् विळम्प–उसके कहने पर; विरावु अरु वनत्तु–वास के लिए अयोग्य कानन में; उरैकिन्रार्–रहते हैं; पॅयर्–नाम; इरामनुम् इलक्कुवनुम्–श्रीराम और लक्ष्मण; ॲन्पर्–कहते हैं; ॲन्राळ्–कहा (शूर्पणखा ने)। ६१०

इस भूमण्डल का राजा, चक्रवर्ती दशरथ नाम का प्रशंसनीय गुणी था। ये उस श्रेष्ठ राजा के पुत्र हैं। ये अनिन्द्य हैं। दशरथ की आज्ञा से वे इस वन में आकर ठहरते है, जहाँ स्वच्छन्द होकर वास करना कठिन है। उनके नाम राम और लक्ष्मण हैं। —शूर्पणखा ने अपनी बात समाप्त की। ६१०

मरुन्दनैय तङ्गैमणि नाशिवडि वाळाल्
अरिन्दवरु मात्तिड रऱिन्दुमुयिर् वाळ्वार्
विरुन्दनैय वाळोडुम् विळित्तिरैयुम् वॅळ्हा
दिरुन्दन निरावणनु मिन्नुयिरॊ डिन्नुम् 611

मरुन्तु अनैय तङ्कै–अमृत-सम छोटी बहिन की; मणि नाचि–सुन्दर नासिका को; वटि वाळाल्–तीक्ष्ण तलवार से; अरिन्तवरुम् मात्तिटर्–काटनेवाले भी मानव हैं; अऱिन्तुम्–यह विदित होने पर भी; उयिर् वाळ्वार्–जीवित हैं; इरावणनुम्–रावण भी; विरुन्तु अनैय वाळ् ओटुम्–नई तलवार के साथ; विळित्तु–ताकते हुए; इऱैयुम् वॅळ्कातु–किंचित भी लाज का अनुभव किये विना; इन् उयिर् कॊटु–अपने प्यारे प्राणो के साथ; इरुन्तनन्–चुप रह गया। ६११

रावण को यह सब सुनकर बड़ा बुरा लगा। वह कहने लगा— मेरी अमृत-सी प्यारी बहिन की सुन्दर नासिका को तीक्ष्ण असि से काटनेवाले हैं मनुष्य ! यह विदित होने पर भी वे जीवित है ! क्या अपमान है ! रावण भी अपनी नवीन तलवार के साथ, बीसों आँखों से देखता हुआ, विना शरम खाये प्यारे प्राण लेकर रहता है ! । ६११

❀ कॊऱ्ऱमदु मुऱ्ऱिवलि यालरशु कॊण्डेऩ्
उऱ्ऱपयऩ् मऱ्ऱिदुहॊ लामुरै यिऴन्देऩ्
मुऱ्ऱुवुल हत्तुमुदल् वीरर् मुडियॆल्लाम्
अऱ्ऱपॊऴु दिऱ्ऱिदुपॊ रुन्दुमॆऩ्ऩ लामो 612

कॊऱ्ऱम् अतु मुऱ्ऱि—विजय का पक्का बनाकर; वलियाल्—अपनी शक्ति से; अरचु कॊण्टेऩ्—त्रिलोकाधिपत्य अपनाया (मैंने); उऱ्ऱ पयऩ्—उसका प्राप्त फल; इतु कोल् आम्—यही है क्या; उरै इऴन्तेऩ्—(गौरव-) गाथा खोई; मुऱ्ऱ उलकत्तु—सारे विश्व में; मुतल् वीरर्—पहले सिरे के वीरों के; मुटि ऍल्लाम्—सिरों को; अऱ्ऱपॊऴुतु—जब काटा गया तब; इऱ्ऱ इतु—जो गया यह यश; पॊरुन्तुम् ऍऩ्ऩल् आमो—फिर मिलेगा, यह माना जा सकेगा। ६१२

मैंने अपनी विजय-यात्रा पूरी करके अपने पराक्रम के बल पर तीनों लोकों का राज पाया ! उसका यही फल रहा क्या ? हाय ! यश मेरा नष्ट हो गया ! सभी लोकों के सारे प्रथम श्रेणी के वीरों के सिर काट भी लूं तो यह नष्ट हुआ यश फिर मिल सकेगा क्या ? । ६१२

❀ मूळमुळ दायपऴि यॆऩ्वयिऩ् मुडित्तोर्
आळुमुळ वामवर्द मारुयिरु मुण्डाम्
वाळुमुळ दोदविड मुण्डवऩ् वळङ्गु
नाळुमुळ तोळुमुळ नानुमुळॆ ऩ्ऩ्ऱो 613

ऍऩ् वयिऩ्—मेरे प्रति; उळतु आय—स्थायी; मूळम् पऴि—और व्यापी अपयश का काम; मुटित्तोर्—करनेवाले; आळुम् उळ—मनुष्य अब भी है; अवर् तम् आर् उयिरुम् उण्टाम्—उनके प्यारे प्राण अब भी है; वाळुम् उळतु—(चन्द्रहास-) तलवार भी है; ओतम् विटम् उण्टवऩ्—समुद्र का विष के भोक्ता शिव के द्वारा; वळङ्कु—दत्त; नाळुम् उळ—आयु के दिन भी हैं; तोळुम् उळ—भुजाएँ हैं; नातुम् उळॆऩ् अऩ्ऱो—मैं भी रहता हूँ। ६१३

वे मनुष्य भी हैं जो मेरे प्रति इतना बड़ा अपराध, मेरे इतने बड़े अपयश का काम कर चुके। और उनके प्राण अब भी बचे हैं ! मेरे हाथ मे चन्द्रहास भी है। समुद्र से निकला विष जिन्होंने खाया, उन शिवजी से वर के रूप में दत्त आयु भी है। मेरे कन्धे भी हैं। मैं भी जीवित हूँ न ! । ६१३

❀ पीत्तुर वुडड़्पळि पुहुन्ददॆन्न नाणित्
तत्तुरुव दॆन्नैमन नॆतळर लम्मा
ॲत्तुय रुन्नक्कुळ दिनिप्पळि शुमक्कप्
पत्तुळ तलैप्पहुदि तोळ्हळ् पलवन्ऱो 614

मत्ते–रे मन; उटल् पीत्तु उर–मेरे शरीर को विद्ध करते हुए; पळि पुकुन्ततु–अपयश लग गया; ॲन्न–यह सोचकर; नाणि–शरमाकर; तत्तुरुवतु–हड़बड़ाने से; ॲन्तै–क्यों; इति तळरल्–अब मत मुरझा; ॲ तुयर्–कौन सा दुःख; उन्नक्कु उळवु–तुम्हें है; इन्नि–आगे; पळि चुमक्क–कलंक ढोने के लिए; तलै पकुति–मेरे सिर के अंश; पत्तु उळवु–दस हैं; तोळ्कळ् पल अन्ऱो–कन्धे भी अनेक (बीस) हैं न। ६१४

रे मन! यह अपयश ऐसा आकर लगा है कि मेरा शरीर ही विद्ध हो गया। यह सोचकर तुम क्यों शरमाकर हड़बड़ाते हो? तुम दुख से निर्बल मत हो जाओ। तुम्हारा क्या दुख है? अपयश ढोने के लिए मेरे दस सिर हैं। कन्धे तो अनेक है न!। ६१४

❀ ॲन्ऱुरै शॆयानहै शॆयावॆरि विळिप्पान्
वन्ऱुणैयि लाविरुवर् मानिडरै वाळाल्
कॊन्ऱिलर्ह ळानॆडिय कुन्ऱुडैय कानिल्
निन्ऱकर नॆमुदलि नोर्निरुद रॆन्ऱान् 615

ॲन्ऱु उरै चॆया–यह (स्वनिंदा में) कहकर; नकै चॆया–हँसकर; ॲरि विळिप्पान्–आग के समान दृष्टि चलाते हुए; नॆटिय कुन्ऱु–उच्च पर्वत; उटैय कानिल्–जहाँ रहते हैं, उस वन में; निन्ऱ–रहनेवाले; करन् मुतलिनोर् निरुतर्–खर आदि राक्षसों ने; वन् तुणै इला–कठोर वल से रहित; इरुवर् मानिटरै–दो मनुष्यों को; वाळाल्–अपनी तलवार से; कॊन्ऱिलर्कळा–नहीं मारा था क्या; ॲन्ऱान्–यह पूछा। ६१५

इस तरह (अपनी निन्दा का वचन) कहता हुआ रावण हँस उठा। आग-सी दृष्टि करते हुए रावण ने शूर्पणखा से पूछा कि उस कानन में, जिसमें उन्नत पर्वत हैं, खर आदि राक्षस थे न? क्या उन्होंने इन निर्बल और असहाय मानवों का अपनी तलवार से वध नहीं किया?। ६१५

अऱ्ऱव नुरैत्त लोडु मळुदिळि यरुविक् कण्णाळ्
ॲऱ्ऱिय वयिऱ्ऱळ् पारि निडैविळुन् दॆङ्गु हिन्ऱाळ्
शुऱ्ऱमुन् दॊलैन्द वैय नॊय्दॆनच् चुमन्द कैयाळ्
उऱ्ऱदु तॆरियुम् वण्ण मॊरुवहै युरैक्क लुऱ्ऱाळ् 616

अऱ्ऱु अवन् उरैत्तलोटुम्–वैसा उसके कहने पर; अळुतु इळि–रोने से बहनेवाले; अरुवि कण्णाळ्–सरिता-सम अश्रु-भरी आँखों के साथ; ॲऱ्ऱिय वयिऱ्ऱळ्–पेट पीटती (हुई); पारिन् इटै–भूमि पर; वीळ्न्तु–गिरकर; एङ्कुकिन्ऱाळ्–रोती

(हुई शूर्पणखा); ऐय–प्रभु; चुट्ट्रमुम्–हमारे बन्धु-बान्धव सभी; नोय्तु तोलैन्ततु–अनायास मिट गये; अँऩ्–कहकर; चुमन्त कैयाळ्–सिर पर हाथ धरकर; उट्ट्रतु तॅरियुम् वण्णम्–वृत्तान्त समझाते हुए; ओरु वकै–एक प्रकार से; उरैक्कल् उट्ट्राळ्–बताने लगी। ६१६

जब रावण ने यह प्रश्न किया, तब शूर्पणखा ने आँखों से सरिता के समान अश्रु की धार बहायी। पेट को पीटते हुए भूमि पर गिरी। खूब रोती हुई उसने कहा कि सारा परिवार ही अनायास मिट गया। यह कहकर उसने अपने हाथ सिर पर रख लिये। सारा वृत्तान्त समझाते हुए वह एक प्रकार से कहने लगी। ६१६

शॊल्लॆन्ऱ्ऱन् वायिऱ् केट्टार् तॊडर्न्दॆळ् शेनै योडुम्
कल्लॆन्ऱ्ऱ वॊलियिऱ् चॆन्ऱ्ऱ करऩ्मुदऱ् काळै वीरर्
ऍल्लॊन्ऱ्ऱु कमलच् चॆङ्ग णिरामनॆन् ड्रियैन्द वेन्दल्
विल्लॊन्ड्रिऱ् कडिहै मून्ड्रि लेड्रिनन् विण्णि लॆन्ड्राळ् 617

चॊल्–बात; ॲन् तन् वायिल् केट्टार्–मेरे मुख से सुनकर; तॊटर्न्तु ॲळु–साथ उठी; चेनै ओटुम्–सेना के साथ; कल् ॲन्ऱ्ऱ ऑलियिल्–'घल्' शब्द के साथ; चॆन्ऱ्ऱ–जो गये; करन् मुतल् काळै वीरर्–खर आदि ऋषभ-सम वीर; ॲल् ओन्ऱ्ऱु–किरणस्पृष्ट; कमलम्–कमल-सम; चॆम् कण्–लाल आँखों के; इरामन् ॲन्ऱ्ऱु इयैन्त–श्रीराम के नाम से युक्त; एन्तल्–महिमावान ने; विल् ऑन्ड्रिल–एक धनु से; कटिकै मून्ड्रिल्–तीन घड़ियों में; विण्णिल्–स्वर्ग पर; एड्रिनन्–चढ़ा दिया; ॲन्ड्राळ्–शूर्पणखा ने कहा। ६१७

भाई! मैंने उनसे यह अपना हाल कहा तो वे अपनी सेना के साथ शोर करते हुए राम से लड़ने गये। किरण-प्रफुल्लित कमल-सम आँखों के राम नाम के वीर के धनु द्वारा तीन ही घड़ियों में स्वर्ग चढ़ गये।—शूर्पणखा ने कहा। ६१७

तारुडैत् तानैयोडुन् दम्बियर् तमियन् शॆय्द
पोरिडै मडिन्दा रॆन्ऱ्ऱ वुरैशॆवि पुहाद मुन्नम्
कारिडै युरुमिन् मारि कनलोडु पिऱक्कु माबोल्
नीरोडु नॆरुप्पुक् कान्ऱ्ऱ निरैनॆडुङ् गण्ग ळॆल्लाम् 618

तमियन् चॆय्त पोर् इटै–एकाकी श्रीराम ने जो किया, उस युद्ध में; तम्पियर्–छोटे भाई; तार् उटै तानै ओटुम्–हारयुक्त वीरों की सेना के साथ; मटिन्तार्–मरे; ॲन्ऱ्ऱ उरै–यह कथन; चॆवि पुकात मुन्नम्–कान में घुसा इसके पूर्व ही; कार् इटै उरुमिन्–मेघमध्य वज्र के; कनल् ओटु–अनल के साथ; मारि–वर्षा; पिऱक्कुमा पोल्–होती हो जैसे; निरै नॆटुम् कण्कळ् ॲल्लाम्–पंक्ति में रही सभी आँखों ने; नीरोटु नॆरुप्पु–जल के साथ अग्नि को; कान्ऱ्ऱ–उगला। ६१८

एकाकी राम से लड़कर मेरे छोटे भाई, हारों से भूषित वीरों की

बड़ी सेना के साथ मर गये —यह बात ज्योंही रावण के कानों में पड़ी, त्योंही उसकी पंक्ति की आँखों में मेघमध्य वज्र के साथ अनल और जल जैसे भर जाता है वैसे आग और जल भर गया। ६१८

आयिडै यॆऴुन्द शीऱ्ऱत् तऴुन्दिय तुऩ्ब माऱ्ऱित्
तीयिडै युहुत्त नॆय्यिऩ् चीऱ्ऱत्तिऩ् कूऱ्ऱम् जॆय्य
नीयिडै यिऴैत्त कुऱ्ऱ मॆऩ्ऩवर् निऩ्ऩै यिऩ्ऩे
वायिडै यिदऴु मूक्कुम् वलिन्दऩर् कॊय्य वॆऩ्ऱाऩ् 619

अ इटै–तव; ॲऴुन्त–उभरे; चीऱ्ऱत्तु–कोप में; अऴुन्तिय–मग्न; तुऩ्पम् माऱ्ऱि–दुःख बदलकर; ती इटै–अग्नि में; उकुत्त नॆय्यिल्–छोड़े गये घी के समान; चीऱ्ऱत्तुक्कु–कोप को; ऊऱ्ऱम् चॆय्य–बल दिलाने पर; अवर्–उन्होंने; निऩ्ऩै–तुम्हारे; इऩ्ऩे–इस प्रकार; वाय् इटै इतऴुम्–मुख पर के अधरों को; मूक्कुम्–और नाक को; वलिन्तऩर् कॊय्य–बलात् काटा, इसके निमित्त-रूप में; नी–तुमने; इटै इऴैत्त कुऱ्ऱम्–उनके प्रति किया (जो) अपराध; यातु–वह कौनसा; ॲऩ्ऱाऩ्–पूछा। ६१९

रावण को एक साथ क्रोध आया और दुख भी। उसने कुछ देर बाद दुख छोड़ा। आग में घी छोड़ने पर भड़क उठनेवाली आग के समान क्रोध उभर आया। उसने पूछा कि इस तरह वे तुम्हारे अधर और नाक को बलात् काट दें, इसके लिए तुमने उनके प्रति क्या अपराध किया? । ६१९

❀ ऍन्वयि ऩुऱ्ऱ कुऱ्ऱम् यावरुक्कु मॆऴुद वॊण्णात्
तऩ्मैय ऩिराम ऩोडुन् दामरै तविरप् पोन्दाळ्
मिऩ्वयिऩ् मरुङ्गुल् कॊण्डाळ् वेय्वयिऩ् मॆऩ्ऱोळ् कॊण्डाळ्
पॊऩ्वयिऩ् मेऩि कॊण्डाळ् पॊरुट्टिऩाऱ् पुहुन्द दॆऩ्ऱाळ् 620

ॲऩ् वयिऩ् उऱ्ऱ कुऱ्ऱम्–मुझसे हुआ अपराध; यावरुक्कुम् ॲऴुत ऒण्णात–किसी से भी चित्र बनाना (जिसका) असम्भव है; तऩ्मैयऩ्–ऐसे रूप वाले; इरामऩोटुम्–राम के साथ; तामरै तविर–(अपना वासस्थान) कमल छोड़कर; पोन्ताळ्–जो आयी है; मिऩ् वयिऩ् मरुङ्कुल् कॊण्टाळ्–बिजली से अपनी कमर पानेवाली; वेय् वयिऩ् मॆऩ् तोळ् कॊण्टाळ्–बाँस से जिसने अपने कन्धे पाये हैं; पॊऩ् वयिऩ् मेऩि कॊण्टाळ्–स्वर्ण से जिसने अपनी शोभा पाई है; पॊरुट्टिताल्–ऐसी एक स्त्री के कारण; पुकुन्ततु–हो गया; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। ६२०

शूर्पणखा ने उत्तर दिया— इस अपराध के हो जाने का एक निमित्त भी है। जिसका चित्र खींचना असम्भव है, उस रूप से युक्त राम के साथ एक स्त्री आयी है! वह ऐसी लगती है कि मानो कमल पर अपना वास छोड़कर इधर आयी है। उसने बिजली से कमर पायी है, बाँस से कन्धे, और स्वर्ण से रूप-रंग। उसी स्त्री के कारण यह हुआ। ६२०

आरव ळॆन्ऱ् लोडु मरक्कियु मैय वाळि
तेरव ळल्हुल् कॊङ्गै शॆम्बॊन्जॆय् कुलिहच् चॆप्पु
पारवळ् पादन् दीण्डप् पाक्कियम् बडैत्त दम्मा
पेरवळ् शीद यॆन्ऱु वडिवॆलाम् बेशलुऱ्ऱाळ् 621

अवळ् आर्–वह कौन; ऍन्ऱल् ओट्टुम्–पूछने पर; अरक्कियुम्–राक्षसी भी; ऐया–महिमावान; वाळि–जिओ; अवळ् अल्कुल् तेर्–उसका कटि-प्रदेश रथ ही है; कॊङ्कै–स्तन; चॆम् पॊन् चॆय्–लाल स्वर्ण की बनी; कुलिक चॆप्पु–इंगुरौटियाँ हैं; पार्–भूमि ने; अवळ् पातम् तीण्ट–उसके चरण-स्पर्श का; पाक्कियम् पटैत्ततु–बड़ा भाग्य पाया है; अम्मा–मैया; अवळ् पेर् चीतै–उसका नाम सीता है; ऍन्ऱु–कहकर; वटिवु ऍलाम्–सारा रूप; पेचल् उऱ्ऱाळ्–वर्णन करने लगी। ६२१

रावण ने पूछा कि वह कौन स्त्री है? तुरन्त शूर्पणखा ने कहा। महिमावान! जिओ! क्या कहूँ? उसका कटिप्रदेश रथ है! स्तन स्वर्ण-निर्मित इंगुरौटियाँ हैं। भूमि ने बड़ा पुण्य किया है, तभी वह उसके चरणों को स्पर्श कर सकी है। मैया! उसका नाम सीता है। वह उत्साह के साथ उनके रूप का वर्णन करने लगी। ६२१

कामरम् बळुत्त पाडऱ् कळ्ळॆन्नक् कनिन्द शॊन्जॊऱ्
तेमलर् शॆऱिन्द कून्दऱ् ऱेवर्क्कु मणङ्गा मॆन्नत्
तामरै यिरुन्द नङ्गै शेडियान् दरमु मल्लळ्
यामुरै वळङ्ग लॆन्नब देळ्मैप् पाल दन्ऱे 622

पळुत्त कामरम् पाटल्–पूर्णसिद्ध 'कामर' राग के; कळ् ऍन्न कनिन्त–मधु के समान मधुर; चॆम् चॊल्–सुन्दर बोली वाली; ते मलर्–शहद-भरे पुष्पों से; चॆऱिन्त कून्तल्–घने केश-भूषित; तेवर्क्कु अणङ्काम्–देवबाला-सी उसकी; तामरै इरुन्त नङ्कै–कमलनिवासिनी लक्ष्मी; चेटि आम् तरमुम् अल्लळ्–चेरी भी बनने योग्य नहीं; याम् उरै वळङ्कल्–हम (प्रशंसा का) वचन कहें; ऍन्पतु–यह; एळ्मै पालतु–अज्ञता होगा। ६२२

(कामर एक राग है।) पूर्ण-सिद्ध कामर राग के समान मधुरबयनी है वह। केश पर शहदसहित फूल शोभित हैं। देवांगना-सी उस (सुन्दरी) की, कमला श्रीदेवी दासी बनने भी योग्य नहीं है। उसका वर्णन करने का प्रयास करना बुद्धिहीनता ही होगा। ६२२

मञ्जॊक्कु मळह वोदि मळैयॊक्कुम् वडिन्द कून्दल्
पञ्जॊक्कु मडिहळ् शॆय्य पवळत्तिन् विरल्ह ळैय
अञ्जॊऱ्क ळमुदि नळ्ळिक् कॊण्डवळ् वदन मैदीर्
कञ्जत्तिऱ् कॊण्ड देनुङ् गडलिनुम् बॆरिय कण्गळ् 623

ऐय–महिमायुक्त; अम् चॊऱ्कळ्–सुन्दर बोली को; अमुतिल् अळ्ळि कॊण्टवळ्–अमृत से उठा ली है, उसका; अळक ओति–भाल पर का छल्लेदार केश; मञ्चु

ऑक्कुम्–मेघ की समानता करता है; वटिनृत कून्तल्–लटकता केश; मऴै ऑक्कुम्–जल-भरे घन की तुलना करता है; अटिकळ्–उसके चरण; पञ्चु ऑक्कुम्–रुई की भाँति हैं; विरल्कळ् चॅय्य पवळत्तिन्–लाल प्रवाल की (-सी) हैं; वतनम्–आनन; मै तीर्–निष्कलंक; कञ्चत्तिल् कॉण्टतेनुम्–कमल से प्राप्त है तो भी; कण्कळ्–उसकी आँखें; कटलिनुम् पॅरिय–समुद्र से भी विशाल हैं। ६२३

महिमायुक्त भाई! उसने अपनी बोली अमृत से उठा ली है। सामने का केश मेघ-सा और लटकनेवाली वेणी वर्षक घन-सी है। उसके चरण रुई के समान (कोमल) है। पैर की उँगलियाँ लाल प्रवाल की बनी-सी हैं। आनन रूपी निष्कलंक कमल पर जो आँखें हैं, वे कमल से ली गयी हैं; तो भी समुद्र से भी बड़ी हैं। ६२३

ईशनार् कण्णित् वॅन्दा नॅन्नुमि दिऴैच् चॉल्लिव्
वाशना ड्रोदि याळैक् कण्डनन् ववव लाड्ड्रान्
पेशलान् दहैमैत् तल्लाप् पॅरुम्बिणि पिणिप्प नीण्ड
आशैया लऴिन्दु वॅन्दा ननङ्गनव् वुरुव मम्मा 624

अनङ्कन्–अनंग; ईचतार् कण्णिन् वॅन्तान्–ईश्वर (शिव) की (भाल की) आँख से जला; अंन्नुम् इतु–कही जानेवाली यह बात; इऴैत्त चॉल्–अल्पज्ञ कथन है; इ वाचम् नाऱु ओतियाळै–इस सुवासित केश वाली को; कण्टनन्–देखकर; वव्वल् आऱ्ऱान्–प्रसने की शक्ति से हीन होने के कारण; पेचल् आम् तकैत्तु अल्ला–अवर्ण्य; पॅरुम् पिणि पिणिप्प–बड़े (काम-) रोग से पीड़ित होकर; नीण्ट आचैयाल्–लम्बी बढ़ी उस इच्छा से; अ उरुवम्–वह रूप; अऴिन्तु–गला; तेय्न्तान्–वह मिटा; अम्मा–मैया री। ६२४

मन्मथ परमेश्वर से भाल-नेत्र की आग से जल गया —यह कथन असत्य है। असल में हुआ दूसरा है। उसने इस सुवासित केशिनी को देखा। उसके मन में अपार राग पैदा हुआ। वह उसे ले जा नहीं सका। अकथ्य काम-रोग ने उसे सताया। धीरे-धीरे छीजकर उसका रूप मिट गया। माँ, उतनी सुन्दर है वह!। ६२४

तॅव्वुल हत्तुङ् गाण्डि शिरत्तिनिऱ् पणत्ति नोर्हळ्
अव्वुल हत्तुङ् गाण्डि यलैहड लुलहिऱ् काण्डि
वॅव्वुलै युऱ्ऱ वेलै वाळिनै वॅन्ऱ कण्णाळ्
अॅव्वुल हत्ता ळङ्गम् यावर्क्कु मॅळ्दी णादाळ् 625

वॅम् उलै उऱ्ऱ–गरम भट्ठी में ताप कर बनाये गये; वेलै वाळितै–भाले और असि को; वॅन्ऱ–जो जीत चुकी है; कण्णाळ्–ऐसी आँखों से शोभित है; तॅव् उलकत्तुम्–देवों के लोकों में भी; काण्टि–खोजो; चिरत्तितिल् पणत्तिनोर्कळ्–सिर पर (जिनके) फन हैं, उन; अ उलकत्तुम्–(नागों के) उस (नाग-)लोक में भी; काण्टि–खोजो; अलै कटल् उलकिल् काण्टि–तरंग-भरे समुद्र से वलयित भूतल में

खोजो; अडुकम् यावर्क्कुम् अॅळ्ुत ऑणाताळ्–ऐसे अंगों से युक्त है, जिनका कोई चित्रण नहीं कर सकता; अॅव्वुलकत्ताळ्–किस लोक की है। ६२५

उसकी आँखों ने उस भाले और असि को अपनी कान्ति और तीक्ष्णता में हराया है, जो भट्ठी की आग में तपाकर बनाया गया था। तुम चाहे सुरलोक में ढूँढ़ो; चाहे फणी नागों के लोक में। तरंगायमान समुद्र से वलयित भूलोक में ही क्यों न ढूँढ़ो। उसके समान स्त्री नहीं मिलेगी। उसके अंगों का चित्रण ही किसी के लिए असम्भव है! फिर वह किस लोक की होगी? नहीं जानते। ६२५

❀ तोळैये शॉल्लु हेन्नो शुडर्मुहत् तुलवु हिन्ऱ
वाळैये शॉल्लु हेन्नो वल्लवै वळ्ुत्तु हेन्नो
मीळवुन् दिहैप्प दल्लाऱ् ऱनित्तनि विळम्ब लाऱ्ऱेन्
नाळैये काण्डि यन्ऱे नानुनक् कुरैप्प दॅन्नो 626

तोळैये चॉल्लुकेत्तो–भुजाएँ ही कहूँ; चुटर् मुकत्तु–प्रकाशमय मुख में; उलवुकिन्ऱ–चलित रहनेवाली; वाळैये चॉल्लुकेत्तो–तलवारें (आँखें) ही बखानूँ; वल् अवै–गोटियाँ (स्तन) उनको; वळ्ुत्तुकेत्तो–बताऊँ; मीळवुम् तिकैप्पतु अल्लाल्–फिर-फिर चक्कर खाने के सिवाय; तनि तनि–अलग-अलग; विळम्पल् आऱ्ऱेन्–कह नहीं सकूँगी; नाळैये काण्टि अन्ऱे–कल तुम ही देख लो न; नान् उनक्कु उरैप्पतु अॅन्नो–मैं तुमको बताऊँ क्या। ६२६

हा! क्या मैं उसकी भुजाओं को कहूँ? या उज्ज्वल मुख में जो चंचल आँखें हैं, उन तलवारों का वर्णन करूँ? गोटी के समान उन स्तनों को कहूँ? (वल्+अवै का यह अर्थ होगा; अल+अवै शब्द लिये जायँ तो 'अन्य अंगों को कहूँ?' होगा।) किस अंग का वर्णन कर सकूँगी। कोई भी अंग लूँ तो फिर-फिर चक्रित होकर रुक जाना पड़ेगा। अलग-अलग किसी का उचित वर्णन नहीं कर पाऊँगी। तुम तो कल ही उसे देख लोगे न? फिर मैं क्या कहूँ तुमसे?। ६२६

❀ विल्लॉक्कु नुदलॅन् ऱालुम् वेलॉक्कुम् विळ्ियॅन् ऱालुम्
पल्लॉक्कु मुत्तॅन् ऱालुम् बवळत्तै यिदळॅन् ऱालुम्
शॉल्लॉक्कुम् बॉरुळ्ॉव् वादाऱ् चॉल्लला मुवमै युण्डो
नॅल्लॉक्कुम् बुल्लॅन् ऱालुम् नेरुरैत् ताह वऱ्ऱो 627

नुतल् विल् ऑक्कुम्–उसका भाल धनु की समता करेगा; अॅन्ऱालुम्–कहें तो भी; विळ्ि–आँखें; वेल् ऑक्कुम्–भाले की समता करेंगी; अॅन्ऱालुम्–कहें तो भी; पल् मुत्तु ऑक्कुम् अॅन्ऱालुम्–दाँत मोती के समान हैं, कहने पर भी; पवळत्तै इतळ् अॅन्ऱालुम्–प्रवाल को अधर कहें तो भी; चॉल् ऑक्कुम्–कहने भर के लिए ही समानता होगी; पॉरुळ् ऑव्वातु आल्–पदार्थ देखने पर समानता नहीं पाई जायगी; आल्–इसलिए; चॉल्लल् आम् उवमै उण्टो–कहने के लिए कोई उपमा है क्या;

नॅल् ऑक्कुम् पुल्–धान घास-सा है; ऑन्ऱालुम्–कहें तो भी; नेर् उरैत्तु आक वऱ्ऱो–सही बात कही गई क्या। ६२७

भाल धनु के समान है; आँखें भालों के समान, मोती दाँत के समान। ऐसा कहा जा सकता है। प्रवाल को उसका अधर कह सकते हैं। तो भी वह क्या सही रूप में उपमा कहना बन सकेगा? केवल शाब्दिक उपमा होगी। तत्त्वतः उपमा ठीक नहीं उतरेगी। उसके अंगों से उपमेय वस्तुएँ हैं कहाँ? कहने को तो कह सकते हैं कि धान घास है! पर क्या वह सही अर्थ में सार्थक हो सकता है? । ६२७

इन्दिरन् शशियैप् पॅऱ्ऱा निरुमून्ऱु वदनत् तोन्ऱन्
तन्दैयु मुमैयैप् पॅऱ्ऱान् ऱामरैच् चॅङ्गण् मालुम्
शॅन्दिरु महळैप् पॅऱ्ऱान् शीदैयै नीयुम् पॅऱ्ऱाय्
अन्दरम् वार्क्कि नन्मै यवर्क्किल्लै युनक्के यैया 628

ऐया–महिमावान; इन्तिरन् चचियै पॅऱ्ऱान्–इन्द्र ने शची को पाया; इरु मून्ऱु वतनत्तोन् तन्–(दो के तीन = छः) षण्मुख के; तन्तैयुम्–पिता (शिवजी) को; उमैयै पॅऱ्ऱान्–उमादेवी प्राप्त हुई; तामरै चॅम् कणात्तुम्–कमलाक्ष ने भी; चॅम् तिरु मकळै–गोरी श्रीदेवी को; पॅऱ्ऱान्–प्राप्त किया; नीयुम्–तुमने भी; चीतैयै पॅऱ्ऱाय्–सीता को प्राप्त किया; अन्तरम् पार्क्किन्–अन्तर देखा जाय तो; अवर्क्कु नन्मै इल्लै–सौभाग्य उनका नहीं है; उनक्के–तुम्हारा ही। ६२८

(शूर्पणखा रावण के मन में सीता-प्रेम जाग्रत् करती है।) इन्द्र को शचीदेवी प्राप्त हुई। षण्मुख के पिता ने उमा को प्राप्त किया। कमलाक्ष विष्णु को कमला मिली। तुम्हें सीता मिल गयी। पर अन्तर देखने पर उन सबका भाग्य उतना खरा नहीं। तुम्हारा ही सर्वश्रेष्ठ होगा। तुम्हारा भाग्य ही श्लाघनीय है। ६२८

❀ पाहत्ति लॉरुवन् वैत्तान् पङ्गयत् तिरुन्द पॉन्नै
आहत्ति लॉरुवन् वैत्ता नन्दण नाविन् वैत्तान्
मेहत्तिन् मिन्नै मुन्ने वॅन्ऱनुण् णिडैयि नाळै
माहत्तोळ् वीर पॅऱ्ऱा लॅङ्ङनम् वैत्तु वाऴ्दि 629

पाकत्तिल् ऑरुवन् वैत्तान्–एक ने अपने बायें भाग में रख लिया (शिव की पार्वती अर्धांगिनी बनी); पङ्कयत्तु इरुन्त पॉन्नै–कमला श्री को; ऑरुवन्–(त्रिदेवों में) एक (विष्णु) ने; आकत्तिल् वैत्तान्–वक्ष में रख लिया; अन्तणन्–ब्राह्मण (ब्रह्मा) ने; नाविल् वैत्तान्–जीभ में रख लिया; माक तोळ् वीर–आकाश तक उन्नत कन्धे वाले वीर; मेकत्तिन् मिन्नै–मेघ की बिजली को; मुन्ने वॅन्ऱ–जिसने पहले ही हरा दिया; नुण् इडैयिनाळै–उस क्षीण कटि-भूषित सीता को; पॅऱ्ऱाल्–पाओगे तो; ऍङ्ङनम्–कहाँ; वैत्तु वाऴ्ति–रखकर जीवन चलाओगे। ६२९

हाँ! आकाश तक उन्नत कन्धों वाले वीर भाई! त्रिदेवों में एक, शिव

ने उमा को अपने शरीर के वाम भाग में स्थान दिया। दूसरे (विष्णु) ने कमला श्रीदेवी को अपने वक्ष में रख लिया। तीसरे, ब्राह्मणोत्तम (ब्रह्मा) ने सरस्वती को अपनी जीभ में स्थान दे दिया। सीता बड़ी सुन्दरी है। उसकी कमर ने मेघ की बिजली को हरा दिया है। उस सीता को प्राप्त करके तुम कहाँ स्थान देकर उसके साथ जीवन बिताओगे ?। ६२९

* पिळ्ळैपोऱ् पेशुवाळैप् पॆऱ्ऱपिन् पिऴैक्क लाऱ्ऱाय्
कॊळ्ळैमा निदियमॆल्ला मवळुक्के कॊडुत्ति यैय
वळ्ळले युनक्कु नल्लेन् मऱ्ऱुनिन् मनैयिन् वाऴुम्
किळ्ळैबोन् मॊऴियाऱ्क् कॆल्लाङ् गेडुशूऴ् हिन्ऱे नन्ऱे 630

ऐया–महिमावान; वळ्ळले–दानी; पिऴैक्कल् आऱ्ऱाय्–अचूक परिश्रमी; पिळ्ळै पोल् पेच्चित्ताळै–सारिका की-सी बोली वाली को; पॆऱ्ऱपिन्–पाने के बाद; कॊळ्ळै पोकिन्ऱ चॆल्वम्–लूटी जानेवाली अपनी सम्पत्ति को; अवळुक्के कॊडुत्ति–उसी को दे दो; उनक्कु नल्लेन्–तुम्हारी हितू हूँ; उन् मनैयिल् वाऴुम्–तुम्हारे महल में रहनेवाली; किळ्ळै पोल्–शुक-सम; मॊऴियाऱ्क्कु ऎल्लाम्–बोलनेवाली सभी (स्त्रियों) को; केटु चूऴ्किन्ऱेन् अन्ऱे–अहित करती हूँ न। ६३०

महिमावान ! यह सर्वविदित है कि तुम्हारे प्रयत्न कभी असफल नहीं होते। सीता तुम्हारी हो जायगी। सारिका-वाणी को लाने के बाद तुम अपनी सारी सौभाग्यश्री को, जिसे अब तुम्हारी अन्य प्रियाएँ लूट रही हैं, उसे दे दो। देखो मैं तुम्हारा हित कर रही हूँ। पर तुम्हारे महल में तुम्हारी कृपा का पात्र बनी जो स्त्रियाँ रहती है, उनको कष्ट दिला रही हूँ न ?। ६३०

* तेर्तन्द वल्हुऱ् चीदै तेवर्द मुलहि लिम्बर्
वार्तन्द मुलैयि नार्दम् वयिऱुतन् दाऴु मल्लळ्
तार्तन्द कमलत् ताळैत् तरुक्किनर् कडैयच् चङ्ग
नीर्तन्द ददनै वॆल्वा निलन्दन्दु निमिर्न्द दन्ऱे 431

तेर् तन्त अल्कुल्–रथ-समान जघन वाली; चीतै–सीता; तेवर् तम् उलकिल्–देवों के लोक में; इम्पर्–इहलोक में; वार् तन्त कॊङ्कैयार् तम्–अँगिया-बद्ध उरोजो से शोभित स्त्रियों की; वयिऱु तन्ताळुम् अल्लळ्–कोख से आई हुई नहीं है; चङ्क नीर्–शंखकीटों से युक्त क्षीरसागर को; तरुक्किनर् कटैय–गर्वीले (देवासुरों) के मथने पर; तार् तन्त कमलत्ताळै–कमलपुष्पमाला-धारिणी को; तन्ततु–(उसने) पैदा किया; अतनै वॆल्वान्–उसको हराने के लिए; निलम् तन्तु–भूमि इसे पैदा करके; निमिर्न्ततु–उत्कृष्ट हुई। ६३१

रथ के समान नितम्बयुक्त सीता स्वर्ग या भूलोक की किसी अँगिया-बद्ध उरोजों के साथ शोभनेवाली स्त्री के पेट से पैदा हुई नहीं है। शंखों से भरे क्षीरसागर ने, बलवान देवासुरों से मथने पर कमलमालाधारिणी

श्रीलक्ष्मीदेवी को उत्पन्न किया। उस क्षीरसागर को नीचा दिखाने के लिए भूमि इसको उत्पन्न करके तर्जीह (श्रेष्ठता)पा गयी। ६३१

❀ मीऩ्गॉण्ड कॉडि यिऩाऱ्कु विऴावयरऩ् दुलह मेत्तत्
तेऩ्गॉण्ड नॅऱिमॅन् कूऩ्दऱ् चिऱ्ऱिडैच् चीदैयॅऩ्ऩुम्
माऩ्गॉण्डुण् डाडु नीयुन् वाळ्वलि युलहङ् गाण
याऩ्गॉण्डू डाडुम् वण्ण मिरामऩैत् तरुदि यॅऩ्बाल् 632

मीऩ् कॉण्ट कॉटियित्तार्क्कु–मत्स्य की ध्वजा वाले (मन्मथ) का; उलकम् विऴा अयर्न्तु एतुत–लोक उत्सव मनाकर उसकी स्तुति करे; उऩ् वाळ् वलि उलकम् काण–तुम्हारी तलवार की शक्ति भुवन देखे; तेऩ् कॉण्ट–मधु-भरा; नॅऱि–घुंघराला; मॅन् कूऩ्तल्–कोमल केश; चिऱु इटै–पतली कमर; चीतै ऍऩ्ऩुम्–(इनसे युक्त) सीता नाम की; माऩ्–हरिणी (-सी सीता) को; नी कॉण्टु–तुम लाकर; उण्टाटु–उसके साथ केलि करो; याऩ् कॉण्टु ऊटाटुम् वण्णम्–मैं लेकर खेलूं; ऍऩ्पाल् इरामऩै तरुति–मेरे पास राम को दिला दो। ६३२

तुम मकरकेतन का उत्सव और स्तुति लोक द्वारा कराते हुए और अपनी असि का पराक्रम दिखाते हुए उस सीता को हर ले आओ। उसका केश मधुमिश्रित घुंघुराला और कोमल है। कमर पतली है और वह हरिणी-सी है। उसको लाकर तुम उसके साथ केलि करो और मुझे लेकर खेलने के लिए उस राम को मुझे दिला दो। ६३२

❀ तरुवदु विदियॆ यॅऩ्ऱाऱ् ऱवम्बॅरि दुडैय रेऩुम्
वरुवदु वरुना ळऩ्ऱि वऩ्दुकै कूड वऱ्ऱो
ऑरुबदु मुहमु माऱ्बु मुरुवमुङ् गण्णुन् दोळ्हळ्
इरुबदुम् बडैत्त शॅल्व मॅय्दुव दिनित्ती यॅऩ्ऱाळ् 633

तरुवतु वितियॆ–(भलाई) देनेवाली विधि ही है; ऍऩ्ऱाल्–कहा जाय तो; तवम् पॅरितु उटैयरेऩुम्–बड़ा तपस्वी हो तो भी; वरुवतु–होनी; वरुम् नाळ् अऩ्ऱि–होने का काल छोड़कर; वऩ्तु कै कूट वऱ्ऱो–आ मिल सकनेवाली है क्या; ऑरु पतु मुकमुम्–दस मुख; मार्पुम्–वक्ष; कण्णुम् तोळ्कळ् इरुपतुम्–और बीस-बीस आँखें और कन्धे; उरुवमुम्–इनसे युक्त शरीर; पटैत्त चॅल्वम्–(और तुम्हारा) प्राप्त धन; नी ऍय्तुवतु–तुम सच्चे अर्थ में पाओगे (उसका भोग करोगे); इति–(सीता-प्राप्ति पर) आगे ही; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ६३३

विधि ही भला देनेवाली है। तो भी वड़े तपस्वी को भी तभी कुछ प्राप्त होता है, जब उचित काल आकर मिलता है। तुम्हारे दस सिर हैं, दस वक्ष और वीस नेत्र और कन्धे। तुम्हारे पास असीम सम्पत्ति है। तो भी उनके भोग का अब तक समय नहीं आया है। सीता की प्राप्ति के बाद ही वह काल आयगा। —यह सब कहकर शूर्पणखा ने रावण के मन में सीता के प्रति काम को पैदा करके उभारा। ६३३

❀ अन्तव इन्नै युन्बा लुय्प्पदन् रुणह लुइरु
ॲन्नैयव् विरामन् रुम्बि यिडैबुहुन् दिलङ्गु वाळाल्
मुन्नैमूक् करिन्दु विट्टान् मुडिन्ददॅन् वाळ्वु मुन्निन्
शॊन्नपि नुयिरै नीप्पान् रुणिन्दनॆ नॆन्नच् चॊन्नाळ् 634

अन्नवळ् तन्नै–ऐसी सीता को; उन् पाल् उय्प्पतु ॲन्नु–तुम्हारे पास पहुँचाने का विचार करके; अणुकल् उइरु–समीप (जो) गई; ॲन्नै–मुझे; अ इरामन् तम्पि–उस राम के छोटे भाई ने; इटै पुकुन्तु–बीच में घुसकर; इलङ्कु वाळाल्–(अपने पास रहे) कटार से; मुन्नै–(सीता को पकड़ने से) पहले ही; मूक्कु अरिन्तु विट्टान्–मेरी नाक काट दी; ॲन् वाळ्वुम् मुटिन्ततु–मेरा जीवन भी (व्यर्थ) गया; उन्नतिल् चॊन्न पिन्–तुमसे कहने के बाद; उयिरै नीप्पान्–प्राण छोड़ने का; तुणिन्तनॆन्–निश्चय किया; ॲन्न चॊन्नाळ्–ऐसा कहा। ६३४

आगे कहा कि भाई! ऐसी सीता को तुम्हारे पास ले आने का निश्चय करके मैं उसके समीप जाने लगी। तभी उस राम के छोटे भाई ने बीच में घुसकर अपने पास रहे खड्ग से मेरी नासिका काट दी। मेरा जीवन उसके साथ गया, समझ लिया। पर तुम्हारे पास आकर यह कहने के बाद प्राण त्याग दूँगी —यही विचार ले इधर आयी हूँ। ६३४

कोबमु मइनु मानक् कॊदिप्पुमॆन् रिनैय वॆल्लाम्
पावनिन् रिडत्ति निल्लाप् पॆइरिबोर् पइरु विट्ट
तीबमोन् रोन्रै युइरा लॆन्नलाञ् जॆयलिर् पुक्क
ताबमु नाणु मोन्रा युयिरोडुन् दळैइय वन्रे 635

कोपमुम्–क्रोध; मइतुम्–और वीरता; मान कॊतिप्पुम्–अपमानजनित ताप; ॲन्रु–आदि; इनैय ॲल्लाम्–ऐसे सभी भाव; पापम् निन्रिटत्तु–पाप के स्थान पर; निल्ला पॆइरि पोल्–जो रह नहीं सकता, उस पुण्य-भाग के समान; पइरु विट्ट–रावण का साथ छोड़ गये; तीपम् ऑन्रै ऑन्रु उइरल्–एक दीये से दूसरा दिया लगा तो; ॲन्नल् आम् चॆयलिल्–जो होगा ऐसी रीति से; तापमुम्–ताप; काम नोयुम्–और कामरोग; उयिरोटु तळैय–रावण के प्राणों से मिले और बढ़े। ६३५

यह सुनने पर रावण की विचित्र दशा हो गयी। पुरुषोचित क्रोध, वीरोचित साहस, अपमानजनित सन्ताप —सभी भाव ऐसे भाग गये जैसे पाप जहाँ है वहाँ से पुण्य का सुखसौभाग्य भाग जाता है। एक से एक दीप मिल जाने पर जैसा फल होगा, उसके समान उसके प्राणों में राग का ज्वर और कामरोग मिल गये। ६३५

❀ करनैयु मइन्दान् इङ्गै मूक्किनैक् कडिन्दु निन्रार्
उरनैयु मइन्दा नुइरु पळियैयु मइन्दान् वॆइरि
अरनैयुङ् गॊण्ड काम नम्बिनान् मुन्बु पॆइरु
वरनैयु मइन्दान् केट्ट मङ्गैयै मइन्दि लादान् 636

अरत्तैयुम् वॅऱ्ऱि कॉण्ट–हर को हरानेवाले; कामन् अम्पिनाल्—काम-बाण से; केट्ट मङ्कैयै–सुनी हुई (सीता) देवी को; मऱन्तिलातान्–जो नहीं भूला; करनैयुम् मऱन्तान्–(वह) खर को भूला; तङ्कै–अनुजा की; मूक्किनै–नाक को; कटिन्तु–काटकर; निन्ऱार्–जो बचे रहते है, उनका; उरत्तैयुम् मऱन्तान्–बल भूला; उऱ्ऱ पऴियैयुम्–प्राप्त अपयश; मऱन्तान्–भूला; मुन्नै पॅऱ्ऱ–पहले (ब्रह्मा, शिव आदि से) प्राप्त; वरत्तैयुम् मऱन्तान्–वरों को भूल गया। ६३६

रावण हरविजयी था। पर काम का बाण बली था। उससे आहत वह देवी सीता को, जिसके सम्बन्ध में शूर्पणखा से सुना भर था, भूल नहीं सका। पर खर मरा —यह भूल गया; छोटी बहिन की नाक कटी है —यह भी भूल गया। राम का बल भी स्मरण नहीं रहा। अपने पर लगा अपयश, ब्रह्मा, शिव आदि द्वारा दत्त वर —सभी भूल गया, रावण। ६३६

शिऱ्ऱिडैच् चीदै यॅन्नु नाममुम् जिन्दै तानुम्
उऱ्ऱिरण् डॉन्ऱाय् निन्ऱा लॉन्ऱॊऴित् तॉन्ऱै युन्न
मऱ्ऱॊरु मनमु मुण्डो मरक्कलाम् वऴिमऱ् ऱियादो
कऱ्ऱऱि ञान मिन्ऱेऱ् कामत्तैक् कडक्क लामो 637

चिऱु इटै चीतै–क्षीण-कटि सीता; ऍन्नुम् नाममुम्–का नाम और; चिन्तै तानुम्–उसका मन; इरण्टुम्–दोनों; ऑन्ऱाय् उऱ्ऱु निन्ऱाल्–एक साथ मिले रहे तो; ऑन्ऱु ऑऴिन्तु–एक को छोड़कर; ऑन्ऱै उन्न–(दूसरे) एक को सोचने के लिए; मऱ्ऱु ऑरु मनमुम् उण्टो–(दूसरा) एक मन है क्या; मऱक्कल् आम् वऴि–भूलने का मार्ग; मऱ्ऱुम्–और कोई; यातो—कौन सा है; कऱ्ऱु अऱि ञानम् इन्ऱेल्–सीखकर प्राप्त ज्ञान नहीं हो तो; कामत्तै कटक्कल् आमो–काम को जीतना हो सकता है क्या। ६३७

रावण का मन और पतली कमर की सीता का नाम दोनों बहुत ही प्रबल रूप से जुड़ गये। फिर एक से रहित दूसरे का अस्तित्व असम्भव हो गया। फिर दूसरा अलग एक मन भी नहीं था, जो उनमें एक को छोड़ दूसरा स्मरण करे। भूलने का कोई दूसरा मार्ग भी नहीं रहा। शास्त्र पढ़कर उसके उपदेशों के कार्यान्वित अभ्यास द्वारा प्राप्त (अमली) ज्ञान जिसमें नहीं है, वह काम पर विजय पा कैसे सकेगा ?। ६३७

मयिलुडैच् चाय लाळै वञ्जिया मुन्न नीण्ड
ऍयिलुडै यिलङ्गै वेन्द निदयमाञ् जिऱ्ऱैयि लिट्टान्
आयिलुडै यरक्क नुळ्ळ मव्वऴि मॅल्ल मॅल्ल
वॅयिलुडै नाऴि लुऱ्ऱ वॅण्णॅय्बोल् वॅदुम्बिऱ् ऱन्ऱे 638

नीण्ट ऍयिल् उटै–लम्बे प्राचीरों से आवृत; इलङ्कै वेन्तन्–लंका के राजा ने; मयिल् उटै चायलाळै–मयूरनिभ सीता को; वञ्चिया मुन्नम्–प्रवंचना से लाने से पहले

ही; इतयम् आम् चिऱैयिल्–हृदय रूपी कारा में; इट्टान्–बन्द कर दिया; अयिल् उटै–भालाधारी; अरक्कन् उळ्ळम्–राक्षस का मन; अ वळि–तब; वॅयिल् उटै नाळिल्–धूप-तप्त दिन में; उऱ्ऱ–धूप में रखे; वॆण्णॆय् पोल्–मक्खन के समान; मॆल्ल मॆल्ल–धीरे-धीरे; वॅतुम्पिऱ्ऱु–गरम होकर पिघला। ६३८

प्राचीरों से आवृत लंका के राजा रावण ने मयूराभा सीताजी को वंचना द्वारा हर लाने के पूर्व ही अपने हृदय की कारा में कैद कर रख लिया! भालाधारी राक्षस का हृदय तब गरम दिन में आतपदग्ध मक्खन के समान धीरे-धीरे पसीजने लगा। ६३८

विदियदु वलियि नालु मेलुळ विळैवि नालुम्
पदियुरु केडु वन्दु कुरुहिय बयत्ति नालुम्
कदियुरु पोऱियिन् वॆय्य कामनोय् कल्वि नोक्का
मदियिलि मऱैयच् चॆय्द तीमैबोल् वळर्न्द दन्ऱे 639

वितियतु वलियित्तालुम्–विधि के बल से और; मेल् उळ–आगे की; विळैवित्तालुम्–होनी के निमित्त; पति उरु केटु–और लंका नगर पर जो आना था, वह कष्ट; कुरुकिय पयत्तित्तालुम्–निकट आ गया, उस भावी के फल के कारण; कति उरु पोऱियिल्–गतियुक्त यन्त्र के समान; वॆय्य काम नोय्–पीड़क कामरोग; कल्वि नोक्का–विद्याविहीन; मति इलि–बुद्धि-रहित किसी का; मऱैय चॆय्त–छिपाकर किया; तीमै पोल्–बुरा काम-सा; वळर्न्ततु–बढ़ा; (अन्ऱु–ए)। ६३९

विधि प्रबल थी। होनी होनेवाली थी। लंका पर विनाश लाने का समय निकट आ गया था। इसलिए गतियुक्त यन्त्र के समान भयंकर कामरोग राक्षस के शरीर भर मे, विद्यावंचित बुद्धिहीन आदमी से किये गये अनर्थ के समान, व्याप्त हो गया। ६३९

पॊन्मय मान नङ्गै मनम्बुहप् पुन्मै पूण्ड
तन्मैयो वरक्कन् ऱन्नै ययर्त्तदोर् तहैमै यालो
मन्मदन् वाळि तूवि नलिवदोर् वलत्त नानान्
वन्मैयै माऱ्ऱु माऱ्ऱल् कामत्ते वदिन्द दन्ऱे 640

पॊन् मयम् आन–स्वर्णमय (आभा से) शोभायमान; नङ्कै–नायिका के; मनम् पुक–मन में प्रवेश के कारण; पुन्मै पूण्ट तन्मैयो–(रावण) बलहीनता पा गया था, या; तन्नै अयर्त्ततु ओर्–अपने को भूले रहने की; तकैमैयालो–एक स्थिति रही, इस वजह से; अरक्कन् तन्नै–राक्षस को; मन्मतन्–मनोज; वाळि तूवि–पुष्प-शर बरसाकर; नलिवतु–त्रस्त कर देनेवाला; ओर वलत्तन् आनान्–एक बली बन गया; वन्मैयै माऱ्ऱुम् आऱ्ऱल्–बल को वृथा करने की शक्ति; कामत्ते–काम में; वतिन्ततु अन्ऱे–रही न। ६४०

स्वर्णमय देवी के रावण के मन में प्रविष्ट होने से रावण दुर्बल हो

गया ? या वह अपने को भूले रहा ? अब राक्षस को मन्मथ अपने पुष्प-शरों से आहत करने में समर्थ हो गया ! हाँ ! बल को बेकार करने की शक्ति कामेच्छा में निहित रहती है न ? । ६४०

इऴिन्दन इरुक्कै निन्ऱाण् डेऴुल हत्तु ळोरुम्
मॊऴिन्दन राशि योशै मुऴङ्गिन शङ्ग मॆङ्गुम्
पॊऴिन्दतर् पूविन् मारि पोयिनर् पुरत्तो रॆल्लाम्
अऴिन्दयर् शिन्दै योडु माडहक् कोयिल् पुक्कान् 641

इरुक्कै निन्ऱु–आसन से; इऴिन्तनन्–उतरा; आण्डु–तब वहाँ; एऴु उलकत्तोरुम्–सातों लोकवासी; आचि मॊऴिन्तनर्–आशीर्वचन बोले; चङ्कम् ऎङ्कुम्–शंख सर्वत्र; ओचै मुऴङ्किन–नाद कर उठे; पुरत्तोर् ऎल्लाम्–पास रहे सभी; पूविन् मारि–पुष्पवर्षा; पॊऴिन्तनर्–करके; पोयिनर्–हटे; अऴिन्तु अयर्–शिथिल होकर मुरझानेवाले; चिन्तैयोटुम्–मन के साथ; आटक कोयिल्–स्वर्णमय भवन में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुआ । ६४१

रावण आसन से उतरा । तब जो सातों लोकों के लोग वहाँ थे, उन्होंने आशीर्वचन कहे । सब स्थानों पर शंख बज उठे । पास जो रहे उन्होंने पुष्पवर्षा की । वे हट गये । रावण खिन्न और श्रांतमन होकर स्वर्णनिर्मित अपने महल में प्रविष्ट हुआ । ६४१

पूविनाल् वेय्न्दु शॆय्द पॊङ्गुपे रमळिप् पॊऱ्पिन्
देविमार् वॆळ्ळ नीङ्गिच् चेर्न्दनन् शेर्द लोडुम्
नाविना ऱोदि नव्वि नयनमुन् नलनु नण्णिप्
पावियाक् कॊडुत्त वॆम्मै पयप्पयप् परन्द दन्ऱे 642

तेविमार् वॆळ्ळम् नीक्कि–स्त्रियों की भीड़ त्यागकर; पूविनाल् वेय्न्तु चॆय्त–पुष्प छाकर निर्मित; पॊऱ्पिन्–सुन्दरता में; पॊङ्कु पेर् अमळि–अधिक उत्कृष्ट शय्या में; चेर्न्तनन्–गया; चेर्तलोटुम्–उसमें जाते ही; नावि नाऱु ओति–कस्तूरी की गन्ध से युक्त केशिनी की; नव्वि नयनमुम्–मृग की-सी आँखों; नलनुम्–और अन्य अंग-सौष्ठव ने; नण्णि–आकर; पाविया–भावना करने से; कॊटुत्त–जो दिया; वॆम्मै–वह ताप; पय पय–धीरे-धीरे; परन्तनु–(उसके शरीर भर में) व्याप्त हो गया । ६४२

पत्नियों की भीड़ का निवारण करके वह एक पुष्पशय्या पर लेटा । उस सुन्दर शय्या के ऊपर का वितान भी फूलों से सज्जित था । उस पर लेटते ही उसके मन ने कस्तूरी की सुगन्ध से भरे केश से युक्त सीतादेवी के मृग के-से नयन और अन्य अंगसौष्ठव की भावना की । उस भावना के कारण बड़ा ताप पैदा हुआ और वह धीरे-धीरे शरीर में व्यापकर पीड़ा देने लगा । ६४२

नूक्क लाह लाद काद नूरु नूरु कोडियाय्प्
पूक्क वाश वाडै वीशु शीद नीर्बॉ दिन्दमॅन्
शेक्कै वीक रिन्दु तिक्क यङ्ग ळॅट्टुम् वॅन्रुतोळ्
आक्कै तीय वुळ्ळ नैय वावि वेव दायिन्नान् 643

नूक्कल् आकलात–अनिवार्य; कातल्–कामेच्छा; नूरु नूरु कोटियाय्–शत-शत करोड़ गुना; पूक्क–विकसित हुई; वाटै वीचु–उदीची से आनेवाली; चीत नीर्–शीत जल से; पॉतिन्त–भरी; मॅन् चेक्कै–कोमल शय्या के; वाच वी–सुगन्धयुक्त पुष्प; करिन्तु–झुलस गये और; तिक्कु कयङ्कळ् ॲट्टुम्–आठों दिग्गजों को; वॅन्र–जिन्होंने हराया था, वे; तोळ् आक्कै–कन्धे और शरीर; तीय–जल उठे; आवि वेवतु–प्राण मुरझाये; आयित्तान्–ऐसी स्थिति का हो गया। ६४३

सीता पर उसकी कामेच्छा निवार्य नहीं लगी। वह शत-शत कोटि-कोटि गुना विकसित हुई। तब उसकी शय्या के सुबासित फूल सूखने लग गये, यद्यपि उसमें उदीची हवा द्वारा लायी गयी शीतल सीकरें खूब भरी थीं। और भी उसका शरीर और उसके कंधे भी, जिन्होंने आठों दिग्गजों को हराया था, जलने लगे। प्राण भी जलते-से लगे। ऐसी विकट स्थिति में पड़ गया रावण। ६४३

तादु कॉण्डु शीद मुञ्जु मन्दु तण्णॅ न्नन्दमॅन्
पोदु कॉण्ड डुत्त पोदु पॉङ्गु तीम रुन्दिन्नाल्
वेदु कॉण्ड दॅन्न मेन्नि वॅन्दु शिन्द विम्मुदी
ऊदु वन्नरु रुत्ति पोलु यिर्त्तु यिर्त्तु यङ्गिन्नान् 644

तातु कॉण्टु–मकरन्द लेकर; चीतमुम् चुमन्तु–शीतलता ढोते हुए; तण् ॲन्–शीतल; अन्त–उन; पोतु कॉण्टु–पुष्प लेकर; अटुत्त पोतु–(जब वह उदीची हवा) आई तब; पॉङ्कु ती मरुन्तिन्नाल्–भभकती आग रूपी दवा से; वेतु कॉण्टतु ॲन्न–सेंका गया, ऐसा; मेन्नि वॅन्तु–शरीर गरम होकर; चिन्त–छितर जाय, ऐसा; विम्मु ती–बढ़नेवाली आग को; ऊतु–फूंकनेवाली; वन् तुरुत्ति पोल्–बलवान भाथी के समान; उयिर्त्तु उयिर्त्तु–लम्बी साँसें छोड़ते-छोड़ते; उयङ्किन्नान्–श्लथ हुआ। ६४४

उदीची हवा मकरन्द, शीतल जल और कुसुमों को लेकर, स्वयं ठण्डी रहकर आयी। पर उससे भभकनेवाली ज्वाला से सेंका गया हो, ऐसा वह गरम साँसें छोड़ने लगा। वे साँसें धौंकनी की हवा के समान उसके शरीर को अंगारे छितरानेवाली आग के समान पीड़ा देने लगीं और वह छटपटाने लगा। ६४४

तावि याद्दु तीयॅ नादु तैयलाळै मॅय्युरप्
पावि याद पोदि लाद पावि माळै पान्नल्वेल्
कावि यान्न कण्णि मेन्नि काण मूळु माशैयाल्
आवि शाल नॉन्दु नॉन्द ळङ्गु वानु मायिन्नान् 645

तावियातु–स्थिर न करके; ती अँतातु–(परदारा-प्रेम) अग्नि है, यह न सोचकर; तैयलाळै–देवी को; मॅय् उऱ–सचमुच; पावियात–नहीं स्मरण किया हो, ऐसा; पोतु इलात–जिसका समय नहीं रहा; पावि–वह पापी (रावण); माळै–आम; पात्तल्–कुवलय; वेल्–भाला; कावि–नीलोत्पल; आन–ऐसे; कण्णि–नेत्रों की; मेत्ति काण–(देवी का) रूप देखने के लिए; मूळुम्–बढ़नेवाली; आचैयाल्–लालसा से; आवि चाल नोंन्तु नोंन्तु–प्राणों के खूब पीड़ित होते-होते; अळुङ्कुवातुम् आयित्तान्–बहुत कष्ट उठाता रहा। ६४५

वह अपने मन को वश में न रख सका; न सीता को आग समझकर उनकी इच्छा करने से विरत हो सका। उस पापी के पास समय ही नहीं रहा, जब उसने सीताजी की भावना नहीं की! उसके मन में आम की फाँकें, कुवलय, भाला और नीलोत्पल —इनके समान जिनके नेत्र थे, उनका पूरा रूप देखने की दुर्दम लालसा उठी। वह बढ़ने लगी। उस कारण उसके प्राण बहुत कष्ट उठाने लगे। .वह भी बहुत कष्ट में पड़ा। ६४५

परङ्गि डन्द मादि रज्जु मन्द पाळि यानैयिन्
करङ्गि डन्द कोम्बो डिन्द डङ्ग वेंन्ऱ कावलान्
मरङ्गु डैन्द तुम्बि पोल तड्ग वाणम् वन्दुवन्
दुरङ्गु डैन्दु नोंन्दु नोंन्दु ळैन्दु ळैन्दो डुङ्गिनान् 646

परम् किटन्त मातिरम्–भारयुक्त दिशाओं के; चुमन्त–वाहक; पाळि यानैयिन्–मोटे (दिग्-) गजों की; करम् किटन्त–सूँड़ों के बाजू में रहे; कोम्पु ओटिन्तु–दाँत टूटकर; अटङ्क–(उसके) वक्ष में समा गये; वेंन्ऱ कावलान्–ऐसा विजयी राजा; अनङ्कपाणम्–अनंग-बाणों के; वन्तु वन्तु–आ-आकर; मरम् कुटैन्त–काठ को छेदनेवाले; तुम्पि पोल्–कीड़े (भ्रमर ?) के समान; उरम् कुटैन्तु–वक्ष को छेदने से; नोंन्तु नोंन्तु–वेदना सहते-सहते; उळैन्तु उळैन्तु–बहुत दर्द पाते-पाते; ओटुङ्किनान्–शिथिल हो गया। ६४६

रावण बली वीर था। बोझीली दिशाओं के वाही दिग्गजों से जब उसने युद्ध किया था, तब उनके दाँत उसके कठोर वक्ष से टकराकर टूट गये और उसके वक्ष में ही रह गये। ऐसे राजा के वक्ष में अब मन्मथ के पुष्पशर घुसकर छेद बनाने लगे। काठ में जैसे कीड़ा छेद बना देता है, वैसा उन शरों ने उसके वक्ष को भेद डाला। रावण वेदना के मारे थक गया। ६४६

कोन्ऱै तुन्ऱु कोदै योडोर् कोम्बु वन्दॅ नॅञ्जिडै
निन्ऱ दुण्डु कण्ड दॅन्ऱु ळन्द ळुङ्गु नीर्मैयान्
मन्ऱ ऱङ्ग लङ्गन् मारन् वाळि पोल मल्लिहैत्
तॅन्ऱल् वन्दॅ दिर्न्द पोदु शोरु वानु मायिनान् 647

कोन्ऱै तुन्ऱु–अमलतास के फलों के समान; कोतै ओटु–केश के साथ; ओर्

कॊम्पु वन्तु–एक पुष्पशाखा आकर; ऍन् नॆञ्चु इटै–मेरे मन में; निन्ऱतु–रह गई; कण्टतु उण्टु–मैंने देखा; ऍन्ऱु–यह कहते हुए; उळन्तु अळुङ्कु नोर्मैयान्–दुखी होकर संकट उठानेवाला; मन्ऱल् तङ्कु–सुवास-निलय; अलङ्कल् मारन्–मालाधारी मन्मथ के; वाळि पोल–(पुष्प-) शरों के समान; मल्लिकै तॆन्ऱल् वन्तु–मल्लिका के बास के साथ मलयपवन आकर; ऍतिर्न्त पोतु–जब उस पर लगा, तब; चीऱ्ऱुम् आयितान्–कोप करनेवाला भी बना। ६४७

उसे ऐसा भान रहा कि अमलतास के फलों के समान काले केश के साथ एक पुष्पलता के समान सुन्दरी उसके दिल में आकर ठहर गयी। तब वह दुखी होकर क्लान्त रहा। पर जब मलयपवन मल्लिका के फूलों का बास ढोता हुआ मन्मथ के शरों के समान उस पर लगा तो उसने कोप दिखाया। ६४७

अन्न कालै यङ्गु निन्ऱॆ ळुन्द ळुङ्गु शिन्दैयान्
इन्न वाऱु शॆय्वॆ नॆन्ऱॊ रॆण्णि लानि रङ्गुवान्
पन्नु कोडि दीब मालै पालै याळ्प्प ळित्तशॊर्
पॊन्न नार् डुक्क वङ्गॊर् शोलै यूडु पोयिनान् 648

अन्न कालै–तब; अळुङ्कु चिन्तैयान्–क्लान्तमन; अङ्कु निन्ऱु–(रावण) वहाँ से; ऍळुन्तु–उठकर; इन्न आऱु चॆय्वॆन्–ऐसा करूँ; ऍन्ऱु–यह; ओर् ऍण्–किसी एक विचार; इलान्–के विना; इरङ्कुवान्–दुखी रहा; पालै याळ्–'पालै' नाम की 'याळ' (वीणा) के स्वर को; पळित्त चॊल्–परिहसित करनेवाली बोली वाली; पॊन् अनार्–स्वर्ण-सम सुन्दरियों के; पन्नु–प्रशंसित; कोटि तीप मालै ऍटुक्क–बहुसंख्यक दीप-माला लेते आते; अङ्कु–वहाँ; ओर् चोलै ऊटु–एक उद्यान में; पोयिनान्–गया। ६४८

तब रावण वहाँ से उठा। उसका मन बड़ा क्लेशपूर्ण था। उसे नहीं सूझ रहा था कि क्या किया जाय। उससे वह और भी उद्विग्न हुआ। तब वह पास के एक उद्यान में चला। उसके साथ 'पालै याळ' नाम की वीणा के स्वर से भी मधुर बोली वाली सुन्दरियाँ बहुत बड़ी संख्या में दीप की मालाएँ लेते हुए चलीं। ६४८

माणिक्कम् पनशम् वाळै मरहदम् वयिरन् दॆमा
आणिप्पॊन् वेङ्गै कोङ्ग मरविन्द रागम् बूगम्
शॆणुऱ्ऱ नीलम् जालङ् गुरुविन्दन् दॆङ्गु वॆळ्ळि
पाणित्तॆण् पळिङ्गु नाहम् पाटलम् पवळ मन्नो 649

पनचम्–पनस (कटहल); माणिक्कम्–माणिक्यमय हैं; वाळै–कदली; मरकतम्–मरकतमय; तेमा वयिरम्–मधुर आम हीरे से; वेङ्कै–'वेंगै' वृक्ष; आणिप् पॊन्–चोखे स्वर्णमय; कोङ्कु–'कोंगु' तरु; अरविन्त राकम्–पद्मराग; चॆण् उऱ्ऱ पूकम्–गगनस्पर्शी पूगतरु; नीलम्–इन्द्रनील; चालम्–सालवृक्ष; कुरुविन्तम्–रत्नमय;

तॆङ्कु वॆळ्ळि–नारियल चाँदी के; नाकम्–सुरपुन्नाग; पाणि तॆळ् पळिङ्कु–जल स्वच्छ स्फटिक; पाटलम्–पाटल; पवळम्–प्रवाल। ६४६

उस उद्यान के पेड़ विचित्र थे। पनस माणिक्यमय थे। मरकत के, आम के पेड़ हीरे के, 'वेंगै' तरु चोखे स्वर्ण के, 'कोंगु' पद्मराग गगनस्पर्शी पूगतरु इन्द्रनीलमय, सालवृक्ष एक तरह के रत्न के, के पेड़ चाँदी के और सुरपुन्नाग जल-स्वच्छ स्फटिक के थे। पाटल के प्रवालमय थे। ६४९

वानुऱ निवन्द शॆङ्गेळ मणिमरन् दुवन्ऱि
मीन्दॊडु मलर्ह डम्मिल् वेऱुमै तॆरिद
तेनुहु शोलै नाप्पण् शॆम्बॊन्मण् डबत्तु
पानिऱ वमळि शेर्न्दान् पैयुळुऱ् ऱुयङ्गि

पैयुळ् उऱ्ऱु–पीड़ित होकर; उयङ्कि नैवान्–दुःख-मग्न हो विगलित वान् उऱ निवन्त–गगन को स्पर्श करते हुए उन्नत; चॆम् केळ्–उत्तम रंग वाले मरम् तुवन्ऱि–रत्नमय तरुओं से भरे रहकर; मलर्कळ्–उनके फूल; वान आकाश के नक्षत्रों के साथ; तम्मिल्–उनसे; वेऱुमै तॆरितल् तेऱ्ऱा– कठिन हो ऐसा, रहकर; तेन् उकु–जहाँ शहद चूते थे; चोलै नाप्पण् मध्य; चॆम् पॊन् मण्टपत्तुळ्–लाल स्वर्ण-मण्डप में; आण्टु–वहाँ; क्षीरवर्ण; ओर् अमळि–एक शय्या में; चेर्न्तान्–गया। ६५०

कामवेदना से व्यग्र रावण उस उद्यान के बीच में रहे स्व अन्दर दुग्ध-सम श्वेत एक शय्या पर गया। उस उद्यान में हुए बढ़े और रत्नमय तरु खूब भरे थे। उनके फूलों और नक्षत्रों में भेद जानना कठिन था। वे फूल शहद चू रहे थे। ६

कनिहळिन् मलरिन् वन्द कळ्ळुण्ड कळिह
वन्निदैयर् मळलै यिन्शॊऱ् किळ्ळैयुङ् कुयिलुम्
इनियन मिळऱ्ऱु हिन्ऱ यावैयु मिलङ्गै
मुन्नियुमॆन् ऱविन्द वाय मूङ्गैयर् पोन्ऱ

कनिकळिन्–फलों से और; मलरिन्–फूलों से; वन्त–निकला मधु पीकर; कळिकळ् अन्न–पियक्कड़ों के समान; वनितैयर् इन् चॊल्–तुतलाते मधुर वचन बोलनेवाले; किळ्ळैयुम्–शुक; वण्टुम्–भ्रमर; इनियन मिळऱ्ऱुकिन्ऱ यावैयुम्–मधुर बोलनेवाले वेन्तन्–लंकाधिपति; मुनियुम् ऎन्ऱु–कोप करेगा, यह सोचकर; मुख बन्द कर; मूङ्कैयर् पोन्ऱ–गूँगे के समान हो रहे। ६५१

उस उद्यान में शुक, पिक, भ्रमर आदि थे। वे उस के फलों और फूलों से निकलनेवाले मधु और रस समान मत्त हो स्त्रियों की-सी तुतलाती मधुर बोली में

अब वे, इस डर से कि लंकेश रावण गुस्सा करेगा, मुख बन्द करके गूँगे के समान हो रहे। ६५१

परुवत्ताल् वाडै तन्द पशुम्बनि यनङ्ग बाणम्
उरुविप्पुक् कौळित्त पुण्णिर् कुळित्तलु मुळैन्दु विम्मि
इरुदुत्तान् याद डावॆन् ऱियम्बिना नियम्ब लोडुम्
वॆरुविप्पोय्च् चिशर नीङ्गि वेनिल्वन् दिरुत्त दन्ऱे 652

परुवत्ताल्–ऋतु के धर्म के अनुसार; वाटै तन्त–उदीची हवा द्वारा लाई गई; पचुम् पनि–शीतल हिम; अनङ्कपाणम् उरुवि–अनंग-बाण छेदकर; पुक्कु ऒळित्त–प्रवेश कर (छिपे) जहाँ रहे; पुण्णिल्–उन व्रणों में; कुळित्तलुम्–जब पैठे तभी; उळैन्तु विम्मि–पीड़ा से व्यग्र होकर; इरुतु तान् यातटा–ऋतु कौन है, रे; ऎन्ऱु–ऐसा; इयम्पिनान्–रावण ने प्रश्न किया; इयम्पलोटुम्–कहते ही; चिचिरम्–शिशिर; वॆरुवि पोय् नीङ्कि–डरकर चला, हटा और; वेनिल् वन्तु इरुत्ततु–वसन्त आ गया। ६५२

ऋतु शिशिर की थी। इसलिए उदीची हवा द्वारा शीतल हिम आकर लग रहा था। वह काम-शर-विद्ध रावण के शरीर के व्रणों में जब पैठा, तब वह छटपटाने लगा। वेदना से हड़बड़ाकर उसने डाँटा कि क्या ऋतु है यह? यह पूछना था कि शिशिरऋतु डरकर भाग गयी। उसके स्थान पर वसन्तऋतु आ रही। ६५२

वन्बणै मरमुन् दीयुम् मलैहळुङ् गुळिर वाळुम्
मॆन्बनि यॆरिन्द दॆन्ऱाल् वेनिलै विळम्ब लामो
अन्बॆनुम् विडमुण् डारै यार्ऱला मरुन्दु मुण्डो
इन्बमुन् दुन्बमुन् दानु मुळ्ळत्तो डियैन्द वन्ऱे 653

वन् पणै मरमुम्–कठोर बड़े तरु भी; तीयुम्–अग्नि; मलैकळुम्–पहाड़; कुळिर–शीतल बने; वाळुम्–प्राणपूर्ण; मॆल् पनि–कोमल हिम ने; ऎरिन्ततु–जलाया; ऎन्ऱाल्–तो; वेनिलै विळम्पलामो–धूप का कहना क्या; अन्पु ऎन्नुम् विटम् उण्टारै–काम नाम का विष जिसने खाया है, उसका; आऱ्ऱल् आम् मरुन्तुम्–शमन करनेवाली दवा भी; उण्टो–है क्या; इन्पमुम् तुन्पम् तानुम्–सुख और दुःख; उळ्ळत्तोटु–मन के साथ; इयैन्त अन्ऱे–लगे हुए (अनुभव) हैं न। ६५३

वसन्त के कारण बड़े-बड़े कठोर पेड़ भी मनोरम हो गये। पर्वत भी आँखों को ठण्डक (आराम) पहुँचानेवाले हो गये। पर धूप तो थी। जिसको हिम भी ताप दे रहा था उसको धूप क्या देगी, यह कहने की आवश्यकता है क्या? काम का विष जिसने पिया है, उसके ताप को शान्त करनेवाली दवा इस लोक में कहाँ प्राप्य है? सुख व दुःख अपने-अपने मन की अनुभूत दशाएँ हैं न? फिर बाहर का उपचार क्या कर सकता है?। ६५३

मादिरत् तिरुदि काऱुन् दन्मनत् तॆऴुन्द मैयल्
वेदनै वॆप्पञ् जॆय्य वेनिलुम् वॆदुप्पुङ् गालै
यादिदिङ् गिदनिन् मुन्नैच् चिशिरतन् ऱिदनै नीक्किक्
कूदिराम् बरुवन् दन्नैक् कॊणरुदिर् विरैवि नॆन्ऱान् 654

तन् मनत्तु ऍऴुन्त–अपने मन में उठी; मैयल् वेतनै–प्रेम की वेदना ने; मातिरत्तु इऱुति काऱुम्–दिगन्त तक; वॆप्पम् चॆय्य–गरमी दिला दी, तब; वेनिलुम् वॆतुप्पुम् कालै–धूप ने भी ताप दिया, तो; यातु इङ्कु–कौन (सी ऋतु) यहाँ; मुन्नै चिचिरम् इततिन् नन्ऱु–पहले का शिशिर इससे बेहतर रहा; इततै नीक्कि–इसको दूर करके; कूतिर् आम् परुवम् तन्नै–शरद ऋतु को; विरैविल् कॊणरुतिर्–तुरन्त लाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ६५४

रावण के मन का ताप दिगन्त तक फैलकर तपाने लगा। उस पर वसन्त की धूप भी मिल गयी। वह और भी गरम हो गया। पूछा कि अब कौन सी ऋतु आयी है यह? पहले जो शिशिरकाल था वह इससे बेहतर था, ऐसा लगता है। उसने आज्ञा दी— हटाओ इसे। शरदऋतु को लाओ शीघ्र। ६५४

कूदिर्वन् दडैन्द कालै कॊदित्तन कुववुत् तिण्डोळ्
शीदमुञ् जुडुमो मुन्नैच् चिचिरमे काणि दॆन्ऱान्
आदिया यञ्जु मन्ऱे यरुळल दियऱ्ऱ लॆन्न
यादुमिङ् गिरुदु माहा यावैयु महऱ्ऱु मॆन्ऱान् 655

कूतिर् वन्तु अटैन्त कालै–शरद जब आया; कुववु तिण् तोळ्–पुष्ट और सुदृढ़ कन्धे; कॊतित्तन–गरम हो गये; चीतमुम् चुटुमो–शीत भी जलायगा क्या; मुन्नै चिचिरमे इतु–पहले का शिशिर ही यह; काण्–देखो; ऍन्ऱान्–बोला; आतियाय्–नाथ; अरुळ् अलतु–आज्ञा के सिवाय; इयऱ्ऱल्–करना; अञ्चुम्–डरते हैं; ऍन्न–कहा, तो; इङ्कु–यहाँ; इरुतु यातुम्–कोई भी ऋतु; आकातु–(भली) नहीं हो सकती; यावैयुम् अकऱ्ऱुम्–सबको हटाओ; ऍन्ऱान्–कहा; (अन्ऱु–ए)। ६५५

शरद आया। (पर क्या फल होता?) उसके पुष्ट और सबल कंधे जल उठे। "ऐ! शीत भी जला सकेगा क्या? वही शिशिर यह है! देखो!" जब रावण ने यह कहा तब उसके दासों ने विनय की कि महाराज! हम आपकी आज्ञा के सिवा कुछ अन्य करने से डरेंगे। (आप विश्वास मानें कि यह शरद है।) तब रावण ने आज्ञा दी कि सो बात है तो कोई भी ऋतु कुछ नहीं करेगी। यहाँ कोई ऋतु न हो। हटाओ सबको। ६५५

ऍन्ऩलु मिरुदु वॆल्ला मेहलुम् यावुन् दन्दम्
पन्नरुम् बरुवञ् जॆय्या योहिपोल् पऱ्ऱु नीत्त
पिन्नरु मुलह मॆल्लाम् पिणिमुदऱ् पाशम् वीशित्
तुन्नरुन् दवत्तो रॆय्दुन् दुऱक्कम्बोऱ् ऱोन्ऱिऱ् ऱन्ऱे 656

ॲन्ऩलुम्–कहते ही; इरुतु ॲल्लाम्–सभी ऋतुएँ; एकलुम्–चली गईं, तब; यावुम्–सभी (पदार्थ); पन्ऩ् अरुम्–अवर्ण्य; परुवम् चॅय्या–मौसम के अनुसार व्यापार छोड़कर; योकि पोल्–यतियों की तरह; पऱ्ऱु नीत्त–निर्लिप्त रह गये; पित्तरुम्–और फिर; उलकम् ॲल्लाम्–सारे लोक; पिणि मुतल् पाचम् वीचि–रोग आदि कर्म-पाश हटाकर; तवत्तोर् ॲय्तुम्–तपस्वी द्वारा प्राप्य; तुन्ऩ् अरुम् तुऱक्कम् पोल्–दुर्गम स्वर्ग के समान; तोन्ऱिऱ्ऱु–दिखाई दिया। ६५६

उसके ऐसा कहने पर सारी ऋतुएँ चली गयीं। उनके साथ कालोचित व्यापार भी रुक गये। इसलिए उस उद्यान में रहे चल और अचल सभी पदार्थ और जीव योगी के समान अचल और निर्लिप्त रह गये। वे ही क्या सारे लोकों के सारे जीव रोग आदि कर्मबन्धन काटकर स्थिर रहे। इसलिए लोक तपस्वी द्वारा प्राप्य और साधारण रीति से दुर्गम स्वर्ग के समान दिखे। ६५६

कूलत्ता रुलह मॅल्लाङ् गॊंदिप्पॊडु कुळिर्प्पु नीङ्ग
नीलत्ता ररक्कन् मेनि नॅय्यिन्ऱि यॅरिन्द दन्ऱे
कालत्ताल् वरुव दॊन्ऱो कामत्ताऱ् कनलुम् वॅन्दीच्
चीलत्ता लविप्प दन्ऱिच् चॅय्यत्ता नाव दुण्डो 657

कूलत्तु आर्–सीमा-बद्ध; उलकम् ॲल्लाम्–सारे लोक; कॊंतिप्पु ऒरु कुळिर्प्पु नीङ्क–गरमी व ठण्डी से रहित हुए, तब; नीलत्तु आर् अरक्कन् मेति–नीलवर्ण राक्षस का शरीर; नॅय् इन्ऱि–घी के विना ही; ॲरिन्ततु–जला; कालत्ताल् वरुवतु ऒन्ऱो–ऋतु के कारण आया वह क्या; कामत्ताल्–काम के कारण; कनलुम् वॅम् ती–जलनेवाली गरम आग को; चीलत्ताल्–शीलगुण द्वारा; अविप्पतु अन्ऱि–बुझाना छोड़कर; चॅय्य तान् आवतु उण्टो–करने के लिए कोई दूसरा है क्या। ६५७

संसार सीमावद्ध है। उसकी गति-विधि आदि के नियम हैं। अब वे नियम नहीं रहे। अतः न शीत था, न ताप। तब भी नीलवर्ण रावण का शरीर ताप का अनुभव करने लगा। वह विना घी के ही जलने लगा! उसका ताप काल के व्यापार के फलस्वरूप आनेवाला नहीं था! पर उसके मन की काम रूपी जलती आग से होनेवाला ताप था। उसकी शान्ति शीलगुण से ही हो सकती थी। दूसरा कोई परिहार क्या होगा? । ६५७

नारमुण् डॅळुन्द मेहम् दामरै वळैय नात्तच्
चारमुण् डिरुन्द शीदच् चन्दनन् दळिर्मॆन् ऱादो
डारमुण् डॅरिन्दु शिन्दे ययर्हिन्ऱा नयनिन् ऱारै
ईरमुण् डॅन्ब रोडि यिन्दुवैक् कॊणरु मॆन्ऱान् 658

नारम् उण्टु ॲळुन्त–जल पीकर जो उठे; मेकम्–वे मेघ; तामरै वळैयम्–कमलनालों के वलय; नात्त चारम् उण्टु इरुन्त–कस्तूरी और गन्ध-द्रव्य-मिला; चीत चन्तनम्–शीतल चन्दन; तळिर्–पल्लव; मॆल तातॊटु–कोमल पराग के साथ;

आरम्–मोती; उणट्टु–उसके शरीर पर रखे गये; ऍरिन्तु–(पर) जलन से; चिन्तै अयर्किन्ऱान्–मन में तप्त हो थकता है; अयल् निन्ऱारै–पार्श्व में स्थित लोगों को; ईरम् उणट्टु ऍन्ऩपर्–शीतलता है, कहते; ओटि–भागो; इन्तुवै–इन्दु को; कोणर्म् ऍन्ऱान्–लाओ, कहा। ६५८

रावण के शरीर पर शीत देनेवाले पदार्थ रखे गये। जल-भरे मेघ; कमलनालों के बने वलय; कस्तूरी-मिला शीतल चन्दन; पल्लव; कोमल मकरन्द; मोती आदि उसका ताप हर नहीं रहे थे वल्कि ताप को वढ़ाने लगे। तव उसने अपने पार्श्वस्थों से कहा कि लोग कहते हैं कि चन्द्र में शीत (देने की शक्ति) है। जाकर इन्दु को पकड़ लाओ। ६५८

वॅञ्जिनत् तरक्क नाण्ड वियन्नहर् मीदु मेव
नॅञ्जयिर्त् तॉडुङ्गु हिन्ऱ निऱैमदि योनै नेडि
अञ्जलै वरुदि निन्नै यऴैत्तन नरश नॅन्नच्
चञ्जलन् दुऱन्दु तानच् चन्दिर नुदिक्क लुऱ्ऱान् 659

वॅम् चित्तत्तु–भयंकर क्रोधी; अरक्कन् आण्ट–राक्षस से पालित; वियन् नकर् मीतु–बड़े उस नगर के ऊपर; मेव–जाने से; नॅञ्चु अयिर्त्तु–मन में डरकर; ऑतुङ्कुकिन्ऱ–परे चलता जो रहा, उस; निऱै मतियोनै–पूर्णचन्द्र को; नेटि–ढूँढ़कर; अञ्चलै–मत डरो; निन्नै–तुमको; अरचन्–राजा ने; अऴैत्तनन्–बुलाया है; ऍन्न–कहने पर; अ चन्तिरन्–वह चन्द्र भी; चञ्चलम् तुऱन्तु–घवड़ाहट छोड़कर; उतिक्कल् उऱ्ऱान्–उदित हुआ। ६५९

चन्द्र तो भयंकर क्रोधी राक्षसराज से पालित वड़े नगर—लंका—के ऊपर जाने से विल्कुल डरता था। इसलिए वह उसे वचाकर कहीं घूमता रहा। राक्षसों ने उसे ढूँढ़कर पकड़ा। उससे कहा— मत डरो। राजा ने तुम्हें वुलाया है। वह चन्द्र भी कुछ अधैर्य छोड़कर धीरता का अवलंवन करके उदित हुआ। ६५९

अयिरुऱक् कलन्द तीम्बा लाऴिनिन् ऱाऴि यिन्दु
शॅयिरुऱ्ऱ् करश नाण्डोर् तेय्वुवन् दुऱ्ऱ पोऴ्दिन्
वयिरमुऱ् ऱुडैन्द माऱ्ऱान् वलियऱच् चॅन्ऱ वन्ऱन्
उयिर्तॅऱ वुवन्दु वन्दा नौत्तन नुदयञ् जॅय्दान् 660

चॅयिर् उऱ्ऱ्कु अरचन्–अपने शत्रु राजा के; ओर् तेय्वु उऱ्ऱ पोऴ्तिल्–निर्बल रहते समय; आण्टु–तव; वयिरम् उऱ्ऱु–वैर साधकर; उटैन्त माऱ्ऱान्–बलहीन शत्रु के; वलि अऱ–वल को ध्वस्त करने; चॅन्ऱु–चढ़ जाकर; अवन् तन् उयिर् तॅऱ–उसके प्राणों का अन्त करने की; उवन्तु वन्तान्–चाह लेकर आया हो; ऑत्तनन्–उसकी तरह; अयिर् उऱ कलन्त–शर्करा (या सूक्ष्म सिकता) से युक्त; तीम् पाल् आऴि निन्ऱु–मधुर क्षीरसागर से; आऴि इन्तु–गोल चाँद; उतयम् चॅय्तान्–उदित हुआ। ६६०

कोई राजा है। उसका शत्रु निर्बल हो गया है। उस समय यह राजा अपना वैर साधने के इरादे से विकट स्थिति में रहनेवाले उस शत्रु पर आक्रमण करके उसके प्राण हरने के लिए आता हो ऐसा, शर्करा-भरे क्षीर-सागर-मध्य से गोल पूर्णचन्द्र उगकर आया। ६६०

परावरुङ् गदिर्ह ळॅड्गुम् परप्पिमीप् पडर्न्दु वानिल्
तरादलत् तॅवरुम् बेणत् तण्मदि युदित्त तोऱ्ऱम्
अरावणेत् तुयिलु मण्णल् कालमोर्न् दऱ्ऱ नोक्कि
इरावण नुयिर्मे लुय्त्त तिहिरियु मॅन्न लान 661

परावु अरुम्–जिसकी पूरी प्रशंसा करना कठिन है; तण् मति–वह शीतल चन्द्र; कतिर्कळ् ॲङ्कुम् परप्पि–सर्वत्र किरणें फैलाते हुए; वानिल् मी पटर्न्तु–ऊपर आकाश में चलकर; तरातलत्तु ॲवरुम् पेण–धरातल के सबका स्वागत पाकर; उतित्त तोऱ्ऱम्–उदित जो हुआ वह दृश्य; अरा अणै तुयिलुम् अण्णल्–शेष-शय्या पर निद्रा करनेवाले प्रभु द्वारा; कालम् ओर्न्तु–समय विचारकर; अऱ्ऱम् नोक्कि–सन्दर्भ निश्चित कर; इरावणन्–रावण के; उयिर्मेल् उय्त्त–प्राणों पर चलाया गया; तिकिरियुम् ॲन्नल्–(सुदर्शन) चक्र-सम; आन–हुआ। ६६१

अवर्णनीय यशस्वी शीतल चन्द्र आकाश में ऊपर उदित हुआ। तब उसकी किरणें सब जगह फैलीं। भूमि के सभी लोग उसका चाव के साथ स्वागत करने लगे। तब वह दृश्य शेषशायी श्रीमन्नारायण के चक्र के समान था, जिसे उन्होंने उचित समय विचारकर और ठीक सन्दर्भ देखकर रावण पर चलाया हो। ६६१

अरुहुरु पालिन् वेलै यमुदॅला मळैन्दु वारिप्
परुहित परन्दु पाय्न्द निलाच्चुडर् पनिमॅन् कऱ्ऱै
नॅरिवुरु पुरुवच् चॅङ्ग णरक्करक्कु नॅरुप्पि नाप्पण्
उरुहिय वॅळ्ळि यळ्ळि वीशिना लॊत्त दन्ऱे 662

अरुकु उऱु–पास रहे; पालिन् वेलै–क्षीरसागर के; अमुतु ॲलाम्–सारे अमृत को; अळैन्तु वारि परुकित–(चन्द्र ने) टटोल, उठाकर खा लिया; परन्तु पाय्न्त–(वही अमृत) सर्वत्र फैलकर व्यापा; निला चुटर्–(उस अमृत की) चाँदनी की किरणों की; पनि मॅल् कऱ्ऱै–शीतल कोमल राशि; नॅरिवु उऱु पुरुव–तनी हुई भौंहों के; चॅम् कण् अरक्करक्कु–अरुणाक्ष राक्षस रावण के लिए; नॅरुप्पिन् नाप्पण्–अग्नि-मध्य; उरुकिय–पिघली हुई; वॅळ्ळि–चाँदी; अळ्ळि वीचिनाल्–उठाकर जो फेंकी गई; ऒत्ततु–उसके समान रही। ६६२

चन्द्र की चाँदनी की शीतल किरणों की राशि क्या थी! उसने अपने पास के क्षीरसागर से टटोल लेकर जो अमृत खाया था, वह मानो सब जगह फैल रहा था। लेकिन वह तनी हुई भौंहों और लाल आँखों के साथ जो रहा, उस रावण के लिए अग्निमध्य चाँदी को पिघलाकर प्राप्त द्रव के समान था जिसे उस पर उड़ेल दिया हो। ६६२

मिऩ्नलन् दिहऴुम् जोदि विऴुनिला मिदिलै शूऴ्न्द
शॅन्नॅलङ् गऴनि नाडन् ट्रिरुमहळ् शॅव्वि केळा
नन्नलन् दोलैन्दु शोरु मरक्कनै नाळुन् दोलात्
तुन्नल नॊरुवन् बॅऱ्ऱ पुहऴॆनच् चुट्ट दन्ऱे 663

मिऩ् नलम् तिकऴुम् चोति–विद्युत के गुण के साथ विद्यमान ज्योति की; विऴु निला–श्रेष्ठ चाँदनी ने; चूऴ्न्त–चारों ओर घेरे रहनेवाले; चॅम् नॅल्–लाल धान के; अम् कऴनि–मनोहर खेतों से युक्त; मितिलै नाटन्–मिथिलेश की; तिरुमकळ् चॅव्वि–दिव्य सुता सीता का रूपसौंदर्य; केळा–श्रवण कर; नल् नलम् तॊलैन्तु चोरुम्–(उसके फलस्वरूप) अपना बल सब खोकर लटनेवाले; अरक्कनै–राक्षस, रावण को; नाळुम् तोला–कभी न हारनेवाले; तुन्नलन् ऑरुवन् पॅऱ्ऱ पुकऴ् ऍन–शत्रु से प्राप्त यश के समान; चुट्टतु–तपाया। ६६३

उस चाँदनी में विद्युत की-सी ज्योति भरी थी। रावण उस विदेह देश के राजा की सुपुत्री जानकीदेवी का रूपसौंदर्य सुनकर अपने सभी तरह के बल को क्षीण होने देते हुए छटपटा रहा था; जिस देश के चारों ओर लाल धान के पौधों से भरे खेत पाये जाते थे। वह चाँदनी उस रावण को इस तरह तपाने लगी, जिस तरह अजेय शत्रु का यश किसी वीर को तपाता है। ६६३

करुङ्गऴऱ् काल नञ्जुङ् गावलन् करुत्तु नोक्कित्
तरुङ्गदिर्च् चीद याक्कैच् चन्दिरऱ् ट्ररुदि ऍन्न
मुरुङ्गिय कनलिन् मूरि विडत्तिनै यॊऴुक्कुम् जोऱ्ऱत्
तरुङ्गदि ररुक्कन् ट्रन्नै यारऴैत् तीर्ह ळॆन्ऱान् 664

करुम् कऴल् कालन्–बड़ी पायलों से भूषित यम भी; अञ्चुम्–जिससे डरता है; कावलन्–राक्षसराज; करुत्तु नोक्कि–(भृत्यों को) गुस्से के साथ देखकर; चीतम् तरुम् कतिर् याक्कै–शीत देनेवाली किरणों के शरीर के; चन्तिरन् तरुतिर् ऍन्न–चन्द्र को लाओ, कहा; मुरुङ्किय कनलिन्–खूब जलती हुई आग के साथ; मूरि विटत्तिनै–भयंकर विष को; ऑऴुक्कुम्–बरसानेवाले; चोऱ्ऱत्तु–क्रुद्ध; अरुम् कतिर् अरुक्कन् तन्नै–संतापी किरणमाली सूर्य को; यार् अऴैत्तीर्कळ्–तुम लोगों में किसने बुलाया; ऍन्ऱान्–पूछा। ६६४

बड़ी पायलधारी यम के भी भयदायी रावण ने अपने भृत्यों को देखकर पूछा कि शीतल-किरण-शरीरी चन्द्र को लाओ—यही मैंने कहा था। लेकिन यह सर्वदाहक अग्नि के साथ भयंकर विष को बरसानेवाले और विवृद्ध कठोर किरणमाली को लाया गया है। तुम लोगों में किसने उसको बुलाया ? । ६६४

अव्वऴिच् चिलद रञ्जि यादिया यरुळिल् लारै
इव्वऴित् तरुदु मॅन्ब दियम्बला मियल्बिऱ् ट्रन्ऱाल्

ऎव्वळिक् कदिरो तॆन्ऱुन् देरिऩ्मे लन्ऱि वारान्
अव्वळित् तॆत्तिनुन् दिङ्गळ् विमानत्तिन् मेल दॆन्ऱार् 665

अ वळि–तब; चिलतर्–भृत्यों ने; अञ्चि–डरकर; आतियाय्–नायक; अरुळ् इल्लारै–आपने जिसको लाने की आज्ञा देने की कृपा नहीं की; इ वळि–(उसको) इधर; तरुतुम् ऎन्पतु–लायेंगे, ऐसा करना; इयम्पल् आम् इयल्पिऱ्ऱु अन्ऱु–कहने योग्य बात नहीं है; चॆम् वळि कतिरोन्–अपने मार्ग पर सीधे चलनेवाला सूर्य; ऎन्ऱुम्–सदा; तेर् मेल् अन्ऱि–रथ पर आना छोड़कर; वारान्–नहीं आयगा; तिङ्कळ्–चन्द्र; ऎ वळित्तु ऎत्तिनुम्–किसी भी मार्ग पर क्यों न हो; विमानत्तिन् मेलतु–यान पर ही चलेगा; ऎन्ऱार्–(उत्तर में) कहा। ६६५

तब भृत्यों ने भयभीत होकर विनय की। हे नाथ! आपने जिसको लाने की आज्ञा कृपापूर्वक नहीं की, उसको हम लायेंगे, यह बात कथनीय नहीं है। सीधे मार्ग पर जानेवाला सूर्य कभी भी रथ पर आना छोड़कर किसी दूसरी तरह से नहीं आयगा। और चन्द्र, जहाँ भी जाये, यान पर ही जायगा। ६६५

पणन्दा ळलहुऱ् पनिमॊऴियार्क् कन्बु पट्टार् पडुङ्गामक्
कुणन्दान् मुन्न मऱियादान् कॊदिया निन्ऱान् मदियाले
तणन्दा मरैयिन् ऱनिप्पहैज तॆन्नुन् दन्मै यॊरुदाने
उणर्न्दा नुणर्वु ऱुवन्मेलिट् टुय्त्त तुन्बम् सुरैसॆय्वान् 666

पणम् ताऴ् अल्कुल्–सर्पफन को उपमा में नीचे दिखानेवाला वरांग; पनि मॊऴियार्क्कु–शीतल बोली, इनसे युक्त स्त्रियों के प्रति; अन्पु पट्टार्–काम के वश में जो हुए; पडुम्–उसको सतानेवाला; काम कुणन्तान्–कामरोग की स्थिति को; मुन्तम् अऱियातान्–जो पहले नहीं जानता था, वह रावण; मतियाल्–उस चन्द्र से; कॊतिया निन्ऱान्–तप्त रहा; तण् अम् तामरैयिन्–शीतल सुन्दर कमल का; तनि पकैञन्–विशेष शत्रु वह; ऎन्नुम् तन्मै–यह रीति; ऒरु ताने उणर्न्तान्–एक तरह से स्वयं जानकर; उणर्वु उऱ्ऱु–होश में आकर; उयिर् तन्तु उय्क्क–प्राण (स्वस्थता) पाकर बचने के लिए; अवन् मेलिट्टु–उस चन्द्र के प्रति; उरै चॆय्वान्–बोलने लगा। ६६६

रावण को कभी सर्प-फन के समान वरांग और शीतल, मधुर वाणी की स्त्रियों के प्रेम में फँसे हुए लोगों के काम-ताप की वेदना का प्रकार नहीं मालूम था। अब वह इस चन्द्र के कारण वेदना से तड़पने लगा। तब उसे स्मरण आया कि यह शीतल, सुन्दर कमल का अनोखा शत्रु है। तब उसे सुध आयी कि मैं इससे प्राण पाकर बचने के लिए कुछ कहूँ—यह सोचकर वह चन्द्र के प्रति कहने लगा। ६६६

तेया निन्ऱाय् मॆय्वॆळुत्ता युळ्ळङ् गऱुत्ताय् निलै तिरिन्दु
काया निन्ऱा यॊरुनोयुङ् कण्डार् शॊल्लक् केट्टायो

पाया निऩ्ऱ मलर्वाळि पऱिया निऩ्ऱा रिल्लैयाल्
ओया निऩ्ऱे ऩुयिर्हात्तऱ् कुरिया रारे युडुबदिये 667

उटुपतिये–उडुपति; तेया निऩ्ऱाय्–क्षीण होता जाता है; मॅय् वॅळुत्ताय्–शरीर पाण्डुर है; उळ्ळम् कऱुत्ताय्–दिल काला है; निलै तिरिन्तु काया निऩ्ऱाय्–गुण बदलकर सूख गया; ओरु नीयुम्–अनोखी स्थिति में रहनेवाला तू भी; कण्टार् चॊल्ल–किसी के एक स्त्री को देखकर तेरे पास बताने से; केट्टायो–तूने सुन (कर प्रेम करने लग) गया क्या; पाया निऩ्ऱ–सवेग आनेवाले; मलर् वाळि–सुमन-शर; पऱिया निऩ्ऱार्–निकालनेवाले; इल्लैयाल्–नहीं है, इसलिए; ओया निऩ्ऱेऩ्–थका हूँ; उयिर् कात्तऱ्कु–मेरे प्राण बचाने का; उरियार् यारे–जिम्मा लेनेवाले कौन है। ६६७

रावण ने कहा— उडुपति ! तू दिन व दिन क्षीण होता जाता है। तेरा शरीर पाण्डुर है। दिल काला है। तेरी स्थिति बदल गयी है और तू झुलस गया है। इस विचित्र दशा में रहनेवाले तूने भी क्या किसी के द्वारा उसकी देखी हुई स्त्री के सम्बन्ध में सुनकर प्रेम किया है ? वेग से आकर मेरे ऊपर लगकर जो मन्मथ-शर मुझे सता रहे हैं उनको निकालकर मुझे बचानेवाला कोई नहीं रहा। इसलिए मैं निर्बल होकर थका हुआ हूँ। मेरी जान बचानेवाले कौन हैं ? । ६६७

आऱ्ऱा राहिऱ् ऱम्मैक्कॊण् डडङ्गा रोवॆऩ् ऩारुयिर्क्कुक्
कूऱ्ऱाय् निऩ्ऱ कुलच्चनहि कुवळै मलर्ऩ्द तामरैक्कुत्
तोऱ्ऱा यदऩा लहङ्गरिन्दाय् मॆलिन्दाय् वॆदुम्बत् तॊडङ्गिऩाय्
माऱ्ऱार् शॆल्वङ् गण्डऴिन्दाल् वॆऱ्ऱि याह वऱ्ऱामो 668

ॲन् आर् उयिर्क्कु–मेरे प्रिय प्राणों का; कूऱ्ऱाय् निऩ्ऱ–यम जो बनी खड़ी है; कुल चनकि–उच्चकुल-जात जानकी के; कुवळै मलर्न्त–विकसित नीलोत्पलों (आँखों) सहित; तामरैक्कु–कमल (मुख) के सामने; तोऱ्ऱाय्–तू हार गया; अतनाल्–उस कारण; अकम् करित्ताय्–दिल का (क्रोध से) काला हो गया; मॆलिन्ताय्–पतला हो गया; वॆतुम्प तॊटङ्कित्ताय्–झुलसने लगा; माऱ्ऱार् चॆल्वम् कण्टु अऴिन्ताल्–अन्य मनुष्य का धन देखकर जलेगा तो; वॆऱ्ऱि आक–विजयी बनने का; वऱ्ऱु आमो–बल मिलेगा क्या। ६६८

हे चाँद ! तू उस कुलीन जानकी के कमल-सम मुख के सामने हार गया, जो मेरे प्यारे प्राणों का यम बनी है। उस जानकी के कमल-सम मुख में दो नीलोत्पल-सम आँखें हैं। हार जाने की वजह से तेरा दिल झुलस गया है। तू क्षीण होकर जल रहा है। प्रतिद्वन्द्वी का धन देखकर ईर्ष्या के कारण छीजने से विजय पाने की शक्ति मिल जायगी क्या ? । ६६८

ॲऩ्ऩप् पऩ्ऩि यिडरुऴवा विरवो डिवऩैक् कॊण्डहऱ्ऱि
मुऩ्ऩैप् पहलुम् पहलोऩुम् वरुह वॆऩ्ऱाऩ् मौऴियामुऩ्

उन्नरुकरिय वुडुवदियु मिरवु मौळित्त वीरुनीडियिल्
पन्नरु करिय पहलवनुम् पहलुम् वन्दु परन्दवाल् 669

अन्नत्त पन्नत्ति–ऐसा विलाप करके; इटर् उळवा–दुःख से पीड़ित होकर; इरवोटु इवर्त–रात के साथ इसको; कॊण्टु अकट्रि–पकड़कर दूर करो; मुन्नै पकलुम्–पहले रहा दिन और; पकलोनुम्–दिनकर को; वरुक–आने दो; अन्रान्–कहा; मौळियामुन्–उसके कहने के पूर्व ही; उन्नरकु अरिय–अचिन्त्य यशस्वी; उटुपतियुम्–उडुपति और; इरवुम्–रात्रि; ऒरु नॊटियिल्–एक चुटकी भर में; ऒळित्त–छिप गये; पन्नरकु अरिय–अवर्ण्य यशस्वी; पकलवनुम्–दिनकर और; पकलुम्–दिन; वन्तु परन्त–आकर व्याप गया। ६६६

इस तरह विविध प्रकार से रावण विलापते हुए दुखता रहा। फिर उसने कहा— रात के साथ चाँद को भी हटा देकर पहले की तरह दिन और दिनकर को आने दो। उसके कहते ही अचिन्त्य यशस्वी उडुपति रात के साथ चुटकियों में छिप गया। अवर्णनीय यशस्वी दिन और दिनकर आ गये। ६६९

इरुक्किन् मौळिया लॅरिमुहत्ति नीन्द नॅय्यि नॅरिशॆम्बौन्
उरुक्कि यनैय कदिर्बाय वन्नल्बोल् विरिन्द वुयर्हमलम्
अरुक्क नॆय्द वमैन्ददङ्गि वाळा दडाद पौरुळॆय्दिच्
चॅरुक्कि यिडैये तिरुविळन्द शिट्रियोर् पोन्र चेदाम्बल् 670

अरुक्कन्–सूर्य; अॅरि मुरवत्तिन्–अग्नि में; इरुक्किन् मौळियाल्–वेदमन्त्रों के साथ; ईन्त–डाले गये; नॅय्यिन्–घी के समान; अॅय्त–आ गया तब; कतिर्–उसकी किरणें; अॅरि–भट्ठी में; चॆम्पॊन् उरुक्कि अनैय–लाल स्वर्ण के गले हुए द्रव के समान; पाय–भूमि पर आ फैलीं; उयर् कमलम्–उत्कृष्ट कमल; अनल् पोल् विरिन्त–अग्निज्वालाओं के समान खिले; चेताम्पल्–लाल कुमुद; चिट्रियोर्–नीच लोग; अटात पॊरुळ् अॅय्ति–अनुचित रीति से धन प्राप्त करके; अमैन्तु अटक्कि वाळातु–शम-दम के साथ जीवन न बिताकर; चॅरुक्कि–गर्व करते हुए (जब रहते हैं) तब; इटैये–बीच में ही; इळन्त–खो गये हों, ऐसा; तिरु–विकास; इळन्त–खो गये (बन्द हो गये)। ६७०

सूर्य क्या आया? होमाग्नि में वेदमन्त्र के साथ पड़नेवाले घी के समान रहा वह। उसकी किरणें भट्ठी में पिघलाये हुए चोखे स्वर्ण के द्रव के समान भूमि पर फैलीं। तब श्रेष्ठ कमल अग्निज्वाला के समान विकसित हुए। लाल कुमुद उन छुद्र मनुष्यों के समान श्रीहीन हुए, जो अधार्मिक रास्तों से धन प्राप्त कर शम और दम के साथ नहीं रहते, पर गर्वीले रहते हैं और जिनकी सम्पत्ति बीच में ही लुप्त हो जाती है। ६७०

नाणि निन्र वौळिमळुङ्गि नडुङ्गा निन्रु वुडम्बिन्नायच्
चेणि निन्रुम् बुरज्जायन्दु कङ्गुर् रारम् बिन्शॆल्लप्

पूणित् वॆय्यो तॊरुदिशैये पुहुदप् पोवान् पुहऴ्वेन्दर्
आणै शॆल्ल निलैयिऴन्द वरशन् बोन्ऱा नल्लाण्डान् 671

पूणित् वॆय्योन्–संसार का आभरण-स्वरूप सूर्य; ओरु तिचैये पुकुत–उत्तम एक (पूर्व) दिशा में उदय हुआ; अल् आण्टान्–रात का नायक; नाणि–लजाकर; निन्ऱ ऒळि–अपने पास रही ज्योति के; मऴुङ्कि–मन्द पड़ते; नटुङ्का निन्ऱ उटम्पितन् आय्–काँपते शरीर का बनकर; चेणित् निन्ऱु–आकाशमध्य से; पुरम् चाय्न्तु–एक ओर उतरकर; कङ्कुल् तारम् पित् चॆल्ल–रात रूपी पत्नी के पीछा करते; पोवात्–जो गया वह; पुकऴ् वेन्तर्–विख्यात राजा के; आणै चॆल्ल–शासन में; निलै इऴन्त–अपनी स्थिति से च्युत; अरचन् पोन्ऱान्–छोटे राजा के समान लगा। ६७१

संसार का आभरणरूप सूर्य उत्तम पूर्व दिशा में उदय हुआ तो रात का शासक चाँद उसको देखकर शरमाया, मन्दप्रभ हुआ और आकाश-मध्य से काँपते हुए उतरकर हट गया। उसके पीछे रात रूपी उसकी पत्नी भी चली। बड़े राजा के शासन में छोटे राजा की स्थिति जैसे बिगड़ जाती है, वैसे चन्द्र का शासन भी बिगड़ गया। ६७१

मणन्दपे रन्बरै मलरिन् शेक्कैयुळ्
पुणर्न्दिल रिडैयॊरु वॆहुळि पॊङ्गलाल्
कणङ्गुऴै महळिर्हळ् कङ्गुल् वीय्न्ददॆन्
रुणर्न्दिलर् कनविनु मूड ङीर्न्दिलार् 672

कनम् कुऴै मकळिर्कळ्–भारी कुण्डलधारिणी स्त्रियों ने; मलरिन् चेक्कै उळ्–पुष्पशय्या पर; मणन्त पेर् अन्परै–मिले रहे पतियों के साथ; इटै ओरु वॆकुळि पॊङ्कल् आल्–बीच में रोष के होने से; पुणर्न्तिलर्–सम्भोग नहीं किया था; कङ्कुल् वीय्न्ततु–रात चली गई; ऎन्ऱु उणर्न्तिलर्–यह नहीं समझीं; कनविलुम्–तब के स्वप्न में भी; ऊटल् तीर्न्तिलार्–रूठन नहीं छोड़ी। ६७२

(अकाल में अकस्मात अर्क के आगमन से क्या-क्या हुआ, उसका रसीला वर्णन है।) कुछ राक्षस-स्त्रियाँ, जिनके कर्णों को भारी कुण्डल अलंकृत कर रहे थे, अपने पतियों के साथ पुष्पशय्या पर लेटी हुई थीं। अकस्मात उनके मन में रूठन हो गयी और रोष उभर आया था। अतः क्रीड़ा रुक गयी थी। अब उन्हें ज्ञात नहीं था कि सवेरा हो आया है। इसलिए वे स्वप्न में भी मान कर रही थीं। रूठन नहीं छोड़ी। ६७२

अणैमलर्च् चेक्कैयु ळाड ङीर्न्दनर्
पणैहळैत् तऴुविय पवऴ वल्लिबोल्
इणैमलर्क् कैहळि निऱुह वित्नुयिर्त्
तुणैवरैत् तऴुविनर् तुयिल्हित् ङार्शिलर् 673

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; अणै मलर् चेक्कै उळ्–गद्दे के समान बनी पुष्पशय्या में;

आटल् तीर्न्ततर्–रतिक्रीड़ा समाप्त करके; पणैकळै तळुविय–मोटी डालों से लिपटी; पवळ वल्लि पोल्–प्रवालवल्लरी के समान; इणै मलर् कैकळिऩ्–जोड़े के सुमन-हस्तों से; इऩ् उयिर् तुणैवरै–प्राणप्यारे पतियों का; तळुवित्तर्–आलिंगन करती हुई; तुयिल्किऩ्ऱार्–सोती हैं। ६७३

और कुछ राक्षस-स्त्रियों ने रतिक्रीड़ाएँ पूरा कर ली थीं। गद्दे के समान बनी पुष्पशय्या में वे अपने प्यारे पति का आलिंगन करती हुई, स्थूल वृक्ष से लिपटी प्रवालवल्लरी के समान सो रहीं थीं। ६७३

तळ्ळुरु मुयिरिनर् तलैवर् नीङ्गलाल्
नळ्ळिर विडैयुरु नडुक्क नीङ्गलर्
कॊळ्ळेयि ऩलर्दरुङ् गुवळै नाण्मलर्क्
कळ्ळुहु वऩ्ऩॆऩक् कलुळुङ् गण्णिऩार् 674

तलैवर् नीङ्कलाल्–पतियों के चले जाने से; तळ् उरुम् उयिरित्तर्—चलित-प्राण होकर; नळ् इरवु इटै–अर्धरात्रि के समय; उरु–जो हुआ; नटुक्कम् नीङ्कलर्–उस भय के कम्पन से मुक्त न होकर; अलर् तरु–विकसित; कुवळै नाण् मलर्–कुवलय के नवीन पुष्पों से; कळ् कॊळ्ळैयिऩ् उकुवऩ–मधु अधिक परिमाण में ढलकता है; ऎऩ्ऩ–जैसे; कलुळुम् कण्णित्तार्–जल बहानेवाली आँखों की बनीं। ६७४

कुछ स्त्रियों के प्रेमी पति उनको छोड़कर गये हुए थे। रात आधी वीत गयी। उनके प्राण डगमगाये। (उनका मन डोलायमान था।) उनके शरीर काँप रहे थे। उनकी आँखों से, नवीन कुवलयफूलों से शहद झरता हो, ऐसा अश्रु बहने लगे। ६७४

अळियिऩऩ् दडन्दोरु मार्प्प वाय्हदिर्
ऑळिबड वुणर्हिल वुऱङ्गु हिऩ्ऱऩ
तॆळिविल विऩ्ऱुयिल् विळैक्कुञ् जेक्कैयुळ्
कळिहळै निहर्त्तऩ कळिहॊळ् ळऩ्ऩमे 675

आय् कतिर् ऑळि पट–श्रेष्ठ सूर्यकिरण के लगते ही; अळि इऩम्–भ्रमरकुल; तटम् तॊरुम् आर्प्प–सब स्थानों में गुंजारने लगे; कळि कॊळ् अऩ्ऩम्–मुदित हंस; कळिकळै निकर्त्तऩ–पियक्कड़ों के समान; इऩ् तुयिल् विळैक्कुम्–मधुर निद्रादायक; चेक्कै उळ्–(कमल की) शय्या में; तॆळिवु इल उणर्किल–विना सुध-बुध के; उऱङ्कुकिऩ्ऱऩ–सोते है। ६७५

रावण की आज्ञा से अप्रत्याशित रीति से सूर्य का उदय हो गया। अलिकुल यत्र-तत्र गुंजार कर रहे थे। मुदित हंसवृन्द पियक्कडों के समान मधुर निद्रादायी कमल-शय्याओं पर सुध-बुध के विना सो रहे थे। ६७५

विरिन्दुऱै तुऱैदॊऱुम् विळक्कम् यावैयुम्
ऎरिन्दिळ दः(ह्)कल वीळियि ऩ्ऩदवाल्

अरुन्दुऱै निरम्बिय वुयिरि नन्बरैप्
पिरिन्दुऱै तरुङ्गुलप् पेदै मारिने 676

अरुम् तुऱै निरम्पिय–मनोरम शृंगार-प्रकार जाननेवाले; उयिरिन् अन्परै–प्राण-प्यारे पतियों से; पिरिन्तु उऱैतरुम्–अलग होकर रहनेवाली; कुल पेतै मारिने–कुलीन स्त्रियों की तरह; विरिन्तु उऱै–विशाल नगर के; तुऱै तोऱुम्–प्रासादों में; विळक्कम् यावैयुम्–सभी दीपक; इळुतु ॲरिन्तु–घी जलकर; अ.·.(ह्)कल–कम नहीं हुआ तो भी; ओळि इळन्त–मन्दप्रभ हुए। ६७६

कुछ स्त्रियों के रतिकलाविदग्ध प्रेमी पति उनको छोड़कर दूर चले गये थे और ये वियोगिनी नायिकाएँ घर पर रहीं। उन्हीं के समान बड़े-बड़े सौधों में रहे दीप भी मन्दप्रभ हो गये, यद्यपि उनमें घी अभी बाकी था (जलकर समाप्त न हुआ था)। ६७६

पुनैन्दिद ळुरिञ्जुरुम् बॊळुदु पुल्लियुम्
वनैन्दिल वैहऱै मलरु मामलर्
ननन्दलै यमळियिऱ् ऱुयिलु नङ्गैमार्
अनन्दलि नॆडुङ्गणो डॊत्त वामरो 677

इतळ् पुनैन्तु उरिञ्चुरुम्–दलों को सुन्दर रीति से विकसित करनेवाला; पॊळुतु पुल्लियुम्–समय (सूर्योदय का) आया, तो भी (अप्रत्याशित रीति से हो जाने के कारण); वैकऱै मलरुम् मा मलर्–सवेरे फूलनेवाले उत्तम फूल; वनैन्तिल–मनोरम (विकसित) नहीं हुए; ननम् तलै–विशाल; अमळियिल् तुयिलुम्–शय्या पर सोनेवाली; नङ्कैमार्–स्त्रियों की; अनन्तलिन्–निद्रा में रहनेवाली; नॆटुम् कणोटु ऒत्त आम्–दीर्घ आँखों के समान (मुकुलित रहे)। ६७७

दलों का स्पर्श कर उन्हें विकसित करनेवाली उदय-वेला आ गयी। तो भी सवेरे जिन श्रेष्ठ फूलों को विकसना था, वे मनोरम प्रकार से नहीं विकसे। विशाल शय्या में सोनेवाली स्त्रियों की निद्रामग्न आँखों के समान बन्द ही रहे। ६७७

इच्चैयिऱ् ऱुयिल्बवर् यावर् कण्गळुम्
निच्चयम् पहलुन्द मिमैह णीङ्गिल
पिच्चैयु मिडुदुमॆन् ऱुणर्दल् पेणला
वच्चैयर् नॆडुमनै वायिन् मानवे 678

पिच्चैयुम् इटुतुम् ॲन्ऱु–भिक्षा देंगे, यह; उणर्तल् पेणला–भाव न रखनेवाले; वच्चैयर्–कृपणों के; नॆटु मनै वायिल् मान–बड़े घर के द्वार के समान; इच्चैयिल्–अपनी इच्छा भर; तुयिल्पवर् यावर् कण्कळुम्–सोनेवाले सभी की आँखें; पकलुम्–दिन होने पर भी; तम् इमैकळ्–अपनी पलकें; निच्चयम् नीङ्किला–निश्चय खोलकर नहीं जागीं। ६७८

सुप्त लोगों की आँखें नहीं खुलीं। उदय होने के बाद भी निश्चित

रूप से नहीं खुलीं। उनकी पलकें उन लोभी कृपण लोगों के घरों के द्वारों के समान बन्द रहे, जो कभी याचकों को कुछ नहीं देते। ६७८

नञ्जुरु परिवित्त नळ्ळि नीळमोर्न्
दञ्जुड़ नडुवणो रयर्वु ताङ्गिय
वॅञ्जिड़ै नीङ्गिय वित्तैयि त्तोरॅन्त
नॅञ्जुड़क् कळित्तत्त नेमिप् पुळ्ळॅलाम् 679

नेमि पुळ् ॲलाम्–चक्रवाक पक्षी सब; नळ्ळित्–रात में; नञ्चु उड़ परिवित्त–विष-सम वियोग में रहे; नीळम् ओर्न्तु–रात की लम्बाई का विचार करके; अञ्चुड़–भय के साथ; ओर् अयर्वु ताङ्किय–क्लेशयुक्त रहे; नडुवण्–उस दुःख के समय के बीच; वॅम् चिड़ै नीङ्किय–कठोर कारा से विमुक्त; वित्तैयित्तोर् ॲन्त–सुकृतों के समान; नॅञ्चु उड़ कळित्तत्त–मन से मुदित हुए। ६७९

चक्रवाक पक्षियों को जब मालूम हुआ कि उदय-समय आ गया, तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। वे रात की लम्बाई का विचार करके भय के साथ निद्रा में लगी थीं। अब उसके बीच में ही उदय हो गया। कारामुक्त सुकृत्य वाले लोगों के समान वे बहुत आनन्दित हुए। ६७९

नाण्मदिक् कल्लदु नडुव णॅय्दिय
आणैयिऱ् ड़िड़क्कला वलरिऱ् पाय्वत्त
माण्वित्तैप् पयनरु वच्चै वायिल्शेर्
पाणरिड़् ड़ळर्न्दत्त पाडऱ् ड़ुम्बिये 680

पाटल् तुम्पि–सुरीले गानेवाले भ्रमर; नाळ् मतिक्कु अल्लतु–नवोदित चन्द्र के सिवा; आणैयिल्–रावण की आज्ञा से; नटुवण् ॲय्तिय–(अकाल में) बीच में आये दिन में; तिर्क्कला अलरिल्–जो नहीं विकसते, उन (कुवलय आदि) पुष्पों में; पाय्वत–सवेग आते हैं; माण् वित्तै पयन् अड़–महान सुकृत्यों से वंचित; वच्चै–कृपणों के; वायिल् चेर्–द्वार पर आये; पाणरिल्–याचकों के समान; तळर्न्तत्त–हतोत्साह हुए। ६८०

सुरीला गान गानेवाले भ्रमर बहुत शीघ्र उड़ते हुए कुवलय आदि पुष्पों के पास आये। वे तो नवोदित चन्द्र के सामने ही खिलने के आदी थे। अब तो रावणाज्ञा से सूर्य आ गया है। इसलिए वे बन्द रहे। भ्रमरों की स्थिति उन गवैये याचकों के समान हो गयी, जो कृपणों के द्वार पर जाते हैं और उसको बन्द पाते हैं। ६८०

अरुमणिच् चाळर मदत्ति त्तूडुबुक्
कॅरिहदि रित्तुऱुयि लॅळुप्प वॅय्दवुम्
मरुळीडु तॅरुळुरु निलैयर् मङ्गैयर्
तॅरुळुड़ मॅय्प्पॊरु डॅरिन्दि लारित्ते 681

अरु मणि चाळरम् अतनिऩ् ऊट्टु–श्रेष्ठ रत्नमय गवाक्षों द्वारा; पुक्कु–प्रवेश करके; ऎरि कतिर्–सूर्य की किरणें; इऩ् तुयिल् ऎऴुप्प–मधुर नींद से जगाने के लिए; ऎय्तवुम्–आ गईं, आने पर; मङ्कैयर्—राक्षस-स्त्रियाँ; तॆरुळ् उऱ मॆय् पॊरुळ् तॆळिऩ्तिलारिऩ्–पूर्णरूप से साफ़ ज्ञान न रखनेवाले के समान; मरुळ् ऒट्टु तॆरुळ् उऱु–भ्रम और बोध (तन्द्रा और जागरण) की मिश्रित; निलैयर्–दशा में रहीं। ६८१

सूर्य की किरणें उत्तम और बहुमूल्य रत्नजड़ित गवाक्षों द्वारा अन्दर घुसकर स्त्रियों को मधुर निद्रा से जगाने लगीं। तब वे न तो पूर्णरूपेण जाग पायीं, न निद्रा में ही रहीं। उनकी निद्रा-स्थिति उन लोगों के ज्ञान की स्थिति के समान थी, जो अपूर्ण रूप से विवृद्ध है। यानी संदिग्ध अवस्था में रही। ६८१

एवलिऩ् वऩ्मैयै यॆण्ण ड्रेऱ्ऱलर्
नावलर् नविऱ्ऱिय नाऴि नामनूल्
कावलि तुऩ्ऩित्तुणर् कणिद माक्कळुम्
कूवुरु कोऴियुन् दुयिल्वु कॊण्डवे 682

एवलिऩ् वऩ्मैयै–आज्ञा के प्रताप को (रात में दिन होने की स्थिति को); ऎण्णल् तेऱ्ऱलर्–जान नहीं सके; नावलर् नविऱ्ऱिय–विद्वानों के रचित; नाऴि नाम नूल्–समय के श्रेष्ठ शास्त्र के अनुसार; कावलिऩ् तुऩ्ऩित्तु उणर्–रात में सचेत रहकर काल की गणना करनेवाले; कणित माक्कळुम्–ज्योतिषी लोग और; कूवु उऱु कोऴियुम्–बाँग देनेवाले मुर्गे; तुयिल्वु कॊण्ट–निद्रामग्न हो रहे। ६८२

विद्वान ज्योतिषियों से रचे शास्त्र के निष्णात काल-गणितज्ञ, जो रात के काल की गणना करते रहे, सो गये। पहरों को बताने के लिए टेर लगानेवाले मुर्गे भी सोये रहे, क्योंकि उन्हें रावण की आज्ञा और उसके प्रताप से हुआ नतीजा मालूम नहीं था। यानी सूर्योदय हो गया सो बात उन्हें विदित नहीं थी। ६८२

इऩ्ऩैयन वुलहिऩि ऩिहऴ् मॆल्वैयिल्
कऩ्ऩैहऴ लरक्कऩुङ् गण्णि ऩोक्किऩाऩ्
निऩ्ऩैवुरु मऩत्तैयु नॆरुप्पिऱ् ऱीयक्कुमाल्
अऩ्ऩैयवत् तिङ्गळे याहुमा लॆऩ्ऱाऩ् 683

इऩ्ऩैयऩ–ऐसी बातें; उलकिऩ् निकऴुम् ऎल्वैयिल्–जब संसार में हो रही थीं, तब; कऩ्ऩै कऴल् अरक्कऩुम्–क्वणनशील पायलधारी राक्षस (रावण) ने भी; कण्णिऩ् नोक्किऩाऩ्–आँखों से (सूर्य को) देखकर; निऩ्ऩैवु उऱु मऩत्तैयुम्–स्मरणशील मन को भी; नॆरुप्पिल् तीय्क्कुम् आल्–आग से जला देगा; (आतलिऩ्–इसलिए;) अऩ्ऩैय अ तिङ्कळे आकुम्–वही चन्द्र यह है; ऎऩ्ऱाऩ्–(अपनी धारणा) कही। ६८३

जब ये बातें हो रही थी, तो क्वणनशील पायल-चरण रावण ने सूर्य

को अपनी आँखों से देखा। कहा कि इसके बारे में सोचनेवाले मन को भी यह जला डालेगा। इसलिए यह वही चन्द्र है (जिसको हटाने की आज्ञा मैंने दी थी)। ६८३

तिङ्गळो वन्ऱिदु शॅल्वच् चॅङ्गदिर्
पॊङ्गुळैप् पच्चैमाप् पुरवित् तेरदाल्
वॅङ्गदिर् शुडुवदे यन्ऱि सॅय्युऱत्
तङ्गुदण् कदिर्शुडत् तहादॆन्ऱ ऱार्शिलर् 684

चिलर्-कुछ (भृत्यों) ने; इतु तिङ्कळो अन्ऱु-यह चन्द्र ही नहीं है; चॅल्व चॅम् कतिर्-श्रेष्ठ लाल किरणमाली; पॊङ्कु उळै-उभरे, बढ़े अयाल वाले; पच्चै मा पुरवि-हरे बड़े अश्वों का; तेरतु आल्-रथ का है, इसलिए; वॅम् कतिर्-तापक किरणों का; मॅय्-शरीरी; उऱ चुटुवते अन्ऱि-खूब जलायगा, उसके सिवा; तण् तङ्कु कतिर्-शीत-भरी किरणों का चन्द्र; चुट तकातु-जला नहीं सकेगा; ऍन्ऱार्-कहा। ६८४

वहाँ जो रहे, उन किंकरों ने उत्तर में निवेदन किया कि नहीं! यह चन्द्र ही नहीं है। विश्वास मानिए। यह उत्तम और लाल किरणमाली है। उसके रथ में बड़े और हरे अश्व जुते हैं। इसी की किरणें गरम होती हैं और वे ही ताप देती हैं। चन्द्र शीतल-किरण है और वह नहीं जलाता। ६८४

नीलच् चिहरक् किरियन्नव निन्ऱ वॅय्योन्
आलत् तिनुम्वॅय्य नहऱ्ऱि यरऱ्ऱु हिन्ऱ
वेलैक् कुरलैत् तविर्हॆन्ऱु विलक्कि मेलै
मालैप् पिऱैप्पिळ्ळैयैक् कूवुदिर् वल्लै यॅन्ऱान् 685

चिकर नील किरि अन्नवन्-शिखरों-सहित नीले पर्वत के समान रावण; निन्ऱ वॅय्योन्-सामने स्थित यह सूर्य; आलत्तिनुम् वॅय्यन्-हलाहल से भी तापक है; अकऱ्ऱि-इसे दूर करके; अरऱ्ऱुकिन्ऱ-रोनेवाले; वेलै कुरलै-समुद्र के गले को; तविर्क ऍन्ऱु-चुप रहो, कहकर; विलक्कि-रोककर; मेलै-पश्चिम दिशा में उदित; मालै पिऱै पिळ्ळै-शाम के बालचन्द्र को; वल्लै-शीघ्र; कूवुतिर्-पुकारो; ऍन्ऱान्-आज्ञा दिलाई। ६८५

तब शिखरों सहित पर्वत-सम रावण ने आज्ञा सुनायी कि सामने जो है, वह सूर्य हलाहल से भी संतापी लगता है। उसको हटाओ। साथ-साथ उस समुद्र को भी चुप कराओ जो विलाप रहा है! फिर पश्चिम दिशा में जो उदित होता है, उस बाल-कला-चन्द्र को पुकारो। ६८५

शॆन्ऩा निरुदर्क्किऱै यम्मॊऴि शॊल्ल लोडुम्
अन्नाळि निरम्बिय वम्मदि याण्डोर् वेलै

मुन्नाळि निळम्बिऱै याहि मुळैत्त वॆन्ऱाल्
अॆन्नाळु मरुन्दव मन्ऱि यियट्ऱ लामो 686

निरुतरक्कु इऱै–राक्षसों के राजा ने; चॊन्नतान्–वैसा कहा; अ मॊऴि चॊल्लल् ओटुम्–वह वचन कहते ही; अ नाळिन् निरम्पिय–वह (पन्द्रह) दिनों का; अ मति–पूर्णचन्द्र; आण्टु–तव; ओर् वेलै–उसी समय; मु नाळ् इळम् पिऱै आकि–तीन दिनों का कलाचन्द्र बनकर; मुळैत्ततु–उदय हुआ; अॆन्ऱाल्–तो; अरुम् तवम् अन्ऱि–बिना कठिन तपस्या के; अॆ नाळुम्–किसी भी दिन; इयट्ऱल् आमो–ऐसा किया जा सकता है क्या। ६८६

राक्षसाधिपति ने यह आज्ञा सुनायी। सुनाते ही वह पूर्णचन्द्र तिरोहित हो गया। वहाँ तीन दिन का बालचन्द्र उदित हुआ। तो (कवि तपस्या की शक्ति की महिमा में कहते हैं कि) तपस्या की महिमा कितनी बड़ी है? उसके सिवा कौन सी चीज़ है जो ऐसा कर सकती है? (यह अर्थ भी लग सकता है कि तपस्या को छोड़ कौन कार्य है जो करने योग्य है?)। ६८६

कुडपालिन् मुळैत्तदु कण्ड कुणङ्ग डीयोन्
वडवावन्न लन्ऱॆनिन् मण्बिडर् वैत्त पाम्बिन्
विडवा ळॆयिऱ्ऱन्ऱॆनि लॆन्नै वॆहुण्डु मालै
अडवा ळुरुविक्कॊडु तोन्ऱिय दाहु मन्ऱे 687

कुटपालिन्–पश्चिमी दिशा में; मुळैत्ततु–उदय हुआ; कण्ट–देख; कुणक्कळ् तीयोन्–दुर्गुणी; वटवा अनल्–वड़वाग्नि है; अन्ऱु ॲनिल्–नहीं तो; मण् पिटर् वैत्त–भूमि को गले पर ढोनेवाले; पाम्पिन्–शेषनाग का; विट वाळ् ॲयिऱ्–विषैला प्रकाशमय दाँत है; अन्ऱु ॲनिल्–वह भी नहीं तो; ॲन्नै वॆकुण्टु–मेरे विरुद्ध गुस्सा करके; मालै–संध्याकाल में; अट–मारने के लिए; वाळ् उरुवि कॊटु–तलवार खींच लेकर; तोन्ऱियतु आकुम्–प्रकट हुआ होगा। ६८७

दुर्गुणी रावण ने पश्चिमी दिशा में उदित कला-चन्द्र को देखा। उसने कहा कि रे, यह तो वड़वाग्नि है! अगर नहीं तो भूभारवाही शेषनाग का उज्ज्वल विषैला दाँत होगा! वह भी नहीं है तो संध्याकाल मुझसे वैर करके मुझे मारने के लिए तलवार लिये हुए प्रकट हो आया होगा!। ६८७

तादुण् शडिलत्तलै वैत्तदु तण्ड रङ्गम्
मोदुङ् गडलिऱ् किडैमुन्दु पिऱन्द पोदे
ओदुङ् गडुवैत्तन् मिडऱ्ऱि लॊळित्त तक्कोन्
ईदुङ् गडुवामॆन वॆण्णिय वॆण्ण मन्ऱो 688

ओतुम्–सबसे चर्चित; कटुवै–विष को; तन् मिटट्ऱिल् ऑळित्त–कण्ठ में जिन्होंने दबा रखा है; तक्कोन्–श्रेष्ठ शिवजी ने; तण् तरङ्कम् मोतुम्–शीतल तरंग-ताड़ित; कटलिऱ्कु इटै–(क्षीर-) सागर से; मुन्तु पिऱन्त पोते–पहले जब प्रकट

हुआ तभी; तातु उण्—मकरन्द-भरी; चटिल तलै—जटा से अलंकृत सिर पर; वैतुततु—रख लिया तो; ईतुम्—यह (चाँद) भी; कटु आम्—विष है; ऎंत ऎण्णिय—ऐसा सोचा हुआ; ऎण्णम् अत्रो—विचार था न। ६८८

हाँ! यह भयंकर विष ही होगा। क्योंकि विषकंठ शिवजी ने शीतल तरंगाकुल क्षीरसागर पर उस विष के पहले इस चाँद को लेकर अपनी परागयुक्त जटा से अलंकृत सिर पर धारण क्यों किया? यही समझकर न कि यह भयंकर विष है?। ६८८

उरुमीत्त वलत्तुयिर् नुङ्गिय तिङ्ग ळोडित्
तिरुमिच्च् चिरुमॆंत् पिरैदीमै कुरैन्द दिल्लै
करुमैक् कट्यॆन्जलि नञ्जु कलन्द पाम्बिन्
पॆरुमै शिरुमैक्कॊरु पॆर्रि कुरैन्द दुण्डो 689

ऒंञ्चल् इल् नञ्चु—अक्षय विष; कलनृत पाम्पिन्—(से) युक्त सर्पों में; पॆरुमै चिरुमैक्कु—बड़ा क्या, छोटा क्या; ऒरु पॆर्रि—(विष के) रखने में; कुरैन्ततु उण्टो—कमी है क्या; उरुम् ऒत्त वलत्तु—वज्र-सम बल के साथ; उयिर् नुङ्किय—प्राण खानेवाला; तिङ्कळ्—पूर्णचन्द्र; ओटि—भागकर; तिरुमि—बदलकर; इ चिरु मॆल् पिरै—यह छोटा कोमल बालचन्द्र (जो आया); तीमै कुरैन्ततु इल्लै—बुराई में कम नहीं है। ६८९

अक्षय विष-भरे साँपों में छोटा क्या बड़ा क्या? विष के सम्बन्ध को लेकर सोचा जाय तो कोई किसी से कम नहीं! वज्र-सम बल के साथ मेरी जान का ग्राहक जो रहा वह पूर्णचन्द्र चला, फिर इस कोमल बालचन्द्र के रूप में आया। यह उससे कम दुखदायी नहीं लगता। ६८९

कन्नक् कतियुमिरु डन्नैयुङ् गाण्डु मन्रे
मुन्नैक् कदिर्नन्रि दहर्रुदिर् मॊय्म्बु शान्र
ऎंन्नैच् चुडुमेलिनि येळुल हत्तिल् वाळ्वोर्
पिन्नैच् चिलरुय्वरॆंन् रङ्गॊरु पेच्चु मुण्डो 690

मुन्नै कतिर् नन्रु—पहले आया सूर्य ही अच्छा; कन्न कतियुम्—पूर्णरूप से घना; इरुळ् तन्नैयुम्—अन्धकार भी; काण्टुम्—देख लूंगा; इतु अकर्रुतिर्—इसको हटा दो; मॊय्म्पु चान्र—बलवान; ऎन्नै चुटुमेल्—मुझे जलायगा (यह चाँद) तो; इनि—आगे; एळु उलकत्तिल् वाळ्वोर्—सातों लोकों में रहनेवाले; पिन्नै चिलर्—फिर कुछ लोग; उय्वर् ऎन्रु—इससे बच पायँगे, ऐसा; अङ्कु ऒरु पेच्चुम् उण्टो—वहाँ वचन होगा क्या। ६९०

पहले जो सूर्य रहा वही अच्छा लगता है! पूर्णरूप से घना बना अन्धकार कैसा होगा?—यह भी देख लूँ। हटाओ इसको। बलशाली मुझे भी यह इस प्रकार जला सकता है, तो सातों लोकों के वासियों में किसी के जान से बचने की बात ही उठेगी!। ६९०

आण्डप् पिऱैनीङ्गलु मॅय्दिय वन्द कारम्
तीण्डर् करिदाय्प्पल तेय्प्पिनुन् दॆय्क्क लाहा
वेण्डिऱ् करवत्तिरप् पत्तियि नीर्न्दु वीऴ्त्तुक्
काण्डऱ् करिदाय्प्पल कन्दु तिरट्ट लाहुम् 691

आण्टु–तब; अ पिऱै नीङ्कलुम्–वह बालचन्द्र हटा तो; ऍय्तिय अन्तकारम्–आया अन्धकार; तीण्टर्कु अरिताय्–अस्पृश्य; पल तेय्प्पित्तुम्–खूब बार-बार रगड़ने पर भी; तेय्क्कल् आका–रगड़कर मिटाना कठिन था; वेण्टिल्–चाहने पर; करपत्तिर पत्तियिल्–आरे से; ईर्न्तु–काटकर; वीऴ्त्तु–गिराकर; काण्टर्कु अरिताय्–अवर्शनीय; पल कन्तु–अनेक खम्भों के रूप में; तिरट्टल् आकुम्–सँवारा जा सकता है। ६९१

तब बालचन्द्र हट गया। अन्धकार आ गया। वह ऐसा था कि कोई उसे स्पर्श नहीं कर सकता, न उसे रगड़कर उसका अभाव किया जा सकता था। चाहने पर शायद उसे आरे से काटकर उसके अनेक गोल खम्भे बनाये जा सकते थे। ६९१

मुरुडीर्न् दुरुट्टर् कॆऴिदॆन्वदॆन् मुर्ऱ मुऱ्ऱिप्
पॊरुडीर्न्द ञानच् चुडर्वुक्कु वळङ्ग लिन्ऱिक्
कुरुडीङ्गि दॆन्नक् कुऱिक्कॊण्डहण् णोट्टङ् गुन्ऱि
अरुडीर्न्द नॆञ्जिऱ् करिदॆन्वदव् वन्द कारम् 692

मुरुटु ईर्न्तु–गाँठें आदि काट फेंककर; उरुट्टर्कु–गोल (खम्भों के रूप में) बनाना; ऍळितु ऍन्पतु ऍन्–आसान है, यह कहना क्या (विशेषता रखता) है; मुर्ऱ मुर्ऱि–सम्पूर्ण रूप से पक्व; पॊरुळ् तीर्न्त–असंदिग्ध तत्त्वज्ञ; ञानम् चुटर् पुक्कु–ज्ञान की ज्योति प्रवेश करके; वळङ्कल् इन्ऱि–प्रकाशमान नहीं है (जिसमें); ईङ्कु इतु कुरुटु–यहाँ यह अन्धा है; ऍन्त्त कुऱि कॊण्ट–ऐसा कहा जानेवाला; कण्णोट्टम् कुन्ऱि–दाक्षिण्य से हीन; अरुळ् तीर्न्त–दया से रहित; नॆञ्चिल्–(जो है उस) मन के समान; अ अन्तकारम्–वह अन्धकार; करितु ऍन्पतु–काला कहा जा सकता था। ६९२

हाँ— गाँठें आदि हटाकर उसके खम्भे बनाये जा सकते हैं—यह कहना कौन सी विशेषता रखता है? वह अन्धकार उस अज्ञ-जन के मन से बढ़कर काला था, जिसमें तत्त्वदर्शी पक्व ज्ञान प्रवेश नहीं कर पाया था, जो 'यह अन्धा है', इस कथन का पात्र हो गया था और जिसमें न दाक्षिण्यभाव था, न दयाभाव। ६९२

विळ्ळादु शॆऱिन्दिडै मेलुऱ वीङ्गि यॆङ्गुम्
नळ्ळा विरुळ्वन्दहन् ञालम् विळुङ्ग लोडुम्
ऍळ्ळा वुलहियावैयुम् यावरुम् वीव दॆन्ब
दुळ्ळा दुमिऴ्न्दान् विडमुण्ड वॊरुत्त नॆन्ऱान् 693

विळ्ळातु–अखण्डित; इटै चॅरिन्तु–ठस; मेल् उऱ वीङ्कि–ऊपर वढ़कर; ऑङ्कुम् नळ्ळा–कहीं भी न लगनेवाला; इरुळ् वन्तु–अन्धकार आया; अकल् ञालम् विळुङ्कल् ओटुम्–और उसके विशाल संसार को निगलते ही; विटम् उण्ट ऑरुत्तन्–विषखादक शिव ने; ऑळ्ळा उलकु यावैयुम्–अनिंद्य सभी लोक; यावरुम्–और उनके वासी; वीयुम् ॲन्पतु उळ्ळातु–मिट जायँगे, यह नहीं सोचकर; उमिळ्न्तान्–उगल लिया है; ॲन्ऱान्–कहा। ६९३

अविच्छिन्न, घना और सर्वत्र व्याप्त विपुल अन्धकार, जो कहीं चिपका नहीं रहता, आकर विशाल विश्व को निगल गया। रावण ने टीका की कि शिवजी ने जो पहले विष को निगल लिया था अब उसे उगल दिया है, विना यह सोचे-विचारे कि इसके फैलने से सारे लोक और उन लोकों के वासी मिट जायँगे। ६९३

वेलैत् तलैवन् दौरुवन्वलि याल्वि ळुङ्गुम्
आलत्ति नडङ्गुव दन्ऱि दरिन्दु णरन्देन्
ञालत्तोडु विण्मुदल् यावैयु नावि नक्कुम्
कालक् कनल्हार् विडमुण्डु करुत्त दन्ऱे 694

ऑरुवन्–अद्वितीय शिव ने; वेलै तलै वन्तु–समुद्र पर आकर; वलियाल्–अपने बल से; विळुङ्कुम्–(जिसको) निगला; आलत्तिन्–उस हलाहल में; इतु अटङ्कुवतु अन्ऱु–यह समाविष्ट होनेवाला नहीं; अऱिन्तु उणर्न्तेन्–जान-समझ लिया है; ञालत्तु ओटु–भू के साथ; विण् मुतल् यावैयुम्–आकाश आदि सभी (भूतों) को; नाविन् नक्कुम्–अपनी जीभ से चाट लेनेवाला; काल कनल्–युगान्तकाल की आग; कार् विटम् उण्टु–काला विष खाकर; करुत्ततु–जो काली बनी, वह। ६९४

(फिर उसे लगा कि) यह विष उस हलाहल के समान खाया नहीं जा सकता, जिसको अद्वितीय परमेश्वर ने क्षीरसागर-तट पर आकर उस दिन ले निगल लिया। मैंने जान-बूझ लिया है। यह युगांत अग्नि है, जो भूलोकों के साथ आकाशलोकों को भी चाट ले सकती है और जो विष खाकर काली बन आयी है। ६९४

अम्बु मनलु नुळैयाक्कन वन्द कारत्
तुम्बु मळैहौण्डय लौप्परि दाय तुप्पिन्
कौम्बर् कुरुम्बैक् कुलङ्गौण्डदु तिङ्ग डाङ्गि
वॅम्बुन् दमियेन्मुन् विळक्कॅनत् तोन्ऱु मन्ऱे 695

अयल् ऑप्पु–कोई दूसरी उपमा; अरितु आय–जिसके लिए कहना कठिन है; तुप्पिन् कौम्पर् अतु–एक प्रवालवल्लरी; अम्पुम् अनलुम् नुळैया–बाण या अनल प्रविष्ट न हो सके; कन–उतना घना; अन्तकार तुम्पु मळै कौण्टु–अन्धकारमय मेघ ढोकर; कुरुम्पै कुलम् कौण्टतु–दो नारियल के कच्चे फलों से युक्त; तिङ्कळ् ताङ्कि–

चन्द्र को धरकर; वैम्पुम् तमियेऩ् मुऩ्-तप्त मेरे सामने; विळक्कु अॅऩ्-दीप के समान; तोऩ्ऱुम्-दिखाई देता है; (अऩ्ऱ-ए)। ६६५

(रावण के सामने देवी का मिथ्या रूप प्रकट होता है।) यह क्या? एक अनुपम प्रवाललता दिखाई देती है! उसके सिर पर बाणों और अग्नि से भी अभेद्य और घना मेघ है और उसकी देह पर दो नारियल के कच्चे फल हैं। इनके साथ वह चन्द्र को भी धारण किये हुए अकेले दुःख-पीड़ित मेरे सामने दीप के समान प्रकट हुई है। ६९५

मरुळूडु वन्द मयक्कोमदि मऱ्ऱु मुण्डो
तॅरुळेमि दॅऩ्ऩो दिणिमैयिळैत् तालु मॊव्वा
इरुळूडिरु कुण्डलङ् गॊण्डु मिरुण्ड नीलच्
चुरुळोडुम् वन्दोर् शुडर्मामदि तोऩ्ऱु मऩ्ऱे 696

मरुळ् ऊडु वन्त मयक्को—चित्त-भ्रम से आया मोह; मति मऱ्ऱुम् उण्टो—दूसरा (अनोखा) चन्द्र भी है क्या; इतु ॲऩ्ऩतो—यह क्या ही है; तॅरुळेम्—मेरी समझ में नहीं आता; तिणि मै इळैत्तालुम्—अंजन को ठस भरने पर भी; ऑव्वा—वह इसकी तुलना नहीं कर सकता, ऐसा; इरुळ् ऊटु—अन्धकार-मध्य; इरु कुण्टलम् कॊण्ट—दो (कर्ण-) कुण्डलों से भूषित होकर; इरुण्ट नील चुरुळ् ओटुम्—अन्धकार-सम काले घुंघराले केश के साथ और; चुटर् मा मति तोऩ्ऱुम्—उज्ज्वल श्रेष्ठ चन्द्र दिखाई देता है। ६६६

क्या यह मेरा भ्रमजन्य मोह है? या सचमुच ऐसा अनोखा चाँद भी तत्त्वतः है? मैं ठीक-ठीक समझ नहीं पाता। अंजन को ठस भरकर ऐसा बनाने की कोशिश करे तो भी नहीं बन सके, ऐसे अन्धकार के मध्य वह दिखाई देता है। उसके दो कर्णकुण्डल हैं और अन्धकार-सम काला घुँघराला केश है। इस सजधज के साथ एक पूर्णचन्द्र आकर दिखाई देता है। ६९६

पुडैहॊण्डॆऴु कॊङ्गैयु मल्हुलुम् बुल्हि निऱ्कुम्
इडैहण्डिल मल्लदॆल् लावुरु वन्दॆ रिऩ्दाम्
विडनुङ्गिय कण्णुडै यारिवर् मॆल्ल मॆल्ल
मडमङ्गैय रायॆऩ् मनत्तव रायि ऩारे 697

पुटै कॊण्टु ऍऴु—वक्ष के दोनों पार्श्वों में उठे हुए; कॊङ्कैयुम्—स्तनों और; अल्कुलुम्—कटिप्रदेश से; पुल्लि निऱ्कुम्—लगी रहनेवाली; इटै कण्टिलम्—कमर नहीं देखी; अल्लतु—उसके विना; ऍल्ला उरुवुम्—सारा रूप; तॅरिन्ताम्—(मैंने) देख लिया; विटम् नुङ्किय—विषभक्षक; कण् उटैयार्—आँखों की स्वामिनी; इवर्—यह; मॆल्ल मॆल्ल—धीरे-धीरे; मट मङ्कैयर् आय्—बाला स्त्री बनकर; ॲऩ् मनत्तवर् आयिनार्—मेरे मन की (वासिनी) हो गईं। ६६७

छाती के दोनों पार्श्वों में उठे रहनेवाले उरोजों को देखता हूँ। नीचे

नितंब देखता हूँ। पर इन दोनों के बीच दोनों से लगी रहनेवाली कमर नहीं देख पाता। धीरे-धीरे उस कटिहीना सुन्दरी का सारा रूप प्रकट हो गया है। विषभक्षक आँखों से भूषित यह बाला स्त्री हैं! वह मेरे मन में आकर बस गयी हैं। ६९७

पण्डे युलहेऴिनु मुऴ्ऴ पडैक्क णारैक्
कण्डे निदुबोलीरु पॅण्णुरुक् कण्डि लेन्नाल्
उण्डे यॅतिल्वेरिन्ति यॅङ्गै युणर्त्तुति नित्र
वण्डेरु कोदै मडवारिव राहु मन्नरे 698

पण्ट्टु ए–पहले ही; उलकु एऴिनुम् उळ्ळ–सातों लोकों की; पटै कण्णारै–(भाला, तलवार आदि) हथियार-सी आँखों वालियों को; कण्टेन्–देखा है; इवर् पोल्वतु–इनके समान; ओर् पॅण् उरु–एक स्त्रीरूप; कण्टिलेन्–नहीं देखा है; वेरु इति उण्टे ऍतिल्–दूसरी अब एक (देखी जाती) है तो; ऍङ्कै उणर्त्तुति नित्र–मेरी छोटी बहिन ने जिसका वर्णन किया; वण्टु एरु कोतै मटवार्–वह भ्रमरवाही केश वाली स्त्री; इवर् आकुम्–यही होगी। ६९८

पहले ही मैंने सातों लोकों की वासिनी, भाला, तलवार आदि हथियारों से तुल्य आँखों से शोभित स्त्रियों को देखा है। पर इनकी-सी सुन्दरता को प्राप्त स्त्री को नहीं देखा है। अब जो ऐसी एक दिखाई देती हैं, तो यह अवश्य वही स्त्री होगी जिस भ्रमरवाही केश से भूषित सुन्दरी का वर्णन मेरी छोटी बहिन शूर्पणखा ने किया था। ६९८

पूण्डिप् पिणिया नुऴहिन्ऱदु तान्बॊ ऱादाळ्
तेण्डिक् कॊडुवन्दनळ् शॅय्वदोर् माऱु मुण्डो
काण्डऱ् किनियाळुरुक् कण्डवर् केट्कु माऱ्ऱाल्
ईण्डिप् पॊऴुदेविरैन् दॆङ्गैयैक् कूवु हॆन्ऱान् 699

इ पिणि पूण्टु–यह रोग पाकर; यान् उऴकिन्ऱतु–जो कष्ट उठा रहा हूँ, उसे; तान् पॊऱाताळ्–खुद न सह सककर; तेण्टि कॊटु वन्तनळ्–ढूँढ़ लाई है; चॆय्वतु ओर् माऱुम् उण्टो–प्रत्युपकार क्या होगा; काण्टऱ्कु इनियाळ्–देखने में मधुर; उरु–इनका रूप; अवळ् कण्टु–वह (शूर्पणखा) देखे; केट्कुम् आऱु आल्–मैं भी पूछकर जान लूँ (कि क्या यह वही है); ईण्टु–यहीं; इ पॊऴुते–अभी; विरैन्तु–शीघ्र जाकर; ऍङ्कैयै–मेरी अनुजा को; कूवुक–बुलाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ६९९

(मेरी बहिन भी कितनी अच्छी है!) मेरी बहिन ने मेरी व्यथा देखी और वह सह नहीं सकी। इसलिए वह उसे ढूंढ़ लायी है। उसका क्या प्रत्युपकार करूँ? जो सामने है, इस सुन्दर रूपवती को वह भी देखे और मैं प्रश्न कर ठीक-ठीक जान लूँ। उसने आज्ञा दी कि अभी यहीं मेरी बहिन को शीघ्र बुलाओ। ६९९

अॅन्ऱा तॅनलुङ् गडिदेहिऩर् कूवु मॅल्लै
वन्ऱा णिरुदक्कुलम् वेरऱ मायत्तल् शॅय्वाळ्
ऑन्ऱाद कामक् कनलुट्टॅऱ लोडु नाशि
पॉन्ऱाळ्हुळै कॉङ्गैहळ् पोक्किऩळ् पोय्प्पु हुन्दाळ् 700

अॅन्ऱान्–(रावण ने) कहा; अॅनलुम्–कहते ही; कटितु एकिनर्–शीघ्र गये; कूवुम् अॅल्लै–पुकारने पर; वन् ताळ्–वली, उद्यमी; निरुत कुलम्–राक्षसकुल को; वेर् अऱ–जड़ से काटकर; मायत्तल् चॅय्वाळ्–मिटाने में तत्पर; ऑन्ऱात–अनुचित; काम कतल्–कामाग्नि के; उळ् तॅऱल् ओटुम्–अन्दर दाहने से; नाचि–नासिका; पॉन् ताळ् कुळै–स्वर्णकुण्डल-धारी कानों और; कॉङ्ककळ्–स्तनों को; पोक्कितळ्–(जिसने) गँवाया; पोय् पुकुन्ताळ्–(वह शूर्पणखा) जा पहुँची। ७००

रावण का यह कहना था कि किंकरों ने जाकर शूर्पणखा को बुलाया। वह तो पराक्रमी और उद्यमी राक्षसकुल को ही जड़ से काटकर मिटाने के कार्य में तत्पर रही ! उसने अपने लिए बिल्कुल अनुचित प्रेम किया और उस कामाग्नि के अन्दर जलाते उसने जाकर अपनी नाक को, स्वर्णकुण्डलभूषित कानों को और स्तनों को कटवा लिया था। ऐसी शूर्पणखा रावण के पास जा पहुँची। ७००

पॉय्न्निन्ऱ नॅञ्जिऱ्कॉडि याळ्बुहुन् दाळै नोक्कि
नॅय्न्निन्ऱ कूर्वाळव नेरुऱ नोक्कि नङ्गै
मैन्निन्ऱ वाट्कण् मयिलिन्ऱॅन वन्दॅन् मुन्नर्
इन्निन्ऱवळ् आङ्गॉ लियम्बिय शीदै यॅन्ऱान् 701

नॅय् निन्ऱ कूर् वाळ्–घृत-लगी तीक्ष्ण तलवार-धारी; अवन्–उस (रावण) ने; पॉय् निन्ऱ नॅञ्चिल्–असत्य जिसमें स्थायी रहा, उस मन की; कॉटियाळ्–क्रूरी; पुकुन्ताळै–जो पहुँची, उसको; नेर् उऱ नोक्कि–सामने आया देख; नङ्कै–बाले; इयम्पिय–तुमने (जिसके बारे में) कहा; चीतै–वह सीता; मै निन्ऱ वाळ् कण्–अंजनयुक्त तलवार-सी आँखों की हो; मयिल् निन्ऱतु ॲन–मोर आकर खड़ा हो, ऐसा; ॲन् मुन्नर् वन्तु–मेरे सामने आकर; इ निन्ऱवळ् आम् कॉल्–जो यह खड़ी है, यही है क्या; ॲन्ऱान्–पूछा। ७०१

घी-लगी तलवारधारी रावण ने कपटनिलय मन वाली शूर्पणखा को वहाँ आया देखकर पूछा कि बाले ! तुमने किसी सीता के बारे में कहा न ? इधर मेरे सामने अंजनभूषित तलवार-सम आँखें लिये, मोर-सी एक स्त्री खड़ी है। देखो और कहो कि क्या यही वह सीता है ? । ७०१

शॅन्दामरैक् कण्णॊडुम् जॅङ्गनि वायि नोडुम्
शन्दार्दडन् दोळॊडुन् दाळ्दडक् कैह ळोडुम्
अन्दारह लत्तॊडु मञ्जनक् कुन्ऱमॅन्न
वन्दानिव नाहुमव् वल्वि लिराम नॅन्ऱाळ् 702

चॅम् तामरै कण् ओटुम्–लाल कमल-सम आँखों के साथ; **चॅम् कनि वायिन् ओटुम्**–लाल (बिंब-) फल-सम अधरों के साथ; **चन्तु आर्**–सुन्दरता-भरे; **तटम् तोळ् ओटुम्**–विशाल कन्धों के साथ और; **ताळ् तट कैकळ् ओटुम्**–दीर्घ और विशाल हाथों के साथ; **अम् तार् अकलत्तु ओटुम्**–सुन्दर हार-शोभित वक्ष के साथ; **अन्चत्त कुन्ऱम् अन्न**–अंजन-पर्वत के समान; **वन्तान् इवन्**–जो यह आया है; **अ वल् विल्**–वह कठोर धनुर्धर; **इरामन् आकुम्**–राम ही है; **ॲन्ऱाळ्**–बोली। ७०२

(शूर्पणखा तो हमेशा श्रीराम के ध्यान में रहती रही। उसे श्रीराम का रूप ही दिखाई दिया।) उसने कहा कि जो रूप यह दिखाई दे रहा है, वह अंजनगिरि के समान धनु हाथ में लिये आया हुआ राम है। उसके लाल कमल के समान आँखें हैं, लाल बिम्बफल के समान अधर हैं। मनोरम विशाल कंधों और दीर्घ विशाल हस्तों के साथ वह दिखता है, देखो। ७०२

पॅण्बालुरु नान्िदु कण्डदु पेदै नीयीण्
डॅण्बालु मिलाददो राणुरु वॅन्ऱ दॅन्नॆ
कण्बालुरु मायै कवड्रुदल् कड्ऱ नम्मै
मण्बालव रेहॊल् विळैप्पवर् मायै यॅन्ऱान् 703

पेतै–मूढ़ स्त्री; **नान् कण्टतु इतु**–जो मैं देख रहा हूँ, यह; **पॅण् पाल् उरु**–स्त्री जाती का रूप है; **नी**–तुम; **ईण्टु**–यहाँ; **ॲण् पालुम् इलाततु**–कहीं भी असम्भाव्य; **ओर् आण् उरु**–एक पुरुष का रूप; **ॲन्ऱतु**–कहती हो, सो; **ॲन्नॆ**–क्या है; **कण् पाल्**–आँखों के सामने ही; **उरु मायै**–बड़ी माया द्वारा; **कवर्ऱुतल् कट्ऱ**–(दूसरों को) धोखा देना जो जानते हैं; **नम्मै**–उन हमको; **मण्पालवरे**–मर्त्य-मानव; **मायै विळैप्पवर् कॊल्**–वंचित करनेवाले हैं क्या; **ॲन्ऱान्**–(आश्चर्य से) पूछा। ७०३

रावण को अचम्भा हुआ। उसने कहा कि हे अबोध नारी! मेरे सामने जो दिखता है, वह तो स्त्री का रूप है। तुम तो असंभाव्य किसी पुरुष की बात कह रही हो! यह क्या बात है? हम मायाकार्य में प्रवीण हैं। हमें भी धोखा दे रहे हैं क्या ये मर्त्यलोक के मानव? । ७०३

ऊन्ऱुमुणर् वप्पुर मॊन्ऱिनु मोड लिन्ऱि
आन्ऱुमुळ दायनॆडि दाशै कनड्ऱ निन्ऱायक्
केन्ऱुन्नॆदि रेविळि नोक्कु मिडङ्ग डोरुम्
तोन्ऱुमनै याळिदु तॊन्नॆऱि याहु मॆन्ऱाळ् 704

ऊन्ऱुम् उणर्वु–सुस्थिर भावना; **अ पुऱम् ऑन्ऱिनुम्**–दूसरी तरफ़ कहीं; **ओटल् इन्ऱि**–नहीं जाती; **आन्ऱुम्**–बहुत; **उळतु आम्**–बनी है; **नॆटितु आचै कनऱ्ऱ**–गम्भीर काम-राग जलता है, उस स्थिति में; **निन्ऱायक्कु**–जो स्थित हो उस तुम्हें; **उन् ॲतिरे**–तुम्हारे सामने; **एतुरु विळि नोक्कुम्**–तुम्हारी दृष्टि जहाँ गौर करती हैं, वहाँ; **इटङ्कळ् तोऱुम्**–उन सभी स्थानों में; **अन्नैयाळ् तोन्ऱुम्**–वही दिखाई देगी; **इतु**–यह; **तॊल् नॆऱितु आकुम्**–प्राचीन (मनो-) धर्म ही है; **ॲन्ऱाळ्**–(शूर्पणखा ने) कहा। ७०४

शूर्पणखा ने समझाया कि भाई तुम्हारी सीता की भावना स्थिर और दृढ़ है। इसलिए तुम्हारी कल्पना दूसरी ओर नहीं जाती। तुम्हारा सीता के प्रति राग तुम्हें जला रहा है और तुम तप्त स्थिति में हो। इस स्थिति में तुम सर्वत्र सीता को ही देखो —यह कोई नई या विचित्र बात नहीं। यह तो प्राचीन और परिचित मनोधर्म ही है। ७०४

अऩ्ऩाळदु कूऱ वरक्कऩ् मऱ्ऱ दाह
निऩ्ऩालव् विरामऩैक् काण्गुरु नीरॅ नॆऩ्ड्राऩ्
ॲऩ्ऩाळव नॆऩ्ऩैयित् तीरवरु मिऩ्ऩल् शॆय्दाऩ्
अऩ्ऩाण्मुदल् यानु मयर्त्तिल नाहु मॆऩ्ड्राळ् 705

अऩ्ऩाळ्–उसके; अतु कूऱ–ऐसा कहने पर; अरक्कऩुम्–राक्षस रावण ने; अऩ्ऩतु आक–वही हो; निऩ्ऩाल्–तुमसे; अ इरामऩै काण्कुरुम्–उस राम को देखे जाने का; नीर्–गुण; ॲन् ॲऩ्ड्राऩ्–कैसा, पूछा; ॲ नाळ–जिस दिन; ॲऩ्ऩै–मुझे; इ तीर्वु अरु–यह प्रत्यवायहीन; इऩ्ऩल् चॆय्ताऩ्–कष्ट दिया; अ नाळ् मुतल्–उस दिन से; यानुम्–मै भी; अयर्त्तिलऩ् आकुम्–भूली नहीं हूँ; ॲऩ्ड्राळ्–कहा। ७०५

यह सफ़ाई सुनकर रावण ने सकारा कि हाँ! वही ठीक हो सकता है। फिर पूछा कि तुम राम को ही देख रही हो, इसका रहस्य क्या है? शूर्पणखा ने यह सुनकर चातुर्य से उत्तर दिया। भाई यह क्या पूछते हो? जिस दिन राम ने यह प्रत्यवायहीन कष्ट दिया उस दिन से मै उसे कहाँ भूल सकी हूँ? नहीं भूल पायी हूँ। ७०५

आमाम दडुक्कुमॅ ऩाक्कैयो डावि नैय
वेमाल्विऩै येऱ्किऩि यॆऩ्विडि वाहु मॆऩ्ऩक्
कोमाऩुल हुक्कोरु नीकुऱै हिऩ्ड्र दॆऩ्ऩे
पूमाण्गुळ् लाडनै वव्वुदि पोदि यॆऩ्ड्राळ् 706

आम् आम्–हाँ, हाँ; अतु अट्टुक्कुम्–वह सम्भव ही है; ॲऩ् आक्कै ओटु–मेरे शरीर के साथ; आवि नैय–प्राण छीजते है; वेमु आल्–जलते हैं; आल्–इसलिए; विऩैयेर्कु–कामकार्य-तप्त मुझे; इऩि विटिवु ॲऩ्ऩ आकुम्–अब निस्सरण क्या है; ॲऩ्ऩ–पूछने पर; नी उलकुक्कु ओरु कोमाऩ्–तुम भुवनपति हो; कुऱैकिऩ्ड्रतु ॲऩ्ऩे–अपने को हीन क्यों मानते हो; पू माण् कुळलाळै–पुष्पालंकृत सुकेशिनी को; वव्वुति–हर लाओ; पोति–जाओ; ॲऩ्ड्राळ्–कहा। ७०६

रावण ने उत्तर में कहा कि ओफ़ ओह! हाँ, हाँ वह सम्भव बात ही है। पर देखो। मेरा शरीर दुर्बल हो रहा है; मेरे प्राण विगलित हो रहे हैं। शरीर और प्राण जल रहे हैं। कामेच्छा अपना निर्मम कार्य कर रही है। उसके वश होकर मैं बहुत कष्ट उठा रहा हूँ! अब उससे छूटना कैसे हो? शूर्पणखा ने उसे धीरज दिया। भाई! तुम भुवनपति हो।

फिर क्यों ऐसी हीनता का अनुभव करते हो ! जाकर पुष्पालंकृत सुकेशिनी सीता को हर लाओ। अभी जाओ ! उसने भाई को उकसाया। ७०६

ॲन्ड्रा ळहत्तूड्राळ वरक्कनु मीड ळ्ळिन्दान्
औत्तूड्रानु मुणर्न्दिल नावि युलैन्दु शोर्न्दान्
नित्तूड्रारु नडुङ्गितर् नित्तूळ्ळ नाळि त्ताले
पौत्तूड्रादुळ त्तायित्त तत्तनै पोलु मत्तूडे 707

ॲन्ड्राळ्-कहकर; अकत्तूड्राळ्-शूर्पणखा चली; अ अरक्कतुम्-वह राक्षस भी; ईटु अळ्ळिन्तान्-अधीर हुआ; औत्तूड्रानुम् उणर्न्तिलन्-कोई सुध नहीं रही; आवि उलैन्तु-प्राणविह्वल होकर; चोर्न्तान्-थक गया; नित्तूड्रारुम् नटुङ्कित्तर्-(वहाँ जो) खड़े (थे) वे भी (भय से) काँपे; नित्तूड्र उळ नाळिताल् ए-आयु शेष रही इसलिए; पौत्तूड्रातु-विना मरे; उळत् आयित्तन्-जीवंत रहा; अ तुर्ण पोलुम्-वही कारण था; (अत्तू्ड-ए)। ७०७

यह कहकर शूर्पणखा चली गयी। राक्षस संकट सह नहीं सका। अधीर हो गया। सुध-बुध खोयी और उसके प्राण सूखने लगे। पास जो थे वे भी उसकी स्थिति देखकर डर गये। रावण की आयु शेष थी। इसलिए वह मरा नहीं; जीवित रहा। वही कारण था ! नहीं तो आसार आशादायी नहीं लगते थे। ७०७

इड्रन्दार् पिड्रन्दारॅन विळ्ळुनुयिर् पॅड्रड मत्तनन्
मड्रन्दा त्तुणर्न्दानवण् माडुनिन् ड्रारै नोक्किक्
कड्रन्दा लॅन्ननीर्दरु शन्दिर कान्तत् तालोर्
शिड्रन्दार् मणिमण्डबम् जॅय्हॅन्नच् चॅप्पु हॅन्ड्रान् 708

इड्रन्तार् पिड्रन्तार् ॲन-मृतक फिर जीवित हो आया जैसे; इन् उयिर् पॅड्रड मन्तन्-प्यारे प्राणों को फिर से पाकर राक्षसराज; मड्रन्तान् उणर्न्तान्-सुध-बुध जो खोई थी, उसे फिर पाकर; अवण् माटु नित्तूड्रारै नोक्कि-वहाँ पास जो खड़े रहे उनको देखकर; कड्रन्ताल् ॲन्-दुहने पर जैसे; नीर् तरु-जल बहानेवाला; चन्तिर कान्तत्ताल्-चन्द्रकान्त मणि से; ओर्-एक; चिड्रन्तु आर्-श्रेष्ठ बने; मणि मण्टपम्-सुन्दर मण्डप को; चॅय्क ॲन-निर्मित करो, ऐसी; चॅप्पुक अन्ड्रान्-(आज्ञा) सुनाओ, कहा। ७०८

कुछ देर के बाद रावण होश में आया। तब यही लगा कि मृतक ही जी उठा हो। राक्षसराज अब तक भूला-सा रहा। फिर से स्मरण आ गया। उसने अपने पास जो रहे उनसे कहा कि चन्द्रकान्त-शिलाओं का एक रत्नमण्डप बना लेने को कहो। उन शिलाओं से ऐसा शीतल जल निकलता रहे— मानो कोई उन्हें दुह रहा हो। ७०८

वन्दा त्तॅडुवात्तुरै तच्चन् मनत्तु णर्न्दान्
शिन्दा वित्तैयत्तूडियुङ् गैवित्तै यालुञ् जॅय्दान्

अन्दाम नॅडुन्दऱि यायिरत् ताल मैन्द
शन्दार् मणिमण्डबन् दामरै योनु नाण 709

नॅट्टु वान् उऱै—विस्तृत आकाशलोक का वासी; तच्चन्—(विश्वकर्मा नाम का) शिल्पी; वन्तान्—वहाँ आया; मनत्तु उणर्न्तान्—मन में समझा; अम् तामम्—सुन्दर और; नॅट्टुम् तऱि आयिरत्ताल्—ऊँचे हज़ार खम्भों के साथ; अमैन्त—निर्मित; चन्तु आर् मणि मण्टपम्—सौन्दर्य-भरा रत्नमय मण्डप; तामरैयोनुम् नाण—कमलासन को भी शरम से भरते हुए; चिन्ता वित्तै अन्ऱियुम्—परिकल्पना के साथ; कै वित्तैयालुम्—हस्त-कौशल द्वारा भी; चॅय्तान्—रचा। ७०९

विस्तृत आकाशलोक का शिल्पी विश्वकर्मा आया। उसने रावण की इच्छा ध्यान से जान ली। एक सहस्र खम्भों के साथ उसने एक बड़ा मनोरम मण्डप निर्मित किया। ऐसा मण्डप बनाया कि सृष्टि-कर्म में अद्वितीय ब्रह्मा भी देखकर अपनी हीनता पर शरम खाये! उसमें उसकी भावना, कल्पना आदि का भी विशेष सामर्थ्य प्रकट होता था, बल्कि उसके हस्तकौशल की भी झाँकी मिलती थी। ७०९

कान्दम् ममुदिन्ऱुळि काल्वन काल मीनिन्
वेन्दन् ऱॊळियन्ऱियु मेलॊडु कीऴ्वि रित्तान्
पून्दॅन्ऱल् पुहुन्दुऱै शाळर मुम्बु तैन्दान्
एन्दुम् मणिक्कऱ्पहच् चीदळक् कावि ळैत्तान् 710

काल मीनिन् वेन्तन्—कालदर्शी नक्षत्रों के राजा; ऒळि अन्ऱियुम्—(चन्द्र की) ज्योति के विना भी; अमुतिन् तुळि काल्वन—अमृत की बूँदें निकालनेवाले; कान्तम्—चन्द्रकान्त पत्थरों को; मेल् ओट्टु कीऴ् विरित्तान्—ऊपर-नीचे सर्वत्र बिछाया; पूम् तॅन्ऱल्—मधुर (पुष्पगन्ध-युक्त) मलयपवन; पुकुन्तु उऱै—प्रवेश कर रहे, इस निमित्त; चाळरमुम् पुत्तैन्तान्—गवाक्ष भी बनाये; मणि एन्तुम्—(फूल-फलों के रूप में) रत्नधारी; कऱ्पक चीतळ का—कल्पक तरुओं का शीतल उद्यान; अमैत्तान्—निर्मित किया। ७१०

उसने उस मण्डप में ऊपर और नीचे सर्वत्र ऐसे चन्द्रकान्त के पत्थर जड़े जिनसे कालदर्शी, नक्षत्रों के राजा चन्द्र के स्पर्श के विना भी जल स्रव सकता था। फिर मण्डप में गवाक्ष निर्मित किये, जिनसे मधुर पुष्पगन्धवाही मलयपवन अन्दर आकर ठहर सके। फिर उसके चारों ओर एक कल्पतरुओं का शीतल उद्यान बनाया जिनके फल, फूल आदि रत्नमय थे। ७१०

आणिक्कमै पॊऩ्ऱट्टिन् मणिच्चुड रार्वि ळक्कम्
शेणुऱ् ऱिरुळ्शीप्पन दॅय्व मडन्दै मार्हळ्
पूणिऱ् पॊलिवार्बुडै येन्दिडैप् पॊङ्गु तोळान्
माणिक्क मानत्तिडै मण्डबङ् गाण वन्दान् 711

आणिक्कु अमै—प्रामाणिक सोने (की कील) से समता रखनेवाले; पॊन् तट्टिन्—

स्वर्ण की बनी थालियों में; मणि चुटर् आर् विळक्कम्–सुन्दर रत्नप्रकाशमय दीप; चेण् उऱ्ऱु इरुळ् चीप्पत–जो दूर तक जाकर अन्धकार मिटानेवाले थे; पूणिल् पोलिवार्–आभरणों से शोभित; तैय्व मटन्तै मार्कळ्–सुरस्त्रियाँ; पुटै एन्तिट–पार्श्व में ले आयीं; पोङ्कु तोळान्–उन्नत भुजा वाला; माणिक्क विमानत्तु इटै–माणिक्य-वाहन पर; मण्टपम् काण वन्तान्–मण्डप देखने आया। ७११

रावण उस मण्डप को देखने आया। वह माणिक्यजड़ित एक यान पर आया। पुष्ट और उन्नत कन्धों से युक्त उसके साथ अनेक सहस्र कोटि देवांगनाएँ हाथ में स्वर्णथालियों में दीप लिये आयीं। थालियों का स्वर्ण बहुत ही उच्च कोटि का था। उसका खरापन उसके लिए नियत प्रामाणिक सोने की कील से परखा जाता तो शुद्ध निकलता। दीपों की ज्वालाएँ रत्न ही थीं। उनमें से जो प्रकाश निकलता था वह दूर-दूर तक जाकर अन्धकार को मिटाता था। वे देवांगनाएँ बहुत मनोरम भूषणों से भूषित थीं। ७११

अल्लायिर कोडि यडुक्किय दोत्त देनुम्
नल्लार् मुहमाम् नळिर्वानिल विन्ऱि नामप्
पल्लायिर कोडि पनिच्चुड रीन्ऱ तिङ्गळ्
ॲल्ला मुडना विरुळोडि यिरिन्द दन्ऱे 712

नळिर् वान् निलवु इन्ऱि–शीतल आकाश में चाँद नहीं रहा, तो भी; अल् आयिर कोटि–रातें हजारों की संख्या में; अटुक्कियतु ओत्ततेनुम्–एक के ऊपर एक रखी गयी हों, जैसे रहने पर भी; नल्लार् मुकम् आम्–उन सुन्दरियों के मुख रूपी; नाम–श्लाघनीय; पल् आयिर कोटि–अनेक सहस्र कोटि; पनि चुटर् ईन्ऱ–शीतल प्रकाशमय; तिङ्कळ् ॲल्लाम्–चन्द्र सभी; उटना–साथ आने से; इरुळ्–अन्धकार; ओटि–भागकर; इरिन्ततु–हट गया। ७१२

उनके मुख चन्द्र-सम उज्ज्वल थे। अनेक रातों का सम्मिलित अन्धकार हो तो भी बहुत मानार्ह अनेक सहस्र शीतल प्रकाशदायी मुख रूपी चन्द्र साथ आये, इसलिए चाँद के विना भी वह अन्धकार दूर हो गया था। ७१२

पोऱ्पुऱ्ऱन मामणि योन्बदुम् बूवि निन्ऱ
कऱ्पत्तरु विन्गदिर् नाणिळऱ् कऱ्ऱै नाऱ
अऱ्पऱ्ऱॊळि यप्पह लाक्किय दाल रुक्कन्
निऱ्पत्तॊरिक् किन्ऱतु नीळ्शुडर् नीर्मै यन्ऱो 713

पोऱ्पु उऱ्ऱन–मनोहारिता से युक्त; मा मणि ओन्पतुम्–श्रेष्ठ नवरत्न; पूविन्–फूल बने; निन्ऱ–ऐसे स्थित; कऱ्प तरुविन्–कल्पतरुओं की; कतिर्–कान्ति-किरणें; नाळ् निळल् कऱ्ऱै–दिन के-से प्रकाश की रेखाओं के समान; नाऱ–निकल

रही थीं; अल् पक़्क़ अळिय–रात का सम्बन्ध मिट गया; पकल् आक्कियताल्–दिन-सा बनाने से; अरुक्कन् निऱ्‌प–सूर्य के (दूर) रहने पर भी; नीळ् चुटर् तॅरिक्किन्ऱ्तु–लम्बी प्रकाश-रेखाएँ निकालना; नीर्मै अन्ऱो–(कल्पतरुओं का) गुण है न । ७१३

उस उद्यान के कल्पतरु भी आसाधारण थे। उनके फल बहुत ही छटापूर्ण नवरत्न थे। उनसे जो प्रकाश छूटता था उससे दिन-सा प्रकाश होता था। बिना सूर्य के ही उजाला देना कल्पतरु का गुण था न ? । ७१३

ऊऱोशै मुदऱ्‌पॉऱि यावैयु मॊन्ऱि नॊन्ऱु
तेऱानिलै युऱ्‌ऱदोर् शिन्दैयन् शॅय्‌है योरान्
वेऱाय पिऱप्पिडै वेट्कै विशित्त दीर्प्प
माऱोरुडल् पुक्कॅन मण्डवम् वन्दु पुक्कान् 714

ऊऱ–स्पर्शेन्द्रिय; ओचै–श्रवणेन्द्रिय; मुतला–आदि; पॉऱि यावैयुम्–इन्द्रिय सब; ऑन्ऱिन् ऑन्ऱु–एक सा एक; तेऱा–सतर्क नहीं रही; निलै–ऐसी स्थिति में; उऱ्‌ऱतु–पड़ा; ओर् चिन्तैयन्–मन वाला; चॅय्कै ओरान्–क्या करना, यह न जानकर; वेट्कै विचित्तु–राग ने उसको बाँधकर; अतुईर्प्प–खींचा; माऱ ओर् उटल् पुक्कतु ॲन्न–दूसरे एक शरीर में प्रविष्ट हुआ हो ऐसा; मण्टपम् वन्तु पुक्कान्–मण्डप में आ पहुँचा । ७१४

रावण की दशा दयनीय थी। उसकी स्पर्श, शब्द आदि परखनेवाली कोई भी इन्द्रिय सतर्क नहीं थी। एक से एक बढ़कर सब इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गयी थीं। मन भी जड़वत हो गया। क्या करना है, यह भी निश्चय कर नहीं पाया। उधर सीता के प्रति राग उसे बलात् खींच रहा था। उससे वह मानो दूसरे शरीर में प्रवेश कर रहा हो, इस विचित्र भावना के साथ मण्डप में आ पहुँचा । ७१४

तण्डलिल् तवञ्जॅय् वोर्हळ् वेण्डिन दायिन् नल्हुम्
मण्डल महर वेलै यमुदोडुम् वन्द दॅन्नप्
पण्डरुञ् जुरुम्बु शेरुम् पशुमर मुयिर्त्त पैम्बॊन्
तण्डळिर् मलरिऱ् चॅय्द शीदळच् चेक्कै शार्न्दान् 715

तण्टल् इल्–निर्बाध रूप से; तवम् चॅय्वोर्कळ्–तपस्या करते रहनेवाले; वेण्टिन–जो माँगते है उन्हें; तायिन् नल्कुम्–माता के समान देगा; मकर मण्टल वेलै–मण्डलाकार मकरालय (क्षीरसागर); अमुतु ओटुम्–अमृत के साथ; वन्ततु ॲन्न–आया हो जैसे; पण् तरु–संगीत-सम गुंजारशील; चरुम्पु चेरुम्–भ्रमरों से आवृत; पचु मरम्–हरे पेड़ों से; उयिर्त्त–निकले; पैम् पॊन् तण् तळिर्–ताजे स्वर्णवर्ण शीतल पल्लव; मलरिल्–और फूलों से; चॅय्त–बनी; चीतळ चेक्कै–शीतल शय्या पर; चार्न्तान्–पहुँचा । ७१५

उसमें एक पुष्पशय्या थी जो क्षीरसागर अमृत के साथ आया हो ऐसा लगती थी। क्षीरसागर तपस्वियों को उनकी याचित वस्तुओं को माता के

समान दे सकता था। यह शय्या भी वैसी थी क्योंकि कल्पतरु के ताजे स्वर्णवर्ण पल्लव और मनोरम फूल उस पर बिछे हुए थे। उस पर सुरम्य संगीत-सा गुंजार करते हुए भ्रमर मँड़रा रहे थे। रावण उस शीतल शय्या पर आया। ७१५

नॆरिळै महळिर् कून्द लिऱैनऱ् वाश नीन्दि
वॆरियज् जरळच् चोलै वेनिलान् विरुन्दु शॆय्य
आर्हलि यळ्वन् दन्द वमिळ्देन्न वौरुव रावि
तीरिनु मुदवऱ् कौतत तॆन्ऱल्वन् दिरुत्त दन्ऱे 716

ऑरुवर् आवि तीरिनुम्–एक के प्राणों के जाने की स्थिति में रहे, तो भी; **उतवऱ्कु ऑतत**–प्राण रोकने में सहायता जो दे सकता था उस; **आर्कलि अळ्वुम् तन्त**–(क्षीर-) सागर की गहराई से प्राप्त; **अमिळ्तु ॲन**–अमृत के समान; **तॆन्ऱल्**–दक्षिणी (मलय-) पवन; **इळै मकळिर् कून्तल्**–आभरणालंकृता स्त्रियों के केश पर की; **निऱै नऱै वाचम्**–भरी शहद-युक्त सुगन्ध; **नीन्ति**–तैरकर; **वेरि अम् चरळम् चोलै**–शहदयुक्त, सुन्दर देवदार तरुओं के उपवन में; **वेनिलान्**–वसन्तकाल का राजा, मन्मथ के; **विरुन्तु चॆय्य**–स्वागत करते; **वन्तु इरुत्ततु**–आ पहुँचा। ७१६

क्षीरसागर की गहराई से प्राप्त अमृत मरणोन्मुख मनुष्य को जिला कर उसकी सहायता कर सकता है। मलयपवन उसी अमृत के समान वहाँ संचार कर रहा था। वह आभूषणभूषिता सुन्दरियों के केशों के शहद-भरे फूलों की सुगन्धि में घुसकर बाहर आया हुआ था। शीतल देवदार तरुओं से भरे उस उद्यान में वसन्त का राजा मन्मथ उसका स्वागत कर रहा था। इस रीति से वह मलयपवन वहाँ आया। ७१६

शाळरत् तूडु वन्दु तवळ्दलुन् दरित्त ऱेऱ्ऱान्
नीळरत् तङ्गळ् शिन्द नॆरुप्पुह नोक्कु नीरान्
वाळ्मनैप् पुहुन्द दाण्डोर् माशुणम् वरक्कण् डन्न
कोळुऱक् कौदित्तु विम्मि युळैयरैक् कूविच् चौन्नान् 717

चाळरत्तु ऊटु वन्तु–खिड़कियों से होकर आया; **तवळ्तलुम्**–और मन्द-मन्द बहा; **तरित्तल् तेऱ्ऱान्**–तब असहनीय वेदना के साथ; **नीळ् अरत्तङ्कळ् चिन्त**–लम्बी रक्त-धाराएँ बहाते हुए; **नॆरुप्पु उक नोक्कुम्**–आग निकालते हुए देखने का; **नीरान्**–स्वभाव वाला; **वाळ् मनै पुकुन्ततु**–वास के घर में घुसा; **ओर् माचुणम्**–एक सर्प; **आण्टु वर**–वहाँ आया; **कण्टु अन्न**–देखा-सा; **कोळ् उऱ कौतित्तु**–संकट पाकर उबला; **विम्मि**–सिसकते हुए; **उळैयरै**–समीपस्थ लोगों को; **कूवि**–पुकार कर; **चौन्नान्**–बोला। ७१७

वह मलयपवन खिड़कियों के रास्ते से अन्दर आया। पर रावण उसे सह नहीं सका। उसकी आँखों से रक्त की बूँदें ढलक आयीं। अंगार भी प्रकट हुए। वह कोप, दुःख दोनों से प्रभावित था। उसने उस मलयपवन

को वासस्थान के घर में घुस आये सर्प के रूप में देखा। उससे कष्ट हुआ और उस पर गुस्सा भी। वह उबल पड़ा। सिसकने भी लगा। समीपस्थ भृत्यों को पास बुलाकर उसने (निम्न बातें) कहीं। ७१७

कूवलि नुयिर्त्त शिऩ्ऩी रुलहिऩैक् कुप्पुऱ् ऱॆऩ्ऩत्
तेवरि ऩॊरुव ऩॆऩ्ऩै यिऩ्ऩलुम् जॆयत्तक् काऩो
एवलि नऩ्ऱि वन्दिङ् गिव्वऴ लॆय्दिऱ् ऱॆऩ्ऩाक्
कावलि ऩुऴैयर् तम्मैक् , कॊणरुदिर् कडिदि ऩॆऩ्ऱाऩ् 718

कूवलिऩ् उयिर्त्त–(छोटे से) कुएँ में से छनकर निकला; चिल् नीर्–थोड़ा जल; उलकिनै–संसार भर को; कुप्पुऱ्ऱु ॲन्ऩ–डुबो रहा हो जैसा; तेवरिऩ् ऑरुवऩ्–देवों में एक; ॲऩ्ऩै–मुझे; इत्तलुम् चॅय तक्काऩो–संकट दे सका क्या; इ अऴल्–यह आग; एवल् इऩ्ऱि–विना अनुमति के; इङ्कु वन्तु ॲय्तिऱ्ऱु–यहाँ आ पहुँची है; ॲऩ्ऱु–कहकर; कावलिऩ् उऴैयर् तम्मै–पहरेदारों को; कटितिऩ् कॊणरुतिर्–जल्दी लाओ; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ७१८

कूप का रिसता जल क्या संसार भर को डुबो सकेगा ? वैसा देवों में एक यह मुझे इतना कष्ट दे सकता है क्या ? यह अग्निदेव मेरी आज्ञा के विना आया कैसे ? बुलाओ पहरेदारों को। ७१८

अव्वऴि युऴैय रोडि याण्डवर्क् कॊणर्द लोडुम्
वॆव्वऴि यमैन्द ऩॆङ्गण् वॆरुवुऱ नोक्कि वॆय्योऩ्
शॆव्वऴि दॆऩ्ऱ लाऱ्कुत् तिरुत्तिनीर् नीर्हॊ लॆऩ्ऩ
इव्वऴि यिरुन्द वालैत् तडैयवर्क् किल्लै यॆऩ्ऱार् 719

अ वऴि–तब; उऴैयर्–पास जो रहे, वे; ओटि–दौड़े; आण्टु–वही; अवर् कॊणर्तल् ओटुम्–उनको (बुला) लाये, तब; वॆय्योऩ्–आततायी राक्षस ने; वॆम् वऴि अमैन्त–क्रूर बनी; चॆम् कण्–लाल आँखों से; वॆरुवु उऱ–भयभीत करते हुए; नोक्कि–देखकर; नीर् कॊल्–तुम्हीं ने तो; तॆऩ्ऱलाऱ्कु–मलयपवन को; चॆल् वऴि तिरुत्तिऩीर्–जाने का मार्ग दिखाया; ॲऩ्ऩ–पूछा, तो; इ वऴि इरुन्त कालै–यह (खिड़कियों का) मार्ग जब रहता तब; अवर्कु तटै इल्लै–उनको रोक नहीं; ॲऩ्ऱार्–कहा। ७१९

समीप जो रहे वे भृत्य दौड़े। उन्होंने पहरेदारों को बुलाया और वे आये। निर्मम रावण क्रूर आँखों से उनको भयभीत करते हुए तरेरा और पूछा कि मलयपवन को अन्दर आने का सीधा मार्ग तुम्हीं ने बना दिया न ? तब उन्होंने उत्तर दिया कि जब खिड़कियाँ है, तब उसको आने से कौन रोक सकता है ? कोई बाधा नहीं होगी। ७१९

वेण्डिय दुणर्न्दु शॆय्वाऩ् विण्णवर् वरुव ऱॆऩ्ऱाल्
माण्डदु पोलुङ् गॊऴ्है याऩ्डै वन्मै वल्लै

तेण्डिन्तीर् तिशैह डोरुम् जेणुड् विशैयिर् चॅलहुड्
ड्रीण्डिवन् इन्नैप् पर्ड्रि यिरुम्जिरै यिडुदि रॅन्ड्रान् 720

वेण्टियतु उणर्न्तु चॅय्वात्–मैं जो चाहूँ वही करने के लिए; विण्णवर् वरुवर् ॲन्ड्राल्–सुरलोकवासी आते हैं, तो; यानुटै कोळ्कै वन्मै–मेरे (शासन-) सिद्धान्त का बल; माण्टतु पोलुम्–मिट गया शायद; वल्लै–शीघ्र; नीर् तिचैकळ् तोरुम्–तुम दिशा-दिशा में; तेण्टि–खोजकर; चेण् उऱ–बहुत दूर; विचैयिल् चॅल्कुर्रु–तेज जाकर; इवन् तन्नै–इसको; पर्ड्रि–पकड़कर; ईण्टु–यहाँ; इरुम् चिऱै–बड़े कारागृह में; इट्टुतिर्–डाल दो; ॲन्ड्रान्–यह हुक्म दिया। ७२०

रावण को आश्चर्य हुआ। देवता हैं तो मेरी इच्छा के अनुसार सेवा करने के लिए। आज बात विपरीत चली है। क्या मेरा शासन अपना अधिकार-बल खो गया है? दौड़ो। दिशा-दिशा में भागो और इस पवनदेव को पकड़ो और भयंकर कारागृह में डाल दो। ७२०

काऱ्ड्रितोन् ड्रन्नै वाळा मुनिदलिड् कण्ड दिल्लै
कूड्रुम्वन् दॆन्नै यिन्ने कुरुहुमाड् कुड्रित्त वाड्राल्
वेड्ररुड् गरुड्गट् चीदै सॆय्यरुळ् पुनैये नॆन्ड्राल्
आड्रला लडुत्त दॆण्णु ममैच्चरैक् कॊणर्दि रॆन्ड्रान् 721

काऱ्ड्रिनोड् तन्नै–पवन पर; वाळा मुनितलिल्–अकारण कोप करने से; कण्टतु इल्लै–कोई लाभ नहीं देखते; कुरितुत आऱ्ड्राल्–अपनी इच्छा के अनुसार; वेल् तरुम्–भाला-तुल्य; करुन् कण्–असितेक्षणा; चीतै–सीता की; मॆय् अरुळ्–सच्ची कृपा का; पुत्तैयेन ॲन्ड्राल्–धारक नहीं बनूँ तो; कूड्रुम् वन्तु–यम भी आकर; ॲन्नै–मुझे; इन्ने कुरुकुम्–अभी पा लेगा; आल्–इसलिए; अट्टुततु–आगे जो करना है; आड्रलाल् ॲण्णुम्–बुद्धि-बल से सोचनेवाले; अमैच्चरै–मन्त्रियों को; कॊणर्तिर्–लाओ; ॲन्ड्रान्–कहा। ७२१

रावण ने फिर भी सोचा कि वायुदेव पर बेकार क्रोध दिखाने से क्या लाभ? कुछ नहीं देखता। अगर अपनी इच्छा के अनुसार सीताजी की कृपा पा नहीं सकूँगा तो यम भी मुझे मारने के लिए आ पहुँचेगा। इसलिए जो आगे की करनी के बारे में, अपनी बुद्धि के बल पर सोचकर मार्ग बता सकते हैं वे हमारे मन्त्री ही हैं। इसलिए चलकर उनको बुला लाओ। उसने भृत्यों को आज्ञा दी। ७२१

एविन शिलत रोडि येयॆनु मळवि लॆङ्गुम्
कूविनर् कूव लोडुङ् गुरुहिन्नर् कॊडित्तिण् डेर्मेल्
माविनिड् चिविहै तम्मेन् मळैमदक् कळिड्रिन् मीदिल्
तेवरुम् वानन् दन्निड् ड्रिशैदीरुम् जिन्दै शिन्द 722

एविन चिलतर् ओटि–आज्ञापित भृत्य दौड़े और; एय् ॲनुम् अळविल्–'रे' कहने

के समय के अन्दर; ऍङ्कुम् कूवित्तर्–सर्वत्र पुकारा; कूवलोट्टुम्–पुकारने पर; तेवरुम्–देव भी; वान्म् तत्तिल्–आकाश में; तिचै तोऱुम्–दिशा-दिशा में; चिन्तै चिन्त–चिन्ताग्रस्त हो रहे और; कॉटि तिण् तेर् मेल्–ध्वजासहित सुदृढ़ रथों पर; मावित्तिल्–अश्वों पर; चिविकै तम्मेल्–शिविकाओं पर; मऴै मत कळिऱ्ऱिन् मीतिल्–मेघवर्ण मत्तगजों पर; कुऴुकित्तर्–(वे मन्त्री) रावण के पास आये। ७२२

तुरन्त कुछ भृत्य दौड़े। 'रे' कहने की जितनी देर में सब जगह दौड़कर उन्होंने टेर लगायी। तो मन्त्री लोग आये। कुछ एक मन्त्री ध्वजामण्डित रथों पर आये। कुछ घोड़ों पर और कुछ पालकियों में आये। कुछ मेघसदृश मत्तगजों पर सवार हो आये। तब देव सब आकाश मे एकत्र हो गये और वे वहुत ही चिंतित दिखाई दिये। ७२२

वन्दमन् दिरिह ळॊडु माशऱ मनत्ति नॆण्णिच्
शिन्दैयि निन्नैन्द शॆय्युञ् जॆय्हैयन् ऱॆळिवि नॆञ्जन्
अन्दरञ् जॆल्व दाण्डोर् विमानत्ति नारु मिन्ऱि
इन्दिय मडक्कि निन्ऱ मारीश निरुक्कै शेर्न्दान् 723

वन्त मन्तिरिकळोटु–आगत मन्त्रियों-सह; माचु अऱ मनत्तिन् ऍण्णि–दोष-रहित रीति से मन में सोचकर; चिन्तैयिल् निनैन्त–चित्त में सोचा हुआ; चॅय्युम् चॅय्कैयन्–करने में समर्थ; तॆळिविन् नॆञ्चन्–सुलझा हुआ विचारक; आण्टु–तब; अन्तरम् चॆल्वतु–आकाशचारी; ओर् विमानत्तिन्–एक (पुष्पक-) यान पर; आरुम् इन्ऱि–विना किसी को साथ लिये (अकेले); इन्तियम् अटक्कि निन्ऱ–इन्द्रिय-दमन जो किये रहा; मारीचन् इरुक्कै चेर्न्तान्–मारीच के यहाँ जा पहुँचा। ७२३

मन्त्री आये। मंत्रणा हुई। कोई त्रुटि न रहे, ऐसा उपाय सोचा गया। रावण दृढ़संकल्प था, कार्यचतुर था। वह आकाशचारी एक यान पर चढ़ा और मारीच के पास आया, जो इन्द्रियों का दमन करके तपस्या करता था। ७२३

8. मारीशन् वदैप् पडलम् (मारीच-वध पटल)

इरुन्दमा रीश नन्द विरावण नॆय्द लोडुम्
पॊरुन्दिय पयत्तिन् शिन्दै पॊरुमुऱ्ऱु वॆरुवु हिन्ऱान्
करुन्दड मलैयनानै यॆदिर्हॊण्डु कडन्गळ् यावुम्
तिरुन्दिय शॆय्दु शॆव्वित् तिरुमुहम् नोक्किच् चॆप्पुम् 724

इरुन्त मारीचन्–(तपोरत जो) रहा, वह मारीच; अन्त इरावणन् ऍय्तल् ओटुम्–उस रावण के आते ही; पॊरुन्तिय–उत्पन्न; पयत्तिन्–भय के कारण; चिन्तै पॊरुमुऱ्ऱु–व्यग्र-मन होकर; वॆरुवुकिन्ऱान्–डरते-डरते; करुम् तटम् मलै अन्नानै–काले वड़े पर्वत के समान उसको; ऍतिर् कॊण्टु–स्वागत करके; कटन्कळ् यावुम्–कर्तव्य सब; तिरुन्तिय चॆय्तु–उचित रूप से करके; चॆव्वि तिरुमुकम् नोक्कि–दर्शनीय उसका मुख देखकर; चॆप्पुम्–(यों) वोला। ७२४

तपोरत मारीच ने रावण को देखा। जब रावण आया तो उसे बड़ा भय हो गया। भय के कारण चित्त व्याकुल हो गया। उसने बड़े काले पर्वत-सम रावण की अगवानी की। फिर अतिथि-सत्कार उचित रीति से किये। बाद उसके दर्शनीय मुख को देखकर वह बोला। ७२४

शन्द मलर्त्तण् कड्पह नीळड् ङलैवर्क्कुम्
अन्दह नुक्कु मञ्ज वडुक्कु मरशाळ्वाय्
इन्द वनत्तॆन् निन्न लिरुक्कै यॆळियोरिन्
वन्द करुत्तॆन् शॊल्लुदि यॆन्ड्रान् मरुळ्हिन्ड्रान् 725

मरुळ्किन्ड्रान्–भ्रमित; चन्तम् मलर्–सुन्दर फूलदार; तण् कड्पक नीळल्–शीतल कल्पतरु की छाया में रहकर शासन करनेवाले; तलैवर्कुम्–देवेन्द्र को; अन्तकनुक्कुम्–यम को भी; अञ्च अटुक्कुम्–भयभीत होने देते हुए शासन करते हुए; अरचु आळ्वाय्—राज्यपालन करनेवाले; इन्त–इस; वनत्तु–वन में; ऎन् इन्तल् इरुक्कै–मेरे संकट-दायक वासस्थान में; ऍळियारिन्–दीन के समान; वन्त करुत्तु–आने का अर्थ; ऎन्–क्या है; चॊल्लुति–कहो; ऎन्ड्रान्–कहा। ७२५

मारीच के मन में संशयजनित भ्रम था। देवेन्द्र मनोरम शीतल कल्पतरु की छाया में सुख से रहकर आकाशलोक का शासन करता है। यम है। उनको भी भयभीत करते हुए शासन करनेवाले राजा! तुम इस वन में मेरे तुच्छ और कष्टदायी वासस्थान मे दीन मनुष्य के समान आये हो! इसका क्या अर्थ है? बताओ। —मारीच ने जानना चाहा। ७२५

आन दनैत्तु मावि तरित्ते नयर्हिन्ड्रेन्
पोनदु पॊर्पु मेन्मैयु मड्ड्रॆन् पुहळोडुम्
यान दुनक्किन् ड्रॆड्ङ नुरैक्के निन्नियॆन्ना
वान वरुक्कु नाण वडुक्कुम् वशैमन्नो 726

आनतु अनैत्तुम्–आने के (सभी) कष्ट आ गये; आवि तरित्तेन्–(किसी तरह) प्राण धारण कर रहा हूँ; अयर्किन्ड्रेन्–थक गया हूँ; ऎन् पॊर्पुम् मेन्मैयुम्–मेरा महत्त्व और गौरव; पुकळ् ओटुम् पोनतु–कीर्ति के साथ चले गये; इनि–अब; यान्–मैं; उनक्कु–तुम्हें; इन्रु ऎङ्ङन् उरैक्केन्–आज की स्थिति कैसे कहूँ; ऎन्ना–कहकर; वानवरुक्कुम्–देवों से भी; नाण–शरमाएँ; अटुक्कुम् वचै–ऐसा (जो) अपयश आया है; (मन्–ओ)। ७२६

रावण ने कहा कि मुझ पर सभी तरह के संकट आ चुके हैं। प्राण तो नहीं गये पर अत्यन्त शिथिल हूँ। मेरी महिमा, गौरव और कीर्ति सब चले गये। तुमसे मैं क्या कहूँ? देवों से भी हम शर्मायें, ऐसी निन्दा आ लगी है। ७२६

वन्मै तरित्तोर् मानिडर् मऱ्ऱङ् गवर्वाळाल्
निन्मरु हिक्कु नाशि यिळक्कु निलैनेर्न्दाल्
ॲन्मर बुक्कु निन्मर बुक्कु मिदन्मेलोर्
पुन्मै तॅरिप्पिन् वेऱिनि युण्डो पुहऴ्वेलोय् 727

पुकऴ् वेलोय्–सर्वप्रशंसित भालाधारी; मानुटर्–मानव; वन्मै तरित्तोर्–बलशाली हो गये हैं; मऱ्ऱु–और; अङ्कु–वहाँ (दण्डक वन में); अवर्–उन मानवों के द्वारा; वाळाल्–कटार से; नित्र् मरुकिक्कु–तुम्हारी भांजी की; नाचि इळक्कुम्–नासिका खोने की; निलै नेर्न्ताल्–दशा हुई तो; ॲन् मरपुक्कुम्–मेरे कुल का; नित् मरपुक्कुम्–और तुम्हारे कुल का; इतन् मेल् ओर् पुन्मै तॅरिप्पित्–इससे बढ़कर हेयता की बात; इति वेऱु उण्टो–दूसरी है क्या। ७२७

शंसित भालाधारी मारीच ! अल्प मनुष्य आज बलशाली हो गये हैं। और स्थिति ऐसी हो गयी कि दण्डकवन में एक मनुष्य ने तुम्हारी भांजी शूर्पणखा की नाक काट ली। फिर तुम्हारे और मेरे कुल का क्या मान रहा ? इससे बढ़कर हेयता हो सकती है क्या ? । ७२७

तिरुहु शिनत्तान् मुदिर मलैन्दोर् शिऱियोर्नाळ्
परुहिन् ॲन्ऱाल् वॅन्ऱि नलत्तिऱ् पऴियन्ऱो
इरुहै शुमन्दा यिनिदि निरुन्दा यिहल्वेलुन्
मरुह रुलन्दा रोरुवन् मलैन्दान् वरिविल्लाल् 728

तिरुकु चिततताल्–ऐंठे कोप के साथ; मुतिर मलैन्तोर्–प्रचण्ड रूप से जिन्होने युद्ध किया; चिऱियोर् नाळ् परुकित्तन्–उन मेरे छोटों के प्राण पी लिये; ॲन्ऱाल्–तो; वॅऱ्ऱि नलत्तिन्–विजय के गौरव पर; पऴि अन्ऱो–बट्टा नहीं है क्या; इकल् वेल् उन् मरुकर्–युद्धोपयोगी भालाधारी तुम्हारे भांजे; उलन्तार्–मरे; ओरुवन्–अकेले एक मनुष्य ने; वरि विल्लाल्–बन्धनयुक्त धनुष ले; मलैन्तान्–युद्ध करके मिटा दिया; इरु कै चुमन्ताय्–तुम (हाथ जोड़े) दोनो हाथों को सिर पर धारण किए हो; इनितु इरुन्ताय्–सुखपूर्वक रहते हो। ७२८

ऐंठे (अपार) क्रोध के साथ मेरे छोटे भाइयों ने प्रचण्डता के साथ उससे युद्ध किया पर उसने उनके प्राण पी (हर) लिये। तो हमारी विजयशीलता पर बट्टा नहीं लगा क्या ? युद्धोपयोगी भाले रखनेवाले तुम्हारे भांजे मरे; एक मनुष्य ने अपने धनुष के बल से उनसे युद्ध करके उनको मिटा दिया; और तुम इधर सिर पर जुड़े हाथ रखकर तपस्या कर रहे हो सुखपूर्वक ! । ७२८

वॅप्पऴि यादॅन् नॅञ्जु मुलन्देन् विळिहिन्ऱेन्
ऑप्पिल रॅन्ऱे पोर्शॅय वॊल्ले नुडन्वाळुम्
तुप्पऴि शॅव्वाय् वञ्जियै वव्वत् तुणॅहॊण्डिट्
टिप्पऴि निन्निऱ् ऱीरिय वन्दे निवणॅन्ऱान् 729

वॆप्पु अळियातु—मन का ताप नहीं मिटता; नॆञ्चम् उलन्तेन्—मन व्यग्र है; विळिकिन्ऱेन्—मर रहा हूँ; ऒप्पु इलर्—समान नहीं; ऎन्ऱे—इसीलिए; पोर् चॆय ऒल्लेन्—लड़ने में सहमत नहीं हूँ; उटन् वाऴुम्—उनके साथ रहनेवाली; तुप्पु अऴि—प्रवाल को हरानेवाले; चॆम् वाय्—अरुणाधरा; वल्चियै—लता (-समाना स्त्री) को; वव्व—हर लाने के लिए; तुणै कॊण्टु इट्टु—तुम्हें अपना सहायक बनाकर; इ पऴि—यह अपमान; निन्निल् तीरिय—तुम्हारे द्वारा दूर करने के लिए; इवण्—यहाँ; वन्तेन्—आया; ऎन्ऱान्—कहा। ७२९

इससे मेरा मन जलता है। जलन नहीं मिटती। मैं मन मारे मरणोन्मुख दशा में हूँ। वे मेरे समान नहीं हैं; इसलिए उनके साथ लड़ने को मेरा मन नहीं मानता। पर बदला तो लेना ही है। उनके साथ एक स्त्री है। उसके अधर प्रवाल को भी सुन्दरता में मात देनेवाले हैं। वह लता के समान है। उसको तुम्हारी सहायता से हर लाना चाहता हूँ, ताकि मेरा यह अपयश छूटे! इसीलिए इधर आया हूँ। —रावण ने अपना अभिप्राय कहा। ७२९

इच्चॊ लनैत्तुम् जॊल्लि यरक्क नॆरिहिन्ऱ
किच्चि नुरुक्किट् टुय्त्तन नॆन्नक् किळर्वान्मुन्
शिच्चि यॆन्तत्तन् मॆय्च्चॆवि पॊत्तित् तॆरुमन्दान्
अच्च महर्ऱिच् चॆऱ्ऱ मनत्तो डरैहिन्ऱान् 730

अरक्कन्—रावण ने; ऎरिकिन्ऱ किच्चिन्—जलती आग में; उरुक्कु इट्टु—इस्पात गलाकर; उय्त्तनन् ऎन्न—गरम द्रव को कानों में डाला हो, ऐसा; इ चॊल् अनैत्तुम्—यह सारा वचन; चॊल्लि—कहकर; किळर्वान् मुन्—उकसानेवाले के सामने; ची ची ऎन्न—छिः छिः कहकर; तन् मॆय् चॆवि पॊत्ति—अपने कानों पर हाथ रखकर; तॆरुमन्तान्—गड़बड़ाकर; अच्चम् अकर्ऱि—फिर भय त्यागा; चॆऱ्ऱ मनत्तॊटु—क्रुद्ध मन के साथ; अरैकिन्ऱान्—बोला। ७३०

ये शब्द मारीच के कानों में पिघलते इस्पात के समान पड़े। रावण ने ये वचन कहकर उसको उकसाया। तब मारीच ने अपने दोनों हाथ दोनों कानों में धर लिये। कहा— छिः छिः! वह पहले गड़बड़ाया। फिर भय त्यागकर कोप के साथ वह यों बोला। ७३०

मन्ना नीयुन् वाऴ्वै मुडित्ताय् मदियर्ऱाय्
उन्ना लन्ऱी वूऴ्वित्तै यॆन्ऱे युणर्हिन्ऱेन्
इन्ना वेनुम् यानिदु रॆप्पॆ निदमॆन्नाच्
चॊन्ना नन्ऱे यन्नव तुक्कुत् तुणिवॆल्लाम् 731

मन्ना—राजा; नी उन् वाऴ्वै मुटित्ताय्—तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली; मति अऱ्ऱाय्—बुद्धि-हीन हो गये; ईतु उन्ताल् अन्ऱु—यह तुम्हारा कृत्य नहीं; ऊऴ् वित्तै ऎन्ऱे—प्रारब्ध ही; उणर्किन्ऱेन्—समझता हूँ; इन्ना एनुम्—बुरा लगे तो भी;

यान्-में; इतम् इतु-हित यह; उरैप्पॅन्-बताऊँगा; ॲन्ना-कहकर; अन्तवन्क्कु-उसे; तुणिवु ॲल्लाम्-सारा हितकर उपदेश के वचन; चॊन्नान्-कहे; (अन्ऱु-ए)। ७३१

हे राजा ! बस ! तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली। बुद्धि खो चुके। मैं समझता हूँ कि यह तुम्हारा काम नहीं; वरन् प्रारब्ध का तकाजा है। मेरा कहना तुमको बुरा लगेगा; तो भी तुमको हित की बात कहूँगा। —ऐसा कहकर मारीच ने रावण को अच्छी बातों का सब उपदेश किया। ७३१

अऱ्ऱ करत्तो डुन्ऱलै नीये यत्तमुत्तनिल्
पऱ्ऱिनै युय्त्ताय् पऱ्पल कालम् पशिहूर
उऱ्ऱुयि रुळ्ळे तेय वुलन्दाय् पिनैयन्ऱो
पॅऱ्ऱनै शॅल्वम् पित्तिदि दिळन्दार् पॅऱलामो 732

अऱ्ऱ-खण्डित; करत्तोटु उत् तलै-अपने हाथ के साथ सिर को; अत्त मुत्तिल्-(होम की) अग्नि में; नीये पऱ्ऱित्तै उयत्ताय-स्वयं पकड़कर तुमने होम किये; पल् पल कालम्-बहुत समय तक; पचि कूर उऱ्ऱु-बहुत भूख से पीड़ित रहकर; उळ्ळै उयिर् तेय-अन्दर प्राणों के क्षीण होते; उलन्ताय्-कष्ट उठाया (तप किया); पित्तै अन्ऱो-बाद तो; चॅल्वम् पॅऱ्ऱत्तै-(त्रिलोकाधिपत्य की) सम्पत्ति पायी; इऴन्ताल्-खो जाओ तो; पित्तु इतु पॅऱल् आमो-फिर पाना हो सकता है क्या। ७३२

तुमने अपने ही खण्डित हाथ और सिरों को अपने ही हाथ से होमाग्नि में होम किया। कितने ही लम्बे काल तक भूखा-प्यासा रहकर, प्राणों को क्षीण होने देते हुए कठोर कष्ट सहे। तभी जाकर यह सारी विभवश्री तुम्हारी हुई ! (त्रिलोकाधिपत्य भी मिला।) तुम अब इसको खो जाओ तो पुनः प्राप्त हो सकता है क्या ? । ७३२

तिऱत्तिऱ नाले शॅय्दव मुऱ्ऱित् तिरुवुऱ्ऱाय्
मऱत्तिऱ नाले शॊल्लुदि शॊल्लाय् मऱैवल्लोय्
अऱत्तिऱ नाले यॅय्दित्ते यन्ऱो वदुनीयुम्
पुऱत्तिऱ नाले पिन्नु मिळक्कप् पुहुवायो 733

चॊल् आय् मऱै-निरुक्तांगी वेद में; वल्लोय-निपुण; तिऱम् तिऱत् आले-समर्थ सामर्थ्य से; चॅय् तवम् मुऱ्ऱि-करणीय सभी तप पूरा करके; तिरु उऱ्ऱाय्-यह सारा वैभव पाया; मऱ तिऱत् आले-धर्म-विरुद्ध बल से; चॊल्लुति-यह बात कहते हो; अऱ तिऱत्ताले-धर्म-सम्मत बल से; ॲय्तित्तै अन्ऱो-(यह विभुता) पायी न; अतु-वह; पुऱ तिऱत्ताले-धर्म-विरुद्ध बल से; पित्तुम् इऴक्क-उसको फिर से खोने के लिए; पुकुवायो-इस काम में प्रविष्ट होओगे क्या। ७३३

निरुक्त-सहित वेद के विशारद ! समर्थ सामर्थ्य के साथ, करणीय तप आदि करके तुमने यह सम्पत्ति पायी है। अब अधार्मिक बल हो गया है, उससे तुम यह बात कह रहे हो। यह सारा वैभव तुमने धर्म-मार्ग

पर चलकर ही प्राप्त किया था। अब इसे अधार्मिक कार्य करके खोना चाहोगे क्या ? । ७३३

नारङ् गॉण्डार् नाडु कवर्न्दार् नडैयिल्ला
वारङ् गॉण्डार् मर्ऱॉरु वर्काय् मनैवाळ्म्
तारङ् गॉण्डा रॅन्ऱिवर् तम्मैत् तरुमन्दान्
ईरुङ् गण्डाय् कण्डह रुय्न्दा रॅवरैया 734

ऐया–प्रभु; नारम् कॉण्टार्–जल हरनेवाले; नाटु कवर्न्तार्–राज्य छीननेवाले; नटै इल्ला–प्रथा के विरुद्ध; वारम् कॉण्टार्–प्रजा से कर लेनेवाले; मर्ऱु ऑरुवर्कु आय्–दूसरे की गृहिणी बनकर; मनै वाळ्म्–उसके घर में रहनेवाली; तारम् कॉण्टार्–उसकी पत्नी को हर लानेवाले; ऍन्ऱु इवर् तम्मै–ऐसे इन लोगों को; तरुमम् तान्–धर्मदेवता स्वयं; ईरुम्–काट कर मार देता है; कण्टकर् उय्न्तार्–पापी बचे; ऍवर्–कौन; कण्टाय्–देखा। ७३४

प्रभु ! तुम सोचो। पराया जल हरनेवाला, राज्य छीननेवाला, अक्रम कर उगाहनेवाला, परदारा ग्रसनेवाला —इनको धर्मदेवता स्वयं आकर मिटा देगा। पापी कौन नाश से बचा है अब तक, सोचो। ७३४

अन्दर मुऱ्ऱा तहलिहै पॉऱ्पा लळिवुऱ्ऱान्
इन्दिर नॉप्पा रॅत्तनै योर्दा मियलऱ्ऱार्
शॅन्दिरु वॊप्पा रॅत्तनै योर्निन् ऱिरुवुण्वार्
मन्दिर मऱ्ऱा रुऱ्ऱ दुरैत्ताय् मदियऱ्ऱाय् 735

अन्तरम् उऱ्ऱान्–सुरलोकाधिपति; अकलिकै पॉऱ्पाल्–अहल्या के सौंदर्य से; अळिवु उऱ्ऱान्–बिगड़ा; इन्तिरन् ऑप्पार्–इन्द्र-सम; ऍत्तनैयोर् ताम्–कितनों ही ने; इयल् अऱ्ऱार्–गौरव खोया; चॆम् तिरु ऑप्पार्–सुन्दर लक्ष्मी-सम स्त्रियाँ; ऍत्तनैयोर्–कितनी ही; निन् तिरु उण्पार्–तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं; मन्तिरम् अऱ्ऱार्–विचार-शक्ति से हीन लोगों की; उऱ्ऱतु–(सी) बात; उरैत्ताय्–कहते हो; मति अऱ्ऱाय्–बुद्धिहीन हो। ७३५

सुरलोकाधिपति इन्द्र अहल्या के सौन्दर्य से (आकृष्ट होकर) संकट में पड़ा। इन्द्र के समान कितने ही लोग अपना गौरव खो चुके हैं ! (तुम्हारे पास स्त्रियों की कमी है क्या ?) लक्ष्मी-सम कितनी ही सुन्दरियाँ तुम्हारे पास रहकर तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं ! फिर विवेक-हीन मनुष्य की अच्छी मन्त्रणा जिसे मिली नहीं हो उसकी बात कहते हो ! साफ़ है कि तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है। ७३५

शॅय्दा येतुन् दीविनै योडुम् बळियल्ला
दॅय्दा दॅय्दा दॅय्दि निराम् तुलहीन्ऱान्

वॆंदा लत्न् वाळिहळ् कॊण्डुन् वळियोडुम्
कॊय्दा नत्रे कॊऱ्ऱ मुडित्तुन् कुळ्वॆल्लाम् 736

चॆय्ताय् एत्तुम्–यह करोगे तो भी; तीविनै ओटुम्–पाप के साथ; पळि अल्लातु–अपयश से हीन; ऎय्तातु–जो है, वह मिले विना; ऎय्तातु–नहीं रहेगा; ऎय्तित्–(तुम्हारा संकल्प) पूरा होगा तो भी; उलकु ईन्ऱान् इरामन्–लोक-जनक श्रीराम ने; वॆंताल् अन्न–(मुनि-) शापों के समान; वाळिकळ् कॊण्टु–शरों से; उन् वळि ओटुम्–तुम्हारी संतति के साथ; कॊऱ्ऱम् मुटित्तु–शक्ति मिटाकर; उन् कुळ् ऎल्लाम्–तुम्हारा दल और बल; कॊय्तान् अन्ऱे–मिटा दिया न, समझो। ७३६

अगर तुम यह काम करोगे तो यह निश्चित है कि पाप और अपयश के सिवा कुछ नहीं मिलेगा; नहीं ही मिलेगा। तुम्हारा मनोरथ पूरा हो गया तो भी यह निश्चय समझ लो कि लोकपिता श्रीराम ने अपने मुनि-शाप-सम अमोघ बाणों से तुम्हारी संतति के साथ तुम्हारा सारा दल-बल मिटा दिया! । ७३६

ऎन्ऱा नॆन्ने यॆण्णलै योनी करनॆन्बान्
निन्ऱा नैक्कु मेलुळ नॆन्नु निलैयम्मा
तन्ऱा नैत्तन् ऱेरॊडु माळत् तनुवॊन्ऱाल्
कॊन्ऱान् मुऱ्ऱुङ् गॊल्ल मनत्तिङ् कुऱिहॊण्डान् 737

करन् ऎन्पान्–खर जो था; निन् तानैक्कुम् मेल्–तुम्हारी सेवा का नायक; ऎन्नुम् निलै उळन्–उस पद में रहा न; तन् तानै–अपनी सेना; तन् तेर् ओटुम्–अपने रथ के साथ; माळ–मर मिटे, ऐसा; तनु ऒन्ऱाल्–एक ही धनु से; कॊन्ऱान्–श्रीराम ने मारा; मुऱ्ऱुम्–सारा वंश; कॊल्ल–मिटाने का; मनत्तिल् कुऱि कॊण्टान्–मन में संकल्प रखता है; ऎन्ने–क्या ही आश्चर्य है; ऎन् तान् नी ऎण्णलैयो–क्यों ही तुमने यह बात नहीं सोची; अम्मा–री माँ। ७३७

खर क्या मामूली राक्षस था? वह तुम्हारी सेना में नायक का पद वहन करता था। श्रीराम ने एक ही धनु की सहायता से उसका उसकी सेना और रथ सहित काम तमाम किया। और उसका यही संकल्प है कि राक्षसकुल को ही मिटा दूँ। यह क्या आश्चर्य है! तुमने यह सब क्यों नहीं सोचा? माँ! कैसी बुद्धिहीनता है! । ७३७

वॆय्योर् यारे वीर विरादन् ऱुणैवॆय्योर्
ऐयो पोना नम्बॊडु मुम्बरक् कवनॆन्ऱाल्
उय्वार् यारे नम्मि लॆन्नक्कॊण् डुणर्दोऱुम्
नैया निन्ऱे नीयि दुरैत्तु नलिवायो 738

वॆय्योर्–कठोर वीरों में; वीर विरातन् तुणै–वीर विराध जितना; वॆय्योर् यारे–भयंकर कौन है; अवन्–वह भी; ऐयो–हाय; अम्पॊटुम्–राम के बाण के साथ; उम्पर्क्कु पोनान्–आकाश को चला गया; ऎन्ऱाल्–तो; नम्मिल् उय्वार्

यारे–हममें बचेगा कौन; ॲन्न कॉण्टु–यह सोचकर; उणर् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों विचार करता हूँ, त्यों-त्यों; नैया निऩ्ऱेऩ्–विगलित होता हूँ; नी इतु उरैत्तु–तुम यह कहके; नलिवायो–और भी सताते हो क्या। ७३८

बड़े भयंकर और क्रूर वीरों में वीर विराध के समान अति बलिष्ठ वीर कौन होगा ? हाय ! वह विराध भी श्रीराम के एक ही शर से, उस शर के साथ ही स्वर्ग पहुँच गया न ! तो हममें कौन ठहर सकता है ? यही सोच-सोचकर मैं व्यग्र हो रहा हूँ। शिथिल हो रहा हूँ। तुम यह बात कहकर और भी निर्बल कर रहे हो मुझे। ७३८

माण्डार् माण्डार् नीयिऩ्ऩि माळ्वार् तॉऴिल्शॅय्य
वेण्डा वेण्डा शॅय्दिडि नुय्वाऩ् विदियुण्डो
आण्डा राण्डा रॅत्तऩै यॅऩ्गे ऩऱ्ऱाळार्
ईण्डा रीण्डार् निऩ्ऱव रॅल्ला मिलरऩ्ऱो 739

माण्टार् माण्टार्–जो मरे, वे मर गये; नी इऩ्ऩि–तुम अब भी; माळ्वार् तॉऴिल्–मरणासक्त का काम; चॅय्य वेण्टा वेण्टा–मत करो, मत करो; चॅय्तिटिऩ्–करोगे तो; उय्वाऩ् विति–बचने का रास्ता; उण्टो–है क्या; आण्टार् आण्टार्–शासक (के बाद) शासक; ॲत्तऩै–कितने (मरे); ॲऩ्केऩ्–कहूँ; अऱऩ् आळार्–धर्म का जिन्होंने पालन नहीं किया; ईण्टार् ईण्टार्–चिरकाल नहीं रहेंगे, नहीं रहेंगे; निऩ्ऱवर् ॲल्लाम्–जो रहे वे भी; इलर् अऩ्ऱो–अब नहीं रहे न। ७३९

जो चल बसे वे तो चले गये। तुम यह काम करके मरण का वरण मत करो। करोगे तो जीवित बचने का कोई मार्ग नहीं होगा। राजा के बाद राजा, कितने ही राजा मरे हैं, उनकी संख्या क्या कहूँ ? जो धर्म का पालन नहीं करते वे बहुत काल नहीं जीते, नहीं जीते। जो रहे वे सारे यम के मेहमान हो गये। अब नहीं रहे न ? । ७३९

ॲम्बिक् कुम्मॅ ऩऩ्ऩै तनक्कु मिऱुतिक्कोर्
अम्बुय्क् कुम्बोर् विल्लि तऩक्कु मयनिऱ्कुम्
तम्बिक् कुम्मॅऩ् ऩाण्मै तविर्न्दे तळर्वुऱ्ऱेऩ्
कम्बिक् कुम्मॅऩ् नॅञ्जव ऩॅऩ्ऱे कवल्हिऩ्ऱेऩ् 740

ॲम्पिक्कुम्–मेरे कनिष्ठ को; ॲऩ् अऩ्ऩै तऩक्कुम्–मेरी माता को; इऱुतिक्कु–अन्त करने के लिए; ओर् अम्पु उय्क्कुम्–जिसने एक बाण चलाया; पोर् विल्लि तऩक्कुम्–उस युद्धकुशल धनुर्धर श्रीराम; अयल् निऱ्कुम्–और उसका पार्षद; तम्पिक्कुम्–कनिष्ठ भ्राता के सामने; ॲऩ् आण्मै तविर्न्ते–अपना पौरुष हारकर; तळर्वु उऱ्ऱेऩ्–शिथिल हो गया; ॲऩ् नॅञ्चु–मेरा मन; कम्पिक्कुम्–काँपता है; अवऩ् ॲऩ्ऱे–वही राम (तुम्हारा शत्रु हो गया, यह समझकर); कवल्किऩ्ऱेऩ्–व्याकुल हूँ। ७४०

श्रीराम बड़ा ही युद्धनिपुण धनुर्धर है। उसने मेरे छोटे भाई और

माता (ताड़का) को मौत के घाट उतारने के लिए एक-एक ही बाण चलाया था। ऐसे उसके और उसके पार्षद लक्ष्मण के सामने अपना बल हारकर मैं निर्बल हुआ। अब भी उनकी बात सोचता हूँ तो मेरा मन कम्पित हो जाता है। अब मेरी चिन्ता यही है कि वही तुम्हारा शत्रु बन गया है! ।७४०

निऩ्ऱुम् जॆऩ्ऱुम् वाऴ्वन याव निलैयावाल्
पोऩ्ऱु मॆऩ्ऩु मॆय्म्मै युणर्न्दोय् पुलैयाडऱ्
कोऩ्ऱु मुऩ्ऩा यॆऩ्ऩुरै कॊळ्ळा युयर्शॆल्वत्
तॆऩ्ऱु मॆऩ्ऱु वैहुदि यैया विऩ्ऱियॆऩ्ऱाऩ् 741

ऐया—तात; निऩ्ऱुम् चॆऩ्ऱुम्—अचल और चल; वाऴ्वत यावुम्—जीव सभी; निलैया—मर्त्य हैं; पोऩ्ऱुम्—मर जायेंगे; ऍऩ्ऩुम् मॆय्म्मै—यह सत्य; उणर्न्तोय्—जानते हो; पुलै आटऱ्कु—यह नीच काम करना; ऒऩ्ऱुम् उऩ्ऩाय्—कुछ मत सोचो; ऍऩ् उरै कॊळ्ळाय्—मेरा वचन मानो; इऩ्ऱि—आगे भी; उयर् चॆल्वत्तु—ऊँचे वैभव के साथ; ऍऩ्ऱुम् वैकुति—सदा रहो; ऍऩ्ऱाऩ्—कहा (मारीच ने)। ७४१

हे तात! इस संसार में चल या अचल कोई भी जीव या जन्तु स्थायी रूप से रहनेवाला नही है। यह तथ्य तुम जानते ही हो। ऐसे तुम यह पाप का खेल क्यो करना चाहते हो? किञ्चित भी यह बात मत सोचो। मेरी बात मान लो। अपार वैभवयुक्त पद में हो आगे भी सदा उसी में रहो। मारीच ने ये सारी बातें कही। ७४१

कङ्गैशडै वॆत्तव नोडुङ्गयिलै वॆऱ्पोर्
अङ्गैयि नॆडुत्तवॆन दाडॆऴिन् मणित्तोळ्
इङ्गोर्मनि दऱ्कॆळिय वॆऩ्ऱऩै यॆऩत्तऩ्
वॆङ्गणॆरि यप्पुरुव मीदुऱ विडॆत्ताऩ् 742

कङ्कै चटै वॆत्तवऩ् ओटुम्—जटा में गंगाधारक के साथ; कयिलै वॆऱ्पु—उनके कैलासपर्वत को; ओर् अम् कैयिल्—एक हथेली पर; ऍटुत्त—जिन्होंने उठाया; ऍऩतु—मेरे; आटु—युद्धोत्साही; ऍऴिल् मणि तोळ्—सुन्दर श्रेष्ठ भुजाएँ; इङ्कु ओर् मतितऩुक्कु—यहाँ एक मनुष्य के लिए; ऍळिय ऍऩ्ऱऩै—सुगम है, कहा; ऍऩ—कहकर; वॆम् कण् ऍरिय—भयंकर आँखों से आग निकालते हुए; पुरुवम् मीतु उऱ—भौंहों को ऊपर उठाते हुए; विटॆत्ताऩ्—डाँट बतायी। ७४२

रावण को ये बातें कैसे पसन्द आती? उसने डाँट बतायी। अपनी जटा में गंगाधारक शिवजी के कैलास को उनके साथ मैंने अपनी हथेली में उठाया था। तुम कहते हो ऐसी मेरी प्रबल, सुन्दर और युद्धोत्साही भुजाएँ इस अल्प मनुष्य के सामने तुच्छ हैं! यह कहते वक्त उसकी आँखों से अंगार छूटे और भौंहें तनकर भाल पर चढ़ गयीं। ७४२

निहळ्न्ददै निनैक्किलैयेंन् नॅञ्जिनिलै यञ्जा
दिहळ्न्दत्तै यॅनक्किळैय नङ्गैमुह मॅङ्गुम्
अहळ्न्दवरै यॊप्पुड़ वमैत्तवरै येया
पुहळ्न्दत्तै तन्निप्पिळै पॊरुत्तनॅनि दॅन्ड्रान् 743

ऐया–प्रभु; निकळ्न्ततै–जो घटा; निनैक्किलै–वह नहीं सोचते; अञ्चातु–बिना डर के; ऍन् नॅञ्चिन् निलै–मेरे हृदय की स्थिति की; इकळ्न्ततै–निन्दा की; ऍनक्कु इळैय नङ्कै–मेरी छोटी बहिन के; मुकम् ऍङ्कुम्–मुख-भर में; अकळ्न्त वरै–खुदे हुए पर्वत के; ऑप्पु उड़–समान हो, ऐसा; अमैत्तवरै–जिन्होंने बनाया, उनको; पुकळ्न्ततै–प्रशंसा की; इतु तन्ति पिळै–यह बहुत बड़ा अपराध है; पॊरुत्तनॅन्–क्षमा की मैंने; ऍन्ड्रान्–कहा। ७४३

हे तात ! तुमने जो हुआ उसका विचार नहीं किया। विना भय के मेरी चित्त-स्थिति को हेय बताया। मेरी छोटी बहिन का चेहरा खुदे हुए गढ़े-सहित पर्वत के समान हो गया। वैसा जिसने बनाया उस मनुष्य की मुझसे प्रशंसा करते हो। यह बड़ा भारी अतुलनीय अपराध है। तो भी तुम्हें क्षमा करता हूँ। ७४३

तन्नैमुनि वुड़्ड़दरु कट्टहवि लोनैप्
पिन्नैमुनि वुड़्ड़िडुमॅ नत्तविर्दल् पेणान्
उन्नैमुनि वुड़्ड़ुलगु लत्तैमुनि वुड़्ड़ाय्
ऍन्नैमुनि वुड़्ड़िलैयि दॅन्नॅन विशैत्तान् 744

तन्नै मुनिवु उड़्ड़–अपने पर कोप करनेवाले; तरुकण्–निडर; तकवु इलोनै–अयोग्य को; पिन्नै मुनिवु उड़्ड़िटुम्–फिर भी कोप करेगा; ऍन्न–यह सोचकर; तविर्तल् पेणान्–छोड़ना न चाहते हुए; ऍन्नै मुनिवु उड़्ड़िलै–मुझ पर गुस्सा नहीं किया पर; उन्नै मुनिवु उड़्ड़ु–अपने से ही आक्रोश करते; उन् कुलत्तै मुनिवुड़्ड़ाय्–अपने वंश पर क्रोध करते हो; इतु ऍन् ऍन–यह क्या है; इचैत्तान्–कहा। ७४४

मारीच ने सोचा। रावण मुझ पर क्रोध करता है। वह निडर अयोग्य राक्षस और भी गुस्सा करेगा। तो भी भय के कारण उसने उपदेश देने से विरत होना नही चाहा। उसने कहा कि रावण ! अब तुम मुझ पर क्रोध जो करते हो उसका अर्थ है तुम अपने पर गुस्सा करते हो और अपने कुल पर गुस्सा करते हो ! यह कार्य तुम क्यों करते हो भाई ! । ७४४

ऍडुत्तमलै येनिनैयि नीशनिहल् विल्ला
वडित्तमलै नोयिडुव लित्तियॅन वारिप्
पिडित्तमलै नाणिडैप् पिणित्तॊरुवन् मेनाळ्
ऑडित्तमलै यण्डमुह डुड़्ड़मलै यन्ड्रो 745

ॲट्टुत्त मलैये–तुमने पर्वत उठाया, उसी पर्वत को; नित्तैयिन्–याद करते रहो तो; इतु ईचन् इकल् विल्लाय्–यह ईश्वर के युद्ध के लिए धनु; वटित्तुत मलै–बनाया गया पर्वत है; नी इतु वलित्ति–तुम इसे झुकाओ; ॲन्त–कहने पर; मेल् नाळ्–पहले; ओरुवन्–एक मानव से; वारि–उठाकर; पिटित्तुत मलै–हाथ में जो पकड़ा गया वह पर्वत; नाण् इटै पिणित्तुतु–प्रत्यंचा से बद्ध खींचने के मध्य; ओटित्तुत मलै–तोड़ा गया पर्वत; अण्टम् मुकटु उड्ऱु–आकाश की चोटी तक गया; मलै अन्ऱो–मेरुपर्वत नहीं है क्या। ७४५

तुमने जो उठाया उसी कैलासपर्वत की याद में भूले हुए हो। ईश्वर शिव ने मेरुपर्वत का ही धनु बनाया था। उसको झुकाने की आज्ञा दी विश्वामित्र ने। तो राम ने उस पर्वत को प्रत्यंचा चढ़ाकर झुकाते वक्त तोड़ दिया था। वह पर्वत कौन सा था। जानते हो! (तुमने तो हिमालय के एक छोटे से शिखर को उठाया था!) राम ने जो उठाकर तोड़ा वह आकाश-स्पर्शी और श्रेष्ठ पर्वत था!। ७४५

यादुमऱि यायुरैहॊ ळायिहलि रामन्, कोदैवुत्तै यामुनुयिर् कॊळ्ळैवडु मन्ऱे
पेदैमदि यालिदुवोर् पॆण्णुरुव मॆन्ऱाय्, शोदैयुरु वोन्निरुदर् तीविनैय दन्ऱो 746

यातुम् अऱियाय्–कुछ नहीं जानते; उरै कॊळाय्–उपदेश ग्रहण न करोगे; इकल् इरामन्–युद्धसमर्थ श्रीराम; कोतै पुत्तैयामुत्–युद्ध के लिए हाथ में दस्ताना पहनने के पूर्व ही; उयिर् कॊळ्ळै पटुम् अन्ऱे–हमारे प्राण छूट जायेंगे न; पेतै मतियाल्–जड़ मति के कारण; इतु ओरु पॆण् उरुवम् ॲन्ऱाय्–यह स्त्री-रूप है, कहा; अतु चीतै उरुवो–वह सीता का रूप है क्या; निरुतर् ती विनैयतु–राक्षसों के पाप का रूप है; अन्ऱो–न। ७४६

तुम न खुद कुछ जानते हो, न मेरा उपदेश मानते हो! यह जान लो कि श्रीराम के, जो युद्ध-प्रवीण है, हस्तत्राण (या माला) पहनने के पूर्व ही हमारे प्राण हर लिये जायँगे। तुम अपनी मन्दमति के कारण उसको स्त्री का रूप मानते हो! वह क्या सीता का रूप है? नहीं हमारे पापों का मूर्त-रूप है। ७४६

उञ्जुबिळै यायुऱवि नोडुमॆन वुन्ना, नॆञ्जुबऱै पोदुमदु नीनिनैय हिल्लाय्
अञ्जुमॆन दारुयि रऱिन्दरुहु निऱ्ऱार्, नञ्जुनुहर् वारैयिदु नन्ऱॆन्नलु नन्ऱे 747

उऱवित्तोटम् उञ्चु–परिवारों, बन्धु-बान्धवों के साथ बचकर; पिळैयाय्–जीवित नहीं रहोगे; ॲन्त–यह; उन्ना–सोचकर; नॆञ्चु पऱै पोतुम्–मेरा मन ढोल की खाल के समान थर्राता है; नी अतु नित्तैय किल्लाय्–तुम वह सोच नहीं पाते; ॲन्तु आर् उयिर्–मेरे बहुमूल्य प्राण; अञ्चुम्–डरते हैं; नञ्चु नुकर्वारै–विष-खादक को; अऱिन्तु–(विष खाता) जानकर; अरुकु निऱ्ऱार्–पार्श्व में स्थित लोगों का; इतु नन्ऱु–यह (तुम्हारा विष खाना) अच्छा है; ॲन्ऩलुम्–कहना भी; नन्ऱे–अधिक अच्छा होगा। ७४७

जब मैं विचार करता हूँ कि तुम अपने परिवारों और बन्धुजनों के

साथ नष्ट हो जाओगे और नहीं बचोगे तो मेरा चित्त थर-थर काँपता है; जैसे पिटा ढोल। तुम वह सोचने में असमर्थ हो। मेरे प्यारे प्राण भी काँपते हैं। तुमको प्रोत्साहन दूँ तो उस काम से विषखादक को पास रहने वालों के, 'यह बड़ा अच्छा है' कहकर प्रोत्साहित करना भी अधिक भला होगा। ७४७

ईशन्मुद	लाहविऱ्ऱ	योरुलहु	मऱ्ऱैत्
तेशमुदऩ्	मुऱ्ऱुमो	रिमैप्पिनुयिर्	तिन्नक्
कोशिह	नळित्तहड	वुट्पडै	कोंदिप्पो
डाशिल	कणिप्पिल	विरामनरु	णिऱ्प 748

ईचऩ् मुतलाक–ईशानदेव आदि; इऱ्ऱैयोर् उलकुम्–देवों के लोकों को; मऱ्ऱै–और अन्य; तेचम् मुतल्–देश आदि; मुऱ्ऱुम्–सारा; ओर् इमैप्पिल्–एक बार पलक मारती देर में; उयिर् तिन्न–प्राण खाने (मिटाने) के लिए; कोचिकऩ् अळित्त कटवुळ् पटै–कौशिक से दत्त दिव्य अस्त्र; आचु इल–त्रुटिहीन; कणिप्पु इल–गणनाहीन; कोंतिप्पोटु—उग्रता के साथ; इरामऩ् अरुळ्–श्रीराम की सेवा में; निऱ्प–खड़े हैं। ७४८

श्रीराम के पास कौशिक-दत्त अमोघ, त्रुटिहीन और अगणित अस्त्र हैं, जो ईशान के लोक से लेकर सारे देवताओं के लोक और अन्य लोकों को पल भर में समाप्त कर दे सकते हैं। वे श्रीराम की सेवा में उसकी आज्ञा के मुहताज खड़े है। ७४८

आयिरम	डऱ्कैयुडै	यानैमळु	वाळाल्
एयॆनुमु	रैक्कुळयिर्	शॆऱ्ऱवॆदि	रिल्लोन्
मेयतिऱऩ्	मुऱ्ऱुम्वरि	वॆञ्जिलैयि	नोडुम्
तायवन्व	लित्तहैमै	यामुरुत	हैत्तो 749

आयिरम्–सहस्र; अटल् कै–बलिष्ठ हाथों से; उटैयाऩै–युक्त कार्तवीर्य को; मळु वाळाल्–परशु के अस्त्र से; एय् ऍनुम् उरैक्कुळ्–'रे' के उच्चारण करते समय के अन्दर; उयिर् चॆऱ्ऱ–जिसने प्राणहीन कर दिया; ऍतिर् इल्लोऩ्–उस अप्रतिद्वन्द्वी परशुराम का; मेय–प्राप्त; तिऱल् मुऱ्ऱुम्–सारा बल; वरि वॆम् चिलैयिऩ् ओटुम्–बन्धनयुक्त धनुष के साथ; तायवऩ्–परास्त जो किया उसका; वलि तकैमै–बल-पराक्रम; याम् उरै तकैत्तु ओ–हमारे कहने योग्य होगा क्या। ७४९

राम ने परशुराम के सारे बल को, उसके धनुष के साथ परास्त किया था। वह परशुराम क्या मामूली मनुष्य थे। सहस्र महाबली हस्तों से युक्त कार्तवीर्य को परशुराम ने 'रे' शब्द के उच्चारण समय के अन्दर अपने परशु के प्रहार से समाप्त किया था। ऐसे श्रीराम के बल का अनुमान या कथन हम करने योग्य हैं क्या ? । ७४९

वेदत्तैशॅय् कामविड मेविडमॅ लिन्दाय्
तीदुरैशॅय् दायित्तैय शॅयहैशिदै वन्ऱो
मातुलन्नु मायमरबिन् मुन्दॅयुऱ वन्देन्
ईदुरैशॅय् देत्तिदनै यॅन्दैतविर् हॅन्ऱान् 750

वेतत्तै चॅय्–पीड़क; काम विटन् मेविट–काम रूपी विष चढ़ा और; मॅलिन्ताय्–क्षीण हो गये हो; तीतु उरै चॅय्ताय्–अनर्थ की बात करते हो; इत्तैय चॅय्कै–तुम्हारा यह काम; चितैवु अन्ऱो–नाश का है न; मातुलनुम् आय्–मामा बना हूँ और; उऱ मुन्तै वन्तेन्–बहुत पूर्व ही पैदा हुआ हूँ; ईतु उरै चॅय्तेन्–यह हितोपदेश किया; ॲन्तै–मेरे तात; इतत्तै–(सीतापहरण का) यह (विचार); तविर्क–छोड़ दो; ॲन्ऱान्–कहा। ७५०

वेदनादायी काम-विष तुम पर चढ़ा है। इसलिए तुम तन से और (बुद्धि में भी) क्षीण हो गये हो। इसलिए अनुचित बातें कह रहे हो। सीतापहरण का काम हमारे नाश का काम नहीं हो जायगा? मैं तुम्हारा मातुल हूँ; बहुत पहले पैदा हुआ, अतः तुमसे बड़ा हूँ। यह जो कहा, वह तुम्हारे हित का ही वचन है। मेरे तात! इस बुरे विचार को त्याग दो। मारीच ने उसे समझाया। ७५०

ॲन्नवुरै यित्तनैयु मॅत्तनैयु मॅण्णिच्
चॊन्नवनै येशिन्न नरक्कर्पदि चॊन्नान्
अन्नैयुयिर् शॅऱ्ऱवनै यञ्जियुऱै हिन्ऱाय्
उन्नैयॊरु वऱ्कॊरुव नॅन्ऱुणर्है नन्ऱो 751

ॲन्न–(मारीच के ऐसा) कहने पर; उरै इत्तनैयुम्–सभी उपदेशों पर; ॲत्तनैयुम् ॲण्णि–सभी तरह से विचार करके; चॊन्नवनै–वक्ता की; एचिनन्–निन्दा की; अन्नै उयिर् चॅऱ्ऱवनै–माता के प्राणघातक से; अञ्चि उऱैकिन्ऱाय्–डरकर (छिपे) रहते हो; उन्नै–तुमको; ऒरुवऱ्कु ऒरुवन् ॲन्ऱु–वीर के मुकाबले में वीर; उणर्कै–समझना; नन्ऱो–ठीक होगा क्या; अरक्कर् पति–राक्षसपति ने; चॊन्नान्–कहा। ७५१

मारीच ने जो बातें कहीं, उन पर रावण ने खूब और सब तरह से विचार किया। पर उसे उनमें कोई सार नहीं लगा और क्रोध ही आया। राक्षसपति ने उपदेशक की निन्दा की। कहा— तुम डरपोक हो! माता के मारक से डरकर तपस्या का बहाना करते हुए यहाँ छिपे रहते हो! तुम्हें वीर के समान वीर कहना मान्य कैसे हो सकता है? । ७५१

तिक्कय मौळिप्पनिलै तेवर्हॅड वानम्
पुक्कव रिरुक्कैबुहै वित्तुलहम् यावुम्
शक्कर नडत्तुमॅन्नै योतयर दन्ऱन्
मक्कणलि हिड्परिदु नन्ऱुमदि यन्ऱो 752

तिक्कयम् ऑळिप्प–दिग्गजों को छिपने को विवश करते हुए; तेवर् निलै कॅट–देवों को अस्त-व्यस्त करते हुए; वानम् पुक्कु–देवलोक में जाकर; अवर् इरुक्कै पुकैवित्तु–उनके स्थान को जलाकर धुएँ से भरकर; उलकम् यावुम्–सारे लोकों पर; चक्करम् नटत्तुम्–आज्ञाचक चलानेवाले; ऎनैयो–मुझे क्या; तयरतन् तन् मक्कळ्–दशरथ के छोटे; नलिकिऱ्पर्–कष्ट देंगे; इतु नन्ऱु मति अन्ऱो–यह बड़ी अच्छी समझ है न। ७५२

मुझे दशरथ के छोटे कष्ट देंगे ? मुझे, जिसने दिग्गजों को भयभीत करके छिपने को विवश किया; जिसने स्वर्गलोक में घुसकर देवों को अस्त-व्यस्त कर उनके लोक में आग और धुआँ फैला दिया और जो सारे लोकों पर आज्ञाचक्र चला रहा हूँ, ऐसे मुझे वे त्रास देंगे ? यह तुम्हारी सूझ भी बड़ी भली रही न ! । ७५२

मूवुलहि नुक्कुमोरु नायह मुडित्तेन्
मेवलर् किडैक्किनिदन् मेलिनिय वुण्डो
एवलॅय हिऱ्ऱियॆन दाणैवऴि यॆण्णिक्
कावलॅ यमैच्चर्कड नीकडव दन्ऱे 753

मू उलकित्तुक्कुम्–तीनों लोकों का; ओरु नायकम् मुटित्तेन्–निर्द्वन्द्व नायकत्व अपनाया; मेवलर् किटैक्किन्–ऐसे शत्रु मिलेंगे तो; इतन् मेल् इनियतु–इससे बढ़कर सुखद; उण्टो–कोई दूसरा है क्या; कावल् चॆय्–राज्यरक्षणकारी; अमैच्चर् कटन्–अमात्यों का कर्तव्य; नी कटवतु अन्ऱे–तुम उल्लंघन नहीं कर सकते; ऎततु आणै वऴि–मेरी आज्ञा के अनुसार; ऎण्णि–सोचकर; एवल् चॆय्किऱ्ऱि–सेवा करो। ७५३

मैंने तीन लोकों का निर्द्वन्द्व आधिपत्य कर लिया। ऐसे मेरे शत्रु हो जायँ तो उससे बढ़कर सुखदायी बात क्या हो सकती है ? राज्यरक्षणरत अमात्यों का कर्तव्य राजा का अभिप्राय जानकर तदनुकूल कार्य करना है। तुम्हारा काम उसका अतिक्रमण करना नहीं है। मेरी आज्ञा सुनो, उसी के अनुकूल सोचकर सेवा करो। ७५३

मऱुत्तनै यॆन्पर्पॆरिनु निन्नैवडि वाळाल्
ऒऱुत्तुमन मुऱ्ऱु मुडिप्पॆन्ऒऴि हिल्लेन्
वॆऱुत्तन किळत्तलुरु मित्तॊऴिलै विट्टॆन्
कुऱिप्पिन्वऴि निऱ्ऱियुयिर् कॊण्डुळलि नॆन्ऱान् 754

मऱुत्तनै ऎन् पॆऱ्ऱिनुम्–इनकार भी करोगे तो; निन्नै–तुम्हें; वटि वाळाल्–तीक्ष्ण तलवार से; ऒऱुत्तु–मारकर; मनम् उऱ्ऱु–अपना मनमाना; मुटिप्पॆन्–कर लूंगा; ऒऴिकिल्लेन्–त्यागूंगा नहीं; उयिर् कॊण्टु उळलिन्–प्राणसहित रहना चाहो तो; वॆऱुत्तन–मेरी खीझ के; किळत्तल् उऱुम्–वचन कहने का; इ तॊऴिलै विट्टु–यह काम छोड़ो; ऎन् कुऱिप्पिन् वऴि निऱ्ऱि–मेरी राय का मार्ग चलो; ऎन्ऱान्–कहा। ७५४

तुम इनकार भी करोगे तो क्या होगा ? मैं अपनी तीक्ष्ण तलवार से तुम्हारा काम तमाम कर दूँगा और अपना मनमाना कर लूँगा। यह कार्य विना किये नहीं छोड़ूँगा। इसलिए तुम जीवित फिरना चाहो तो मुझे खिझानेवाले उपदेश देना छोड़ो और मेरी इच्छा के अनुकूल सेवा करो। रावण ने निश्चित रूप से कह दिया। ७५४

अरक्कनः(ह्) दुरैत्तलोडु मऱिन्दन नडङ्गु नॆञ्जन्
तरुक्किनर् कॆडुव रॆन्ऱ ऱत्तुव निलैयिऱ् ऱन्ऱो
शॆरुक्किनिऱ् ऱीरु मॆन्बार् तम्मिलार् शॆरुक्क रॆन्ना
उरुक्किय शॆम्बॊ नुऱ्ऱ नीर्मैया नुरैक्क लुऱ्ऱान् 755

अरक्कन्–राक्षस के; अ.तु उरैत्तल् ओटुम्–वह बात कहने पर; अऱिन्तनन्–(रावण का मन) जाना; अटङ्कु नॆञ्चन्–संयत-मन होकर; तरुक्किनर् कॆटुवर्–घमण्डी नष्ट होंगे; ऎन्ऱल्–यह कथन; तत्तुव निलैयिऱ्ऱु अन्ऱो–सत्य बनता है न; चॆरुक्कित्तिल्–गर्व से; तीरुम् ऎन्पार् तम्मिन्–नाश को प्राप्त होंगे, ऐसा जिन्होंने निश्चय किया है उनसे बढ़कर; चॆरुक्कर्–गर्वीले शत्रु; आर्–कौन है, ऎन्ना–सोचकर; उरुक्किय चॆम्पॊन्–पिघले हुए स्वर्ण; उऱ्ऱ नीर्मैयान्–की स्थिति में जो रहा, वह; उरैक्कल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। ७५५

जब राक्षसराज रावण ने यह कहा तो मारीच ने रावण का स्वभाव सोचा और उसका निश्चय जान लिया। इसलिए उसने अपने मन को संयत कर लिया। सोचा— अभिमानी लोग अवश्य नष्ट होंगे। यह कथन सत्य बन गया है ! जो गर्व के कारण अपने को नष्ट कर लेने में तुले है, उनका उनसे बढ़कर कोई शत्रु नहीं होता। वह स्वयं अपना नाश कर लेगा। मारीच अब पिघला-स्वर्ण-समान स्वच्छमन हो गया था। वह यों बोला। ७५५

उन्वयि नुऱुदि नोक्कि युण्मैयि नुणरत्ति तेन्मऱ्
ऱॆन्वयि निऱुदि नोक्कि यच्चत्ता लिशैत्ते नल्लेन्
नन्मैयुन् दीमै यन्ऱे नाशम्वन् दुऱ्ऱ नाळिल्
पुन्मैयि निन्ऱ नीराय् शॆय्वदु पुहऱि यॆन्ऱान् 756

उन् वयिन् उऱुति नोक्कि–तुम्हारा हित सोचकर; उण्मैयिन् उणरत्तितेन्–सच्चे दिल से समझाया; मऱ्ऱु–अलावा; ऎन् वयिन् इऱुति–मेरा अन्त; नोक्कि–समझकर; अच्चत्ताल्–डर से; इचैत्तेन् अल्लेन्–कहा नहीं; नाचम् वन्तु उऱ्ऱ नाळिल्–जब नाश आता है; नन्मैयुम् तीमै अन्ऱे–भला भी बुरा हो जाता है न; पुन्मैयिन् निन्ऱ नीराय्–नीचकर्मतत्पर रावण; चॆय्वतु पुकल्ति–मेरा कार्य कहो; ऎन्ऱान्–पूछा। ७५६

रावण ! मैंने तुमसे जो कहा वह तुम्हारे भले के लिए ही साफ़ मन के साथ कहा था। अपनी मृत्यु के डर से नही कहा था। जब नाश का

दिन आता है तब भला भी बुरा लगता है। हे नीचकार्यतत्पर रावण ! तुम कहो— मैं क्या करूँ ? । ७५६

ऍन्ऱलु मॆळुन्दु पुल्लि येऱिय वॆहुळि नीङ्गिक्
कुन्ऱॆनक् कुविन्द तोळाय् मारवेळ् कॉदिक्कु मम्बाल्
पॉन्ऱलि लिराम नम्बाऱ् पॉन्ऱले पुहळुण् डन्ऱो
तॆन्ऱलैप् पहैयाच् चॆय्द शीदैयैत् तरुदि यॆन्ऱान् 757

ऍन्ऱलुम्–कहते ही; एऱिय वॆकुळि नीङ्कि–उठे क्रोध को दूर करके; ऍळुन्तु पुल्लि–उठकर आलिंगन करके; कुन्ऱु ऍन्न कुविन्त तोळाय्–पर्वतोन्नत कन्धों वाले; मार वेळ्–मारदेव के; कॉतिक्कुम् अम्पाल्–सन्तापक अस्त्रों से; पॉन्ऱलिन्–मरने से; इरामन् अम्पाल्–राम-शर से; पॉन्ऱले–मरना; पुकळ् उण्टु अन्ऱो–प्रशंसा-योग्य है न; तॆन्ऱलै पकैयाय् चॆय्त–मलयपवन को जिसने मेरा शत्रु बना दिया; चीतैयै–उस सीता को; तरुति–लाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ७५७

मारीच के ऐसा कहते ही रावण का उमँगा हुआ क्रोध थम गया। उसने उठकर मारीच का आलिंगन करके कहा— हे पर्वतोन्नत भुजाओं के मारीच ! मैं सोचता हूँ कि कामदेव के संतापक शरों से मरने से राम-शर से मरना अधिक कीर्तिदायक होगा। इसलिए उस सीता को हर लाओ, जिसने मलयपवन को मेरा शत्रु बना दिया है, और उसे मेरे पास दे दो। ७५७

आण्डव नतैय कूऱ वरक्करो रिरुव रोडुम्
पूण्डवॆन् मानन् दीरत् तण्डहम् पुक्क कालैत्
तूण्डिय शरङ्गळ् पायत् तुणैवर्पट् टुरुळ वञ्जि
मीण्डयान् शॆन्ऱु शॆय्युम् विनैयॆन्गोल् विळम्बु हॆन्ऱान् 758

आण्टु–तब; अवन् अतैय कूऱ–उसके वह कहने पर; पूण्ट ऍन् मानम् तीर–(पहले) प्राप्त अपना अपमान पोंछने के लिए; अरक्कर् ओर् इरुवर् ओटुम्–दो राक्षसों के साथ; तण्टकम् पुकुन्त कालै–जब दण्डक पहुँचा, तब; तूण्टिय चरङ्कळ् पाय–उससे प्रेरित बाणों के लगने पर; तुणैवर् पट्टु उरुळ–मेरे साथी आहत हो लोटे और; अञ्चि मीण्ट–डरकर लौट आया; यान्–मैं; चॆन्ऱु चॆय्युम्–जाकर करूँ ऐसा; विनै ऍन् कोल्–कार्य क्या (रखा) है; विळम्पुक–कहो; ऍन्ऱान्–कहा। ७५८

यह सुनकर मारीच ने कहा कि पहले मैं राम से अपमानित हुआ। उस अपमान को पोंछने के हेतु मैं दो-एक राक्षसों को साथ लेकर वहाँ गया था। राम के शर के लगने से वे दोनों लुढ़क गये। भय से मैं लौट गया। ऐसे मेरे लिए अब करने को क्या काम रहेगा ? यह तो बताओ। ७५८

आयव ननैय कूऱ वरक्करहो तैय नोय्दुन्
तायैया रुयिरुण् डानैक् कोल्लयान् शमैन्दु निऩ्ऱेन्
पोयैया पुणर्प्प दॆन्नै यॆन्बदु पोरुन्दिऱ् ऱोन्ऱो
मायैयाल् वञ्जित् तन्ऱो वव्वुद लवळै यॆन्ऱान् 759

आयवन् अनैय कूऱ–उसके ऐसा कहने पर; अरक्कर् कोन्–राक्षसराज; ऐय–श्रेष्ठ पुरुष; नोय्तु–हेय रीति से; उन् तायै–तुम्हारी माता के; आर् उयिर् उण्टानै–प्यारे प्राणों के घातक को; कोल्ल–मारने के लिए; यान् चमैन्तु निन्ऱेन्–मैं कृत-संकल्प हूँ; पोय् ऐया पुणर्प्पतु ऍन्नै–जाकर तात क्या करूँ; ऍन्पतु–कहना; पोरुन्तिऱ्ऱु ओन्ऱो–उचित है क्या; अवळै–उसको; मायैयाल् वञ्चित्तु–वंचना से धोखा देकर; वव्वुतल् अन्ऱो–हर लाना ही है न; ऍन्ऱान्–कहा। ७५९

मारीच के ऐसा कहने पर राक्षसपति रावण ने कहा कि मामा ! मैंने दृढ़ संकल्प कर रखा है कि मैं तुम्हारी माता के, हेयरीति से घातक राम को मार दूँ। तब वहाँ जाकर क्या करूँ —यह पूछना तुम्हारे लिए उचित नहीं लगता। उस सीता को वंचना से हर लाओ —यही करना उचित है न ? ७५९

पुऱत्तिनि युरैप्प दॆन्ने पुरवलन् ऱेवि तन्नैत्
तिऱत्तुळि यन्ऱि वञ्जित् तॆय्दुदल् शिऱुमैत् तामाल्
अऱत्तुळ दोक्कु मन्ऱे यमर्त्तलै वॆन्ऱु कोण्डुन्
मऱत्तुऱै वळर्त्ति मन्न वॆन्ऩमा रीशन् शॊन्नान् 760

मन्न–राजा; इनि पुऱत्तु उरैप्पतु ऍन्ने–अब और कहना क्या है; पुरवलन् तेवि तन्नै–(लोक-) रक्षक राम की देवी को; तिऱत्तु उळि अन्ऱि–अपने बल से नहीं; वञ्चित्तु ऍय्तल्–कपट से प्राप्त करना; चिऱुमैत्तु आम् आल्–नीचता का होगा, इसलिए; अऱत्तुळतु ओक्कुम् अन्ऱे–धर्म-सम्मत नहीं होगा न; अमर् तलै वॆन्ऱु कोण्टु–युद्ध में (राम को) जीतकर (सीता को) लेकर; उन् मऱ तुऱै–अपनी वीरता का गौरव; वळर्त्ति–बढ़ा लो; ऍन्न–ऐसा; मारीचन् चोन्नान्–मारीच ने कहा। ७६०

मारीच को यह हेय लगा। उसने नीति बतायी। राजा ! ऐसा कहोगे तो फिर क्या कहा जाय ? राजाराम की देवी सीता को अपनी वीरता से उठा लाना छोड़कर वंचना से हर लाना चाहते हो ! यह तुम्हारे गौरव को हल्का कर देगा। इसलिए वह धर्मसम्मत नहीं होगा। युद्ध करो, राम को हराओ, सीता को लाओ। अपनी वीरता को बढ़ाओ। ७६०

आनव नुरैक्क नक्क वरक्करहो नवरै वॆल्लत्
तानैदान् वेण्डु मोवॆन् ऱडक्कवा डक्क दन्ऱो
एनैय रिऱक्किऱ् ऱानुन् दमियळा यिऱक्कु मन्ऱे
मानव ळाद लाले मायैयिन् वलित्तु मॆन्ऱान् 761

आत्तवन्–ऐसे उसके; उरैक्क–कहने पर; नक्क–हँसते हुए; अरक्कर् कोन्–राक्षसाधिपति; अवरै वॅल्ल–उसको हराने के लिए; तानै तान् वेण्टुमो–सेना भी चाहिए क्या; ॲन् तट कै वाळ्–मेरे विशाल हाथ का (चन्द्रहास) खड्ग; तक्कतु अन्ऱो–योग्य नहीं है क्या; मानवळ्–वह मनुष्य स्त्री; एतैयर् इऱक्किन्–(उन दोनों) दूसरों के मरने पर; तानुम् तमियळाय्–स्वयं अकेली बनकर; इऱक्कुम् अन्ऱे–प्राण त्याग देगी न; आतलाले–उसी कारण; मायैयिन् वलित्तुम् ॲन्ऱान्–माया से ले आयेंगे; ॲन्ऱान्–कहा। ७६१

अपने रास्ते पर आये मारीच का कथन सुनकर राक्षसपति रावण उसकी नासमझी पर हँसते हुए बोला। राम और लक्ष्मण को हराने के लिए सेना की भी आवश्यकता पड़ेगी क्या? मेरे विशाल हाथ में जो चन्द्रहास, तलवार है वह पर्याप्त नहीं होगी क्या? पर तुमने यह नहीं सोचा। वे दोनों मर जायँगे तो वह मानवी स्त्री अपने को अकेला समझ कर प्राण त्याग देगी न? इसी हेतु कहता हूँ कि उसे माया से हर लायँगे। ७६१

तेवियैत् तीण्डा मुन्न मिवन्ऱलै शरत्तिऱ् चिन्दिप्
पोवहै पुणर्प्प नॆन्ऱु पुन्दियाऱ् पुहल्हिन् ऱेऱ्कुम्
आवहै यायिऱ् ऱिल्लै यार्विदि विळैवै योर्वार्
एविय शॆय्द लल्ला लिल्लैवे ऱॊन्ऱॆन् ऱॆण्णा 762

तेविपै तीण्टा मुन्नम्–देवी को स्पर्श करने से पहले ही; इवन् तलै–इसके सिर; चरत्तिल् चिन्ति पो वकै–शर से गिराने का उपाय; पुणर्प्पन्–राम कर लेगा; ॲन्ऱु–ऐसा; पुन्तियाल् पुकल्किन्ऱेऱ्कुम्–बुद्धि से जानकर कहता हूँ, ऐसा मेरा भी; आ वकै–भला होने का उपाय; आर् ऱु इल्लै–होता नहीं है; विति विळैवै–विधि का फल; आर् ओर्वार्–कौन जान सकता; एविय चॆय्तल् अल्लाल्–आज्ञा मानने के सिवाय; वेऱु ऑन्ऱु इल्लै–कोई दूसरा रास्ता नहीं; ॲन्ऱु ॲण्णा–ऐसा सोचकर। ७६२

मारीच बहुत दुःखी हुआ। यह मूर्ख नहीं जानता कि देवी सीता का स्पर्श करने के पूर्व ही श्रीराम ऐसा कार्य साध लेंगे कि इसके सिर उनके शरों से कटकर गिर जायँगे। यह मैं अपने अनुभव और तर्क के आधार पर कहता हूँ। तो भी मेरा भी भला अब नहीं होता दिखता। विधि का विधान कौन जाने? अब मेरे सामने रावण के आज्ञा में कहे अनुसार करने के सिवा कोई मार्ग नहीं है। ऐसा सोचकर—। ७६२

ऍन्नमा मायम् यानिङ् गियऱ्ऱुव दियम्बु हॆन्ऱान्
पॊन्निन्मा नाहिप् पुक्कप् पॊन्नैमाल् पुणर्त्तु हॆन्न
अन्नदु शॆय्वॆ नॆन्ना मारीश नमैन्दु पोनान्
मिन्नुवे लरक्कर् कोनुम् वेऱॊरु नॆऱियिऱ् पोनान् 763

इङ्कु यान् ॲन्न मा मायम् इयरुवतु–यहाँ मैं क्या बड़ी माया करूँ; इयम्पुक–कहो; ॲन्रान्–कहा; पॊन्नित् मान् आकि पुक्कु–स्वर्ण-हिरण बनकर वहाँ पहुँचकर; अ पॊन्नै–उस स्वर्ण-सुन्दरी को; माल् पुणरत्तुक–मोहित कर दो; ॲन्न–कहा, तब; अन्नतु चॆय्वॆन् ॲन्ता–वह करूँगा, कहकर; मारीचन् अमैन्तु पोतान्–मारीच सम्मत होकर गया; मित्तुम् वेल्–चमकदार भाला के; अरक्कर् कोनुम्–राक्षसराज भी; वेरु ऑरु नॆरियिल् पोतान्–दूसरे मार्ग से गया। ७६३

मारीच ने रावण से पूछा कि अब मैं क्या बड़ा माया-कार्य करूँ? तुम्हीं बताओ। तो रावण ने कहा— तुम स्वर्णमृग बनकर वहाँ जाओ। और उस स्वर्णसुन्दरी सीता को मोह में डाल दो। मारीच ने सम्मत होकर कहा कि हाँ! वैसा ही करूँगा। चमकदार भालाधारी रावण भी दूसरे मार्ग से निकल गया।७६३

* मेनाळवर् विल्वलि कण्डमैयाल्, तानाह निनैन्दु शमैन्दिलनाल्
मानाहुदि यॆन्रवन् वाळ्वलियाल्, पोनान्मन मुञ्जॆय लुम्बुहल्वाम् 764

मेल् नाळ्–पहले; अवर् विल् वलि–उनके धनु की शक्ति; कण्टमै याल्–देखी थी, इसलिए; तान् आक–स्वयं; निनैन्तु चमैन्तिलन्–यह उपाय सोचकर तैयार नहीं हुआ; मान् आकुति–मृग बनो; ॲन्रवन्–यह जिसने कहा, उस रावण की; वाळ् वलियाल्–तलवार की शक्ति से (डरकर); पोतान् जो गया उसका; मनमुम्–मन और; चॆयलुम्–कार्य; पुकल्वाम्–बखानेंगे। ७६४

अब मारीच को राम-धनुष का बल खूब स्मरण रहा। उसने पहले उसका अनुभव किया था। इसलिए वह कदापि स्वयं मृग का रूप लेकर वहाँ जाने को सम्मत नहीं होता। पर रावण की तलवार का वार पड़ने का डर था। उसने कहा कि मृग बनो। इसीलिए वह सहमत हुआ। ऐसे उसका मन कैसा व्याकुल था और कार्य कैसे थे —उसका हम अब वर्णन करेंगे। ७६४

* वॆञ्जुरर निनैत्तुहुम् वीररैवे, रञ्जुररु मरुक्कुरु माळ्हुळिनीर्
नञ्जुरुळि मीनिनडुक् कुरुवान्, नॆञ्जुरदोर् पॆरिरि निनैप्परिदाल् 765

वॆम् चुररम् निनैत्तु–प्यारे बन्धु-बान्धवों की हालत सोचकर; उकुम्–विगलित हुआ; वेरु–और भी; वीररै अञ्चु उररु–वीर (श्रीराम और लक्ष्मण से) डरकर; मरुक्कु उरुम्–घबड़ा जाता; आळ् कुळि–गहरे गढ़े का; नीर् नञ्चु उररुळि–जल जब विषाक्त हो जाता है; मीतित्–तब उसमें रही मछली-जैसा; नटुक्कु उरुवान्–छटपटाया; नॆञ्चु उररतु ओर् पॆरिरि–उसके मन का जो हुआ; निनैप्पु अरितु–वह सोचना भी कठिन है। ७६५

उसका मन अपने भाई-बन्धुओं का भावी नाश सोचकर बहुत व्यग्र हुआ। और भी उन वीरों की वीरता का विचार कर गिड़गिड़ाया। उसकी स्थिति उन मछलियों की-सी थी जो गहरे गढ़े मे है और उस गढ़े

का जल विषाक्त हो गया है। वह थर-थर काँपा। उसके मन की व्याकुलता की स्थिति का ज्ञान हमारी मनोशक्ति के अन्दर आनेवाला नहीं है! । ७६५

**अक्कालमुम् वेळ्वियिऩ्ऱु उऱ्ऱोडऩ्ऱु, ऎक्कालु नलिऩ्दुमी रीऱुबॆऱान्
मुक्कालिऩ् मुडिऩ्दिडु वान्मुयल्वान्, पुक्कान विराहवन् वैहुपुनम् 766**

अवऩ्ऱोटु–उन श्रीराम के साथ; **अ वेळ्वियिल् कालम्**–उस भाग के समय के; **अन्ऱु तॊटऱ्नुतु**–उस दिन से लेकर; **अॅ कालुम् नलिन्तुम्**–किसी भी तरह के क्लेश से; **ओर् ईऱु पॆऱान्**–जो मरकर अन्त नही पा सका; **मु कालिन्**–(वह मारीच) तीसरी बार; **मुटिन्तिटुवान् मुयल्वान्**–मरने को उद्यत होकर; **अ इराकवन्**–वे राघव; **वैकु पुऩम्**–जहाँ रहते थे, उस वन में; **पुक्कान्**–आ पहुँचा। ७६६

(श्रीराम के साथ इसके पहले दो बार सामना हो गया था। एक बार विश्वामित्र के यज्ञ के अवसर पर हुआ। दूसरी बार वह दो मित्रों के साथ मृग का वेश धारण करके श्रीरामचन्द्र के सामने गया था। श्रीराम के शरों ने उसके दोनों मित्रों का नाश किया। मारीच बचके आ गया। उसका संकेत पद्य-संख्या ७५८ में है; फिर ७६४ में भी है, फिर इस पद्य में भी आता है। आगे ७९३वें पद में भी पाया जायगा।) जिस दिन पहले पहल उसे श्रीराम के साथ संपर्क हुआ था, उस दिन से लेकर वह बहुत क्लेश उठा रहा है। तो भी वह मरा नहीं था। अब उसने निश्चय कर लिया कि मैं तीसरी बार जाऊँगा और मर जाऊँगा। मरने की तैयारी के साथ वह, श्रीराम जहाँ रहे उस वन में आ पहुँचा। ७६६

**❀ तऩ्मानमि लाद तयङ्गॊळिशाल्, मिऩ्मानमु मण्णुम् विळङ्गुवदोर्
पॊऩ्मानुरु वङ्गॊडु पोयिनऩाल्, नऩ्माऩै याडऩै नाडुऱुवान् 767**

नल् मान् अऩैयाळ् तऩै–उत्तम मृगनिभ उस (देवी) को; **नाटु उऱुवान्**–खोजते हुए; **तन् मानम् इलात**–अनुपम; **तयङ्कु ऑळि चाल्**–चमकदार कान्ति के साथ; **मिऩ् मानमुम्**–विद्युतसहित आकाश में; **मण्णुम्**–भू पर; **विळङ्कुवतु ओर्**–द्युतिमान एक; **पॊऩ् मान् उरुवम् कॊटु**–स्वर्ण-मृग का रूप लेकर; **पोयिऩऩ्**–वहाँ गया। ७६७

उत्तम हरिणी-तुल्य सीतादेवी को ढूँढ़ते हुए मारीच एक स्वर्णमृग का रूप धरकर आया। वह अनुपम मृग था। विद्युत सहित आकाश में या भू पर उससे तुल्य कोई मृग नहीं था। ७६७

**कलैमान्मुद लायिन कण्डवॆलाम्, अलैमानुऱु माशॆयिल् वन्दऩवाल्
निलैयामन वञ्जऩै नेयमिला, विलैमादर्हण् यारुम् विळुन्दॆनवे 768**

निलैया मऩम्–चंचल-मना; **वञ्चऩै**–वंचक; **नेयम् इला**–स्नेहहीन; **विलै मातर् कण्**–वेश्या पर; **यारुम्**–सभी कामुक; **विळुन्ततु ऎऩवे**–मोह में गिर (पड़) जाते हैं जैसे; **कण्ट**–उसको जिन्होंने देखा, वे; **कलै मान् मुतल् आयिऩ**–बारहसींगा,

हरिण, मृग आदि; अलै मात्‌ उरुम्‌ आचैयिन्‌–तरंगों के समान उठनेवाली इच्छा के साथ; वन्तत्त–उसकी ओर आये। ७६८

उसको देखकर उस वन में रहे सभी वारहसींगे, हरिण, मृग आदि उसकी ओर ऐसे आकृष्ट होकर भागे, जैसे चंचलमना, कपटी और स्नेह-हीन वेश्या के मोह में पड़कर कामुक सभी दौड़ पड़ते हैं। ७६८

❀ पोय्यामॅन वोटु पुरऩ्जॉलिनाल्, नैयाविडै नोव नडन्दऩळाल्
वैदेविदन्‌ वाल्वळै मॅन्ऩ्गैयॅनुम्‌, कोय्यामल रान्मलर्‌ कोय्हुरुवान्‌ 769

वैतेवि–वैदेही; तन्‌–अपने; वाल्‌ वळै–उज्ज्वल कंकणधारी; मॅल्‌ कै ॲनुम्‌–कोमल हाथ रूपी; कोय्या मलराल्‌–जिनको तोड़ा नहीं गया, उन कमलसुमन द्वारा; मलर्‌ कोय्कुरुवान्‌–पुष्प-चयन करने हेतु; पुऱम्‌–अन्य दर्शक; पोय्‌ आम्‌ ॲन्ऩ ओतुम्‌–जिसका अभाव कहते हैं; चोलित्ताल्‌–उस कथन के अनुसार; नैया इटै–दुःखी कमर के; नोव–संकट उठाते; नटन्तऩळ्‌–चलकर गयी। ७६९

तब वैदेही पुष्प-चयन के लिए निकल आयीं। उसके हाथ उज्ज्वल वलय-भूषित और उन कमल-सम सुन्दर थे जो तोड़े नहीं गये थे। उसकी कमर के सम्वन्ध में दूसरे सन्देह करते थे और कहते थे कि इसके कमर नहीं है। वह ऐसी क्षीण कमर को दुःख देती हुई वैसे सुन्दर हाथों से पुष्प-चयन करने के लिए निकल पड़ी। ७६९

उण्डाहिय केट्टै यार्तुयिल्वाय्, ॲण्डानु मियैन्दियै यावुरुवम्‌
कण्डारॅन लाम्वहै कण्डऩळाल्, पण्डारु मुऱाविडर्प्‌ पाडुरुवाळ्‌ 770

पण्टु आरुम्‌ उऱा–इसके पूर्व किसी से अननुभूत; इटर्प्पाटु–संकट; उऱुवाळ्‌–जिन पर आने को था, उन देवी ने; उण्टाकिय केटु उटैयार्‌–संकटग्रस्त लोगों ने; तुयिल्वाय्‌–निद्रा में; ॲण्‌ तातुम्‌ इयैन्तु इयैया–असंभाव्य; उरुवम्‌ कण्टार्‌–रूप देख लिया हो; ॲन्तल्‌ आम्‌ वकै–ऐसा; कण्टऩळ्‌–(मायामृग को) देखा। ७७०

सीताजी पर संकट आनेवाला था। वह भी ऐसा जैसा किसी पर पहले कभी नहीं आया था। उनकी दृष्टि में वह स्वर्णमृग पड़ा। उन्होंने उसे ऐसे संकटग्रस्त स्वप्नद्रष्टा के समान देखा, जिसे निद्रा में बिल्कुल असंभाव्य कोई अनोखा रूप दिखाई दिया हो। ७७०

काणाविदु कैतव मॅन्ऩुणराळ्‌, पेणाद नलङ्गॉडु पेणिऩळाल्‌
वाणाळै यिरावणन्‌ माळुदलाल्‌, वीणाळि लऱम्बुवि मेवुदलाल्‌ 771

अ इरावणन्‌–उस रावण की; वाळ्‌ नाळ्‌–आयु के दिन; माळुतल्‌ आल्‌–समाप्त होने को थे; वीऴ्‌ नाळ्‌ इल्‌–जिसका मरण-दिन नहीं होता; अऱम्‌–उस धर्म का; पुवि मेवुतलाल्‌–भूमि पर उत्थान होने को था, इसलिए; काणा–(देवी ने उसको) देखकर; इतु कैतवम्‌–यह कैतव है; ॲन्ऩु उणराळ्‌–यह न जानकर; पेणात नलम्‌ कोंटु–अभूतपूर्व आनन्द मानकर; पेणिऩळ्‌–उसको चाहा। ७७१

रावण की आयु को खतम होनी थी। अनश्वर धर्म के भू पर उत्थान का काल आ गया था। इसलिए देवी सीता ने उसको देख लिया। पर उन्हें मालूम नहीं था कि यह कैतव है। अब तक ऐसा आनन्द प्राप्त नहीं था। यह समझकर उन्होंने उसकी चाह की। ७७१

*** नॅऱ्ऱिप्पिऱै याण्मुऩ निऩ्ऱिडलुम्, मुऱ्ऱिप्पॊऴि कादलिऩ् मुऩ्दुरुवाळ्**
पऱ्ऱित्तरु हॅऩ्बॅ तॆऩप्पदैया, वॆऱ्ऱिच्चिलै वीरऩै मेविऩळाल् 772

नॆऱ्ऱि पिऱैयाळ् मुतम्–(चन्द्र-) कला-सम भाल से भूषित देवी के सामने; निऩ्ऱिटलुम्–हिरण खड़ा हुआ तो; मुऱ्ऱि पॊऴि–भरकर बढ़नेवाले; कातलिऩ् मुऩ्तुरुवाळ्–इच्छा से जाती हुई वह; पऱ्ऱि तरुक–पकड़कर दीजिए; ऍऩ्पॆऩ्–कहूँगी; ऍऩ्ऩ–सोचकर; पतैया–उतावली से; वॆऱ्ऱि चिलै वीरऩै–विजय कोदण्डपाणी वीर; मेविऩाळ्–के पास पहुँची। ७७२

वह हरिण चन्द्रललाट सीता के सामने जाकर खड़ा हुआ। तब उनके मन में उसके प्रति अपार राग उत्पन्न हुआ और उमड़ आया। 'मैं जाऊँगी और उनसे कहूँगी कि इसे पकड़कर दीजिए' —ऐसा सोचते हुए वह सवेग विजय-कोदण्ड-पाणी श्रीराम के पास जा पहुँचीं। ७७२

आणिप्पॊऩ्ऩि ऩाहिय दाय्हदिराल्, शेणिऱ्चुडर् हिऩ्ऱदु तिण्शॆविकाल्
माणिक्क मयत्तॊरु माऩुळदाल्, काणत्तहु मॆऩ्ऱऩळ् कैतॊऴुवाळ् 773

कै तॊऴुवाळ्–हाथ जोड़े नमस्कार करती हुई; आणि पॊऩ्ऩिल् आकियतु–उत्तम स्वर्ण-निर्मित; आय् कतिराल्–शरीर की श्रेष्ठ कान्ति के कारण; चेणिल् चुटर्किऩ्ऱतु–बहुत दूर तक ज्योतिर्मय दिखनेवाला; तिण् चॆवि काल्–बलवान कान और पैर; माणिक्क मयत्तु–माणिक्यमय; ऒरु माऩ् उळतु–एक हिरण आया है; आल्–जो; काणत्तकुम्–वह देखने योग्य है; ऍऩ्ऱऩळ्–कहा (सीताजी ने)। ७७३

जाकर उन्होंने श्रीराम से हाथ जोड़कर विनय की। खरे स्वर्ण का बना, अपनी देह की कान्ति के कारण बहुत दूर तक द्युतिमान दिखता हुआ, माणिक्य के पैरों और कानों के साथ एक हिरन आया हुआ है। वह आपसे देखने योग्य है। ७७३

इम्माऩि निलत्तिऩि लिल्लैयॆऩा, ऍम्माऩि दॆऩच्चिऱि दॆण्णल्शॆयाऩ्
शॆम्माऩवळ् शॊऱ्कॊडु तेमलरोऩ्, अम्माऩु मरुत्तिय ऩायिऩऩाल् 774

इ माऩ्–यह मृग; इ निलत्तिल् इल्लै–इस भूमि पर (प्राप्य) नहीं; ऍऩा–यह बात; ऍ माऩ् इतु–यह कैसा हरिण; ऍऩ्ऩ–यह बात; चिऱितु ऍण्णल् चॆयाऩ्–कुछ भी नहीं सोचकर; ते मलरोऩ्–शहद-भरे कमल पर आसीन; अम्माऩुम्–(ब्रह्मा के) पिता (के अवतार) श्रीराम भी; चॆम् माऩवळ्–सुन्दर (लाल) रंग की सीताजी का; चॊल् कॊटु–वचन मानकर; अरुत्तियऩ् आयिऩऩ्–इच्छुक हुए। ७७४

श्रीराम ने यह सुना। (आश्चर्य है कि) उन्हें यह नहीं सूझा कि

ऐसा मृग अनहोनी बात है। यह भी विचार नहीं आया कि यह कैसा मृग है ? बिना किसी सोच-विचार के श्रीराम, जो शहदयुक्त कमल पर आसीन ब्रह्मा के भी विधाता विष्णु के अवतार थे, देवी की बात पर विश्वास करके उसको पकड़ने को इच्छुक हो गये। ७७४

आण्डङ्गिळै योनुरै याडिनताल्, वेण्डुमॅन्त लाम्विळै वन्ऱिदॅनाप्
पूण्डुञ्जुपों लङ्गॉडि पोयदुनाम्, काण्डुमॅनुम् वळ्ळल् करुत्तुणर्वान् 775

पूण् तुञ्चु–आभरण-युक्त; पोलन् कॉटि–स्वर्ण-लता (सी देवी); पोय् अतु नाम् काण्टुम्–जाकर हम उसे देखें; ऍन्नुम्–कहनेवाले का; वळ्ळल् करुत्तु–उदार प्रभु का मन; उणर्वान्–भाँपकर; इळैयोन्–लघुराज; आण्टु–तब; वेण्टुम् ऍन्तल् आम्–चाहनीय; विळैवु अन्ऱु इतु–चाह के योग्य नहीं है यह; ऍना–ऐसा सोचकर; अङ्कु–वहाँ; उरै आटिनन्–वचन कहने लगे। ७७५

'हे आभरणालंकृता देवी ! हम जाकर देखेंगे' यह प्रभु ने कहा। पास जो रहे उन लघु भ्राता लक्ष्मण ने श्रीराम का विचार ताड़ लिया। तब उन्होंने सोचा कि यह चाहनीय इच्छा का विषय नहीं। इसलिए वह श्रीराम से निवेदन करने लगे। ७७५

कायङ्गन हम्मणि काल्शॅविवाल्, पायुम्मुरु वोडिदु पण्वलवाल्
मायमॅन्त लन्ऱि मन्तक्कॉळवे, एयुम्मिरै येयुऱ वॅन्ऱननाल् 776

कायम् कनकम्–शरीर स्वर्णमय; काल् चॅवि वाल्–पैर, कान और दुम; मणि–माणिक्यमय; पायुम् उरुवोटु इतु–चौकड़ी भरनेवाला यह; पण्पु अल आल्–स्वाभाविक नहीं है, इसलिए; मायम् ऍन्नल्–माया कहना चाहिए; अन्ऱि–दूसरा; इऱै–प्रभु; मन्नम् कॉळवे–मानना; ऐयुऱवु एयुम्–संशययुक्त होगा; ऍन्ऱनन्–कहा। ७७६

प्रभु ! सोचिए। शरीर स्वर्ण का, पैर, कान और दुम माणिक्य के; ऐसा मृग चौकड़ी भरता है ! यह बिल्कुल अप्राकृतिक है ! इसलिए कोई माया ही माननी है ! उसके विपरीत इसको सच्चा मानना संशय-युक्त है। ७७६

निल्लावुल हिन्निलै नेर्मैयिनाल्, वल्लारु मुणर्न्दिलर् मन्नुयिर्दाम्
पल्लायिर कोडि परन्दुळवाल्, इल्लादन विल्लै यिळङ्गुमरा 777

इळम् कुमरा–बाल कुमार; नेर्मैयिनाल् वल्लारुम्–सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी; निल्ला उलकिन् निलै–इस नश्वर जगत का स्वभाव; उणर्न्तिलर्–पूर्ण रूप से नहीं जानते; मन् उयिर् ताम्–अक्षय जीव-जन्तु; पल् आयिरम् कोटि–अनेक सहस्र कोटि; परन्तु उळ आल्–रूप में विस्तृत हैं; इल्लातन इल्लै–असम्भव कुछ नहीं है। ७७७

तब श्रीराम ने गम्भीर विचार व्यक्त किये। बालकुमार ! सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी इस चलनशील संसार का सारा रहस्य नहीं जान पाते।

अक्षय जीव अनेक सहस्र कोटि रूपों में विपुल रीति से पाये जाते हैं। इसलिए असंभाव्य कुछ नहीं है। ७७७

ॲन्ऩॆन्ऩ्रु निऩैन्द दिळैत्तुळदाम्, कऩ्ऩङ्गळिल् वेरुळ काणुदुमाल्
पॊऩ्ऩिऩ्कुळिर् मेऩि पॊरुन्दिऩवेळ्, अऩ्ऩङ्गळ् पिऱन्द दऱिन्दिलैयो 778

ॲन् ॲन्ऱु निऩैन्तु—क्या समझकर; अतु इळैत्तु उळतु आम्—तुमने ऐसी बात कही थी; कऩ्तङ्कळिऩ्—अपने कानों से; वेरु उळ काणुतुम—कितने ही अपरिचित अन्य पदार्थ देखते हैं (सुनकर जान लेते है); पॊऩ्ऩिऩ्—स्वर्णमय; कुळिर् मेऩि पॊरुन्तित—मनोरम रूपधर; एळ् अऩ्तङ्कळ् पिऱन्ततु—सात हंस पहले जनित थे; अऱिन्तिलैयो—नहीं जानते क्या। ७७८

पर पता नहीं कि तुम क्या सोचकर किसके आधार पर यह कह रहे हो। कितने ही पदार्थ है, जिनके बारे में हम सुनते हैं और ज्ञान प्राप्त करते है। (भरद्वाज मुनि के) सात स्वर्णशरीरी हंस (पुत्रों के रूप में) पैदा हुए थे —क्या तुम यह वृत्तान्त नहीं जानते ? । ७७८

मुऱैयुमुडि वुम्मिलै मॊय्युयिरॆऩ्, ऱिऱैवऩिळै योनॊडि यम्बिऩऩाल्
पऱैयुन्दुणै यऩ्ऩदु पऩ्ऩॆऱिपोय्, मऱैयुम्मॆऩ वेळै वरुन्दिऩळाल् 779

इऱैवऩ्—(श्रीराम) प्रभु के; मॊय् उयिर्—(इस संसार को) भरनेवाले जीवों को; मुऱैयुम् मुटिवुम् इलै—उत्पत्ति का प्रकार और नाश, हम नहीं जानते; ॲन्ऱु—ऐसा; इळैयार्तॊटु—भाई से; इयम्पिऩऩ्—कहा; एळै—अबला ने; पऱैयुम् तुणै—वार्तालाप के अन्दर; अऩ्ऩतु—वह; पल् नॆऱि पोय्—बहुत दूर जाकर; मऱैयुम्—छिप जायगा; ॲन—ऐसा; वरुन्तिऩाळ्—दुःख के साथ बोली। ७७९

श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भ्राता को समझाया कि यह संसार अक्षय जीव-जन्तुओं से भरे है। उन सभी के जन्म-मरण के प्रकार हम नहीं जान सकते। तब देवी ने चिन्ता व्यक्त की कि आप जब तक वार्तालाप में लगे रहेंगे तब तक यह हरिण बहुत दूर चला जायगा और आँखों से ओझल हो जायगा। ७७९

अऩैयवळ् करुत्तै युऩ्ऩा वञ्जऩक् कुऩ्ऱ मऩ्ऩाऩ्
पुऩैयिळै काट्ट दॆऩ्ऱु पोयिऩाऩ् पॊऱाद शिन्दैक्
कऩैहळऱ् ऱम्बि पिऩ्बु शॆऩ्ऱऩऩ् कडक्क वॊण्णा
विऩैयॆऩ वन्दु निऩ्ऱ माऩॆदिर् विऴित्त दऩ्ऱे 780

अऩैयवळ् करुत्तै—उनका विचार; उऩ्ऩा—सोचकर; अञ्चऩ कुऩ्ऱम् अऩ्ऩाऩ्—अंजन-गिरि-तुल्य श्रीराम; पुऩै इळै—आभरणभूषिता; अतु काट्टु—उसे दिखाओ; ॲन्ऱु—कहकर; पोयिऩाऩ्—(देखने) गये; पॊऱात चिन्तै—अधीर-मन; कऩै कऴल् तम्पि—मुखरित पायलधारी भ्राता लक्ष्मण; पिऩ् चॆऩ्ऱऩऩ्—उनके पीछे गया; कटक्क ऒण्णा—अलंघ्य; विऩै ॲऩ—प्रारब्ध के समान; वन्तु निऩ्ऱ—जो आकर खड़ा रहा; माऩ्—उस हरिण ने; ॲतिर् विऴित्ततु—सामने आकर उन्हें देखा। ७८०

श्रीराम ने देवी का दुःख पहचाना। अंजनगिरि-तुल्य प्रभु श्रीराम ने उनको आभरणभूषित प्यारी देवी, सम्बोधित कर कहा कि दिखाओ। सीता चलीं और श्रीराम भी चले। इसको देखकर मुखरित पायलधारी लक्ष्मण चुप नहीं रह सके। अधीरमन हो वह भी उनके पीछे-पीछे गये। अलंघ्य प्रारब्ध के समान उस मायामृग ने उनके सामने आकर उनको ताका। ७८०

नोक्किय मानै नोक्कि नुदियिऴै मदियि नॉन्ऱुम्
तूक्किल नन्ऱि दॅन्ऱा न्दन्पॊरुळ् शॊल्ल लाहुम्
शेक्कॅयि नरवि नीङ्गिप् पिऱन्ददु तेवर् शॅय्द
पाक्किय मुडैमै यन्ऱो वन्नदु पऴुदु पोमो 781

नोक्किय मानै—जो ताक रहा था, उस हरिण को; नोक्कि—देखकर; नुति इऴै मतियिन्—अपनी सूक्ष्म बुद्धि से; ऑन्ऱुम् तूक्किलन्—श्रीराम ने कुछ तर्क नहीं किया; इतु नन्ऱु—यह बड़ा अच्छा है; ऍन्ऱान्—कहा; अतन् पॊरुळ् चॊल्लल् आकुम्—उसका (गूढ़) अर्थ हम कहेंगे; अरवु चेक्कॅयिन्—शेष-शय्या से; नीक्कि—अलग आकर; पिऱन्ततु—भू पर अवतार लेना; तेवर् चॅय्त—देवों के कृत; पाक्कियम् उटैमै अन्ऱो—पुण्य से प्राप्त फल है न; अन्ततु—वह; पऴुतु पोमो—व्यर्थ जायगा क्या। ७८१

श्रीराम ने उस हरिण को देखा जो उनको ताक रहा था। उन्होंने कोई तर्क-वितर्क नही किया। कहा कि शाबाश! यह बहुत अच्छा है! इसका गूढ़ अर्थ क्या है? —हम कहें? वे शेषशय्या त्यागकर भूमि पर अवतरित हुए —यह देवों के पुण्य का फल था। वह वृथा जायगा क्या? 'अच्छा' का संकेत उनके पुण्य की ओर है। ७८१

ऍन्नॊक्कु मॆन्न लाहु मिळैयव विदनै नोक्काय्
तन्नॊक्कु मॅन्ब दल्लाऱ् ऱनैयॊक्कु मुवमै युण्डो
पन्नक्क तरळ मॊक्कुम् पशुम्बुन्मेऱ् पडरु मॆन्ना
मिन्नॊक्कुञ् जॅम्बॊन् मेनि वॅळ्ळियिन् विळङ्गुम् बुळ्ळि 782

इळैयव—अनुज भैया; इततै नोक्काय्—इस पर दृष्टि डालो; ऍन् ऑक्कुम्—किसके समान है; ऍन्नतल् आकुम्—कहा जा सकता है; तन् ऑक्कुम्—स्वोपम है; ऍन्पतु अल्लाल्—इसके सिवा; ततै ऑक्कुम्—उससे तुल्य; उवमै उण्टो—उपमा होगी क्या; पल्—दाँत; नक्क तरळम् ऑक्कुम्—उज्ज्वल मोती के समान हैं; पचुम् पुल् मेल् पटरुम्—(जो) हरी घास पर लगती है, वह; मॆल् ना—मृदु जीभ; मिन् ऑक्कुम्—विद्युत के समान है; मेनि चॅम् पॊन्—शरीर लाल (खरा) सोना है; पुळ्ळि—बिंदियाँ; वॅळ्ळियिन् विळक्कुम्—चाँदी के समान प्रकाशमान हैं। ७८२

श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा। अनुज! इसको खूब देखो। इसकी तुलना में क्या कहा जा सकता है? यह स्वोपम है। यही कहना पड़ेगा।

तान्ऱोंडर् कुलत्तै यॆल्लान् दॊलैक्कुमा शमैन्दु निन्ऱाळ्
ॲन्ऱुवन् दॆदिर्न्द वीर निवनिह लिराम नॆन्ऱे 427

तोन्ऱिय–ऐसे प्रकट हुए; तोन्ऱल् तन्नै–प्रभु श्रीराम को; वान् तॊटर् मूङ्किल् तनृत–आकाश तक उन्नत बाँसों (के रगड़ने) से उत्पन्न; वयङ्कु वॆम् ती अतु ॲन्न–जलनेवाली भयंकर आग ही सम; तान् तॊटर् कुलत्तै ॲल्लाम्–अपने रिश्ते के सारे कुल को; तॊलैक्कुम् आ चमैन्तु निन्ऱाळ्–मिटाने के काम में जो प्रवृत्त रही; चुट्टित्तळ् काट्टि–संकेत करके; एन्ऱु वनतु–युद्धसन्नद्ध हो जो आया है; ॲतिर्न्त वीरन्–और सामने प्रकट हुआ है वीर; इवन्–यह; इकल् इरामन्–शत्रु राम है; ॲन्ऱु चॊन्नाळ्–ऐसा कहा। ४२७

आकाश तक उन्नत बाँसों का नाश वही अग्नि कर देती है जो उन्हीं से (उनके आपस में हवा के कारण टकराने से) उत्पन्न होती है, वैसे ही यह शूर्पणखा भी अपने कुल की नाशक शक्ति निकली। वह मानो उस कार्य में दत्तचित्त और तत्पर रही। ऐसी उसने उनके सामने प्रकट हुए श्रीराम को अपने हाथ के इशारे से दिखाया और कहा कि देखो! जो युद्धसन्नद्ध होकर सामने आ रहा है वही वीर राम है, जिसने हमारे साथ वैर ठाना है! । ४२७

कण्डनन् कनहत् तेर्मेर् कदिरवन् कलङ्गि नीङ्ग
विण्डन निन्ऱ वॆन्ऱिक् करनॆनुम् विलङ्गर् ऱोळान्
मण्डमर् यानॆ शॆय्दिम् मानिडन् वलियै नीक्किक्
कॊण्डनॆन् वाहै यॆन्ऱु पडैजरैक् कुऱित्तुच् चॊन्नान् 428

कनक तेर् मेल्–स्वर्ण-रथ पर; कतिरवन्–सूर्य; कलङ्कि–व्यग्र होकर; नीङ्क–हटे; विण्टतन् निन्ऱ–वैर के साथ स्थित; वॆन्ऱि–विजयशील; करन् ॲन्नुम्–खर नाम के; विलङ्कल् तोळान्–पर्वत-सम कन्धों वाले ने; कण्टनन्–श्रीराम को देखा (देखकर); पटैजरै कुऱित्तु–सेनावीरों को उद्दिश्य करके; यान्–मैं स्वयं; मण्टु अमर् चॆय्तु–यह बड़ा युद्ध करके; इ मानिटन् वलियै नीक्कि–इस मनुष्य का बल मिटाकर; वाकै कॊण्टनॆन्–विजय पा लूंगा; ॲन्ऱु–ऐसा; चॊन्नान्–कहा। ४२८

खर भी कम वैर नहीं रखता था। उसके वैर के सामने कनकरथ सूर्य भी डरकर हट गया। पर्वत-सम कन्धे वाले विजयशील खर ने श्रीराम को देखकर अपनी सेना के वीरो से कहा कि मैं ही बड़ा युद्ध करके इस मनुजपुत्र का बल मिटा दूंगा और विजय पाऊँगा। ४२८

मानिड नॊरुवन् वन्द वलिहॆळु शेनैक् कम्मा
कानिड मिल्लै यॆन्नुङ् गट्टुरै कलन्द कालै
यानुडै वॆन्ऱि यॆन्नाम् यावरुङ् गण्डु निऱ्ऱिर्
ऊनुडै यिवनै याने युणगुवॆ नुयिरै यॆन्ऱान् 429

माऩिटऩ् ऒरुवऩ्–एक मनुज; वन्त–(उससे लड़ने) आई; वलि कॆऴु चेऩैक्कु–सशक्त सेना के लिए; काऩ् इटम् इल्लै–जंगल में स्थान नहीं है; ऎऩ्ऩुम्–ऐसी; कट्टुरै–बात; कलन्त काले–जब फैल जायगी; याऩ् उटै वॆऩ्ऱि–मेरी विजय का (महत्त्व); ऎऩ्ऩाम्–क्या होगा; यावरुम् कण्टु निऱ्ऱिर्–सब देखते रहो; याऩे–मैं अकेला ही; ऊऩ् उटै इवऩै–(हमारे खाने योग्य) मांसधारी इसको; उयिरै उण्कुवॆऩ्–प्राण अशन कर लूँगा; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ४२९

लोग यह जानने लगें और यह बात फैल जाय कि एक अकेला मनुष्य आया था और उसके विरुद्ध इतनी बड़ी सेना ने युद्ध किया जिसके लिए वन में खड़े होने को भी स्थान नही मिला, तो मेरी जीत का क्या महत्त्व होगा ? इसलिए सब चुप देखते खड़े रहो। अकेला मैं ही इस मांसपिंड का प्राण पी लूँगा। खर ने ऐसा कहा। ४२९

अव्वुरै केट्टु वन्दा नहम्बऩॆन् ऱमैन्द कल्विच्
चॆव्विया नॊरुव नैय शॆप्पुवॆन् शॆरुविर् चाल
वॆव्विय राद नन्ऱे वीररि लाण्मै वीर
इव्वयि नुळदान् दीय निमित्तमॆन् ऱियम्ब लुऱ्ऱान् 430

अकम्पऩ् ऎऩ्ऱु–अकम्पन नाम के; अमैन्त कल्वि चॆव्वियाऩ्–युक्त विद्या-विदग्ध; ऒरुवऩ्–एक राक्षस ने; अ उरै केट्टु–वह वचन सुनकर; वन्ताऩ्–पास आकर; ऐय–प्रभु; वीररुळ् आण्मै वीर–वीरों में सर्वश्रेष्ठ वीर; चॆप्पुवॆऩ्–विनय करता हूँ; चॆरुविल् चाल वॆव्वियर् आतल्–युद्ध में बड़ा उत्साही रहना; नऩ्ऱे–अच्छा ही है; इ वयिऩ्–इस संदर्भ में; तीय निमित्तम् उळ आम्–बुरे शकुन होते हैं; ऎऩ्ऱु–कहकर; इयम्पल् उऱ्ऱाऩ्–विस्तार किया। ४३०

यह खर का वचन सुनकर अकंपन नाम का राक्षस सामने आया। वह विद्वान था। उसने कहा—स्वामी ! एक विनयवचन है—सुनाऊँगा। युद्ध में उत्साह दिखाना अच्छा ही है। पर शकुन बुरे दिखते हैं। उसने आगे उस बात का विस्तार किया। ४३०

कुरुदि मामळै शॊरिन्दन मेहङ्गळ् कुमुऱिप्
परुदि वाऩव नूर्वळैप् पुण्डदु पाराय्
करुदु वीरनिन् गॊडिमिशैक् काक्कैयिन् कणङ्गळ्
पॊरुदु वीऴ्वन पुलम्बुव निलम्बडप् पुरळ्व 431

करुतु वीर–प्रतिष्ठित वीर; मेकङ्कळ् कुमुऱि–मेघ गर्जन करते हुए; कुरुति मा मऴै चॊरिन्तऩ–बड़ी रक्त-वर्षा बरसायी; परिति वाऩवऩ्–सूर्यदेव; ऊर् वळैप्पुण्टतु–परिवेश से घिरे हुए हो गये; काक्कैयिऩ् कणङ्कळ्–कौओं के समूह; निऩ् कॊटि मिचै–तुम्हारी ध्वजा पर; पॊरुतु वीऴ्वऩ–आपस में लड़ते हुए गिरते और; पुलम्पुव—चीखते-चिल्लाते हैं; निलम्पट पुरळ्व–भूमि पर गिरकर लोटते हैं; पाराय्–तुम देखो। ४३१

प्रतिष्ठित वीर ! मेघ गरजते हुए रक्तवर्षा कर रहे हैं। सूर्य के परिवेश बना है। काकवृन्द आपस में लड़ते हुए ध्वजा पर गिरते हैं, फिर चिल्लाते हुए नीचे गिरते हैं और भूमि पर गिरकर लोटते हैं। देखो। ४३१

वाळि वाय्हळै यीवळैक् किन्ऱ्न वयवर्
तोळु नाट्टमु मिडन्दुडिक् किन्ऱन तूङ्गि
मीळि मॉय्म्बुडै यिवुळिहळ् विळुवन विऱलोय्
ज़ाळि योडुनिन् ऱुळैप्पन नरिक्कुलम् बलवाल् 432

विऱलोय्–विजयी वीर; वाळि वाय्कळै–वाणों के मुखों पर; ई वळैक्किन्ऱन–मक्खियाँ मँड़राती हैं; वयवर्–वीरों की; तोळुम् नाट्टमुम्–भुजाएँ और आँखें; इटम् तुटिक्किन्ऱन–वाईं ओर (की) फड़कती हैं; मीळि मॉय्म्पु उटै–अपार शक्ति वाले; इवुळिकळ्–अश्व; तूङ्कि विळुवन–सोते हुए गिरते हैं; नरि कुलम्–सियारों के झुण्ड; पल–अनेक; ज़ाळियोटु निन्ऱु–कुत्तों के साथ खड़े होकर; उळैप्पन–रुदन-स्वर में भूँकते हैं; पाराय्–देखो। ४३२

वीर ! वाणों के फलों पर मक्खियाँ मँड़रा रही हैं। वीरों के वाम नेत्र और हाथ फड़क रहे हैं। ताकतवर अश्व सोते और गिर पड़ते हैं। सियारों के झुण्ड आकर कुत्तों से मिल गये हैं और दोनों रुदन कर रहे हैं। तुम देखो। ४३२

पिडियॅ लामदम् बॅय्दिडप् पॅरुङ्गवुळ् वेळम्
ऑडियुम् मान्मरुप् पुलहमुङ् गम्बिक्कु मुयर्वाळ्
इडियुम् वीळ्न्दिडु मॅरिन्दिडुम् बॅरुन्दिशै यॅवर्क्कुम्
मुडियिन् मालैहळ् पुलालॊडु मुळ्मुडै नाऱुम् 433

पिटि ॲलाम्–हथिनियाँ, सभी; मतम् पॅय्तिट–मद वहाते हुए; पॅरुम् कवुळ् वेळम्–वड़े-वड़े गण्डस्थल वाले गजों के; माल् मरुप्पु ऑटियुम्–वड़े दाँत टूट जाते हैं; उलकमुम् कम्पिक्कुम्–पृथ्वी में कम्पन होता है; उयर् वान् इटियुम्–ऊँचे आकाश से गाज; वीळ्न्तिटुम्–गिरती है; पॅरुम् तिचै–लम्बी दिशाएँ; ॲरिन्तिटुम्–जलती हैं; ॲवर्क्कुम्–सभी की; मुटियिन् मालैकळ्–सिर की मालाएँ; पुलाल् ऑटु–मांसगन्ध के साथ; मुटै नाऱुम्–दुर्गन्ध निःसृत करती हैं। ४३३

हथिनियाँ मद वहा रही है और वड़े गाल वाले हाथियों के दाँत टूट जाते हैं। भूकम्प होता है। आकाश से गाज गिरती है। दिशाएँ जलती हैं। सबके सिर की मालाओं से सड़े मांस की-सी गन्ध और दुर्गन्ध निकलती है। ४३३

इन्नैय वाहलिन् मान्ऩिड नोरुवनॊन्द् ऱिवन्नै
निन्नैय लावदिङ् गेळ्मै नीयमर्क् कियन्ऱ

विन्नैयें लाञ्जॅयदु वॅल्ललान् दन्मैय नल्लन्
पुनैयुम् वाहैयाय् पॉरुत्तियॅन् नुरॅयॅनप् पुहन्ऱान् 434

पुनैयुम् वाकैयाय्–'वाहै' (विजय-सूचक) मालाधारी; इत्तैय आकलिन्–ऐसे हैं (शकुन) इसलिए; इवन्–इसको; मानिटन् ऑरुवन्–केवल एक मनुष्य है; ॲन्ऱ–ऐसा; इङ्कु नितैयल् आवतु–यहाँ सोचना; एळ्मै–अज्ञता होगा; नी अमरक्कु इयन्ऱ–तुम युद्ध-योग्य; वित्तै ॲलाम् चॅय्तु–सभी कार्य करके; वॅल्लल् आम्–उस पर विजय पाओ; तन्मैयन् अल्लन्–ऐसा मनुष्य नहीं; ॲन् उरै पॉरुत्ति–मेरी बात के लिए क्षमा करो; ॲन पुकन्ऱान्–ऐसा कहा (अकम्पन ने)। ४३४

ये सब बुरे शकुन हैं। ये हो रहे हैं। इसलिए इसको मामूली अल्प मानव समझना अज्ञता होगा। तुम्हारे युद्ध-तन्त्र और सामर्थ्य द्वारा वह जीता जानेवाला नहीं लगता। मैं यह कह रहा हूँ, उसके लिए क्षमा कर दो। अकंपन ने विनय के साथ यों बताया। ४३४

उरैत्त वाशहङ् गेट्टलु मुलहॅला मुलैयच्
चिरित्तु नन्ऱिदॅन् शेवहन् देवरैत् तेय
अरैत्त वम्मिया मलङ्गॉळिर् ऱोळमर् वॅण्डि
इरैत्तु वीङ्गुव मानिडर् कॅळियवो वॅन्ऱान् 435

उरैत्त वाचकम् केट्टलुम्–(उसका) कहा वचन सुनकर; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों को; उलैय–कँपाते हुए; चिरित्तु–ठठाकर (हँसकर); तेवरै तेय अरैत्त–देवों को पिचकाते हुए पीसनेवाले; अम्मि आम्–सिल है, ऐसा; अलङ्कु ॲळिल् तोळ्–हिलनेवाले सुन्दर मेरे ये कन्धे; अमर् वेण्टि–युद्ध माँगते हुए; इरैत्तु वीङ्कुव–फूले और उभरे हैं; मानिटर्कु ॲळियवो–मनुष्य के लिए अल्प (जेय) हो गये क्या; नम् चेवकम् नन्ऱितु–हमारी वीरता भी बड़ी भली; ॲन्ऱान्–कहा। ४३५

यह सुनते ही खर ऐसा ठठाया कि सारे लोक काँप गये। उसने कहा— अकंपन! इन मेरे अनुपम कन्धों को देखो जो मेरे हँसते समय हिलते हैं। और सिल के समान इनसे देव पिसे और पिचक गये थे। ये फूले हुए पुष्ट कन्धे उस अल्प मानव के लिए क्षुद्र हो गये क्या? हमारी वीरता भी भली रही!। ४३५

ॲन्नु मात्तिरत् तॅऱिपडै पिडियॅन विडिया
मन्नर् मन्नवन् मदलैयै वळैन्दन वळैन्दु
मिन्नुम् वालुळै मडङ्गलै मुनिन्दन वेळम्
तुन्नि नालॅनच् चुडुशिनत् तरक्करदन् दॉहुदि 436

ॲन्नुम् मात्तिरत्तु–(खर के) यह कहते ही; मिन्नुम् वाल् उळै मटङ्कलै–प्रकाशमय लम्बे अयाल वाले सिंह को; मुनिन्तन–वैर करके; वेळम् वळैन्तु तुन्नित्ताल् ॲन–गजों ने घेर लिया हो, ऐसा; चुटु चिनत्तु–तापक क्रोधशील; अरक्कर् तम् तॊकुति–राक्षसों के दल; ॲऱि पटै–आपस में टकरानेवाले हथियारों के; इटि ॲन इटिया–

वज्र के समान नाद करते; मन्ऩर् मन्ऩवन् मतलैयै–राजाधिराज के पुत्र श्रीराम को; वळैन्तत–घेर गये। ४३६

खर के यह कहते ही अग्नि के समान क्रोधी राक्षसों की सेना ने आकर चक्रवर्तीसुत श्रीराम को घेर लिया, मानो उज्ज्वल अयाल वाले सिंह से वैर करके गजों ने आकर घेर लिया हो। तब उनके हथियार आपस में टकराये और वज्र के समान नाद पैदा हुआ। ४३६

वळैन्द कालैयिल् वळैन्ददव् विरामऩ्ऩै वरिविल्
विळैन्द पोरैयु मावदुम् विळम्बुदुम् विशैयाल्
पुळैन्द पाय्बरि पुरण्डऩ पुहर्मुहप् पूट्कै
उळैन्द माल्वरै युरुमिडि पडवोडिन् दॆन्ऩ 437

वळैन्त कालैयिल्–जब घिर गये तब; इरामऩ् कै वरि विल्–श्रीराम के हाथ का बन्धनयुक्त धनुष भी; वळैन्ततु–झुका; विळैन्त पोरैयुम्–तब जो युद्ध हुआ, उसको; आवतुम्–उसके फल को; विळम्पुतुम्–कहेंगे; विचैयाल् पुळैन्त–अपनी तीव्र गति से जो विद्ध हुए वे; पाय् परि–तीव्रगामी अश्व; पुरण्टऩ–नीचे गिरकर लोटे; माल् वरै–बड़े-बड़े पर्वत; उरुम् इटि पट–घोर वज्र के गिरने से; ओटिन्तॆन्ऩ–टूट जाते हों जैसे; पुकर् मुक पूट्कै–बिन्दियों सहित मुख वाले गज; उळैन्त–दुखी हो गिरे। ४३७

जब वे घेर आये तब श्रीराम ने अपने प्रतापी चाप को झुकाया और युद्ध छिड़ गया। उसके फलस्वरूप क्या-क्या आश्चर्य हुए? हम उनका वर्णन करेंगे। एक दम विद्ध होकर दुलकी चलनेवाले अश्व गिरे और भूमि पर लोटे। गज, जिनके माथाओं पर बिन्दियाँ थीं, ऐसे पर्वतों के समान टूटकर गिरे जिन पर वज्र-पात हुआ हो। ४३७

शूल मऱ्ऱऩ वऱ्ऱऩ शुडर्मऴुत् तोहैवाळ्
मूल मऱ्ऱऩ वऱ्ऱऩ मुरट्टण्डु पिण्डि
पाल मऱ्ऱऩ वऱ्ऱऩ पहर्विॆम् बहुवाय्
वेलु मऱ्ऱऩ वऱ्ऱऩ विल्लोडु पल्लम् 438

चूलम् अऱ्ऱऩ–शूल कटे; चुटर् मऴु तोकै–उज्ज्वल परशु-वृन्द; अऱ्ऱऩ–बेकार हुए; वाळ् मूलम्–तलवारों के मूल; अऱ्ऱऩ–छिन्न हुए; मुरण् तण्टु अऱ्ऱऩ–सुदृढ़ दण्डायुध नष्ट हुए; पिण्टिपालम् अऱ्ऱऩ–भिंडिपाल मिटे; वॆम् पकुवाय्–चीरकर जानेवाले फल के; वेलुम्–भाले भी; अऱ्ऱऩ–नष्ट हुए; विल् ओटु पल्लम्–धनुष के साथ बल्लम व्यर्थ हुए। ४३८

और भी राक्षसों के शूल और कान्तियुक्त परशुसमूह नष्ट हुआ। तलवारों के मूल (या रूप) छिन्न हुए। सुदृढ़ दण्डायुध टूटे। भिण्डिपाल, भेदनेवाले शूल, चाप और बल्लम सभी तहस-नहस हुए। ४३८

तोंडितु णिन्दन तोळोंडुन् दोमरन् दुणिन्द
अडितु णिन्दन कडहळि ऱच्चोंडु नेंडुन्देर्क्
कोंडितु णिन्दन कुरहदन् दुणिन्दन कुलमा
मुडितु णिन्दन तुणिन्दन मुळैयोंडु मुशलम् 439

तोंटि तुणिन्तत–वीरकंकण टूटे; तोळोंटु तोमरम् तुणिन्तत–कन्धों के साथ तोमर खण्ड-खण्ड हुए; कट कळिऱ अटि–मत्तगजों के पैर; तुणिन्तत–कटे; नेंटुम् तेर्–बड़े रथ; अच्चोंटु कोंटि–धुरों के साथ ध्वजाएँ; तुणिन्तत–कटीं; कुरकतम् तुणिन्तत–घोड़े कटे; कुल मा मुटि–बड़ी संख्या में एक साथ बड़े किरीट; तुणिन्तत–खण्डित हुए; मुळैयोंटु–मुद्गरों के साथ; मुचलम् तुणिन्तत–मूसल टूटे। ४३९

और भी अंगवलय आदि वलय कटकर गिरे और भुजाओं के साथ तोमर आदि कटे। मत्तगजों के पैर, ऊँचे रथों की धुरियाँ और ध्वजाएँ आदि छिन्न हो गयीं। घोड़े टुकड़े-टुकड़े हुए। दण्ड और मुद्गर छिन्न-भिन्न हुए। ४३९

करुवि मावोंडु कार्मदक् कैम्मलैक् कणत्तो
डुरुवि मादिरत् तोडिन शुडुशर मुदिरम्
अरुवि मालैयिऱ् पिऱङ्गिय दवनियि लरक्कर्
तिरुविन् मार्वहन् दिऱन्दन तुऱन्दन शिरङ्गळ् 440

चुटु चरम्–श्रीराम के भयंकर शर; करुवि मा ओंटु–जीन वाले घोड़ों के साथ; कार्–काले; मत कै मलै–मत्तगजों के; कणत्तोंटु–दलों को; उरुवि–आर-पार होकर; मातिरत्तु ओटित–(बाहर निकल) दिशाओं में चले; उतिरम् अरुवि–रक्त नदियों; मालैयिल् पिऱङ्कित–के रूप में बहा; अवनियिल्–भूमि में; अरक्कर्–राक्षसों के; तिरु इल् मार्पु अकम्–श्रीहीन वक्षस्थलों को; तिऱन्तत–खोलकर (रक्त) बाहर आया; चिरङ्कळ् तुऱन्तत–सिर (धड़ों से) अलग हुए। ४४०

श्रीराम के सन्तापी शर जीन वाले अश्वों और काले रंग के मत्तगजों को निफरकर आगे सभी दिशाओं मे गए। रक्त की सरिताएँ वह चलीं। शरों ने राक्षसों के श्रीहीन वक्षों को विदीर्ण कर दिया और उनके सिरों को काटकर धड़ों से अलग कर दिया। ४४०

ऑन्ऱु पत्तुनू ऱायिरङ् गोडियॆन् ऱुणरात्
तुन्ऱु पत्तिय विराहवन् शुडशरन् दुरक्कच्
चॆन्ऱु पत्तिरत् तलैयिन मलैदिरण् डॆन्नक्
कॊन्ऱु पत्तियिऱ् कुविन्दन पिणप्पॆरुङ् गुन्ऱम् 441

ऑन्ऱु पत्तु नूऱु–एक, दस, सौ; आयिरम् कोटि–सहस्र, करोड़; ऎन्ऱु उणरा–ऐसा अगण्य; तुन्ऱु पत्तिय–बहुत मिली हुई पंक्तियों में; चुटु चरम्–जला डालनेवाले शरों को; इराकवन् तुरक्क–श्रीराघव ने चलाया तब; चॆन्ऱु–जाकर; कॊन्ऱु–मारकर; पत्तिर तलैयिन्–शरसहित सिरों की; मलै तिरण्ट ऎन्न–पर्वत

एकत्र हुए हों, जैसे; पिण ऍरुम् -कुन्ऱम्-लाशों के बड़े पर्वतों को; पत्तियिल् कुवित्तन-श्रेणियों में लगा दिया (शरों ने)। ४४१

श्रीराघव ने कितने शर लगातार छोड़े ? एक, दस, सौ, हज़ार, करोड़...? कोई गणना नहीं थी ! उनके भयंकर अस्त्र धनुष से छूटे और गये। राक्षस मरे और उनके सिरों पर वे अस्त्र गड़े रहे। उन अस्त्रों के साथ उन राक्षसों की लाशों के ढेर के ढेर पंक्तियों में बन गये। ४४१

काडु कॊण्डहा रुलवैहळ् कार्यॆरि कदुवच्
चूडु कॊण्डत्त वॆनत्तॊडर् कुरुदिमीत् तोऩ्ऱ
आडु हिऩ्ऱऩ वरुहुरै यियिलम्बु विण्मेल्
ऒडु हिऩ्ऱन वुयिरैयुन् दॊडर्वन वॊत्त 442

काटु कॊण्ट-वन में भरे; कार् उलवैकळ्-काले ठूँठ; काय् ऍरि कतुव-जलती आग के लगने से; चूटु कॊण्टत्त ऍन्त-गरम हो गए जैसे; अऱु कुऱै—सिर-कटे राक्षसों के कबन्ध; तॊटर् कुरुति मी तोऩ्ऱ-रक्त की धार के ऊपर उछलते रहने से; आटुकिऩ्ऱत-और नाचते हैं, तव; अयिल् अम्पु-श्रीराम के तीक्ष्ण शर; विण् मेल् ओटुकिऩ्ऱत उयिरैयुम्-आकाश में जानेवाले उनके प्राणों को भी; तॊटर्वत्त ऒत्त-(पकड़ने के लिए) पीछे जाते थे, ऐसे लगा। ४४२

राक्षसों के सिर-रहित कबन्ध नाचे। उनके शरीरों पर से लाल रक्त उछल रहा था। उनको देखकर ऐसा लगता था, मानो वन के ठूँठ आग से जल रहे हों। उछलते रक्त के फौवारे श्रीराम के बाणों के समान दिखे, जो स्वर्गगामी राक्षसों के प्राणों का पीछा कर रहे हों। ४४२

कैहळ् वाळॊडु कळप्पड कळुत्तऱक् कवश
मॆय्हळ् पोळ्वडत् ताळ्विळ मिहनॆडु निरुदर्
शॆय्य मात्तलै शिन्दिडत् तिशैयुऱच् चॆन्ऱ
तैय लार्नॆडु विळियॆऩक् कॊडियन शरङ्गळ् 443

तैयलार् नॆटु विऴि ऍन्त-दयिताओं के आयत नेत्रों के समान; कॊटियत-घातक; चरङ्कळ्-श्रीराम के शर; मिक नॆटु निरुतर्-बहुत ऊँचे कद के राक्षसों के; कैकळ् वाळॊटु कळम् पट-हाथों को तलवारों के साथ युद्धभूमि पर गिराते हुए; कऴुत्तु अऱ-गलाओं को काटते हुए; कवच मॆय्कळ्-कवचसहित शरीरों को; पोऴ् पट-चीरते हुए; ताळ् विऴ-पैरों को काटते; चॆय्य मा तलै चिन्तिट-लाल सिरों को छितराते हुए; तिचै उऱ चॆऩ्ऱ-दिशाओं में लगे हुए उड़ चले। ४४३

श्रीराम के बाण दयिताओं के आयत नेत्रों के समान थे। वे अत्यन्त भयंकर थे। वे चारों दिशाओं में बड़ा उत्पात मचाते हुए उड़े। ऊँचे कद के राक्षसों के हाथ तलवारों के साथ कटकर गिरे। उन शरों से गर्दनें कटीं। कवच विदीर्ण हुए। बड़े और लाल सिर अलग हुए। ४४३

मारि याक्किय वडिक्कणै वरैपुरै निरुदर्
पेरि याक्कैयित् पॅरुङ्गरै वयित्तॊरुम् बिरुङ्ग
एरि याक्कित्त वारुह ळाक्कित्त विरैक्कुम्
शोरि याक्कित्त पोक्कित्त वतमॅनुन् दौत्मै 444

मारि आक्किय–वर्षा हो रही हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करनेवाले; वटि कणै–(श्रीराम के) तीक्ष्ण बाणों ने; वरै पुरै निरुतर्—पर्वत-सम राक्षसों के; पेर् याक्कैयित्–बड़े शरीरों के (रूपी); पॅरुम् करै–बड़े तटों के; वयित् तॊरुम् पिरुङ्क—स्थान-स्थान पर दृश्यमान होते; एरि आक्कित्त–झीलें बनाईं; आरुकळ् आक्कित्त–नदियों की सृष्टि की; इरैक्कुम् चोरि आक्कित्त–उनको खून से भरा बना दिया; वतम् अॅतुम् तॊत्मै पोक्कित्त–वन का प्राचीन प्रकार मिटा दिया। ४४४

श्रीराम के तीक्ष्ण बाणों की वर्षा ने बड़ी-बड़ी नदियाँ और झीलें बनायीं, जिनके तट पर्वत-सम राक्षसों के बड़े शरीरों के बनाये और उनमें रक्त भर दिया। अब वन का प्राचीन रूप बदल गया। ४४४

अलैमि दन्दत्त कुरुदियित् बॅरुङ्गड लरक्कर्
तलैमि दन्दन नॆंडुन्दडि मिदन्दन तडक्कै
मलैमि दन्दत्त वाम्बरि मिदन्दत्त वयप्पोर्च्
चिलैमि दन्दत्त मिदन्दन कॊडियॊडु तेर्हळ् 445

अलै मितन्तत्त–लहरें जिसमें उठती थीं, उस; कुरुतियित् पॅरुम् कटल्–रक्त के बड़े सागर पर; अरक्कर् तलै मितन्तत्त–राक्षसों के सिर तैरे; नॆंटुम् तटि मितन्तत्त–लम्बे मांसखण्ड तैरे; तट कै मलै–विशाल हाथों (सूँड़ों) के गज बहे; वाम् परि मितन्तत्त–फाँदकर चलनेवाले अश्व बहे; वय पोर् चिलै मितन्तत्त–सारयुक्त युद्ध-धनु बहे; कॊटि ऑटु तेर्कळ् मितन्तत्त–ध्वजाओं-सहित रथ बहे। ४४५

रक्त का सागर-सा बन गया और उस पर तरंगें भी उठीं। उस रक्त पर राक्षसों के सिर, उनके बड़े-बड़े मांसखण्ड, अनेक करी, अश्व, बलवान चाप और ध्वजाओं के साथ रथ उतराये। ४४५

आय कालैयि लत्तल्विळित् तार्त्तिरैत् तरक्कर्
तीय वार्हणै मुदलिय तॅरुशिनप् पडैहळ्
मेय माल्वरै यॊत्ररितै वळैत्तित्त मेहम्
तूय तारैहळ् शोरिवन वामॅनच् चोरिन्दार् 446

आय कालैयिल्–तब; अरक्कर्–राक्षसों ने (जो बचे रहे); मेय माल् वरै–स्थायी, बड़े एक पर्वत; ऑत्ररितै–एक को; इत मेकम् वळैत्तु–श्रेणीबद्ध मेघ घेरकर; तूय तारैकळ् चोरिवत आम्–शुद्ध धारें गिरा रहे हों; ॲत–ऐसा; तीय वार् कणै–भयंकर लम्बे अस्त्र; मुतलिय–आदि; चित तॆरु पटैकळ्–क्रोध के साथ फेंके, घातक हथियार; चोरिन्तार्–बरसाये। ४४६

तब राक्षसों ने श्रीराम को घेर लिया और भयंकर अस्त्र आदि-

चलाये। वह दृश्य ऐसा था, मानो मेघों के समूहों ने एक पर्वत को घेर लिया हो और वे उस पर शुद्ध जलधारें वरसा रहे हों। राक्षसों ने क्रोध के साथ अस्त्र चलाये और वे अस्त्र भयंकर और घातक थे। ४४६

शॊरिन्द	पल्पडै	तुणिबडत्	तुणिबडच्	चरत्ताल्
अरिन्दु	वॆन्दत्त	शिन्दिडत्	तिशैतिशै	यहड्ड्रि
नॆरिन्दु	पार्महळ्	नॆळिवुड्र	वतमुड्रु	निड्रैय
विरिन्द	शॆम्ममयिर्क्	करुन्दलै	मलैयॆन्न	वीऴ्त्तान् 447

चरत्ताल्–शरों द्वारा (श्रीराम ने); चॊरिन्त पल् पटै–(राक्षसों के) बरसाये अनेक हथियारों को; तुणि पट तुणि पट—आते-आते खण्डित करके; अरिन्तु–काटकर; वॆन्तत्त चिन्तिट–जलाकर छितराया; तिचै तिचै अकड्ड्रि—दिशा-दिशा में फिकवा दिया; पार् मकळ्–भूदेवी को; नॆरिन्तु नॆळिवु उड्र–कुचलकर झुकने देते हुए; वतम् मुड्रुम् निड्रैय–सारे वन को भरते हुए; विरिन्त चॆम्ममयिर्–बिखरे लाल केशों के; करुम् तलै–काले सिरों को; वीऴ्त्तान्–गिराया। ४४७

श्रीराम ने अपने शरों से उन हथियारों को, जो राक्षसों द्वारा अत्यधिक परिमाण में उन पर चलाये गये, आते-आते काट दिया। उनको जलाकर छितराया। उनको सभी दिशाओं में दूर-दूर तक फेंक दिया। उन्होंने राक्षसों के लाल वालों से भरे काले सिरों को काट गिराया। उन सिरों की इतनी भारी संख्या थी कि उनके भार से भूदेवी कुचल गयीं और वह लचक गयीं। वन में सर्वत्र सिर ही सिर दिखाई दिये। ४४७

कवन्द	पन्दङ्गळ्	कळित्तन	कुळित्तकैम्	मलैहळ्
शिवन्दु	पायन्दवॆङ्	गुरुदियिर्	ड्रिरुहिन्न	शिन्नत्ताल्
निवन्द	वॆन्दॊऴि	निरुदर्दम्	नॆडुनिणन्	दॆविट्टि
उवन्द	वन्गळु	दुयिर्शुमन्	दुळुक्किय	दुम्बर् 448

कवन्त पन्तङ्कळ्–कवन्धराशियाँ; कळित्तन–मुदित हुए; कै मलैकळ्–'सूँड़ वाले पर्वत' (करी); चिवन्तु पायन्त वॆम् कुरुतियिल्–लाल और बहते रक्त-प्रवाह में; कुळित्त–नहाये; तिरुकिन्न चिन्नत्ताल्–भयंकर क्रोध के कारण; निवन्त–उभरे; वॆम् तॊऴिल्–भयंकर काम करनेवाले; निरुतर् तम्–राक्षसों के; नॆटु निणम्–अधिक मांसों को खाकर; तिवट्टि–अघाकर; वन् कळुतु–बलवान प्रेत; उवन्त–हर्षित हुए; उम्पर–देवलोक; उयिर् चुमन्तु–(राक्षसों के) प्राणों को ढोते हुए; उळुक्कियतु–लचक उठा। ४४८

भयंकर युद्ध में कवन्धराशियाँ मुदित हुईं। करी रक्त-प्रवाह में नहाये। वलवान प्रेतों ने क्रुद्ध राक्षसों के मांस खाकर अघाकर आनन्द मनाया। देवलोक में इतने राक्षसों के प्राण आ भर गये कि लोक ही झुक गया। ४४८

मरुड रुङ्गळि वञ्जनै वळैयॆयिऱ् ऱरक्कर्
गरुड नञ्जुरु कण्मणि काहमुङ् गवर्न्द
इरुड रुम्बुऱत् तिळ्ळुवैयर् पळुदुऱऱ् कॆळिदे
अरुड रुन्दिऱत् तऱननृऱि वलियवुण् डामो 449

मरुळ् तरुम्–मोह में डालनेवाले (मायावी); कळि–मत्त; वञ्चनै–कपटी; वळै ऍयिऱ्ऱु–वक्रदांत वाले; अरक्कर्–राक्षसों की; करुटन् अञ्चुरु–गरुड़ को भी भयभीत करनेवाली; कण्मणि–आँखों की पुतलियों को; काकमुम् कवर्न्तन–कौओं ने छीन लिया; इरुळ् तरुम् पुऱत्तु—अन्धकार-सम काले शरीरों के; इळ्ळुवैयर्–नीच लोग; पळुतु उऱऱ्कु ऍळिते–नष्ट होंगे, यह सुलभ ही है; अरुळ् तरुम् तिऱत्तु–कृपा देनेवाले; अऱन् अन्ऱि–धर्म के सिवा; वलियतु–बलवान; उण्टामो–कोई दूसरा होगा क्या। ४४९

उन मायावी, मत्त, कपटी और वक्रदाँत वाले राक्षसों की आँखों की पुतलियों को अब कौए नोचकर खाने लगे। पहले उन आँखों को देखकर स्वयं गरुड़ भी डरता था। अब उनकी स्थिति ऐसी हो गयी! क्यों? उन नीचों की अवनति सुगमता से हो जाती है, जो अन्धकार के समान काले होते है! धर्म कृपा का जनक है। उससे बढ़कर बलवान और क्या है?। ४४९

पल्लायिर मिरुळ् कीऱिय पहलोनॆन वॊळिरुम्
विल्लाळनै मुनियावॆयि लयिलामॆन विऴियाक्
कल्लार्मऴै कणमामुहिल् कडैनाळ्विळ् वनवोल्
ऍल्लामॊरु तॊडैयावुड नॆय्दार्विनै शॆय्दार् 450

पल् आयिरम् इरुळ्–अनेक सहस्र अन्धकार पुंजों को; कीऱिय–चीरनेवाले; पकलोन् ॲन ऑळिरुम्–सूर्य के समान प्रभावान; विल्लाळनै–कोदण्डपाणी श्रीराम को; ॲल्लारुम् ऑरु तॊटैया–सभी (बचे हुए) राक्षसों ने एक साथ मिलकर; मुनिया–कोप करके; वॆयिल् अयिल् आम् ॲन–चमकदार भाले के समान; विऴिया–तरेरकर; कण मा मुकिल्–समूहों में मिले बड़े-बड़े मेघ; कटै नाळ्–युगान्त में; कल् आर् मऴै–पत्थर की वर्षा; विटुवन पोल्–गिराते हों, जैसे; ॲल्लाम् उटन् ॲय्तार्–सभी अस्त्र एक साथ चलाते हुए; विनै चॆय्तार्–(युद्ध-) कार्य किया। ४५०

श्रीराम अन्धकार के समूहों को चीरकर हटानेवाले सूर्य के समान प्रभावान थे। उन कोदण्डपाणी पर सभी (बचे हुए) राक्षसों ने एक साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। उनकी तरेरती आँखों ने भयंकर भालों के समान दृष्टि चलायी। युगान्त में पत्थर बरसानेवाले मेघों के समान वे सभी अस्त्रों को एक साथ चलाने लगे। ४५०

ऍऱिन्दारॆन वॆय्दारॆन वऱियानिनैन् दनवुम्
अऱिन्दारॆन वऱियावहै ययिल्वाळियि नऱुत्तान्

शॆऱिन्दारैयुम् पिरिन्दारैयुञ् जॆरुत्तारैयुन् दिरत्ताल्
मरिन्दारैयुम् वलित्तारैयु मडित्तान्शिलै पिडित्तान् 451

चिलै पिटित्तान्–कोदण्डपाणी श्रीराम ने; चॆरिन्तारैयुम्–दलों में आनेवालों को; पिरिन्तारैयुम्–अलग-अलग आनेवालों को; चॆरुत्तारैयुम्–द्वेष करके आनेवालों को; चित्तत्ताल् मरिन्तारैयुम्–(जो भागे थे पर) क्रोध के कारण मुड़ आये उनको; वलित्तारैयुम्–अन्याय करनेवालों को; मटित्तान्–मिटाया; ऍरिन्तार् ऍन्न–ये शस्त्र फेंकनेवाले; ऍय्तार् ऍन्न–ये अस्त्र चलानेवाले; अरिया निनैन्ततवुम्–चलाने योग्य हथियारों को; अरिन्तार् ऍन्न–परखकर लेनेवाले थे; अरिया वकै–ऐसा पहचाना न जा सके, ऐसा; अयिल् वाळियिन् अऱुत्तान्–तीक्ष्ण अपने शरों से छिन्न-भिन्न कर दिया। ४५१

कोदण्डपाणी श्रीराम ने सब राक्षसों को मार दिया। उनमें दल बाँधकर आनेवाले, पृथक-पृथक आनेवाले, क्रुद्ध राक्षस, भाग जाकर वैर-प्रेषित हो लौट आनेवाले और अन्यायी सभी थे। इस तेजी से वे हत हुए कि यह जानना भी कठिन हो गया कि कौन क्या कर रहा था। अस्त्र चलानेवाले, शस्त्र चलानेवाले, चलाने के लिए चुनाव में लगे रहनेवाले सभी थे। वे भी कुछ करने से पहले ही हत हो गये। ४५१

वानत्तन कडलिन्बुऱ वलयत्तन मदिशूळ्
मीनत्तन मिळिर्हॊण्डलिन् मिशैयत्तन मिडल्वॆम्
कानत्तन मलैयत्तन तिशैमुऱ्ऱिय करियिन्
तानत्तन काहुत्तन शरमुन्दिय शिरमे 452

काकुत्तन–काकुत्स्थ के; चरम् उन्तिय–शरों द्वारा उकसाये गये; चिरमे–राक्षसों के सिर; वानत्तन–आकाश में गये; कटलिन् पुऱ वलयत्तन–समुद्र के पार के चक्रवाल में गये; मति चूळ्–चन्द्रवलयित; मीनत्तन–नक्षत्र-मण्डल में गये; मिळिर् कॊण्टलिन्–दृश्यमान मेघमण्डलों के; मिचैयत्तन–ऊपर वाले हो गये; मिटल् वॆम् कानत्तन–घने भयंकर वनों में गये रहे; मलैयत्तन–पर्वतों पर के हुए; तिचै मुऱ्ऱिय–दिशाओं के छोर में रहनेवाले; करियिन्–करियों के; तानत्तन–स्थानों पर गये। ४५२

काकुत्स्थ के शरों से कटे हुए राक्षसों के सिर कहाँ-कहाँ दिखे! आकाश, समुद्र पार चक्रवाल पर्वत, चन्द्र को मध्य में लिये रहे मीनमण्डल, सुदृश्य मेघमण्डल, घने भयंकर वन, पर्वत, दिशाओं के अन्त में रहनेवाले दिग्गजों के स्थान—सभी स्थानों पर गये रहे। ४५२

मण्मेलन मलैमेलन मळैमेलन मदितोय्
विण्मेलन नॆडुवेलैयि निडमेलन मिडलोर्
पुण्मेलन कुरुदिप्पॊरु तिरैयारुहळ् पोङ्गत्
तिण्मेरुवै नहुमार्बिन युरुवुन्दॊरि शरमे 453

तिण् मेरुवै नकु–सुदृढ़ मेरु का परिहास करनेवाली; मार्पिन्–(राक्षसों की) छातियों को; उरुवुम् तॆरि चरम्–वेध जानेवाले (श्रीराम के) चुने हुए शर; पौरु तिरै कुरुति आऱु्कळ्–आपस में टकरानेवाली तरंगों से युक्त रक्त-नदियाँ; पौङ्क–उमँगकर बढ़ें, ऐसा; मण् मेलत्त–पृथ्वी में गये; मलै मेलत्त–पर्वतों पर गये; मळै मेलत्त–मेघों पर गये; मति तोय् विण् मेलत्त–चन्द्राश्रयी आकाश पर के हो रहे; नॆटु वेलैयिन् इटम् मेलत्त–विस्तृत समुद्रतलों के हो रहे; मिटलोर् पुण् मेलत्त–वली (राक्षसों) के व्रणों पर रहनेवाले बने। ४५३

जो मेरु-समान कठिन छाती वाले राक्षसों को भेद चले, वे श्रीराम के चुने हुए शर कहाँ-कहाँ पाये गये! राक्षसों के रक्त की नदियों को उमँगकर बहने देते हुए वे शर पृथ्वी पर, पर्वतों पर, मेघमण्डल पर, चन्द्राश्रयी आकाश पर, समुद्र पर और वली राक्षसों के व्रणों पर रहनेवाले बने। ४५३

पौलन्दारिन रऩलिऩ्शिहै पौऴिहण्णिऩ रॆवरुम्
वलन्दाङ्गिय वडिवॆम्बडै विडुवार्शर मऴैयाल्
उलन्दारुडल् कडलोडुउऱ् वुलवारुड लुऱ्ऱार्
अलन्दार्निशि शररामॆन विमैयोरॊडु मार्त्तार् 454

पौलम् तारिनर्–मनोरम मालाधारी; अनलिन् विर्क पौऴि कण्णिनर्–अग्नि की ज्वालाएँ-सी निकालनेवाली आँखों के; वटि वॆम् पटै विटुवार्–तीक्ष्ण भयंकर हथियार चलानेवाले; ऍवरुम्–सभी राक्षस; चर मऴैयाल्–शर-वर्षा से; उटल् कटल् ओटु उऱ–शरीर जाकर समुद्र में मिल गये, इस रीति से; उलन्तार्–मरे; उलवा उटल् उऱ्ऱार्–अमर शरीर पाकर; इमैयोर् ओडुम्–देवों के साथ मिलकर; निचिचरर् अलन्तार् आम् ऍन–निशिचर मरे, यह कहकर; आर्त्तार्–सन्तोषरव उत्पन्न किया। ४५४

मनोरम मालाधारी सभी राक्षस, जिनकी आँखों से अग्निज्वालाएँ निकलती थीं और जो भयंकर तीक्ष्ण हथियार चलाते थे, श्रीराम की शरवर्षा के सामने मर गये। उनकी लाशें समुद्र में जाकर मिल गयीं। अब उन्हें अमर शरीर मिल गया। वे देवों में मिल गये। अब वे नीचे देखते हैं और मरते हुए राक्षसों को देखकर हर्षरव निकालते हैं कि वाह! राक्षस मर गये। ४५४

ईरऱ्चॆरि कमलत्तन विरदक्कुऱै पुळिऩम्
वीरक्करि मुदलैक्कुल विडुपाय्परि कुरम्बाप्
पारक्कुडर् मिडैपाशडै पडर्हिन्ऱऩ पलवा
मूरित्तिरै युदिरक्कुळ मुळुहिक्कळु दळुमे 455

ईरल्–पङ्कत् (रूपी); चॆरि कमलत्तत–दलसंकुल कमल वाले; इरत कुऱै–टूटे रथ; पुळितम्–पुलिन; वीर करि–साहसी गज; मुतलै कुलम्–नक्रसमूह; पाय् परि–अश्व; विटु–बँधे; कुरम्पा–बाँध; पार कुटर्–भारी आँतें; मिटै–लसे

रहनेवाले; पल् पाचटै आ—अनेक ताजे पत्ते, इनसे युक्त; मूरि तिरै—बड़ी-बड़ी तरंगों वाले; उतिर कुळम्—रक्त के तालावों में; कळुतु—भूत; मुळुकि ॲळुव—नहा उठते हैं। ४५५

युद्धभूमि में एक अनोखा तालाब बन गया। उसमें रक्त भरा था। यकृत् कमल बने, टूटे रथ पुलिन। साहस के साथ मरे गज नक्र बने और अश्व की लाशें बाँध बनीं। भारी आँतों ने विविध पत्तों का स्थान लिया! ऐसे तालाब में, जिसमें बड़ी-बड़ी तरंगें उठ रही थीं, प्रेत नहा उठते थे। ४५५

अळैत्तार्शिल रार्त्तार्शिल रळिन्दार्शिलर् कळिन्दार्
उळैत्तार्शिल रुयिर्त्तार्शिल रुरुण्डार्शिलर् पुरण्डार्
कुळैत्ताळ्दिरैक् कुरुदिक्कडड् कुळित्तार्शिलर् कॉलैवाय्
मळैत्तारैहळ् पडप्पारिडै मडिन्दार्शिल रुडैन्दार् 456

कॉलै वाय्—मारक; मळै तारैकळ् पट—शरवर्षा के लगने से; चिलर्—कुछ राक्षसों ने; अळैत्तार्—पुकार मचायी; चिलर् आर्त्तार्—कुछ ने (भीषण) गर्जन किया; चिलर् अळिन्तार्—कुछ मिटे; चिलर् कळिन्तार्—कुछ भागे; चिलर् उळैत्तार्—कुछ तड़पे; चिलर् उयिर्त्तार्—कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी; चिलर् उरुण्टार्—कुछ लोटे; चिलर् पुरण्टार्—कुछ लुढ़के; कुळै ताळ्—गहरे पंक के साथ; तिरै कुरुति कटल्—लहरों से युक्त रक्त-सागर में; चिलर् कुळित्तार्—कुछ डूबे; चिलर् पार् इटै मटिन्तार्—कुछ भूमि पर गिरकर मरे; उटैन्तार्—हारे। ४५६

श्रीराम के संहारक वर्षा-धारों के समान शरों के आकर लगने से कुछ राक्षस त्राहि! त्राहि! पुकारने लगे। कुछ राक्षसों ने घोर शब्द किया। कुछ राक्षस वहीं ढेर हो गये। कुछ जान लेकर भागे। कुछ तड़पकर रह गये। कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी। कुछ लुढ़कते हुए गये। कुछ करवट बदलते बेचैन रहे। कुछ लोग कीच से भरे रक्त-सागर में डूबकर संकटग्रस्त हो रहे। कुछ लोग भूमि पर ही गिरकर मरे। कुछ लोग हारकर हटे। ४५६

उडैत्तारहळै नहैशॅय्दन रुरुडेरिन रुडनाय्
अडैन्दार्पडैत् तलैवीरर्हळ् पदिनाल्वरु मयिल्वाळ्
मिडैन्दार्नॅडुङ् गडर्दानैयर् मिडल्विल्लिनर् विरिनीर्
कडैन्दार्वॅरु वुरमीदॅळु कडुवामॅनक् कॉडियार् 457

विरि नीर्—विस्तृत (क्षीर-) सागर को; कटैन्तार्—जिन्होंने मथा उन (देवों और असुरों) को; वॅरुवु उर—भयभीत करते हुए; मीतु ॲळु—ऊपर उठ आये; कटु आम् ॲन—विष के समान; कॉटियार्—निर्मम; पटै तलै वीरर्कळ् पतिनाल्वरुम्—सेनापति चौदहों ने; उटनाय्—एक साथ; उटैन्तार्कळै—हारकर भागनेवालों की; नकै चॅय्ततर्—हँसी उड़ाई; उरुळ् तेरितर्—पहियों वाले रथ पर सवार हो; अयिल् वाळ् मिटैन्तु आर्—भालों और तलवारों को लिये हुए मिल आनेवाली; नॅटुम् कटल्

तात्तैयार्–विशाल समुद्र-सम सेना के साथ; मिटल् विल्लित्तर्–सबल धनु वाले हो; उटत्ताय्–एक साथ; अटैन्तार्–(वे) आये । ४५७

चौदहों सेनापतियों ने यह देखा तो उनका परिहास किया। देवों और असुरों को भयभीत करते हुए जो विष क्षीरसागर से उठ आया था, उस विष के समान बड़े ही भयंकर और खूनी वे सेनापति एक साथ निकलकर रथों पर युद्धभूमि में आये। उनके साथ बड़ी सेना आयी, जिसके वीर भालों और तलवारों से युक्त थे। सेना विपुल सागर के समान थी और वीरों से खूब भरी थी। ४५७

नाहत्तन्नि यॉरुविल्लियै नळिमुप्पुर मुन्नाळ्
माहत्तिडै वळैयुड्रन वॅन्नवळ्ळलै मदियार्
आहत्तॅळ् कनलहण्वळि युहवॅड्रॅदि रळन्ड्रार्
मेहत्तनि नॅडुविल्लियै वळैत्तार्शॅरु विळैत्तार् 458

मुन्नाळ्–प्राचीनकाल में; नाकम् तत्ति ऑरु विल्लियै–(मेरु) पर्वत को श्रेष्ठ धनु बनाकर जिन्होने लिया था, उन (मेरुधन्वा) को; नळि मुप्पुरम्–बड़े त्रिपुरों ने; माकत्तु इटै–आकाश में; वळैवुड्रन ॲंत्त–घेर लिया हो ऐसा; मेक तन्नि नॆंटु विल्लियै–मेघश्याम, उत्तम दीर्घ धनु के स्वामी कोदण्डपाणी; वळ्ळलै–प्रभु श्रीराम को; मतियार्–कुछ न माननेवाले; आकत्तु ऍळु कन्नल्–शरीर के अन्दर उठनेवाली आग को; कण् वळि उक उड्रु–आँखों द्वारा निकलने देते हुए; ऍतिर् अळन्ड्रार्–सामने द्वेष करते हुए; वळैत्तार्–घेरकर; चॅरु विळैत्तार्–युद्ध किया। ४५८

वे श्रीराम का महत्त्व जान नहीं पाये। उनके मन में उनके प्रति आदर ही नहीं था। मेघसम दीर्घ धनु के साथ दृश्यमान उन उदार प्रभु श्रीराम को उन्होंने आकर ऐसा घेरा, जैसा मेरुधन्वा शिवजी को त्रिपुरों ने आकाश में घेर लिया था। उनकी आँखों से मानो उनके अन्दर की कोपाग्नि निकल रही थी। बड़े वैर के साथ वे घेर गये। ४५८

ऍय्दार्पल ॲॅरिन्दार्पल ॲॅळुवोच्चिनर् मळुवाल्
पॉय्दार्पलर् पडैत्तार्पलर् किडैत्तार्पलर् पॉरुप्पाल्
पॅय्दार्मळै पिदिर्त्तारॅरि पिरैवाळॅयिर् ड्रक्कर्
वैदार्पलर् तॅळित्तार्पलर् मलैयामॅन वळैत्तार् 459

पिरै वाळ् ॲॅयिड्रु–अपूर्ण चन्द्र-सम वक्रदाँत वाले; अरक्कर्–राक्षसों में; पलर्–अनेकों ने; ऍय्तार्–शर चलाये; पलर्–अनेकों ने; ऍळु–दण्ड; ओच्चित्तर्–फेंके; पलर् मळुवाल् पॉय्तार्–अनेकों ने परशुओं से वार किया; पलर् पुटैत्तार्–अनेकों ने मारा; पलर् किटैत्तार्–अनेक पास आये; पलर् पॉरुप्पाल् मळै पॅय्तार्–अनेकों ने पर्वतों को वर्षा के समान लगातार फेंके; ऍरि पितिर्त्तार्–(अनेकों ने) आग बरसायी; पलर् वैतार्–अनेकों ने गाली दी; पलर् तॅळित्तार्–अनेक डाँटे; मलै आम् ॲॅन्त वळैत्तार्–पर्वत के समान घेर लिया। ४५९

उनके साथ कितने ही राक्षस-वीर आये थे। चन्द्रकला के समान श्वेत और वक्रदाँत वाले उनमें अनेकों ने श्रीराम पर बाण चलाये। कितनों ने दण्ड फेंके। परशु और अन्य हथियार चलानेवाले भी अनेक, अनेक थे। अनेक उन पर झपटने आये। अनेक राक्षसों ने पर्वतों को उठाकर वर्षा के समान निरन्तर फेंका। अनेकों ने आग बरसायी। अनेकों ने गालियाँ दीं और अनेक डाँटे। अनेक पर्वतों के समान श्रीराम के चारों ओर आकर उनको घेर गये। ४५९

तेर्पूण्डऩ विलङ्गियावैयुम् जिलैपूण्डॆऴु कणैयाल्
पार्पूण्डऩ मदमाकरि पलिपूण्डन परिमात्
तार्पूण्डऩ वुडल्पूण्डिल तलैवॆङ्गदिर् तऴिवन्
दूर्पूण्डन पिरिन्दालॆऩ विरिन्दारुयि रुलन्दार् 460

चिलै पूण्टु ऍऴु–(श्रीराम के) कार्मुक से छूटे हुए; कणैयाल्–शरों से; तेर् पूण्टऩ–रथों में जुते हुए; विलङ्कु यावैयुम्–जानवर सब; पार् पूण्टऩ–भूमि पर गिरकर मरे; मत मा करि–मत्त, बड़े-बड़े गज; पलि पूण्टऩ–बलि चढ़े; तार् पूण्टऩ परि मा–हारों से युक्त अश्व; उटल् तलै पूण्टिल–शरीरों से सिर-जुड़े नहीं रहे; चॆरु विळैत्तार्–युद्ध करने जो आये थे, वे; वॆम् कतिर् तऴि वन्तु–गरम सूर्य को घेर जो आया; ऊर् पूण्टऩ–उस परिवेश के; पिरिन्ताल् ऍऩ–हटने के समान; उयिर् उलन्तार्–प्राण खोकर; विरिन्तार्–सब जगह अलग-अलग पड़े रहे। ४६०

श्रीराम ने तब शर चलाये। उनके कोदण्ड से निकले बाणों के लगने से राक्षसों के रथों में जुते हुए जानवर भूमि पर गिरकर मर गये। मत्तगज बलि चढ़े। हारों से भूषित अश्व सिर से विहीन हो गये। उनको घेर आये हुए राक्षस सूर्य के परिवेश के समान, जो जल्दी दूर हो जाता है, मर गये। उनकी लाशें सर्वत्र फैली पड़ी रहीं। ४६०

माल्पोत्तिय मऱवोरुडन् मलैयोत्तुड ऩऴिशॆम्
पाल्पोत्तिऩ नदियिऱ्किळर् पडियोत्तवु पऩिवान्
मेल्पोत्तिय कुऴुविण्णवर् विऴिपोत्तिऩर् विरैवॆम्
काल्पोत्तिनर् नमऩ्तूदुवर् कडिदुऱ्ऱुयिर् कवर्वार् 461

माल् पोत्तिय–मूर्च्छा में पड़े रहे; मऱवोर् उटल्–वीरों के शरीर; मलै ऒत्तु–पर्वतों से तुले; उटल् अऴि–उन शरीरों से निकलनेवाले; चॆम् पाल् पोत्तिऩ–रक्त से भरी; नतियिल्–नदियों के कारण; किळर् पटि ऒत्तवु–दृश्यमान भूमि के समान लगे; पऩि वाऩ् मेल्–शीतल आकाश पर; पोत्तिय कुऴु विण्णवर्–एकत्रित हुए देवों ने; विऴि पोत्तिऩर्–अपनी आँखें मूँद लीं; नमऩ् तूतुवर्–यमदूतों ने; कटितु उऱ्ऱु–जल्दी आकर; उयिर् कवर्वार्–(राक्षसों के) प्राण हरकर; मिटल् वॆम्–सशक्त और भयंकर; काल् पोत्तिऩर्–अपने पैरों से (युद्धभूमि को) आच्छादित कर दिया। ४६१

मूच्छित वीरों के शरीर पर्वतों के समान लगे। उनके शरीरों से निकलनेवाले रक्त की भरी नदियों के कारण भूमि शोभित लगी। आकाश में देवों ने भीड़ लगायी थी। उन्होंने यह दृश्य देखकर अपनी आँखें मूंद लीं। उस युद्धभूमि को यम के दूतों के पैरों ने ढँक दिया। वे जल्दी-जल्दी राक्षसों के प्राण लेने आ-जा रहे थे। ४६१

पेयेऱिनर् शॅरुवेट्टॅऴु पित्तेऱित्तर् पिलवाय्त्
तीयेऱिह लरियेऱिनर् करियेऱित्तर् शॅऱिवाय्
नायेऱिन्न तलैमेनॅडु नरियेऱिन्न वॅरिहाल्
वायेऱिय वडिवाळियिन् वानेऱिन्नर् वन्दार् 462

पिल वाय्–बिल के समान मुख वाले; ती एऱु इकल्–बड़ी आग के समान लड़नेवाले; अरि एऱित्तर्–सिंहों पर सवार; करि एऱित्तर्–गजों पर सवार; चॅरु वेट्टु ऍऴु–युद्ध चाहते हुए आये; पेय् एऱित्तर्–भूतग्रस्त; पित्तु एऱित्तर्–उन्मत्त (राक्षसों के); तलै मेल्–सिरों पर; चॅऱिवाय्–भीड़ लगाकर; नाय् एऱित्त–कुत्ते चढ़े; नॅटु नरि एऱित्त–लम्बी कतार में सियार चढ़े; ऍरि काल्–आग उगलनेवाले; वाय् एऱिय–मुखों से युक्त; वटि वाळिन्–तीक्ष्ण बाणों से; वान् एऱित्तर्–(हत होकर) आकाश में चढ़े; वन्तार्–आये। ४६२

राक्षस, जिनके मुख बिल के समान थे, भयंकर सिंहों पर और गजों पर सवार होकर चाव के साथ भूतग्रस्त या उन्मत्त के समान युद्ध करने आये थे। पर वे मर गये। उनकी लाशों पर अब कुत्ते, सियार आदि चढ़ रहे थे। वे राक्षस श्रीराम के अग्निमुख और तीक्ष्ण बाणों से हत हुए थे। इसलिए उनकी आत्माएँ स्वर्ग पहुँच गयीं। ४६२

तलैशिन्दिन्न विऴिशिन्दिन तऴल्शिन्दिन तरैमेल्
मलैशिन्दिन पडिशिन्दिन्न वरुशिन्दुर मऴैबोल्
शिलैशिन्दिन्न कणैशिन्दिन्न तेर्शिन्दिन्न तिशैयू
डुलैशिन्दिन्न पॉऱिशिन्दिन्न वुयिर्शिन्दिन्न वुडलम् 463

मऴै पोल्–मेघ (वर्षा) के समान; चिलै चिन्तित्त–धनु से निकले; कणै चिन्तित्त–शर फैले; तलै चिन्तिन–सिर गिरे; विऴि चिन्तित्त–आँखें बिखरीं; तऴल् चिन्तित्त–आग फैली; वरु चिन्तुरम्–आगत गज; तरै मेल्–भूमि पर; मलै चिन्तित्त पटि पोल्–पर्वत बिखरे पड़े हों, इस प्रकार; चिन्तित्त–बिखरे पड़े थे; तेर् चिन्तित्त–रथ टूटकर छितराये; तिचै ऊटु–दिशाओं में सर्वत्र; उलै चिन्तित्त–भट्ठी से निकली; पॉऱि चिन्तित्त–आग के कणों के समान अंगार बिखरे; उटलम्–शरीरों ने; उयिर् चिन्तित्त–प्राण छोड़ दिये। ४६३

श्रीराम के कोदण्ड ने वर्षा की धारों के समान शर बरसाये। इसलिए राक्षसों के सिर छितरे; आँखें बिखरीं और उन आँखों से अंगार छितरे। उन शरों से आहत होकर गज पर्वत के समान यत्र-तत्र पड़े रहे और रथ

टूटकर गिरे। दिशाओं में अंगारे उड़े और राक्षसों के शरीरों ने प्राण त्याग दिये। ४६३

पडैत्तलै वरुमवर् पडैत्त तेर्हळुम्
उडैत्तडम् बडैहळु मौळिय वुऱ्ऱॅदिर्
विडैत्तडर्न् दॅदिर्न्दवर् वीरन् वाळियाल्
मुडैत्तवॅङ् गुरुदियिन् कडलिन् मूळ्हिनार् 464

पटै तलैवरुम्–सेनापति; अवर् पटैत्त तेर्कळुम्–उनके अपने रथ; उटै तटम् पटैकळुम्–उनके अपने बड़े-बड़े युद्ध-हथियार; ऑळिय–इनको छोड़कर; उऱ्ऱु–(युद्धभूमि में) आकर; ऍतिर्–(श्रीराम के) सम्मुख; विटैत्तु–तनकर; अटर्त्तु–युद्ध करके; ऍतिर्न्तवर्–सामना जिन्होंने किया, वे सब; वीरन् वाळियाल्–वीर (श्रीराम) के शरों द्वारा; मुटैत्त–दुर्गन्धपूर्ण; कुरुतियिन्–रक्त के; कटलिन्–समुद्र में; मूळ्कितार्–डब (मिट) गये। ४६४

सब मर-मिट गये। केवल वे चौदह सेनापति, उनके रथ और उनके पास रहे हथियार —ये ही बचे। अन्य सभी, जो दम्भ के साथ श्रीराम के सामने लड़ने आये थे, श्रीराम के बाणों से आहत हुए और दुर्गन्धपूर्ण रक्त-सागर में डूबकर मर गये। ४६४

शुऱ्ऱुऱ नोक्किनर् ऱॊडर्न्द शेत्तैयिल्, अऱ्ऱिल तलैयॆनु माक्कै कण्डिलर्
तॆऱ्ऱिन रॆयिऱुह डिरुहि नार्शिन, मुऱ्ऱिन रिरामनै मुडुहु तेरिनार् 465

चुऱ्ऱु उऱ नोक्कितर्–सिर घुमाकर देखा; तॊटर्न्त चेत्तैयिल्–अनुगामिनी सेना में; तलै अऱ्ऱिल ऍतुम्–सिर न कटे ऐसा कहने योग्य; आक्कै कण्टिलर्–शरीर नहीं देखे; चित्तम् तिरुकितार्–क्रोध से ऐंठे; ऍयिऱुकळ् तॆऱ्ऱितर्–दाँत चबाये; मुटुकु तेरितार्–तेजी से चलाये जानेवाले रथों के होकर; इरामत्तै मुऱ्ऱितर्–श्रीराम को घेर लिया (चौदहों सेनापतियों ने)। ४६५

सेनापतियों ने सिर घुमाकर चारों ओर देखा। अपनी सेना के किसी वीर को नहीं देख सके, जिसके शरीर का सिर कटा नहीं हो! उनके कोप का पारा चढ़ गया। दाँत पीसे। और रथ को सवेग चलाते हुए उन्होंने श्रीराम को चारों ओर से घेर लिया। ४६५

एळिरु तेरुम्वन् दिमैप्पिन् मुन्बिडैच्, चूळ्वन कणैहळिऱ् ऱुणिय नूऱ्ऱिनान्
आळियु माणियुम् माळु मऱ्ऱवै, ऊळिवॆङ् गालॆऱि योङ्ग लॊत्तवे 466

वन्तु इटै चूळ्वत–पास आकर घेरनेवाले; एळ् इरु तेरुम्–(सात के दो) चौदहों रथों को; इमैप्पिन् मुन्–पलक मारने के अन्दर; कणैकळिल्–अपने बाणों से; तुणिय नूऱ्ऱितात्–(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न क दिया; आळियुम् आणियुम् आळुम्–चक्रों, धुर और सारथी से; अऱ्ऱु–हीन होकर; अवै–वे; ऊळि वॆम् काल् ऍऱि–भयंकर युगान्तकालीन झंझा द्वारा प्रताड़ित; ओङ्कल् ऑत्त–पर्वत-समान नष्ट हुए। ४६६

पल भर में श्रीराम ने उनके चौदहों रथों को अपने बाणों से तोड़कर चूर-चूर कर दिया। पहिये और धुर ही नहीं, सारथी भी नहीं बचे। युगान्त के झंझे से जर्जर हुए पर्वतों के समान वे रथ (नष्ट) हो गये। ४६६

अळिन्दन	तेरव	रवनि	कीण्डुह
इळिन्दनर्	वरिशिलै	येन्दुत्त	कैयित्तर्
ओळिन्दिलर्	शरङ्गळै	युरुमि	नेरूनप्
पोळिन्दनर्	पोळिहनल्	पोङिक्कुङ्	गण्णिनार् 467

तेर् अळिन्तत अवर्-रथ-नष्ट हुए वे; अवति कीण्टु उरु-भूमि में दरार बनाते हुए (उतनी उग्रता से); इळिन्ततर्-उतरे; वरि चिलै एंटुत्त कैयित्तर्-बन्धनयुक्त धनु हाथ में लेकर; मिकु कतल् पोळिपकुम् कण्णितार्-अधिक अंगार निकालनेवाली आँखों के साथ; चरङ्कळै-शरों को; ओळिन्तिलर् पोळिन्ततर्-निरन्तर चलाये। ४६७

रथों को नष्ट-भ्रष्ट पाकर वे सेनापति जल्दी-जल्दी रथों पर से ऐसे कूदे कि भूमि पर दरार पड़ गयी! धनुर्धर उन्होंने आँखों से अंगार उगलते हुए श्रीराम पर निरन्तर बाणवर्षा की। ४६७

नूरिय	शरमेला	नुरुङ्ग	वाळियाल्
ईरुशॅय्	दवर्शिलै	येळी	रेळैयुम्
आरिनो	डारुमो	रिरण्डु	मम्बिनाल्
कूरुशॅय्	दमर्त्तोळिर्	कीदिप्पॅ	नीक्किनान् 468

चरम् अँलाम्-सभी बाण; नूरिय नुरुङ्क-मिटकर चूर हुए; वाळियाल् ईरु चॅय्तु-ऐसा अपने बाणों द्वारा मिटाकर; अवर् चिलै एळीटु एळैयुम्-उनके चौदहों चापों को; आरित् ओटु आरुम् ओर् इरण्टुम्-छः छः और दो (= चौदह); अम्पिताल्-बाणों से; कूरु चॅय्तु-खण्ड-खण्ड करके; अमर् तोळिल् कीतिप्पॅ-उनके युद्ध-कर्म की भयंकरता को; नीक्किनान्-दूर किया (श्रीराम ने)। ४६८

श्रीराम ने न केवल उन बाणों को नहीं मिटाया बल्कि उनके चौदहों चापों के भी चौदह बाण चलाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उन वीरों के युद्धोत्साह को और युद्ध की भयंकरता को दूर कर दिया। ४६८

विल्लिळन्	दत्तवरुम्	वॅहुळि	मीक्कोळक्
कल्लुयर्	नॅडुवरै	कडिदि	नेन्दितार्
ओल्लॅयि	नुरुत्तुयर्	विशुम्बि	नोङ्गिनित्
रॅल्लॅयिल्	पोरियुह	वॅरिदन्	मेयित्तार् 469

अतैवरुम्-वे सब; विल् इळन्तु-चाप खोकर; वॅकुळि मी कोळ-क्रोध के उमड़ने से; कल् उयर् नॅटु वरै-पत्थर के बड़े पर्वतों को; कटितित् एन्तितार्-वेग के साथ उठाकर; ओल्लॅयित्-जल्दी; उरुत्तु-कोप करके; उयर् विचुम्पित् ओङ्कि नित्रु-आकाश में ऊपर स्थित होकर; अँलुलॅयिल् पोरि उक-अगणित अंगार छितराते हुए; ॲरितल् मेयित्तार्-फेंकने लगे। ४६९

उन सेनापतियों को धनुष-विहीन होने से अपार क्रोध हुआ। वे पत्थर के बड़े पर्वतों को उठा-उठाकर ऊपर आकाश में खड़े होकर श्रीराम पर फेंकने लगे। उनकी गति इतनी तीव्र थी कि उनसे अंगार निकले और फैले। ४६९

कलैहळिन् परुङ्गडल् कडन्द विल्लित्तान्
इलैहोळ्वॅम् वहळिये ळिरण्डु वाङ्गित्तान्
कॉलैहोळ्वॅञ् जिलैयोडु पुरुवङ् गोट्टित्तान्
मलैहळुन् दलैहळुम् विळुन्द मण्णिले 470

कलैकळिन् पॅरुम् कटल्–(६४) कलाओं के बड़े सागरों को; कटन्त–जिन्होंने पार किया था (निपुण); विल्लित्तान्–उन कोदण्डपाणी ने; इलै कॉळ्–पत्र-सम फल वाले; वॅम् पकळि–भयंकर अस्त्र; एळ् इरण्टु–सात के दो; वाङ्कित्तान्–लेकर; कॉलै कॉळ् वॅम् चिलै ओटु–मारक धनुष और; पुरुवम्–भौंहों को; कोट्टित्तान्–झुकाया (कुंचित किया); मलैकळुम् तलैकळुम्–पर्वत और सिर; मण्णिले विळुन्त–भूमि पर गिर गये। ४७०

श्रीराम चौंसठ कलाओं के पारंगत धनुर्धर थे। उन्होंने चौदह पत्राकार सिर वाले बाण लिये। उन भयंकर बाणों को मारक धनु पर रखा। धनु को झुकाया जब उनकी भौंहें भी झुकीं! उसके फलस्वरूप पर्वत और सेनापतियों के सिर एक साथ भूमि पर गिर गये। ४७०

पडैत्तलै वीरर्हळ् पडलुम् बल्पडै
पुडैत्तडर्त् तार्त्तॅरि पुहैयुङ् गण्णित्तार्
किडैत्तन ररक्कर्हळ् कीळु मेलुमॊय्त्
तडैत्तनर् तिशैहळै यमर रञ्जित्तार् 471

पटै तलै वीरर्कळ्–सेनापति वीरों के; पटलुम्–हत हो जाने पर; अरक्कर्कळ्–(बचे रहे) राक्षस; पल् पटै पुटैत्तु–अनेक हथियारों से प्रहार करके; आर्त्तु–नारे लगाकर; ॲरि पुकैयुम् कण्णित्तार्–आग और धुएँ सहित आँखों के साथ; किटैत्तनर्–(श्रीराम के) समीप आकर; तिचैकळै–चारों दिशाओं में; कीळुम् मेलुम् मॊय्त्तु–नीचे और ऊपर भीड़ लगाकर; अटैत्तनर्–भर गए; अमरर् अञ्चित्तार्–देव डरे। ४७१

सेनापति वीर हत हो गये तो अन्य बचे हुए राक्षस क्रोध करके श्रीराम के समीप पिल पड़े और सभी दिशाओं में सर्वत्र भर गये। उनकी आँखों से आग और धुआँ-सा निकल रहा था। वे विविध प्रकार के अनेक हथियार चलाने लगे। उनकी संख्या, उनका क्रोध और युद्ध देखकर देव भी डर गये। ४७१

मुळङ्गिन पॅरुम्वणै मूरि माल्हरि
मुळङ्गिन वरिशिलै मुडुहु नाणॊलि

मुळङ्गिऩ शङ्गॊलि पुरवि मॊय्त्तुऱ
मुळङ्गिऩ वरक्करदम् मुहिलि ऩार्प्परो 472

पॆरुम् पणै—वड़े-वड़े मारू ढोल; मूरि माल् करि—वड़े और वलवान करी; मुळङ्कित—नाद कर उठे; वरि चिलै—बन्धनयुक्त धनुओं की; मुट्कु नाण् ऑलि—कठोर प्रत्यंचा को टंकार; मुळङ्कित—उठी; चङ्कु ऑलि—शंखनाद मुळङ्कित—हुए; पुरवि मॊय्त्तु उऱ—अश्व ठस मिलकर आये; अरक्कर् तम् मुकिलिन् आर्प्पु—राक्षसों का मेघगर्जन; मुळङ्कित—उच्च स्वर में उठा। ४७२

वड़े ढोलों का नाद, गजों की चिंघाड़, भयंकर बलवान चापों की टंकार, शंखध्वनि आदि तुमुल नाद उठा। अश्व ठस जुट आये और राक्षसों का मेघ-सा गर्जन उच्च रहा। ४७२

वॆम्बडै निरुदर् वीश विण्णिडै मिडैन्द वीरऩ्
अम्बिडै यऱुक्कच् चिन्दि यऱ्ऱऩ विऴुमॆऩ् ऱञ्जि
उम्बरु मिरियल् पोऩा रुलहॆला मुलैन्दु शाय्न्द
कम्बमि ऱिशैयि निऩ्ऱ कळिऱुकण् णिमैत्त वऩ्ऱे 473

निरुतर्—राक्षसों के; वीच—फेंकने से; वॆम् पटै—(वे) भयंकर हथियार; विण् इटै मिटैन्त—जो आकाश में घने रूप से भरे; वीरन्—वीर श्रीराम के; अम्पु इटै अऱुक्क—शरों के मध्य घुसकर काटने से; चिन्ति अऱ्ऱन—छितरकर वेकार हुए; विऴुम्—वे गिरेंगे; ऎन्ऱु अञ्चि—ऐसा डरकर; उम्पुरुम्—देव; इरियल्—अलग; पोऩार्—हट गये; उलकु ऎलाम्—सारे लोक; उलैन्तु—अस्त-व्यस्त होकर; चायन्त—अस्थिर हुए; कम्पम् इल्—अचल; तिचैयिल् निऩ्ऱ—दिशाओं में खड़े रहे; कळिऱुम्—गजों ने भी; कण् इमैत्त—आँखें मूंद लीं। ४७३

राक्षसों ने जो भयंकर हथियार फेंके, वे आकाश में घने रूप से भरे आये। पर वीर श्रीराम ने उनको बीच में ही खण्डित कर वेकार करा दिया। 'वे वेकार खण्ड हम पर गिरेंगे' —इस डर से देव भी हटकर भाग गये। सारे लोकों के वासी भी अस्तव्यस्त होकर शिथिल पड़ गये। अचल रहनेवाले दिग्गजों ने भी डर से अपनी आँखें मूंद लीं। ४७३

❀ अत्तलैत् तानैयऩ् नळवि लाऱ्ऱलऩ्
मुत्तलैक् कुरिशिल्बॊन् मुडियन् मुक्कणाऩ्
कैत्तलैच् चूलमे यनैय काट्चियान्
वॆत्तलैप् पहळियान् मळैशॆय् विल्लिऩान् 474

अ तलै—तव; अळविल् तानैयन्—अपार सेना वाले; आऱ्ऱलन्—शक्तिमान; पॊन् मुटियन्—स्वर्णकिरीटधारी; मुत्तलै कुरिचिल्—तीन सिरों का राजा त्रिशिरा; मुक्कणान्—त्रिनेत्र (शिवजी) के; कै तलै—हाथ में रहनेवाले; चूलमे अनैय—त्रिशूल की ही तरह; काट्चियान्—दृश्यमान; वै तलै पकळियान्—तीक्ष्ण सिर (फल) वाले वाणों का रखनेवाला; मळै चॆय्—(शर-) वर्षक; विल्लिनान्—धनुर्धर। ४७४

तब त्रिशिरा अपनी सेना के साथ बढ़ आया। कैसा था वह ? अपार सेना का स्वामी, अगाध शक्ति का नाथ; स्वर्णकिरीट-धारी और तीन सिरों वाला था वह। वह त्रिनेत्र शिवजी के हाथ के त्रिशूल के समान दृश्यमान था। उसके पास तीक्ष्णमुखी भयंकर शर थे। उसका शरासन भयंकर रूप से शरवर्षक था। ४७४

अन्नव नडुवुर् वूळि याळियी
दॅन्नवन् दॅङ्गणु मिरैत्त शेन्नैयुळ्
तन्निहर् वीरनुन् दमियन् विल्लिनन्
तुन्निरु ळिडैयदोर् विळक्किङ् ड्रोन्ड्रिनान् 475

अन्नवन्–वह; नट्टुवु उर–मध्य में रहा; ऊळि आळि–युगान्त समुद्र; ईतु ऍन्न–यह है, ऐसा; वन्तु–आकर; ऍङ्कणुम् इरैत्त–सब जगह शोर के साथ आ गई; चेतै उळ्–उस सेना के अन्दर; तन् निकर् वीरनुम्–स्वोपम वीर भी; तमियन् विल्लितन्–अकेले, धनु के साथ; तुन् इरुळ् इटै–घने अन्धकार के मध्य; ओर् विळक्किल्–एक दीप के समान; तोन्ड्रितान्–शोभित रहे। ४७५

उसको मध्य में रखते हुए उसकी अपार सेना युगान्तकालीन समुद्र के समान उमड़ी आयी। सब स्थानों पर उसका विस्तार था। उस सेना के मध्य श्रीराम, जिनकी तुलना का वीर और कोई नहीं था, हाथ में धनुष लिये अकेले स्थित थे। वे घने अंधकार के मध्य रहनेवाले दीप के समान शोभे। ४७५

ऑङ्गिय वाळिन नुरुमि नार्प्पिनन्
वीङ्गिय वेहत्तन् वॅय्य कण्णिनन्
आङ्गव नणिक्कॅदि रणिह ळाहनेर्
ताङ्गिन निरामनुञ् जरत्तिन् ड्रानैयाल् 476

ओङ्किय वाळितन्–उठाई हुई तलवार वाले; उरुमिन् आर्प्पितन्–वज्रनिनादी; वीङ्किय वेकत्तन्–बहुत वेगवान; वॅय्य कण्णितन्–भयंकर आँखों वाला; आङ्कु अवन्–वहाँ (जो आया) उस (त्रिशिरा) की; अणिक्कु–सेना भागों के; नेर्–सामने; अणिकळ् आक–सेनाओं के रूप में; चरत्तिन् तानैयाल्–शरों की सेनाओं (पंक्तियों) से; नेर् ताङ्कितन्–श्रीराम ने सामना किया। ४७६

त्रिशिरा तलवार उठाये हुए तुमुल नाद के साथ नारे लगाते हुए आया। वह बड़ा वेगवान था। उसकी आँखें क्रूर और भयंकर थीं। उसकी सेना के सामने श्रीराम खड़े रहे। श्रीराम ने उसकी सेना के भागों के सामने अपने शरों की पंक्तियों को ही पलटनों के रूप में स्थापित किया और युद्ध किया। ४७६

ताळिडै यड्ऱन तलैयु मड्ऱन, तोळिडै यड्ऱन तोडैह ळड्ऱन
वाळिडै यड्ऱन मऴुवु मड्ऱन, कोळिडै यड्ऱन कुडैह ळड्ऱन 477

ताळ् इटै अड्ऱत–(राक्षसों के) पैर बीच से कटे; तलैयुम् अड्ऱत–सिर अलग हुए; तोळ् इटै अड्ऱत–भुजाएँ बीच से कटीं; तोटैकळ् अड्ऱत–ऊरु कटे; वाळ् इटै अड्ऱत–तलवारें नष्ट हुईं; मऴुवुम् अड्ऱत–परशु भी मिटे; कोळ् इटै अड्ऱत–उनका बल भी मध्य में बेकार हुआ; कुटैयुम् अड्ऱत–छत्र भी छिन्न हुए। ४७७

राक्षसों का क्या हाल हुआ? पैर कटे, सिर लुढ़के, हाथ कटे और ऊरु खण्डित हुए। तलवारें कटीं, परशु मिटे और छत्र नष्ट हुए। राक्षसों का बल भी बेकार हुआ। ४७७

कॊडियॊडु कॊडिञ्जिड्प् पुरविक् कूट्टड्प्
पडियॊडु पडिन्दन परुदित् तेर्प्पणै
नॆडियवॆङ् गडहरि पुरण्ड नॆड्ऱिवीऴ्
इडियॊडु मिडिन्दुवीऴ् शिहर मॆन्नवे 478

परुति तेर् पणै–चक्रव्यूह में रहे रथों के समूह; कॊटि ओटु–ध्वजाओं के साथ; कॊटिञ्च–'कॊडिञ्जु' (रथी के स्थान के सामने रहनेवाला कमल के आकार का वह अवलम्ब, जिस पर हाथ रखकर आराम लिया जाता है); इड्–टूटे, इसलिए; पुरवि कूट्टु अड्–अश्व अलग हुए और मिटे, इसलिए; पटि ओटु पटिन्तत–भूमि पर गिरकर नष्ट हुए; नॆड्ऱि वीऴ्–अपने ऊपर गिरे; इटि ओटु–वज्र के साथ; इटिन्तु वीऴ्–टूटकर गिरनेवाले; चिकरम् ऎन्नवे–पर्वतशिखरों के समान; नॆटिय वॆम् कट करि–बड़े, भयंकर और मत्त गज; पुरण्ट–लोट गये। ४७८

चक्रव्यूह में रथ थे। उनकी ध्वजाएँ कटीं। उनके अन्दर रहने वाले कमलाकार अवलम्ब (जिनका रथी अपनी थकन मिटाने के लिए सहारा लिया करते हैं) खण्ड हुए। अश्व भी मरकर अलग हो गये। फलस्वरूप रथ ही भूमि पर सिर के बल गिरे और टूट गये। बड़े-बड़े भयंकर मत्तगज भी वज्राहत पर्वत-शिखरों के समान, जो वज्र के साथ ही नीचे गिरते हैं, नीचे गिरकर लुढ़क गये। ४७८

अड्ऱन शिरमॆन वऱिद ऱॆड्ऱलर्
कॊड्ऱवॆञ् जिलैच्चरङ् गोत्तु वाङ्गुवार्
इड्ऱिल ताळॆन वॆऴुन्दु विण्णिन्ऱप्
पड्ऱिनर् मऴैयॆनप् पडैव ऴङ्गुवार् 479

चिरम् अड्ऱत ऎन–सिर कट गये, यह बात; अऱितल् तेड्ऱलर्–(जो) समझ न सके, वे; कॊड्ऱ वॆम् चिलै–बलवान भयंकर धनुषों में; चरम् कोत्तु वाङ्कुवार्–शर-संधान करते थे; ताळ् इड्ऱिल–पैरों को न कटा; ऎन–समझकर; ऎऴुन्तु विण्णिनै पड्ऱितर्–उठकर आकाश में खड़े होकर; मऴै ऎन–वर्षा के समान; पटै वऴङ्कुवार्–हथियार फेंके (कुछ राक्षसों ने)। ४७९

राक्षसों की विचित्र शक्ति और श्रीराम के शरों की तीव्रगति की विशेषता देखिए। सिर कटकर गिर गये तो भी राक्षस धनुष पर शर-संधान कर रहे हैं, मानो उनको विदित ही नहीं हुआ हो कि उनके सिर कट गये। कुछ राक्षसों के पैर कट गए; पर वे बिना उसकी सुध लिये ही आकाश में उछल उठे और वहाँ से वर्षा के समान हथियार बरसा रहे हैं! । ४७९

केडहत् तडक्कैय किरियिन् ट्रोड्रत्त, आडहक् कवशत्त कवन्द माडुव
पाडहत् तरम्बैयर् मरुळप् पल्विद, नाडहत् तॊऴिलन नान्द हत्तन 480

कवन्तम् आटुव–कबन्ध (सिर कटे रुण्ड) जो नाच रहे थे; केटक तट कैय–ढाल सहित विशाल हाथों वाले थे; किरियिन् तोऱ्ऱत्त–पर्वत-सम आकार के थे; आटक कवचत्त–हाटक-कवच वाले थे; नान्तकत्तन–तलवारधारी थे; पाटकत्तु अरम्पैयर्–पाटक (पैंजनी ?) पहनी हुई अप्सराओं को; मरुळ–विस्मित करते हुए; पल् वित–विविध अनेक; नाटक तॊऴिलत्त–नृत्य-कर्म में लीन थे। ४८०

युद्धभूमि में कबन्ध ऐसे नाच रहे हैं कि पैंजनीविभूषित अप्सराएँ भी उनके विविध नाच देखकर विस्मय से हार मान लेती हैं! गिरि के समान उन कबन्धों के एक हाथ में ढाल और दूसरे हाथ में तलवार है। वे हाटक-कवच-धारी हैं। ४८०

कवरिवॆण् कुडैयॆनु नुरैय कैम्मलैच्, चुवरिन कवन्दमाळ् शुळिय तण्डुऱैप्
पवरिनप् पडुमणि कुविक्कुम् बण्णैय, उवरियैप् पुदुक्किन वुदिर वाऱ्रो 481

उतिर आऱु–रक्त-नदियाँ; कवरि वॆण् कुटै ॲतुम्–चँवर और छत्र रूपी; नुरैय–झागों वाली थीं; कैम् मलै चुवरित्त–गज रूपी तटों की; कवन्तम् आळ् चुळिय–कबन्ध जिनमें डूब जायँ, ऐसे आवर्त वाली; तण् तुऱै–शीतल घाटों की; पवर् इन–विविध प्रकार के समूहों के; पटु मणि–दिखनेवाले रत्न; कुविक्कुम्–जिनमें आकर ढेरों में पाये जाते हैं, उन; पण्णैय–समीपवर्ती खेतों वाली; उवरियै पुतुक्किन–समुद्र को नया रंग-रूप देनेवाली हैं। ४८१

राक्षसों के मृत-शरीरों से जो रक्त बहा, वह नदियाँ बन गया। उन नदियों में चामर और श्वेत छत्र झाग के स्थान में थे। गज तट बने। आवर्त ऐसे थे जिनमें कबन्ध डूब जाते थे। शीतल घाट थे। उस नदी द्वारा अनेक रत्न बहते आये, जो पास के खेतों में जा पड़े रहे। उन नदियों ने समुद्र को नया रंग-रूप दिला दिया। ४८१

चण्डवॆङ् गडुङ्गणै तडियत् ताञ्जिल
तिण्डिऱल् वळैयॆयिऱ् ऱरक्कर् तेवराय्
वण्डुळल् पुरिहुळल् मडन्दै मारॊडुम्
कण्डनर् तम्मुडैक् कवन्द नाडहम् 482

चण्ट वॆम् कटुम् कणै–प्रचण्ड और अति कठोर (श्रीराम के) बाणों ने; ताम् तटिय–प्रहार कर हत किया, इसलिए; चिल–कुछ; तिण् तिऱल्–अति बली; वळै ऍयिऱ्ऱु अरक्कर–वक्रदाँत वाले राक्षस; तेवराय्–देव बनकर; वण्टु उऴल्–भ्रमरावृत; पुरि कुऴल्–वेणी वाले केशों की; मटन्तैमार् ओटुम्–(देव-) स्त्रियों के साथ; तम् उटै कवन्त–अपने ही कवन्धों के; नाटकम्–नृत्य; कण्टत्तर्–देखकर आनन्दित हो रहे थे। ४८२

श्रीराम के शरों का यह गुण था कि उनसे आहत शत्रु वीर-स्वर्ग पहुँच जाया करते थे। यहाँ भी उनके प्रचण्ड बाणों से आहत वक्रदाँतों वाले राक्षस स्वर्ग के देव बन गये। वे वहाँ उन अप्सराओं के साथ, जिनकी वेणी वाले केश पर भ्रमर मँड़रा रहे थे, युद्धभूमि देखने लगे। अपने ही कवन्धों को नाचते देखकर उन्हें मजा आया। ४८२

आय्वळै मह्ळिरो डमर रीट्टत्तर्, तूयवॆङ् गडुङ्गणै तुणित्त तङ्गडोळ्
पेयॊरु तलैहॊळप् पिणङ्गि वाय्विडा, नायॊरु तलैहॊळ नहैयुऱ् ऱार्शिलर् 483

आय् वळै मकळिरोटु–चुने हुए कंकणधारिणी अप्सराओं के साथ; अमरर् ईट्टत्तार्–देवगण बने (जो थे, वे) राक्षस; तूय वॆम् कटुम् कणै–पवित्र और भयंकर (श्रीराम के) अस्त्रों से; तुणित्त–कटे; तङ्कळ् तोळ्–अपने कन्धों को; ऑरु तलै पेय् कॊळ–एक ओर प्रेत के खींचते; पिणङ्कि–उससे झगड़कर; वाय् विटा–अपने मुख से न जाने देते हुए; नाय्–कुत्ते को; ऑरु तलै कॊळ–दूसरी ओर छीनते; नकैयुऱ्ऱार्–देखकर हँस रहे थे। ४८३

चुने हुए कंकण-धारिणी अप्सराओं के साथ वे यह भी देख रहे थे कि श्रीराम के पवित्र और प्रचण्ड बाणों से कटे उनके हाथों को कुत्तों ने अपने मुख में ग्रस लिया है; और एक ओर प्रेत उनको छीनने का प्रयास करते हैं और उस ओर कुत्ते अपने मुख से छीनने न देते हुए खींच लेने के प्रयास में लगे हैं। यह देखकर उन्हें मनोरंजन हुआ। ४८३

तॆरिहणै मूऴ्हलिऱ् ऱिरन्द मार्बिऩर्
इरुविऩै कडन्दुपो युम्ब रॆय्दिऩार्
निरुदर्दम् बॆरुम्बडै नॆडिदु निऩ्ऱवऩ्
ऑरुवनॆऩ् ऱुळ्ळत्ति नुलैवुऱ् ऱार्शिलर् 484

तॆरि कणै–चुने हुए (श्रेष्ठ) शरों के; मूऴ्कलिल्–घुस जाने से; तिऱन्त मार्पिऩर् चिलर्–विदीर्ण छाती वाले कुछ राक्षस; इरु विऩै कटन्तु–दोनों कर्मों का निराकरण करके; पोय् उम्पर् ऍय्तिऩार्–स्वर्ग जो जा पहुँचे थे; निरुतर् तम् पॆरुम् पटै–राक्षसों की सेना; नॆटितु–अतिविशाल है; निऩ्ऱवऩ्–(सामना करके) स्थित रहनेवाले; ऑरुवऩ्–एकाकी हैं; ऍऩ्ऱु–सोचकर; उळ्ळत्तिऩ् उलैवु उऱ्ऱार्–मन में चिंतित हुए। ४८४

श्रीराम के उत्तम बाणों के राक्षसों के शरीर के आर-पार होने से उनकी छातियाँ विदीर्ण हो गयीं। वे पाप-पुण्य दोनों कर्मों का निराकरण हो जाने से स्वर्ग पहुँच गये। वहीं से वे देखते हैं कि युद्धभूमि की स्थिति बड़ी विषम है। राक्षसों की सेना अत्यधिक विशाल है और उनके सम्मुख श्रीराम अकेले खड़े हैं। वे श्रीराम से सहानुभूति करके दुखी हुए। ४८४

कैक्कळि ऱ्ऱैयवऩ् पहळि कण्डहर्
मॅय्क्कुलम् वेरॉडुन् दुडैत्तु वीळ्त्तिऩ
मैक्करु मऩत्तॊरु वञ्जऩ् माण्बिलऩ्
पॊय्क्करि कूऱिय कॊडुञ्जॊऱ् पोलवे 485

मै करु मऩत्तु—अंजन-सम काले मन के; ओरु वञ्चऩ्—एक वंचक; माणपु इलऩ्—गुण-हीन मनुष्य को; पॊय् करि—झूठी गवाही (देते हुए); कूऱिय कॊटुम् चॊल्—जो कहा, उस घातक वचन; पोलवे—के समान; कै कळिऱु अत्तैयवऩ्—सूँड़ वाला जानवर (गज) सम श्रीराम के; पकळि—शरों ने; कण्टकर्—लोककंटक; मॅय्कुलम्—राक्षसों के शरीरों की राशि को; वेर् ओटुम्—समूल; तुटैत्तु वीळ्त्तिऩ—मार-मिटाया। ४८५

सूँड़ वाले जानवर करी के समान दर्शनीय श्रीराम के बाणों ने लोक-कंटक राक्षसों के शरीरों को समूल मिटा दिया। उनका क्षय होना ऐसा था जैसे अंजन के समान काले मन वाले, कपटी और नीच प्रकृति के आदमी के झूठी गवाही के वचन कहने पर उसका नाश हो जाता है। ४८५

अञ्जुदऱ् कुऱुपहै यऱुत्त नीदियर्
तञ्जॆऩत् तऩ्मय माक्कुन् दऩ्मैपोल्
वञ्जहत् तरक्करै वळैत्तु वळ्ळऱान्
शॆञ्जरत् तूय्मैयाऱ् ऱेव राक्किऩान् 486

वळ्ळल्—उदार प्रभु श्रीराम ने; अञ्चुतऱ्कु उरु—भयावह; पकै अऱुत्त—अंतश्शत्रु के नाशक; नीतियर्—नीतिमान ज्ञानियों से; तञ्चु ऎऩ—शरण कहने पर; तऩ् मयम् आक्कुम् तऩ्मै पोल्—(ज्ञानी) अपने ही समान (शरणागतों को) बना लेते हैं, उसी प्रकार; वञ्चकत्तु अरक्करै—कपटी राक्षसों को; वळैत्तु—लपेट में लेकर; चॆम् चर तूय्मैयाल्—श्रेष्ठ शरों की पवित्रता द्वारा; तेवर् आक्किताऩ्—देव बना दिया। ४८६

सबको भयातुर करनेवाले कामादि दुर्गुण रूपी शत्रुओं को मिटाकर रहनेवाले ज्ञानियों के पास कोई जाकर यह कहे कि मैं आपकी शरण में आया हूँ, तो वे उसे अपने समान बना लेते हैं। वैसे ही श्रीराम ने उन कपटी राक्षसों को अपने शरों के दायरे के अन्दर बलात लाकर उन्हें मारा और उन्हें देव बना दिया। ४८६

वलङ्गॉळ्पोर् मानिडन् वलिन्दु कॊन्ऱमै
अलङ्गल्वे लिरावणऱ् करिविप् पामॆन्नच्
चलङ्गॉळ्पो ररक्करुद मुरुक्क डाङ्गिन
इलङ्गैयि लुय्त्तदक् कुरुदि याऱरो 487

वलम् कौळ्-वलशाली; पोर् मानिटन्-योद्धा, एक मनुष्य का; वलिन्तु कॊन्ऱमै-(अनेक राक्षसों को) बलात मारना; अलङ्कल्-मालाधारी; वेल्-भाला वाले; इरावणऱ्कु-रावण को; अरिविप्पाम् ऎन्न-जाकर सुनायेंगे, सोचकर; कुरुति आऱु-रक्तनदी ने; चलम् कौळ्-आवेग के साथ; पोर्-लड़नेवाले; अरक्कर् तम् उरुक्कळ्-राक्षसों के शरीरों को; ताङ्कित्त-वहा ले जाकर; इलङ्कैयिन्-लंका में; उय्त्ततु-पहुँचाया। ४८७

प्राण या जीव देव बन गये। पर राक्षसों के मृत शरीरों का क्या हुआ? रक्त की नदी उन्हें वहा ले गयी और वे लाशें लंका पहुँच गयीं। वे, मानो माला से भूषित और भालाधारी रावण को यह सन्देशा देने चलीं कि एक बलवान मनुष्य ने ही इन राक्षसों को बलात मारा था! । ४८७

शूळ्न्दुयर् नॆडुम्बडै पहळि शुऱ्ऱुऱप्
पोळ्न्दुयिर् कुडित्तलिऱ् पुरळप् पॊङ्गिनान्
ताळ्न्दिलन् मुत्तलैत् तलैवन् शोरियिन्
आळ्न्दते रम्बरत् तोट्टि यार्क्किन्ऱान् 488

चूळ्न्तु उयर्-अपने को घेरकर बढ़ी; नॆटुम् पटै-विशाल सेना (के वीरों) के; पकळि-श्रीराम के बाणों ने; चुऱ्ऱु उऱ-चारों ओर से; पोळ्न्तु-चीरकर; उयिर् कुटित्तलिल्-प्राण हर लिये; पुरळ-वे लोट गये, इसलिए; मुत्तलै तलैवन्-त्रिशिरा नामक सेनापति; पॊङ्कितान्-उबल पड़ा; ताळ्न्तिलन्-विलम्ब नहीं किया; चोरियिन् आळ्न्त तेर्-रक्त में मग्न अपने रथ को; अम्परत्तु ओट्टि-अन्तरिक्ष में चलाते हुए; आर्क्कित्ऱान्-गरज उठा। ४८८

श्रीराम के बाणों ने उनको घेरे आये सभी राक्षसों को लपेटकर उनको मार दिया। वे सब लोट गये। त्रिशिरा नामक तीन सिर वाले राक्षस ने यह देखा और वह बौखला गया। बिना विलम्ब के उसने रक्त में मग्न रहे अपने रथ को ऊपर आकाश में चलाया। उसने भीषण गर्जन किया। ४८८

ऊन्ऱिय तेरिन नुरुमिन् वॆङ्गणै
वान्ऱॉडर् मळैयॆन वाय्मै यावर्क्कुम्
शान्ऱन निन्ऱवत् तरुम मन्नवन्
तोन्ऱऱन् ऱिरुवुरु मऱैयत् तूविनान् 489

ऊन्ऱिय तेरिनन्-सुस्थापित रथ वाले ने; उरुमिन्-वज्र के समान; वॆम् कणै-भयंकर अस्त्र; वान् तॊटर् मळै ऎन-मेघ-वर्षित निरन्तर धारों के समान; वाय्मै

यावर्क्कुम्–सभी सत्यप्रिय लोगों के लिए; चान्ऱु अॅन्न निन्ऱ–दृष्टान्त के समान विद्यमान; तरुमम् अन्नवन्–धर्म-मूर्ति; तोन्ऱल् तन्–(दशरथ के) पुत्र श्रीराम के; तिरु उरु–श्रीशरीर को; मऱैय–आवृत करते हुए; तूविनान्–बरसाये। ४८९

अपने रथ को अन्तरिक्ष में स्थिर रूप से खड़ा करके उसने वज्र के समान शरों को मेघ-वर्षा की धारों के समान निरन्तर चलाया। उन शरों में सत्यवादियों के दृष्टान्तस्वरूप और धर्मावतार दशरथ के पुत्र श्रीराम का दिव्य शरीर छिप गया। ४८९

❀ तूविय शरमॅलान् दुणिय वङ्गणै
एविन् निरामनु मेवि येऴिरु
पूवियल् वाळियाऱ् पॉलङ्गॊ डेरऴित्
ताविवॅम् बाहनै यऴित्तु माऱ्ऱिनान् 490

तूविय चरम् ॲलाम्–वर्षित सभी अस्त्र; तुणिय–खण्डित करते हुए; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; वॅम् कणै एविनन्–भयंकर शर चलाये; एवि–चलाकर; एऴ् इरु–(और) चौदह; पू इयल् वाळियाल्–तीक्ष्ण शरों से; पॉलन् कॊळ् तेर्–स्वर्ण-निर्मित रथ को; अऴित्तु–नष्ट करके; वॅम् पाकनै–पराक्रमी सारथी को; आवि अऴित्तु–जान से मारकर; माऱ्ऱिनान्–युद्ध की स्थिति में परिवर्तन पैदा कर लिया। ४९०

तब श्रीराम ने बाण चलाकर उन सभी तीरों को काट दिया। फिर उन्होंने चौदह अतितीक्ष्ण तीर चलाये और उसके रथ को ध्वस्त कर दिया और सारथी को भी मार दिया। तब युद्ध का रवैया ही बदल गया। ४९०

❀ अन्ऱियु मक्कणत् तमर रार्त्तॅऴप्
पॊन्ऱॆरि वडिम्बुडैप् पॊरुविल् वाळियाल्
वन्ऱॊऴिऱ् ऱीयवन् महुड मात्तलै
ऑन्ऱॊऴित् तिरण्डैयु मुरुट्टि नानरो 491

अन्ऱियुम्–उसके अलावा; अ कणत्तु–उसी क्षण में; अमरर् आर्त्तु ॲऴ–देवों को हर्षरव करने देते हुए; पॊन् तॆरि–सुनहले; वटिम्पु उटै–किनारों वाले; पॊरुवु इल् वाळियाल्–अनुपम अस्त्रों से; वन् तॊऴिल् तीयवन्–नृशंसकारी क्रूर के; मकुटम् मा तलै–किरीटधारी (तीन) बड़े सिरों में; ऑन्ऱु ऑऴित्तु–एक को छोड़कर; इरण्टैयुम्–अन्य दोनों को; उरुट्टिनान्–लुढ़काया। ४९१

श्रीराम वहीं तक नहीं रुके। उसी क्षण उन्होंने अपने रुक्मपंख अस्त्र चलाकर उस नृशंस पापी के किरीटधारी बड़े सिरों में एक को छोड़कर बाकी दोनों को काट दिया। वे सिर भूमि पर गिरकर लोटने लगे। इसको देखकर देवगण सन्तोष का नाद कर उठे। ४९१

❀ तेरऴिन् दव्वऴित् तिरिशि रावॆनुम्
पेरऴिन् दॆन्निनु मऱम्बि ऴैत्तिलन्
नारिऴिन् दुमिऴ्शिलै वान नाट्टुऴिक्
कारिऴिन् दालॆनक् कणैहळ् शिन्दिनान् 492

अ वऴि–उस स्थान में; तेर् अऴिन्दु–रथ खो गया; तिरिचिरा–त्रिशिरा; ऍनुम् पेर्–का नाम; अऴिन्दॆन्निनुम्–मिट (निरर्थक हो) गया तो भी; मऱम् पिऴैत्तिलन्–वीरता से वंचित न होकर; चिलै–धनु से; नार् इऴिन्दु उमिऴ्–प्रत्यंचा द्वारा प्रेषित; कणैकळ्–शरों को; वान नाट्टु उऴि–आकाशलोक से; कार् इऴिन्दाल् ऍन–मेघ (पानी) गिरता हो जैसे; चिन्दिनान्–चलाया। ४६२

अब त्रिशिरा त्रिशिरा नहीं रहा। दो सिर खोकर उसने अपना नाम ही खो दिया। उसका रथ भी बेकार हो गया। तो भी उसने अपनी वीरता और साहस नहीं छोड़ा, पर अपने धनुष के डोरे खींचकर, व्योमनगर से मेघ-वर्षा गिरती हो, ऐसा अस्त्र निरन्तर छोड़े। ४९२

❀ एऱ्ऱिय नुदलिन निरुण्ड कार्मऴै
तोऱ्ऱिय विल्लॊडुन् दॊडर मीमिशैक्
काऱ्ऱिडै यऴित्तॆनक् कार्मु हत्तैयुम्
माऱ्ऱरुम् वहऴिया लऱुत्तु माऱ्ऱिनान् 493

एऱ्ऱिय नुतलिनन्–चढ़ी हुई भौंहों के भाल वाले (श्रीराम) ने; इरुण्ट कार्–काले मेघ ने; मऴै तोऱ्ऱिय–वर्षा कराई जैसे; विल् ओटुम्–अपने धनु से; तॊटर–शर चलाकर युद्ध किया; मी मिचै–आकाश में; काऱ्ऱु इटै अऴित्तु ऍन–वायु ने प्रवेश कर मिटा दिया जैसे; कार्मुकत्तैयुम्–त्रिशिरा के धनु को भी; माऱ्ऱु अरुम् पकऴियाल्–अलंघ्य बाणों से; अऱुत्तु माऱ्ऱिनान्–काटकर ध्वस्त कर दिया। ४६३

श्रीराम की भी त्योरियाँ चढ़ीं। उन्होंने भी काले मेघ के समान जो वर्षा कराता है, अपने धनुष के साथ युद्ध किया और अपने अमोघ और अवार्य अस्त्रों से त्रिशिरा के धनुष को काट दिया। धनु बिल्कुल नष्ट हो गया। ४९३

❀ विल्लि ऴन्दन नॆन्निनुम् विळङ्गुवाण् मुहत्तिन्
ऍल्लि ऴन्दिल निऴन्दिलन् वॆङ्गद मिडिक्कुम्
शॊल्लि ऴन्दिलन् ऱोळ्वलि यिऴन्दिलन् शॊरियुम्
कल्लि ऴन्दिल निऴन्दिलन् कऱङ्गॊन्न तिरिदल् 494

विल् इऴन्तनन् ऍन्निनुम्–धनु गँवा दिया तो भी; विळङ्कु वाळ् मुकत्तिन्–शोभनेवाले उज्ज्वल चेहरे का; ऍल् इऴन्तिलन्–प्राकृतिक सौंदर्य न खोया; वॆम् कतम् इऴन्तिलन्–भयंकर क्रोध भी न गँवाया; इटिक्कुम् चॊल्–वज्र-सम बोली; इऴन्तिलन्–न गँवायी; तोळ् वलि–भुजबल; इऴन्तिलन्–न खोया; चॊरियुम्

कल्-पत्थर बरसाना; इळन्तिलन्-न छोड़ा; करङ्कु अँन्न-वातचक्र के समान; तिरितल्-घूमना; इळन्तिलन्-न छोड़ा। ४६४

त्रिशिरा ने अब धनुष भी गँवा दिया। तो भी उसके उज्ज्वल मुख की प्रभा नहीं गयी। उसका क्रोध दूर नही हुआ और उसके वचन की वज्र की-सी कड़क और उग्रता भी नहीं गयी। उसका भुजबल भी नहीं गया और उसने पत्थर बरसाना नहीं छोड़ा। (पतंग या) वातचक्र के समान वह घूमता हुआ लड़ा। ४९४

* आळि रण्डुनू रुळवॅन्न वन्दरत् तॉरुवन्
मूळि रुम्बॅरु मायैयिन् शॅरुमुयल् वान्तैत्
ताळि रण्डेयु मिरण्डुवॅङ् गणैहळाड् ऱडिन्दु
तोळि रण्डैयु मिरण्डुवॅञ् जरङ्गळाड् ऱुणित्तान् 495

अन्तरत्तु-अन्तरिक्ष में; ऑरुवन्-एकाकी; मूळ् इरुम्-छानेवाली बड़ी; पॅरु मायैयिन्-विस्तृत माया से; आळ् इरण्डु नूरु उळ-योद्धा दो सौ हैं; अँन्न-ऐसा; चॅरु मुयल्वान्तै-युद्ध करनेवाले उसके; ताळ् इरण्टैयुम्-दोनों पैरों को; इरण्टु वॅम् कणैकळाल् तटिन्तु-दो घातक बाणों से काटकर; तोळ् इरण्टैयुम्-दोनों भुजाओं को; इरण्टु वॅम् चरङ्कळाल् दो भयंकर बाणों द्वारा; तुणित्तान्-काट लिया। ४६५

अन्तरिक्ष में एकाकी रहकर त्रिशिरा ऐसी माया के साथ लड़ा कि यह भ्रम हो जाता था कि दो सौ राक्षस एक साथ युद्ध कर रहे थे। अदम्य उत्साह के साथ वह युद्ध कर रहा था। श्रीराम ने दो-दो अस्त्र चलाकर उसके दोनों हाथों और दोनों पैरों को काटकर अलग कर दिया। ४९५

* अऱ्ऱ ताळीडु तोळिन्न नॅयिलॅयि ऱिलङ्गप्
पॊऱ्ऱै मामुळैप् पुलालुडै वायिन्निऱ् पुहुन्दु
पऱ्ऱ वादरिप् पानुऱ्ऱै नोक्किनन् परियान्
कॊऱ्ऱ वाऱ्शरत् तॊळिन्ददोर् शिरत्तैयुङ् गुऱैत्तान् 496

अऱ्ऱ ताळ् ऑटु तोळितन्-पैरों और हाथों से हीन; अयिल् अँयिऱु इलङ्क-तेज दाँतों को प्रकट करते हुए; पॊऱ्ऱै मा मुळै-पर्वत की बड़ी कन्दरा के समान; पुलाल् उटै वायितिल्-मांस की गन्ध निकालनेवाले मुख में; पुकुन्तु पऱ्ऱल्-जाकर ग्रसने का; आतरिप्पान् तत्तै-प्रयत्न करनेवाले उसको; नोक्कितन्-(श्रीराम ने) देखकर; परियान्-कृपा न करके; कॊऱ्ऱ वार् चरत्तु-दृढ़ एक लम्बे बाण से; ऑळिन्तत्तु ओर् चिरत्तैयुम्-बचे रहे एक सिर को भी; कुऱैत्तान्-काटकर अलग किया। ४६६

हाथ और पैर खोकर राक्षस ने अपने तीक्ष्ण दाँतों को निकालते हुए श्रीराम को अपने मांस-गन्ध-पूर्ण, बिलसदृश मुख से ग्रसने का उपक्रम किया। श्रीराम ने उसको देखा, दया नहीं की और एक लम्बा और बलवान अस्त्र चलाकर उसका बचा हुआ सिर भी धड़ से अलग कर दिया। ४९६

❀ तिरिशि रावॅनुञ् जिहरमण् चेर्दलुम् जिदऱि
निरुद रोडिनर् तूडणन् विलक्कवु निल्लार्
परुदि वाळिनर् केडहत् तडक्कैयर् परन्द
कुरुदि नीरिडै वार्हुळल् कॉळुङ्गुडर् तॉडक्क 497

तिरिचिरा ॲनम् चिकरम्–त्रिशिरा रूपी शिखर; मण् चेर्तलुम्–धराशायी हुआ तो; परुति वाळितर्–सूर्यप्रभ तलवारधारी; केटक तट कैयर्–ढाल लिये बड़े हाथ वाले; निन्ऱ निरुतर्–विद्यमान राक्षस; चितऱि–अस्तव्यस्त होकर; तूटणन् विलक्कवुम्–दूषण के रोकने पर भी; निल्लार्–न रुके; परन्त–फैले रहे; कुरुति नीर् इटै–रक्त-प्रवाह के मध्य; कॉळुम् कुटर्–मोटी आँतों के; वार् कळल्–लम्बे पैरों से; तॉटक्क–उलझकर रोकते; ओटिनर्–(उनको भी खींचते हुए) भागे। ४९७

त्रिशिरा रूपी शिखर (शिखर-सम नेता) मरकर भूमि पर गिर गया, तो अर्क-सम प्रकाशमान तलवारें और ढाल रखनेवाले विशाल हाथों के राक्षस भय से अस्तव्यस्त होकर भागे। दूषण ने रोकना चाहा तो भी वे नही रुके। सारी युद्धभूमि रक्त और कीच से भरी थी। वे उसी में घुसकर भागे। आँतों ने उनके पैरो से उलझकर वाधा डाली। तो भी लस्टम-पस्टम वे भागे ही। ४९७

कणत्तिन् मेनिन्ऱ वानवर् कैवुडैत् तार्प्पप्
पणत्तिन् मेनिलङ् गुलैवुऱक् काल्हॊडु पऱप्पार्
निणत्तिन् मेल्विळुन् दळुन्दिऩर् शिलर्शिलर् निवन्द
पिणत्तिन् मेल्विळुन् दुरुण्डन रुयिर्हॊडु पिळैप्पार् 498

मेल्–अन्तरिक्ष में; कणत्तिन् निन्ऱ–दलबद्ध स्थित; वानवर्–देवों ने; कै पुटैत्तु आर्प्प–तालियाँ पीटकर आनन्दरव किया; पणत्तिन मेल् निलम्–शेषनाग पर भूमि; कुलैवु उऱ–थर्रा उठी, तव; काल् कॊटु पऱप्पार्–पैरों के सहारे उड़नेवाले; चिलर्–(राक्षसों में) कुछ; निणत्तिन् मेल् विळुन्तु—मांस-पंक में गिरकर; अळुन्तित्तऱ–मग्न हुए; चिलर्–कुछ; निवन्त पिणत्तिन् मेल् विळुन्तु–ढेर वनी रही लाशों पर गिरकर; उरुण्टत्तर्–लुढ़के; उयिर् कॊटु पिळैप्पार्–किसी विध जान से वचे। ४९८

वे राक्षस ऐसे दौड़े, मानो उनके पैर ही पंख हों। उनको देखकर आकाश में देवगण तालियाँ पीटकर हँसे। शेषनाग पर धृत यह भूमि राक्षसों के पदाघातों से डोल उठी। उनमें कुछ रक्त-कीच में मग्न होकर डूब गये। कुछ ढेर वनी पड़ी रही लाशों पर टकराकर गिरे और किसी तरह वचकर भागे। ४९८

वेय्न्द वाळॊडु वेलिडै मिडैन्दन वॆट्ट
ओय्न्दु ळार्शिल रुलन्दन रुदिरनीर् याऱ्ऱिल्
पाय्न्दु काल्पदिन् दळुन्दिनर् शिलर्शिलर् पयत्ताल्
नीन्दि ऩार्नॆडुङ् गुरुदियङ् गडलपुक्कु निलैयार् 499

चिलर्-कुछ; इटै-बीच में; वेय्न्त-पड़ी रही; वाळ् ऑटु वेल्-तलवारों और भालों के; मिटैन्तन-जो सटे हुए थे; वॅट्ट-काटने से; ओय्न्तुळार्-(दौड़ नहीं सके) शिथिल हुए; उलन्तनर्-मरे; चिलर्-और कुछ; उतिर नीर् आऱ्ऱिल् पाय्न्तु-रक्त-नदी में गिरकर; काल् पतिन्तु-पैरों के गड़ जाने से; अळुन्तिनर्-डूब मरे; चिलर् पयत्ताल्-कुछ, डरते हुए; नीन्तिनार्-तैरे; कुरुति अम् कटल् पुक्कु-रक्त-सागर में पहुँचकर; निलैयार्-चंचल रहे। ४९९

राक्षसों के मार्ग में तलवारें, भाले आदि कसरत से पड़े थे। कुछ राक्षसों के पैर उनसे कट गये और वे राक्षस निर्बल होकर गिरे और मरे। कुछ रक्त-प्रवाह में घुसे और कीच मे पैरों के गड़ जाने से मरे। कुछ भयातुर होकर उस रक्त-नदी में उतरे और वहते जाकर रक्त-सागर में पहुँचे। वहाँ वे डूब-उतराये। ४९९

❀ मण्डि योडिन्नर् शिलर्नॅडुङ् गडहरि वयिऱ्ऱिल्
पुण्डि ऱन्दमा मुळैयिडै वाळॊडुम् बुहुवार्
तॊण्डै नीङ्गिय कवन्दत्तैत् तुणैवनी यॆम्मैक्
कण्डि लेन्नॅप् पुहलॆन्नक् कैदलैक् कॊळ्वार् 500

मण्टि ओटिनर् चिलर्-तेज जो भागे, वे कुछ; नॅटुम् कट करि वयिऱ्ऱिल्-मत्तगजों के पेट में; पुण् तिऱन्त-व्रण जो खुले थे; मा मुळै इटै-उन बिलों में; वाळ् ऑटुम् पुकुवार्-तलवारों के साथ घुसे; तॊण्टै नीङ्किय-गले से (कटकर) हीन; कवन्तत्तै-कवन्ध को; तुणैव-मित्र; नी ऍम्मै कण्टिलेन्-तुम 'मुझे नहीं देखा'; ऍन-यह; पुकल् ऍन-(श्रीराम के बाणों से) कहो, ऐसा; कै तलै कॊळ्वार्-सिर पर हाथ (जोड़कर) रख लेते। ५००

कुछ राक्षस दौड़े। बचने का कोई स्थान नहीं मिला। वहाँ हाथी मरे पड़े थे, जिनके पेट बिलों के समान खुले थे। राक्षस अपनी तलवारों के साथ उन्हीं में घुस गये। कुछ राक्षस भागते जा रहे थे। उनको डर था कि श्रीराम के शर पीछा करके आ रहे है। उन्होंने कवन्धों को देखा और अंजलिबद्ध हाथ अपने सिरो पर रखते हुए उनसे प्रार्थना की कि तुम श्रीराम के वाणों से मत कहो कि तुमने हमें देखा था। ५००

❀ कच्चुम् वाळुन्दङ् गाऱॊडऱ्न् दीर्प्पन काणार्
अच्च मॅन्बदोर् कुरुवुहॊण् डालॆन्न वळिवार्
उच्च वीरऩ्गैच् चुडुशर निरुदर्नॅञ्
जुरुवित् तच्चु निन्ऱन कण्डन रव्वळित् तविर्न्दार् 501

उच्च वीरऩ्-सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के; कै-हाथ के; चुटु चरम्-मारक बाण; निरुतर् नॅञ्चु उरुवि-राक्षसों की छाती में घुसकर; तच्चु निऩ्ऱऩ-गड़े रहे; कण्टऩर्-उनको देखकर; अ वळि तविर्न्तार्-उस मार्ग को बचाकर; कच्चुम् वाळुम्-कमरबन्द और तलवार; तम् काल् तॊटर्न्तु ईर्प्पऩ-उनके पैरों को काटती

रहती है; काणार्–उसकी भी सुध न लेते हुए; अच्चम् ॲऩ्पतु ओर् उरुवु कॊण्टाल् ॲऩ–मानो भय नामक वस्तु ने रूप लिया हो, ऐसा; अऴिवार्–वहीं रहकर मरते। ५०१

कुछ वीरों ने देखा कि मार्ग में सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के हाथ के प्रेरित भयानक शर राक्षसों के वक्षों में घुसकर वहीं गड़े रहे। वे उस मार्ग से नहीं गये। वे इतने भयभीत हो गये कि उनके कमरबन्द और उनकी तलवारें उन्हें निरन्तर काट रही थीं—इसकी भी उन्होंने सुध नहीं ली। वे बिल्कुल भय के मूर्त आकार थे। वे जहाँ-तहाँ रहकर मरने लगे। ५०१

❀ अनैय राहिय वरक्करै याण्डॊऴिड् कमैन्द
विनैय नीड्गिय मनित्तरै वॆरुवन्मि नॆन्ना
नितैयु यानॊन्ऱु निरप्पुव दुण्डॆन्ऩ निन्ड्रान्
तुनैयुम् वाम्बरित् तेरिनऩ् रूडणऩ् शॊन्नान् 502

तूटणऩ्–दूषण; तुनैयुम्–तीव्रगामी; वाम् परि—अश्व-जुते; तेरिनऩ्–रथ पर सवार; अनैयर् आकिय अरक्करै–वैसे भागते हुए राक्षसों को; आण् तॊऴिऱ्कु अमैन्त–पुरुष के कार्य योग्य; विनैयम् नीड्किय–काम जिनके पास नहीं, उन; मनित्तरै–मानवों से; वॆरुवल्मिऩ्–मत डरो; ॲऩ्ऩा–कहकर; याऩ् नितैयुम् ऒन्ऱु–मैं सोचता हूँ एक बात; निरप्पुवतु उण्टु–जो कहती है; ॲऩ–ऐसा; निन्ड्राऩ्–खड़ा होकर; चॊऩ्ऩाऩ्–बोला। ५०२

तब दूषण नामक सेनापति ने, जो तीव्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार था, भागनेवाले राक्षसों को रोकते हुए कहा कि हे वीरो! मत डरो, मत भागो। आखिर तुम्हारा शत्रु मनुष्य है। वह साहसपूर्ण वीरता युक्त (राक्षस) पुरुष का काम करने की शक्ति नहीं रखता। उससे मत डरो। फिर उसने वहीं खड़ा रहकर कहा कि मुझे तुमसे एक बात कहनी है। सुनो। ५०२

❀ वच्चै यामॆनुम् वयमनत् तुण्डॆन्ऩ वाऴुम्
कॊच्चै मान्दरैक् कोल्वळै महळिरुड् गूशार्
निच्च यमॆनुड् गवशत्ता निलैनिऱ्कु मन्ड्रेल्
अच्च मॆन्नुमी दारुयिरक् करुन्दुणै यामो 503

वच्चै आम् ॲऩुम् पयम्–अपमान योग्य यह भय; मनत्तु उण्टु ॲऩ वाऴुम्–मन में रखते हुए जो जीते हैं; कॊच्चै मान्तरै–उन क्षुद्र मनुष्यों से; कोल् वळै मकळिरुम्–सुन्दर चूड़ियाँ जो पहनती है, वे स्त्रियाँ भी; कूचार्–नहीं शरमाती हैं (आदर नहीं करतीं); निच्चयम् ॲऩुम्–धैर्य रूपी; कवचत्ताल्–कवच धारण करने से ही; निलै निऱ्कुम्–प्राण स्थायी रहेगा; अन्ड्रेल्–नहीं तो; अच्चम् ॲऩ्ऩुम् अतु–भय का यह गुण; आर् उयिरुक्कु–प्यारे प्राणों के लिए; अरुम् तुणै आमो–श्रेष्ठ सहायक होगा क्या। ५०३

भय अपयश है। उसके साथ रहनेवाले हैं मानव लोग। उनको

देखकर सुन्दर कंकणधारिणी स्त्रियाँ भी नहीं डरतीं, उनसे नहीं शरमातीं। और भी एक बात है। वीरता के कवच के अन्दर ही प्राण सुरक्षित रह सकते हैं। अब जो भीरुता तुम दिखा रहे हो, क्या वह तुम्हारे प्राणों का रक्षण कर सकेगी ? । ५०३

❀ पूव रावुवेऱ् पुरन्दरऩ् ऱन्नोडु पॉऩ्ऱा
मूव रोडुदाऩ् मुऩ्ऩिऩ्ऱु मुट्टिय मुनैयिल्
एव रोडिना रिराक्कदर् नुमक्किडैन् दोडुम्
देव रोडुहऱ् ऱऱिन्दुळि रोमनऩ् दिहैत्तीर् 504

पू अरावु वेल्–तीक्ष्ण किये हुए भाले वाले; पुरन्तरऩ् तऩ्ऩोटु–पुरन्दर के साथ और; पॊऩ्ऱा–अमर; मूवरोटु–त्रिदेवों के साथ; मुऩ् निऩ्ऱु मुट्टिय–सामने स्थित जो की; मुनैयिल्–उस युद्धभूमि में; इराक्कतर् एवर् ओटिऩार्–राक्षस कौन भागे; मऩम् तिकैत्तीर्–यहाँ चित्त-भ्रमित हुए; नुमक्कु इटैन्तु–तुमसे (हारकर) त्रस्त होकर; ओटुम्–जो भागते हैं; तेवरोटु–उन देवों से; कऱ्ऱु अऱिन्तु उळिर् ओ–सीख ले गये हो क्या । ५०४

तीक्ष्ण भालाधारी पुरन्दर से और अमर रहनेवाले त्रिदेव से भी युद्ध हुआ था न ? उनके सामने डटकर जिन राक्षसों ने युद्ध किया, उनमे कौन थे जो मैदान छोड़कर भागे ? कोई नहीं ! अब क्यो विकलमन हुए हो ? क्या यह गुण तुमने उन देवों से सीख लिया है जो तुमको देखकर भयभीत होकर भाग जाते हैं ? । ५०४

इङ्गॉर् माऩिडऱ् कित्तनै वीरर्ह ळिडैन्दीर्
उङ्गै वाळोडु पुहऴ्विऴ वूर्पुह वुवन्दीर्
कॊङ्गै मार्बिडैक् कुऴिप्पुरक् कळिप्पुरु कॊऴुङ्गण्
नङ्गै मार्हळैप् पुल्लुदि रोनल नुहर्वीर् 505

इङ्कु ऒर् माऩिटऱ्कु–यहाँ एक मनुज के सामने; इत्तऩै वीरर्कळ्–इतने वीर; इटैन्तीर्–हार मान गये; उम् कै वाळ् ऒटु–अपने हाथ की तलवार के साथ; पुकऴ् विऴ–यश को नीचे डालते हुए; ऊर् पुक उवन्तीर्–गाँव जाना पसन्द किया; नलम् नुकर्वीर्–सुख-भोग चाहते हो; कळिप्पु उऱु–मदमत्त; कॊऴुम् कण्–बड़ी आँखों की; नङ्कैमार्कळै–अपनी स्त्रियों को; कॊङ्कै–उनके स्तन; मार्पु इटै कुऴिप्पु उऱ–तुम्हारे वक्षों में दवें, ऐसा; पुल्लुतिरो–गले से लगाओगे क्या । ५०५

अकेले एक मनुज के सामने इतने राक्षस हार मानकर भागते हो ! युद्धस्थल में तलवारों के साथ अपने यश को गिराकर अपने स्थान में जा प्रविष्ट होना चाहते हो ! क्या सुख-भोग की इच्छा हो गयी और तुम जाकर उन मत्त और विशाल आँखों की अपनी स्त्रियों को इतना कसकर गले लगाना चाहते हो कि उनके पुष्ट स्तन तुम्हारे वक्षों में दव जायँ ? । ५०५

ꣳ शेंम्बु काट्टिय कण्णिणै पालॅनत् तेंळिन्दोर्
वेंम्बु काट्टिडै नुळैन्दिडम् वेंरिनुट्प् पायनुद
कोम्बु काट्टुदि रोलड मार्विडैक् कुळित्त
अम्बु काट्टुदि रोहुल मङ्गैयर्क्कु कम्मा 506

चेंम्बु काट्टिय-ताम्र (क्रोध से लाल) बनी; कण् इणै-आँखों के जोड़े; पाल् अॅन-दूध के समान; तेंळिन्दोर्-स्वच्छ हो गये, फीकी आँखों के हो गये; कुल मङ्गैयर्क्कु-तुम्हारे कुल की स्त्रियों को: वॅम्बु काट्टु इडै-विकट जंगल में; नुळै तॅळिन्-घुसकर दौड़ते समय; वॅरिन्-पीठ में; उट्ट पायनुद-चुभी रही; कोम्बु काट्टुतिरो-डालियाँ दिखाओगे; तट मार्बु इडै कुळित्त-(या) विशाल वक्ष में धुसे; अम्बु काट्टुतिरो-बाणों को दिखाओगे। ५०६

तुम्हारी आँखें तो लाल होना चाहिए! पर अब वे श्वेत दिखती हैं—डर से, क्रोध छोड़ देने से! जब तुम अपने-अपने आवास पर जाओगे तो अपनी पत्नियों को क्या दिखाओगे अपनी वीरता के चिह्नों के रूप में? उन टहनियों और शाखाओं को दिखाओगे जो घने वन के मध्य से भागते समय तुम्हारी पीठ में चुभ गयी थीं? या अपने वक्षमध्य घुसे शर को? । ५०६

एक्क मितिरत्त् मेन्नुणु ओविइन् मनिदर्
काफ्फुन् वॅञ्जमत् ताण्मैयय् अमरर्क्कु मरिदाल्
ताक्क रुमृयत् तुम्गुलत् तलैमहन् इळै
मूक्को उन्द्रिनुन् मुदुहोडुम् वीम्बळि मुयन्ड्रोर् 507

इकल् मनितर्क्कु आक्कुम्—शत्रु-मनुष्य से जो किया जाता है; वॅम् वमत्तु—उस भीषण युद्ध में; आण्मै-(तुम्हारा) पौरुष; अ अमरर्क्कुम्—उन अमरों के लिए भी; अरिनु-दुर्लभ है; इड्डु एक्कम् इतन् मेल् उण्डो-यहाँ हमारा सन्ताप इससे बढ़कर हो सकता है क्या; ताक्कु अरुम्-जिन पर प्रहार करना कठिन है, ऐसे; पुयत्तु-भुजाओं के स्वामी; उम् कुल तलॅमहन्-तुम्हारे कुल के उच्च नायक; तङ्गै-(रावण की) छोटी बहिन की; मूक्कु ओडु अन्ड्रि-नाक के साथ ही नहीं बल्कि; नुम् मुदुकु ओडुम्-तुम्हारी पीठ के साथ भी; तीम् पळि-लगनेवाला अपयश; मुयन्ड्रीर्-हो, इसका उपक्रम किया है तुमने। ५०७

आखिर शत्रु मनुज के साथ जो हो रहा, इस युद्ध में तुम ऐसा पौरुष (पौरुष-हीनता) दिखा रहे हो! यह देवों के लिए भी दुर्लभ है। हन्त! इससे अधिक दुखदायिनी बात क्या होगी? तुम कैसा कार्य कर रहे हो, उसका अर्थ क्या होगा? —मालूम है? तुम्हारे कुलनायक, जो अलभ्य भुजाबल रखते हैं, उन रावण की बहिन की नाक ही नहीं कटी, बल्कि तुम्हारी पीठ पर अपयश लगेगा! यही प्रयत्न तुम कर रहे हो। ५०७

ꣳ आर वाळ्क्कैयित् वणिहरा यमैदिरो वयिल्वेल्
वीर वाट्कोळु वेंम्मदुत् तुळुदिरो वेंड्रिप्पोर्त्

तीर वाळ्क्कैयिऱ् ऱेवरैच् चॅरुविडॅप् परित्त
वीर वाट्कैयी रॅङ्ङनम् वाळ्दिरो विळम्बीर् 508

वॅरि पोर्–उन्मत्तकारी युद्ध में; तीर वाळ्क्कैयिल्–साहसपूर्ण जीवन के कारण; तेवरै चॅरु इटै परित्त–देवों से युद्ध में छीनी हुई; वीर वाळ्–वीरता की तलवारें; कैयीर्–जिनमें हैं, ऐसे हाथों के राक्षसो; वाळ्क्कैयिन् वणिकराय्–जीवन में व्यापारी; आर–वनकर; अमैतिरो–रहोगे क्या; अयिल् वेल्–तीक्ष्ण भाले; वीर वाळ्–वीरता की सहायक तलवारें; कॉळु अॅत्त मट्टुत्तु–हल की फाल बनाकर भूमि में खोदकर; उळुतिरो–जोतनेवाले हो; ऍङ्ङनम् वाळ्तिरो–कैसे जीवन बिताओगे; विळम्पीर्–कहो। ५०८

उन्मत्तकारी युद्ध में अपूर्व धैर्य दिखाते हुए तुमने देवों के हाथों से उनकी तलवारें छीन ली थीं। ऐसी तलवारों के धारक! अब जीवन वणिकों का बिताने का विचार किया है? या तीक्ष्ण भालों और प्रतापी तलवारों को हल का फाल बनाकर भूमि की खेती करोगे और कृषक बनोगे? बताओ तो सही। ५०८

❀ ऍन्ऱु तानुन्द नॅरिहडऱ् चेनैयु मिऱैनीर्
निन्ऱु काण्डिरॅन् ऩॅडुञ्जिलै वलियॅन नेराच्
चॅन्ऱु ताक्किनन् ऱेवरु मरुळ्हॊण्डु तिहैत्तार्
नन्ऱु कात्तियॅन् ऱिरामनु मॅदिर् शॅल नडन्दान् 509

ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; नीर्–तुम लोग; इऱै–कुछ देर; निन्ऱु–खड़े होकर; ऍन् नॅटुम् चिलै–मेरे लम्बे धनुष का; वलि–पराक्रम; काण्टिर्–देखो; अॅत–समझाकर; तानुम्–स्वयं और; तन् ऍरि कटल् चेनैयुम्–उसकी तरंगाकुल समुद्र-सम सेना ने; नेरा चॅन्ऱु ताक्किनन्–श्रीराम के सामने जाकर उन पर आक्रमण किया; तेवरुम् मरुळ् कॊण्टु–देव भी चकराकर; तिकैत्तार्–भ्रमित हुए; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; नन्ऱु कात्ति ऍन्ऱु–अच्छा सावधान, बचा लो कहकर; ऍतिर् चॅल–उसके सामने; नटन्तान्–चलते आये। ५०९

दूषण ने यह वचन कहा। आगे यह बोला कि तुम मत भागो। ज़रा देर खड़े रहो और मेरे धनुष का अतुल प्रताप देखो। फिर वह आगे गया और उसकी सेना भी साथ गयी। उन्होंने जाकर श्रीराम पर आक्रमण किया। देवों को भी भय हो गया कि यह राक्षस वीर अनर्थ कर देगा। तब श्रीराम भी यह कहते हुए सामने आये कि ठहरो, अपनी रक्षा के लिए तैयार हो जाओ। सावधानी से अपनी रक्षा कर लो। ५०९

ऊड ऱुप्पुण्ड मॊय्बडैक् कैयॊडु मुयर्न्द
कोड ऱुप्पुण्ड कुञ्जरङ् गॊडिञ्जॊडु कॊडियिन्
काड ऱुप्पुण्ड कालिय ऱेर्हदिर्च् चालि
शूड ऱुप्पुण्ड वॅन्क्कळुत् तऱुप्पुण्ड तुरहम् 510

मॊय् पटै–सबल हथियार; ऊटु अऱुप्पुण्ट–बीच में कटे; कुञ्चरम्–हाथी; कै ऒटुम्–सूँड़ों सहित; उयर्न्त–उभर आये; कोटु–दाँतों के; अऱुप्पुण्ट–कटे हो गये; काल् इयल् तेर्–हवा के समान चलनेवाले रथ; कॊटिञ्चु ऒटु–पीठ के सामने के 'कोंडिञ्जु' नाम के हस्तावलम्ब के साथ; कॊटियिन् काटु–ध्वजाओं के वन के साथ; अऱुप्पुण्ट–कटे हो गये; तुरकम्–अश्व; कतिर् चालि चूटु–शालि-पौधों की बालें; अऱुप्पुण्ट ॲन्न–कट गई हों, ऐसे; कऴुत्तु अऱुप्पुण्ट–गर्दन-कटे हो गये। ५१०

उस युद्ध में बलवान हथियार कटे। हाथी की सूँड़ें और दाँत कटे और वे गिर गये। रथ ध्वस्त हुए। ध्वजाएँ और पीठ के सामने के भाग आदि कटे। अश्वों के सिर धान की बालियों के समान गले से काट दिये गये। ५१०

तुरुवि योडिन वुयिर्निलै शुडुशरन् दुरन्द
करुवि योडुवन् कच्चैयुङ् गवशमुङ् गऴल
अरुवि योडिन वॆन्निऴि कुरुदिया ऱलैप्प
उरुवि योडिन केडहत् तट्टोडु मुडलम् 511

चुटु चरम् तुरन्त–तापक शर (जो श्रीराम ने) छोड़े; उयिर् निलै–राक्षसों का मर्म स्थान; तुरुवि–ढूँढ़ते हुए; ओटिन–चले; करुवि ओटु–हथियारों के साथ; वन् कच्चैयुम्–दृढ़ बन्दो और; कवचमुम् कऴल–कवचों को उतारते हुए; अरुवि ओटिन ॲन्न–नदियाँ बहती हों जैसे; इऴि कुरुति आऱु–(राक्षसों के शरीरों से) निकलनेवाले रक्त की नदियाँ; अलैप्प–उनको इधर-उधर हिलातीं ऐसा; केटक तट्टु ऒटुम्–ढालों के थालों के साथ; उटलम्–शरीरों को भी; उरुवि ओटिन–निफरकर चले। ५११

श्रीराम से प्रेरित सन्तापक बाण राक्षसों के मर्मस्थल की खोज में चले। उनके लगते ही राक्षसों के हथियार कमरबन्द और कवच आदि कटकर गिर गये। वे अस्त्र ढालों को भेदकर और राक्षसों के शरीरों के आर-पार हो गये। उनके शरीर से निकलकर रक्त बहा और उसकी नदियाँ बहीं। उन नदियों में कवच, कमरबन्द आदि उतराये और इधर-उधर चालित हुए। ५११

आय्न्द कङ्गपत् तिरङ्गळपुक् करक्कर्दम् मावि
तोय्न्द तोय्विल पिऱैमुहच् चरञ्जिरन् दुमित्त
काय्न्द वॆञ्जरम् निरुदर्तङ् गवशमार् बुरुवप्
पाय्न्द वञ्जह रिदयङ्गळ् पिळन्दत्त पल्लम् 512

आय्न्त–चुनकर प्रेरित; कङ्क पत्तिरङ्कळ्–कंक-पत्र (चील के पंख से युक्त शर) बाण; पुक्कु–(राक्षसों के शरीरों के अन्दर) प्रविष्ट होकर; अरक्कर् तम् आवि तोय्न्त–राक्षसों के प्राणों में लगे; तोय्वु इल–ऐसा जो प्रविष्ट नहीं हुए वे; पिऱै मुक चरम्–अर्द्धचन्द्र बाणों ने; चिरम् तुमित्त–सिर खण्डित कर दिये; काय्न्त

वॅम् चरम्—उग्र और प्रचण्ड शर; निरुतर् तम्—राक्षसों के; कवच मार्पु—कवच-सज्जित वक्षों के; उरुव पाय्न्त—आर-पार गये; पल्लम्—अन्य शरों ने; वञ्चकर्—वंचकों के; इतयङ्कळ् पिळन्तत्त—हृदय को फोड़ दिया। ५१२

श्रीराम के कंकपत्र नाम के चील के पंख से युक्त तीक्ष्ण शर राक्षसों के मर्म पर जा लगे। ऐसे जो जाकर नहीं लगे, उन अर्द्धचन्द्र बाणों ने राक्षसों के सिरों को काट दिया। कुछ उग्र वाण जो तेजी से गये कवच सहित शरीरों को निफरकर बाहर आ गये। अन्य अस्त्रों ने उनके हृदय (वक्षस्थल) को विदीर्ण कर दिया। ५१२

तूड गन्विडु शरमवै यावैयुन् दुणिया
माड्डु निन्र्वर् वळङ्गिय पडैहळु माऱ्ऱा
आडल् कॉण्डन्न नळप्परुम् बॅरुवलि यरक्कर्
कूडि निन्रवक् कुरैहडल् वऱळ्वडक् कुरैत्तान् 513

तूटणन्—दूषण ने; विटु—जो चलाया; चरम् अवै यावैयुम्—उन सभी वाणों को; तुणिया—(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न करके; माटु निन्र्वर्—पास जो खड़े रहे; वळङ्किय पटैकळुम्—उनके चलाये हुए शरों को भी; माऱ्ऱा—लौटवा देकर; अळप्पु अरुम्—अगणित; पॅरु वलि अरक्कर्—बड़े बलवान राक्षस; कूटि निन्र—जिसमें मिले रहे; कुरै कटल्—उस गर्जनशील सागर-सम सेना को; वऱळ् पट—सुखाते हुए; कुरैत्तान्—मिटाकर; आटल्—विजय; कॉण्टनन्—प्राप्त की। ५१३

श्रीराम ने दूषण-प्रेरित सभी शरों के खण्ड-खण्ड कर दिये। पास जो रहे, उन राक्षसों के प्रेरित शरों को बेकार करके फिरा दिया। इस तरह गर्जनशील सागर के समान जो सेना राक्षसों से भरी थी उसको श्रीराम ने सुखा दिया। वे विजयी हो गये। ५१३

आर्त्तॆ ळुन्दनर् वानव रुवरै मरत्तो
डीर्त्तॆ ळुन्दन कुरुदियिन् पॆरुनदि यिरामन्
तूर्त्त शॆञ्जरन् दिशैतॊरुन् दिशैतॊरुन् दॊडर्न्दु
पोर्त्त वॆञ्जिनत् तरक्करैप् पुरट्टिन पुवियिल् 514

वानवर्—देव; आर्त्तु ऍळुन्तनर्—हल्ला मचा उठे; कुरुतियिन् पॅरु नति—रक्त की वड़ी नदियाँ; अरु वरै—बड़े पर्वतों को; मरत्तॊटु—पेड़ों के साथ; ईर्त्तु ऍळुन्तन—बहाते हुए वहीं; इरामन्—प्रभु श्रीराम ने; तूर्त्त—जो ठूँसे; चॆम् चरम्—उन उत्तम बाणों ने; तिचै तॊरुम् तिचै तॊरुम्—दिशा-दिशा में सर्वत्र; तॊटर्न्तु—(राक्षसों का) पीछा करके जाकर; पोर्त्त—उन दिशाओं को आच्छादित करते हुए जो रहे, उन; वॆम् चितत्तु अरक्करै—भयंकर, क्रुद्ध राक्षसों को; पुवियिल्—भूमि पर; पुरट्टिन—लुढ़का दिया। ५१४

देवगण इससे हर्षित हो गये और उन्होंने हल्ला मचाया। रक्त की वड़ी-बड़ी नदियाँ वड़े-बड़े पर्वतों को तरुओं सहित बहाते हुए वही।

श्रीराम लगातार शर चला रहे थे। वे हर दिशा में राक्षसों का पीछा करते गये और वहाँ भरे रहे क्रुद्ध राक्षसों के सिर कटकर भूमि पर लुढ़क गये। ५१४

तोऩ्ऱु माल्वरैत् तॊऱैयॆऩत् तुवऩ्ऱिय निणच्चे
ऱाऩ्ऱ पाळ्वयिऱ् ऱलहैयॆप् पुहऴ्वदे नमर्वेट्
टूऩ्ऱि ऩारॆला मुलन्दन रॊल्लैयिऩ् मडिन्दार्
काऩ्ऱ वव्वुयिर्क् कालनुम् वलित्तुमॆय् कवऩ्ऱाऩ् 515

तोऩ्ऱु माल् वरै–दृश्यमान वड़े पर्वतों के; तॊकै ऎऩ–समूहों के समान; तुवऩ्ऱिय–घने रूप से रहे; निण चेऱु–मांस-पंक; आऩ्ऱ–खूब खाकर जो रहे; पाळ् वयिऱ्ऱु अलकैयै–उन रिक्त-पेट वाले प्रेतों की; पुकऴ्वतु ऎऩ्–प्रशंसा क्या हो; अमर् वेट्टु–युद्ध चाहकर; ऊऩ्ऱिऩार् ऎलाम्–जो रहे वे सभी (राक्षस); ऒल्लैयिऩ्–जल्दी; उलन्तऩर्–मरे; काऩ्ऱ–(प्रेतों से पेट भर जाने के कारण जो) थूके गये; अ उयिर्–उन प्राणों को; कालनुम्–यम भी; वलित्तु–छीन ले जाते-जाते; मॆय् कवऩ्ऱाऩ्–श्रान्त-शरीर हो गया। ५१५

चर्बी के पर्वतों के समान ढेर वने रहे। उसको खाकर प्रेत वड़े ही मजे में रहे। अब तक रिक्तपेट रहे उनको मनमाने ढंग से खाने को मिल गया। उनकी प्रशसा क्या की जाय? उससे वढ़कर यम की स्थिति कहना अधिक युक्त होगा, क्योंकि उसी से युद्धभूमि की स्थिति का सच्चा रूप मिलेगा। युद्ध में मन लगाकर जो राक्षस आये वे सब मरे। उनको प्रेतों ने खाया और जो पेट के भर जाने से उनके द्वारा त्यक्त थे, उन जीवों को उठाते-उठाते यम का शरीर थक गया। ५१५

कळिऱु तेर्परि कडुत्तवर् मुडित्तलै कवन्दम्
ऒळिऱु पल्पडैत् तङ्गुलत् तरक्करद मुडलम्
वळिऱु शेर्निणम् विऱङ्गिय वडुक्कलिऩ् मीदिल्
कुळिऱु तेर्हडि दोट्टिनऩ् ऱूडणऩ् कोदित्ताऩ् 516

तूटणऩ्–दूषण; कळिऱु–हाथी; तेर्–रथ; परि–अश्व; कटुत्तवर्–(साथ लेकर) क्रोध के साथ जो लड़े; तऩ् कुलत्तु अरक्कर् तम्–अपने कुल के राक्षसों के; मुटि तलै–किरीटधारी सिरों; कवन्तम्–कबन्धों; ऒळिऱु पल् पटै–शोभायमान अनेक हथियारों; वॆळिऱु चेर् निणम्–श्वेत चर्बी; पिऱङ्किय–के बने; अटुक्कलिऩ् मीते–पर्वतों पर ही; कुळिऱु तेर्–शब्दायमान रथ को; कटितु ओट्टिऩऩ्–सवेग चलाता गया; कोतित्ताऩ्–क्रुद्ध रहा। ५१६

दूषण ने अब अपने रथ को आगे बढ़ाया। सामने हाथी, अश्व, राक्षसों के किरीटधारी सिर, उनके कबन्ध, अनेक उज्ज्वल हथियार श्वेत चर्बी आदि के पर्वतों के समान ढेर बने पड़े थे। क्रोध से उन्मत्त दूषण का रथ इन्हीं के ऊपर से चला और गरगराहट करता गया। ५१६

अऱङ्गोळ् ळादव राक्कैह् ळडुक्किय वडुक्कल्
पिऱङ्ग नीण्डऩ कणिप्पिल पॅरुङ्गडु विशैयाल्
कऱङ्गु पोऩ्ऱुळ दायिऩुम् बिणप्पॅरुङ् गडत्तिल्
इऱङ्गु मेऱुमत् तेर्पट्ट दियादॆऩ विशैप्पाम् 517

अऱम् कॊळ्ळातवर्–अधर्मी (राक्षसों) के; आक्कैकळ्–शरीर; अट्टुक्किय अट्टुक्कल्–जिनमें परतों के रूप में चुने गये थे, वे पर्वत; पिऱङ्क नीण्टऩ–सब जगह दिखाई देते हुए विस्तृत रूप से पड़े रहे; कणप्पिल–हिसाव में नहीं आये (अगणित रहे); पिणम् पॅरुम् कटत्तिल्–लाशों के उस बड़े वन में; पॅरुम् कटुम् विचैयाल्–अधिक वेग के साथ; करङ्कु पोऩ्ऱु–लटटू के समान; उळतु आयिऩुम्–घूमता रहा तो भी; इऱङ्कुम् एऱुम्–उतरता-चढ़ता गया; अ तेर् पट्टतु–उस रथ का हाल; यातु ॲऩ–क्या (था यह); इचैप्पाम्–कहें। ५१७

अधर्मी राक्षसों की असंख्य लाशें परतों में पहाड़ों के समान पड़ी रहीं। दूषण का रथ जब उन लाशों के वन-समान युद्धभूमि में लट्टू के समान वेग से घूमता हुआ चला तो भी चढ़ावों और उतारों के कारण उसे बहुत संकट उठाना पड़ा। उसकी क्या गति हुई, उसका क्या कहा जाय ? । ५१७

अरिदि ऩॅय्दिऩ ऩैयॆऩ्दु कॉय्युळैप् परियाल्
उरुळु माळिय दॊरुदनित् तेरिनऩ् मेहत्
तिरुळि नीङ्गिय विऩ्दुविऱ् पॊलिहिऩ्ऱ विरामऩ्
तॆरुळम् वार्हणैक् कूऱ्ऱॆवि राविशॆऩ् ऱॆऩ्ऩ 518

ऐ ऐऩ्तु–(पाँच के पाँच =) पचीस; कॊय् उळै परियाल्–सुन्दर रूप से कटे अयालों से भूषित अश्वों द्वारा; उरुळुम्–(खींचकर चलने से) चलनेवाले; आळियतु ऑरु तऩि तेरिऩऩ्–चक्रों के अनुपम रथ पर आरूढ़ दूषण; मेकत्तु इरुळिऩ् नीङ्किय–मेघों के कारण वने अन्धकार से छूटकर जो आया है; इऩ्तुविल्–उस इन्दु के समान; पॊलिकिऩ्ऱ–शोभायमान; इरामऩ्–श्रीराम के; तॆरुळुम्–साफ़; वार्–दीर्घ; कणै कूऱ्ऱु ऍतिर्–बाण रूपी यम के सामने; आवि चॆऩ्ऱु ऍऩ्ऩ–जीव पहुँचा हो, ऐसा; अरितिऩ् ऍय्तिऩऩ्–सायास पहुँचा। ५१८

उसके रथ में पचीस सुन्दर रूप से कटे (सजे) अयालों से भूषित अश्व जुते थे। उस पर आरूढ़ दूषण सायास श्रीराम के सामने, यम के सामने जानेवाले जीव के समान (अपने प्राण सौंपने के लिए) जा पहुँचा। श्रीराम मेघान्धकारनिवृत्त इन्दु के समान शोभायमान थे। ५१८

❀ शॆऩ्ऱ तेरैयुज् जिलैयुडै मलैयॆनत् तेर्मेल्
निऩ्ऱ तूडणऩ् ऱऩ्ऩैयु नेडियव नोक्कि
नऩ्ऱु नऩ्ऱुनिऩ् ऩिलैयॆऩ वरुळुरै नयऩ्दाऩ्
ऍऩ्ऱ कालत्तव् वॆय्यवऩ् पहळिमूऩ् ऱॆय्दाऩ् 519

नॆटियवऩ्–विक्रमी श्रीराम ने; चॆऩ्ऱ तेरैयुम्–आगत रथ को; चिलै उटै मलै ऎऩ्ऩ–धनुर्धर पर्वत के समान; तेर् मेल् निऩ्ऱ–रथ पर स्थित; तूटणऩ् तऩ्ऩैयुम्–दूषण को; नोक्कि–देखकर; निऩ् निलै नऩ्ऱु नऩ्ऱु–तुम्हारा धैर्य अच्छा है, अच्छा है; ऎऩ्ऩ–ऐसा; अरुळ् उरै नयन्ताऩ्–कृपा-वचन कहे; ऎऩ्ऱ कालत्तु–जब उन्होंने यह कहा, तब; अ वॆय्यवऩ्–उस दुराचारी ने; पकळि मूऩ्ऱु–शर तीन; ऎय्ताऩ्–चलाये। ५१९

विक्रमी श्रीराम ने सामने आये रथ को और उस पर आरूढ़, धनुर्धर भूधर के समान दूषण को भी देखा। उन्होंने वाहवाही की— "तुम्हारा धैर्य धन्य है, धन्य है।" जब वे कृपा के साथ यह वचन कह रहे थे, तभी उस दुराचारी दूषण ने तीन भयंकर शर लेकर उन पर चला दिये। ५१९

तूर वट्टवॆण् डिशैहळैत् तऩित्तऩि शुमक्कुम्
पार वॆट्टिऩो डिरण्डिनि लॊऩ्ऱुपार् पुरक्कल्
पेर विट्टवऩ् करिनुद लोडैयिऱ् पिऱङ्गुम्
वीर पट्टत्तिऱ् पट्टन विण्णवर् वॆरुव 520

तूर वट्ट–दूर, मण्डलाकार; ऎण् तिचैकळै–आठों दिशाओं को; तऩि तऩि चुमक्कुम्–अलग-अलग धारण करनेवाले; पार ऎट्टिऩ् ओटु–बली अष्ट (दिग्गजों) के साथ; इरण्टिऩिल् ऒऩ्ऱु–और (शेष व कूर्म में) एक (शेष) अपनी पादुकाओं को; पार् पुरक्क–लोकभरणार्थ; पेर विट्टवऩ्–जिन्होंने अलग भेजा था, उन (श्रीराम) के; करि नुतल् ओटैयिल्–गज के भाल पर शोभनेवाले पट्ट के समान; पिऱङ्कुम्–मनोरम रूप से विद्यमान; वीर पट्टत्तिल्–वीरोचित पट्टो पर; विण्णवर् वॆरुव–देवों को सिहरने देते हुए; पट्टन–(वे तीनों शर) लगे। ५२०

वे जाकर श्रीराम के भाल की वीरपट्टी पर लगे, जिसे देखकर देवगण सहम उठे। वह पट्टी गज के भाल पर सज्जित मुखपट्ट के समान शोभायमान थी। श्रीराम कौन थे ? वे स्वयं विष्णु भगवान थे, जिन्होंने अष्टदिग्गजो के भूभार-वहन के कार्य में सहायता देने के लिए अपनी पादुकाओं को अपने से अलग करके भेजा था। वे पादुकाएँ शेषनाग के अवतार थीं, जो भूमि के भारवाही दो (शेष और कूर्म) में एक (माना जाता) है। ५२०

❀ ऎय्द कालमुम् वलियुनऩ् ऱॆऩनिऩैन् दिरामऩ्
शॆय्द शेयॊळि मुऱुवलऩ् कडुङ्गणै तॆरिन्दान्
नॊय्दि नङ्गव नॊऱ्ऱिल्परित् तेर्बड नूऱिक्
कैयिल् वॆञ्जिलै यऱुत्तॊळिर् कवशमुङ् गडिन्दान् 521

इरामऩ्–श्रीराम ने; ऎय्त कालमुम्–(दूषण के) शर चलाने का काल; वलियुम्–और उसका बल; नऩ्ऱु ऎऩ्ऩ–श्लाघ्य, यह; निऩैन्तु–समझकर; चॆय्त चेय् ऒळि–लाल (सुन्दर) उज्ज्वल; मुऱुवलऩ्–हँसी के साथ; कटुम् कणै तॆरिन्ताऩ्–कठोर एक अस्त्र चुनकर चलाया; नॊय्तिऩ्–सुगम रीति से (या जल्दी); अङ्कु–वहाँ; अवऩ्–उसके; नॊऱ्ऱिल् परि–तीव्रगति अश्व के; तेर्–रथ को; पट नूऱि–तहस-नहस

करके; कैयिन् वॅम् चिलै अऱुत्तु–(उसके) हाथ में रहे धनुष को भी काटकर; ऑळिर् कवचमुम्–चमकदार कवच को भी; कटिन्तान्–तोड़ दिया। ५२१

तीनों शर श्रीराम के सिर की पट्टी पर लगे। श्रीराम मुस्कराये। उन्होंने मन में सोचा कि वाह! उसका शरप्रेषणकाल यानी उसके बाण की गति और उसका बल प्रशंसनीय है! फिर श्रीराम ने एक भयावह बाण चुन लिया और उससे उसके रथ को और उसमें जुते तीव्रगामी अश्वों को ध्वस्त किया; उसके हाथ में रहे भयंकर धनु को तोड़ा और उसके कवच को भी नष्ट कर दिया। ५२१

❀ तेव रार्त्तॅळ मुनिवर्ह डिशैतॉरुन् जिलम्बुम्
ओविल् वाळ्त्तॉलि कार्क्कडन् मुळक्कॅन्न वोङ्गक्
काव डाविदु वल्लैये तीयॅनक् कणैयॊन्
ड्रेवि नानव नॅयिऱुडै नॅडुन्दलै यिळन्दान् 522

तेवर् आर्त्तु ॲळ–देवों ने उठकर कोलाहल मचाया; मुनिवर्कळ्–मुनियों का; तिचै तॉऱुम्–दिशा-दिशा में; चिलम्पुम्–कहा हुआ; ओवु इल्–निरन्तर; वाळ्त्तु ऑलि–आशीर्वाद का स्वर; कार् कटल् मुळक्कु ॲन–काले समुद्र के गर्जन के समान; ओङ्क–भर उठा; वल्लैयेल्–समर्थ हो तो; इतु का अटा नी–इसको बचा रे तू; ॲन–कहकर; कणै ऑन्ऱु–एक बाण; एवितान्–चलाया; अवन्–उसने भी; ॲयिऱुटै नॅटुम् तलै–(भयंकर वक्र) दाँतों से युक्त अपना बड़ा सिर; इळन्तान्–गँवाया। ५२२

श्रीराम ने फिर एक अस्त्र छोड़ा। छोड़ते-छोड़ते उन्होंने ललकारा कि रे दुष्ट! हो सके तो तू बचा ले इसे। दूषण बेचारा क्या करता? उसने अपना सिर गँवाया। तब देव हर्षरव मचा उठे। चारों ओर ऋषियों ने साधुवाद और आशीर्वाद किया, जिसका स्वर काले समुद्र के गर्जन के समान सब ओर भर उठा। ५२२

❀ तम्बितलै यऱ्ऱपडि युन्दय रदन्शेय्
अम्बुपडै यैत्तुणि पडुत्तदु मऱिन्दान्
वॅम्बुपडै विऱ्कैविश यक्करन् वॅहुण्डान्
कॊम्बुतलै कट्टिय कॊलैक्करि कडुप्पान् 523

कॊम्पु तलै कट्टिय–जिसके दाँत, सिर जितना ऊँचा उगे हुए थे; कॊलै करि–उस भयंकर गज की; कटुप्पान्–समता करनेवाला; वॅम्पु पटै–भयंकर हथियार; विल्–धनुष को; कै–रखनेवाले हाथ का; विचय करन्–विजयी खर; तम्पि तलै अऱ्ऱ पटियुम्–भाई (दूषण) के सिर के कटने का प्रकार; तयरतन् चेय्–दशरथ के पुत्र के; अम्पु–बाणों का; पटैयै तुणि पटुत्ततुम्–उसकी सेना का नाश करना; अऱिन्तान्–जानकर; वॅकुण्टान्–नाराज हुआ। ५२३

विजयी खर को यह समाचार मिला। खर ऐसे खूनी गज के समान

भयंकर आकार का था, जिसके दाँतों के छोर सिर तक ऊँचे उगे थे। वह अपने हाथों में वड़े ही घातक हथियार और धनुप रखता था। उसके भाई दूषण का सिर कैसे कटा ? दशरथसुत, दाशरथी श्रीराम के वाणों ने राक्षस-सेना को कैसे हत कर मिटाया ? —यह उसने सुना। उसे अपार क्रोध हुआ। ५२३

❀ अन्दहन्नु मुट्किट वरक्करहड लोडुम्
शिनुदुरम् वयप्पुरवि तेर्दिशै परप्पि
इनुदुवै वळैक्कुमॅळि लिक्कुल मॅनत्तान्
वनुदुवरि विऱ्कैमद यानैयै वळैत्तान् 524

अन्तकनुम् उट्किट–यम को भी भयभीत करते हुए; अरक्कर् कटल् ओटुम्–राक्षसों की सेना के सागर के साथ; चिन्तुरम्–गजों; वय पुरवि–बलवान अश्वों; तेर्–रथों को; तिचै परप्पि–चारों दिशाओं में वितरित करके; इनुतुवै वळैक्कुम्–इन्दु को घेरनेवाले; ॲळिलि कुलम् ॲन–मेघ-समूह के समान; वरि विल्कै–बन्धन-युक्त धनुर्धर-हस्त; मत यानैयै–मत्तगज-सम (श्रीराम) को; तान् वन्तु–स्वयं आकर; वळैत्तान्–घेर लिया (खर ने)। ५२४

वह तुरन्त उठकर अपनी सेना के साथ श्रीराम के पास आया और उसने अपनी सेना के साथ उन्हें घेर लिया। उस सेना में पदाति वीरों का दल सागर के समान था। उसमें गज, वलवान अश्व, रथ आदि की सेनाएँ भी थीं। वह सेना चन्द्र को घेर आनेवाले मेघमण्डलों के समान चारों ओर फैली रही। खर ने अपने दल-वल सहित धनुर्धर, मत्तगज-सम श्रीराम को घेरा। ५२४

❀ अडङ्गलिल् कॉडुनुदॊळि लरक्करव् वनन्दन्
पडङ्गिळि वुऱप्पडि पडप्पल विदप्पोर्
कडङ्गलुळ् तडङ्गळिऱु तेर्परि कडावित्
तॊडङ्गिनर् नॅडुनुदहैयुम् वॅङ्गणै तुरन्दान् 525

अटङ्कल् इल्–अदम्य; कॉटुम् तॊळिल्–दुराचारी; अरक्कर्–राक्षसों ने; अ अनन्तन्–उस अनन्तनाग के; पटम् किळिवु उऱ–फनों को फाड़ते हुए; पटि पट–भूमि को मेटते हुए; पल वित–विविध; कटम् कलुळ्–मद बहानेवाले; तटम् कळिऱु–वड़े हाथियों; तेर्–रथों और; परि–अश्वों को; कटावि–चलाते हुए; पोर् तॊटङ्कितर्–युद्ध आरम्भ किया; नॅटुम् तकैयुम्–विक्रमी प्रभु ने भी; वॅम् कणै–भयंकर अस्त्र; तुरन्तान्–चलाये। ५२५

वे अदम्य दुराचारी राक्षस घोर युद्ध करने लगे। भूमि का धारण करनेवाले आदिशेषनाग का फन ही फट गया; भूमि भी ध्वस्त हो गयी ! वे राक्षस विविध वड़े-बड़े गज हाँकते आये। वे गज अपने गालों पर

मदनीर वहा रहे थे। वीर अश्वों के साथ रथ चलाते आये। विक्रमी श्रीराम ने वलवान अस्त्र छोड़े। ५२५

तुडित्तन कडक्करि तुडित्तन परित्तेर्
तुडित्तन मुडित्तलै तुडित्तन तोडित्तोळ्
तुडित्तन मणिक्कुडर् तुडित्तन तशैत्तोल्
तुडित्तन कळ्ळरुणै तुडित्तन विडत्तोळ् 526

कटम् करि तुटित्तन–(उनके लगने से) मत्तगज तड़पे; परि तेर्–अश्व-जुते रथ; तुटित्तन–उछले; मुटि तलै–किरीटधारी सिर; तुटित्तन–छटपटाये; तोटि तोळ्–वलयभूषित कन्धे; तुटित्तन–कटकर छटपटाये; मणि कुटर्–उनकी छोटी आँतें; तुटित्तन–फड़कीं; तचै तोल् तुटित्तन–मांससहित खालें फड़कीं; कळल् तुणै–पैरों के जोड़े; तुटित्तन–फड़के; इटम् तोळ्–बायें हाथ। ५२६

मत्तगज तड़पकर गिरे। रथ उछलकर गिरे और टूटे। अश्व छटपटाते हुए गिरे। किरीटधारी राक्षसों के सिर तड़पे। वलयधारी कन्धे लुढ़के। राक्षसों की छोटी आँतें फड़कीं। दोनों पैर फड़फड़ाये। बायें हाथ फड़के। (तुडित्तन = शरीर के अंग जब शरीर से कटकर अलग होते हैं, तव कुछ देर तक उछलते-गिरते, तड़पते हैं और छटपटाते हैं। या जीवित शरीर के अंगों का फड़कना भी कहते हैं।)। ५२६

❀ वाळिन्वनम् वेलिन्वनम् वार्शिलै वनन्दिण्
तोळिन्वन मॅन्र्रिवै तुवन्रुनिरु दप्पेर्
आळिन्वन निन्र्दनै यम्बिन्वन मॅन्नुम्
कोळिन् मळैवन्गुळ् विनिर्कुरै पडुत्तान् 527

वाळिन् वनम्–तलवारों का कानन (समूह); वेलिन् वनम्–वर्छियों का जंगल; वार् चिलै वनम्–दीर्घ धनुषों का वन; तिण् तोळिन् वनम्–सुदृढ़ कन्धों का समूह; अन्नवै तुवन्र–वे सव खूब मिले रहे (जिसमें), उस; निरुत पेर् आळिन् वनम्–राक्षसों के वीरों का जंगल (अनीक); निन्रतनै–जो सामने खड़ा था, उसे; अम्पिन् वनम् ऍन्नुम्–शरों का वन रूपी; कोळिन्–बलवान; मळैयिन्–वर्षा द्वारा; कुळुविनिल् कुरैपटुत्तान्–दल के दल श्रीराम ने काट गिराये। ५२७

युद्ध के मैदान में तलवारों की बहुलता थी। भालों का जंगल था। लम्बे धनुषों की भरमार थी। सबल कन्धों की विपुल भीड़ थी। इनसे भरी राक्षसों के पैदल वीरों की विशाल सेना थी। उसको श्रीराम ने शरों की वर्षा से ध्वस्त कर दिया। (तमिळ में वनम् = वन, कानन या जंगल किसी चीज़ की भीड़ या बड़े वृंद को द्योतित करता है।)। ५२७

तानुरुवु कॉण्डदरु मन्दॅरि शरन्दान्, मीनुरुवु मेरुवै विरैन्दुरुवु मेलाम्
वानुरुवु मण्णुरुवुम् वाळुरुवि वन्दार्, ऊनुरुवु मॅन्नुमि दुणर्त्तवु मुरित्तो 528

तान् उरुवु कॊण्ट तरुमम्–धर्मरूप श्रीराम के; तॆरि चरम् तान्–चुने हुए शर; मीन् उरुवुम्–नक्षत्रमण्डल को भेदकर जायँगे; मेरुवै विरैन्तु उरुवुम्–मेरु को तुरन्त भेद जायँगे; मेल् आन् वान् उरुवुम्–ऊपर के आकाश के आर-पार जायँगे; मण् उरुवुम्–भूमि को भी विद्ध कर जायँगे; वाळ् उरुवि वन्तार्–तलवार लेकर आनेवाले; ऊन् उरुवुम्–राक्षसों के शरीरों को निफर जायँगे; ॲन्नुम् इतु–यह बात; उणर्त्तवुम् उरित्तो–कहने अर्ह है क्या। ५२८

धर्मावतार श्रीराम के चुनकर प्रेषित शर तारामण्डलों को, मेरु को, आकाश को और भूमि को भी अनायास भेद चल सकते हैं। फिर तलवार-धारी राक्षसों के शरीरों को निफर सकते हैं—यह कहना क्या उनकी प्रशंसा करना होगा क्या ? । ५२८

अन्ऱिडर् विळैत्तवर् कुलङ्गळो डडङ्गच्
चॆन्ऱुलै वुऱम्बडि तॆरिन्दुहणै शिन्दा
मन्ऱिडै नलिन्दुवलि योर्हळॆळि योरैक्
कॊन्ऱनर् कवर्न्दपॊरु ळिऱ्कडिदु कॊन्ऱान् 529

अन्ऱु–तव; इटर् विळैत्तवर्–कष्ट देनेवाले राक्षसों को; कुलङ्कळ् ओटु अटङ्क–कुल के साथ एक दम; चॆन्ऱु उलैवु उऱुम्पटि–जाकर मिटाते हुए; तॆरिन्तु कणै चिन्ता–श्रीराम ने चुनकर अस्त्र छोड़े तो; मन्ऱु इटै–न्यायालय में; वलियोर्–शक्तिमन्त; ऍळियोरै–दीनों को; नलिन्तु–त्रास देकर; कॊन्ऱवर्–मारकर; कवर्न्त पॊरुळिल्–जो धन ग्रस लेते हे, उसकी (मिटने की) से भी; कटितु–अधिक तीव्र गति से; कॊन्ऱान्–मारा। ५२९

श्रीराम ने अस्त्र चुनकर उन राक्षसों पर चलाया जो इनको कष्ट देने आये थे और इस सकल्प के साथ चलाया कि राक्षसों का उनके कुलों के साथ नाश हो। समझिए कि कोई सवल आदमी गरीव आदमी को सताता है। न्यायालय में भी उसके विरुद्ध झूठा मामला चलाता है। अन्त में उसको मारकर उससे धन ग्रस लेता है। तो वह धन नहीं टिकता। वह बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है। उससे भी अधिक तेजी से राक्षसों की सेना को श्रीराम के वाणों ने मिटा दिया। ५२९

❀ कडुङ्गर नॆन्ऱप्पॆयर् पडैत्त कऴल्वीरन्
अडङ्गलु मरक्करऴि वुऱ्ऱिड वऴन्ऱान्
ऒडुङ्गलि लिणक्कुरुदि योदमदि नुळ्ळान्
नॆडुङ्गडलिन् मन्दर मॆनत्तमिय निन्ऱान् 530

ऒटुङ्कल् इल्–अक्षय; निण कुरुति ओतम् अतिल्–मांस और रक्त के सागर में; उळ्ळान्–जो रहा; नॆटुम् कटलिन्–वड़े (क्षीर-) सागर में; मन्तरम्–मन्दरपर्वत; ॲन–के समान; तमियन् निन्ऱान्–एकाकी जो खड़ा रहा; कटुम् करन् ॲन पॆयर् पटैत्त–प्रखर खर नामक विख्यात; कऴल् वीरन्–पायलधारी वीर; अरक्कर्

अटङ्कलुम्–सारे राक्षसों के; अळिवु उऱ्ऱिट–मर-मिटने पर; अळ्ळन्ड्रान्–क्रुद्ध हुआ। ५३०

सेना-विहीन खर अक्षय मांस और रक्त के सागर के बीच में क्षीरसागर-मध्य स्थित मेरु के समान खड़ा रहा। प्रखर और खर के नाम से विख्यात उस पायलधारी वीर ने देखा कि सारी सेना मिट गयी है। उसे अपार क्रोध हुआ। ५३०

❀ शॆङ्गणॆरि शिन्दवरि विऱ्पहळि शिन्दप्
पॊङ्गुहुरु दिप्पुणरि युट्पहैयु नॆञ्जन्
कङ्गमॊडु काहमिडै यक्कडलि ऩोडुम्
वङ्गमॆन लायदॊरु तेरिन्मिशै वन्दान् 531

चॆम् कण्–लाल आँखों से; ऎरि चिन्त–अंगारे से उगलते हुए; विल् पकळि चिन्त–धनुष से वाण छोड़ते हुए; पॊङ्कु कुरुति पुणरि–उमड़नेवाले रक्त का सागर और; उळ् पुकैयुम् नॆञ्चन्–धुआँ जिसमें था, ऐसे मन के साथ; कङ्कम् ओटु काकम् मिटैय–कंक के साथ कौए भी मिल आये; कटलिन् ओटुम् वङ्कम् ऎन्नल् आयतु–समुद्र में चलनेवाले पोतोपम; ऒरु तेरिन् मिचै–एक रथ पर; वन्तान्–आया। ५३१

उसकी लाल-लाल आँखों से अंगारे छूटे। धनुष ने शर छोड़े। रक्त सागर-सा उसके मन में उमग रहा था। उसके मध्य धुआँ उठ रहा था। खर समुद्र में चलनेवाले पोत के समान एक बड़े रथ पर सवार हो आया। उसके रथ के साथ कंक और काग उड़ते आ रहे थे। ५३१

❀ शॆऱुत्तिऱुदि यिऱ्पुवनि तीयवॆऴु तीयिन्
मऱत्तिन्वयि रत्तॊरुवन् वन्दणुहु मुन्दैक्
करुत्तमणि कण्डर्हड वुट्चिलै करत्ताल्
इऱुत्तवनुम् वॆङ्गणै तॆरिन्दन तॆदिर्न्दान् 532

इऱुतियिल्–युगान्त में; पुवनि तीय–भुवनों को जलाते हुए; चॆऱुत्तु ऎऴु–प्रचण्डता के साथ उठनेवाली; तीयिन्–आग के समान; मऱत्तिन् वयिरत्तु ऒरुवन्–वीरता और शत्रुता में अद्वितीय (खर); वन्तु अणुकुम् मुन्तै–आकर नियराये, इसके पहले ही; करुत्त मणि कण्टर्–नीलकण्ठ श्रीशिवजी के; कटवुळ् चिलै–दिव्य (त्र्यंबक नामक) धनु के; इऱुत्तवनुम्–भंजक ने भी; वॆम् कणै तॆरिन्तनन्–तापक अस्त्र लेकर; ऎतिर्न्तान्–सामना किया। ५३२

खर भुवनों का अन्त करनेवाली युगान्त अग्नि के समान क्रूरता और वैर में अद्वितीय था। उसके अपने पास पहुँचने के पूर्व ही नीलकण्ठ शिवजी के धनु के भंजक श्रीराम ने बाण चुन लिये। फिर वे युद्धसन्नद्ध हो उसके सामने आये। ५३२

तीयुरुव कालविशैय शॅव्वियन्न वॅव्वाय्
आयिरम् वडिक्कणै यरक्करपदि यॅय्दान्
तीयुरुव कालविशैय शॅव्वियन्न वॅव्वाय्
आयिरम् वडिक्कणै यिरामनु मरुत्तान् 533

ती उरुव–अग्नि के आकार के; काल विचैय–वायु की-सी गति के; चॅव्वि अन्न–श्रेष्ठ; वॅम् वाय्–भयंकर रूप से तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै–सहस्र तीक्ष्ण शर; अरक्कर् पति–राक्षसपति ने; ऍय्तान्–चलाये; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; ती उरुव–अग्नि रूपी; काल् विचैय–पवनगति; चॅव्वियन–श्रेष्ठ; वॅम् वाय्–तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै–सहस्र तीक्ष्ण बाण; अऱुत्तान्–चलाकर उनको काट दिया। ५३३

खर ने एक सहस्र शर चलाये। वे शर ज्वलन्त अग्नि के आकार के थे। पवनसम तेज चलनेवाले और तीक्ष्णमुखी थे। श्रीराम ने वैसे ही अग्नि रूपी, पवनगति, श्रेष्ठ और तीक्ष्णमुखी, एक सहस्र शर छोड़े और खर के अस्त्रों को काटकर मिटा दिया। ५३३

❀ ऊऴियॅरि यिऱ्कॉडिय पाय्पहऴि यॊन्बान्
एऴुलहि नुक्कुमॊरु नायहनु मॅय्दान्
शूऴ्शुडर् वडिक्कणै यवर्ऱॅदिर् तॊडुत्ते
आऴिवरि विऱ्करनु मन्नवै यरुत्तान् 534

ऊऴि ॲरियिल् कॉटिय–युगान्त की अग्नि से भी अधिक क्रूर; पाय् पकऴि ऑन्पान्–तेज चलनेवाले नौ अस्त्र; एऴ् उलकित्तुक्कुम् ऑरु नायकनुम्–सातों लोकों के श्रेष्ठ नायक श्रीराम ने; ऍय्तान्–खर पर चलाये; आऴि–मण्डलाकार; वरि विल्–बन्धनयुक्त धनु के; करनुम्–खर ने भी; अवर्ऱु ऍतिर्–उनके आगे; चुटर् चऴ्–ज्वलन्त; वटि कणै–तीक्ष्ण बाण; तॊटुत्ते–चलाकर; अन्नवै–उनको; अऱुत्तान्–काट दिया। ५३४

फिर सर्वलोकनायक श्रीराम ने प्रलयकालीन अग्नि के समान तापक और तेज चलनेवाले सात बाण खर पर चलाये। खूब मण्डलाकार झुके धनुष के धारक खर ने भी उनके विरुद्ध ज्वलन्त और तीक्ष्ण अस्त्र भेजकर उन्हें काट दिया। ५३४

❀ कळ्ळविनै मायमवर् कल्वियिन् विळैत्तान्
वळ्ळलुरु वैप्पहऴि मारियिन् मरैत्तान्
उळ्ळमुलै वुर्ऱमर रोडिन्न रॊळित्तार्
वॆळ्ळॆयि ऱिदळ्प्पिडऱ्ऱ वीरनुम् वॆहुण्डान् 535

कल्वियिन्–अपनी विद्या में; कळ्ळविनै–वंचनापूर्ण; माय अमर्–मायायुद्ध; विळैत्तान्–करके; वळ्ळल् उरुवै–उदार प्रभु श्रीराम के शरीर को; पकऴि मारियिन्–शर-वर्षा से; मऱैत्तान्–छिपा दिया (खर ने); अमरर्–देव; उळ्ळम् उळैवु उऱ्ऱु–

मन में व्याकुल होकर; ओटिन्नर्–भागे और; ऑळित्तार्–छिप गये; वीरत्तुम्–वीर श्रीराम ने; वॅळ् ऍयिऱु–श्वेत दाँतों से; इतळ् पिऱळ–अधर को दबाते हुए; वॅकुण्टान्–कोप किया। ५३५

खर माया-विद्या में निपुण था। उसने कपटपूर्ण मायायुद्ध करके श्रीराम के श्रीशरीर को शर-वर्षा से छिपा दिया। देव इसको देखकर व्याकुल हुए और दूर भागकर छिप गये। वीर श्रीराम ने भी दाँत पीसते हुए क्रोध का अवलम्बन किया। ५३५

❀ मुडिप्पॅ निन्ऱॅरु मॉय्हणै यालॅनत्, तॉडुत्तु निन्ऱुयर् तोळुऱ वाङ्गिनान्
पिडित्त तिण्शिलै पेरहल् वानिडै, इडिप्पि नोशै पडक्कडि दिऱ्ऱदे 536

इन्ऱु–अभी; ऑरु मॉय् कणैयाल्–एक सारयुक्त वाण से; मुटिप्पॅन् ऍन्न–समाप्त कर दूंगा, यह कहते हुए; तॉटुत्तु निन्ऱु–संधान करके; उयर् तोळ् उऱ–उन्नत कन्धे तक; वाङ्किनान्–डोर खींचा; पिटित्त तिण् चिलै–उनसे ग्रस्त वलवान धनुष; पेर् अकल् वान् इटै–अति विस्तृत आकाश में; इटिप्पिन् ओचै–वज्र का-सा नाद; पट–उठाते हुए; कटितु इऱ्ऱतु–शीघ्र टूट गया। ५३६

श्रीराम ने कहा कि अब एक ही सारयुक्त वाण चलाकर खर का काम तमाम कर दूंगा। उन्होंने शर संधान कर डोर को ऐसा खींचा कि धनुष का छोर उनके कन्धे को स्पर्श करे। बस, वह वलवान धनुष आकाश के वज्र के समान उच्च स्वर निकालते हुए उसी दम भग्न हो गया। ५३६

वॅऱ्ऱि कूऱिय वानवर् वीरन्विल्, इऱ्ऱ पोदु तुणुक्कमुऱ् ऱेङ्गिनार्
मऱ्ऱु वॅञ्जिलै यिन्मै मनक्कॉळा, अऱ्ऱ दालॅम् वलियॅन वञ्जिनार् 537

वॅऱ्ऱि कूऱिय वानवर्–(श्रीराम की) विजय के प्रशंसक देव; वीरन् विल् इऱ्ऱ पोतु–वीर श्रीराम के धनुष के टूटने पर; तुणुक्कम् उऱ्ऱु–डरकर; एङ्किनार्–दुखी हुए; मऱ्ऱुम् वॅम् चिलै इन्मै–अन्य किसी धनुष का अभाव; मनम् कॉळा–मन में सोचकर; ऍम् वलि अऱ्ऱतु–हमारा वल मिटा; ऍन–ऐसा; अञ्चिनार्–भयभीत हुए। ५३७

देव श्रीराम की विजय की प्रशंसा करते रहे। अब उन्होंने देखा कि श्रीवीरराघव का धनुष टूट गया है। कोई दूसरा धनुष नहीं है। वे निस्सहाय खड़े हैं। उन्हें संशय और डर हो गया कि अब हमारा बल गया ! । ५३७

❀ ऍन्नु मात्तिरत् तेन्दिय कार्मुहम्, चिन्न मॅन्ऱन् दनिमैयुञ् जिन्दियान्
मन्नर् मन्नवन् शॅम्मल् मरबिनाल्, पिन्नु ऱत्तन् पॅरुङ्गर नीट्टिनान् 538

ऍन्नुम् मात्तिरत्तु–उनके ऐसा कहते समय; मन्नर् मन्नवन्–राजाधिराज के; चॅम्मल्–पुत्र श्रीराम ने; एन्तिय कार्मुकम्–अपना गृहीत कार्मुक; चिन्नम् ऍन्ऱम्–टूट गया, इसकी ओर; तनिमैयुम्–अपनी (एकाकी) निस्सहाय स्थिति की;

चिन्तियान्–चिन्ता न करके; मरपिन्नाल्–पूर्व संकेत के अनुसार; तन् पॅरुम् करम्–अपना बड़ा हाथ; पिन् उऱ–पीछे की तरफ़; नीट्टिन्नान्–बढ़ाया। ५३८

देव इस प्रकार कह ही रहे थे कि उधर श्रीराम ने एक अद्‌भुत कार्य किया। दाशरथी ने किंचित भी चिन्ता नही की कि मेरा कोदण्ड टूट गया है और मैं विना हथियार के एकाकी खड़ा हूँ। उन्होंने अपना दीर्घ हाथ पीछे की ओर बढ़ाया। उसका पूर्वसंकेत का कोई अर्थ था। ५३८

❀ कण्डु निन्ऱु करुत्तुणर्न् दानॅन, अण्डर् नादन् ऱडक्कैयि न्नत्तुणै
पण्डु पोर्मऴु वाळियैप् पण्विन्नाल्, कॉण्ड विल्लै वरुणन् कॉडुत्तनन् 539

कण्टु निन्ऱु–उस स्थिति को देखते हुए खड़ा; करुत्तु उणर्न्तान् ॲन्न–उनका अभिप्राय समझ गया हो ऐसा; पण्टु–पहले; पोर् मऴु आळियै–युद्ध में परशु का प्रयोग करनेवाले परशुराम से; पण्पिनाल्–अपने सामर्थ्य से; कॉण्ट–गृहीत; विल्लै–धनु को; अत्तुणै–तब; वरुणन् तटक्कैयिल् कॉटुत्तनन्–वरुण ने श्रीराम के विशाल हाथ में दिया। ५३९

वरुण यह सब देखते हुए पीछे खड़े थे। पहले जब श्रीराम ने युद्धोपयोगी परशु के धारक परशुराम को हराया था और अपने सामर्थ्य से उनका धनुष ले लिया था, तब उन्होंने वह कार्मुक वरुण के पास दे रखा था। वरुण ने श्रीराम का मन जान लिया और वह धनु श्रीराम के हाथ में धर दिया। ५३९

❀ कॉडुत्त विल्लैयक् कॉण्ड निऱत्तिन्नान्
ॲडुत्तु वाङ्गि वलङ्गॉण् डिडक्कैयिऱ्
पिडित्त पोदु नॅऱ्िपिऴैत् तार्क्कॅलाम्
तुडित्त वालिडक् कण्णोडुन् दोळ्हळे 540

कॉटुत्त विल्लै–वरुण-दत्त धनु को; अ कॉण्टल् निऱत्तिन्नान्–उन मेघश्याम ने; ॲटुत्तु–लेकर; वलम् कॉण्टु वाङ्कि–जोर से झुकाकर; इट कैयिल् पिटित्त पोतु–जब अपने बायें हाथ में धरा, तब; नॅऱि पिऴैत्तार्क्कु ॲल्लाम्–दुराचारी सभी राक्षसों के; इटम् कण् ओटु तोळ्कळ्–बाईं आँखें और उनके साथ बाईं भुजाएँ; तुटित्तत–फड़क उठीं। ५४०

मेघवर्ण श्रीराम ने वरुण-दत्त धनु को हाथ में लिया। उसको झुकाकर अपने बायें हाथ मे धरा तो दुराचारी सभी राक्षसों की बायीं आँखें बायीं भुजाओं के साथ फड़क उठीं। ५४०

❀ एऱ्ऱि नाणिलै यामुन् नॅडुत्तदु, कूऱ्ऱि नारुङ् गुनिक्कक् कुनित्तॅदिर्
आऱ्ऱि न्नानव नाळियन् देर्शरस्, नूऱ्ऱि नानुण् पॊडिपड नूऱिनान् 541

अतु ॲटुत्तु–उस चाप को लेकर; इमैया मुन्–पलक मारती देर से पहले; नाण् एऱ्ऱि–प्रत्यंचा चढ़ाकर, कूऱ्ऱिन्नारुम् कुनिक्क–यमदेव को भी नाचने देते हुए;

कुनित्तु–उसको झुकाकर; अँतिर् आऱ्ऱिऩाऩ् अवऩ्–सामने लड़ने आगत उस (खर) के; आऴि अम् तेर्–चक्रसहित सुन्दर रथ को; चरम् नूऱ्ऱिऩाल्–सौ शरों से; नुण् पॉटि पट–बारीक चूर्ण करते हुए; नूऱिऩाऩ्–मिटा दिया। ५४१

श्रीराम ने पलक मारने के समय के अन्दर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ायी। शर संधान करके धनु को झुकाया। यम को आनन्द-नृत्य-मग्न करते हुए सौ अस्त्र चलाये। उनके सामने आये खर का सुन्दर पहियेदार रथ चूर-चूर हो गया। रथ ध्वस्त हो गया। ५४१

❀ ऍऩ्दि रत्तडऩ् देरिऴऩ् दाऩिऴिऩ्, दऩ्द रत्तिडै यार्त्तॅऴुन् दम्बॅल्लाम्
सुऩ्द रत्तऩि विल्लिदऩ् ऱोळॅऩुम्, मऩ्द रत्तिऩ् मऴैयिऩ् वऴङ्गिऩाऩ् 542

ऍऩ्तिर तटम् तेर्–यन्त्रचालित विशाल रथ; इऴन्ताऩ्–खोकर; इऴिन्तु–(खर) उतरकर; आर्त्तु–नारे लगाते हुए; अन्तरत्तु इटै–अन्तरिक्ष में; ऍऴुन्तु–उठ जाकर; अम्पु ऍलाम्–अपने सारे बाण; चुन्तर् तनि विल्लि तन्–सुन्दर कोदण्डपाणी के; तोळ् ऍनुम्–भुजाओं रूपी; मन्तरत्तिल्–मन्दरपर्वत पर; मऴैयिन्–वर्षा के समान; वऴङ्किऩाऩ्–बरसाया। ५४२

खर का रथ यन्त्र-चालित था। वह नष्ट हो गया। खर उतरा और अन्तरिक्ष में खड़ा हो गया। भयंकर गर्जन करते हुए उसने अपने पास रहे सभी अस्त्रों को अद्वितीय सुन्दर कोदण्डपाणी पर वर्षा के समान बरसा दिया। ५४२

❀ ताङ्गि निऩ्ऱ तयरद रामऩुम्, तूङ्गु तूणि यिडैच्चुडु शॅञ्जरम्
वाङ्गु हिऩ्ऱ वलक्कैयै वाळियाल्, वोङ्गु तोळॊडुम् पारिडै वीऴ्त्तिऩाऩ् 543

ताङ्कि निऩ्ऱ–उन अस्त्रों का सामना करते हुए जो खड़े रहे, उन; तयरतरामऩुम्–दशरथ के पुत्र, श्रीराम ने भी; तूङ्कु तूणियिटै–लटकनेवाले तूणीर में से; चुटु चॅम् चरम्–तापक और श्रेष्ठ बाण; वाङ्कुकिऩ्ऱ–लेनेवाले; वल कैयै–दक्षिण हस्त को; तोळ् ओटु–कन्धे के साथ; पार् इटै–भूमि पर; वीऴ्त्तिऩाऩ्–काटकर गिरा दिया। ५४३

श्रीराम ने उनको धैर्य के साथ धारण किया। फिर उन्होंने खर के उस हाथ को भुजमूल से काटकर गिराया जो पीठ पर बँधे तूणीर से अस्त्र ले रहा था। ५४३

❀ वलक्कै वीऴ्दलु मऱ्ऱैक्कै यालॅऱ्ऱि
उलक्कै वाऩत् तुरुमॅऩ वोच्चिऩाऩ्
इलक्कु वऱ्कुमुऩ् वऩ्द विरामऩुम्
विलक्कि नाऩीरु वॅङ्गदिर् वाळियाल् 544

वलम् कै–दक्षिण हस्त के; वीऴ्तलुम्–अलग हो गिरने पर; मऱ्ऱै कैयाल्–दूसरे हाथ से; वॅऱ्ऱि उलक्कै–विजयदायक मूसल को; वाऩत्तु उरुम् ऍऩ–आकाश

में वज्र के समान; ओच्चिनान्–(खर ने श्रीराम पर) फेंका; इलक्कुवऱ्कु मुन्वन्त इरामतुम्–लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने भी; ओरु वॆम् कतिर् वाळियाल्–एक भयकर ज्वलन्त बाण से; विलक्कितान्–उसको रोका। ५४४

खर का दक्षिण हस्त कटकर गिर गया। तो उसने बायें हाथ से एक विजयदायक मूसल उठाकर आकाश के वज्र के समान श्रीराम पर फेंका। लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने जाज्वल्यमान और संतापक एक अस्त्र से उसको बीच में रोक दिया। ५४४

❀ विराव रुङ्गडु वॆळ्ळॆयि ऱिऱ्ऱपिन्, अराव ळऩ्ऩ तनैयव नाऱ्ऱलान्
मराम रङ्गैयिन् वाङ्गि वन्दॆय्दिनान्, इराम नङ्गोर् तनिक्कणै येविनान् 545

अरा–एक सर्प; कटु विरा वरु–विष से पूरित रहनेवाले; वॆळ् ऍयिऱु–श्वेत दाँतों के; इऱ्ऱ पिन्–नष्ट हो जाने के बाद; अळऩ्ऱतु अनैयवन्–जैसे क्रुद्ध होता है, वैसा क्रुद्ध; आऱ्ऱलान्–शक्तिशाली (खर); मरामरम्–सालवृक्ष; कैयिल् वाङ्कि वन्तु–अपने हाथ में ले आकर; ऍय्तिनान्–पहुँचा; इरामन्–श्रीराम ने; अङ्कु–वहाँ; ओर् तनि–एक अद्वितीय; कणै–बाण; एविनान्–चलाया। ५४५

खर उस सर्प के समान बिफर उठा, जिसका विषैला श्वेत दाँत उखाड़ लिया गया हो। उस पराक्रमी खर ने एक सालवृक्ष ले लिया। उसके साथ जब वह लड़ने आया तो श्रीराम ने अप्रमेय एक शर छोड़ा। ५४५

❀ वरम रक्कन् पटैत्तलिन् मायैयिन्, उरमुडैत् तन्मै यालुल हेळ्ळैयुम्
परमु ऱुत्तिय पावत्ति नाल्वलक्, करमॆ नक्करन् कण्डमुऱ् ऱानरो 546

अरक्कन्–(रावण) राक्षस की; वरम् पटैत्तलिन्—वर-प्राप्ति से; मायैयिन्–वंचना से; उरम् उटै तन्मैयाल्–बलवान होने से; उलकु एळ्ळैयुम्–सातों लोकों को; परम् उऱुत्तिय–बहुत त्रस्त करनेवाले; पावत्तिनाल्—पापकृत्यों से; वलम् करम् ऍन–दाहिने हाथ के समान; करन्–खर; कण्टम् उऱ्ऱान्–खण्डित हुआ। ५४६

खर रावण का दाहिना हाथ था। अब वह मर गया। यह उसी रावण के किए पाप का फल था। रावण को वर प्राप्त थे और वह मायावी राक्षस था। वर के बल पर उसने अपने कपटी स्वभाव के कारण सातों लोकों पर सितम ढाया। उसका ही फल खर की मौत था। ५४६

❀ आर्त्तॆ ळुन्दन राडिनर् पाडिनर्, तूर्त्त मैन्दनर् वानवर् तूय्मलर्
तीर्त्त नुम्बॊलिन् दान्गदि रोन्ऱिशै, पोर्त्त मॆन्बनि पोक्किय पोलवे 547

वानवर्–सुरलोग; आर्त्तु ऍळुन्तनर्–हर्षरव कर उठे; आटिनर् पाटिनर्–नाचे-गाये; तूय् मलर्–पवित्र फूल; तूर्त्तु अमैन्तनर्–बरसाये और विश्रब्ध खड़े रहे; तीर्त्तनुम्–तीर्थ श्रीराम भी; कतिरोन्–सूर्य; तिचै पोर्त्त–दिशाओं को ढँके रहे; मॆन् पनि पोक्कियतु–नरम कुहरे को दूर कर शोभित रहे; ऍन्न–जैसे; पॊलिन्तान्–प्रभावान बने रहे। ५४७

खर की मृत्यु पर देव आनन्द का कोलाहल कर उठे। वे नाचे और गाये। पवित्र कल्पसुमन बरसाकर वे प्रसन्नचित्त खड़े रहे। तीर्थ श्रीराम भी दिशाओं में भरे कुहरे को दूर कर शोभनेवाले सूर्यदेव के समान प्रभावान दिखे रहे। ५४७

❀ मुनिवर् वन्दु मुऱैमुऱै मॉय्प्पुड़, इनिय शिन्दै यिरामनु मेहिनान्
अनिह वॅञ्जमत् तारुयिर् पोहत्तान्, तनियि रुन्द वुडलन्न तैयल्बाल् 548

मुनिवर् मुऱै मुऱै वन्तु–मुनिगण बारी-बारी से आये और; मॉय्प्पु उड़–घेरे खड़े रहे; इतिय चिन्तै–प्रसन्नचित्त; इरामतुम्–श्रीराम भी; अनिक वॅम् चमत्तु–राक्षस-सेना के साथ कठोर युद्ध में; तन् आर् उयिर् पोक–अपने प्यारे प्राणों को भेजकर; तनि इरुन्त–अलग रहे; उटल् तान् अन्त–शरीर ही के समान जो रहीं; तैयल् पाल्–उन देवी सीताजी के पास; एकितान्–पधारे। ५४८

ऋषियों ने दलों में आकर श्रीराम को घेर लिया। तब श्रीराम वहाँ से चले और देवी सीता के पास पधारे। देवी सीता निष्प्राण शरीर के समान थीं, क्योंकि उनके प्यारे प्राण राक्षसों के साथ कठोर युद्ध में चले गये थे। ५४८

❀ विण्णि नीङ्गिय वॅय्यवर् मेनियिल्, पुण्णि नीरुम् पॉडिहळुम् बोयुह
अण्णल् वीरनैत् तम्बियु मन्नमुम्, कण्णि नीरिनिऱ् पादङ् गळुविनार् 549

विण्णित् नीङ्किय–(वीरों के प्राप्य) स्वर्ग में जो गये; वॅय्यवर्–उन आततायी राक्षसों के; मेनियिल्–शरीर पर; पुण्णिन् नीरुम्–व्रणों से निकला रक्त-जल और; पॉटिकळुम्–धूलि; पोय् उक–पोंछते हुए; अण्णल् वीरतै–महिमावान वीर श्रीराम को; तम्पियुम् अन्नमुम्–उनके लघु भाई लक्ष्मण ने और हंसिनी (-सी सीताजी) ने; कण्णित् नीरिताल्–आँखों के जल से; पातम् कळुवितार–पाद-प्रक्षालन कराया। ५४९

राक्षस वीर मरकर स्वर्ग चले गये। उनके शरीरों पर लगे व्रणों से जो रक्त-जल बहा उससे श्रीराम का शरीर लिप्त हो गया। उनके शरीर पर धूलि भी जमी हुई थी। उनके लघु भ्राता ने और उनकी देवी हंसिनी-सी सीता ने श्रीराम को देखकर भावातिरेक से अश्रुजल बहाया, जिससे श्रीराम के श्रीचरण धुल गये। ५४९

❀ मूत्त मॉन्ऱिन् मुडिन्दवर् मॉय्पुणीर्, नीत्त मोडि नॅडुन्दिशै नेरुऱक्
कोत्त वेलैक् कुरलॅन्न वानवर्, एत्त वीर तिनिदिरुन् दानरो 550

मूत्तम् ऑन्ऱिन्–एक मुहूर्त में; मुटिन्तवर्–जो मरे; मॉय्–(उनका) एकत्रित; पुण्णीर् नीत्तम्–व्रण-जल रक्त का प्रवाह; कोत्त वेलै–मिश्रित समुद्रों के; कुरल् अॅन–घोष के समान; ओटि–बहकर; नॅटुम् तिचै–लम्बी दिशाओं के अन्तों से; नेर् उऱ–टकराकर मुड़ आया; वानवर् एत्त–देवों ने स्तुति की, इस प्रकार; वीरन्–रघुवीर श्रीराम; इतितु इरुन्तान्–ससन्तोष रहे। ५५०

एक ही मुहूर्त में सारे राक्षस मर गये थे। उनके शरीरों से इतना रक्त बहा कि सागर-सा बन गया और उससे सम्मिलित सागरों के गर्जन के समान गर्जन निकला। उसका प्रवाह सभी दिगन्त तक गया और टकराकर मुड़ आया। श्रीराम की विजय पर देव इठलाये। उन्होंने श्रीराम की स्तुति की। श्रीराम विश्रब्धमन और सुख के साथ रहे। ५५०

❀ इङ्गु निन्ऱ दुरैत्तु मिरावणन्, तङ्गै तन्गै वयिऱु तहर्त्तनळ्
कङ्गु लन्न करनैत्त ऴीइनैंडुम्, पोंङ्गु वेंङ्गुरु दिप्पुरण् डाळरो 551

इङ्कु निन्ऱतु–यहाँ जो स्थिति है; उरैत्तुम्–कहें; इरावणन् तङ्कै–रावण की बहिन ने; तन् कै–अपने हाथों से; वयिऱ तकर्त्तनळ्–अपना पेट पीट लिया; कङ्कुल अन्न–रात के समान काले; करनै–खर को; तऴीइ–आलिंगन करके; पोंङ्कु नेंटुम्–उमड़नेवाले अधिक; वेंम् कुरुति–गरम रक्त में; पुरण्टाळ्–लोटी। ५५१

अब हम (कवि) यहाँ जो हुआ वह कहें। रावण की बहिन ने अपने हाथों से अपना पेट पीट लिया। रात के समान काले खर का आलिंगन किया। उसके शरीर पर, वह निकलनेवाले अधिक रक्त के प्रवाह में लोटी। ५५१

❀ आक्कि नेन्मनत् ताशैयिव् वाशैयेन्, मूक्कि नोडु मुडिय मुडिन्दिलेन्
वाक्कि नालुङ्गळ् वाऴ्वैयु नाळैयुम्, पोक्कि नेन्कोडि येन्नॆऩ्ऱु पोयिनाळ् 552

मनत्तु–अपने मन में; आचै आक्किनेन्–(श्रीराम के प्रति) प्रेम किया; अ आचै–वह इच्छा; ॲन् मूक्कितोटु–मेरी नाक के साथ; मुटिय–चली जाय; मुटिन्तु इलेन्–ऐसा मरी नहीं; वाक्किनाल्–अपने वचनों से; उङ्कळ् वाऴ्वैयुम्–तुम लोगों का जीवन और; नाळैयुम्–आयु को; पोक्किनेन्–समाप्त कर दिया; कोटियेन्–निर्मम हूँ; ॲन्ऱु–कहती हुई; पोयिनाळ्–वहाँ से चली। ५५२

वह उठी। अपने को धिक्कारने लगी। मैंने श्रीराम से प्रेम किया। वह इच्छा मेरी नाक के साथ चली जाती तो कोई बात नहीं। वहीं तक बात समाप्त करते हुए मैं मरी नहीं। अपने वचनों से मैंने तुम्हें युद्ध में प्रेरित किया और तुम्हारा जीवन और आयु खतम हो गयी। बड़ी निर्मम निकली मैं। ऐसा विलाप करती हुई वह वहाँ से चली गयी। ५५२

❀ अलङ्गल् वेऱ्कै यरक्करै याशऱक्
कुलङ्गळ् वेरऱुप् पान्गुऱित् ताऴ्हडल्
कलङ्गु रैत्तॆऴु कालॆनक् कालिनाल्
इलङ्गै मानहर् नॊय्दिऱ्चॆन् ऱॆय्दिनाळ् 553

अलङ्कल् वेल् कै अरक्करै–माला से अलंकृत भाले हाथ में लिये रहनेवाले राक्षसों को; आचु अऱ–निर्मूल करते हुए; कुलङ्कळ् वेर् अऱुप्पान्–राक्षसकुलों की जड़ काटने का; कुऱित्तु–संकल्प लेकर; आऴ् कटल् कलम्–गहरे सागर मे पोत को;

कुडैत्तु अँळ्ळु—अस्त-व्यस्त कर उठनेवाले; काल् अँन्न—झंझे के समान; कालिताल्—पैदल चलकर; नोय्तिन्—आयास के साथ; इलङ्कै मा नकर् चेन्ऱु—लंकानगर जा; अँय्तिनाळ्—पहुँची। ५५३

वहाँ कहाँ रुकी? उसका आशय माला से अलंकृत भाले लिये रहनेवाले राक्षसों को निर्मूल करने का, उनके कुलों की जड़ ही खोद लेने का था! इसलिए वह आयास के साथ पैदल चली और लंका जा पहुँची। वह इस कार्य में गहरे समुद्र में फँसे पोत को हिला देनेवाली आँधी के समान लगी। ५५३

7. शूर्प्पणहै शूळ्च्चिप् पडलम् (शूर्पणखा-योजना पटल)

इरैत्तनॅडुम् बडैयरक्क रिऱन्ददनै मऱन्दनळ्बो रिरामन् ऱुङ्ग
वरैप्पुयत्ति निडैक्किडन्द पेराशै मतङ्गवर्र वाऱ्ऱा ळाहित्
तिरैप्परवैप् पेरहळित् तिरुनहरिऱ् कडिदोडिच् चीदै तन्मै
उरैप्पॅनॅनच् चूर्प्पणहै वरविरुन्दा निरुन्दपरि शुरैत्तु मन्नो 554

इरैत्त नॅडुम् पडै—शोर मचाते हुए जो चली उस सेना के; अरक्कर्—(खर मिलाकर) सभी वीर; इऱन्ततनै—मरे, वह बात; मऱन्ततळ्—भूल गई; पोर् इरामन्—युद्ध-चतुर श्रीराम के; तुङ्क—उन्नत; वरै पुयत्तिन् इडै—पर्वत-सम कन्धों में; किटन्त—बँधे रहे; पेर् आचै—गम्भीर प्रेम के; मतम् कवर्र—मन को व्यथित करने से; आऱ्ऱाळ् आकि—असहनशील बनकर; तिरै परवै—तरंग-भरा समुद्र; पेर् अकळि—बड़ी खाई के रूप में जिसे प्राप्त था; तिरु नकरिल् कटितु ओटि—उस श्रीनगर में सवेग दौड़कर; चीतै तन्मै उरैप्पॅन्—सीता का लक्षण बताऊँगी; ॲन्न—सोचकर; चूर्प्पणकै वर—शूर्पणखा के आते समय; इरुन्तान्—वहाँ विद्यमान; इरुन्त परिचु—श्रीरावण के रहने का प्रकार; उरैत्तुम्—कहेंगे। ५५४

शूर्पणखा अब यह बात भूल गयी कि खर और बड़ी धूम मचानेवाली उसकी सेना विनष्ट हो गयी। उसका मन युद्ध-कला-प्रवीण श्रीराम के उन्नत, पर्वतसम मनोरम कन्धों से आकृष्ट हो गया। श्रीराम पर उसका प्रेम उसे व्यग्र करने लगा। वह संयम नहीं रख सकी, काम-ताप सह नहीं सकी। उसने यह सोचा कि मैं लंका में, जिसके चारों ओर तरंगाकुल समुद्र ही खाई के रूप में पड़ा है और जो श्रीसमृद्ध है, शीघ्र जाऊँगी और रावण के पास सीता की स्थिति, उसके लक्षण आदि कहूँगी। जब वह उधर आयी तब लंकेश रावण किस ठाट के साथ शोभायमान था, उसका वर्णन करेंगे। ५५४

निलैयिला वुलहिनिडै निन्ऱनवुन् दिरिन्दनवु नॅडियि नीन्द
मलरिन्मे नान्मुहर्कुम् वहुप्परिय नुन्निप्पदोरु वरम्बि लाद
उलैविला वहैयिळैत्त दरुममॅन निनैन्दवॅला मुदवुन् दच्चन्
पुलन्नॅलान् दॅरिप्पदोरु पुन्नैमणिमण् डबमदनिऱ् पॊलिय मन्नो 555

उलकिन् इटै–इस भूमि में; निलै इला–नश्वर; निन्ऱतुवुम्–स्थावर; तिरिन्ततुवुम्–और जंगम; नॆऱियिन् ईन्त–यथाक्रम सृष्ट करनेवाले; मलरिन् मेल्–कमल पर आसीन; नान् मुकऩ्कुम्–चतुर्मुख को; वकुप्परिय–जिसकी सृष्टि नहीं हो सकती; नुन्निप्पतु ऒरु वरम्पु इलात–सूक्ष्म रूप से जिसकी सीमा माप करना कठिन है; तरुमम् अन्न–उस धर्म के समान; निनैन्त ऎलाम् उतवुम्–इच्छित सभी पदार्थ देनेवाले; तच्चन्–देवशिल्पी विश्वकर्मा के; पुलन् ऎलाम् तॆरिप्पतु–सारे सामर्थ्य का प्रदर्शक; पुनै–सुन्दर; उलैवु इला वकै–अमिट रूप से; इऴैत्त–रचित; ऒरु मणि मण्टपम् अतऩिल्–एक मणिमण्डप में; पॊलिय–शोभायमान रहते (रावण के)। ५५५

रावण एक मणिमण्डप में विराजमान था। वह मणिमण्डप देवशिल्पी विश्वकर्मा से बनाया गया था। वह विश्वकर्मा की सारी शक्ति का, शिल्पशास्त्र के गम्भीर और सूक्ष्म ज्ञान का पूर्ण परिचायक था। नश्वर विश्व और उसमें रहनेवाले स्थावर और जंगम —सभी जीवों के सृष्टिकर्ता, कमलवासी ब्रह्मा के लिए भी वह मण्डप अभाव्य था। वह धर्म के समान सभी मनोरथ पूरा करने की शक्ति रखता था। वह बड़ा ही सुन्दर था और अक्षय रूप से शोभायमान रहनेवाला था। ५५५

पुलियिनद ळुडैयानुम् पॊन्ऩाडै पुनैन्दानुम् पूवि नानुम्
नलियुमनन् तारल्लर् देवरिलिङ् गियावरिनि नाट्ट वल्लार्
मॆलियुमिडै तडिक्कुमुलै वेयिळन्दोट् चेयरिक्कण् वॆन्ऱि मादर्
वलियनॆडुम् बुलवियिनुम् वणङ्गाद महुडनिरै वयङ्ग मन्नो 556

पुलियिन् अतळ् उटैयानुम्–बाघम्बरधारी; पॊन् आटै पुनैन्तानुम्–पीताम्बरधारी; पूवितानुम्–और कमलवासी; नलियुम् मनत्तार्–(रावण के पराक्रम, वैभव आदि देख) आतंकित थे; अल्लर् तेवरिल्–वे ही नहीं तो अन्य देव; इङ्कु–यहाँ; यावर्–कौन; इनि नाट्टवल्लार्–अब इसकी समता कर सकते हैं; मॆलियुम् इटै—क्षीण-कटि; तटित्त मुलै–पीन स्तन; वेय् इळम् तोळ्–बाँस के समान और बाल कन्धे; चेय् अरि कण्–लाल डोरों से युक्त आँखें, इनसे शोभित; वॆन्ऱि मातर्–मनोहारिणी स्त्रियों के; वलिय नॆटुम् पुलवियितुम्–शान्त करने में कठिन और लम्बी रूठन के अवसर में भी; वणङ्कात–जो नहीं झुकती; मकुटम् निरै–मुकुटपंक्ति; वयङ्क–(के) शोभते। ५५६

(५५५वें पद से ५७६वें पद तक रावण की सभा में स्थिति का वर्णन है। पूर्णक्रिया पद आखिरी पद में आता है।) स्वयं बाघम्बर शिव, पीताम्बर विष्णु और कमलवासी ब्रह्मा उसके ठाट-बाट से उद्विग्न थे यानी उनका स्थान भी इसके सामने घटा हुआ लगता था। फिर कौन देव हैं जो इसकी समानता कर सकें? वह बड़ा अभिमानी था। क्षीण-कटि, पीन-स्तना, छोटे बाँस-सी भुजाओं और लाल डोरों के साथ मनोरम आँखों से भूषित और विजयशीला स्त्रियो की लम्बी और दुर्वह रूठन के अवसर पर भी उसके किरीट (सिर) नहीं झुकते थे। ऐसे (सिरों के) किरीटों की पंक्ति दृश्यमान करते हुए रावण विराजमान था। ५५६

वण्डलङ्गु नुदर्रिशैय वयक्कळिर्रिन् मरुप्पोडिय वडर्त्त पोर्रोळ्
विण्डलङ्ग ळुरवीङ्गि योङ्गुदय माल्वरैयिन् विळङ्ग मीदिल्
कुण्डलङ्गळ् कुलवरैयै वलम्वरुवा निरविहोळुङ् गदिर्शूळ् कर्रै
मण्डलङ्गळ् पन्निरण्डु नालैन्दाय्प् पोलिन्ददेत्त वयङ्ग मत्तो 557

वण्टु अलङ्कु नुतल्–भ्रमरावृत भालों के; तिचैय–दिशाओं में स्थित; वय–विजयशील; कळिर्रिन्–हाथियों के; मरुप्पु ओटिय–दाँतों को तोड़ते हुए; अटर्त्त–(उन गजों से) जिन्होंने टकराया; पोन् तोळ्–वे मनोरम कन्धे; विण् तलङ्कळ् उर–आकाश के लोकों में जा लगें, ऐसा; वीङ्कि–फूलकर, बढ़कर; ओङ्कु–उन्नत; उतय माल् वरैयिन्–उदयगिरि के समान; विळङ्क–दृश्यमान रहे और; मीतिल्–उन पर; कुण्टलङ्कळ्–कुण्डल; कुल वरैयै–मेरुपर्वत को; वलम् वरुवान्–परिक्रमा करनेवाले; इरवि–सूर्य के; कोळुम्–पुष्कल; कतिर् चूळ्–किरणसंकुल; कर्रै–पुंज; मण्टलङ्कळ्–मण्डल; पन्निरण्टुम्–बारह; नालु ऐन्ताय्–(चार के पाँच) बीस बनकर; पोलिन्ततु अॅन–प्रकाशमय विद्यमान रहते हों जैसे; वयङ्क–दृश्यमान रहे। ५५७

उसके कन्धों ने दिग्गजों के साथ युद्ध करते हुए उनके दाँतों को तोड़ा था। दिग्गज इतने मदमत्त थे कि हमेशा भ्रमर उनके भालों पर मँड़राते थे। ऐसे बलवान कन्धे बहुत ही दर्शनीय और फूलकर उन्नत उदयगिरि के समान शोभ रहे थे। कानों के कुण्डल, जो उनके कन्धों को स्पर्श करते हुए हिल रहे थे, किरण-पुंज बारह आदित्यों के समान प्रकाशमान थे जो बीस बन गये हों। ५५७

वाळुला मुळुमणियिन् वयङ्गोळियिन् रोहैवळङ्ग वयिरक् कुन्रत्
तोळॅलाम् बडिशुमत्तद विडवरविन् बडनिरैयिर् रोन्र् वान्र्
नाळॅलाम् पडैदयङ्ग नामनी रिलङ्गैयिर्रा नलङ्ग विट्ट
कोळॅलाङ् गिडन्ददॅन्डुज् जिरैयनन्न निरैयारङ् गुलव मन्नो 558

वाळ् उलाम्–उज्ज्वल; मुळु मणियिन्–बड़े-बड़े रत्नों की; वयङ्कु ओळियिन्–छिटकनेवाली कान्ति की; तोकै–राशि; वळङ्क–दृश्यमान रही; वयिर कुन्र् तोळ् अॅलाम्–वज्र गिरि-सम सब कन्धे; पटि चुमन्त–भू-भार-वाही; विट अरविन्–विषैले नाग के; पट निरैयिन्–फनों की पंक्ति के समान; तोन्र्–दिखाई दिये; नाम नीर् इलङ्कैयिल्–भयोत्पादक समुद्रजल सहित लंका में; तान् नलङ्क विट्ट–उससे आक्रान्त; कोळ् अॅलाम्–सब (नव) ग्रह; आन्र्–श्रेष्ठ; नाळ् अॅलाम्–सभी नक्षत्र; पुटै तयङ्क–पास-पास रहें, ऐसा; किटन्त–(बद्ध) पड़े रहे; नॅटुम् चिरै अन्त–बड़ी कारा के समान; निरै आरम्–रत्नमय हार; कुलव–शोभ रहा था। ५५८

रावण अनेक आभरण पहने हुए था। उनमें जड़ित रत्न बड़े-बड़े थे और बड़े ही जाज्वल्यमान थे। उनकी ज्योतियों की राशि शोभित थी। उसके वज्रगिरिसम कन्धे भूभारवाही शेषनाग के फनों के समान दर्शनीय थे (वे रतन उन फनों के ऊपर रहनेवाली मणियों के समान थे।)

उसने एक रत्नहार पहन रखा था, जो उस कारा के समान था जिसमें उसने ग्रहों और नक्षत्रों को हराकर डाल रखा था। यानी वह हार श्रेष्ठ और ज्वलन्त रत्नों का बना था। ५५८

❀ आय्वरुम् वॆरुवलि यरक्क रादियोर्
नायहर् नळिमणि महुड नण्णलाल्
तेय्वुऱत् तेय्वुऱप् पॆयर्न्दु शॆम्जुडर्
आय्मणिप् पॊलन्गळ लडिनिन् ऱार्प्पवे 559

आय्वु अरु—अकूत; पॆरु वलि—बहुत बल से युक्त; अरक्कर् आतियोर्—राक्षस आदि राजा लोगों के; नळि मणि मकुटम्—बहुमूल्य रत्न-जड़ित किरीट; नण्णलाल्—मिले आते हैं, इसलिए; तेय्वु उऱ तेय्वु उऱ—घिसते-घिसते; पॆयर्न्तु—फिर से; चॆम् चुटर्—लाल प्रकाश की; मणि पॊलन् कऴल्—मणिमण्डित पायल; अटि निन्ऱु आर्प्प—उसके पैरों में रहकर क्वणित हो रही थी। ५५९

राक्षस वीर आकर उसके पैरों पर सिर झुकाते थे। उन राक्षसों के बल का अनुमान भी नहीं हो सकता था। उनके मुकुटों के लगने से उसकी पायल घिसी हुई थी और उस पर जड़ित रत्न अधिक निखरे हुए हो गये थे। वह पायल उसके पैरों में क्वणित हो रही थी। ५५९

❀ मूवहै युलहिनु मुदल्वर् मुन्दैयोर्, ओविल रुदविय परिशि नोङ्गल्बोल्
तेवरु मवुणरु मुदलि नोर्दिशै, तूविय नरुमलर्क् कुप्पै तुन्ऩवे 560

मूवकै उलकित्तुम्—तीन प्रकार (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों के; मुतल्वर्—नायकों ने; मुन्तैयोर्—मैं पहले, मैं पहले करते हुए; ओविलर्—निरन्तर; उतविय—लाकर जो दिये; परिचिन्—उन उपहारों के; ओङ्कल् पोल्—पर्वत के समान; तेवरुम् अवुणरुम् मुतलिनोर्—देव, असुर और अन्यों के; तिचै—चारों दिशाओं से; तूविय—बरसाये; नऱुमलर्—सुगन्धित फूलों की; कुप्पै—राशियाँ; तुन्ऩ—ठस भरकर पड़ी रहीं। ५६०

तीनों लोकों के नायक लोग पहले आने की स्पर्द्धा करते हुए आकर निरन्तर उपहार देते रहे। उन उपहारों के पर्वत-से ढेर हो गये थे। देवों और राक्षसों द्वारा चारों ओर से बरसाये सुवासित फूलों के ढेर सर्वत्र पाये जाते थे। ५६०

❀ इन्ऩवो दिव्वऴि नोक्कु मॆन्ऩबदै, उन्ऩलर् करदलञ् जुमन्द वुच्चियर्
मिन्ऩविर् मणिमुडि विज्जै वेन्दर्हळ्, तुन्ऩिनर् मुऱैमुऱै तुऱैयिर् चुऱ्ऱवे 561

मिन्ऩ् अविर्—बिजली के समान चमकनेवाले; मणि मुटि—रत्नकिरीट-धारी; विज्जै वेन्तर्कळ्—विद्याधर राजा लोग; इन्ऩ पोतु—कब; इ वऴि नोक्कुम् ऎन्ऩपतै—इस तरफ़ देखेगा, यह; उन्ऩलर्—नहीं जानते; कर तलम् चुमन्त उच्चियर्—हाथ सिर पर रखे; तुन्ऩिनर्—समीपस्थ होकर; मुऱै मुऱै—यथाक्रम; तुऱैयिल्—अपनी-अपनी निर्दिष्ट सेवा में लगे; चुऱ्ऱ—घेरे रहे, ऐसा। ५६१

विद्याधर राजा लोग थे। उनके रत्नकिरीट विजली के समान चमकते थे। वे अपने हाथों को जोड़े अपने सिरों पर रखे हुए थे। वे हमेशा सतर्क रहते थे, क्योंकि उन्हें मालूम नहीं हो सका कि रावण किस समय किस ओर दृष्टि फेंकेगा। वे अपने-अपने स्थान पर निर्दिष्ट सेवा में लगे हुए, रावण की दृष्टि की भी प्रतीक्षा करते हुए चारों ओर पाये गये। ५६१

❀ मङ्गैयर् तिऱत्तोरु माट्रङ् गूरिनुम्, तङ्गळै यामॅनत् ताळुञ् जॅन्नियर्
अङ्गैयु मुळ्ळमुङ् गुविन्द वाक्कैयर्, शिङ्गवे ऱॅन्नत्तिऱर् चित्तर् शेरवे 562

चिङ्क एरु ॲन्त–पुरुषकेसरी के समान वलिष्ठ; चित्तर्–सिद्ध लोग; मङ्कैयर् तिऱत्तु–अपनी दासियों के प्रति; ओरु माट्रम् कूरिनुम्–(रावण) एक बात कहता तो भी; तङ्कळै आम् ॲन्न–अपने से कहता है, समझ; ताळुम् चॅन्नियर्–सिर झुकाते हैं (झुके सिर वाले होकर); अम् कैयुम्–हथेलियों; उळ्ळमुम्–और मन को जोड़कर; कुविन्त आक्कैयर्–शरीर झुकाकर (विनय की मुद्रा में); चेरवे–(रावण के चारों ओर) समीप खड़े रहे, ऐसा। ५६२

कभी सिंहसदृश रावण अपने पास स्थित किसी स्त्री से कोई बात कहता तो वहाँ रहे सिद्ध जाती के लोग सोचते कि वह हमारे प्रति ही कुछ कह रहा है! वे हाथ जोड़े। मन को एकाग्र किये और सिर झुकाये बहुत ही विनय के साथ स्थित रहे। 'सिंह-सदृश' सिद्धों पर भी लग सकता है। ५६२

अन्नव ऩमैच्चरै नोक्कि याण्डोरु
नन्मोऴि पहरिनु नडुङ्गुञ् जिन्दैयर्
ॲन्नैहोल् पणियॅन विऱैञ्जु हिन्नरर्
किन्नरर् पॅरुम्बयङ् गिडन्द नॅञ्जिनार् 563

किन्नरर्–किन्नर जाति के लोग; अन्नवन्–वह (रावण); अमैच्चरै नोक्कि–मन्त्रियों को देखकर; आण्टु ओरु नल् मोऴि–वह एक शिष्ट-वचन; पकरितुम्–कहता तो भी; नटुङ्कुम् चिन्तैयर्–कम्पित-मन होकर; पॅरुम्पयम् किटन्त–बहुत भयाक्रान्त; नॅञ्चिनार्–मन के साथ; ॲन्नै कोल् पणि–क्या सेवा है; ॲन्न–ऐसा; इऱैञ्चुकिन्नरर्–विनय करते। ५६३

किन्नर लोग पाये गये। अगर रावण अपने अमात्यों से कोई मधुर वचन भी कहता तो वे समझ लेते कि वह हमसे कुछ कह रहा है। बस, सिहर उठते। पास आकर पूछते कि कौन सी सेवा है जो बजा लानी है? यह अत्यन्त विनय के साथ पूछते। ५६३

पिरहर नॅडुन्दिशैप् पॅरुन्दण् डेन्दिय
करदलत् तण्णलैक् कण्णि नोक्किय

नरहिन रामॅन नडुङ्गु नाविनर्
उरहरुन् दम्मत्त मुलॅन्दु शूऴ्वे 564

उरकरुम्—नागलोकवासी; पिरकर नॅट्टुम् तिचै—(जीवों को) दण्ड जहाँ दिया जाता है, उस (दक्षिणी) दिशा के देव; पॅरुम् तण्ट्टु एन्तिय—बड़ा कालदण्ड-धारी; करतलत्तु—हाथ के; अण्णलै—राजा (धर्मदेवता) को; कण्णित् नोक्किय—अपनी आँखों के सामने जिन्होंने देखा हो, ऐसे; नरकर् आम् अॅत्त—नरकवास योग्य पापियों के समान; नटुङ्कुम् नावित्तर्—स्खलित-वचन (लड़खड़ाती-वाणी वाले) होकर; तम् मत्तम् उऴॅन्तु—मन में व्यथित होकर; चूऴ—घेरे खड़े रहे। ५६४

नागलोकवासी रावण के सामने इतना डरे हुए खड़े रहे जितना कि नरक-योग्य जीव उस यमलोक के देव दण्डधर यम को देखकर डरते हैं, जहाँ जीवों को दण्ड का विधान हो, दण्ड दिया जाता है। उनकी जिह्वाएँ लड़खड़ातीं; मन व्यग्र रहता। वे भी रावण को घेरे खड़े रहे। ५६४

❀ तिशैयुरु करिहऴैच् चॅऱ्ऱुत् तेवनुम्
वशैयुऱक् कयिलैयै मऱित्तु वानॅलाम्
अशैयुऱप् पुरन्दरऱ् कडन्द तोऴ्हळिन्
इशैयिनैत् तुम्बुरु विशैयि नेत्तवे 565

तिचै उऱु करिकळै—दिग्गजों को; चॅऱ्ऱु—हराकर; तेवनुम् वचै उऱ—परमेश्वर को भी अपयश दिलाते हुए; कयिलैयै मऱित्तु—कैलास को उखाड़कर; वान् ॲलाम् अचैवु उऱ—सारा आकाश कँपाते हुए; पुरन्तरन् कटन्त—पुरन्दर को जिन्होंने प्रताड़ित किया; तोऴ्कळिन् इचैयित्तै—उन कन्धों की प्रशंसा; तुम्पुरु—तुम्बुरु; इचैयिन् एत्त—गीत गाते (रहे, ऐसा रावण सभा में विराजमान था)। ५६५

रावण ने दिग्गजों का बल दमन किया था। कैलास पर्वत को उखाड़कर परमेश्वर शिव को भी अपयश दिलाया था। पुरन्दर को हराकर आकाश भर को उद्विग्न कराया था। ऐसे रावण के पराक्रम की प्रशंसा तुम्बुरु गा रहे थे। ५६५

❀ शेणुयर् नॅऱिमुऱै तिऱम्ब लिन्ऱियॆ
पाणिहळ् पणिशॅयप् पऴुदिल् पण्णिऱै
वीणैयि नरम्बिडै विळॅन्द तेमऱै
वाणियि नारदन् शॅवियित् वाक्कवे 566

चेण् उयर्—अत्युन्नत; नॅऱि मुऱै तिऱम्पल् इन्ऱियॆ—गति-विधि का उल्लंघन किये विना; पाणिकळ् पणि चॅय—ताल काल-निर्णय का काम करते है, ऐसा; पऴुतु इल्—त्रुटिहीन; पण् निऱै—राग-युक्त; वीणैयिन् नरम्पु इटै—वीणा की तन्त्रियों से; विळैन्त—उत्पन्न; ते मऱै—मधुर वेद-रूप संगीत; वाणियित्—मुख-स्वर के साथ; नारतन्—नारद ऋषि; चॅवियित् वाक्क—उसके बीसों कानों में भर रहे थे। ५६६

नारद अपनी वीणा से संगीतमय स्वर निकालते हुए ताल-मेल के साथ श्रुति-शुद्ध, लय-शुद्ध रीति से वेदसमान गन्धर्वगान कर रहे थे। रावण के बीसों कान उसे श्रवण कर रहे थे। ५६६

मेहमॅन् ऱुरुत्ति वीक्कि विण्णवर् तरुवुम् विज़्जै
नाहमुज़् जुरन्द तीन्दे नरुपुन लोड ळावित्
तोहैयर् तुहिलिड् ऱोय्क्कु मॅन्नबदोर् तुणुक्कत् तोडुज़्
जीहर महर वेलैक् कावलन् शिन्द मन्नो 567

मकर वेलै कावलन्–मकरालय के देवता वरुण; विण्णवर् तरुवुम्–देवों का कल्पतरु; विज़्चै नाकमुम्–विद्याधर लोक का सुरपुन्नाग; चुरन्त–(अपने फूलों से जो) ढलकते थे; तीम् तेन्–वह मधुर शहद; नऱु पुनलोटु–सुवासित जल के साथ; अळावि–मिश्रित करके; मॅकम् ॲन् तुरुत्ति वीक्कि–मेघ की मशक में भरकर; तोकैयर् तुकिलिल्–(रावण के पास रहनेवाली) स्त्रियों के वस्त्र; तोय्क्कुम्–गीला हो जायगा; ॲन्नपतोर् तुणुक्कत्तोटुम्–इस डर से (अत्यन्त सावधानी के साथ); चीकरम्–जल-सीकर; चिन्त–छिड़का रहे थे। ५६७

मकरालय के अधिदेवता वरुण मण्डप में जल छिड़कने का कार्य कर रहे थे। कैसा जल था ? उत्तम जल में आकाश के कल्पतरु से झरनेवाला शहद और नागलोक के सुरपुन्नाग तरुओं से मिलनेवाला शहद मिला हुआ था। मेघ की मशक में उसे भरकर सीकरो में छिड़कता था। यह भय लगा हुआ था कि कहीं रावण की नारियों के वस्त्र पर पड़ जायगा तो रावण का कोप अनर्थ कर देगा। इसलिए वहुत सावधानी से वे जल की बौछार कर रहे थे। ५६७

नरैमलर्त् तादुन् देनु नळिनॅडु महुड कोडि
मुऱैमुऱै यऱैयच् चिन्दि मुरिन्दुहु मणियु मुत्तुम्
तऱैयिडै युहाद मुन्नन् दाङ्गिनन् ऱळुवि वाङ्गित्
तुऱैदोऱुन् दोंडर्न्दु निन्ऱु समीरणन् ऱुडैप्प मन्नो 568

चमीरणन्–वायुदेव; नऱै मलर् तातुम्–सुगन्धपूर्ण पुष्पों का पराग; तेऩुम्–और शहद; नळि–वड़े; नॅटु–लम्बे; मकुट कोटि–किरीट-कोटि के; मुऱै मुऱै अऱैय–वार-वार टकराने से; चिन्ति मुरिन्तु उकु–टूटकर जो गिरे, वे; मणियुम् मुत्तुम्–रत्न और मोती; तऱैयिटै–भूमि पर; उकात मुन्नम्–गिरे, इसके पहले ही; ताङ्किनन्–पकड़कर; तळुवि वाङ्कि–समेट लेकर; तुऱै तोऱुम् तोटर्न्तु निन्ऱु–हर स्थान में निरन्तर खड़े होकर; तुटैप्प–झाड़कर शुद्ध कर रहे थे। ५६८

वायुदेव का क्या काम था ? सुवासित पुष्पों से मकरन्द चूते थे। उनसे शहद भी गिरता था। रावण से भेंट करने जो आये उनके किरीटों के आपस में टकराने से रत्न और मोती अलग होकर गिरते थे। समीरण

का काम था कि उनको भूमि पर गिरने से पहले ही ग्रहण कर ले। वे सर्वत्र रहकर बुहारने का काम करते रहे। ५६८

मिऩ्ऩुडै वेत्तिरक् कैयर् मॅय्बुहत्, तुऩ्ऩिडु कञ्जुहत् तुहिलर् शोर्विलाप्
पॊऩ्ऩॊडु वॆळ्ळियप् पुरन्द रादियर्क्, किऩ्ऩियऩ् मुऱैमुऱै यिरुक्कै यीयवे 569

पॊऩ् ऒडु–वृहस्पति के साथ; वॆळ्ळि–असुर-गुरु शुक्र; मिऩ् उटै–चमकीले; वेत्तिर कैयर्–वेत्रपाणी होकर; मॅय् पुक–शरीर जिसमें प्रविष्ट हो, ऐसा; तुऩ्ऩिटु–सिये हुए; कञ्चुक तुकिलर्–कंचुक की पोशाक से अलंकृत; चोर्वु इलर्–बिना आलस्य के; पुरन्तरातियर्क्कु–पुरन्दरादि देवता लोगों को; इऩ् इयल्–मधुर व्यवहार के साथ; मुऱै मुऱै–उचित प्रकार से; इरुक्कै ईय–आसन की व्यवस्था कर रहे थे, ऐसा। ५६९

स्वर्णदेव वृहस्पति, शुक्लदेव शुक्राचार्य दोनों कंचुकी पहने हुए वेत्र हाथ में लेकर आलस्य त्यागकर पुरन्दर आदि को उनका योग्य स्थान दिखा रहे थे। आगतों का स्वागत करना और उनके आसन की व्यवस्था करना उनका काम था। ५६९

शूलमे मुदलिय तुऱन्दु शुऱ्ऱिय, शेलैयाऱ् चॅय्यवाय् पुदैत्त शेङ्गैयऩ्
तोलुडै नॆडुम्बणै तुवैक्कुन् दोऱॆलाम्, कालऩिऩ् ऱिशैक्कुनाट् कडिहै कूऱवे 570

कालऩ्–कालदेव (यम); चूलमे मुतलिय तुऱन्तु–शूल आदि त्यागकर; चुऱ्ऱिय चेलैयाल्–अपने शरीर पर लपेटे वस्त्र के छोर से; चॅय्य वाय्–लाल मुख को; पुतैत्त–जो ढक रहे थे; चॆम् कैयऩ्–उन अरुण हाथों के साथ; तोल् उटै नॆटुम् पणै–चमड़ामढ़े बड़े ढोलो के; तुवैक्कुम् तोऱु ऎलाम्–पिटते हर समय; इचैक्कुम् नाळ् कटिकै–निर्दिष्ट दिन की घड़ी; वन्तु कूऱ–सभा में आकर बता रहे थे। ५७०

यम का क्या हाल था ? ढोल बजाकर घड़ी बतायी जाती। यम का काम था कि वे अन्दर आते और अपने वस्त्र से मुख ढाँपे विनय के साथ घड़ी बतावें। समय-सूचक का काम उनका था। वे अपना शूल आदि त्याग चुके थे। ५७०

नयङ्गिळर् नऱुविरै नाऩ नॆय्यळाय्
वियऩ्गरुप् पूरमॆऩ् पञ्जिऩ् मीक्कॊळीइ
कयङ्गळिऩ् मरैमलर्क् काडु पूत्तॆऩ
वयङ्गॆरिक् कडवुळुम् विळक्क माट्टवे 571

वयङ्कु–प्रकाशमान; ऎरि कटवुळुम्–अग्निदेव ने भी; नयम् किळर्–श्रेष्ठतायुक्त; नऱु विरै–सुवासपूर्ण; नातम्–कस्तूरी को; नॆय् अळाय्–घृत से मिलाकर; वियऩ् करुप्पूरम्–उत्तम कर्पूर को; मॆऩ् पञ्चिल् मी–नरम रुई पर रख के; कॊळीइ–(उस बाती को) जलाकर; कयङ्कळिल्–तालाबों में; मरै मलर् काटु–कमलपुष्प-कानन; पूत्तत्त–फूले, जैसे; विळक्कम् माट्ट–दिये जलाये। ५७१

प्रकाशमान अग्निदेव पर दीया जलाने का जिम्मा था। उन्होंने अनेक दीये जलाये, जिनका तेल श्रेष्ठ और सुगन्धित कस्तूरी और उत्तम घृत का मिश्रण था और कर्पूर को रुई में रखकर उसकी बातियाँ जलायी गयीं। उन्होंने उन्हें जलाशयों पर विकसित कमलों के समान सजाए। ५७१

अदिशय मळिप्पदर् करुळ रिन्दुनल्, पुदिदलर् कर्पहत् तरुवुम् बॉय्यिलाक्
कदिर्नॅडु मणिहळुङ् गरुवै यात्गळुम्, निदिहळु मुरैमुरै निन्रु नीट्टवे 572

नल् पुतितु अलर्–अच्छे और ताजा फूले हुए; कर्पक तरुवुम्–कल्पतरु और; पॉय् इला–अभंग; नॅटु कतिर्–लम्बी ज्योति से युक्त; मणिकळुम्–(चिंतामणि आदि) रत्न; करवै आन्कळुम्–दुधारू गायें (कामधेनु); नितिकळुम्–(शंख आदि नव-) निधियाँ; अतिचयम् अळिप्पतर्कु–रावण को विस्मयगर्भित मनोरंजन करने के लिए; अरुळ् अरिन्तु–उसकी कृपा की ताक में रहकर; मुरै मुरै–अपने-अपने क्रम से; निन्रु–खड़ा होकर; नीट्ट–अपना उपहार बढ़ातीं, ऐसे संभ्रम के साथ। ५७२

नवविकसित फूलों के साथ कल्प, संतान, मन्दार, पारिजात, हरिचन्दन के तरु, अमन्द और लम्बी ज्योतियुक्त चिन्तामणि, दुधारू कामधेनु आदि गायें, शंख, (पद्म, महापद्म, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, हीरे आदि) निधियाँ —ये सब रावण को प्रसन्न करने के लिए बारी-बारी से अपना-अपना उपहार वढ़ा रही थीं। तब। ५७२

कुण्डल मुदलिय कुलङ्गॊळ् पेरणि, मण्डिय पेरॊळि वयङ्गि वीशलाल्
उण्डुहॊ लिरविनि युलह मेळिनुम्, ऎण्डिशै मरुङ्गिनु मिरुळिन् ऱॆन्नवे 573

कुण्टलम् मुतलिय–कुण्डल आदि; कुलम् कॊळ् पेर् अणि–उत्तम और बहुमूल्य आभरणों की; मण्टिय–परिपूर्ण; पेर् ऑळि–बडी कान्ति; वयङ्कि वीचलाल्–भरपूर फैलती है, इसलिए; उलकम् एळिनुम्–सातों लोकों में; इनि–अब; इरवु उण्टु कॊल्–रात भी है क्या; ऎण् तिचै मरुङ्किनुम्–आठों दिशाओं में सर्वत्र; इरुळ् इन्रु–अन्धकार नहीं है; ऎन्न–कहा जाय, ऐसा। ५७३

रावण के कर्ण-कुण्डल और अन्य श्रेष्ठ आभरण घनी कान्ति बिखेर रहे थे। वह प्रकाश सर्वत्र फैला हुआ था। इस वजह से ऊपर के और नीचे के सातों लोकों में क्या कभी रात हो सकेगी? आठों दिशाओं में कहीं अन्धकार का नाम तक नहीं था। ५७३

कङ्गैये मुदलिय कडवुट् कन्नियर्, कॊङ्गैहळ् शुमन्दिडै कॊडियि नॊल्हिडच्
चॆङ्गैयि नरिशियुम् मलरुञ् जिन्दिनर्, मङ्गल मुरैमॊळि कूरि वाळ्त्तवे 574

कङ्कैये मुतलिय–गंगाजी आदि; कटवुळ् कन्नियर्–(नदी की) देव-कन्याएँ; कॊङ्ककळ् चुमन्तु–स्तनों को ढोने से; इटै–कमर को; कॊटियिन् ऑल्किट–लता के समान झुकने देते हुए; चॆम् कैयिन्–लाल (नरम और सुन्दर) हाथों से; अरिचियुम् मलरुम्–अक्षत और फूल; चिन्तितर्–(रावण पर) चढ़ाकर; मङ्कल मुरै मॊळि कूरि–मंगलाशासन के वाक्य कहकर; वाळ्त्त–'जय जीव' कहतीं, ऐसा। ५७४

गंगाजी आदि दिव्य जल-कन्याएँ, जिनकी कमरें भारी स्तनों के बोझ के कारण लचक-लचक जाती थीं, अपने लाल (मनोरम और कोमल) हाथों से चावल और फूल रावण पर चढ़ाकर मंगलाशासन करके स्तुति के गीत गा रही थीं। ५७४

ऊरुविर् ऱोऩ्ऱिय वुरुप्प शिप्पॅयर्क्, कारिहै यार्मुदऱ् कलाप मञ्ञैबोल्
वार्विशिक् करुवियोर् वहुत्त पाणियिऩ्, नारिय रुनड नडिप्प नोक्किये 575

ऊरुविल् तोऩ्ऱिय–श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न; उरुप्पचि पॅयर्–उर्वशी नाम की; कारिकैयार् मुतल्–सुरबाला आदि; नारियर्–नारियाँ; कलाप मञ्ञै पोल्–कलापी मोरों के समान; वार् विचि–फीते से कसे; करुवियोर्–मृदंग आदि के वादकों के; वकुत्त पाणियिऩ्–वादन से निर्दिष्ट ताल-लय में; अरु नटम् नटिप्प–श्रेष्ठ नाच नाचतीं, तब। ५७५

वहाँ मृदंग आदि बाजे बज रहे थे। उन्हीं के ताल-मेल में श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न उर्वशी आदि अप्सराएँ नाच रही थीं। उसका रसास्वादन करते हुए— (नर और नारायण बदरिकाश्रम में तपस्या कर रहे थे। देवेन्द्र ने उनके तप को भंग करने के लिए अप्सराओं को भेजा। श्रीमन्नारायण ने अपने ऊरु से उर्वशी को पैदा किया। उसका सौन्दर्य देखकर अप्सराएँ लज्जित होकर चली गयीं।)। ५७५

इरुन्दन ऩुलहङ्ग ळिरण्डु मीऩ्ऱुन्दन्
अरुन्दव मुडैमैयि नळवि लाऱ्ऱलिल्
पॉरुन्दिय विरावणऩ् पुरुवक् कार्मुहक्
करुन्दडङ् गण्णियर् कण्णिऩ् वॅळ्ळत्ते 576

उलकङ्कळ् इरण्टुम् ऑऩ्ऱुम्–दो और एक (तीनों) लोकों में; तऩ् अरुम् तवम् उटैमैयिऩ्–अपने अपूर्व तपस्या के होने से; अळवु इल् आऱ्ऱल्–(प्राप्त) अपार पराक्रम का स्वामी; इरावणऩ्–रावण; पुरुव कार्मुक–भौंहें रूपी धनुओं के साथ; करुम् तटम् कण्णितर्–काली और विशाल आँखों की; कण्णिऩ् वॅळ्ळत्ते–दृष्टि रूपी प्रवाह में; इरुन्तनऩ्–तैरता रहा। ५७६

रावण सभा मे विराजमान था। उसने ऐसा कठोर तप किया था, जैसा तीनों लोकों का और कोई नहीं कर सकता था। अतः उसे अपार बल प्राप्त था। उस पर नारियाँ बड़े प्रेम के साथ दृष्टि दिये रहती थीं। कवि कहते है कि रावण उनकी काली और दीर्घ आँखों की दृष्टि के प्रवाह में तैरता रहा। ५७६

❀ तङ्गैयु मव्वळि तलैयिऱ् ऱाङ्गिय
शॅङ्गैयळ् शोरियिऩ् ऱारै शेर्न्दिळि

कौङ्गैयळ् मूक्किलळ् कुळैयिन् कादिलळ्
मङ्गुलि नौलिपडत् तिऱन्द वायिन्नाळ् 577

अ वळि–तव; तङ्कैयुम्–(रावण की) वहिन; तलैयिल् ताङ्किय–सिर पर रखे; चॅम् कैयळ्–हाथों के साथ; चोरियिन् तारै–रक्त की धारा; चेर्न्तु इळि–जिन पर बहती रही; कौङ्कैयळ्–उन स्तनों के साथ; कुळैयिन् कातु इलळ्–कुण्डल सहित कानों से रहित; मङ्कुलिन् ऑलि पट—मेघ-गर्जन करते हुए; तिरन्त वायिन्नाळ्–खुले मुख के साथ। ५७७

जब रावण इस ठाट-बाट के साथ राजदरबार में विराजमान रहा, तब (उसकी बहिन शूर्पणखा) हाथ सिर पर रखते हुए, स्तनों पर रक्त को बहने देते हुए नासिकाहीन मुख खोलकर मेघगर्जन-से उच्च स्वर में— । ५७७

❀ मुडैमिडै वायिनिन् मुऱैयिट् टार्हलि
कडैयुहत् तॅळुमौलि काट्टक् कान्दुवाळ्
कुडदिशैच् चॅक्करिऱ् चेन्द कून्दलाळ्
वडदिशै वायिलिन् वन्दु तोन्ऱिनाळ् 578

मुटै मिटै—मांस-गन्ध-युक्त; वायितिन्–मुख से; मुऱैयिट्टु–शिकायत करते हुए; आर् कलि–सघोष समुद्र से; कटै युकत्तु–युगान्त में; ऍळुम् ऑलि–जो उठती है, उस ध्वनि को; काट्ट–प्रकट करते हुए; कान्तुवाळ्–जो मुरझायी रही; कुट तिचै चॅक्करिल्–पश्चिमी दिशा के गगन की लालिमा से; चेन्त कून्तलाळ्–अधिक लाल केश वाली; वट तिचै वायिलिन्–उत्तर के द्वार पर; वन्तु तोन्ऱिताळ्–आकर प्रकट हुई (शूर्पणखा)। ५७८

मांसगन्धयुक्त अपने मुख से प्रलाप करती हुई उत्तरी द्वार पर आ प्रकट हुई। उसने जो शोर मचाया वह युगान्त के नाद के समान भयंकर था। अग्नितप्त-सी, लाल सन्ध्या-राग से भी अधिक लाल केश के साथ वह आयी। ५७८

तोन्ऱलुन् दॊन्नह ररक्कर् तोहैयर्
एन्ऱॆदिर् वयिऱलैत् तिरङ्गि येङ्गिनार्
मून्ऱुल हुडैयवन् ऱङ्गै मूक्किलळ्
तानॊरुळि यवळ्वरत् तरिक्क वल्लरो 579

तोन्ऱलुम्–प्रकट होते ही; तॊल् नकर्–प्राचीन नगर की; अरक्कर् तोकैयर्–राक्षस-स्त्रियाँ; ऍतिर् एन्ऱु–सामने स्थित हो; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटते हुए; इरङ्कि एङ्कित्तार्–अनुताप करके रोईं; मून्ऱु उलकु उटैयवन्–तीनों लोकों के पति की; तङ्कै–वहिन; मूक्कु इलळ्–नासिका से हीन; तति अवळ् तान् वर–अकेली स्वयं आए; तरिक्क वल्लरो–सह सकेंगी क्या। ५७९

उसके उस रूप में प्रकट होने पर उस प्राचीन नगर की राक्षस-नारियाँ सामने आकर (अपनी छाती) अपना पेट पीटते हुए अनुताप के साथ रोयीं।

तीनों लोकों के स्वामी की सगी बहिन थी वह। उसकी यह स्थिति! उसकी नाक कटी हुई है! अकेली आ रही है। यह देखकर कोई सब्र कर सकता है क्या? । ५७९

❀ पॊरुक्कॆन नोक्किनर् पुहल्व दोर्हिलर्
अरक्करु मिरैत्तन रशनि येऱॆन्नक्
करत्तॊडु करङ्गळॆप् पुडैत्तुक् कण्गळिन्
नॆरुप्पॆळ विळित्तुवाय् मडित्तु निऱ्किन्ऱार् 580

अरक्करुम्–राक्षसों ने भी; पॊरुक्कु ऎन्न नोक्किनर्–सहमकर देखा; पुकल्वतु ओर्किलर्–क्या कहना, नहीं जानते; अचनि एऱु ऎन्न–अशनिराज के समान; करत्तु ओटु करङ्कळै–हाथों से हाथों को पीटकर: कण्कळिन् नॆरुप्पु ऎळ–आँखों से अंगार निकालते हुए; विळित्तु–आँख फाड़े देखकर; वाय् मटित्तु–दाँत पीसकर; निऱ्किन्ऱार्–खड़े रहे। ५८०

राक्षसों ने भी सहमकर देखा। क्या कहना —यह भी न सूझा। अशनि का-सा नाद पैदा करते हुए हाथों से हाथ मारे। उनकी आँखों से आग उगलने लगी। दाँत पीसते हुए आँखें फाड़े देखते हुए खड़े के खड़े रह गये। ५८०

❀ इन्दिरन् पालदो वुलह मीन्ऱपेर्, अन्दणन् पालदो वाळि यानदो
शन्दिर मवुलिपाऱ् रङ्गु मेहॊलो, अन्दर मिदुवॆन्न वळल्हिन्ऱार्शिलर् 581

चिलर्–(उनमें) कुछ; इन्तिरन् पालतु ओ–क्या इन्द्र की तरफ़ से हुआ है; उलकम् ईन्ऱ–लोकों के सर्जक; पेर् अन्तणन् पालतो–बड़े ब्राह्मण (ब्रह्मवित) ब्रह्मा की तरफ़ से क्या; आऴियान् अतो–चक्रधारी (क्षीर-) सागर-निवासी का है; चन्तिर मवुलि पाल्–चन्द्रमौलि पर; तङ्कुमे कॊलो–इसका जिम्मा रहता है; अन्तरम् इतु–सितम है यह; ऎन्न अळल्किन्ऱार्–समझकर कोप से तपते हैं। ५८१

उनमें कुछ राक्षसों ने बड़े क्रोध के साथ प्रश्न किया कि क्या यह घोर अपराध इन्द्र की तरफ़ से हुआ है? या विश्व के सृष्टि-कर्ता ब्राह्मण (ब्रह्मवित) द्वारा हो गया? या क्षीरसागरशायी, चक्रधर श्रीविष्णु के हाथों हो गया है? (आऴि का अर्थ चक्र भी है, सागर भी।) या चन्द्रमौलीश्वर पर ही यह लगेगा? जो हो यह बड़ी आफ़त है! वे क्रोध से उबले। ५८१

पोरिलान् पुरन्दर नेवल् पूण्डनन्, आरुला नेमिया नाऱ्ऱ् ऱोऱ्ऱुप्पोय्
नीरिना नॆरुप्पनान् पॊरुप्पि नान्निनि, यार्हॊलो मीदॆन्न वऱॆहिन्ऱार्शिलर् 582

चिलर्–(और) कुछ; पुरन्तरन्–पुरन्दर; पोर् इलान्–युद्ध छोड़कर; एवल् पूण्टनन्–सेवक वन गया; आर् उलाम् नेमियान्–तीक्ष्ण चक्रधारी; आऱ्ऱल् तोऱ्ऱु पोय्–बल मे हारकर; नीरिनान्–(क्षीरसागर का) जलवासी हो गया है; नॆरुप्पु

अत्तान्—अग्नि-समान शिव; पॊरुप्पित्तान्—पर्वतवासी हो गया; इति—अब; यार् कॊल् आम् ईतु—यह कौन हो सकता है; ऎन्—ऐसा; अऱैकिन्ऱार्—पूछते। ५८२

और कुछ राक्षसों ने यों कहा— पुरन्दर तो युद्ध से एक दम विरत होकर रावण का नौकर बन गया है। तीक्ष्ण चक्र के रखनेवाले विष्णु भी रावण से हारकर (क्षीर-सागर-) जलवासी हो गये। अग्नि-सम शिवजी (डर से) पर्वत पर चढ़ बैठे हैं। फिर किसने यह काम किया होगा ? । ५८२

❀ शॆप्पुदर् कुरियवर् तॆव्व राउळर्
मुप्पुऱत् तुलहमु मडङ्ग मूडिय
इप्पुऱत् तण्डत्तोर्क् कियैव दन्ऱिदु
अप्पुऱत् तण्डत्ता रार्ऎन् ऱार्शिलर् 583

चिलर्—(और) कुछ; तॆव्वर्—शत्रु; चॆप्पुतऱ्कु उरियवर्—कहाने योग्य; यार् उळर्—कौन हैं; मु पुऱत्तु उलकमुम्—तीनों लोकों को; अटङ्क मूटिय—पूर्ण रूप से जिसने अपने में समा लिया है; इ पुऱत्तु अण्टत्तोर्क्कु—इस तरफ़ के अण्ड के वासियों का; इतु इयैवतु अन्ऱु—यह हो सकने का काम नहीं; अ पुऱत्तु—उस तरफ़ के; अण्टत्तोर् आम्—अण्ड के वासियों का ही हो सकता है; आर्—कौन हैं (वे); ऎन्ऱार्—पूछते। ५८३

और कुछ राक्षसों ने तर्क किया। हमारे रावण का शत्रु कहाने योग्य है कौन ? आकाश, पाताल और भूलोक को अन्तर्निहित रखनेवाले इस अण्डगोल का कोई भी यह नहीं कर सकता ? अपराण्ड (बहिरण्ड) में भी कौन है ? । ५८३

ऎन्ऩैये यिरावणन् ऱङ्गै यॆन्ऱऱिपिन्, अन्ऩैये यॆन्ऱडि वणङ्ग लन्ऱिये
उन्ऩवे यॊण्णुमो वॊरुव रालिवळ्, तन्ऩैये यरिन्दन ळॆन्ऱ ऱार्शिलर् 584

चिलर्—कुछ; ऎन्ऩैये—यह क्या (आश्चर्य); इरावणन् तङ्कै—रावण की बहिन; ऎन्ऱु अऱिपिन्—यह जानने के बाद भी; अन्ऩैये ऎन्ऱु—माताजी कहकर; अटि वणङ्कल् इन्ऱि—चरण में विनत हुए बिना; ऒरुवराल्—किसी से; उन्ऩवे ऒण्णुमे—(ऐसी बात) सोची भी जा सकेगी क्या; इवळ्—इसने; तन्ऩैये तान् अरिन्तनळ्—खुद अपने अंगों को काट लिया है; ऎन्ऱऩर्—बोले। ५८४

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान लगाया। यह क्या आश्चर्य हो गया ! रावण की छोटी बहिन जानने पर कोई भी 'माताजी' कहकर उसके पैरों पर झुक जायगा। इसको छोड़कर वह ऐसा काम मन में भी नहीं ला सकेगा। इसलिए अवश्य इसने स्वयं अपने अंग काट लिये हैं। ५८४

शॊऱ्पिऱन् दार्क्किदु तुणिय वॊण्णुमो
इऱ्पिऱन् दार्तमक् कियैव शॆय्दिलळ्

कऱ्पिऱन् दाळ्ँनक् करन्गॊ लामिवळ्
पॊऱ्पऱै याक्किनन् पोलॆन् ऱाऱ्शिलर् 585

चिलर्–कुछ; चॊल् पिऱन्तार्क्कु–कीर्तिमानों को; इतु तुणिय ऒण्णुमो–(स्त्री के अंग काटने का) यह काम करने योग्य है क्या; इल् पिऱन्तार्क्कु इयैव–कुलीन स्त्री के लिए उचित काम; चॆय्तिलळ्–इसने नहीं किया; कऱ्पु इऱन्ताळ्–शील को मारा है; ऎन्न–(कुछ ऐसा) देखकर; इवळ् पॊऱ्पु–इसके रूप को; अऱै आक्कितन्–विकृत कर दिया; करन् कॊल् आम्–खर ने ही शायद; ऎन्ऱार्–बोले। ५८५

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान किया— गौरवपूर्ण कुल में उत्पन्न किसी के लिए भी ऐसा करना सूझ सकता है क्या? (इसलिए मेरा मत है—) इसने कुलीन स्त्रियों के लिए उचित कार्य नहीं किया होगा। अपना शील त्याग दिया होगा। इसलिए खर ने ही इसका अंग-भंग करके रूप को विकृत करा दिया है। ५८५

तत्तुऱु शिन्दैयर् तळरुन् देवरिप्
पित्तुऱ वल्लरे पिऴैप्पिल् शूऴ्च्चियार्
मुत्तिऱत् तुलहैयु मुडिक्क वॆण्णुवार्
इत्तिऱम् बुणर्त्तन रॆन्गिन् ऱार्शिलर् 586

तत्तु उऱु चिन्तैयार्–मन डगमगाकर; तळरुम्–निर्बल रहनेवाले; तेवर्–देव; इ पित्तु उऱ वल्लरे–यह पागलपन कर सकनेवाले है क्या; पिऴैप्पु इल् चूऴ्च्चियार्–अचूक तन्त्रशाली; मु तिऱत्तु उलकैयुम्–तीनों तरह (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों को; मुटिक्क ऎण्णुवार्–मिटाना चाहनेवाले कोई; इ तिऱम् पुणर्त्तनर्–यह काम कर चुके होंगे; ऎन्ऱार्–कहा; चिलर्–कुछ ने। ५८६

देव यह पागलपन नहीं कर सकते, क्योंकि उनका मन रावण के डर से हड़बड़ाता रहता है। वे निर्बल बने हुए हैं। अचूक तन्त्रशाली, तीनों लोकों के नाश को चाहनेवाले किसी ने यह काम किया है। —ऐसा कुछ राक्षसों ने कहा। ५८६

इन्नियॊरु कऱ्पमुण् डॆन्ऩि नन्ऱिये
वनैहऴल् वयङ्गुवाळ् वीरर् वल्लरो
पन्निवरु कानिडैप् पऴिप्पि नोन्बुडै
मुन्निवरर् वॆहुळियिन् मुडिवॆन् ऱार्शिलर् 587

चिलर्–(और) कुछ (राक्षसों) ने; इति ऒरु कऱ्पम् उण्टु–अब किसी दूसरे कल्प में होगा; ऎन्ऩिल् अन्ऱिये–यह बात छोड़कर; वनै कऴल्–पायल पहने हुए; वयक्कु वाळ्–प्रकाशमान तलवार धारण किये रहनेवाले; वीरर्–(इस कल्प के) वीर; वल्लरो–समर्थ हैं क्या; पनि वरु कान् इटै–शीतल कानन में; पऴिप्पु इल् नोन्पु उटै–अनिन्द्य व्रतधारी; मुनिवरर्–मुनिवरों के; वॆकुळियिन् मुटिव–कोप का फल है; ऎन्ऱार्–कहा। ५८७

ऐसा काम किसी दूसरे कल्प में हो सकता है तो हो सकता है। इस कल्प का कौन पायलधारी असिहस्त होगा जो यह कर सकेगा ? इसलिए यह अवश्य उन मुनिवरों के कोप का फल है, जो ठण्डे जंगल में अनिन्द्य तपोव्रत में लगे हैं। ५८७

❀ करैयरु तिरुनहर्क् करुङ्ग णङ्गैमार्
निरैवळैत् तळिर्क्कर नॅरित्तु नोक्किनर्
पिरैयुरु पालॅन्न निलैयिर् पिन्ऱ्िय
उरैयिन ऱोरुवर्मु न्नोरुवर् मुन्दिनार् 588

करै अरु तिरुनकर्—असीम सम्पत्तिशाली इस श्रीनगर लंका की; करुम् कण् नङ्कैमार्—नीलाक्षी स्त्रियों ने; निरै वळै—पंक्तिबद्ध कंकणों से भूषित; तळिर् करम्—पल्लव-सम हाथों को; नॅरित्तु—मलते हुए; नोक्कित्तर्—देखा; पिरै उरु पाल् अॅत—जामन-लगे दूध की तरह; निलैयिल् पिन्ऱ्िय—स्खलित (अव्यवस्थित); उरैयित्तर्—बोली बोलते हुए; ओरुवर् मुन् ओरुवर्—एक के आगे एक; मुन्तित्तार्—पहले आई। ५८८

राक्षस पुरुषों की यह बात थी। स्त्रियों ने क्या किया ? इसका वर्णन आगे मिलता है। असीम सम्पत्तिशाली उस नगर की वासिनी, काली आँखों की सुन्दर राक्षसियों ने पंक्ति में कंकणों से भूषित अपने हाथ मलते हुए देखा। जामन-लगे दूध के समान उनकी बोली अव्यवस्थित रही। वे एक के पहले एक दौड़ती आयीं। ५८८

❀ मुळवितिल् वीणैयित् मुरनल् याळिनिल्
तळुविय कुळलिनिर् चङ्गिऱ् ऱारैयिल्
अॅळुहुर लन्ऱ्िये यॅन्ऱु मिल्लदोर्
अळुहुरल् पिऱन्ददव् विलङ्गैक् कन्ऱ्रो 589

मुळवित्तिल्—'मत्तळम्' (मृदंग-सम वाजे) से; वीणैयिल्—वीणा से; मुरल् नल् याळित्तिल्—सुरीले श्रेष्ठ 'याळ' नामक वाद्य से; तळुविय कुळलित्तिल्—संगीतमय बाँसुरी से; चङ्किल्—शंख वाद्य से; तारैयिल्—लगातार; अॅळु कुरल्—उठनेवाला नाद; अन्ऱ्िये—नहीं आया पर; अन्ऱु—उस दिन; अ इलङ्कैक्कु—उस लंका के लिए; अॅन्ऱुम् इल्लतु ओर्—अभूतपूर्व एक; अळुकुरल् पिऱन्ततु—रुदन-स्वर उठा। ५८९

साधारण रूप से लंका में 'मद्दल' (मृदंग-सा बाजा) सुरीला याळ, संगीतमयी बाँसुरी, शंख —इन वाद्यों का निरन्तर गान सुनाई देता था। पर आज इसके विपरीत, अभूतपूर्व रीति से रुदन का स्वर उठा। ५८९

❀ कळ्ळुडै वळ्ळमुङ् गळित्तु वॅम्बिय
उळ्ळमु मोरुवळिक् किडक्क वोडिनार्
वॅळ्ळमु नाणुऱ विरिन्द कण्णिनर्
तळ्ळुरु मरुङ्गिनर् तळीइक्कॊण् डेहिनार् 590

वॅळ्ळमुम् नाण् उऱ–बाढ़ को भी शरमानेवाले; विरिन्त कण्णितर्–अश्रुप्रवाह से भरी आँखों से युक्त स्त्रियाँ; कळ् उट्टै वळ्ळमुम्–सुरा-भरे प्यालों और; कळित्तु वॅम्पिय उळ्ळमुम्–सुरापान से गरम हुए मनों को; ओरु वळि किटक्क–एक ओर रहने देकर; ओटित्तार्–दौड़ीं; तळ्ळुऱ–बल खानेवाली; मरुङ्कितर्–कमरों के साथ; तळीइ कॉण्टु–आपस में पकड़ लेते हुए; एकितार्–शूर्पणखा के पास गईं। ५६०

स्त्रियाँ सुरापान में लगी रहीं। उन्होंने सुरा का प्याला और पीने से उत्तप्त मन दोनों को एक ओर रख दिया। उनकी आँखें बाढ़ को भी शरमाती हुई अश्रुजल से भर गयीं। वे दौड़ीं। उनकी कमरें लचकीं। एक दूसरे को पकड़ती हुई, सहारा लेती हुई शूर्पणखा के पास गयीं। ५९०

❀ नान्दह वुळ्वर्मे नाडुन् दण्डत्तार्
कान्दिन मनत्तिनर् पुलवि कॅम्मिहच्
चॅन्दह णदिहमुज् जिवन्दु नीरुह
वॅन्दनुक् किळैयव डाळिन् वीळ्न्दनर् 591

नान्तक उळवर् मेल्–तलवार-कृषक (अपने पतियों) को; नाटुम् तण्टत्तार्–दण्ड देने को आतुर स्त्रियाँ; कान्तिन मनत्तिनर्–कोपसंतप्त मन के साथ; पुलवि कॅ मिक–मान के बढ़ने से; चॅन्त कण् अतिकमुम् चिवन्तु–लाल आँखों को और अधिक लाल करते हुए; नीर् उक–आँसू निकालकर; वॅन्ततुक्कु इळैयवळ्–(राक्षस-) राजा की छोटी बहिन के; ताळिल् वीळ्न्तनर्–पैरों पर गिरीं। ५६१

कुछ स्त्रियाँ अपने तलवार के धनी पतियों से खीझ गयी थीं। वे उनको दण्ड देने की खोज में थीं। उनका मन गरम था और आँखें लाल थीं। अब डर के कारण उनकी आँखें अधिक तीव्र लाल हो गयीं। वे आकर अपने राजा की बहिन शूर्पणखा के पैरों पर गिरीं। ५९१

पॊऱ्ऱलै मरहदप् पूह नोवुऱच्, चुऱ्ऱिय मणिवडन् दूङ्गु मूशलिन्
मुऱ्ऱिय पाडलै मुनिवुऱ् ऱेङ्गिनार्, शिऱ्ऱिडै यलमरत् तॅरुवु शेर्हिन्ड्रार् 592

पॊन् तलै–सिरों पर स्वर्ण-सदृश फलों से भरे; मरकत पूकम्–मरकतवर्ण पूगतरुओं को; नोवु उऱ–कष्ट देते हुए; चुऱ्ऱिय–लपेटकर बँधे हुए; मणि वटम् तूङ्कुम्–मणिमय जंजीरों से लटकनेवाले; ऊचलिन्–झूलों में रहकर; मुऱ्ऱिय आटलै–उच्चतम वेग से झूलना; मुनिवु उऱ्ऱु–कोप से छोड़कर; एङ्कितार्–दुखित जो हुईं, वे; चिऱ्ऱ इटै अलमर–पतली कमरों को दुखने देते हुए; तॅरुवु चेर्कित्ऱार्–वीथी में आ गईं। ५६२

कुछ स्त्रियाँ पूगतरुओं से बँधे झूलों में बैठकर झूल रही थीं। वे पूगतरु मरकततरु के समान हरे और मनोहारी थे और उनके सिरों पर स्वर्ण-सम फल लगे थे। उन तरुओं को संकट देते हुए स्त्रियों का झूलना उच्चतम दशा पर था। जब उन्होंने शूर्पणखा को देखा तो उन्होंने गुस्से के

साथ झूलना छोड़ा। पतली कमर को कष्ट देती हुई वे वीथी में आ गयीं। ५९२

❀ ऑळुवॅन्न मलैयॅन्न वॅळुन्द तोळ्हळैत्
तळुविय वळैत्तळिर् नॅहिळ्ल् तामरै
मुळुमुहत् तिरुहयत् मुत्ति नालिहळ्
पॉळिदरच् चिलरुळम् पॉरुमि विम्मुवार् 593

चिलर्—(और) कुछ (राक्षसी स्त्रियाँ); ऑळु ऑत्त—स्तम्भ-सम; मलै ऑत्त—पर्वत-से; ऑळुनुत—उन्नत; तोळ्कळै—(अपने पतियों के) कन्धों से; तळुविय—लिपटे रहे; वळै तळिर्—वलय-भूषित पल्लवों (हस्तों) को; नॅकिळ—अलग करके; तामरै मुळु मुकत्तु—वदन रूपी पुष्ट कमल पर की; इरु कयल्—दो कयलों (आँखों) में; मुत्तिन् आलिकळ्—मोती-से अश्रुकण; पॉळि तर—भरते हुए; उळम् पॉरुमि—मन को दुख से भरकर; विम्मुवार्—सिसकीं। ५९३

अन्य कुछ राक्षस-नारियाँ अपने पतियों के स्तम्भ और पर्वत-सम कन्धों से लिपटी रहीं। जब उन्हें समाचार मिला तो उनके वलय-भूषित पल्लव-सम हाथ ढीले पड़ गए। पुष्ट कमल-सम मुखों में रही कयल मछली-सी आँखों में मोतियों के समान अश्रुकण ढलक आये। उनका मन दुखी हुआ और वे सिसकियाँ भरने लगीं। ५९३

नॅय्न्निलैय वेलरश ऩेरुनरै यिल्लात्
इन्निलैयु णरन्दबोळु दॅन्निलैय ऩॅऩ्ऩा
मैन्निलैनॅ डुङ्गण्मळै वानिलैय वाहप्
पॉय्न्निलैम रुङ्गिनर् पुलम्बिनर् पुरण्डार् 594

नेरुनरै इल्लात्—टक्कर लेनेवाला जिसकी कोई नहीं रहा; नॅय् निलैय—घृत-लगे; वेल् अरचन्—भाले का धारण करनेवाला राजा (रावण); इ निलै उणरन्त पॉळुतु—(शूर्पणखा की) यह स्थिति जब जानेगा; ऍ निलैयन् ऍन्ऩा—किस स्थिति का होगा, यह सोचकर; मै निलै—अंजनयुक्त; नॅटुम् कण्—आयत आँखों के; मळै वान् निलैयतु आक—जल-वर्षक मेघ की-सी स्थिति में आते; पॉय् निलै मरुङ्कितर्—मिथ्या-कटि स्त्रियाँ; पुरण्टार् पुलम्पितर्—लोटीं और विलपीं। ५९४

कुछ स्त्रियों के मन में यह प्रश्न उठा कि अजातशत्रु घृतरंजित भाले के स्वामी, रावण को जब शूर्पणखा की स्थिति मालूम होगी तो उसकी स्थिति क्या होगी? तो उनकी काजल-लगी दीर्घ आँखें जलवर्षक मेघों के समान हो गयीं। नाम-मात्र की कटि से युक्त वे भूमि पर लोटती हुई विलाप करने लगीं। ५९४

मनन्दलै वरुङ्गन्नलि निऩ्ऱुवै मरुन्दार्
कनन्दलै वरुङ्गुळल् शरिन्दुहलै शोर

नत्तन्दलैय कौङ्गैह डदुम्बिड नडन्दार्
अनन्दलिळ मङ्गैय रळुङ्गिययर् हिन्ड्रार् 595

अत्तन्तल् इळ मङ्कैयर्–सोती रहीं (जो) वे कुछ तरुणी रमणियाँ; मत्तम् तलै–मन में इच्छा करने से; वरु–होनेवाले; कत्तवु इन् चुवै–सपनों का मधुर रस; मड्न्तार्–भूलकर; कत्तम् तलै वरुम्–घन-सदृश विशिष्ट; कुळल् चरिन्तु–केश को खुलकर बिखरने देते हुए; कलै चोर–वस्त्र को खिसकने देते हुए; नत्तम् तलैय–पृथुल; कौङ्कैकळ्–स्तनों को; ततुम्पिट–उछलने देते हुए; नटन्तार्–पैदल आईं; अळुङ्कि–दुखी होकर; अयर्किन्ड्रार्–श्रांत हुईं। ५९५

कुछ स्त्रियाँ निद्रा कर रही थीं। उनका मन आनन्द के साथ स्वप्न देखने लगा था। जब उन्हें यह समाचार मिला तो स्वप्न का रस भूलकर उठीं। मेघ-सम केश खुलकर बिखर गये। वस्त्र भी ढीले हो खिसकने लग गये। जब वे पैदल चलने लगीं तो उनके बड़े-बड़े स्तन उछलने लगे। वे बहुत दुखी हुई। ५९५

अङ्गैयि नरत्तगयिलै कौण्डदिऱ लैयन्
तङ्गैनिलै चिङ्गिदुहीं लॆन्ड्रुतळर् हिन्ड्रार्
कौङ्गैयिणै शॆङ्गैयिन् मलैन्दुकुलै कोदै
मङ्गैयर्ह णङ्गैयडि वन्दुविळु हिन्ड्रार् 596

कुलै कोतै मङ्कैयर्कळ्–स्त्रियाँ, जिनके केश छूटे और बिखरे थे; अम् कैयिल्–अपनी हथेलियों में; अरन् कयिलै कौण्ट–हर के कैलास को जिसने उखाड़ा था, उस; तिऱल् ऐयन्–पराक्रमी राजा की; तङ्कै निलै–बहिन की दशा; इङ्कु इतु कॊल्–यहाँ यह हुई तो; ऍन्ड्रु तळर्किन्ड्रार्–यह सोचकर क्लान्त हुईं; कौङ्कै इणै–स्तन-द्वय पर; चॆम् कैयिल् मलैन्तु–अपने लाल हाथों से पीटती हुई; नङ्कै अटि वन्तु–उस नायिका के चरणों पर आकर; विळुकिन्ड्रार्–गिरती है। ५९६

कुछ स्त्रियाँ, जिनके केश खुले हुए बिखरे थे, अपनी छाती पीटते हुए रोने लगी। उन्हें दुख इस बात का था कि अपनी हथेली में जिसने हर के कैलास पर्वत को उठाया था, उस पराक्रमी स्वामी की बहिन की भी यह हालत हो गयी। रोती हुई आकर वे नायिका के पैरों पर गिरीं। ५९६

इलङ्गैयिल् विलङ्गुमिवै यॆय्दलिल वॆन्ड्रुम्
वलङ्गैयि लिलङ्गुमयिन् मन्नतुळ नॆन्ना
नलङ्गैयि लहन्ड्रदुहीं नम्मिनॆन नैन्दार्
कलङ्गलिल् करुङ्गणिणै वारिहलुळ् हिन्ड्रार् 597

वलम् कैयिल् इलङ्कुम् अयिल्–दाहिने हाथ में प्रकाशमान भाला रखनेवाला; मन्तन् उळन्–राजा है; ऍन्ना–यह सोचकर (डर से); ऍन्ड्रुम्–सदा; इलङ्कैयिल्–लंका के; विलङ्कुम्–जानवर भी; इवै ऍय्तल् इल–ऐसी आफ़त के भागी नहीं होते थे; नम्मिन्–हमसे; नलम् कैयिल् अकन्ड्रतु कॊल्–भलाई छोड़कर अलग हो गई

शायद; अॅन्‌-यह सोचकर; नैन्‌तार्‌-दुख से क्षीण होती हुई; कलङ्कलिल्‌-व्यथा के कारण; करुम्‌ कण्‌ इणै-काली दोनों आँखों से; वारि-जल को; कलुळ्‌कित्तूरार्‌-गिराती हैं। ५६७

अपने दाहिने हाथ में भाला लिये हुए राजा रावण विद्यमान था। उसके कारण लंका में किसी जानवर पर भी ऐसा संकट नहीं आया था। 'अब क्या हमारी सुरक्षितता चली गयी ?' यह सोचकर वे व्यथित हुईं। व्याकुलता के कारण उनकी काली आँखों के जोड़ों में अश्रु भर आया। ५९७

❀ अॅन्‌रिलैय वन्‌रुय रिलङ्गैनह रॅय्‌द
नित्तूरव रिरुन्‌दवरॉ डोडुनॅरि तेडक्‌
कुन्‌रित्तडि वन्‌दुपडि कॉण्डलॅन मन्‌नन्‌
पॉन्‌रिणि पॉलन्‌गळल्‌ विळुन्‌दत्तळ्‌ पुरण्डाळ्‌ 598

अॅन्‌रु इत्तैय-ऐसा, ऐसा; इलङ्कै नकर्‌-लंका नगर; वन्‌ तुयर्‌ अॅय्‌त-कठोर दुख को प्राप्त हुआ, तब; नित्तूरवर्‌ इरुन्‌तवर्‌ ओटु-सभा में जो खड़े रहे वे, जो बैठे रहे उनके साथ; ओटु नॅरि तेट-भागने का मार्ग देखने लगे; कुन्‌रित्‌ अटि वन्‌तु पटि-पर्वत के तल में आकर जमनेवाले; कॉण्टल्‌ अॅन-घन के समान; मन्‌नन्‌-(राक्षस) राजा रावण के; पॉन्‌ तिणि-स्वर्णमय; पॉलन्‌ कळल्‌-सुन्दर पायल से अलंकृत पैरों पर; विळुन्‌तत्तळ्‌-गिरी; पुरण्टाळ्‌-लोटी (शूर्पणखा)। ५६८

इस तरह लंका का नगर ही व्याकुलता से भर गया। तब रावण की सभा में शूर्पणखा आयी और रावण के स्वर्णमय पायलधारी चरणों पर गिरी। जब वह वहाँ आयी तो सभा में जो खड़े रहे और जो बैठे रहे, सभी भागने का मार्ग ढूँढ़ने लगे। जब वह रावण के पैरों पर गिरी, तब पर्वत के तल में मेघ आकर पड़ा हो, ऐसा लगा। वह गिरकर लोटने लगी। ५९८

मूडिय तिरुट्पडल मूवुलहु मुऱ्ऱुच्‌
चेडनुम्‌ वॅरुक्कॉडु शिरत्तॉहै नॅळित्तान्‌
आडिन कुलक्किरि यरक्कनु मयिर्त्तान्‌
ओडिन तिशैक्करिह ळुम्बरु मॉळित्तार्‌ 599

मू उलकुम्‌ मुऱ्ऱुर्‌-तीनों लोकों में सर्वत्र; इरुळ्‌ पटलम्‌ मूटियतु-अँधेरा-पटल ढँक गया; चेटनुम्‌-शेषनाग ने भी; वॅरु कॉटु-डरकर; चिरम्‌ तॉकै-सिरों की राशि को; नॅळित्तान्‌-लचकाया; कुल किरि आटिन-कुलपर्वत हिल उठे; अरुक्कनुम्‌ अयिर्त्तान्‌-सूर्यदेव भी ठिठके; तिचै करिकळ्‌-दिग्गज; ओटिन-भागे; उम्परुम्‌-देव भी; ऑळित्तार्‌-छिप गये। ५६६

तब तीनों लोकों को अन्धकार ढाँप गया। शेषनाग ने डरकर अपने सिरों के समूह को लचका दिया। (कैलास, हिमालय, मन्दर, विन्ध्य,

निपद; हेमकूट, नील, गन्धमादन नाम की) सातों कुलगिरियाँ हिल गयीं। सूर्य भी भयभीत और संशयसहित हो गया। दिग्गज भाग गये और देव भी छिप गये। ५९९

विरिन्दवल यङ्गण्मिडै तोळ्वडर मीदिट्
टॅरिन्दत्तय नङ्गळॅयिर् ऱिऩ्बुऱ मिमैप्प
नॅरिन्दपुरु वङ्गणॅडु नॅऱ्ऱियित्तै मुऱ्ऱत्
तिरिन्दपुव नङ्गळ्विनै तेवरु मयिर्त्तार् 600

विरिन्त वलयङ्कळ् मिटै–विशाल वलयों से लसे; तोळ् पटर–कन्धे फूल उठे, तव; मीतु इट्टु–ऊपर उठती; ॲरिन्त नयत्तङ्कळ्–ज्वाला के साथ जलनेवाली लाल आँखें; ॲयिऱ्ऱिऩ् पुऱम्–वक्रदाँतों के बाजू में; इमैप्प–प्रकाश फैलातीं तो; नॅरिन्त पुरुवङ्कळ्–टेढ़ी हुई भौंहें; नॅटु नॅऱ्ऱियित्तै–लम्बे भालों को; मुऱ्ऱ–ढँक गईं, तो; पुवतङ्कळ्–सारे भुवन; तिरिन्त–गति बदलकर घूम उठे; वित्तै–विपरीत कार्य देख; तेवरुम् अयिर्त्तार्–देवता लोग भी भय करने लगे। ६००

रावण के कन्धे, जिन पर वलय लगे थे, फूल उठे। उसकी आँखों से जो ज्वाला-सी उठी उसका प्रकाश वक्रदन्तों के बाजुओं में फैला। घनी भौंहें तनीं और भाल पर फैल गयीं। सारे भुवन डगमगा गये। यह विपरीत स्थिति देखकर देव सिहर उठे। ६००

तॅन्ऱिशै नमनऱ्ऱनॊडु तेवर्कुल मॅल्लाम्
इन्ऱिऱुदि वन्ददु नमक्कॅन विरुन्द
निन्ऱुयिर् नडुङ्गवुडल् विम्मनिलै यिल्ला
दॊन्ऱुमुरै याडलिल रुम्बरिनॊ डिम्बर् 601

तॅन् तिचै नमन् तन् ओटु–दक्षिणी दिशा के (अधिदेवता) यम के साथ; तेवर् कुलम् ॲल्लाम्–देवों के कुल सब; नमक्कु–हमारा; इन्ऱु–आज; इऱुति वन्ततु–अन्त आ गया; ॲन–सोचकर; इरुन्त–रहे; उम्पर् ओटु–देवों के साथ; इम्पर्–इस लोक के वासी भी; उयिर् नटुङ्क–काँपते प्राणों के साथ; निन्ऱु–खड़े होकर; उटल् विम्म–शरीर-स्पन्दन के साथ; निलै निल्लातु–कहीं स्थिर न रह सके; ऒन्ऱुम् उरै आटल् इलर्–एक शब्द भी नहीं बोल सके। ६०१

दक्षिण दिशा के यम से लेकर सारे देवता भयभीत हो गये कि आज हमारा अन्त आ गया। वे खड़े रह गये। आकाशवासी के साथ इहलोक-वासी भी काँपने लगे। उनके प्राण सूख गये, शरीर काँपने लगे और वे अस्थिर और मौन हो रहे। ६०१

❀ मडित्तपिल वाय्हडॊरुम् वन्दुबुहै मुन्दत्
तुडित्तत्तॊडर् मीशॆहळ् शुरुक्कॊळ वुयिर्प्पक्
कडित्तहदिर् वाळॅयिरु मित्तकअल मेहत्
तिडित्तवुरु मॊत्तुरऱि यावर्शॆय लॅन्ऱान् 602

मटित्त पिल वाय्कळ् तोरुम्–(कोप से रावण ने जिनके) अधरों को मोड़कर दाँतों से दबा रखा था, उन मुखों में; पुकै वन्तु मुन्त–धुआँ निकल रहा था; तुटित्त–फड़कती; तोटर् मीचैकळ्–मूँछों की शृंखला को; चुरुक्कोळ–झुलसाते (काला बनाते) हुए; उयिर्प्प–साँसें छोड़ रहा था; कटित्त–जिनको पीसता था; कतिर् वाळ् एयिरु–प्रकाशमय तलवार-सम वक्र (या खड्ग) दाँतों के; मिन् कळल–विद्युत-से चमकते; मेकत्तु इटित्त उरुम् ओत्तु–मेघ में उठनेवाले वज्र-नाद के समान; उररि–स्वर में बोलते हुए; यावर् चैयल्–किसका काम है; एन्ऱान्–पूछा। ६०२

रावण ओंठ चबा रहा था। उन बिल-समान मुखों से धुआँ उठ रहा था। उसकी मूँछें पंक्ति में हिल रही थीं। और उनको झुलसाते हुए वह गरम साँसें छोड़ रहा था। उसके वक्र दाँत, जो ओंठों को दबा रहे थे, बिजली के समान चमक रहे थे। मेघ में उठनेवाले वज्र के से स्वर में उसने शूर्पणखा से पूछा कि यह किसका काम है ? । ६०२

❀ कानिडै यडैन्दुबुवि कावल्बुरि हिन्ऱार्
मीनुडै नॅडुङ्गॉडियि नोननैयर् मेल्हीळ्
ऊनुडै युडम्बुडैमै योरुवमै यिल्ला
मानिडर् तडिन्दन्नर्हळ् वाळुरुवि यॅन्ऱाळ् 603

पुवि कावल् पुरिकिन्ऱार्–भूपालक; मीन् उटै नॅटुम् कॉटियिन्नोन्–मकरांकित लम्बी ध्वजा वाले के; अन्नैयर्–समान रूप रखनेवाले; मेल् कीळ्–ऊपर और नीचे के लोकों में; ऊन् उटै–मांस सहित; उटम्पु उटैमैयोर्–शरीरधारी; ओर् उवमै इल्ला–अनुपम; मानिटर्–मनुष्य; कान् इटै अटैन्तु–कानन में आकर; वाळ् उरुवि–तलवार खींचकर; तटिन्तनर्कळ्–काट लिया; एन्ऱाळ्–कहा। ६०३

शूर्पणखा ने उत्तर दिया कि वे भूमि के पालक राजकुमार हैं। मकरकेतु के समान रूपवान हैं। ऊपर के सात और नीचे के सात, चौदहों लोकों में वे मांसधारी मनुष्य अनुपम हैं। वे वन में आये हैं और उन्होंने कटार निकालकर मेरा अंग-भंग कर दिया। ६०३

❀ शॅय्दन्नर्हण् मानिड रॅनत्तिशै यन्नैत्तुम्
ऎय्दनहै वन्ददॆरि शिन्दिनह णॆल्लाम्
नोय्दवर् वलित्तॊळ्ळि नुवन्ऱमॊळ्ळि यॊन्ऱा
पॊय्तविर् पयत्तैयॊळ्ळि पुक्कपह लॆन्ऱान् 604

मानिटर् चॆय्ततर्कळ् एन–मानवों ने किया, यह कहने पर; तिचै अन्नैत्तुम् ऎय्त–दिशाओं भर में गूंजे, ऐसा; नकै–हास; वन्तु–आया; कण् एल्लाम्–सभी आँखों ने; ऎरि–आग; चिन्तिन–बरसायी; नॊय्तवर्–अल्प (मानव); वलि तॊळ्ळिल्–बलवान का कार्य; नुवन्ऱ मॊळ्ळि–तुम्हारा कहा वचन; ऒन्ऱा–मेल नहीं खाता; पॊय् तविर्–झूठ छोड़ो; पयत्तै ऒळ्ळि–भय त्यागो; पुक्क–जो हुआ; पुकल्–बताओ (सच); एन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ६०४

मनुष्यों ने यह काम किया —यह सुनकर रावण को हँसी आ गयी। उसकी गूँज आठों दिशाओं में भर उठी। आँखों ने आग उगली। उसने शूर्पणखा को डाँटा कि क्या बकती हो ? वे दुर्बल मानव हैं और यह काम वड़े वीरों का काम है। दोनों में मेल नहीं है। असत्य कहना छोड़ो। भय के कारण ऐसा कहती हो तो भय त्याग दो। जो हुआ वह सच-सच बताओ। ६०४

मन्मदनै योप्पर्मणि मेन्तिवड मेरुत्
तन्मद नऴिप्पर्दिर डोळिन्वलि तन्नाल्
अन्नदनै यिप्पोऴ्दु दिशैप्पदुल हेऴिन्
नन्मदम ऴिप्परीरि मैप्पिनत्ति विल्लाल् 605

मणि मेत्ति–सुन्दर रूप में; मन्मतनै ओप्पर्–मन्मथ की समानता करते हैं; तिरळ् तोळिन् वलि तन्नाल्–पुष्ट भुज-वल के पराक्रम में; वट मेरु तन्–उत्तर के मेरु का; मतन् अऴिप्पर्–घमण्ड चूर कर देंगे; विल्लाल्–धनुर्युद्ध में; ओर् इमैप्पिल्–एक पल में; उलकु एऴिन्–सातों लोकों का; नल् मतन्–वड़ा वल; नत्ति ओऴिप्पर्–खूब नष्ट कर सकेंगे; अतनै–उसको; इप्पोऴुतु–अव; इचैप्पतु अन्–कहना कैसा। ६०५

शूर्पणखा फिर उनके सौन्दर्य का वर्णन करने लगी। वे रूप में मन्मथ है। पुष्ट कन्धों के वल में मेरु का गर्व चूर करनेवाले हैं। एक ही धनु के बल से एक ही पल में वे सातों लोकों का वल मिटा सकनेवाले हैं। हा ! हा ! उसका अब कैसा वर्णन किया जायगा ? । ६०५

वन्दनैमु नित्तलैवर् पालुडैयर् वानत्
तिन्दुविन्मु हत्तरॆऴि नीरिलॆऴ् नाळक्
कन्दमल रैप्पोरुवु कण्णर्हऴल् कैयर्
अन्दमिऱ् वत्तोऴिल रारवरै योप्पार् 606

मुत्ति तलैवर् पाल्–मुनिवरों के प्रति; वनुतनै उटैयर्–पूजा का भाव जो रखते हैं; वानतुतु इन्तुविन् मुकत्तर्–आकाश के चन्द्र के समान मुख वाले; ऍऴि–तरंगाकुल; नीरिल्–जलाशय में; ऍऴु–उत्पन्न; नाळ–नालसहित; कनुत मलरै–सुवासपूर्ण (कमल-) पुष्प की; पोरुवु–समानता करनेवाली; कण्णर्–आँखों वाले; कऴल्–चरण वाले; कैयर्–हाथों वाले; अनुतम् इल्–असीम; तव तोऴिलर्–तपस्या-कार्य में लीन; आर् अवरै ओप्पार्–कौन उनकी समानता करेगा। ६०६

शूर्पणखा ने आगे कहा कि वे मुनिवरों के प्रति श्रद्धाभाव रखनेवाले हैं। आकाश के चन्द्र के समान उनके मुख प्रकाशमान और मनोरम हैं। उनकी आँखें तरंग-भरे जलाशयों में विकसित नालयुक्त सुगंधित कमल के समान हैं। हा ! हा ! वे कमल-हस्त हैं और कमल-चरण हैं। अपार

तप के कर्म में लगे हुए हैं। उनकी उपमा कहाँ ढूंढ़ी जाय ? कौन उनकी तुलना कर सकेंगे ? । ६०६

वऱ्कलैयर् वार्हळ्ळर् मार्बिलणि नूलर्
विऱ्कलैयर् वेदमुऱ्ऱ नावर्तनि मॅय्यर्
उऱ्कलैय रुन्नैयॊर्दु हट्टुणैयु मुन्नार्
शॊऱ्कलैयॆ न्नत्तोलैवि लूणिहळ् शुमन्दार् 607

वऱ्कलैयर्—वल्कल-वसन; वार्कळ्ळर्–लम्बी पायलधारी; मार्पिल् अणि–वक्ष में धृत; नूलर्–यज्ञोपवीत वाले; विल् कलैयर्—धनुर्विद्या-विशारद; वेतम् उऱ्ऱ नावर्—वेदाश्रय-जिह्वा; तनि मॅय्यर्–अनुपम सत्यसंध; उत् कलैयर्—कला-श्रेष्ठ; चॊल् कलै अॅत–शब्द-विद्या के समान; तॊलैवु इल्–अक्षय; तूणिकळ् चुमन्तार्–तूणीर रखनेवाले; उन्नै ऑर् तुकळ् तुणैयुम्–तुमको एक धूलि के समान भी; उन्नार्–नहीं समझते । ६०७

वे वल्कलवसन हैं। पायलधारी हैं। उनके वक्ष में यज्ञोपवीत शोभायमान हैं। युद्धविद्याविशारद हैं। उनकी जीभ वेदों का आश्रय हैं। अनुपम सत्यसंध हैं। कलाओं में उत्कृष्ट निपुण हैं। शब्द-शास्त्र के समान उनके तूणीर अक्षय हैं। वे तुमको धूलि के समान भी नहीं मानेंगे । ६०७

❀ माररुळ रेयिरुव रोरुयिरिन् वाळ्वार्
वीररुळ रेयवरिन् विल्लिन्वलि वल्लार्
आरॊरुव रन्नवरै यॊप्पवर्ह ळैया
ओरॊरुव रेमुदल्वर् मूवरैयु मॊप्पार् 608

ऐया–महिमावान; इरुवर् मारर् उळरे–दो मार देव है क्या; ओर् उयिरिन् वाळ्वार्–एकप्राण हो रहते हैं; विल् अमरिल्–धनुर्विद्या में; वल्लार्–कुशल; अवरिन् वीरर्–उनसे बढ़कर वीर; उळरे–हैं क्या; अन्नवरै ऑप्पवर्कळ्–उनकी समानता करनेवाले; ऑरुवर् आर्–कोई एक कौन हैं; ओर् ऑरुवरे–उनमें एक-एक; मुतल्वर् मूवरैयुम्–प्रधान त्रिदेवों की; ऑप्पार्–समानता करेंगे । ६०८

हे मेरे तात, प्रभु ! कहीं मन्मथ दो है क्या ? वे एक प्राण हो रहते है। धनुर्विद्या में वे बड़े ही समर्थ है। उनसे बढ़कर कोई वीर भी है क्या ? उनकी तुलना करनेवाले कोई कहाँ हैं ? उनमें एक-एक त्रिदेवों की समानता कर सकेंगे । ६०८

❀ आरुमन्न मञ्जिन मरक्करै यॅनच्चॊन्
ऱेरुनॆरि यन्दण रियम्बवुल हॅल्लाम्
वेरुमॅनु नुङ्गळ्हुलम् वेरॊडु मडङ्गक्
कीरुमॅन मुन्दैयॊरु शूळुरनु कॊण्डार् 609

एऱ् नॅरि अन्तणर्–उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते जानेवाले ब्राह्मणों (ऋषियों) ने; चॅन्ऱु–उनके पास जाकर; अरक्करै–राक्षसों को; आऱम् मतम्–शान्तमन वाले हम; अञ्चितम्–डरते हैं; ॲन इयम्प–यह कहा, तो; उलकु ॲलाम्–सारे लोक; वेरुम् ॲतुम्–हराकर मिटा देंगे, कहनेवाले; उङ्कळ् कुलम्–तुम्हारे कुल का; अटङ्क–सारा; वेर् ऑट्टुम् कोऱुम् ॲन–समूल नाश करेंगे, ऐसा; मुन्तै–पहले; ऑरु चूळ्–एक शपथ; उऱवु कॉण्टार्–कर ली है। ६०९

उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते चलनेवाले मुनिवरों ने उन मानवों के पास जाकर बताया कि हम शान्त-प्रकृति हैं और हमें इन राक्षसों से भय है। तब उन्होंने शपथ खायी कि 'संसार का नाश कर देंगे' —यह कहनेवाले राक्षसों के कुल को ही हम समूल नाश कर देंगे। पहले की हुई उस शपथ से वे बद्ध हैं। ६०९

❀ तरावलय नेमियुळ वन्ऱयर दप्पेर्प्
परावरु नलत्तॊरुवन् मैन्दर्पऴि यिल्लार्
विरावरुम् वनत्तवन् विळम्बवुऱै हिन्ऱार्
इरामनु मिलक्कुवनु मॆन्बर्पॆय रॆन्ऱाळ् 610

तरा वलयम्–भूमण्डल का; नेमि उळवन्–चक्रवर्ती राजा; तयरत पेर्–दशरथ नाम का; परावरु नलत्तु ऑरुवन्–प्रशंसनीय गुण वाला एक; मैन्तर्–उसके पुत्र; पऴि इल्लार्–अनिन्द्य; अवन् विळम्प–उसके कहने पर; विराव अरु वनत्तु–वास के लिए अयोग्य कानन में; उऱैकिन्ऱार्–रहते हैं; पॅयर्–नाम; इरामनुम् इलक्कुवनुम्–श्रीराम और लक्ष्मण; ॲन्पर्–कहते हैं; ॲन्ऱाळ्–कहा (शूर्पणखा ने)। ६१०

इस भूमण्डल का राजा, चक्रवर्ती दशरथ नाम का प्रशंसनीय गुणी था। ये उस श्रेष्ठ राजा के पुत्र हैं। ये अनिन्द्य हैं। दशरथ की आज्ञा से वे इस वन मे आकर ठहरते है, जहाँ स्वच्छन्द होकर वास करना कठिन है। उनके नाम राम और लक्ष्मण हैं। —शूर्पणखा ने अपनी बात समाप्त की। ६१०

मरुन्दनैय तङ्गैमणि नाशिवडि वाळाल्
अरिन्दवरु मानिड रऱिन्दुमुयिर् वाऴ्वार्
विरुन्दनैय वाळॊडुम् विऴित्तिऱैयुम् वॆळ्हा
दिरुन्दन निरावणनु मिन्नुयिरॊ डिन्नुम् 611

मरुन्तु अनैय तङ्कै–अमृत-सम छोटी बहिन की; मणि नाचि–सुन्दर नासिका को; वटि वाळाल्–तीक्ष्ण तलवार से; अरिन्तवरुम् मातिटर्–काटनेवाले भी मानव हैं; अऱिन्तुम्–यह विदित होने पर भी; उयिर् वाऴ्वार्–जीवित हैं; इरावणनुम्–रावण भी; विरुन्तु अनैय वाळ् ओटुम्–नई तलवार के साथ; विऴित्तु–ताकते हुए; इऱैयुम् वॆळ्कातु–किंचित भी लाज का अनुभव किये विना; इन् उयिर् ओटु–अपने प्यारे प्राणो के साथ; इरुन्तनन्–चुप रह गया। ६११

रावण को यह सब सुनकर बड़ा बुरा लगा। वह कहने लगा— मेरी अमृत-सी प्यारी वहिन की सुन्दर नासिका को तीक्ष्ण असि से काटनेवाले हैं मनुष्य! यह विदित होने पर भी वे जीवित हैं! क्या अपमान है! रावण भी अपनी नवीन तलवार के साथ, वीसों आँखों से देखता हुआ, विना शरम खाये प्यारे प्राण लेकर रहता है! । ६११

❀ कॊऱ्ऱमदु मुऱ्ऱिवलि यालरशु कॊण्डेऩ्
उऱ्ऱपयऩ् मऱ्ऱिदुहॊ लामुरै यिऱन्देऩ्
मुऱ्ऱवुल हत्तुमुदल् वीरर् मुडियॆल्लाम्
अऱ्ऱपॊऴु दिऱ्ऱिदुपॊ रुन्दुमॆन लामो 612

कॊऱ्ऱम् अतु मुऱ्ऱि—विजय का पक्का वनाकर; वलियाल्—अपनी शक्ति से; अरचु कॊण्टेऩ्—त्रिलोकाधिपत्य अपनाया (मैंने); उऱ्ऱ पयऩ्—उसका प्राप्त फल; इतु कॊल् आम्—यही है क्या; उरै इऱन्तेऩ्—(गौरव-) गाथा खोई; मुऱ्ऱ उलकत्तु—सारे विश्व में; मुतल् वीरर्—पहले सिरे के वीरों के; मुटि ऎल्लाम्—सिरों को; अऱ्ऱपॊऴुतु—जव काटा गया तब; इऱ्ऱ इतु—जो गया यह यश; पॊरुन्तुम् ऎऩल् आमो—फिर मिलेगा, यह माना जा सकेगा। ६१२

मैंने अपनी विजय-यात्रा पूरी करके अपने पराक्रम के बल पर तीनों लोकों का राज पाया! उसका यही फल रहा क्या? हाय! यश मेरा नष्ट हो गया! सभी लोकों के सारे प्रथम श्रेणी के वीरों के सिर काट भी लूं तो यह नष्ट हुआ यश फिर मिल सकेगा क्या? । ६१२

❀ मूळमुळ दायपऴि यॆऩ्वयिऩ् मुडित्तोर्
आळुमुळ वामवर्द मारुयिरु मुण्डाम्
वाळुमुळ दोदविड मुण्डवऩ् वऴङ्गु
नाळुमुळ तोळुमुळ नानुमुळॆ ऩऩ्ऱो 613

ऎऩ् वयिऩ्—मेरे प्रति; उळतु आय—स्थायी; मूळुम् पऴि—और व्यापी अपयश का काम; मुटित्तोर्—करनेवाले; आळुम् उळ—मनुष्य अव भी है; अवर् तम् आर् उयिरुम् उण्टाम्—उनके प्यारे प्राण अव भी है; वाळुम् उळतु—(चन्द्रहास-) तलवार भी है; ओतम् विटम् उण्टवऩ्—समुद्र का विष के भोक्ता शिव के द्वारा; वऴङ्कु—दत्त; नाळुम् उळ—आयु के दिन भी हैं; तोळुम् उळ—भुजाएँ हैं; नानुम् उळॆऩ् अऩ्ऱो—मैं भी रहता हूँ। ६१३

वे मनुष्य भी हैं जो मेरे प्रति इतना वड़ा अपराध, मेरे इतने बड़े अपयश का काम कर चुके। और उनके प्राण अव भी वचे हैं! मेरे हाथ मे चन्द्रहास भी है। समुद्र से निकला विप जिन्होंने खाया, उन शिवजी से वर के रूप में दत्त आयु भी है। मेरे कन्धे भी हैं। मैं भी जीवित हूँ न! । ६१३

❀ पॉत्तुऱ वुडऱ्पऴि पुहुन्ददॆन्न नाणित्
तत्तुरुव दॆन्न्नैमन नेतळर लम्मा
ॲत्तुय रुन्नक्कुळ दिन्ऩिप्पऴि शुमक्कप्
पत्तुळ तलैप्पहुदि तोळ्हळ् पलवन्ऱो 614

मत्तै–रे मन; उटल् पॉत्तु उऱ–मेरे शरीर को विद्ध करते हुए; पऴि पुकुन्ततु–अपयश लग गया; ॲन्न–यह सोचकर; नाणि–शरमाकर; तत्तुरुवतु–हड़बड़ाने से; ॲन्नै–क्यों; इनि तळरल्–अब मत मुरझा; ॲ तुयर्–कौन सा दुःख; उन्नक्कु उळतु–तुम्हें है; इन्ऩि–आगे; पऴि चुमक्क–कलंक ढोने के लिए; तलै पकुति–मेरे सिर के अंश; पत्तु उळतु–दस हैं; तोळ्कळ् पल अन्ऱो–कन्धे भी अनेक (बीस) हैं न। ६१४

रे मन! यह अपयश ऐसा आकर लगा है कि मेरा शरीर ही विद्ध हो गया। यह सोचकर तुम क्यों शरमाकर हड़बड़ाते हो? तुम दुख से निर्बल मत हो जाओ। तुम्हारा क्या दुख है? अपयश ढोने के लिए मेरे दस सिर हैं। कन्धे तो अनेक है न! । ६१४

❀ ॲन्ऱुरै शॅयानहै शॅयावॆरि विऴिप्पान्
वन्ऱुणॆयि लाविरुवर् मान्िडरै वाळाल्
कॊन्ऱिलर्हॊ ळानॆडिय कुन्ऱुडैय कान्िल्
निन्ऱकर नेमुदलि नोर्निरुद रॆन्ऱान् 615

ॲन्ऱु उरै चॅया–यह (स्वनिंदा में) कहकर; नकै चॅया–हँसकर; ॲरि विऴिप्पान्–आग के समान दृष्टि चलाते हुए; नॆटिय कुन्ऱु–उच्च पर्वत; उटैय कानिल्–जहाँ रहते हैं, उस वन में; निन्ऱ–रहनेवाले; करने मुतलिनोर् निरुतर्–खर आदि राक्षसों ने; वन् तुणै इला–कठोर बल से रहित; इरुवर् मानिटरै–दो मनुष्यों को; वाळाल्–अपनी तलवार से; कॊन्ऱिलर्कळा–नहीं मारा था क्या; ॲन्ऱान्–यह पूछा। ६१५

इस तरह (अपनी निन्दा का वचन) कहता हुआ रावण हँस उठा। आग-सी दृष्टि करते हुए रावण ने शूर्पणखा से पूछा कि उस कानन में, जिसमें उन्नत पर्वत हैं, खर आदि राक्षस थे न? क्या उन्होंने इन निर्बल और असहाय मानवों का अपनी तलवार से वध नहीं किया? । ६१५

अऱ्ऱव नुरैत्त लोडु मऴुदिऴि यरुविक् कण्णाळ्
ॲऱ्ऱिय वयिऱ्ऱळ् पारि न्िडैविऴुन् दॆङ्गु हिन्ऱाळ्
शुऱ्ऱमुन् दॊलैन्द वॆय नॊय्दॆनच् चुमन्द कैयाळ्
उऱ्ऱदु तॆरियुम् वण्ण मोरुवहै युरैक्क लुऱ्ऱाळ् 616

अऱ्ऱु अवन् उरैत्तलोटुम्–वैसा उसके कहने पर; अऴुतु इऴि–रोने से बहनेवाले; अरुवि कण्णाळ्–सरिता-सम अश्रु-भरी आँखों के साथ; ॲऱ्ऱिय वयिऱ्ऱळ्–पेट पीटती (हुई); पारिन् इटै–भूमि पर; वीऴ्न्तु–गिरकर; एङ्कुकिन्ऱाळ्–रोती

(हुई शूर्पणखा); ऐय-प्रभु; चुऱ्ऱमुम्-हमारे बन्धु-बान्धव सभी; नॉय्तु तॉलैन्ततु-अनायास मिट गये; ॲऩ्-कहकर; चुमन्त कैयाळ्-सिर पर हाथ धरकर; उऱ्ऱतु तॅरियुम् वण्णम्-वृत्तान्त समझाते हुए; ऑरु वकै-एक प्रकार से; उरैक्कल् उऱ्ऱाळ्-बताने लगी। ६१६

जब रावण ने यह प्रश्न किया, तब शूर्पणखा ने आँखों से सरिता के समान अश्रु की धार बहायी। पेट को पीटते हुए भूमि पर गिरी। खूब रोती हुई उसने कहा कि सारा परिवार ही अनायास मिट गया। यह कहकर उसने अपने हाथ सिर पर रख लिये। सारा वृत्तान्त समझाते हुए वह एक प्रकार से कहने लगी। ६१६

शॉल्लॅन्ऱऩ् वायिऱ् केट्टार् तॉडरन्दॅळ् शेनै योडुम्
कल्लॅन्ऱ वॉलियिऱ् चॅन्ऱ करऩ्मुदऱ् काळै वीरर्
ॲल्लॉन्ऱु कमलच् चॅङ्ग णिरामनॅन् ऱियैन्द वेन्दल्
विल्लॉन्ऱिऱ् कडिहै मून्ऱि लेऱ्ऱिनऩ् विण्णि लॅन्ऱाळ् 617

चॉल्-बात; ॲऩ् तऩ् वायिल् केट्टार्-मेरे मुख से सुनकर; तॉटर्न्तु ॲळु-साथ उठी; चेऩै ओटुम्-सेना के साथ; कल् ॲऩ्ऱ ऑलियिल्-'घल्' शब्द के साथ; चॅऩ्ऱ-जो गये; करऩ् मुतल् काळै वीरर्-खर आदि ऋषभ-सम वीर; ॲल् ऑऩ्ऱु-किरणस्पृष्ट; कमलम्-कमल-सम; चॅम् कण्-लाल आँखों के; इरामऩ् ॲऩ्ऱु इयैन्त-श्रीराम के नाम से युक्त; एन्तल्-महिमावान ने; विल् ऑऩ्ऱिल-एक धनु से; कटिकै मूऩ्ऱिल्-तीन घड़ियों में; विण्णिल्-स्वर्ग पर; एऱ्ऱिऩऩ्-चढ़ा दिया; ॲऩ्ऱाळ्-शूर्पणखा ने कहा। ६१७

भाई! मैंने उनसे यह अपना हाल कहा तो वे अपनी सेना के साथ शोर करते हुए राम से लड़ने गये। किरण-प्रफुल्लित कमल-सम आँखों के राम नाम के वीर के धनु द्वारा तीन ही घड़ियों में स्वर्ग चढ़ गये। —शूर्पणखा ने कहा। ६१७

तारुडैत् तानैयोडुन् दम्बियर् तमियऩ् शॅय्द
पोरिडै मडिन्दा रॅन्ऱ वुरैशॅवि पुहाद मुन्ऩम्
कारिडै युरुमिऩ् मारि कनलॉडु पिऱक्कु माबोल्
नीरॉडु नॅरुप्पुक् कान्ऱ निरैनॅडुङ् गण्ग ळॅल्लाम् 618

तमियऩ् चॅय्त पोर् इटै-एकाकी श्रीराम ने जो किया, उस युद्ध में; तम्पियर्-छोटे भाई; तार् उटै तानै ओटुम्-हारयुक्त वीरों की सेना के साथ; मटिन्तार्-मरे; ॲऩ्ऱ उरै-यह कथन; चॅवि पुकात मुऩ्ऩम्-कान में घुसा इसके पूर्व ही; कार् इटै उरुमिऩ्-मेघमध्य वज्र के; कऩल् ऑटु-अनल के साथ; मारि-वर्षा; पिऱक्कुमा पोल्-होती हो जैसे; निरै नॅटुम् कण्कळ् ॲल्लाम्-पंक्ति में रही सभी आँखों ने; नीरोटु नॅरुप्पु-जल के साथ अग्नि को; काऩ्ऱ-उगला। ६१८

एकाकी राम से लड़कर मेरे छोटे भाई, हारों से भूषित वीरों की

बड़ी सेना के साथ मर गये —यह बात ज्योंही रावण के कानों में पड़ी, त्योंही उसकी पंक्ति की आँखों में मेघमध्य वज्र के साथ अनल और जल जैसे भर जाता है वैसे आग और जल भर गया। ६१८

आयिडै यॆऴुन्द शीऱ्ऱत् तऴुन्दिय तुन्ब माऱ्ऱि
तीयिडै युहुत्त नॆय्यिऱ् चीऱ्ऱत्तिऱ् कूऱ्ऱञ् जॆय्य
नीयिडै यिऴैत्त कुऱ्ऱ मॆन्नॆवऱ् निन्नै यिन्ने
वायिडै यिदऴु मूक्कुम् वलिन्दनर् कॊय्य वॆन्ऱान् 619

अ इटै–तब; ऍऴुन्त–उभरे; चीऱ्ऱत्तु–कोप में; अऴुन्तिय–मग्न; तुन्पम् माऱ्ऱि–दुःख बदलकर; ती इटै–अग्नि में; उकुत्त नॆय्यिल्–छोड़े गये घी के समान; चीऱ्ऱत्तुक्कु–कोप को; ऊऱ्ऱम् चॆय्य–बल दिलाने पर; अवर्–उन्होंने; निन्नै– तुम्हारे; इन्ने–इस प्रकार; वाय् इटै इतऴुम्–मुख पर के अधरों को; मूक्कुम्– और नाक को; वलिन्ततर् कॊय्य–बलात् काटा, इसके निमित्त-रूप में; नी– तुमने; इटै इऴैत्त कुऱ्ऱम्–उनके प्रति किया (जो) अपराध; यातु–वह कौनसा; ऍन्ऱान्–पूछा। ६१९

रावण को एक साथ क्रोध आया और दुख भी। उसने कुछ देर बाद दुख छोड़ा। आग में घी छोड़ने पर भड़क उठनेवाली आग के समान क्रोध उभर आया। उसने पूछा कि इस तरह वे तुम्हारे अधर और नाक को बलात् काट दें, इसके लिए तुमने उनके प्रति क्या अपराध किया ? । ६१९

❀ ऍन्वयि नुऱ्ऱ कुऱ्ऱम् यावर्क्कु मॆऴुद वॊण्णात्
तन्मैय निराम नोडुन् दामरै तविरप् पोन्दाळ्
मिन्वयिन् मरुङ्गुल् कॊण्डाळ् वेय्वयिन् मॆन्ऱोळ् कॊण्डाळ्
पॊन्वयिन् मेनि कॊण्डाळ् पॊरुट्टिनाऱ् पुहुन्द दॆन्ऱाळ् 620

ऍन् वयिन् उऱ्ऱ कुऱ्ऱम्–मुझसे हुआ अपराध; यावरुक्कुम् ऍऴुत ऒण्णात– किसी से भी चित्र बनाना (जिसका) असम्भव है; तन्मैयन्–ऐसे रूप वाले; इरामतोटुम्– राम के साथ; तामरै तविर–(अपना वासस्थान) कमल छोड़कर; पोन्ताळ्–जो आयी है; मिन् वयिन् मरुङ्कुल् कॊण्टाळ्–बिजली से अपनी कमर पानेवाली; वेय् वयिन् मॆन्त तोळ् कॊण्टाळ्–बाँस से जिसने अपने कन्धे पाये हैं; पॊन् वयिन् मेनि कॊण्टाळ्–स्वर्ण से जिसने अपनी शोभा पाई है; पॊरुट्टिनाल्–ऐसी एक स्त्री के कारण; पुकुन्ततु–हो गया; ऍन्ऱाळ्–कहा। ६२०

शूर्पणखा ने उत्तर दिया— इस अपराध के हो जाने का एक निमित्त भी है। जिसका चित्र खींचना असम्भव है, उस रूप से युक्त राम के साथ एक स्त्री आयी है ! वह ऐसी लगती है कि मानो कमल पर अपना वास छोड़कर इधर आयी है। उसने बिजली से कमर पायी है, बाँस से कन्धे, और स्वर्ण से रूप-रंग। उसी स्त्री के कारण यह हुआ। ६२०

आरव ळॆऩ्ऱ लोडु मरक्कियु मैय वाळि
तेरव ळलहुल् कॊङ्गै शॆम्बॊऩ्जॆय् कुलिहच् चॆप्पु
पारवळ् पादन् दीण्डप् पाक्कियम् बडैत्त दम्मा
पेरवळ् शीद यॆऩ्ऱु वडिवॆलाम् बेशलुऱ्ऱाळ् 621

अवळ् आर्–वह कौन; ऎऩ्ऱतल् ओटुम्–पूछने पर; अरक्कियुम्–राक्षसी भी; ऐया–महिमावान; वाळि–जिओ; अवळ् अलकुल् तेर्–उसका कटि-प्रदेश रथ ही है; कॊङ्कै–स्तन; चॆम् पॊऩ् चॆय्–लाल स्वर्ण की बनी; कुलिक चॆप्पु–इंगुरौटियाँ हैं; पार्–भूमि ने; अवळ् पातम् तीण्ट–उसके चरण-स्पर्श का; पाक्कियम् पटैत्ततु–बड़ा भाग्य पाया है; अम्मा–मैया; अवळ् पेर् चीतै–उसका नाम सीता है; ऎऩ्ऱु–कहकर; वटिवु ऎलाम्–सारा रूप; पेचल् उऱ्ऱाळ्–वर्णन करने लगी। ६२१

रावण ने पूछा कि वह कौन स्त्री है? तुरन्त शूर्पणखा ने कहा। महिमावान! जिओ! क्या कहूँ? उसका कटिप्रदेश रथ है! स्तन स्वर्ण-निर्मित इंगुरौटियाँ हैं। भूमि ने बड़ा पुण्य किया है, तभी वह उसके चरणों को स्पर्श कर सकी है। मैया! उसका नाम सीता है। वह उत्साह के साथ उनके रूप का वर्णन करने लगी। ६२१

कामरम् बळुत्त पाडऱ् कळ्ळॆऩक् कऩिन्द शॆञ्जॊऱ्
तेमलर् शॆऱिन्द कून्दऱ् ऱेवर्क्कु मणङ्गा मॆऩ्ऩत्
तामरै यिरुन्द नङ्गै शेडियान् दरमु मल्लळ्
यामुरै वळङ्ग लॆऩ्ब देळैमैप् पाल दऩ्ऱे 622

पळुत्त कामरम् पाटल्–पूर्णसिद्ध 'कामर' राग के; कळ् ऎऩ कऩिन्त–मधु के समान मधुर; चॆम् चॊल्–सुन्दर बोली वाली; ते मलर्–शहद-भरे पुष्पों से; चॆऱिन्त कून्तल्–घने केश-भूषित; तेवर्क्कु अणङ्काम्–देवबाला-सी उसकी; तामरै इरुन्त नङ्कै–कमलनिवासिनी लक्ष्मी; चेटि आम् तरमुम् अल्लळ्–चेरी भी बनने योग्य नहीं; याम् उरै वळङ्कल्–हम (प्रशंसा का) वचन कहें; ऎऩ्पतु–यह; एळैमै पालतु–अज्ञता होगा। ६२२

(कामर एक राग है।) पूर्ण-सिद्ध कामर राग के समान मधुरबयनी है वह। केश पर शहदसहित फूल शोभित हैं। देवांगना-सी उस (सुन्दरी) की, कमला श्रीदेवी दासी बनने भी योग्य नहीं है। उसका वर्णन करने का प्रयास करना बुद्धिहीनता ही होगा। ६२२

मञ्जॊक्कु मळह वोदि मळैयॊक्कुम् वडिन्द कून्दल्
पञ्जॊक्कु मडिहळ् शॆय्य पवळत्तिन् विरलह ळैय
अञ्जॊऱ्क ळमुदि नळ्ळिक् कॊण्डवळ् वदन मैदीर्
कञ्जत्तिऩ् कॊण्ड देनुङ् गडलिनुम् बॆरिय कण्गळ् 623

ऐय–महिमायुक्त; अम् चॊऱ्कळ्–सुन्दर बोली को; अमुतिल् अळ्ळि कॊण्टवळ्–अमृत से उठा ली है, उसका; अळक ओति–भाल पर का छल्लेदार केश; मञ्चु

ऑक्कुम्–मेघ की समानता करता है; वटिन्त कून्तल्–लटकता केश; मऴै ऑक्कुम्–जल-भरे घन की तुलना करता है; अटिकळ्–उसके चरण; पञ्चु ऑक्कुम्–रुई की भाँति हैं; विरल्कळ् चॅय्य पवळत्तिन्–लाल प्रवाल की (-सी) हैं; वततम्–आनन; मै तीर्–निष्कलंक; कञ्चत्तिल् कॉण्टतेनुम्–कमल से प्राप्त है तो भी; कण्कळ्–उसकी आँखें; कटलित्तुम् पॅरिय–समुद्र से भी विशाल हैं। ६२३

महिमायुक्त भाई! उसने अपनी बोली अमृत से उठा ली है। सामने का केश मेघ-सा और लटकनेवाली वेणी वर्षक घन-सी है। उसके चरण रुई के समान (कोमल) है। पैर की उँगलियाँ लाल प्रवाल की बनी-सी हैं। आनन रूपी निष्कलंक कमल पर जो आँखें हैं, वे कमल से ली गयी हैं; तो भी समुद्र से भी बड़ी हैं। ६२३

ईशत्तार् कण्णिन् वॅन्दा नॅन्नुमि दिळ्ळैच् चॉल्लिव्
वाशना इरोदि याळैक् कण्डनन् ववव लाऱ्ऱान्
पेशलान् दहैमैत् तल्लाप् पॅरुम्बिणि पिणिप्प नीण्ड
आशैया लळिन्दु वॅन्दा ननङ्गनव् वुरुव मम्मा 624

अनङ्कन्–अनंग; ईचत्तार् कण्णिन् वॅन्तान्–ईश्वर (शिव) की (भाल की) आँख से जला; अन्तुम् इतु–कही जानेवाली यह बात; इळ्ळै चॉल्–अल्पज्ञ कथन है; इ वाचम् नाऱु ओतियाळै–इस सुवासित केश वाली को; कण्टतन्–देखकर; ववव्ल् आऱ्ऱान्–प्रसने की शक्ति से हीन होने के कारण; पेचल् आम् तकैत्तु अल्ला–अवर्ण्य; पॅरुम् पिणि पिणिप्प–बड़े (काम-) रोग से पीड़ित होकर; नीण्ट आचैयाल्–लम्बी बढ़ी उस इच्छा से; अ उरुवम्–वह रूप; अळिन्तु–गला; तेय्न्तान्–वह मिटा; अम्मा–मैया री। ६२४

मन्मथ परमेश्वर से भाल-नेत्र की आग से जल गया—यह कथन असत्य है। असल में हुआ दूसरा है। उसने इस सुवासित केशिनी को देखा। उसके मन में अपार राग पैदा हुआ। वह उसे ले जा नहीं सका। अकथ्य काम-रोग ने उसे सताया। धीरे-धीरे छीजकर उसका रूप मिट गया। माँ, उतनी सुन्दर है वह!। ६२४

तॅव्वुल हत्तुङ् गाण्डि शिरत्तिनिऱ् पणत्ति नोर्हळ्
अव्वुल हत्तुङ् गाण्डि यलैहड लुलहिऱ् काण्डि
वॅव्वुलै युऱ्ऱ वेलै वाळित्तै वॅन्ऱ कण्णाळ्
ऑव्वुल हत्ता ळङ्गम् यावर्क्कु मॅळ्ळुदी णादाळ् 625

वॅम् उलै उऱ्ऱ–गरम भट्ठी में ताप कर बनाये गये; वेलै वाळित्तै–भाले और असि को; वॅन्ऱ–जो जीत चुकी है; कण्णाळ्–ऐसी आँखों से शोभित है; तॅव् उलकत्तुम्–देवों के लोकों में भी; काण्टि–खोजो; चिरत्तितिल् पणत्तित्तोर्कळ्–सिर पर (जिनके) फन हैं, उन; अ उलकत्तुम्–(नागों के) उस (नाग-)लोक में भी; काण्टि–खोजो; अलै कटल् उलकिल् काण्टि–तरंग-भरे समुद्र से वलयित भूतल में

खोजो; अङ्कम् यावर्क्कुम् ॲळुत ओणाताळ्—ऐसे अंगों से युक्त है, जिनका कोई चित्रण नहीं कर सकता; ॲव्वुलकत्ताळ्—किस लोक की है। ६२५

उसकी आँखों ने उस भाले और असि को अपनी कान्ति और तीक्ष्णता में हराया है, जो भट्ठी की आग में तपाकर बनाया गया था। तुम चाहे सुरलोक में ढूँढ़ो; चाहे फणी नागों के लोक में। तरंगायमान समुद्र से वलयित भूलोक में ही क्यों न ढूँढ़ो। उसके समान स्त्री नहीं मिलेगी। उसके अंगों का चित्रण ही किसी के लिए असम्भव है! फिर वह किस लोक की होगी? नहीं जानते। ६२५

❀ तोळॅये शॉल्लु हेन्तो शुडर्मुहत् तुलवु हिन्ड्र
वाळॅये शॉल्लु हेन्तो वल्लवै वळुत्तु हेन्तो
मीळवुन् दिहैप्प दल्लाड् ड्रनित्तनि विळम्ब लाड्रेन्
नाळॅये काण्डि यन्ड्रे नानुनक् कुरैप्प दॅन्तो 626

तोळॅये चॉल्लुकेन्तो—भुजाएँ ही कहूँ; चुटर् मुकत्तु—प्रकाशमय मुख में; उलवुकिन्ड्र—चलित रहनेवाली; वाळॅये चॉल्लुकेन्तो—तलवारें (आँखें) ही बखानूँ; वल् अवै—गोटियाँ (स्तन) उनको; वळुत्तुकेन्तो—बताऊँ; मीळवुम् तिकैप्पतु अल्लाल्—फिर-फिर चक्कर खाने के सिवाय; तनि तनि—अलग-अलग; विळम्पल् आड्रेन्—कह नहीं सकूँगी; नाळॅये काण्टि अन्ड्रे—कल तुम ही देख लो न; नान् उनक्कु उरैप्पतु ॲन्तो—मैं तुमको बताऊँ क्या। ६२६

हा! क्या मैं उसकी भुजाओं को कहूँ? या उज्ज्वल मुख में जो चंचल आँखें हैं, उन तलवारों का वर्णन करूँ? गोटी के समान उन स्तनों को कहूँ? (वल्+अवै का यह अर्थ होगा; अल+अवै शब्द लिये जायँ तो 'अन्य अंगों को कहूँ?' होगा।) किस अंग का वर्णन कर सकूँगी। कोई भी अंग लूँ तो फिर-फिर चक्रित होकर रुक जाना पड़ेगा। अलग-अलग किसी का उचित वर्णन नहीं कर पाऊँगी। तुम तो कल ही उसे देख लोगे न? फिर मैं क्या कहूँ तुमसे?। ६२६

❀ विल्लॉक्कु नुदलॅन् ड्रालुम् वेलॉक्कुम् विळियॅन् ड्रालुम्
पल्लॉक्कु मुत्तॅन् ड्रालुम् बवळत्तै यिदळॅन् ड्रालुम्
शॉल्लॉक्कुम् बॉरुळॉव् वादाड् चॉल्लला मुवमै युण्डो
नॅल्लॉक्कुम् बुल्लॅन् ड्रालुम् नेरुरैत् ताह वड्रो 627

नुतल् विल् ऑक्कुम्—उसका भाल धनु की समता करेगा; ॲन्ड्रालुम्—कहें तो भी; विळि—आँखें; वेल् ऑक्कुम्—भाले की समता करेंगी; ॲन्ड्रालुम्—कहें तो भी; पल् मुत्तु ऑक्कुम् ॲन्ड्रालुम्—दाँत मोती के समान हैं, कहने पर भी; पवळत्तै इतळ् ॲन्ड्रालुम्—प्रवाल को अधर कहें तो भी; चॉल् ऑक्कुम्—कहने भर के लिए ही समानता होगी; पॉरुळ् ऑव्वातु आल्—पदार्थ देखने पर समानता नहीं पाई जायगी; आल्—इसलिए; चॉल्लल् आम् उवमै उण्टो—कहने के लिए कोई उपमा है क्या;

नॆल् ऑक्कुम् पुल्–धान घास-सा है; ॲन्ऱालुम्–कहें तो भी; नेर् उरैत्तु आक वऱ्ऱो–सही बात कही गई क्या। ६२७

भाल धनु के समान है; आँखें भालों के समान, मोती दाँत के समान। ऐसा कहा जा सकता है। प्रवाल को उसका अधर कह सकते हैं। तो भी वह क्या सही रूप में उपमा कहना बन सकेगा ? केवल शाब्दिक उपमा होगी। तत्त्वतः उपमा ठीक नही उतरेगी। उसके अंगों से उपमेय वस्तुएँ है कहाँ ? कहने को तो कह सकते हैं कि धान घास है! पर क्या वह सही अर्थ में सार्थक हो सकता है ?। ६२७

इन्दिरन् शशियैप् पॆऱ्ऱा निरुमूनुरु वदनत् तोन्ऱन्
तन्दैयु मुमैयैप् पॆऱ्ऱान् ऱामरैच् चॆङ्गण् मालुम्
शॆन्दिरु महळैप् पॆऱ्ऱान् शीदैयै नीयुम् पॆऱ्ऱाय्
अन्दरम् वार्क्कि नन्मै यवर्क्किल्लै युन्क्के यैया 628

ऐया–महिमावान; इन्तिरन् चचियै पॆऱ्ऱान्–इन्द्र ने शची को पाया; इरु मून्ऱु वतनत्तोन् तन्–(दो के तीन = छः) षण्मुख के; तन्तैयुम्–पिता (शिवजी) को; उमैयै पॆऱ्ऱान्–उमादेवी प्राप्त हुई; तामरै चॆम् कणानुम्–कमलाक्ष ने भी; चॆम् तिरु मकळै–गोरी श्रीदेवी को; पॆऱ्ऱान्–प्राप्त किया; नीयुम्–तुमने भी; चीतैयै पॆऱ्ऱाय्–सीता को प्राप्त किया; अन्तरम् पार्क्किन्–अन्तर देखा जाय तो; अवर्क्कु नन्मै इल्लै–सौभाग्य उनका नहीं है; उनक्के–तुम्हारा ही। ६२८

(शूर्पणखा रावण के मन में सीता-प्रेम जाग्रत् करती है।) इन्द्र को शचीदेवी प्राप्त हुई। षण्मुख के पिता ने उमा को प्राप्त किया। कमलाक्ष विष्णु को कमला मिली। तुम्हें सीता मिल गयी। पर अन्तर देखने पर उन सबका भाग्य उतना खरा नहीं। तुम्हारा ही सर्वश्रेष्ठ होगा। तुम्हारा भाग्य ही श्लाघनीय है। ६२८

* पाहत्ति लॊरुवन् वैत्तान् पङ्गयत् तिरुन्द पॊन्नै
आहत्ति लॊरुवन् वैत्ता नन्दण नाविन् वैत्तान्
मेहत्तिन् मिन्नै मुन्ने वॆन्ऱनुण् णिडैयि नाळै
माहत्तोळ् वीर पॆऱ्ऱा लॆङ्ङनम् वैत्तु वाऴ्दि 629

पाकत्तिल् ऒरुवन् वैत्तान्–एक ने अपने बायें भाग में रख लिया (शिव की पार्वती अर्धांगिनी बनी); पङ्कयत्तु इरुन्त पॊन्नै–कमला श्री को; ऒरुवन्–(त्रिदेवों में) एक (विष्णु) ने; आकत्तिल् वैत्तान्–वक्ष में रख लिया; अन्तणन्–ब्राह्मण (ब्रह्मा) ने; नाविल् वैत्तान्–जीभ में रख लिया; माक तोळ् वीर–आकाश तक उन्नत कन्धे वाले वीर; मेकत्तिन् मिन्नै–मेघ की बिजली को; मुन्ने वॆन्ऱ–जिसने पहले ही हरा दिया; नुण् इडैयिनाळै–उस क्षीण कटि-भूषित सीता को; पॆऱ्ऱाल्–पाओगे तो; ॲङ्ङनम्–कहाँ; वैत्तु वाऴ्ति–रखकर जीवन चलाओगे। ६२९

हाँ! आकाश तक उन्नत कन्धों वाले वीर भाई! त्रिदेवों में एक, शिव

ने उमा को अपने शरीर के वाम भाग में स्थान दिया। दूसरे (विष्णु) ने कमला श्रीदेवी को अपने वक्ष में रख लिया। तीसरे, ब्राह्मणोत्तम (ब्रह्मा) ने सरस्वती को अपनी जीभ में स्थान दे दिया। सीता बड़ी सुन्दरी है। उसकी कमर ने मेघ की बिजली को हरा दिया है। उस सीता को प्राप्त करके तुम कहाँ स्थान देकर उसके साथ जीवन बिताओगे ? । ६२९

❀ पिळ्ळैपोर् पेशुवाळैप् पॆऱ्ऱपिन् पिळैक्क लाऱ्ऱाय्
कॊळ्ळैमा निदियमॆल्ला मवळुक्के कॊडुत्ति यैय
वळ्ळले युनक्कु नल्लेन् मऱ्ऱुनिन् मनैयिन् वाळुम्
किळ्ळैबोन् मॊऴियाऱ्क् केल्लाङ् गेडुशूऴ् हिन्ऱे नन्ऱे 630

ऐया–महिमावान; वळ्ळले–दानी; पिळैक्कल् आऱ्ऱाय्–अचूक परिश्रमी; पिळ्ळै पोल् पेच्चित्ताळै–सारिका की-सी बोली वाली को; पॆऱ्ऱपिन्–पाने के बाद; कॊळ्ळै पोकिन्ऱ चॆल्वम्–लूटी जानेवाली अपनी सम्पत्ति को; अवळुक्के कॊटुत्ति–उसी को दे दो; उनक्कु नल्लेन्–तुम्हारी हितू हूँ; उन् मनैयिल् वाळुम्–तुम्हारे महल में रहनेवाली; किळ्ळै पोल्—शुक-सम; मॊऴियाऱ्क्कु ऎल्लाम्–बोलनेवाली सभी (स्त्रियों) को; केटु चूऴ्किन्ऱेन् अन्ऱे–अहित करती हूँ न। ६३०

महिमावान ! यह सर्वविदित है कि तुम्हारे प्रयत्न कभी असफल नहीं होते। सीता तुम्हारी हो जायगी। सारिका-वाणी को लाने के बाद तुम अपनी सारी सौभाग्यश्री को, जिसे अब तुम्हारी अन्य प्रियाएँ लूट रही हैं, उसे दे दो। देखो मैं तुम्हारा हित कर रही हूँ। पर तुम्हारे महल में तुम्हारी कृपा का पात्र बनी जो स्त्रियाँ रहती है, उनको कष्ट दिला रही हूँ न ? । ६३०

❀ तेर्तन्द वल्हुर् चीदै तेवर्द मुलहि लिम्बर्
वार्तन्द मुलैयि नार्दम् वयिऱुतन् दाळु मल्लळ्
तार्तन्द कमलत् ताळैत् तरुक्किनर् कडैयच् चङ्ग
नीर्तन्द ददनै वॆल्वा निलन्दन्दु निमिर्न्द दन्ऱे 431

तेर् तनृत अल्कुल्–रथ-समान जघन वाली; चीतै–सीता; तेवर् तम् उलकिल्–देवों के लोक में; इम्पर्–इहलोक में; वार् तनृत कॊङ्कैयार् तम्—अँगिया-बद्ध उरोजों से शोभित स्त्रियों की; वयिऱु तन्ताळुम् अल्लळ्–कोख से आई हुई नहीं है; चङ्क नीर्–शंखकीटों से युक्त क्षीरसागर को; तरुक्किनर् कटैय–गर्वीले (देवासुरों) के मथने पर; तार् तनृत कमलत्ताळै–कमलपुष्पमाला-धारिणी को; तन्ततु–(उसने) पैदा किया; अततै वॆल्वान्–उसको हराने के लिए; निलम् तन्तु–भूमि इसे पैदा करके; निमिर्न्ततु–उत्कृष्ट हुई। ६३१

रथ के समान नितम्बयुक्त सीता स्वर्ग या भूलोक की किसी अँगिया-बद्ध उरोजों के साथ शोभनेवाली स्त्री के पेट से पैदा हुई नहीं है। शंखों से भरे क्षीरसागर ने, बलवान देवासुरों से मथने पर कमलमालाधारिणी

श्रीलक्ष्मीदेवी को उत्पन्न किया। उस क्षीरसागर को नीचा दिखाने के लिए भूमि इसको उत्पन्न करके तर्जीह (श्रेष्ठता) पा गयी। ६३१

❀ मीऩ्गॊण्ड कॊडि यिऩ्ऩाऱ्कु विऴावयर्न् दुलह मेत्तत्
तेऩ्गॊण्ड नॆऱिमॆन् कून्दऱ् चिऱ्ऱिडैच् चीदैयॆऩ्ऩुम्
माऩ्गॊण्डुण् डाडु नीयुन् वाऴ्वलि युलहङ् गाण
याऩ्गॊण्डू डाडुम् वण्ण मिरामऩैत् तरुदि यॆऩ्बाल् 632

मीन् कॊण्ट कॊटियिऩ्ताऱ्कु–मत्स्य की ध्वजा वाले (मन्मथ) का; उलकम् विऴा अयर्न्तु एत्त–लोक उत्सव मनाकर उसकी स्तुति करे; उन् वाऴ् वलि उलकम् काण–तुम्हारी तलवार की शक्ति भुवन देखे; तेन् कॊण्ट–मधु-भरा; नॆऱि–घुंघराला; मॆन् कून्तल्–कोमल केश; चिऱु इटै–पतली कमर; चीतै ऎन्नुम्–(इनसे युक्त) सीता नाम की; मान्–हरिणी (-सी सीता) को; नी कॊण्टु–तुम लाकर; उण्टाटु–उसके साथ केलि करो; यान् कॊण्टु ऊटाटुम् वण्णम्–मैं लेकर खेलूं; ऎन्पाल् इरामनै तरुति–मेरे पास राम को दिला दो। ६३२

तुम मकरकेतन का उत्सव और स्तुति लोक द्वारा कराते हुए और अपनी असि का पराक्रम दिखाते हुए उस सीता को हर ले आओ। उसका केश मधुमिश्रित घुँघुराला और कोमल है। कमर पतली है और वह हरिणी-सी है। उसको लाकर तुम उसके साथ केलि करो और मुझे लेकर खेलने के लिए उस राम को मुझे दिला दो। ६३२

❀ तरुवदु विदियॆ यॆऩ्ऱाऱ् ऱवम्बॊरि दुडैय रेनुम्
वरुवदु वरुना ळन्ऱि वन्दुकै कूड वऱ्ऱो
वॊरुबदु मुहमु माऱ्बु मुरुवमुङ् गण्णुन् दोळ्हळ्
इरुबदुम् बडैत्त शॆल्व मॆय्दुव दिनिऩ्ऩो यॆऩ्ऱाळ् 633

तरुवतु वितियॆ–(भलाई) देनेवाली विधि ही है; ऎन्ऱाल्–कहा जाय तो; तवम् पॊरितु उटैयरेनुम्–बड़ा तपस्वी हो तो भी; वरुवतु–होनी; वरुम् नाळ् अन्ऱि–होने का काल छोड़कर; वन्तु कै कूट वऱ्ऱो–आ मिल सकनेवाली है क्या; ऒरु पतु मुकमुम्–दस मुख; मार्पुम्–वक्ष; कण्णुम् तोळ्कळ् इरुपतुम्–और बीस-बीस आँखें और कन्धे; उरुवमुम्–इनसे युक्त शरीर; पटैत्त चॆल्वम्–(और तुम्हारा) प्राप्त धन; नी ऎय्तुवतु–तुम सच्चे अर्थ में पाओगे (उसका भोग करोगे); इनि–(सीता-प्राप्ति पर) आगे ही; ऎन्ऱाळ्–कहा। ६३३

विधि ही भला देनेवाली है। तो भी बड़े तपस्वी को भी तभी कुछ प्राप्त होता है, जब उचित काल आकर मिलता है। तुम्हारे दस सिर हैं, दस वक्ष और बीस नेत्र और कन्धे। तुम्हारे पास असीम सम्पत्ति है। तो भी उनके भोग का अब तक समय नहीं आया है। सीता की प्राप्ति के बाद ही वह काल आयगा। —यह सब कहकर शूर्पणखा ने रावण के मन में सीता के प्रति काम को पैदा करके उभारा। ६३३

❀ अऩ्ऩव डऩ्ऩै युऩ्बा लुय्प्पदेऩ् ऱणुह लुऱ्ऱ
अॆऩ्ऩैयव् विरामऩ् ऱम्बि यिडैबुहुन् दिलङ्गु वाळाल्
मुऩ्ऩैमूक् करिन्दु विट्टाऩ् मुडिन्ददॆन् वाळ्वु मुऩ्ऩिऩ्
शॊऩ्ऩपि ऩुयिरै नीप्पाऩ् ऱुणिन्दनॆ नॆऩ्ऩच् चॊऩ्नाळ् 634

अऩ्ऩवळ् तऩ्ऩै–ऐसी सीता को; उऩ् पाल् उय्प्पतु ऍऩ्ऱु–तुम्हारे पास पहुँचाने का विचार करके; अणुकल् उऱ्ऱ–समीप (जो) गई; ऍऩ्ऩै–मुझे; अ इरामऩ् तम्पि–उस राम के छोटे भाई ने; इटै पुकुन्तु–बीच में घुसकर; इलङ्कु वाळाल्–(अपने पास रहे) कटार से; मुऩ्ऩै–(सीता को पकड़ने से) पहले ही; मूक्कु अरिन्तु विट्टाऩ्–मेरी नाक काट दी; ऍऩ् वाळ्वुम् मुटिन्ततु–मेरा जीवन भी (व्यर्थ) गया; उऩ्ऩिल् चॊऩ्ऩ पिऩ्–तुमसे कहने के बाद; उयिरै नीप्पाऩ्–प्राण छोड़ने का; तुणिन्तऩॆऩ्–निश्चय किया; ऍऩ्ऩ चॊऩ्ताळ्–ऐसा कहा। ६३४

आगे कहा कि भाई ! ऐसी सीता को तुम्हारे पास ले आने का निश्चय करके मैं उसके समीप जाने लगी। तभी उस राम के छोटे भाई ने बीच में घुसकर अपने पास रहे खड्ग से मेरी नासिका काट दी। मेरा जीवन उसके साथ गया, समझ लिया। पर तुम्हारे पास आकर यह कहने के बाद प्राण त्याग दूँगी —यही विचार ले इधर आयी हूँ। ६३४

कोबमु मऱ्ऱु माऩक् कॊदिप्पुमॆऩ् ऱिऩैय वॆल्लाम्
पाबनिऩ् ऱिडत्ति ऩिल्लाप् पॆऱ्ऱिबोऱ् पऱ्ऱु विट्ट
तीबमॊऩ् ऱॊऩ्ऱै युऱ्ऱा लॆऩ्ऩलाज् जॆयलिऱ् पुक्क
ताबमु नाणु मॊऩ्ऱा युयिरॊडुन् दळीइय वऩ्ऱे 635

कोपमुम्–क्रोध; मऱ्ऱुम्–और वीरता; मात कॊतिप्पुम्–अपमानजनित ताप; ऍऩ्ऱु–आदि; इऩैय ऍल्लाम्–ऐसे सभी भाव; पापम् निऩ्ऱिटत्तु–पाप के स्थान पर; निल्ला पॆऱ्ऱि पोल्–जो रह नहीं सकता, उस पुण्य-भाग के समान; पऱ्ऱु विट्ट–रावण का साथ छोड़ गये; तीपम् ऒऩ्ऱु ऒऩ्ऱु उऱ्ऱाल्–एक दीये से दूसरा दिया लगा तो; ऍऩ्ऩल् आम् चॆयलिल्–जो होगा ऐसी रीति से; तापमुम्–ताप; काम नोयुम्–और कामरोग; उयिरॊटु तळीय–रावण के प्राणों से मिले और बढ़े। ६३५

यह सुनने पर रावण की विचित्र दशा हो गयी। पुरुषोचित क्रोध, वीरोचित साहस, अपमानजनित सन्ताप —सभी भाव ऐसे भाग गये जैसे पाप जहाँ है वहाँ से पुण्य का सुखसौभाग्य भाग जाता है। एक से एक दीप मिल जाने पर जैसा फल होगा, उसके समान उसके प्राणों में राग का ज्वर और कामरोग मिल गये। ६३५

❀ करऩैयु मऱ्ऱदाऩ् ऱङ्गै मूक्किऩैक् कडिन्दु निऩ्ऱार्
उरऩैयु मऱ्ऱदा ऩुऱ्ऱ पऴियैयु मऱ्ऱदाऩ् वॆऱ्ऱि
अरऩैयुङ् गॊण्ड काम ऩम्बिऩाऩ् मुऩ्बु पॆऱ्ऱ
वरऩैयु मऱ्ऱदाऩ् केट्ट मङ्गैयै मऱ्ऱदि लादाऩ् 636

अरत्तैयुम् वॆऱ्ऱि कॊण्ट–हर को हरानेवाले; कामन् अम्पिऩाल्—काम-बाण से; केट्ट मङ्कैयै–सुनी हुई (सीता) देवी को; मऱन्तिलाताऩ्–जो नहीं भूला; करनैयुम् मऱन्ताऩ्–(वह) खर को भूला; तङ्कै–अनुजा को; मूक्किऩै–नाक को; कटिन्तु–काटकर; निऩ्ऱार्–जो बचे रहते हैं, उनका; उरत्तैयुम् मऱन्ताऩ्–बल भूला; उऱ्ऱ पऴियैयुम्–प्राप्त अपयश; मऱन्ताऩ्–भूला; मुऩ्ऩै पॆऱ्ऱ–पहले (ब्रह्मा, शिव आदि से) प्राप्त; वरत्तैयुम् मऱन्ताऩ्–वरों को भूल गया। ६३६

रावण हरविजयी था। पर काम का बाण बली था। उससे आहत वह देवी सीता को, जिसके सम्बन्ध में शूर्पणखा से सुना भर था, भूल नहीं सका। पर खर मरा —यह भूल गया; छोटी बहिन की नाक कटी है —यह भी भूल गया। राम का बल भी स्मरण नहीं रहा। अपने पर लगा अपयश, ब्रह्मा, शिव आदि द्वारा दत्त वर —सभी भूल गया, रावण। ६३६

शिऱ्ऱिडैच् चीदै यॆऩ्ऩु नाममुञ् जिन्दै तानुम्
उऱ्ऱिरण् डॊन्ऱाय् निऩ्ऱा लॊऩ्ऱॊऴित् तॊन्ऱै युऩ्ऩ
मऱ्ऱॊरु मऩमु मुण्डो मरक्कलाम् वऴिमऱ् ऱियादो
कऱ्ऱऱि ञान मिऩ्ऱेऱ् कामत्तैक् कडक्क लामो 637

चिऱ्ऱ इटै चीतै—क्षीण-कटि सीता; ऎऩ्ऩुम् नाममुम्–का नाम और; चिन्तै तानुम्–उसका मन; इरण्टुम्–दोनों; ऒऩ्ऱाय् उऱ्ऱु निऩ्ऱाल्–एक साथ मिले रहे तो; ऒऩ्ऱु ऒऴित्तु–एक को छोड़कर; ऒऩ्ऱै उऩ्ऩ–(दूसरे) एक को सोचने के लिए; मऱ्ऱु ऒरु मऩमुम् उण्टो–(दूसरा) एक मन है क्या; मऱक्कल् आम् वऴि–भूलने का मार्ग; मऱ्ऱुम्–और कोई; यातो—कौन सा है; कऱ्ऱु अऱि ञातम् इऩ्ऱेल्–सीखकर प्राप्त ज्ञान नहीं हो तो; कामत्तै कटक्कल् आमो–काम को जीतना हो सकता है क्या। ६३७

रावण का मन और पतली कमर की सीता का नाम दोनों बहुत ही प्रबल रूप से जुड़ गये। फिर एक से रहित दूसरे का अस्तित्व असम्भव हो गया। फिर दूसरा अलग एक मन भी नहीं था, जो उनमें एक को छोड़ दूसरा स्मरण करे। भूलने का कोई दूसरा मार्ग भी नहीं रहा। शास्त्र पढ़कर उसके उपदेशों के कार्यान्वित अभ्यास द्वारा प्राप्त (अमली) ज्ञान जिसमें नहीं है, वह काम पर विजय पा कैसे सकेगा ? । ६३७

मयिलुडैच् चाय लाळै वञ्जिया मुऩ्ऩ नीण्ड
ऎयिलुडै यिलङ्गै वेन्द निदयमाञ् जिऱैयि लिट्टाऩ्
आयिलुडै यरक्क नुळ्ळ मव्वऴि मॆल्ल मॆल्ल
वॆयिलुडै नाऴि लुऱ्ऱ वॆण्णॆय्बोल् वॆदुम्बिऱ् ऱऩ्ऱे 638

नीण्ट ऎयिल् उटै–लम्बे प्राचीरों से आवृत; इलङ्कै वेन्तऩ्–लंका के राजा ने; मयिल् उटै चायलाळै–मयूरनिभ सीता को; वञ्चिया मुऩ्ऩम्–प्रवंचना से लाने से पहले

ही; इतयम् आम् चिरैयिल्–हृदय रूपी कारा में; इट्टान्–बन्द कर दिया; अयिल् उटै–भालाधारी; अरक्कन् उळ्ळम्–राक्षस का मन; अ वळि–तब; वेयिल् उटै नाळिल्–धूप-तप्त दिन में; उऱ्ऱ–धूप में रखे; वेण्णेय् पोल्–मक्खन के समान; मेल्ल मेल्ल–धीरे-धीरे; वेतुम्पिऱ्ऱु–गरम होकर पिघला। ६३८

प्राचीरों से आवृत लंका के राजा रावण ने मयूराभा सीताजी को वंचना द्वारा हर लाने के पूर्व ही अपने हृदय की कारा में कैद कर रख लिया! भालाधारी राक्षस का हृदय तब गरम दिन में आतपदग्ध मक्खन के समान धीरे-धीरे पसीजने लगा। ६३८

विदियदु वलियि नालु मेलुळ विळैवि नालुम्
पदियुरु केडु वन्दु कुरुहिय बयत्ति नालुम्
कदियुरु पोऱियिन् वेय्य कामनोय् कल्वि नोक्का
मदियिलि मऱैयच् चेय्द तीमैबोल् वळर्न्द दन्ऱे 639

वितियतु वलियित्तालुम्–विधि के बल से और; मेल् उळ–आगे की; विळैवित्तालुम्–होनी के निमित्त; पति उरु केटु–और लंका नगर पर जो आना था, वह कष्ट; कुरुकिय पयत्तित्तालुम्–निकट आ गया, उस भावी के फल के कारण; कति उरु पोऱियिल्–गतियुक्त यन्त्र के समान; वेय्य काम नोय्–पीड़क कामरोग; कल्वि नोक्का–विद्याविहीन; मति इलि–बुद्धि-रहित किसी का; मऱैय चेय्त–छिपाकर किया; तीमै पोल्–बुरा काम-सा; वळर्न्ततु–बढ़ा; (अन्ऱु–ए)। ६३९

विधि प्रबल थी। होनी होनेवाली थी। लंका पर विनाश लाने का समय निकट आ गया था। इसलिए गतियुक्त यन्त्र के समान भयंकर कामरोग राक्षस के शरीर भर में, विद्यावंचित बुद्धिहीन आदमी से किये गये अनर्थ के समान, व्याप्त हो गया। ६३९

पोन्मय मान नङ्गै मनम्बुहप् पुन्मै पूण्ड
तन्मैयो वरक्कन् ऱन्नै ययर्त्तदोर् तहैमै यालो
मन्मदन् वाळि तूवि नलिवदोर् वलत्त नानान्
वन्मैयै माऱ्ऱु माऱ्ऱल् कामत्ते वदिन्द दन्ऱे 640

पोन् मयम् आन–स्वर्णमय (आभा से) शोभायमान; नङ्कै–नायिका के; मतम् पुक–मन में प्रवेश के कारण; पुन्मै पूण्ट तन्मैयो–(रावण) बलहीनता पा गया था, या; तन्नै अयर्त्ततु ओर्–अपने को भूले रहने की; तकैमैयालो–एक स्थिति रही, इस वजह से; अरक्कन् तन्नै–राक्षस को; मन्मतन्–मनोज; वाळि तूवि–पुष्प-शर बरसाकर; नलिवतु–त्रस्त कर देनेवाला; ओर वलत्तन् आनान्–एक बली बन गया; वन्मैयै माऱ्ऱुम् आऱ्ऱल्–बल को वृथा करने की शक्ति; कामत्ते–काम में; वतिन्ततु अन्ऱे–रही न। ६४०

स्वर्णमय देवी के रावण के मन में प्रविष्ट होने से रावण दुर्बल हो

गया ? या वह अपने को भूले रहा ? अब राक्षस को मन्मथ अपने पुष्प-शरों से आहत करने में समर्थ हो गया ! हाँ ! बल को बेकार करने की शक्ति कामेच्छा में निहित रहती है न ? । ६४०

इऴिन्दन निरुक्कै निन्ऱाण् डेऴुल हत्तु ळोरुम्
मॊऴिन्दन राशि योशै मुऴङ्गिन शङ्ग मॆङ्गुम्
पॊऴिन्दनर् पूविन् मारि पोयिनर् पुऱत्तो रॆल्लाम्
अऴिन्दयर् शिन्दै योडु माडहक् कोयिल् पुक्कान् 641

इरुक्कै निन्ऱु–आसन से; इऴिन्तनन्–उतरा; आण्टु–तब वहाँ; एऴ् उलकत्तोरुम्–सातों लोकवासी; आचि मॊऴिन्तनर्–आशीर्वचन बोले; चङ्कम् ऎङ्कुम्–शंख सर्वत्र; ओचै मुऴङ्कित–नाद कर उठे; पुऱत्तोर् ऎल्लाम्–पास रहे सभी; पूविन् मारि–पुष्पवर्षा; पॊऴिन्तनर्–करके; पोयिनर्–हटे; अऴिन्तु अयर्–शिथिल होकर मुरझानेवाले; चिन्तैयोटुम्–मन के साथ; आटक कोयिल्–स्वर्णमय भवन में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुआ । ६४१

रावण आसन से उतरा । तब जो सातों लोकों के लोग वहाँ थे, उन्होंने आशीर्वचन कहे । सब स्थानों पर शंख बज उठे । पास जो रहे उन्होंने पुष्पवर्षा की । वे हट गये । रावण खिन्न और श्रांतमन होकर स्वर्णनिर्मित अपने महल में प्रविष्ट हुआ । ६४१

पूविनाल् वेय्न्दु शॆय्द पॊङ्गुपे रमळिप् पॊऱ्पिन्
देविमार् वॆळ्ळ नीङ्गिच् चेर्न्दनन् शेर्द लोडुम्
नाविना ऱोदि नव्वि नयन्नमुन् नलनु नण्णिप्
पावियाक् कॊडुत्त वॆम्मै पयप्पयप् परन्द दन्ऱे 642

तेविमार् वॆळ्ळम् नीक्कि–स्त्रियों की भीड़ त्यागकर; पूविनाल् वेय्न्तु चॆय्त–पुष्प छाकर निर्मित; पॊऱ्पिन्–सुन्दरता में; पॊङ्कु पेर् अमळि–अधिक उत्कृष्ट शय्या में; चेर्न्तनन्–गया; चेर्तलोटुम्–उसमें जाते ही; नावि नाऱु ओति–कस्तूरी की गन्ध से युक्त केशिनी की; नव्वि नयनमुम्–मृग की-सी आँखों; नलनुम्–और अन्य अंग-सौष्ठव ने; नण्णि–आकर; पाविया–भावना करने से; कॊटुत्त–जो दिया; वॆम्मै–वह ताप; पय पय–धीरे-धीरे; परन्ततु–(उसके शरीर भर में) व्याप्त हो गया । ६४२

पत्नियों की भीड़ का निवारण करके वह एक पुष्पशय्या पर लेटा । उस सुन्दर शय्या के ऊपर का वितान भी फूलों से सज्जित था । उस पर लेटते ही उसके मन ने कस्तूरी की सुगन्ध से भरे केश से युक्त सीतादेवी के मृग के-से नयन और अन्य अंगसौष्ठव की भावना की । उस भावना के कारण बड़ा ताप पैदा हुआ और वह धीरे-धीरे शरीर में व्यापकर पीड़ा देने लगा । ६४२

नूक्क लाह लाद काद नूरु नूरु कोडियाय्प्
पूक्क वाश वाडै वीशु शीद नीर्बी दिन्दमॅन्
शेक्कै वीक रिन्दु तिक्क यड्ग ळॅट्टुम् वॅन्रतोळ्
आक्कै तीय वुळ्ळ नैय वावि वेव दायिन्नान् 643

नूक्कल् आकलात–अनिवार्य; कातल्–कामेच्छा; नूरु नूरु कोटियाय्–शत-शत करोड़ गुना; पूक्क–विकसित हुई; वाटै वीचु–उदीची से आनेवाली; चीत नीर्–शीत जल से; पॉतिन्त–भरी; मॅन् चेक्कै–कोमल शय्या के; वाच वी–सुगन्धयुक्त पुष्प; करिन्तु–झुलस गये और; तिक्कु कयङ्कळ् ॲट्टुम्–आठों दिग्गजों को; वॅन्र–जिन्होंने हराया था, वे; तोळ् आक्कै–कन्धे और शरीर; तीय–जल उठे; आवि वेवतु–प्राण मुरझाये; आयिन्नान्–ऐसी स्थिति का हो गया। ६४३

सीता पर उसकी कामेच्छा निवार्य नहीं लगी। वह शत-शत कोटि-कोटि गुना विकसित हुई। तब उसकी शय्या के सुबासित फूल सूखने लग गये, यद्यपि उसमें उदीची हवा द्वारा लायी गयी शीतल सीकरें खूब भरी थीं। और भी उसका शरीर और उसके कंधे भी, जिन्होंने आठों दिग्गजों को हराया था, जलने लगे। प्राण भी जलते-से लगे। ऐसी विकट स्थिति में पड़ गया रावण। ६४३

तादु कॉण्डु शीद मुज्जु मन्दु तण्णॅ न्नन्दमॅन्
पोदु कॉण्ड डुत्त पोदु पॉङ्गु तीम रुन्दिन्नाल्
वेदु कॉण्ड दॅन्न मेन्नि वॅन्दु शिन्द विम्मुदी
ऊदु वन्रु रुत्ति पोलु यिर्त्तु यिर्त्तु यङ्गिन्नान् 644

तातु कॉण्टु–मकरन्द लेकर; चीतमुम् चुमन्तु–शीतलता ढोते हुए; तण् ॲन्–शीतल; अन्त–उन; पोतु कॉण्टु–पुष्प लेकर; अट्टुत्त पोतु–(जब वह उदीची हवा) आई तब; पॉङ्कु ती मरुन्तिन्नाल्–भभकती आग रूपी दवा से; वेतु कॉण्टतु ॲन्न–सेंका गया, ऐसा; मेन्नि वॅन्तु–शरीर गरम होकर; चिन्त–छितर जाय, ऐसा; विम्मु ती–बढ़नेवाली आग को; ऊतु–फूंकनेवाली; वन् तुरुत्ति पोल्–बलवान भाथी के समान; उयिर्त्तु उयिर्त्तु–लम्बी साँसें छोड़ते-छोड़ते; उयङ्किन्नान्–श्लथ हुआ। ६४४

उदीची हवा मकरन्द, शीतल जल और कुसुमों को लेकर, स्वयं ठण्डी रहकर आयी। पर उससे भभकनेवाली ज्वाला से सेंका गया हो, ऐसा वह गरम साँसें छोड़ने लगा। वे साँसें धौंकनी की हवा के समान उसके शरीर को अंगारे छितरानेवाली आग के समान पीड़ा देने लगीं और वह छटपटाने लगा। ६४४

तावि यादु तीयॅ नादु तैयलाळै मॅय्युरप्
पावि याद पोदि लाद पावि माळै पान्नल्वेल्
कावि यान्न कण्णि मेन्नि काण मूळु माशैयाल्
आवि शाल नॉन्दु नॉन्द ळङ्गु वानु मायिन्नान् 645

तावियातु–स्थिर न करके; ती अँतातु–(परदारा-प्रेम) अग्नि है, यह न सोचकर; तैयलाळै–देवी को; मॅय् उऱ्‌–सचमुच; पावियात–नहीं स्मरण किया हो, ऐसा; पोतु इलात–जिसका समय नहीं रहा; पावि–वह पापी (रावण); माळै–आम; पात्तल्–कुवलय; वेल्–भाला; कावि–नीलोत्पल; आन्–ऐसे; कण्णि–नेत्रों की; मेत्ति काण–(देवी का) रूप देखने के लिए; मूळम्–वढ़नेवाली; आचैयाल्–लालसा से; आवि चाल नॉन्तु नॉन्तु–प्राणों के खूब पीड़ित होते-होते; अळुङ्कुवातुम् आयित्तान्–वहुत कष्ट उठाता रहा। ६४५

वह अपने मन को वश में न रख सका; न सीता को आग समझकर उनकी इच्छा करने से विरत हो सका। उस पापी के पास समय ही नहीं रहा, जव उसने सीताजी की भावना नहीं की ! उसके मन में आम की फाँकें, कुवलय, भाला और नीलोत्पल —इनके समान जिनके नेत्र थे, उनका पूरा रूप देखने की दुर्दम लालसा उठी। वह वढ़ने लगी। उस कारण उसके प्राण वहुत कष्ट उठाने लगे। .वह भी वहुत कष्ट में पड़ा। ६४५

परङ्गि डन्द मादि रञ्जु मन्द पाळि यात्तैयिन्
करङ्गि डन्द कोम्बॉ डिन्द डङ्ग वॅन्ऱ कावलान्
मरङ्गु डैन्द तुम्बि पोल ऩङ्ग वाणम् वन्दुवन्
दुरङ्गु डैन्दु नॉन्दु नॉन्दु ळैन्दु ळैन्दॉ डुङ्गिनान् 646

परम् किटन्त मातिरम्–भारयुक्त दिशाओं के; चुमन्त–वाहक; पाळि यात्तैयित्–मोटे (दिग्-) गजों की; करम् किटन्त–सूंड़ों के वाजू में रहे; कॉम्पु ऑटिन्तु–दाँत टूटकर; अटङ्क–(उसके) वक्ष में समा गये; वॅन्ऱ कावलान्–ऐसा विजयी राजा; अनङ्कपाणम्–अनंग-वाणों के; वन्तु वन्तु–आ-आकर; मरम् कुटैन्त–काठ को छेदनेवाले; तुम्पि पोल्–कीड़े (भ्रमर ?) के समान; उरम् कुटैन्तु–वक्ष को छेदने से; नॉन्तु नॉन्तु–वेदना सहते-सहते; उळैन्तु उळैन्तु–वहुत दर्द पाते-पाते; ऑटुङ्कित्तान्–शिथिल हो गया। ६४६

रावण वली वीर था। वोझीली दिशाओं के वाही दिग्गजों से जव उसने युद्ध किया था, तव उनके दाँत उसके कठोर वक्ष से टकराकर टूट गये और उसके वक्ष में ही रह गये। ऐसे राजा के वक्ष में अव मन्मथ के पुष्पशर घुसकर छेद वनाने लगे। काठ में जैसे कीड़ा छेद वना देता है, वैसा उन शरों ने उसके वक्ष को भेद डाला। रावण वेदना के मारे थक गया। ६४६

कॉन्ऱै तुन्ऱु कोदै योडॉर् कॉम्बु वन्दॆ तॆञ्जिडै
निन्ऱ दुण्डु कण्ड दॆन्ऱु ळन्द ळुङ्गु नीर्मैयान्
मन्ऱ ऱङ्ग लङ्गन् मारन् वाळि पोल मल्लिहैत्
तॆन्ऱल् वन्दॆ दिर्न्द पोदु शीऱु वानु मायिनान् 647

कॉन्ऱै तुन्ऱु–अमलतास के फलों के समान; कोतै ऑटु–केश के साथ; ओर्

कॊम्बु वन्दु–एक पुष्पशाखा आकर; ऎन् नॆञ्चु इटै–मेरे मन में; निन्ऱदु–रह गई; कण्टतु उण्टु–मैंने देखा; ऎन्ऱु–यह कहते हुए; उळन्तु अळुङ्कु नीर्मैयान्–दुखी होकर संकट उठानेवाला; मन्ऱल् तङ्कु–सुवास-निलय; अलङ्कल् मारन्–मालाधारी मन्मथ के; वाळि पोल–(पुष्प-) शरों के समान; मल्लिकै तॆन्ऱल् वन्तु–मल्लिका के बास के साथ मलयपवन आकर; ऎतिर्न्त पोतु–जब उस पर लगा, तब; चीऱ्ऱत्तुम् आयितान्–कोप करनेवाला भी बना। ६४७

उसे ऐसा भान रहा कि अमलतास के फलों के समान काले केश के साथ एक पुष्पलता के समान सुन्दरी उसके दिल में आकर ठहर गयी। तब वह दुखी होकर क्लान्त रहा। पर जब मलयपवन मल्लिका के फूलों का बास ढोता हुआ मन्मथ के शरों के समान उस पर लगा तो उसने कोप दिखाया। ६४७

अन्न कालै यङ्गु निन्ऱॆ ऴुन्द ऴुङ्गु शिन्दैयान्
इन्न वारु शॆय्वॆ नॆन्ऱॊ रॆण्णि लानि रङ्गुवान्
पन्नु कोडि दीब मालै पालै याऴ्प्प ऴित्तशॊऱ्
पॊन्न नारॆ डुक्क वङ्गॊर् शोलै यूडु पोयिनान् 648

अन्न कालै–तब; अळुङ्कु चिन्तैयान्–क्लान्तमन; अङ्कु निन्ऱु–(रावण) वहाँ से; ऎऴुन्तु–उठकर; इन्न आऱु चॆय्वॆन्–ऐसा करूँ; ऎन्ऱु–यह; ओर् ऎण्–किसी एक विचार; इलान्–के बिना; इरङ्कुवान्–दुखी रहा; पालै याऴ्–'पालै' नाम की 'याऴ्' (वीणा) के स्वर को; पऴित्त चॊल्–परिहसित करनेवाली बोली वाली; पॊन् अन्नार्–स्वर्ण-सम सुन्दरियों के; पन्नु–प्रशंसित; कोटि तीप मालै ऎटुक्क–बहुसंख्यक दीप-माला लेते आते; अङ्कु–वहाँ; ओर् चोलै ऊटु–एक उद्यान में; पोयिनान्–गया। ६४८

तब रावण वहाँ से उठा। उसका मन बड़ा क्लेशपूर्ण था। उसे नहीं सूझ रहा था कि क्या किया जाय। उससे वह और भी उद्विग्न हुआ। तब वह पास के एक उद्यान में चला। उसके साथ 'पालै याऴ्' नाम की वीणा के स्वर से भी मधुर बोली वाली सुन्दरियाँ बहुत बड़ी संख्या में दीप की मालाएँ लेते हुए चलीं। ६४८

माणिक्कम् पनशम् वाऴै मरहदम् वयिरन् दॆमा
आणिप्पॊन् वेङ्गै कोङ्ग मरविन्द रागम् बूगम्
शेणुऱ्ऱ नीलञ् जालङ् गुरुविन्दन् दॆङ्गु वॆळ्ळि
पाणित्तॆण् पळिङ्गु नाहम् पाटलम् पवळ मन्नो 649

पनचम्–पनस (कटहल); माणिक्कम्–माणिक्यमय हैं; वाऴै–कदली; मरकतम्–मरकतमय; तेमा वयिरम्–मधुर आम हीरे से; वेङ्कै–'वेंगै' वृक्ष; आणिप् पॊन्–चोखे स्वर्णमय; कोङ्कु–'कोंगु' तरु; अरविन्त राकम्–पद्मराग; चेण् उऱ्ऱ पूकम्–गगनस्पर्शी पूगतरु; नीलम्–इन्द्रनील; चालम्–सालवृक्ष; कुरुविन्तम्–रत्नमय;

तॆङ्कु वॆळ्ळि–नारियल चाँदी के; नाकम्–सुरपुन्नाग; पाणि तॆळ् पळिङ्कु–जल-सम स्वच्छ स्फटिक; पाटलम्–पाटल; पवळम्–प्रवाल। ६४९

उस उद्यान के पेड़ विचित्र थे। पनस माणिक्यमय थे। केले मरकत के, आम के पेड़ हीरे के, 'वेंगै' तरु चोखे स्वर्ण के, 'कोंगु' पद्मराग के, गगनस्पर्शी पूगतरु इन्द्रनीलमय, सालवृक्ष एक तरह के रत्न के, नारियल के पेड़ चाँदी के और सुरपुन्नाग जल-स्वच्छ स्फटिक के थे। पाटल के पेड़ प्रवालमय थे। ६४९

वानुऱ निवन्द शॆङ्गेळ मणिमरन् दुवन्ऱि वान
मीनॊडु मलर्ह डम्मिल् वेऱुमै तॆरिद ऱेऱात्
तेनुहु शोलै नाप्पण् शॆम्बॊन्मण् डबत्तु ळाण्डोर्
पानिऱ वमळि शेर्न्दान् पैयुळुऱ् ऱुयङ्गि नैवान् 650

पैयुळ् उऱ्ऱु–पीड़ित होकर; उयङ्कि नैवान्–दुःख-मग्न हो विगलित होनेवाला; वान् उऱ निवन्त–गगन को स्पर्श करते हुए उन्नत; चॆम् केळ्–उत्तम रंग वाले; मणि मरम् तुवन्ऱि–रत्नमय तरुओं से भरे रहकर; मलर्कळ्–उनके फूल; वान् मीन् ऒटु–आकाश के नक्षत्रों के साथ; तम्मिल्–उनसे; वेऱुमै तॆरितल् तेऱ्ऱा–भेद जानना कठिन हो ऐसा, रहकर; तेन् उकु–जहाँ शहद चूते थे; चोलै नाप्पण्–उस उद्यान के मध्य; चॆम् पॊन् मण्टपत्तुळ्–लाल स्वर्ण-मण्डप में; आण्टु–वहाँ; पाल् निऱ–क्षीरवर्ण; ओर् अमळि–एक शय्या में; चेर्न्तान्–गया। ६५०

कामवेदना से व्यग्र रावण उस उद्यान के बीच में रहे स्वर्ण-मण्डप के अन्दर दुग्ध-सम श्वेत एक शय्या पर गया। उस उद्यान में गगन को छूते हुए बढ़े और रत्नमय तरु खूब भरे थे। उनके फूलों और आकाश के नक्षत्रों में भेद जानना कठिन था। वे फूल शहद चू रहे थे। ६५०

कनिहळिन् मलरिन् वन्द कळ्ळुण्ड कळिह ळन्न
वनिदैयर् मळलै यिन्शॊर् किळ्ळैयुङ् कुयिलुम् वण्डुम्
इनियन मिळऱ्ऱु हिन्ऱ यावैयु मिलङ्गै वेन्दन्
मुनियुमॆन् ऱॆविन्द वाय मूङ्गैयर् पोन्ऱ वन्ऱे 651

कनिकळिन्–फलों से और; मलरिन्–फूलों से; वन्त–निकला; कळ् उण्टु–मधु पीकर; कळिकळ् अन्न–पियक्कड़ों के समान; वनितैयर्–स्त्रियों के-से; मळलै इन् चॊल्–तुतलाते मधुर वचन बोलनेवाले; किळ्ळैयुम्–शुक; कुयिलुम्–पिक; वण्टुम्–भ्रमर; इनियन मिळऱ्ऱुकिन्ऱ यावैयुम्–मधुर बोलनेवाले सभी; इलङ्कै वेन्तन्–लंकाधिपति; मुनियुम् ऎन्ऱु–कोप करेगा, यह सोचकर; अविन्त वाय–मुख बन्द कर; मूङ्कैयर् पोन्ऱ–गूँगे के समान हो रहे। ६५१

उस उद्यान में शुक, पिक, भ्रमर आदि थे। वे उस उद्यान के तरुओं के फलों और फूलों से निकलनेवाले मधु और रस पीकर पियक्कड़ों के समान मत्त हो स्त्रियों की-सी तुतलाती मधुर बोली में बोलते थे। पर

अव वे, इस डर से कि लंकेश रावण गुस्सा करेगा, मुख बन्द करके गूँगे के समान हो रहे। ६५१

परुवत्ताल् वाडै तन्द पशुम्बनि यनङ्ग बाणम्
उरुविप्पुक् कौळित्त पुण्णिर् कुळित्तलु मुळैन्दु विम्मि
इरुदुत्तान् याद डावेन् ऱियम्बिना नियम्ब लोडुम्
वॆरुविप्पोय्च् चिशर नीङ्गि वेनिल्वन् दिरुत्त दन्ऱे 652

परुवत्ताल्–ऋतु के धर्म के अनुसार; वाटै तन्त–उदीची हवा द्वारा लाई गई; पचुम् पनि–शीतल हिम; अनङ्कपाणम् उरुवि–अनंग-बाण छेदकर; पुक्कु ऑळित्त–प्रवेश कर (छिपे) जहाँ रहे; पुण्णिल्–उन व्रणों में; कुळित्तलुम्–जब पैठे तभी; उळैन्तु विम्मि–पीड़ा से व्यग्र होकर; इरुतु तान् यातटा–ऋतु कौन है, रे; ॲन्ऱु–ऐसा; इयम्पितान्–रावण ने प्रश्न किया; इयम्पलोटुम्–कहते ही; चिचिरम्–शिशिर; वॆरुवि पोय् नीङ्कि–डरकर चला, हटा और; वेतिल् वन्तु इरुत्ततु–वसन्त आ गया। ६५२

ऋतु शिशिर की थी। इसलिए उदीची हवा द्वारा शीतल हिम आकर लग रहा था। वह काम-शर-विद्ध रावण के शरीर के व्रणों में जब पैठा, तब वह छटपटाने लगा। वेदना से हड़बड़ाकर उसने डाँटा कि क्या ऋतु है यह? यह पूछना था कि शिशिरऋतु डरकर भाग गयी। उसके स्थान पर वसन्तऋतु आ रही। ६५२

वन्बणै मरमुन् दीयुम् मलैहळुङ् गुळिर वाळुम्
मॆन्बनि यॆरिन्द वॆन्ऱाल् वेनिलै विळम्ब लामो
अन्बॆनुम् विडमुण् डारै यार्ऱला मरुन्दु मुण्डो
इन्बमुन् दुन्बमुन् दानु मुळ्ळत्तो डियैन्द वन्ऱे 653

वन् पणै मरमुम्–कठोर बड़े तरु भी; तीयुम्–अग्नि; मलैकळुम्–पहाड़; कुळिर–शीतल बने; वाळुम्–प्राणपूर्ण; मॆल् पनि–कोमल हिम ने; ॲरिन्ततु–जलाया; ॲन्ऱाल्–तो; वेतिलै विळम्पलामो–धूप का कहना क्या; अन्पु ॲन्नुम् विटम् उण्टारै–काम नाम का विष जिसने खाया है, उसका; आर्ऱल् आम् मरुन्तुम्–शमन करनेवाली दवा भी; उण्टो–है क्या; इन्पमुम् तुन्पम् तानुम्–सुख और दुःख; उळ्ळत्तोटु–मन के साथ; इयैन्त अन्ऱे–लगे हुए (अनुभव) हैं न। ६५३

वसन्त के कारण बड़े-बड़े कठोर पेड़ भी मनोरम हो गये। पर्वत भी आँखों को ठण्डक (आराम) पहुँचानेवाले हो गये। पर धूप तो थी। जिसको हिम भी ताप दे रहा था उसको धूप क्या देगी, यह कहने की आवश्यकता है क्या? काम का विष जिसने पिया है, उसके ताप को शान्त करनेवाली दवा इस लोक में कहाँ प्राप्य है? सुख व दुःख अपने-अपने मन की अनुभूत दशाएँ हैं न? फिर बाहर का उपचार क्या कर सकता है?। ६५३

मादिरत् तिरुदि काऱुन् दन्मनत् तॅळुन्द मैयल्
वेदनै वॅप्पञ् जॅय्य वेनिलुम् वॅदुप्पुङ् गालै
यादिदिङ् गिदनिन् मुन्नैच् चिशिरतन् ऱिदनै नीक्किक्
कूदिराम् बरुवन् दन्नैक् कॊणरुदिर् विरैवि नॅन्ऱान् 654

तन् मनत्तु ऍऴुन्त–अपने मन में उठी; मैयल् वेतनै–प्रेम की वेदना ने; मातिरत्तु इऱुति काऱुम्–दिगन्त तक; वॅप्पम् चॅय्य–गरमी दिला दी, तब; वेनिलुम् वॅतुप्पुम् कालै–धूप ने भी ताप दिया, तो; यातु इङ्कु–कौन (सी ऋतु) यहाँ; मुन्नै चिचिरम् इततिन् नन्ऱु–पहले का शिशिर इससे बेहतर रहा; इतनै नीक्कि–इसको दूर करके; कूतिर् आम् परुवम् तन्नै–शरद ऋतु को; विरैविल् कॊणर्तिर्–तुरन्त लाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ६५४

रावण के मन का ताप दिगन्त तक फैलकर तपाने लगा। उस पर वसन्त की धूप भी मिल गयी। वह और भी गरम हो गया। पूछा कि अब कौन सी ऋतु आयी है यह? पहले जो शिशिरकाल था वह इससे बेहतर था, ऐसा लगता है। उसने आज्ञा दी— हटाओ इसे। शरदऋतु को लाओ शीघ्र। ६५४

कूदिर्वन् दडैन्द कालै कॊदित्तन कुववुत् तिण्डोळ्
शीदमुञ् जुडुमो मुन्नैच् चिशिरमे काणि दॅन्ऱान्
आदिया यज्जु मन्ऱे यरुळल दियऱ्ऱ लॅन्न
यादुमिङ् गिरुदु माहा यावैयु महऱ्ऱु मॅन्ऱान् 655

कूतिर् वन्तु अटैन्त कालै–शरद जब आया; कुववु तिण् तोळ्–पुष्ट और सुदृढ़ कन्धे; कॊतित्तन–गरम हो गये; चीतमुम् चुटुमो–शीत भी जलायगा क्या; मुन्नै चिचिरमे इतु–पहले का शिशिर ही यह; काण्–देखो; ऍन्ऱान्–बोला; आतियाय्–नाथ; अरुळ् अलतु–आज्ञा के सिवाय; इयऱ्ऱल्–करना; अञ्चुम्–डरते हैं; ऍन्न–कहा, तो; इङ्कु–यहाँ; इरुतु यातुम्–कोई भी ऋतु; आकातु–(भली) नहीं हो सकती; यावैयुम् अकऱ्ऱुम्–सबको हटाओ; ऍन्ऱान्–कहा; (अन्ऱु–ए)। ६५५

शरद आया। (पर क्या फल होता?) उसके पुष्ट और सबल कंधे जल उठे। "ऐ! शीत भी जला सकेगा क्या? वही शिशिर यह है! देखो!" जब रावण ने यह कहा तब उसके दासों ने विनय की कि महाराज! हम आपकी आज्ञा के सिवा कुछ अन्य करने से डरेंगे। (आप विश्वास मानें कि यह शरद है।) तब रावण ने आज्ञा दी कि सो बात है तो कोई भी ऋतु कुछ नहीं करेगी। यहाँ कोई ऋतु न हो। हटाओ सबको। ६५५

ऍन्नलु मिरुदु वॅल्ला मेहलुम् यावुन् दन्दम्
पन्नरुम् बरुवञ् जॅय्या योहिपोल् पऱ्ऱु नीत्त
पिन्नरु मुलह मॅल्लाम् पिणिमुदऱ् पाशम् वीशित्
तुन्नरुन् दवत्तो रॅय्दुन् दुऱक्कम्बोऱ् ऱोन्ऱिऱ् ऱन्ऱे 656

ऍन्ऩलुम्–कहते ही; इरुतु ऍल्लाम्–सभी ऋतुएँ; एकलुम्–चली गईं, तब; यावुम्–सभी (पदार्थ); पन् अरुम्–अवर्ण्य; परुवम् चॅय्या–मौसम के अनुसार व्यापार छोड़कर; योकि पोल्–यतियों की तरह; पऱ्ऱु नीत्त–निर्लिप्त रह गये; पिऩ्ऩरुम्–और फिर; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोक; पिणि मुतल् पाचम् वीचि–रोग आदि कर्म-पाश हटाकर; तवत्तोर् ऍय्तुम्–तपस्वी द्वारा प्राप्य; तुन् अरुम् तुऱक्कम् पोल्–दुर्गम स्वर्ग के समान; तोऩ्ऱिऱ्ऱु–दिखाई दिया। ६५६

उसके ऐसा कहने पर सारी ऋतुएँ चली गयीं। उनके साथ कालोचित व्यापार भी रुक गये। इसलिए उस उद्यान में रहे चल और अचल सभी पदार्थ और जीव योगी के समान अचल और निर्लिप्त रह गये। वे ही क्या सारे लोकों के सारे जीव रोग आदि कर्मबन्धन काटकर स्थिर रहे। इसलिए लोक तपस्वी द्वारा प्राप्य और साधारण रीति से दुर्गम स्वर्ग के समान दिखे। ६५६

कूलत्ता रुलह मॅल्लाङ् गॉदिप्पॉडु कुळिर्प्पु नीङ्ग
नीलत्ता ररक्कन् मेनि नॅय्यिन्ऱि यॅरिन्द दन्ऱे
कालत्ताल् वरुव दॊन्ऱो कामत्ताऱ् कनलुम् वॅन्दीच्
चीलत्ता लविप्प दन्ऱिच् चॅय्यत्ता नाव दुण्डो 657

कूलत्तु आर्–सीमा-बद्ध; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोक; कॊतिप्पु ऒरु कुळिर्प्पु नीङ्क–गरमी व ठण्डी से रहित हुए, तब; नीलत्तु आर् अरक्कन् मेत्ति–नीलवर्ण राक्षस का शरीर; नॅय् इन्ऱि–घी के विना ही; ऍरिन्ततु–जला; कालत्ताल् वरुवतु ऒन्ऱो–ऋतु के कारण आया वह क्या; कामत्ताल्–काम के कारण; कऩलुम् वॅम् ती–जलनेवाली गरम आग को; चीलत्ताल्–शीलगुण द्वारा; अविप्पतु अन्ऱि–बुझाना छोड़कर; चॅय्य तान् आवतु उण्टो–करने के लिए कोई दूसरा है क्या। ६५७

संसार सीमाबद्ध है। उसकी गति-विधि आदि के नियम हैं। अब वे नियम नहीं रहे। अतः न शीत था, न ताप। तब भी नीलवर्ण रावण का शरीर ताप का अनुभव करने लगा। वह विना घी के ही जलने लगा! उसका ताप काल के व्यापार के फलस्वरूप आनेवाला नहीं था! पर उसके मन की काम रूपी जलती आग से होनेवाला ताप था। उसकी शान्ति शीलगुण से ही हो सकती थी। दूसरा कोई परिहार क्या होगा? । ६५७

नारमुण् डॅळुन्द मेहन् दामरै वळैय नाऩ्च्
चारमुण् डिरुन्द शीदच् चन्दनन् दळिर्मॅन् ऱादो
डारमुण् डॅरिन्दु शिन्दे ययर्हिन्ऱा नयनिन् ऱारै
ईरमुण् डॅऩ्ब रोडि यिन्दुवैक् कॊणरु मॅन्ऱान् 658

नारम् उण्टु ऍळुन्त–जल पीकर जो उठे; मेकम्–वे मेघ; तामरै वळैयम्–कमलनालों के वलय; नाऩ् चारम् उण्टु इरुन्त–कस्तूरी और गन्ध-द्रव्य-मिला; चीत चन्ततम्–शीतल चन्दन; तळिर्–पल्लव; मॅल तातॊटु–कोमल पराग के साथ;

आरम्–मोती; उण्टु–उसके शरीर पर रखे गये; ॲरिन्तु–(पर) जलन से; चिन्तै अयर्किन्ऱान्–मन में तप्त हो थकता है; अयल् निन्ऱारै–पार्श्व में स्थित लोगों को; ईरम् उण्टु ॲन्पर्–शीतलता है, कहते; ओटि–भागो; इन्तुवै–इन्दु को; कोणरुम् ॲन्ऱान्–लाओ, कहा। ६५८

रावण के शरीर पर शीत देनेवाले पदार्थ रखे गये। जल-भरे मेघ; कमलनालों के बने वलय; कस्तूरी-मिला शीतल चन्दन; पल्लव; कोमल मकरन्द; मोती आदि उसका ताप हर नहीं रहे थे बल्कि ताप को बढ़ाने लगे। तब उसने अपने पार्श्वस्थों से कहा कि लोग कहते हैं कि चन्द्र में शीत (देने की शक्ति) है। जाकर इन्दु को पकड़ लाओ। ६५८

वॆञ्जिनत् तरक्क नाण्ड वियनहर् मीदु मेव
नॆञ्जयिर्त् तॊदुङ्गु हिन्ऱ निऱैमदि योनै नेडि
अञ्जलै वरुदि निन्नै यऴैत्तनन् नरश नॆन्नच्
चञ्जलन् दुऱन्दु तानच् चन्दिर नुदिक्क लुऱ्ऱान् 659

वॆम् चित्ततु–भयंकर क्रोधी; अरक्कन् आण्ट–राक्षस से पालित; वियन् नकर् मीतु–बड़े उस नगर के ऊपर; मेव–जाने से; नॆञ्चु अयिर्त्तु–मन में डरकर; ऑतुङ्कुकिन्ऱ–परे चलता जो रहा, उस; निऱै मतियोनै–पूर्णचन्द्र को; नेटि–ढूंढ़कर; अञ्चलै–मत डरो; निन्नै–तुमको; अरचन्–राजा ने; अऴैत्तनन्–बुलाया है; ॲन्न–कहने पर; अ चन्तिरन्–वह चन्द्र भी; चञ्चलम् तुऱन्तु–घबड़ाहट छोड़कर; उतिक्कल् उऱ्ऱान्–उदित हुआ। ६५९

चन्द्र तो भयंकर क्रोधी राक्षसराज से पालित बड़े नगर— लंका —के ऊपर जाने से बिल्कुल डरता था। इसलिए वह उसे बचाकर कहीं घूमता रहा। राक्षसों ने उसे ढूंढ़कर पकड़ा। उससे कहा— मत डरो। राजा ने तुम्हें बुलाया है। वह चन्द्र भी कुछ अधैर्य छोड़कर धीरता का अवलंबन करके उदित हुआ। ६५९

अयिरुऱक् कलन्द तीम्बा लाऴिनिन् ऱाऴि यिन्दु
शॆयिरुऱ्ऱ् करश नाण्डोर् तेय्वुवन् दुऱ्ऱ पोऴ्दिन्
वयिरमुऱ् ऱुडैन्द माऱ्ऱान् वलियऱच् चॆन्ऱ वन्ऱन्
उयिर्तॆऱ वुवन्दु वन्दा नॊत्तन नुदयञ् जॆय्दान् 660

चॆयिर् उऱ्ऱकु अरचन्–अपने शत्रु राजा के; ओर् तेय्वु उऱ्ऱ पोऴ्तिल्–निर्बल रहते समय; आण्टु–तब; वयिरम् उऱ्ऱु–वैर साधकर; उटैन्त माऱ्ऱान्–बलहीन शत्रु के; वलि अऱ–बल को ध्वस्त करने; चॆन्ऱु–चढ़ जाकर; अवन् तन् उयिर् तॆऱ–उसके प्राणों का अन्त करने की; उवन्तु वन्तान्–चाह लेकर आया हो; ऑत्तनन्–उसकी तरह; अयिर् उऱ कलन्त–शर्करा (या सूक्ष्म सिकता) से युक्त; तीम् पाल् आऴि निन्ऱु–मधुर क्षीरसागर से; आऴि इन्तु–गोल चाँद; उतयम् चॆय्तान्–उदित हुआ। ६६०

कोई राजा है। उसका शत्रु निर्बल हो गया है। उस समय यह राजा अपना वैर साधने के इरादे से विकट स्थिति में रहनेवाले उस शत्रु पर आक्रमण करके उसके प्राण हरने के लिए आता हो ऐसा, शर्करा-भरे क्षीर-सागर-मध्य से गोल पूर्णचन्द्र उगकर आया। ६६०

परावरुङ् गदिर्ह ळॅङ्गुम् परप्पिमीप् पडर्न्दु वानिल्
तरादलत् तॅवरुम् बेणत् तण्मदि युदित्त तोर्ऱम्
अरावणैत् तुयिलु मण्णल् कालमोर्न् दर्ऱ नोक्कि
इरावण तुयिर्मे लुय्त्त तिहिरियु मॅन्न लान 661

परावु अरुम्–जिसकी पूरी प्रशंसा करना कठिन है; तण् मति–वह शीतल चन्द्र; कतिर्कळ् ॲङ्कुम् परप्पि–सर्वत्र किरणें फैलाते हुए; वानिल् मी पटर्न्तु–ऊपर आकाश में चलकर; तरातलत्तु ॲवरुम् पेण–धरातल के सबका स्वागत पाकर; उतित्त तोऱ्ऱम्–उदित जो हुआ वह दृश्य; अरा अणै तुयिलुम् अण्णल्–शेष-शय्या पर निद्रा करनेवाले प्रभु द्वारा; कालम् ओर्न्तु–समय विचारकर; अऱ्ऱम् नोक्कि–सन्दर्भ निश्चित कर; इरावणन्–रावण के; उयिर्मेल् उय्त्त–प्राणों पर चलाया गया; तिकिरियुम् ॲन्नल्–(सुदर्शन) चक्र-सम; आन–हुआ। ६६१

अवर्णनीय यशस्वी शीतल चन्द्र आकाश में ऊपर उदित हुआ। तब उसकी किरणें सब जगह फैलीं। भूमि के सभी लोग उसका चाव के साथ स्वागत करने लगे। तब वह दृश्य शेषशायी श्रीमन्नारायण के चक्र के समान था, जिसे उन्होंने उचित समय विचारकर और ठीक सन्दर्भ देखकर रावण पर चलाया हो। ६६१

अरुहुरु पालिन् वेलै यमुदॅला मळैन्दु वारिप्
परुहिन्न परन्दु पायन्द निलाच्चुडर् पनिमॅन् कऱ्ऱै
नॅरिवुरु पुरुवच् चॅङ्ग णरक्करक्कु नॅरुप्पि नाप्पण्
उरुहिय वॅळ्ळि यळ्ळि वीशिना लॉत्त दन्ऱे 662

अरुकु उरु–पास रहे; पालिन् वेलै–क्षीरसागर के; अमुतु ॲलाम्–सारे अमृत को; अळैन्तु वारि परुकित–(चन्द्र ने) टटोल, उठाकर खा लिया; परन्तु पाय्न्त–(वही अमृत) सर्वत्र फैलकर व्यापा; निला चुटर्–(उस अमृत की) चाँदनी की किरणों की; पनि मॅल् कऱ्ऱै–शीतल कोमल राशि; नॅरिवु उरु पुरुव–तनी हुई भौंहों के; चॅम् कण् अरक्करक्कु–अरुणाक्ष राक्षस रावण के लिए; नॅरुप्पिन् नाप्पण्–अग्नि-मध्य; उरुकिय–पिघली हुई; वॅळ्ळि–चाँदी; अळ्ळि वीचिताल्–उठाकर जो फेंकी गई; ऑत्ततु–उसके समान रही। ६६२

चन्द्र की चाँदनी की शीतल किरणों की राशि क्या थी! उसने अपने पास के क्षीरसागर से टटोल लेकर जो अमृत खाया था, वह मानो सब जगह फैल रहा था। लेकिन वह तनी हुई भौंहों और लाल आँखों के साथ जो रहा, उस रावण के लिए अग्निमध्य चाँदी को पिघलाकर प्राप्त द्रव के समान था जिसे उस पर उड़ेल दिया हो। ६६२

मिऩ्ऩलऩ् दिहऴुम् जोदि विऴुनिला मिदिलै शूऴ्न्द
शॅन्नॅलङ् गऴनि नाडऩ् ड्रिरुमहळ् शॅव्वि केळा
नन्ऩलऩ् दॊलैन्दु शोरु मरक्कऩै नाळुम् दोलात्
तुन्नल नोरुवन् बॅऱ्ऱ पुहऴॅनच् चुट्ट दन्ऱे 663

मिऩ् नलम् तिकऴुम् चोति–विद्युत के गुण के साथ विद्यमान ज्योति की; विऴु निला–श्रेष्ठ चाँदनी ने; चूऴ्न्त–चारों ओर घेरे रहनेवाले; चॅम् नॅल्–लाल धान के; अम् कऴत्ति–मनोहर खेतों से युक्त; मितिलै नाटऩ्–मिथिलेश की; तिरुमकळ् चॅव्वि–दिव्य सुता सीता का रूपसौंदर्य; केळा–श्रवण कर; नल् नलम् तॊलैन्तु चोरम्–(उसके फलस्वरूप) अपना बल सब खोकर लटनेवाले; अरक्कऩै–राक्षस, रावण को; नाळुम् तोला–कभी न हारनेवाले; तुन्ऩलऩ् ऒरुवन् पॅऱ्ऱ पुकऴ् ऎऩ–शत्रु से प्राप्त यश के समान; चुट्टतु–तपाया। ६६३

उस चाँदनी में विद्युत की-सी ज्योति भरी थी। रावण उस विदेह देश के राजा की सुपुत्री जानकीदेवी का रूपसौंदर्य सुनकर अपने सभी तरह के बल को क्षीण होने देते हुए छटपटा रहा था; जिस देश के चारों ओर लाल धान के पौधों से भरे खेत पाये जाते थे। वह चाँदनी उस रावण को इस तरह तपाने लगी, जिस तरह अजेय शत्रु का यश किसी वीर को तपाता है। ६६३

करुङ्गऴऱ् काल ऩञ्जुङ् गावलऩ् करुत्तु नोक्कित्
तरुङ्गदिर्च् चीद याक्कैच् चन्दिरऱ् ऱरुदि यॆन्ऩ
मुरुङ्गिय कऩलिऩ् मूरि विडत्तिऩै यॊऴुक्कुञ् जीऱ्ऱत्
तरुङ्गदि ररुक्कऩ् ऱऩ्ऩै यारऴैत् तीर्ह ळॆन्ऱाऩ् 664

करुम् कऴल् कालऩ्–बड़ी पायलों से भूषित यम भी; अञ्चुम्–जिससे डरता है; कावलऩ्–राक्षसराज; करुत्तु नोक्कि–(भृत्यों को) गुस्से के साथ देखकर; चीतम् तरुम् कतिर् याक्कै–शीत देनेवाली किरणों के शरीर के; चन्तिरऩ् तरुतिर् ऎन्ऩ–चन्द्र को लाओ, कहा; मुरुङ्किय कऩलिऩ्–खूब जलती हुई आग के साथ; मूरि विटत्तिऩै–भयंकर विष को; ऒऴुक्कुम्–बरसानेवाले; चीऱ्ऱत्तु–क्रुद्ध; अरुम् कतिर् अरुक्कऩ् तऩ्ऩै–संतापी किरणमाली सूर्य को; यार् अऴैत्तीर्कळ्–तुम लोगों में किसने बुलाया; ऎन्ऱाऩ्–पूछा। ६६४

बड़ी पायलधारी यम के भी भयदायी रावण ने अपने भृत्यों को देखकर पूछा कि शीतल-किरण-शरीरी चन्द्र को लाओ—यही मैंने कहा था। लेकिन यह सर्वदाहक अग्नि के साथ भयंकर विष को बरसानेवाले और विवृद्ध कठोर किरणमाली को लाया गया है। तुम लोगों में किसने उसको बुलाया ? । ६६४

अव्वऴिच् चिलद रञ्जि यादिया यरुळिल् लारै
इव्वऴित् तरुदु मॆन्ऩ दियम्बला मियल्बिऱ् ऱन्ऱाल्

शॅव्वळिक् कदिरो नॅन्ऱुन् दैरिनुमे लन्ऱि वारान्
ॲव्वळित् तॅनितुन् दिङ्गळ् विमानत्तिन् मेल दॅन्ऱार् 665

अ वळि–तब; चिलतर्–भृत्यों ने; अञ्चि–डरकर; आतियाय्–नायक; अरुळ् इल्लारे–आपने जिसको लाने की आज्ञा देने की कृपा नहीं की; इ वळि–(उसको) इधर; तरुतुम् ॲन्पतु–लायेंगे, ऐसा करना; इयम्पल् आम् इयल्पिऱ्ऱु अन्ऱु–कहने योग्य बात नहीं है; चॅम् वळि कतिरोन्–अपने मार्ग पर सीधे चलनेवाला सूर्य; ॲन्ऱुम्–सदा; तेर् मेल् अन्ऱि–रथ पर आना छोड़कर; वारान्–नहीं आयगा; तिङ्कळ्–चन्द्र; ॲ वळित्तु ॲनितुम्–किसी भी मार्ग पर क्यों न हो; विमानत्तिन् मेलतु–यान पर ही चलेगा; ॲन्ऱार्–(उत्तर में) कहा। ६६५

तब भृत्यों ने भयभीत होकर विनय की। हे नाथ! आपने जिसको लाने की आज्ञा कृपापूर्वक नहीं की, उसको हम लायेंगे, यह बात कथनीय नहीं है। सीधे मार्ग पर जानेवाला सूर्य कभी भी रथ पर आना छोड़कर किसी दूसरी तरह से नहीं आयगा। और चन्द्र, जहाँ भी जाये, यान पर ही जायगा। ६६५

पणन्दा ळल्हुर् पनिमॊळियार्क् कनृबु पट्टार्
कुणन्दान् मुन्न मऱियादान् कॊदिया निन्ऱान् मदियाले
तणन्दा मरैयिन् ऱनिप्पहैञ नॅन्नुन् दन्मै यॊरुदाने
उणर्न्दा नुणर्वुऱ् ऱुवन्मेलिट् टुय्त्त तुन्वम् मुरैशॆय्वान् 666

पणम् ताळ् अल्कुल्–सर्पफन को उपमा में नीचे दिखानेवाला वरांग; पनि मॊळियार्क्कु–शीतल बोली, इनसे युक्त स्त्रियों के प्रति; अन्पु पट्टार्–काम के वश में जो हुए; पटुम्–उसको सतानेवाला; काम कुणन्तान्–कामरोग की स्थिति को; मुन्नम् अऱियातान्–जो पहले नहीं जानता था, वह रावण; मतियाल्–उस चन्द्र से; कॊतिया निन्ऱान्–तप्त रहा; तण् अम् तामरैयिन्–शीतल सुन्दर कमल का; तनि पकैञन्–विशेष शत्रु वह; ॲन्नुम् तन्मै–यह रीति; ऒरु ताने उणर्न्तान्–एक तरह से स्वयं जानकर; उणर्वु उऱ्ऱु–होश में आकर; उयिर् तन्तु उय्क्क–प्राण (स्वस्थता) पाकर बचने के लिए; अवन् मेलिट्टु–उस चन्द्र के प्रति; उरै चॆय्वान्–बोलने लगा। ६६६

रावण को कभी सर्प-फन के समान वरांग और शीतल, मधुर वाणी की स्त्रियों के प्रेम में फँसे हुए लोगों के काम-ताप की वेदना का प्रकार नहीं मालूम था। अब वह इस चन्द्र के कारण वेदना से तड़पने लगा। तब उसे स्मरण आया कि यह शीतल, सुन्दर कमल का अनोखा शत्रु है। तब उसे सुध आयी कि मैं इससे प्राण पाकर बचने के लिए कुछ कहूँ—यह सोचकर वह चन्द्र के प्रति कहने लगा। ६६६

तेया निन्ऱाय् मॆय्वॆळुत्ता युळ्ळङ् गरुत्ताय् निलै तिरिन्दु
काया निन्ऱा यॊरुनोयुङ् कण्डार् शॊल्लक् केट्टायो

पाया निऩ्ऱ मलर्वाळि पऱिया निऩ्ऱा रिल्लैयाल्
ओया निऩ्ऱे नुयिर्हात्तऱ् कुरिया रारे युडुवदिये 667

उट्टुपतिये–उडुपति; तेया निऩ्ऱाय्–क्षीण होता जाता है; मॅय् वॆळुत्ताय्–शरीर पाण्डुर है; उळ्ळम् कऱुत्ताय्–दिल काला है; निलै तिरिन्तु काया निऩ्ऱाय्–गुण बदलकर सूख गया; ओरु नीयुम्–अनोखी स्थिति में रहनेवाला तू भी; कण्टार् चॊल्ल–किसी के एक स्त्री को देखकर तेरे पास बताने से; केट्टायो–तूने सुन (कर प्रेम करने लग) गया क्या; पाया निऩ्ऱ–सवेग आनेवाले; मलर् वाळि–सुमन-शर; पऱिया निऩ्ऱार्–निकालनेवाले; इल्लैयाल्–नहीं हैं, इसलिए; ओया निऩ्ऱेन्–थका हूँ; उयिर् कात्तऱ्कु–मेरे प्राण बचाने का; उरियार् यारे–जिम्मा लेनेवाले कौन है। ६६७

रावण ने कहा— उडुपति ! तू दिन व दिन क्षीण होता जाता है। तेरा शरीर पाण्डुर है। दिल काला है। तेरी स्थिति बदल गयी है और तू झुलस गया है। इस विचित्र दशा में रहनेवाले तूने भी क्या किसी के द्वारा उसकी देखी हुई स्त्री के सम्बन्ध में सुनकर प्रेम किया है? वेग से आकर मेरे ऊपर लगकर जो मन्मथ-शर मुझे सता रहे हैं उनको निकालकर मुझे बचानेवाला कोई नहीं रहा। इसलिए मैं निर्बल होकर थका हुआ हूँ। मेरी जान बचानेवाले कौन हैं? । ६६७

आऱ्ऱा राहिऱ् ऱम्मैक्कीण् डडङ्गा रोवॆऩ् ऩारुयिर्क्कुक्
कूऱ्ऱाय् निऩ्ऱ कुलच्चनहि कुवळै मलर्न्द तामरैक्कुत्
तोऱ्ऱा यदऩा लहङ्गरिन्दाय् मॆलिन्दाय् वॆंदुम्बत् तॊडङ्गिऩाय्
माऱ्ऱार् शॆल्वङ् गण्डळिन्दाल् वॆऱ्ऱि याह वऱ्ऱामो 668

ऍऩ् आर् उयिर्क्कु–मेरे प्रिय प्राणों का; कूऱ्ऱाय् निऩ्ऱ–यम जो बनी खड़ी है; कुल चत्तकि–उच्चकुल-जात जानकी के; कुवळै मलर्न्त–विकसित नीलोत्पलों (आँखों) सहित; तामरैक्कु–कमल (मुख) के सामने; तोऱ्ऱाय्–तू हार गया; अतताल्–उस कारण; अकम् करित्ताय्–दिल का (क्रोध से) काला हो गया; मॆलिन्ताय्–पतला हो गया; वॆतुम्प तॊटङ्कित्ताय्–झुलसने लगा; माऱ्ऱार् चॆल्वम् कण्टु अळिन्ताल्–अन्य मनुष्य का धन देखकर जलेगा तो; वॆऱ्ऱि आक–विजयी बनने का; वऱ्ऱु आमो–बल मिलेगा क्या। ६६८

हे चाँद ! तू उस कुलीन जानकी के कमल-सम मुख के सामने हार गया, जो मेरे प्यारे प्राणों का यम बनी है। उस जानकी के कमल-सम मुख में दो नीलोत्पल-सम आँखें हैं। हार जाने की वजह से तेरा दिल झुलस गया है। तू क्षीण होकर जल रहा है। प्रतिद्वन्द्वी का धन देखकर ईर्ष्या के कारण छीजने से विजय पाने की शक्ति मिल जायगी क्या? । ६६८

ऍऩ्ऩप् पऩ्ऩि यिडरुऴवा विरवो डिवऩैक् कॊण्डहऱ्ऱि
मुऩ्ऩैप् पहलुम् पहलोनुम् वरुह वॆऩ्ऱान् मौळियामुन्

उन्नरुकरिय वुडुबदियु मिरवु मौळित्त वोरुनोडियिल्
पन्नरु करिय पहलवनुम् पहलुम् वन्दु परन्दवाल् 669

अन्न पन्त्ति–ऐसा विलाप करके; इटर् उळवा–दुःख से पीड़ित होकर; इरवोटु इवर्त–रात के साथ इसको; कॉण्टु अकट्रि–पकड़कर दूर करो; मुन्ते पकलुम्–पहले रहा दिन और; पकलोत्तुम्–दिनकर को; वरुक–आने दो; अन्रान्–कहा; मौळियामुन्–उसके कहने के पूर्व ही; उन्नरुकु अरिय–अचिन्त्य यशस्वी; उडुपतियुम्–उडुपति और; इरवुम्–रात्रि; ओरु नोटियिल्–एक चुटकी भर में; ऑळित्त–छिप गये; पन्तरुकु अरिय–अवर्ण्य यशस्वी; पकलवनुम्–दिनकर और; पकलुम्–दिन; वन्तु परन्त–आकर व्याप गया। ६६९

इस तरह विविध प्रकार से रावण विलापते हुए दुखता रहा। फिर उसने कहा— रात के साथ चाँद को भी हटा देकर पहले की तरह दिन और दिनकर को आने दो। उसके कहते ही अचिन्त्य यशस्वी उडुपति रात के साथ चुटकियों में छिप गया। अवर्णनीय यशस्वी दिन और दिनकर आ गये। ६६९

इरुक्किन् मौळिया लॅरिमुहत्ति नीन्द नॅय्यि नॅरिशॅम्बीन्
उरुक्कि यन्नैय कदिर्बाय वन्नल्बोल् विरिन्द वुयर्हमलम्
अरुक्क नॅय्द वमैन्दडङ्गि वाळा दडाद पौरुळॅय्दिच्
चॅरुक्कि यिडैये तिरुविळन्द शिरियोर् पोन्ऱ चेदाम्बल् 670

अरुक्कन्–सूर्य; ॲरि मुरवत्तिन्–अग्नि में; इरुक्किन् मौळियाल्–वेदमन्त्रों के साथ; ईन्त–डाले गये; नॅय्यिन्–घी के समान; ॲय्त–आ गया तब; कतिर्–उसकी किरणें; ॲरि–भट्ठी में; चॅम्पॉन् उरुक्कि अन्नैय–लाल स्वर्ण के गले हुए द्रव के समान; पाय–भूमि पर आ फैलीं; उयर् कमलम्–उत्कृष्ट कमल; अन्नल् पोल् विरिन्त–अग्निज्वालाओं के समान खिले; चेताम्पल्–लाल कुमुद; चिरियोर्–नीच लोग; अटात पॉरुळ् ॲय्ति–अनुचित रीति से धन प्राप्त करके; अमैन्तु अटक्कि वाळातु–शम-दम के साथ जीवन न बिताकर; चॅरुक्कि–गर्व करते हुए (जब रहते हैं) तब; इटैये–बीच में ही; इळन्त–खो गये हों, ऐसा; तिरु–विकास; इळन्त–खो गये (बन्द हो गये)। ६७०

सूर्य क्या आया? होमाग्नि में वेदमन्त्र के साथ पड़नेवाले घी के समान रहा वह। उसकी किरणें भट्ठी में पिघलाये हुए चोखे स्वर्ण के द्रव के समान भूमि पर फैलीं। तब श्रेष्ठ कमल अग्निज्वाला के समान विकसित हुए। लाल कुमुद उन छुद्र मनुष्यों के समान श्रीहीन हुए, जो अधार्मिक रास्तों से धन प्राप्त कर शम और दम के साथ नहीं रहते, पर गर्वीले रहते हैं और जिनकी सम्पत्ति बीच में ही लुप्त हो जाती है। ६७०

नाणि निन्ऱ वोळिमळुङ्गि नडुङ्गा निन्ऱ वुडम्बिन्नायच्
चेणि निन्ऱुम् बुरञ्जायन्दु कङ्गुर् ऱारम् बिन्शॅल्लप्

पूणित् वॆय्यो नॊरुदिशैये पुहुदप् पोवान् पुहऴ्वेन्दर्
आणै शॆल्ल निलैयिऴन्द वरशन् बोन्ऱा नल्लाण्डान् 671

पूणित् वॆय्योन्–संसार का आभरण-स्वरूप सूर्य; ऑरु तिचैये पुकुत–उत्तम एक (पूर्व) दिशा में उदय हुआ; अल् आण्टान्–रात का नायक; नाणि–लजाकर; नित्ऱ ऑळि–अपने पास रही ज्योति के; मऴुङ्कि–मन्द पड़ते; नटुङ्का निन्ऱ उटम्पित्तन् आय्–काँपते शरीर का बनकर; चेणित् नित्ऱु–आकाशमध्य से; पुरम् चाय्न्तु–एक ओर उतरकर; कङ्कुल् तारम् पित् चॆल्ल–रात रूपी पत्नी के पीछा करते; पोवात्–जो गया वह; पुकऴ् वेन्तर्–विख्यात राजा के; आणै चॆल्ल–शासन में; निलै इऴन्त–अपनी स्थिति से च्युत; अरचन् पोन्ऱात्–छोटे राजा के समान लगा। ६७१

संसार का आभरणरूप सूर्य उत्तम पूर्व दिशा में उदय हुआ तो रात का शासक चाँद उसको देखकर शरमाया, मन्दप्रभ हुआ और आकाश-मध्य से काँपते हुए उतरकर हट गया। उसके पीछे रात रूपी उसकी पत्नी भी चली। बड़े राजा के शासन में छोटे राजा की स्थिति जैसे बिगड़ जाती है, वैसे चन्द्र का शासन भी बिगड़ गया। ६७१

मणन्दपे रन्बरै मलरिन् शेक्कैयुळ्
पुणर्न्दिल रिडैयॊरु वॆहुळि पॊङ्गलाल्
कणङ्गुऴै महळिर्हळ् कङ्गुल् वीय्न्ददॆन्
रुणर्न्दिलर् कनविनु मूड ट्टीर्न्दिलार् 672

कत्तम् कुऴै मकळिर्कळ्–भारी कुण्डलधारिणी स्त्रियों ने; मलरित् चेक्कै उळ्–पुष्पशय्या पर; मणन्त पेर् अन्परै–मिले रहे पतियों के साथ; इटै ऑरु वॆकुळि पॊङ्कल् आल्–बीच में रोष के होने से; पुणर्न्तिलर्–सम्भोग नहीं किया था; कङ्कुल् वीय्न्ततु–रात चली गई; ॲन्ऱु उणर्न्तिलर्–यह नहीं समझीं; कनविलुम्–तब के स्वप्न में भी; ऊटल् तीर्न्तिलार्–रूठन नहीं छोड़ी। ६७२

(अकाल में अकस्मात अर्क के आगमन से क्या-क्या हुआ, उसका रसीला वर्णन है।) कुछ राक्षस-स्त्रियाँ, जिनके कर्णों को भारी कुण्डल अलंकृत कर रहे थे, अपने पतियों के साथ पुष्पशय्या पर लेटी हुई थीं। अकस्मात उनके मन में रूठन हो गयी और रोष उभर आया था। अतः क्रीड़ा रुक गयी थी। अब उन्हें ज्ञात नहीं था कि सवेरा हो आया है। इसलिए वे स्वप्न में भी मान कर रही थीं। रूठन नहीं छोड़ी। ६७२

अणैमलर्च् चेक्कैयु ळाड ट्टीर्न्दनर्
पणैहळैत् तऴुविय पवळ वल्लिबोल्
इणैमलर्क् कैहळि निरुह वित्नुयिर्त्
तुणैवरैत् तऴुविनर् तुयिल्हित् ट्टार्शिलर् 673

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; अणै मलर् चेक्कै उळ्–गद्दे के समान बनी पुष्पशय्या में;

आटल् तीर्न्ततर्–रतिक्रीड़ा समाप्त करके; पणैकळै तळुविय–मोटी डालों से लिपटी; पवळ वल्लि पोल्–प्रवालवल्लरी के समान; इणै मलर् कैकळिन्–जोड़े के सुमन-हस्तों से; इन् उयिर् तुणैवरै–प्राणप्यारे पतियों का; तळुवित्तर्–आलिंगन करती हुई; तुयिल्किन्ड्रार्–सोती हैं। ६७३

और कुछ राक्षस-स्त्रियों ने रतिक्रीड़ाएँ पूरा कर ली थीं। गद्दे के समान बनी पुष्पशय्या में वे अपने प्यारे पति का आलिंगन करती हुई, स्थूल वृक्ष से लिपटी प्रवालवल्लरी के समान सो रही थीं। ६७३

तळ्ळुरु	मुयिरिनर्	तलैवर्	नीङ्गलाल्
नळ्ळिर	विडैयुरु	नडुक्क	नीङ्गलर्
कॊळ्ळेयि	नलर्दरुङ्	गुवळै	नाण्मलर्क्
कळ्ळुहु	वन्नवॆन्नक्	कलुळुङ्	गण्णिनार् 674

तलैवर् नीङ्कलाल्–पतियों के चले जाने से; तळ् उरुम् उयिरित्तर्–चलित-प्राण होकर; नळ् इरवु इटै–अर्धरात्रि के समय; उरु–जो हुआ; नटुक्कम् नीङ्कलर्–उस भय के कम्पन से मुक्त न होकर; अलर् तरु–विकसित; कुवळै नाण् मलर्–कुवलय के नवीन पुष्पों से; कळ् कॊळ्ळेयिन् उकुवन–मधु अधिक परिमाण में ढलकता है; ऎन्न–जैसे; कलुळुम् कण्णित्तार्–जल बहानेवाली आँखों की बनीं। ६७४

कुछ स्त्रियों के प्रेमी पति उनको छोड़कर गये हुए थे। रात आधी बीत गयी। उनके प्राण डगमगाये। (उनका मन डोलायमान था।) उनके शरीर काँप रहे थे। उनकी आँखों से, नवीन कुवलयफूलों से शहद झरता हो, ऐसा अश्रु बहने लगे। ६७४

अळियिनन्	दडन्दोरु	मार्प्प	वायहदिर्
ऒळिबड	वुणर्हिल	वुरङ्गु	हिन्ऱन
तॆळिविल	विन्तुयिल्	विळैक्कुञ्	जेक्कैयुळ्
कळिहळै	निहर्त्तन	कळिहॊळ्	ळन्नमे 675

आय् कतिर् ऒळि पट–श्रेष्ठ सूर्यकिरण के लगते ही; अळि इनम्–भ्रमरकुल; तटम् तॊरुम् आर्प्प–सब स्थानों में गुंजारने लगे; कळि कॊळ् अन्नम्–मुदित हंस; कळिकळै निकर्त्तन–पियक्कड़ों के समान; इन् तुयिल् विळैक्कुम्–मधुर निद्रादायक; चेक्कै उळ्–(कमल की) शय्या में; तॆळिवु इल उणर्किल–विना सुध-बुध के; उऱङ्कुकिन्ऱन–सोते है। ६७५

रावण की आज्ञा से अप्रत्याशित रीति से सूर्य का उदय हो गया। अलिकुल यत्र-तत्र गुंजार कर रहे थे। मुदित हंसवृन्द पियक्कडों के समान मधुर निद्रादायी कमल-शय्याओं पर सुध-बुध के विना सो रहे थे। ६७५

विरिन्दुदै	तुरैतॊरुम्	विळक्कम्	यावैयुम्
ऎरिन्दिळु	द:(ह्)कल	वॊळियि	ळन्दवाल्

अरुनृदुरै निरम्बिय वुयिरि नन्बरैप्
पिरिनृदुरै तरुङ्गुलप् पेदै मारिनै 676

अरुम् तुरै निरम्पिय–मनोरम श्रृंगार-प्रकार जाननेवाले; उयिरिन् अन्परै–प्राण-प्यारे पतियों से; पिरिन्तु उरैतरुम्–अलग होकर रहनेवाली; कुल पेतै मारिनै–कुलीन स्त्रियों की तरह; विरिन्तु उरै–विशाल नगर के; तुरै तोरुम्–प्रासादों में; विळक्कम् यावैयुम्–सभी दीपक; इळुतु ऍरिन्तु–घी जलकर; अ:.(ह्)कल–कम नहीं हुआ तो भी; ओळि इळन्त–मन्दप्रभ हुए। ६७६

कुछ स्त्रियों के रतिकलाविदग्ध प्रेमी पति उनको छोड़कर दूर चले गये थे और ये वियोगिनी नायिकाएँ घर पर रहीं। उन्हीं के समान वड़े-वड़े सौधों में रहे दीप भी मन्दप्रभ हो गये, यद्यपि उनमें घी अभी वाकी था (जलकर समाप्त न हुआ था)। ६७६

पुनैन्दिद ळुरिञ्जुरुम् वोळ्दु पुल्लियुम्
वनैन्दिल वैहरै मलरु मामलर्
ननन्दलै यमळियिऱ् रुयिलु नङ्गैमार्
अनन्दलि नॅडुङ्गणो डोत्त वामरो 677

इतळ् पुनैन्तु उरिञ्चुरुम्–दलों को सुन्दर रीति से विकसित करनेवाला; पॊळुतु पुल्लियुम्–समय (सूर्योदय का) आया, तो भी (अप्रत्याशित रीति से हो जाने के कारण); वैकरै मलरुम् मा मलर्–सवेरे फूलनेवाले उत्तम फूल; वनैन्तिल–मनोरम (विकसित) नहीं हुए; ननम् तलै–विशाल; अमळियिल् तुयिलुम्–शय्या पर सोनेवाली; नङ्कैमार्–स्त्रियों की; अनन्तलिन्–निद्रा में रहनेवाली; नॆटुम् कणोटु ओत्त आम्–दीर्घ आँखों के समान (मुकुलित रहे)। ६७७

दलों का स्पर्श कर उन्हें विकसित करनेवाली उदय-वेला आ गयी। तो भी सवेरे जिन श्रेष्ठ फूलों को विकसना था, वे मनोरम प्रकार से नहीं विकसे। विशाल शय्या में सोनेवाली स्त्रियों की निद्रामग्न आँखों के समान बन्द ही रहे। ६७७

इच्चैयिऱ् ऱुयिल्बवर् यावर् कण्गळुम्
निच्चयम् पहलुन्द मिमैह णीङ्गिल
पिच्चैयु मिडुदुमॆन् ऱुणर्दल् पेणला
वच्चैयर् नॅडुमनै वायिन् मानवे 678

पिच्चैयुम् इटुतुम् ऍन्ऱु–भिक्षा देंगे, यह; उणर्तल् पेणला–भाव न रखनेवाले; वच्चैयर्–कृपणों के; नॆटु मनै वायिल् मान–बड़े घर के द्वार के समान; इच्चैयिल्–अपनी इच्छा भर; तुयिल्पवर् यावर् कण्कळुम्–सोनेवाले सभी की आँखें; पकलुम्–दिन होने पर भी; तम् इमैकळ्–अपनी पलकें; निच्चयम् नीङ्किला–निश्चय खोलकर नहीं जागीं। ६७८

सुप्त लोगों की आँखें नहीं खुलीं। उदय होने के बाद भी निश्चित

रूप से नहीं खुलीं। उनकी पलकें उन लोभी कृपण लोगों के घरों के द्वारों के समान बन्द रहे, जो कभी याचकों को कुछ नहीं देते। ६७८

नञ्जुरु पिरिविन्न नळ्ळि नीळमोर्न्
दञ्जुरु नडुवणो रयर्वु ताङ्गिय
वॆञ्जिरै नीङ्गिय विन्नैयि न्नोरॆन्न
नॆञ्जुरुक् कळित्तन नेमिप् पुळ्ळॆलाम् 679

नेमि पुळ् ऍलाम्–चक्रवाक पक्षी सब; नळ्ळित्–रात में; नञ्चु उरु पिरिविन्–विष-सम वियोग में रहे; नीळम् ओर्न्तु–रात की लम्बाई का विचार करके; अञ्चुरु–भय के साथ; ओर् अयर्वु ताङ्किय–क्लेशयुक्त रहे; नडुवण्–उस दुःख के समय के बीच; वॆम् चिरै नीङ्किय–कठोर कारा से विमुक्त; विन्नैयिन्नोर् ऍन्न–सुकृतों के समान; नॆञ्चु उरु कळित्तन–मन से मुदित हुए। ६७९

चक्रवाक पक्षियों को जब मालूम हुआ कि उदय-समय आ गया, तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। वे रात की लम्बाई का विचार करके भय के साथ निद्रा में लगी थीं। अब उसके बीच में ही उदय हो गया। कारामुक्त सुकृत्य वाले लोगों के समान वे बहुत आनन्दित हुए। ६७९

नाण्मदिक् कल्लदु नडुव णॆय्दिय
आणॆयिऱ् ड्रिऱक्कला वलरिऱ् पाय्वन
माण्विन्नैप् पयनरु वच्चै वायिल्शेर्
पाणरिऱ् ऱळर्न्दन पाडऱ् ऱुम्बिये 680

पाटल् तुम्पि–सुरीले गानेवाले भ्रमर; नाळ् मतिक्कु अल्लतु–नवोदित चन्द्र के सिवा; आणॆयिल्–रावण की आज्ञा से; नट्टवण् ऍय्तिय–(अकाल में) बीच में आये दिन में; तिऱक्कला अलरिल्–जो नहीं विकसते, उन (कुवलय आदि) पुष्पों में; पाय्वत–सवेग आते हैं; माण् विन्नै पयन् अऱु–महान सुकृत्यों से वंचित; वच्चै–कृपणों के; वायिल् चेर्–द्वार पर आये; पाणरिल्–याचकों के समान; तळर्न्तन–हतोत्साह हुए। ६८०

सुरीला गान गानेवाले भ्रमर बहुत शीघ्र उड़ते हुए कुवलय आदि पुष्पों के पास आये। वे तो नवोदित चन्द्र के सामने ही खिलने के आदी थे। अब तो रावणाज्ञा से सूर्य आ गया है। इसलिए वे बन्द रहे। भ्रमरों की स्थिति उन गवैये याचकों के समान हो गयी, जो कृपणों के द्वार पर जाते हैं और उसको बन्द पाते हैं। ६८०

अरुमणिच् चाळर मदन्नि नूडुबुक्
कॊरिहदि रिन्नुरुयि लॆळुप्प वॆय्दवुम्
मरुळॊडु तॆरुळुरु निलैयर् मङ्गैयर्
तॆरुळुड मॆय्प्पॊरु डॆरिन्दि लारिन्ने 681

अरु मणि चाळरम् अतनिऩ् ऊटु–श्रेष्ठ रत्नमय गवाक्षों द्वारा; पुक्कु–प्रवेश करके; ॲरि कतिर्–सूर्य की किरणें; इऩ् तुयिल् ॲऴुप्प–मधुर नींद से जगाने के लिए; ॲय्तवुम्–आ गईं, आने पर; मङ्कैयर्—राक्षस-स्त्रियाँ; तॆरुळ् उऱ मॆय् पॊरुळ् तॆळिऩ्तिलारिऩ्–पूर्णरूप से साफ़ ज्ञान न रखनेवाले के समान; मरुळ् ऒटु तॆरुळ् उऱु–भ्रम और बोध (तन्द्रा और जागरण) की मिश्रित; निलैयर्–दशा में रहीं। ६८१

सूर्य की किरणें उत्तम और वहुमूल्य रत्नजड़ित गवाक्षों द्वारा अन्दर घुसकर स्त्रियों को मधुर निद्रा से जगाने लगीं। तव वे न तो पूर्णरूपेण जाग पायीं, न निद्रा में ही रहीं। उनकी निद्रा-स्थिति उन लोगों के ज्ञान की स्थिति के समान थी, जो अपूर्ण रूप से विवृद्ध है। यानी संदिग्ध अवस्था में रही। ६८१

एवलिऩ् वऩ्मैयै यॆण्ण ट्रेऱ्ऱलर्
नावलर् नविऱ्ऱिय नाऴि नामनूल्
कावलि ऩुऩित्तुणर् कणित माक्कळुम्
कूवुऱु कोऴियुन् दुयिल्वु कॊण्डवे 682

एवलिऩ् वऩ्मैयै–आज्ञा के प्रताप को (रात में दिन होने की स्थिति को); ॲण्णल् तॆऱ्ऱलर्–जान नहीं सके; नावलर् नविऱ्ऱिय–विद्वानों के रचित; नाऴि नाम नूल्–समय के श्रेष्ठ शास्त्र के अनुसार; कावलिऩ् ऩुऩित्तु उणर्–रात में सचेत रहकर काल की गणना करनेवाले; कणित माक्कळुम्–ज्योतिषी लोग और; कूवु उऱु कोऴियुम्–बॉग देनेवाले मुर्गे; तुयिल्वु कॊण्ट–निद्रामग्न हो रहे। ६८२

विद्वान ज्योतिषियों से रचे शास्त्र के निष्णात काल-गणितज्ञ, जो रात के काल की गणना करते रहे, सो गये। पहरों को बताने के लिए टेर लगानेवाले मुर्गे भी सोये रहे, क्योंकि उन्हें रावण की आज्ञा और उसके प्रताप से हुआ नतीजा मालूम नहीं था। यानी सूर्योदय हो गया सो बात उन्हें विदित नहीं थी। ६८२

इऩैयन वुलहिनि निहऴ्ऌ मॆल्वैयिल्
कऩैहऴ लरक्कनुङ् गण्णि ऩोक्किनाऩ्
निऩैवुऱु मऩत्तैयु नॆरुप्पिऩ् ऱीय्क्कुमाल्
अऩैयवत् तिङ्गळे याहुमा लॆऩ्ऱाऩ् 683

इऩैयऩ–ऐसी बातें; उलकिऩ् निकऴुम् ॲल्वैयिऩ्–जब संसार में हो रही थीं, तब; कऩै कऴल् अरक्कऩुम्–क्वणनशील पायलधारी राक्षस (रावण) ने भी; कण्णिऩ् नोक्किऩाऩ्–आँखों से (सूर्य को) देखकर; निऩैवु उऱु मऩत्तैयुम्–स्मरणशील मन को भी; नॆरुप्पिल् तीय्क्कुम् आल्–आग से जला देगा; (आतलिऩ्–इसलिए;) अऩैय अ तिङ्कळे आकुम्–वही चन्द्र यह है; ॲऩ्ऱाऩ्–(अपनी धारणा) कही। ६८३

जव ये वातें हो रही थी, तो क्वणनशील पायल-चरण रावण ने सूर्य

को अपनी आँखों से देखा। कहा कि इसके बारे में सोचनेवाले मन को भी यह जला डालेगा। इसलिए यह वही चन्द्र है (जिसको हटाने की आज्ञा मैंने दी थी)। ६८३

तिङ्गळो वन्ऱिदु शॅल्वच् चॅङ्गदिर्
पॉङ्गुळैप् पच्चैमाप् पुरवित् तेरदाल्
वॅङ्गदिर् शुडुवदे यन्ऱि मॅय्युऱत्
तङ्गुदण् कदिर्शुडत् तहादॆन् ऱार्शिलर् 684

चिलर्–कुछ (भृत्यों) ने; इतु तिङ्कळो अन्ऱु–यह चन्द्र ही नहीं है; चॅल्व चॅम् कतिर्–श्रेष्ठ लाल किरणमाली; पॉङ्कु उळै–उभरे, बड़े अयाल वाले; पच्चै मा पुरवि–हरे बड़े अश्वों का; तेरतु आल्–रथ का है, इसलिए; वॅम् कतिर्–तापक किरणों का; मॅय्–शरीरी; उऱ चुटुवते अन्ऱि–खूब जलायगा, उसके सिवा; तण् तङ्कु कतिर्–शीत-भरी किरणों का चन्द्र; चुट तकातु–जला नहीं सकेगा; ऍन्ऱार्–कहा। ६८४

वहाँ जो रहे, उन किंकरों ने उत्तर में निवेदन किया कि नहीं! यह चन्द्र ही नहीं है। विश्वास मानिए। यह उत्तम और लाल किरणमाली है। उसके रथ में बड़े और हरे अश्व जुते हैं। इसी की किरणें गरम होती है और वे ही ताप देती है। चन्द्र शीतल-किरण है और वह नहीं जलाता। ६८४

नीलच् चिहरक् किरियन्नव निन्ऱ वॅय्योन्
आलत् तिनुम्वॅय्य नहऱ्ऱि यरऱ्ऱु हिन्ऱ
वेलैक् कुरलैत् तविर्हॆन्ऱु विलक्कि मेलै
मालैप् पिऱैप्पिळ्ळैयैक् कूवुदिर् वल्लै यॆन्ऱान् 685

चिकर नील किरि अन्नवन्–शिखरों-सहित नीले पर्वत के समान रावण; निन्ऱ वॅय्योन्–सामने स्थित यह सूर्य; आलत्तिनुम् वॅय्यन्–हलाहल से भी तापक है; अकऱ्ऱि–इसे दूर करके; अरऱ्ऱुकिन्ऱ–रोनेवाले; वेलै कुरलै–समुद्र के गले को; तविर्क ऍन्ऱु–चुप रहो, कहकर; विलक्कि–रोककर; मेलै–पश्चिम दिशा में उदित; मालै पिऱै पिळ्ळैयै–शाम के बालचन्द्र को; वल्लै–शीघ्र; कूवुतिर्–पुकारो; ऍन्ऱान्–आज्ञा दिलाई। ६८५

तब शिखरों सहित पर्वत-सम रावण ने आज्ञा सुनायी कि सामने जो है, वह सूर्य हलाहल से भी संतापी लगता है। उसको हटाओ। साथ-साथ उस समुद्र को भी चुप कराओ जो विलाप रहा है! फिर पश्चिम दिशा में जो उदित होता है, उस बाल-कला-चन्द्र को पुकारो। ६८५

शॅन्ना निऱुदर्क्किऱै यम्मॊऴि शॊल्ल लोडुम्
अन्नाळि निऱम्बिय वम्मदि याण्डॊर् वेलै

मुन्नाळि निळम्बिऱै याहि मुळैत्त वॆन्ऱाल्
ऎन्नाळु मरुन्दव मन्ऱि यियऱ्ऱ लामो 686

निरुतर्क्कु इऱै–राक्षसों के राजा ने; चॊन्तान्–वैसा कहा; अ मॊऴि चॊल्लल् ओटुम्–वह वचन कहते ही; अ नाळिन् निरम्पिय–वह (पन्द्रह) दिनों का; अ मति–पूर्णचन्द्र; आण्टु–तब; ओर् वेलै–उसी समय; मु नाळ् इळम् पिऱै आकि–तीन दिनों का कलाचन्द्र बनकर; मुळैत्ततु–उदय हुआ; ऎन्ऱाल्–तो; अरुम् तवम् अन्ऱि–विना कठिन तपस्या के; ऎ नाळुम्–किसी भी दिन; इयऱ्ऱल् आमो–ऐसा किया जा सकता है क्या। ६८६

राक्षसाधिपति ने यह आज्ञा सुनायी। सुनाते ही वह पूर्णचन्द्र तिरोहित हो गया। वहाँ तीन दिन का बालचन्द्र उदित हुआ। तो (कवि तपस्या की शक्ति की महिमा में कहते हैं कि) तपस्या की महिमा कितनी बड़ी है? उसके सिवा कौन सी चीज़ है जो ऐसा कर सकती है? (यह अर्थ भी लग सकता है कि तपस्या को छोड़ कौन कार्य है जो करने योग्य है?)। ६८६

कुडपालिन् मुळैत्तदु कण्ड कुणङ्ग डीयोन्
वडवावन्न लन्ऱॆन्निन् मण्बिडर् वैत्त पाम्बिन्
विडवा ळॆयिऱन्ऱॆन्नि लॆन्नै वॆहुण्डु मालै
अडवा ळुरुविक्कॊडु तोन्ऱिय दाहु मन्ऱे 687

कुटपालिन्–पश्चिमी दिशा में; मुळैत्ततु–उदय हुआ; कण्ट–देख; कुणक्कळ् तीयोन्–दुर्गुणी; वटवा अऩल्–वड़वाग्नि है; अन्ऱु ऎऩ्तिल्–नहीं तो; मण् पिटर् वैत्त–भूमि को गले पर ढोनेवाले; पाम्पिन्–शेषनाग का; विट वाळ् ऎयिऱु–विषैला प्रकाशमय दाँत है; अन्ऱु ऎन्तिल्–वह भी नहीं तो; ऎन्नै वॆकुण्टु–मेरे विरुद्ध गुस्सा करके; मालै–संध्याकाल में; अट–मारने के लिए; वाळ् उरुवि कॊटु–तलवार खींच लेकर; तोन्ऱियतु आकुम्–प्रकट हुआ होगा। ६८७

दुर्गुणी रावण ने पश्चिमी दिशा में उदित कला-चन्द्र को देखा। उसने कहा कि रे, यह तो वड़वाग्नि है! अगर नहीं तो भूभारवाही शेषनाग का उज्ज्वल विषैला दाँत होगा! वह भी नहीं है तो संध्याकाल मुझसे वैर करके मुझे मारने के लिए तलवार लिये हुए प्रकट हो आया होगा!। ६८७

तादुण् शडिलत्तलै वैत्तदु तण्ड रङ्गम्
मोदुङ् गडलिऱ् किडैमुन्दु पिऱन्द पोदे
ओदुङ् गडुवैत्तन् मिडऱ्ऱि लॊळित्त तक्कोन्
ईदुङ् गडुवामॆन वॆण्णिय वॆण्ण मन्ऱो 688

ओतुम्–सबसे चर्चित; कटुवै–विष को; तन् मिटऱ्ऱिल् ऒळित्त–कण्ठ में जिन्होंने दबा रखा है; तक्कोन्–श्रेष्ठ शिवजी ने; तण् तरङ्कम् मोतुम्–शीतल तरंग-ताड़ित; कटलिऱ्कु इटै–(क्षीर-) सागर से; मुन्तु पिऱन्त पोते–पहले जब प्रकट

हुआ तभी; तातु उण्—मकरन्द-भरी; चटिल तलै—जटा से अलंकृत सिर पर; वैतुततु—रख लिया तो; ईतुम्—यह (चाँद) भी; कटु आम्—विष है; ॲत ॲण्णिय—ऐसा सोचा हुआ; ॲण्णम् अन्ड्रो—विचार था न। ६८८

हाँ! यह भयंकर विष ही होगा। क्योंकि विषकंठ शिवजी ने शीतल तरंगाकुल क्षीरसागर पर उस विष के पहले इस चाँद को लेकर अपनी परागयुक्त जटा से अलंकृत सिर पर धारण क्यों किया? यही समझकर न कि यह भयंकर विष है?। ६८८

उरुमॊत्त वलत्तुयिर् नुङ्गिय तिङ्ग ळोडित्
तिरुमिच् चिरुमॆंन् पिरैदीमै कुरैन्द दिल्लै
करुमैक् कडैयॆञ्जलि नञ्जु कलन्द पाम्बिन्
पॆरुमै शिरुमैक्कॊरु पॆड्रि कुरैन्द दुण्डो 689

ॲञ्चल् इल् नञ्चु—अक्षय विष; कलन्त पाम्पिन्—(से) युक्त सर्पों में; पॆरुमै चिरुमैक्कु—बड़ा क्या, छोटा क्या; ऒरु पॆड्रि—(विष के) रखने में; कुरैन्ततु उण्टो—कमी है क्या; उरुम् ऒत्त वलत्तु—वज्र-सम बल के साथ; उयिर् नुङ्किय—प्राण खानेवाला; तिङ्कळ्—पूर्णचन्द्र; ओटि—भागकर; तिरुमि—बदलकर; इ चिरुमॆल् पिरै—यह छोटा कोमल बालचन्द्र (जो आया); तीमै कुरैन्ततु इल्लै—बुराई में कम नहीं है। ६८९

अक्षय विष-भरे साँपों में छोटा क्या बड़ा क्या? विष के सम्बन्ध को लेकर सोचा जाय तो कोई किसी से कम नहीं! वज्र-सम बल के साथ मेरी जान का ग्राहक जो रहा वह पूर्णचन्द्र चला, फिर इस कोमल बालचन्द्र के रूप में आया। यह उससे कम दुखदायी नहीं लगता। ६८९

कन्नक् कतियुमिरु ळत्तैयुङ् गाण्डु मन्ड्रे
मुन्नैक् कदिर्नन्ड्रि दहड्रुदिर् मॊय्म्बु शान्ड्र
ॲन्नैच् चुडुमेलिन्नि येळुल हत्तिल् वाळ्वोर्
पिन्नैच् चिलरुय्वरॆन् ड्रङ्गॊरु पेच्चु मुण्डो 690

मुन्नै कतिर् नन्ड्रु—पहले आया सूर्य ही अच्छा; कन्न कत्तियुम्—पूर्णरूप से घना; इरुळ् तत्तैयुम्—अन्धकार भी; काण्टुम्—देख लूँगा; इतु अकड्रुतिर्—इसको हटा दो; मॊय्म्पु चान्ड्र—बलवान; ॲन्नै चुटुमेल्—मुझे जलायगा (यह चाँद) तो; इन्नि—आगे; एळु उलकत्तिल् वाळ्वोर्—सातों लोकों में रहनेवाले; पिन्नै चिलर्—फिर कुछ लोग; उय्वर् ॲन्ड्रु—इससे बच पायँगे, ऐसा; अङ्कु ऒरु पेच्चुम् उण्टो—वहाँ वचन होगा क्या। ६९०

पहले जो सूर्य रहा वही अच्छा लगता है! पूर्णरूप से घना बना अन्धकार कैसा होगा?—यह भी देख लूँ। हटाओ इसको। बलशाली मुझे भी यह इस प्रकार जला सकता है, तो सातों लोकों के वासियों में किसी के जान से बचने की बात ही उठेगी!। ६९०

आण्डप् पिऱैनीङ्गलु मॅय्दिय वन्द कारम्
तीण्डऱ् करिदाय्प्पल तेय्प्पिनुन् देय्क्क लाहा
वेण्डिऱ् करवत्तिरप् पत्तियि नीर्न्दु वीऴ्त्तुक्
काण्डऱ् करिदाय्प्पल कन्दु तिरट्ट लाहुम् 691

आण्टु–तव; अ पिऱै नीङ्कलुम्–वह बालचन्द्र हटा तो; ॲय्तिय अन्तकारम्–आया अन्धकार; तीण्टऱ्कु अरिताय्–अस्पृश्य; पल तेय्प्पितुम्–खूब बार-बार रगड़ने पर भी; तेय्क्कल् आका–रगड़कर मिटाना कठिन था; वेण्टिल्–चाहने पर; करपत्तिर पत्तियिल्–आरे से; ईर्न्तु–काटकर; वीऴ्त्तु–गिराकर; काण्टऱ्कु अरिताय्–अदर्शनीय; पल कन्तु–अनेक खम्भों के रूप में; तिरट्टल् आकुम्–सँवारा जा सकता है। ६९१

तब बालचन्द्र हट गया। अन्धकार आ गया। वह ऐसा था कि कोई उसे स्पर्श नहीं कर सकता, न उसे रगड़कर उसका अभाव किया जा सकता था। चाहने पर शायद उसे आरे से काटकर उसके अनेक गोल खम्भे बनाये जा सकते थे। ६९१

मुरुडीर्न् दुरुट्टऱ् कॅळिदॅन्बदॅन् मुऱ्ऱ मुऱ्ऱिप्
पॉरुडीर्न्द ञानच् चुडर्बुक्कु विळङ्ग लिन्ऱिक्
कुरुडीङ्गि दॅन्नक् कुऱिक्कॉण्डहण् णोट्टङ् गुन्ऱि
अरुडीर्न्द नॅञ्जिऱ् करिदॅन्बदव् वन्द कारम् 692

मुरुटु ईर्न्तु–गाँठें आदि काट फेंककर; उरुट्टऱ्कु–गोल (खम्भों के रूप में) बनाना; ॲळितु ॲन्पतु ॲन्–आसान है, यह कहना क्या (विशेषता रखता) है; मुऱ्ऱ मुऱ्ऱि–सम्पूर्ण रूप से पक्व; पॊरुळ् तीर्न्त–असंदिग्ध तत्त्वज्ञ; ञानम् चुटर् पुक्कु–ज्ञान की ज्योति प्रवेश करके; वळङ्कल् इन्ऱि–प्रकाशमान नहीं है (जिसमें); ईङ्कु इतु कुरुटु–यहाँ यह अन्धा है; ॲन्न कुऱि कॊण्ट–ऐसा कहा जानेवाला; कण्णोट्टम् कुन्ऱि–दाक्षिण्य से हीन; अरुळ् तीर्न्त–दया से रहित; नॅञ्चिल्–(जो है उस) मन के समान; अ अन्तकारम्–वह अन्धकार; करितु ॲन्पतु–काला कहा जा सकता था। ६९२

हाँ— गाँठें आदि हटाकर उसके खम्भे बनाये जा सकते है —यह कहना कौन सी विशेषता रखता है? वह अन्धकार उस अज्ञ-जन के मन से बढ़कर काला था, जिसमें तत्त्वदर्शी पक्व ज्ञान प्रवेश नहीं कर पाया था, जो 'यह अन्धा है', इस कथन का पात्र हो गया था और जिसमें न दाक्षिण्यभाव था, न दयाभाव। ६९२

विळ्ळादु शॅऱिन्दिडै मेलुऱ वीङ्गि यॅङ्गुम्
तळ्ळा विरुळ्वन्दहन् ञालम् विळुङ्ग लोडुम्
ॲळ्ळा वुलहियावैयुम् यावरुम् वीव दॅन्ब
वुळ्ळा दुमिळ्न्दान् विडमुण्ड वीरुत्त नॅन्ऱान् 693

विळ्ळातु–अखण्डित; इटै चॅरिन्तु–ठस; मेल् उऱ वीङ्कि–ऊपर बढ़कर; ऍङ्कुम् नळ्ळा–कहीं भी न लगनेवाला; इरुळ् वन्तु–अन्धकार आया; अकल् ञालम् विळुङ्कल् ओटुम्–और उसके विशाल संसार को निगलते ही; विटम् उण्ट ऒरुतृतन्–विषखादक शिव ने; ऍळ्ळा उलकु यावैयुम्–अनिद्य सभी लोक; यावरुम्–और उनके वासी; वीयुम् ऍन्ऩ्पतु उळ्ळातु–मिट जायँगे, यह नहीं सोचकर; उमिऴ्न्तान्–उगल लिया है; ऍन्ऱान्–कहा। ६९३

अविच्छिन्न, घना और सर्वत्र व्याप्त विपुल अन्धकार, जो कहीं चिपका नहीं रहता, आकर विशाल विश्व को निगल गया। रावण ने टीका की कि शिवजी ने जो पहले विष को निगल लिया था अब उसे उगल दिया है, बिना यह सोचे-विचारे कि इसके फैलने से सारे लोक और उन लोकों के वासी मिट जायँगे। ६९३

वेलैत् तलैवन् दॊरुवन्वलि याल्वि ऴुङ्गुम्
आलत्ति नडङ्गुव दन्ऱि दऱिन्दु णर्न्देन्
ञालत्तॊडु विण्मुदल् यावैयु नावि नक्कुम्
कालक् कनल्हार् विडमुण्डु करुत्त दन्ऱे 694

ऒरुवन्–अद्वितीय शिव ने; वेलै तलै वन्तु–समुद्र पर आकर; वलियाल्–अपने बल से; विऴुङ्कुम्–(जिसको) निगला; आलत्तिन्–उस हलाहल में; इतु अटङ्कुवतु अन्ऱु–यह समाविष्ट होनेवाला नहीं; अऱिन्तु उणर्न्तेन्–जान-समझ लिया है; ञालत्तु ऒटु–भू के साथ; विण् मुतल् यावैयुम्–आकाश आदि सभी (भूतों) को; नाविन् नक्कुम्–अपनी जीभ से चाट लेनेवाला; काल कनल्–युगान्तकाल की आग; कार् विटम् उण्टु–काला विष खाकर; करुत्ततु–जो काली बनी, वह। ६९४

(फिर उसे लगा कि) यह विष उस हलाहल के समान खाया नहीं जा सकता, जिसको अद्वितीय परमेश्वर ने क्षीरसागर-तट पर आकर उस दिन ले निगल लिया। मैंने जान-बूझ लिया है। यह युगांत अग्नि है, जो भूलोकों के साथ आकाशलोकों को भी चाट ले सकती है और जो विष खाकर काली बन आयी है। ६९४

अम्बु मनलु नुऴैयाक्कन वन्द कारत्
तुम्बु मऴैहॊण्डय लॊप्परि दाय तुप्पिन्
कॊम्बर् कुरुम्बैक् कुलङ्गॊण्डदु तिङ्ग डाङ्गि
वॆम्बुन् दमियेन्मुल् विळक्कॆनत् तोन्ऱु मन्ऱे 695

अयल् ऒप्पु–कोई दूसरी उपमा; अरितु आय–जिसके लिए कहना कठिन है; तुप्पिन् कॊम्पर् अतु–एक प्रवालवल्लरी; अम्पुम् अनलुम् नुऴैया–बाण या अनल प्रविष्ट न हो सके; कन–उतना घना; अन्तकार तुम्पु मऴै कॊण्टु–अन्धकारमय मेघ ढोकर; कुरुम्पै कुलम् कॊण्टतु–दो नारियल के कच्चे फलों से युक्त; तिङ्कळ् ताङ्कि–

चन्द्र को धरकर; वॆम्पुम् तमियेऩ् मुऩ्-तप्त मेरे सामने; विळक्कु अॆऩ-दीप के समान; तोऩ्ऱुम्-दिखाई देता है; (अऩ्ऱु-ए) । ६९५

(रावण के सामने देवी का मिथ्या रूप प्रकट होता है।) यह क्या ? एक अनुपम प्रवाललता दिखाई देती है ! उसके सिर पर वाणों और अग्नि से भी अभेद्य और घना मेघ है और उसकी देह पर दो नारियल के कच्चे फल हैं। इनके साथ वह चन्द्र को भी धारण किये हुए अकेले दुःख-पीड़ित मेरे सामने दीप के समान प्रकट हुई है। ६९५

मरुळ्ऊडु वन्द मयक्कोमदि मऱ्ऱु मुण्डो
तॆरुळेमि दॆऩ्ऩो दिणिमैयिळैत् तालु मॊव्वा
इरुळ्डिरु कुण्डलङ् गॊण्डु मिरुण्ड नीलच्
चुरुळोडुम् वन्दोर् शुडर्मामदि तोऩ्ऱु मऩ्ऱे 696

मरुळ् ऊडु वन्त मयक्को—चित्त-भ्रम से आया मोह; मति मऱ्ऱुम् उण्टो—दूसरा (अनोखा) चन्द्र भी है क्या; इतु ॲॆऩ्ऩो—यह क्या ही है; तॆरुळेम्—मेरी समझ में नहीं आता; तिणि मै इळैत्तालुम्—अंजन को ठस भरने पर भी; ऒव्वा—वह इसकी तुलना नहीं कर सकता, ऐसा; इरुळ् ऊटु—अन्धकार-मध्य; इरु कुण्टलम् कॊण्टु—दो (कर्ण-) कुण्डलों से भूषित होकर; इरुण्ट नील चुरुळ् ओटुम्—अन्धकार-सम काले घुंघराले केश के साथ और; चुटर् मा मति तोऩ्ऱुम्—उज्ज्वल श्रेष्ठ चन्द्र दिखाई देता है। ६९६

क्या यह मेरा भ्रमजन्य मोह है ? या सचमुच ऐसा अनोखा चाँद भी तत्त्वतः है ? मैं ठीक-ठीक समझ नहीं पाता। अंजन को ठस भरकर ऐसा बनाने की कोशिश करें तो भी नहीं बन सके, ऐसे अन्धकार के मध्य वह दिखाई देता है। उसके दो कर्णकुण्डल हैं और अन्धकार-सम काला घुँघराला केश है। इस सजधज के साथ एक पूर्णचन्द्र आकर दिखाई देता है। ६९६

पुडैहॊण्डॆळु कॊङ्गैयु मल्हुलुम् बुल्हि निऱ्कुम्
इडैहण्डिल मल्लदॆल् लावुरु वॆऩ्ऱॆ रिन्दाम्
विडनुङ्गिय कण्णुडै यारिवर् मॆल्ल मॆल्ल
मडमङ्गैय रायॆत् मनत्तव रायि ऩारे 697

पुटै कॊण्टु ॲॆळु—वक्ष के दोनों पार्श्वों में उठे हुए; कॊङ्कैयुम्—स्तनों और; अल्कुलुम्—कटिप्रदेश से; पुल्लि निऱ्कुम्—लगी रहनेवाली; इटै कण्टिलम्—कमर नहीं देखी; अल्लतु—उसके बिना; ॲॆल्ला उरुवुम्—सारा रूप; तॆरिन्ताम्—(मैंने) देख लिया; विटम् नुङ्किय—विषभक्षक; कण् उटैयार्—आँखों की स्वामिनी; इवर्—यह; मॆल्ल मॆल्ल—धीरे-धीरे; मट मङ्कैयर् आय्—बाला स्त्री बनकर; ॲॆऩ् मनत्तवर् आयिऩार्—मेरे मन की (वासिनी) हो गईं। ६९७

छाती के दोनों पार्श्वों में उठे रहनेवाले उरोजों को देखता हूँ। नीचे

नितंब देखता हूँ। पर इन दोनों के बीच दोनों से लगी रहनेवाली कमर नहीं देख पाता। धीरे-धीरे उस कटिहीना सुन्दरी का सारा रूप प्रकट हो गया है। विषभक्षक आँखों से भूषित यह बाला स्त्री हैं! वह मेरे मन में आकर बस गयी हैं। ६९७

पण्डे युलहेल्लिनु मुळ्ळ पडैक्क णारैक्
कण्डे निदुबोलीरु पॅण्णुरुक् कण्डि लेऩाल्
उण्डे यॅन्निल्वेर्रिन्ति यॅङ्गै युणर्त्ति निन्ऱ
वण्डेरु कोदै मडवारिव राहु मन्ऱे 698

पण्टु ए–पहले ही; उलकु एल्लित्तुम् उळ्ळ–सातों लोकों की; पटै कण्णारै–(भाला, तलवार आदि) हथियार-सी आँखों वालियों को; कण्टेन्–देखा है; इवर् पोल्वतु–इनके समान; ओर् पॅण् उरु–एक स्त्रीरूप; कण्टिलेन्–नहीं देखा है; वेरु इत्ति उण्टे ॲत्तिल्–दूसरी अब एक (देखी जाती) है तो; ॲङ्कै उणर्त्ति निन्ऱ–मेरी छोटी वहिन ने जिसका वर्णन किया; वण्टु एरु कोतै मटवार्–वह भ्रमरवाही केश वाली स्त्री; इवर् आकुम्–यही होगी। ६९८

पहले ही मैंने सातों लोकों की वासिनी, भाला, तलवार आदि हथियारों से तुल्य आँखों से शोभित स्त्रियों को देखा है। पर इनकी-सी सुन्दरता को प्राप्त स्त्री को नहीं देखा है। अब जो ऐसी एक दिखाई देती हैं, तो यह अवश्य वही स्त्री होगी जिस भ्रमरवाही केश से भूषित सुन्दरी का वर्णन मेरी छोटी बहिन शूर्पणखा ने किया था। ६९८

पूण्डिप् पिणिया नुरुहिन्ऱदु तान्बॊ ऱादाळ्
तेण्डिक् कॊडुवन्दनळ् शॅय्वदॊर् मारु मुण्डो
काण्डऱ् किनियाळुरुक् कण्डवर् केट्कु माऱ्ऱाल्
ईण्डिप् पॊळुदेविरैन् दॅङ्गैयैक् कूवु हॅन्ऱान् 699

इ पिणि पूण्टु–यह रोग पाकर; यान् उरुकिन्ऱतु–जो कष्ट उठा रहा हूँ, उसे; तान् पॊऱाताळ्–खुद न सह सककर; तेण्टि कॊंटु वन्तनळ्–ढूँढ़ लाई है; चॅय्वतु ओर् मारुम् उण्टो–प्रत्युपकार क्या होगा; काण्टऱ्कु इतियाळ्–देखने में मधुर; उरु–इनका रूप; अवळ् कण्टु–वह (शूर्पणखा) देखे; केट्कुम् आऱु आल्–मैं भी पूछकर जान लूँ (कि क्या यह वही है); ईण्टु–यहीं; इ पॊळुते–अभी; विरैन्तु–शीघ्र जाकर; ॲङ्कैयै–मेरी अनुजा को; कूवुक–बुलाओ; ॲन्ऱान्–कहा। ६९९

(मेरी बहिन भी कितनी अच्छी है!) मेरी बहिन ने मेरी व्यथा देखी और वह सह नहीं सकी। इसलिए वह उसे ढूँढ़ लायी है। उसका क्या प्रत्युपकार करूँ? जो सामने है, इस सुन्दर रूपवती को वह भी देखे और मैं प्रश्न कर ठीक-ठीक जान लूँ। उसने आज्ञा दी कि अभी यहीं मेरी बहिन को शीघ्र बुलाओ। ६९९

ॲऩ्ऱा नॅऩ्ऩलुङ् गडिदेहिऩर् कूवु मॅल्लै
वऩ्ऱा णिरुदक्कुलम् वेरऱ मायत्तल् शॅय्वाळ्
ऑऩ्ऱाद कामक् कऩलुट्टॅऱ लोडु नाशि
पॊऩ्ऱाळ्हुळै कॊङ्गैहळ् पोक्किऩळ् पोय्प्पु हुऩ्दाळ् 700

ॲऩ्ऱाऩ्–(रावण ने) कहा; ॲऩलुम्–कहते ही; कटिदु एकिऩर्–शीघ्र गये; कूवुम् ॲल्लै–पुकारने पर; वन् ताळ्–वली, उद्यमी; निरुत कुलम्–राक्षसकुल को; वेर् अऱ–जड़ से काटकर; मायत्तल् चॅय्वाळ्–मिटाने में तत्पर; ऑऩ्ऱात–अनुचित; काम कऩल्–कामाग्नि के; उळ् तॅऱल् ओटुम्–अन्दर दाहने से; नाचि–नासिका; पॊऩ् ताळ् कुऴै–स्वर्णकुण्डल-धारी कानों और; कॊङ्ककळ्–स्तनों को; पोक्किऩळ्–(जिसने) गँवाया; पोय् पुकुन्ताळ्–(वह शूर्पणखा) जा पहुँची। ७००

रावण का यह कहना था कि किंकरों ने जाकर शूर्पणखा को बुलाया। वह तो पराक्रमी और उद्यमी राक्षसकुल को ही जड़ से काटकर मिटाने के कार्य में तत्पर रहो ! उसने अपने लिए बिल्कुल अनुचित प्रेम किया और उस कामाग्नि के अन्दर जलाते उसने जाकर अपनी नाक को, स्वर्णकुण्डलभूषित कानों को और स्तनों को कटवा लिया था। ऐसी शूर्पणखा रावण के पास जा पहुँची। ७००

पॊय्ऩ्ऩिऩ्ऱ नॅञ्जिऱ्कॊडि याळ्वुहुन् दाळै नोक्कि
नॅय्ऩ्ऩिऩ्ऱ कूर्वाळव ऩेरुऱ नोक्कि नङ्गै
मैऩ्ऩिऩ्ऱ वाट्कण् मयिलिऩ्ऱॅऩ वन्दॅन् मुऩ्ऩर्
इऩ्ऩिऩ्ऱव ळाङ्गॊ लियम्बिय शीदै यॅऩ्ऱाऩ् 701

नॅय् निऩ्ऱ कूर् वाळ्—घृत-लगी तीक्ष्ण तलवार-धारी; अवऩ्–उस (रावण) ने; पॊय् निऩ्ऱ नॅञ्चिल्–असत्य जिसमें स्थायी रहा, उस मन की; कॊटियाळ्–क्रूरी; पुकुन्ताळै–जो पहुँची, उसको; नेर् उऱ नोक्कि–सामने आया देख; नङ्कै–बाले; इयम्पिय–तुमने (जिसके बारे में) कहा; चीतै–वह सीता; मै निऩ्ऱ वाळ् कण्–अंजनयुक्त तलवार-सी आँखों को हो; मयिल् निऩ्ऱतु ॲऩ–मोर आकर खड़ा हो, ऐसा; ॲऩ् मुऩ्ऩर् वन्तु–मेरे सामने आकर; इ निऩ्ऱवळ् आम् कॊल्–जो यह खड़ी है, यही है क्या; ॲऩ्ऱाऩ्–पूछा। ७०१

घी-लगी तलवारधारी रावण ने कपटनिलय मन वाली शूर्पणखा को वहाँ आया देखकर पूछा कि बाले ! तुमने किसी सीता के बारे में कहा न ? इधर मेरे सामने अंजनभूषित तलवार-सम आँखें लिये, मोर-सी एक स्त्री खड़ी है। देखो और कहो कि क्या यही वह सीता है ? । ७०१

शॅऩ्दामरैक् कण्णॊडुञ् जॅङ्गऩि वायि ऩोडुम्
शन्दार्दडन् दोळॊडुन् दाळ्दडक् कैह ळोडुम्
अऩ्दारह लत्तॊडु मञ्जऩक् कुऩ्ऱमॅऩ्ऩ
वन्दाऩिव ऩाहुमव् वल्वि लिराम ऩॆऩ्ऱाळ् 702

चॅम् तामरै कण् ओट्टुम्—लाल कमल-सम आँखों के साथ; **चॅम् कनि वायिन् ओट्टुम्**—लाल (विंब-) फल-सम अधरों के साथ; **चन्तु आर्**—सुन्दरता-भरे; **तटम् तोळ् ओट्टुम्**—विशाल कन्धों के साथ और; **ताळ् तट कैकळ् ओट्टुम्**—दीर्घ और विशाल हाथों के साथ; **अम् तार् अकलत्तु ओट्टुम्**—सुन्दर हार-शोभित वक्ष के साथ; **अन्चत्त कुन्ऱम् अन्त**—अंजन-पर्वत के समान; **वन्तान् इवन्**—जो यह आया है; **अ वल् विल्**—वह कठोर धनुर्धर; **इरामन् आकुम्**—राम ही है; **ॲन्ऱाळ्**—बोली। ७०२

(शूर्पणखा तो हमेशा श्रीराम के ध्यान में रहती रही। उसे श्रीराम का रूप ही दिखाई दिया।) उसने कहा कि जो रूप यह दिखाई दे रहा है, वह अंजनगिरि के समान धनु हाथ में लिये आया हुआ राम है। उसके लाल कमल के समान आँखें हैं, लाल बिम्बफल के समान अधर हैं। मनोरम विशाल कंधों और दीर्घ विशाल हस्तों के साथ वह दिखता है, देखो। ७०२

पॅण्बालुरु नान्दिदु कण्डदु पेदै नीयीण्
डॅण्बालु मिलाददो राणुरु वॅन्ऱ दॅन्ने
कण्बालुरु मायै कवऱ्ऱुदल् कऱ्ऱ नम्मै
मण्बालव रेहॊल् विळैप्पवर् मायै यॅन्ऱान् 703

पेतै—मूढ़ स्त्री; **नान् कण्टतु इतु**—जो मैं देख रहा हूँ, यह; **पॅण् पाल् उरु**—स्त्री जाती का रूप है; **नी**—तुम; **ईण्टु**—यहाँ; **ॲण् पालुम् इलाततु**—कहीं भी असम्भाव्य; **ओर् आण् उरु**—एक पुरुष का रूप; **ॲन्ऱतु**—कहती हो, सो; **ॲन्ऩै**—क्या है; **कण् पाल्**—आँखों के सामने ही; **उरु मायै**—बड़ी माया द्वारा; **कवऱ्ऱुतल् कऱ्ऱ**—(दूसरों को) धोखा देना जो जानते हैं; **नम्मै**—उन हमको; **मण्पालवरे**—मर्त्य-मानव; **मायै विळैप्पवर् कॊल्**—वंचित करनेवाले हैं क्या; **ॲन्ऱान्**—(आश्चर्य से) पूछा। ७०३

रावण को अचम्भा हुआ। उसने कहा कि हे अवोध नारी! मेरे सामने जो दिखता है, वह तो स्त्री का रूप है। तुम तो असंभाव्य किसी पुरुष की बात कह रही हो! यह क्या बात है? हम मायाकार्य में प्रवीण हैं। हमें भी धोखा दे रहे हैं क्या ये मर्त्यलोक के मानव? । ७०३

ऊन्ऱुमुणर् वप्पुऱ मॊन्ऱिन्नु मोड लिन्ऱि
आन्ऱुमुळ दाय्नॅडि दाशै कनऱ्ऱ निन्ऱायक्
केन्ऱुन्नॅदि रेविळि नोक्कु मिडङ्ग डोरुम्
तोन्ऱुमनै याळिदु तॊन्नॅऱि याहु मॅन्ऱाळ् 704

ऊन्ऱुम् उणर्वु—सुस्थिर भावना; **अ पुऱम् ऒन्ऱिनुम्**—दूसरी तरफ़ कहीं; **ओटल् इन्ऱि**—नहीं जाती; **आन्ऱुम्**—बहुत; **उळतु आम्**—बनी है; **नॅटितु आचै कनऱ्ऱ**—गम्भीर काम-राग जलता है, उस स्थिति में; **निन्ऱायक्कु**—जो स्थित हो उस तुम्हें; **उन् ॲतिरे**—तुम्हारे सामने; **एतुरु विळि नोक्कुम्**—तुम्हारी दृष्टि जहाँ गौर करती हैं, वहाँ; **इटङ्कळ् तोऱुम्**—उन सभी स्थानों में; **अनैयाळ् तोन्ऱुम्**—वही दिखाई देगी; **इतु**—यह; **तॊल् नॅऱितु आकुम्**—प्राचीन (मनो-) धर्म ही है; **ॲन्ऱाळ्**—(शूर्पणखा ने) कहा। ७०४

शूर्पणखा ने समझाया कि भाई तुम्हारी सीता की भावना स्थिर और दृढ़ है। इसलिए तुम्हारी कल्पना दूसरी ओर नहीं जाती। तुम्हारा सीता के प्रति राग तुम्हें जला रहा है और तुम तप्त स्थिति में हो। इस स्थिति में तुम सर्वत्र सीता को ही देखो —यह कोई नई या विचित्र बात नहीं। यह तो प्राचीन और परिचित मनोधर्म ही है। ७०४

अऩ्ऩाळदु कूऱ वरक्कऩु मऩ्ऩ दाह
निऩ्ऩालव् विरामऩैक् काण्गुऱ नीरॆ ऩॆऩ्ऱाऩ्
ॲऩ्ऩाळव ऩॆऩ्ऩैयित् तीर्वऱ मिऩ्ऩल् शॆय्दाऩ्
अऩ्ऩाण्मुदल् याऩु मयर्त्तिल नाहु मॆऩ्ऱाळ् 705

अऩ्ऩाळ्–उसके; अतु कूऱ–ऐसा कहने पर; अरक्कऩुम्–राक्षस रावण ने; अऩ्ऩतु आक–वही हो; निऩ्ताल्–तुमसे; अ इरामऩै काण्कुऱुम्–उस राम को देखे जाने का; नीर्–गुण; ॲऩ् ॲऩ्ऱाऩ्–कैसा, पूछा; ॲ नाळ–जिस दिन; ॲऩ्ऩै–मुझे; इ तीर्वु अऱ–यह प्रत्यवायहीन; इऩ्ऩल् चॆय्तान्–कष्ट दिया; अ नाळ् मुतल्–उस दिन से; यानुम्–मै भी; अयर्त्तिलन् आकुम्–भूली नहीं हूँ; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। ७०५

यह सफ़ाई सुनकर रावण ने सकारा कि हाँ! वही ठीक हो सकता है। फिर पूछा कि तुम राम को ही देख रही हो, इसका रहस्य क्या है? शूर्पणखा ने यह सुनकर चातुर्य से उत्तर दिया। भाई यह क्या पूछते हो? जिस दिन राम ने यह प्रत्यवायहीन कष्ट दिया उस दिन से मैं उसे कहाँ भूल सकी हूँ? नहीं भूल पायी हूँ। ७०५

आमाम दडुक्कुमॆ ऩाक्कैयो डावि नैय
वेमाल्विऩै येऱ्किऩि यॆऩ्विडि वाहु मॆऩ्ऩक्
कोमाऩुल हुक्कीरु नीकुऱै हिऩ्ऱ दॆऩ्ऩे
पूमाण्गुळ् लाडऩै वव्वुदि पोदि यॆऩ्ऱाळ् 706

आम् आम्–हाँ, हाँ; अतु अटुक्कुम्–वह सम्भव ही है; ॲऩ् आक्कै ओटु–मेरे शरीर के साथ; आवि नैय–प्राण छीजते हैं; वेम् आल्–जलते हैं; आल्–इसलिए; विऩैयेऱ्कु–कामकार्य-तप्त मुझे; इऩि विटिवु ॲऩ्ऩ आकुम्–अब निस्सरण क्या है; ॲऩ्ऩ–पूछने पर; नी उलकुक्कु ओरु कोमाऩ्–तुम भुवनपति हो; कुऱैकिऩ्ऱतु ॲऩ्ऩे–अपने को हीन क्यों मानते हो; पू माण् कुळलाळै–पुष्पालंकृत सुकेशिनी को; वव्वुति–हर लाओ; पोति–जाओ; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। ७०६

रावण ने उत्तर में कहा कि ओफ़ ओह! हाँ, हाँ वह सम्भव बात ही है। पर देखो। मेरा शरीर दुर्बल हो रहा है; मेरे प्राण विगलित हो रहे हैं। शरीर और प्राण जल रहे हैं। कामेच्छा अपना निर्मम कार्य कर रही है। उसके वश होकर मैं बहुत कष्ट उठा रहा हूँ! अब उससे छूटना कैसे हो? शूर्पणखा ने उसे धीरज दिया। भाई! तुम भुवनपति हो।

फिर क्यों ऐसी हीनता का अनुभव करते हो ! जाकर पुष्पालंकृत सुकेशिनी सीता को हर लाओ। अभी जाओ ! उसने भाई को उकसाया। ७०६

ॲन्ड्रा ळहन्ड्राळ वरक्कनु मीड ळिन्दान्
ऑन्ड्रानु मुणर्न्दिल नावि युलैन्दु शोर्न्दान्
निन्ड्रारु नडुङ्गिनर् निन्रुळ नाळि ताले
पोन्ड्रादुळ नायिन नत्तनै पोलु मन्ड्रे 707

ॲन्ड्राळ्–कहकर; अकन्ड्राळ्–शूर्पणखा चली; अ अरक्कनुम्–वह राक्षस भी; ईटु अळिन्तान्–अधीर हुआ; ऑन्ड्रानुम् उणर्न्तिलन्–कोई सुध नहीं रही; आवि उलैन्तु–प्राणविह्वल होकर; चोर्न्तान्–थक गया; निन्ड्रारुम् नटुङ्कित्तर्–(वहाँ जो) खड़े (थे) वे भी (भय से) काँपे; निन्रु उळ नाळिताल् ए–आयु शेष रही इसलिए; पोन्ड्रातु–विना मरे; उळन् आयित्तन्–जीवंत रहा; अ तुणे पोलुम्–वही कारण था; (अन्रु–ए)। ७०७

यह कहकर शूर्पणखा चली गयी। राक्षस संकट सह नहीं सका। अधीर हो गया। सुध-बुध खोयी और उसके प्राण सूखने लगे। पास जो थे वे भी उसकी स्थिति देखकर डर गये। रावण की आयु शेष थी। इसलिए वह मरा नहीं; जीवित रहा। वही कारण था ! नहीं तो आसार आशादायी नहीं लगते थे। ७०७

इड्रन्दार् पिड्रन्दारॆन विन्नुयिर् पॆऱ्ऱ मन्नन्
मड्रन्दा नुणर्न्दानवण् माडुनिन् ड्रारै नोक्किक्
कड्रन्दा लॆननीर्दरु शन्दिर कान्तत् तालोर्
शिड्रन्दार् मणिमण्डबञ् जॆय्हॆनच् चॆप्पु हॆन्ड्रान् 708

इड्रन्तार् पिड्रन्तार् ॲन–मृतक फिर जीवित हो आया जैसे; इन् उयिर् पॆऱ्ऱ मन्नन्–प्यारे प्राणों को फिर से पाकर राक्षसराज; मड्रन्तान् उणर्न्तान्–सुध-बुध जो खोई थी, उसे फिर पाकर; अवण् माटु निन्ड्रारै नोक्कि–वहाँ पास जो खड़े रहे उनको देखकर; कड्रन्ताल् ॲन्–दुहने पर जैसे; नीर् तरु–जल बहानेवाला; चन्तिर कान्तत्ताल्–चन्द्रकान्त मणि से; ओर्–एक; चिड्रन्तु आर्–श्रेष्ठ बने; मणि मण्टपम्–सुन्दर मण्डप को; चॆय्क ॲन–निर्मित करो, ऐसी; चॆप्पुक अन्ड्रान्–(आज्ञा) सुनाओ, कहा। ७०८

कुछ देर के बाद रावण होश में आया। तब यही लगा कि मृतक ही जी उठा हो। राक्षसराज अब तक भूला-सा रहा। फिर से स्मरण आ गया। उसने अपने पास जो रहे उनसे कहा कि चन्द्रकान्त-शिलाओं का एक रत्नमण्डप बना लेने को कहो। उन शिलाओं से ऐसा शीतल जल निकलता रहे— मानो कोई उन्हें दुह रहा हो। ७०८

वन्दा नॆडुवानुडै तच्चन् मनत्तु णर्न्दान्
शिन्दा विनैयन्ड्रियुङ् गैविनै यालुञ् जॆय्दान्

अन्दाम नॅडुन्दऱ्ि यायिरत् ताल मैन्द
शन्दार् मणिमण्डबन् दामरै योनु नाण 709

नॅट्टु वान् उऱै–विस्तृत आकाशलोक का वासी; तच्चन–(विश्वकर्मा नाम का) शिल्पी; वन्तान्–वहाँ आया; मततुतु उणर्न्तान्–मन में समझा; अम् तामम्–सुन्दर और; नॅटुम् तऱ्ि आयिरत्ताल्–ऊँचे हज़ार खम्भों के साथ; अमैन्त–निर्मित; चन्तु आर् मणि मण्टपम्–सौन्दर्य-भरा रत्नमय मण्डप; तामरैयोतुम् नाण–कमलासन को भी शरम से भरते हुए; चिन्ता वित्तै अन्ऱियुम्–परिकल्पना के साथ; कै वित्तैयालुम्–हस्त-कौशल द्वारा भी; चॅय्तान्–रचा। ७०६

विस्तृत आकाशलोक का शिल्पी विश्वकर्मा आया। उसने रावण की इच्छा ध्यान से जान ली। एक सहस्र खम्भों के साथ उसने एक बड़ा मनोरम मण्डप निर्मित किया। ऐसा मण्डप बनाया कि सृष्टि-कर्म में अद्वितीय ब्रह्मा भी देखकर अपनी हीनता पर शरम खाये! उसमें उसकी भावना, कल्पना आदि का भी विशेष सामर्थ्य प्रकट होता था, बल्कि उसके हस्तकौशल की भी झाँकी मिलती थी। ७०९

कान्दम् ममुदिन्ऱुळि काल्वन काल मीनिन्
वेन्दन् नौळियन्ऱियु मेलोडु कीऴ्वि रित्तान्
पून्दॅन्ऱल् पुहुन्दुरै शाळर मुमवु तैन्दान्
एन्दुम् मणिक्कऱ्पहच् चीदळक् कावि ळैत्तान् 710

काल मीनिन् वेन्तन्–कालदर्शी नक्षत्रों के राजा; ऑळि अन्ऱियुम्–(चन्द्र की) ज्योति के बिना भी; अमुतिन् तुळि काल्वन–अमृत की बूंदें निकालनेवाले; कान्तम्–चन्द्रकान्त पत्थरों को; मेल् ओट्टु कीऴ् विरित्तान्–ऊपर-नीचे सर्वत्र बिछाया; पूम् तॅन्ऱल्–मधुर (पुष्पगन्ध-युक्त) मलयपवन; पुकुन्तु उऱै–प्रवेश कर रहे, इस निमित्त; चाळरमुम् पुतैन्तान्–गवाक्ष भी बनाये; मणि एन्तुम्–(फूल-फलों के रूप में) रत्नधारी; कऱ्पक चीतळ का–कल्पक तरुओं का शीतल उद्यान; अमैत्तान्–निर्मित किया। ७१०

उसने उस मण्डप में ऊपर और नीचे सर्वत्र ऐसे चन्द्रकान्त के पत्थर जड़े जिनसे कालदर्शी, नक्षत्रों के राजा चन्द्र के स्पर्श के बिना भी जल स्रव सकता था। फिर मण्डप में गवाक्ष निर्मित किये, जिनसे मधुर पुष्पगन्धवाही मलयपवन अन्दर आकर ठहर सके। फिर उसके चारों ओर एक कल्पतरुओं का शीतल उद्यान बनाया जिनके फल, फूल आदि रत्नमय थे। ७१०

आणिक्कमै पॉऱ्ऱट्टिल् मणिच्चुड रार्वि ळक्कम्
शेणुऱ् ऱिरुळ्शीप्पन दॅय्व मडन्दै मार्हळ्
पूणिऱ् पॉलिवार्बुडै येन्दिडैप् पॉङ्गु तोळान्
माणिक्क मानत्तिडै मण्डबङ् गाण वन्दान् 711

आणिक्कु अमै–प्रामाणिक सोने (की कील) से समता रखनेवाले; पॊन् तट्टिन्–

स्वर्ण की बनी थालियों में; मणि चुटर् आर् विळक्कम्–सुन्दर रत्नप्रकाशमय दीप; सेण् उऱ्ऱु इरुळ् चीप्पत्त–जो दूर तक जाकर अन्धकार मिटानेवाले थे; पूणिल् पोलिवार्–आभरणों से शोभित; तेय्व मटन्तै मार्कळ्–सुरस्त्रियाँ; पुटै एन्तिट– पार्श्व में ले आयीं; पोङ्कु तोळान्–उन्नत भुजा वाला; माणिक्क विमानत्तु इटै– माणिक्य-वाहन पर; मण्टपम् काण वन्तान्–मण्डप देखने आया। ७११

रावण उस मण्डप को देखने आया। वह माणिक्यजड़ित एक यान पर आया। पुष्ट और उन्नत कन्धों से युक्त उसके साथ अनेक सहस्र कोटि देवांगनाएँ हाथ में स्वर्णथालियों में दीप लिये आयीं। थालियों का स्वर्ण बहुत ही उच्च कोटि का था। उसका खरापन उसके लिए नियत प्रामाणिक सोने की कील से परखा जाता तो शुद्ध निकलता। दीपों की ज्वालाएँ रत्न ही थीं। उनमें से जो प्रकाश निकलता था वह दूर-दूर तक जाकर अन्धकार को मिटाता था। वे देवांगनाएँ बहुत मनोरम भूषणों से भूषित थीं। ७११

अल्लायिर कोडि यडुक्किय दोत्त देनुम्
नल्लार् मुहमाम् नळिर्वानिल विन्ऱि नामप्
पल्लायिर कोडि पनिच्चुड रीन्ऱ तिङ्गळ्
अॅल्ला मुडन्ना विरुळोडि यिरिन्द दन्ऱे 712

नळिर् वान् निलवु इन्ऱि–शीतल आकाश में चाँद नहीं रहा, तो भी; अल् आयिर कोटि–रातें हजारों की संख्या में; अटुक्कियतु ओत्ततेनुम्–एक के ऊपर एक रखी गयी हों, जैसे रहने पर भी; नल्लार् मुकम् आम्–उन सुन्दरियों के मुख रूपी; नाम–श्लाघनीय; पल् आयिर कोटि–अनेक सहस्र कोटि; पनि चुटर् ईन्ऱ–शीतल प्रकाशमय; तिङ्कळ् अॅल्लाम्–चन्द्र सभी; उटन्ना–साथ आने से; इरुळ्–अन्धकार; ओटि–भागकर; इरिन्ततु–हट गया। ७१२

उनके मुख चन्द्र-सम उज्ज्वल थे। अनेक रातों का सम्मिलित अन्धकार हो तो भी बहुत मानार्ह अनेक सहस्र शीतल प्रकाशदायी मुख रूपी चन्द्र साथ आये, इसलिए चाँद के विना भी वह अन्धकार दूर हो गया था। ७१२

पोऱ्पुऱ्ऱुन मामणि योन्बदुम् बूवि निन्ऱ
कऱ्पत्तरु विन्गदिर् नाणिळऱ् कऱ्ऱै नाऱ
अऱ्पऱ्ऱळि यप्पह लाक्किय दाल रुक्कन्
निऱ्पत्तॅरिक् किन्ऱतु नीळ्शुडर् नीर्मै यन्ऱो 713

पोऱ्पु उऱ्ऱत–मनोहारिता से युक्त; मा मणि ओन्पतुम्–श्रेष्ठ नवरत्न; पूविन्– फूल बने; निन्ऱ–ऐसे स्थित; कऱ्प तरुविन्–कल्पतरुओं की; कतिर्–कान्ति- किरणें; नाळ् निळल् कऱ्ऱै–दिन के-से प्रकाश की रेखाओं के समान; नाऱ–निकल

रही थीं; अल् परुरु अऴिय–रात का सम्बन्ध मिट गया; पकल् आक्कियताल्–दिन-सा बनाने से; अरुक्कन् निरुप–सूर्य के (दूर) रहने पर भी; नीळ् चुटर् तॅरिक्किन्ऱतु–लम्बी प्रकाश-रेखाएँ निकालना; नीर्मै अन्ऱो–(कल्पतरुओं का) गुण है न। ७१३

उस उद्यान के कल्पतरु भी आसाधारण थे। उनके फल वहुत ही छटापूर्ण नवरत्न थे। उनसे जो प्रकाश छूटता था उससे दिन-सा प्रकाश होता था। विना सूर्य के ही उजाला देना कल्पतरु का गुण था न? । ७१३

ऊऱोशै मुदऱ्पॊऱि यावॆयु मॊन्ऱि नॊन्ऱु
तेऱानिलै युऱ्ऱदोर् शिन्दैयन् शॆय्है योरान्
वेऱाय पिऱप्पिडै वेट्कै विशित्त दीर्प्प
माऱोरुडल् पुक्कॆन मण्डवम् वन्दु पुक्कान् 714

ऊऱु–स्पर्शेन्द्रिय; ओचै–श्रवणेन्द्रिय; मुतला–आदि; पॊऱि यावॆयुम्–इन्द्रिय सब; ऑन्ऱिन् ऑन्ऱु–एक सा एक; तेऱा–सतर्क नहीं रही; निलै–ऐसी स्थिति में; उऱ्ऱतु–पड़ा; ओर् चिन्तैयन्–मन वाला; चॆय्कै ओरान्–क्या करना, यह न जानकर; वेट्कै विचित्तु–राग ने उसको बाँधकर; अतुईर्प्प–खींचा; माऱु ओर् उटल् पुक्कतु ऑन्–दूसरे एक शरीर में प्रविष्ट हुआ हो ऐसा; मण्टपम् वन्तु पुक्कान्–मण्डप में आ पहुँचा। ७१४

रावण की दशा दयनीय थी। उसकी स्पर्श, शब्द आदि परखनेवाली कोई भी इन्द्रिय सतर्क नहीं थी। एक से एक बढ़कर सब इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गयी थीं। मन भी जड़वत हो गया। क्या करना है, यह भी निश्चय कर नहीं पाया। उधर सीता के प्रति राग उसे बलात् खींच रहा था। उससे वह मानो दूसरे शरीर में प्रवेश कर रहा हो, इस विचित्र भावना के साथ मण्डप में आ पहुँचा। ७१४

तण्डलिल् तवञ्जॅय् वोर्हळ् वेण्डिन दायिन् नल्हुम्
मण्डल महर वेलै यमुदॊडुम् वन्द दॆन्नप्
पण्डरुञ् जुरुम्बु शेरुम् पशुमर मुयिर्त्त पैम्बॊन्
तण्डळिर् मलरिऱ् चॆय्द शीदळच् चेक्कै शार्न्दान् 715

तण्टल् इल्–निर्बाध रूप से; तवम् चॆय्वोर्कळ्–तपस्या करते रहनेवाले; वेण्टिन–जो माँगते है उन्हें; तायिन् नल्कुम्–माता के समान देगा; मकर मण्टल वेलै–मण्डलाकार मकरालय (क्षीरसागर); अमुतु ओटुम्–अमृत के साथ; वन्तनु ऑन्न–आया हो जैसे; पण् तरु–संगीत-सम गुंजारशील; चरुम्पु चेरुम्–भ्रमरों से आवृत; पचु मरम्–हरे पेड़ों से; उयिर्त्त–निकले; पैम् पॊन् तण् तळिर्–ताजे स्वर्णवर्ण शीतल पल्लव; मलरिल्–और फूलों से; चॆय्त–बनी; चीतळ चेक्कै–शीतल शय्या पर; चार्न्तान्–पहुँचा। ७१५

उसमें एक पुष्पशय्या थी जो क्षीरसागर अमृत के साथ आया हो ऐसा लगती थी। क्षीरसागर तपस्वियों को उनकी याचित वस्तुओं को माता के

समान दे सकता था। यह शय्या भी वैसी थी क्योंकि कल्पतरु के ताजे स्वर्णवर्ण पल्लव और मनोरम फूल उस पर बिछे हुए थे। उस पर सुरम्य संगीत-सा गुंजार करते हुए भ्रमर मँड़रा रहे थे। रावण उस शीतल शय्या पर आया। ७१५

नेरिळै महळिर् कून्द निऱैनऱै वाश नीन्दि
वेरियञ् जरळच् चोलै वेऩिलाऩ् विरुन्दु शॆय्य
आर्हलि यळुवन् दन्द वमिळ्दॆन्न वौरुव रावि
तीरिनु मुदवर् कौतुत तॆन्ऱल्वन् दिरुत्त दन्ऱे 716

ऑरुवर् आवि तीरितुम्–एक के प्राणों के जाने की स्थिति में रहे, तो भी; उतवर्कु ऑतुत–प्राण रोकने में सहायता जो दे सकता था उस; आर्कलि अळुवम् तन्त–(क्षीर-) सागर की गहराई से प्राप्त; अमिळ्तु ऑन्न–अमृत के समान; तॆन्ऱल्–दक्षिणी (मलय-) पवन; इळै मकळिर् कून्तल्–आभरणालंकृता स्त्रियों के केश पर की; निऱै नऱै वाचम्–भरी शहद-युक्त सुगन्ध; नीन्ति–तैरकर; वेरि अम् चरळम् चोलै–शहदयुक्त, सुन्दर देवदार तरुओं के उपवन में; वेऩिलाऩ्–वसन्तकाल का राजा, मन्मथ के; विरुन्तु चॆय्य–स्वागत करते; वन्तु इरुत्ततु–आ पहुँचा। ७१६

क्षीरसागर की गहराई से प्राप्त अमृत मरणोन्मुख मनुष्य को जिला कर उसकी सहायता कर सकता है। मलयपवन उसी अमृत के समान वहाँ संचार कर रहा था। वह आभूषणभूषिता सुन्दरियों के केशों के शहद-भरे फूलों की सुगन्धि में घुसकर बाहर आया हुआ था। शीतल देवदार तरुओं से भरे उस उद्यान में वसन्त का राजा मन्मथ उसका स्वागत कर रहा था। इस रीति से वह मलयपवन वहाँ आया। ७१६

शाळरत् तूडु वन्दु तवळ्दलुन् दरित्त ऱेऱ्ऱान्
नीळरत् तङ्गळ् शिन्द नॆरुप्पुह नोक्कु नीरान्
वाळ्मनैप् पुहुन्द दाण्डोर् माशुणम् वरक्कण् डन्न
कोळुऱक् कौदित्तु विम्मि युळैयरैक् कूविच् चॊन्नान् 717

चाळरततु ऊटु वन्तु–खिड़कियों से होकर आया; तवळ्तलुम्–और मन्द-मन्द बहा; तरित्तल् तेऱ्ऱान्–तब असहनीय वेदना के साथ; नीळ् अरत्तङ्कळ् चिन्त–लम्बी रक्त-धाराएँ बहाते हुए; नॆरुप्पु उक नोक्कुम्–आग निकालते हुए देखने का; नीरान्–स्वभाव वाला; वाळ् मनै पुकुन्ततु–वास के घर में घुसा; ओर् माचुणम्–एक सर्प; आण्टु वर–वहाँ आया; कण्टु अन्न–देखा-सा; कोळ् उऱ कॊतित्तु–संकट पाकर उबला; विम्मि–सिसकते हुए; उळैयरै–समीपस्थ लोगों को; कूवि–पुकार कर; चॊन्नान्–बोला। ७१७

वह मलयपवन खिड़कियों के रास्ते से अन्दर आया। पर रावण उसे सह नहीं सका। उसकी आँखों से रक्त की बूँदें ढलक आयीं। अगार भी प्रकट हुए। वह कोप, दुःख दोनों से प्रभावित था। उसने उस मलयपवन

को वासस्थान के घर में घुस आये सर्प के रूप में देखा। उससे कष्ट हुआ और उस पर गुस्सा भी। वह उबल पड़ा। सिसकने भी लगा। समीपस्थ भृत्यों को पास बुलाकर उसने (निम्न बातें) कहीं। ७१७

कूवलि नुयिर्त्तत शिन्नी रुलहिनैक् कुप्पुड़् ऍन्नत्
तेवरि नॊरुव नॆन्नै यिन्नलुऴ् जॆयत्तक् कान्नो
एवलि नन्‌ड्रि वन्दिङ् गिव्वऴ् लॆय्दिड़् ऍन्नाक्
कावलि नुळैयर् तम्मैक् , कौणरुदिर् कडिदि नॆन्ड्राऩ् 718

कूवलिन् उयिर्त्तत-(छोटे से) कुएँ में से छनकर निकला; विल् नीर्-थोड़ा जल; उलकिनै-संसार भर को; कुप्पुड़ु अॆन्न-डुबो रहा हो जैसा; तेवरिन् ऑरुवन्-देवों में एक; ऍन्नै-मुझे; इन्नलुम् चॆय तक्कान्नो-संकट दे सका क्या; इ अऴल्-यह आग; एवल् इन्‌ड्रि-बिना अनुमति के; इङ्कु वन्तु ऍय्तिड़ु-यहाँ आ पहुँची है; ऍन्ड्रु-कहकर; कावलिन् उळैयर् तम्मै-पहरेदारों को; कटितिन् कौणरुतिर्-जल्दी लाओ; ऍन्ड्राऩ्-कहा। ७१८

कूप का रिसता जल क्या संसार भर को डुबो सकेगा? वैसा देवों में एक यह मुझे इतना कष्ट दे सकता है क्या? यह अग्निदेव मेरी आज्ञा के बिना आया कैसे? बुलाओ पहरेदारों को। ७१८

अव्वऴि युळैय रोडि याण्डवर्क् कौणर्द लोडुम्
वॆव्वऴि यमैन्द शॆङ्गण् वॆरुवुड़ नोक्कि वॆय्योन्
शॆव्वऴि दॆन्ड्र लाड़्कुत् तिरुत्तिनीर् नीर्हो लॆन्न
इव्वऴि यिरुन्द वालैत् तडैयवर् किल्लै यॆन्ड्रार् 719

अ वऴि-तब; उळैयर्-पास जो रहे, वे; ओटि-दौड़े; आण्टु-वहीं; अवर् कौणर्तल् ओटुम्-उनको (बुला) लाये, तब; वॆय्योन्-आततायी राक्षस ने; वॆम् वऴि अमैन्त-क्रूर बनी; चॆम् कण्-लाल आँखों से; वॆरुवु उड़-भयभीत करते हुए; नोक्कि-देखकर; नीर् कौल्-तुम्हीं ने तो; तॆन्ड्रलाड़्कु-मलयपवन को; चॆल् वऴि तिरुत्तिनीर्-जाने का मार्ग दिखाया; ऍन्न-पूछा, तो; इ वऴि इरुन्त कालै-यह (खिड़कियों का) मार्ग जब रहता तब; अवर्कु तटै इल्लै-उनको रोक नहीं; ऍन्ड्रार्-कहा। ७१९

समीप जो रहे वे भृत्य दौड़े। उन्होंने पहरेदारों को बुलाया और वे आये। निर्मम रावण क्रूर आँखों से उनको भयभीत करते हुए तरेरा और पूछा कि मलयपवन को अन्दर आने का सीधा मार्ग तुम्हीं ने बना दिया न? तब उन्होंने उत्तर दिया कि जब खिड़कियाँ है, तब उसको आने से कौन रोक सकता है? कोई बाधा नहीं होगी। ७१९

वेण्डिय दुणर्न्दु शॆय्वान् विण्णवर् वरुव रॆन्ड्राल्
माण्डदु पोलुङ् गौळ्है यानुडै वन्मै वल्लै

तेण्डिन्नीर् तिशैह डोरुम् जेणुर विशैयिर् चॆल्हुर्
रीण्डिवन् रुन्नेप् पर्रि थिरुञ्जिरै यिड्डुदि रॆन्ऱान् 720

वेण्टियतु उणर्न्तु चॆय्वान्–मैं जो चाहूँ वही करने के लिए; विण्णवर् वरुवर् ऎन्ऱाल्–सुरलोकवासी आते हैं, तो; यान्उटै कोळ्कै वन्मै–मेरे (शासन-) सिद्धान्त का वल; माण्टतु पोलुम्–मिट गया शायद; वल्लै–शीघ्र; नीर् तिचैकळ् तोरुम्–तुम दिशा-दिशा में; तेण्टि–खोजकर; चेण् उऱ–बहुत दूर; विचैयिल् चॆल्कुर्ऱु–तेज जाकर; इवन् तन्नै–इसको; पर्ऱि–पकड़कर; ईण्टु–यहाँ; इरुम् चिऱै–वड़े कारागृह में; इट्टुतिर्–डाल दो; ऎन्ऱान्–यह हुक्म दिया। ७२०

रावण को आश्चर्य हुआ। देवता हैं तो मेरी इच्छा के अनुसार सेवा करने के लिए। आज वात विपरीत चली है। क्या मेरा शासन अपना अधिकार-वल खो गया है? दौड़ो। दिशा-दिशा में भागो और इस पवनदेव को पकड़ो और भयंकर कारागृह में डाल दो। ७२०

काऱ्ऱिनोन् ऱन्नै वाळा मुनिदलिऱ् कण्ड दिल्लै
कूऱ्ऱुम्वन् दॆन्नै यिन्ले कुरुहुमाऱ् कुऱित्त वाऱ्ऱाल्
वेऱ्ऱरुङ् गरुङ्गट् चीदै मॆय्यरुळ् पुनैये नॆन्ऱाल्
आऱ्ऱला लडुत्त दॆण्णु मसैच्चरैक् कॊणर्दि रॆन्ऱान् 721

काऱ्ऱिनोन् तन्नै–पवन पर; वाळा मुनितलिल्–अकारण कोप करने से; कण्टतु इल्लै–कोई लाभ नहीं देखते; कुऱित्त आऱ्ऱाल्–अपनी इच्छा के अनुसार; वेल् तरुम्–भाला-तुल्य; करुन् कण्–असितेक्षणा; चीतै–सीता की; मॆय् अरुळ्–सच्ची कृपा का; पुनैयेन् ऎन्ऱाल्–धारक नहीं वनूँ तो; कूऱ्ऱुम् वन्तु–यम भी आकर; ऎन्नै–मुझे; इन्ने कुरुकुम्–अभी पा लेगा; आल्–इसलिए; अटुत्ततु–आगे जो करना है; आऱ्ऱलाल् ऎण्णुम्–वुद्धि-वल से सोचनेवाले; अमैच्चरै–मन्त्रियों को; कॊणर्तिर्–लाओ; ऎन्ऱान्–कहा। ७२१

रावण ने फिर भी सोचा कि वायुदेव पर वेकार क्रोध दिखाने से क्या लाभ? कुछ नहीं देखता। अगर अपनी इच्छा के अनुसार सीताजी की कृपा पा नहीं सकूँगा तो यम भी मुझे मारने के लिए आ पहुँचेगा। इसलिए जो आगे की करनी के वारे में, अपनी वुद्धि के वल पर सोचकर मार्ग वता सकते है वे हमारे मन्त्री ही हैं। इसलिए चलकर उनको वुला लाओ। उसने भृत्यों को आज्ञा दी। ७२१

एविन शिलत रोडि येयॆनु मळवि लॆङ्गुम्
कूविनर् कूव लोडुङ् गुरुहिन्नर् कॊडित्तिण् डेर्मेल्
माविनिऱ् चिविहै तम्मेन् मळैमदक् कळिऱ्ऱिन् मीदिल्
तेवरुम् वानन् दन्निऱ् ऱिशैदोरुम् जिन्दॆ शिन्द 722

एविन चिलतर् ओटि–आज्ञापित भृत्य दौड़े और; एय् ऎन्नुम् अळविल्–'रे' कहने

के समय के अन्दर; ॲङ्कुम् कूवित्तर्–सर्वत्र पुकारा; कूवलोटुम्–पुकारने पर; तेवरुम्–देव भी; वानम् तन्निल्–आकाश में; तिचै तॉरुम्–दिशा-दिशा में; चिन्तै चिन्त–चिन्ताग्रस्त हो रहे और; कॉटि तिण् तेर् मेल्–ध्वजासहित सुदृढ़ रथों पर; मावितिल्–अश्वों पर; चिविकै तम्मेल्–शिविकाओं पर; मऴै मत कळिऱ्ऱिन् मीतिल्–मेघवर्ण मत्तगजों पर; कुऴ्कित्तर्–(वे मन्त्री) रावण के पास आये। ७२२

तुरन्त कुछ भृत्य दौड़े। 'रे' कहने की जितनी देर में सब जगह दौड़कर उन्होंने टेर लगायी। तो मन्त्री लोग आये। कुछ एक मन्त्री ध्वजामण्डित रथों पर आये। कुछ घोड़ों पर और कुछ पालकियों में आये। कुछ मेघसदृश मत्तगजों पर सवार हो आये। तब देव सब आकाश में एकत्र हो गये और वे वहुत ही चिंतित दिखाई दिये। ७२२

वन्दमन् दिरिह ळॊडु माशऱ मततति नॆण्णिच्
शिन्दैयि निन्नैन्द शॆय्युज् जॆय्हैयन् ऱॆळिवि नॆञ्जन्
अन्दरज् जॆल्व दाण्डोर् विमानत्ति ऩारु मिन्ऱि
इन्दिय मडक्कि निन्ऱ मारीश निरुक्कै शेर्न्दान् 723

वन्त मन्तिरिकळोटु–आगत मन्त्रियों-सह; माचु अऱ मततुतिन् ॲण्णि–दोषरहित रीति से मन में सोचकर; चिन्तैयिल् नित्तैन्त–चित्त में सोचा हुआ; चॆय्युम् चॆय्कैयन्–करने में समर्थ; तॆळिविन् नॆञ्चन्–सुलझा हुआ विचारक; आण्टु–तब; अन्तरम् चॆल्वतु–आकाशचारी; ओर् विमानत्तिन्–एक (पुष्पक-) यान पर; आरुम् इन्ऱि–विना किसी को साथ लिये (अकेले); इन्तियम् अटक्कि निन्ऱ–इन्द्रिय-दमन जो किये रहा; मारीचन् इरुक्कै चेर्न्तान्–मारीच के यहाँ जा पहुँचा। ७२३

मन्त्री आये। मंत्रणा हुई। कोई त्रुटि न रहे, ऐसा उपाय सोचा गया। रावण दृढ़संकल्प था, कार्यचतुर था। वह आकाशचारी एक यान पर चढ़ा और मारीच के पास आया, जो इन्द्रियों का दमन करके तपस्या करता था। ७२३

8. मारीशन् वदैप् पडलम् (मारीच-वध पटल)

इरुन्दमा रीश नन्द विरावण नॆय्द लोडुम्
पॊरुन्दिय पयत्तिन् शिन्दै पॊरुमुऱ्ऱु वॆरुवु हिन्ऱान्
करुन्दड मलैयनानै यॆदिर्हॊण्डु कडन्गळ् यावुम्
तिरुन्दिय शॆय्दु शॆव्वित् तिरुमुहम् नोक्किच् चॆप्पुम् 724

इरुन्त मारीचन्–(तपोरत जो) रहा, वह मारीच; अन्त इरावणन् ॲय्तल् ओटुम्–उस रावण के आते ही; पॊरुन्तिय–उत्पन्न; पयत्तिन्–भय के कारण; चिन्तै पॊरुमुऱ्ऱु–व्यग्र-मन होकर; वॆरुवुकिन्ऱान्–डरते-डरते; करुम् तटम् मलै अन्नानै–काले वड़े पर्वत के समान उसको; ॲतिर् कॊण्टु–स्वागत करके; कटन्कळ् यावुम्–कर्तव्य सव; तिरुन्तिय चॆय्तु–उचित रूप से करके; चॆव्वि तिरुमुकम् नोक्कि–दर्शनीय उसका मुख देखकर; चॆप्पुम्–(यों) बोला। ७२४

तपोरत मारीच ने रावण को देखा। जब रावण आया तो उसे बड़ा भय हो गया। भय के कारण चित्त व्याकुल हो गया। उसने बड़े काले पर्वत-सम रावण की अगवानी की। फिर अतिथि-सत्कार उचित रीति से किये। बाद उसके दर्शनीय मुख को देखकर वह बोला। ७२४

शन्द मलर्त्तण् कऱ्पह नीळऱ् ऱलैवर्क्कुम्
अन्दह तुक्कु मञ्ज वडुक्कु मरशाळ्वाय्
इन्द वऩत्तॆऩ् ऩिऩ्ऩ लिरुक्कै यॆळियोरिऩ्
वन्द करुत्तॆन् शॊल्लुदि यॆऩ्ऱाऩ् मरुळ्हिऩ्ऱाऩ् 725

मरुळ्किऩ्ऱाऩ्–भ्रमित; चन्तम् मलर्–सुन्दर फूलदार; तण् कऱ्पक नीळ्ल्–शीतल कल्पतरु की छाया में रहकर शासन करनेवाले; तलैवर्क्कुम्–देवेन्द्र को; अन्तकत्तुक्कुम्–यम को भी; अञ्च अटुक्कुम्–भयभीत होने देते हुए शासन करते हुए; अरचु आळ्वाय्–राज्यपालन करनेवाले; इन्त–इस; वऩत्तु–वन में; ऎऩ् इऩ्ऩल् इरुक्कै–मेरे संकट-दायक वासस्थान में; ऎळियारिऩ्–दीन के समान; वन्त करुत्तु–आने का अर्थ; ऎऩ्–क्या है; चॊल्लुति–कहो; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ७२५

मारीच के मन में संशयजनित भ्रम था। देवेन्द्र मनोरम शीतल कल्पतरु की छाया में सुख से रहकर आकाशलोक का शासन करता है। यम है। उनको भी भयभीत करते हुए शासन करनेवाले राजा! तुम इस वन में मेरे तुच्छ और कष्टदायी वासस्थान में दीन मनुष्य के समान आये हो! इसका क्या अर्थ है? बताओ। —मारीच ने जानना चाहा। ७२५

आऩ दनैत्तु मावि तरित्ते ऩयर्हिऩ्ऱेऩ्
पोऩदु पॊऱ्पु मेऩ्मैयु मऱ्ऱॆऩ् पुहळोडुम्
याऩ् दुनक्किऩ् ऱॆङ्ङऩ् ऩुरैक्के ऩिऩियॆऩ्ऩा
वाऩ वरुक्कु नाण वडुक्कुम् वशैमऩ्ऩो 726

आऩतु अऩैत्तुम्–आने के (सभी) कष्ट आ गये; आवि तरित्तेऩ्–(किसी तरह) प्राण धारण कर रहा हूँ; अयर्किऩ्ऱेऩ्–थक गया हूँ; ऎऩ् पॊऱ्पुम् मेऩ्मैयुम्–मेरा महत्त्व और गौरव; पुकऴ् ओटुम् पोऩतु–कीर्ति के साथ चले गये; इऩि–अब; याऩ्–मैं; उऩक्कु–तुम्हें; इऩ्ऱु ऎङ्ङऩ् उरैक्केऩ्–आज की स्थिति कैसे कहूँ; ऎऩ्ऩा–कहकर; वाऩवरुक्कुम्–देवों से भी; नाण–शरमाएँ; अटुक्कुम् वचै–ऐसा (जो) अपयश आया है; (मऩ्–ओ)। ७२६

रावण ने कहा कि मुझ पर सभी तरह के संकट आ चुके हैं। प्राण तो नहीं गये पर अत्यन्त शिथिल हूँ। मेरी महिमा, गौरव और कीर्ति सब चले गये। तुमसे मैं क्या कहूँ? देवों से भी हम शर्मायें, ऐसी निन्दा आ लगी है। ७२६

वन्मै तरित्तोर् मानिडर् मट्रङ् गवर्वाळाल्
निन्मरु हिक्कु नाशि यिळक्कु निलैनेर्न्दाल्
ॲन्मर बुक्कु निन्मर बुक्कु मिदन्मेलोर्
पुन्मै तॅरिप्पिन् वेट्रिनि युण्डो पुहळ्वेलोय् 727

पुकळ् वेलोय्–सर्वप्रशंसित भालाधारी; मानुटर्–मानव; वन्मै तरित्तोर्–बलशाली हो गये हैं; मट्रु–और; अङ्कु–वहाँ (दण्डक वन में); अवर्–उन मानवों के द्वारा; वाळाल्–कटार से; निन् मरुकिक्कु–तुम्हारी भांजी की; नाचि इळक्कुम्–नासिका खोने की; निलै नेर्न्ताल्–दशा हुई तो; ॲन् मरपुक्कुम्–मेरे कुल का; निन् मरपुक्कुम्–और तुम्हारे कुल का; इतन् मेल् ओर् पुन्मै तॅरिप्पिन्–इससे बढ़कर हेयता की बात; इनि वेट्रु उण्टो–दूसरी है क्या। ७२७

शंसित भालाधारी मारीच! अल्प मनुष्य आज बलशाली हो गये हैं। और स्थिति ऐसी हो गयी कि दण्डकवन में एक मनुष्य ने तुम्हारी भांजी शूर्पणखा की नाक काट ली। फिर तुम्हारे और मेरे कुल का क्या मान रहा? इससे बढ़कर हेयता हो सकती है क्या? । ७२७

तिरुहु शिनत्तान् मुदिर मलैन्दोर् शिट्रियोर्नाळ्
परुहिन्न ॲन्ट्राल् वॅन्ट्रि नलत्तिऱ् पळियन्ट्रो
इरुहै शुमन्दा यिनिदि निरुन्दा यिहल्वेलुन्
मरुह रुलन्दा रॊरुवन् मलैन्दान् वरिविल्लाल् 728

तिरुकु चिनत्ताल्–ऐंठे कोप के साथ; मुतिर मलैन्तोर्–प्रचण्ड रूप से जिन्होंने युद्ध किया; चिट्रियोर् नाळ् परुकिनन्–उन मेरे छोटों के प्राण पी लिये; ॲन्ट्राल्–तो; वॅट्रि नलत्तिन्–विजय के गौरव पर; पळि अन्ट्रो–बट्टा नहीं है क्या; इकल् वेल् उन् मरुकर्–युद्धोपयोगी भालाधारी तुम्हारे भांजे; उलन्तार्–मरे; ऑरुवन्–अकेले एक मनुष्य ने; वरि विल्लाल्–बन्धनयुक्त धनुष ले; मलैन्तान्–युद्ध करके मिटा दिया; इरु कै चुमन्ताय्–तुम (हाथ जोड़े) दोनों हाथों को सिर पर धारण किए हो; इनितु इरुन्ताय्–सुखपूर्वक रहते हो। ७२८

ऐंठे (अपार) क्रोध के साथ मेरे छोटे भाइयों ने प्रचण्डता के साथ उससे युद्ध किया पर उसने उनके प्राण पी (हर) लिये। तो हमारी विजयशीलता पर बट्टा नहीं लगा क्या? युद्धोपयोगी भाले रखनेवाले तुम्हारे भांजे मरे; एक मनुष्य ने अपने धनुष के बल से उनसे युद्ध करके उनको मिटा दिया; और तुम इधर सिर पर जुड़े हाथ रखकर तपस्या कर रहे हो सुखपूर्वक! । ७२८

वॅप्पळि यादॅन् ॲञ्जु मुलन्देन् विळिहिन्ट्रेन्
ऑप्पिल रॅन्ट्रे पोर्शॅय वॊल्ले नुडन्वाळुम्
तुप्पळि शॅव्वाय् वञ्जियै वव्वत् तुणैहॊण्डिट्
टिप्पळि निन्निऱ् ट्रीरिय वन्दे निवणॅन्ट्रान् 729

वॆप्पु अऴियातु–मन का ताप नहीं मिटता; नॆञ्चुम् उलन्तेन्–मन व्यग्र है; विऴिकिन्ऱेन्–मर रहा हूँ; ऒप्पु इलर्–समान नहीं; ऎन्ऱे–इसीलिए; पोर् चॆय ऒल्लेन्–लड़ने में सहमत नहीं हूँ; उटन् वाऴ्उम्–उनके साथ रहनेवाली; तुप्पु अऴि–प्रवाल को हरानेवाले; चॆम् वाय्–अरुणाधरा; वन्चियै–लता (-समाना स्त्री) को; वव्व–हर लाने के लिए; तुणै कॊण्टु इट्टु–तुम्हें अपना सहायक बनाकर; इ पऴि–यह अपमान; निन्निल् तीरिय–तुम्हारे द्वारा दूर करने के लिए; इवण्–यहाँ; वन्तेन्–आया; ऎन्ऱान्–कहा। ७२९

इससे मेरा मन जलता है। जलन नहीं मिटती। मैं मन मारे मरणोन्मुख दशा में हूँ। वे मेरे समान नहीं हैं; इसलिए उनके साथ लड़ने को मेरा मन नहीं मानता। पर बदला तो लेना ही है। उनके साथ एक स्त्री है। उसके अधर प्रवाल को भी सुन्दरता में मात देनेवाले हैं। वह लता के समान है। उसको तुम्हारी सहायता से हर लाना चाहता हूँ, ताकि मेरा यह अपयश छूटे! इसीलिए इधर आया हूँ। —रावण ने अपना अभिप्राय कहा। ७२९

इच्चॊ लन्नैत्तुञ् जॊल्लि यरक्क नॆरिहिन्ऱ
किच्चि नुरुक्किट् टुयत्तन नॆन्नक् किळर्वान्मुन्
शिच्चि यॆन्नत्तन् मॆय्च्चॆवि पॊत्तित् तॆरुमन्दान्
अच्च महऱ्ऱिच् चॆऱ्ऱ मनत्तॊ डरैहिन्ऱान् 730

अरक्कन्–रावण ने; ऎरिकिन्ऱ किच्चिन्–जलती आग में; उरुक्कु इट्टु–इस्पात गलाकर; उयन्तनन् ऎन्न–गरम द्रव को कानों में डाला हो, ऐसा; इ चॊल् अन्नैत्तुम्–यह सारा वचन; चॊल्लि–कहकर; किळर्वान् मुन्–उकसानेवाले के सामने; ची ची ऎन्न–छिः छिः कहकर; तन् मॆय् चॆवि पॊत्ति–अपने कानों पर हाथ रखकर; तॆरुमन्तान्–गड़बड़ाकर; अच्चम् अकऱ्ऱि–फिर भय त्यागा; चॆऱ्ऱ मनत्तॊटु–क्रुद्ध मन के साथ; अरैकिन्ऱान्–बोला। ७३०

ये शब्द मारीच के कानों में पिघलते इस्पात के समान पड़े। रावण ने ये वचन कहकर उसको उकसाया। तब मारीच ने अपने दोनों हाथ दोनों कानों में धर लिये। कहा— छिः छिः! वह पहले गड़बड़ाया। फिर भय त्यागकर कोप के साथ वह यों बोला। ७३०

मन्ना नीयुन् वाऴ्वै मुडित्ताय् मदियऱ्ऱाय्
उन्ना लन्ऱो दूऴ्वित्तै यॆन्ऱे युणर्हिन्ऱेन्
इन्ना वॆनुम् यानिदु रॆप्पॆ न्िदमॆन्नाच्
चॊन्ना नन्ऱे यन्तव तुक्कुत् तुणिवॆल्लाम् 731

मन्ना–राजा; नी उन् वाऴ्वै मुटित्ताय्–तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली; मति अऱ्ऱाय्–बुद्धि-हीन हो गये; ईतु उन्ताल् अन्ऱु–यह तुम्हारा कृत्य नहीं; ऊऴ् वित्ते ऎन्ऱे–प्रारब्ध ही; उणर्किन्ऱेन्–समझता हूँ; इन्ना एनुम्–बुरा लगे तो भी;

यान्-में; इतम् इतु-हित यह; उरैप्पॅन्-बताऊँगा; ॲन्ऩा-कहकर; अन्तवत्तुक्कु-उसे; तुणिवु ॲल्लाम्-सारा हितकर उपदेश के वचन; चॊन्ऩान्-कहे; (अन्ऱु-ए)। ७३१

हे राजा ! बस ! तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली। बुद्धि खो चुके। मैं समझता हूँ कि यह तुम्हारा काम नहीं; वरन् प्रारब्ध का तकाजा है। मेरा कहना तुमको बुरा लगेगा; तो भी तुमको हित की बात कहूँगा। —ऐसा कहकर मारीच ने रावण को अच्छी बातों का सब उपदेश किया। ७३१

अऱ्ऱ करत्तो डुत्तलै नीये यऩ्ऩमुऩ्निल्
पऱ्ऱित्तै युय्त्ताय् पऱ्पल कालम् पशिहूर
उऱ्ऱुयि रुळ्ळे तेय वुलन्दाय् पिन्ऩैयन्ऱो
पॆऱ्ऱनै शॆल्वम् पिन्निन् दिळन्दार् पॆऱलामो 732

अऱ्ऱ-खण्डित; करत्तोटु उत् तलै-अपने हाथ के साथ सिर को; अऩल् मुऩ्तिल्—(होम की) अग्नि में; नीये पऱ्ऱित्तै उय्त्ताय-स्वयं पकड़कर तुमने होम किये; पल् पल कालम्-बहुत समय तक; पचि कूर उऱ्ऱु-बहुत भूख से पीड़ित रहकर; उळ्ळै उयिर् तेय-अन्दर प्राणों के क्षीण होते; उलन्ताय्-कष्ट उठाया (तप किया); पिऩ्ऩै अन्ऱो-बाद तो; चॆल्वम् पॆऱ्ऱत्तै-(त्रिलोकाधिपत्य की) सम्पत्ति पायी; इऴन्ताल्-खो जाओ तो; पिऩ् इतु पॆऱल् आमो-फिर पाना हो सकता है क्या। ७३२

तुमने अपने ही खण्डित हाथ और सिरों को अपने ही हाथ से होमाग्नि में होम किया। कितने ही लम्बे काल तक भूखा-प्यासा रहकर, प्राणों को क्षीण होने देते हुए कठोर कष्ट सहे। तभी जाकर यह सारी विभवश्री तुम्हारी हुई ! (त्रिलोकाधिपत्य भी मिला।) तुम अब इसको खो जाओ तो पुनः प्राप्त हो सकता है क्या ? । ७३२

तिऱत्तिऱ ऩाले शॆय्दव मुऱ्ऱित् तिरुवुऱ्ऱाय्
मऱत्तिऱ नाले शॊल्लुदि शॊल्लाय् मऱैवल्लोय्
अऱत्तिऱ ऩाले यॆय्दिनै यन्ऱो वदुनीयुम्
पुऱत्तिऱ नाले पिन्ऩु मिळक्कप् पुहुवायो 733

चॊल् आय् मऱै-निरुक्तांगी वेद में; वल्लोय-निपुण; तिऱम् तिऱत् आले-समर्थ सामर्थ्य से; चॆय् तवम् मुऱ्ऱि-करणीय सभी तप पूरा करके; तिरु उऱ्ऱाय्-यह सारा वैभव पाया; मऱ तिऱत् आले-धर्म-विरुद्ध बल से; चॊल्लुति-यह बात कहते हो; अऱ तिऱत्ताले-धर्म-सम्मत बल से; ॲय्तित्तै अन्ऱो-(यह विभुता) पायी न; अतु-वह; पुऱ तिऱत्ताले-धर्म-विरुद्ध बल से; पिऩ्ऩुम् इऴक्क-उसको फिर से खोने के लिए; पुकुवायो-इस काम में प्रविष्ट होओगे क्या। ७३३

निरुक्त-सहित वेद के विशारद ! समर्थ सामर्थ्य के साथ, करणीय तप आदि करके तुमने यह सम्पत्ति पायी है। अब अधार्मिक बल हो गया है, उससे तुम यह बात कह रहे हो। यह सारा वैभव तुमने धर्म-मार्ग

पर चलकर ही प्राप्त किया था। अब इसे अधार्मिक कार्य करके खोना चाहोगे क्या ? । ७३३

नारङ् गॉण्डार् नाडु कवर्न्दार् नडैयिल्ला
वारङ् गॉण्डार् मऱ्ऱॉरु वऱ्काय् मनैवाळ्म्
तारङ् गॉण्डा रॅन्ऱिवर् तम्मैत् तरुमन्दान्
ईरुङ् गण्डाय् कण्डह रुय्न्दा रॅवरैया 734

ऐया–प्रभु; नारम् कॉण्टार्–जल हरनेवाले; नाटु कवर्न्तार्–राज्य छीनने वाले; नटै इल्ला–प्रथा के विरुद्ध; वारम् कॉण्टार्–प्रजा से कर लेनेवाले; मऱ्ऱु ऑरुवऱ्कु आय्–दूसरे की गृहिणी बनकर; मनै वाळ्म्–उसके घर में रहनेवाली; तारम् कॉण्टार्–उसकी पत्नी को हर लानेवाले; ऍन्ऱु इवर् तम्मै–ऐसे इन लोगों को; तरुमम् तान्–धर्मदेवता स्वयं; ईरुम्–काट कर मार देता है; कण्टकर् उय्न्तार्–पापी बचे; ऍवर्–कौन; कण्टाय्–देखा। ७३४

प्रभु ! तुम सोचो। पराया जल हरनेवाला, राज्य छीननेवाला, अक्रम कर उगाहनेवाला, परदारा ग्रसनेवाला —इनको धर्मदेवता स्वयं आकर मिटा देगा। पापी कौन नाश से बचा है अब तक, सोचो। ७३४

अन्दर मुऱ्ऱा नहलिहै पॉऱ्पा लऴिवुऱ्ऱान्
इन्दिर नॊप्पा रॅत्तनै योर्दा मियलऱ्ऱार्
शॅन्दिरु वॊप्पा रॅत्तनै योर्निन् ऱिरुवुण्बार्
मन्दिर मऱ्ऱा रुऱ्ऱु दुरैत्ताय् मदियऱ्ऱाय् 735

अन्तरम् उऱ्ऱान्—सुरलोकाधिपति; अकलिकै पॉऱ्पाल्–अहल्या के सौंदर्य से; अऴिवु उऱ्ऱान्–बिगड़ा; इन्तिरन् ऑप्पार्–इन्द्र-सम; ऍत्तनैयोर् ताम्–कितनों ही ने; इयल् अऱ्ऱार्–गौरव खोया; चॅम् तिरु ऑप्पार्–सुन्दर लक्ष्मी-सम स्त्रियाँ; ऍत्तनैयोर्–कितनी ही; निन् तिरु उण्पार्–तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं; मन्तिरम् अऱ्ऱार्–विचार-शक्ति से हीन लोगों की; उऱ्ऱतु–(सी) बात; उरैत्ताय्–कहते हो; मति अऱ्ऱाय्–बुद्धिहीन हो। ७३५

सुरलोकाधिपति इन्द्र अहल्या के सौन्दर्य से (आकृष्ट होकर) संकट में पड़ा। इन्द्र के समान कितने ही लोग अपना गौरव खो चुके हैं ! (तुम्हारे पास स्त्रियों की कमी है क्या ?) लक्ष्मी-सम कितनी ही सुन्दरियाँ तुम्हारे पास रहकर तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं ! फिर विवेक-हीन मनुष्य की अच्छी मन्त्रणा जिसे मिली नहीं हो उसकी बात कहते हो ! साफ़ है कि तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है। ७३५

शॆय्दा येतुन् दीविनै योडुम् वऴियल्ला
दॆय्दा दॆय्दा दॆय्दि ऩिराम नुलहीन्ऱान्

वैंदा लन्न वाळिहळ् कॊण्डुन् वळियॊडुम्
कॊय्दा नन्ऱे कॊऱ्ऱ मुडित्तुन् कुळुवॆल्लाम् 736

चॆय्ताय् एतुम्–यह करोगे तो भी; तीविनै ओटुम्–पाप के साथ; पळि अल्लातु–अपयश से हीन; ऎय्तातु–जो है, वह मिले बिना; ऎय्तातु–नहीं रहेगा; ऎय्तिन्–(तुम्हारा संकल्प) पूरा होगा तो भी; उलकु ईन्ऱान् इरामन्–लोक-जनक श्रीराम ने; वैताल् अन्न–(मुनि-) शापों के समान; वाळिकळ् कॊण्टु–शरों से; उन् वळि ओटुम्–तुम्हारी संतति के साथ; कॊऱ्ऱम् मुटित्तु–शक्ति मिटाकर; उन् कुळु ऎल्लाम्–तुम्हारा दल और वल; कॊय्तान् अन्ऱे–मिटा दिया न, समझो। ७३६

अगर तुम यह काम करोगे तो यह निश्चित है कि पाप और अपयश के सिवा कुछ नहीं मिलेगा; नहीं ही मिलेगा। तुम्हारा मनोरथ पूरा हो गया तो भी यह निश्चय समझ लो कि लोकपिता श्रीराम ने अपने मुनि-शाप-सम अमोघ वाणों से तुम्हारी संतति के साथ तुम्हारा सारा दल-वल मिटा दिया! । ७३६

ऎन्ऱा नॆन्नॆ यॆण्णलै योनी करनॆन्वान्
निन्ऱा नैक्कु मेलुळ नॆन्नु निलैयम्मा
तन्ऱा नैत्तन् ऱेरॊडु माळत् तनुवॊन्ऱाल्
कॊन्ऱान् मुऱ्ऱुङ् गॊल्ल मनत्तिङ् कुऱिहॊण्डान् 737

करन् ऎन्पान्–खर जो था; निन् तानैक्कुम् मेल्–तुम्हारी सेवा का नायक; ऎन्नुम् निलै उळन्–उस पद में रहा न; तन् तानै–अपनी सेना; तन् तेर् ओटुम्–अपने रथ के साथ; माळ–मर मिटे, ऐसा; तनु ऒन्ऱाल्–एक ही धनु से; कॊन्ऱान्–श्रीराम ने मारा; मुऱ्ऱुम्–सारा वंश; कॊल्ल–मिटाने का; मनत्तिल् कुऱि कॊण्टान्–मन में संकल्प रखता है; ऎन्नॆ–क्या ही आश्चर्य है; ऎन् तान् नी ऎण्णलैयो–क्यों ही तुमने यह बात नहीं सोची; अम्मा–री माँ। ७३७

खर क्या मामूली राक्षस था? वह तुम्हारी सेना में नायक का पद वहन करता था। श्रीराम ने एक ही धनु की सहायता से उसका उसकी सेना और रथ सहित काम तमाम किया। और उसका यही संकल्प है कि राक्षसकुल को ही मिटा दूँ। यह क्या आश्चर्य है! तुमने यह सब क्यों नहीं सोचा? माँ! कैसी वुद्धिहीनता है! । ७३७

वॆय्यॊर् यारे वीर विरादन् ऱुणैवॆय्यॊर्
ऐयो पोना नम्बॊडु मुम्बरक् कवनॆन्ऱाल्
उय्वार् यारे नम्मि लॆनक्कॊण् डुणर्दोरुम्
नैया निन्ऱे नीयि दुरैत्तु नलिवायो 738

वॆय्यॊर्–कठोर वीरों में; वीर विरातन् तुणै–वीर विराध जितना; वॆय्यॊर् यारे–भयंकर कौन है; अवन्–वह भी; ऐयो–हाय; अम्पॊटुम्–राम के वाण के साथ; उम्पर्क्कु पोनान्–आकाश को चला गया; ऎन्ऱाल्–तो; नम्मिल् उय्वार्

यारे–हममें बचेगा कौन; ऎन्न कॊण्टु–यह सोचकर; उणर् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों विचार करता हूँ, त्यों-त्यों; नैया निन्ऱेन्–विगलित होता हूँ; नी इतु उरैत्तु–तुम यह कहके; नलिवायो–और भी सताते हो क्या। ७३८

बड़े भयंकर और क्रूर वीरों में वीर विराध के समान अति बलिष्ठ वीर कौन होगा ? हाय ! वह विराध भी श्रीराम के एक ही शर से, उस शर के साथ ही स्वर्ग पहुँच गया न ! तो हममें कौन ठहर सकता है ? यही सोच-सोचकर मैं व्यग्र हो रहा हूँ। शिथिल हो रहा हूँ। तुम यह बात कहकर और भी निर्बल कर रहे हो मुझे। ७३८

माण्डार् माण्डार् नीयिन्ऩि माळ्वार् तॊऴिल्शॆय्य
वेण्डा वेण्डा शॆय्दिडि नुय्वान् विदियुण्डो
आण्डा राण्डा रॆत्तनै यॆन्गे नऱनाळार्
ईण्डा रीण्डार् निन्ऱव रॆल्ला मिलरन्ऱो 739

माण्टार् माण्टार्–जो मरे, वे मर गये; नी इऩ्ऩि–तुम अब भी; माळ्वार् तॊऴिल्–मरणासक्त का काम; चॆय्य वेण्टा वेण्टा–मत करो, मत करो; चॆय्तिटिन्–करोगे तो; उय्वान् विति–बचने का रास्ता; उण्टो–है क्या; आण्टार् आण्टार्–शासक (के बाद) शासक; ऎत्तनै–कितने (मरे); ऎन्केन्–कहूँ; अऱन् आळार्–धर्म का जिन्होंने पालन नहीं किया; ईण्टार् ईण्टार्–चिरकाल नहीं रहेंगे, नहीं रहेंगे; निन्ऱवर् ऎल्लाम्–जो रहे वे भी; इलर् अन्ऱो–अब नहीं रहे न। ७३९

जो चल बसे वे तो चले गये। तुम यह काम करके मरण का वरण मत करो। करोगे तो जीवित बचने का कोई मार्ग नहीं होगा। राजा के बाद राजा, कितने ही राजा मरे हैं, उनकी संख्या क्या कहूँ ? जो धर्म का पालन नहीं करते वे बहुत काल नहीं जीते, नहीं जीते। जो रहे वे सारे यम के मेहमान हो गये। अब नहीं रहे न ? । ७३९

ऎम्बिक् कुम्मॆ नन्नै तनक्कु मिऱुतिक्कोर्
अम्बुय्क् कुम्बोर् विल्लि तनक्कु मयनिऱ्कुम्
तम्बिक् कुम्मॆन् नाणमै तविर्न्दे तळर्वुऱ्ऱेन्
कम्बिक् कुम्मॆन् नॆञ्जव नॆन्ऱे कवल्हिन्ऱेन् 740

ऎम्पिक्कुम्–मेरे कनिष्ठ को; ऎन् अन्नै तनक्कुम्–मेरी माता को; इऱुतिक्कु–अन्त करने के लिए; ओर् अम्पु उय्क्कुन्–जिसने एक बाण चलाया; पोर् विल्लि तनक्कुम्–उस युद्धकुशल धनुर्धर श्रीराम; अयल् निऱ्कुम्–और उसका पार्षद; तम्पिक्कुम्–कनिष्ठ भ्राता के सामने; ऎन् आण्मै तविर्न्ते–अपना पौरुष हारकर; तळर्वु उऱ्ऱेन्–शिथिल हो गया; ऎन् नॆञ्चु–मेरा मन; कम्पिक्कुम्–काँपता है; अवन् ऎन्ऱे–वही राम (तुम्हारा शत्रु हो गया, यह समझकर); कवल्किन्ऱेन्–व्याकुल हूँ। ७४०

श्रीराम बड़ा ही युद्धनिपुण धनुर्धर है। उसने मेरे छोटे भाई और

माता (ताड़का) को मौत के घाट उतारने के लिए एक-एक ही वाण चलाया था। ऐसे उसके और उसके पार्षद लक्ष्मण के सामने अपना वल हारकर मैं निर्वल हुआ। अव भी उनकी वात सोचता हूँ तो मेरा मन कम्पित हो जाता है। अव मेरी चिन्ता यही है कि वही तुम्हारा शत्रु वन गया है! ।७४०

निऩ्ऱुम् जॅऩ्ऱुम् वाळ्वन यावु निलैयावाल्
पॊऩ्ऱु मॆऩ्ऩु मॆय्म्मै युणर्न्दोय् पुलैयाडऱ्
कॊऩ्ऱु मुऩ्ऩा यॆऩ्ऩुरै कॊळ्ळा युयर्शॆल्वत्
तॆऩ्ऱु मॆऩ्ऱु वैहुदि यैया विऩ्ऱियॆऩ्ऱाऩ् 741

ऐया—तात; निऩ्ऱुम् चॆऩ्ऱुम्–अचल और चल; वाळ्वत यावुम्—जीव सभी; निलैया–मर्त्य हैं; पॊऩ्ऱुम्–मर जायेंगे; ॲऩ्ऩुम् मॆय्म्मै–यह सत्य; उणर्न्तोय्–जानते हो; पुलै आटऱ्कु–यह नीच काम करना; ऒऩ्ऱुम् उऩ्ऩाय्—कुछ मत सोचो; ॲऩ् उरै कॊळ्ळाय्–मेरा वचन मानो; इति–आगे भी; उयर् चॆल्वत्तु–ऊँचे वैभव के साथ; ॲऩ्ऱुम् वैकुति–सदा रहो; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा (मारीच ने)। ७४१

हे तात! इस संसार में चल या अचल कोई भी जीव या जन्तु स्थायी रूप से रहनेवाला नहीं है। यह तथ्य तुम जानते ही हो। ऐसे तुम यह पाप का खेल क्यो करना चाहते हो? किञ्चित भी यह वात मत सोचो। मेरी वात मान लो। अपार वैभवयुक्त पद में हो आगे भी सदा उसी में रहो। मारीच ने ये सारी बातें कही।७४१

कङ्गैशडै वैत्तव ऩोडुङ्गयिलै वॆऱ्पोर्
अङ्गैयि नॆडुत्तवॆऩ दाडॆऴिऩ् मणित्तोळ्
इङ्गोर्मनि दऱ्कॆळिय वॆऩ्ऱऩै यॆऩत्तऩ्
वॆङ्गणॆरि यप्पुरुव मीदुऱ विडैत्ताऩ् 742

कङ्कै चटै वैत्तवऩ् ओटुम्—जटा में गंगाधारक के साथ; कयिलै वॆऱ्पु–उनके कैलासपर्वत को; ओर् अम् कैयिल्–एक हथेली पर; ॲटुत्त–जिन्होंने उठाया; ॲऩतु–मेरे; आटु–युद्धोत्साही; ॲऴिल् मणि तोळ्–सुन्दर श्रेष्ठ भुजाएँ; इङ्कु ओर् मतितऩुक्कु–यहाँ एक मनुष्य के लिए; ॲळिय ॲऩ्ऱऩै–सुगम हैं, कहा; ॲऩ–कहकर; वॆम् कण् ॲरिय–भयंकर आँखो से आग निकालते हुए; पुरुवम् मीतु उऱ–भौंहों को ऊपर उठाते हुए; विटैत्ताऩ्–डाँट बतायी। ७४२

रावण को ये बातें कैसे पसन्द आती? उसने डाँट वतायी। अपनी जटा में गंगाधारक शिवजी के कैलास को उनके साथ मैंने अपनी हथेली में उठाया था। तुम कहते हो ऐसी मेरी प्रवल, सुन्दर और युद्धोत्साही भुजाएँ इस अल्प मनुष्य के सामने तुच्छ है! यह कहते वक्त उसकी आँखों से अंगार छूटे और भौंहें तनकर भाल पर चढ़ गयीं।७४२

निहळ्न्ददै निनैक्किलैयॆन् नॆञ्जिनिलै यञ्जा
दिहळ्न्दनै यॆनक्किळैय नङ्गैमुह मॆङ्गुम्
अहळ्न्दवरै यॊप्पुऱ वमैत्तवरै यैया
पुहळ्न्दनै तनिप्पिळै पॊरुत्तनॆनॆ दॆन्ऱान् 743

ऐया–प्रभु; निकळ्न्ततै–जो घटा; निनैक्किलै–वह नहीं सोचते; अञ्चातु–विना डर के; ऍन् नॆञ्चिन् निलै–मेरे हृदय की स्थिति की; इकळ्न्ततै–निन्दा की; ऍनक्कु इळैय नङ्कै–मेरी छोटी बहिन के; मुकम् ऍङ्कुम्–मुख-भर में; अकळ्न्त वरै–खुदे हुए पर्वत के; ऒप्पु उऱ–समान हो, ऐसा; अमैत्तवरै–जिन्होंने बनाया, उनको; पुकळ्न्ततै–प्रशंसा की; इतु तनि पिळै–यह बहुत बड़ा अपराध है; पॊरुत्तनॆन्–क्षमा की मैंने; ऍन्ऱान्–कहा। ७४३

हे तात ! तुमने जो हुआ उसका विचार नहीं किया। विना भय के मेरी चित्त-स्थिति को हेय बताया। मेरी छोटी बहिन का चेहरा खुदे हुए गढ़े-सहित पर्वत के समान हो गया। वैसा जिसने बनाया उस मनुष्य की मुझसे प्रशंसा करते हो। यह बड़ा भारी अतुलनीय अपराध है। तो भी तुम्हें क्षमा करता हूँ। ७४३

तन्नैमुनि वुऱ्ऱदऱु कट्टहवि लोनैप्
पिन्नैमुनि वुऱ्ऱिडुमॆ नत्तविर्दल् पेणान्
उन्नैमुनि वुऱ्ऱुनुगु लत्तैमुनि वुऱ्ऱाय्
ऍन्नैमुनि वुऱ्ऱिलैयि दॆन्नॆन विशैत्तान् 744

तन्नै मुनिवु उऱ्ऱ–अपने पर कोप करनेवाले; तऱुकण्–निडर; तकवु इलोनै–अयोग्य को; पिन्नै मुनिवु उऱ्ऱिटुम्–फिर भी कोप करेगा; ऍन्न–यह सोचकर; तविर्तल् पेणान्–छोड़ना न चाहते हुए; ऍन्नै मुनिवु उऱ्ऱिलै–मुझ पर गुस्सा नहीं किया पर; उन्नै मुनिवु उऱ्ऱु–अपने से ही आक्रोश करते; उन् कुलत्तै मुनिवुऱ्ऱाय्–अपने वंश पर क्रोध करते हो; इतु ऍन् ऍन–यह क्या है; इचैत्तान्–कहा। ७४४

मारीच ने सोचा। रावण मुझ पर क्रोध करता है। वह निडर अयोग्य राक्षस और भी गुस्सा करेगा। तो भी भय के कारण उसने उपदेश देने से विरत होना नहीं चाहा। उसने कहा कि रावण ! अब तुम मुझ पर क्रोध जो करते हो उसका अर्थ है तुम अपने पर गुस्सा करते हो और अपने कुल पर गुस्सा करते हो ! यह कार्य तुम क्यों करते हो भाई ! । ७४४

ऍडुत्तमलै येनिनैयि नीशनिहल् विल्ला
वडित्तमलै नोयिदुव लित्तियॆन वारिप्
पिडित्तमलै नाणिडैप् पिणित्तीरुवन् मेनाळ्
ऒडित्तमलै यण्डमुह डुऱ्ऱमलै यन्ऱो 745

ॲट्टुत्त मलैये–तुमने पर्वत उठाया, उसी पर्वत को; निनैयिन्–याद करते रहो तो; इतु ईचन् इकल् विल्लाय्–यह ईश्वर के युद्ध के लिए धनु; वटित्त मलै–बनाया गया पर्वत है; नी इतु वलित्ति–तुम इसे झुकाओ; ॲन्न–कहने पर; मेल् नाळ्–पहले; ऒरुवन्–एक मानव से; वारि–उठाकर; पिटित्त मलै–हाथ में जो पकड़ा गया वह पर्वत; नाण् इटै पिणित्तु–प्रत्यंचा से बद्ध खींचने के मध्य; ऒटित्त मलै–तोड़ा गया पर्वत; अण्टम् मुकटु उऱ्ऱ–आकाश की चोटी तक गया; मलै अन्ऱो–मेरुपर्वत नहीं है क्या। ७४५

तुमने जो उठाया उसी कैलासपर्वत की याद में भूले हुए हो। ईश्वर शिव ने मेरुपर्वत का ही धनु बनाया था। उसको झुकाने की आज्ञा दी विश्वामित्र ने। तो राम ने उस पर्वत को प्रत्यंचा चढ़ाकर झुकाते वक्त तोड़ दिया था। वह पर्वत कौन सा था। जानते हो! (तुमने तो हिमालय के एक छोटे से शिखर को उठाया था!) राम ने जो उठाकर तोड़ा वह आकाश-स्पर्शी और श्रेष्ठ पर्वत था!। ७४५

यादुमऱि यायुरैहॊ ळायिहलि रामन्, कोदैवुत्तै यामुनुयिर् कॊळ्ळैवडु मन्ऱे
पेदैमदि यालिदुवोर् पॆण्णुरुव मॆन्ऱाय्, शोदैयुरु वोनिरुदर् तीविनैय दन्ऱो 746

यातुम् अऱियाय्–कुछ नहीं जानते; उरै कॊळाय्–उपदेश ग्रहण न करोगे; इकल् इरामन्–युद्धसमर्थ श्रीराम; कोतै पुत्तैयामुन्–युद्ध के लिए हाथ में दस्ताना पहनने के पूर्व ही; उयिर् कॊळ्ळै पटुम् अन्ऱे–हमारे प्राण छूट जायेंगे न; पेतै मतियाल्–जड़ मति के कारण; इतु ऒरु पॆण् उरुवम् ॲन्ऱाय्–यह स्त्री-रूप है, कहा; अतु चीतै उरुवो–वह सीता का रूप है क्या; निरुतर् ती वितैयतु–राक्षसों के पाप का रूप है; अन्ऱो–न। ७४६

तुम न खुद कुछ जानते हो, न मेरा उपदेश मानते हो! यह जान लो कि श्रीराम के, जो युद्ध-प्रवीण है, हस्तत्राण (या माला) पहनने के पूर्व ही हमारे प्राण हर लिये जायँगे। तुम अपनी मन्दमति के कारण उसको स्त्री का रूप मानते हो! वह क्या सीता का रूप है? नही हमारे पापों का मूर्त-रूप है। ७४६

उऱ्ऱुबिळै यायुऱवि नोडुमॆन वुन्ना, नॆञ्जुबऱै पोदुमदु नीनिनैय हिल्लाय्
अञ्जुमॆन्न दारुयि रऱिन्दरुहु निन्ऱार्, नञ्जुनुहर् वारैयिदु नन्ऱॆनलु नन्ऱे 747

उऱवितोटम् उऱ्ऱु–परिवारों, बन्धु-बान्धवों के साथ बचकर; पिळैयाय्–जीवित नहीं रहोगे; ॲन–यह; उन्ना–सोचकर; नॆञ्चु पऱै पोतुम्–मेरा मन ढोल की खाल के समान थर्राता है; नी अतु निनैय किल्लाय्–तुम वह सोच नहीं पाते; ॲन्नतु आर् उयिर्–मेरे बहुमूल्य प्राण; अञ्चुम्–डरते हैं; नञ्चु नुकर्वारै–विष-खादक को; अऱिन्तु–(विष खाता) जानकर; अरुकु निन्ऱार्–पार्श्व में स्थित लोगों का; इतु नन्ऱु–यह (तुम्हारा विष खाना) अच्छा है; ॲन्ऱलुम्–कहना भी; नन्ऱे–अधिक अच्छा होगा। ७४७

जब मैं विचार करता हूँ कि तुम अपने परिवारों और बन्धुजनों के

साथ नष्ट हो जाओगे और नहीं बचोगे तो मेरा चित्त थर-थर काँपता है; जैसे पिटा ढोल। तुम वह सोचने में असमर्थ हो। मेरे प्यारे प्राण भी काँपते हैं। तुमको प्रोत्साहन दूँ तो उस काम से विषखादक को पास रहने वालों के, 'यह बड़ा अच्छा है' कहकर प्रोत्साहित करना भी अधिक भला होगा। ७४७

ईशन्मुद लाहविरै योरुलहु मऱ्ऱैत्
तेशमुदल् मुऱ्ऱुमो रिमैप्पिनुयिर् तिन्नक्
कोशिह नळित्तहड वुट्पडै कौदिप्पो
डाशिल कणिप्पिल विरामन्नरु णिऱ्प 748

ईचन् मुतलाक–ईशानदेव आदि; इऱैयोर् उलकुम्–देवों के लोकों को; मऱ्ऱै–और अन्य; तेचम् मुतल्–देश आदि; मुऱ्ऱुम्–सारा; ओर् इमैप्पिल्–एक बार पलक मारती देर में; उयिर् तिन्न–प्राण खाने (मिटाने) के लिए; कोचिकन् अळित्त कटवुळ् पटै–कौशिक से दत्त दिव्य अस्त्र; आचु इल–त्रुटिहीन; कणिप्पु इल–गणनाहीन; कौतिप्पोटु–उग्रता के साथ; इरामन् अरुळ्–श्रीराम की सेवा में; निऱ्प–खड़े हैं। ७४८

श्रीराम के पास कौशिक-दत्त अमोघ, त्रुटिहीन और अगणित अस्त्र हैं, जो ईशान के लोक से लेकर सारे देवताओं के लोक और अन्य लोकों को पल भर में समाप्त कर दे सकते हैं। वे श्रीराम की सेवा में उसकी आज्ञा के मुहताज खड़े हैं। ७४८

आयिरम डऱ्कैयुडै यानैमळु वाळाल्
एयॅनुमु रैक्कुळयिर् शॅऱ्ऱवॅदि रिल्लोन्
मेयतिऱन् मुऱ्ऱुम्वरि वॅञ्जिलैयि नोडुम्
तायवन्व लित्तहैमै यामुरुत हैत्तो 749

आयिरम्–सहस्र; अटल् कै–बलिष्ठ हाथों से; उटैयानै–युक्त कार्तवीर्य को; मळु वाळाल्–परशु के अस्त्र से; एय् ॲनुम् उरैक्कुळ्–'रे' के उच्चारण करते समय के अन्दर; उयिर् चॅऱ्ऱ–जिसने प्राणहीन कर दिया; ॲतिर् इल्लोन्–उस अप्रतिद्वन्द्वी परशुराम का; मेय–प्राप्त; तिऱल् मुऱ्ऱुम्–सारा बल; वरि वॅम् चिलैयिन् ओटुम्–बन्धनयुक्त धनुष के साथ; तायवन्–परास्त जो किया उसका; वलि तकैमै–बल-पराक्रम; याम् उरु तकैत्तु ओ–हमारे कहने योग्य होगा क्या। ७४९

राम ने परशुराम के सारे बल को, उसके धनुष के साथ परास्त किया था। वह परशुराम क्या मामूली मनुष्य थे। सहस्र महाबली हस्तों से युक्त कार्तवीर्य को परशुराम ने 'रे' शब्द के उच्चारण समय के अन्दर अपने परशु के प्रहार से समाप्त किया था। ऐसे श्रीराम के बल का अनुमान या कथन हम करने योग्य है क्या ? । ७४९

वेदनैशॆय् कामविड मेविडमॆ लिन्दाय्
तीदुरैशॆय् दायिनैय शॆय्हैशिदै वन्ऱो
मातुलनु मायमरविन् मुन्दैयुऱ वन्दैन्
ईदुरैशॆय् देत्तिदनै यॆन्दैतविर् हॆन्ऱान् 750

वेतनै चॆय्–पीड़क; काम विटन् मेविट–काम रूपी विष चढ़ा और; मॆलिन्ताय्–क्षीण हो गये हो; तीतु उरै चॆय्ताय्–अनर्थ की बात करते हो; इत्तैय चॆय्कै–तुम्हारा यह काम; चितैवु अन्ऱो–नाश का है न; मातुलनुम् आय्–मामा बना हूँ और; उऱ मुन्तै वन्तेन्–बहुत पूर्व ही पैदा हुआ हूँ; ईतु उरै चॆय्तेन्–यह हितोपदेश किया; ऍन्तै–मेरे तात; इतत्तै–(सीतापहरण का) यह (विचार); तविर्क–छोड़ दो; ऍन्ऱान्–कहा। ७५०

वेदनादायी काम-विष तुम पर चढ़ा है। इसलिए तुम तन से और (बुद्धि में भी) क्षीण हो गये हो। इसलिए अनुचित बातें कह रहे हो। सीतापहरण का काम हमारे नाश का काम नहीं हो जायगा? मैं तुम्हारा मातुल हूँ; बहुत पहले पैदा हुआ, अतः तुमसे बड़ा हूँ। यह जो कहा, वह तुम्हारे हित का ही वचन है। मेरे तात! इस बुरे विचार को त्याग दो। मारीच ने उसे समझाया। ७५०

ऍन्नवुरै यित्तनैयु मॆत्तनैयु मॆण्णिच्
चॊन्नवनै येशिन्न नरक्करपदि चॊन्नान्
अन्नैयुयिर् शॆऱ्ऱवनै यञ्जियुऱै हिन्ऱाय्
उन्नैयॊरु वऱ्कॊरुव नॆन्नुणर्है नन्ऱो 751

ऍन्न–(मारीच के ऐसा) कहने पर; उरै इत्तनैयुम्–सभी उपदेशों पर; ऍत्तनैयुम् ऍण्णि–सभी तरह से विचार करके; चॊन्नवनै–वक्ता की; एचिनन्–निन्दा की; अन्नै उयिर् चॆऱ्ऱवनै–माता के प्राणघातक से; अञ्चि उऱैकिन्ऱाय्–डरकर (छिपे) रहते हो; उन्नै–तुमको; ऒरुवऱ्कु ऒरुवन् ऍन्नु–वीर के मुकाबले में वीर; उणर्कै–समझना; नन्ऱो–ठीक होगा क्या; अरक्कर् पति–राक्षसपति ने; चॊन्नान्–कहा। ७५१

मारीच ने जो बातें कहीं, उन पर रावण ने खूब और सब तरह से विचार किया। पर उसे उनमें कोई सार नहीं लगा और क्रोध ही आया। राक्षसपति ने उपदेशक की निन्दा की। कहा— तुम डरपोक हो! माता के मारक से डरकर तपस्या का बहाना करते हुए यहाँ छिपे रहते हो! तुम्हें वीर के समान वीर कहना मान्य कैसे हो सकता है?। ७५१

तिक्कय मॊऴिप्पनिलै तेवर्हॆड वानम्
पुक्कव रिरुक्कैबुहै वित्तुलहम् यावुम्
शक्कर नडत्तुमॆनै योतयर दन्ऱन्
मक्कणलि हिऱ्परिदु नन्ऱुमदि यन्ऱो 752

तिक्कयम् ऑळिप्प–दिग्गजों को छिपने को विवश करते हुए; तेवर् निलै कॅट–देवों को अस्त-व्यस्त करते हुए; वानम् पुक्कु–देवलोक में जाकर; अवर् इरुक्कै पुकैवित्तु–उनके स्थान को जलाकर धुएँ से भरकर; उलकम् यावुम्–सारे लोकों पर; चक्करम् नटत्तुम्–आज्ञाचक चलानेवाले; ॲनैयो–मुझे क्या; तयरतन् तन् मक्कळ्–दशरथ के छोटे; नलिकिऱ्पर्–कष्ट देंगे; इतु नन्ऱु मति अन्ऱो–यह बड़ी अच्छी समझ है न। ७५२

मुझे दशरथ के छोटे कष्ट देंगे ? मुझे, जिसने दिग्गजों को भयभीत करके छिपने को विवश किया; जिसने स्वर्गलोक में घुसकर देवों को अस्त-व्यस्त कर उनके लोक में आग और धुआँ फैला दिया और जो सारे लोकों पर आज्ञाचक्र चला रहा हूँ, ऐसे मुझे वे त्रास देंगे ? यह तुम्हारी सूझ भी बड़ी भली रही न ! । ७५२

मूवुलहि नुक्कुमीरु नायह मुडित्तेन्
मेवलर् किडैक्किनिदन् मेलिनिय दुण्डो
एवल्शॅय हिऱ्ऱियॅन दाणैवऴि यॅण्णिक्
कावल्शॅ यमैच्चर्कड नीकडव दन्ऱे 753

मू उलकिन्नुक्कुम्–तीनों लोकों का; ओरु नायकम् मुटित्तेन्–निर्द्वन्द्व नायकत्व अपनाया; मेवलर् किटैक्किन्–ऐसे शत्रु मिलेंगे तो; इतन् मेल् इनियतु–इससे बढ़कर सुखद; उण्टो–कोई दूसरा है क्या; कावल् चॅय्–राज्यरक्षणकारी; अमैच्चर् कटन्–अमात्यों का कर्तव्य; नी कटवतु अन्ऱे–तुम उल्लंघन नहीं कर सकते; ॲन्तु आणै वऴि–मेरी आज्ञा के अनुसार; ॲण्णि–सोचकर; एवल् चॅय्किऱ्ऱि–सेवा करो। ७५३

मैंने तीन लोकों का निर्द्वन्द्व आधिपत्य कर लिया। ऐसे मेरे शत्रु हो जायँ तो उससे बढ़कर सुखदायी बात क्या हो सकती है ? राज्यरक्षणरत अमात्यों का कर्तव्य राजा का अभिप्राय जानकर तदनुकूल कार्य करना है। तुम्हारा काम उसका अतिक्रमण करना नहीं है। मेरी आज्ञा सुनो, उसी के अनुकूल सोचकर सेवा करो। ७५३

मऱुत्तनै यॅन्पपॅऱिनु निन्नैवडि वाळाल्
ऑऱुत्तुमन मुऱ्ऱु मुडिप्पॅन्ऱॊऴि हिलेन्
वॅऱुत्तन किळत्तलुऱ मित्तॊऴिलै विट्टॅन्
कुऱिप्पिन्वऴि निऱ्ऱियुयिर् कॊण्डुळलि नॅन्ऱान् 754

मऱुत्तनै ॲन्त पॅऱ्ऱिनुम्–इनकार भी करोगे तो; निन्नै–तुम्हें; वटि वाळाल्–तीक्ष्ण तलवार से; ऑऱुत्तु–मारकर; मनम् उऱ्ऱु–अपना मनमाना; मुटिप्पॅन्–कर लूँगा; ऑऴिकिल्लेन्–त्यागूँगा नहीं; उयिर् कॊण्टु उळलिन्–प्राणसहित रहना चाहो तो; वॅऱुत्तन–मेरी खीझ के; किळत्तल् उऱम्–वचन कहने का; इ तॊऴिलै विट्टु–यह काम छोड़ो; ॲन् कुऱिप्पिन् वऴि निऱ्ऱि–मेरी राय का मार्ग चलो; ॲन्ऱान्–कहा। ७५४

तुम इनकार भी करोगे तो क्या होगा ? मैं अपनी तीक्ष्ण तलवार से तुम्हारा काम तमाम कर दूँगा और अपना मनमाना कर लूँगा। यह कार्य विना किये नहीं छोड़ूँगा। इसलिए तुम जीवित फिरना चाहो तो मुझे खिझानेवाले उपदेश देना छोड़ो और मेरी इच्छा के अनुकूल सेवा करो। रावण ने निश्चित रूप से कह दिया। ७५४

अरक्कनः(ह्) दुरैत्तलोडु मऱ्ऱिनुदन नडङ्गु नॆञ्जन्
तरुक्किनर् कॆडुव रॆन्ऱ रुत्तुव निलैयिऱ् ऱन्ऱो
शॆरुक्किनिऱ् ऱीरु मॆन्बार् तम्मिलार् शॆरुक्क रॆन्ना
उरुक्किय शॆम्बॊ नुऱ्ऱ नीर्मैया नुरैक्क लुऱ्ऱान् 755

अरक्कन्–राक्षस के; अ.'.तु उरैत्तल् ओटुम्–वह वात कहने पर; अऱिनुतनन्–(रावण का मन) जाना; अटङ्कु नॆञ्चन्–संयत-मन होकर; तरुक्किनर् कॆटुवर्–घमण्डी नष्ट होंगे; ऎन्ऱल्–यह कथन; तत्तुव निलैयिऱ्ऱु अन्ऱो–सत्य बनता है न; चॆरुक्कितिल्–गर्व से; तीरुम् ऎन्पार् तम्मिन्–नाश को प्राप्त होंगे, ऐसा जिन्होंने निश्चय किया है उनसे बढ़कर; चॆरुक्कर्–गर्वीले शत्रु; आर्–कौन है; ऎन्ना–सोचकर; उरुक्किय चॆम्पॊन्–पिघले हुए स्वर्ण; उऱ्ऱ नीर्मैयान्–की स्थिति में जो रहा, वह; उरैक्कल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। ७५५

जब राक्षसराज रावण ने यह कहा तो मारीच ने रावण का स्वभाव सोचा और उसका निश्चय जान लिया। इसलिए उसने अपने मन को संयत कर लिया। सोचा— अभिमानी लोग अवश्य नष्ट होंगे। यह कथन सत्य बन गया है ! जो गर्व के कारण अपने को नष्ट कर लेने में तुले हैं, उनका उनसे बढ़कर कोई शत्रु नहीं होता। वह स्वयं अपना नाश कर लेगा। मारीच अब पिघला-स्वर्ण-समान स्वच्छमन हो गया था। वह यों बोला। ७५५

उन्वयि नुऱुदि नोक्कि युण्मैयि नुणरत्तु तेन्मऱ्
ऱॆन्वयि निऱुदि नोक्कि यच्चत्ता लिशैत्ते नल्लेन्
नन्मैयुन् दीमै यन्ऱे नाशम्वन् दुऱ्ऱ नाळिल्
पुन्मैयि निन्ऱ नीराय् शॆय्वदु पुहऱि यॆन्ऱान् 756

उन् वयिन् उऱुति नोक्कि–तुम्हारा हित सोचकर; उण्मैयिन् उणर्त्तितेन्–सच्चे दिल से समझाया; मऱ्ऱु–अलावा; ऎन् वयिन् इऱुति–मेरा अन्त; नोक्कि–समझकर; अच्चत्ताल्–डर से; इचैत्तेन् अल्लेन्–कहा नहीं; नाचम् वन्तु उऱ्ऱ नाळिल्–जब नाश आता है; नन्मैयुम् तीमै अन्ऱे–भला भी बुरा हो जाता है न; पुन्मैयिन् निन्ऱ नीराय्–नीचकर्मतत्पर रावण; चॆय्वतु पुकल्ति–मेरा कार्य कहो; ऎन्ऱान्–पूछा। ७५६

रावण ! मैंने तुमसे जो कहा वह तुम्हारे भले के लिए ही साफ़ मन के साथ कहा था। अपनी मृत्यु के डर से नहीं कहा था। जब नाश का

दिन आता है तब भला भी बुरा लगता है। हे नीचकार्यतत्पर रावण ! तुम कहो— मैं क्या करूँ ? । ७५६

अॆऩ्ऱलु मॆळ्ुन्दु पुल्लि येऱिय वॆहुळि नीङ्गिक्
कुऩ्ऱॆनक् कुविन्द तोळाय् मारवेळ् कॊदिक्कु मम्बाल्
पॊऩ्ऱलि लिराम ऩम्बाऱ् पॊऩ्ऱले पुहळ्ुण् डऩ्ऱो
तॆऩ्ऱलैप् पहैयाच् चॆय्द शीदैयैत् तरुदि यॆऩ्ऱाऩ् 757

अॆऩ्ऱलुम्–कहते ही; एऱिय वॆकुळि नीङ्कि–उठे क्रोध को दूर करके; अॆळुन्तु पुल्लि–उठकर आलिंगन करके; कुऩ्ऱु अॆऩ्ऩ कुविन्त तोळाय्–पर्वतोन्नत कन्धों वाले; मार वेळ्–मारदेव के; कॊतिक्कुम् अम्पाल्–सन्तापक अस्त्रों से; पॊऩ्ऱलिऩ्–मरने से; इरामऩ् अम्पाल्–राम-शर से; पॊऩ्ऱले–मरना; पुकळ् उण्टु अऩ्ऱो–प्रशंसा-योग्य है न; तॆऩ्ऱलै पकैयाय् चॆय्त–मलयपवन को जिसने मेरा शत्रु बना दिया; चीतैयै–उस सीता को; तरुति–लाओ; अॆऩ्ऱाऩ्–कहा। ७५७

मारीच के ऐसा कहते ही रावण का उमँगा हुआ क्रोध थम गया। उसने उठकर मारीच का आलिंगन करके कहा— हे पर्वतोन्नत भुजाओं के मारीच ! मैं सोचता हूँ कि कामदेव के संतापक शरों से मरने से राम-शर से मरना अधिक कीर्तिदायक होगा। इसलिए उस सीता को हर लाओ, जिसने मलयपवन को मेरा शत्रु वना दिया है, और उसे मेरे पास दे दो। ७५७

ाण्डव ऩ्ऩैय कूऱ वरक्करो रिरुव रोडुम्
ण्डवॆऩ् मानन् दीरत् तण्डहम् पुक्क कालैत्
ण्डिय शरङ्गळ् पायत् तुणैवर्पट् टुरुळ वञ्जि
ीण्डयाऩ् शॆऩ्ऱु शॆय्युम् विऩैयॆऩ्गोल् विळम्बु हॆऩ्ऱाऩ् 758

आण्टु–तब; अवऩ् अऩ्ऩैय कूऱ–उसके वह कहने पर; पूण्ट अॆऩ् माऩम् तीर–(पहले) प्राप्त अपना अपमान पोंछने के लिए; अरक्कर् ओर् इरुवर् ओटुम्–दो राक्षसों के साथ; तण्टकम् पुकुन्त कालै–जब दण्डक पहुँचा, तब; तूण्टिय चरङ्कळ् पाय–उससे प्रेरित वाणों के लगने पर; तुणैवर् पट्टु उरुळ–मेरे साथी आहत हो लोटे और; अञ्चि मीण्ट–डरकर लौट आया; याऩ्–मैं; चॆऩ्ऱु चॆय्युम्–जाकर करूँ ऐसा; विऩै अॆऩ् कॊल्–कार्य क्या (रखा) है; विळम्पुक–कहो; अॆऩ्ऱाऩ्–कहा। ७५८

यह सुनकर मारीच ने कहा कि पहले मैं राम से अपमानित हुआ। उस अपमान को पोंछने के हेतु मैं दो-एक राक्षसों को साथ लेकर वहाँ गया था। राम के शर के लगने से वे दोनों लुढ़क गये। भय से मैं लौट गया। ऐसे मेरे लिए अव करने को क्या काम रहेगा ? यह तो वताओ। ७५८

आयव ननैय कूऱ वरक्करहो नैय नॉय्दुन्
तायैया रुयिरुण् डानैक् कॉल्लयान् शमैन्दु निन्ऱेन्
पोयैया पुणर्प्प दॅन्नै यॅन्बदु पॉरुन्दिऱ् ऱॊन्ऱो
मायैयाल् वञ्जित् तन्ऱो वव्वुद लवळै यॅन्ऱान् 759

आयवन् अनैय कूऱ–उसके ऐसा कहने पर; अरक्कर् कोन्–राक्षसराज; ऐय–श्रेष्ठ पुरुष; नॊय्तु–हेय रीति से; उन् तायै–तुम्हारी माता के; आर् उयिर् उण्टानै–प्यारे प्राणों के घातक को; कॊल्ल–मारने के लिए; यान् चमैन्तु निन्ऱेन्–मै कृत-संकल्प हूँ; पोय् ऐया पुणर्प्पतु ऍन्नै–जाकर तात क्या करूँ; ऍन्पतु–कहना; पॊरुन्तिऱ्ऱु ऒन्ऱो–उचित है क्या; अवळै–उसको; मायैयाल् वञ्चित्तु–वंचना से धोखा देकर; वव्वुतल् अन्ऱो–हर लाना ही है न; ऍन्ऱान्–कहा। ७५९

मारीच के ऐसा कहने पर राक्षसपति रावण ने कहा कि मामा ! मैंने दृढ़ संकल्प कर रखा है कि मैं तुम्हारी माता के, हेयरीति से घातक राम को मार दूँ। तब वहाँ जाकर क्या करूँ —यह पूछना तुम्हारे लिए उचित नहीं लगता। उस सीता को वंचना से हर लाओ —यही करना उचित है न ? ७५९

पुऱत्तिनि युरैप्प दॅन्नै पुरवलन् ऱेवि तन्नैत्
तिऱत्तुळि यन्ऱि वञ्जित् तॅय्दुदल् शिऱुमैत् तामाल्
अऱत्तुळ दॊक्कु मन्ऱे यमर्त्तलै वॅन्ऱु कॊण्डुन्
मऱत्तुऱै वळर्त्ति मन्न वॅन्नमा रीशन् शॊन्नान् 760

मन्न–राजा; इनि पुऱत्तु उरैप्पतु ऍन्नै–अब और कहना क्या है; पुरवलन् तेवि तन्नै–(लोक-) रक्षक राम की देवी को; तिऱत्तु उळि अन्ऱि–अपने बल से नहीं; वञ्चित्तु ऍय्तल्–कपट से प्राप्त करना; चिऱुमैत्तु आम् आल्–नीचता का होगा, इसलिए; अऱत्तुळतु ऒक्कुम् अन्ऱे–धर्म-सम्मत नहीं होगा न; अमर् तलै वॅन्ऱु कॊण्टु–युद्ध में (राम को) जीतकर (सीता को) लेकर; उन् मऱ तुऱै–अपनी वीरता का गौरव; वळर्त्ति–बढ़ा लो; ऍन्न–ऐसा; मारीचन् चॊन्नान्–मारीच ने कहा। ७६०

मारीच को यह हेय लगा। उसने नीति बतायी। राजा ! ऐसा कहोगे तो फिर क्या कहा जाय ? राजाराम की देवी सीता को अपनी वीरता से उठा लाना छोड़कर वंचना से हर लाना चाहते हो ! यह तुम्हारे गौरव को हल्का कर देगा। इसलिए वह धर्मसम्मत नही होगा। युद्ध करो, राम को हराओ, सीता को लाओ। अपनी वीरता को बढ़ाओ। ७६०

आनव नुरैक्क नक्क वरक्करहो नवरै वॅल्लत्
तानैदान् वेण्डु मॊन्ऱ् ऱडक्कवा डक्क दन्ऱो
एनैय रिऱक्किऱ् ऱानुन् दमियळा यिऱक्कु मन्ऱे
मानव ळाद लाले मायैयिन् वलित्तु मॅन्ऱान् 761

आतवन्–ऐसे उसके; उरैक्क–कहने पर; नक्क–हँसते हुए; अरक्कर् कोन्–राक्षसाधिपति; अवरै वॅल्ल–उसको हराने के लिए; तानै तान् वेण्टुमो–सेना भी चाहिए क्या; ऍन् तट कै वाळ्–मेरे विशाल हाथ का (चन्द्रहास) खड्ग; तक्कतु अन्ड्रो–योग्य नहीं है क्या; मातवळ्–वह मनुष्य स्त्री; एतैयर् इरक्किन्–(उन दोनों) दूसरों के मरने पर; तानुम् तमियळाय्–स्वयं अकेली बनकर; इरक्कुम् अन्ड्रे–प्राण त्याग देगी न; आतलाले–उसी कारण; मायैयिन् वलित्तुम् ऍन्ड्रान्–माया से ले आयेंगे; ऍन्ड्रान्–कहा। ७६१

अपने रास्ते पर आये मारीच का कथन सुनकर राक्षसपति रावण उसकी नासमझी पर हँसते हुए बोला। राम और लक्ष्मण को हराने के लिए सेना की भी आवश्यकता पड़ेगी क्या? मेरे विशाल हाथ में जो चन्द्रहास, तलवार है वह पर्याप्त नहीं होगी क्या? पर तुमने यह नहीं सोचा। वे दोनों मर जायँगे तो वह मानवी स्त्री अपने को अकेला समझ कर प्राण त्याग देगी न? इसी हेतु कहता हूँ कि उसे माया से हर लायँगे। ७६१

तेवियैत् तीण्डा मुन्न मिवन्ड्रलै शरत्तिर् चिन्दिप्
पोवहै पुणर्प्प तॅन्ड्रु पुन्दियार् पुहल्हिन् ड्रेर्कुम्
आवहै यायिर् ड्रिल्लै यार्विदि विळैवै योर्वार्
एविय शॅय्द लल्ला लिल्लैवे ड्रॊन्ड्रॅन् ड्रॅण्णा 762

तेविपै तीण्टा मुन्नम्–देवी को स्पर्श करने से पहले ही; इवन् तलै–इसके सिर; चरत्तिल् चिन्ति पो वकै–शर से गिराने का उपाय; पुणर्प्पन्–राम कर लेगा; ऍन्ड्रु–ऐसा; पुन्तियाल् पुकल्किन्ड्रेर्कुम्–बुद्धि से जानकर कहता हूँ, ऐसा मेरा भी; आ वकै–भला होने का उपाय; आयिन्ड्रु इल्लै–होता नहीं है; विति विळैवै–विधि का फल; आर् ओर्वार्–कौन जान सकता; एविय चॅय्तल् अल्लाल्–आज्ञा मानने के सिवाय; वेड्रु ऑन्ड्रु इल्लै–कोई दूसरा रास्ता नहीं; ऍन्ड्रु ऍण्णा–ऐसा सोचकर। ७६२

मारीच बहुत दुःखी हुआ। यह मूर्ख नही जानता कि देवी सीता का स्पर्श करने के पूर्व ही श्रीराम ऐसा कार्य साध लेंगे कि इसके सिर उनके शरो से कटकर गिर जायँगे। यह मैं अपने अनुभव और तर्क के आधार पर कहता हूँ। तो भी मेरा भी भला अब नहीं होता दिखता। विधि का विधान कौन जाने? अब मेरे सामने रावण के आज्ञा में कहे अनुसार करने के सिवा कोई मार्ग नहीं है। ऐसा सोचकर—। ७६२

ऍन्ड्रनमा मायम् यानिङ् गियर्ड्रुव दियम्बु हॅन्ड्रान्
पॊन्ड्रिनिन्मा नाहिप् पुक्कप् पॊन्नैमाल् पुणर्त्तु हॅन्न
अन्ड्रवन् शॅय्वॅ नॅन्ना मारीश नमैन्दु पोनान्
मिन्ड्रुवे लरक्कर् कोनुम् वेड्रॊरु नॅड्रियिर् पोनान् 763

इङ्कु यान् अॅन्न मा मायम् इयऱ्ऱुवतु–यहाँ मैं क्या बड़ी माया करूँ; इयम्पुक–कहो; अॅन्ऱान्–कहा; पॊन्निन् मान् आकि पुक्कु–स्वर्ण-हिरण बनकर वहाँ पहुँचकर; अ पॊन्नै–उस स्वर्ण-सुन्दरी को; माल् पुणर्त्तुक–मोहित कर दो; अॅन्न–कहा, तब; अन्नतु चॆय्वॆन् अॅन्ना–वह करूँगा, कहकर; मारीचन् अमैन्तु पोनान्–मारीच सम्मत होकर गया; मिन्नुम् वेल्–चमकदार भाला के; अरक्कर् कोनुम्–राक्षसराज भी; वेऱु ओरु नॆऱियिल् पोनान्–दूसरे मार्ग से गया। ७६३

मारीच ने रावण से पूछा कि अब मैं क्या बड़ा माया-कार्य करूँ ? तुम्हीं बताओ। तो रावण ने कहा— तुम स्वर्णमृग बनकर वहाँ जाओ। और उस स्वर्णसुन्दरी सीता को मोह में डाल दो। मारीच ने सम्मत होकर कहा कि हाँ ! वैसा ही करूँगा। चमकदार भालाधारी रावण भी दूसरे मार्ग से निकल गया। ७६३

❀ मेनाळवर् विल्वलि कण्डमैयाल्, तानाह निनैन्दु शमैन्दिलनाल्
मानाहुदि यॆन्ऱवन् वाळ्वलियाल्, पोनान्मन मुञ्जॆय लुम्बुहल्वाम् 764

मेल् नाळ्–पहले; अवर् विल् वलि–उनके धनु की शक्ति; कण्टमै याल्–देखी थी, इसलिए; तान् आक–स्वयं; निनैन्तु चमैन्तिलन्–यह उपाय सोचकर तैयार नहीं हुआ; मान् आकुति–मृग बनो; अॅन्ऱवन्–यह जिसने कहा, उस रावण की; वाळ् वलियाल्–तलवार की शक्ति से (डरकर); पोनान् जो गया उसका; मनमुम्–मन और; चॆयलुम्–कार्य; पुकल्वाम्–बखानेंगे। ७६४

अब मारीच को राम-धनुष का बल खूब स्मरण रहा। उसने पहले उसका अनुभव किया था। इसलिए वह कदापि स्वयं मृग का रूप लेकर वहाँ जाने को सम्मत नहीं होता। पर रावण की तलवार का वार पड़ने का डर था। उसने कहा कि मृग बनो। इसीलिए वह सहमत हुआ। ऐसे उसका मन कैसा व्याकुल था और कार्य कैसे थे —उसका हम अब वर्णन करेंगे। ७६४

❀ वॆञ्जुऱ्ऱ निनैत्तुहुम् वीररैवे, ऱञ्जुऱ्ऱु मऱुक्कुऱु माळ्हुळिनीर्
नञ्जुऱ्ऱुळि मीनिनडुक् कुऱुवान्, नॆञ्जुऱ्ऱदोर् पॆऱ्ऱि निनैप्परिदाल् 765

वॆम् चुऱ्ऱम् नित्तैत्तु–प्यारे बन्धु-बान्धवों की हालत सोचकर; उकुम्–विगलित हुआ; वेऱु–और भी; वीररै अञ्चु उऱ्ऱु–वीर (श्रीराम और लक्ष्मण से) डरकर; मऱुक्कु उऱुम्–घबड़ा जाता; आऴ् कुऴि–गहरे गढ़े का; नीर् नञ्चु उऱ्ऱुऴि–जल जब विषाक्त हो जाता है; मीतिन्–तब उसमें रही मछली-जैसा; नटुक्कु उऱुवान्–छटपटाया; नॆञ्चु उऱ्ऱतु ओर् पॆऱ्ऱि–उसके मन का जो हुआ; नितैप्पु अरितु–वह सोचना भी कठिन है। ७६५

उसका मन अपने भाई-बन्धुओं का भावी नाश सोचकर बहुत व्यग्र हुआ। और भी उन वीरों की वीरता का विचार कर गिड़गिड़ाया। उसकी स्थिति उन मछलियों की-सी थी जो गहरे गढ़े मे है और उस गढ़े

का जल विषाक्त हो गया है। वह थर-थर काँपा। उसके मन की व्याकुलता की स्थिति का ज्ञान हमारी मनोशक्ति के अन्दर आनेवाला नहीं है! । ७६५

अक्कालमुम् वेळ्वियिऩ्ऩ् ऱुतॊडर्न्, ऍक्कालु नलिन्दुमॊ रीरुबॆऱ्ऱान्
मुक्कालिन् मुडिन्दिडु वाऩ्मुयल्वाऩ्, पुक्कान विराहवऩ् वैहुपुनम् 766

अवतोटु—उन श्रीराम के साथ; अ वेळ्वियिल् कालम्—उस भाग के समय के; अऩ्ऱु तॊटर्न्तु—उस दिन से लेकर; ऍ कालुम् नलिन्तुम्—किसी भी तरह के क्लेश से; ओर् ईऱु पॆऱाऩ्—जो मरकर अन्त नहीं पा सका; मु कालिन्—(वह मारीच) तीसरी बार; मुटिन्तिटुवान् मुयल्वाऩ्—मरने को उद्यत होकर; अ इराकवऩ्—वे राघव; वैकु पुऩम्—जहाँ रहते थे, उस वन में; पुक्काऩ्—आ पहुँचा। ७६६

(श्रीराम के साथ इसके पहले दो बार सामना हो गया था। एक बार विश्वामित्र के यज्ञ के अवसर पर हुआ। दूसरी बार वह दो मित्रों के साथ मृग का वेश धारण करके श्रीरामचन्द्र के सामने गया था। श्रीराम के शरों ने उसके दोनों मित्रों का नाश किया। मारीच बचके आ गया। उसका संकेत पद्य-संख्या ७५८ में है; फिर ७६४ में भी है, फिर इस पद्य में भी आता है। आगे ७९३वें पद में भी पाया जायगा।) जिस दिन पहले पहल उसे श्रीराम के साथ संपर्क हुआ था, उस दिन से लेकर वह बहुत क्लेश उठा रहा है। तो भी वह मरा नहीं था। अब उसने निश्चय कर लिया कि मैं तीसरी बार जाऊँगा और मर जाऊँगा। मरने की तैयारी के साथ वह, श्रीराम जहाँ रहे उस वन में आ पहुँचा। ७६६

❀ तऩ्मानमि लाद तयङ्गॊळिशाल्, मिऩ्मानमु मण्णुम् विळङ्गुवदोर्
पॊऩ्मानुरु वङ्गॊडु पोयिनऩाल्, नऩ्मानऩै याडनै नाडुरुवान् 767

नल् माऩ् अऩैयाळ् तऩै—उत्तम मृगनिभ उस (देवी) को; नाटु उरुवाऩ्—खोजते हुए; तऩ् मानम् इलात—अनुपम; तयङ्कु ऑळि चाल्—चमकदार कान्ति के साथ; मिऩ् मानमुम्—विद्युतसहित आकाश में; मण्णुम्—भू पर; विळङ्कुवतु ओर्—द्युतिमान एक; पॊऩ् माऩ् उरुवम् कॊटु—स्वर्ण-मृग का रूप लेकर; पोयिऩऩ्—वहाँ गया। ७६७

उत्तम हरिणी-तुल्य सीतादेवी को ढूँढ़ते हुए मारीच एक स्वर्णमृग का रूप धरकर आया। वह अनुपम मृग था। विद्युत सहित आकाश में या भू पर उससे तुल्य कोई मृग नहीं था। ७६७

कलैमाऩ्मुद लायिन कण्डवॆलाम्, अलैमाऩुरु माशैयिल् वन्दनवाल्
निलैयामन वञ्जनै नेयमिला, विलैमादर्हण् यारुम् विऴुन्दॆनवे 768

निलैया मऩम्—चंचल-मना; वञ्चनै—वंचक; नेयम् इला—स्नेहहीन; विलै मातर् कण्—वेश्या पर; यारुम्—सभी कामुक; विऴुन्ततु ऍऩवे—मोह में गिर (पड़) जाते हैं जैसे; कण्ट—उसको जिन्होंने देखा, वे; कलै माऩ् मुतल् आयिऩ—बारहसींगा,

हरिण, मृग आदि; अलै मान् उऱुम् आचैयिन्–तरंगों के समान उठनेवाली इच्छा के साथ; वन्तन–उसकी ओर आये। ७६८

उसको देखकर उस वन में रहे सभी बारहसींगे, हरिण, मृग आदि उसकी ओर ऐसे आकृष्ट होकर भागे, जैसे चंचलमना, कपटी और स्नेह-हीन वेश्या के मोह में पड़कर कामुक सभी दौड़ पड़ते हैं। ७६८

❀ पॉय्यामॅन वोदु पुरज्जॊलिनाल्, नैयाविडै नोव नडन्दनळाल्
वैदेविदन् वाल्वळै मॅन्गैयॆनुम्, कॊय्यामल रान्मलर् कॊय्हुरुवान् 769

वैतेवि–वैदेही; तन्–अपने; वाल् वळै–उज्ज्वल कंकणधारी; मॅल् कै ऍनुम्–कोमल हाथ रूपी; कॊय्या मलराल्–जिनको तोड़ा नहीं गया, उन कमलसुमन द्वारा; मलर् कॊय्कुऱुवान्–पुष्प-चयन करने हेतु; पुऱम्–अन्य दर्शक; पॊय् आम् ऍन्ऱ ओतुम्–जिसका अभाव कहते हैं; चॊलिताल्–उस कथन के अनुसार; नैया इटै–दुःखी कमर के; नोव–संकट उठाते; नटन्ततळ्–चलकर गयी। ७६९

तब वैदेही पुष्प-चयन के लिए निकल आयीं। उसके हाथ उज्ज्वल वलय-भूषित और उन कमल-सम सुन्दर थे जो तोड़े नही गये थे। उसकी कमर के सम्बन्ध में दूसरे सन्देह करते थे और कहते थे कि इसके कमर नहीं है। वह ऐसी क्षीण कमर को दुःख देती हुई वैसे सुन्दर हाथों से पुष्प-चयन करने के लिए निकल पड़ी। ७६९

उण्डाहिय केट्टै यार्तुयिल्वाय्, ऍण्डानु मियॆन्दियै यावुरुवम्
कण्डारॆन लाम्वहै कण्डनळाल्, पण्डारु मुऱाविडर्प् पाडुरुवाळ् 770

पण्टु आरुम् उऱा–इसके पूर्व किसी से अननुभूत; इटर्प्पाटु–संकट; उऱुवाळ्–जिन पर आने को था, उन देवी ने; उण्टाकिय केटु उटैयार्–संकटग्रस्त लोगों ने; तुयिल्वाय्–निद्रा में; ऍण् तातुम् इयैन्तु इयैया–असंभाव्य; उरुवम् कण्टार्–रूप देख लिया हो; ऍतल् आम् वकै–ऐसा; कण्टतळ्–(मायामृग को) देखा। ७७०

सीताजी पर संकट आनेवाला था। वह भी ऐसा जैसा किसी पर पहले कभी नही आया था। उनकी दृष्टि में वह स्वर्णमृग पड़ा। उन्होने उसे ऐसे संकटग्रस्त स्वप्नद्रष्टा के समान देखा, जिसे निद्रा में बिलकुल असंभाव्य कोई अनोखा रूप दिखाई दिया हो। ७७०

काणाविदु कैतव मॅन्रुणराळ्, पेणाद नलङ्गॊडु पेणिन्ऩळाल्
वाणाळै यिरावणन् माळुदलाल्, वीणाळि लऱम्बुवि मेवुदलाल् 771

अ इरावणन्–उस रावण की; वाळ् नाळ्–आयु के दिन; माळुतल् आल्–समाप्त होने को थे; वीऴ् नाळ् इल्–जिसका मरण-दिन नहीं होता; अऱम्–उस धर्म का; पुवि मेवुतलाल्–भूमि पर उत्थान होने को था, इसलिए; काणा–(देवी ने उसको) देखकर; इतु कैतवम्–यह कैतव है; ऍन्ऱु उणराळ्–यह न जानकर; पेणात नलम् कॊटु–अभूतपूर्व आनन्द मानकर; पेणिऩळ्–उसको चाहा। ७७१

रावण की आयु को खतम होनी थी। अनश्वर धर्म के भू पर उत्थान का काल आ गया था। इसलिए देवी सीता ने उसको देख लिया। पर उन्हें मालूम नहीं था कि यह कैतव है। अब तक ऐसा आनन्द प्राप्त नहीं था। यह समझकर उन्होंने उसकी चाह की। ७७१

⁂ नॆऱ्ऱिप्पिऱै याण्मुत्त निऩ्ऱिडलुम्, मुऱ्ऱिप्पॊळि कादलिऩ् मुऩ्दुरुवाळ्
पऱ्ऱित्तरु हॆऩ्बॆ ऩॆत्तप्पदैया, वॆऱ्ऱिच्चिलै वीरऩै मेविऩ्ऩाळ् 772

नॆऱ्ऱि पिऱैयाळ् मुतम्–(चन्द्र-) कला-सम भाल से भूषित देवी के सामने; निऩ्ऱिट्लुम्–हिरण खड़ा हुआ तो; मुऱ्ऱि पॊळि–भरकर बढ़नेवाले; कातलिऩ् मुऩ्तुरुवाळ्–इच्छा से जाती हुई वह; पऱ्ऱि तरुक–पकड़कर दीजिए; ऍऩ्पॆऩ्–कहूँगी; ऍत्त–सोचकर; पतैया–उतावली से; वॆऱ्ऱि चिलै वीरऩै–विजय कोदण्डपाणी वीर; मेविऩाळ्–के पास पहुँची। ७७२

वह हरिण चन्द्रललाट सीता के सामने जाकर खड़ा हुआ। तब उनके मन में उसके प्रति अपार राग उत्पन्न हुआ और उमड़ आया। 'मैं जाऊँगी और उनसे कहूँगी कि इसे पकड़कर दीजिए' —ऐसा सोचते हुए वह सवेग विजय-कोदण्ड-पाणी श्रीराम के पास जा पहुँचीं। ७७२

आणिप्पॊऩ्ऩि ऩाहिय दाय्हदिराल्, शॆणिऱ्चुडर् हिऩ्ऱदु तिण्शॆविकाल्
माणिक्क मयत्तॊरु मानुळदाल्, काणत्तहु मॆऩ्ऱऩळ् कैतॊळुवाळ् 773

कै तॊळुवाळ्–हाथ जोड़े नमस्कार करती हुई; आणि पॊऩ्ऩिल् आकियतु–उत्तम स्वर्ण-निर्मित; आय् कतिराल्–शरीर की श्रेष्ठ कान्ति के कारण; चॆणिल् चुटर्किऩ्ऱतु–बहुत दूर तक ज्योतिर्मय दिखनेवाला; तिण् चॆवि काल्–बलवान कान और पैर; माणिक्क मयत्तु–माणिक्यमय; ऒरु माऩ् उळतु–एक हिरण आया है; आल्–जो; काणत्तकुम्–वह देखने योग्य है; ऍऩ्ऱऩळ्–कहा (सीताजी ने)। ७७३

जाकर उन्होंने श्रीराम से हाथ जोड़कर विनय की। खरे स्वर्ण का बना, अपनी देह की कान्ति के कारण बहुत दूर तक द्युतिमान दिखता हुआ, माणिक्य के पैरों और कानों के साथ एक हिरन आया हुआ है। वह आपसे देखने योग्य है। ७७३

इम्माऩ् निलत्तिऩ् लिल्लैयॆऩा, ऍम्माऩि दॆऩ्ऩच्चिऱि दॆण्णल्शॆयाऩ्
शॆम्मानवळ् शॊऱ्कॊडु तेमलरोऩ्, अम्मानु मरुत्तिय ऩायिऩ्ऩाल् 774

इ माऩ्–यह मृग; इ निलत्तिल् इल्लै–इस भूमि पर (प्राप्य) नहीं; ऍऩ्ऩा–यह बात; ऍ माऩ् इतु–यह कैसा हरिण; ऍऩ्ऩ–यह बात; चिऱितु ऍण्णल् चॆयाऩ्–कुछ भी नहीं सोचकर; ते मलरोऩ्–शहद-भरे कमल पर आसीन; अम्मातुम्–(ब्रह्मा के) पिता (के अवतार) श्रीराम भी; चॆम् माऩवळ्–सुन्दर (लाल) रंग की सीताजी का; चॊल् कॊटु–वचन मानकर; अरुत्तियऩ् आयिऩऩ्–इच्छुक हुए। ७७४

श्रीराम ने यह सुना। (आश्चर्य है कि) उन्हें यह नहीं सूझा कि

ऐसा मृग अनहोनी वात है। यह भी विचार नहीं आया कि यह कैसा मृग है? विना किसी सोच-विचार के श्रीराम, जो शहदयुक्त कमल पर आसीन ब्रह्मा के भी विधाता विष्णु के अवतार थे, देवी की वात पर विश्वास करके उसको पकड़ने को इच्छुक हो गये। ७७४

आण्डङ्गिळै योनुरै याडितृताल्, वेण्डुम्मॅन लाम्व्लिळै वतृरिदॅनाप्
पूण्डुत्जुपौ लङ्गोडि पोयदुनाम्, काण्डुम्मॅनुम् वळ्ळल् करुत्तुणर्वान् 775

पूण् तुञ्चु–आभरण-युक्त; पॉलन् कॉटि–स्वर्ण-लता (सी देवी); पोय् अतु नाम् काण्टुम्–जाकर हम उसे देखें; ऍनुम्–कहनेवाले का; वळ्ळल् करुत्तु–उदार प्रभु का मन; उणर्वान्–भाँपकर; इळैयोन्–लघुराज; आण्टु–तव; वेण्टुम् ऍनल् आम्–चाहनीय; विळैवु अन्ऱु इतु–चाह के योग्य नहीं है यह; ऍना–ऐसा सोचकर; अङ्कु–वहाँ; उरै आटितन्–वचन कहने लगे। ७७५

'हे आभरणालंकृता देवी! हम जाकर देखेंगे' यह प्रभु ने कहा। पास जो रहे उन लघु भ्राता लक्ष्मण ने श्रीराम का विचार ताड़ लिया। तव उन्होंने सोचा कि यह चाहनीय इच्छा का विपय नहीं। इसलिए वह श्रीराम से निवेदन करने लगे। ७७५

कायङ्गन हम्मणि काल्शॅविवाल्, पायुम्मुरु वोडिदु पण्वलवाल्
मायम्मॅन लन्ऱि मन्नक्कॉळवे, एयुम्मिरै येयुरु वॅन्ऱनताल् 776

कायम् कनकम्–शरीर स्वर्णमय; काल् चॅवि वाल्–पैर, कान और दुम; मणि–माणिक्यमय; पायुम् उरुवोटु इतु–चौकड़ी भरनेवाला यह; पण्पु अल आल्–स्वाभाविक नहीं है, इसलिए; मायम् ऍनल्–माया कहना चाहिए; अन्ऱि–दूसरा; इऱै–प्रभु; मन्नम् कॉळवे–मानना; ऐयुरवु एयुम्–संशययुक्त होगा; ऍन्ऱनन्–कहा। ७७६

प्रभु! सोचिए। शरीर स्वर्ण का, पैर, कान और दुम माणिक्य के; ऐसा मृग चौकड़ी भरता है! यह विल्कुल अप्राकृतिक है! इसलिए कोई माया ही माननी है! उसके विपरीत इसको सच्चा मानना संशय-युक्त है। ७७६

निल्लावुल हिन्निलै नेर्मैयिनाल्, वल्लारु मुणर्न्दिलर् मन्नुयिर्दाम्
पल्लायिर कोडि परन्दुळवाल्, इल्लादन विल्लै यिळङ्गुमरा 777

इळम् कुमरा–वाल कुमार; नेर्मैयिनाल् वल्लारुम्–सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी; निल्ला उलकिन् निलै–इस नश्वर जगत का स्वभाव; उणर्न्तिलर्–पूर्ण रूप से नहीं जानते; मन् उयिर् ताम्–अक्षय जीव-जन्तु; पल् आयिरम् कोटि–अनेक सहस्र कोटि; परन्तु उळ आल्–रूप में विस्तृत हैं; इल्लातन इल्लै–असम्भव कुछ नहीं है। ७७७

तब श्रीराम ने गम्भीर विचार व्यक्त किये। वालकुमार! सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी इस चलनशील ससार का सारा रहस्य नहीं जान पाते।

अक्षय जीव अनेक सहस्र कोटि रूपों में विपुल रीति से पाये जाते हैं। इसलिए असंभाव्य कुछ नहीं है। ७७७

ॲऩ्ऩॆऩ्ऱु निऩैन्द दिळैत्तुळदाम्, कऩ्ऩङ्गळिल् वेरुळ काणुदुमाल्
पॊऩ्ऩिऩ्कुळिर् मेऩि पौरुन्दिऩवेऴ्, अऩ्ऩङ्गळ् पिऱन्द दऱिन्दिलैयो 778

ॲऩ् ॲऩ्ऱु निऩैन्तु–क्या समझकर; अतु इळैत्तु उळतु आम्–तुमने ऐसी बात कही थी; कऩ्ऩङ्कळिऩ्–अपने कानों से; वेरु उळ काणुतुम–कितने ही अपरिचित अन्य पदार्थ देखते हैं (सुनकर जान लेते है); पॊऩ्ऩिऩ्–स्वर्णमय; कुळिर् मेऩि पौरुन्तिऩ–मनोरम रूपधर; एऴ् अऩ्ऩङ्कळ् पिऱन्ततु–सात हंस पहले जनित थे; अऱिन्तिलैयो–नहीं जानते क्या। ७७८

पर पता नही कि तुम क्या सोचकर किसके आधार पर यह कह रहे हो। कितने ही पदार्थ है, जिनके बारे में हम सुनते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं। (भरद्वाज मुनि के) सात स्वर्णशरीरी हंस (पुत्रों के रूप में) पैदा हुए थे —क्या तुम यह वृत्तान्त नहीं जानते ? । ७७८

मुऱैयुमुडि वुम्मिलै मॊय्युयिरॆऩ्, ऱिऱैवऩिळै योनॊडि यम्बिऩऩाल्
पऱैयुन्दुणै यऩ्ऩदु पऩ्ऩॆऱिपोय्, मऱैयुम्मॆऩ वेऴै वरुन्दिऩळाल् 779

इऱैवऩ्–(श्रीराम) प्रभु के; मॊय् उयिर्–(इस संसार को) भरनेवाले जीवों की; मुऱैयुम् मुटिवुम् इलै–उत्पत्ति का प्रकार और नाश, हम नहीं जानते; ॲऩ्ऱु–ऐसा; इळैयाऩॊटु–भाई से; इयम्पिऩऩ्–कहा; एऴै–अबला ने; पऱैयुम् तुणै–वार्तालाप के अन्दर; अऩ्ऩतु–वह; पल् नॆऱि पोय्–बहुत दूर जाकर; मऱैयुम्–छिप जायगा; ॲऩ–ऐसा; वरुन्तिऩाळ्–दुःख के साथ बोली। ७७९

श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भ्राता को समझाया कि यह संसार अक्षय जीव-जन्तुओं से भरे हैं। उन सभी के जन्म-मरण के प्रकार हम नहीं जान सकते। तब देवी ने चिन्ता व्यक्त की कि आप जब तक वार्तालाप में लगे रहेंगे तब तक यह हरिण बहुत दूर चला जायगा और आँखों से ओझल हो जायगा। ७७९

अऩैयवळ् करुत्तै युऩ्ऩा वञ्जऩक् कुऩ्ऱ मऩ्ऩाऩ्
पुऩैयिऴै काट्ट डॆऩ्ऱु पोयिऩाऩ् पॊऱाद शिन्दैक्
कऩैहऴऱ् ऱम्बि पिऩ्बु शॆऩ्ऱऩऩ् कडक्क वॊण्णा
विऩैयॆऩ वन्दु निऩ्ऱ माऩॆदिर् विऴित्त दऩ्ऱे 780

अऩैयवळ् करुत्तै–उनका विचार; उऩ्ऩा–सोचकर; अञ्चऩ कुऩ्ऱम् अऩ्ऩाऩ्–अंजन-गिरि-तुल्य श्रीराम; पुऩै इऴै–आभरणभूपिता; अतु काट्टु–उसे दिखाओ; ॲऩ्ऱु–कहकर; पोयिऩाऩ्–(देखने) गये; पॊऱात चिन्तै–अधीर-मन; कऩै कऴल् तम्पि–मुखरित पायलधारी भ्राता लक्ष्मण; पिऩ् चॆऩ्ऱऩऩ्–उनके पीछे गया; कटक्क ऒण्णा–अलंघ्य; विऩै ॲऩ–प्रारब्ध के समान; वन्तु निऩ्ऱ–जो आकर खड़ा रहा; माऩ्–उस हरिण ने; ॲतिर् विऴित्ततु–सामने आकर उन्हें देखा। ७८०

श्रीराम ने देवी का दुःख पहचाना। अंजनगिरि-तुल्य प्रभु श्रीराम ने उनको आभरणभूषित प्यारी देवी, सम्बोधित कर कहा कि दिखाओ। सीता चलीं और श्रीराम भी चले। इसको देखकर मुखरित पायलधारी लक्ष्मण चुप नही रह सके। अधीरमन हो वह भी उनके पीछे-पीछे गये। अलंघ्य प्रारब्ध के समान उस मायामृग ने उनके सामने आकर उनको ताका। ७८०

नोक्किय मानै नोक्कि नुदियिऴै मदियि नॊन्ऱुम्
तूक्किल नन्ऱि दॆन्ऱा नदन्बॊरुळ् शॊल्ल लाहुम्
शेक्कैयि नरवि नीङ्गिप् पिऱन्ददु तेवर् शॆय्द
पाक्किय मुडैमै यन्ऱो वन्नदु पऴुदु पोमो 781

नोक्किय मानै—जो ताक रहा था, उस हरिण को; नोक्कि—देखकर; नुति इऴै मतियिन्—अपनी सूक्ष्म बुद्धि से; ऒन्ऱुम् तूक्किलन्—श्रीराम ने कुछ तर्क नहीं किया; इतु नन्ऱु—यह बड़ा अच्छा है; ऎन्ऱान्—कहा; अतन् पॊरुळ् चॊल्लल् आकुम्—उसका (गूढ़) अर्थ हम कहेंगे; अरवु चेक्कैयिन्—शेष-शय्या से; नीङ्कि—अलग आकर; पिऱन्ततु—भू पर अवतार लेना; तेवर् चॆय्त—देवों के कृत; पाक्कियम् उटैमै अन्ऱो—पुण्य से प्राप्त फल है न; अन्ततु—वह; पऴुतु पोमो—व्यर्थ जायगा क्या। ७८१

श्रीराम ने उस हरिण को देखा जो उनको ताक रहा था। उन्होंने कोई तर्क-वितर्क नही किया। कहा कि शाबाश ! यह बहुत अच्छा है ! इसका गूढ़ अर्थ क्या है ? —हम कहें ? वे शेषशय्या त्यागकर भूमि पर अवतरित हुए —यह देवों के पुण्य का फल था। वह वृथा जायगा क्या ? 'अच्छा' का संकेत उनके पुण्य की ओर है। ७८१

ऎन्नॊक्कु मॆन्न लाहु मिळैयव विदनै नोक्काय्
तन्नॊक्कु मॆन्ब दल्लाऱ् ऱनैयॊक्कु मुवमै युण्डो
पन्नक्क तरळ मॊक्कुम् पशुम्बुन्मेऱ् पडरु मॆन्ना
मिन्नॊक्कुञ् जॆम्बॊन् मेनि वॆळ्ळियिन् विळङ्गुम् बुळ्ळि 782

इळैयव—अनुज भैया; इततै नोक्काय्—इस पर दृष्टि डालो; ऎन् ऒक्कुम्—किसके समान है; ऎन्नतल् आकुम्—कहा जा सकता है; तन् ऒक्कुम्—स्वोपम है; ऎन्पतु अल्लाल्—इसके सिवा; ततै ऒक्कुम्—उससे तुल्य; उवमै उण्टो—उपमा होगी क्या; पल्—दाँत; नक्क तरळम् ऒक्कुम्—उज्ज्वल मोती के समान हैं; पचुम् पुल् मेल् पटरुम्—(जो) हरी घास पर लगती है, वह; मॆल् ना—मृदु जीभ; मिन् ऒक्कुम्—विद्युत के समान है; मेनि चॆम् पॊन्—शरीर लाल (खरा) सोना है; पुळ्ळि—बिंदियाँ; वॆळ्ळियिन् विळङ्कुम्—चाँदी के समान प्रकाशमान हैं। ७८२

श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा। अनुज ! इसको खूब देखो। इसकी तुलना में क्या कहा जा सकता है ? यह स्वोपम है। यही कहना पड़ेगा।

इसके सिवाय कोई उपमा ढूँढ़े नहीं मिलेगी। इसके दाँत उज्ज्वल मोती के समान हैं। जब इसकी जीभ हरी घास पर लगती है, तब वह बिजली के समान चमकती है! इसका शरीर लाल (खरा) स्वर्ण है और बिंदियाँ चाँदी-सी हैं। ७८२

वरिशिलै मऱैव लोऩे माऩिदऩ् वडिवै युऱ्ऱ
अरिवैयर् मैन्दर् यारे यादरङ् गूऱ्ह लादार्
उरुहिय मऩत्त वाहि यूर्वऩ पऱप्प यावुम्
विरिशुडर् विळक्कङ् गण्ड विट्टिलिऩ् वीऴ्व काणाय् 783

वरि चिलै मऱैवलोऩे—सबन्ध-धनु-विद्या-विशारद; माऩ् इतऩ्—इस मृग का; वटिवै उऱ्ऱ—रूप जिसने देखा; अरिवैयर्—वह स्त्री; मैन्तर्—या पुरुष; यारे आतरम् कूऱ्कलातार्—कौन इस पर आसक्त नहीं होगा; ऊर्व—रेंगनेवाले; पऱप्प—उड़नेवाले; यावुम्—सभी जन्तु; उरुकिय मऩत्तत आकि—द्रवितमन होकर; विरि चुटर् विळक्कम् कण्ट—विस्तारशील प्रकाशमय दीप को देखकर; विट्टिलिऩ्—पतंग जैसे; वीऴ्वऩ—टूट पड़ते है; काणाय्—देखो। ७८३

सबन्ध धनु के प्रयोग में निष्णात लक्ष्मण! इस हरिन को जो देखेगा, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, कौन ऐसा होगा जो इसके प्रति आसक्त नहीं होगा? रेंगनेवाले, उड़नेवाले सभी जीव-जन्तु इसके आकर्षण से द्रवीभूतमन होकर प्रकाशमय दीप पर गिरनेवाले पतंग के समान इसकी तरफ़ टूट पड़ते हैं। देखो। ७८३

आरिय ऩऩैय कूऱ वऩ्ऩदु तऩ्ऩै नोक्किच्
चीरिय दऩ्ऱि दॆऩ्ऩुऱु शिन्दैयिऩ् ऱॆळिन्द तम्बि
कारिय मॆन्ऩै योण्डुक् कण्डदु कऩह माऩेल्
वेरियऩ् ऱॆरियल् वीर मीळ्वदे मेऩ्मै यॆऩ्ऱाऩ् 784

आरियऩ् अऩैय कूऱ—आर्य श्रीराम के वह कहने पर; अऩ्ऩतु तऩ्ऩै—उस हिरण को; नोक्कि—खूब देखकर; चिन्तैयिल्—मन में; तॆळिन्त तम्पि—स्पष्ट जानकर रामानुज ने; वेरि अम् तॆरियल् वीर—सुगन्ध और सुन्दरता से भरी मालाधारी वीर; ईण्टु कण्टतु कऩक माऩ् एल्—यहाँ दुष्ट स्वर्ण-मृग ही हो तो; कारियम् ऍऩ्ऩै—उससे हमारा कार्य क्या है; मीळ्वते मेऩ्मै—लौट जाना ही श्रेय है; ऍऩ्ऱाऩ्—कहा। ७८४

जब आर्य श्रीराम ने यह कहा, तब लक्ष्मण, जिनके मन में स्पष्ट निश्चय था, बोले। सुगन्धित और आकर्षक मालाधारी वीर! मान लें कि यह कनकमृग है। तो हमारा उससे क्या काम है? चलिए लौट जाना ही श्रेयस्कर होगा। ७८४

अऱ्ऱवऩ् पहर मुऩ्ऩ मऴहऩै यऴहि याऴुम्
कॊऱ्ऱवऩ् मैन्द मऱ्ऱैक् कुऴैवुडै युऴैयै वल्लै

परिर्रित्तै तरुदि यायिऱ् पदियिडै यवदि यॆय्दप्
पॆर्रुळि यिनिदुण् डाडप् पॆरर्करुन् दहैत्त दॆन्ऱाळ् 785

अर्रु अवन् पकरा मुन्नम्–वैसा उनके कहने के पूर्व ही; अळकनै–सुन्दरराज श्रीराम को; अळकियाळुम्–अनिन्द्य सुन्दरी देवी सीता ने भी; कॊर्रवन् मैन्त–चक्रवर्तीतनय; कुळैवु उटै–थकनयुक्त (या लचीले); इ उळैयै–इस मृग को; वल्लै–शीघ्र; पर्रित्तै तरुति आयिल्–पकड़कर देंगे तो; अवति ऎय्त पॆर्रु–वनवास की अवधि पूरा करके; पति इटै–अपने नगर में; इनितु उण्टाट–सुख से खेलने के लिए; पॆर्र्कु अरुम्–अलभ्य; तकैत्ततु–श्रेष्ठतायुक्त है; ऎन्ऱाळ्–कहा। ७८५

जब लक्ष्मण यह बात कह रहे थे, तब सुन्दरी सीतादेवी ने सुन्दर श्रीराम से विनय सुनायी। चक्रवर्तीकुमार! यह थकित है (या लचीला है)। अभी इस हरिण को पकड़कर दीजिए। तो वनवास की अवधि पूरा करके अयोध्या में ले जाऊँगी और उसके साथ खेलूँगी। यह दुर्लभ श्रेष्ठ वस्तु होगी। ७८५

ऐयनुण् मरुङ्गु नङ्गै य:(ह्)दुरै शॆय्य वैयन्
शॆय्वॆनॆन् ऱमैय नोक्कत् तॆळिवुडैत् तम्बि शॊप्पुम्
वॆय्यवल् लरक्कर् वञ्जम् विरुम्बिनार् वित्तैयिऱ् चॆय्द
कैदव मानॆन् ऱण्णल् काणुदि कडैयि नॆन्ऱान् 786

ऐय नुण्–बहुत ही पतली; मरुङ्कुल् नङ्कै–कमर की नायिका के; अ:तु उरै चॆय्य–वह कहने पर; चॆय्वन् ऎन्ऱु–करूँगा, ऐसा कहकर; ऐयन्–प्रभु के; अमैय नोक्क–(उस मृग को) खूब देखने पर; तॆळिवु उटै–स्पष्टचित्त; तम्पि चॊप्पुम्–अनुज ने कहा; अण्णल्–महिमावान; वञ्चम् विरुम्पित्तार्–वंचना करने के इच्छुक; वॆय्य वल् अरक्कर्–कठोर बली राक्षसों के; वित्तैयिल् चॆय्त–कार्य से आया; कैतवम् मान्–मायामृग है; ऎन्ऱु–ऐसा; कटैयिन् काणुति–अन्त में देखेंगे; ऎन्ऱान्–कहा। ७८६

जब अति क्षीण-कटि नायिका ने यह इच्छा सुनायी, तब श्रीराम ने उत्तर दिया कि ठीक, वही करूँगा। वे मृग को देखने लगे। तब लक्ष्मण, जिनके मन में कोई संशय नहीं था, बोले। महात्मा! यह मायावी, कठोर और बलवान राक्षसों के मायाकार्य से आया हुआ मायामृग है। यह आप आखिर देख लेंगे। ७८६

मायमेन् मडियु मॆन्ऱन् वाळियिन् मडिन्द पोदु
काय्शिनत् तवरॆक् कॊन्ऱु कडन्गळित् तोमु मादुम्
तूयदेर् पर्रिक् कोडुञ् जॊल्लिय विरण्डि नॊन्ऱु
एयदे पुरिदु मॆन्ऱा न्निमैयव रिडुक्कण् डीर्प्पान् 787

इमैयवर् इटुक्कण तीर्प्पान्–देवों के संकटहारी ने; मायमेल्–माया हो तो; ऎन् तन् वाळियिन्–मेरे अस्त्र से; मटियुम्–यह मरेगा; मटिन्त पोतु–जब मरेगा,

तब; काय् चित्तत्तु अवरै–सन्तापक कोप से युक्त उन (राक्षसों) को; कोन्ऱु–मारकर; कटऩ् कऴित्तोमुम्–कृतकृत्य भी; आतुम्–होगे; तूयतेल्–(वह मृग) सच्चा रहा तो; पट्रि कोटुम्–पकड़कर लायेंगे; चॉल्लिय इरण्टिऩ् ऑन्ऱु–उक्त दो में एक; एयतु ए–उचित जो है वही; पुरितुम्–करेंगे; ऍन्ऱाऩ्–बोले। ७८७

देवसंकटहरणार्थ अवतरित श्रीराम ने आश्वासन दिया। अगर यह मायामृग सावित हुआ तो यह मेरे शर से मरेगा। जब वह मरेगा तो सन्तापी व क्रोधी राक्षसों को मारने का हमारा प्रण भी पूरा होगा। अगर इसके विपरीत वह सच्चा मृग है तो पकड़कर लायँगे। उक्त इन दो में एक, जो उचित होगा वह काम करेंगे। ७८७

पिऩ्ऩिऩ्ऱा रॅन्नैय रॅन्ऱु मुणर्हिलॅम् बिडित्त मायम्
ऍन्ऩॅन्ऱुन् दॅरिद ऱेऱ्ऱाम् यावदी दॅन्ऱु मोराम्
मुऩ्ऩिऩ्ऱ मुऱैयि ऩिऩ्ऱार् मुऩिन्दुळ वेट्ट मुऱ्ऱल्
पॉऩ्ऩिऩ्ऱ वयिरत् तोळाय् पुहऴुडैत् तामऩ् ऱॅऩ्ऱाऩ् 788

पॉऩ् निऩ्ऱ वयिरम् तोळाय्–सौन्दर्य-निलय वज्रस्कन्ध; पिऩ् निऩ्ऱार्–इसके पीछे हैं; ऍन्नैयर्–कौन; ऍन्ऱुम् उणर्किलॅम्–यह भी नहीं जानते; पिटित्त मायम् ऍऩ्–संकल्पित मायाकार्य क्या है; ऍन्ऱुम्–यह भी; तॅळितल् तेऱ्ऱाम्–स्पष्ट नहीं जानते; ईतु यावतु–यह (मृग) क्या है; ऍन्ऱुम् ओराम्–यह भी नहीं समझ पाते; मुऩ् निऩ्ऱ–प्राचीन; मुऱैयिऩ् निऩ्ऱार्–नीतिमार्ग पर स्थित बड़े लोग; मुऩिनतु उळ–जिसको धिक्कारते हैं; वेट्टम् मुऱ्ऱल्–वह मृगया-कर्म; पुकऴ् उटैत्तु आम् अऩ्ऱु–श्लाघनीय कार्य नहीं है; ऍन्ऱाऩ्–कहा। ७८८

तब लक्ष्मण ने तर्क किया। सौन्दर्य-(विजय श्री-) निलय वज्रस्कन्ध! हम यह नही जानते कि इसके पीछे कैसे, कितने शत्रु हैं? उनके मन में क्या वंचना है? —यह भी नही जानते। यह मृग भी सचमुच क्या है —यह भी विदित नहीं। हमारे लिए मृगया भी श्रेयस्कर नही है, क्योंकि प्राचीन धर्मावलम्बी वड़ों ने उसे धिक्कारा है। ७८८

पहैयुडै यरक्क रॅन्ऱुम् पलरॅन्ऱुम् बयिलु मायम्
मिहैयुडैत् तॅन्ऱुम् पूण्ड विरदत्तै विडुदु मॅन्ऱाल्
नहैयुडैत् ताहु मन्ऱे यादलि नलनॆ यन्ऩत्
तहैयुडैत् तम्बिक् कन्ऩाट् चदुमुहऩ् ऱादै शॊन्ऩाऩ् 789

पकै उटै अरक्कर् ऍन्ऱुम्–शत्रु राक्षस, यह वात; पलर् ऍन्ऱुम्–वे अनेक हैं, यह वात; पयिलुम् मायम्–उनका मायाकार्य; मिकै उटैत्तु–अत्यधिक है; ऍन्ऱुम्–यह वात कहना; पूण्ट विरतत्तै–संकल्पित व्रत को; विटुतुम् ऍन्ऱल्–छोड़ देंगे, यह कहना होगा; नकै उटैत्तु आकुम् अऩ्ऱे–वह परिहास का विषय होगा न; आतलिऩ्–इसलिए; नलऩे–(मेरा निश्चय) अच्छा ही है; ऍन्ऩ–ऐसा; अ नाळ्–तब; चतुमुकऩ् तातै–चतुर्मुख के धाता ने; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। ७८९

तब चतुर्मुख ब्रह्मा के धाता श्रीविष्णु के अवतार श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाया कि ये शत्रु राक्षस हैं, वे अनेक हैं, अत्यन्त मायावी हैं —यह सब कहने का अर्थ यही होगा कि हम अपनाये गये व्रत से अलग हटते हैं। वह परिहसनीय बात होगी न ? इसलिए यही, यानी मायामृग हो तो मारना, सच्चा मृग हो तो पकड़ लाना, अच्छा होगा। ७८९

❀ अडुत्तवु मॅण्णिच् चॅय्द लण्णले यमैदि यन्ऱो
विडुत्तिदऩ् पिऩ्ऩिऩ् ऱार्हळ् पलरुळ रॅऩिनुम् विल्लाल्
तॊडुत्तुवॅम् बहळि तूवित् तॊडर्न्दनॆऩ् विरैन्दु शॆऩ्ऱु
पडुक्कुवॆ ऩदुवऩ् ऱाहिऱ् पऱ्ऱिनऩ् कॊणर्वॆ नॆऩ्ऱाऩ् 790

अण्णले–महात्मा; अटुत्तवुम् ऍण्णि चॅय्तल्–आगत कार्य भी विचारकर करना; अमैति अऩ्ऱो–उचित है न; विटुत्तु–(इसको) भेजकर; इतऩ् पिऩ् निऩ्ऱार्कळ्–इसके पीछे जो हैं; पलर् उळर् ऍतिनुम्–अनेक होंगे तो भी; वॆम् पकळि–भयंकर शरों को; विल्लाल् तॊटुत्तु–धनु में संधान करके; तूवि–चलाकर; तॊटर्न्तऩॆऩ्–अनुगमन करता हुआ; विरैन्तु चॆऩ्ऱु–त्वरित गति में जाकर; पटुक्कुवॆऩ्–मार दूंगा; अतु अऩ्ऱु आकिल्–वह (मायामृग) नहीं हो तो; पऱ्ऱिऩऩ् कॊणर्वॆऩ्–पकड़कर लाऊँगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ७९०

लक्ष्मण ने तब दूसरी बात कही। महात्मन् ! निश्चित कार्य भी सोच-विचारकर करना उचित होगा न ? इसको आगे भेजकर आड़ में जो खड़े हैं, उनकी संख्या बहुत बड़ी हो तो भी मैं अपने धनुष से शर चलाकर उन्हें मार दूंगा। अगर ऐसी बात नहीं है और यह सच्चा मृग है तो मैं पकड़ लाऊँगा। मुझे जाने दीजिए। ७९०

❀ आयिडै यऩ्ऩ मऩ्ऩा ळमुदुहुत् तऩैय शॆय्य
वायिडै मळलै यिऩ्शॊऱ् किळियिऩुङ् गुळऱि माळ्हि
नायह नीये पऱ्ऱि नल्हलै पोलु मॆऩ्ऩाच्
चेयरिक् कुवळै मुत्तञ् जिऩ्दुबु शीऱिप् पोऩाळ् 791

अ इटै–उस समय; अऩ्ऩम् अऩ्ऩाळ्–हंसिनी-सी सीतादेवी; माळ्कि–व्याकुल होकर; अमुतु उकुत्तु अऩैय–अमृत रिसती हो जैसा; चॅय्य वाय् इटै–लाल मुख से; मळलै इऩ् चॊल्–अस्पष्ट मधुर बोली में; किळियिऩिल् कुळऱि–शुक के समान तुतलाती हुई; नायक–नाथ; नीये पऱ्ऱि–आप ही पकड़कर; नल्कलै पोलुम्–नहीं देंगे क्या; ऍऩ्ऩा–कहकर; चेय् अरि–लाल रेखाओं से युक्त; कुवळै–कुवलय-पुष्पों (आँखों) से; मुत्तम् चिऩ्तुपु–मोती (अश्रु) गिराते हुए; चीऱि पोऩाळ्–रोष के साथ चलीं। ७९१

तभी हंसिनी-सी सीताजी ने दुःखाक्रान्त होकर अपना लाल मुख खोल कर अमृत रिसती-सी तुतलाती बोली में पूछा कि नाथ ! क्या आप उसे

पकड़कर नहीं देंगे ? फिर लाल डोरों से युक्त कुवलय-सम आँखों से अश्रुकण गिराती हुई वह रोष के साथ वहाँ से चलीं। ७९१

❀ पोन्वळ् पुलवि नोक्किप् पुरवलन् पॉलन्गॉ डाराय्
मानिदु नाने पट्रि वल्लैयिन् वरुवे नीयिक्
कानियन् मयिलन् नाळैक् कात्तनै यिरुत्ति यॅन्ना
वेलनु शरमुम् विल्लुम् वाङ्गिनन् विरैय लुट्रान् 792

पोन्वळ्–गमनशील उनका; पुलवि नोक्कि–रोष देखकर; पुरवलन्–लोक-रक्षक श्रीराम ने; पॉलन् कॊळ् ताराय्–सुन्दर मालाधारी; मान् इतु–यह हरिण; नाने पट्रि–मैं ही जाकर पकड़कर; वल्लैयिल्–शीघ्र; वरुवेन्–आऊँगा; नी–तुम; इ कान् इयल् मयिल् अन्नाळै–इस वनमयूरनिभ देवी को; कात्तनै इरुत्ति–रक्षा करते रहो; ॲन्ना–कहकर; वेल् नकु चरमुम्–शक्ति-सम शर और; विल्लुम्–धनु को; वाङ्कितन्–ग्रहण करके; विरैयल् उट्रान्–शीघ्र जाने लगे। ७९२

लोकरक्षक श्रीराम ने गमनशील सीताजी का रोष देखा। उन्होंने झट लक्ष्मण से कहा— सुन्दर मालाधारी ! इस मृग को मैं ही जाकर पकड़ लाऊँगा। तब तक वन-मयूरनिभ सीता की रक्षा करते रहो। फिर वे शक्तिसदृश शर और धनुष लेकर सवेग जाने लगे। ७९२

❀ मुन्नमु मानाय् वन्द मूवरि लॊरुवन् पोनान्
अन्नमा रीश नॆन्ट्रे ययिर्त्तने निदनै यैया
इन्नमुङ् गाण्डि वाळि येहॆन विरुहै कूप्पिप्
पॊन्ननाळ् पुक्क शालै कात्तनन् पुरत्तु निन्ट्रान् 793

ऐया–प्रभु; वाळि–चिरजीव रहिए; मुन्नमुम् मानाय् वन्त–पहले भी हरिणों के रूप में आये हुए; मूवरिल्–तीन में; ऒरुवन् पोनान्–एक बचकर चला गया; अन्न मारीचन् ॲन्ट्रे–वही मारीच, ऐसा; इतनै अयिर्त्तनेन्–इस पर संदेह करता हूँ; इन्नमुम् काण्टि–आप भी जान लेंगे; एकु ॲन–चलिए, ऐसा कहकर; इरु कै कूप्पि–अपने दोनों हाथ जोड़कर; पॊन् अनाळ् पुक्क चालै–स्वर्ण-सी सुन्दरी सीता-देवी जिसमें प्रविष्ट हुईं, उस पर्णशाला के; पुरत्तु–बाहर; कात्तनन्–रक्षण करते हुए; निन्ट्रान्–खड़े रहे। ७९३

उस समय भी लक्ष्मण ने सचेत किया। प्रभु ! जय हो आपकी ! चिरजीव रहें। पहले तीन हरिण आये थे। उनमें दो मरे; एक बचकर भाग गया। यह वही (बचा) मारीच है —ऐसा सन्देह करता हूँ। आप भी यह सत्य जान लेंगे; जाइए। फिर वे दोनों हाथ जोड़कर स्वर्ण-सम सुन्दरी सीता जिस पर्णशाला में प्रविष्ट हुई थी, उसके बाहर जाकर द्वार पर पहरेदार के रूप में खड़े रह गये। ७९३

❀ मन्दिरत् तिळैयोन् शौन्न वाय्मौऴि मनत्तुट् कौळ्ळान्
शन्दिरर् कुवमै शान्र वदनत्ताळ् शलत्तै नोक्किच्
चिन्दुरप् पवळच् चॅव्वाय् मुरुवलन् शिहरच् चॅव्विच्
चुन्दरत् तोळि नानम् मानिनैत् तौडर लुर्रान् 794

चिकर चॅव्वि–शिखर-सम श्रेष्ठ; चुन्तर तोळितान्–और सुन्दर भुजाओं से युक्त श्रीराम ने; मन्तिरत्तु इळैयोन्–मंत्रणा में छोटे भाई के कहे; वाय् मौऴि–सत्य वचन को; मनत्तु उळ् कौळ्ळान्–मन में नहीं लिया; चन्तिरर्कु उवमै चान्र–चन्द्र से उपमेय; वतनत्ताळ्–आनन की सीतादेवी के; चलत्तै नोक्कि–रोष का स्मरण कर; चिन्तुरम्–लाल; पवळ–प्रवाल से; चॅम् वाय्–लाल अधर पर; मुरुवलन्–मुस्कुराहट दिखाते हुए; अ मानिनै–उस हरिण का; तौटरल् उर्रान्–पीछा करने लगे। ७९४

पर्वतशिखरों के समान कन्धों से युक्त श्रीराम ने अच्छे सलाहकार अपने छोटे भाई का वचन स्मरण नहीं किया। पर उन्हें चन्द्रानना सीताजी का कोप ही स्मरण आया। सिंदूर-सम लाल अधर पर हँसी प्रकट करते हुए वे मृग का पीछा करने लगे। ७९४

❀ मिदित्तदु मॅल्ल मॅल्ल वॅरित्तदु वॅरुवि मीदिल्
कुदित्तदु शॅवियै नीट्टिक् कुरबद मुरत्तैक् कूट्टि
उदित्तॅऴु मूदै युळ्ळ मॅन्रिवै युरुवच् चॅल्लुम्
गदिक्कोरु कल्वि वेरे काट्टुव दौत्त दन्रे 795

मॅल्ल मॅल्ल मितित्ततु–उस मृग ने पहले धीरे-धीरे डग भरे; वॅरित्ततु–टुकुर-टुकुर ताका; वॅरुवि–भयातुर-सा; मीतिल् कुतित्ततु–ऊपर उछला; चॅवियै नीट्टि–कानों को तानकर; कुरपतम्–खुरों को; उरत्तै कूट्टि–छाती से लगाकर; उतित्तु ऍऴुम् ऊतै–उठकर ऊपर बहनेवाली हवा और; उळ्ळम् ऍन्र इवै–मन आदि इनको; उरुव चॅल्लुम्–जो भेदकर चलते हैं; कतिक्कु–गति में; ओरु कल्वि वेरे–एक नया पाठ; काट्टियतु–सिखाता हो; औत्ततु–ऐसा (भागा)। ७९५

उस हरिण ने पहले धीरे-धीरे डग भरे। कुछ देर खड़ा होकर ताका। फिर वह डरा हुआ-सा आकाश में उछला। कान खड़े करके खुरसहित पैरों को छाती से लगाकर वह इतनी तीव्रगति से दौड़ा कि बहती हवा और उड़ता मन भी उससे उस विषय में शिक्षा ग्रहण कर ले! । ७९५

नीट्टिना नुलह मून्रु निन्रॅडुत् तळन्द पादम्
मीट्टन्दा नीट्टर् कम्मा वेरुमो रणुड मुण्डो
ओट्टिनान् रौडरन्द दॅन्नै योळिवर निरैन्द तन्मै
काट्टिना नन्रु शॅन्र कडुमैयार् कणिक्कर् पालार् 796

निन्रु ऍटुत्तु–(त्रिविक्रमावतार के संदर्भ में) स्थित होकर फिर उठाकर; मून्रु उलकम्–तीनों लोकों को; अळन्त पातम्–जिनसे नापा, उन चरणों को;

नीट्टितान्–(श्रीराम ने) बढ़ाया; मीट्टुम् नीट्टर्कु–फिर से पैर बढ़ाने (नापने) के लिए; वेरुम् ओर् अण्टम् उण्टो–अन्य अण्ड भी है क्या; तॉटर्न्तु ओटित्ताऩ् ऎऩ्ऩै–फिर पीछे लगे दौड़े क्यों; ऑऴिवु अऱ–अखण्ड; निऱैन्त तऩ्मै–सर्वव्यापी भाव को; काट्टिऩाऩ्–दरसाया; अऩ्ऱु चॆऩ्ऱ कटुमैयै–उस दिन की उनकी गति की तीव्रता को; आर् कणिक्कर् पालार्–कौन मापने में समर्थ है। ७९६

श्रीराम अपने पैरों को बढ़ाकर उसके पीछे सर्वत्र दौड़े। उन्हीं चरणों ने त्रिविक्रमावतार के सन्दर्भ में तीनों लोकों को नापा था। कवि पूछते हैं कि अब नापने के लिए कौन सा अण्ड है कि वे चरण इस तरह बढ़ते हैं ? उत्तर वे ही देते हैं कि सो बात नहीं। बल्कि वे अपने सर्वव्यापिता को दरसाने के लिए इस तरह सर्वत्र चलते हैं। उनकी तीव्र-गति ऐसी थी कि यही मालूम होता था कि वे सर्वत्र हैं। तो उनकी गति का माप कौन कर सकेगा ? । ७९६

❀कुऩ्ऱिडै यिवरु मेहक् कुऴुविडैक् कुदिक्कुङ् गूडच्
चॆऩ्ऱिडि लहलुन् दाऴिऱ् ऱीण्डलाऩ् दऩ्मैत् ताहुम्
निऩ्ऱदे पोल नीङ्गु निदिवऴि नेय नीट्टु
मऩ्ऱलङ् गोदै मादर् मऩमॆऩत् तहैयत् तम्माऩ् 797

अ मान्–वह मृग; कुऩ्ऱु इटै इवरुम्–पर्वत पर चढ़ता; मेक कुऴु इटै कुतिक्कुम्–मेघसमूह के मध्य कूदता; कूट चॆऩ्ऱिटिल्–पास गये तो; अकलुम्–दूर हट जाता; ताऴिल्–देर करें तो; तीण्टल् आम् तऩ्मैत्तु आकुम्–स्पर्श किया जा सके, ऐसी स्थिति में रहता; निऩ्ऱते पोल–जैसे खड़ा था वैसे ही; नीङ्कुम्–हट जाता; निति वऴि–धन के मार्ग में; नेयम् नीट्टुम्–प्रेम बढ़ानेवाली; मऩ्ऱल् अम् कोतै–सुगन्धित सुन्दर मालाधारिणी; मातर् मऩम् ऎऩ–(वार-)नारियों के मन ही; तकैयत्तु–के समान रहा। ७९७

वह हरिण पर्वतों पर चढ़ता; मेघसमूहमध्य कूदता। पास जाओ तो दूर भाग जाता। ठहर जाओ तो इतना पास आकर खड़ा रहता कि हाथ में आ जाय ! पर वैसे ही वह हट जाता। वह उन वेश्याओं के मन के समान रहा, जो धन की दिशा में अपना मन बढ़ाती हैं ! । ७९७

कायम्वे ऱाहिच् चॆय्युङ् गरुमम्वे ऱायिऱ् ऱऩ्ऱे
एयुमे यॆऩ्ऩिऩ् मुऩ्ऩ मॆण्णमे यिळवर्क् कुण्डे
आयुमॆय् यऱत्तिलाद वरक्करा नवर्हळ् शॆय्द
मायमे याय देयाऩ् वरुन्दिय दॆऩ्ऱाऩ् वळ्ळल् 798

कायम् वेऱु आकि–रूप ही अस्वाभाविक रहा; करुमम् वेऱु आयिऱ्ऱु–कार्य विपरीत दूसरा रहा; अऩ्ऱो–न; ऎऩ्ऩिऩ्–तो; एयुमे–उचित है क्या; मुऩ्ऩम्–पहले ही; ऎण्णमे–यही विचार; इळवर्कु उण्टे–अनुज का रहा; याऩ् वरुन्तियतु–मैंने जो कष्ट उठाया; आयुम् मॆय् अऱऩ् इलात–विवेकशील सत्य और धर्म से

रहित; अरक्कर् आतवर् चॅय्त–राक्षसों के किये हुए; मायमे आयते–कपट ही बना; अॅन्ऱान्–कहा; वळ्ळल्–प्रभु ने । ७९८

अब श्रीराम पछताने लगे। इसका शरीर कुछ है और काम उससे भिन्न! यह रूप और कार्य में कोई सम्बन्ध नहीं दिखता। यह अनुज लक्ष्मण पहले ही जानता था। मुझे इतना कष्ट उठाना पड़ रहा है, इसलिए कि विवेकशील सत्य और धर्म से रहित राक्षसों की माया मैंने नहीं जानी! —प्रभु आप से आप बोले। ७९८

❀ पऱ्ऱु वानिनि यल्लन् पहळियाल्, शॅऱ्ऱु वानिर् चॅलुत्तलुऱ् ऱान्ॅन
मऱ्ऱ माय वरक्कन् मनक्कॊळा, उऱ्ऱ वेहत्ति नुम्बरि नोङ्गिनान् 799

अ माय अरक्कन्–वह मायावी राक्षस; इति पऱ्ऱुवान् अल्लन्–अब मुझे नहीं पकड़ेगा; पकळियाल् चॅऱ्ऱु–अस्त्र से मारकर; वानिल् चॅलुत्तल् उऱ्ऱान्–स्वर्ग पहुँचा देगा; अॅन–ऐसा; मनम् कॊळा–मन में सोचकर; उऱ्ऱ वेकत्तिन्–शक्ति-भर वेग के साथ; उम्परिन् आङ्कितान्–आकाश में उछल उठा। ७९९

मारीच ने श्रीराम के मन की गति जान ली। उसने धारणा कर ली कि अब श्रीराम मुझे नहीं पकड़ेगा। शर से मुझे स्वर्ग पहुँचा देगा। यह सोचकर अपनी सारी शक्ति लगाकर वह आकाश में उछल पड़ा। ७९९

❀ अक्क णत्तिनि लैयनुम् वॅय्यदन्, शक्क रत्तिऱ् ऱहैवरि दायदोर्
चॅक्कर् मेनिप् पहळि शॅलुत्तिनान्, पुक्क दॆयम्बुक् किन्नुयिर् पोक्कॅना 800

अ कणत्तित्तिल्–उसी क्षण में; ऐयनुम्–प्रभु ने भी; तन् चक्करत्तित्तिल्–अपने ही (सुदर्शन-)चक्र के समान; तकॅवु अरितु आयतु–अकाट्य; ओर्–एक; वॅय्य–भयंकर; चॅक्कर् मेनि–लाल रंग के; पकळि–शर को; पुक्क तेयम् पुक्कु–यह जहाँ जाता है, वहाँ जाकर; इन् उयिर् पोक्कु–इसके प्यारे प्राण हर लो; अॅना–कहकर; चॅलुत्तितान्–चलाया। ८००

तभी महात्मा श्रीराम ने अपने सुदर्शन चक्र के समान अप्रतिहत और भयंकर अरुणवर्ण अस्त्र संधान कर यह कहते हुए छोड़ा कि वह जहाँ भी जाए, पीछे जाकर उसको हत कर दो। ८००

❀ नॅट्टि लैच्चरम् वञ्जनै नॅञ्जुऱप्, पट्ट दप्पॊळु दॆपहु वायिनाल्
अट्ट तिक्किनु मप्पुऱ मुम्बुह, विट्ट ळैत्तॊरु कुन्ऱॆन वीऴ्न्दनन् 801

नॅटु इलै चरम्–वह लम्बा पत्राकारफलयुक्त शर; वञ्चनै–वंचक; नॅञ्चु उऱ–हृदय पर लगा; पट्टतु–अन्दर घुसा; अ पॊऴुते–तभी; पकु वायिताल्–खुले मुख से; अट्ट तिक्कुम्–आठों दिशाओं में; अ पुऱमुम्–और बाहर में भी; पुक–जाकर व्याप्त हो ऐसा; अळैत्तु–पुकारते हुए; ऒरु कुन्ऱु अॅन–एक पर्वत के समान; वीऴ्न्तनन्–गिरा। ८०१

श्रीराम का लम्बा और पत्राकार फल का शर वंचक के वक्ष में

जा लगा और गड़ गया। तभी वह अपने खुले मुख से उन सीता और लक्ष्मण को उच्च स्वर में पुकारते हुए मरा और पर्वत के समान गिर गया। वह स्वर आठों दिशाओं और उनके बाहर भी जाकर व्यापा। ८०१

❀ वॅय्य वन्ऱ् नुरुविनिल् वीऴ्दलुम्, शॅय्य दन्ऱॅन्ऩच् चॅप्पिय तम्बियै
ऐयन् वल्लनॅन् ऩारुयिर् वल्लनान्, उय्य वन्दवन् वल्लनॅन् रुन्निनान् 802

वॅय्यवन्-क्रूर (मारीच) के; तन् उरु ऑटु-अपने निजी रूप के साथ; वीऴ्तलुम्-गिरने पर; चॅय्यतु अन्ऱु-यह सीधा नहीं; ॲन्न चॅप्पिय-ऐसा जिसने कहा, उस; तम्पियै-अनुज को; ऐयन् वल्लन्-मेरा तात बड़ा समर्थ है; ॲन् आर् उयिर्-मेरा प्राण-सम भाई; वल्लन्-समर्थ है; नान् उय्य वन्तवन्-मुझे उबारने आया वह; वल्लन्-समर्थ है; ॲन्ऱु-ऐसा; उन्निनान्-(श्रीराम ने साधुवाद के साथ) स्मरण किया। ८०२

क्रूर मारीच अपने निजी रूप में गिरा। उसको देखते ही श्रीराम के मन में भाई लक्ष्मण और उनकी दूरदर्शिता का स्मरण आया। वे बोल उठे कि हा! यह मृग सीधा नहीं है। यह मेरे भाई ने कहा था। मेरा तात सामर्थ्यवान है; मेरा प्राण-सम भाई सामर्थ्यवान है! मुझे उबारने के लिए जनित अनुज लक्ष्मण सामर्थ्यवान है! उन्होंने भाई के प्रति गौरव-बुद्धि के साथ उनका स्मरण किया। ८०२

❀ आशै नीळत् तरऱ्ऱिनन् वीऴ्न्दवन्, नीशन् मेनियै निन्ऱुर नोक्किनान्
माशिन् मादवन् वेळ्वियिन् वन्दमा, रीश नेयिव नॅन्बदु तेऱिनान् 803

आचै नीळतुतु-दिशा जितने लम्बे; अरऱ्ऱित-रुदन-स्वर निकालकर; वीऴ्न्त-जो गिरा; अ नीचन् मेनियै-उस नीच के शरीर को; निन्ऱु-खड़ा होकर; उऱ-खूब; नोक्किनान्-(श्रीराम ने) देखा; माचु इल्-अकलंक; मातवन् वेळ्वियिन्-महातपस्वी (विश्वामित्र के) यज्ञ में; वन्त मारीचने-जो आया था, वही मारीच; इवन्-यह है; ॲन्पतु-यह; तेऱिनान्-पहचान लिया। ८०३

श्रीराम ने नीच मारीच के मृतक शरीर को खूब ध्यान देकर देखा। उसका क्रन्दन स्वर दिशाओं का जितना लम्बा था! अकलंक महा तपस्वी विश्वामित्र के यज्ञ में यही आया था। उन्होंने उस मारीच को पहचान लिया। ८०३

❀ पुळैत्त वाळि युरम्बुहप् पुल्लियोन्, इळैत्त मायैयि नॅन्गुर लालॅडुत्
तळैत्त दुण्डदु केट्टयर् वॅय्दुमाल्, मळैक्कण् णेळैयॅन् रुळ्ळम् वरुन्दिनान् 804

पुळैत्त वाळि-भेदकर जो चला, उस शर के; उरम् पुक-छाती में घुसने पर; पुल्लियोन्-उस नीच ने; इळैत्त मायैयिन्-माया करके; ॲन् कुरलाल्-मेरे-से स्वर में; ॲटुत्तु-ऊँचा; अळैत्तततु उण्टु-(सीता और लक्ष्मण को) बुलाया, यह तो है; अतु केट्टु-वह सुनकर; मळै कण् एळै-मेघ-सी (अश्रुभरी) आँखों की सीता; अयर्वु

अ॓य्तुम् आल्—व्यथित हो जायगी अवश्य; अ॓न्ऱु उळ्ळम् वरुन्तिनान्—यह सोचकर श्रीराम खिन्नमन हुए। ८०४

मेरे शर के उसके वक्ष में भेदकर चलने पर इस नीच ने मेरे-से स्वर में टेर लगायी है! यह सुनकर सीता अवश्य रोती होंगी। दुःखाक्रान्त हो जायँगी। यह सोचकर श्रीराम दुःखी हुए। ८०४

❀ माऱ्ऱ मिन्नदु मायमा रीशनॆन्, ऱेऱ्ऱ मुन्नुणरन् दानिरुन् दानॆन
दाऱ्ऱ रेऱु मरिविन नादलाल्, तेऱ्ऱु मालिळै योॆनॆनत् तेऱिनान् 805

इन्ततु—ऐसे; माऱ्ऱम्—(मारीच के कहे, हा सीते, हा लक्ष्मण के) शब्दों को; मुन्—पहले ही; माय मारीचन् अ॓न्ऱु—माया का मारीच, यह; एऱ्ऱम् उणर्न्तान्—जिन्होंने निश्चित रूप से जाना था; इळैयोन् इरुन्तान्—वह मेरा कनिष्ठ उधर है; अ॓न्तु आऱ्ऱल् तेरुम्—मेरी शक्ति को जानने में समर्थ; अऱिवितन्—बुद्धिशाली; आतलाल्—इसलिए; तेऱ्ऱुम्—वह सीता को धीरज दिलायगा; अ॓न—ऐसा सोचकर; तेऱिनान्—श्रीराम आश्वस्त रहे। ८०५

उन्होंने आगे तर्क किया। इसको लक्ष्मण ने सुना होगा। उसी ने पहले इसे मारीच जान लिया था। वह मेरी शक्ति का भी परिचय रखता है। इसलिए वह सीता को धीरज बँधायगा। श्रीराम को इस विचार से कुछ आश्वासन हुआ। ८०५

❀ माळ्व देतॊऴि लाहवन् दानलन्, शूळ्व दोर्पॊरु ळुण्डिवन् शॊल्लिनाल्
मूळ्व देद मदुमुडि यामुनम्, मीळ्व देनल नॆन्ऱवन् मीण्डनन् 806

माळ्वते तॊऴिलाक—मरना ही कार्य समझकर; वन्तान् अलन्—आया नहीं है; इवन् चॊल्लिनाल्—इसके शब्दों से; चूळ्वतु ओर् पॊरुळ् उण्टु—संभवनीय उपद्रव है; मूळ्वतु एतम् अतु—संभवनीय वह हानि; मुटिया मुनम्—पूरी हो, उसके पूर्व ही; मीळ्वते नलन्—लौट जाना ही श्लाघ्य है; अ॓न्ऱु—सोचकर; अवन् मीण्टनन्—वे लौट आये। ८०६

श्रीराम ने आगे सोचा। यह मारीच केवल मरने का विचार लेकर नहीं आया है। इसके शब्दों से अवश्य एक उपद्रव होगा। कुछ उपद्रव हो जाय, इसके पूर्व ही पर्णशाला में लौट जाना ही भला होगा। यह सोचकर वे लौट आने लगे। ८०६

9. शडायु उयिर्नीत्त पडलम् (जटायु प्राण-त्याग पटल)

शङ्ग डुत्त तनिक्कडन् मेनियार्, कङ्ग डुत्त निलैमै यरैन्दनॆम्
कॊङ्ग डुत्त मलर्क्कुळर् कॊम्बनाट्, किङ्ग डुत्त तहैमै यियम्बुवाम् 807

चङ्कु अटुत्त—शंखों से भरे; तनि कटल—उत्तम समुद्र के; मेनियार्कु—वर्ण के शरीरी की; अङ्कु अटुत्त—वहाँ जो रही; निलैमै अरैन्ततॆम्—वह स्थिति बतायी;

कोङ्कु अट्टुत्त मलर्–सुवासित पुष्प की; कॊम्पु अत्ताट्कु–शाखा-सरीखी देवी का; इङ्कु अट्टुत्त तकैमै–यहाँ जो गति रही; इयम्पुवाम्–वह कहेंगे। ८०७

शंखों से भरे नीले समुद्र के समान जिनका सुन्दर रंग है, उन श्रीराम की जो स्थिति रही वह हमने बतायी। अब पर्णशाला में सुवासित पुष्पशाखा-सरीखी सीतादेवी का क्या हाल रहा —वह बतायँगे। ८०७

❀ ऎयिऱ् लैत्तवु मुळैदिऱत् देङ्गिय, शॆयिर्द लैक्कॊण्ड शॊऱ्चॆवि शेर्दलुम्
कुयिऱ् लत्तिडै युऱ्ऱदोर् कॊळ्हैयाळ्, वयिऱ् लैत्तु विळुन्दु मयङ्गिनाळ् 808

ऎयिऱ् अलैत्ततु–दाँतों को पीसकर; मुळै तिऱन्तु–गुफा के समान मुख खोलकर; एङ्किय–घोषित; चॆयिर् तलै कॊण्ट–कपट-भरा; चॊल्–शब्द; चॆवि चेर्तलुम्–ज्योंही कान में पड़ा त्योंही; कुयिल् तलत्तु इटै उऱ्ऱतु–कोयल नीचे गिरी हो, ऐसी; ओर् कॊळ्कैयाळ्–एक स्थिति में पड़कर; वयिऱ् अलैत्तु–पेट पीटते हुए; विळुन्तु–गिरकर; मयङ्किनाळ्–मूर्च्छित हुईं। ८०८

दाँत पीसते हुए मारीच ने अपना कन्दरा-सा मुख खोलकर बड़े ही वंचक शब्द उच्चारे थे। जब वे देवी के कान में पड़े तो वे पेट पीटती हुई भूमि पर गिरकर मूर्च्छित हो गयीं। वे उस कोयल की-सी स्थिति में दिखाई दीं, जो तरु की उच्च शाखा से भूमि पर गिर गयी हो। ८०८

❀ पिडित्तु नल्हिव् वुळैयॆन्ऱ् पेदैयेन्, मुडित्त नॆन्ऱ्मुदल् वाळ्वॆन्ऱ् मॊय्यळल्
कॊडिप्प डिन्द दॆन्ऱॆडुङ् गोळरा, इडिक्कि डैन्द दॆन्पपुरण् डेङ्गिनाळ् 809

इ उळै पिटित्तु नल्कु–यह मृग पकड़ दीजिए; ऎन्ऱ–कहकर; पेतैयेन्–जड़मति मैंने; मुतल् वाळ्वु–जीवनाधार को; मुटित्ततॆन्–मरवा दिया; ऎन्ऱ–कहकर; मॊय् अळल्–बड़ी आग; कॊटि पटिन्ततु ऎन–लता पर लग गयी जैसे; नॆटुम् कोळ् अरा–लम्बा, वली सर्प; इटिक्कु इटैन्ततु ऎन–वज्राहत हुआ जैसे; पुरण्टु एङ्किनाळ्–लोटती हुई रोयीं। ८०९

जब वे होश में आयीं तो विलाप करने लगीं कि हाय ! मैंने क्या कर दिया ? 'इस मृग को पकड़कर मेरे पास दीजिए' कहकर मैंने अपने जीवनाधार को ही गँवा दिया। अग्निदग्ध पुष्पलता के समान और वज्राहत दीर्घ वली सर्प के समान वह भूमि पर लोटती हुई रोयीं। ८०९

❀ कुऱ्ऱम् वीय्न्द गुणत्तिनॆङ् गोमहन्, मऱ्ऱै वाळरक् कन्बुरि मायैयाल्
इऱ्ऱु वीळ्न्दन नॆन्ऱवु मॆन्ऩयल्, निऱ्ऱियो विळैयो यॊरुनी यॆन्ऱाळ् 810

कुऱ्ऱम् वीय्न्त कुणत्तिन्–कलंक-रहित कल्याणगुणपूर्ण; ऎन् कोमकन्–मेरे नाथ; मऱ्ऱै–पराये; वाळ् अरक्कन् पुरि मायैयाल्–क्रूर राक्षस के किये हुए कपट से; इऱ्ऱु वीळ्न्ततन्–मरकर गिर गये; ऎन्ऱवुम्–जानने के बाद भी; इळैयोय् ओरु नी–एक अनुज, तुम भी; ऎन् अयल्–मेरे पास में ही; निऱ्ऱियो–खड़े रहते हो क्या; ऎन्ऱाळ्–पूछा (लक्ष्मण से)। ८१०

सीताजी ने देखा कि लक्ष्मण खड़े हैं। उनको कोप आया। उन्होंने कहा— मेरे अकलंक कल्याणगुणपूर्ण नाथ शत्रु राक्षस के कपट से आहत हो गिर गये। यह जानने के बाद भी तुम, उनके अनुज, इधर ही मेरे पास में खड़े रहोगे क्या? । ८१०

*** ऍण्मैया रुलहिऩि लिरामऱ् केऱ्ऱमोर्, तिण्मैया रुळरॆऩ्ऩऱ् चॆप्पऱ् पालदो**
पॆण्मैया लुरैशॆय्प् पॆरुदि रालॆऩ्ऩ, उण्मैया ऩवैयवट् कुणरक् कूऱिऩाऩ् 811

ऍण्मै आर् उलकिल्–लघुतायुक्त लोक में; इरामऱ्कु एऱ्ऱम्–श्रीराम से बढ़कर; ओर् तिण्मैयार्–एक बलवान; उळर् ऍऩ्ऩल्–होगा कहना; चॆप्पल् पालतो–अभिव्यक्ति के अर्ह है क्या; पॆण्मैयाल्–स्त्री-बुद्धि के कारण; उरै चॆय पॆरुतिर्–यह कहने चलीं; ऍऩ–ऐसा; उण्मैयाऩ्–सत्यज्ञ ने; अवैयवट्कु–उन्हें; उणर कूऱिऩाऩ्–समझाकर कहा। ८११

यह संसार लघुतापूर्ण है। इसमें श्रीराम से बढ़कर कोई बली है, यह कथन उच्चारण योग्य है क्या? स्त्री-बुद्धि के कारण आप ऐसी बात करती हैं। लक्ष्मण अपनी सूझ-बूझ से सच्ची बात जान सके थे। उन्होंने सीताजी को समझाया। ८११

एऴुमे कडलुल हेऴु मेऴुमे, शूऴुमेऴ् मलैयवै तॊडर्न्द शूऴल्वाय्
वाऴुमे ऴैयर्शिऱु वलिक्कु वाळमर्त्, ताऴुमे यिराहवऩ् तऩिमै तैयलीर् 812

तैयलीर्–देवी; कटल् एऴुम्–सातों समुद्र; उलकु एऴुम्–(दो के) सातों लोक; चूऴुम् एऴ् मलै–घेरे हुए स्थित सात पर्वत; तॊटर्न्त चूऴल् वाय्–इनसे लगे स्थल; वाऴुम्–(यहाँ के) वासी; एऴैयर् चिऱु वलिक्कु–दुर्बल लोगों के बल के सामने; इराकवऩ् तऩिमै–श्रीराघव का एकाकी बल; वाळ् अमर् ताऴुमे–कठोर युद्ध में नीचा हो जायगा क्या। ८१२

देवी! सात समुद्र, सात (दो) लोक, उनको घेरे रहनेवाले सात पर्वत और उनसे संयुक्त स्थानों में जो वास करते हैं, उन निर्बलों के अल्प बल के सामने एकाकी राघव की शक्ति भयंकर युद्ध में कम हो रहेगी क्या? । ८१२

पारॆऩ्ऩक् कऩलॆऩप् पुऩलॆऩप् पवऩवाऩ्
पेरॆऩ्ऩैत् तवैयवऩ् मुऩियिऩ् पॆरुमाल्
कारॆऩ्ऩक् करियवक् कमलक् कण्णऩै
आरॆऩक् करुदियिव् विडरि ऩाऴ्हिऩ्ऱीर् 813

पार् ऍऩ्ऩ–भूमि; कलऩ् ऍऩ–आग; पुऩल् ऍऩ–जल; पवऩम् वाऩ् पेर् ऍऩ्ऩत्तु अवै–पवन, आकाश नाम का कोई भी; अवऩ् मुऩियिल्–वे कोप करेंगे तो; पॆरुम् आल्–अस्त-व्यस्त होगा; कार् ऍऩ करिय–मेघसम श्यामल; कमल कण्णऩै–कमलाक्ष

को; आर् ॲन करुति–कौन है, समझकर; इ इटरिल् आऴ्कित्ऱीर्–इस कदर दुःख में मग्न रहती हैं। ८१३

पृथ्वी, अग्नि, जल, पवन, आकाश नाम के इनमें कोई भी (भूत) उनके कोप के सामने ठहर न सकेगा और टूटकर बिखर जायगा। उन मेघश्याम कमलाक्ष को आप कौन समझकर इतना घबड़ाती हैं? इतने दुःखमग्न हैं? । ८१३

❀ इडैन्दुपोय्	निशिशरऱ्	किराम	ॲव्वम्वन्
दडैन्दपो	दळैक्कुमे	वळैक्कु	मामॅत्तिन्
मिडैन्दपे	रण्डङ्गण्	मेल	कीळन
उडैन्दुपो	ययन्मुद	लुयिरुम्	वीयुमाल् 814

इरामन्–श्रीराम; निचिचरऱ्कु–एक राक्षस से; इटैन्तु पोय्–हारकर पीछे हटकर; ॲव्वम् वन्तु अटैन्त पोतु–संकटग्रस्त होने पर; अळैक्कुमे–पुकार मचायँगे क्या; अळैक्कुम् आम् ॲत्तिल्–बुलाने का मौका आ जायगा तो; मेल कीळन–ऊपर और नीचे; मिटैन्त–लगे रहे; पेर् अण्टङ्कळ्–बड़े-बड़े अण्डगोल; उटैन्तु पोय्–टूट जायँगे; अयन् मुतल् उयिरुम्–अजादि जीव; तीयुम्–जल जायँगे। ८१४

श्रीराम निशिचर के सामने साहस खोकर पीछे हटेंगे और सहायता के लिए पुकार मचायँगे भी? यह क्या कहती हैं आप? यदि ऐसी नौबत आ गयी तो समझिए कि नीचे और ऊपर के सभी अण्डगोल फट जायँगे, और अज से लेकर सारी जीवराशियाँ जल-भुन जायँगी। ८१४

माऱ्ऱमॅन्	पहर्वदु	मण्णुम्	वानमुम्
पोऱ्ऱवन्	ऱिरिपुर	मॅरित्त	पुङ्गवन्
एऱ्ऱिनिन्	ऱॅय्दविल्	लिऱ्ऱ	दॅम्बिरान्
आऱ्ऱलि	न्मैवदो	राऱ्ऱ	लिन्मैयाल् 815

मण्णुम् वानमुम् पोऱ्ऱ–भूलोकवासियों और आकाशवासियों से प्रशंसित होकर; वन् तिरिपुरम् ॲरित्त–सशक्त त्रिपुरों को जिन्होंने जलाया; पुङ्कवन्–उन देव (शिव) के; एऱ्ऱि निन्ऱु–प्रत्यंचा चढ़ाकर; ॲय्त विल्–शर जिससे छोड़े गये, उस धनु का; ॲम्पिरान् आऱ्ऱलिन्–मेरे नाथ की शक्ति जितनी; अमैवतु ओर् आऱ्ऱल्–उतने से युक्त बल; इन्मैयाल्–नहीं रहा, इसलिए; इऱ्ऱतु–टूट गया (वह धनु); माऱ्ऱम् ॲन् पकर्वतु–किन शब्दों में (श्रीराम की शक्ति) कही जाय। ८१५

श्रीशिवजी ने बलवान त्रिपुरों को अपने एक धनुष की सहायता से जलाया था। उनकी बड़ी वाहवाही हुई। देवों ने और भूलोकवासियों ने उनकी बड़ी प्रशंसा की! उस धनु में हमारे प्रभु के बल को सहने की शक्ति नहीं रही। वह टूट गया। श्रीराम की शक्ति का परिचय फिर किस बात को लेकर कहा जाय? । ८१५

कावल तीण्डुनीर् करुदिऱ् ऎय्दुमेल्
मूवहै युलहमु मुडियु मुन्दुळ
तेवरु मुनिवरु मुदल शॆव्वियोर्
एवरुम् वीवर्मऱ् ऱऱमु मॆञ्जुमाल् 816

कावलन्–लोकरक्षक; ईण्टु–अब; नीर् करुतिऱ्ऱु–आप जो सोचती हैं, वैसे; ऎय्तुम् एल्–(नाश को) प्राप्त होंगे तो; मूवकै उलकमुम् मुटियुम्–तीनों लोक मिट जायँगे; मुन्तु उळ–आदि रहनेवाले; तेवरुम्–देव; मुनिवरुम्–और मुनि; मुतल–आदि; चॆव्वियोर् एवरुम्–श्रेष्ठ सभी; वीवर्–मर जायँगे; मऱ्ऱु–और भी; अऱमुम् ऎञ्चुम्–धर्म भी मिट जायगा। ८१६

जैसे आप समझती हैं, वैसी हालत लोकरक्षक पर आयी होती तो तीनों लोक मिट जाते ! आदिदेव, ब्रह्मादि, मुनि और अन्य सभी श्रेष्ठ लोग मर जाते ! और भी धर्म नहीं टिकता। ८१६

❀ परक्कवॆन् पहर्वदु पहळि पण्णवन्
तुरक्कवङ् गदुपडत् तॊलैन्दु शोर्हिन्ऱ
अरक्कनव् वुरैयॆडुत् तरऱ्ऱि नानदऱ्
किरक्कमुऱ् ऱिरङ्गलि रिरुत्ति रीण्डॆन्ऱान् 817

परक्क ऎन् पकर्वतु–विस्तार के साथ क्या कहना; पण्णवन्–हमारे नाथ ने; अङ्कु पकळि तुरक्क–वहाँ अस्त्र चलाया और; अतु पट–वह लगा; तॊलैन्तु चोर्किन्ऱ अरक्कन्–बल खोकर मिटते हुए उस राक्षस ने; अ उरै ऎटुत्तु–वे शब्द कहकर; अरऱ्ऱिनान्–प्रलाप किया; अतऱ्कु–उससे; इरक्कम् उऱ्ऱु–दुःख मानकर; इरङ्कलीर्–मत रोइए; ईण्टु इरुत्तिर्–यहाँ रहिए; ऎन्ऱान्–कहा। ८१७

विस्तार क्या करना ? हुआ यही होगा कि श्रीराम ने बाण छोड़ा; बाण मारीच पर लगा और मारीच जान खोकर मरा। मरने से पहले उसने ऐसा स्वर करके प्रलाप किया। आप कुछ और समझकर उस दुहाई के पीछे दुःखी मत होइए और मत रोइए। निश्चित यही रहिए। —लक्ष्मण ने ढाढस दिया। ८१७

❀ ऎन्ऱव नियम्बलु मॆळुन्द शीऱ्ऱत्तळ्
कॊन्ऱन वित्तलळ् कॊदिक्कु मुळ्ळत्तळ्
निन्ऱनिन् निलैयिदु नॆऱियिऱ् ऱन्ऱॆना
वन्ऱऱु कण्णित्ताळ् वलिन्दु कूऱिनाळ् 818

ऎन्ऱु–ऐसा; अवन् इयम्पलुम्–उनके कहने पर; ऎळुन्त–उत्तेजित; चीऱ्ऱत्तळ्–क्रोधिता; कॊन्ऱु अन–मारी जायँगी, ऐसा; इन्तलळ्–संकटग्रस्त; कॊतिक्कुम् उळ्ळत्तळ–खौलते चित्त की; वल् तऱुकण्णिनाळ्–सुदृढ़ निडरता के साथ (सीताजी ने); निन्ऱु निन् निलै इतु–अपनायी हुई तुम्हारी यह स्थिति; नॆऱियिऱ्ऱु

अन्रु–नीतिसम्मत नहीं; अँन्–ऐसा; वलिन्तु–कठोर स्वर में; कूरुवाळ्–कहने लगीं। ८१८

लक्ष्मण का वचन सुनकर सीताजी का क्रोध और उमड़ पड़ा। स्वयं उनको कोई मार रहा हो, उतना दुःख हुआ। उबल पड़ी और अनोखे क्रूर निडरता के साथ उन्होंने कठोर शब्दों में कहा कि यह तुम्हारी स्थिति नीति-सम्मत नहीं है। ८१८

❀ ऑरुपहल् पळहित्ता रुयिरै यीवराल्
पॅरुमह नुलैवुऱ्ऱ पॅऱ्ऱि केट्टुनी
वॅरुवलै नित्तृरत्तै वेऱॅन् यात्तिनि
ॲरियिडैक् कडिदुवीळ्न् दिऱप्पे त्तीण्डॅन्ता 819

ऑरु पकल् पळकित्तार्–एक दिन के परिचित भी; उयिरै ईवर्–प्राण दे देंगे; पॅरुमकन्–हमारे नाथ; उलैवु उऱ्ऱ पॅऱ्ऱि–मर गये, यह गति; नी केट्टुम्–तुमने कान से सुनी, तो भी; वॅरुवलै–भीत नहीं हो; नित्तृरत्तै–खड़े हो; वेऱु अॅन्–दूसरा मार्ग अब मेरे लिए क्या रहा; यान्–मैं; इत्ति–अब; ॲरि इटै–आग में; कटितु वीळन्तु–जल्दी प्रवेश करके; ईण्टु–यहाँ; उयिर् इऱप्पॅन्–प्राण त्यागकर मर जाऊँगी; अॅन्ता–कहकर। ८१९

आगे मर्मघातक शब्द में कहा कि एक ही दिन के परिचित हों, तो भी वे अपने मित्र को बचाने के लिए अपने प्राण दे देंगे। हमारे नायक पर क्या बीता, यह तुम जानते हो। जानकर भी विना किसी भय के या संशय के मेरे ही पास खड़े हो! अब मेरे पास कोई दूसरा चारा नहीं है। अब मैं शीघ्र जलती आग में कूद पड़ूँगी और मर जाऊँगी। ८१९

❀ तामरै वनत्तिडैत् तावु मन्नम्बोल्
तूमवॅङ् गाट्टॅरित् तॉडर्हिन् ऱाडन्तैच्
चेमविऱ् कुमरनुम् विलक्किच् चीऱडिप्
पूमुह नॅडुनिलम् पुल्लिच् चॊल्लुवान् 820

तामरै वनत्तिटै–कमल-कानन में; तावुम् अन्नम् पोल्–लपकते हंस के समान; तूम वॅम् काट्टु ॲरि–धुएँ-सहित भयंकर दावाग्नि की ओर; तॉटर्कित्ऱाळ् तनै–जो चलने लगीं, उनको; चेम विल् कुमरतुम्–संरक्षक धनुर्धर कुमार भी; विलक्कि–रोक कर; चिऱु अटि पू मुकम्–छोटे चरण-पंकजों के सामने; नॅटु निलम् पुल्लि–लम्बी भूमि पर गिरकर (दण्डवत करके) चॊल्लुवान्–बोलने लगे। ८२०

यह कहकर सीताजी कमलकानन में लपकनेवाले कलकण्ठ (हंस) के समान धुआँ उगलती हुई जलनेवाली दावाग्नि की ओर दौड़ने लगीं। संरक्षक धनुर्धर लक्ष्मण ने उनको रोका, उनके चरण-पंकजों के सामने गिरकर दण्डवत की और कहा। ८२०

❀ तुञ्जुव दॅऩ्ऩैनीर् शॊऩ्ऩ शॊल्लैयान्
अञ्जुवॅन् मऱुक्किलॅ नवलन् दीर्न्दिनि
दिञ्जिरु मडियने नेहु हिन्ऱॅऩ्
वॅञ्जिन्न विदियिनै वॅल्ल वल्लमो 821

तुञ्चुवतु ॲन्ने–आप मरें क्यों; नीर् चॊन्न चॊल्लै–आपकी कही हुई बात से; यान् अञ्चुवॅन्–मै डरता हूँ; मऱुक्किलेन्–आपकी बात मानने से इनकार नहीं करूँगा; इत्ति–अब; अवलम् तीर्न्तु–चिंता त्यागकर; इञ्चु इरुम्–यहीं रहिए; अटियेन् एकुकिन्ऱॆन्–मैं जाता हूँ; वॅम् चित्त वितियित्तै–भयंकर क्रोधी विधि को; वॅल्ल वल्लमो–हरा सकेंगे क्या। ८२१

भगवती ! आप क्यों मरें ? आपकी बात मुझे भयभीत कर रही है। मैं आपकी आज्ञा का भंग नहीं करूँगा। अब आप दुःख छोड़कर निश्चित यहीं रहिएगा। दास मैं जा रहा हूँ। विधि क्रूर है और क्रुद्ध है। उसको हम कैसे जीत सकेंगे ? । ८२१

❀ पोहिन्ऱे नडियनेन् पुहुन्दु वन्दुके
डाहिन्ऱ दैयन्ऱ नाणै नीर्मऱुत्
तेहॆन्ऱि रिरुक्किन्ऱिर् तमिय रॅन्ऱुपिन्
वेहिन्ऱ शिन्दैयेन् विडैहॊण् डॆन्ना 822

अटियत्तेन् पोकिन्ऱेन्–दास मैं जाता हूँ; केटु–बड़ा संकट; पुकुन्तु वन्तु आकिन्ऱतु–घुसकर आया हुआ है; ऐयन् तन् आणै–प्रभु श्रीराम की आज्ञा; नीर् मऱुत्तु–आप काटती है और; एकु ॲन्ऱीर्–जाओ कहती हैं; तमियर् इरुक्किन्ऱिर्–अकेली रहती है; ॲन्ऱु–कहकर; पिन्–फिर; वेकिन्ऱ चिन्तैयेन्–तप्तचित्त होकर; विटै कॊण्टेन्–विदा लेता हूँ; ॲन्ना–कहकर। ८२२

मै जा रहा हूँ। बहुत बड़ी विपदा आ रही है। प्रभु की आज्ञा का उल्लघन करके आप मुझे भेज रही है। अब एकाकिनी रहेंगी। लक्ष्मण ने यह कहा। फिर उन्होंने जारी किया। मेरा मन संतप्त है ! उसी स्थिति में मै आपसे आज्ञा ले रहा हूँ। ८२२

❀ इरुप्पने लॅरियिडै यिऱप्प रालिवर्
पॊरुप्पनै यानिडैप् पोवॆ नॆय्ॅदिल्
अरुप्पमिल् केडुवन् दडैयु मारुयिर्
इरुप्पनेर् कॆन्शॆय लॆन्ऱु विम्मिनान् 823

इरुप्पतेल्–यहाँ रहता हूँ तो; इवर्–ये; एरि इटै इऱप्पर्–आग में (कूदकर) मर जायँगी; पॊरुप्पु अनैयान् इटै–पर्वत-सम श्रीराम के स्थान पर; पोवन् ए ऍतिल्–जाऊँगा तो; अरुप्पमिल्–अनल्प; केटु वन्तु अटैयुम्–विपदा आ जायगी; आर् उयिर् इरुप्पतेऱ्कु–साथ लगे प्राण के साथ जो रहता हूँ मुझे; ॲन् चॆयल्–क्या करना है; ॲन्ऱु–ऐसा; विम्मितान्–(सोच में पड़कर) दुखी हुए। ८२३

लक्ष्मण को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने सोचा कि अगर मैं रह जाऊँगा, तो ये आग में कूदकर मर जायँगी। अगर मैं पर्वत-सम श्रीराम के पास चला जाऊँ तो अनल्प, बहुत बड़ी कोई विपदा आयगी, अवश्य। हाय! दुर्भाग्य! मैं जीवित हूँ। प्यारे प्राणों के साथ हूँ। क्या करूँ मैं? । ८२३

अऱऩ्दऩ्ऩा लऴिविल दाह लाक्कलाम्
इऱऩ्दुपा डिवर्क्कुरु मिरुक्कि ऩ्विवऴि
तुऱऩ्दुपो मिदऩ्ऩैये तुणिवॆऩ् ऱॊल्विऩैप्
पिऱऩ्दुपोऩ् दिदुपडुम् पेदै येऩ्ऩा 824

इ वऴि इरुक्कित्-यहीं रहूँगा तो; इवर्क्कु-इन्हें; इऱऩ्तुपाट्टु उरुम्-मरना पड़ जायगा; तॊल् विऩै पिऱऩ्तु-पूर्व-कर्म के फलस्वरूप जन्म लेकर; पोऩ्तु-इधर आकर; इतु पटुम्-इस संकट में जो पड़ा हूँ; पेतैयेऩ्-अबोध मैं; तुऱन्तु पोम् इतऩ्ऩैये-इधर से जाने का यही; तुणिवॆऩ्-निश्चय करूँगा; अऱम् तऩ्ऩाल्-धर्मद्वारा; अऴिवु इलतु आकल्-न मरने का काम; आक्कलाम्-सिद्ध हो सकता है; ऎऩ्ऩा-सोचकर । ८२४

फिर भी सोचा— यहीं रह जाऊँ क्या? नहीं। यहीं रहूँ तो इनकी मर जाने की हालत आ जायगी। मैं अभागा, प्राचीन कर्म-वश जनित होकर यह संकट उठा रहा हूँ। क्षुद्र आत्मा मैं यही करूँगा— जाने का निश्चय ही ठीक लगता है। शायद धर्म सबको बचा ले और नाश होने से रुक जाय। ८२४

❀ पोवदु पुरिवऩाऩ् पुहुन्द दुण्डॆऩिल्
कावल्शॆय् यॆरुवैयिऩ् ऱलैवऩ् कण्णुरुम्
आवदु काक्कुमॆऩ् ऱऱिवुऱ् ऱव्वऴित्
तेवर्शॆय् दवत्तिऩ्ऩाऱ् चॆम्मल् लेहिऩाऩ् 825

नाऩ् पोवतु पुरिवल्-मैं गमन करूँगा; पुकुन्ततु उण्टु ऎऩिल्-(संकट कुछ) आयगा तो; कावल् चॆय् ऎरुवैयिऩ् तलैवऩ्-हमारे संरक्षण में लगे हुए गृध्रराज; कण् उरुम्-देखेंगे; आवतु काक्कुम्-भरसक रक्षा करेंगे; ऎऩ्ऱु अऱिवु उऱ्ऱु-यह जानकर; तेवर् चॆय् तवत्तिऩाल्-देवों के तप के कारण; अ वऴि-वहाँ से; चॆम्मल्-उत्तम लक्ष्मण; नीङ्किऩाऩ्-चले । ८२५

फिर लक्ष्मण ने सीताजी से कहा कि मैं गमन करता हूँ। 'गृध्रराज जटायु हमारे रक्षक हैं। वे ध्यान रखेंगे और भरसक सहायता करेंगे।' यह सोचकर वे चल पड़े। हाँ! देवताओं के तप को फलीभूत होना था। इसलिए वे उत्तम लक्ष्मण वहाँ से चले। ८२५

❀ इळैयव ऩेहलु मिऱवु पार्क्किऩ्ऱ
वळैयॆयिऱ् ऱिरावणऩ् वञ्ज मुऱ्ऱुवाऩ्

मुळैवरित् तण्डीरु मून्ऱु मुप्पहैत्
तळैयरि तवत्तवर् वडिवुन् दाङ्गिनान् 826

इळैयवन् एकलुम्–लघुराज लक्ष्मण के जाने पर; इरवु पार्क्किन्ऱ–उनके हटने की टोह में जो रहा; वळै ऍयिऱ्ऱु रावणन्–वह वक्रदाँतों का रावण; वञ्चम् मुऱ्ऱुवान्–कपटकार्य साधने के लिए; वरि–सवन्ध; मुळै तण्टु ओरु मून्ऱुम्–बाँसों का त्रिदण्ड और; मु पकै तळै अरि–(काम, क्रोध, लोभ के) तीन शत्रुवन्धन को जो काट चुका; तवत्तु अवर् वटिवुम्–ऐसे तपस्वी का वह रूप; ताङ्कितान्–ले लिया। ८२६

लघुराज लक्ष्मण के जाते ही, उसकी टोह में जो रहा, वह वक्रदन्तोरा रावण अपना कपट-कार्य साधने के हेतु संन्यासी का वेश धरकर आया। हाथ में त्रिदण्ड, और काम, क्रोध और लोभ तीनों अन्तश्शत्रुओं के जयी एक तपोधन का वेश लेकर वह प्रकट हुआ। ८२६

❀ ऊणिल नामॅन वुलर्न्द मेनियन्, शेणॅरि वन्ददोर् वरुत्तच् चॅय्हैयन्
पाणियि नळन्दिशै पडिक्किन् ऱानॅन, वीणैयि निशैपड वेदम् बाडुवान् 827

ऊण् इलन् आम् ऍन–निराहार रहा हो जैसे; उलर्न्त मेनियन्–कृश-शरीरी; चेण् नॅऱि वन्तत्तु–लम्बा मार्ग आया जैसे; ओर् वरुत्त चॅय्कैयन्–कष्ट-प्रकाशक, चेष्टा-प्रदर्शक; पाणियिन् अळन्तु–ताल-मेल के साथ; इचै पटिक्किन्ऱान् ऍन–संगीत सुनाता हो जैसे; वीणैयिन् इचैपट–वीणा-वादन के मेल में; वेतम् पाटुवान्–सामवेद-गायक। ८२७

उसका शरीर निराहार रहे मनुष्य के समान शुष्क था। उसकी चेष्टाएँ यह प्रदर्शित कर रही थीं, मानो वह बहुत दूर चलकर आया हो। ताल के मेल के साथ संगीत सुनाता जैसा वह वीणा के स्वर के मेल में सामवेदगान करता आया। ८२७

❀ पूप्पोदि यविळ्न्दन नडैयन् पूदलम्
तीप्पोदिन् दामॅन मिदिक्कुञ् जॅय्हैयान्
काप्परु नडुक्कुरुङ् गालन् कैयिनन्
मूप्पॅनुम् परुवमु मुनिय मुऱ्ऱिनान् 828

पू पोति अविळ्न्तु अन–पुष्पदल विकसित होते है जैसे; नटैयन्–मृदुचाल; पू तलम् ती पोतिन्तु आम्–भूमि पर आग भरी हो; ऍन–ऐसे; मितिक्कुम् चॅय्कैयान्–पाँव फूंक-फूंककर रखनेवाला; काप्पु अरु–अनियन्त्रित रूप से; नटुक्कु उरुम्–काँपते हुए; कालन् कैयिनन्–पैरों और हाथों का; मूप्पु ऍनुम् परुवमुम्–वार्द्धक्य दशा में; मुनिय–घृणित रूप से; मुऱ्ऱिनान्–बढ़ा रहा। ८२८

वह बहुत धीरे-धीरे पग धर रहा था, जैसे पुष्प का दल विकसता है। पैर फूंक-फूंककर रखता आया, मानो भूमि पर अंगार बिछे हों और वह

वचकर आता हो। उसके हाथ और पैर काँपते थे और रोके नहीं रुकते थे। वार्द्धक्य ने पूर्णरूप से आकर घेरा था —ऐसा जर्जर था। ८२८

❀ एमुरु निलैयिन्न तिडुहु कण्णिनन्
आमैयि निरुक्कैयि नमैन्द वाक्कैयन्
नामनून् मार्बिन्न नणुहि नानरो
तूमन्नत् तरुन्ददि यिरुन्द शूळल्वाय् 829

एम् उरु निलैयिन्न्–आकुलित-मन; इट्कु कण्णितन्–सँकरी आँखों का; आमैयिन् इरुक्कैयित्–कछुए की पीठ के समान; अमैन्त–कुबड़ा बना; आक्कैयन्–शरीरी; नाम नूल् मार्पितन्–श्रेष्ठ (उपवीत-)सूत्रधारी वक्ष का; तू मन्नत्तु अरुन्तति–पवित्र-मना, अरुन्धती (सी सीता) के; इरुन्त चूळल् वाय्–रहने के स्थान में; नणुकित्तान्–आ पहुँचा। ८२९

उसका मन घबड़ाया हुआ था। आँखें सँकरी थीं। कछुए के कूबड़ के समान उसका शरीर वर्तुल था। वक्ष पर यज्ञोपवीत था। ऐसा वह कपटी पवित्रमना, अरुन्धती-सी सीतादेवी के रहने के स्थान में आ पहुँचा। ८२९

❀ तोमरु शालैयिन् वायि रुनित्तान्
नामुदल् कुळरिड नडुङ्गुञ् जोल्लित्तान्
यावरिव् विरुक्कैयु ळिरुन्दु ळोरॅन्ड्रान्
तेवरु मरुडरत् तिरिन्द मेन्नियान् 830

तेवरुम् मरुळ् तर–देवों को भी भ्रमित करे, ऐसा; तिरिन्त मेत्तियान्–परिवर्तित (संन्यासी का) वेषधर; तोम् अरु–अनिन्द्य; चालैयित् वायिल्–पर्णशाला के द्वार पर; तुत्तित्तान्–पहुँचकर; ना मुतल् कुळरिट–जीभ की नोक के लड़खड़ाते; नटुङ्कुम् चॉल्लित्तान्–खण्डित बोली के साथ; यावर्–कौन; इ इरुक्कै उळ्–इस कुटीर के अन्दर; इरुन्तु उळीर्–रहते हो; ऍन्ड्रान्–पूछा। ८३०

उसका परिवर्तित वेश देखकर देव भी भ्रमित हो गये थे। वह कलंकहीन पर्णशाला के द्वार पर आ पहुँचा। लड़खड़ाती जिह्वा से अस्पष्ट बोली में उसने प्रश्न किया कि इस कुटीर के अन्दर तुम कौन रहते हो ?। ८३०

❀ तोहैयु मिव्विळित् तोमिल् शिन्दनैच्
चेहरु नोन्बिन्न रॅन्नुञ् जिन्दैयाल्
पाहियल् किळवियोर् पवळक् कॉम्बर्पोल्
एहुमि तोण्डॆन्न वॆदिर्वन् दॆय्दिनाळ् 831

तोकैयुम्–देवी भी; इ वळि–इस वन के; तोम् इल् चिन्तनै–अकलंकमन; चेकु अरु नोन्पिनर्–अनिन्द्य तपोव्रती; ऍन्नुम् चिन्तैयाल्–यह विचार करके; पाकु इयल् किळवि–चासनी-सम बोली के साथ; ओर् पवळ कोम्पर् पोल्–एक प्रवालवल्लरी

के समान; ईण्टु एकुमिन्–यहाँ पधारिए; ऎन्न–कहते हुए; ऎतिर् वन्तु ऎय्तित्ताळ्–सामने आयीं। ८३१

सीताजी का विचार था कि वह पवित्र तपोधन है, जो इस वन में रहता है। इसलिए प्रवाललता-सदृश देवी ने चासनी-सम मधुर बोली में स्वागत किया कि यहाँ पधारिए। यह कहते हुए वे उस कपट तपस्वी के सामने आयीं। ८३१

❀ वॆऱ्पिडै मदमॆन वेर्क्कु मेनियन्
अऱ्पिऩिऱ् ऱिरैपुर ळाशै वेलैयऩ्
पॊऱ्पिनुक् कणियिनैप् पुहऴिऩ् शेक्कैयैक्
कऱ्पिनुक् करशियैक् कण्णि ऩोक्किऩाऩ् 832

वॆऱ्पु इटै–पर्वत पर; मतम् ऎन्न–शिला-रस के समान (या गजमद के समान); वेर्क्कुम् मेतियन्–स्वेद-भरा शरीरी; अऱ्पितिल्–प्रेम की; तिरै पुरळ्–तरंगों से पूर्ण; आचै वेलैयन्–आशा-सागर में मग्न वह; पॊऱ्पित्तुक्कु अणियितै–सुन्दरता के अलंकार को; पुकऴिन् चेक्कैयै–कीर्ति-निलया को; कऱ्पित्तुक्कु अरचियै–पातिव्रत्य की रानी को; कण्णिन् नोक्कितान्–अपनी आँखों से (खूब) देखा। ८३२

रावण ने देवी को देखा। उसके शरीर से पर्वत से स्रवित शिलाजीत के समान स्वेद निकल रहा था। वह प्रेम की तरंगो से आकुलित आशा-सागर में मग्न था। उसने सुन्दरता की सुन्दरता, यश का आलय और पातिव्रत्य की रानी को अपनी आँखें फाड़कर देखा। ८३२

❀ तूङ्गलिन् कुयिल्हॆळु शॊल्लि नुम्बरिन्
ओङ्गिय वळहिऩा ळुरुवङ् गाण्डलुम्
एङ्गिनन् मननिलै यादॆन् ऱुन्नुवाम्
वीङ्गिन मॆलिन्दन वीरत् तोळ्हळे 833

तुङ्कलिन्–थकी अवस्था में भी; कुयिल् कॊळु–कोयल की पक्व; चॊल्लिन् उम्परिल्–बोली की श्रेष्ठता में; ओङ्किय अऴकित्ताळ्–बढ़ी सुन्दरता से युक्त (देवी के); उरुवम् काण्टलुम्–रूप को देखते ही; वीर तोळ्कळ्–रावण के वीरता में बढ़े हुए कंधे; वीङ्कित–और भी फूल उठे; मॆलिन्तत–(पर मिलेगी कैसे, सोचने पर) दुबले हुए; एङ्कितन्–उत्कंठित उसके; मत निलै–मन की स्थिति; यातु ऎन्ऱु–क्या थी; इयम्पुवाम्–कैसे कहें। ८३३

भगवती सीता वनवास के कारण कृश थीं। उस दुःख के कारण थकी थीं। तो भी बोली में सुन्दरता की उच्च श्रेणी में थीं। उनका रूप देखते ही रावण के कन्धे फूल उठे। फिर तरस के कारण कृश हो गये। ऐसा उत्कंठा से व्यग्र उसके मन की दशा क्या कहें? । ८३३

पुत्तमयिऱ् चायऱ् तॆळिलिऩ् पूनऱैच्
चुनैमडुत् तुण्डिशै मुरलुन् दुम्बियिऩ्
इऩमॆऩक् कळित्तुळ वॆऩ्ब तॆन्नवऩ्
मऩमॆनक् कळित्तदु कण्णिऩ् मालैये 834

कण्णिऩ् मालैये–अक्ष-माला; पुत्त मयिल् चायल् तऩ्–वन्यमयूरनिभ देवी की; ऎळिलिल्–रम्यता से; पू नऱै चुनै मट्टुत्तु उण्टु–फूलों के शहद-भरे गढ़े में पड़कर उसको पीकर; इचै मुरलुम्–सुस्वर में गुंजायमान; तुम्पियिऩ् इतम् ऎऩ–भ्रमरों के समान; कळित्तुळवु ऎऩ्पतु ऎऩ्–मत्त थी, यह कहने में क्या (अर्थ) है; अवऩ् मतम् ऎऩ–उसी के मन के समान; कळित्ततु–मुग्ध हुई। ८३४

उसकी आँखों की माला का कैसा वर्णन हो? वनमयूरनिभ देवी का रूप देखकर वह फूलों का शहद गढ़े में भरकर उसे पीकर उन्मत्त भ्रमरों की पंक्ति थी —यह कहें? पर उसका क्या अर्थ निकलेगा? कहना यही पड़ेगा कि वे भ्रमर उसके ही मन के समान मुग्ध रहे। ८३४

❀ शॆयिदळ्त् तामरैच् चॆक्कै तीर्न्दिवण्
मेयिऩळ् मणिनिऱ् मेऩि काणुदऱ्
कॆयुमे यिरुपदिङ् गिमैप्पि नाट्टङ्गळ्
आयिर मिल्लैयॆऩ् ऱवल मॆय्दिऩाऩ् 835

चॆ इतळ्–लाल दलों के; तामरै चॆक्कै–कमल का वास; तीर्न्तु–छोड़कर; इवण् मेयिऩळ्–यहाँ जो पधारी हैं, उनकी; मणि निऱ–सुन्दर प्रकाशमय; मेऩि–देह-कान्ति; काणुतऱ्कु–देखने के लिए; इक्कु इरुपतु नाट्टङ्कळ् एयुमे–यहाँ मेरी बीस आँखें पर्याप्त हैं क्या; इमैप्पु इल् नाट्टङ्कळ–अपलक आँखें; आयिरम् इल्लै ऎऩ्ऱु–सहस्र नहीं हैं, यह सोचकर; अवलम् ऎय्तिऩाऩ्–दुखी हुआ। ८३५

उसे बड़ा पछतावा हुआ। लाल दलों से लसित कमल का वास-स्थान छोड़कर जो इधर आयी थी, उन (लक्ष्मीदेवी) की कान्तिमय देह को देखने के लिए क्या बीस आँखें पर्याप्त होंगी? वह इस अभाव को लेकर चिन्तित हुआ कि मेरे अपलक सहस्र आँखें नहीं हैं! । ८३५

अरैकडै यिट्टमुक् कोडि यायुवम्
परैतबु तवत्तिऩाऩ् पडैत्त पोदुमे
निरैवळै मुऩ्गैयिन् निऩ्ऱ नङ्गैदन्
करैयरु नऩ्नलक् कडऱ्कॆन् ऱुऩ्ऩिऩाऩ् 836

निरै वळै मुऩ् कै–पंक्तियों में कंकण-भूषित हाथों के साथ; इ निऩ्ऱ नङ्कै तऩ्–यहाँ जो खड़ी है, इस नायिका के; करै अऱ–तटहीन; नल् नलम् कटऱ्कु–उत्तम सौन्दर्य-सागर में क्रीड़ा करने के लिए; पुरै तपु तवत्तिऩ्–दोषरहित तपस्या द्वारा; नाऩ् पटैत्त–मैंने जो पायी; अरै कटैयिट्ट–आधी जिसके पीछे लगी हुई है; ऎऩ् मु

कोटि–मेरी तीन करोड़ (यानी कुल साढ़े तीन करोड़) साल की; आयुवुम्–आयु के दिन भी; पोतुमे–पर्याप्त होंगे क्या। ८३६

अपने हाथों में पंक्तियों में कंकण पहने हुए ये मेरे सामने खड़ी हैं। मैंने अपराधहीन तपस्या की और साढ़े तीन करोड़ साल की आयु पायी। पर इनके सौन्दर्य रूपी सागर में क्रीड़ा करने के लिए, उतनी आयु पर्याप्त होगी क्या ? । ८३६

❀ तेवरु मवुणरुन् देवि मारुडन्, कूवलुशॅय् तॉळिलितर् कुडिमै शॅय्दिड़
मूवुल हमुमिवर् मुरैयि नाळयाल्, एवलुशॅय् दुय्हुवॅ निन्नियॅन् ऱॅण्णिनान् 837

तेवरुम्–देव; अवुणरुम्–असुर; तेविमार् उटन्–अपनी-अपनी पत्नियों के साथ; कूवल् चॅय् तॉळिलितर्–बुलाने पर सेवा करने के काम में लगे हुए; कुटिमै चॅय्तिट–(दासता का काम) परम्परा से करते आते हैं; मू उलकमुम्–(मेरे अधिकाराधीन) तीनों लोकों पर; इवर् मुरैयिन् आळ–ये यथाक्रम शासन करें; इनि–आगे; यान् एवल् चॅय्तु–मैं कैंकर्य करके; उय्कुवॅन्–तर जाऊँगा; ऍन्रु–ऐसा; उन्निनान्–(रावण ने) विचार किया। ८३७

अब मैं त्रिलोकाधिपति हूँ। देव और दानव अपनी पत्नियों के साथ मेरी दासता परम्परा से करते आ रहे हैं। अब वह आधिपत्य इनके सिपुर्द कर दूँगा और मै भी उनकी सेवा करके तर जाऊँगा। ८३७

❀ उळैवुरु तुयर्मुहत् तॉळियि दामॅनिन्
मुळैयॅयि ऱिलङ्गिडु मुरुव लॅन्बडुम्
तळैयविळ् कुळ्ळिवट् कण्डु तन्दवॅन्
इळैयवट् कळिप्पर्तॅन् नरशॅन् ऱॅण्णिनान् 838

उळैवु उरु–उद्विग्न; तुयर् मुकत्तु–दुःख-प्रदर्शक आनन की; ऑळि इतु आम् ऍनिल्–आभा यह है तो; मुळै ऍयिरु इलङ्किटुम्–अंकुर-सम दाँतों से शोभित; मुरुवल् ऍन्पटुम्–मुस्कुराहट (का वदन) कैसा (अनुपम) होगा; तळै अविळ् कुळ्ळल्–खुले केश की; इवळ् कण्टु–इनको देखकर; तन्त–मुझे जिसने (समाचार) दिया; ऍन् इळैयवट्कु–अपनी छोटी वहिन को; ऍन् अरचु–अपना राज्य; अळिप्पॅन् ऍन्रु–दे दूँगा, ऐसा; ऍण्णितान्–रावण ने सोचा। ८३८

अब वह शूर्पणखा का स्मरण कृतज्ञता के साथ करने लगा। ये अब उद्विग्न हैं और इनका मुख-भाव दुःख का परिचायक है। इस स्थिति में भी इनकी शोभा इतनी मनोरम है। अगर इनके मुख पर अंकुर के समान हास दिखाई दे यानी ये सुखी हो जायँ, तो कितनी सुन्दर लगेंगी। इनको ढूँढ़ लेकर शूर्पणखा ने मुझे इनका समाचार दिया। खुले केश की इनको मुझे दिलाने के प्रत्युपकार में अपनी छोटी वहिन को मैं अपना राज्य ही दे दूँगा। रावण ने भावातिरेक में ऐसा सोचा। ८३८

*आण्टैया	त्तैयत्त	वुन्नि	याशैमेल्
मूण्डॅळु	शिन्दनै	मुरै्यि	लोन्ड्रतैक्
काण्डलुड्	गण्णिनीर्	तुडैत्त	कट्पिनाळ्
ईण्डॅळुन्	दरुळुमॅन्	ड्रिन्निय	कूरिनाळ् 839

आण्टैयान्–वहाँ रहकर; अत्तैयत्त उन्नि–वह सब सोचकर; आचै मेल् मूण्टु ऍळु–प्रवल रूप से उभरी इच्छा-सहित; चिन्ततै–मन का; नुरै इलोन् ततै–अत्याचारी को; कण्णित् नीर् तुटैत्त–आँखों के आँसू पोंछकर; कट्पिताळ्–पतिव्रता ने; ईण्टु ऍळुन्तरुळुम्–यहाँ पधारिए; ऍन्रु–यह; इन्निय कूरिताळ्–मधुर (स्वागत-वचन) कहा। ८३६

वह वहाँ रहकर ऐसा सोचता रहा। उसका मन प्रबल रूप से उमँगनेवाले राग से भर गया। उधर पतिव्रता देवी सीता ने अपनी आँखों से अश्रु पोंछ लिये। उस अधर्मी अत्याचारी से मधुर स्वर में 'इधर पधारिए' कहा। ८३९

*एत्तित्त	ळॅय्दलु	मिरुत्ति	रीण्डॅन्त
वेत्तिरत्	ताशनम्	विदियि	नल्हिनाळ्
मात्तिरि	तण्डयल्	वैत्त	वञ्जनुम्
पूत्तीडर्	शालैयि	लिरुन्द	पोळ्दिनें 840

एत्तितळ्–स्वागत करके; ऍय्तलुम्–(रावण के) अन्दर आते ही; इरुत्तिर् ईण्टु ऍन्त–यहाँ विराजिए, कहकर; वेत्तिरत्तु आचतम्–वेत्रासन; वितियिन्–यथा-विधि; नल्किताळ्–दिया; मा तिरि तण्टु–गौरवपूर्ण त्रिदण्ड; अयल् वैत्त–पास रखकर; वञ्चतम्–वंचक भी; पू तॊटर् चालैयिन्–पुष्पपूर्ण पर्णशाला में; इरुन्त पोळ्तित्ते–जब रहा, तब। ८४०

उन्होंने स्तुति के साथ स्वागत किया, तो वह दुराचारी पर्णशाला में आ गया। सीताजी ने 'इधर विराजिए' कहकर एक वेत्र का बुना आसन डसवाकर बिठाया। वह कपटी रावण अपने आदरणीय त्रिदण्ड को पास रखकर पर्णशाला के अन्दर उस आसन पर आसीन जब हुआ, तब—। ८४०

नडुङ्गिन	मलैहळु	मरनु	नावविन्
दडङ्गिन	पऱवैयुम्	विलङ्गु	मञ्जिन
पडङ्गुरैन्	दोडुङ्गिन	पाम्बुम्	बादहक्
कडुन्दॊळि	लरक्कतैक्	काणुड्	गण्णिनें 841

पातक कटुम् तॊळिल् अरक्कतै–पातक, कठोर अत्याचारी राक्षस को; काणुम् कण्णिन्–वहाँ देखकर; मलैकळुम्–पर्वत और; मरतुम्–वृक्ष; नटुङ्किन–काँपे; पऱवैयुम्–खग भी; ना अविन्तु–अवाक्; अटङ्कित–चुप रहे; विलङ्कुम् अञ्चित–जानवर भी भयातुर हुए; पाम्पुम्–सर्प भी; पटम् कुरैन्तु–फन फैलाना छोड़कर; ऒटुङ्कित–ठिठुरे रहे। ८४१

पातक और कठोर दुराचारी को वहाँ देखकर पर्वत और तरु काँप उठे। खगगण अवाक् हो दब गये। जानवर भयभीत हुए। सर्प भी फन समेटकर दबे पड़े रहे। ८४१

❀ इरुन्दवन् यावदिव् विरुक्कै योङ्गुरै, अरुन्दवन् यावन्नीर् यारै यॆन्ऱलुम्
विरुन्दिन्न रिव्वऴि विरहि लारॆन्नप्, पॆरुन्दडङ् गण्णवळ् पेशन् मेयिनाळ् 842

इरुन्तवन्–आसनस्थ हो रावण ने; इ इरुक्कै यावतु–यह वासस्थान कौन है; ईङ्कु उऱै–यहाँ का वासी; अरुम् तवन् यावन्–श्रेष्ठ तपस्वी कौन; नीर यारै–आप कौन हैं; ॲन्ऱलुम्–पूछा, तब; इ वऴि–(ये) यहाँ आगत; विरुन्तिनर्–अतिथि हैं; विरकु इलार्–कपटहीन (साधु) हैं; ॲन्न–सोचकर; पॆरुम् तटम् कण् अवळ्–विशाल आयताक्षी सीताजी; पेचल् मेयिनाळ्–बोलने लगीं। ८४२

वहाँ आसनस्थ रावण ने कुतूहलप्रदर्शक प्रश्न किये। यह वास कौन सा है? यहाँ के वासी श्रेष्ठ तपस्वी कौन हैं? आप कौन हैं? तब देवी ने सोचा कि ये निष्कपट अतिथि हैं। विशाल आयताक्षी सीताजी बोलीं। ८४२

❀ तयरदन् ऱॊल्हुलत् तनयन् ऱम्बियो
डुयर्हुलत् तनन्नॆशो लुच्चि येन्दिनान्
अयर्विल निव्वऴि युऱैयु मन्नवन्
पॆयरिनैत् तॆरिहुदिर् पॆरुमै यीरॆन्ऱाळ् 843

पॆरुमैयीर्–आदरणीय; तॊल् कुलम्–प्राचीन कुल के; तयरतन् ततयन्–दशरथ के पुत्र; तम्पियोटु–अपने अनुज के साथ; उयर् कुलत्तु अन्नै–श्रेष्ठकुल-जाता अपनी माता की; चॊल् उच्चि एन्तिनान्–आज्ञा सिर पर धारण करके; अयर्वु इलन्–विना संताप के; इ वऴि उऱैयुम्–यहाँ वास करते हैं; अन्नवन्–उनका; पॆयिरिनै–नाम को; तॆरिकुतिर्–आप जानते ही होंगे; ॲन्ऱाळ्–कहा (देवी ने)। ८४३

आदरणीय अतिथि! प्राचीन और प्रसिद्ध इक्ष्वाकुकुल के दशरथ के पुत्र अपने भाई के साथ इधर रहते हैं। वे अपनी उच्चकुलजाता माता की आज्ञा शिरोधारण करके विना किसी सन्ताप के इधर आये हैं और रहते हैं। उनका नाम आप जानते ही होंगे। ८४३

❀ केट्टनॆन् कण्डिलॆन् कॊऴुवु गङ्गैनीर्
नाट्टिडै यॊरुमुऱै नण्णि नॆन्मलर्
वाट्टडङ् गण्णिनीर् यावर् मामहळ्
काट्टिडै यरुम्बहर् कऴिक्किन् ऱॊरॆन्ऱान् 844

केट्टनॆन्–हाँ सुना है; कण्टिलॆन्–देखा नहीं है; कॊऴुवु कङ्कै नीर्–अत्यधिक गंगा-जलसमृद्ध; नाट्टिटै–(उस कोसल) देश में; ऒरु मुऱै नण्णितेन्–एक बार गया

था; मलर्—कमलपुष्प और; वाळ्—तलवार के समान; तटम्—विशाल; कण्णिन् नीर्—आँखों से शोभायमान आप; यावर् मा मकळ्—किनकी श्रेष्ठ दुहिता हैं; काट्टु इटै—वन के मध्य; अरुम् पकल् कळिक्किन्ड्रीर्—मूल्यवान दिनों को (व्यर्थ) काट रही हैं); ॲन्ड्रान्—पूछा। ८४४

रावण ने उत्तर में कहा कि हाँ ! हमने सुना है। पर समक्ष नहीं देखा है। कोसल देश में भी, जो गंगा-जल से अत्यधिक समृद्ध बना है, एक बार गया हुआ था। पर वह बात छोड़ो। कमल और तलवार के सदृश आँखों से शोभायमान आप किसकी सुपुत्री हैं ? वन में आकर अपने अच्छे दिन व्यर्थ कर रही हैं। ८४४

❀ अन्नहमा नॅरिप्पड रडिह ळुम्मलाल्
निन्नैवदोर् दॅय्वम्वे ड्रिलाद नॅञ्जिनान्
शन्नहन्मा मडमहळ् शन्नहि काहुत्तन्
मन्नैविया नॅन्ड्रनळ् मरुविल् कड्पिनाळ् 845

मरु इल् कड्पिनाळ्—अकलंक पतिव्रता सीतादेवी ने; अन्नकम् मा नॅरि पटर्—अनघ उत्तम मार्ग-गामी; अटिकळ्—साधु महात्मा; नुम् अलाल्—आप जैसों के सिवा; निन्नैवतु—स्मरण करते; ओर् दॅय्वम् वेरु इलात—किसी और देव का (जो) नहीं; नॅञ्चिनान्—वैसे मन वाले; मा चन्नकन्—उन महान जनक की; मट मकळ्—बाला पुत्री हूँ; चन्नकि—जानकी नाम की; यान्—मैं हूँ; काकुत्तन् मन्नैवि—काकुत्स्थ की पत्नी; ॲन्ड्रनळ्—कहा। ८४५

अनिन्द्य पातिव्रत्यशीला देवी ने सहज ही उत्तर दिया कि अनघ मार्ग-गामी साधु महात्मा ! मैं उन उत्तम जनक की दुहिता हूँ, जिनके स्मरण में आप जैसे महात्माओं के अलावा कोई अन्य देव ही नहीं रहता। मैं काकुत्स्थ की पत्नी हूँ। ८४५

❀ अव्वळि यन्नैयन्न वुरैत्त वायिळै
वॅव्वळि वरुन्दिन्नीर् विळैन्द मूप्पिन्नीर्
इव्वळि यिरुविनै कडक्क वॅण्णिन्नीर्
ॲव्वळि निन्नुमिन् ड्रॅय्दि नीरॅन्ड्राळ् 846

अन्नैयन्न उरैत्त—यह जिन्होंने कहा; आय् इळै—उन आभरणभूषिता ने; अ वळि—तब; विळैन्त मूप्पिन्नीर्—बहुत वृद्ध; इ वळि—इस तपस्या के जीवन में; इरु विनै कटक्क—(पाप-पुण्य) दोनों कर्मों का संतरण करने के; ॲण्णिन्नीर्—इच्छुक; वॅम् वळि वरुन्तिन्नीर्—कठोर मार्ग पर सायास आये हैं; ॲ वळि निन्नुम्—कहाँ से; इन्रु ॲय्तिन्नीर्—आज पधारे; ॲन्ड्राळ्—(सहानुभूति में) पूछा। ८४६

यह वृत्तान्त कहने के बाद देवी ने रावण से प्रश्न किया। हे अति वृद्ध संन्यासी ! पापपुण्य-सन्तरणार्थ व्रत में लगे रहे तपस्वी ! आप बहुत

दूर का कठिन मार्ग तय करके आये लगते है। आप कहाँ से पधारे हैं? । ८४६

❀ इन्दिरऱ्‌ किन्दिर नॅळुद लाहलाच्, चुन्दर नान्मुहन् मरबिऱ्‌ ऱोन्ऱिनान्
अन्दरत् तोडुमॅव् वुलहु माळ्हिन्ऱान्, मन्दिरत् तरुमऱै वैहु नाविनान् 847

इन्तिरऱ्कु इन्तिरन्–देवेन्द्र का भी इन्द्र; ॲळुतल् आकला–जिसका चित्रांकन कठिन है; चुन्तरन्–वैसा सुन्दर पुरुष; नान्मुकन् मरपिल् तोन्ऱिनान्–चतुर्मुख के वंश में जनित; अन्तरत्तोटुम्–आकाशलोक के साथ; ॲ उलकुम्–सभी लोकों पर; आळ्किन्ऱान्–शासन करता है; मन्तिरत्तु अरु मऱै–मंत्रकोष वेदों का; वैकुम्–निलय; नाविनान्–जिसकी जीभ है, वह। ८४७

तब कपटसंन्यासी ने रावण की महिमा सुनायी। देवेन्द्र का इन्द्र; चित्र खींचने मे कठिन हो, ऐसा रूपवान; चतुर्मुख का वंशजात; आकाशलोक के साथ सभी लोकों का राजा और मन्त्रों से पूर्ण दिव्य वेदों से अभ्यस्त जीभ का स्वामी। ८४७

❀ ईशनाण् डिरुन्दपे रिलङ्गु मालवरै
ऊशिवे रॊडुम्बरित् तुरुट्टु मूऱ्ऱत्तान्
आशैहळ् शुमन्दपे रमरि यानैहळ्
पूशलॆय् मरुप्पित्तॆप् पॊडिशॆय् मार्बिनान् 848

ईचन्–शिवजी; आण्टु इरुन्त–जहाँ वास करते थे; इलङ्कुमाल् वरै–उस शानदार पर्वत को; ऊचि वेर् ओटुम्–सूची से पतली-पतली जड़ों के जालों के साथ; परित्तु उरुट्टुम्–उखाड़कर लुढ़काने का; ऊऱ्ऱत्तान्–बलशाली; आचैकळ् चुमन्त–दिशावाही; पेर् अमर् यानैकळ्–बड़े योद्धा गजों के; पूचल् चॆय्–युद्धोपयुक्त; मरुप्पित्तै–दाँतों का; पॊटि चॆय् मार्पिनान्–चूर्णकारी वक्ष-युक्त। ८४८

शिवजी के वास के कैलासपर्वत को आमूल उखाड़कर लुढ़काने में समर्थ; दिशावाही योद्धा गजों के युद्धप्रयुक्त दाँतों का चूर्णकारी वक्षयुक्त; । ८४८

❀ निऱ्पवर् कडैत्तलै निऱैन्द तेवरे, शॊऱ्पहु मऱ्ऱवन् पॆरुमै शॊल्लुङ्गाल्
कऱ्पह मुदलिय निदियङ् गैयन, पॊऱ्पदि मानन्दे रिलङ्गै पॊन्नहर् 849

कटै तलै निऱैन्तु निऱ्पवर्–उसके द्वार पर भीड़ में जो खड़े है, वे; तेवरे–देव ही हैं; कऱ्पकम् मुतलिय नितियम्–कल्पतरु आदि देवलोक की निधियाँ; कैयन–उसके हाथ में हैं; पॊन् पति–निधिपति का; मानम्–(पुष्पक नाम का) यान; तेर्–उसका रथ है; पॊन्नकर्–(उसकी) स्वर्णपुरी; इलङ्कै–लंका है; मऱ्ऱु–और; अवन् पॆरुमै–उसकी महिमा; चॊल्लुङ्काल्–कहते समय; चॊल् पकुम्–शब्द अपर्याप्त रह जायँगे। ८४९

उसके द्वारों पर उसकी कृपा की प्रतीक्षा में जो भीड़ लगाकर खड़े रहते है, वे देव हैं। कल्पतरु आदि देव-निधियाँ उसके अधीन है।

निधिपति कुबेर का पुष्पकयान उसका रथ है। उसकी राजधानी सोने की लंका है। उसकी महिमा कहने लगें, तो शब्द दुर्बल पाये जायँगे। ८४९

[अतिरिक्त दो पद का सार : तिलोत्तमा आदि अप्सराएँ उसके वैभव से आकृष्ट होकर लंका में आयी हैं और उसका पानदान और पादरक्षक उठाना और पैर सहलाना आदि सेवाएँ बजाती हैं। १

चन्द्र और सूर्य उसके मन के अनुसार चलते हैं। इन्द्र आदि देव उसके प्रासाद की रखवाली करते है। २]

पॊन्नह रत्तिनुम् पॊलन्गॊ णाहर्दम्
तॊन्नह रत्तिनुम् तॊडर्न्द मान्निलत्
तंन्नह रत्तिनु मिन्निय वीण्डवन्
नन्नह रत्तन नवैयि लादन 850

पॊन् नकरत्तितुम्–स्वर्णपुरी, देवेन्द्र की राजधानी, अमरावती में; पॊलन् कॊळ् नाकर् तम्–सुन्दर नागों के; तॊल् नकरत्तिलुम्–प्राचीन (पाताल की) भोगवती नाम के नगर में और; मा निलत्तु तॊटर्न्त–इस विशाल भूलोक में पास-पास रहनेवाले; अँ नकरत्तितुम्–नगरों में किसी में भी; इन्निय–सुखद; नवै इलातन–दोषहीन पदार्थ; ईण्टु–मिलकर; अवन् नल् नकरत्तन–उसके श्रेष्ठ नगर में प्राप्त होते हैं। ८५०

देवेन्द्र-नगर अमरावती में, सुन्दर नागों के भोगवती नामक नगर में और भूलोक के पास-पास लगातार रहनेवाले सभी नगरों में किसी भी नगर में प्राप्य सभी सुखदायी और निर्दोष विलासिता के पदार्थ सब मिलकर उसके नगर में आ गये हैं। ८५०

❀ताळुडै मलरुळोन् तन्द वन्दमिल्
नाळुडै वाळ्क्कैय नारि बाहत्तन्
वाळुडै तडक्कैयन् वारि वैत्तवॆङ्
गोळुडै शिऱैयिनन् गुणङ्गण् मेयिनान् 851

ताळ उटै मलर् अळोन्–नालसहित कमल पर आसीन; तन्त–से दत्त; अन्तम् इल् नाळ् उटै वाळ्क्कैयन्–अन्तहीन आयु-प्राप्त; नारि पाकत्तन्–अर्धनारीस्वर शिव की; वाळ् उटै–(दत्त) तलवार से युक्त; तट कैयन्–विशाल-हस्त; वारि वैत्त–समेटकर एक स्थान पर रखे हुए; वॆम् कोळ् उटै–वलिष्ठ ग्रह जिसमें है, उस; चिऱैयिनन्–कारागृह के पति; कुणङ्कळ् मेविनान्–उत्तम गुणी। ८५१

कमलासनदत्त अनन्त आयु प्राप्त उसके हाथ में अर्धनारीश्वर-प्रदत्त चन्द्रहास तलवार है। उसके काराग्रह में सभी ग्रह एक साथ बन्द कर रखे गये हैं, वह गुणगणपूर्ण है। ८५१

वॆम्मैदी रॊऴुक्किनन् विरिन्द कॆऴ्वियन्
शॆम्मैयोन् मन्मदन् तिहैक्कुञ् जॆव्वियान्
ऍम्मैयो रन्नैवरु मिऱैव रॆयॆन्नुम्
मुम्मैयोर् पॆरुमैयु मुऱ्ऱुम् पॆऱ्ऱियान् 852

वॆम्मै तीर् ऒऴुक्कितन्–कठोरता-रहित आचरण का; विरिन्त कॆऴ्वियन्–विस्तृत श्रवण-ज्ञानी; चॆम्मैयोन्–सदाचारी; मन्मतन् तिकैक्कुम् चॆव्वियान्–मन्मथ भी ठिठक से भर जाए, ऐसा रूपवान; ऍम्मैयोर् अन्नैवरुम्–कहीं के कोई भी; इऱैवरे ऍन्नुम्–जिनको आदिदेव मानते हैं; मुम्मैयोर् पॆरुमैयुम्–उन त्रिदेवों की महिमाएँ; मुऱ्ऱुम् पॆऱ्ऱियान्–सम्पूर्ण रूप से इसने पायी है। ८५२

उसका आचरण क्रूरता-रहित है। विस्तृत रूप से उसने वेद-शास्त्र पढ़े-सुने हैं। नेकचलन है। मन्मथ को भी उसका रूप-सौन्दर्य देखकर तरस होता है। जिन त्रिदेवों को सभी लोकवासी अपने आदिदेव मानते हैं, उन सभी की सम्मिलित महिमाएँ इसके पास हैं। ८५२

अन्नैत्तुल हिन्नुमऴ् हमैन्द नङ्गैयर्
ऍन्नैप्पल रवन्ऱन्न दरुळि न्िच्चैयोर्
निन्नैत्तन रुरुहव मुदव नेर्हलन्
मनक्किनि याऴॊरु मादै नाडुवान् 853

अन्नैत्तु उलकिन्नुम्–सभी लोकों में; अऴकु अमैन्त नङ्कैयर्–जो सौंदर्य-भरी वनिताएँ हैं; अवन् तन्नतु अरुळिन्–उसकी कृपा की; इच्चैयार्–इच्छुक हैं; अन्ने पलर्–कितने ही अनेक; निन्नैत्तनर् उरुकवुम्–उसका स्मरण कर पिघल रही हैं; उतव नेर्कलन्–उन पर कृपा कर सहायता देने को सम्मत नहीं होकर; मनक्कु इनियाऴ्–अपने मनोनुकूल; ऒरु मातै नाटुवान्–एक रमणी की खोज में है। ८५३

सभी लोकों की सभी आकर्षण नारियाँ उसकी कृपा के लिए लालायित हैं। उनमें कितनी ही उसके स्मरण में उसकी कृपा प्राप्त न होने से रो रही हैं। वह उन पर कृपा नहीं करता; पर अपने मनोनुकूल एक रमणी की खोज में है। ८५३

❀ आण्डैया नरशुवीऱ् ऱिरुन्द वन्नहर्
वेण्डियान् शिल्बह लुऱैदन् मेयिन्नेन्
ईण्डिया न्िरुन्दवऱ् पिरियु नॆञ्जिलेन्
मीण्डनेन् ऩवनुडै विन्नैय मुऱ्ऱुवान् 854

आण्टैयान्–वह; अरचु वीऱ्ऱिरुन्त–जहाँ से राज करता है; अ नकर्–उस नगर में; यान् वेण्टि–मैं चाहकर; चिल पकल् उऱैतल् मेयिन्नेन्–कुछ दिन रहा; यान् ईण्टु इरुन्तु–मैं उसके संग रहकर; अवन् पिरियुम् नॆञ्चु इलेन्–उससे अलग होना न चाहकर; अवनुटै विन्नैयम् मुऱ्ऱुवान्–उसका एक कार्य साधने हेतु; मीण्टनेन्–लौटा। ८५४

उसकी राजधानी में मैं कुछ दिन अपनी इच्छा से रहा। उसको छोड़कर आने को मेरा मन नहीं हुआ। तो भी उसका एक कार्य साधने के ही हेतु वहाँ से लौट आया हूँ। ८५४

❀वेदमुम् वेदिय ररुळुम् वें:(ह्)कलाच्, चेदन मन्नुयिर् तिन्नुन् दीविनैप्
पादह वरक्करदम् पदियिन् वैहुदऱ्, केदुवॅन् नुडलमु मिहैयॅन् ऱॅण्णुवीर् 855

उडलमुम् मिकै ॲॅन्ऱु ॲॅण्णुवीर्–शरीर को भी अनावश्यक माननेवाले; वेतमुम्–(आप) वेदों और; वेतियर् अरुळुम्–वेदज्ञ ब्राह्मणों की कृपा को; वें:कला–न चाहकर; चेतत–चेतन; मन् उयिर्–अक्षय जीवों (मनुष्यों) के; तिन्नुम्–खादक; ती विनै–पापी; पातक–पातक; अरक्कर् तम् पतियिन्–राक्षसों के नगर में; वैकुतऱ्कु–ठहरे, इसका; एतु ॲॅन्–कारण क्या है। ८५५

देवी को यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्होंने पूछा। आप तपस्वी है। मोक्षसाधन में शरीर को भी अनावश्यक मानते हैं। आप वेदों और वेदों के ज्ञाता ऋषियों का अनुग्रह न चाहकर चेतन और अक्षय जीवधारी मनुष्यों के खादक, कुकर्मी पातक राक्षसों की नगरी में जाकर रहे —इसका कारण क्या है ? । ८५५

❀वनत्तिडै मादवर् मरुङ्गु वैहलीर्, पुन्नऱ्ऱिरु नाट्टिडैप् पुनिद रूर्पुह
निनैक्किली रऱ्नॅऱि निनैक्कि लादवर्, इनत्तिडै वैहिनी रॅन्शॅय् दीरॅन्ऱाळ् 856

वनत्तु इडै–वन में; मा तवर् मरुङ्कु–महान तपस्वियों के पास; वैकलीर्–नहीं ठहरे; पुनल् तिरु नाट्टु इडै–जलसमृद्ध उर्वर प्रदेशों में; पुनितर्–पवित्राचरण; ऊर् पुक–(लोगों के) ग्रामों में जाकर रहना; निनैक्किलीर्–नहीं सोचा; अऱम् नॅऱि निनैक्किलातवर्–धर्म-मार्ग-विमुख; इनत्तु इडै–जातियों के बीच; वैकिनीर्–रहे; ॲॅन् चॅय्तीर्–क्या ही (अनुचित कार्य) किया; ॲॅन्ऱाळ्–देवी ने पूछा। ८५६

वन में महान तपस्वी लोग वास करते हैं। उनके सत्संग में नहीं रहे। जलसमृद्ध प्रदेशों के पवित्र गृहस्थ लोग रहते हैं। न आपने उन ग्रामों में जाना पसन्द किया। धर्ममार्गविमुख राक्षसों की जाती के लोगों में जाकर रहे ! यह क्या ही अनुचित काम आपने किया है ! देवी ने अपना भाव व्यक्त किया। ८५६

मङ्गैय:(ह्) दुणर्त्तल् केट्ट वरम्बिलान् मऱुविऱ् ऱीर्न्दाळ्
वॅङ्गणवा ळरक्क रॅन्न वॅरुवुवाळ् मॅय्मै नोक्कित्
तिङ्गळ्वाण् मुहत्ति नाळे तेवरिऱ् ऱीय रन्ऱे
मॅङ्गळ्पो लियर्क्कु नल्लार् निरुदरे पोलु मॅन्ऱान् 857

मङ्कै–देवी को; अ:तु उणर्त्तल् केट्ट–वह समझाना सुनकर; वरम्पु इलान्–अत्याचारी; मऱुविल् तीर्न्ताळ्–निर्दोष; वॅम् कण् वाळ् अरक्कर्–क्रूर राक्षस का; ॲॅन्न–नाम लेते ही; वॅरुवुवाळ्–भयभीत हो जो हो जाती है, उनकी; मॅय्मै नोक्कि–

सच्ची स्थिति जानकर; तिङ्कळ् वाळ् मुकत्तिऩाळे–चन्द्रोज्वलमुखी; तेवरिल् तीयर् अऩ्ऱे–देवों से अधिक बुरे नहीं तो; ऍङ्कळ् पोलियर्क्कु–हम जैसों के लिए; निरुतरे–राक्षस ही; नल्लार् पोलुम्–अच्छे हैं; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (रावण ने)। ८५७

अत्याचारी रावण ने देवी का यह समझाना सुना। समझ गया कि ये राक्षस का नाम लेते ही भड़क उठेंगी। उनकी सच्ची स्थिति देखकर उसने कहा कि उज्ज्वल चन्द्रमुखी! राक्षस देवों से अधिक (या के समान) बुरे नही होते। खासकर हमारे लिए राक्षस ही अच्छे हैं। ८५७

शेयिळै यऩ्ऩ शॉल्लल् तीयवर्च् चेर्दल् शॅय्दाल्
तूयव रल्लर् शॉल्लिर् ऱॊऩ्ऩॆऱि तॊडर्न्दो रॆऩ्ऱाळ्
मायैवल् लरक्कर् वल्लर् वेण्डुरु वरिक्क वॆऩ्ब
तायव ळऱिद ऱेऱ्ऱा ळादलि लयलॊन् ऱॆण्णाळ् 858

अऩ्ऩ चॊल्ल–वह कहने पर; चेय् इऴै आयवळ्–श्रेष्ठ आभरणों से अलंकृत सीताजी; मायै वल् अरक्कर्–मायावी बलिष्ठ राक्षस; वेण्टु उरु–मनमाना रूप; वरिक्क वल्लर्–लेने में समर्थ हैं; ऍऩ्पतु–यह बात; अऱितल् तेऱ्ऱाळ्–नहीं जान पायीं; आतलिऩ्–इसलिए; अयल् ऒऩ्ऱु–और कोई बात; ऍण्णाळ्–न सोचती; चॊल्लिल्–कहना हो तो; तॊल् नॆऱि तॊटर्न्तोर्–प्राचीनों के सन्मार्ग पर जो चलते हैं, वे; तीयवर् चेर्तल् चॅय्ताल्–बुरों से मिलते हैं तो; तूयवर् अल्लर्–पवित्र नहीं रहेंगे; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ८५८

रावण की वह बात सुनी। उत्तम आभरणों से अलंकृत सीताजी को मालूम नहीं था कि बलिष्ठ मायावी राक्षस मनमाना रूप लेने में समर्थ हैं। इसलिए उन्होंने कुछ अन्यथा नही सोचा। उन्होंने अपना मन्तव्य यों सुनाया कि प्राचीन परम्परागत सन्मार्गगामी श्रेष्ठ लोग बुरे लोगों की संगति करेंगे तो वे भी पवित्र नहीं रहेंगे। ८५८

अयिर्त्तऩ ळाहु मॆऩ्ऱो रैयुऱ वहत्तुक् कॊण्डाऩ्
पॆयर्त्तदु तुडैक्क वॆण्णिप् पिऱिदुरुप् पेश लुऱ्ऱाऩ्
मयक्करु मुलह मूऩ्ऱिल् वाऴ्बवर्क् कनैय वल्लोर्
इयऱ्कैयि ऩिरुप्प दल्ला लियऱ्ऱला नॆऱियॆ दॆऩ्ऱाऩ् 859

अयिर्त्तऩळ् आकुम्–शंकित हो गयीं; ऍऩ्ऱु–सोचकर; ओर् ऐयुऱवु–एक संशय; अकत्तु कॊण्टाऩ्–मन में करके; अतु–उसे; पॅयर्त्तु तुटैक्क ऍण्णि–हटाकर मिटाना चाहते हुए; पिऱितु उरु–दूसरे प्रकार से; पेचल् उऱ्ऱाऩ्–बोलने लगा; मयक्कु अऱुम्–निर्भ्रम; उलकम् मूऩ्ऱिल् वाऴ्पवर्क्कु–तीनों लोकों के वासियों के लिए; अनैय–उन; वल्लोर्–बलवान राक्षसों के; इयऱ्कैयिऩ्–स्वभावानुसार; निरुप्पतु अल्लाल्–वर्तन के सिवा; इयऱ्ऱल् आम् नॆऱि–अनुसरण योग्य मार्ग; एतु–कहाँ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ८५९

भगवती शंकितमन हो गयी हैं—ऐसा एक संशय रावण के मन में

हो गया। उसने उस शंका को निर्मूल करना चाहा। अतः कुछ दूसरे प्रकार से बात चलायी। कहा— तीनों लोकों के वासी निर्भ्रम रहना चाहें, तो उन्हें उन वलिष्ठ राक्षसों के स्वभाव के अनुरूप वर्तन के सिवा कोई चारा नहीं रहता। ८५९

तिऱन्दॆरि वञ्ज नच्चॊऱ् चॆप्पलुम् जॆप्प मिक्काळ्
अऱन्दरु वळ्ळ लीण्डिङ् गरुन्दव मुयलु नाळुळ्
मऱन्दलै तिरिन्द वाळ्क्कै यरक्करदम् वरुक्कत् तोडुम्
इऱन्दनर् मुडिवर् पिन्नै यिडरिलै युलहि लॆन्ऱाळ् 860

तिऱम् तॆरि वञ्चन्–इंगितज्ञ वंचक के; अ चॊल् चॆप्पलुम्–वह कथन करते ही; चॆप्पम् मिक्काळ्–अति नेक देवी; अऱम् तरु वळ्ळल्–धर्म-संस्थापक हमारे प्रभु; ईण्टु–अव; इङ्कु–यहाँ; अरुम् तवम् मुयलुम् नाळ् उळ्–उत्तम तपस्या जितने समय करते हैं, उसके अन्दर; मऱम् तलै तिरिन्त–पापाचारी; वाळ्क्कै अरक्कर्–जीवन-यापनकारी राक्षस; तम् वरुक्कत्तोटुम् इऱन्तनर् मुटिवर्–अपने वर्गों के साथ मर मिटेंगे; पिन्नै–बाद; उलकिल् इटर् इलै–कोई दुःख नहीं रहेगा; ऍन्ऱाळ्–कहा। ८६०

रावण वंचक था और इंगितज्ञ था। उसकी यह बात सुनकर निष्कपट देवी ने कहा कि हमारे धर्मसंस्थापक प्रभु यहाँ तपस्या करते हैं। उनके तपस्या के दिनों के पूरे होने के अन्दर ही पापाचारी राक्षस अपने वर्गों के साथ मर मिटेंगे। फिर इस संसार में कोई कष्ट नहीं रहेगा। ८६०

मानव ळुरैत्त लोडु मानिड ररक्कर् तम्मै
मीनॆन मिळिरुङ् गण्णाय् वेरऱ वॆल्व रॆन्निल्
यानैयि निनत्तै यॆल्ला मिळमुयल् कॊल्लु मिन्नुम्
कूनुहिर् मडङ्ग लेऱ्ऱिन् कुळुवैमान् कॊल्लु मॆन्ऱान् 861

मानवळ्–सम्मान्य देवी के; उरैत्तलोटुम्–कहने पर; मीन् ऍन्न मिळिरुम् कण्णाय्–मछली-सदृश चंचलाक्षी; मानिटर् अरक्कर् तम्मै–मानव राक्षसों को; वेर् अऱ वॆल्वर्–जड़ से काटकर विजयी होंगे; ऍन्निल्–तो; यानैयिन् इनत्तै ऍल्लाम्–सारे गजसमूहों को; इळ मुयल् कॊल्लुम्–एक बाल शशक मार देगा; मिन्नुम्–चमकदार; कूर् उकिर्–तेज नाखूनों से युक्त; मटङ्कल् एऱ्ऱिन् कुळुवै–पुरुषसिंहों के वृन्द को; मान् कॊल्लुम्–हरिण मार देगा; ऍन्ऱान्–(व्यंग्य में) कहा। ८६१

सम्मान्य सीताजी का यह कथन सुनकर रावण ने व्यंग्य के साथ कहा कि मछली-सी चंचल आँखों से शोभित देवी! मानव राक्षसों को मिटाकर विजयी हो जायँगे, तो एक बाल शशक गजसमूहों का नाश करा देगा। एक हरिण चमकदार तेज नाखूनों से युक्त पुरुषसिंहों को मिटा देगा। ८६१

मित्ऱिरण् डत्तैय पङ्गि विरादनुम् वॅहुळि पॉङ्गिक्
कन्ऱिय मनत्तु वॅन्ऱिक् करन्मुदर् कणक्कि लोरुम्
पॉन्ऱिय पूश लॉन्ऱुङ् केट्टिलीर् पोलु मॅन्ऱाळ्
अन्ऱवर् कडुत्त दुन्नि मऴैक्कणी ररुवि शोर्वाळ् 862

मित् तिरणट्टु अत्तैय–विजली के पुंज के समान; पङ्कि–बालों से युक्त; विराततुम्–विराध और; वॅकुळि पॉङ्कि–बढ़ते क्रोध से; कन्ऱिय–उत्तप्त; मनत्तु–मन का; वॅन्ऱि–विजयी; करन् मुतल् कणक्कु इलोरुम्–खर आदि असंख्यक; पॉन्ऱिय–जब मरे, तब जो उठा; पूचल् ऑन्ऱुम्–वह शब्द कुछ; केट्टिलिर् पोलुम्–सुना नहीं था (आपने) शायद; ऍन्ऱाळ्–कहकर; अन्ऱु–उस दिन; अट्टुत्ततु उन्नि–जो हुआ (श्रीराम का व्रण पाना आदि) ध्यान कर; मऴै कण् नीर्–मनोरम आँखों से आंसू; अरुवि चोर्वाळ्–धारा बहायी। ८६२

सीताजी ने उत्तर देते हुए कहा। विद्युत-पुंज के समान केशी विराध मरा। क्रोधोन्मत्त विजयशील खर आदि असंख्यक राक्षस उनसे लड़कर मरे। उनके मरने का शोर आपने सुना नहीं शायद! यह कहते-कहते उन्हें श्रीराम का युद्ध के अवसर पर हुआ कष्ट स्मरण आ गया। तो उनकी (मनोरम) शीतल आँखों से अश्रु की धारा बह चली। ८६२

वाळरि वळ्ळ रत्नाल् मान्गण निरुद रन्नार्
केळॊडु मडियु माऱुम् वानवर् किळरु माऱुम्
नाळैये काण्डि रन्ऱे नवैयिली रुणर्हि लीरो
मीळरुन् दरुमन् दन्नै वॅल्लुमो पाव मॅन्ऱाळ् 863

नवै इलीर्–निर्दोष साधु; वाळ् अरि वळ्ळल् तन्नाल्–प्रबल सिंह-सदृश प्रभु द्वारा; मान् कणम् निरुतर् अन्नार्–मृग-वृन्द राक्षस; केळ् ऑट्टु मटियुम्–अपने बन्धु-बान्धवों के साथ मरेंगे; आऱुम्–वह प्रकार और; वानवर् किळरुम्–देवों का उत्थान होगा; आऱुम्–वह प्रकार; नाळैये काण्टिर्–अन्ऱे–कल ही देखिए न; मीळ् अरुम्–अनुपेक्षणीय; तरुमम् तन्नै–धर्म को; पावम् वॅल्लुमो–पाप हरा देगा क्या; उणर्किलीरो–यह नहीं समझते क्या; ऍन्ऱाळ्–पूछा। ८६३

उन्होंने उसी भावावेश में कहा कि निर्दोष साधू! भयंकर सिंह-सदृश प्रभु (श्रीराम) द्वारा राक्षस रूपी मृगवृन्द बन्धु-बान्धवों के साथ मृतक बनेंगे और देवों का उत्थान होगा। इनका होने का प्रकार आप कल ही देखेंगे। अनुपेक्षणीय धर्म को पाप हरा सकेगा क्या? क्या आप यह नहीं जानते (कि धर्म विजयी रहेगा)? । ८६३

तेनुड नमुद ळाय वन्नमॅन् शिलशॊन् मालै
तानुडैच् चॅविह ळूडु तवऴ्वुरत् तळिर्त्तु वीङ्गुम्
ऊनुडै युडम्बि नानुम् मुरुहॆळु मान मून्ऱु
मानिडर् वलिय रॅन्ऱ माऱ्ऱत्ताऱ् चीऱ्ऱम् वैत्तान् 864

तेऩ् उटऩ् अमुतु अळाय अऩ्ऩ–शहद के साथ अमृत मिश्रित हो, ऐसा; मॆऩ् चिल चॊल्–कोमल कुछ शब्दों की; मालै–माला (पंक्ति); ताऩ् उटै चॆविकळ् ऊटु–अपने कानों में; तवऴ्वु उऱ–घुसने पर; तळिर्त्तु वीङ्कुम्–आनन्द से प्रफुल्लित; ऊऩ् उटै उटम्पित्ताऩुम्–मांसल शरीरी रावण भी; माऩिटर् वलियर्–मनुष्य बलवान हैं; ऎऩ्ऱ माऱ्ऱत्ताल्–इस कथन से; उरु कॊळ् मातम् ऊऩ्ऱ–स्वाभिमान के सजग होकर चुभते; चीऱ्ऱम् वैत्ताऩ्–नाराज हुआ। ८६४

सीताजी की बोली शहदमिश्रित अमृत के समान कोमल और मधुर थी। उन शब्दों की पंक्ति सुनकर आनन्द से रावण के कन्धे फूल उठे। और मांसल शरीर पुलकित हुआ। पर सीता के कहने का तात्पर्य था कि मानव बलिष्ठ हैं। उससे उसका स्वाभिमान जाग उठा और उसे चुभने लगा। तो उसे कोप हुआ। ८६४

शीऱिऩ ऩुरैशॆय् वानच् चिरुवलिप् पुल्लि योर्हट्
कोरीरु मतिदऩ् शॆय्दा ऩॆऩ्ऱॆडुत् तियम्बि ऩायेल्
तेऱुदि नाळै येयव् विरुबदु तिण्डोळ् वाडै
वीऱिय पॊळ्दु पूळै वीयॆऩ वीव ऩऩ्ऱे 865

चीऱितऩ्–कुपित रावण; उरै चॆय्वाऩ्–बोला; अ चिरु वलि–उन क्षुद्रबली; पुल्लियोर्क्कु–अल्पों को; ऒरु मतितऩ्–एक मानव ने; ईऱु चॆय्ताऩ्–अन्त दिला दिया; ऎऩ्ऱु ऎटुत्तु इयम्पित्ताय् एल्–यह बात लेकर बोलेंगी तो; नाळैये तेऱुति–(फल) कल ही जान लेंगी; अ इरुपतु तिण् तोळ् वाटै–(रावण की) उन बीस बलवान भुजाओं की हवा; वीचिय पॊऴुतु–जब बहेगी, तब; पूळै वी ऎऩ–'पूळै' (नाम के) फूल के समान; वीवऩ्–वह मानव मिट जायगा। ८६५

क्रुद्ध रावण ने यों कहा— विराध आदि क्षुद्र बली अल्प राक्षस हैं। उनका एक मानव ने अन्त करा दिया, इस बात को लेकर तुम बोल रही हो। तो कल ही देखोगी कि इसका फल क्या होगा। रावण के बीस बलिष्ठ भुजाओं के पराक्रम की हवा जब बहने लगेगी, तब उसके सामने यह मनुष्य 'पूळै' फूल के समान (जो बहुत ही मृदु है) कहीं का नहीं रहेगा। ८६५

मेरुवैप् पऱिक्क वेण्डिल् विण्णिऩै यिडिक्क वेण्डिल्
नीरिऩैक् कलक्क वेण्डि ऩॆरुप्पिऩै यविक्क वेण्डिल्
पारिऩै यॆडुक्क वेण्डिऱ् पालिहर् शॆञ्जॊ लेळाय्
यारॆऩक् करुदिच् चॊऩ्ऩा यिरावणऱ् करिदॆ ऩॆऩ्ऱाऩ् 866

पाल् निकर् चॆम् चॊल् एळाय्–दूध-सम मधुरभाषिणी वाले; मेरुवै पऱिक्क वेण्टिल्–मेरु को उखाड़ना चाहो; विण्णिऩै इटिक्क वेण्टिल्–आकाश को गिराना चाहो; नीरिऩै कलक्क वेण्टिल्–समुद्र को विलोडित करना चाहो; नॆरुप्पिऩै अविक्क वेण्टिल्–अग्नि को शांत करना चाहो; पारिऩै ऎटुक्क वेण्टिल्–भूमि को खोद लेना चाहो; इरावणऱ्कु–रावण के लिए; अरितु एतु–कठिन क्या है; यार् ऎऩ करुति–(उसको) कौन समझकर; चॊऩ्ऩाय्–ऐसा बोलती हो; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ८६६

पॅण्णॅन्नप् पिऴैत्तता यल्लै युन्नैयान् पिशैन्दु तिन्न
ॲण्णुवॅ नॅण्णिप् पिन्नै यॅन्नुयि रिऴप्प नॅन्ना 871

विण्णवर् एवल् चॅय्य-देव मेरी सेवा-टहल करते हैं; वॅन्ऱ-मैंने उन पर विजय पायी; ॲन् वीरम् पाराय्-ऐसे मेरा पराक्रम नहीं देखा; मण् इटै-भूमि पर; पुऴुविन् वाऴुम्-कीड़ों के समान जीवित; मानिटर् वलियर् ॲन्ऱाय्-नर बलिष्ठ हैं, कहती हो; पॅण् ॲन पिऴैत्ताय्-स्त्री हो, जीवित बच गयी हो; अल्लै-नहीं तो; उन्नै-तुम्हें; यान्-मैं; पिचैन्तु तिन्न-पीसकर खाने को; ॲण्णुवॅन्-सोचता; ॲण्णि-सोचकर (वैसा); पिन्नै-(करने के) बाद; ॲन् उयिर् इऴप्पॅन्-अपनी जान त्याग दूंगा; ॲन्ना-कहकर। ८७१

तब रावण ने कहा कि नारी! तुमने क्या कहा? मैंने देवों पर विजय पायी और वे मेरी सेवा-टहल कर रहे हैं। ऐसा मेरा पराक्रम तुम्हारे ध्यान में नहीं आया, और कहती हो कि भूमि पर कीड़ों का जीवन जो जी रहे है, वे मानव बली हैं! तुम स्त्री हो, उसी कारण तुम यह कहने के बाद जीवित रह सकी हो! नहीं तो मैं तुमको पीसकर खा जाने का विचार करूँगा; विचार क्या करूँगा, खा जाऊँगा। हाँ! खाने के बाद मैं भी आत्महत्या कर लूँगा। ८७१

कुलैवुऱ लन्न मुन्नम् यारैयुङ् गुम्बि डावॅन्
तलैमिशै महुड मॅन्नत् तनित्तनि यिनिदु ताङ्गि
अलहिल्पू णरम्बै माद रडिमुऱै येवल् शॅय्य
उलहमे ऴेऴु माऴुञ् जॅल्वत्तु ऴुऱैदि यॅन्ऱान् 872

अन्नम्-हंस (की-सी चाल वाली); कुलैवु उऱल्-मत घबड़ाओ; मुन्नम्-इसके पहले; यारैयुम् कुम्पिटा-किसी के सामने विनत नहीं; ॲन् तलै मिचै-(वैसे) अपने सिरों पर के; मकुटम् ॲन्न-मुकुटों के समान; तनि तनि-अलग-अलग; इनितु ताङ्कि-धारण करूँगा; अलकु इल् पूण्-अगणित आभरणधारिणी; अरम्पै मातर्-अप्सराएँ; अटि मुऱै एवल चॅय्य-तुम्हारे चरणों की यथाज्ञा सेवा करेंगी; उलकम् एऴ् एऴुम् आऴुम्-चौदहों लोकों के शासन के; चॅल्वत्तुळ्-वैभवपूर्ण जीवन में; उऱैति-सुखी रहो; ॲन्ऱान्-कहा। ८७२

हंसिनी! तुम व्याकुल मत बनो। मेरे सिर किसी के सामने कभी नहीं झुके हैं। उन पर जो मुकुट हैं, उनके समान मैं तुमको अपने सिरों पर बारी-बारी से धारण कर लूँगा। अगणित आभरणों से भूषित अप्सराएँ तुम्हारी चरण-सेवा करेंगी और तुम्हारी आज्ञाएँ बजा लायँगी। चौदहों लोकों पर शासन करने का जो मेरा वैभव है, उसको तुम अपनाओ और सुखी रहो। ८७२

शॅविहळैत् तळिर्क्कै याले शिक्कुऱच् चेमञ् जॅय्दाळ्
कवियैयुङ् गडक्कुम् वॅन्ऱिक् काहुत्तन् कऱ्पित्तॅप्

पुवियुडे यौळ्क्क नोक्काय् पॉङ्गॅरिप् पुनिद रीयुम्
अवियैनाय् वेट्ट दॅन्न वॅन्शौन्ना यरक्क वॅन्नुना 873

चॅविकळै–दोनों कानों पर; तळिर् कैयाले–करपल्लवों को; चिक्कु उर–खूब दबाकर; चेमम् चॅय्ताळ्–(इन शब्दों को सुनने से) रक्षित किया; अरक्क–राक्षस; पुवि इटै ऑळुक्कम् नोक्काय्–लोकधर्म नहीं पालते; कवियैयुम् कटक्कुम् वॅन्ऱि–कवियों के भी कल्पनातीत; वॅन्ऱि–विजयशील; काकुत्तन् कड्पिनेनै–काकुत्स्थ की पत्नी को; पुनितर्–पवित्र ब्राह्मणों द्वारा; पॉङ्कु ऍरि–प्रज्वलित अग्नि में; ईयुम्–देवार्पित; अवियै–हवि को; नाय् वेट्टतु अन्न–कुत्ता जैसा चाहकर; ऍन् चॉन्नाय्–क्या कहा; ऍन्ना–कहकर। ८७३

यह सुनते ही देवी ने अपने करपल्लवों को कानों पर रखकर उन शब्दों के प्रहार से अपने कानों को बचा लिया। उन्होंने रावण को डाँटा। नीच निशाचर! लोक-धर्म-विमुख! कवियों के कल्पनातीत विजयशील काकुत्स्थ की पत्नी हूँ, मैं। मुझे तुम उस कुत्ते के समान चाहते हो, जो पवित्र ब्राह्मणों के द्वारा प्रचलित अग्नि में देय हवि को चाहता हो! चाहकर तुमने क्या कहा? । ८७३

पुन्नुनै नीरि नॉय्दाय्प् पोदले पुरिन्दु निन्ऱ
इन्नुयि रिळ्त्त लञ्जि यिऱ्पिऱ्प् पळित्त लुण्डो
मिन्नुयिर्त् तुरुमिर् चीरुम् वॅञ्जरम् विरवा मुन्नम्
उन्नुयिर्क् कुरुदि नोक्कि यौळित्तिया लोडि यॅन्ड्राळ् 874

पुल् नुनै नीरिन्–घास की नोक की जल-बूँद के समान; नॉय्ताय्–अल्प वन; पोतले पुरिन्तु निन्ऱ–मिटना ही जिसका गुण है; इन् उयिर्–उस प्यारे प्राण को; इळत्तल् अञ्चि–छोड़ने से डरकर; इल् पिऱप्पु–कुलीनता को (पातिव्रत्य को); अळित्तल् उण्टो–मिटाऊँगी क्या; मिन् उयिर्त्तु–प्रकाश फैलाता हुआ; उरुमिल् चीऱुम्–वज्र के समान फुफकारते हुए चलायमान; वॅम् चरम्–भयंकर शर; विरवा मुन्नम्–आकर लगे, इसके पहले ही; उन् उयिर्क्कु उऱुति नोक्कि–अपने प्राणों का हित समझकर; ओटि ऑळित्ति–भागकर छिप जाओ; ऍन्ऱाळ्–देवी ने कहा। ८७४

यह जीवन घास की नोक पर की जल-बिन्दु के समान है। उसका गुण ही चलने का है। ऐसे प्राणों को जाने से रोकना चाहकर क्या मैं अपनी कुलीनता का निशान, पातिव्रत्य को त्याग दूँगी? राम का शर विद्युत-सम प्रकाश के साथ वज्र के समान फुफकारते हुए आयगा! उसके आने से पहले अपने प्राण बचा लो। अपने हित में भागो, कहीं और छिप जाओ। ८७४

ऍन्ड्रव ळुरैक्क निन्ड्र निरक्कमि लरक्क नॅय्द
उन्ड्रुणैक् कणव नम्बन् वुयर्दिशै शुमन्द वोङ्गल्

वऩ्ऱिऱऩ् मरुप्पि ऩाऱ्ऱऩ् मडित्तवॆऩ् मार्बिऩ् वन्दाल्
कुऩ्ऱिडैत् तॊडुत्तु विट्ट पूङ्गणै कॊल्ल दॆऩ्ऱाऩ् 875

ऍऩ्ऱु अवळ् उरैप्प—ऐसा उनके कहने पर; नित्ऱ इरक्कम् इल्—स्थिर दया-रहित; अरक्कऩ्—राक्षस; उऩ् तुणै कणवऩ्—तुम्हारे जीवन-संगी का; ऍय्त अम्पु—प्रेषित शर; उयर् तिचै चुमन्त—उन्नत दिशा-वाहक; ओङ्कल्—पर्वत-सम गजों के; वऩ् तिऱल् मरुप्पिऩ्—कठिन सारयुक्त दाँतों का; आऱ्ऱल् मटित्त—वल-भंजक; ऍऩ् मार्पिऩ् वन्ताल्—मेरी छाती पर आयगा तो; अतु—वह; कुऩ्ऱु इटै—पर्वत पर; तॊटुत्तु विट्ट—संधानकर प्रेषित; पूम् कणै ऍऩ्ऱाऩ्—पुष्पशर (सम) होगा; ऍऩ्ऱाऩ्—कहा। ८७५

देवी ने यह चेतावनी दी, तो रावण, जिसका चित्त कभी स्निग्ध न रहा और सदा क्रूर, बोला— तुम्हारे जीवन-संगी का प्रेषित शर मेरा क्या कर सकेगा? मेरा वक्ष उन्नत दिशा-भार-वाही पर्वत-सम दिग्गजों के कठोर सारयुक्त दाँतों का भंजक है! उस पर वह शर पर्वत पर लगे पुष्प के समान हो जायगा। ८७५

अणङ्गिऩुक् कणङ्ग नाळे याशैनो यहत्तुट् पॊङ्ग
उणङ्गिय वुडम्बि ऩॆऩुक् कुयिरिनै युदवि युम्बर्क्
कणङ्गुळै महळिर्क् किल्लाप् पॆरुम्बदङ् गैक्कॊ ळॆऩ्ऩा
वणङ्गिऩ ऩुलहन् दाङ्गु मलैयिनुम् वलिय तोळाऩ् 876

उलकम् ताङ्कुम्—भूधर; मलैयितुम्—पर्वतों से भी बढ़कर; वलिय तोळाऩ्—कठोर कन्धों के रावण ने; अणङ्किऩुक्कु—श्री की; अणङ्कु अऩ्ऩाळे—श्रीदेवी-सी देवी; आचै नोय्—राग-रोग; अकत्तु उळ् पॊङ्क—मन में प्रवल है; उणङ्किय—निर्बल पड़े; उटम्पिऩॆऩ्क्कु—शरीरी मुझे; उयिरिऩै उतवि—प्राण-दान करके; उम्पर्—स्वर्गवासिनी; कणम् कुऴै—भारी कुण्डलधारिणी; मकळिर्क्कु इल्ला—देवांगनाओं के लिए भी अप्राप्य; पॆरुम् पतम्—श्रेष्ठ पद को; कै कॊळ् ऍऩ्ऩा—अपनाओ, कहकर; वणङ्किऩऩ्—प्रणाम किया। ८७६

रावण की भूधर पर्वतों से भी अधिक बलवान भुजाएँ थीं। ऐसे भुजबली रावण ने एक बात की— श्रीदेवी की भी श्री! राग-रोग मेरे अन्दर सितम ढा रहा है! मेरा शरीर शिथिल हो रहा है। कृपा करो। मुझे प्राणदान करो। और स्वर्गवासिनी, भारी कुण्डलधारिणी देवांगनाओं को भी अप्राप्य बहुमूल्य पद अपनाओ। यह कहकर उसने देवी के चरणों पर झुककर प्रणाम किया। ८७६

तऱैवायवऩ् वन्दडि ताऴ्दलुम्, करैवाळ्वड वावि कलङ्गिऩळ्बोल्
इऱैवाविळै योयॆऩ वॆङ्गिऩळाल्, पॊऱैतानुरु वायदॊर् पॊऱ्पुडैयाळ् 877

अवऩ्—उसके; वन्तु—आकर; अटि तऱैवाय्—चरणों के सामने, भूमि पर गिरकर; ताऴ्तलुम्—दण्डवत करने पर; पॊऱै ताऩ् उरु आयतु—क्षमा ही मूर्ति बन गयी, ऐसी;

ओर् पॉऱ्पु उटैयाळ्–शोभाशालिनी; करै वाळ् पट–(रक्त-)रंजित तलवार के लगने पर; आवि कलङ्कित्तळ् पोल्–प्राणाकुल हुई-सी; इऱैवा–मेरे नाथ; इळैयोय्–देवर जी; ॲत्त–पुकारते हुए; एङ्कित्तळ्–दुखी हुईं। ८७७

जब रावण ने सीताजी के पास आकर उनके चरणों पर दण्डवत की, तब क्षमा का अवतार सीताजी रक्तरंजित तलवार से प्रहरित के समान तड़पी। 'हे मेरे नाथ! हे मेरे देवर!' की दुहाई देते हुए वे बहुत खिन्न हुईं। ८७७

*आण्डायिडै तीयव नायिळैयैत्, तीण्डाऩयऩ् मुऩ्ऩुरै शिन्दैशॅयात्
तूण्डानॅऩ्ऩ लामुयर् तोळ्वलियाल्, कीण्डानिल मोशऩै कीऴ्पुडैये 878

आण्टु–तब; तीयवऩ्–खल ने; आय् इळैयै–उत्तम आभरणों से अलंकृत देवी को; अयऩ् मुऩ् उरै–ब्रह्मा के पूर्वकथित शाप का; चिन्तै चॅया–मन में स्मरण करके; तीण्टाऩ्–स्पर्श नहीं किया; तूण् ताऩ् ॲऩ्ऩल् आम्–खम्भे ही मान्य; उयर् तोळ् वलियाल्–अपनी भुजाओं के बल से; आयिटै–उस स्थल में; निलम् कीऴ् पुटै–भूमि को नीचे और पार्श्वों में; ओर् ओचऩै–एक योजन; कीण्टाऩ्–खोदकर उठा लिया। ८७८

तब खल रावण ने सोचा कि क्या किया जाय। उसे ब्रह्मा-दत्त शाप का स्मरण आया, जिसके अनुसार वह परनारी का स्पर्श नहीं कर सकता था। इसलिए उसने वहाँ की भूमि को अपने स्तम्भ-सम हाथों से खोद लिया, जहाँ सीताजी थीं। नीचे और पार्श्वों में एक योजन गहरी और एक योजन विस्तार की भूमि खोदकर उठा ली। ८७८

कॉण्डानुयर् तेर्मिशै कोल्वळैयाळ्, कण्डाडन दारुयिर् कण्डिलळाल्
मण्डानुऱु मीऩ्निऩ् मयङ्गिऩळाल्, विण्डाऩ्वऴि यायॅऴु वान्विरैवाऩ् 879

उयर् तेर् मिचै कॉण्टाऩ्–ऊँचे रथ पर उन्हें रख लिया; कोल् वळैयाळ्–सुन्दर कंकणशोभिता ने; कण्टाळ्–देखा; तऩतु आर् उयिर् कण्टिलळ्–अपनी जान न देखतीं; मण् ताऩ् उऱ–धरती पर गिरीं; मीऩिऩ् मयङ्कितळ्–मछली-सी मूर्च्छित हुईं; विण् ताऩ् वऴि आ–(रावण) आकाश-मार्ग में; ॲऴुवाऩ्–उठा; विरैवाऩ्–तेज चला। ८७९

रावण ने सीताजी को भूमिखण्ड-सहित उठाकर अपने रथ में रख लिया। सुन्दर कंकणभूषित देवी ने इसको देखा तो मानो उनके प्राण खिसक गये। धरती पर पड़ी मछली के समान छटपटायीं। बेहोश हुईं। रावण आकाश-मार्ग में आगे बढ़ रहा था। ८७९

*विडुतेरॅऩ्ऩ वॅङ्गनल् वॅन्दऴियुम्, कॉडिपोल्पुरळ् वाळ्हुलै वाळयर्वाळ्
तुडियावॅऴु वाडुय रालऴुवाळ् कडियायर नेयिडु कावॅन्नुमाल् 880

विटु तेर् ॲऩ्–चलाओ रथ, कहने पर; कऩल् वॅन्तु अऴियुम्–आग में झुलसकर म्रियमाण; कॉटि पोल्–लता के समान; पुरळ्वाळ्–छटपटातीं; कुलैवाळ्–अधीर

होतीं; अयर्वाळ्-शिथिल होतीं; तुटिया अॅळुवाळ्-तड़पकर उठतीं; तुयराल् अऴुवाळ्-दुःख के साथ रोतीं; कटिया अरने-(हमसे) अनुपेक्षित धर्मदेवता; इतु का-इससे तारो; अॅतुम्-कहतीं। ८८०

रावण ने सारथी को आज्ञा दी कि रथ को तेज चलाओ। तब अग्नितप्त लता के समान सीताजी लोटी; अधीर हुईं; शिथिल पड़ीं; फिर तड़पकर उठी। दुःख से रोयी। धर्मदेवता को पुकारा। हे अनुपेक्षित धर्मदेवता! मुझे इस विपदा से बचा लीजिए। ८८०

❀ मलैयेमर नेमयि लेकुयिले, कलैयेपिणै येहळि ड्रेपिडिये
निलैयावुयि रेनिलै तेड्रिनिर्पोय्, उलैयावलि याहळै नीरुरैयीर् 881

मलैये-हे पर्वतो; मरने-तरुओ; मयिले-मोरो; कुयिले-कोकिलो; कलैये-हिरणो; पिणैये-हरिनियो; कळिरे-पुरुषगजो; पिटिये-हथिनियो; निलैया उयिरेन्-अस्थिरजीव; निलै तेड्रिनिर् नीर्-मेरी स्थिति जानते हो तुम लोग; उलैया वलियार्-अक्षय बलशाली; उळै पोय्-(श्रीराम) के पास जाकर; उरैयीर्-कहो। ८८१

सीताजी ने सामने दिखे सब पदार्थों को बुलाकर बचाव की याचना की। हे पर्वतो, तरुओ, मोरो, कोयलो, मृगो, हरिनियो, गजो, हथिनियो! मैं कितनी अधीर हूँ। यह तुम जानते हो। तुम जाकर उन अक्षय पराक्रमी श्रीराम को समाचार दो। ८८१

शॅञ्जेवह नार्निलै नीर्तॅरिवीर्, मञ्जेपॉळि लेवन देवदैहाळ्
अञ्जेलॅन नल्हुदि रेलडियेन्, उञ्जेनदु तानिळ वोवुरैयीर् 882

मञ्चे-मेघो; पॉळिले-उद्यानो, वत्तेवतैकाळ्-वनदेवताओ; चॅम् चेवकत्तार् निलै-उत्तम पराक्रमी श्रीराम का जो (दुःख) होगा; नीर्-तुम लोग; तॅरिवीर्-जानते हो; अञ्चेल् ॲन्-मुझे अभय देकर; नल्कुतिरेल्-यह समाचार उन्हें दें तो; अटियेन् उञ्चेन्-दासी मैं बच जाऊँगी; अतुतान्-वह भी; इळवो-तुम्हारे लिए कष्टकर है क्या; उरैयीर्-जाकर कहो। ८८२

हे मेघो, उद्यानो, वनदेवताओ! महा पराक्रमी श्रीराम मुझे खोकर कैसे दुखी होंगे—यह तुम लोग जानते हो। इसलिए मुझे अभयदान देकर उनके पास जाकर कहोगे तो बच सकूँगी। इसमें आपका कोई नुकसान होगा क्या? जाओ, कहो उनसे। ८८२

❀ निरुदादियर् वेरऱ नीणमुहिल्बोल्, शरतारैहळ् वीशिनर् शारहिला
वरदाविळै योय्मरु वेदुमिलाप्, परदाविळै योय्पळि पूणुदिरो 883

निरुतातियर्-राक्षस आदि; वेर् अऱ-निर्मूल करने; नीळ् मुकिल् पोल्-बड़े काले मेघ के समान; चर तारैकळ् वीचितर्-शर-धाराएँ बरसाते हुए; चारकिला-जो यहाँ नहीं आये; वरता-वे वरद; इळैयोय्-उनके लघु भ्राता; मऱु एतुम् इला-निर्दोष; परता-भरत; इळैयोय्-उनके अनुज; पळि पूणुतिरो-(मुझे न बचाकर) अपयश के भागी हो जायँगे क्या। ८८३

हे वरद श्रीराम ! आप राक्षसादि को निर्मूल करने के लिए बड़े काले मेघ के समान शर-वर्षा कराते हुए आये नहीं ! हे देवर ! निर्दोष भरत ! उनके कनिष्ठ भाई ! मेरे कारण आप सब अपयश के भागी होंगे क्या ? । ८८३

कोदावरि येहुळिर् वाय्क्कुळैवाय्, मादावनै याय्मन नेतेळिवाय्
ओदादुणर् वारुळै योडितैपोय्, नीदान्विनै येनिलै शोल्ललैयो 884

कोतावरिये–गोदावरी; कुळिर्वाय्–शीतल; कुळैवाय्–स्नेहार्द्र; माता अनैयाय्–माता-समाना; मतन्ते तेळिवाय्–स्वच्छ-चित्त; नी तान्–तुम ही; ओतातु उणर्वार् उळै–विना अध्ययन किये ही विद्वान बने श्रीराम के पास; ओटितै पोय्–दौड़ जाकर; विनैयेन् निलै–प्रारब्धवश मेरी स्थिति; चोल्ललैयो–नहीं कहोगी क्या । ८८४

हे गोदावरी नदी ! तुम शीतल हो, स्नेहार्द्र हो ! सबकी माता-समान हो । स्वच्छ-मना हो । तुम ही तो दौड़के जाओ और विना अध्ययन किये ही सर्वज्ञ वने मेरे पति के पास प्रारब्धवश मेरी स्थिति नहीं कहोगी क्या ? । ८८४

मुन्दुम्जुनै काणमुळै वाळरिहाळ्, इन्दन्निल तोडु मॅडुत्तकैनाल्
ऐन्दुन्दलै पत्तु मलैन्दुलैयच्, चिन्दुम्बडि कण्डु शिरिक्किलिरो 885

मुन्तुम्–सामने दृश्य; चुनैकाळ्–निर्झरो; मुळै वाळ्–गुफावासी; अरिकाळ्–सिंहो; इन्त निलत्तोटुम्–इस भूमि के साथ; ॲटुत्त–जिन्होंने मुझे उठाया; कै नाल् ऐन्तुम्–वे बीसों हाथ और; तलै पत्तुम्–दसों सिर; अलैन्तु उलैय–हरहराकर गिरें और मिटे और; चिन्तुम् पटि कण्टु–उनके गिरने की बात देखकर; चिरिक्किलिरो–नहीं हँसोगे क्या । ८८५

मेरे सामने दृश्यमान निर्झरो ! गुफावासी सिंहो ! मुझे भूखण्ड के साथ उठाकर रावण लिये जा रहा है ! क्या उसके बीसों हाथ और दसों सिर हिलकर नहीं गिरेंगे ? और उनको नष्ट होते देखकर तुम नही हँसोगे ? । ८८५

ऑन्ड्रिन्न पलवुम् पन्नि यिरियलुऱ् ऱरऱ्ऱु वाळैप्
पॊन्ऱुन्नुम् पुणर्मॆन् कॊङ्गैप् पॊलङ्गुळै पोरि लॆन्नैक्
कॊन्ऱुन्नै मीट्कुङ् गॊल्लम् मानिडर् कॊळ्ह वॆन्ना
वन्ऱिणगै यॆऱिन्दु नक्कान् वाळ्क्कैनाळ् वऱितु वीळ्प्पान् 886

ऑन्ऱु–ऐसा; इन्न पलवुम्–और इस तरह की अनेक बातें; पन्नि–कहकर; इरियल् उऱ्ऱु–व्यथित होकर; अरऱ्ऱुवाळै–जो रो रही थीं, उनको; वाळ्क्कै नाळ्–जीवन के दिनों को; वऱितु वीळ्प्पान्–व्यर्थ करने में लगा रहा रावण; पॊन् तुन्तुम्–स्वर्णमय (आभरणावृत); पुणर् मॆल् कॊङ्कै–सटे हुए स्तनों से भूषित; पॊलन् कुळै–

(और) मनोरम कुण्डलधारिणी; अ मात्तिटर–वे नर; पोरिल् अॅन्नै कॉन्ऱु–युद्ध में मुझे मारकर; उन्नै मीट्पर् कॉल्–तुम्हें मुक्त करेंगे क्या; कॊळ्क–करें; अॅन्ना–कहकर; वन् तिण् कै अॅऱिन्तु–कटोर बलवान हाथ पीटकर; नक्कान्–ठठाया। ८८६

सीताजी ऐसी और इस तरह की अन्य बातें कहकर अत्यधिक व्यथा के साथ विलाप रही थीं। तब व्यर्थजीवक रावण ने उनको चिढ़ाते हुए कहा कि स्वर्णमय आभरणभूपित उरोजों की, भारी कुण्डलधारिणी वाले! अब क्या वे नर मुझे युद्ध मे मारकर तुमको रिहा कर देंगे? करें। यह कहकर ताली बजाते हुए ठठाया। ८८६

वाक्किना लन्नान् शॊल्ल मायैयाल् वञ्ज मानॊन्
ऱाक्किना याक्कि युन्नै यारुयि रुण्णुङ् गूऱ्ऱैप्
पोक्किनाय् पुहुन्दु कॊण्डु पोहिन्ऱाय् पॊरुदु निन्नैक्
काक्कुमा काण्डि यायिऱ् कडवलुन् तेरै यॆन्ऱाळ् 887

अन्नान्–उस (रावण) के; वाक्किनाल् चॊल्ल–अपने मुख से वह शब्द कहने पर; मायैयाल्–माया से; वञ्च मान् ऑन्ऱु–एक मायामृग; आक्किनाय्–सृष्ट किया; आक्कि–बनाकर; उन्नै आर् उयिर् उण्णुम् कूऱ्ऱै–तुम्हारे प्यारे प्राण-भक्षक यम (श्रीराम) को; पोक्किनाय्–उसके पीछे भिजवाया; पुकुन्तु–(उनके अभाव में) घुसकर; कॊण्टु पोकिन्ऱाय्–मुझे हर ले जा रहे हो; पॊरुतु–युद्ध करके; निन्नै काक्कुम् आ–अपने को बचा लेने का सामर्थ्य; काण्टि आयिल्–दिखा सको तो; उन् तेरै–अपने रथ को; कटवल्–आगे मत चलाओ; अॅन्ऱाळ्–कहा। ८८७

रावण के यह (परिहास-) वचन कहने पर सीताजी ने कहा कि तुमने एक मायामृग बनाया और उसके पीछे उनको भिजवा दिया। जब वे नहीं रहे, तब चोरी से आश्रम में घुसे और मुझे उठाये ले जा रहे हो! अगर युद्ध में अपने को बचा लेने का सामर्थ्य सचमुच रखते हो, तो रथ को रोको। आगे मत बढ़ाओ। ८८७

मीट्टुमॊन् ऱुरैशॆय् वाणी वीरने विरैविन् मऱ्ऱुन्
कूट्टमा मरक्कर् तम्मैक् कॊन्ऱुङ्गै मुलैयु मूक्कुम्
वाट्टिनार् वनत्ति लुळ्ळार् मान्िड रॆन्ऱ वार्त्तै
केट्टुमिम् मायञ् जॆय्द दच्चत्तिन् किळर्च्चि यन्ऱो 888

नी वीरने–तुम वीर हो क्या; उन् कूट्टम् आम् अरक्कर् तम्मै–तुम्हारे दलों को, राक्षसों को; विरैविल् कॊन्ऱु–शीघ्रता से मारकर; उङ्कै मुलैयुम् मूक्कुम्–तुम्हारी बहिन की छाती और नाक को; वाट्टिनार्–(जिन्होंने) काटकर दुखाया; मान्िटर्–वे नर; वनत्तिल् उळ्ळार् ॲन्ऱ वार्त्तै–वन में हैं, यह समाचार; केट्टुम्–सुनने के बाद भी; इ मायम् चॆय्ततु–यह कपट करना; अच्चत्तिन् किळर्च्चि अन्ऱो–भय का विकास नहीं है क्या; मीट्टम् ऑन्ऱु उरै चॆय्वाळ्–और एक बात कहने लगी। ८८८

सीताजी ने और एक बात कही। तुम सच्चे वीर हो ? तुममें भय नहीं है क्या ? खर-दूषणादि तुम्हारे दल के राक्षसों को प्रभु ने शीघ्रता से निहत कर दिया। तुम्हारी बहिन की छाती और नाक कटी। ऐसे पराक्रमी वन में हैं, यह सुनने के बाद तुमने यह प्रवंचना की। क्या इसका अर्थ तुम्हारे भय का विकास और प्रदर्शन नहीं है ? । ८८८

मॉऴिदरु मळवि नङ्गै केळिदु मुरणिल् याक्कै
इऴिदरु मनिद रोडे यान्शॅरु वॅदिर्प्पॅ नॅन्ऱाल्
विऴिदरु नॅऱ्ऱि यान्ऱन् वॅळ्ळिवॅऱ् पॅडुत्त तोट्कुप्
पऴिदरु मदनिऱ् चालप् पयन्ऱरुम् वञ्ज मॅन्ऱान् 889

मॉऴि तरुम् अळविल्–इतना कहने पर; नङ्कै–नायिका; इतु केळ्–यह सुनो; मुरण् इल् याक्कै–दुर्बल-शरीरी; इऴि तरु मनितरोटे–क्षुद्र नरों के साथ; यान् चॅरु ऍतिर्प्पॅन् ऍन्ऱाल्–मैं युद्ध में लगूँगा तो; विऴि तरु नॅऱ्ऱियान् तन्–भालनेत्र शिवजी के; वॅळ्ळि वॅऱ्पु ऍटुत्त तोट्कु–चाँदी के पर्वत के धारक, मेरे कन्धों का; पऴि तरुम्–अपमान होगा; अतनिल्–उससे; वञ्चम्–प्रवंचना; चाल–अच्छा; पयन् तरुम्–फल देगी; ऍन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ८८९

रावण ने इसके उत्तर में कहा कि नायिका ! मेरी यह बात सुनो। वे अल्प और दुर्बल शरीरी नर हैं। उनसे प्रत्यक्ष युद्ध करूँ तो वह मेरे भालनेत्र शिवजी सहित चाँदी के कैलास पर्वत के धारक कन्धों का अपमान होगा। उससे यह प्रवंचना निश्चय अधिक अच्छा फल दिलायेगी ! । ८८९

पावॅयु मदनैक् केळात् तङ्गुलप् पहैअर् तम्बाल्
पोवदु कुऱ्ऱम् वाळिऱ् पॉरुवदु नाणम् बोलाम्
आवदु कऱ्पि नारै वञ्जिक्कु माऱ्ऱ लेयाम्
एवमॅन् पऴिदा नॅन्नॆ यिरक्कमि लरक्करुक् कॅन्ऱाळ् 890

पावॅयुम्–प्रतिमा-सी देवी; अतनै केळा–वह सुनकर; तम् कुल पकैजर् तम् पाल्–अपने कुल के शत्रु के साथ; पोवतु–युद्ध करने के लिए जाना; कुऱ्ऱम्–अपराध है और; वाळिल्–तलवार से; पॉरुवतु–युद्ध करना; नाणम् पोलाम्–शरम की बात है क्या; कऱ्पित्तारै–परपुरुष की पत्नी को; वञ्चिक्कुम् आऱ्ऱल्–धोखा देने का सामर्थ्य; आवतु आम्–ठीक होगा शायद; इरक्कम् इल् अरक्कर्क्कु–निर्दय निशाचरों के लिए; एवम् ऍन्–अपराध क्या है; पऴि तान् ऍन्नॆ–निन्दनीय क्या है; ऍन्ऱाळ्–कहा। ८९०

चित्रप्रतिमा-सी देवी ने व्यंग्य के साथ कहा। अपने कुल-शत्रु के साथ युद्ध करना अपराध है, तलवार की वार करना शरम की बात है ! परपुरुष की पतिव्रता पत्नी को वंचना से हर ले जाना श्रेयस्कर और करने योग्य काम है। वाह ! निर्दय राक्षसों के विचार में फिर अपराध क्या है ? अपमान क्या है ? विचित्र बातें हैं। ८९०

ऍऩ्ऩुमव् वेलै यिऩ्ग णॆङ्गडा पोव दॆऩ्ऱे
निऩ्निलॆऩ् ऱिडितॄत शॊल्लऩ् नॆरुप्पिडैप् परप्पुङ् गणणऩ्
मिऩ्ऩॆन विळङ्गुम् वीरत् तुण्डत्तऩ् मेरु वॆऩ्ऩुम्
पॊऩ्ऩॊडुङ् गुऩ्ऱम् वाऩिल् वरुवदे पोलु मॆय्यान् 891

ऍऩ्ऩुम् अ वेलैयिऩ् कण्—जब वे ऐसा बोली, तब; ऍङ्कु अटा पोवतु—रे, तुम कहाँ जाते हो; निल् निल् ऍऩ्ऱु—खड़ा रह, खड़ा रह, ऐसा; इटितॄत चॊल्लऩ्—वज्रस्वर; नॆरुप्पु इटै परप्पुम्—आगे को सर्वत्र फैलानेवाली; कण्गऩ्—आँखों के; मिऩ् ऍऩ विळङ्कुम्—विद्युत के समान विद्यमान; वीर तुण्टत्तऩ्—प्रतापी चोंच के; पॊऩ् नॆटुम् कुऩ्ऱम्—उच्च स्वर्ण-पर्वत मेरु; वाऩिल् वरुवते पोलुम्—आकाश में आता हो, ऐसे; मॆय्याऩ्—शरीरी। ८९१

वे यह कह ही रही थी कि 'रे कहाँ जा रहे हो! खड़ा रह, खड़ा रह' का शब्द सुनाई दिया। जटायु ने यह शब्द कहा। (उनका वर्णन आगे है) उनका स्वर वज्र-सम था। आँखों से आग सब जगह बरस रही थी। उनका तुण्ड वज्र-सम कठोर था और विद्युत के समान प्रकाशमान। स्वर्ण-मेरु आकाश में उड़ता आता हो, ऐसा भ्रम पैदा करनेवाले भीमकाय थे। ८९१

पाऴिवऩ् किरिहळ् ऍल्लाम् परिऩ्दॆऴुन् दॊऩ्ऱो डॊऩ्ऱु
पूऴियि नुदिर विण्णिऩ् पुडैत्तुवुऱक् किळर्न्दु पॊङ्गि
आऴियु मुलहु मॊऩ्ऱा यऴिदर मुळ्ळुम् वीशुम्
ऊऴिवॆङ् गाऱ्ऱिदॆऩ्ऩ विरुश्चिऱै यूदै पॊङ्ग 892

पाऴि वऩ् किरिकळ् ऍल्लाम्—बड़े और कठोर सभी पर्वतों को; परिन्तु ऍऴुन्तु—उखाड़कर ऊपर उठाकर; ऒऩ्ऱु ऒटु ऒऩ्ऱु—एक दूसरे के साथ; पूऴियिऩ् उतिर—चूर होकर गिराते हुए; विण्णिऩ् पुटैत्तु—आकाश में टकराकर; उऱ किळर्न्तु पॊङ्कि—बड़े शोर के साथ ऊपर उठकर; आऴियुम् उलकुम्—समुद्र और धरती को; ऒऩ्ऱाय् अऴि तर—एक साथ विनष्ट करते हुए; मुळ्ळुम् वीचुम्—सर्वत्र प्रवहमान; ऊऴि वॆम् काऱ्ऱु इतु—युगांत का प्रभंजन है यह; ऍऩ्ऩ—ऐसा विचार पैदा करते हुए; इरु चिऱै—अपने दोनों पंखों द्वारा; ऊतै पॊङ्क—पवन बनाते हुए। ८९२

उनके अपने पक्षों को हिलाने से पवन इतनी तेजी से और इतने बल के साथ विस्थापित हुआ कि पर्वत उखड़कर ऊपर उठे और आपस में टकराकर चूर हो गिर पड़े; और भूमि और आकाश को एक साथ विनष्ट करते हुए युगांतकालीन प्रभंजन प्रवृत्त हो बह रहा हो, ऐसा लगा। ८९२

शाहैवऩ् ऱलैयॊडु मरमुन् दाऴ्सेल्, मेहमुङ् गिरिहळुम् विण्णिन् मीच्चॆल
माहवॆङ् गलुऴ्ऩे वरुहिऩ् ऱाऩॆऩ्ऩ, नाहमुम् पडर्मॊऴित् तॊडुङ्गि नैयवे 893

मरमुम्—तरु भी; चाकै वऩ् तलैयॊटु—शाखा रूपी सिरों के साथ; ताऴ—गिर पड़े; मेल् मेकमुम्—ऊपर के मेघ और; किरिकळुम्—गिरियाँ; विण्णिऩ् मी चॆल—

आकाश पर चलीं; माक वॅम् कलुळत्ते-(ऐसा) बड़े और भयंकर गरुड़ ही; वरुकिन्ऱात् अॅन्-आता हो, सोचकर; नाकमुम्-सर्प भी; पटम् ऑळित्तु-फन समेट लेकर; ऑतुङ्कि नैयवे-छिपकर क्लिन्न हैं, ऐसी स्थिति पैदा करते हुए। ८६३

तरु शाखा के सिरों के साथ नीचे गिरे। ऊपर के मेघ और गिरियाँ आकाश में चलीं। बड़े और भयंकर गरुड़ ही आ रहे हैं—समझकर सर्प फनों को समेटते हुए जा छिपे और क्लिन्न रहे। ८९३

यात्तैयु माळियु मुदल यावैयुम्, कानॅडु मरत्तॊडु तूऱु कल्लिवै
मेनिमिर्न्दिरुशिऱै विशैयि नेऱ्लाल्, वानमुङ् गानमु माऱु कॊण्डवे 894

यात्तैयुम् आळियुम् मुतल-गज, शरभ आदि; यावैयुम्-सभी प्राणी; कान् नॅटु मरत्तॊटु-वन्य, ऊँचे पेड़ों के साथ; तूऱु कल् इवै-झाड़, कंकड़ आदि; इरु चिऱैकळ् विशैयिल्-दोनों पंखों के हिलने से उत्पन्न हवा के वेग से; मेल् निमिर्न्तु एऱ्लाल्-ऊपर उठकर चले, इसलिए; वानमुम् कानमुम् माऱु कॊण्ट-आकाश और कानन स्थानांतरित हो गये। ८६४

गज, शरभ आदि सभी प्राणी, वन के बड़े-बड़े पेड़, झाड़, कंकड़ आदि उनके पक्षों के प्रबल पवन के कारण ऊपर उठे और उड़े। इसलिए कानन आकाश बन गया और आकाश कानन। ८९४

उत्तमन् ऱेवियै युलहॊ डोङ्गुदेर्
वैत्तनै येहुव दॅङ्गु वानिनो
डित्तनै दिशैयैयुम् मऱैप्पॅन् यानॅनाप्
पत्तिरच् चिऱैहळै विरिक्कुम् पण्बिनान् 895

उलकोटु उत्तमन् तेवियै-भूमि के अंश के साथ पुरुषोत्तम श्रीराम की पत्नी को; ओङ्कु तेर् वैत्तनै-उन्नत रथ पर रखकर; ऍङ्कु एकुवतु-कहाँ जाते हो; वानिन् ओटु इत्तनै तिचैयैयुम्-आकाश में ही नहीं, सभी दिशाओं के मार्ग को; यान् मऱैप्पॅन्-मैं रोक लूँगा; ऍना-कहकर; पत्तिर चिऱैकळै-पत्र-सम पक्षों को; विरिक्कुम् पण्पिनान्-फैलाने का कार्य करके। ८६५

जटायु ने पूछा— रे भूमि के अंश के साथ पुरुषोत्तम श्रीराम की पत्नी को ऊँचे रथ में रखकर कहाँ जाओगे? तुम आकाश में ही नहीं, किसी भी दिशा में जा नहीं पाओगे। मैं सभी मार्ग रोक लूँगा। यह कहते हुए वे पत्राकार अपने पक्षों को फैलाकर (रोकते हुए)। ८९५

वन्दन नॅरुवैयिन् मन्नन् माण्बिलान्
ऍन्दिरत् तेर्च्चॅल वॊळिक्कु मॅण्णिनान्
शिन्दुरक् काल्शिरज् जॅक्कर् शूडिय
कन्दरक् कयिलैयै निहर्क्कुङ् गाट्चियान् 896

माण्पु इलान्-अश्रेष्ठ रावण के; ऍन्तिर तेर् चॅलवु-यन्त्रसहित रथ का

गमन; ऒऴिक्कुम् ऎण्णित्तान्–रोकने का विचार ले; विन्तुरम् काल् चिरम्–लाल पैरों और सिर से युक्त; चॆक्कर् चूटिय कन्तरम्–संध्याकाश के मेघ को अपने गले में रखते हुए; कयिलै–कैलास को; निकर्क्कुम् काट्चियान्–समानता करनेवाले; ऎरुवैयिन् मन्तन्–गीधों के राजा; वन्ततन्–आये। ८६६

अश्रेष्ठ रावण के यन्त्रयुक्त रथ को रोकने के विचार से जटायु आये। उनके पैर और सिर लाल थे। वे कैलास पर्वत के समान लगे, जिसके कण्ठ-प्रदेश पर सन्ध्यामेघ फैले हों। ८९६

❀ आण्डुऱ्ऱु वणङ्गिनै यज्जलॆन्तात्, तीण्डुऱ्ऱिल नॆन्ऱुणर् शिन्दैयित्तान्
मूण्डुऱ्ऱॆऴु वॆङ्गद मुऱ्ऱिलनाय्, मीण्डुऱ्ऱुरै याडलै मेवित्ताल् 897

आण्टु उऱ्ऱु–वहाँ आकर; अ अणङ्किनै–उन देवी को; अञ्चल् ऎन्ता–मत डरो, कहकर; तीण्टु उऱ्ऱिलन्–(रावण ने) स्पर्श नहीं किया है; ऎन्ऱु उणर् चिन्तैयित्तान्–यह ज्ञान मन में करके; मूण्टु उऱ्ऱु–उत्पन्न होकर; ऎऴु वम् कतम्–उठनेवाले भयंकर क्रोध को; मुऱ्ऱिलन् आय्–पूर्ण होने न देकर; मीण्टु उऱ्ऱु–उसको रोककर; उरै आटलै–वार्तालाप करना; मेवितन्–आरम्भ किया। ८६७

आकर जटायु ने सीताजी को आश्वासन दिलाया। कहा कि मत डरो। उन्होने यह जान लिया कि रावण ने देवी का स्पर्श नहीं किया है। इसलिए उन्होंने अपने उठते क्रोध को हद से अधिक जाने नहीं दिया। उसको रोककर उन्होने रावण को कुछ उपदेश देना चाहा। ८९७

कॆट्टायिहिळै योडुनित् वाऴ्वॆयॆलाम्, शुट्टायिदु वॆन्तै तॊडङ्गित्तैनी
पट्टायॆन्त वेहॊडु पत्तिनियै, विट्टेहुदि येल्विळि हिन्ऱिलैयाल् 898

कॆट्टाय्–विनष्ट हुए हो; किळैयोटु उन् वाऴ्वै ऎलाम्–बन्धुवर्ग-सहित अपने जीवन को; चुट्टाय्–जला डाला; इतु ऎन्न तॊटङ्कित्तै–यह क्या उपक्रम किया है; नी पट्टाय् ऎन्न कॊटु–तुम मरे, यह समझकर; पत्तिनियै विट्टु एकुतियेल्–पतिव्रता सीता को छोड़कर चलो तो; विळिकिन्ऱिलै–नहीं मरोगे। ८६८

रावण! तुम अपने बन्धुजन सहित मिट गये। यह क्या उपक्रम किया है? 'अवश्य मर जाऊँगा' यह समझकर पतिव्रता देवी सीता को छोड़ जाओगे तो नहीं मरोगे। बच जाओगे। ८९८

❀ पेदाय्पिऴै शॆय्दनै पेरुलहिन्, मादावनै याळै मनक्कॊडुनी
यादाहनि नैन्दनै यॆण्णमिलाय्, आदार निनक्किनि यारुळरो 899

पेताय्–जड़मति; पिऴै चॆय्ततै–अपराध कर दिया; पेर् उलकिन्–बड़े विश्व की; माता अनैयाळै–सीता-सम इनको; यातु आक–कौन; मनम् कॊटु–मन में; नित्तैन्ततै–विचार रखते हो; ऎण्णम् इलाय्–विवेकहीन; निनक्कु–तुम्हें; इनि–अब; आतारम् यार् उळर्–अवलम्ब कौन है। ८६६

जड़मति! तुमने बहुत बड़ा अपराध कर दिया है! यह विश्वजननी-

सदृश हैं। इनको क्या समझकर उठा लाये हो? अविवेकी! अब (यह काम करने के बाद) तुम्हारा अवलम्ब कौन होगा? । ८९९

※उय्यामल् मलैन्दुम रारुयिरै, मॅय्याह विरामन् विरुन्दिडवे
कैयार मुहन्दुहॉ डन्दहत्तार्, ऐयापुदि दुण्ड दरिन्दिलैयो 900

इरामन्–श्रीराम; उमर्–तुम्हारी जाती के राक्षसों को (खरादि को); उय्यामल्–बचने न देकर; आर् उयिरै–उनके प्यारे प्राणों को; मॅय् आक विरुन्तु इटवे–सचमुच दावत के रूप में देने से; अन्तकत्तार्–यमदेव का; कै आर मुकन्तु–हाथ भर उसे लेकर; पुतितु उण्टतु–अपूर्व भोजन के रूप में खाना; अरिन्तिलैयो–(तुमने) न जाना क्या। ९००

श्रीराम ने तुम्हारे ही राक्षसों को (खर आदि को) बचने न देकर उनके प्राणों को यम का भोजन बनाया और यम ने अपने दोनों हाथ भर-भर के अभूतपूर्व भोज खाया था। तुमने नहीं जाना क्या? । ९००

कॊडुवॆङ्गरि कॊल्लिय वन्ददन्मेल्, विडुमुण्डै कडाव विरुम्बिनैये
अडुमॆन्ब दुणर्न्दिलै यायिनुम्वन्, कडुवुण्डुयि रिन्निलै काणुदियाल् 901

कॊटु वॆम् करि–भयंकर क्रोधी गज; कॊल्लिय वन्ततन् मेल्–जो मारने आया उस पर; विटुम् उण्टै–गुलेले; कटाव विरुम्पित्तैये–चलाना चाहा है; अटुम् ऍन्पतु–नाश कर देगा; ऍन्पतु उणर्न्तिलै–यह नहीं विचारा; आयितुम्–तो भी; वल् कटु उण्टु–प्रबल विष खाकर; उयिरिन् निलै–प्राण की स्थिति; काणुति–देखना चाहते हो। ९०१

तुम्हें मारने, बड़े क्रोध के साथ भयंकर गज आ रहा है। उस पर तुम गुलेले चला रहे हो! क्या तुम नहीं जानते कि यह काम तुम्हारा घातक बन जायगा? तो भी विष खाकर जीवित रहने की इच्छा करोगे? । ९०१

ऍल्लावुल हङ्गळु मिन्दिरनुम्, अल्लादवर् मूवरु मन्दहनुम्
पुल्वाय्पुलि कण्डदु पोल्वरलाल्, विल्लाळरै वॆल्लु मिडुक्किनरो 902

ऍल्ला उलकङ्कळुम्–सभी लोकों के वासी; इन्तिरनुम्–देवेन्द्र और; अल्लातवर्–और अन्य; मूवरुम्–त्रिदेव; अन्तकनुम्–यम; पुल् वाय्–हरिण ने; पुलि कण्टतु–व्याघ्र देखा हो; पोल्वर्–ऐसा हो जायँगे; अलाल्–नहीं तो; विल्लाळरै–धन्वियों को; वॆल्लुम्–हराने के; मिटुक्किनरो–सामर्थ्य रखनेवाले हैं क्या। ९०२

सभी लोकों के वासी, इन्द्र, त्रिदेव और यम भी श्रीराम के सामने, व्याघ्र के सामने हरिण के समान (भयभीत) हो जायँगे! नहीं तो प्रबल धन्वी उनको हराने का सामर्थ्य किसके पास है? । ९०२

※इम्मैक्कुर वोडु मिरन्दळियुम्, वॆम्मैत्तॊळि लिङ्गिदु मेवुदियाल्
अम्मैक्करु मानर हन्दरुमाल्, ऍम्मैक्किद माहवि दॆण्णित्तैनी 903

इम्मैक्कु—इस जन्म में; उऱ्वु ओट्टुम्—वन्धुजनों के साथ; इऱनुतु अळियुम्—मर मिटने का; वॆम्मै तॊळिल् इतु—भयावह काम इसे; इङ्कु—यहाँ; मेवुतियाल्—आरम्भ किया है, इसलिए; अम्मैक्कु—पर जीवन में भी; अरु मा नरकम्—भयंकर लम्बा नरकवास; तरुमाल्—विलायगा, इसलिए; इतु—यह; ऎम्मैक्कु इतम्—कब के लिए हितकारी; आक—ऐसा; नी ऎण्णिते—तुमने सोचा। ६०३

इहलोक में यह काम तुमको अपने वन्धुजनों के साथ विनष्ट करानेवाला काम है। यह तुमने आरम्भ किया है। यह आगे भी भयंकर और लम्बा नरकवास दिला देगा। फिर कहां, कव हित होगा, तमने सोचा ? । ९०३

मुत्तेवरिऩ् मूल मुदऱ्पॊरुळाम्, अत्तेवरिम् मातिउ रादलिऩाल्
ऎत्तेवरॊ डॆण्णुव दॆण्णमिलाय्, पित्तेऱिऩै याहप् पिऴैत्तऩैयाल् 904

इ मातिटर्—ये नर (-रूप श्रीराम और लक्ष्मण); मु तेवरिऩ्—तीनों आदिदेवों के; मूल मुतल् पॊरुळ् आम्—आदि परमात्मा; अ तेवर्—वे आदिदेव हैं; आतलिऩ्—इसलिए; ऎ तेवरोटु ऎण्णुवतु—किन देवों के साथ रखकर सोचोगे; ऎण्णम् इलाय्—अविवेकी; पित्तु एऱिऩै आक—पागलपन वढ़ गया; पिऴैत्तऩै—यह अपराध किया। ६०४

ये, जो नर-रूप में आये है, श्रीराम त्रिदेवों के आदिदेव हैं। परमात्मा हैं। उनको किन देवों के साथ मिलाकर गणना की जायगी ? विवेकहीन ! पागलपन वढ़ गया है ! तभी तुमने यह अपराध किया। ९०४

❀ पुरम्बऱ्ऱिय पॊर्विडै योऩरुळाल्, वरम्बॆऱ्ऱवु मऱ्ऱुळ विज्जॆहळुम्
उरम्बॆऱ्ऱऩ वावऩ वुण्मैयिऩोऩ्, शरम्बऱ्ऱिय चावम् विडुन्दऩैये 905

पुरम् पऱ्ऱिय—त्रिपुरदाहक; पोर् विटैयोऩ्—योद्धा ऋषभ-वाहन शिवजी की; अरुळाल्—कृपा से; वरम् पॆऱ्ऱवुम्—वर-रूप जो प्राप्त किये हैं वे, और; मऱ्ऱु उळ विज्चॆकळुम्—और अन्य (युद्ध-)विद्याएँ; उण्मैयित्तोऩ्—सत्यसंध के; चापम् पऱ्ऱिय—धनु पर संधान कर; चरम् विटुम् तऩैये—शर छोड़ते तक ही; उरम्पॆऱ्ऱऩ आवऩ—वलशाली रहेंगे। ६०५

तुम्हारे, त्रिपुरदाहकदत्त सभी वर और तुम्हारी सारी विद्याएँ सत्यसंध श्रीराम के शरप्रेपण तक ही शक्तिमन्त रह सकेंगी। ९०५

❀ वाऩाळ्वन् मैन्दऩ् वळैत्तविलाऩ्, तानॆवरि ऩिऩ्ऱु तडुप्परिदाल्
नानॆयव णुय्प्पॆऩिऩ् नऩ्नुदलैप्, पोनीहडि दॆऩ्ऱु पुहऩ्ऱिडलुम् 906

वाऩ् आळ्पवऩ्—अव स्वर्गभोग-रत दशरथ के; मैन्तऩ्—पुत्र श्रीराम; वळैत्त विल्लाऩ्—झुका हुआ धनुष लेकर; ताऩ् वरिऩ्—खुद आयेंगे, तो; निऩ्ऱु तटुप्पु अरितु—खड़ा होकर रोकना कठिन है; इ नल् नुतलै—इन सुन्दर भाल वाली को; नाऩ् अवण् उय्प्पॆऩ्—मैं ही ले जाकर वहाँ (पर्णशाला में) छोडूंगा; कटितु पोति—जल्दी भाग जाओ; ऎऩ्ऱु पुकऩ्ऱिटलुम्—यह कहते ही। ६०६

स्वर्ग-भोग में जो अब रहते है, उन दशरथ के पुत्र श्रीराम धनु झुका लेकर स्वयं आयँगे तो उनके सामने टिका रहकर उनको रोकना दुतस्र है (असम्भव है)। इन सुन्दर भाल वाली सीताजी को मैं पर्णशाला में स्वयं पहुँचा दूँगा। तुम शीघ्र भाग जाओ। ९०६

केट्टानिरु दर्क्किरै केळ्हिळर्दन्, वाट्टारै नॅरुप्पुह वाय्मडिया
ओट्टायिनि नीयुरै शॅय्हुनरैक्, काट्टायहडि दॆन्रु कननूरुरैया 907

निरुतर्क्कु इरै–राक्षसाधिपति ने; केट्टान्–सुना; केळ् क्रिळर्–जाज्वल्यमान; तन् वाळ्–उसकी तलवार से; तारै नॅरुप्पु उक–लगातार अंगार छूटे; वाय् मटिया–अधर काटते हुए; इनि नी ओट्टाय्–आगे बात मत चलाओ; उरै चॆय् कुनरै–तुमसे कथित उनको; कटितु काट्टाय्–शीघ्र दिखाओ; ॲन्रु–ऐसा; कननूरु उरैया–उबलकर कहकर। ९०७

राक्षसाधिपति ने यह सुना, तो उसकी तलवार से ही लगातार अंगारे निकलने लगे। मुड़े अधर को दाँतों से दबाकर उसने कहा कि बस बस! बहुत मत हाँक! जिनकी चर्चा करता है, उनको दिखा शीघ्र! यह क्रोध में उबलकर कहा। फिर। ९०७

वरुम्बुण्डर वाळियुन् मार्बुरुविप्, पॅरुम्बुण्डिर् वावहै पेरुदिनी
इरुम्बुण्डनीर् मीळिनु मॅन्नुळैयिन्, करुम्बुण्डशॊन् मीळ्हिलळ् काणुदियाल् 908

वरुम् पुण्टर–(बाधा-स्वरूप) आगत गीध; वाळि–मेरा शर; उन् मार्पु उरुवि–तेरी छाती में घुसकर; पॅरुम् पुण्–बड़ा घाव; तिरवा वकै–नहीं खोले ऐसा; नी पेरुति–तू चला जा; इरुम्पु उण्ट नीर्–तप्त लोहे का सोखा जल; मीळिनुम्–फिर पाया जा सके तो भी; ॲन् उळैयिन्–मेरे पास से; करुम्पु उण्ट चॊल्–इक्षु (-रस) सम भाषिणी; मीळ्किलळ्–लौटेगी नहीं; काणुति–जान लो। ९०८

बाधक रूप में आगत गीध! तू यहाँ से जल्दी हट जा इसके पहले कि मेरा शर तेरी छाती में बड़ा व्रण करा दे। तप्त लोहे द्वारा सोखा जल भी शायद लौटाया जा सकेगा, पर मेरे वश में आयी यह इक्षुरस-सी मधुरभाषिणी लौट नहीं सकेगी। यह जान लो। ९०८

ॲन्नुम् मळविर् पयमुन्नि त्तिरट्टि यॅय्दि
अन्नम् मयरहिन् इडुनोक्कि यरक्क नाक्कै
शिन्नम् मुरुमिप् पॊळुदेशिलै येन्दि नङ्गळ्
मन्नन् महन्वन् दिलनॆन्रु वरुन्द लन्नै 909

ॲन्नुम् अळविल्–कहते ही; अन्नम्–हंसिनी (-सी सीता) का; पयम् मुन्नित् इरट्टि–दुगुना भय; ॲय्ति–पाकर; अयर्कित्रतु–क्लिन्न होना; नोक्कि–देखकर; अन्नै–माताजी; अरक्कन् याक्कै–राक्षस का शरीर; इ पॊळुते–अभी;

नॆंटु मूक्कु अॆंतुम्–लम्बी चोंच रूपी; नेमियिऩ्–चक्र से; चेम विल् काल् कोट्टुम् अळविल्–रक्षा में धनु को झुकाने से पहले ही; मणि कुण्टलङ्कळ् कॊण्टु–सुन्दर कुण्डलों को छीन लेकर; अॆऴुन्ताऩ्–उठे। ९१४

जटायु फिर भी रावण के पास आये। लम्बे, और क्रूर आँखों से युक्त अनगिनत सर्पों को त्रस्त करते हुए गरुड़ के समान जटायु ने उसके सिरों पर चोंच मारी। फिर उसके अपनी रक्षा में धनु लेकर झुकाने के पूर्व ही वे उसके कुण्डलों को छीन लेकर आकाश में उछले। ९१४

अॆऴुन्दाऩ् ऱडमार्बिनि लेऴिनो डेऴु वाळि
अऴुन्दादु कऴऩ्ऱिड वॆय्दॆडुत् तार्त्त रक्कऩ्
पॊऴिन्दाऩ् पुहर्वाळिहळ् मीळवुम् पोर्च् चडायु
विऴुन्दा ऩॆनविण्णव रञ्जिनर् वॆय्दु यिर्त्तार् 915

अरक्कऩ्–राक्षस; आर्त्तु–गरजकर; अॆऴुन्ताऩ्–जो ऊपर उठे थे, उनके; तट मार्पितिल्–विशाल वक्ष पर; एऴिऩ् ओटु एऴु वाळि–सात और सात शर; अऴुन्तातु कऴऩ्ऱिट–चुभे बगैर बाहर आ गये, इसलिए; मीळवुम्–फिर भी; पुकर् वाळिकळ्–स्वर्णमय शर; पॊऴिन्ताऩ्–बरसाये; पोर् चटायु–योद्धा जटायु; विऴुन्ताऩ् अॆंत–नीचे गिर गए, यह सोचकर; विण्णवर्–देव; अञ्चिऩर्–डरे और; वॆय्तु उयिर्त्तार्–व्याकुल हुए और लम्बी साँसें छोड़ीं। ९१५

राक्षस रावण ने गर्जन किया। ऊपर उठे जटायु के वक्ष पर उसने चौदह शर चलाए, पर वे गड़े नहीं और अलग होकर गिर गये। खीझकर उसने अत्यधिक परिमाण में स्वर्णवर्ण शर चलाये, तो योद्धा जटायु भी थक गये। देवों ने सोचा कि वे भूशायी हो गये हैं। वे डरे और ठण्डी आहें भरने लगे। ९१५

पुण्णिऱ् पुदुनीर् पॊऴियप्पॊलि पुळ्ळिऩ् वेन्दऩ्
मण्णिऱ् करऩ्मे मुदलोरुदि रत्तिऩ् वारि
कण्णिक् कडलॆऩ्ऱु कवर्न्ददु कान्ऱु मीळ
विण्णिऱ् पॊलिहिऩ्ऱदॊर् वॆण्णिऱ मेह मॊत्ताऩ् 916

पुण्णिऩ्–व्रणों से; पुतु नीर् पॊऴिय–ताजा रक्त बहा, तब; पॊलि–उसके साथ दृश्यमान; पुळ्ळिऩ् वेन्तऩ्–पक्षियों के राजा; मण्णिल्–भूमि पर; करऩ् मुतलोर्–खर आदि; उतिरत्तिऩ् वारि–(राक्षसों के) रक्त के प्रवाह को; कटल् अॆऩ्ऱु कण्णि–समुद्र समझकर; कवर्न्ततु–जिसको पहले पी गया था; मीळ कान्ऱु–फिर उगलकर; विण्णिल् पॊलिकिऩ्ऱतु–आकाश में शोभायमान; ओर् वॆण् निऱ मेकम्–एक श्वेत मेघ के; ऒत्ताऩ्–समान दिखाई दिये। ९१६

जटायु के शरीर में शरों के लगने से व्रण हो गये। उन व्रणों से ताजा रक्त बहने लगा। तब उनको देखने पर ऐसा लगा, मानो खर-दूषण-वध के अवसर पर जिस मेघ ने रक्त-सागर पी लिया था, वह श्वेत मेघ अब

अपना पिया रक्त उड़ेल रहा हो। जटायु श्वेतवर्ण थे और उनके शरीर पर स्थान-स्थान से रक्त निकल रहा था। ९१६

ऑत्ता नुडन्ने युयिर्त्ता नुरुत्ता नवन्ऱोळ्
पत्तोड्ड पत्तिन् नॅडुम्बत्तियिर् ऱत्ति मूक्काल्
कॉत्ता नहत्ताऱ् कुडैयाच् चिऱैयाऱ् पुडैया
मुत्तार मार्बिऱ् कवशत्तैयु मूट्ट ऱुत्तान् 917

ऑत्तात्–ऐसा श्वेत मेघ-सम जो रहे; उटत्ते–(वे जटायु) तुरन्त; उयिर्त्तात्–निःश्वास छोड़कर; उरुत्तात्–कुपित होकर; अवन् तोळ् पत्तु ओट्टु पत्तित्–उसके बीसों भुजाओं की; नॅटुम् पत्तियिल्–लम्बी पंक्ति में; तत्ति–उचक बैठकर; मूक्काल् कॉत्ता–चोंचों से मारकर और; नकत्ताल् कुटैया–नाखूनों से नोचकर; चिऱैयाल् पुटैया–पक्षों से पीटकर; मुत्तु आर–मुक्ताहार-भूषित; मार्पिल् कवचत्तैयुम्–वक्ष पर के कवच के भी; मूट्टु अऱुत्तात्–सन्धि-बन्ध तोड़ दिये। ९१७

ऐसे श्वेत मेघ के समान जो दिखे, उन जटायु ने लम्बा निःश्वास छोड़ा। क्रोध के साथ वे बीसों भुजाओं की पंक्ति में उछलकर कूदे और लगे चोंचों से मारने, नाखूनों से नोचने और अपने पक्षों से पीटने। फिर उन्होंने मुक्ताहार-भूषित उसके वक्ष पर के कवच के भी संधिबन्ध तोड़ दिये। ९१७

अऱुत्तानै यरक्कनु मैम्बदो डैम्ब दम्बु
शॅऱित्तान् ऱडमार्बिऱ् चॅऱित्तलुन् देव रज्जि
वॅऱित्तार् वॅऱियामु निरावणन् विल्लै मूक्काल्
पऱित्तान् पऱवैक्किऱै विण्णवर् पण्णै यार्प्प 918

अऱुत्तानै–कवच जिन्होंने काटा उनको; अरक्कनुम्–राक्षस ने भी; ऐम्पतु ओटु ऐम्पतु–पचास पर पचास (एक सौ); अम्पु–शर; तट मार्पिल्–विशाल वक्ष पर; चॅऱित्तान्–चुभाये; चॅऱित्तलुम्–चुभाने पर; तेवर् अञ्चि वॅऱित्तार्–देव डरे और चक्रित हुए; वॅऱियामुन्–उनके चक्रित होने से पहले ही; पऱवैक्कु इऱै–खगराज ने; विण्णवर् पण्णै आर्प्प–देवों के समूहों की वाहवाही प्राप्त करते हुए; इरावणन् विल्लै–रावण के धनुष को; मूक्काल् पऱित्तान्–चोंच से छीन लिया। ९१८

रावण के कवच को जिन्होंने खोल दिया, उन जटायु के वक्ष में रावण ने एक सौ बाण गड़ा दिये। तब देव भी डरकर उद्विग्न हो गये। तुरन्त उनकी उद्विग्नता को वाहवाही में बदलते हुए जटायु ने रावण के धनुष को अपने तुण्ड से पकड़कर छीन लिया। ९१८

अॅल्लिट्ट वॅळ्ळिक् कयिलैप्पॉरुप् पीश नोडुम्
मल्लिट्ट तोळा लॅडुत्तान्शिलै वायिन् वाङ्गि

विल्लिट् टुयर्न्द नॅडुमेह मॅन्नप्पॉ लिन्दान्
शॉल्लिट् टवन्ऱोळ्वलि यारुळर् शॉल्ल वल्लार् 919

ईश्वन् ओटुम्–शिवजी के साथ; ॲल् इट्ट–प्रकाशमान; कयिलै पॉरप्पु–कैलास पर्वत को; मल् इट्ट तोळाल्–बलिष्ठ भुजाओं से; ॲटुत्तान्–जिसने उठाया था, उस रावण के; चिलै–धनु को; वायिल् वाङ्कि–मुख से छीनकर; विल् इट्टु उयर्न्त–इन्द्रधनुष के साथ उठे; नॅटु मेकम् ॲन्न–बड़े मेघ के समान; पॉलिन्तान्–शोभित रहे; अवन् तोळ् वलि–उनका भुजबल; चॉल् इट्टु चॉल्ल वल्लार्–शब्दों से माप कर कह सकनेवाले; यार् उळर्–कौन हैं। ९१९

रावण का धनु छीनना साधारण बात नहीं था। रावण ने अपने भुजबल से शिवजी-सह प्रकाशमान कैलास पर्वत को उठाया था। उसके धनु को छीनकर जब जटायु ऊपर उड़े, तब वह इन्द्रधनुष के साथ उठ जानेवाले मेघ के समान शोभे। उनके भुजबल का सच्चा माप कौन अपने शब्दों से प्रकट कर सकेगा? शब्द से उनका बल वर्णित करने में समर्थ कौन होगा? । ९१९

मीळा निऱत्ता यिरङ्गण्णवन् विण्णि तोड
वाळा लॉऱुत्तान् शिलैवायिडै निन्ऱु वाङ्गित्
ताळा लिऱुत्तान् ऱऴल्वण्णन् ऱडक्कै विल्लैत्
तोळा लिऱुत्तान् तुणैत्तादैद नन्बिऱ् ऱोऴन् 920

तऴल् वण्णन्–अग्निवर्ण शिव के; तट कै विल्लै–विशाल हस्त के (त्र्यम्बक नामक) धनु को; तोळाल् इऱुत्तान्–अपने भुजबल से जिन्होंने तोड़ा, उन श्रीराम के; तातै तुणै–पिता के साथी; अन्पिल् तोऴन्–प्रिय मित्र जटायु; मीळा निऱत्तु–युद्ध से न फिरनेवाले बली; आयिरम् कण्णवन्–सहस्रनेत्र इन्द्र को; विण्णिन् ओट–हराकर आकाश में भागने को; वाळाल् ऑऱुत्तान्–विवश करते हुए जिसने तलवार से सताया, उस रावण के; चिलै–धनु को; वाय् इटै निन्ऱु वाङ्कि–मुख में से लेकर; ताळाल् इऱुत्तान्–पैरों से तोड़कर मिटाया। ९२०

जटायु अग्निवर्ण शिवजी के हाथ के त्र्यम्बक नामक धनुष के भंजक श्रीराम के पिता दशरथ के साथी थे। अब प्रेम के कारण वे श्रीराम के भी मित्र बने थे। सहस्राक्ष इन्द्र में इतना बल था कि वह कभी लड़ाई में हारकर लौट नहीं जाते। उनको भी रावण ने युद्ध में हराकर उन्हें भागने को विवश कर दिया था। ऐसे रावण के धनुष को जटायु ने अपनी चोंच से लेकर पैरों के नीचे रखकर तोड़ दिया। ९२०

ञालम् वट्टुप्पान्तत्त दाऱ्ऱलुक् केऱ्ऱ नल्विल्
मूलम् मॉडिप्पुण्डदु कण्डु मुनिन्द नॅञ्जन्
आलम् मिडऱ्ऱान्पुर मट्टदॉ रम्बु पोलुम्
शूलम् मॅडुत्तार्त् तॅऴिन्दान्मऱन् दोऱ्ऱि लादान् 921

आलम् पट्टुप्पात्–लोक-नाशक; मऱम् तोऱ्ऱिलातात्–और वीरता जिसने नहीं खोयी थी, उस रावण ने; तत्तु आऱ्ऱलुक्कु एऱ्ऱ–अपनी शक्ति के योग्य; नल् विल्–उत्तम धनुष को; मूलम् ऑटिपपुण्टतु कण्टु–मूल में टूटा देखकर; मुऩिन्त नॆञ्चत्–क्रुद्ध-चित्त होकर; आलम् मिटऱ्ऱात्–विषकण्ठ; पुरम् अट्ट–(शिव के) त्रिपुरदाहक; ओर् अम्पु पोलुम्–अनुपम शर के समान; चूलम् ऎंटुत्तु–शूल को लेकर; आर्त्तु–गरजते हुए; ऍऱिन्तात्–फेंका। ९२१

रावण विश्वनाशक था। उसकी शक्ति क्षीण नहीं हुई थी। उसने अपने बल के योग्य धनुष को टूटा देखा। बड़ा क्रोध आ गया। उसने अपने त्रिशूल को, जो त्रिपुरान्तक के अस्त्र के समान प्रचण्ड था, जटायु पर फेंका। ९२१

आऱ्ऱा ऩिवऩॆंऩ् ऱुणरावॆंऩ् दाऱ्ऱल् काणॆंऩ्
ऱेऱ्ऱा ऩॆरुवैक्किऱै मुत्तलै यॆं:(ह्)कै मार्बिऩ्
मेऱ्ऱा निदुशॆय्दव रारॆंऩ विण्णु ळोर्हळ्
तोऱ्ऱादु निऩ्ऱार्दम तोळ्बुडै कॊट्टि यार्त्तार् 922

ऍरुवैक्कु इऱै–गृध्रराज ने; इवऩ् आऱ्ऱाऩ् ऍऩ्ऩु–यह शक्तिहीन ऐसा; उणरा–सोचकर; ऍत्तु आऱ्ऱल् काण्–मेरी शक्ति देख; ऍऩ्ऩु–कहते हुए; एऱ्ऱात्–जो चलाया (रावण ने); मु तलै ऍ:.कै–उस त्रिशूल को; मार्पिऩ् मेऱ्ऱात्–जटायु ने वक्ष पर धारण कर लिया; विण् उळोर्कळ्–आकाशवासी देवों ने; इतु ताऩ् चॆय्पवर् यार् ऍऩ–यह काम करनेवाला कैसा (शक्तिमान) है, कहकर; तोऱ्ऱातु निऩ्ऱार्–भ्रमित खड़े रहे; तम् तोळ् पुटै कॊट्टि–भुजाओं को ठोंकते हुए; आर्त्तार्–हल्ला मचाया। ९२२

उसने सोचा कि इसके सामने ठहरने की शक्ति जटायु में नहीं है। इसलिए उसने यह कहते हुए त्रिशूल को चलाया कि अब मेरा पराक्रम जानोगे। पर जटायु ने उसे अपने कठोर वक्ष पर धारण कर लिया। देवों को बड़ा विस्मय हो गया। हा! यह काम करनेवाला कैसे साहस का होगा? वे चकित खड़े रह गये। फिर वे अपने कन्धे ठोंककर शाबाशी का हल्ला मचाने लगे। ९२२

पॊऩ्ऩोक् कियर्दम् पुलऩोक्किय पुऩ्ग णोरुम्
इऩ्ऩोक्किय रिल्वळि यॆय्दिय नल्वि रुन्दुम्
तऩ्ऩोक्किय नॆञ्जुडै योहियर् तम्मैच् चार्न्द
मॆंऩ्ऩोक्कियर् नोक्कमु मामॆंऩ मोण्ड दव्वेल् 923

पॊऩ् नोक्कियर् तम्–स्वर्ण पर आँख लगाये रहनेवाली वारवनिताओं के; पुलऩ् नोक्किय–स्थान पर जानेवाले; पुऩ् कणोरुम्–दरिद्र लोग; इऩ् नोक्कियर् इल् वळि–मीठी आँखों की गृहिणी से रहित घर में; ऍय्तिय नल् विरुन्तुम्–आगत उत्तम अतिथि और; तऩ् नोक्किय–आत्मलीन; नॆञ्चुटै योकियर्–मन वाले योगियों के; तम्मै

चार्न्त–पास जो गयीं; मॆल् नोक्कियर्–उन कोमल दृष्टि वालियों की; नोक्कमुम् आम् ॲत्र–कामना के समान ही; अ वेल्–वह त्रिशूल; मीण्टतु-(वृथा हो) लौट आया। ९२३

वह शूल बेकार हो लौट आया। (उसके लिए कवि की उपमाएँ देखिए।) स्वर्ण पर ही आँख लगाये रहनेवाली वारवनिताओं के घर से पैसेविहीन दरिद्र जैसा; मधुर दृष्टि और व्यवहार के साथ आतिथ्य जो कर सकती है, ऐसी गृहिणी से विहीन घर से अतिथि जैसे; और आत्मलीन मन वाले योगियों के पास प्रेम की कामना ले जानेवाली स्त्रियाँ जैसे विफल मनोरथ होकर लौट आती हैं, वैसे ही वह शूल बेकार हो लौट आया। ९२३

वेहम्मुडन् वेलिऴन् दान्पडै वेरॆ डामुन्
माहम्मरै युम्बडि नीण्ड वयङ्गु मान्रेर्
पाहन्रलै यैप्परित् तुप्पडर् कर्पि नाळ्बाल्
मोहम्बडैत् तानुळै वॆय्द मुहत् तॆरिन्दान् 924

वेल् इऴन्तान्–त्रिशूल को बेकार पाकर; वेकम् उटन्–वेग के साथ; पटै वेऱ–अन्य अस्त्र; ॲटा मुन्–लेने से पहले; माकम् मऱैयुम् पटि–बड़े आकाश को ढँकते हुए; नीण्ट–विशाल और उन्नत; वयङ्कु मान् तेर्–दर्शनीय अश्वों से जुते रथ के; पाकन् तलैयै परित्तु–सारथी का सिर नोच लेकर; पटर् कऱ्पिताळ् पाल्–गम्भीर पातिव्रत्य से युक्त देवी सीता के प्रति; मोकम् पटैत्तान्–काममोहित; उळैवु ॲय्त–(रावण को) व्याकुल करते हुए; मुकत्तु ॲऱिन्तान्–उसके मुख पर फेंका। ९२४

शूल खोने पर रावण ने वेग के साथ और हथियार का प्रयोग करने का प्रयास किया। पर उसके पहले ही जटायु ने आकाश को छिपाते हुए विशाल और उन्नत जो रहा और जिससे श्रेष्ठ अश्व जुते थे, उस रथ के सारथी का सिर नोच लिया और उसे उस रावण के मुख पर फेंक दिया, जो निर्लज्ज गम्भीर पातिव्रत्यशीला सीता के प्रति काममोहित था। उससे रावण बहुत ही उद्विग्न हुआ। ९२४

ॲरिन्दान् रनैनोक्कि यिरावण नॆञ्जि नार्ऱल्
अरिन्दान् मुनिन्दाण्डदॊ राडहत् तण्डु वाङ्गिप्
पॊरिन्दाङ् गॆरियिन् शिहैपॊङ्गि यॆळप् पुडैत्तान्
मरिन्दा नॆरुवैक्किरै माल्वरै पोल मण्मेल् 925

ॲरिन्तान् तनै नोक्कि–जिन्होंने फेंका, उनको देखकर; इरावणन्–रावण ने; नॆञ्चिन् आऱ्ऱल्–(जटायु के) मन की शक्ति; अरिन्तान्–जाना; मुनिन्तु–खीझकर; आण्टु ओर्–वहाँ एक; आटक तण्टु वाङ्कि–स्वर्णदण्ड लेकर; पॊरिन्तु–अंगार बरसाते हुए; ॲरियिन् चिकै–अग्निज्वाला; पॊङ्कि ॲळ–भभक उठे, ऐसा; पुटैत्तान्–(जटायु को उससे) पीटा; ॲरुवैक्कु इऱै–गीधों का राजा; मण् मेल्–भूमि पर; माल् वरै पोल–बड़े पर्वत के समान; मरिन्तान्–औंधा गिरे। ९२५

रावण ने, सारथी का सिर नोचकर उसके मुख पर जो फेंक सकते थे, उन जटायु की दिलेरी जानी। क्रोध के साथ उसने एक स्वर्णदण्ड उठाया, जिसके सिर पर अग्नि की ज्वाला अंगारे बिखेरते हुए जल रही थी। उसने उससे जटायु को पीटा। गीधों के राजा जटायु उससे आहत होकर बड़े पर्वत के समान भूमि पर अधोमुख गिर पड़े। ९२५

मण्मेल् विऴुन्दान् विऴलोडुम् वयङ्गु मान्ऱेर्
कण्मे लॊळियुन् दॊडरावहै तान्ग डावि
विण्मे लॅऴुन्दा नॆऴ्मॆल्लिय लाळुम् वॆन्दीप्
पुण्मे नुऴैयत् तुडिक्किन्ऱनळ् पोऱ्पु रण्डाळ् 926

मण मेल् विऴुन्तान्–भूमि पर जो गिरे उनके; विऴल् ओटुम्–गिरते ही; वयङ्कु मान् तेर्–श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ को; कण् मेल् ऑळियुम् तॉटरा वकै–(जटायु की) दृष्टि का प्रकाश भी न पीछा कर सके, इस प्रकार; तान् कटावि–स्वयं चलाते हुए; विण् मेल् ॲऴुन्तान्–आकाश में उड़ने लगा; ॲऴ–उठने पर; मॆल्लियलाळुम्–कोमलप्रकृति सीता भी; पुण् मेल्–घाव में; वॆम् ती नुऴैय–भयंकर आग के घुसने पर; तुटिक्किन्ऱवळ् पोल्–तड़पती-सी; पुरण्टाळ्–(रथ पर गिरकर) लोटीं। ९२६

उनके गिरते ही रावण अपने रूपवान अश्वों से जुते रथ को इतनी तेज़ी से चलाते हुए ऊपर उठा कि जटायु की तीक्ष्ण दृष्टि की ज्योति भी मन्द पड़ गयी। जब उसका रथ ऊपर गया, तब कोमल-स्वभाव सीताजी व्रण में आग घुसने पर जैसे तड़प गयीं और गिरकर लोटीं। ९२६

कॊऴुन्दे यनैयाळ् कुऴैन्देङ्गिय कॊळ्है कण्डान्
अऴुन्दे लवलत्तिडै यञ्जलै यन्न मॆन्ना
ॲऴुन्दा नुयिर्त्तालड वॆङ्गिनिप् पोव देन्ना
विऴुन्दा नवन्ऱेर्मिशै विण्णवर् पण्णै यार्प्प 927

कॊऴुन्ते अनैयाळ्–मृदुपल्लव-सदृश देवी का; कुऴैन्तु–क्लिन्न होकर; एङ्किय–तरसने का; कॊळ्कै कण्टान्–भाव देखा; अन्नम्–हंसिनी; अवलत्तु इटै–दुःख में; अऴुन्तेल्–मत डूबो; अञ्चलै–मत डरो; ॲन्ना–(धीरज-वचन) कहकर; उयिर्त्तान् ॲऴुन्तान्–निःश्वास छोड़ते हुए उठे; अट–रे; ॲङ्कु इनि पोवतु–कहाँ (बचकर) अब जाओगे; ॲन्ना–कहकर; विण्णवर् पण्णै–देवसमूहों के; आर्प्प–आनन्दरव करते; अवन् तेर् मिचै–उसके रथ पर; विऴुन्तान्–कूदे। ९२७

मृदु पल्लव-सम देवी का मुरझाना और रोना देखकर जटायु ने उन्हें आश्वस्त किया कि हंसिनी-तुल्य देवी! मत डरो। दुःख में डूब मत जाओ। दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए वे उठे। 'रे! कहाँ जाकर बचोगे?' यह पूछते हुए उसके रथ पर उछलकर कूद पड़े। जटायु का पराक्रम देखकर देवों का समूह आनन्दनाद कर उठे। ९२७

पाय्न्दा ऩवन्बन् मणित्तण्डु परित्तॅ रिन्दाऩ्
एय्न्दार् कदित्तेर्प् परियॅट्टिनो डॅट्टु मॅञ्जित्
तीय्न्दा शऱवीशियत् तिण्डिऱऱ् ऱुण्ड वाळाल्
काय्न्दान् कवर्न्दानुयिर् कालनुङ् गैवि दिर्त्ताऩ् 928

पाय्न्तान्–जो कूदे, उन्होंने; अवऩ्–उसका; पल् मणि तण्टु–अनेक रत्न-जड़ित दण्डायुध को; परित्तु ऍऱिन्तान्–छीनकर फेंक दिया; एय्न्तु आर्–युक्तता के साथ शोभनेवाले; कति तेर्–गतिमान रथ के; परि ऍट्टितोटु ऍट्टु–सोलहों अश्वों को; ऍञ्चि तीय्न्तु–बलहीन होकर, ध्वस्त होकर; आचु अऱ–निपट नष्ट करते हुए; वीचि–उछालकर; अ तिण् तिऱल्–उस कठिन बलवान; तुण्ट वाळाल्–चोंच रूपी तलवार से; काय्न्तान्–मिटाया; उयिर् कवर्न्तान्–जान का गाहक; कालऩुम्–यम भी; कै वितिर्न्तान्–हाथ मलकर काँपा। ९२८

झपटकर जटायु ने पहले उसका रत्नजटित दण्डायुध छीनकर दूर पटक दिया। उसके तीव्रगामी रथ के योग्य और उससे जुते सोलहों अश्वों को अपने कठोर तुण्ड रूपी खड्ग से दुर्बल करके बिल्कुल विध्वस्त कर दिया। उनकी जान के गाहक यम भी इसको देखकर हाथ मलते हुए काँप गये। ९२८

तिण्डे रऴित्ताङ्गवन् ऱिण्बुरञ् जेर्न्द तूणि
विण्डान् मऱैप्पच् चॅऱिहिन्ऱन विल्लि लामै
मण्डा रमर्दान् वळङ्गामैयिल् वच्चै माक्कळ्
पण्डार मॊक्किन्ऱन वळ्ळुहि राऱ्प ऱित्ताऩ् 929

तिण् तेर् अऴित्तु–कठोर रथ को ध्वस्त करके; विण्तान् मऱैप्प–आकाश को ही छिपाते हुए; चॅऱिकिन्ऱन–जो भरे रहे; विल् आक्कु इलामै–धनुष के न होने से; मण्टु आर्–घोर रूप में चलनेवाले; अमर् वळङ्कामैयिऩ्–युद्ध में उपयोगी न होने के कारण (जो); वच्चै माक्कळ्–कंजूस लोगों के; पण्टारम् ऒक्किन्ऱन–भण्डार के समान हैं; अवऩ् तिण् पुऱम् चेर्न्त–उसकी बलवान पीठ पर बँधे; तूणि–तूणीरों को; वळ् उकिराल्–तेज नखों से; परित्तान्–छीनकर फेंक दिया। ९२९

रावण का सबल रथ भी नष्ट हो गया। फिर जटायु ने तूणीरों पर ध्यान दिया। वे तूणीर आकाश को छिपानेवाले शरों से भरे थे। वे शर धनु के न रहने से अब कठोर युद्ध में उपयोगी नहीं रह गये थे। वे इस कारण कृपण के भण्डार के समान रहे। जटायु ने ऐसे शरों के तूणीरों को, जो रावण की बलवान पीठ पर बँधे थे, अपने तीक्ष्ण नखों से नोचकर छीन लिया। ९२९

माच्चिच् चिरल्पाय्न्दॅऩ मार्बिनुन् दोळ्हण् मेलुम्
ओच्चिच् चिऱहार् पुडैत्तानुलै यावि ळुन्दु

मूच्चित् तविरा वणनुम्मुडि शाय्त्ति रुन्दान्
पोच्चित् ततैपोलु निन्नाऱ्ऱ लॅन्नप्पु हन्ड्रान् 930

मा चिच्चिरल्–बड़ा मछरंगी (मछली खानेवाले जल-पक्षी); पाय्न्तॆत्त–झपटा हो ऐसा; मार्पिनुम्–वक्ष पर; तोळ्कळ् मेलुम्–और कंधों पर; ओच्चि–वेग के साथ; चिऱकाल् पुटैत्तान्–पंखों से मारा; उलैया विळुन्तु–शिथिल होकर नीचे गिरकर; मूच्चित्त–मूर्च्छित हुआ; इरावणतुम्–रावण भी; मुटि चाय्त्तु–सिर झुकाये; इरुन्तान्–रहा; पोच्चु–बस, गया; इत्तनै पोलुन्–इतना ही क्या; निन् आऱ्ऱल्–तुम्हारा बल; ॲन्न–ऐसा; पुकन्ड्रान्–कहा। ९३०

जटायु बड़े मछरंगे के समान (जो जल-पक्षी इतनी तेज़ी से जलाशयों पर मछलियों पर झपटते हैं कि मछली को जल में डूबने को भी समय नहीं मिलता) रावण के वक्ष पर और कन्धों पर झपटे और पंखों से पीटने लगे। रावण उन प्रहारों से थक गया। मूर्च्छित-सा हुआ और सिर झुकाये रहा। तब जटायु ने चिढ़ाया कि बस, गया! इतना ही था तुम्हारा बल! ।९३०

अव्वे लैयिने मुनिन्दान्मुनिन् दाऱ्ऱ लन्नव्
वॅव्वे लरक्कन् विडलाम्बडै वेऱु काणान्
इव्वे लैयिने यिवनिन्नुयि रुण्व नॅन्नाच्
चॅव्वे पिळैया नॆडुवाळुऱै तीर्त्तॆ ऱिन्दान् 931

अ वेलैयिन् ए–उसी समय; मुतिन्तान्–क्रुद्ध हुआ; मुतिन्तु–क्रोध करके; आऱ्ऱलन्–शक्तिमान; अ वॅम् वेल् अरक्कन्–कठोर भालाधर राक्षस; विटल् आम् पटै–प्रेषण-योग्य हथियार; वेऱु काणान्–दूसरा कुछ नहीं देखा; इ वेलैयिन् ए–अभी; इवन् इन् उयिर्–इसकी प्यारी जान; उण्पॆन्–खाऊँगा; ॲन्ऩा–कहकर; पिळैया नॆटु वाळ्–अमोघ लम्बी तलवार को; उऱै तीर्त्तु–म्यान से निकालकर; चॅव्वे ॲऱिन्तान्–अच्छे प्रकार से चलायी। ९३१

ज्योंही रावण ने वह सुना, त्योंही वह क्रुद्ध हो उठा। शक्तिशाली कठोर भालाधारी उस राक्षस ने प्रेषणयोग्य कोई अन्य हथियार न देखकर अपनी चन्द्रहास तलवार म्यान से खींच ली। 'अभी इसका काम तमाम कर दूंगा' —यह कहते हुए उसने जटायु पर तलवार की वार की। ९३१

वलियिन् ऱलैतोऱ्ऱिलन् माऱ्ऱरुन् दॅय्व वाळाल्
नलियुन् दलैयॅन्ऱ्ऱदु वन्ऱियुम् वाळ्क्कै नाळुम्
मॅलियुङ् गडैचॅन्ऱुळ दाहलिन् विण्णिन् वेन्दन्
कुलिशम् मॅऱियच्चिऱै यऱ्ऱदॊर् कुन्ऱिन् वीळ्न्दान् 932

वलियिन् तलै–रावण के बल से; तोऱ्ऱिलन्–हार नहीं खायी (जटायु ने); माऱ्ऱु अरुम्–दुर्द्धर्ष; तॅय्व वाळाल्–दैवी तलवार से; नलियुम् तलै ॲन्ऱ्ऱतु–किसी का भी सिर कटेगा, इससे; अन्ऱियुम्–और भी; वाळ्क्कै नाळुम्–आयु भी; मॅलियुम् कटै चॅन्ऱु उळतु–अन्त होने को आयी थी; आकलिन्–इसलिए; विण्णिन् वेन्तन्–

सुरेन्द्र के; कुलिचम् ऎऱिय–कुलिश चलाने पर; चिऱै अऱ्ऱतु–पंख कटकर; ओर् कुऩ्ऱिऩ्–(गिरनेवाले) एक पर्वत के समान; वीऴ्न्ताऩ्–जटायु नीचे गिर पड़े। ९३२

जटायु रावण के बल से विजित नहीं हुए। पर तलवार दैवी थी और उसको वरदान प्राप्त था कि वह किसी का भी सिर काट सकती थी। अलावा इसके, जटायु की आयु भी अन्त होने को आ गयी थी। इसलिए देवेन्द्र के वज्र से पंखकटा होकर जैसे पर्वत गिरा, वैसे अपने पक्षों के कटने पर जटायु नीचे गिर गये। ९३२

विरिन्दार् शिऱैहीऴुऱ वीऴ्न्दनन् मण्णिऩ् विण्णोर्
इरिन्दा रिऴन्दा डुणैयॆऩ्ऩ मुनिक्क णङ्गळ्
परिन्दार् पडर्विण्डुवि नाट्टवर् पॆम्बॊन् मारि
शॊरिन्दा रदुनोक्किय शीदै तुळक्क मुऱ्ऱाळ् 933

विरिन्तु आर् चिऱै–विवृद्ध और मनोरम पंखों के; कीऴ् उऱ–नीचे गिरने से; मण्णिऩ् वीऴ्न्तऩऩ्–(जटायु भी) भूमि पर गिर गये; विण्णोर् इरिन्तार्–व्योमवासी अस्त-व्यस्त भागे; मुऩि कणङ्कळ्–मुनिवृन्द; तुणै इऴन्ताळ् ऎऩ्ऩ–सहायक खो गयीं (देवी) यह कहकर; पटर् परिन्तार्–दुःख से आक्रांत हुए; विण्टुविऩ् नाट्टवर्–श्रीविष्णुलोकवासी नित्यसूरिवृन्द ने; पॆम्पॊऩ् मारि–स्वर्णवर्षा; चॊरिन्तार्–करायी; अतु नोक्किय चीतै–उसको देख सीताजी; तुळक्कम् उऱ्ऱाळ्–सिहर उठीं। ९३३

फैले रहे मनोरम पक्ष कटकर गिरे और वे भी भूमि पर गिर गये। यह देखकर देवगण अस्त-व्यस्त होकर भाग चले। मुनिवृन्द यह कहते हुए दुःखी हुए कि सहायतार्थ आया जटायु भी हत हो गया। श्रीविष्णु के वैकुण्ठलोकवासी नित्यसूरीवृन्द ने जटायु पर स्वर्णवर्षा करायी। (वैकुण्ठ में भगवान विष्णु के अलावा गरुड़, सुदर्शन आदि नित्यसूरी और मुक्त जीव, जो भूमि का वास पूरा करके मोक्ष को प्राप्त हुए हैं, हैं। विशिष्टाद्वैत मत के अनुसार ये नित्यसूरि विष्णु-भक्तों की मृत्यु होने पर स्वयं आकर उनको बड़े आदर के साथ लिवा ले जाते हैं।) यह देखकर सीताजी बहुत व्यथित हुईं। ९३३

वॆळ्हुम् मरक्कऩ् नॆडुविण्बुह वार्त्तु मिक्काऩ्
तॊऴिहिऩ् ऱलैयॆय्दिय मानॆऩ्ऩच् चोर्न्दु नैवाळ्
उळ्हुम् मुयिर्क्कु मुयङ्गुम्मोरु शार्वु काणाळ्
कॊळ्हीम् बॊडियक् कॊडिवीऴ्न्ददु पोऱ् कुलैन्दाळ् 934

वॆळ्कुम् अरक्कऩ्–(जटायु के पराक्रम के सामने) जो शरम खाता था, वह राक्षस; नॆटु विण् पुक–(अब) आकाश में बहुत दूर गूंज उठे, ऐसा; आर्त्तु–शोर मचाकर; मिक्काऩ्–स्वाभिमान में बढ़ गया; तॊऴ्किऩ् तलै ऎय्तिय–जाल में फँसी हुई; माऩ् ऎऩ–हरिणी के समान; चोर्न्तु नैवाळ्–थकी और क्लिन्न; उळ्कुम्–(सीताजी ने) सोचा (कि क्या किया जाय); उयिर्क्कुम्–ठण्डी आहें भरीं; उयङ्कुम्–मुरझातीं;

ओरु चार्पु काणाळ्–कोई उपाय नहीं देखतीं; कोळ् कोम्पु ओटिय–अवलम्ब-तरु के टूटने पर; कोटि वीऴ्न्ततु पोल्–लता गिरी जैसे; कुलैन्ताळ्–जर्जर हुईं। ९३४

रावण जटायु का साहस देखकर पहले शरम से पीड़ित था। अब वह स्वाभिमान में बढ़ गया। उसने आकाश में बहुत दूर तक गुँजाते हुए गर्जन किया। सीताजी जाल में फँसी हरिणी के समान शिथिल पड़ गयीं। उद्विग्न हो गयीं। 'अब क्या करूँगी ?' यह सोचने लगीं। ठण्डी आहें भरीं। कोई सहायक नहीं रहा। अवलम्बित शाखा के टूटने पर गिरकर तड़पनेवाली लता के समान वे अस्त-व्यस्त होकर छटपटायीं। ९३४

❀ वन्रुणै युळनॆन्न वन्द मन्ननुम्, पोन्ड्रिन नॆनक्किनि पुहलॆन् नॆन्गिन्ड्राळ्
इन्रुणैप् पिरिन्दिरुन् दिन्न लॆय्दिय, अन्ड्रिलम् बॆडैयॆन वरड्रि नाळरो 935

इन् तुणै पिरिन्तु इरुन्तु–प्यारे संगी से बिछुड़कर; इन्नल् ऎय्तिय–कष्ट-प्राप्त; अन्ड्रिल् अम् पॆडै ऎन–मनोरम क्रौंची के समान; अरड्रिनाळ्–सीताजी विलपीं; वल् तुणै उळन्–शक्तिमान सहायक हैं; ऎन–ऐसा; वन्त मन्ननुम्–जो आये, वे (गृध्र-) राज भी; पोन्ड्रिनन्–मर गये; ऎनक्कु इनि पुकल् ऎन्–अब मेरे लिए शरण कहाँ; ऎन्किन्ड्राळ्–कहतीं। ९३५

वे प्यारे जीवन-संगी से वियुक्त और दुःखी हुई मनोरम क्रौंची के समान विलाप करने लगीं। सबल सहायक आ गया —यह सोचकर मैं निश्चिन्त थी। ऐसे सहायक, गीधों के राजा भी मर गये। अब मेरे लिए शरण कहाँ होगी ? यह कहते हुए वे रोयीं। ९३५

❀ पिन्नव नुरैयिनै मरुत्तुप् पेदैयेन्, अन्नवन् ड्रनैक्कडि दहड्रि नेन्बोरु
मन्नवन् शिऱैयऱ मयङ्गि नेन्विदि, इन्नमु मॆव्विनै यियऱ्ऱु मोवॆना 936

पेतैयेन्–जड़मति; पिन्नवन् उरैयितै–देवर का कहना; मरुत्तु–काटकर; अन्नवन् तनै–उनको; कटितु अकड्रिनेन्–शीघ्र हटा दिया; पोरु मन्नवन् चिऱै अऱ–(मेरी सहायता के लिए) युद्धरत गृध्रराज का पंख कटवाया; मयङ्कितेन्–अब भ्रमित हूँ; विति–कर्मगति; इन्नमुम्–और भी; ऎ विनै–कौन सा कार्य; इयऱ्ऱुमो–करायगी; ऎना–सोचती हुई। ९३६

मैं जड़मति हूँ। देवर ने बहुत समझाया। उनकी बात काटकर उनको जल्दी जाने को विवश किया। अब युद्ध करने जो आये, उनके पंख कट गये और वे गिर गये। अब मैं भ्रमित हूँ। विधि और भी क्या-क्या करेगी ? नहीं जानती। —यह कहकर वे दुःखी हुईं। ९३६

❀ अल्ललुड् ड्रेनैवन् दनुज लॆन्ड्रविन्
नल्लवन् ड्रोड्पदे नरहन् वॆल्वदे
वॆल्वदुम् बावमो वेदम् पॊय्क्कुमो
इल्लैयो वऱमॆन विरङ्गि येङ्गिनाळ् 937

अल्लल् उऱ्ऱेनै–दुःखग्रस्त मुझे; वन्तु अञ्चल्–आकर मत डरो; ॲन्ऱ–जिन्होंने कहा; इ नल्लवन्–ये उत्तम जीव; तोऱ्पते–हार जायें क्या; नरकन् वॅल्वते–नारकी (रावण) जीत जाये; वॅल्वतुम् पावमो–पाप ही जीत पा जाय; वेतम् पॊय्क्कुमो–क्या वेद झूठे बनेंगे; अऱम् इल्लैयो–धर्म नहीं रहा क्या; ॲन–ऐसा; इरङ्कि–दुःखी होकर; एङ्कित्ताळ्–रोयीं। ९३७

दुःखपीड़ित मुझे इन उत्तम ने अभयदान किया। कहा कि मत डरो। ये भले मानुस हारें, यह क्या न्याय है? नारकी रावण जीत जाता है—यह क्या? पाप ही विजयी होगा क्या? वेद झूठे हो गये हैं क्या? ('सत्यमेव जयते' कहते हैं वेद।) क्या धर्म नहीं रहा?—ऐसा-ऐसा कहकर वे मुरझायीं, रोयीं। ९३७

❀नाणिले नुरैहॊंडु नडन्द नम्बिमीर्
नीणिलै यऱनॆऱि निन्ऱु ळोर्क्कॆलाम्
आणियै युन्दैयर्क् कमैन्द वन्बनैक्
काणिय वम्मॆनक् कलङ्गि विम्मिनाळ् 938

नाण् इलेन्–निर्लज्ज मेरा; उरै कॊंडु–वचन मानकर; नटन्त नम्पिमीर्–जो चले, वे गुणपूर्ण; नीळ् निलै–चिर स्थिर; अऱम् नॆऱि–धर्ममार्ग पर; निन्ऱ उळोर्क्कु ॲलाम्–जो स्थित हैं, उन सबके; आणियै–धुरंधर और; उन्तैयर्क्कु–आपके पिता के; अमैन्त न्ण्पनै–युक्त मित्र को; काणिय–देखने के लिए; वम्–आइए; ॲन–कहकर; कलङ्कि विम्मिनाळ्–रोयीं, सिसकीं। ९३८

मैं निर्लज्ज हूँ। मेरी बात पर जो चले, वे पूर्णपुरुष! चिरकाल से स्थिर धर्ममार्गगामियों के लिए जटायु धुरन्धर थे। वे आपके पिता के योग्य मित्र थे। उनको देखने के लिए आइए—कहती हुई वे उद्विग्न होकर सिसकीं। ९३८

ॲल्लियल् विशुम्बिडै यिरुन्द नेमियाय्
शॊल्लिय वऱनॆऱि तॊडर्न्द तोळमै
नल्लिय लरुङ्गडन् कळित्त नम्बियैप्
पुल्लुदि योवॆनप् पॊरुमि येङ्गिनाळ् 939

ॲल् इयल्–प्रकाशमय; विचुम्पु इटै–आकाश में; इरुन्त नेमियाय्–विद्यमान चक्रवर्ती (दशरथ); चॊल् इयल्–प्रशंसनीय; अऱ नॆऱि तॊटर्न्त–धर्ममार्गगामी; तोळमै–मित्रता के लिए योग्य; नल् इयल् अरुम् कटन्–अच्छे शास्त्रों में कथित श्रेष्ठ कर्तव्य; कळित्त–जो कर चुके; नम्पियै–पूर्णजीव जटायु को; पुल्लुतियो–वहाँ आलिंगन कर लेंगे क्या; ॲन–कहकर; पॊरुमि–आहें भरकर; एङ्कित्ताळ्–रोयीं। ९३९

प्रकाशमय आकाश (स्वर्ग) में विद्यमान चक्रवर्ती! प्रशंसनीय धर्मसम्मत मित्रता के शास्त्रविहित कर्तव्य जो पूरा कर चुके है, वे जटायु

उधर आ रहे हैं। उनका आलिंगन कर लेंगे न? —सीताजी सिसकियाँ भरती हुई रोयीं। ९३९

करपळि यामैयॅन् कडमै यायिनुम्
पॉरपळि यावलम् बॉरुनदुम् बोरवलान्
विरपळि युणडदु विनैयितेन् वन्द
इरपळि युणडदॆन् रिरङ्गि येङ्गिनाळ् 940

करपु अळियामै–पातिव्रत्य की रक्षा; ऍन् कटमै–मेरा कर्तव्य है; आयितुम्–तो भी; पॉरपु अळिया–तेजोमय; वलम् पॉरुन्तुम्–बल से युक्त; पोर् वलान्–युद्धवीर, श्रीराम का; विल् पळि उण्टतु–कोदण्ड अपयश का भाजन हुआ; वितैयितेन् वन्त–पापी मेरे जन्म का; इल् पळि उण्टतु–कुल भी निन्द्य हो गया; ऍन्ऱु–कहकर; इरङ्कि एङ्किनाळ्–आर्द्र होकर रोयीं। ६४०

अपने पातिव्रत्य का पालन करना मेरा कर्तव्य है, सही। तो भी अब इस कार्य से तेजोमय बलसंयुक्त युद्धवीर श्रीराम के कोदण्ड पर बट्टा लग गया है। पापिनी मैंने जिस कुल में जन्म लिया, उस जनककुल पर अपयश का धब्बा लग गया। हाय! कहती हुई सीताजी व्यग्र होकर रोयीं। ९४०

❀ एङ्गुवा डनिमैयु मिरहि ळन्दवन्
आङ्गुरु निलैमैयु मरक्क नोक्किनान्
वाङ्गिनन् ड्रेरिडै वैत्त मण्णोडुम्
वीङ्गुदोण् मीक्कॊडु विण्णि नेहिनान् 941

एङ्कुवाळ् तत्रिमैयुम्–रोनेवाली सीताजी की निस्सहायता; इरकु इळन्तवन्–पंखहीन हुए जटायु की; आङ्कु उरु–वहाँ की (मरणासन्न); निलैमैयुम्–स्थिति को; अरक्कन् नोक्कितान्–राक्षस ने देखा; तेर् इटै वैत्त–रथ में रखी हुई; मण् ओटुम्–भूमि के अंश के साथ; वाङ्कितन्–उठा लेकर; वीङ्कु तोळ् मी कॊटु–पुष्ट और उन्नत कन्धों पर रखकर; विण्णिन् एकितान्–आकाश में गया। ६४१

राक्षस ने देखा कि अब देवी निस्सहाय हो गयी हैं। उधर जटायु भी मरणोन्मुख अवस्था में थे। सन्दर्भ का लाभ उठाकर उसने सीताजी को भूमि के अंश के साथ रथ से उठाया। अपने उन्नत और स्थूल कन्धों पर धारण किये वह आकाश में चला। ९४१

❀ विण्णिडै वॅय्यव नेहुम् वेहत्ताल्
कण्णॊडु मनमवै सुळन्र करपिनाळ्
उण्णिरै वुणर्वळिन् दोन्रु मोर्न्दिलळ्
मण्णिडैत् तन्नैयु मरन्दु शाम्बिनाळ् 942

विण् इटै–आकाश में; वॅय्यवन्–क्रूर के; एकुम् वेकत्ताल्–जाने की तीव्र गति के कारण; कण् ओटु मतम् अवै–आँखों के साथ मन भी; चुळन्र–चक्कित हुआ;

कऱ्पिऩाळ्–वैसी पतिव्रता सीताजी; उळ् निऱै उणर्वु अऴिन्दु–मन की प्रज्ञा खोकर; ऑन्ऱुम् ओर्न्दिलळ्–कुछ नहीं जानतीं; तन्नैयुम् मऱन्दु–अपनी सुध भी खोकर; मण् इडै–भूमि (के अंश) पर; चाम्पिऩाळ्–मूर्च्छित पड़ी रहीं। ९४२

रावण आकाश-मार्ग से अति तीव्र गति में जा रहा था। उसके कारण देवी सीता की आँखें चकरा गयीं। मन भी चक्कर खाने लगा। पतिव्रता देवी की प्रज्ञा ही निष्क्रिय हो गयी। कुछ समझ नहीं पायी। आखिर मूर्च्छित होकर वह भूमि के अंश पर गिरीं और मुरझायीं। ९४२

❀ एहिन ऩरक्कनु मॅरुवै वेन्दनुम्
मोहवॆन् दुयर्शिऱि दाऱि मुन्नियॆ
माहमे नोक्किनान् वञ्जन् वल्लैयिल्
पोहुदल् कण्डहम् बुलर्न्दु शॊल्लुवान् 943

अरक्कनुम्–निशाचर भी; एकिनन्–गया; ऍरुवै वेन्दनुम्–गीधों के राजा भी; मोक वॅम् तुयर्–मूर्च्छा के कठोर दुःख से; चिऱितु आऱि–कुछ शान्त होकर; मुन्नियॆ–स्मरण करते हुए; माकम् मेल् नोक्किनान्–आकाश में ऊपर देखा; वञ्चन् वल्लैयिल् पोकुतल् कण्टु–वंचक का शीघ्र जाना देखकर; अकम् पुलर्न्तु–मन में तप्त होकर; चॊल्लुवान्–कुछ कहने लगे। ९४३

रावण आगे बढ़ता जा रहा था। जटायु मूर्च्छा के कठोर दुःख से बाहर आये। उनको धीरे-धीरे घटित बातें स्मरण आने लगीं। उन्होंने ऊपर देखा। रावण सीताजी को लिये जा रहा था। जटायु का मन सूख गया। वे कुछ कहने लगे। ९४३

❀ वन्दिलर् मैन्दर्दाम् मरुहिक् कॅय्दिय
वॅन्दुयर् तुडैत्तन रॅन्नु मॅय्प्पुहऴ्
तन्दिलर् विदियिनार् दरुम वेलियैच्
चिन्दिनर् मेलिनिच् चॆयलॆ ऩाङ्गॊलो 944

मैन्तर् ताम्–मेरे पुत्र; वन्तिलर्–नहीं आये; मरुकिक्कु–वधू पर; ऍय्तिय–आया; वॅम् तुयर्–कठोर दुःख; तुटैत्तनर् ऍन्नुम्–दूर कर दिया, यह; मॅय् पुकऴ्–सच्चा यश; तन्तिलर्–नहीं पाया (नहीं दिलाया उन्होंने); वितियिन् आर्–विधियों से विशिष्ट (या वितियिनार्–विधि ने); तरुम वेलियै–धर्म के बाड़े को; चिन्तिनर्–खोल दिया; मेल्–आगे; चॆयल्–करने योग्य काम; ऍन् आम् कॊल्–क्या होगा। ९४४

ओफ़! पुत्र नहीं आये। उन्होंने वधू का कठोर दुःख दूर करके यश नहीं लिया (न मुझे ही दिलाया)। विधिविशिष्ट धर्म के बाड़े को तोड़ दिया। आगे का कार्य क्या होगा? । ९४४

❀ वॆऱ्ऱिय रुळरॆनिन् मिन्नि ऩुण्णिडैप्
पॊऱ्ऱॊडिक् किन्निलै पुहुदर् पालदो

उऱ्ऱदै यिन्ऩदेन् ऩुणर हिऱ्ऱिलेन्
शिऱ्ऱवै वञ्जऩै मुडियच् चॅय्ददो 945

वॅऱ्ऱियर्–विजयशील राम और लक्ष्मण; उळर् ॲतिल्–वहाँ रहे होते तो; मिऩ्तिऩ् नुण् इडै–बिजली-सी क्षीण-कटि; पोऩ् तोटिकु–स्वर्ण-कंकणालंकृता (सीता) पर; इ निलै–यह दशा; पुकुतल् पालतो–आ सकती थी क्या; उऱ्ऱतै–वहाँ जो हुआ, उसे; उणरकिऱ्ऱिलेन्–समझ नहीं पाता; चिऱ्ऱवै वञ्चऩै–छोटी माता की वंचना; मुटिय चॅय्ततो–सफल हो रही है क्या। ६४५

राम और लक्ष्मण पराक्रमी और विजयी हैं। वे अगर वहाँ रहते होते तो विद्युत-सी क्षीण-कटि और स्वर्ण-कंकणालंकृता देवी पर यह दशा आ सकती ? उधर क्या हुआ, यह मैं जान नहीं पाता। सौतेली माता की वंचना सफलीभूत हो रही है क्या ? । ९४५

❀ पञ्जणै पाम्बणै याहप् पळ्ळिशेर्
अञ्जऩ वण्णऩे यिराम ऩादलाल्
वॅञ्जिऩ वरक्कनाल् वॅल्लऱ् पालनो
वञ्जऩै यिळैत्तनन् कळ्ळ मायैयाल् 946

पाम्पु–शेषनाग पर; पञ्चु अणै आक–रुई की शय्या पर जैसे; पळ्ळि चेर्–शयन जो करते हैं; अञ्चऩ वण्णऩे–वे अंजनवर्ण विष्णुदेव ही; इरामऩ् आतलाल्–श्रीराम हैं, इसलिए; वॅम् चित्तम् अरक्कताल्–निर्मम क्रोधी राक्षस द्वारा; वॅल्लल् पालऩ् ओ–जेय है क्या; कळ्ळ मायैयाल्–चोरी की माया से; वञ्चऩै इळैत्तऩऩ्–कपट किया है राक्षस ने। ६४६

वे श्रीराम शेषनाग पर रुई की शय्या पर जैसे शयनकर्ता श्रीमन्नारायण ही हैं। क्या वे निर्मम क्रोधी रावण द्वारा जेय हैं ? नहीं। इसलिए उनकी कुछ हानि नहीं हुई होगी। रावण ने अवश्य माया द्वारा ही यह वंचना की है ! । ९४६

वेरऱ वरक्करै वॅऩ्ऱु वॅम्बळि
तीरुमॅऩ् शिऱुवनुन् दीण्ड वञ्जुमाल्
आरियऩ् ऱेवियै यरक्क ऩम्मलर्प्
पेरुल हळित्तवन् पिळैप्पिल् शाबत्ताल् 947

ॲऩ् चिऱुवतुम्–मेरा बालक भी; अरक्करै वेर् अऱ वॅऩ्ऱु–राक्षसों को जीतकर निर्मूल करके; वॅम् पळि तीरुम्–इस क्रूर काम का बदला ले लेगा; अम् मलर्–सुन्दर कमलासन; पेर् उलकु अळित्तवऩ्–विश्वसर्जक के; पिळैप्पु इल् चापत्ताल्–अनिवार्य शाप के कारण; आरियऩ् तेवियै–पुरुषोत्तम की पत्नी को; तीण्ट अञ्चुम्–स्पर्श करने से डरेगा। ६४७

मेरा बालक, श्रीराम, राक्षसों को अवश्य जीतकर उनका मूल से नाश कर देगा और बदला ले लेगा। विश्वसृष्टा कमलासन का शाप है, वह

वृथा नही होगा, इसलिए रावण पुरुषोत्तम की पत्नी सीता का स्पर्श नहीं करेगा। डर के कारण वह उसका अपमान नही करेगा। ९४७

परुञ्जिऱै यिऩ्ऩल पऩ्ऩि युऩ्ऩुवाऩ्
अरुञ्जिऱै युऱ्ऱऩ ळार्मे ऩामऩम्
पॊरुञ्जिऱै यिऱ्ऱदे पूवै कऱ्पॆऩुम्
इरुञ्जिऱै यऱ्ऱदॆऩ विडरि ऩीङ्गिऩाऩ् 948

परुञ्चु इऱै–गीधों के राजा; अरुम् चिऱै उऱ्ऱऩळ् आम्–कठोर कारा में पहुँच गयी; ॲन्ता–ऐसा; मऩम् उऩ्ऩुवाऩ्–मन में अनुमान करते; इऩ्ऩऩ पऩ्ऩि–ऐसी बातें कहते हुए; पॊरुम् चिऱै–युद्धोपयोगी पंख; इऱ्ऱते–कट गये तो भी; पूवै–सारिका-सी सीता का; कऱ्पॆऩुम् इरुम् चिऱै–पातिव्रत्य रूपी रक्षण; अऱ्ऱातु ॲन्त–व्यर्थ नहीं होगा, यह सोचकर; इटरिऩ् नीङ्किऩाऩ्–दुःखनिवृत्त हुए। ९४८

गृध्रराज जटायु अपने मन में अनुमान लगाते कि सीता कारा में रखी गयी है। यह सब कहकर वे आगे सोचते कि जिनको लेकर मैं युद्ध कर सकता था, वे पंख कट गये और मैं सीता की रक्षा नहीं कर सका। पर सारिका-सी सीतादेवी का पातिव्रत्य है —वह पंख नहीं कटेगा और उसका खूब संरक्षण करेगा। यह सोचकर वे दुःखनिवृत्त हुए। ९४८

❀ अञ्जिऱैक् कुरुदिया ऱुऴिन्दु शोरवुम्
वञ्जियै मीट्टिलॆ ऩॆऩ्ऩु माऩमुम्
शॆञ्जेवे मक्कण्मेऱ् चॆऩ्ऱ कादलुम्
नॆञ्जुऱत् तुयिऩ्ऱऩ ऩुणर्वु नीङ्गलाऩ् 949

अम् चिऱै कुरुति आऱु–श्रेष्ठ पंखों से निकली रक्त-नदी; अऴिन्तु–सूखी; चोरवुम्–बहुत दुर्बल हुए, तो भी; वञ्चियै–लता (-सी सीता) को; मीट्टिलॆऩ्–नहीं लौटाया; ॲऩ्ऩुम् माऩमुम्–इससे उत्पन्न अपमान; मक्कळ् मेल्–और अपने बालकों पर; चॆञ्चेवे चॆऩ्ऱ–सीधा लगाया; कातलुम्–प्रेम; नॆञ्चु उऱ–मन में घर किये रहे; उणर्वु नीङ्कलाऩ्–प्रज्ञा नहीं खोकर; तुयिऩ्ऱऩऩ्–निद्रित अवस्था में रहे। ९४९

जटायु के पंखों से नदी के समान रक्त जो वह रहा था, वह यथासमय सूख गया। रक्त-विहीन होकर उनका शरीर कृश हो गया और वे शिथिल पड़ गये। तब भी उनके मन में सीताजी को न लौटा सकने से उत्पन्न अपमान की ग्लानि और अपने (मित्र के) बालकों पर रखा गम्भीर प्रेम सजग था। वे प्रज्ञा को सजग रखते हुए निद्रावस्था में पड़े रहे। ९४९

❀ वञ्जियै यरक्कऩुम् वल्लै कॊण्डुपोय्च्
चॆञ्जेवे तिरुवुरुत् तीण्ड वञ्जुवाऩ्
नञ्जिय लरक्कियर् नडुव णायिडैच्
चिञ्जुव मरत्तिडैच् चिऱैवैत् ताऩरो 950

अरक्कनुम्—राक्षस ने; वञ्चियै—लता-सी सीता को; तिरु उरु तीण्ट—शरीर-स्पर्श करने से; अञ्चुवान्—डरकर; आय् इटै—उस (लंका) में; चिञ्चुव मरत्तु इटै—शिशुपा (अशोक) तरु के तले; नञ्चु इयल्—विष-तुल्य स्वभाव वाली; अरक्कियर् नटुवण्—राक्षसियों के मध्य; चॆञ्चॆवे—अच्छी तरह से; चिरै वैत्तान्—बन्दी बनाकर रखा। ९५०

राक्षस रावण ने सीताजी के श्रीशरीर को स्पर्श नहीं किया। उसे भय था। उन्हें लंका में ले गया। वहाँ अशोक वन में शिशुपा वृक्ष के तले उन्हें रखा; और विष का-सा स्वभाव रखनेवाली राक्षसियों का पहरा बैठाया। ९५०

❀ इन्निलै यिन्नैयवर् चॆयलि यम्बिनाम्
पॊन्निलै मानिन्बिन् ड़ॊडर्न्दु पोहिय
मन्निलै यरिहॆन् मङ्गै येविय
पिन्नवन् ड़न्निलै पेशु वामरो 951

इ निलै—ऐसा; इन्नैयवर् चॆयल्—इनका काम; इयम्पिनाम्—(हमने) कहा; पॊन् निलै मानिन् पिन्—स्वर्णवर्ण मृग के पीछे; तॊटर्न्तु पोकिय—लगे हुए जो गये; मन् निलै अऱिक—उन नाथ की हालत जानो; ऍन—कहकर; मङ्कै एविय—जिनको देवी ने भेजा, उन; पिन्नवन् तन् निलै—अनुज की स्थिति; पेचुवाम्—कहेंगे। ९५१

अब तक हम (कवि रावण, जटायु, सीताजी आदि) इनकी करनी कहते रहे। अब हम अनुज लक्ष्मण की बात करेंगे, जो सीताजी से स्वर्णमृगानुगामी प्रभु की स्थिति जानने के हेतु प्रेषित थे। ९५१

ऒरुमह ड़निमैयै युन्नि युळ्ळुरुम्
परुवरल् मीदिडप् पदैक्कु नॆञ्जिनान्
पॆरुमहन् ड़नैत्तनिप् पिरिन्दु पेदुरुम्
तिरुनहर्त् तीरुमप् परदन् शॆय्हैयान् 952

ऒरु मकळ्—अकेली देवी की; तनिमैयै उन्नि—तनहाई की चिन्ता करके; उळ् उऱुम् परुवरल्—अन्दर का दुःख; मीतु इट—अधिक हुआ और; पतैक्कुम् नॆञ्चितान्—धड़कता दिल लेकर; पॆरु मकन् तनै—पुरुषोत्तम श्रीराम को; तनि पिरिन्तु—अकेले छोड़कर; पेतुऱुम्—दुःखी रहनेवाले; तिरु नकर् तीरुम्—अयोध्या के श्रीनगर को छोड़ जानेवाले; अ परतन् चॆय्कैयान्—उन भरत की-सी स्थिति में रहे। ९५२

लक्ष्मण के मन में अकेली उत्तम देवी सीता के एकाकीपन की चिन्ता थी और तज्जनित दुःख उमड़ आ रहा था। इसलिए वे बहुत उद्विग्न हुए थे। तब उनके मन की दशा भरत की-सी थी, जो श्रीराम से विदा होकर अयोध्या नगरी को लौट रहे थे। ९५२

❀ तॅण्डिरैक् कलमॅन विरैविड़् चॅल्हिऩ्ड्राऩ्
पुण्डरी हत्तडङ् गाडु पूत्तॊरु
कॊण्डल्वन् दिऴिन्दन्न कोलत् ताऩ्ड्रऩैक्
कण्डनन् मऩ्ऩमॅनक् कऴिक्कुङ् गण्णिऩाऩ् 953

तॆंळ् तिरै–स्वच्छ लहरों के समुद्र में; कलम् अॅन्न–पोत के समान; विरैविल् चॅल्किऩ्ड्राऩ्–वेग के साथ (जो) चलते हैं; ऑरु कॊण्टल्–एक मेघ; पुण्टरकिम् तटम् काटु पूत्तु–कमलपुष्प कानन के समान खूब पुष्पित हैं (जिसमें); वन्तु इऴिन्त अॅन्न–(भूमि पर) उतरा हो जैसे; कोलत्ताऩ् तनै–सौन्दर्यवान श्रीराम को; मन्नम् अॅन्न कऴिक्कुम् कण्णिताऩ्–मन ही की अरह आँखों में भी आनन्द के साथ; कण्टनन्–देखा (उन लक्ष्मण ने)। ९५३

लक्ष्मण साफ़ लहरों से युक्त समुद्र में पोत के समान सवेग गये। उन्होंने, पुष्पित कमलों के साथ आनेवाले मेघ के समान जो आ रहे थे, उन श्रीराम के दर्शन किये। तब उनका मन ही क्या उनकी आँखें भी आनन्द से भर गयीं। ९५३

❀ तुण्णॅनुम् मव्वुरै तॊडरत् तोहैयुम्
पॅण्णॅनुम् वेदैमै मयक्कप् पेदिऩाल्
उण्णिड़ै शोरुमॅन् ड़ूश लाडुमक्
कण्णनु निऴवलैक् कण्णि ऩोक्किऩाऩ् 954

तुण् अॅनुम्–भय से कँपा देनेवाले; अ उरै–उस (मारीच के) शब्द को; तॊटर–अपने पास आने पर सुनकर; तोकैयुम्–कलापी (सी सुन्दर सीता) देवी भी; पॅण् अॅनुम् पेतैमै–स्त्री-सुलभ अबोधता के; मयक्क–भ्रमित करने से; पेतिताल्–भ्रम से; उळ् निऱै चोरुम्–मन का धैर्य खो जायगी; अॅन्ऱु–यह सोचकर; ऊचल् आटुम्–चंचल बने; अ कण्णनुम्–उन सुन्दराक्ष ने भी; इळवलै–अपने कनिष्ठ को; कण्णित् नोक्कितान्–आँखों से देखा। ९५४

उधर श्रीराम ने भी अपने अनुज को देखा। जब उन्होंने मारीच का डरानेवाला दुहाई का शब्द सुना था, तभी उन्हें लग गया कि कलापी-सी सुन्दरी सीता ने उसे सुना अवश्य होगा। स्त्री-सुलभ मोह के कारण वे भ्रमित होंगी और अधीर हो जायँगी। इसलिए सुन्दराक्ष श्रीराम का मन डाँवाँडोल था। उन्होंने लक्ष्मण को देखा। ९५४

पुऩ्शॊड़् कडन्द पहुवा यरक्क ऩुरैपॊय् यॅनादु पुलर्वाळ्
वऩ्शॊड़् कडन्दु मडमङ्गै येव निलैदेर वन्द मरुळो
तऩ्शॊड़् कडन्दु तळर्हिऩ्ड्र नॆञ्ज मुडैयेन् मरुङ्गु तऩिये
ॲऩ्शॊड़् कडन्दु मऩ्मुन् दळर्न्द विळवीरऩ् वन्द वियल्बे 955

पुल् चोऱ्कळ् तन्त–(अर्थहीन) अल्प शब्दवाची; पकु वाय् अरक्कन्–खुले मुख के राक्षस के; उरै पॊय् अॅन्नातु–शब्द को असत्य न मानकर; पुलर्वाळ्–शोकतप्त

होकर; वन् चॊर्कळ् तन्तु–कठोर शब्द कहकर; मट मङ्कै एव–हठी वाला के भेजने से; तन् चॊल् कटन्तु–अपना वादा तोड़कर; तळर्किन्ऱ–शिथिल; नॆञ्चम् उटैयेन् मरुङ्कु–मन के मेरे पास; ऎन् चॊल् कटन्तु–मेरी आज्ञा का भी उल्लंघन करके; इळ वीरन्–छोटे वीर का; तनिये वन्त इयल्पु–अकेले आने का कार्य; निलै तेर वन्त–मेरी स्थिति जानने के लिए आने का; मरुळो–मोह का काम है क्या। ९५५

उन्हें अनुमान हुआ कि अनर्थकारी शब्दवाची, खुले मुख के मारीच के शब्दों को सत्य मानकर हठीली सीतादेवी ने कठोर शब्द कहकर लक्ष्मण को जाने को मजबूर किया होगा! फलस्वरूप लक्ष्मण अपनी स्थिर राय को भी ताक पर रखकर संकटग्रस्त मेरे समीप, मेरी भी आज्ञा का उल्लंघन करके मेरी हालत जानने के लिए आया है! उसका आगमन क्या इसी भ्रम का फल है? । ९५५

ऎन्ऱुन्नि ऎन्नै विदियार् मुडित्त दॆन्ऩॆण्णि निन्ऱ विऱैयैप्
पॊन्ऱुन्नु विऱ्कै यिळवीरन् वन्दु पुनैता ळिऱैञ्जु पॊऴुदिल्
मिन्ऱुन्नु नूलिन् मणिमार् बळुन्द विऱैवोडु पुल्लि युरुहा
निन्ऱुन्नि वन्द निलैयॆन्गॊ लॆन्ऱु नॆडियोन् विळम्ब नॊडिवान् 956

ऎन्ऱु उन्नि–ऐसा सोचकर; वितियार् मुटित्ततु ऎन्नै–विधिदेव ने क्या किया; ऎन्न ऎण्णि–ऐसा विचार कर; निन्ऱ इऱैयै–स्तब्ध खड़े रहे (श्रीराम) प्रभु के; पॊन् तुन्नु–सौन्दर्य भरे; विल् कै–धनुर्हस्त; इळ वीरन् वन्तु–कनिष्ठ भ्राता ने आकर; पुनै ताळ् इऱैञ्चु पॊऴुतिल्–सुन्दर चरणों पर नत (जब) हुए, तब; मिन् तुन्नु–बिजली जुड़ी हो, ऐसा; नूलिन् मणि मार्पु–उपवीत-सहित सुन्दर वक्ष को; अळुन्त–खूब दबाकर; विऱैवु ओटु पुल्लि–सवेग आलिंगन करके; उरुका निन्ऱ–द्रवीभूत हो, खड़े रहकर; उन्नि वन्त निलै–सोचकर आने का हेतु; ऎन् कॊल्–कौन सा है; ऎन्ऱु–ऐसा; नॆटियोन् विळम्प–त्रिविक्रम ने पूछा तो; नॊटिवान्–(लक्ष्मण ने) कहा। ९५६

श्रीराम ऐसा सोचते हुए स्तब्ध खड़े के खड़े रह गये। विधिदेव के इस विधान का फल क्या होगा? —इसकी उन्हें चिन्ता हुई। तब सुन्दर धनुर्धर लक्ष्मण ने पास आकर उनके चरणों पर नमस्कार किया। श्रीराम ने अपने विद्युत-सम उपवीत से अलंकृत अपने वक्ष के साथ उन्हें कसकर आलिंगन कर लिया। फिर अधीर होकर पूछा कि क्या सोचकर तुम इधर आये? तब लक्ष्मण ने उत्तर दिया। ९५६

इल्ला निलत्ति यियैयाद वॆञ्जॊ लॆळुवञ्जि यॆव्व मुऱ्याऩ्
वल्वा यरक्क नुरैयाहु मॆन्न मदियाण् मरुक्क मुऱुवाळ्
निल्लादु मऱ्ऱि दरिपोदि यॆन्न नॆडियोय् पुयत्तिन् वलियॆन्
शॊल्लान् मनत्ति नडैयाळ् शिनत्तिन् मुनिवोडु निन्ऱु तुवळ्वाळ् 957

निलत्तिल् इल्ला–अलौकिक; इयैयात–असम्बद्ध; वॆम् चॊल् ऎऴ–(दुहाई के)

उन भयंकर शब्दों के उठने पर; वञ्चि ॲन्वम् उऱ–लता-सी देवी ने दुःख पाया; यान्–मैने; वल् वाय् अरक्कन् उरै आकुम्–कठोर मुख के राक्षस का शब्द है; ॲन्न–कहा, तव; मतियाळ्–न मानीं; मऱुक्कम् उऱुवाळ्–घवड़ाती हुई; नॆटियोय् पुयत्तिन् वलि–श्रेष्ठ आपके भुजवल पर; ॲन् चॊल्लाल्–मेरे कहने पर भी; मतत्तिन् अटैयाळ्–विश्वास न करके; चितत्तिन् मुतिवु ओटु–क्रोध और खीझ के साथ; इतु अऱि–यह जान आओ; निल्लातु पोति–खड़े मत रहो, जाओ; ॲन्न–कहकर; निन्ऱु तुवळ्वाळ्–खड़ी होकर मुरझायीं। ९५७

भाई ! जव वह अलौकिक और असम्वद्ध दिल दहलानेवाला शब्द उठा, तव देवी ने उसे सुना और गहरे दुःख से अभिभूत हुईं। मैंने कहा कि यह कठोर-मुख मारीच का शब्द है। पर वे नहीं मानीं। घवड़ा गयीं। मैंने त्रिविक्रम, आपके भुजवल की महिमा कही। तो भी वे आश्वस्त नहीं हुईं और उनका मन में धैर्य नहीं हुआ। कोप और खीझ के साथ उन्होंने कहा कि जाकर पता लगा लो। खड़े मत रहो। चलो जल्दी। यह कहकर वे खड़ी रहकर मुरझायीं। ९५७

एहातु निऱ्ऱि यॆन्नित्या नॆरुप्पि निडैवीळ्वॆ नॆन्ऱु मुडुहा
माहान हत्ति निडैयोड लोडु मनन्जि वञ्जि विनैयेन्
पोहादु निऱ्कि लिऱवा दिरुक्कै पुणरा ळॆनक्कॊ डुणरा
आहादि रुक्कै यऱनन् ऱॆनक्कॊ डिवण्वन्द दॆन्न वमलन् 958

एकातु निऱ्ऱि ॲनिल्–विना गये खड़े रहोगे तो; यान्–मैं; नॆरुप्पिन् इटै वीळ्वॆन्–आग में कूद पड़ूँगी; ॲन्ऱु–कहकर; मुटुका–सत्वर; मा कातकत्तिन् इटै–वड़े जंगल में; ओटल् ओटुम्–दौड़ीं तो; मनन् अञ्चि–मन में डरकर; विनैयेन्–पापी मैं; पोकातु निऱ्किल्–(आपकी खोज में) गये विना खड़ा रहा तो; वञ्चि–लता (सी देवी); इऱवातु इरुक्कै–विना मरे जीवित रहना; पुणराळ्–न धरेंगी; ॲन कॊटु उणरा–ऐसा सोच-जानकर; इरुक्कै आकातु–यहाँ ठहरना उचित नहीं होगा; अऱन् अन्ऱु–धर्म भी नहीं होगा; ॲन कॊटु–ऐसा मानकर; इवण् वन्ततु ॲन्न–यहाँ आया, कहा तो; अमलन्–निर्मल प्रभु। ९५८

फिर उन्होंने कहा कि विना गये खड़े रहोगे, तो मैं दावाग्नि में कूदकर मर जाऊँगी। यह कहकर वे सत्वर वन की अग्नि की तरफ़ दौड़ने लगीं। मेरे मन में भय समा गया। पापी मैं खड़ा रहता तो निश्चित था कि देवी मरे विना नहीं रहतीं। यह निश्चय जानकर और यह विचार कर कि वहाँ रहना उचित नहीं है, न वह धर्म ही, यहाँ आ गया। तव निर्मल श्रीराम (ने सोचा)। ९५८

शावा दिरुत्त लिलळान दुऱ्ऱ ददैयो तडुक्क मुडिया
दावा वलक्क णुऱुवा ळुरैत्त पॊरुळो वहत्ति नडैयाळ्
कावा निलत्तिन् वरुमेद मऱ्ऱ दॊळियादु कॆक्कॊ डहलप्
पोवार् पिरिक्क मुयल्वार् पुणर्त्त पॊरुळा मिदॆन्ऱु तॆरुळा 959

चावातु इरुत्तल् इलळ्–जीवित न रहेगी; आन्तु उऱ्ऱतु–ऐसी स्थिति हो गयी; अतैयो तट्टुक्क मुटियातु–उसको तो रोक नहीं सकते; आ आ–हाय, हाय; अलक्कण् उऱुवाळ्–बहुत दुःख पा गयीं; उरैत्त पॉरुळो–लक्ष्मण के कहने का तात्पर्य; अकत्तिन् अटैयाळ्–अपने मन में न धरा; कावान् निलत्तिन्–संरक्षणहीन उस स्थान पर; एतम् वरुम्–संकट होगा; अतु ऑऴियातु–वह निवार्य नहीं; पिरिक्क मुयल्वार्–अलग करने के प्रयत्न में लगे हुए लोग; कै कॉट्टु–हथियाकर; अकल पोवार्–बहुत दूर चले जायँगे; पुणर्न्त पॉरुळ्–वंचकों का षड्यन्त्र; आम् इतु–होगा यही; ऍन्ऱु तॅरुळा–ऐसा बूझकर। ९५९

हाँ! सीता जीवित नहीं रहेगी, यह स्थिति आ गयी थी। उसको रोकना असम्भव था। हाय, हाय! वह बहुत दुःखी रहेगी। इसने जो कहा, उसका सत्य उसके मन में घर कर नहीं सका। अब वहाँ उसका संरक्षण कुछ नहीं है। इसलिए वहाँ कोई विपदा आये विना नहीं रहेगी। हमको अलग करना चाहते थे लोग। उनकी वंचना का कार्य है यह! यह उन्हें सूझ गया। ९५९

वन्दाय् तिऱत्ति नुळदन्ऱु कुऱ्ऱ मडवाण् मरुक्क मुऱुवाळ्
चिन्दा कुलत्तो डुरैशॅय्द शॅय्है यदुतीदु मन्ऱु तॅळिवाय्
मुन्दे तडुक्क वॉऴिया दॅडुत्त विनैयेन् मुडित्त मुडिवाल्
अन्दो कॆडुत्त दॅन्वुन्नि युन्नि यऴियाद वुळ्ळ मऴिया 960

वन्ताय् तिऱत्तिन्–आगत तुम्हारे पक्ष में; कुऱ्ऱम् उळतु अन्ऱु–अपराध नहीं है; मरुक्कम् उऱुवाळ् मटवाळ्–(मृग-ग्रहण पर) आतुर रही उस हठीली का; चिन्ता-कुलत्तु ऒट्टु–आतुरता के साथ; उरै चॅय्त चॅय्कै इतु–वह (पकड़ देने का) वचन कहने का काम; तीतुम् अन्ऱु–बुरा भी नहीं था; तॅळिवाय्–असंदिग्ध रूप से; मुन्ते तट्टुक्क–तुमने मुझे रोका, तो भी; ऑऴियातु–विना माने; ऍटुत्त वित्तैयेन्–उस कार्य पर प्रवृत्त पापी मेरे; मुटित्त मुटिवाल्–कृत कार्य से; अन्तो कॅटुत्ततु–हाय! उस काम ने मुझे नष्ट कर दिया; ऍन्–ऐसा; उन्नि उन्नि–सोच-सोचकर; अऴियात उळ्ळम्–अचंचल मन के; अऴिया–अधीर होते। ९६०

तब उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि तुम आ गये। इसमें तुम्हारा कोई अपराध नहीं है। हरिण के प्रति इच्छा से आकुल होकर हठीली उसने जो मुझसे कहा था, वह भी बुरी बात नहीं थी। तुमने तो पहले ही निश्चित रूप से जाना था कि वह मायामृग है! तुमने मुझे रोका भी। पर पापी मैंने उसको अनसुनी करके यह काम किया। उस मेरे कृत्य ने अब सारा काम नष्ट कर दिया है। श्रीराम ये बातें बार-बार सोचने लगे। उनका अचंचल मन भी अधीर हो गया। तब श्रीराम चिन्ताकुल होकर; । ९६०

पाणित्तु निन्ऱु पयनाव दॆन्नै पयिल्पूवै यन्न कुयिलैक्
काणिऱ् कलन्द तुयर्दीरु मन्ऱि ययलिल्लै यॆन्ऱु कडुहिच

चेणुऱ् उऱहन्ऱ नॅऱियूडु शॅन्ऱ शिलैवाळि यन्न विशैपोय्
आणिप् पशुम्बॊ नन्नैया ळिरुन्द वविर्शोलै वल्लै यणुहा 961

पाणितुतु निन्ऱ–विलम्ब करके खड़े रहने से; पयन् आवतु ऍन्नै–फल क्या होगा; पूवै अन्न पयिल्–सारिका-सी मधुरभाषिणी; कुयिलै–कोकिला (सीता) को; काणिल्–वहाँ देखेंगे तो; कलन्त तुयर् तीरुम्–हमें हुआ यह दुःख दूर होगा; अन्रि–नहीं तो; अयल् इल्लै–कोई दूसरा (उपाय) नहीं है; ऍन्ऱु–कहकर; कटुकि–जल्दी; चेण् उऱु अकन्ऱ–लम्बी दूर तक बढ़ते चलनेवाले; नॅऱि ऊटु–मार्ग में; चॅन्ऱ चिलै वाळि अन्न–भेजे हुए अपने शर के समान; विचै पोय्–वेग के साथ जाकर; आणि पचुम् पॊन्–खरे स्वर्ण; अन्नैयाळ्–सदृश देवी; इरुन्त–जहाँ रहीं, उस; अविर् चोलै–विद्यमान आश्रम को; वल्लै अणुका–शीघ्र पहुँचकर। ९६१

'इधर विलम्ब करने से क्या लाभ होगा ? हम वहाँ जाकर सारिका-सम मधुरभाषिणी कोकिला-सी सीताजी को देख लेंगे तो हम पर आयी यह विपदा टलेगी। उसके सिवा कोई दूसरा मार्ग नहीं है।' —यह कहकर श्रीराम वेग के साथ आगे बढ़े। मार्ग लम्बा था, बढ़ता हुआ जाता था। वे सत्वर अपने ही प्रेरित शर के समान अतिवेग से गये और आश्रम मे आये, जहाँ चोखे स्वर्णवर्ण-सम सीताजी रही थीं। ९६१

❀ ओडि वन्दनन् शालैयिन् शोलैयि नुदवुम्
तोडि वरन्दपूञ् जुरिहुळ लाडनैक् काणान्
कूडु तन्नुडै यदुपिरिन् दारुयिर् कुऱिया
नेडि वन्ददु कण्डिल दामॅन्न निन्ऱान् 962

ओटि वन्तनन्–जो भागते आये, वे; चालैयिन्–पर्णशाला में; चोलैयिन्–आश्रम के उद्यान से; उतवुम्–दत्त; तोटु इवर्न्त–दल-संकुल; पूम्–पुष्पालंकृत; चुरि कुळलाळ् तन्नै–घुँघराले केश की सीता को; काणान्–न देखकर; तन्नुटैयतु कूटु पिरिन्तु–अपना शरीर छोड़ जाकर; कुऱिया–लौट आने पर; आर् उयिर्–श्रेष्ठ जीव; अतु कण्टिलतु आम् ऍन्न–उसको नहीं देखता हो जैसे; निन्ऱान्–ठिठके खड़े रहे। ९६२

वे सीताजी को देखने की आशा से ही आये। उनकी कल्पना थी कि उस आश्रम के बाग के फूलों से अपने घुँघराले केश को सजाकर सीताजी उनको मिल जायँगी। पर सुकेशिनी वहाँ नहीं दिखी। कोई जीव अपने शरीर को छोड़कर जाय और फिर लौट जाकर उसको वहाँ न पाए तो उसकी स्थिति कैसी होगी ? (श्रीराम प्राण से और सीताजी शरीर से उपमित हैं।) श्रीराम उसी स्थिति में ठिठके खड़े रहे, क्योंकि सीताजी पतिप्राणा थी। ९६२

कैत्त शिन्दैयन् कनङ्गुळै यणङ्गिनैक् काणान्
उय्त्तु वाळ्दऱ्कु वेऱॊरु पॊरुळिल नुदव

वैत्त मानिदि मण्णोंडु मरैत्तन्न वाङ्गिप्
पोय्त्तु ळोर्हौळत् तिहैत्तु निन्ऱानैयुम् पोन्ऱान् 963

कन्ङ्कुळै–भारी कुण्डलधारिणी; अणङ्किनै–देवी भगवती को; काणात्–न देखकर; कैत्त चिन्तैयन्–खीज-भरे मन के होकर; उतव–सहायतार्थ; मण्णोटु मरैत्तन्न वैत्त–धरती में छिपाकर रखा हुआ; मा निति–बड़ा (गुप्त) धन; पोय्त्तु उळोर् वाङ्कि–वंचक चोरों ने उठाकर; कोळ्–ले लिये हों और; तिकैत्तु–भ्रमित होकर; निन्ऱानैयुम्–जो खड़ा रहा; पोन्ऱान्–उसके समान हो गये। ९६३

जब श्रीराम ने सीताजी को वहाँ नहीं देखा, तो वे बहुत खिन्न हो गये। मौके पर काम आयगा, इस विचार से किसी ने धरती के अन्दर धन गाड़ रखा था। पर उस धन को वंचक चोर उठा ले गये, तो उस मनुष्य की दशा क्या होगी? श्रीराम उसके समान तरसते रह गये। ९६३

मण्शु ळन्ऱदु माल्वरै शुळन्ऱदु मदियोर्
ऍण्शु ळन्ऱदु शुळन्ऱदु वॅरिहड लेळुम्
विण्शु ळन्ऱदु वेदमुज् जुळन्ऱदु विरिज्जन्
कण्शु ळन्ऱदु शुळन्ऱदु कदिरोंडु मदियुम् 964

मण् चुळन्ऱतु–धरती घूमी; माल् वरै चुळन्ऱतु–बड़े पर्वत घूमे; मतियोर् ऍण् चुळन्ऱतु–ज्ञानियों का विचार चक्रित हुआ; अ ऍरि कटल् एळुम्–तरंगाकुल सातों समुद्र; चळन्ऱतु–घूमे; विण् चुळन्ऱतु–आकाश घूमा; वेतमुम् चुळन्ऱतु–वेद भी चलित हुए; विरिञ्चन्–विरंचि की; कण्–आठों आँखें; चुळन्ऱत–चक्रित हुईं; कतिर् ओटु मतियुम्–सूर्य के साथ चन्द्र भी; चुळन्ऱतु–घूमे। ९६४

जब विश्वात्मा का मन खिन्न हो गया, तो विश्व का क्या हाल हो? सब के सब विचलित हो गये। धरती घूमी; बड़े पर्वत घूम गये। ज्ञानियों के विचार चलित हो गये। सातों तरंगाकुल समुद्र घूमे (आलोडित हुए)। आकाश, वेद —सब विचलित हो गये। विरंचि की आठों आँखें घूमने लगीं। सूर्य और चन्द्र भी चक्रित हुए। ९६४

अऱत्तैच् चीऱुङ्गॊ लरुळैयै चीऱुङ्गॊ लमरर्
तिऱत्तैच् चीऱुङ्गॊन् मुनिवरैच् चीऱुङ्गॊ ऱीयोर्
मऱत्तैच् चीऱुङ्गॊ लॆन्गॊलो मुडिवॆन्ऱु मऱैयिन्
निऱत्तैच् चीऱुङ्गॊ नॆडुन्दहै योन्न नडुङ्ग 965

नॆटुम् तकैयोन्–अत्युन्नत श्रेष्ठ प्रभु; अऱत्तै चीऱुम् कोल्–धर्म पर कोप करेंगे; अरुळैये चीऱुम् कोल्–करुणा पर ही खीझ उठेंगे; अमरर् तिऱत्तै–देवों के पराक्रम पर; चीऱुम् कोल्–उबल पड़ेंगे; मुनिवरै चीऱुम् कोल्–मुनिगण से गुस्सा करेंगे; तीयोर् मऱत्तैये–खलों की वीरता को; चीऱुम् कोल्–ललकारेंगे; मऱैयिन् निऱत्तैयो–वेदों के प्रकारों से; चीऱुम् कोल्–क्रोध करेंगे; ऍन्न–सोचकर; ऍन् कोल् ओ मुटिवु–क्या ही होगा फल; ऍन्ऩु–सोचकर डरते हुए; नटुङ्क–डरते। ९६५

यह स्थिति देखकर सबके मन में अपार भय हो गया। ये सर्वोन्नत श्रेष्ठ श्रीराम अब किस पर अपना कोप उतारेंगे ? धर्म पर, दया ही पर, या देवों के पराक्रम पर ? तपस्वी मुनियों पर उबल पड़ेंगे या खलों की वीरता को ललकारेंगे ? या वेदों के प्रकारों से ही अपनी खीझ दिखाने वाले हैं ? इनके क्रोध का नतीजा क्या होगा ? इस तरह डरकर, । ९६५

नील मेऩियन् ऩॅडियवऩ् मऩनिलै तिरिय
मूल कारणत् तवऩॊडु मुलहॅला मुऱ्ऱुम्
काल मामॆनक् कडॆयिडु कणिक्करुम् बॊरुळ्हळ्
मेल कीऴुऱ कीऴऩ मेलुऱुम् वेलै 966

नील मेऩि–नीले रंग के; अ नॅटियवऩ्–उन पुरुषोत्तम का; मऩ निलै तिरिय–मन की स्थिति बदल गयी, तब; मूल कारणत्तु अवऩ् ऑटु–(सृष्टि के) मूल कारण ब्रह्माजी के साथ; उलकॅलाम्–सभी विश्वों के; मुऱ्ऱुम् कालम् आम् ॲऩ–समाप्त हो जाने का काल आ गया-सा; कटै इट्टु कणिक्क अरुम्–इतना है ऐसा जिनकी गणना नहीं हो सकती; पॊरुळ्कळ्–वे सभी पदार्थ; मेल कीऴ् उऱ–ऊपर के नीचे हुए; कीऴऩ मेल् उऱुम्–नीचे के ऊपर हुए; वेलै–उस समय । ९६६

नीले वर्ण के पुरुषोत्तम श्रीराम का मन क्रोध से विकार पा गया था। तब ब्रह्माजी से लेकर सारे विश्व के नाश हो जाने का प्रलयकाल आ गया हो, ऐसा विश्व के असंख्य पदार्थ अस्त-व्यस्त हो गये। ऊपर के पदार्थ नीचे आ गये और नीचे के ऊपर चले गये। तब । ९६६

तेरि ऩाऴियुम् दॆरिन्दऩम् दीण्डुद लञ्जिप्
पारि ऩोडुङ्गॊण् डहऩ्ऱदुम् बार्त्तऩम् बयऩिऩ्
ऱोरुम् दऩ्मैयी दॆऩ्ऩॆऩ्ब दुरऩिला दवर्पोल्
दूरम् बोवदऩ् मुऩ् ऱॊडर्दुमॆऩ् ऱिळैयवऩ् शॊऩ्ऩाऩ् 967

इळैयवऩ्–अनुज ने; तेरिऩ् आऴियुम्–रथ का चक्र(-चिह्न) तॆरिन्तऩम्–देखते हैं; तीण्टुतल् अञ्चि–(देवी का शरीर) स्पर्श करने से डरकर; पारिऩ् ऒटु–भूमि (के अंश) के साथ; कॊण्टु अकऩ्ऱतुम्–ले जाना भी; पार्त्तोम्–समझा; उरऩ् इलातवर् पोल्–निर्बलों के समान; पयऩ् इऩ्ऱु–विना किसी लाभ के; ओरुम् तऩ्मै ईतु–सोचता रहना, यह; ॲऩ् ॲऩ्पतु–क्या कहा जाय; तूरम् पोवतऩ् मुऩ्–बहुत दूर जाने से पहले; तॊटर्तुम्–अनुगमन करेंगे; ॲऩ्ऱु–ऐसा; चॊऩ्ऩाऩ्–बोला । ९६७

अनुज लक्ष्मण ने श्रीराम को समझाया कि भाई ! इधर रथ के पहियों के चिह्न देखते है। यह भी देखते हैं कि शत्रु, देवी के शरीर का स्पर्श करने से डरकर भूमि के अंश के साथ लेके गया है। फिर हम निर्बलों के समान यहाँ खड़े रहकर सोचते रहें, यह क्या है ? उसके बहुत दूर जाने के पहले ही हम उसका अनुगमन करते हुए चलें। ९६७

आम देयिनि यावदेन् ऱमलनु मनैयत्
ताम वार्हणैप् पुट्टिलु मुदलिय ताङ्गि
वाम माल्वरै मरनिवै मडिदर वयवर्
बूमि मेलवन् ऱेर्शॆन्ऱ नॆडुनॆरिप् पोनार् 968

अमलनुम्–पवित्र प्रभु; आम्–हाँ; अते इनि आवतु–वही अब करना है; ॲन्ऱु–ऐसा सोचकर; अमैय–उसके अनुसार; वयवर् ताम्–विजयशील (दोनों); वार् कणै पुट्टिलुम्–शरों के तूणीर; मुतलिय ताङ्कि–आदि धारण कर; वाम माल् वरै–मनोरम और बड़े-बड़े पर्वतों और; मरन् इवै–पेड़ों आदि को; मटि तर–तोड़ते हुए; पूमि मेल्–भूमि पर; अवन् तेर् चॆन्ऱ–उसका रथ जहाँ गया था; नॆटु नॆरि पोनार्–लम्बे मार्ग में गये। ९६८

निरंजन भगवान ने स्वीकारा कि हाँ ! वही अव करना है। फिर विजयशील दोनों उसी सुझाव के अनुसार तूणीर आदि लिये हुए उस लम्बे मार्ग पर चले, जिसमें रथ उन्नत पर्वतों और तरुओं को तोड़ गिराता हुआ चला था। ९६८

मण्णिन् मेलवन् तेर्शॆन्ऱ शुवडॆला मायन्दु
विण्णि नोङ्गिय दोरुनिलै मॆय्युरु वॆन्द
पुण्णि नूडुरु वेलॆन्न मनमिहप् पुळुङ्गि
ॲण्णि नामिनिच् चॆय्वदॆन् निळवले यॆन्ऱान् 969

अवन् तेर्–उसका रथ; मण्णिन् मेल् चॆन्ऱ–धरती पर जो गया था; चुवटु ॲलाम् मायन्तु–वह चिह्न सब लुप्त हो गया; विण्णिन् ओङ्कियतु–अन्तरिक्ष में उठने का; ओरु निलै–एक भान; मॆय् उऱ–सत्य लगा तो; वॆन्त पुण्णिन् ऊटु–आग से हुए व्रण में; उऱु वेल् ॲन्न–भाला घुसा हो, ऐसा; मनम् मिक पुळुङ्कि–मन में अत्यधिक क्लेश लेकर; इळवले–लघु भाई; नाम् इनि ॲण्णि चॆय्वतु–हम सोचकर करें; ॲन्–क्या; ॲन्ऱान्–पूछा। ९६९

जाते-जाते उन्होंने देखा कि रथचक्र के चिह्न नहीं रह गये हैं। और ऐसा लग रहा था कि रथ ऊपर अन्तरिक्ष में उठा था। तब श्रीराम का मन ऐसा दुःख पाने लगा, मानो अग्निजनित व्रण में भाला घुस गया हो। वहुत क्लेश पाकर उन्होंने अपने भाई से पूछा कि अनुज ! अब सोचकर हम क्या काम करें ? । ९६९

तॆऱ्कु नोक्किय दॆनुम्बॊरु डॆरिन्दत् तिण्डेर्
मऱ्कु नोक्किय तिरळ्पुयत् तण्णले वानुम्
विऱ्कु नोक्किय पहळियि नॆडिदन्ऱु विम्मि
निऱ्कु नोक्किलॆन् पयनॆन्न विळैयव नेर्न्दान् 970

इळैयवन्–अनुज ने; मऱ्कु नोक्किय–मल्लाभिलाषी; तिरळ् पुयत्तु–पुष्ट कन्धों के; अण्णले–प्रभु; अ तिण् तेर्–वह वलवान रथ; तॆऱ्कु नोक्कियतु–दक्षिण की

तरफ़ गया है; अँतुम् पॉरुळ्-यह विषय; तॅरिन्ततु-जानने में आया है; वानुम्-अन्तरिक्ष भी; विऱ्कु नोक्किय-आपके धनुष से प्रेरित; पकऴियिऩ् नॅटितु अऩ्ऱु-शर के जाने की दूरी से अधिक नही है; विम्मि निऱ्कु नोक्किल्-तरस के साथ खड़े रहकर देखते रहने से; अॅऩ् पयऩ्-क्या लाभ है; अॅऩ-ऐसा; नेर्न्ताऩ्-उत्तर दिया। ९७०

लक्ष्मण ने उत्तर में कहा कि मल्लाभिलाषी कन्धों से युक्त महानुभाव ! हमने यह जान लिया कि वह भारी रथ दक्षिण की ओर गया है। आकाश में ही गया हो तो क्या? आपका शर न पहुँचे, उतनी दूर का तो नही है आकाश ! तरसते हुए निष्क्रिय रह जाने से क्या लाभ होगा? । ९७०

आहु मऩ्नदे करुममॅऩ् ऱत्तिशै नोक्कि
एहि योशनै यिरण्डुशॅऩ् ऱारिडै यॅदिर्न्दार्
माह माल्वरै काल्पॉर मरिन्ददु मानप्
पाह वीणैयिऩ् कॉडियॊऩ्ऱु किडन्ददु पार्मेल् 971

अऩ्ऩते करुमम् आकुम्-वही करना होगा; अॅऩ्ऱु-यह सोचकर; अ तिचै नोक्कि एकि-उस दक्षिण दिशा में जाकर; योचऩै इरण्टु चॅऩ्ऱार्-दो योजन चले; इटै-मार्ग में; माक माल् वरै-गगनोन्नत बड़ा पर्वत; काल् पॉर-प्रभंजन से प्रताड़ित हो; मरिन्ततु माऩ-नीचे गिर गया हो जैसे; पाक वीणैयिऩ्-टूटी वीणा की; कॉटि ऑऩ्ऱु-एक ध्वजा; पार् मेल् किटन्ततु-भूमि पर पड़ी रही; अॅतिर्न्तार्-सामने देखा। ९७१

श्रीराम ने लक्ष्मण का आशय समझा। कहा कि चलो वही करना है। वे दोनों दक्षिण में दो योजन दूर चले। मार्ग मे उन्हें वीणांकित एक ध्वजा का अंश भूमि पर पड़ा दिखाई दिया। वह ऐसा लगा, मानो एक पर्वत ही आँधी के सामने टूटकर गिरा हो। ९७१

कण्डु कण्डह रोडुमक् कारिहै पॉरुट्टाल्
अण्ड रादियर् कारमर् विळैत्तदॅन् ऱयिर्त्ताऩ्
तुण्ड वाळिऩिऱ् चुडर्क्कॉडि तुणिन्द दॅऩ्ऱुणराप्
पुण्ड रिहक्कण् णमलनुक् किळैयवन् पुहऩ्ऱाऩ् 972

कण्टु-देखकर; अ कारिकै पॉरुट्टाल्-उन देवी (को बचाने) के हेतु; कण्टकरोटु-उन खलों के साथ; अण्टर् आतियर्क्कु-देवों आदि लोगों को; आर् अमर् विळैन्ततु-कठोर युद्ध करना पड़ गया है; अॅऩ्ऱु-ऐसा; अयिर्त्ताऩ्-(श्रीराम ने) संशय किया; इळैयवऩ्-अनुज ने; तुण्ट वाळिऩिल्-(जटायु की) चोंच रूपी तलवार से; चुटर् कॉटि-उज्ज्वल ध्वजा; तुणिन्ततु-कटी; अॅऩ्ऱु उणरा-ऐसा ताड़कर; पुण्टरिक कण् अमलनुक्कु-पुण्डरीकाक्ष निर्मल प्रभु को; पुकऩ्ऱाऩ्-समझाया। ९७२

वह देखकर श्रीराम को संशय हुआ कि देवों ने सीताजी को बचाने के लिए बड़ा युद्ध किया होगा। पर लक्ष्मण को सूझा कि जटायु की

चोंच से ही शत्रु की ध्वजा खण्डित हुई है। तब वे पुण्डरीकाक्ष निरंजन श्रीराम से बोले। ९७२

नोक्कि ऩालैय नॉय्दिव णॅय्दिय नुन्दै
मूक्कि ऩालिडु मुऱिन्दमै मुडिन्दाऩ् मॉय्म्बिऩ्
ताक्कि ऩाऩडु वडुत्तदु तॅरिहिलऩ् दमियऩ्
याक्कै तेम्बिडु मॅण्णरुम् बरुवङ्ग ळिऱन्दाऩ् 973

ऐय–महिमावान; नोक्कितालॅ–(विचार कर) देखें तो; इवण् नॉय्तु अॅय्तिय–यहाँ शीघ्र जो आये, वे; नुन्तै–आपके पिता (तुल्य जटायु); मूक्कितालॅ–(की) चोंच से; इतु मुऱिन्तमै–इसका टूटना; मुटिन्ततु–निश्चित है; मॉय्म्पिऩ्–पूरा बल लगाकर; ताक्कितान्–(जटायु) भिड़े हैं; नटु अटुत्ततु–मध्य में क्या हुआ, यह; तॅरिकिलम्–नहीं जानते; अॅण् अरुम्–असंख्यक; परुवङ्कळ्–वर्षों का काल; इऱन्तान्–जिनका बीता है, उन; तमियन्–एकाकी का; याक्कै–शरीर; तेम्पिटुम्–थका पड़ा होगा। ९७३

महानुभाव! खूब ध्यान लगाकर सोचें तो मालूम होगा कि यहाँ जटायु तुरत आ गये थे और आपके पिता (तुल्य) उनकी चोंच से यह ध्वजा टूटी थी। यह निश्चित है। जटायु अपने पूरे बल के साथ उससे भिड़े होंगे। बीच में क्या हुआ, हम यह जान नहीं पाते। हाँ! जटायु वयोवृद्ध है। एकाकी लड़े थे। इसलिए उनका शरीर थक गया होगा। ९७३

नऩ्ऱु शालवु नडुक्करु मिडुक्किऩा मुऩ्ऩम्
शॅऩ्ऱु कूडलाम् बॉऴुदॅलान् दडुप्पदु तिडऩाल्
वॅऩ्ऱु मीट्किनु मीट्कुमाल् वेऱुऱ वॅण्णि
निऩ्ऱु ताऴ्त्तॉरु पयऩिलै यॅऩ्ऱलु नॅडियोऩ् 974

चालवुम् नऩ्ऱु–बहुत अच्छा; नाम् नटुक्करुम् मिटुक्किन्–हम अप्रतिहत वेग के साथ; मुन्नम् चॅन्ऱु–आगे जाकर; कूटलाम्–उनसे मिलेंगे; पॉऴुतु अॅलाम्–आज सारा दिन; तटुप्पतु–जटायु का शत्रु को रोके रखना; तिटन्–निश्चय है; वॅन्ऱु–जीतकर; मीट्कितुम् मीट्कुम्–लौटायें भी, यह सम्भव है; वेऱु उऱ अॅण्णि–अन्य बातें सोचते हुए; निन्ऱु ताऴ्त्तु–रहकर विलम्ब करने से; ऑरु पयन् इलै–कोई लाभ नहीं है; अॅन्ऱलुम्–(लक्ष्मण के) कहने पर; नॅटियोन्–पुरुषोत्तम। ९७४

वह भी बहुत अच्छा हुआ। हम अप्रतिहत वेग के साथ आगे बढ़ें। हम जटायु को मिल सकेंगे। यह सम्भव है कि जटायु आज दिन भर शत्रु को रोक रखेंगे। शायद वे शत्रु को जीतकर देवी को बचा भी सकते हैं। अन्य बातें सोचते हुए यहाँ विलम्ब करने से कोई लाभ न होने का। —लक्ष्मण ने कहा। तब पुरुषोत्तम—। ९७४

तॊडर्व देनल् मामॆनप् पडिमिशैच् चुऱ्ऱिप्
पडरुङ् गालॆनक् करङ्गॆनच् चॆल्बवर् पारिन्
मिडल्हॊळ् वॆञ्जिलै विण्णिडु विन्मुऱिन् दॆन्नक्
कडलिन् माडुयर् तिरैयॆन्नक् किडन्ददु कण्डार् 975

तॊटर्वतु ए–पीछा करते जाना ही; नलम् आम् ऎन्न–भला है, कहने पर; पटि मिचै–भूमि पर; चुऱ्ऱि पटरुम् काल्–घूमती हुई जानेवाली हवा; ऎन्न–के समान; करङ्कु ऎन्न–वातचक्र के समान; चॆल्पवर्–जो गये; विण् इटु विल्–आकाश का इन्द्रधनुष; मुऱिन्तु अन्न–टूटा पड़ा हो जैसा; कटल् माटु–समुद्र में; उयर् तिरै–उठनेवाली लहर; ऎन्न–के समान; तरैयिल्–पृथ्वी पर; मिटल् कॊळ् वॆम् चिलै–बड़ा भारी भयंकर धनु; किटन्ततु–पड़ा रहा; कण्टार्–देखा। ९७५

बोले— हाँ ! आगे अनुगमन में जाना ही भला है। दोनों वायुवेग और (पतंग ?) वातचक्र के वेग के साथ आगे गये। तब उन्होंने एक भारी भयंकर धनुष को पड़ा देखा, जो टूटे इन्द्रधनुष के समान या समुद्र में उठती ऊँची लहर के समान था। ९७५

शिलैहि डन्ददा लिलक्कुव तेवर्नीर् कडैन्द
मलैहि डन्दन्न वलियदु वडिवित्तान् मदियॆण्
कलैहि डन्दन काट्चिय दिदुकडित् तॊडित्तान्
निलैहि डन्दवा नोक्कॆन नोक्किन निन्ऱान् 976

इलक्कुव–लक्ष्मण; किटन्ततु चिलै–जो पड़ा रहता है, यह धनुष; तेवर् नीर् कटैन्त मलै–देवों ने जिससे समुद्र-मन्थन किया, उस पर्वत; ऎन्न–के समान; वलियतु–कठोर है; वटिवित्ताल्–आकार में; मति ऎण् कलै–चन्द्र की आठवें दिन की कला; किटन्तु अन्न–पड़ी रही जैसे; काट्चियतु–दृश्यमान है; इतु कटितु ऒटित्तान्–इसको जिसने शीघ्र तोड़ा है; निलै किटन्तवा–उसकी शक्ति का प्रकार; नोक्कु ऎन्न–अनुमान करो, कहकर; नोक्किनन्–धनु को देखते हुए; निन्ऱान्–(श्रीराम) खड़े रहे। ९७६

उसको देखकर श्रीराम ने कहा कि यह देखो। कितना भारी और सुदृढ़ है ! देवों ने समुद्र-मन्थन के लिए जिस पर्वत का उपयोग किया था, उसी के समान यह बलवान है। इसका आकार आठवें दिन के चन्द्र के समान है। इसको जिसने तोड़ा होगा, उसका शौर्य कितना होगा ? अनुमान कर लो। यह कहकर श्रीराम उसको विस्मय के साथ देखते खड़े रहे। ९७६

निन्ऱु पिन्नरु नॆडुनॆरि कडन्दुर निमिरच्
चॆन्ऱु नोक्किनर् तिरिशिहैक् कॊडुनॆडुञ् जूलम्
ऒन्ऱुम् पल्हणै मऴैयुरै पुट्टिलो रिरण्डुम्
कुन्ऱु पोलवण् किडन्दहण् डदिशयङ् गॊण्डार् 977

निन्ऱु–वहाँ स्थित होकर; पिन्नरुम्–(चले) फिर भी; नॆट्टु नॆऱि कटन्तु–लम्बा मार्ग तय करके; उऱ निमिर चॆन्ऱु–बिल्कुल सीधे जाकर; तिरि चिकै कॊट्टु–तीन सिरों का; नॆट्टुम् चूलम् ऑन्ऱुम्–एक लम्बा शूल और; पल् कणै मळै उऱै–अनेक शरों के समूह जिनमें थे; पुट्टिल् ओर् इरण्टुम्–दो तूणीरों को; कुन्ऱु पोल्–पर्वतों के समान; अवण् किटन्त–वहाँ पड़ा हुआ; नोक्कित्तर्–देखा; कण्टु–देखकर; अतिचयम् कॊण्टार्–विस्मित हुए। ९७७

फिर वहाँ से वे चले। सीधे मार्ग में बहुत दूर चले। वहाँ एक लम्बा और भयंकर त्रिशूल और दो बहुत अस्त्रों से भरे तूणीर पड़े मिले। पर्वतों के समान उनको देखकर उन्हें अधिक विस्मय हुआ। ९७७

मऱित्तुज् जॆन्ऱनर् वानिडै वयङ्गुऱ वळङ्गि
ऑऱिक्कुज् जोदिहळ् यावैयुन् दॊक्कन वॆन्नलाय्
नॆऱिक्कॊळ् कानह मऱैदर निरुदर्हो नॆञ्जिल्
पऱित्तु वीशिय कवशमुङ् गिडन्ददु पार्त्तार् 978

मऱित्तुम् चॆन्ऱतर्–आगे और भी गये; वान् इटै–आकाश में; वयङ्कु उऱ–शोभा प्रकट करते हुए; वळङ्कि–देकर; ऑऱिक्कुम्–उससे प्रकाश छिटकाते हुए; चोतिकळ् यावैयुम्–सभी ज्योतिपुंजों का; तॊक्कन ॲन्तल् आय्–समूह बना हो, ऐसा; निरुतर् कोन् नॆञ्चिल्–राक्षसाधिप के वक्ष से; पऱित्तु वीचिय–छीनकर जो फेंका गया था; कवचमुम्–उस कवच को; नॆऱि कॊळ् कानकम्–मार्ग के जंगल को; मऱैतर–छिपाते हुए; किटन्ततु–पड़ा हुआ; पार्त्तार्–देखा। ९७८

फिर वे आगे चले। वहाँ रावण का कवच पड़ा मिला, जिसको जटायु ने राक्षसाधिपति रावण के वक्ष से छीनकर फेंका था। वह चन्द्र-सूर्य आदि सभी ज्योतिपुंजों के समूह के समान पड़ा था, जो आकाश को भी उज्ज्वलता प्रदान कर स्वयं प्रकाशमान रहते है। वह मार्ग के सामने के वन को छिपाये हुए पड़ा था। ९७८

कान्गि डन्ददु मऱैदरक् काल्वयक् कलिमात्
तान्गि डन्दुळिच् चारदि किडन्दुळिच् चार्न्दार्
ऊन्गि डन्दोळि रुदिरमुङ् गिडन्दुळ वुलहिन्
वान्गि डन्ददु पोल्वदु किडन्दुळि वन्दार् 979

काल् वय कलि मा–पैरों में बल और तेज़ी रखनेवाले अश्व; कान् मऱै तर–जंगल को छिपाते हुए; किटन्ततु–(मरे) पड़े रहे; किटन्तुळि–जहाँ पड़े रहे, उस स्थान को; चारति किटन्तुळि–और सारथी जहाँ (मरा) पड़ा रहा, वह स्थान; चार्न्तार्–गये; उलकिन्–इस पृथ्वी पर; वान् किटन्ततु पोल्–व्योम पड़ा रहा हो, ऐसा; ऊन् किटन्तु–मांसखण्ड बिखरे रहे; ऑळिर् उतिरमुम् किटन्तुळ–चमकीला रक्त भी छितरा रहा; किटन्तुळि–जहाँ वह पड़ा रहा, वहाँ; वन्तार्–वे आये। ९७९

वे फिर उस स्थान पर आये, जहाँ रावण के अश्वों की लाशें पड़ी

थीं। रावण के अश्व ऐसे थे, जिनके पैरों में अपार बल था और अति तीव्र गति भी। आगे सारथी जहाँ मरा पड़ा था, वहाँ आये। फिर उस स्थान पर आये जहाँ रक्त और मासखण्ड छितरे पड़े थे, जिसके कारण अरण्य भी आकाश-सा दिख रहा था। ९७९

कण्ड लङ्गुदङ् गैत्तलम् विदिर्त्ततर् कविऩार्
विण्ड लन्दुऱन् दिऱुदियिऩ् विरिहदिर्प् परुदि
मण्ड लम्बल मण्मिशैक् किडन्दॆऩ मणियिऩ्
कुण्ड लम्बल कुलमणिप् पूण्गळिन् कुप्पै 980

इऱुतियिऩ्–कल्पान्त में; विरि कतिर् पल–व्यापक किरणों के अनेक; परुति मण्टलम्–सूर्यमण्डल; कविऩ् आर्–सौंदर्य भरे; विण् तलम् तुऱन्तु–व्योम को छोड़कर; मण् इटै किटन्तु अॆऩ–भूमि पर गिरे पड़े हों, ऐसा; कुण्टलम् पल–अनेक कुण्डलों और; कुल मणि पूण्कळिऩ् कुप्पै–श्रेष्ठ रत्नाभरणों के समूहों को; कण्टु–देखकर; अलङ्कु तम् कै तलम्–(उन्होंने) अपने आकर्षक हाथों को; वितिर्त्ततर्–आश्चर्य से झटकाया। ९८०

एक स्थान पर अनेक कुण्डल पड़े मिले। वे कल्पान्तकाल के सूर्यमण्डलों के समान लगे, जो आकाश छोड़कर भूमि पर गिरे पड़े हों। अनेक श्रेष्ठ रत्नाभरणों के ढेर भी दिखाई दिये। इन सबको देखकर उन दोनों ने अपने मनोहर हाथों को झटकारा (आश्चर्य के प्रदर्शन में)। ९८०

तोळ णिक्कुलम् बलवुळ कुण्डलत् तॊहुदि
वाळि मैप्पन पलवुळ मणिमुडि पलवाल्
नाळ नैत्तैयुङ् गडन्दनन् ऱमियनन् दादै
आळि यॊप्पवर् पलरुळर् पॊरुदन इळैयोय् 981

इळैयोय्–लघु भाई; तोळ् अणि कुलम् पल उळ–कन्धों के आभरण-समूह अनेक है; वाळ् इमैप्पऩ–प्रकाशमय; कुण्टल तॊकुति–कुण्डलवृन्द; पल उळ–अनेक हैं; मणि मुटि पल आल्–रत्नकिरीट अनेक हैं, इसलिए; नाळ् अत्तैत्तैयुम् कटन्तनऩ्–अनेक आयु के दिन जिनके बीते हैं, वे; नम् तातै तमियऩ्–हमारे पिता एक रहे; पॊरुततर्–और उनसे लड़नेवाले; आळि मॊय्म्पित्तर्–शरभ-बली; पलर् उळर्–अनेक रहे हैं। ९८१

श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भ्राता से कहा कि भाई! भुजाओं के आभरणों के अनेक समूह दिखाई देते हैं। उज्ज्वल अनेक कुण्डलवृन्द देखते हैं। रत्नक्रिरीट भी अनेक मिलते है। इसलिए ऐसा लगता है कि वयोवृद्ध हमारे पिता एकाकी थे और उनसे जो लड़े, वे शरभ-सदृश बलशाली अनेक रहे होंगे। ९८१

तिरुवि नायह नुरैशॆयच् चुमित्तिरैच् चिङ्गम्
तरुवि ऩीळिय तोळ्पल तलैपल वॆन्ऱाल्

पॊरुदु तादैयै यित्तनै नॆरिक्कॊडु पोनान्
ऒरुव नेयव निरावण नामॆन वुरैत्तान् 982

तिरुविन् नायकन्–लक्ष्मीपति के; उरै चॆय–वह कहने पर; चुमित्तिरै चिङ्कम्–सुमित्रा के पुत्र सिंह (सदृश लक्ष्मण); तरुविन् नीळिय–तरु के समान लम्बे; तोळ् पल–भुजाएँ अनेक हैं; तलै पल–सिर अनेक हैं; ऎन्ऱाल्–तो; तातैयै इत्तनै पॊरुतु–पिता के साथ इतना टकराकर; नॆऱि कॊटु पोतान्–अपने मार्ग पर जो गया; ऒरुवते–वह वही एक है; अवन् इरावणन् आम्–वह रावण ही होगा; ऎन–ऐसा; उरैत्तान्–कहा। ६८२

जब लक्ष्मीपति ने यह कहा, तब सुमित्रा-सुत सिंह-सदृश लक्ष्मण ने कहा कि प्रभु! पेड़ के समान लम्बी भुजाएँ अनेक दिखती हैं। सिर भी अनेक दिखाई देते हैं। तो हमारे पिता से जो लड़कर अपने मार्ग पर गया है, वह एक ही हो सकता है। वह रावण ही होगा। ९८२

❀ मडलु णाट्टिय तारिळै योन्शॊलै मदिया
मिडलु णाट्टङ्ग डीयुह नोक्कित्तन् विरैवान्
उडलु णाट्टिय कुरुदियम् बरवैयि नुम्बर्क्
कडलु णाट्टिय मलैयन्न तादैयैक् कण्डान् 983

मटल् उळ् नाट्टिय–पुष्पदलों को अन्दर रखकर गुँथी हुई; तार्–मालाधारी; इळैयोन्–अनुज लक्ष्मण के; चॊलै–शब्द को; मतिया–मानकर; मिटल् उळ्–सुदृढ़ मन; नाट्टङ्कळ्–और आँखों से; ती उक–आग उगलते हुए; नोक्कित्तन् विरैवान्–अन्वेषण करते हुए गये; उटल् उळ् नाट्टिय–शरीर को अन्दर रखते हुए; कुरुति परवैयिन्–रक्त के सागर में; कटल् उळ् नाट्टिय वरै ऎन–समुद्र में गाड़े पर्वत के समान; तातैयै–पिता को; कण्टान्–देखा। ६८३

पुष्पदलबद्ध मालाधारी लक्ष्मण का कथन श्रीराम को मान्य लगा। तब उनको अपार क्रोध हुआ। उनके मन में मानो आग भर गयी और आँखों ने आग उगली। वे अन्वेषण करते हुए आगे चले और एक स्थान पर रक्त-सागर-मध्य, क्षीरसागर-मध्य स्थित मेरुपर्वत के समान जटायु के शरीर को उन्होंने देखा। ९८३

❀ तुळिलि योङ्गुशॆन् दामरै नयनङ्गळ् शॊरियत्
तळिलि योङ्गिय वमलन्ऱन् ऱनियुयिर्त् तादै
वळिलि योन्ऱिरु मेनियिन् ऱळुनिऱ वण्णन्
वॆळिलि योङ्गलि लञ्जन मलैयॆन वीऴ्न्दान् 984

ओङ्कु चॆम् तामरै नयनङ्कळ्–उत्कृष्ट लाल कमल-सम नयनों से; तुळिलि चॊरिय तळिलि–आँसू की बूँदें ढलकाते हुए; ओङ्किय अमलन्–दुःख में बढ़े हुए निरंजन भगवान श्रीराम; तन् तनि उयिर् तातै–अपने प्राण-सम पिता; वळिलियोन्–और उदार जटायु के; तिरु मेनियिन्–श्रीशरीर पर; तऴल् निऱ वण्णन्–अग्निवर्ण (शिवजी) के;

वॆळ्ळि ओङ्कलिल्–चाँदी के कैलास पर्वत पर; अञ्चत्त मलै ॲत्त–अंजनगिरि के समान; वीळ्न्नान्–जा गिरे । ६८४

उनको देखकर श्रीराम की श्रेष्ठ कमल-सम आँखों से अश्रु के कण ढलक आये। दुःख से अभिभूत होकर अकलुष श्रीराम अपने प्राणप्रिय और उदारमन जटायु के श्रीशरीर पर ऐसे गिरे, जैसे अग्निवर्ण शिवजी के चाँदी के कैलास पर्वत पर कोई अंजन-पर्वत गिरा हो। ९८४

❀ उयिर्त्ति लन्नॊरु नाळिहै युणर्विलन् कॊल्लॆन्
ऱयिर्त्त तम्विपुक् कङ्गैयि लॆडुत्तन ऩरुविप्
पुयर्क लन्दनीर् तॆळित्तलुम् पुण्डरी हक्कण्
पॆयर्त्तुप् पयप्पय वयर्वुतीर्न् दिन्नैयन पेशुम् 985

ऒरु नाळिकै उयिर्त्तिलन्–एक घड़ी (उन्होंने) साँस नहीं छोड़ी; उणर्वु इलन् कॊल्–क्या मूर्च्छित हैं; ऎन्ऱु अयिर्त्त तम्पि–ऐसा सन्देह करके लघु भ्राता ने; पुक्कु अम् कैयिन् ऎटुत्तनन्–पास जाकर अपने हाथों में उठा लिया; पुयल् अरुवि कलन्त–मेघ और सरिता के मिश्रित; नीर् तॆळित्तलुम्–जल को छिड़कने पर; पुण्टरीक कण् पॆयर्त्तु–कमल-सम आँखों को खोलकर; पय पय–धीरे-धीरे; अयर्वु तीर्न्तु–स्वस्थ होकर; इन्नैयन पेचुम्–यों बोले (श्रीराम)। ६८५

एक घड़ी उन्होंने साँसें नही छोड़ीं। लक्ष्मण को शंका हो गयी कि क्या भाई मूर्च्छित हो गये है ? उन्होने पास जाकर श्रीराम को अपने सुन्दर हाथों में लेकर उठाया। वर्षाजल और सरिता का जल दोनों का मिश्रित जल लाकर उनके मुख पर छिड़का। तव श्रीराम ने पुण्डरीक-सम नेत्र को खोलकर धीरे से (निम्नोक्त) बातें कहीं। ९८५

❀ तन्दादैयरैत् तनयर् कॊलै नेर्न्दार्
मुन्दारे युळ्ळार् मुडिन्दान् मुन्नैयॊरुवन्
ऎन्दाये वॆऩ्काह नीयु मिऱन्दनैयो
अन्दो विनैये नरुङ्गूर्ऱ मानेने 986

तम् तातैयरै–अपने पिताओं की; कॊलै नेर्न्तार्–मृत्यु के कारण (जो) बने (वे); तनयर्–पुत्र; मुन्तु आरे उळ्ळार्–पहले कौन रहे हैं; मुत्तै मुटिन्तान् ऒरुवन्–पहले ही एक (दशरथ) चल बसे; ऎन्ताय् ए–हे मेरे पिता; ऎऩ्कु आक–मेरे कारण; नीयुम् इऱन्तनैयो–आप भी मर गये क्या; अन्तो–हाय; विनैयेन्–पापी मैं; अरुम् कूर्ऱम्–कठोर यम; आनेने–हो ही गया। ६८६

हाय ! क्या अपने ही पिताओं के घातक पुत्र पहले कभी कहीं हुए है ? पहले ही एक, चक्रवर्ती दशरथ, मृत्यु को प्राप्त हो गये। हे मेरे तात, जटायु जी ! मेरे निमित्त आप भी चल बसे ! हाय ! पापी मैं आपका मारक यम बन गया ! । ९८६

पिन्नुरुव दोरादे पेदुरुवेन् पॅण्बालाळ्
तन्नुरुव ड़ोर्प्पान् इन्नियुरुव दोरादे
उन्नुरवु नीतोर्त्ता योरुरवु मिल्लादेन्
अन्नुरुवान् वेण्डि यिडरुरुवे नॅन्दाये 987

अॅन्तायॆ–मेरे तात; तनि उरुवतु ओराते–एकाकी होने की चिन्ता न करके; पॅण् पालाळ् तन्–स्त्री जाति का; उरुवल् तीर्प्पान्–कष्ट दूर करने के लिए; उन् उरवु नी तीर्त्ताय्–अपना रिश्ते का कर्तव्य अदा किया; पिन् उरुवतु ओराते–आगे क्या होगा, यह न जानते हुए; पेतु उरुवेन्–संकटग्रस्त और; ओर् उरवुम् इल्लातेन्–अब मेरा कोई नातेदार नहीं रहा, ऐसा मैं; अॅन् उरुवान् वेण्टि–किस प्रयोजन की चाह करके; इटर् उरुवेन्–कष्ट सहूँ। ९८७

मेरे तात! आप अकेले रहे। उसका विचार न करके स्त्री जाति की एक को कष्ट में देखकर उसको बचाने के लिए आपने अपने रिश्ते का कर्तव्य अपनी जान से अदा किया है! आगे क्या होगा? —यह न जानते हुए मैं चिन्ताग्रस्त हूँ। अब मेरा कोई नातेदार नहीं रहे हैं! फिर किस प्रयोजन को चाहकर मैं कष्ट सहूँगा? । ९८७

माण्डेने यन्ड्रो मऱैयोर् कुऱैमुडिप्पान्
पूण्डेन् विरद मदना नुयिर्पोरुप्पेन्
नीण्डेन् मरम्बोल निन्ड्रोळिन्द पुन्ड्रोळिलेन्
वेण्डेनिम् मामायप् पुन्बिऱवि वेण्डेने 988

मऱैयोर्–वेदज्ञ ऋषियों का; कुऱै मुटिप्पान्–चिन्ता दूर करने का; विरतम् पूण्टेन्–व्रत धारण किया है; अतनाल् उयिर् पोरुप्पेन्–उसी कारण प्राण रख लूंगा; मरम् पोल नीण्टेन्–वृक्ष के समान ऊँचा वढ़कर; निन्ऱु ओऴिन्त–वृथा रहनेवाला; पुन् तोऴिलेन्–क्षुद्रकर्मी मैं; माण्टेने अन्ऱो–मृतक ही (सम) हूँ न; इ माय पुन् पिऱवि–यह माया का क्षुद्र जन्म; वेण्टेन् वेण्टेने–नहीं चाहता, नहीं ही चाहता। ९८८

मैने प्रतिज्ञा की है कि वेदज्ञ ऋषियों का कष्ट दूर करूँगा और उनकी चिन्ता मिटाऊँगा। उसी कारण मैं प्राणधारण करूँगा। पेड़ के समान लम्वा वना हूँ। पर निरर्थक क्षुद्रकर्मी हो गया हूँ। मृतक (-सा) हूँ न? यह मायाजन्य क्षुद्र जन्म नहीं चाहता। नहीं ही चाहता। ९८८

❀ अॅन्ड्रारम् बर्ड्रुण्ण वेन्ड्रोयैच् चान्ड्रोयैक्
कोन्ड्रानु निन्ड्रान् कोलैयुण्डु नोहिडन्दाय्
वन्ड्राट् चिलैयेन्दि वाळिक् कडलशुमन्दु
निन्ड्रेनु निन्ड्रे नॅडुमरम्बो निन्ड्रेने 989

अॅन् तारम् परऱु उण्ण–मेरी दारा दूसरे के कैद में ग्रस्त है; एन्ऱायै–(उसको वचाने का भार) लेनेवाले आपको; चान्ऱोयै–गुणपूर्ण को; कोन्ऱातुम्–जिसने मारा,

वह भी; निन्ऱान्–जीवित रहता है; नी कोलै उण्टु किटन्ताय्–आप मौत खाकर पड़े हैं; वल् ताळ् चिलै–सारयुक्त बाजुओं के धनुष का; एन्ति–धारण करके; वाळि कटल् चुमन्तु–शरों का सागर (अंबार) ढोते हुए; निन्ऱेनुम्–जो रहता, वह मैं भी; निन्ऱेन्–निरर्थक रहता हूँ; नॆट्टु मरम् पोल् निन्ऱेन्–लम्बे पेड़ के समान (बेकार) खड़ा हूँ। ६८६

मेरी गृहिणी किसी दूसरे की कैद में है। उसको मुक्त करने का भार आपने अपने ऊपर लिया। ऐसे श्रेष्ठ गुणपूर्ण आपको जिसने हत किया, वह अब भी जीवित रहता है! आप उसके द्वारा हत होकर पड़े हैं। मैं भी हूँ अपने सुदृढ़ और कठोर धनुष का और शरों के सागर-सम अंबार का धारण करके! हाय! लम्बे पेड़ के समान खड़ा हूँ! । ९८९

शॊल्लुडैया रॆन्बो लिनियुळरो तॊल्विनैयेन्
इल्लुडैयाळ् काण विरहुडैया यॆण्णिलाप्
पल्लुडैया युन्नैप् पडैयुडैयान् कॊन्ऱेह
विल्लुडैये निन्ऱेन् विऱलुडैये नल्लेनो 990

इल् उटैयाळ् काण–मेरी गृहिणी के देखते; विरकु उटैयाय्–बलशाली; ऍण् इला पल् उटैयाय्–असंख्य दाँत वाले; पटै उटैयान्–अनेक हथियारों का स्वामी; उन्नै कॊन्ऱु एक–आपको मारकर गया और; तॊल् विनैयेन्–पूर्वकर्म का भागी मैं; विल् उटैयेन्–धनु लेते हुए; निन्ऱेन्–खड़ा हूँ; विऱल् उटैयेन् अल्लेनो–बड़ा बलवान हूँ न; इनि–आगे; ऍन् पोल्–मेरे समान; चॊल् उटैयार्–प्रशंसा के पात्र; उळरो–होंगे क्या। ६६०

मेरी गृहिणी देखती रही और बलशाली और अनेक दाँतों से युक्त तात! अनेक हथियारों का स्वामी, शत्रु आपको मारकर चला गया। और पूर्वकर्मफल का भागी मैं धनु धारण करते हुए इधर बेकार रहता हूँ! मैं भी बलशाली हूँ न! आह! आगे मेरे समान प्रशंसा का पात्र कौन होगा? । ९९०

❀ अन्न पलपलवुम् पन्नि यळुमयङ्गुम्
तन्निह रिलादानुन् दम्बियुमत् तन्मैयताय्
उन्नु मुणर्वुशिऱि दुण्मुळैप्पप् पुळ्ळरशन्
इन्नुयिर्प्पा नन्बा लिरुवरैयु नोक्किनान् 991

तन् निकर् इलातानुम्–अनुपमित; अन्न पल पलवुम् पन्नि–वैसी अनेक बातें कहकर; अळुम् मयङ्कुम्–रोते-कलपते चकित रहे; तम्पियुम्–कनिष्ठ भी; अ तन्मैयताय्–उन्हीं की तरह; उन्नुम्–सोचते रहे; पुळ् अरचन्–पक्षियों के, राजा ने भी; उणर्वु चिऱितु–प्रज्ञा थोड़ा; उळ् मुळैप्प–जाग उठी, तब; इन् उयिर्प्पान्–सुखद श्वास निकालकर; इरुवरैयुम्–दोनों को; अन्पाल् नोक्कितान्–प्रेम से देखा। ६६१

अन्य उपमारहित श्रीराम ऐसी विविध बातें कहते हुए विलापे। उनके कनिष्ठ भ्राता भी दुःखी हुए। तब जटायु धीरे-धीरे होश में आये। सुख की साँस लेते हुए उन्होंने उन दोनों भाइयों पर प्रेम की दृष्टि फेरी। ९९१

❀ उऱ्ऱ दुणरा दुयिरुलैय वॅय्दुयिर्प्पान्
कॉऱ्ऱवरैक् कण्डाऩ्ऱऩ् ऩूळ्ळङ् गुळिर्प्पुऱ्ऱान्
इऱ्ऱ विरुशिऱहु मिऩ्ऩुयिरु मेऴुलहुम्
पॅऱ्ऱनत्ते यॊत्तेन् पॅयर्त्तेन् पऴियॅन्ऱान् 992

उऱ्ऱतु उणरातु–क्या हुआ, यह नहीं समझकर; उयिर् उलैय–विकल-प्राण हो; वॅय्तुयिर्प्पान्–आह भरी; कॉऱ्ऱवरै कण्टान्–राजकुमारों को देखा; तन् उळ्ळम् कुळिर्प्पु उऱ्ऱान्–उनका मन सन्तापरहित और शान्त हुआ; इऱ्ऱ इरु चिरकुम्–कटे हुए दोनों पंख; इन् उयिरुम्–मधुर प्राण; एऴ् उलकुम्–सातों लोक; पॅऱ्ऱतत्ते ऑत्तेन्–मुझे प्राप्त हो गये, ऐसा महसूस करता हूँ; पऴि पॅयर्त्तेन्–निन्दा से भी छूट जाऊँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ६६२

जटायु को पता नहीं था सीताजी का क्या हुआ। उन्होंने ठण्डी आहें भरीं। कराहने लगे। जब उन्होंने इन राजा भाइयों को देखा तो उनका मन थोड़ा सन्तापरहित हुआ। उन्हें ऐसा लगा कि उनके कटे पंख, प्रिय प्राण और सातों लोक उन्हें प्राप्त हो गये हों। उन्होंने सोचा कि मेरी निन्दा भी (कि मैंने न सीता को बचाया, न उनका समाचार इनको दिया) अब मिट जायगी। ९९२

❀ पाक्कियत्ता लिन्ऱॅन् पयनिल् पऴियाक्कै
पोक्कुहिन्ऱेन् कण्णुऱ्ऱेन् पुण्णियरे वम्मिनॅन्ऱु
ताक्कि यरक्कन् महुडत् तलैतहर्त्त
मूक्किना लुच्चि मुऱैमुऱैये मोक्किन्ऱान् 993

पुण्णियरे–हे पुण्यात्माओ; इन्ऱु–आज; ॲन्–अपना; पयन् इल्–निरर्थक; पऴि–निन्द्य; याक्कै–शरीर को; पोक्कुकिन्ऱेन्–त्याग रहा हूँ; पाक्कियत्ताल् कण् उऱ्ऱेन्–भाग्यवश तुमको देख पाया; वम्मिन्–आओ; ॲन्ऱु–कहकर; अरक्कन् मकुट तलै–राक्षस के किरीटशोभित सिरों को; ताक्कि तकर्त्त–आक्रमण करके छिन्न-भिन्न जिससे किया; मूक्किताल्–उस नाक से; उच्चि–उनके सिर को; मुऱै मुऱैये–बारी-बारी से अनेक बार; मोक्किन्ऱान्–सूँघने लगे। ६६३

उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण का अभिनन्दन किया। पुण्यात्माओ ! आज मैं अपना निरर्थक और निन्द्य शरीर त्याग रहा हूँ। भाग्यवश तुम्हारे दर्शन हुए। आओ, आओ, स्वागत है। यह कहते हुए उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण के सिर उस नाक (चोंच) से बार-बार सूँघा, जिससे

उन्होंने रावण के किरीटधर सिरों को नोचकर छिन्न-भिन्न कर दिया था। ९९३

❀ वञ्जत्तैयाल् वन्द वरवॆन्व दॆन्नुडैय
नॆञ्जहमे मुन्ने निनैवित्त दाताालुम्
अञ्जॊल् मयिलै यरुन्ददियै नीङ्गिनिरो
ॲञ्जलिला वाट्रॆ लिरुवीरु मॆन्ऱुरैत्तान् 994

वन्त वरवु–आगत कार्य; वञ्चत्तैयाल् ॲन्पतु–(रावण के) कपट से हुआ, यह; ॲन्नुडैय नॆञ्चकमे–मेरे मन ने; मुन्ने निनैवित्ततु–पहले ही स्मरण (भान) कराया; आतालुम्–तो भी; अम् चॊल् मयिलै–सुन्दर बोली वाली कलापी-सी (सीता को); अरुन्ततियै–अरुन्धती-सी सीता को; ॲञ्चल् इला–अक्षय; आट्रल् इरुवीरुम्–बलशाली तुम दोनों; नीङ्कि तरो–अकेले छोड़कर अलग हुए थे क्या; ॲन्ऱु उरैत्तान्–ऐसा प्रश्न किया। ६६४

आगे कहा— यह जो हुआ वह रावण का वंचना द्वारा साधित कार्य है —यह मेरा मन पहले ही कह रहा था। पर एक बात पूछता हूँ। मधुरवाणी, कलापी-सी सुन्दर और अरुन्धती-सी देवी सीता को अक्षय-बलशाली तुम दोनों अकेले छोड़कर अलग हुए थे क्या ? । ९९४

❀ ॲन्ऱव नियम्बलु मिळैय कोमहन्
ऒन्ऱुमाण् डुरुपॊरु ळॊऴिवु ऱावहै
वन्ऱिऱन् मायमान् वन्द दादिया
निन्ऱदु निहऴ्न्ददु निरप्पि नान्ऱो 995

ॲन्ऱु–ऐसा; अवन् इयम्पलुम्–उनके कहने पर; इळैय कोमकन्–छोटे राजकुमार ने; आण्टु–वहाँ; उरु पॊरुळ्–घटी हुई बातें; ऒन्ऱुम् ऒऴिवु उऱा वकै–विना कोई अंश छोड़े; वल् तिऱल् मायम् मान्–बहुत कुशल माया के हरिण के; वन्ततु आति आ–आने से लेकर; निन्ऱतु निकऴ्न्ततु–जो होकर बीतीं; निरप्पित्तान्–वर्णन कीं। ६६५

जब उन्होंने यह प्रश्न किया, तब लघुराजकुमार लक्ष्मण ने अति कुशल मायामृग के आने से लेकर सारी घटनाएँ क्रमवार, विना कोई अंश छोड़े बता दीं। ९९५

❀ आट्रला नव्वुरै यरैय वाणैयाल्
एट्रुणर्न् दॆण्णियव् वॆरुवै वेन्दनुम्
माट्ररुन् दुयरिवर् मनक्को ळावहै
तेट्रुद नन्ऱॆन विनैय शॆप्पुवान् 996

आणैयाल्–श्रीराम की आज्ञा लेकर; आट्रलान्–समर्थ लक्ष्मण के; अ उरै अरैय–वह वचन कहने पर; अ ॲरुवै वेन्ततुम्–वे गृध्रराज भी; एट्रु उणर्न्तु–हृदयंगम

करके; ऍण्णि–सोचकर; भारुऌ अरुम्–अनाश्वासनीय; तुयर्–दुःख को; इवर् मतम् कॊळा वकै–ये मन में न रखें, इस तरह; तेऱ्ऱुतल्–ढाढस देना; नन्ऱु ऍन्न–अच्छा होगा, सोचकर; इन्नैय चॅप्पुवान्–यों बोले। ९९६

लक्ष्मण ने वे बातें श्रीराम की आज्ञा लेकर ही कहीं। उनकी बातें सुनकर गृध्रराज ने उन्हें हृदयंगम किया। देखा कि वे अत्यधिक दुःखी हैं। कष्ट अनिवार्य हो गया था। पर यह दुःख उनके मन को न सताए, इसकी व्यवस्था करनी थी। ढाढस दिलाना था। यह सोचकर जटायु बोले। ९९६

❀ अदिशय मॊरुवरा लमैक्क लाहुमो
तुदियऱु पिऱ्विधि निन्ब तुन्बन्दान्
विदिवय मॅन्बदै मेऱ्कॊ ळाविडिन्
मदिवलि यालविदि वॅल्ल वल्लमो 997

ऒरुवराल्–किसी से; अतिचयम्–अतिशय (अस्वाभाविक); अमैक्कल् आकुमो–रचा जा सकता है क्या; तुति अऱु–प्रशंसा के लिए अयोग्य; पिऱ्विथिन्–जन्म में; इन्प तुन्पम् तान्–सुख और दुःख; विति वयम् ऍन्पतै–विधिवश होते हैं, यह बात; मेल् कॊळ्ळा विटिल्–हम मानकर नहीं चलेंगे; मति वलियाल्–तो अपनी बुद्धि के बल से; विति–विधि को; वॅल्ल वल्लमो–जीत सकते हैं क्या। ९९७

कोई भी असाधारण अतिशयपूर्ण काम नहीं कर सकता। (विधि के विपरीत जाना असाधारण काम है।) यह जन्म प्रशंसा के योग्य नहीं है। इसमें जो भी दुःख-सुख आते हैं, वे सब विधि के विधान के अनुसार आते हैं। इसको मानकर चलना ही ठीक है। नहीं तो अपने बुद्धिबल से विधि को जीतने का बल हममें है क्या? । ९९७

तॆरिवुऱु तुन्बम्वन् दून्ऱच् चिन्दैयै
इरिवुशॅय् दॊऴियुमो दिऴुदै नीरदाल्
पिरिवुशॅय् दुलहॆलाम् पॅऱुविप् पान्ऱलै
अरिवुशॅय् विदियिनारक् करिदुण् डाहुमो 998

उलकु ऍलाम्–लोकों के सभी जीवों को; पिरिवु चॅय्तु–विविध श्रेणियों में बाँटकर; पॅऱुविप्पान्–रचनेवाले ब्रह्माजी के; तलै–पाँच शिरों में एक को; अरिवु चॅय्–जिसने काटा उस; वितियिनारक्कु–विधिदेवता के लिए; अरितु उण्टाकुमो–कठिन कुछ हो सकता है क्या; तॆरिवु उऱु–साफ़ प्रकट रहनेवाला; तुन्पम् वन्तु ऊन्ऱ–दुःख आकर जम गया तब; चिन्तैयै इरिवु चॅय्तु–मन को जर्जर करके; ऒऴियुम् ईतु–कर्तव्य से विरत रह जाना, यह; इऴुतै नीरतु–अज्ञता का काम है। ९९८

ब्रह्माजी स्वयं लोक-सृजक हैं। अनेक तरह की जीवराशियों की सृष्टि का काम उन्ही के हाथ होता है। पर उनके सिरों में से एक को शिवजी ने काट लिया था। यह काम जिस विधि ने किया था, उस विधि के लिए

कौन सा काम कठिन या असाध्य होगा ? इसलिए जो दुःख सामने आता है, उसके सामने मन हारना और मानना और कर्म-विरत हो रहना अज्ञता होगा । ९९८

अलक्कण् मिन्नवु मणुहु नाळवै
विलक्कुव मॅन्बदु मॅय्यिद् आहुमो
इलक्कुमुप् पुरङ्गळै यॅय्द विल्लियार्
तलैक्कलत् तिरन्दनु तवत्तिन् पालदो 999

मु पुरङ्कळै–त्रिपुरों को; इलक्कु ऍय्त–लक्ष्य बनाकर जिन्होंने शर चलाया; विल्लियार्–उन धनुर्धर शिवजी का; तलै कलत्तु इरन्तनु–ब्रह्म-कपाल में भिक्षा माँगना; तवत्तिन् पालतो–उनकी तपस्या के लिए योग्य था क्या; अलक्कणुम् इन्पमुम्–दुःख और सुख; अणुकुम् नाळ्–जब आते हैं, तब; अवै विलक्कुवम् ऍन्पतु–उनको निवार देंगे, समझना; मॅय्यियर्क्कु आकुमो–सचमुच हो सकता है क्या । ९९९

शिवजी बड़े ही प्रसिद्ध धनुर्धर थे । उन्होंने त्रिपुर को जलानेवाला अस्त्र छोड़ा था । पर उन्हीं को ब्रह्म-कपाल हाथ में लेकर ब्रह्महत्या दोष के पाप के कारण भिक्षा माँगते फिरना पड़ा था । पतिनाथ शिवजी की तपस्या और यह संकट —दोनों में कोई मेल है क्या ? इसलिए जब दुःख या सुख आते हैं हम उनको रोक देंगे, यह कहना सचमुच साध्य हो सकेगा क्या ? । ९९९

* पॉङ्गुवॅङ् गोळरा विशुम्बु पूत्तन
वॅङ्गदिर्च् चॅल्वनै विळुङ्गि नीङ्गुमाल्
अङ्गण्मा ञालत्तै विळक्कु मायहदिर्त्
तिङ्गळु मॊरुमुरै वळरुम् तेयुमाल् 1000

पॊङ्कु वॆम् कोळ् अरा–उबलनेवाले भयंकर (राहु-केतु के) सर्प-ग्रह; विसुम्पु पूत्तु अत–आकाश में फूल के समान; वॆम् कतिर् चॆल्वनै–उष्णकिरण सूर्यदेव को; विळुङ्कि नीङ्कुम्–निगल जाते हैं; अम् कण् मा ञालत्तै–सुन्दर और विशाल पृथ्वी को; विळक्कुम्–प्रकाश देनेवाला; आय् कतिर् तिङ्कळुम्–श्रेष्ठ किरणों का चन्द्र भी; ऒरु मुरै वळरुम् तेयुम्–एक बार बढ़ता है, एक बार घटता है । १०००

उबलनेवाले सर्प-रूप के ग्रह, राहु और केतु आकाश में विकसित पुष्प के समान विद्यमान, उष्णकिरण सूर्यदेव को निगल लेते हैं । इस विशाल व सुन्दर पृथ्वी को प्रकाश प्रदान करता है चन्द्रमा । श्रेष्ठ किरणों के उसका क्या हाल है ? पन्द्रह दिन उसे घटना और पन्द्रह दिन बढ़ना पड़ता है । १०००

अन्दरम् वरुदलु मनैय तोर्दलुम्
शुन्दरत् तोळिनिर् तोत्तमे नीरवाल्

मन्दिर विमैयवर् गुरुविन् वाय्मोऴि
इन्दिर नुऱ्ऱन वॆण्ण वॊण्णुमो 1001

मन्तिर–मंत्रणा में चतुर; इमैयवर् कुरुवित्–देवगुरु (बृहस्पति) का; वाय् मोऴि–उपदेश; इन्तिरन् उऱ्ऱन–(सुनकर तदनुसार चलनेवाले) इन्द्र को जो कष्ट प्राप्त हुए; ऎण्ण ऒण्णुमो–उनको गिना जा सकता है क्या; चुन्तर तोळित्तीर्–सुन्दर-वाहु वीर; अन्तरम् वरुतलुम्–कष्टों का आना; अनैय तीर्तलुम्–और उनका हट जाना; तॊन्मै नीर–सनातन प्रकृति के हैं। १००१

सलाहें देने में समर्थ देवगुरु के उपदेशों के अनुसार चलता है देवेन्द्र। पर उसको भी (नारद, दुर्वासा, गौतम आदि द्वारा शप्त होकर) कितने कष्ट सहने पड़े —क्या उनकी गणना हो सकती है? इसलिए, सुन्दर-वाहु वीर! दिन के फेर आते-जाते हैं। यह सनातन है। १००१

❀ तडैक्करुम् वॆरुवलिच् चम्ब रप्पॆयर्क्
कडैत्तॊऴि लवुणनाऱ् कुलिशक् कैयिनान्
पडैत्तनन् पऴियदु पहऴि विल्वलाय्त्
तुडैत्तन नुन्दैतन् कुववुत् तोळिनाल् 1002

पकऴि विल् वलाय्–शर-धनुर्विद्या-विशारद; तटैक्कु अरुम्–अवार्य; पॆरु वलि–वड़ा वलशाली; चम्पर पॆयर्–शंवर नाम के; कटै तॊऴिल्–नीच कर्मी; अवुणनाल्–राक्षस द्वारा; कुलिच कैयिनान्–कुलिशपाणी (इन्द्र) ने; पऴि पटैत्तनन्–अपमान पाया; अतु–उस (अपमान) के; उनृतै–तुम्हारे पिता ने; तन् कुववु तोळिनाल्–अपनी वलवान भुजाओं के (पराक्रम के) द्वारा; तुटैत्तनन्–पोंछ दिया। १००२

शर चलाने की धनुर्विद्या में विशारद राम! अप्रतिहत अपार वली था शंवर। नीचकर्मी उसके हाथ कुलिशपाणी इन्द्र अपमानित हुआ। तुम्हारे पिता ने अपनी उन्नत भुजाओं के वल से उस अपमान को पोंछ दिया। १००२

❀ पिळ्ळैच्चॊऱ् किळिय ताळैप् पिरिवुऱ् ऱुऱ्ऱ पॆऱ्ऱि
तळ्ळुऱ्ऱ वऱमुन् देवर् तुयरमुन् दन्द देयाल्
कळ्ळप्पो रऱक्क रॆन्नुङ् गळैहळैक् कळैन्दु वाऴ्दि
पुळ्ळुक्कुम् पुलम्बु पेयक्कुन् तायन्न पुलवु वेलोय् 1003

पुळ्ळुक्कुम्–पक्षियों को; पुलम्पु पेय्क्कुम्–(भूख से) प्रलाप करनेवाले भूतों को; ताय् अन्न–माता के समान; पुलवु वेलोय्–मांस-दायी भाला के धारक; चॊल् किळि अत्ताळै–तुतलाती और शुकी-सी सीता से; पिरिवु उऱ्ऱ पॆऱ्ऱि–विछुड़ चुके हो, यह उपलब्धि; तळ्ळुऱ्ऱ अऱमुम्–ग्लानिगत धर्म; तेवर् तुयरमुम्–और देवों के दुःख का; तन्तते आल्–दिया हुआ है; कळ्ळ पोर् अरक्कर ऎन्नुम्–मायायुद्ध-चतुर राक्षस रूपी; कळैयिनै–(नींद) व्यर्थ पौधों को; कळैन्तु–निरा देकर; वाऴ्ति–चिरजीव रहो। १००३

ऐसे भाले के धारक, राम ! जो माता के-से प्रेम के साथ पक्षियों और प्रलाप करनेवाले पिशाचों को भूख मिटाते हुए मांस खिलाता है। धर्म क्षीण हो गया है और देव दुःखी हैं। उन्हीं दो वातों से तोतली बोली वाली शुकी-सी सीता से वियुक्त होकर कष्ट उठाने का यह कार्य हो गया है। तुम चोर के स्वभाव वाले मायावी राक्षसों को खेत के निराने योग्य (नींद) घास-पौधों के समान काट मिटाओ और चिरजीव रहो। १००३

वडुक्कण्वार् कून्द लाळै यिरावणऩ् मण्णि ऩोडुम्
ऍडुत्तऩ ऩेहु वाऩै यॅदिर्न्दॅऩ दाऱ्ऱल् कॊण्डु
तडुत्तऩॆ ऩाव दॅल्लान् दवत्ताऩ् तन्द वाळाल्
पडुत्तऩ ऩिङ्गु वीऴ्न्दे ऩिदुविऩ्ऱु पट्ट दॆऩ्ऱाऩ् 1004

वट्टु कण्–आम के टिकोरे के समान आँखें; वार् कून्तलाळै–और लम्बा केश; इनके साथ शोभनेवाली सीता को; इरावणऩ्–रावण जो; मण्णिऩ् ओटुम्–भूमि के अंश के साथ; ऍटुत्तु एकुवाऩै–उठाये दौड़ा जा रहा था, उसका; ऍत्तु आऱ्ऱल् कॊण्टु ऍतिर्न्तु–अपने बल से सामना करके; आवतु ऍल्लाम्–भरसक; तटुत्तऩॆऩ्–रोका (मैंने); तवत्तु–तपस्या से; अरऩ् तन्त–हर की दी हुई; वाळाल्–तलवार से; पटुत्तऩऩ्–मुझे निहत कर दिया (रावण ने); इङ्कु वीऴ्न्तेऩ्–यहाँ गिर गया; इतु इऩ्ऱु पट्टतु–आज मेरा यह हाल हुआ; ऍऩ्ऱाऩ्–(जटायु ने) वताया। १००४

आम के टिकोरे के समान आँखों से भूषित और सुन्दर केशिनी सीता को रावण भूमि के अंश के साथ उठाये ले जा रहा था। मैंने उसका अपने बल के साथ सामना किया। उसको रोका। पर उसके हाथ में चन्द्रहास तलवार थी, जो उसे उसके तप के फलस्वरूप शिवजी द्वारा दी गयी थी। उसने उसका प्रयोग करके (अपने निजी वल से नहीं) मुझे आहत कर दिया। मेरे पंख कट गये और मैं गिर गया हूँ। यही यहाँ जो हुआ वह वृत्तान्त है। १००४

कूऱिऩ माऱ्ऱम् जॆऩ्ऱु शॆवित्तलङ् गुरुहा मुऩ्ऩम्
ऊऱिऩ वुदिरम् जॆङ्ग णुयिर्त्तऩ वुयिर्प्पुच् चॆन्दी
एऱिऩ पुरुव मॆन्मे लिरिन्दऩ शुडर्ह ळॆङ्गुम्
कीऱिऩ दण्ड कोळङ् गिऴिन्दऩ गिरिह ळॆल्लाम् 1005

कूऱिऩ माऱ्ऱम्–(उनका) कहा वचन; चॆवि तलम् चॆऩ्ऱु–कर्ण तक जाकर; कुऱुका मुऩ्ऩम्–लग जाय, इसके पूर्व ही; चॆम् कण्–उनकी लाल आँखों में; उतिरम् ऊऱिऩ–रक्त निकल आया; उयिर्प्पु–साँसें; चॆम् ती उयिर्त्तऩ–गरम आग से मिश्रित आयीं; पुरुवम्–भौंहें; मॆऩ् मेल्–ऊपर, ऊपर; एऱिऩ–चढ़ीं; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; चुटर्कळ् इरिन्तऩ–अंगार छितरे; अण्ट कोळम् कीऱिऩ–अण्डगोल फट पड़ा; किरिकळ् ऍल्लाम्–सारे पर्वत; किऴिन्तऩ–चिर गये। १००५

जव जटायु ने यह वात कही, तव श्रीराम कोपोद्विग्न हुए। लाल

आँखों में खून भर आया। साँसें आग से मिश्रित-सी निकलीं। भौंहें तन गयीं। कोप के अंगार सर्वत्र छितरे। सारे अण्डगोल फटे और सभी पर्वत चिरे। १००५

मण्णहन् दिरिय निन्ऱ मालवरै तिरिय मट्रैक्
कण्णहन् पुनलुङ् गालुङ् गदिरोडु तिरियक् कावल्
विण्णहन् दिरिय मेलै विरिञ्जनुन् दिरिय वीरन्
ऍण्णरुम् पॊरुळ्ह ळॆल्ला मॆन्बदु तॆरिन्द दन्ऱे 1006

मण् अकम् तिरिय–पृथ्वी विपर्य्यस्त हुई; माल् वरै तिरिय–बड़े-बड़े पर्वत घूमे; मट्रै–और; कण् अकन् पुनलुम्–विस्तृत जलाशय और; कालुम्–पवन; कतिर् ओटुम्–सूर्य व चन्द्र के साथ; तिरिय–घूम गये; कावल् विण् अकम्–सबकी स्थिरता की रक्षा करनेवाला आकाश; तिरिय–घूमा; मेलै विरिञ्चनुम्–इन सबके ऊपर के ब्रह्मा भी; तिरिय–अव्यवस्थित हुए; वीरन्–(इसलिए) वीर श्रीराम; ऍण् अरुम् पॊरुळ्कळ् ऍल्लाम्–अगणित सभी पदार्थों के अन्दर हैं; ऍन्पतु–यह तथ्य; तॆरिन्ततु–विदित हुआ। १००६

धरती घूम उठी। बड़े पर्वत अस्त-व्यस्त हुए। और विस्तृत जल, अनिल, सूर्य और चन्द्र चकरा गये। सबको स्थिरता देनेवाला अन्तरिक्ष विपर्यस्त हो गया। पुरातन सर्वोपरि ब्रह्मा भी अस्थिर हो गये। इस विपर्यय से यह तथ्य साबित हुआ कि श्रीराम अगणित सभी पदार्थों के अन्तर्यामी हैं। १००६

कुऱित्तवॆङ् गोवम् यार्मेऱ् कॊळुरुङ् गॊल्लॆन् ऱञ्जि
वॆऱित्तुनिन् ऱुलह मॆल्लाम् विम्मुरु हिन्ऱ वेलै
पॊऱिप्पिदिर् पडरच् चॆन्दीप् पुहैयॊडुम् बॊडिप्पप् पॊम्मॆन्
ऱॆऱिप्पदोर् मुरुव ऱोन्ऱ विरामनु मियम्ब लुऱ्ऱान् 1007

कुऱित्त वॆम् कोवम्–श्रीराम के मन में उदित कोप; यार् मेल् कॊळुरुम् कॊल्–किस पर जा लगेगा; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोक; अञ्चि–डरकर; वॆऱित्तु निन्ऱु–तनकर खड़े हो गये; विम् उरुकिन्ऱ वेलै–जब अभिभूत हुए, तब; इरामनुम्–श्रीराम भी; पॊऱि पितिर् पटर–अग्निकणों के छितरते; चॆम् ती–लाल अग्नि के; पुकै ऒटुम् पॊटिप्प–धुएँ के साथ उठते; ऍऱिप्पतु ओर् मुरुवल्–दिल दहलानेवाले हास के; पॊम् ऍन्ऱु तोन्ऱ–'भम्' शब्द के साथ (फूटकर) प्रकट होते; इयम्पल् उऱ्ऱान्–बोले। १००७

अब सारे लोकवासी यह सोचते हुए भयभीत हुए कि श्रीराम का क्रोध किस पर उतरेगा? भय से अभिभूत हो वे तनकर दुःख करते हुए खड़े रह गये। श्रीराम ने 'भम्' शब्द के साथ अट्टहास किया। तब अंगारे छितरे। लाल रंग की आग धुएँ के साथ जल उठी। वे बोले। १००७

❀ पॆण्डनि यॊरुत्ति तल्नैप् पेदैवा ळरक्कन् पट्रिक्
कॊण्डन नेह नीयिक् कोळुट्क् कुलुङ्गल् शॆल्ला
ऎण्डिशै यिरुदि यान वुलहङ्ग ळिवट्रै यिन्नॆ
कण्डवा नवर्ह ळोडुम् कळैयुमा ट्रिन्रु काण्डि 1008

तनि पॆण् ऒरुत्ति तन्नै–अकेली रही एक स्त्री को; पेतै वाळ् अरक्कन्–मति-हीन क्रूर राक्षस; पट्रि कॊण्टनन् एक–पकड़ लेकर गया और; नी इ कोळ् उट्र–आप पर यह संकट आया और; कुलुङ्कल् चॆल्ला–कम्पित नहीं होता हुआ; ऎण् तिचै इरुति आन–आठों दिगन्त; उलकङ्कळ् इवट्रै–इन सारे लोकों को; कण्ट वानवर्कळोटुम्–इसके दर्शक देवों के साथ; इन्नॆ कळैयुम् आरु–अभी कैसे ध्वस्त करता हूँ, वह प्रकार; इन्रु काण्टि–आज देखिए। १००८

हाय ! एकाकिनी एक स्त्री को मतिहीन क्रूर राक्षस पकड़कर ले गया ! आप पर यह विपदा आयी है ! इनको देखकर आठों दिशाओं के अन्दर रहनेवाले लोकों के वासी कम्पित नही हुए। देव भी यह देखते रह गये। अव मैं इन सभी लोकों और देवों को कैसे विध्वस्त कर देता हूँ, देखिए। १००८

तारहै युदिरु माऱुन् दनिक्कदिर् पिदिरु माऱुम्
पेरहल् वान मॆङ्गुम् पिट्ङ्गॆरि पिट्क्कु माऱुम्
नीरॊडु निलनु मट्रु निन्ट्रवुन् दिरिन्द यावुम्
वेरॊडु परियु माऱुम् विण्णवर् विळियु माऱुम् 1009

तारकै उतिरुम् आरुम्–तारे कैसे चूते हैं, वह प्रकार और; तनि कतिर् पितिरुम् आरुम्–अद्वितीय सूर्य कैसे चूर-चूर होकर गिरता है, वह और; पेर् अकल् वानम् ऎङ्कुम्–अति विशाल गगन में; पिट्ङ्कु ऎरि–उज्ज्वल अग्नि; पिट्क्कुम् आरुम्–कैसे जल उठती, वह और; नीर् ऒटु निलनुम्–जल और पृथ्वी; मट्रुम्–और अन्य; निन्ट्रवुम् तिरिन्त यावुम्–अचल और चल सभी पदार्थ; वेर् ऒटु परियुम् आरुम्–जड़ के साथ कैसे नष्ट होते है, वह प्रकार; विण्णवर् विळियुम् आरुम्–देव कैसे मिट जाते हैं, वह प्रकार। १००९

तारे चू पड़ेंगे। अद्वितीय सूर्य चूर-चूर होकर गिरेगा। विशाल गगन में सर्वत्र बड़े प्रकाश के साथ आग जल उठेगी। पृथ्वी और समुद्र और उनमें रहनेवाले अचल और चल सभी जीव निर्मूल हो जायँगे। यह सब कैसे होते है और देव कैसे विनष्ट होते है (यह प्रकार देखिए)। १००९

इक्कण सॊन्ट्रि निन्ट्र वेळ्ळिनो डेळु मेल्हीळ्
मिक्कन पोन्रु तोन्रु मुलहङ्गळ् वीयु माऱुम्
तिक्कुडै यण्ड कोळप् पुट्त्तवुन् दीय्न्दु नीरिन्
मॊक्कुळि नुडैयु माऱु गार्णॆन्न मुनिद लोडुम् 1010

मेल् कीऴ् मिक्कत्त पोऩ्ऱु तोऩ्ऱुम्–ऊपर और नीचे व्याप्त रहनेवाले; निऩ्ऱ–स्थायी; एऴिऩ् ओट्टु एऴ् उलकङ्कळ्–सात और सात चौदहों भुवन; वीयुम् आऱुम्–कैसे ध्वस्त होते हैं, वह प्रकार; तिक्कु उटै–आठों दिशाओं के अन्दर; अण्ट कोळम्–रहनेवाले अण्डगोल; पुऱत्तवुम्–अन्य बाह्याण्ड; तीय्न्तु–जलकर; नीरिऩ् मोक्कुळिऩ्–जल के बुलबुले के समान; उटैयुम् आऱुम्–कैसे अदृश्य होते हैं, वह; इ कणम् ऒऩ्ऱिल्–इसी एक क्षण में; काण् ऎऩ्–देखिए, कहकर; मुऩितल् ओटुम्–जब श्रीराम कुपित हुए, तब। १०१०

ऊपर और नीचे व्याप्त होकर जो शानदार लगते हैं, वे चौदहों भुवन अब तहस-नहस हो जायँगे। आठों दिशाओं के अन्तर्गत रहनेवाले सारे अण्डगोल और बाह्याण्ड भी जलकर जल के बुलबुले के समान अदृश्य हो जायँगे। वे सब कैसे होते हैं वह रीति अभी, इसी एक क्षण में देख लीजिए। यह कहते हुए जब श्रीराम कोप दिखा रहे थे तब—। १०१०

वॆञ्जुडरक् कडवुण् मीण्डु मेरुविन् मऱैय लुऱ्ऱाऩ्
ऒञ्जलि ऱिशैयि निऩ्ऱ यानैयु मिरियल् पोऩ
तुञ्जिन वुलह मॆल्ला मॆऩ्बदॆऩ् तुणिन्द नॆञ्जऩ्
अञ्जिन निळैय कोवु मयलुळोर्क् कवदि युण्डो 1011

वॆम् चुटर्–गरम किरणों के; कटवुळ्–(सूर्य) देव; मीण्टु–फिर; मेरुविल् मऱैयल् उऱ्ऱाऩ्–मेरु के पीछे छिपने लगे; ऒञ्चल् इल्–अप्रमत्त; तिचैयिऩ् निऩ्ऱ यानैयुम्–दिशाओं में स्थित गज भी; इरियल् पोऩ–अस्त-व्यस्त हो भागे; उलकम् ऎल्लाम् तुञ्चिऩ–सारे लोक के जीव स्तब्ध बने; ऎऩ्पतु ऎऩ्–ऐसा कहना क्या; तुणिन्त नॆञ्चऩ्–सुदृढ़-मन; इळैय कोवुम्–लघुराज भी; अञ्चिऩऩ्–भयभीत हुए; अयल् उळोर्क्कु–अन्य लोगों (के भय) को; अवति उण्टो–सीमा है क्या। १०११

गरम किरणमाली भी मेरु के पीछे जा छिपे। अचल दिग्गज भी इधर-उधर भागे। सारा विश्व निष्क्रिय हो गया —यह कहना क्या अर्थ रखता है? अदम्य साहसी लघुराज भी डर गये तो अन्यों के भय की सीमा भी हो सकती थी क्या? । १०११

इव्वऴि निहऴुम् वेलै यॆरुवैहट् करशऩ् यादुम्
शॆव्वियोय् मुनियल् वाऴि तेवरु मुनिवर् तामुम्
वॆव्वलि वीर निऩ्ऩाल् वेऱुमॆऩ् ऱॆमाक् किऩ्ऱार्
ऎव्वलि कॊण्डु वॆल्वा रिरावणऩ् शॆयलै यॆऩ्ऩा 1012

इ वऴि निकऴुम् वेलै–जब ऐसी बात हुई; ऎरुवैकट्कु अरचऩ्–गीधों के राजा; चॆव्वियोय्–पुरुषोत्तम; यातुम् मुऩियल्–कुछ भी क्रोध मत करो; वाऴि–सौभाग्यवान जिओ; वॆल् वलि वीर–परंतप बली वीर; तेवरुम् मुनिवर् तामुम्–देव और मुनि; इरावणऩ् चॆयलै–रावण के कृत्य को; निऩ्ऩाल् वेऱुम्–तुम्हारे द्वारा जीतने (रुकवाने) का; ऎऩ्ऱु एमाक्किऩ्ऱार्–विचार करके मुदित हैं; ऎ वलि कॊण्टु–वे किस पराक्रम से; वॆल्वार्–जीतेंगे; ऎऩ्ऩा–कहकर। १०१२

जब यह सब हो रहा था, तब गृध्रराज ने श्रीराम को समझाया। नेक श्रीराम ! तुम कुछ गुस्सा मत करो। सौभाग्यमय जीवन जिओगे। विजयी पराक्रमी वीर ! देव और मुनि तो यह सोचते हुए आनन्द का अनुभव कर रहे है कि तुम्हारे द्वारा रावण के अत्याचार निरस्त होंगे। वे कौन सा बल लेकर रावण को जीत सकेंगे ? । १०१२

नाट्चॅय्द कमलत् तण्ण नल्हिन नवॅयि लाऱ्ऱल्
तोट्चॅय्द वीर मॅऩ्ऩिऱ् कण्डनै शॊल्ल वुण्डो
ताट्चॅय्य नळिनत् तोने मुदलिनर् तलैपत् तुळ्ळाऱ्
काट्चॅय्हिन् ऱार्ह ळऩ्ऱि यऱञ्जॅय् हिऩ्ऱार्हळ् यारे 1013

नाळ् चॅय्त–आयु निर्धारित करनेवाले; कमलत्तु अण्णल्–कमलासन देव के द्वारा; नल्कित–दिये गये; नवॅयिल् आऱ्ऱल्–अमोघ शक्ति की; तोळ् चॅय्त वीरम्–भुजाओं के बल-पराक्रम को; ॲन्ऩिल् कण्टनै–मेरे विषय में देखा; चॉल्ल उण्टो–फिर कहना है क्या; ताळ् चॅय्य नळिऩत्तोऩे मुतलिनर्–नालसहित कमल पर आसीन ब्रह्मा से लेकर सभी; तलै पत्तु उळ्ळार्क्कु–दशग्रीव का; आळ् चॅय्किऩ्ऱार्कळ्–कैंकर्य करते हैं; अऩ्ऱि–सिवाय इसके; अऱम् चॅय्किऩ्ऱार्कळ् यारे–धर्म-कर्म करनेवाले कौन हैं। १०१३

सब जीवों के आयु-विधायक ब्रह्मा ने रावण को कितना भुजबल वर के रूप में दिया है, वह कितना निर्दोष है, यह तुमने मेरी गति से जान लिया है न ? फिर उसके सम्बन्ध मे बताने को क्या है ? नाल-सहित कमलपुष्प पर रहनेवाले ब्रह्मा आदि सभी देवता दशग्रीव की सेवा टहल करते हैं। उसके सिवा अपने धर्म-कर्म करते कौन हैं ? । १०१३

तॅण्डिरै युलहन् दन्निऱ् चॅऱुनर्माट् टेवल् शॅय्तु
पॅण्डिरिन् वाळ्व रऩ्ऱे यिदुवन्ऱो देवर् पॅऱ्ऱि
पण्डुल हळन्दो नल्हप् पाऱ्कड लमुद मन्नाळ्
उण्डिल राहि लिन्ना ळन्नवर्क् कुय्द लुण्डो 1014

तॅळ् तिरै उलकम् तऩ्ऩिल्–स्पष्ट समुद्र से घिरी पृथ्वी में; चॅऱुनर् माट्टु–अपने शत्रु रावणादि राक्षसों के यहाँ; एवल् चॅय्तु–सेवा-टहल करके; पॅण्टिरिऩ् वाऴ्वर्–स्त्रियों का-सा जीवन बिता रहे है; तेवर् पॅऱ्ऱि–देवों का भाग्य; इतु अन्ऱो–यही है न; पण्टु उलकु अळन्तोऩ्–पहले (त्रिविक्रम बनकर) जिन्होंने लोको को नापा; पाल् कटल् अमुतम् नल्क–उन्होने क्षीरसागर के अमृत को देवों को दिया; अ नाळ् उण्टु इलर् आकिल्–उस दिन वे नहीं खाते तो; इ नाळ्–आजकल; अन्नवर्क्कु–उन लोगों का; उय्तल् उण्टो–जीवित रहना होता क्या। १०१४

स्वच्छ समुद्र-वलयित भूतल में, वे देव अपने शत्रु रावण की सेवा-टहल करते हुए स्त्रियों के समान जीवन बिता रहे है। यही उनकी स्थिति है ! इन देवो को अगर क्षीरमथन से क्षीरसागर से प्राप्त अमृत त्रिविक्रम

द्वारा न मिलता होता, आज रावण के शासन काल में ये जीवित रह सकते क्या ? । १०१४

❀ वम्बिळै कॉङ्गै वञ्जि वनत्तिडैत् तमियळ् वैहक्
कॉम्बिळै मातित् पिन्बोय्क् कुलप्पळि कूट्टिक् कॉण्डीर्
अम्बिळै वरिविर् चॅङ्गै यैयन्मी रायुङ् गालै
उम्बिळै यॅन्ब दल्ला लुलहञ्जॅय् पिळैयु मुण्डो 1015

अम्पु इळै–शरासन; वीर विल् चॅङ्कै–सबन्ध धनु अपने लाल हाथ में रखनेवाले; ऐयन्मीर्–मेरे लाल; वम्पु इळै–अँगिया से बद्ध; कॉङ्कै वञ्चि–स्तनों से भूषित लता(-सी सीता); वनत्तु इटै तमियळ् वैक–वन में अकेली रही, तब; कॉम्पु इळै–सींगों-सहित; मातिन् पिन् पोय्–मृग के पीछे जाकर; कुल पळि–कुल का अपमान; कूट्टि कॉण्टीर्–सम्पादित कर लिया; आयुम् कालै–विचार करने पर; उम् पिळै ॲन्पतु अल्लाल्–तुम्हारा कसूर है, इसके सिवा; उलकम् चॅय् पिळैयुम् उण्टो–संसार (के वासियों) का कोई अपराध है क्या । १०१५

सबन्ध शरासनधारी लाल हाथ के हे वीरो ! मेरे पुत्रो ! अँगियाबद्ध स्तनों वाली लता-सदृश सीता जब जंगल में एकाकिनी रही, तब तुम उसे छोड़कर श्रृंगसहित हरिण को पकड़ने गये और अपने कुल का अपयश ग्रहण कर आये । सोचकर देखो तो गल्ती तुम्हारी ही है । संसार का किया कोई अपराध है क्या ? । १०१५

आदलाल् मुनिवा यल्लै यरुन्ददि यनैय कर्पिन्
कादला डुयर नीक्कित् तेवर्तङ् गरुत्तु मुर्रि
वेदनूल् मुरैयिन् यावुम् विदियुळि निरुवि वेरु
तीदुळ तुडैत्ति यॅन्रान् शेवडिक् कमलञ् जेर्वान् 1016

चे अटि कमलम् चेर्वान्–(श्रीमन्नारायण के) लाल (श्रेष्ठ) चरण-कमल पहुँचने को जो थे (मरणोन्मुख); आतलाल्–इसलिए; मुनिवाय् अल्लै–कोप मत करो; अरुन्ततति अनैय कर्पिन्–अरुन्धती-सी पतिव्रता देवी; कातलाळ्–तुम्हारी प्रिया का; तुयरम् नीक्कि–दुःख दूर कर; तेवर् तम् करुत्तु मुर्रि–देवों की प्रार्थना पूरी करके; वेत नूल् मुरैयिन्–वेद-शास्त्र में उक्त विधि के अनुसार; यावुम् विति उळि निरुवि–सब धर्म विधिवत संस्थापित करके; वेरु तीतु उळ–अन्य जितनी भी बुराइयाँ हैं; तुटैत्ति–उनको दूर करो; ॲन्रान्–(जटायु ने) कहा । १०१६

जटायु अब श्रीविष्णु भगवान के लाल कमलचरण को पहुँचने की स्थिति में थे । उन्होंने श्रीराम को आशीष दिया । श्रीराम ! तुम किसी पर क्रोध मत करो । अरुन्धती-समान पातिव्रत्यशीला, अपनी प्रिया सीता का दुःख हरण करो । देवों की प्रार्थना पूरी करो । वेद-शास्त्र-विहित सभी धर्मों को संस्थापित करो । और अन्य कष्ट, जो भी पृथ्वी पर हों, उनका निरसन कर दो । १०१६

पुयलिऱ् वण्ण ताण्डप् पुण्णियन् पुहन्ऱ शॊल्लैत्
तयरदन् पणियी दॆन्नच् चिन्दैयिऱ् ऱळुवि निन्ऱान्
अयलिनि मुनिव दॆन्नै यरक्करै वरुक्कम् तीर्क्कुम्
शॆयलितिच् चॆयलॆन् ऱॆण्णिक् कण्णिय शीऱ्ऱन् दीर्न्दान् 1017

पुयल् निऱ वण्णन्–मेघवर्ण ने; अ पुण्णियन् पुकन्ऱ चॊल्लै–उन पुण्यात्मा के कहे वचनों को; आण्टु–तव; तयरतन् पणि ईतु–दशरथ की आज्ञा है यह; ऎन्न–ऐसा; चिन्तैयिल् तळुवि निन्ऱान्–अपने मन में धारण कर लिया; इति अयल् मुनिवतु ऎन्नै–अव दूसरों पर क्रोध करना क्या है; अरक्करै वरुक्कम् तीर्क्कुम्–राक्षसों के वर्गों का नाश करने का; चॆयल् इति चॆयल्–काम ही कर्तव्य है; ऎन्ऱु ऎण्णि–ऐसा सोचकर; कण्णिय चीऱ्ऱम् तीर्न्तान्–अपनाया क्रोध दूर कर दिया। १०१७

मेघवर्ण श्रीराम ने उनकी आज्ञा को दशरथ की आज्ञा के समान हृदयंगम कर लिया। 'अव अन्यों से रुष्ट होना क्या अर्थ रखता है? आगे मेरा कार्य राक्षसों के वर्गों को विध्वस्त करना ही है!' —यह सोचकर श्रीराम ने अपने मन में सृष्ट क्रोध को शान्त कर लिया। १०१७

ॐ आयपिन् नमलन् ऱानु मैयनी यमैदि यॆन्न
वायिडै मॊऴिन्द दन्ऱि मऱ्ऱॊरु शॆयलु मुण्डो
पोयदव् वरक्क नॆङ्गे पुहलॆनप् पुळ्ळिन् वेन्दन्
ओय्विन नुणर्वु तेय वुरैत्तिल नुयिरुन् दीर्न्दान् 1018

आय पिन्–(शान्त) होने के वाद; अमलन् तानुम्–अकलुष (पवित्र) श्रीराम भी; ऐय–तात; नी–आप; अमैति–शान्त हों; वाय् इटै–मुख से; ऎन्न मॊऴिन्ततु–आपने जो कहा; अन्ऱि–उसके सिवा; मऱ्ऱु ऒरु चॆयलुम् उण्टो–दूसरा कोई काम (मुझसे) होगा क्या; अ अरक्कन्–वह राक्षस; पोयतु ऎङ्के–गया कहाँ; पुकल् ऎन्न–कहिए, कहने पर; पुळ्ळिन् वेन्तन्–खगराज ने; ओय्वितन्–श्लथ होकर; उणर्वु तेय–प्रज्ञा खोकर; उरैत्तिलन्–नहीं कहा; उयिरुम् तीर्न्तान्–प्राण छोड़ गये। १०१८

अपना क्रोध शान्त करने के वाद अकलुष श्रीराम ने जटायु से मधुर ढंग से कहा कि तात! आप शान्त हों। आपने जो अपने मुख से आज्ञा कही है, उसके सिवा कोई और कार्य मुझसे होगा क्या? नहीं होगा। आप यह वताये कि वह राक्षस गया कहाँ? इसका उत्तर खगराज दें इसके पहले ही वे श्लथ होकर प्रज्ञा खोकर प्राणहीन हो गये। उत्तर दे नहीं पाये। १०१८

शीदङ्गॊण् मलरु ळोनुन् देवरु मॆन्व दॆन्ने
वेदङ्गळ् काण्गि लामै वॆळिनिन्ऱे मऱैयुम् वीरन्
पादङ्गळ् कण्णिऱ् पार्त्तान् पडिवङ्गॊ णॆडिय पञ्ज
वूदङ्गळ् विळियु नाळुम् पोक्किला वुलहम् बुक्कान् 1019

चीतम् कॉळ् मलर् उळोत्तुम्–शीतलतायुक्त कमल पर आसीन ब्रह्मा; तेवरुम्–देव; ऍन्पतु ऍन्ऩे–उनकी बात क्या; वेतङ्कळ् काण्किलामै–वेदों ने भी नहीं देखा, ऐसे; वॅळि निन्ऱे–ज्ञानातीत हो रहनेवाले; मरैयुन् वीरन्–और अगोचर वीर श्रीराम के; पातङ्कळ् कण्णिल् पार्त्तान्–चरणों के दर्शन करते हुए; पटिवम् कॉळ्–विविध रूपों में परिवर्तित होनेवाले; पञ्च पूतङ्कळ्–पाँच भूत; विळियुम् नाळुम्–जिस दिन में विनष्ट हो जाते हैं, उस युगान्त में भी; पोक्कु इला–अविनष्ट रहनेवाले; उलकम्–परमपद में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। १०१९

शीतल कमलपुष्प पर आसीन ब्रह्मा और अन्य देव क्या ? स्वयं वेदों के लिए भी श्रीराम अगोचर थे। ऐसे परमेश्वर के चरण की अन्तिम स्मृति करते हुए जटायु ने प्राण-त्याग किया था। इसलिए वे उस परमपद श्रीवैकुण्ठ में पहुँच गये, जो सारे भूतों को विनष्ट करनेवाले युगान्त में भी अक्षय रहता है। १०१९

वीडव नॅय्दुम् वेलै विरिञ्जने मुदल मेलोर्
आडवर्क् करश तोडुन् दम्बियु मळुदु शोरक्
काडमर् मरमुम् मावुङ् गर्कळुङ् गरैन्दु शायन्द
शेडरुम् बारु ळोरुङ् गरज्जिरज् जेर्त्ता रन्ऱे 1020

अवन् वीटु ऍय्तुम् वेलै–उनके मोक्षप्राप्ति के समय; आटवर्क्कु अरचन् ओटुम्–पुरुषोत्तम के साथ; विरिञ्चन् मुतल मेलोर्–विरंचि आदि स्वर्गवासी देव; तम्पियुम्–और कनिष्ठ भ्राता; अळुतु चोर–रोते-मुरझाते थे, तब; काटु अमर्–जंगल में रहनेवाले; मरमुम् मावुम्–वृक्ष और जानवर; कर्कळुम्–पर्वत भी; करैन्तु चायन्त–द्रवीभूत होकर नीचे गिर गये; चेटरुम् पार् उळोरुम्–नागलोकवासी और पृथ्वीवासी लोगों ने; करम–अपने हाथ; चिरम् चेर्त्तार्–सिर पर रख लिये। १०२०

जब जटायु को मोक्षप्राप्ति हुई, तब पुरुषोत्तम श्रीराम के साथ ब्रह्मादि देवता, श्रीराम के कनिष्ठ भ्राता सब मुख खोलकर रोये। कानन में विद्यमान तरु और जानवर और पर्वत पिघलकर धराशायी हुए। नागलोकवासियों और भूलोकवासियों ने अपने सिर पर हाथ रख लिये और मौन श्रद्धांजलि अर्पित की। १०२०

अऱन्दलै निन्ऱि लाद वरक्कन्ऩि नाण्मै तीर्न्देन्
तुऱन्दन्ऩ् ऱवञ्जॅय् वेन्ऩो तुऱप्पॅनो वुयिरैच् चॉल्लाय्
पिऱन्दन्ऩ् पॅऱ्ऱु निन्ऱ पॅऱ्ऱियाऱ् पॅऱ्ऱ तादै
इऱन्दन निरुन्दु ळेन्या नॅन्ऩ्शॅय्हे न्ऩिळव लॅन्ऱान् 1021

इळवल्–छोटे भैया; अऱम् तलै निन्ऱु इलात–धर्म पर स्थित न रहनेवाले; अरक्कन्ऩाल्–राक्षस के हाथों; आण्मै तीर्न्तेन्–मेरा पौरुष परास्त हो गया; पिऱन्तन्ऩ्–(दशरथ का) पुत्र पैदा हुआ; पॅऱ्ऱि निन्ऱ पॅऱ्ऱियाल्–मित्र-पुत्र को अपना

पुत्र मानने के जटायु के भाव के कारण; पॆट्र तातै–पिता के स्थान-प्राप्त पिता; इऱन्ततन्–मर गये; इरुन्तु उळेन् यान्–रह गया मैं; तुऱन्ततॆन्–सभी त्यागकर; इनि तवम् चॆय्वेनो–आगे तपस्या करूँगा; उयिरै तुऱप्पॆनो–(या) प्राण त्याग दूँ; ऎन् चॆय्केन्–क्या करूँ; ऎन्ऱान्–कहा (श्रीराम ने)। १०२१

तब श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि छोटे भैया ! उस अधर्मी रावण के हाथों मेरे पौरुष को हीनता आ गयी। दशरथ के पुत्र के रूप में पैदा हुआ। वे चल बसे। बाद जटायु ने मुझे अपना पुत्र माना। वे पिता भी चल बसे। मैं अब रह गया। सबको त्यागकर संन्यासी बनूँ और तपस्या करूँ ? या अपने प्राण ही त्याग दूँ ? क्या करूँ ? । १०२१

ऎन्ऱलु मिळैय कोवु मिऱैवनै यिऱैञ्जि याण्डुम्
वॆन्ऱियाय् विदियिन् ऱन्मै पऴुदिल विळैन्द दन्ऱो
निन्ऱिनि निनैव दॆन्ने नॆरुक्कियव् वरक्कर् तम्मैक्
कॊन्ऱपि नन्ऱो वॆय्य कॊडुन्दुयरक् कुळिप्प दॆन्ऱान् 1022

ऎन्ऱलुम्–कहने पर; इळैय कोवुम्–लघुराज ने; इऱैवतै इऱैञ्चि–भगवान से विनय के साथ; वॆन्ऱियाय्–विजयी; याण्टुम्–सदा; वितियिन् तन्मै–विधि का विधान; पऴुतु इल–अचूक; विळैन्ततु अन्ऱो–सफल होता है न; इनि निन्ऱु–अब खड़ा होकर; निनैवतु ऎन्ने–सोचने को क्या है; अ अरक्कर् तम्मै–उन निशाचरों को; नॆरुक्कि–आक्रमण करके; कॊन्ऱ पिन् अन्ऱो–मारने के बाद तो; वॆय्य कॊटु तुयर्–सन्तापी कठोर दुःख में; कुळिप्पतु–मग्न रहना है; ऎन्ऱान्–कहा। १०२२

जब श्रीराम ऐसा कहते हुए क्लान्त हुए, तब लघुराज लक्ष्मण ने प्रभु को नमस्कार करके निवेदन किया। विजयी वीर ! विधि का विधान अचूक है ! सदा सफल होता है न ? फिर चुप रहकर सोचने से क्या होगा ? उन राक्षसों को हमला करके नाश करने के बाद ही न दुःख में मग्न रहने की बारी आयेगी ! । १०२२

ऎन्दैयी दियम्बिऱ् ऱॆन्ने यॆळिमैयै याहि येळैच्
चन्दवार् कुऴलि नाळैत् तुऱन्दनै तणिदि येनुम्
उन्दैयै युयिरुण् डोनै युयिरुण्णु मूऱ्ऱ मिल्लाच्
चिन्दैयै याहि निन्ऱु सॆय्वदॆन् सॆय्है यॆन्ऱान् 1023

ऎन्तै–मेरे पितृसम; ईतु इयम्पिऱ्ऱु ऎन्नै–यह कहा क्यों; ऎळिमैयै आकि–दीन की तरह; एळै चन्त वार् कुऴलिताळै–कोमल और सुकेशिनी से; तुऱन्ततै–बिछुड़ गये; तणिति ऎनुम्–(उससे उत्पन्न क्रोध को) थाम लेंगे तो भी; उन्तैयै–आपके पिता (-समान जटायु) के; उयिर् उण्टोनै–प्राण हरनेवाले को; उयिर् उण्णुम् ऊऱ्ऱम् इल्ला–मारने के साहस से हीन; चिन्तैयै आकि निन्ऱु–मन के होकर; चॆय्वतु ऎन् चॆय्कै–जो करेंगे, वह क्या काम है; ऎन्ऱान्–कहा। १०२३

उन्होंने आगे यह भी कहा। मेरे पिता (-से भाई) ! आप ऐसा

हीन वचन क्यों करते हैं ? हीन-दीन वनकर आपने अबला सुकेशिनी सीताजी से वियोग पाया है ! उसका दुःख शायद आप सह भी लें तो भी अपने पिता (सम) जटायु के घातक रावण को मारने के प्रयास से विरत मन को लेकर आप क्या करेंगे ? । १०२३

❀ अव्वऴि यिळवल् कूड़ वऱिवनु मयर्वु नीङ्गि
इव्वऴि यिनैय वॅण्णि नॆळ्ळैमैप् पाल दॆन्ऩा
वॆव्वऴि पॊऴियुङ् गण्णीर् विलक्किनन् विऴिन्द तादै
शॆव्वऴि युरिमै यावुन् दिरुत्तुवज् जिरुव वॅन्ऱान् 1024

इळवल्–कनिष्ठ के; अ वऴि कूऱ–वैसा कहने पर; अऱिवनुम्–सर्वज्ञ भी; इ वऴि–अब; इत्तैय ऍण्णिल्–इस तरह सोचता रहूँ तो; एळ्ळैमै पालतु–(बुद्धि-) हीनता होगी; ऍन्ऩा–विचारकर; अयर्वु नीङ्कि–थकावट त्यागकर; वॆम् वऴि–क्लेश के कारण; पॊऴियुम् कण्णीर्–बहनेवाले आँसू को; विलक्किनन्–रोक लिया; चिरुव–छोटे भैया; विऴिन्त तातै–मृत पिता का; उरिमै यावुम्–कर्तव्य सब दाह-कर्म; चॆम् वऴि–उचित रीति से; तिरुत्तुवम्–पूर्ण रूप से करेंगे; ऍन्ऱान्–कहा । १०२४

जब छोटे भाई ने यह बात कही, तो सर्वज्ञ श्रीराम ने यह सोचा। हाँ ! अब इस भाँति सोचता रहना बुद्धिहीनता होगा। इसलिए वे सँभले। दुःखदायी घटनाओं के कारण जो आँसू आ रहे थे, उनको भी उन्होंने रोक लिया। फिर भाई से कहा कि छोटे भैया ! पिता का दाह-कर्म यथाविधि सुसम्पन्न करें। १०२४

इन्दन माह वेण्डुङ् गारहि लीट्टत् तोडुम्
शन्दनङ् गुवित्तु वेण्डु तरुप्पैयुन् दिरुत्तिप् पूवुम्
शिन्दिन नरणि तन्नाऱ् तीक्कडैन् दियऱ्ऱित् तॆण्णीर्
तन्दनन् ऱादै तन्नैत् तडक्कैयि नॆडुत्तुच् चार्वान् 1025

इन्तनम् आक वेण्टुम्–ईंधन बनने योग्य; कार् अकिल् ईट्टत्तु ओटुम्–काले अगरु के काष्ठों की राशि के साथ; चन्तनम् कुवित्तु–चन्दन-काष्ठ सजाकर; वेण्टु तरुप्पैयुम्–आवश्यक कुश; तिरुत्ति–बना लेकर; पूवुम् चिन्तितत्–फूल भी बिछाकर; अरणि तन्नाल्–अरणी से; ती कटैन्तु इयऱ्ऱि–मथकर अग्नि उत्पन्न करके; तॆळ् नीर् तन्तनन्–स्वच्छ जल से स्नान कराके; तातै तन्नै–पिता के शरीर को; तट कैयाल् ऍटुत्तु–विशाल हाथों से उठा लेकर; चार्वान्–(चिता के पास) आये । १०२५

ईंधन के रूप में काली अगरु की लकड़ियाँ और चन्दन की लकड़ियाँ रखकर चिता बनायी गयी। दर्भ बिछाये गये। फूल भी छिड़काये गये। अरणि मथकर आग जलायी गयी। फिर स्वच्छ जल से जटायु के शरीर को नहलाया गया। श्रीराम जटायु को अपने हाथों से उठा ले गये। १०२५

एन्दिन तिरुहै तन्ना लेऱ्ऱिन नीमन् दन्मेल्
शान्दोडु मलरु नीरुञ् जॊरिन्दनन् ऱलैयिऱ् चारक्
कान्दॆरि कज़ल मूट्टिक् कडन्मुऱै कडवा वण्णम्
नेऱ्न्दन तिरम्बु नन्नूल् मन्दिर नॆऱियिन् वल्लान् 1026

निरम्पु नल् नूल्–समस्त श्रेष्ठ शास्त्रों में; मन्तिर नॆऱियिल्–कथित मन्त्रों के प्रयोग में; वल्लान्–समर्थ श्रीराम ने; इरु कै तन्ताल्–अपने दोनों हाथों में; एन्तितन्–धारण करके; ईमम् तन् मेल् एऱ्ऱितन्–चिता पर चढ़ाया; चान्तु ओटु मलरुम् नीरुम्–चन्दन के साथ फूल और जल; चॊरिन्ततन्–छिड़के; तलैयिल् चार–सिरहाने पर; कान्तु ऎरि–जलती आग को; कज़ल मूट्टि–खूब जले, ऐसा लगाकर; कटन् मुऱै—कर्म-क्रम; कटवा वण्णम्—न छूटे, इस प्रकार; नेर्न्ततन्—संस्कार किये। १०२६

श्रीराम स्वयं समस्त शास्त्रज्ञ थे। उन्होने अपने दोनों हाथों में जटायु को धारणकर चिता पर रखा। चन्दन, फूल और जल छिड़के। सिरहाने में आग लगायी। उन्होने सारा पितृसंस्कार यथाविधि सम्पन्न किया। १०२६

तऴित्तन दन्नैय मेनि तामरै कॊऴुमु शॆन्देन्
तुऴित्तन वनैय वॆन्नत् तुळ्ळिशोर् वॆळ्ळक् कण्णन्
कुऴित्तनन् कान याऱ्ऱिऱ् कुऴित्तपिन् कॊण्ड नन्नीर्
अऴित्तन नरक्कऱ् चॆऱ्ऱ शोऱ्ऱत्ता नवलन् दीर्प्पान् 1027

तऴि ततनु अन्नैय मेनि–मेघ-सम शरीर; तामरै कॊऴुमु–कमल पर शोभित; चॆम् तेन्–लाल शहद; तुऴित्तत अन्नैय ॲन्न–की बूंदें पड़ी हों, ऐसा; तुळ्ळि चेर्–अश्रुकणों से युक्त; वॆळ्ळ कण्णन्–प्रवाहमय आँखों के श्रीराम; कान याऱ्ऱिल्–जंगली नदी में; कुऴित्ततन्–नहाये; कुऴित्त पिन्–नहाने के बाद; अरक्कन् चॆऱ्ऱ चीऱ्ऱत्तान्–राक्षस द्वारा हारने से उत्पन्न क्रोध से आक्रान्त जटायु का; अवलम् तीर्प्पान्–दुःख दूर करने के लिए; कॊण्ट–(जल) ले आकर; नल् नीर्–श्रेष्ठ उदक-दान; अऴित्ततन्–किया। १०२७

मेघवर्ण श्रीराम की कमल-सी आँखों से शहद की बूंदों के समान अश्रुजल प्रवहित हो रहा था। वे जाकर जंगली नदी में नहाये। जटायु के मन में रावण के हाथों हारने पर क्रोध रहा था। उसको शान्त करने के हेतु श्रीराम ने पवित्र जल ले आकर उदकक्रिया की। १०२७

मोट्टिनि युरैप्प दॆन्ने विरिज्जने मुदल मेल्होळ्
काट्टिय वुयिर्ह ळॆल्ला मरुन्दिन कळित्त पोलाम्
पूट्टिय कैह ळालप् पुळ्ळितुक् करशैक् कॊळ्हॆन्
रूट्टिय नन्नी रैय तुण्डनी रीत्त दन्ऱे 1028

पूट्टिय कैकळाल्–(अंजलि मुद्रा में) बने हाथों से; अ पुळ्ळितुक्कु अरचै–उस खगराज को; कॊळ्कॆन्ऱु–ग्रहण कीजिए, कहकर; ऊट्टिय नल् नीर्–जो उदक दान

किया गया, वह पवित्र जल; ऐयऩ् उण्ट नीर् ऑत्ततु–भगवान श्रीराम के पीत जल के समान हो गया; विरिञ्चऩ् मुतल–ब्रह्मा आदि; मेल् कीऴ् काट्टिय–ऊपर और नीचे के भुवनों में रहनेवाले; उयिर्कळ् ऍल्लाम्–सभी जीवों ने; अरुन्तित्त–पीकर; कळित्त–आनन्दानुभव किया; मीट्टु–फिर; इति उरैप्पतु ऍऩ्ऩॆ–कहना क्या है। १०२८

जब उन्होंने अपने अंजलि-सम्पुट से जटायु को जलदान किया, तब मानो वह उनके ही उदर में पहुँच गया। उसके फलस्वरूप ब्रह्मा से लेकर ऊपर और नीचे के सभी लोकों के जीवों ने जल का अशन कर आनन्दानुभव किया ! फिर कहने को क्या है ? । १०२८

पल्वहैत् तुऱैयिल् वेदप् पलिक्कडऩ् पलवु मुऱ्ऱि
विल्वहैक् कुमर निऩ्ऱ वेलैयिन् वेलै शाऱ्न्दान्
तॉल्वहैक् कुलत्तिऩ् वन्दान् ऱुन्बत्ताऱ् पुनलुन् दोय्न्दु
शॅल्वहैक् कुरिय वॅल्लाञ् जॅय्हुवा ऩॆन्न वॅय्योन् 1029

पल् वकैयिल्–(शास्त्र-विहित) विविध प्रकार से; वेत–वेदोक्त विधि के अनुसार; पलि कटऩ् पलवुम्–बलि आदि अनेक दान; मुऱ्ऱि–पूरा करके; विल् वकै कुमरऩ्–धनुर्धर कुमार; निऩ्ऱ वेलैयिऩ्–जब रहे, तब; वॅय्योऩ्–सूर्य; तॉल् वकै कुलत्तिऩ् वन्ताऩ्–प्राचीन (काश्यप-)कुल में आये; तुऩ्पत्ताल्–(जटायु की मृत्यु से) उत्पन्न दुःख से; पुऩलुम् तोयन्तु–जल में स्नान करके; चॅल् वकैक्कु उरिय–गम्य श्रेष्ठ गति में पहुँचाने योग्य; ऍल्लाम्–सभी (तर्पण) संस्कार; चॅय्कुवाऩ् ऍऩ्ऩ–मानो स्वयं करेंगे, ऐसा; वेलै चार्न्ताऩ्–(पश्चिमी) सागर में मग्न हुए। १०२९

धनुर्धर श्रीराम अनेक रूप से शास्त्रों में विहित वेदसम्मत बलिदान आदि संस्कार पूरा किया। जब वे उनसे निवृत्त हुए, तब सूर्य भी पश्चिमी सागर में डूब गये। शायद वे भी प्राचीन काश्यपकुल में आये जटायु को उद्गति में पहुँचाने के लिए पितृकर्म करने के हेतु गये। सूर्य जटायु के ज्ञाति थे। १०२९

10. अयोमुहिप् पडलम् (अयोमुखी पटल)

अन्दिवन् दणुहुम् वेलै यव्वऴि यवरु नीङ्गिच्
चिन्दुरच् चॅन्निऩ् ताण्डोर् मैवरैच् चेक्कै कॉण्डार्
इन्दिरऱ् कडङ्गल् शॅल्ला विराक्कद रॅऴुन्द दॅन्ऩ
वॅन्दुयरक् कूऱ्ऱ मान विरियिरुळ् वीङ्गिऱ् ऱन्ऱे 1030

अन्ति वन्तु अणुकुम् वेलै–जब सन्ध्यावेला आयी, तब; अवरुम्–वे भी; अ वऴि नीङ्कि–वहाँ से चलकर; आण्टु–उस वन में; चिन्तुर चॅन्नित्तु–लाल शिखरों से युक्त; ओर् मै वरै–एक काले पर्वत पर; चेक्कै कॉण्टार्–ठहरे; इन्तिरऱ्कु अटङ्कल् चॅल्ला–इन्द्र के वश में न आनेवाले; इराक्कतर् ऍऴुन्ततु ऍन्ऩ–राक्षस

उठे हों, ऐसा; वॅम् तुयरुक्कु–असह्य (विरह-)वेदना का; ऊट्रम् आत–बलदायक; विरि इरुळ्–विस्तृत अन्धकार; वीङ्किट्रु–घना हो आया। १०३०

शाम आ गयी। श्रीराम और लक्ष्मण वहाँ से चलकर एक अरुण-शिखर काले पर्वत पर जाकर ठहरे। तब अन्धकार, देवेन्द्र का वश तोड़कर चले आनेवाले राक्षसों के समूह के समान घना फैला। १०३०

तेनुह वरुवि शिन्दित् तॅरुमर लुरुव पोलक्
कानमु मलैयु मॅल्लाङ् गण्णिनी रुहुक्कुङ् गङ्गुल्
मानमुञ् जिनमुन् दादै मरणमु ममैन्द शिन्दै
ञानमुन् दुयरुन् दम्मुण् मलैन्दॅन नलिन्द दन्ट्रे 1031

कानमुम् मलैयुम् ॲल्लाम्–वन, पर्वत, सभी; तॅरुमरल् उरुव पोल–दुःखी होते हों जैसे; उकु तेन्–जो चूते उस शहद (कणों) को; अरुवि–(और) सरिताओं को; चिन्ति–बहाकर; कण्णिन् नीर् उकुक्कुम्–अश्रुजल बहानेवाला; कङ्कुल–अन्धकार; मानमुम्–स्वाभिमान; चिनमुम्–और क्रोध; तातै मरणमुम्–पिता (-सम जटायु का) मरण-दुःख; अमैन्त चिन्तै–इनसे भरे (श्रीराम और लक्ष्मण के) मन में; ञानमुम् तुयरुम्–ज्ञान और दुःख; तम्मुळ् मलैन्तु ॲन–आपस में टकराते हों, जैसे; नलिन्ततु–(अन्धकार ने) बढ़ती पायी। १०३१

श्रीराम और लक्ष्मण की व्यथा देखकर मानो वन और पर्वत दुःखी हुए। वन शहद रूपी आँसू बरसा रहे थे और पर्वत सरिताओं के रूप में अश्रु की धारा बहा रहे थे। अन्धकार ऐसा आक्रान्त करता हुआ बढ़ा, जैसा स्वाभिमान, क्रोध और पितृ-मरण-दुःख से भरे श्रीराम और लक्ष्मण के मन में ज्ञान और दुःख दोनों मे परस्पर टकराहट हुई थी और दुःख प्रबल हो आया था। १०३१

मॅय्युउ वुणर्वु शॅल्ला वरिविनै वित्तैयि नक्कुम्
पॉय्युरु पिरवि पोलप् पोक्करुम् बॉङ्गु कङ्गुल्
नॅय्युरु नॅरुप्पिन् वीङ्गि निमिर्तर वुयिर्प्पु नीळक्
कैयुउ वुरुहिन् ड्राराल् काणलाङ् गरैयिड्रन्ट्रे 1032

मॅय् उणर्वु उउ चॅल्ला–सुदृढ़ आत्मज्ञान-रहित; अरिवित्तै–बुद्धि को; वित्तैयित् ऊक्कुम्–कर्मफलानुसार चलानेवाले; पॉय् उरु पिरवि पोल–अनित्य जन्म की तरह; पोक्कु अरुम्–अनिवार्य; पॉङ्कु कङ्कुल्–वर्धनशील अन्धकार; नॅय् उरु नॅरुप्पित् वीङ्कि–घृत-लगी अग्नि के समान बढ़कर; निमिर् तर–फैला तब; उयिर्प्पु नीळ–लम्बी साँस छोड़कर; कैयुउवु–निष्क्रिय; उरुकिन्ड्राराल्–बने रहे तब; काणलाम् करैयिड्रु–अदृश्य किनारा वाला हो गया। १०३२

सुदृढ़ आत्मज्ञान-रहित बुद्धि को जैसे अनित्य जन्म कर्मफल के रास्ते में हठात् चलाता है, वैसे वह दुर्दम वर्धनशील निशा घृतपीत अग्नि के

समान बढ़ती चली और निःश्वास छोड़ते हुए जो दुःखी हो रहे थे उन दोनों के लिए उसका तट (अन्त) अदृश्य हो रहा। १०३२

यामदु तॅरिद ऱेऱ्ऱा मिऩ्ऩुयिर्च् चऩहि यॅऩ्ऩुम्
कामरु तिरुवै नीत्तो मुहमदि काण्गि लादो
तेमरु तॅरियल् वीरन् कण्णॅनत् तॅरिन्द शॅय्य
तामरै कङ्गुर् पोदुङ् गुविन्दिल तऩ्मै यॅऩ्ऩो 1033

ते मरु–दिव्य गन्ध वाली; तॅरियल् वीरऩ्–मालाधारी वीर; कण् ॲऩ तॅरिन्त–के नेत्र के समान विद्यमान; चॅय्य तामरै–लाल कमलपुष्प; कङ्कुल् पोतुम्–रात में भी; कुविन्तिल–बन्द नहीं हुए; इऩ् उयिर्–मधुर प्राण-सम; चऩकि ॲऩ्ऩुम्–जानकी नाम की; कामरु तिरुवै–अपनी सुन्दर श्री को; नीत्तो–त्यागकर; मुक मति–मुख-चन्द्र; काण्किलातो–न देखकर; ॲऩ्ऩो–और किस कारण; याम् अतु–हम वह; तॅरितल् तेऱ्ऱाम्–जान नहीं सकते। १०३३

दिव्यगन्धपूर्ण मालाधारी श्रीराम के नेत्रों के समान जो लाल कमल-पुष्प रहे, वे उन्मीलित नहीं हुए। रात का समय था तब भी वे बन्द नहीं हुए। क्या कारण था ? उनकी श्री उनसे अलग हो गयी, इसलिए ? या उनका मुख चन्द्र नहीं दिखाई दिया, इसलिए ? या कोई अन्य कारण था ? हमें विदित नहीं होता ! । १०३३

पॅण्णियऱ् ऱीब मऩ्ऩ पेरॅऴि लाट्टि माट्टु
नण्णिय पिरिवु शॅय्द नवैयिना रवर्हळ् शिन्दै
ॲण्णिय दऱिद ऱेऱ्ऱा मिमैप्पिल विराम ऩॅऩ्ऩुम्
पुण्णियऩ् कण्णुम् वऩ्ऱोट् टम्बिहण् पोऩ्ऱ वऩ्ऱे 1034

पॅण् इयल्–स्त्री जाती की; तीपम् अऩ्ऩ–दीप के समान; पेर् ॲऴिलाट्टि माट्टु–अत्यन्त सुन्दरी सीता के प्रति; नण्णिय–किया गया; पिरिवु–वियोग; चॅय्त–जिन्होंने करवाया; नवैयिऩार् अवर्कळ्–उन पापियों ने; चिन्तै ॲण्णियतु–मन में (क्या) सोचा, वह; अऱितल् तेऱ्ऱाम्–जान नहीं पाते हम; इरामऩ्–श्रीराम; ॲऩ्ऩुम् पुण्णियऩ् कण्णुम्–पुण्यपुरुष की आँखें; वऩ तोळ्–बली भुजाओं के; तम्पि कण् पोऩ्ऱतु–छोटे भाई की आँखों की-सी (हालत में) रहीं। १०३४

पापी राक्षसों ने स्त्री-स्वरूप दीप-सी अत्यन्त सुन्दरी सीता के प्रति श्रीराम-वियोग का बहुत बड़ा अपराध किया था। वे लोग क्या सोचते रहे ? यह जानने का सामर्थ्य हममें नहीं है। पर पुण्यपुरुष श्रीराम की आँखें और वीरबाहु लक्ष्मण की आँखें —ये निर्निमेष रहीं। १०३४

वण्डुळर् कोदैच् चीदै वाण्मुहम् बॉलिय वाऩिल्
कण्डऩॅ ऩॅऩ्ऱु वीरर् काण्डॉरु कादल् काट्टत्

तण्डमिळ्त् तॆन्ऱ लॆन्तुङ् गोळरात् तवऴुम् जारल्
विण्डलम् विळङ्गुम् जॆव्वि वॆण्मदि विरिन्द दन्ऱे 1035

वण्टु उळर्–भ्रमर जिसको कुरेदते हैं; कोतै चीतै–वैसी केश वाली सीता का; वाळ् मुकम्–प्रकाशमय मुख; वानिल् पॊलिय–आकाश में शोभा; कण्टतॆन् ऎन्ऱु–मैंने देखा, ऐसा; वीरऱ्कु–श्रीरघुवीर को; आण्टु–तब; ओर् कातल् काट्ट–एक (मोहक भ्रम) पैदा करते हुए; तण् तमिळ् तॆन्ऱल् ऎन्नुम्–शीतल मधुर मलयपवन रूपी; कोळ् अरा–भयंकर सर्प; तवऴुम् चारल्–जहाँ मन्द-मन्द चलता था, उस पर्वत तल में; विण् तलम् विळङ्कुम्–आकाश में शोभायमान; चॆव्वि–आकर्षक; वॆण् मति–श्वेत चन्द्रमा; विरिन्ततु–चाँदनी फैलाता हुआ निकला। १०३५

तब चन्द्र उदित हो आया, मानो वह वीर रघुवर श्रीराम के मन में यह मोहक प्यारा भ्रम पैदा करना चाहता था कि मैंने आकाश में सुकेशिनी सीता का मुख देखा था, जिसके केश पर भ्रमर बैठे कुरेदते है। जिस पर्वत के ऊपर यह चन्द्र दिखाई दिया, उस पर्वत-तल में शीतल मधुर (तमिळ का अर्थ मधुर है) मलयपवन भी मन्द-मन्द वहा। पर वह श्रीराम के लिए भयंकर सर्प के समान रेंगता लगा ! । १०३५

कळियुडै यनङ्गक् कळ्वन् करन्दुऱै कङ्गुऱ् कालम्
वॆळिपडुत् तुलह मॆल्लाम् विळक्किय निलविन् वॆळ्ळम्
नळियिरुट् पिळम्बॆन् ऱीण्डु नञ्जॊडु कलन्द नाहत्
तुळैयॆयिऱ् ऱूऱ्ऱ लुऱ्ऱ कनलॆनच् चुट्ट दन्ऱे 1036

कळि उटै–मत्त; अनङ्क कळ्वन्–चोर अनंग; करन्तु उऱै–जब छिपा रहता है; कङ्कुल् कालम्–उस रात के समय में; उलकम् ऎल्लाम्–सारे लोक को; वॆळिप्पटुत्तु विळक्किय–श्वेत प्रकट करनेवाला; निलविन् वॆळ्ळम्–चाँदनी का प्रवाह; ईण्टु–अब; नलि इरुळ् पिळम्पु ऎन्ऱु–अधिक अन्धकार के पुंज के समान मान्य; नञ्चु ओटु कलन्त–विष से मिला; नाक–सर्प के; तुळै ऎयिऱ्ऱु–छिद्रसहित दाँत से; ऊऱ्ऱल् उऱ्ऱ–रिसनेवाले; कनल् ऎन–(विष की) आग के समान; चुट्टतु–जलाने लगा। १०३६

उस रात को, जिसमें मत्त चोर अनंग छिपा फिरता था, चन्द्र सारे जग को उज्ज्वल करता हुआ उदित हुआ। पर वह उस विषाग्नि के समान जलाने लगा, जो अन्धकारपुंज के समान काला और विषैले नाग के दाँत के छिद्र से बाहर निकला था। १०३६

इडम्बडु मानन् दुन्ब मिरण्डुम् वन्दुऱ्ऱ पोऴ्दिल्
विडम्बरन् दनैय दाय वॆण्णिला वॆदुप्प वीरन्
पडम्बरन् दनैय वल्हुऱ् पाल्परन् दनैय तीञ्जॊल्
तडम्बड कण्णि नाडन् ऱनिमैयै निन्नैय लुऱ्ऱान् 1037

इटम् पट्टु–विशाल; मातम्–अपमान; तुन्पम्–दुःख; इरण्टुम्–दोनों; वन्तु उऱ्ऱ पोऴ्तिन्–जब प्राप्त हुए, तब; विटम् परन्तु अत्तैय–विष फैला जैसे; वॆळ् निला वॆतुप्प–श्वेत चन्द्रमा ने तप्त किया तो; वीरन्–श्रीरघुवीर; पटम् परन्तु अत्तैय–(सर्प-) फन खुला (जो है) वैसा; अल्कुल–वरांग; पाल् परन्त अत्तैय–दूध-भरा हो वैसी; तीम् चॊल्–मधुर बोली; तटम् पट्टु कण्णिताळ्–विशाल आँखें, इनसे युक्त सीताजी का; ततिमैयै–एकाकीपन को; निनैयल् उऱ्ऱान्–सोचने लगे। १०३७

श्रीराम को अपमान और दुःख का अनुभव सताने लगा। इसलिए श्वेत चन्द्रमा, शरीर में विष व्याप्त हो ऐसा उन्हें तपाने लगा। तब वे श्रीरघुवीर सर्पफन के समान विशाल वरांग, दुग्धसम मधुर बोली और विशाल आँखें —इनसे शोभित सीताजी के एकाकीपन के बारे में सोचने लगे। १०३७

मडित्त वायन् वयङ्गु मुयिर्प्पित्तन्
तुडित्तु वीङ्गि यॊडुङ्गुरु तोळित्तन्
पॊडित्त तण्डळिर्प् पूवॊडु माल्करि
ऑडित्त कॊम्बनै याडिरत् तुन्नुवान् 1038

मटित्त वायन्–ओंठ चबाते हुए; वयङ्कुम् उयिर्प्पित्तन्–ठण्डी आह भरते हुए; तुटित्तु वीङ्कि–तड़पकर, फूलकर; ऑटुङ्कुरु तोळित्तन्–फिर शिथिल पड़नेवाले कन्धों से युक्त श्रीराम; पॊटित्त तण् तळिर्–तभी प्रकट हुए शीतल पल्लवों; पूवोटुम्–और फूलों के साथ; माल् करि–बड़े हाथी द्वारा; ऑटित्त–तोड़ी गयी; कॊम्पु अत्तैयाळ्–पुष्पशाखा-तुल्य; तिऱत्तु–(सीताजी) के सम्बन्ध में; उन्नुवान्–सोचने लगे। १०३८

वे ओंठ चबाते हुए दीर्घ निःश्वास छोड़ने लगे। उनके कन्धे फूल उठते फिर पतले हो जाते। वे उन सीताजी के सम्बन्ध में सोचने लगे, जो सद्यप्रकटित कोमल पल्लवों और फूलों के साथ किसी गज द्वारा तोड़ी गयी पुष्पशाखा के समान थीं। १०३८

वाङ्गु विल्लन् वरुम्वरु मॆन्ऱिरु
पाङ्गु नीणॆऱि पार्त्तन ळोवॆनुम्
वीङ्गु वेलै विरितिरै यामॆन
ओङ्गि योङ्गि यॊडुङ्गु मुयिर्प्पिनान् 1039

वीङ्कु वेलै–उमगते हुए समुद्र की; विरि तिरै आम् ऎन–बढ़ती हुई तरंगों के समान; ओङ्कि ओङ्कि ऑटुङ्कुम् उयिर्प्पिनान्–फूलकर थमनेवाली साँसों के साथ; वाङ्कु विल्लन्–झुके धनुष के साथ; वरुम् वरुम्–आयेंगे, आयेंगे; ऎन्ऱु–सोचकर; इरु पाङ्कुम्–दोनों ओर; नीळ नॆऱि पार्त्तनळो–लम्बी बाट जोहती रही क्या; ऎनुम्–श्रीराम यह कहते। १०३९

श्रीराम की साँसें उमगते सागर की उठती लहरों के समान उठतीं

और गिरती। वे सोचते कि शायद सीता यह सोचकर कि झुके धनुप के साथ श्रीराम आ जायँगे, अवश्य आ जायँगे दोनों ओर लम्वा वाट जोह रही हों। १०३९

अॅऩ्ऩि नॅऩ्दन ळॅऩ्वदु शालुमो
मिऩ्ऩि नॅऩ्द विलङ्गु मॅयिऱ्ऱिऩाऩ्
निन्नि लॅऩ्ऱु नॅरुक्किय पोदवळ्
अॅऩ्नि नॅन्दन ळोवॅऩ वॅण्णुमाल् 1040

मिऩ् निऩॅन्त-विद्युत का स्मरण दिलानेवाले; विलङ्कुम् ॲयिऱ्ऱिऩाऩ्-शोभायमान दाँत वाले; निल् निल् ॲॅऩ्ऱु-खड़ा रह, खड़ा रह कहते हुए; नॅरुङ्किय पोतु-(रावण) जब नियराया तव; अवळ्-(सीता) उसने; अॅऩ् निऩॅन्तऩळो-क्या सोचा होगा; अॅऩ्पतु चालुमो-यह समझना साध्य है क्या; अॅऩ् निऩॅनृतळ् ओ-क्या सोचकर चिन्तित हुई; अॅऩ ऍण्णुम्-ऐसा विचार करते (श्रीराम)। १०४०

विद्युत का स्मरण दिलानेवाले दाँतों से युक्त रावण, 'ठहर जा, खड़ी रह' कहता हुआ जव सीता के पास आया, तव सीताजी ने क्या सोचा होगा? श्रीराम यह समझने का प्रयास करते। नहीं। यह अनुमान करना साध्य नहीं है! वेचारी! क्या ही सोचा होगा? यह प्रश्न करते हुए श्रीराम दुःख का अनुभव करते। १०४०

नञ्जु कालु नहैनॅडु नाहत्तिन्
वञ्ज वायिन् मदियॅन मट्कुवाळ्
वॅञ्जि नञ्जॅ यरक्कर्तम् वॅम्मैयै
अञ्जि नान्गॉलॅन् ऱैयुरु मालॅन्वान् 1041

नञ्चु कालुम्-विष-स्रावक; नकै नॅटु नाकत्तिन्-दाँतों वाले (राहु नाम के) लम्वे सर्प के; वञ्च वायिन्-भयंकर मुख में (ग्रस्त); मति अॅन-चन्द्र के समान; मट्कुवाळ्-क्षीण होनेवाली सीता; वॅम् चिनम् चॅय्-भयंकर क्रोधकारी; अरक्कर् तम् वॅम्मैयै-राक्षसों के क्रोध से; अञ्चिनान् कॉल्-श्रीराम डर गये शायद; अॅन्ऱु ऐयुरुम् आल्-ऐसा संशय करती होगी; अॅन्पान्-ऐसा (श्रीराम) सोचते। १०४१

फिर सोचते— विष-स्रावक दाँतों के (राहु) सर्प के मुख में ग्रस्त चन्द्र के समान सीता क्षीण होती होगी। वह शायद ऐसा संशय करती है कि भयंकर क्रोधी राक्षसों की क्रूरता से श्रीराम भयभीत हो गये हैं। १०४१

पूण्ड मानमुम् बोक्करुङ् गादलुम्
तूण्ड निन्ऱिडै तोमुरु मारुयिर्
मीण्डु मीण्डु वॅदुप्प वॅदुम्बिनान्
वेण्डु मोवॅनक् किन्नमुम् विल्लॅन्बान् 1042

पूण्ट मानमुम्-प्राप्त अपमान; पोक्कु अरुम् कातलुम्-और अचल (सीता-)

प्रेम (से); तूण्ट नित्रु-प्रेरित होकर; इटै-मध्य में; तोम् उरुम्-कष्ट उठानेवाले; आर् उयिर्-अपने प्रिय प्राणों को; मीण्टुम् मीण्टुम्-पुनःपुनः; वेंतुप्प-तापने से; वेंतुम्पित्तान्-संतप्त श्रीराम; इन्नुमुम्-अब भी; अँतक्कु-मुझे; विल् वेण्टुमो-धनु चाहिए क्या; अँन्पान्-कहते। १०४२

उनके प्राण टिके रहे तो उसका कारण अपमान का भाव और अचल (सीता-) प्रेम की प्रेरणा था। तो भी वे प्राण पुनःपुनः तप्त हो रहे थे। इसलिए वे खिन्नमन होकर यह अपने से पूछते कि क्या मुझे अब भी एक धनु रखना है ? । १०४२

विल्लै नोक्कि नहुमिह वीङ्गुतोळ्
कल्लै नोक्कि नहुङ्गडैक् काल्वरुम्
शॉल्लै नोक्कित् तुणुक्कुरुन् तॉन्मरै
अँल्लै नोक्किनर् यावरु नोक्कुवान् 1043

तॉल् मरै अँल्लै-नोक्कित्तर्-प्राचीन वेदों के पारंगत; यावरुम्-सभी (ज्ञानियों) द्वारा; नोक्कुवान्-वन्द्य; विल्लै नोक्कि नकुम्-धनु को देखकर हँसते; मिक वीङ्कुम्-अति पुष्ट; तोळ् कल्लै नोक्कि-कन्धों के पर्वतों को देखकर; नकुम्-हँसते; कटै काल् वरुम्-अन्त में मिलनेवाला; चॉल्लै नोक्कि-निन्दा का कथन सोचकर; तुणुक्कु अँनुम्-सिहर उठते। १०४३

श्रीराम सनातन वेदों के पारंगत ज्ञानियों से भी अन्वेषित परमपुरुष थे। वे अपने धनु को देख (उसकी व्यर्थता पर) हँसते। अपने उन्नत पर्वत-सम कन्धों को देखकर हँसते। आखिर जो अपमान होगा, उसकी कल्पना करके सिहर उठते। १०४३

कूदिर् वाडैवॅङ् गूर्रिनै नोक्कित्तान्, वेद वेळ्वि विदिमुरै मेविय
शीदै यॅन्वयिर् ऱीर्न्दन ळोवॅनुम्, पोद हम्मॅनप् पॉम्मॅ नुयिर्प्पित्तान् 1044

कूतिर् वाटै वॅम् कूर्रित्तै-शरद की उदीची हवा रूपी निर्मम यम को; नोक्कित्तान्-देखकर; पोतकम् अँत-गज के समान; पॉम् अँन् उयिर्प्पित्तान्-'बम्ह' शब्द के साथ निःश्वास छोड़ते हुए; वेत वेळ्वि विति मुरै-वेदोक्त होम आदि करके; मेविय-विवाहित; चीतै-सीता; अँन् वयिन्-मुझसे; तीर्न्ततळो-(सदा के लिए) छूट गई क्या; अँनुम्-कहते। १०४४

शरदकालीन ठण्डी उदीची के समान बहनेवाली वायु रूपी यम को देखकर गज के समान श्रीराम ने 'बम्ह' शब्द के साथ निःश्वास छोड़ा। फिर सोचा कि क्या वेदविहित होम आदि करके जिस सीता को मैंने ब्याहा था, वह मुझे छोड़कर सदा के लिए चली (मर) गयी ? । १०४४

नित्रु पल्लुयिर् काल्तरुकु नेर्न्दयान्, ऑन्रु णक्कुल मङ्गैयॉ रेन्दिळै
तन्रु यर्क्कड ऱीर्क्कुज् जदिरिलेत्, नन्रु नन्रॅन् वलियॅन नाणुमाल् 1045

निन्ऱु–राजा रहकर; पल् उयिर् कात्तऱ्कु–नाना जीवों की रक्षा करने हेतु; नेर्न्त यात्–नियत मैं; ऎन् तुणै–अपनी संगिनी; कुल मङ्कै–उच्च कुलीन; और एन्तिऴै तन्–एक रमणी को; तुयर् कटल् तीर्क्कुम्–दुःख-सागर से तारने की; चत्तिर् इलेन्–शक्ति नहीं रखता; ऎन् वलि नन्ऱु–मेरा बल बड़ा अच्छा है; नन्ऱु ऎन–अच्छा है, कहकर; नाणुम्–शरमाते। १०४५

मैं राजा बनने को हूँ और राजा का काम है अनेक जीवों की रक्षा करना। किन्तु मैं अपनी ही संगिनी को, उच्च कुलोद्भवा सुन्दरी स्त्री को दुःख-सागर से तारने में असमर्थ साबित हो गया। हाँ! मेरी शक्ति का भी क्या कहना? मेरा बल बड़ा अच्छा, अच्छा है! यह कहते हुए श्रीराम लज्जा प्रकट करते। १०४५

शायुन् दम्बि तिरुत्तिय तण्डळिर्, तीयु मङ्गवै तीय्दलुञ् जॆव्विरुन्
दायु मावि पुऴुङ्ग वऴुङ्गुमाल्, वायुम् नॆञ्जुम् बुलर मयङ्गुवान् 1046

वायुम् नॆञ्चुम्–मुख और गला; पुलर–सूख जाते; मयङ्कुवान्–वे बेहोश हो जाते; तम्पि तिरुत्तिय–अनुज के द्वारा अच्छी तरह सजाए गये; तण् तळिर्–शीतल पल्लवों पर; चायुम्–लेटते; अङ्कु अवै तीयुम्–वे तब झुलस जाते; तीय्तलुम्–झुलसते ही; चॆम् इरुन्तु–सीधे बैठे; आयुम्–मन में तर्क करते; आवि पुऴुङ्क–प्राणतप्त होकर; अऴुङ्कुम्–जर्जर हो जाते। १०४६

श्रीराम का मुख सूख गया। गला सूख गया। लक्ष्मण ने शीतल पल्लवों को बिछाकर अच्छी शय्या बना दी थी। श्रीराम बेहोश-से होकर उस पर लेटते। पर पल्लवों के झुलस जाने से वे उठ बैठते। बैठे हुए मन में तर्क करते। प्राणों के सूखने से शिथिल पड़ जाते। १०४६

पिरिन्द वेदुहोल् पेरवि मानङ्गोल्
तॆरिन्द दिल्लै तिरुमलर्क् कण्णिमै
पॊरुन्द वायिरङ् गर्पङ्गळ् पोक्कुवान्
इरुन्दुङ् गण्डिलन् कङ्गुलि नीऱरो 1047

तिरु मलर् कण् इमै–सुन्दर कमल-सम आँख के पलकों के; पॊरुन्त–लगने की उतनी देर में; आयिरम् कर्पङ्कळ् पोक्कुवान्–सहस्र कल्प जो मिटा सकते हैं; इरुन्तु–(वे) बैठे रहकर; कङ्कुलिन् ईऱु–रात का अन्त; कण्टिलन्–देख नहीं पाये; पिरिन्त एतु कोल्–वियोग उसका कारण था क्या; पेर् अपिमानम् कोल्–गम्भीर प्रेम क्या; तॆरिन्तलु इल्लै–विदित नहीं हुआ। १०४७

वे श्रीराम स्वयं परमात्मा थे, जिनके पलकों के लगने की उतनी देर में अनेक कल्प बीत सकते थे। पर अब वे श्रीराम काले अँधेरे की रात का अन्त न होता समझ कष्ट उठा रहे हैं! इसका क्या कारण है? सीता-वियोग है या सीता का प्रेम? विदित नहीं होता। १०४७

वॆऩ्ऱि विऱ्कै यिळैयव मेलॆलाम्
ऒऩ्ऱु पोल वुलप्पिल नाट्कडाम्
निऩ्ऱु काण्डियऩ् ऱॆऩ्ऱॆडुङ् गङ्गुराऩ्
इऩ्ऱु नीळ्वदऱ् केदुवॆऩ् ऱॆऩ्ऩुमाल् 1048

(लक्ष्मण से) वॆऩ्ऱि विल् कै-विजयी धनुर्हस्त; इळैयव-छोटे भैया; मेल् ऍलाम्-पहले सदा; ऒऩ्ऱु पोल-एक ही सम; उलप्पु इल नाट्कळ्-लम्बे दिनों में; निऩ्ऱु काण्टि अऩ्ऱे-(अनिद्र) रहकर देखते रहे न; इऩ्ऱु नॆंटुम् कङ्कुल्-आज की यह लम्बी रात; नीळ्वतऱ्कु-इस तरह बढ़ती है, इसका; एतु ऍऩ्-हेतु क्या है; ऍऩ्ऩुम्-(श्रीराम) पूछते। १०४८

श्रीराम अपने दुःखोद्वेग में लक्ष्मण से पूछते कि छोटे भैया! पहले समान रूप से सभी दिनों में तुम अनिद्र हो जागते रहे हो! आज यह रात इतनी लम्बी बन रही है। इसका कारण क्या है? । १०४८

नीण्ड मालै मदियिऩै नित्तलुम्
मीण्डु मीण्डु मॆलिन्दऩै वॆळ्हुवाय्
पूण्ड पूणवळ् वाण्मुहम् बोदर
ईण्डु शाल विळङ्गिऩै यॆऩ्ऩुमाल् 1049

मालै नीण्ट मतियिऩै-सन्ध्या में ही पूर्ण बने चन्द्र को; नित्तलुम्-दिने-दिने; मीण्टुम् मीण्टुम्-पुनःपुनः; मॆलिन्तऩै वॆळ्कुवाय्-(अपनी हीनता पर) घटते लजाते थे; पूण्ट पूणवळ्-आभरणभूषिता सीता के; वाळ् मुकम्-उज्ज्वल मुख के; पोतर-कहीं चले जाने से; ईण्टु चाल विळङ्किऩै-यहाँ अपना ठाठ दिखाते हो; ऍऩ्ऩुमाल्-कहते। १०४९

सन्ध्या में ही श्रीराम ने पूर्णचन्द्र को देखा। तो पूछ बैठे कि चाँद! तुम दिनोंदिन सीताजी के मुख से तुलने की शक्ति न रखने के कारण लज्जित और क्षीण हुए जाते रहे! अब आभरणभूषित सीताजी का उज्ज्वल मुख यहाँ नहीं रहता, क्या इसी कारण अपना ठाठ दिखा रहे हो? । १०४९

नीणि लावि निशैनिऱै तऩ्गुलत्, ताणि यऩ्ऩ पऴिवर वऩ्ऩदु
नाणि नाडु कडन्दऩ नाङ्गॊलो, शेणु लाम्दऩित् तेरव ऩॆऩ्ऩुमाल् 1050

चेण् उलाम्-उच्च आकाश में संचार करनेवाले; तनि तेर् अवऩ्-अनुपम (एकचक्र) रथ के रथी सूर्य; नीळ् निलाविऩ्-विस्तृत चाँदनी-सम; इचै निऱै-प्रशंसा से भरे; तऩ् कुलत्तु-अपने कुल पर; आणि अऩ्ऩ पऴि वर-कील के समान (गम्भीर गड़ा) अपयश आया, इसलिए; अऩ्ऩतु नाणि-उससे शरम खाकर; नाटु कटन्तऩऩ् आम् कॊलो-देश छोड़कर चला गया क्या; ऍऩ्ऩुम्-कहते। १०५०

यह सूर्य कहाँ गये? आकाश में अप्रमेय एकचक्र-रथ में संचार करनेवाले सूर्य क्या यह सोचकर लज्जा के कारण इस देश से बाहर हो गये

कि हमारे कुल की विस्तृत चाँदनी-सम कीर्ति मिट गयी और उस पर कलंक लग गया है ? श्रीराम यह प्रश्न करते । १०५०

शुट्ट कङ्गु नॆडिदॆंऩच् चोर्हिऩ्ऱाऩ्
मुट्टि ळन्द नॆंडुमुडक् कोनॊडुम्
कट्टि वाळरक् कऩ्गदि रोनैयुम्
इट्ट ऩऩ्गॊ लिरुञ्जिऱै यॆऩ्ऩुमाल् 1051

चुट्ट कङ्कुल–(श्रीराम को) जिसने जलाया, वह रात; नॆंटितु ऍन–लम्बी है, सोचकर; चोर्किऩ्ऱाऩ्–मुरझाते है; वाळ् अरक्कऩ्–कठोर राक्षस ने; मुट्टु इऴन्त–घुटनों से रहित; नॆंटु मुट कोऩ् ओट्टुम्–बड़े लँगड़े साथी अरुण के साथ; कतिरोऩैयुम्–सूर्य को भी; कट्टि–बाँधकर; इरुम् चिऱै–बड़ी कारा में; इट्टतऩ् कोल्–बन्द कर दिया गया; ऍऩ्ऩुम्–कहते । १०५१

यह रात लम्बी है और मुझे जलाती है ! ऐसा अनुभव करके श्रीराम बहुत वेदना से छटपटाते । वे अनुमान लगाते कि क्रूर राक्षस ने घुटनों से रहित लँगड़े अरुणदेव (सूर्य-सारथी) के साथ सूर्य को भी बाँधकर बड़ी और विकट कारा में बन्द रख दिया है ! । १०५१

तुडियि नेरिडै तोऩ्ऱल ळामॆनिल्
कडिय कारिरुट् कङ्गुलिऩ् कऱ्पम्बोय्
मुडियु माहिऩ् मुडियुमिम् मूरिनीर्
नॆंडिय नानिल मॆंऩ्ऩ निऩैक्कुमाल् 1052

तुटियिऩ् नेर्–डमरू-समान; इटै–कमर वाली; तोऩ्ऱलळ् आम् ऍनिल्–मुझसे न देखी जायगी; कटिय–घृणित; कार् इरुळ्–काले अन्धकार की; कङ्कुलिऩ्–रात रूपी; कऱ्पम् पोय् मुटियुम् आकिल्–कल्प अन्त हो जायगा तो; इ मूरि नीर्–इस बलवान सागर से; नॆंटिय नाल् निलम्–(घिरी) विस्तृत चतुर्विधा भूमि भी; मुटियुम्–मिट जायगी; ऍऩ्ऩ निऩैक्कुम्–यह विचार करते । १०५२

श्रीराम यह सोचते कि डमरू-सी कटि वाली मेरी सीता मेरे सामने प्रकट नहीं होगी और उसी स्थिति में काले अन्धकार की यह रात रूपी कल्प अन्त हो जायगा तो यह बलवान सागर से वलयित पृथ्वी भी मिट जायगी । १०५२

तिऱत्ति ऩादऩ शॆय्दवत् तोरुऱ, ऒऱुत्तु ञालत् तुयिर्तमै युण्डुऴल्
मऱत्ति ऩार्हळ् वलिऩ्दऩर् वाळ्वरेल्, अऱत्ति नालिऩि यावदॆ ऩॆऩ्ऩुमाल् 1053

तिऱत्तु–शक्ति से; चॆय् तवत्तोर्–कर्तव्य तप के तपस्वी; इऩ्ऩातऩ उऱ–कष्ट पायें; ऒऱुत्तु–ऐसा उनको पीड़ित करके; ञालत्तु उयिर् तमै उण्टु–लोकों के वासी जीवों को खाकर; उऴल्–घूमते हैं (जो); मऱत्तिऩार्कळ्–वे बली राक्षस;

वलिन्ततर् वाळ्वरेल्–(वैसे ही) अत्याचार करते जीते रहेंगे तो; इति अऱत्तिनाल् आवतु–अब धर्म से होनेवाला; ॲन्–क्या; ॲन्नुम्–कहते। १०५३

ये राक्षस अपने मनोबल के साथ कर्तव्य तपस्या में लीन रहनेवाले तपस्वियों को कष्ट देते हैं और त्रस्त करते हैं। वे विश्व के सारे जीवों को खाते फिरते हैं। वे इसी प्रकार आततायी बने जीवित रहेंगे तो धर्म से क्या होनेवाला है? —श्रीराम दुःख के साथ सोचते। १०५३

तेनिन् ऱॅय्वत् तिरुनॅडु नाण्शिलैप्, पूनिन् ऱॅय्युम् पॊरुहणै वीरनुम्
मेनिन् ऱॅय्य विमलनै नोक्किनान्, तानिन् ऱॅय्य किलान्तडु माऱुवान् 1054

तेनिन्–भ्रमरों की बनी; तॅय्व तिरु नॅटु नाण्–दिव्य सुन्दर लम्बी ज्या को; चिलै–(इक्षु-) धनु में बाँधकर; पॊरु कणै पू–संग्रामकारी पुष्प-शर; निन्ऱु ॲय्युम्–लगातार चलानेवाले; वीरनुम्–वीर मन्मथ ने भी; मेल् निन्ऱु–आकाश में स्थित होकर; ॲय्य–शर चलाते; विमलनै नोक्किनान्–विमलमूर्ति श्रीराम को निशान बनाकर देखा; तान् निन्ऱु ॲय्यकिलान्–खुद चला नहीं पाया; तटुमाऱिनान्–डगमगाया। १०५४

मन्मथ भ्रमरों की ज्यासहित इक्षु-धनु में पुष्प-शर संधानकर काम-समर करनेवाला है। उसने आकाश में स्थित होकर विमलमूर्ति श्रीराम पर शर चलाने के विचार से निशाना लगाया। पर उसमें हिम्मत नहीं रही। वह डगमगा गया। १०५४

उळन्द योहत् तॊरुमुदल् कोबत्ताल्
इळन्द मेनियु मॅण्णि यिरङ्गुवान्
कॊळन्दु णैक्कीरु वन्मै किडैक्कुमो
पळन्दु यर्क्कुप् परिवुऱुम् पान्मैयाल् 1055

उळन्त योकत्तु–गम्भीर योगावस्था में (जो) रहे; ऑरु मुतल्–अद्वितीय आदिदेव शिव के; कोपत्ताल्–क्रोध से; इळन्त मेनियुम् ॲण्णि–अपना गँवाया शरीर स्मरण कर; इरङ्कुवान्–पछतानेवाले; पळम् तुयर्क्कु–पुराने कष्ट के लिए; परिवु उऱुम् पान्मैयाल्–दुःख करते रहते समय; तुणैक्कु–सहायक बनने को; ऑरु कॊळुम् वन्मै–(नया) एक प्रबल साहस; किटैक्कुमो–प्राप्त हो सकता है क्या। १०५५

गम्भीर योगरत आदिदेव शिवजी पर उसने एक बार शर चलाया था। फलस्वरूप शिवजी के क्रोध से उसका शरीर जल गया। वह उसका स्मरण करके दिनोंदिन दुःखी हो रहा था। ऐसे पुराने दुःख में मग्न रहनेवाले उसको सहायक के रूप में साहस दिलानेवाली हिम्मत हो सकती है क्या? । १०५५

नील मान निऱत्त निनैन्दवै
शूल माहत् तॊळैवरुम् वेलैयिन्

मूल मामलर् मुन्नवन् मुऱ्ऱुरुम्
काल मामॆंतक् कङ्गुल् कऴिन्ददे 1056

नीलम् आत निऱ्तत्तन्–नील; निनैन्तु–ऐसा सोचकर; अवै–उन विचारों के; चूलम् आक–शूल की तरह; तॊळैवु उरुम्–सालते; वेलैयिन्–समय; मूलम्–सृष्टिमूल; मा मलर् मुन्नवन्–उत्कृष्ट (नाभी-)कमल में जो प्रकट हुए थे, वे (ब्रह्मा); मुऱ्ऱु उरुम्–जब अन्त हो जाते हैं; कालम् आम् अँत–वह काल आ गया हो, ऐसा; कङ्कुल् कऴिन्ततु–रात बीती। १०५६

नील श्रीराम ऐसा सोच रहे थे और वे विचार उनको शूल के समान साल रहे थे। तब रात बीती और ऐसा लगा कि रात कल्पकाल तक रही हो और सृष्टि के मूल, श्रीविष्णु के नाभि-कमल-वासी ब्रह्मा का कल्प अभी पूरा हुआ हो। १०५६

वॆंळ्ळञ् जिलम्बुम् पाऱ्कडलिन् विरुम्बुन् दुयिलै वॆरुत्तळियुम्
कळ्ळुञ् जिलम्बुम् बूङ्गोदै कऱ्पिन् कडलिऱ् पडिवाऱ्कुप्
पुळ्ळुञ् जिलम्बुम् बॊऴिल्शिलम्बुम् पुनलुञ् जिलम्बुम् पुनैहोल
उळ्ळुञ् जिलम्बुञ् जिलम्बावे लुयिरुण् डाहुम् वहैयुण्डो 1057

वॆंळ्ळम् चिलम्पुम् पाल् कटलिल्–अधिक गर्जनशील क्षीरसागर में; विरुम्पुम् तुयिलै–प्यारी निद्रा को; वॆरुत्तु–त्यागकर; अळियुम् कळ्ळुम्–भ्रमरों और मधु से; चिलम्पुम्–शब्दायमान; पूम् कोतै–सुन्दर माला से अलंकृत; कऱ्पिन् कटलिल्–पतिव्रता सीता के प्रेम के सागर में; पटिवाऱ्कु–मग्न रहनेवाले को (समझाते हुए); पुळ्ळुम् चिलम्पुम्–पक्षी बोले; पॊऴिल् चिलम्पुम्–उद्यानों ने शोर किया; पुनलुम् चिलम्पुम्–(जलाशय का) जल शब्दित हुआ; पुनै कोल–(उनसे नया उत्साह तथा) नई रौनक पाकर; उळ्ळुम् चिलम्पुम्–(श्रीराम का) मन भी बोल उठा; चिलम्पा वेल्–(ये सब) शब्द नहीं करते तो; उयिर् उण्टाकुम् वकै उण्टो–(मूर्च्छा में रही) जान के लौट आने का मार्ग हो सकता है क्या। १०५७

सवेरा हो गया। शब्दायमान क्षीरसागर में शयन छोड़कर भ्रमर और शहद से शब्दित केश वाली सीताजी के पातिव्रत्य रूपी शील-सागर में जो मग्न रहते थे, उन श्रीराम को पक्षीगण, उपवन, जल आदि शब्द करके सवेरा होने का समाचार सुनाने लगे। तब श्रीराम के मन में एक उत्साह भर गया, मानो मन भी बोलने लगा। अगर ये सब शब्द नहीं होते तो श्रीराम के प्राणों के पुनः लौट आने का मार्ग कैसे होता ? । १०५७

मयिलुम् पॆडैयु मुडन्ऱिरिय मानुङ् गलैयु मरुविवरप्
पयिलुम् बिडियुङ् गडहळिरुम् वरुव तिरिव पाऱ्क्किन्ऱान्
कुयिलुङ् गरुम्बुञ् जॆऴुन्देनुम् कुऴलुम् याऴुम् कॊऴुम्बाहुम्
अयिरु ममुदुञ् जुवैतीर्त्त मॊऴियैप् पिरिन्दा लऴियानो 1058

मयिलुम् पॆटैयुम्–मोर और मोरनी; उटन् तिरिय–साथ-साथ घूमते है; मानुम्

कलैयुम्–हरिण और हरिणी; मरुवि वर–पास-पास आते हैं; पयिलुम् पिटियुम्–मिले रहनेवाले हथिनियाँ और; कटकरियुम्–मत्तगज; वरुव तिरिव–आते, घूमते हैं; पार्क्किन्ऱान्–(उनको) देखते हैं; कुयिलुम्–कोयल; करुम्पुम्–ईख; चॅळ्ळुम् तेऩुम्–गाढ़ा शहद; कुळलुम्–और वंशी; याळुम्–वीणा; कॉळुम् पाकुम्–गाढ़ी चाशनी; अयिरुम्–खाण्ड; अमुतुम्–अमृत; चुवै तीर्त्त–इनकी मधुरता को मात देनेवाली; मॊळियै–बोली वाली (सीता) से; पिरिन्ताल्–बिछुड़े रहें, तब; अळियातो–घुलेंगे नहीं क्या। १०५८

श्रीराम अपने सामने देखते हैं कि मोर और मोरनी, हरिण और हरिणी और हाथी और हथिनी —इनके जोड़े साथ-साथ घूमते फिरते हैं। वे तो सीताजी से बिछुड़े रहते हैं। सीताजी इतनी मधुरभाषिणी थीं कि उनकी वचन-मधुरता के सामने कोयल की कूक, ईख का रस, बाँसुरी का नाद, गाढ़े शहद का स्वाद, वीणा का स्वर, खांड की रुचि सब फीका पड़ गया था। तो फिर उनका मन नहीं घुलेगा क्या ? । १०५८

मुडिनाट् टियकोट् टुदयत्तिन् मुऱ्ऱ वुऱ्ऱान् मुतुकङ्गुल्
विडिनाट् कण्डुङ् गिळिमिळऱ्ऱु मॅन्शॊऱ् केळा वीरऱ्काण्
डडिनाट् चॅन्दा मरैयॊडुङ्गु मत्तन मिलळाल् यानडैत्त
कडिनाट् कमलत् तॅन्नवविळ्त्तुक् काट्टु वान्बोऱ् कदिर्वॅय्योन् 1059

मुटि नाट्टिय–किरीटभूषित-सी दिखती; कोट्टु उतयत्तिन्–शिखर-सहित उदयगिरि पर; कतिर् वॅय्योन्–गरम किरणमाली; मुतु कङ्कुल्–लम्बी रात का; विटि नाळ् कण्टुम्–अन्त और दिन का उदय देखकर भी; किळि मिळऱ्ऱुम्–शुक की सी बोली वाली सीता की; मॅन् चॊल् केळा–मृदु-मधुर बोली न सुनने से (दुःखी); वीरऱ्कु–वीर श्रीराम को; आण्टु–तब; अटि नाळ्–पहले; चॅम् तामरै ऑतुङ्कुम् अत्तम्–लाल कमल पर रहनेवाली हंसिनी (सीता); यान् अटैत्त–(जिसको कल) मैंने बन्द कराया; कटि नाळ् कमलत्तु–सुगन्धित इस नवीन कमल में; इलळ् ॲन्न–नहीं हैं, कहते हुए; अविळ्त्तु काट्टुवान् पोल्–मानो खोलकर दिखा रहे हों, ऐसा; मुऱ्ऱ उऱ्ऱान्–पूर्ण प्रकाशमय प्रकट हुए। १०५९

शिखर-किरीटी उदयगिरि पर सूर्य पूर्णरूप से प्रकट हुए। उनकी रश्मि से कमल खिले। वे कमल पिछली रात बन्द हुए थे। लम्बी रात बीत गयी और सवेरा हो गया। तो भी श्रीराम को शुक-सम मधुरभाषिणी सीताजी की मीठी वाणी सुनने को नहीं मिली थी। वे दुःखी थे। (इन सब बातों को मिलाकर कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि) सूर्य ने कमलों को पिछली रात बन्द कराया था और अब उनको खोलकर श्रीराम को दिखाया कि उन सुगन्धित व नवविकसित कमलों में कमलनिवासिनी, हंसिनी-सम सीताजी नहीं हैं। १०५९

पॊऴिलै नोक्कुम् पॊऴिलुडैयुम् पुळ्ळै नोक्कुम् वूङ्गॊम्बिन्
ऑऴिलै नोक्कु मिळमयिलि नियलै नोक्कु मियल्बानाळ्

कुळलै नोक्किक् कोंङ्गैयिणैक् कुवट्टै नोक्कि यक्कुवट्टिन्
तोंळिलै नोक्कित् तन्नुडैय तोळै नोक्कि नाट्कळिप्पान् 1060

पूम् कोम्पिन् ॲळिलै नोक्कुम्–पुष्पलता-सदृश सुन्दर; इळ मयिलिन् इयलै नोक्कुम्–बालमयूर की छटा-सदृश; इयलपु आताळ्–आभायुक्त; कुळलै नोक्कि–(सीताजी के) केश का स्मरण करके; पोंळिलै नोक्कुम्–(श्रीराम) उद्यान को देखते; इणै कोंङ्कै कुवट्टै–स्तनद्वय के पर्वतशिखरों का; नोक्कि–स्मरण करके; पोंळिल् उरैयुम्–उद्यान में रहनेवाले; पुळ्ळै नोक्कुम्–(चक्रवाक-)पक्षियों को देखते; अ कुवट्टिन् तोंळिलै नोक्कि–उन पर (आलिंगन) का अपना व्यवहार स्मरण करके; तन्तुटैय तोळै नोक्कि–अपने कन्धों की (भाग्यहीनता) सोचकर; नाळ् कळिप्पान्–दिन बिताते। १०६०

(विरही का मन प्रिया के रूप का स्मरण करने से बहुत दुःखी होता है। कुछ वस्तुएँ उस स्मरण को उद्दीप्त करती हैं।) श्रीराम पुष्पलता-सी सुन्दर और बालमयूर-सी आभा वाली सीताजी का केश स्मरण करते और उपवन को देखते। दोनों पर्वतशिखर-सम स्तनों की याद करते और उपवन में रहनेवाले चक्रवाक पक्षी को देखते। उन स्तनों से आलिंगन करने के अपने प्रणय-व्यापार का स्मरण करते और अपने कन्धों की भाग्यहीनता पर विचार करते। वे ऐसे ही दिन को बिताने लगे। १०६०

अन्न कालै यिळवीर नडियिन् वणङ्गि नॅडियोयप्
पॊन्नै नाडा दीण्डिरुत्तल् पॊरुळो वॆन्नप् पुहळोनुम्
शॊन्न वरक्क निरुक्कुमिडन् दुरुवियऱिदुन् दॊडर्न् दॆन्न
मिन्नुञ् जिलैयार् मलैतॊडर्न्द वॆयिल्वॆङ् गानम् बोयिनराल् 1061

अन्न कालै–उस समय; इळैय वीरन्–कनिष्ठ वीर लक्ष्मण के; अटियिन् वणङ्कि–पैरों पर नमस्कार करके; नॅटियोय्–महान; अ पॊन्नै नाटातु–उन स्वर्ण(-सम सीता) का अन्वेषण न करके; ईण्टु इरुत्तल्–यहाँ (व्यर्थ) रहना; पॊरुळो–अर्थ-भरा (काम) है क्या; ॲन्न–कहने पर; पुकळोनुम्–प्रशंसित श्रीराम ने भी; चॊन्न अरक्कन् (जटायु-)कथित राक्षस; इरुक्कुम् इटम्–का वासस्थान; तॊटर्न्तु–निरन्तर; तुरुवि अऱितुम्–खोज देखेंगे; ॲन्न–(कहा) कहने पर; मिन्नुम्–चमकते; चिलैयार्–धनुओं के धारक; मलै तॊटर्न्त–पर्वत से लगे; वॆयिल् वॆम् कानम्–धूप में कठोर वन में; पोयिनर्–चले। १०६१

तब लघु भाई वीर लक्ष्मण ने उनको नमस्कार किया और विनय सुनायी। महान ! स्वर्ण-समाना सीताजी का अन्वेषण किये विना यहाँ बैठे रहना कोई अर्थ रखता है क्या ? तब प्रशंसा योग्य श्रीराम ने भी हामी भरी। हाँ ! जटायु द्वारा कथित उस राक्षस (रावण) के स्थान का अन्वेषण करें। सर्वत्र ढूँढ़कर देखें। फिर दोनों चमकदार धनुर्धर धूप में जंगल में ढूँढ़ते हुए गये। १०६१

आशै शुमन्द नेंडुङ्गरि यन्नार्, पाशिलै तुन्रु वनम्बल पिन्नाक्
काशरु कुन्रिनों डारु कडन्दार्, ओशनै योनबदों डोन्बदु शॅन्रार् 1062

आचै चुमन्त–दिशावाही; नॅटुम् करि अन्नार्–बड़े गजों से तुल्य वे; पचुमै इलै तुन्रु–हरे पत्तों से पूर्ण; वनम् पल–अनेक वनों को; पिन्ना–पीछे छोड़कर; काचु अरु–निर्दोष; कुन्रिन् ओटु–पर्वतों के साथ; आरु–नदियों को; कटन्तार् पार करके; ऑन्पतु ऑटु ऑन्पतु योचनै–नौ और नौ (अठारह) योजन दूर; चॅन्रार्–गये। १०६२

दिशावाही बड़े गजों से तुल्य वे वीर हरे पत्तों से पूर्ण अनेक वनों को पीछे छोड़ते हुए, निर्दोष पर्वतों और गहरी नदियों को पार कर अठारह योजन दूर चले। १०६२

मट्पडि शॅय्द तवत्तिनिन् वन्द, कट्पडि कोदैयै नाडिनर् काणार्
उट्पडि कोब मुयिर्प्पोडु पोङ्गप्, पुट्पडि युङ्गुळिर् वार्पोळिल् पुक्कार् 1063

मण् पटि चॅय्त–अणुओं से निर्मित इस भूमि के किये; तवत्तिनिल् वन्त–तप के फलस्वरूप अवतरित; कळ् पटि कोतैयै–शहद-जमे केश वाली को; नाटिनर्–ढूँढ़कर; काणार्–न देख पाये; उळ् पटि कोपम्–अन्दर जमा रहा कोप; उयिर्प्पु ऑटु पॉङ्क–निःश्वास के साथ निकल आया; पुळ् पटियुम्–जिसमें खग रहते थे; कुळिर् वार् पॉळिल्–उस शीतल विशाल उद्यान में; पुक्कार्–प्रविष्ट हुए। १०६३

पर सीताजी, जो अणुओं की बनी इस पृथ्वी की तपस्या के फलस्वरूप अवतरित हुई थीं, कहीं भी दिखाई नहीं दीं। उनको न पाकर उन वीरों का कोप निःश्वास के रूप में प्रकट हुआ। तब वे एक ऐसे उपवन में पहुँचे जो शीतल, विशाल और पक्षियों से पूर्ण था। १०६३

आरियर् शिन्दै यलक्क णरिन्दान्, नारियै यॅङ्गणु नाडिन नाडिप्
पेरुल हॅङ्गु मुळन्रिरुळ् पिन्ना, मेरुविन् वॅङ्गदिर् मीळ मरैन्दान् 1064

आरियर्–श्रेष्ठ (श्रीराम और लक्ष्मण) के; चिन्तै अलक्कण् अरिन्तान्–मन के दुःख के ज्ञाता; वॅम् कतिर्–गरम किरणों के सूर्य; पेर् उलकु ऎङ्कुम्–विस्तृत लोक भर में; उळन्रु–सायास घूमकर; नारियै–स्त्री-रत्न को; ऎङ्कणुम्–सर्वत्र; नाटितन्–खोजकर; इरुळ् पिन्ना–अँधेरे को पीछा करते आने देते हुए; मेरुविन् मीळ मरैन्तान्–मेरु के पीछे छिप गये। १०६४

तब सूर्य भी अस्त हो गये। आर्य वीर, श्रीराम और लक्ष्मण का दुःख उन्हें मालूम था। वे भी शायद सायास सब स्थानों में नारीरत्न सीताजी का अन्वेषण करके थक गये। इसलिए वे मेरु के पीछे छिप गये और अन्धकार उनके पीछे लगा हुआ आ गया। १०६४

अरण्डरु हुञ्जॅरि यञ्जन पुञ्जम्
उरण्डन पोलिरु ळॅङ्गणु मुन्दत्

तॆरुण्डरि विल्ववर् शिन्दैयिन् मुन्दि
इरुण्डन मादिर मॆट्टु मिरण्डुम् 1065

चॆरि अञ्चत्त पुञ्चम्–घने अंजनपुंज; उरण्टन्न पोल्–मानो टकराते हों; इरुळ्–अन्धकार; अरण्टु–सहमकर; अरुकुम् ॲङ्कणुम् उन्त–पार्श्व में सब ओर ढकेलने से; तॆरुण्टु–भ्रमित हो; अरिवु इल्लवर् चिन्तैयिन्–ज्ञान से हीन बने मनुष्य के मन के समान; मुन्ति–(समय से) पहले ही; मातिरम् ॲट्टुम् इरण्टुम्–आठों और दोनों (ऊपर और नीचे) दिशाएँ; इरुण्टन्–अन्धकारमय हो गयीं। १०६५

वह अँधेरा घना था। ऐसा लगता था कि अंजनपुंज आपस में टकराकर, ढकेला जाकर और डर के कारण सब स्थानों में प्रेपित किये गये हों। दसों दिशाओं (ऊपर और नीचे की ओर मिलाकर) में वह इस प्रकार व्याप्त रहा, जिस प्रकार भ्रमित बुद्धि वाले के मन में अज्ञान व्याप्त रहता है। १०६५

इळिक्करै यिन्जॊ लियैन्दन्न पूवै
किळिक्करै युम्बॊऴिर् किञ्जुह वेलि
ऒळिक्करै मण्डिल मॊत्तुळ दङ्गोर्
पळिक्करै कण्डदिल् वैहल् पयिन्ऱार् 1066

इळिक्कु–'इळि' स्वर से; अरै–तुल्य; इन् चॊल् इयैन्त–मधुर स्वर में बोलनेवाले; पूवै–'नाहणवाय्' नामक पक्षी; किळिक्कु अरैयुम्–शुकों को जहाँ बोली सिखा रहे थे; पॊऴिल्–एक उपवन में; किञ्चुक वेलि–किंशुक वृक्षों के घेरे में; अङ्कु–वहाँ; ऒळि–प्रकाश में; करै मण्टिलम् ऒत्तु उळतु–कलंक-सहित चन्द्रमण्डल के समान; ओर् पळिक्कु अरै–एक स्फटिक-शिला; कण्टु–देखकर; अतिल्–उसमें; वैकल् पयिन्ऱार्–ठहरे रहे। १०६६

श्रीराम और लक्ष्मण एक स्फटिक-शिला पर ठहरे। वह शिला एक उपवन के मध्य में थी और कलंकसहित चन्द्रमण्डल के समान प्रकाशमान थी। उस उपवन के चारों ओर किंशुक वृक्षों का घेरा था और उसमें 'नाहणवाय्' नामक पक्षी शुकों को बोलना सिखा रहे थे। उन पक्षियों की बोली 'इळि' स्वर के समान मीठी थी (तमिऴ की संगीत-विद्या में सात स्वर हैं, जिनके नाम इळि, कुरल्, तुत्तम्, कैक्किळै, उऴै, विळरि और तारम् हैं।)। १०६६

अव्विडै यॆय्दिय वण्ण लिरामन्
वॆव्विडै पोलिळ वीरनै वीर
इव्विडै नाडिनै नीर्कॊणर् हॆन्ऱान्
तॆव्विडै विल्लव नुन्दनि शॆन्ऱान् 1067

अ इटै ॲय्तिय–वहाँ जो आये; अण्णल् इरामन्–महिमायुक्त श्रीराम ने; वॆम् विटै पोल्–क्रुद्ध ऋषभ-तुल्य; इळ वीरनै–छोटे वीर को; वीर–वीर; इ इटै–अब;

नीर् नाटित्तै–जल खोजकर; कॉणर्क–लाओ; ऍन्ऱान्–कहा; तॅव् इटै–शत्रु को भगानेवाले; विल्लवन्तुम्–धनुर्धर भी; तनि चॅन्ऱान्–एकाकी चले। १०६७

वहाँ पहुँचने के बाद महिमायुक्त श्रीराम ने क्रुद्ध ऋषभ-सम छोटे वीर से कहा कि वीर ! अब जाकर कहीं से (पेय) जल ढूँढ़कर लाओ। शत्रु को भगाने की शक्ति रखनेवाले धनुर्धर लक्ष्मण भी उस रात में अकेले जल के अन्वेषण में चल पड़े। १०६७

ऍङ्गणु नाडिनन् नीरिडै काणान्
शिङ्ग मॅन्नत्तमि यन्ऱिरि वानै
अङ्ग वन्नत्तु ळयोमुहि यॅन्नुम्
वॅङ्ग णरक्कि विरुम्बिनळ् कण्डाळ् 1068

ऍङ्कणुम् नाटितन्–सब कहीं ढूँढ़ा; नीर् इटै काणान्–जल का स्थान नहीं देखा; चिङ्कम् ऍन–सिंह के समान; तमियन्–अकेले; तिरिवानै–घूमनेवाले उनको; अङ्कु अ वन्नत्तुळ्–वहाँ उस वन में; अयोमुकि ऍन्नुम्–अयोमुखी नाम की; वॅम् कण् अरक्कि–क्रूर राक्षसी ने; विरुम्पिनळ्–प्यार करके; कण्टाळ्–देखा। १०६८

लक्ष्मण बहुत देर घूमे। पर जल कहीं दिखाई नहीं दिया। तब एक क्रूर राक्षसी ने उनको देख लिया। उसका नाम अयोमुखी था। उसने सिंह-समान घूमनेवाले उनको प्यार की दृष्टि से देखा। १०६८

नन्मदि योर्पुहल् मन्दिर नामच्
चॉन्मदि यावर विऱ्ऱॉडर् हिऱ्पाळ्
तन्मद नॊडुदन् वॅम्मै तणित्ताळ्
मन्मद नामिव नॅन्नु मनत्ताळ् 1069

नल् मतियोर् पुकल्–श्रेष्ठ बुद्धिमानों द्वारा उच्चरित; मन्तिर नामम्–मन्त्र-नामों के; चॊल्–शब्दों को; मतिया–मानकर जो स्तम्भित होता; अरविल्–(नीच) सर्प के समान; तॊटर्किऱ्पाळ्–अनुगमन करती हुई; तन् मतन् ओटु–अपने काममद के साथ; तन् वॅम्मै–अपनी गरमी को; तणित्तु आळ्–शान्त करके वश में रखनेवाले; मन्मतताम् इवन्–मन्मथ ये है; ऍन्नुम् मनत्ताळ्–ऐसा विचार करती हुई (वह)। १०६९

वह नीच सर्प के समान थी, जो निपुण ओझा के मन्त्रों से भी बद्ध और कीलित नहीं होता है। उस अयोमुखी ने उनका पीछा करते हुए यह धारणा कर ली कि ये मन्मथ हैं और ये ही मेरा काममद और काम-ताप शान्त करके मेरे ऊपर शासन कर सकते हैं। १०६९

अळुन्दिय शिन्दैय ळाहि यरक्कि
ऍळुन्दुयर् काद लुळन्ऱिदिर् निन्ऱाळ्

पुऴुङ्गुमेन् नोय्हॅडप् पुल्लुवॅ नन्ऱि
विऴुङ्गु वॅन्नोवॅन् विम्म लुऴन्ड्राळ् 1070

अरक्कि–वह राक्षसी; अऴुन्तिय चिन्तैयळ् आकि–लक्ष्मण में मग्न मन वाली होकर; ॲऴुन्तु उयर्–उठकर उमड़नेवाले; कातलिन् उऴन्ऱु–प्रेम से अभिभूत होकर; ॲतिर् निन्ड्राळ्–सामने खड़ी रही; पुऴुङ्कुम्–तापनेवाला; ॲन् नोय् कॅट–अपना रोग दूर करते हुए; पुल्लुवॅन्–आलिंगन कर लूँगी; अन्ड्रि–नहीं तो; विऴुङ्कुवॅतो–या इसको निगल ही जाऊँ; ॲंत–सोचकर; विम्मल् उऴन्ड्राळ्–आर्तता से भर गयी। १०७०

उसका मन लक्ष्मण पर अटक गया। प्रेम का ज्वर उठा और बढ़ने लगा। असाध्य पीड़ा सहते हुए वह उनके सामने आयी और आप ही आप कहने लगी कि मैं इसका ऐसा आलिंगन करूँगी कि मुझे वेदना देने वाला यह कामरोग शान्त हो जाय। या शायद अपनी इच्छा की प्रबलता के कारण उठाकर निगल जाऊँगी क्या? ऐसा सोचती हुई वह आर्तता से भर गयी। १०७०

इरन्दॅन तॅय्दिय पोदियै यादु
करन्दन नॅन्निर् कॉण्डुह डन्दॅन्
मुरज्जिनिन् मेवि मुयङ्गुवॅ नॅन्ना
विरॅन्दॅदिर् वन्दन डीयिनुम् वॅय्याळ् 1071

तीयिनुम् वॅय्याळ्–आग से भी क्रूर; इरन्तनॅन्–याचना करती हुई; ॲय्तियपोतु–जाऊँ तब; इयैयातु–सम्मत न होकर; करन्तनन् ॲन्निल्–(दया से) वंचित करा देगा तो; नत्ति कॉण्टु–(इसको) बलात् लेकर; कटन्तु–यहाँ पार कर; ॲन् मुरल्चितिल् मेवि–अपनी गुफा में जाकर; मुयङ्कुवॅन्–मिल लूँगी; ॲन्ना–निश्चय कर; विरॅन्तु ॲतिर् वन्तनळ्–सवेग सामने आयी। १०७१

अग्नि से भी अधिक क्रूर उस राक्षसी ने आगे विचार किया कि जब मैं इसके पास जाकर प्रेम की याचना करूँगी तब अगर वह इनकार करके अपनी दया से मुझे वंचित करेगा, तो बलात् उसे उठा लूँगी, अपनी गुफा में ले जाकर मनमाने रूप से उससे मिल लूँगी। इस निश्चय के साथ वह उनके सामने सवेग आयी। १०७१

उयिर्प्पि नॅरुप्पुमिऴ् हिन्ड्रन वॉन्ड्र
ॲयिड्रिन् मलैक्कुल मॅण्णिल वुण्णुम्
वयिड्रळ् वयक्कॉडु माशुणम् वीशुम्
कयिड्रि नशैत्त मुलैक्कुऴि कण्णाळ् 1072

उयिर्प्पिन्–साँसों के साथ; नॅरुप्पु उमिऴ्किन्ड्र–आग उगलनेवाले; ॲयिड्रिन् मलै कुलम्–दाँतों वाले गजसमूहों को; ऑन्ड्र–एक साथ; ॲण् इल उण्णुम्–अगणित

खानेवाले; वयिऱ्ऱळ्–पेट की; वय कॉंटु माचुणम्–बली भयंकर अजगर की; वीचुम् कयिऱ्ऱित्–लपेटी रस्सी से; अचैत्त–बँधे; मुलै–स्तनों और; कुऴि कण्णाळ्–खूब धँसी हुई आँखों वाली थी। १०७२

(उसका वर्णन सात पद्यों में पाया जाता है।) उसका पेट था, जो कि साँस के साथ आग निकालनेवाले पर्वत-सम गजों के अनगिनत समूहों को समा सकता था। उसके स्तन बलवान भयंकर अजगर लपेटकर बाँधे गये थे। आँखें गढ़ों के समान धँसी हुई थीं। १०७२

पऱ्ऱिय	कोळरि	याळि	पणिक्कण्
तॅऱ्ऱिय	पादच्	चिलम्बु	तरित्ताळ्
इऱ्ऱुल	हियावैयु	मीरुरु	मन्नाळ्
मुऱ्ऱिय	जायिरु	पोलु	मुहत्ताळ् 1073

पऱ्ऱिय–गृहीत; कोळरि–सिहों; याळि–और शरभों को; पणि कण् तॅऱ्ऱिय–फणी सर्प से गूँथकर; चिलम्पु तरित्ताळ्–उसके नूपुर पहने हुए थी; यावैयुम्–सभी लोक; इऱ्ऱु ईरु उरुम्–(जिस दिन) पूर्णरूप से नष्ट होंगे; अ नाळ्–उस दिन के; मुऱ्ऱिय–पूर्णरूप से विवर्धित; जायिरु पोलुम्–सूर्य की तरह; मुकत्ताळ्–(दाहक) मुख की। १०७३

उसके पैरों के नूपुर साँपों से गुँथे हुए सिंह थे, जिनको उसने स्वयं पकड़ा था। उसका मुख उस युगान्तकालीन गर्मी में पूर्णरूप से बढ़े हुए सूर्य के समान सन्तापक था, जिस (युगान्त) में सारे लोक विनष्ट हो जाते हैं और सबका अन्त हो जाता है। १०७३

आऴि	वऱक्क	मुहक्क	वमैन्द
मूऴै	यॅन्नप्पॉलि	मॉय्बिल	वायाळ्
कूऴै	पुऱत्तु	विरिन्ददॉर्	कॉट्पाल्
ऊऴि	नॅरुप्पि	नुरुत्तनै	यॉप्पाळ् 1074

आऴि वऱक्क–समुद्र को सुखाते हुए; मुकक्क–उठा लेने के लिए; अमैन्त–बने; मूऴै ॲन्त–कलछे के समान; पॉलि–दृश्यमान; मॉय् पिल वायाळ्–मजबूत, बड़ी गुफा-सदृश मुख वाली; पुऱत्तु कूऴै विरिन्ततु–पार्श्व में केश लटकते रहे; ओर् कॉट्पाल्–उसके दृश्य से; ऊऴि नॅरुप्पिन् उरु तत्तै–युगान्त की अग्नि के रूप की; ऑप्पाळ्–समानता करनेवाली। १०७४

उसका गुफा-सा बड़ा मुख एक कलछे के समान था, जो कि समुद्र को एक दम शुष्क करते हुए सारा जल उठा सकता था। उसके सिर के पार्श्वों में कम लम्बे (लाल) केश लटकते थे, जिसके कारण वह युगान्तकालीन अग्नि के समान दिखाई दी। १०७४

तडितड वप्पल तलैतऴु वित्ताळ्
नॅडिदडॅ यक्कुडर् कॅऴुवु निणत्ताळ्
अडितड वप्पड वरव मशैक्कुम्
कडिदड वत्तिन्न ऴुरुमु करिप्पाळ् 1075

तटि तटव्–मांस की खोज में; पल तलै तऴुवि–अनेक स्थानों में ढूँढ़ते हुए जाकर; ताळ–उसके पैर; नॅटितु अटॅय–बहुत दूर गये, इसलिए; कुटर् कॅऴुवु निणत्ताळ्–मांस-भरे पेट वाली; पट अरवम् अटि तटव–फनसहित सर्प उसके पैरों को छूते रहें, ऐसा; अचैक्कुम्–(उन सर्पों को) लपेटी; कटि तटवत्तित्तळ्–कटि वाली; उरुमु करिप्पाळ्–वज्रघोष के समान दाँत किटकिटानेवाली। १०७५

मांस की खोज में उसके पैर दूर-दूर तक गये थे और उसका पेट मांस से भरपूर था। उसकी कमर में सर्प बँधे थे, जिनके फन उसके पैरों को छूते थे। जब वह दाँत किटकिटाती तब वज्र का-सा नाद निकलता। १०७५

इवैयिरॅ यॉप्पन वॅन्न विऴिप्पाळ्
अवैकुळि रक्कडि तऴलु मॅयिऱ्ऱाळ्
कुवैकुलै यक्कडल् कुमुऱ वुरैप्पाळ्
नवैयिल् पुवित्तिरु नाल नटप्पाळ् 1076

इवै इरॅ ऑप्पन–ये युगान्त की अग्नि के समान हैं; ऑन्न–ऐसा; विऴिप्पाळ्–तरेरनेवाली; अवै कुळिर–उनको ठण्डे बनाते हुए; कटितु–कठोर रीति से; अऴलुम् ऍयिऱ्ऱाळ्–प्रज्वलित दाँत वाली; कुवै–पर्वत आदि; कुलैय–अस्त-व्यस्त करते हुए; कटल् कुमुऱ–सागर को उथल-पुथल करते हुए; उरैप्पाळ्–बोलनेवाली; नवै इल् पुवि तिरु–निर्मल भूदेवी को; नाल–धँसाते हुए; नटप्पाळ्–पग धरकर चलनेवाली। १०७६

जब वह तरेरती तब उसकी आँखें युगान्त की अग्नि के समान लगतीं। पर ज्वलन्त दाँतों के सामने उनकी उग्रता कम हो गयी लगती। जब वह बात करती, तब पर्वत जैसे ऊँचे टीले जर्जर हो जाते और सागर में उथल-पुथल मच जाता। जब वह पग रखकर चलती, तब निर्मल भूदेवी में गड्ढे पड़ जाते। १०७६

नीळर वच्चरि ताऴ्है निरैत्ताळ्
आळर वप्पुलि यार मणैत्ताळ्
याळिय नैप्पल तालि यिशैत्ताळ्
कोळरि यैक्कॊडु ताऴ्कुऴै यिट्टाळ् 1077

नीळ् अरव चरि–लम्बे सर्प रूपी कंकणों को; ताऴ् कै निरैत्ताळ्–लटकनेवाले हाथों में पहने रहती; अरवम्–गरजनेवाले; आळ् पुलि–बलवान बाघों का; आरम्–हार; अणैत्ताळ्–धारण करनेवाली; पल आळियितै–अनेक शरभों को; तालि

इचैत्तुताळ्–मंगल-सूत्र से बाँधे रखनेवाली; कोळरियै कोट्टु–ताकतवर सिंहों को लेकर; ताळ् कुळै इट्टाळ्–लटकनेवाले कुण्डल बनाकर पहनी हुई। १०७७

उसने कंकणों के रूप में लम्बे सर्पों की पंक्ति पहन रखी थी। गरजनेवाले व्याघ्रों को गूँथकर उसने हार के रूप में पहना था। उसके मंगल-सूत्र से अनेक शरभ बँधे थे। उसके कर्ण-कुण्डल बली सिंह थे। १०७७

निन्ऱन्न ळाशैयि नीर्हलु ळुङ्गण्
कुन्ऱि निहर्प्प कुळिर्प्प विळिप्पाळ्
मिन्ऱिरि हिन्ऱ वॅयिट्ऱिन् विळक्काल्
कन्ऱिरु ळिट्ऱिरि कोळरि कण्डान् 1078

नीर् कलुळुम् कण्–जल बहानेवाली उसकी आँखें; कुन्ऱि निकर्प्प–घुँघची के समान रहतीं; कुळिर्प्प–प्रेमार्द्रता के साथ; विळिप्पाळ्–लक्ष्मण पर दृष्टि चलाती हुई वह; आचैयिन् निन्ऱनळ्–लगावट के साथ खड़ी रही; मिन् तिरिकिन्ऱ–बिजली के समान चमकनेवाली; ॲयिट्ऱिन्–दन्तपंक्तियों के; विळक्काल्–दीप से; कन्ऱु इरुळिल् तिरि–घने अँधेरे में घूमनेवाले; कोळरि–सिंह (लक्ष्मण) ने; कण्टान्–उसको देखा। १०७८

उसकी आँखें घुँघचियों के समान थीं और उनसे जल बह रहा था। वह लक्ष्मण पर प्रेमार्द्र दृष्टि डालती हुई खड़ी रही। उसके दाँतों से बिजली की चमक निकल रही थी। सिंह-सदृश लक्ष्मण ने उस घने जंगल में घूमनेवाली उसको उसके दाँतों के प्रकाश में देखा। १०७८

पण्डेयि ऩाशि यिळन्दु पदैक्कुम्
तिण्डिऱ लाळॊडु ताडहैच् चीराळ्
कण्डह राय वरक्कर् कणत्तोर्
ऑण्डॊडि यामिव ळॆन्ब दुणर्न्दान् 1079

पण्टयिन्–पहले; नाचि इळन्तु–नाक आदि कटकर; पतैक्कुम्–जो छटपटायी; तिण् तिऱलाळ् ओटु–उस अत्यधिक बलयुक्त राक्षसी के साथ; ताटकै चीराळ्–ताड़का से तुल्य; कण्टकर् आय अरक्कर्–लोककंटक राक्षसों के; कणत्तु–दल से सम्बद्ध; ऑण्टॊटि आम् इवळ्–स्त्री होगी यह; ॲन्पतु उणर्न्तान्–यह विषय लक्ष्मण ने ताड़ लिया। १०७९

उन्होंने ताड़ लिया कि यह नाक खोकर जो छटपटाती रही; उस शूर्पणखा के साथ ताड़का आदि के राक्षस-कुल से सम्बद्ध स्त्री ही होगी। १०७९

पाविय रामिवर् पण्बिलर् नम्बाल्
मेविय कारणम् वेऱिलै यॆन्बान्
मावियल् कानिन् वयङ्गिरुळ् वन्दाय्
यावळ डीयुरै शॆय्हडि दन्ऱान् 1080

पण्पु इलर्–गुणहीन; पावियर् आम्–पापी; इवर्–ऐसी स्त्रियाँ; नम् पाल् मेविय कारणम्–हमारे पास आती हैं, उसका कारण; वेरु इलै–(कामेच्छा के सिवा) दूसरा नहीं है; ॲन्नपान्–ऐसा सोचकर; मा इयल् कातिल्–भयंकर जानवरों से भरे जंगल में; वयक्कु इरुळ् वन्ताय्–घने अन्धकार में आयी हो; यावळ् अटी–तू कौन है, री; कटितु उरै चॅय्–जल्दी उत्तर दो; ॲन्नरान्–पूछा। १०८०

गुणहीन, पापिनी ये राक्षसनारियाँ हमारे पास एक ही कुविचार लेकर आती हैं। उनके पास उसके सिवा कोई दूसरा हेतु नहीं रहता! उन्होंने उसे डाँटकर पूछा कि री! भयंकर जानवरों से भरे इस जंगल में तू आयी है। तू कौन है? । १०८०

पेशिन नुक्कॅदिर् पेशुरु नाणाळ्
ऊशलु ळन्दयर् शिन्दैय ळन्दान्
नेशमिल् वन्बिन नाहिय निन्बाल्
आशैयिन् वन्द वयोमुहि यॅन्राळ् 1081

ऊचल् उळन्तु–दुबिधा के झूले में झूलते हुए; अयर् चिन्तैयळुम्–शिथिल-मन उसने; पेचित्तुक्कु–प्रश्नकर्ता से; तान् ॲतिर् पेचुर–सामने बोलने से; नाणाळ्–न लजाकर; नेचम् इल् वन्पिनन् आकिय–मैत्री बनाने में चतुर; निन् पाल्–तुम्हारे प्रति; आचैयिन्–राग से; वन्त–आगत; अयोमुकि ॲन्राळ्–अयोमुखी हूँ, कहा। १०८१

अयोमुखी का मन दुबिधा में पड़ा और वह आर्त हुई। उससे प्रश्न करनेवाले लक्ष्मण के सामने बोलते हुए उसे कोई लज्जा का अनुभव न हुआ। उसने कहा कि तुम मित्रता बनाने में चतुर हो। मैं तुम्हारे प्रति प्यार करके आयी हूँ। मेरा नाम अयोमुखी है। १०८१

पिन्नु मुरैप्पवळ् पेरॅळिल् वीरा, मुन्न मॊरुत्तर् तॊडामुलै योडुन्
पॊन्निन् मणित्तड मार्बु पुणर्न्दॆन्, इन्नुयि रैक्कडि दीहुदि यॅन्राळ् 1082

पिन्नुम् उरैप्पवळ्–और भी बोलती; पेर् ॲळिल् वीर–बड़े ही सुन्दर वीर; मुन्नम् ऑरुत्तर् तॊटा मुलैयॊटु–पहले किसी के द्वारा अस्पृष्ट स्तनों के साथ; उन्–तुम्हारे; पॊन्निन्–स्वर्णवर्ण; मणि तट मार्पु–सुन्दर विशाल वक्ष से; पुणर्न्तु–लगा लेकर; ॲन् इन् उयिरै–अपने प्यारे प्राणों को; कटितु ईकुति–जल्दी दिला दो; ॲन्राळ्–कहा। १०८२

उसने और भी कहा कि अति सुन्दर वीर! मेरे स्तन पहले किसी के द्वारा अभोग हैं। उनको अपने स्वर्णवर्ण सुन्दर और विशाल वक्ष से लगा लो और मुझे शीघ्र प्राणदान करो। उसने प्रार्थना की। १०८२

आरिय शिन्दैय ळः(ह्)दुरै शॅय्यच्
चीरिय कोळरि कण्गळ् शिवन्दान्

मा्ड़िल वार्हणै यिव्वुरै वायिल्
कूड़िडि ऩिन्ऩुडल् कूड़िडु मॆऩ्ड़ाऩ् 1083

आड़िय चिन्तैयळ्–विश्वास के कारण आश्वस्तमना उसके; अ.'.तु उरै चॆय्य–वह कहने पर; चीड़िय कोळरि–कुपित सिंह (लक्ष्मण) ने; इ उरै–यह वचन; वायिल् कूड़िटिऩ्–अपने मुख से फिर कहोगी; माऱ् इल–तो अबाध; वार् कणै–लम्बे शर; निऩ् उटल्–तेरे शरीर के; कूड़िटुम् ऎऩ्ड़ाऩ्–टुकड़े-टुकड़े कर देंगे; ऎऩ्ड़ाऩ्–कहा। १०८३

अयोमुखी के मन में आशा का उदय हुआ था, इस कारण उसका मन आश्वस्त और शान्त था। उसका वचन सुनकर पुरुषसिंह लक्ष्मण को क्रोध आ गया। उसने डाँट बतायी— तू इस बात को दुहरायेगी तो मेरे अबाध लम्बे शर तेरे शरीर के टुकड़े कर देंगे। १०८३

मऱ्ड़व ऩव्वुरै शॆप्प मऩत्ताल्
शॆड़्ड़िलळ् कैत्तुणै शॆऩ्ऩियिन् वैत्ताळ्
कॊऱ्ड़व नीयॆऩै वन्दुयिर् कॊळ्ळप्
पॆऱ्ड़िडि ऩिऩ्ऱु पिऱन्दऩॆ ऩॆऩ्ड़ाळ् 1084

मऱ्ऱु–और; अवऩ् अ उरै चॆप्प–उनके वह वचन कहने पर; मऩत्ताल् चॆड़्ड़िलळ्– मन में कुपित नहीं हुई; कै तुणै–हाथों के जोड़े को; चॆऩ्ऩियिल् वैत्ताळ्–सिर पर रखा; कॊऱ्ऱव–नायक; नी वन्तु–तुम आओ; उयिर् कॊळ्ळ–और मेरे प्राण हरो; पॆऱ्ड़िटिऩ्–यह भाग्य मिलेगा तो; इऩ्ऱु पिऱन्तऩॆऩ्–आज ही मेरा जन्म (सफल) हुआ; ऎऩ्ड़ाळ्–कहा। १०८४

लक्ष्मण का वचन सुनकर अयोमुखी के मन में कोप नहीं हुआ। उसने अपने दोनों हाथ जोड़कर सिर पर रखे और चिरौरी में कहा कि हे मेरे राजा! तुम आकर मेरे प्राण हरो, वह भाग्य मिला तो समझूँगी कि मैंने आज ही जन्म लिया!। १०८४

वॆङ्गद मिल्लवळ् पिन्ऩरुम् मेलोय्
इङ्गु नऱुम्बुऩ ऩाडुदि यॆऩ्ऩिऩ्
अङ्गै यिऩालॆऩै यञ्जलै यॆऩ्ड़ाल्
गङ्गैयि नीर्हॊणर् वॆऩ्गडि दॆऩ्ड़ाळ् 1085

वॆम् कतम् इल्लवळ्–भयंकर क्रोध न करती हुई उसने; पिऩ्ऩरुम्–फिर भी; मेलोय्–श्रेष्ठ गुण वाले; इङ्कु–यहाँ; नऱुम् पुऩल्–मधुर जल; नाटुति ऎऩ्ऩिल्–ढूंढ़ते फिरते हो तो; अम् कैयिऩाल्–अपने सुन्दर हाथ से; ऎऩै अञ्चलै–मुझे मत डरो; ऎऩ्ड़ाल्–कहोगे (अभयदान करोगे) तो; कङ्कैयिऩ् नीर्–गंगा का जल ही; कटितु कॊणर्वॆऩ्–बहुत जल्दी ला दूंगी; ऎऩ्ड़ाळ्–कहा। १०८५

अयोमुखी ने, विना कठोर शत्रुता के भाव के ही आगे कहा कि

श्रेष्ठ गुण वाले ! तुम मधुर जल की खोज में ही न फिरते हो ? तुम मुझे अपने सुन्दर हाथ से अभयमुद्रा दिखाते हुए कहो कि मत डरो, तो मैं गंगा का ज़ल ही बहुत वेग के साथ लाकर दूँगी । १०८५

सुमित्तिरैच् चेयवळ् शॉट्रुट्रन शॉल्लैक्
कमित्तिल नि्न्निरु कादोडु नाशि
तुमिप्पदन् मुन्नह लॅन्बदु शॉल्ल
इमैत्तिलळ् निन्ट्रन ळिन्न निनैन्दाळ् 1086

सुमित्तिरै चेय्–सौमित्र के; चॊट्रत चॊल्लै–उसके कहे हुए वचनों को; कमित्तिलन्–क्षम्य नहीं समझकर; निन् इरु कातॊटु–तेरे दो कानों के साथ; नाचि–नाक को भी; तुमिप्पतन् मुन्–काट दूँ, इसके पहले ही; अकल् ऎन्पतु–हट जाओ, ऐसा; चॊल्ल–कहने पर; इमैत्तिलळ्–निर्निमेष; निन्ट्रतळ्–खड़ी रही; इन्न निनैन्ताळ्–यों सोचा । १०८६

सौमित्र ने उसकी बात को क्षम्य नहीं माना । उन्होंने कहा कि मैं तेरे दोनों कानों के साथ तेरी नाक को काट दूँ, इसके पहले ही भाग जा ! यह सुनकर वह कुछ देर ताकती खड़ी रही । वह यों सोचने लगी । १०८६

ऍडुत्तनॅ नेहिनॅ नॅन्मुळै तन्नुळ्
अडैत्तिवन् वॅम्मै यडक्किय पिन्नै
उडट्रपडु मालुड नेयुरु तन्मै
तिडत्तिदु वेन्नल नॅन्ट्रॅदिर् शॅन्ड्राळ् 1087

ऍटुत्तनॅन् एकिनॅन्–इसको ले जाकर; ऍन् मुळै तन्नुळ्–अपनी गुफा में; अटैत्तु–बन्द करके; इवन् वॅम्मै–इसका क्रोध; अटक्किय पिन्नै–शान्त करने के बाद; उटन् पटुम् आल्–वह सम्मत हो जायगा, तब; नन्मै उटट्रुम्–मेरा भाग्य तुरत जाग जायगा; इतुवे–यही; तिटत्तु नलम्–पक्का भला है; ऍन्ट्रु–सोचकर; ऍतिर् चॅन्ड्राळ्–सामने (पास) गयी । १०८७

मैं इसको बलात् उठाकर ले जाऊँगी और अपनी गुफा में रखकर उसे शान्त कर लूँगी । तब वह मेरी इच्छा पूरी करने को सम्मत हो जायगा । उसी क्षण मेरा भाग्य जाग जायगा । यही उपाय हितकारी है । यह विचारकर वह उनके सामने गयी । १०८७

मोहनॅ यॅन्बदु मुन्दि मुयन्ड्राळ्
माहनॅ डुङ्गिरि पोलियॅ वव्वा
एहिन् ळुम्बरि निन्दुवॉ डेहुम्
मेहमॅ नुम्बडि नॉय्दिनिन् वॅय्याळ् 1088

वॅय्याळ्-क्रूरा ने; मुन्नृति-सवेग सामने जाकर; मोकनै ऑन्पतु मुयन्ऱाळ्-मोहिनी डालने का प्रयास किया; माक नॅटुम् किरि-गगनव्यापी एक बड़े पर्वत; पोलियै-समान (लक्ष्मण) को; वव्वा-पकड़ लेकर; नॉय्तितिल्-जल्दी; उम्परिन्-आकाश में; इन्तु ओटु एकुम् मेकम्-इन्दु के साथ दौड़नेवाले मेघ; ऑन्नुम्पटि-जैसा; एकित्तळ्-जाने लगी। १०८८

उस क्रूरा ने उन पर मोहनी डालने का कार्य करके गगनव्यापी पर्वत-सम उनको पकड़कर उठाया और सवेग आसमान में चन्द्रसहित मेघ के समान जाने लगी। १०८८

मन्दरम् वेलैयिन्न् वन्ददुम् वानत्, तिन्दिर नूर्मुहि लॅन्नलु मानाळ्
वॅन्दिऱल् वेल्हॊडु शूरडुम् वीरच्, चुन्दर नूर्दरु तोहैयु मॊत्ताळ् 1089

मन्तरम् वेलैयिन्न् वन्ततुम्-मन्दरपर्वत-सहित सागर-सम; वानत्तु इन्तिरन् ऊर्-आकाश में इन्द्र-वाही; मुकिल् ऑन्नलुम्-मेघ के समान; आनाळ्-लगी; वॅम् तिऱल् वेल् कॉटु-कठोर और मजबूत शक्ति लेकर; अटुम्-शूरपद्म को जिन्होंने मारा, उन; वीर-वीर; चुन्तरन्-सुन्दर देव षण्मुख के; ऊर् तरुम्-वाहन; तोकैयुम् ऑत्ताळ्-मोर के समान भी बनी। १०८९

तब लक्ष्मण के साथ राक्षसी कैसे लगी ? मन्दरपर्वत-सहित सागर के समान और इन्द्र को लेकर चलनेवाले मेघ के समान लगी। और भी कठोर और सारयुक्त शक्ति से जिन्होंने शूरपद्म को मारा था, उन वीर और सुन्दर षण्मुख को ले जानेवाले मयूर के समान भी लगी (मोर षण्मुख का वाहन माना जाता है। शूरपद्म ही मोर बना था।)। १०८९

आङ्गवण् मार्वॊडु कैयि नडङ्गिप्
पूङ्गळल् वार्शिलै मीळि पॊलिन्दान्
वीङ्गिय वॅञ्जिन वीळ्मद वॅम्बोर्
ओङ्ग लुरिक्कु मुरुत्तिर नॊत्तान् 1090

आङ्कु-तब; पूम् कळल्-सुन्दर पायल; वार् चिलै-लम्बा धनुष (इनसे युक्त); मीळि-वीर लक्ष्मण; अवळ् मार्पु ऑटु-उसके वक्ष और; कैयिन् अटङ्कि-हाथों के अन्दर समाकर; पॊलिन्तान्-शोभे, तब; वीङ्किय-बढ़ा हुआ; वॅम् चिन्नम्-कठोर क्रोध और; वीळ् मतम्-बहता मदजल; वॅम् पोर्-(इनके साथ) जिसने युद्ध किया; ओङ्कल्-उस गज को; उरिक्कुम्-उधेड़नेवाले; उरुत्तिरन् ऑत्तान्-रुद्र-सम लगे। १०९०

लक्ष्मण कैसे दिखे ? सुन्दर पायलधारी धनुर्धर वीर लक्ष्मण, जो उसके वक्ष पर हाथों के क्रोड के अन्दर समा गये थे, रुद्र के समान शोभे जो अति क्रुद्ध मदस्रावी योद्धा गज को उधेड़ रहे हों। १०९०

इप्पडि यन्नव ळेहिन ळिप्पाल्
अप्पिडै तेडि नडन्द वॅन्नावित्

तुप्पुडै मालवरै तोन्ड्रिल नॅन्ना
वॅप्पुडै मॅय्यॊडु वीरन् मॅलिन्दान् 1091

अन्नवळ् इ पटि एकित्तळ्–वह इस तरह गयी; इ पाल्–इस ओर; वॅप्पु उटै–पिपासा से; मॅय् उटै वीरन्–(तपित) श्रीशरीर के वीर श्रीराम; अप्पु इटै तेटि–जल-थल खोजते हुए; नटन्त–जो चला; ॲन् आवि–मेरा प्राण-सम; तुप्पु उटै–मज़बूत; माल् वरै–बड़े पर्वत के समान; तोन्ड्रिलन्–(लक्ष्मण) नहीं (आता) दिखता; ॲन्ना–सोचकर; मॅलिन्तान्–कातर हुए। १०९१

एक ओर वह लक्ष्मण को पकड़ लेकर उधर जा रही थी, तो दूसरी ओर यहाँ प्यास से तप्त शरीर के श्रीराम इस बात को लेकर दुःखी हुए कि जल-थल के अन्वेषण में जो गया, वह मेरा प्राण-सम प्यारा भाई और मज़बूत और बड़े पर्वत के समान लक्ष्मण अब भी नहीं दिखाई देता है। १०९१

वॅय्दाहिय कानिडै मेवरुनीर्, ऐदादलि नोवय लॊन्रुळदो
नॊय्दाय्वर वेहमु नॊय्दिलनाल्, ॲय्दादॊऴि यानिदु वॅन्नैहॊलाम् 1092

वॅय्तु आकिय कान् इटै–कठोर इस जंगल में; मेवु अरु नीर्–मिलनेवाला शुद्ध जल; ऐतु आतलिन्–अपूर्व है, इसलिए; अयल् ऑन्रु उळतो–और कोई (संकट) आ गया; नॊय्ताय् वर–शीघ्र आने में; वेकमुम् नॊय्तु इलन् आल्–मन्द-गति नहीं है; ॲय्तातु ऑऴियान्–विना आये नहीं रहेगा; इतु ॲन्नै कॊल् आम्–यह किस कारण है। १०९२

वे सोचने लगे कि क्या कारण है ? इस बीहड़ भयंकर वन में शुद्ध जल का मिलना अपूर्व है ? या कोई अन्य संकट आ पड़ा ? वह तो वेग में मन्दता न करनेवाला है। उसका स्वभाव ही ऐसा है कि जल्दी आयेगा। विलम्ब नहीं करेगा। इतनी देर तक उसे आना चाहिए था। फिर ऐसा क्यों हुआ ? । १०९२

नीर्कॊण्डनै यिव्वऴि नेडिनैपोय्, शार्हॆन्ड्रनॆ नित्तुणैच् चार्हिलनाल्
वार्कॊण्डणि कॊङ्गैयै वव्विनर्पाल्, पोर्कॊण्डन नोपॊरुळुण्डिदॆना 1093

इ वऴि नेटित्तै पोय्–इस मार्ग में ढूँढ़ते चलकर; नीर् कॊण्टनै–जल लेकर; चार्क ॲन्ड्रनॆन्–आ जाओ, मैंने कहा था; इ तुणै–अब तक; चार्किलन् आल्–नहीं आया है, इसलिए; वार् कॊण्टु अणि–अँगिया से अलंकृत; कॊङ्कैयै–स्तनों (की सीता) को; वव्विनर् पाल्–पकड़कर जो ले गये, उनसे; पोर् कॊण्टननो–युद्ध करने लग गया क्या; इतु पॊरुळ् उण्टु–ऐसा एक कार्य हुआ होगा; ॲन्ना–सोचकर। १०९३

मैंने ही उसे जल ढूँढ लाने के लिए भेजा। 'जल्दी आ जाओ' यह कहकर ही उसे भेजा था। वह तो अब तक नहीं आया। तब क्या उसे अँगियाबद्ध स्तनों की देवी को जो हर ले गये थे, उन राक्षसों के साथ

लड़ाई हो गयी ? ऐसा कुछ हुआ होगा, अवश्य ! —राम ने यह सोचा । १०९३

अञ्जॊऱ्किळि यन्न वणङ्गिनैमुन्, वञ्जित्त विरावणन् वव्विनतो
नञ्जिऱ्कॊडि यान्नड लैत्तॊळिलाल्, तुञ्जुऱ्ऱन नोविदि यिन्ऱुणिवाल् 1094

किळि अन्न–शुक के समान; अम् चॊल् अणङ्कितै–मधुर-वाणी देवी को; मुन् वञ्चित्त–पहले हर ले जो गया, वह; इरावणन्–रावण; वव्वितनो–पकड़ ले गया क्या; वितियिन् तुणिवाल्–मेरी बिधि की प्रबलता से; नञ्चिल् कॊटियान्–विष से भी हिंस्र; नटलै तॊळिलाल्–(उस राक्षस की) वंचना के कार्य से; तुञ्चुऱ्ऱनतो–मर गया क्या । १०९४

क्या वही रावण इसको भी पकड़ ले गया, जिसने शुकी-सी मधुर-भाषिणी सीता को धोखे से हर लिया था ? या मेरी विधि की प्रबलता से, विष से भी हिंस्र उस रावण के कपट-कार्य से वह मर गया ? । १०९४

वरिविऱ्कै यॆन्नारुयिर् वन्दिलनाल्, तरुशॊऱ्करु देनॊरु तैयलैयान्
पिरिवित्तनॆ नॆन्बदॊर् पोळैपॆरुत्, तॆरिवित्तिड वावि यिळन्दननो 1095

वरि विल् कै–सबन्ध धनुर्हस्त; ऎन् आरुयिर्–मेरा प्राणप्यारा भाई; वन्तु इलन् आल्–आया नहीं है; यान्–मैंने; तरु चॊल् करुतेन्–उसके समयानुकूल कहे वचन को न मानकर; ऒरु तैयलै–अप्रमेय स्त्री को; पिरिवित्ततॆन्–अपने से बिछुड़वा लिया; ऎन्पतु–इस; ओर् पोळै–एक दुःख के; पॆरुत्तु ऎरिवित्तिट–बहुत जलाने पर; आवि–प्राणों को; इळन्तननो–छोड़ दिया क्या । १०९५

सबन्ध धनुर्हस्त, मेरा प्राण-प्यारा लक्ष्मण आया नहीं है। मैंने उसकी बात न मानकर अपनी अनुपम स्त्री को अलग करा दिया। यह दुःख शायद उसे बहुत सन्ताप दे रहा था। तब क्या उस दुःख के कारण उसने अपने प्राण छोड़ दिये ? । १०९५

उण्डाहिय कारिरु ळूडॊरुवेन्, कण्डानवन् वेऱॊरु कण्णिलनाल्
पुण्डानुरु नॆञ्जु पुळुङ्गुरुवेन्, ऎण्डानिल नॆङ्ङन नाडुहॆनो 1096

उण्टु आकिय–वन (जो) आया है; कार् इरुळ् ऊटु–इस घने अन्धकार में; ऒरुवेन्–एकाकी मेरी; कण् तान् अवन्–आँख वही है; वेऱु ऒरु कण्–और कोई आँख; इलॆन् आल्–मेरी नहीं है, इसलिए; पुण् तान् उऱु–पहले ही जो विक्षत है; नॆञ्चु–उस मन में; पुळुङ्कु उऱुवेत–अधिक तप्त मैं; ऎण् तान् इलन्–विचार-विमूढ़ हो गया हूँ; ऎङ्ङनम्–किस प्रकार; नाटुकॆनो–खोजूँगा । १०९६

जो घना अन्धकार फैल आया है, उसमें मैं अकेला हूँ। वही मेरी आँख है ! उसको छोड़ कोई दूसरी आँख मेरी नहीं है। पहले से ही मेरा मन विद्ध और व्रणी है। अब मैं और भी उत्तप्त हुआ हूँ। मन

सोचता भी नहीं, विमूढ़ हो गया है। इस स्थिति में मैं क्योंकर उसको ढूँढ़ने चलूँ ? । १०९६

तळ्ळाविनै येन्ऱनि याऱुयिराय्, उळ्ळायोरु नीयु मौळितृतनैयो
पिळ्ळाय्पॅरि याय्पिऴै शॅय्दनैयाल्, कॊळ्ळादुल हुन्ऩैयि दोहोडिदे 1097

तळ्ळा वित्तैयेन्–अप्रतिबद्ध विधिबद्ध मेरे; तति आर् उयिराय् उळ्ळाय्–अद्वितीय प्राण-सम रहनेवाले; ऑरु नीयुम् ऑळितृतत्तैयो–वैसे तुम भी अदृश्य हो गये क्या; पिळ्ळाय्–बेटे; पॅरियोय्–बड़े; पिऴै चॅय्तनै आल्–अपराध किया है तुमने, तदर्थ; उलकु उन्ऩै कॊळ्ळातु–लोक तुमको सही नहीं मान लेगा; इतु ओ कॊटितु–यह अवश्य कठोर है। १०९७

अबाध विधि से बद्ध मेरे प्यारे प्राण (-सम) हे लक्ष्मण ! तुम भी मुझे छोड़ कहीं जा छिप गये क्या ? उम्र में छोटे ! बुद्धि में बड़े ! तुमने यह काम करके एक कठोर अपराध कर दिया ! लोक इसको सही नहीं मानेगा। यह तुम्हारा कार्य अवश्य बड़ा कठोर है ! । १०९७

पेराविडर् वन्दन पेर्क्कवलाय्, तीराविडर् तन्दनै तॅव्वर्तॊळुम्
वीरावॆनै यॆङ्ङन् वॆऱुत्तनैयो, वारायपुऱ मित्तुणै वैहुदियो 1098

वन्तत्त–जो हम पर आये; पेरा इटर्–उन अवार्य संकटों को; पेर्क्क–दूर करने में; वलाय्–समर्थ; तीरा इटर्–अमिट दुःख; तन्ततै–(मुझे) दिला दिया; तॅव्वर् तॊळुम् वीरा–शत्रु द्वारा भी पूज्य वीर; ऎत्तै ऎङ्ङन् वॆऱुत्ततैयो–मुझसे क्योंकर घृणा की; इ तुणै–इतनी देर; पुऱम्–बाहर; वैकुतियो–रह सके क्या; वाराय्–आ जाओ। १०९८

हमारे ऊपर आये अवार्य संकटों को दूर करने में समर्थ हे भाई ! तुमने मुझे अप्रतिबद्ध संकट दे दिया। शत्रु-शंसित वीर ! तुमने कैसे मुझसे घृणा की ? इतनी देर कहीं बाहर ठहर जाओगे क्या ? आओ, मेरे पास आ जाओ। १०९८

ऑन्नैत्तरु मॆन्दैयै यॆन्नैयरैप्, पॊन्नैप्पॊरु हिन्ऱ पॊलन्गुऴैयाळ्
तन्नैप्पिरि वेनुळ नावदुतान्, उन्नैप्पिरि याद वुयिर्प्पलवो 1099

ऎन्नै तरुम् ऎन्तैयै–अपने जनक अपने पिता को; ऎन्तयरै–अपनी माताओं को; पॊन्नै पॊरुवुकिन्ऱ–कांचना (श्रीलक्ष्मी) से तुल्य; पॊलन् कुऴैयाळ् तन्नै–स्वर्णकुण्डल-धारिणी सीता को; पिरिवेन्–छोड़कर अलग जो रहता हूँ; आवतु तान्–जीवित रहता हूँ, वह भी; उयिर्प्पु उन्नै–अपना जीवन, तुमसे; पिरियात अलवो–विलग नहीं हुआ, उसी कारण न। १०९९

मैं अपने पिता से, अपनी माताओं से और स्वर्णकुण्डलधारिणी 'कांचना' (लक्ष्मी) सी सीता से बिछुड़कर भी जीवन धारण करता हूँ, तो वह प्राण-सम कभी विलग न होकर तुम साथ रहे —इसी कारण ! । १०९९

पॉट्ट्रोडिवर् हिन्ट्र पॉलङ्गुळैयाळ्, तट्ट्रेडि यिरुन्दु तयङ्गिडुवेन्
निट्ट्रेडि वरुन्द निरप्पिन्नैयो, ॲट्ट्रेडिन्नै वन्द विळङ्गळिरे 1100

ॲन् तेटिन्नै वन्त–मुझे ही ढूँढ़ते हुए (प्राप्य समझकर) मेरे पीछे आये हुए; इळम् कळिरे–कलभ; पॉन् तोटु इवर्किन्ट्र–स्वर्ण के दलों से युक्त; पॉलन् कुळैयाळ् तन्–सुन्दर कुण्डलधारिणी को; तेटि–खोजते हुए; इरुन्तु तयङ्किटुवेन्–यहाँ जो हिचकता रहता हूँ; निन् तेटि वरुन्त–तुमको खोजकर कष्ट उठाऊँ; निरप्पिन्नैयो–ऐसी लाचारी बना दी क्या। ११००

केवल मेरी सेवा का अर्जन करने के लिए मेरे साथ आये हुए कलभ-सम लक्ष्मण ! दलोंसहित कमल-समान स्वर्ण के बने कर्णाभरणों से भूषित सीता की खोज में मैं यहाँ ठहरा हुआ दुःख उठा रहा हूँ। अब क्या तुमने तुम्हें खोजने की लाचारी भी पैदा कर दी है ? । ११००

इन्ट्रेयिर वादॊळि येन्नमरो, पॊन्ट्रादॊळि यार्पुहल् वारुळराल्
ऑन्ट्रायिन्नि वुन्गिळै योरैयॆलाम्, कॊन्ट्राय्कॊडि यायिदु वुङ्गुणमो 1101

इन्ट्रे–आज ही; इरवातु ऑळियेन्–विना मरे नहीं रहूँगा; पुकल्वार उळराल्–(यह समाचार) सुनानेवाले होंगे, इसलिए; ॲमर् ओ पॊन्रातु ऑळियार्–हमारे जन विना मरे नहीं रहेंगे; उन् किळैयोरै ॲलाम्—अपने सारे बन्धुजनों को; इति ऑन्ट्राय् कॊन्ट्राय्–तुमने अब एक साथ मरवा दिया; कॊटियाय्–निर्मम हो; इतुवुम् कुणमो–यह भी (अच्छा) गुण है क्या। ११०१

(अब इसका फल क्या होगा— जानते हो ?) मैं मरे विना नहीं रहूँगा। यह समाचार ले जानेवाले कोई अवश्य हो जायँगे। वह सुनकर हमारे बन्धुजन भी मर जायँगे, अवश्य। तो अपने सारे बन्धु-लोगों को तुम ही एक साथ मरवानेवाले बन जाओगे। इसलिए तुम बड़े ही निर्मम बन गये। यह भी कोई श्लाघ्य गुण है क्या ? । ११०१

मान्दामुदन् मन्नवर् तम्वळियिल्, वेन्दाहै तुरन्दपिन् मॅय्युरवोर्
तान्दामॊळि यत्तमि येनुडन्ने, पोन्दायॅन्नै विट्टन्ने पोयिन्नैयो 1102

मान्ता मुतल्–मान्धाता से लेकर; मन्नवर् तम् वळियिल्–राजाओं से अपनाये गये मार्ग में; वेन्तु आकै–राजा बनना; तुरन्त पिन्–त्यागने के बाद; मॅय् उरवोर्–सच्चे बन्धुजन; ताम् ताम् ऑळिय–सब दूर रह गये; तमियेन् उटन्ने–अकेले मेरे साथ; पोन्ताय्–आये; ॲन्नै–मुझे; विट्टन्नै–छोड़कर; पोयिन्नैयो–चले गये क्या। ११०२

मान्धाता के काल से लेकर जो प्रथा चली आ रही थी, मैंने उसका उल्लंघन किया और राजा बनना छोड़ा। तब मेरे सभी रिश्तेदार छूट गये, पर तुम एक ही अकेले रह गये और मेरे साथ आये। ऐसे तुम अब मुझे छोड़कर चले गये क्या ? । ११०२

ऍन्ऩावुरै यावॆंऴुम् वीऴ्मिरुन्, दुन्नावुणर् वोय्वुरु मीन्ऱलवाल्
मिन्ऩादिडि यादिरुळ् वाय्विळैवी, दॆन्नामॆन् मॆन्ऱऩि नायहऩे 1103

ऍन् तत्ति नायकन्-मेरे (कवि के) अद्वितीय ईश्वर; ऍन्ता उरैया-यों कहते हुए; ऍऴुम्-उठकर खड़े होते; वीऴुम्-गिर जाते; इरुन्तु-उठ बैठकर; उन्ता-(अपने कष्टों का) विचार कर; उणर्वु ओय्वु उऱुम्-सुध-बुध खो जाते; मिन्तातु इटियातु-(बिजली के) चमके बिना वज्र नहीं गिरता; इरुळ् वाय्-अन्धकार में; विळैवु-हुआ; ईतु ऍन्ताम्-यह क्या है; ऍन्नुम्-कहते; ऒन्ऱु अल-एक नहीं, (अनेक तरह से) दुःख का अनुभव किया। ११०३

(कवि कहते है—) इस तरह मेरे अद्वितीय परमनायक कहते हुए उठते; फिर शिथिल होकर गिर जाते। फिर उठ बैठते और अपने कष्टों का स्मरण करके सुध-बुध खो जाते। सोचते कि विना विजली की चमक के वज्र नही गिरता। अँधेरे में यह जो हुआ, उसका कारण क्या है? (क्या और भी विपदाएँ मिलकर आनेवाली हैं?) एक नहीं, अनेक प्रकार से वे चिन्ता करते दुःखी हो रहे थे। ११०३

नाडुम्बल शूळल्ह डोरुनडन्, दोडुम्बॅयर् शॊल्लि युळैन्दुयिर्पोय्
वाडुम्वहै शोरु मयङ्गुरुमाल्, आडुङ्गळि मामद यान्ऩैयनान् 1104

आटुम्-हिलने-डोलने के स्वभाव वाले; कळि मा मत-अति मदमत्त; यानै अनान्-गज-सम श्रीराम; पल चूऴल्कळ् तोऱुम्-अनेक स्थानों में; नटन्तु नाटुम्-जाकर ढूँढ़ते; पॆयर् चॊल्लि ओटुम्-नाम लेते हुए दौड़ते; उळैन्तु-आकुल होकर; उयिर् पोय् वाटुम् वकै-प्राण जाकर मुरझा जायँ, ऐसा; चोरुम्-जर्जर बनते; मयङ्कुऱुम्-मूर्च्छित हो जाते। ११०४

हिलता रहने के स्वभाव के अभिमानी और मत्तगज के समान श्रीराम अनेक स्थानों में जाकर ढूँढ़ने लगे। लक्ष्मण का नाम लेते हुए दौड़े। अधिक दुःख के कारण प्राण सूखने-से लगे। थककर मूर्च्छित हुए। ११०४

कमैयाळॊडु मॆन्नुयिर् कावलिनिन्, ऱिमैयादव नित्तुणै ताऴ्वुरुमो
शुमैयायुल हूडुळ् रॊल्विनैयेऱ्, कमैयादुहॊल् वाऴ्वऱि येन्ऩुमाल् 1105

कमैयाळ् ओटुम्-क्षमाशालिनी सीता के साथ; ऍन् उयिर्-मेरे भी प्राणों की; कावलिन् निन्ऱु-रक्षा में रहकर; इमैयातवन्-अनिद्र (जो रहा) वह; इ तुणै ताऴ्वुरुमो-इतना विलम्ब करेगा; उलकु ऊटु-संसार में; चुमैयाय् उऴल्-भार बनकर घूमनेवाले; तॊल् वितैयेऱ्कु-प्राचीन विधिवद्ध मुझे; वाऴ्वु अमैयातु कॊल्-(सन्तोषमय) जीवन प्राप्त नहीं होगा क्या; अऱियेन्-कुछ नही जान पाता; ऍन्नुम्-कहते (पछताते)। ११०५

लक्ष्मण क्षमाशालिनी सीता के साथ मेरे प्राणों की रक्षा में दत्तचित्त अनिद्र रहा। क्या वह अपने वश से इतना विलम्ब करेगा? संसार का भार बनकर घूमनेवाले, प्राचीन विधिविताड़ित मुझे सन्तोष का जीवन नही

मिलेगा क्या ? कुछ भी जान नहीं पाता। —श्रीराम ऐसा सोचते हुए वहुत शोकसंतप्त हुए। ११०५

अऱ्ऱप्पालुळ दॆलवऩ् मुऩ्ऩवऩाय्प्, पिऱप्पाऩुऱिल् वन्दु पिऱक्कवॆऩ्ऩा
मऱ्ऱप्पाल्वडि वाळ्हॊडु मऩ्ऩुयिरॆत्, तुऱप्पाऩुऱु हिऩ्ऱ तॊडऱ्च्चियिऩ्वाय् 1106

अऱम् पाल् उळतु एल्–धर्म-पक्ष कोई है तो; अवऩ्–वह लक्ष्मण; मुऩ्ऩवताय्–मेरा अग्रज बनकर; पिऱप्पाऩ् उऱिल्–जन्म ले पाये तो; वन्तु पिऱक्क अॆऩा–आकर जन्म ले, कहकर; मऱम् पाल्–दृढ़ता के साथ; वटि वाळ् कॊटु–तीक्ष्ण करवाल लेकर; मऩ्–नाथ श्रीराम; उयिरै तुऱप्पाऩ् उऱुकिऩ्ऱ–प्राण-त्याग करने को; तॊटर्च्चियिऩ् वाय्–जब उद्यत हुए, उसके आरम्भ में। ११०६

श्रीराम ने आत्महत्या कर लेने का निश्चय कर लिया। 'अगर धर्म का पक्ष स्थिर रहा तो मेरे छोटे भाई लक्ष्मण का मेरे अग्रज के रूप में जन्म लेना साध्य हो तो हो।' यह कहते हुए उन्होंने तलवार ली। राजाराम अपने प्राण त्यागने के लिए प्रस्तुत हुए। तब आत्महत्या के कार्य के प्रारम्भ में ही—। ११०६

पेर्न्दाऩॆडु मायैयि ऩिऱ्पिरिया, ईर्न्दाऩव णाशि पिडित्तिळैयोऩ्
शोर्न्दाळिडु पूशल् शॆवित्तॊळैयिल्, शेर्न्दार्दलु मेतिरु माऱॆरुळा 1107

इळैयोऩ्–छोटे भाई; नॆटु मायैयिऩिल्–लम्बे माया-मोह से; पिरिया–छूटकर; पेर्न्ताऩ्–उससे अलग होकर; अवळ् नाचि पिटित्तु–उसकी नाक पकड़कर; ईर्न्ताऩ्–काट दी; चोर्न्ताळ्–उससे वह दुर्बल हुई; इटु पूचल्–उसने जो (रुदन-)स्वर निकाला वह; चॆवि तॊळैयिल् चेर्न्तु आर्तलुम्–ज्योंही कर्ण-विवर में भरा, त्योंही; तिरुमाल्–श्रीविष्णु (के अवतार श्रीराम); तॆरुळा–सजग होकर। ११०७

उधर छोटे भाई लक्ष्मण राक्षसी की माया से मिली मोहावस्था से छूटे। उन्होंने राक्षसी के बन्धन से अलग होकर उसकी नासिका पकड़कर (करवाल से) काट दी। उससे वह राक्षसी पीड़ित हुई और बल खोकर रुदन-स्वर निकालने लगी। वह स्वर श्रीविष्णु के कर्णविवर में आकर भर गया। तभी श्रीराम अपनी भ्रमित अवस्था से सचेत हुए। ११०७

परऱ्ऱॊहु काऩहत् तरक्कर् पल्हळल्
मुरऱ्ऱॊरु वॆञ्जमर् मुयल्हिऩ् ऱारॆदिर्
उरऱ्ऱिय वोशैयऩ् ऱॊरुत्ति यूरुपट्
टरऱ्ऱिय कुरलव ळरक्कि यामॆऩा 1108

परल् तॊकु काऩकत्तु–कंकड़-भरे जंगल में; अरक्कर्–राक्षस; पल् कळल् मुरऱ्ऱु–अनेक पायलों को वजने देते हुए; ऒरु वॆम् चमर्–एक भयंकर युद्ध; मुयल्किऩ्ऱार्–जो करते हैं उन; ऎतिर्–के सामने; उरऱ्ऱिय–उच्च स्वर में निकाला गया; ओचै अऩ्ऱु इतु–शब्द है नहीं, यह; ऒरुत्ति–एक स्त्री का; ऊरु पट्टु–

संकटग्रस्त होकर; अरऱ्ऱिय कुरल्–रुदन का स्वर है; अवळ्–वह; अरक्कि आम् अँता–राक्षसी ही है, यह सोचकर। ११०८

श्रीराम ने सोचा कि यह स्वर राक्षसों का स्वर नहीं है, जो कंकड़ीले जंगल में अपनी पायलों को बजने देते हुए युद्ध कर रहे हों और अपने शत्रुओं के सामने उच्च स्वर में नाद उठा रहे हों। किन्तु यह एक स्त्री का कष्ट में पड़कर निकाला हुआ रुदन-स्वर है। वह स्त्री कोई राक्षसी ही होगी। —यह सोचकर—। ११०८

अङ्गियि ऩॅडुम्बडै वाङ्गि याङ्गदु
शॅङ्गैयिऩ् करियवऩ् ऱिरिक्कुम् वेलैयिल्
पॉङ्गिरु ळप्पुऱत् तुलहम् बुक्कदु
कङ्गुलुम् बहलॅनप् पॉलिन्दु काट्टिऱ्ऱे 1109

करियवऩ्–नीलवर्ण; नॅटुम् पटै–लम्बा शर; चॅम् कैयिऩ् वाङ्कि–लाल (सुन्दर) हाथ में लेकर; आङ्कु–तव; अतु–उसको; अङ्कियिल्–आग्नेयास्त्र के रूप में; तिरिक्कुम् वेलैयिल्–प्रयोग करते समय; पॉङ्कु इरुळ्–बढ़ा हुआ अन्धकार; अ पुऱत्तु उलकम्–उस तरफ़ के लोक में; पुक्कतु–जा पहुँचा; कङ्कुलुम्–रात भी; पकल् अॅऩ–दिन के समान; पॉलिन्तु–प्रकाशमय बनकर; काट्टिऱ्ऱु–दिखाई दिया। ११०९

नीलवर्ण श्रीराम ने एक लम्बा शर लिया, उसे आग्नेयास्त्र के रूप में अभिमन्त्रित करके प्रेषित किया। तो अन्धकार अण्ड के उस पार के लोक में चला गया। इसलिए रात भी दिन के समान प्रकाशमय बन गयी। ११०९

नॅडुवरै पॉडिपड निवन्द मामरम्
ऑडिपड निलमह ळुळैय वूङ्गॅलाम्
शडशड वॅनुमॉलि तळैप्पच् चालवुम्
मुडुहिनऩ् कालिन्वॅङ् गालिऩ्मुम् मैयाऩ् 1110

वॅम् कालिऩ् मुम्मैयाऩ्–प्रतापी पवन के तिगुने वेग से; नॅटु वरै पॉटि पट–बड़े पर्वतों को चूर करते हुए; निवन्त मा मरम् ऑटि पट–ऊँचे बड़े वृक्षों को तोड़ते हुए; निल मकळ् उळैय–भूमिदेवी को दुःख देते हुए; ऊङ्कु अॅलाम्–सभी ओर; चट चट अॅऩुम् ऑलि–'तड़', 'तड़' शब्द; तळैप्प–अधिक होने देते हुए; कालिऩ्–पैदल; चालवुम् मुटुकिऩऩ्–जल्दी-जल्दी गये। १११०

श्रीराम सवेग जाने लगे। उनकी गति प्रतापी पवन की गति की त्रिगुणी थी। उस वेग में बड़े-बड़े पर्वत चूर हुए। ऊँचे और बड़े तरु गिरे। भूदेवी भी दुःखीं। सब ओर 'तड़-तड़' शब्द भर उठा। वे इस रीति से पैदल चले। १११०

ऑरुङ्गुयर्न् दुलहिन्मे लूळिप् पेर्च्चियुळ्
करुङ्गडल् वरुवदे यनैय काट्चियान्
पॅरुन्दुणैत् तम्मुनै नोक्किप् पिन्नवन्
वरुन्दलै वरुन्दलै वळ्ळि योयॅना 1111

ऊळि पेर्च्चि उळ्—युगान्तर में; उलकिन् मेल्—पृथ्वी पर; करुम् कटल्—नीला सागर; ऑरुङ्कु उयर्न्तु—एक साथ उमँगकर; वरुवतु अनैय—आता हो जैसे; काट्चियान्—दृश्यमान; पॅरुम् तुणै—परमपालक; तम् मुनै—अपने ज्येष्ठ भ्राता को; पिन्नवन्—अनुज लक्ष्मण; वळ्ळियोय्—उदार प्रभु; वरुन्तलै वरुन्तलै ऍन्ना—कातर नहीं हों, कातर मत होइए, कहते हुए। ११११

श्रीराम युगांतर के काल में उठकर भूमि पर बढ़ते चलनेवाले समुद्र के समान प्रचण्ड वेग से जा रहे थे। परमरक्षक अपने ज्येष्ठ को उस तरह आते देखकर लक्ष्मण ने कहा कि उदार प्रभु! दुःखी मत हों! दुःखी मत हों। (ऐसा कहकर—)। ११११

वन्दनॅ नडियनेन् वरुन्दल् वाळिनिन्
अन्दमि लुळ्ळमॅन् ड्रियक् कूरुवान्
शन्दमॅन् मलर्पुरै शरणज् जार्न्दनन्
शिन्दिन नयनमवन् दनैय शॅय्हैयान् 1112

चिन्तिन नयनम्—खोया हुआ नेत्र; वन्तु अनैय चॅय्कैयान्—फिर मिला हो, ऐसा कार्य करते हुए लक्ष्मण; वन्तनॅन् अटियनेन्—आ गया, दास मैं; वरुन्तल्—दुःखी मत हों; निन् अन्तम् इल् उळ्ळम्—आपका अनन्त प्रेम-भरा मन; वाळि—जिए; ऍन्ड्रु—ऐसा; अड्रिय कूरुवान्—समझाते हुए जो बोले; चन्तम् मॅन् मलर् पुरै—सुन्दर, कोमल कमल-सम; चरणम्—(श्रीराम के) चरणों पर; चार्न्तनन्—नमे। १११२

लक्ष्मण की पुनःप्राप्ति श्रीराम के लिए खोये नयन की पुनःप्राप्ति के समान अतिशय सुखदायक थी। वे, यह कहते हुए कि दास मैं आ गया। आपका अनन्त प्रेम-भरा मन जिए, जिससे श्रीराम को अपना आना विदित हो जाय, आये और सुन्दर और कोमल कमल-सम श्रीराम-चरणों पर विनत हुए। १११२

ऊट्रुरु कण्णिनी रॉळुह निन्ड्रवन्
इट्रिळङ् गन्ड्रिनैप् पिरिवुट्र् ड्रेङ्गिनिन्
ड्राट्रला दरट्रुव दरिदि नॅय्दिडप्
पाट्रुरु पनिमुलै याविन् पान्मैयान् 1113

ऊट्रु उरु—स्रोत के समान (बहनेवाले); कण्णिन् नीर् ऑळुक—आँखों के आँसू बहाते हुए; निन्ड्रवन्—स्थित होकर श्रीराम; ईट्रु इळम् कन्ड्रिनै—अपने ब्याये छोटे बछड़े से; पिरिवु उट्रु—अलग होकर; एङ्कि निन्ड्रु—तरसते हुए रहकर; आट्रलातु—सह न सकने से; अरट्रुवतु—रँभाती रही; अरितिन् ऍय्तिट—फिर वह बछड़ा अकस्मात

मिल गया; पाल् तुरु–तब दूध से भरकर; पनि मुलै आविन्–काँपनेवाले थन की गाय की-सी; पान्मैयान्–स्थिति में आकर। १११३

श्रीराम की आँखों से आँसू स्रोत से बहनेवाले जल के समान निकल आये। वे उस गाय की स्थिति में आये, जो अपने अभी ब्याये बछड़े को खो चुकी और वियोग की असह्य वेदना से रँभाती रही हो और जिसके पास अकस्मात बछड़ा आ गया हो, जिससे उसका थन दूध से भरकर काँपने लगा हो! । १११३

तऴुविनन् पन्मुऱै तारैक् कण्णिनीर्क्
कऴुविन नाण्डवन् कनह मेनियै
वऴुविनै यामॆन मनक्कॊ डेङ्गिनेन्
ॲऴुवॆन मलैयॆन वियैन्द तोळिनाय् 1114

आण्टु–तब; अवन् कनक मेनियै–उनके स्वर्ण-सम सुन्दर शरीर को; पन् मुऱै तऴुविनन्–अनेक बार गले से लगाकर; कण्णिन् नीर् कऴुविनन्–अश्रुजल से नहला दिया; ॲऴु ॲन मलै ॲन–खम्भे के समान और पर्वत के समान; इयैन्त–बने; तोळिनाय्–कन्धों वाले; वऴुविनै आम्–खो गये; ॲन–ऐसा; मनम् कॊण्टु–मन में धारणा करके; एङ्किनेन्–आर्त रहा। १११४

श्रीराम ने लक्ष्मण के कनकवर्ण शरीर को अनेक बार अपने आलिंगन में भर लिया। अपने आँसू से उन्हें नहलाया। खम्भे-सम और पर्वत-सम कन्धों वाले! तुम खो ही गए, ऐसा मन में निश्चय करके मैं बहुत आर्त रहा। १११४

ॲन्नैयङ् गॆय्दिय दियम्बु वायॆन
अन्नव नः(ह्)वॆला मऱियक् कूऱलुम्
इन्नलु मुवहैयु मिरण्डु मॆय्दिनान्
तन्नल दॊरुपॊरु ळॆनक्कु मेलिलान् 1115

तन् अलतु–खुद को छोड़; ऒरु पॊरुळ्–कोई वस्तु; तनक्कु मेल् इलान्–जिनके ऊपर न रही, उन श्रीराम ने; अङ्कु ॲय्तियतु ॲन्नै–वहाँ क्या हुआ; इयम्पुवाय्–बतलाओ; ॲन–ऐसा (पूछा,) पूछने पर; अन्नवन्–लक्ष्मण के; अ.·.तु ॲलाम् अऱिय कूऱलुम्–समझाकर कहने पर; इन्नलुम्–दुःख; उवकैयुम्–और सन्तोष; इरण्टुम् ॲय्तिनान्–दोनों का अनुभव किया। १११५

श्रीराम ने, जिनके ऊपर उनको छोड़कर कोई नही रहा, लक्ष्मण से प्रश्न किया कि वहाँ क्या हुआ? 'बतलाओ' कहने पर लक्ष्मण ने वहाँ की घटी सारी बातें समझाकर कही। तब श्रीराम को एक साथ दुःख और सन्तोष दोनों का अनुभव हुआ। १११५

आय्वुरु पॅरुङ्गड लहत्तु ळायिन्नार्
पाय्दिरै वरुन्दोरुम् बरियर् पालरो
तीय्वित्तैप् पिड़विवॅन् जिड़ैयिर् पट्टयाम्
ओय्वुरु तुयर्वर वुट्क नोन्मैयो 1116

आय्वु उरु–विचारणीय; पॅरुम् कटल अकत्तुळ् आयित्तार्–विशाल समुद्र में जो फँस गया; पाय् तिरै–(वह) लहराती आती लहर; वरुम् तोरुम्–जब-जब आती है, तब; परियल् पालरो–क्षुब्ध हो सकता है क्या; ती वित्तै–बुरे कर्म के कारण; पिड़वि वॅम् चिड़ैयिल्–जन्म रूपी (बन्धन में) कारा में; पट्ट नाम्–पड़े हमें; ओय्वु अरु–निरन्तर; तुयर् वर–कष्ट के आने पर; उट्कल्–कातर होना; नोन्मैयो–साहस का हेतु होगा क्या। १११६

लक्ष्मण ने श्रीराम को समझाया। जब कोई समुद्र-मध्य फँस गया, तो यह विचारणीय बात है कि हर लहर के आते समय उसे दुःख करना क्या कोई अर्थ रखता है? कर्मगति के अनुसार जन्म की कारा में बन्द हमें निरन्तर संकट आते रहेंगे। तब कातर होना क्या साहस का लक्षण होगा? । १११६

मूवहै यमररु मुलह मुम्मैयुम्
मेवरुम् पहैयॅनक् काह मेल्वरित्
एवरे कडप्पव रॅम्बि नीयुळै
आवदै वलियिनि यरणुम् वेण्डुमो 1117

ॲम्पि नी उळै–भैया, तुम हो; इनि वलि आवते–अब शक्ति मिल गयी; अरणुम् वेण्डुमो–और कोई रक्षण चाहिए क्या; मू वकै अमररुम्–त्रिदेव; उलकम् मुम्मैयुम्–त्रिलोक; मेवु अरुम् पकै–दुस्तर शत्रु; ॲतक्कु आक–मेरे, बनकर; मेल् वरित्–चढ़ आयें तो भी; एवरे कटप्पवर्–कौन मुझे पार पा सकेगा। १११७

श्रीराम ने उत्साह के साथ उत्तर दिया। भैया! तुम मेरे कनिष्ठ सहोदर साथ हो! मेरा साहस बढ़ गया। अब मुझे और किसी रक्षण की आवश्यकता पड़ेगी क्या? (नहीं।) त्रिदेव क्या त्रिलोक भी मिलकर मेरे साथ शत्रुता करके चढ़ आयें तो क्या कोई मुझे हरा सकेगा? । १११७

पिरिबवर् यावरुम् बिरिह पेरिडर्
वरुवन यावैयुम् वरुह वार्हळल्
शॅरुवलि वीरनिन् ड्रीरु मल्लदु
परुवर लॅन्वयिर् पयिलर् पालदो 1118

पिरिपवर् यावरुम्–छोड़नेवाले सभी; पिरिक–छोड़ जायँ; वरुवत–आनेवाले; पेर् इटर्–बड़े कष्ट; यावुम् वरुक–सब आ जायँ; चॅरु वलि–युद्धसाहसी; वार् कळल् वीर–लम्बी पायल से शोभित वीर; परुवरल्–(मेरे सारे) दुःख; निन् तीरुम्–

तुम्हारे द्वारा दूर हो जायँगे; अल्लतु–नहीं तो; ऎन्न् वयित्–मेरे पास; पयिलल् पालतो–आ सकेंगे क्या। १११८

मुझे छोड़ जानेवाले भले छोड़ जायँ! आनेवाले सारे संकट आ जायँ। युद्ध में साहस दिखानेवाले पायलधारी वीर! आनेवाले संकट तुम्हारे द्वारा निवारित हो जायँगे। नहीं तो वे मेरे पास आ सकेंगे क्या? । १११८

वऩ्ऱॊऴिल् वीरपोर् वलिय रक्कियै
वॆंन्ऱुपिन् मीण्डॆन नॆनवि ळम्बिऩाय्
पुन्ऱॊऴि लनैयवळ् पुरिन्द शीऱ्ऱत्ताल्
कॊन्ऱिलै पोलुमाऱ् कूऱुवा यॆऩ्ऱाऩ् 1119

वल् तॊऴिल् वीर–कठोर (युद्ध-)कार्य में दक्ष; पोर् वलि अरक्कियै–युद्ध में बल दिखानेवाली राक्षसी को; वॆंन्ऱु–जीतकर; पिन्–फिर; मीण्टॆन्–लौट आया; ऎन्न विळम्पिताय्–ऐसा कहा; अनैयवळ्–उसके; पुन् तॊऴिल् पुरिन्त–नीच कार्य करने से उत्पन्न; चीऱ्ऱत्ताल्–कोप से; कॊन्ऱिलै पोलुम्–मारा नहीं क्या; कूऱुवाय्–कहो; ऎन्ऱान्–कहा। १११९

कठोर युद्धकार्य में दक्ष वीर! तुमने कहा था कि युद्ध में बल दिखानेवाली राक्षसी को जीतकर लौट आया। उसने बुरा और नीच काम किया था। उससे क्रुद्ध होकर तुमने उसे मारा नहीं क्या? बताओ— श्रीराम ने जानना चाहा। १११९

तॊळैपडु मूक्कॊडु शॆवितु मित्तुह
वळैयॆयि ऱिदऴॊडु मरिन्दु माऱ्ऱिय
अळवैयिऱ् पूशलिट् टरऱ्ऱि ऩाळॆन
इळैयवन् विळम्बिनिन् ऱिरुहै कूप्पिनान् 1120

तॊळै पटु–छेद बने, ऐसा; मूक्कु ऒटु–नाक के साथ; चॆवि–(उसके) कान; इतऴ् ऒटुम्–अधरों के साथ; वळै ऎयिऱुम्–वक्र दाँतों को; तुमितुतु उक–टुकड़े कर गिराते हुए; अरिन्तु तलवार से काटकर; माऱ्ऱिय अळवैयिल्–उसको विकृत बनाया, तब; पूचल् इट्टु–शोर मचाते हुए; अरऱ्ऱिनाळ्–विलापी; ऎन्न–ऐसा; इळैयवन् विळम्पि–छोटे भाई ने कहकर; निन्ऱु–खड़े होकर; इरु कै कूप्पितान्–दोनों हाथ जोड़े। ११२०

लक्ष्मण ने उत्तर दिया कि नहीं। मैंने उसकी नाक को, छेद बन जाय ऐसा; अधरों और वक्र दाँतों को खण्ड होकर गिर जायँ, ऐसा तलवार से काटा। उसको इस तरह विकृत कर दिया। तभी वह ऊँचे स्वर में चिल्लाई। यह कहकर लक्ष्मण ने श्रीराम के सामने हाथ जोड़कर नमस्कार किया। फिर वह स्थिर खड़े रहे। ११२०

तॉल्लिरु डन्दिर्रुकॉलत् तॉडङ्गि ताळैयुम्
कॉल्ललै नाशियैक् कोय्दु नीक्किनाय्
वल्लैनी मनुमुदन् मरबि नोयॅन्नप्
पुल्लिन्न नुवहैयिऱ् पॉरुमि विम्मुवान् 1121

तॉल् इरुळ् ततिल्—बहुत घने अन्धकार में; कॉल—तुम्हें मारने का; तॉटङ्कि-ताळैयुम्—जिसने उपक्रम किया, उसे भी; कॉल्ललै—तुमने नहीं मारा; नाचियै कोय्तु नीक्कित्ताय्—नाक को काटकर अलग किया; मनु मुतल् मरपित्तोय—मनु-प्रभृति के कुलोत्पन्न; नी वल्लै—तुम (उस कुल की रीति के पालन में) समर्थ निकले; ॲन्न—कहकर; उवकैयिल् पॉरुमि—सन्तोष से भरकर; विम्मुवान्—फूल उठे; पुल्लितन्—आलिंगन कर लिया। ११२१

श्रीराम ने वह सुनकर साधुवाद दिया। इस घने अन्धकार के समय में उसने तुम्हें मारने का उपक्रम किया था। तो भी तुमने उसे केवल नाक काटकर जीवित छोड़ दिया। मनुप्रभृति कुल में उत्पन्न कुमार! तुम उस कुल की रीति के पालन में समर्थ निकले। श्रीराम अत्यधिक आनन्द से भर उठे। उन्होंने लक्ष्मण का आलिंगन कर लिया। ११२१

पेरुन् दुयरिड़ै पॅयर्त्तु ळारॅन
वीरनुन् दम्बियुम् विडिय नोक्कुवार्
वारुणम् निनैन्दनर् वान नीरुण्डु
तारणित् ताङ्गॉरु गिरियिड़् रुङ्गिनार् 1122

पेर् अरुम् तुयर्—दूर करने में कठिन दुःख से; इड़ै पॅयर्त्तु उळार् ॲन्न—थोड़ा निवृत्त हुए जैसे; वीरनुम् तम्पियुम्—श्रीरघुवीर और उनके छोटे भाई; विटियल् नोक्कुवार्—प्रभात की प्रतीक्षा में; वारुणम् निनैन्तनर्—वरुण-मन्त्र-जाप कर; वान नीर् उण्टु—आकाशगंगा का जल पीकर; तारणित्तु—आराम करके; अङ्कु—वहाँ; ऑरु किरियिल्—एक गिरि पर; तङ्कित्तार्—ठहरे। ११२२

दोनों भाइयों का कठोर और अनिवार्य दुःख थोड़ा शान्त हुआ। प्रभात की प्रतीक्षा करनी थी। उन्होंने वरुणमन्त्र का जाप किया, तो आकाशगंगा का जल प्राप्त हुआ। उसको पीकर उन्होंने अपनी प्यास बुझा ली। फिर वे वहाँ एक गिरि के थल पर ठहरे। ११२२

कल्लहल् वॅळ्ळिडैक् कानि नुण्मणल्
पल्लव मलर्हॉडु पडुत्त पायलिल्
ॲल्लैयि रुयरिन्नो डिरुन्दु शाय्न्दनन्
मॅल्लडि यिळैयवन् वरुड वीरन्ने 1123

वीरन्—श्रीरघुवीर; कानिल्—जंगल में; अकल् कल् वॅळ्ळिटै—विशाल पर्वत

के खुले थल में; तुण् मणल्—बारीक बालू पर; पल्लवम् मलर् कोंटु—पल्लवों और फूलों को; पटुत्तत पायलित्—(लक्ष्मण द्वारा) बिछाकर बनी शय्या में; मॅल् अटि—कोमल चरणों को; इळैयवन् वरुट—कनिष्ठ के सहलाते; ॲल्लै इल् तुयरिन् ओटु इरुन्तु—अपार दुःख के साथ रहकर; चाय्न्ततत—लेटे। ११२३

गिरि के ऊपर खुले थल में लक्ष्मण ने बारीक बालू बिछाया। उसके ऊपर पल्लवों और फूलों को डसाकर शय्या बनायी। श्रीराम अपार दुःख का अनुभव करते हुए उस शय्या पर लेटे। लक्ष्मण उनके कोमल चरण दाबते-सहलाते रहे। ११२३

मयिलियल् पिरिन्दपिन् मान नोयिनाल्
अयिल्विल तॊरुपॊरु ळवल मॅय्दलाल्
तुयिल्विल नॅन्बदु शॊल्लर् पालदो
उयिर्नॅडि दुयिर्प्पिडै यूश लाडुवान् 1124

मयिल् इयल् पिरिन्त पिन्—मयूर की-सी आभा वाली सीता के वियोग के बाद; मान नोयिनाल्—अपमान के रोग से; ऑरु पॊरुळ् अयिल्वु इलन्—कोई भी पदार्थ न खाकर; अवलम् ॲय्तलाल्—श्रीराम शोकातुर रहे, इसलिए; नॅटितु उयिर्प्पु इटै—लम्बी साँसों के मध्य; उयिर् नॅटितु ऊचल् आटुवान्—जिनके प्राण झूलते रहे वे; तुयिल्वु इलन्—अनिद्र रहे; ॲन्पतु—यह भी; चॊल्लर्पालतो—कहना चाहिए क्या। ११२४

मयूर की-सी छटा वाली सीताजी से वियुक्त होने के बाद श्रीराम को अपमान का रोग खाये जाता था। इसलिए वे कुछ खाते नहीं थे। दुःख सहते रहने से ठण्डी आहें भरते थे और प्राण मानो उनके कारण झूले में पड़कर डोल रहे थे। वे अनिद्र ही रहे —यह भी कहने की आवश्यकता है क्या ? । ११२४

मानवळ् मॅय्यिरै मरक्क लामैयिन्
आन्तदो वन्ऱॆनि लरक्कर् मायमो
कानह मुळुवदुङ् गण्णि नोक्कुङ्गाल्
शानहि युरुवॆनत् तोन्ऱुन् दन्मैये 1125

कानकम् मुळुवतुम्—जंगल भर में; कण्णिन् नोक्कुम् काल्—अपनी आँखों से देखता हूँ, तब; चानकि उरु ॲन—जानकी का रूप ही; तोन्ऱुम् तन्मै—दिखाई देता है, वह प्रकार; मानवळ्—मानवती (या मानवी); मॅय्—(सीताजी) के रूप को; इरै मरक्कलामैयिन्—किंचित भी नहीं भूलता, इसलिए; आन्ततो—ऐसा होता है क्या; अन्ऱु ॲनिल्—नहीं तो; अरक्कर् मायमो—राक्षसों की माया है। ११२५

श्रीराम को सर्वत्र सीता को ही देखने का भ्रम हो रहा था। उन्होंने आप ही आप पूछा कि अपनी आँखों से जहाँ भी देखता हूँ, वहाँ जंगल भर में जानकी का रूप ही दिखाई देता है। ऐसी बात क्यों ? उस

माननीया का रूप मैं सदा स्मरण कर रहा हूँ, इसलिए ? या यह राक्षसों की माया से होती है ? । ११२५

करुङ्गुऴर् चेयरिक् कण्णि कऱ्पिऩोर्क्
करुङ्गल मरुङ्गुवन् दिरुप्प वाशैयाल्
ऑरुङ्गुऱत् तळुवुवॅ नूरु काण्गिलेन्
मरुङ्गुल्पो लाऩदो वडिवु मॅल्लवे 1126

करुम् कुळल्—काले केश से; चेय् अरि कण्णि—और लाल लकीरों से युक्त आँखों से भूषित; कऱ्पिऩोर्क्कु—पतिव्रता स्त्रियों का; अरुम् कलम्—श्रेष्ठ आभरण-सम सीताजी; मरुङ्कु वन्तु इरुप्प—मेरे पार्श्व में आकर रहती; आचैयाल्—प्रेम से; ऑरुङ्कु उऱ—खूब कसकर; तळुवुवॅन्—आलिंगन करता; ऊरु काण्किलेन्—स्पर्श का अनुभव नहीं मिलता; वटिवुम्—उसका शरीर भी; मॅल्ल—धीरे-धीरे; मरुङ्कुल् पोल् आऩतो—उसकी कटि के समान (अविद्यमान) हो गया क्या । ११२६

(उन्हें अनोखा अनुभव होता है । वे कहते हैं—) काला केश, लाल डोरों से युक्त आँखें —इनसे भूषित और पतिव्रता स्त्रियों के लिए आभरण-सम जो हैं, वह सीता मेरे पास आकर रही । तब अनुराग के कारण मैंने उसे कसकर आलिंगन किया । पर वह मेरे आलिंगन में नहीं आयी । स्पर्श का अनुभव ही नहीं हुआ । तब क्या उसका शरीर भी उसकी कमर के समान अविद्यमान हो गया ? । ११२६

पुण्ड रिहप्पुदु मलरिऱ् ऱेन्बॊदि
तॊण्डैयञ् जेयॊळित् तुवर्त्त वायमु
दुण्डऩ् ऩॊण्डव ळुळैय ळल्लळाल्
कण्डुयि लऩ्ऱियुङ् गनवुण् डाहुमो 1127

पुतु पुण्टरिक मलरिल्—नये कमल-पुष्प में; तेऩ् पॊति—शहद से भरे; तॊण्टै—बिम्ब-फल के समान; अम्—सुन्दर; चेय् ऑळि—लाल प्रकाश से युक्त; तुवर्त्त—प्रवाल-सम; वाय् अमुतु उण्टॆऩ्—अधरामृत का पान किया; ईण्टु—अब; अवळ्—वह; उळैयळ् अल्लळ् आल्—पार्श्वस्था नहीं है, इसलिए; कण् तुयिल् इऩ्ऱियुम्—आँखें जब नहीं सोतीं, तब भी; कऩवु उण्टाकुमो—स्वप्न होगा क्या । ११२७

(और एक भ्रम देखिए ।) नवविकसित कमल के समान उसके मुख में शहद-भरे अधर हैं, जो बिम्बफल-समान है, और प्रवाल के समान भी । मैंने उन अधरों का अमृत-पान किया । पर असल में वह मेरे पास नहीं पायी गयी । फिर क्या वह स्वप्न था ? मैं तो निद्रारहित समय बिताता हूँ । अनिद्र अवस्था में भी स्वप्न होगा क्या ? । ११२७

मण्णिऩुम् वाऩिऩु मऱ्ऱै मूऩ्ऱिऩुम्
ऍण्णिऩुम् बॆरियदो रिडर्वन् दॆय्दिऩाल्

तण्णरुङ् गरुङ्गुऴर् चनहन् मामहळ्
कण्णिनु नॅडियैयो कॉडिय कङ्गुले 1128

मण्णितुम् वानितुम्–पृथ्वी में और आकाश से; मट्रै मून्ट्रितुम्–अन्य तीनों भूतों से; ऍण्णिनुम्–भावना से; पॅरियतु ओर्–बड़ी एक; इटर् वन्तु ऍय्तिनाल्–विपदा आयगी तो; कॉटिय कङ्कुले–क्रूर रात; तण् नरुम्–शीतल सुगन्धित; करुम् कुऴल्–काली केशिनी; चनकन् मा मकळ्–जनक की श्रेष्ठ पुत्री की; कण्णितुम्–आँखों से; नॅटियैयो–अधिक बड़ी होगी क्या। ११२८

(श्रीराम रात्रि से पूछते है कि) पृथ्वी, आकाश और अन्य तीन जल, अनिल और अनल आदि भूतों से भी, मन के विचारों से वड़ी कोई व्यथा मुझे होगी तो, हे क्रूर रात ! तुम सीता की आँखों से भी वड़ी हो जाओगी क्या— जिस सीता के शीतल सुगन्धित काले केश हैं और जो जनक की महान पुत्री है ? । ११२८

अप्पुडै यलङ्गुमी नमरु मार्हलि
उप्पुडै यिन्दुवॅन् रुदित्त वूऴित्ती
वॅप्पुडै विरिहदिर् वॅदुप्प मॅय्यॅलाम्
कॉप्पुळम् बॉडित्तदो कॉदिक्कुम् वानमे 1129

अलङ्कु मीन्–संचरणशील मछलियाँ; अमरुम्–जिसमें वास करती हैं, उस; अप्पु उटै–जल-भरे; आर् कलि–शब्दायमान समुद्र; उ पुटै–के मध्य; इन्तु ऍन्रु–चन्द्र नाम के साथ; उतित्त–उदित; ऊऴि ती–युगान्त की अग्नि की; वॅप्पु उटै–गरम; विरि कतिर्–विस्तृत किरणें; वॅतुप्प–जलाती हैं, तो; कॉतिक्कुम् वानम्–तपते आकाश के; मॅय् ऍल्लाम्–शरीर पर; कॉप्पुळम् पॉटित्ततो–फफोले बने हैं क्या। ११२९

आकाश में नक्षत्र देखकर श्रीराम सोचते हैं कि क्या ये आकाश के शरीर में निकले फफोले है, जो संचरणशील मछलियों से भरे समुद्र-मध्य-उत्पन्न इन्दु नाम की युगान्त की अग्नि की गरम किरणों के तपाने से निकल आये हैं ? । ११२९

इन्नन विन्नन पन्नि यीडळिन्दु
मन्नवर् मन्नन् मदलै मयङ्गिनान्
अन्नन कण्डन नल्हिन नॅन्नत्
तुन्निय शॅङ्गदिर्च् चॅल्वन् तोन्रिनान् 1130

इन्नन इन्नन–ऐसी-ऐसी बातें; पन्नि–कहते हुए विलाप कर; ईटु अऴिन्तु–बल खोकर; मन्नवर् मन्नन्–राजाधिराज के; मतलै–पुत्र; मयङ्कितान्–सुधिहीन हो गये; अन्नन कण्टनन्–उन (के कष्टों) को देखकर; अल्किनन् ऍन्न–(स्वयं) दुःखी हैं, समझकर; तुन्निय–घनी; चॅम् कतिर् चॅल्वन्–लाल किरणों के सूर्य; तोन्रिनान्–(धीरज बँधाने के लिए) प्रकट हुए। ११३०

श्रीराम ऐसी-ऐसी बातें कहकर बहुत प्रलाप कर रहे थे। राजाधिराज दशरथ के पुत्र श्रीराम, सत्त्व खोकर सुधहीन हो गये। ये सारी बातें सूर्य ने देखीं। श्रीराम बहुत संकट उठा रहे हैं —यह विचार कर (उनको मानो धीरज दिलाने के लिए) लाल किरणों से घने रूप से युक्त किरणमाली प्रकट हो आये। ११३०

11. कवन्दन् वदैप् पडलम् (कबन्ध-वध पटल)

निलम्बॊऱै यिलदॆन निमिर्न्द कर्पिनाळ्
नलम्बॊऱै कूर्दरु मयिलै नाडियॆ
अलम्बुरु पऱवैयु मऴुव वामॆनप्
पुलम्बुरु विडियलिऱ् कडिदु पोयिनार् 1131

निलम् पॊऱै इलतु—भूमिदेवी क्षमाशील नहीं (इनके सामने); ऎन—ऐसा; निमिर्न्त—बढ़ी हुई (क्षमाशीला); कर्पिनाळ्—पतिव्रता; नलम् पॊऱै—सौंदर्य-भार को; कूर्तरु—अधिक वहन करनेवाली; मयिलै—मयूराभा (सीता) को; नाटियॆ—खोजते हुए; अलम्पु उरु पऱवैयुम्—उड़ते रहनेवाले पक्षी भी; अऴुव आम्—रोते हैं, ऐसा कहा जाय; ऎन—इस रीति से; पुलम्पु उरु—पक्षियों के बोल से भरे; विटियलिल्—प्रभात समय में; कटितु पोयिनार्—सवेग गये (दोनों भाई)। ११३१

प्रभातकाल हुआ तो पक्षी शब्द करते हुए उड़ जाने लगे। तब ऐसा लगता था, मानो वे भी रो रहे थे। दोनों वेग के साथ भूमि की क्षमाशीलता को नहीं के बराबर कर देनेवाली क्षमा-भार से युक्त, अत्यन्त सुन्दरी, पतिव्रता व मयूराभा सीताजी को खोजते हुए चले। ११३१

ऐयैन् दडुत्त योशनैयि निरट्टि यडवि पुडैयुडुत्त
वैयन् दिरिन्दार् कदिरवनुम् वानि नाप्पण् वन्दुऱ्ऱान्
ऎय्युञ् जिलैक्कै यिरुवरुञ्जॆन् ऱिरुन्दॆ नीट्टि यॆव्वुयिरुम्
कैयिन् वळैत्तु वयिऱ्ऱडक्कुङ् गवन्दन् वनत्तिन् कण्णुऱ्ऱार् 1132

ऐ ऐन्तु अटुत्त योचनैयिल्—पाँच के पाँच (पचीस) योजन को; इरट्टि—दुगुनी (पचास योजन) दूर; अटवि पुटै उटुत्त वैयम्—जंगल में फैली भूमि में; तिरिन्तार्—खोजते फिरे; कतिरवनुम्—सूर्य भी; वानिन् नाप्पण्—आकाश-मध्य; वन्तु उऱ्ऱान्—आ पहुँचे; ऎय्युम् चिलै कै—शरप्रेषक धनुर्हस्त; इरुवरुम्—दोनों; चॆन्ऱु—चलकर; इरुन्ते नीट्टि—(एक ही स्थान पर) रहकर ही हाथ बढ़ाकर; ऎ उयिरुम्—किसी भी जीव को; कैयिल् वळैत्तु—अपने हाथों से समेटकर; वयिऱ्ऱु अटक्कुम्—अपने पेट में समा लेनेवाले; कवन्तन्—कबन्ध के; वनत्तिन् कण्—वन में; उऱ्ऱार्—आ पहुँचे। ११३२

वे उस जंगली मार्ग में पचास योजन चले। तब सूर्य भी आकाश-मध्य आ गये। धनुर्हस्त दोनों कबन्ध के वन में पहुँच गये। कबन्ध

एक ही स्थान पर रहकर अपने दोनों हाथों का घेरा बनाता और उनके क्रोड में आनेवाले सभी प्राणियों को समेट लेकर अपने पेट में डाल लेता। ११३२

अँऱुप्पिनङ्	गडैयुऱ	यानै	येमुदल्
उऱुप्पुडै	युयिरॅला	मुलैन्दु	शायन्दन
वॅऱिप्पुरु	नोक्किन	वॅरुवु	हिन्ऱन
परिप्परु	वलैयिडैप्	पट्ट	पान्मैय 1133

यात्तैये मुतल्–गज से लेकर; अँऱुम्पु इत्तम् कटै उऱ–चींटियों के कुल तक; उऱुप्पु उटै–अंगों-सहित; उयिर् ॲलाम्–प्राणी सब; उलैन्तु–संकट में पड़कर; चायन्तत–मर जाते थे; वॅऱिप्पु उऱु–ताकनेवाली; नोक्कित्त–आँखों के (सिंह, बाघ आदि); वॅरुवुकिन्ऱत्त–भयभीत होते थे; परिप्पु अऱु–अलग करने अयोग्य; वलै इटै पट्ट–जाल में फँसे हुए जैसे; पान्मैय–हो जाते थे। ११३३

गजसमूह से लेकर चींटीसमूह तक के सारे प्राणी इस तरह उसके वश में आ जाते और कष्ट उठाकर मर जाते। भयानक आँखों वाले जानवर (जैसे सिंह, बाघ आदि) भी डर जाते। अकाट्य जाल में फँस गये हों, ऐसी स्थिति में सभी जानवर रह जाते। ११३३

मरबुळि	निऱुत्तिलन्	पुरक्कु	माण्विलन्
उरनिल	नौरुवन्नाट्	टुयिर्हळ्	पोल्वन
वॅरुवुव	शिन्दुव	कुविव	विम्मलो
डिरिवन	मयङ्गुव	वियल्वु	नोक्किनार् 1134

मरपु उळि निऱुत्तिलन्–(प्रजाजनों को) उन उनके सम्प्रदाय पर नहीं स्थित रखता; पुरक्कुम् माण्पु इलन्–पालन का श्रेय नहीं रखता; उरन् इलन्–बल नहीं रखता; ऑरुवन्–ऐसे एक राजा के; नाट्टु उयिर्कळ् पोल्वन–राज्य के जनों के समान (रहनेवाले); वॅरुवुव–डरनेवाले; चिन्तुव–अस्त-व्यस्त भागनेवाले; कुविव–एक जगह पर एकत्रित होनेवाले; विम्मल् ओटु इरिवन–तड़पते हुए दौड़नेवाले; मयङ्कुव–मूच्छित पड़े हुए; इयल्पु–ऐसे रहनेवालों (प्राणियों) की स्थिति; नोक्कितार्–देखी। ११३४

वहाँ प्राणियों की हालत ऐसे राजा के राज्य के प्रजाजनों की-सी हो गयी, जो प्रजाजनों को उनके अपने-अपने योग्य मार्ग मे स्थिर रख नहीं सकता, उनका पालन करने का श्रेय नही रखता और जो बली नहीं रहता। वे प्राणी भयभीत हो जाते; विखर जाते; एक जगह पर एकत्रित होते; तड़पते हुए भागते या मूर्च्छित हो जाते। श्रीराम ने उनकी यह स्थिति देखी। ११३४

माल्वरै	युरुण्डन	वरुव	मामरम्
काल्बरिन्	दिरुवन	कात्त	याऱुहळ्

मेलुळ तिशैयोडुम् वॅळिह ळावन्
शूऴ्मुदिर् मेहङ्गळ् शुरुण्ड्डु वीऴ्वन 1135

माल् वरै–बड़े पर्वत; उरुण्टन वरुव–जो लुढ़कते आते हैं; मा मरम्–बड़े वृक्ष; काल् पऱ्िन्तु–जड़ों के कटने से; इऱ्वन–टूटकर (जो) गिरते हैं; कान याऱुकळ्–जंगली नदियाँ; मेल् उळ तिचै ऑट्टुम्–अपने सामने की दिशाओं के साथ; वॅळिकळ् आवन–खुला मैदान जो बनी हैं; चूऴ् मुतिर्–जलगर्भित; मेकङ्कळ्–मेघ; चुरुण्टु वीऴ्वन–(जो) घूमकर गिर जाते हैं। ११३५

उन्होंने यह भी देखा कि प्रकृति कैसे विकृत हो रही थी। बड़े-बड़े पर्वत लुढ़क आ रहे थे। बड़े वृक्ष जड़ से उखड़कर गिर रहे थे। जंगली नदियाँ तटों के प्रदेश के साथ ऊसर मैदान बन गयी थीं। जल-भरे मेघ घूम-मुड़कर गिर रहे थे। ११३५

नाऱ्ऱिशैप् परवैयु मिऱुदि नाळुऱक्
काऱ्ऱिशैत् तॅळ्वॅळुन् दुलह मॅङ्गणुम्
एऱ्ऱिशैत् तुयर्न्दुवन् दिडुङ्गु हिन्ऱन
पोऱ्ऱिशैच् चुऱ्ऱिय करत्तुट् पुक्कुळार् 1136

नाल् तिचै परवैयुम्–चारों दिशाओं के समुद्र; इऱुति नाळ् उऱ–युगान्त के आने से; काऱ्ऱु इचैत्तु ॲळ–आँधी के शोर के साथ बहने के कारण; उलकम् ॲङ्कणुम् एऱ्ऱु–सारे लोकों को अपने अन्दर समा लेकर; इचैत्तु–बहुत ही उच्च घोष निकालते हुए; उयर्न्तु वन्तु–उमँगकर; इटुङ्कुकिन्ऱन पोल्–मिल आते हों जैसे; तिचै चुऱ्ऱिय–चारों दिशाओं में लपेटकर आनेवाले; करत्तु उळ्–(कवन्ध के) करों के घेरे में; पुक्कु उळार्–प्रविष्ट हुए हो गये। ११३६

वे कवन्ध के हाथों के घेरे के अन्दर पहुँच गये। वे हाथ युगान्त में शोर के साथ पवनोद्वेलित होकर सारे विश्व को लीलते हुए उठ आ रहे हों, ऐसा वढ़ते हुए आकर घेरा बना रहे थे। ११३६

तेमॊऴि तिऱत्तिना लरक्कन् शेनैवन्
देमुऱ वळैन्ददॆन् ऱुवहै यॅय्दिनार्
नेमिमाल् वरैयदु नॅरुक्कु हिन्ऱदे
आमॆन लायहै मदिट्कु ळायिनार् 1137

नेमि माल् वरै अतु–चक्रवाल पर्वत हो; नॅरुक्कुकिन्ऱते आम्–कसकर लपेटते हों; ॲन्नल् आय–जैसे आये; कै मतिट्कु उळ्–कर रूपी चहारदीवारी के अन्दर; आयिनार्–जो फँस गए; ते मॊऴि तिऱत्तिनाळ्–शहद-सी बोली वाली सीता के निमित्त; अरक्कन् चेनै वन्तु–राक्षस-सेना ने आकर; एम् उऱ वळैत्तत्तु–उत्साह के साथ हमें घेर लिया है; ॲन्ऱु–यह विचार कर; उवकै ॲय्तिनार्–(दोनों) खुश हुए। ११३७

हाथों की चहारदीवारियाँ बन गयीं। वे चक्रवालपर्वत के समान थे। तब दोनों ने अनुमान किया कि मधु-मधुर-भाषिणी सीता के निमित्त

राक्षसप्रभु रावण की सेना उत्साह के साथ आ घेर गयी है। उन्हें इस बात से हर्ष हुआ। ११३७

इळवलै नोक्किऩ्ऩिराम ऩेऴैयै
उळैवुशॅ यिरावण ऩुऱैयु मूरुमिव्
वळवैय दाहुद लऱिदि यॆयनम्
किळर्पॅरुन् दुयरमुङ् गीण्ड दामॅन्ऱाऩ् 1138

इरामऩुम्–श्रीराम ने भी; इळवलै–लघुराज को; नोक्किऩऩ्–देखकर; ऐय–तात; एऴैयै–अवला सीता को; उळैवु चॅय् इरावणऩ्–त्रास देता हुआ रावण; उऱैयुम् ऊरुम्–जहाँ रहता है, वह नगर भी; इ अळवैयतु आकुतल्–इसी सीमा के अन्दर है; अऱिति–जान लो; नम् किळर्–हमारा उत्थानशील; पॅरुम् तुयरमुम्–बड़ा दुःख भी; कीण्टतु आम्–मिटा, हो जायगा। ११३८

श्रीराम ने अपने छोटे भाई से कहा कि तात ! सीता को त्रास देने वाले रावण का वासस्थान इसी सीमा के अन्दर है। यह जान लो। तब हमारा बढ़ती पर रहनेवाला दुःख भी मिट गया समझो। ११३८

मुऱ्ऱिय वरक्करद मुळङ्गु तानैयेल्
एऱ्ऱिय मुरशॊलि येङ्गुञ् जङ्गॊलि
पॅऱ्ऱिल दामॅऩिऱ् पिऱिदॊन् ऱामॆऩच्
चॊऱ्ऱऩऩ् ऩिळैयवऩ् ऱॊऴुदु मुऩ्ऩिऩ्ऱाऩ् 1139

इळैयवऩ्–अनुज; मुऱ्ऱिय–हमको जो घेर आयी हैं; अरक्कर् तम्–राक्षसों की; मुळङ्कु ताऩै–शब्दायमान सेनाएँ हैं; ॲल्–तो; ॲऱ्ऱिय मुरचु ऑलि–प्रहरित भेरियों का नाद; एङ्कुम् चङ्कु ऑलि–ध्वनित शंखों का नाद; पॅऱ्ऱु इलतु आतलिऩ्–नहीं पाया जाता, इसलिए; पिऱितु ऑऩ्ऱु आम् ॲऩ–दूसरी कोई वस्तु है, यह; चॊऱ्ऱऩऩ्–कहकर; तॊऴुतु मुऩ् निऩ्ऱाऩ्–नमस्कार करते हुए सामने स्थित रहे। ११३९

तब कनिष्ठ भ्राता ने तर्क पेश किया। भैया ! हमको शब्दायमान राक्षस-सेना घेरती आ रही हो तो भेरियाँ पिटेंगी और शंख बजेंगे और भेरियों का नाद और शंखों की ध्वनि सुनाई देगी। यह इन नादों से युक्त नहीं है। इसलिए यह कोई दूसरी वस्तु है। लक्ष्मण यह विनय के साथ कहकर श्रीराम के सामने अंजलिबद्ध हो खड़े हुए। ११३९

तॅळ्ळिय वमुदॅऴत् तेवर् वाङ्गिय
वॅळ्ळॅयिऱ् ऱरवन्दाऩ् वेऱॊर् नाहन्दाऩ्
तळ्ळरुम् वालॊडु तलैयि ऩाल्वळैत्
तुळ्ळुऱक् कवर्वदे यॊक्कु मूऴियाय् 1140

ऊऴियाय्–युगपुरुष; तॅळ्ळिय–स्वच्छ; अमुतु ॲऴ–अमृत निकल आए; तेवर् वाङ्किय–ऐसा, देवों ने जिसको लेकर मन्थन किया; वॅळ् ॲयिऱ्ऱु अरवम् ताऩ्–

श्वेत दाँतों का नाग (वासुकी) हो; वेरु ऑरु नाकम् ताऩ्–या कोई दूसरा नाग हो; तळ् अरु वाल् ओट्टु–दुर्वार पूँछ के साथ; तलैयिताल् वळैत्तु–सिर को घुमाकर, मण्डल बनाकर; उळ् उड़्–उस मण्डल के अन्दर; कवर्वते ऑक्कुम्–पकड़ लेता हो, ऐसा है। ११४०

लक्ष्मण आगे बोले— युगान्त में भी अमर रहनेवाले परमपुरुष ! यह श्वेत दाँतों से युक्त वासुकी नाग हो सकता है, जिसका उपयोग कर देवों ने सागर-मन्थन किया था। या कोई दूसरा नाग होगा, जो अपनी पूँछ और अपने सिर को मोड़कर मण्डल बना रहा है और उसके अन्दर सबको ले रहा है। ११४०

ॲऩ्ऱिवै विळम्बिय विळवल् वाशहम्
नऩ्ऱॆऩ नितैन्दऩ नडन्द नायहन्
ऑऩ्ऱिरण् डियोशऩै युळ्पुक् कोड्गऱाऩ्
निऩ्ऱॆऩ विरुन्दवक् कवन्द नेर्शॆऩ्ऱार् 1141

ॲऩ्ऱु इवै–इस तरह ये; विळम्पिय–जिन्होंने कहे; इळवल् वाचकम्–उन कनिष्ठ भ्राता का वचन; नटन्त नायकऩ्–आगे जो जाते रहे, उन नायक श्रीराम ने; नऩ्ऱु ॲऩ नितैन्ततऩ्–अच्छा (ठीक) समझा; ऑऩ्ऱु इरण्टु योचनै–एक-दो योजन; उळ् पुक्कु–(उस घेरे के) अन्दर और जाकर; ओड्कल् ताऩ् निऩ्ऱु—पर्वत ही खड़ा है; ॲऩ—ऐसा; इरुन्त—जो रहा; अ कवन्तऩ् नेर् चॆऩ्ऱार्—उस कबन्ध के सामने पहुँचे। ११४१

लक्ष्मण के इन वचनों को श्रीराम ने सुना और कहा कि अच्छा कहा। दोनों आगे चले और उन्नत पर्वत के समान दृश्यमान उस कबन्ध के सामने आये। ११४१

वॆयिऱ्चुड रिरण्डिऩै मेरु माल्वरैक्
कुयिऱ्ऱिय वामॆऩक् कौदिक्कुङ् गण्णिऩाऩ्
ॲयिऱ्ऱिडैक् किडैयिरु काद मीण्डिय
वयिऱ्ऱिडै वायॆऩु महर वेलैयाऩ् 1142

वॆयिल् चुटर् इरण्टितै–धूप देनेवाले दो सूर्यों को; मेरु माल् वरै–मेरु के बड़े पर्वत में; कुयिऱ्ऱिय आम्–जटित किया गया हो; ॲऩ–जैसे; कौतिक्कुम् कण्णिताऩ्–प्रज्वलित आँखों का; ॲयिऱ्ऱु इटैक्कु इटै–दाँत और दाँत के मध्य; इरु कातम् ईण्टिय–दो मील-दशकों की दूरी के साथ; वयिऱ्ऱु इटै–पेट में; वाय् ॲऩुम्–मुख रूपी; मकर वेलैयाऩ्–मकरालय वाला। ११४२

(भयंकर कबन्ध का वर्णन किया जाता है यों।) महामेरु पर दो गरम किरणमालियों को जटित किया गया हो, ऐसा उसकी दोनों आँखें ज्वलन्त रहीं। उसका मुख पेट के अन्दर धँसा हुआ था; उसके दाँत

और दाँत के मध्य दो योजनों का अन्तर रहा। वह मुख क्या था मकरालय (-सा) था। ११४२

ईण्डिय पुलवरो डवुण रिन्दुवैत्
तीण्डिय नॅडुवरैत् तॅय्व मत्तिन्नैप्
पूण्डुयर् वडमिरु पुडैयिन् वाङ्गलिन्
नीण्डन्न किडन्दन्न निमिर्न्द कैयिन्नान् 1143

ईण्टिय पुलवर् ओटु–एकत्रित देवों के साथ; अवुणर्–असुर; इन्तुवै–चन्द्र को; तीण्टिय–स्थिर-स्तम्भ बनाकर; नॅटु वरै–बड़े (मेरु) पर्वत को; तॅय्व मत्तित्तै–दिव्य मथानी को; पूण्टु–रखकर; उयर् वटम्–वासुकी की रस्सी से; इरु पुटैयिन् वाङ्कलिन्–दोनों पार्श्वों में बारी-बारी से खींचने से; नीण्टु अॅत्त–लम्बा बना पड़ा रहा जैसे; निमिर्न्त कैयित्तान्–ऊपर उठे हाथों वाला। ११४३

देवों और असुरों ने एकत्रित होकर चन्द्र को स्थिर-थम्भ के रूप में गाड़ा। बड़े मन्दर को दिव्य मथानी बनाया। बड़े वासुकी नामक सर्प को उस पर लपेटकर दोनों ओर खड़े होकर बारी-बारी से खींचा। उस दिन लम्बा बनकर वासुकी जैसा दिखता था, वैसा ही कवन्ध के हाथ लम्बे और मोटे बन पड़े थे। ११४३

तॉहैक्कन्नड् करुमहन् ऱुरुत्तित् तूम्बॅन्नप्
पुहैक्कॉडिक् कन्नलॉडु पॉडिक्कु मूक्किन्नान्
पहैत्तहै नॅडुङ्गडल् परुहुम् पावहन्
शिहैक्कॉळुन् दॅन्नवॅदिर् तिरुहुम् नावित्तान् 1144

करुमकन्–लुहार की; तॉकै कतल्–अधिक आग की भाथी में; तुरुत्ति तूम्पु अॅत्त–लगी रहनेवाली धौंकनी की नाक (नली) के समान; कतल् ऑटु कॉटि पुकै–आग के साथ लताओं के आकार में फैलनेवाला धूम; पॉटिक्कुम्–निकालनेवाली; मूक्कित्तान्–नाक का; पकै तकै–शत्रुता के साथ; नॅटुम् कटल् परुकुम्–विशाल सागर को पी लेनेवाली; पावकन्–बड़वाग्नि की; चिकै कॉळुन्तु अॅत्त–ज्वालाशिखा के समान; तिरुकुम्–घूमती रहनेवाली; नावित्तान्–जीभ वाला। ११४४

उसकी नाक से लुहार की अधिक अग्निसहित भाथी से लगी हुई धौंकनी की नाक के समान आग और लता के आकार में धुआँ निकल रहा था। (सागर का) शत्रु बनकर विशाल सागर को जो बड़वाग्नि पी (सोख) रही थी, उस बड़वाग्नि की ज्वालाशिखा के समान घूमती रहती हुई जीभ वाला था वह कबन्ध। ११४४

पुरण्डर विडैवर वॅरुविप् पुक्कुरै
अरण्डनै नाडियो ररुवि मालवरै

मुरण्डहु मुळैनुळै मुळ्वॆण् डिङ्गळै
इरण्डुकू रिट्टॆन्न विलङ्गॆ यिऱ्ऱिनान् 1145

अरवु पुरण्टु इटै वर–(राहु) सर्प को लोटते हुए अपने पास आते देखकर; वॆरुवि–भय खाकर; पुक्कु उऱै–घुसकर वास करने योग्य; अरण् तत्तै नाटि–सुरक्षित स्थान ढूँढ़कर; ओर् अरुवि माल् वरै–सरिताओं-सहित एक पर्वत पर; मुरण् तकु–प्रबल; मुळै नुळै–गुफा में प्रविष्ट; मुळु वॆण् तिङ्कळै–पूर्ण-श्वेत चन्द्र को; इरण्टु कूऱु इट्टु अॆन्न–दो अंशों में काट लिया गया हो, ऐसा; इलङ्कु–दृश्यमान; ऍयिऱ्ऱिनान्–वक्रदाँतों का। ११४५

उसके वक्रदाँत उस पूर्णचन्द्र के दो टुकड़ों के समान थे, जो राहु-केतु के सर्पों को पास आते देखकर डर से भाग गया, और सरिताओं-सहित बड़े एक पर्वत की शक्तियुत गुफा में घुसा हो और वहाँ जिसके दो टुकड़े हो गये हों। ११४५

ओदनीर् मण्णिवै मुदल वोदिय
पूदमो रैन्दिनिऱ् पॊरुन्दिऱ् ऱन्ऱिये
वेदनूल् वरन्मुऱै विदिक्कु मैम्बॆरु
पादहन् दिरण्डुयिर् पडैत्त पण्बिनान् 1146

ओतम् नीर्–शीतल जल; मण्–पृथ्वी; इवै मुतल–इनको आदि में रखकर; ओतिय–गणित; पूतम् ओर् ऐन्तितिल्–पाँच एक भूतों का; पॊरुन्तिऱ्ऱु अन्ऱिये–न बनकर; वेत नूल्–वेद-शास्त्रों में; वरन् मुऱै–यथाक्रम; वितिक्कुम्–विहित; ऐम् पॆरुम् पातकम्–पाँच महापातक; तिरण्टु उयिर् पटैत्त–मिलकर प्राणवन्त हो गये; पण्पिनान्–ऐसे प्रकार वाला। ११४६

उसका शरीर शीतल जल, पृथ्वी आदि कथित पाँचों भूतों का बना नहीं लगता था। पर वेदों और शास्त्रों में वर्जित पाँचों महापातकों (हत्या, चोरी, असत्यवाचन, सुरापान, गुरुनिन्दा या परस्त्री-प्रेम, जुआ, सुरापान, असत्यवाचन, दान देते समय रोकना —ये पंच महापातक माने जाते हैं।) का मिलकर वना और प्राणवन्त हुआ-सा था। ११४६

वॆय्यवॆङ् गदिर्हळै विळुङ्गुम् वॆव्वरा
शॆय्तॊळि लिलतुयिल् शॆवियिन् ऱॊळ्ळैयान्
पॊय्हिळर् वन्मैयिऱ् पुरियुम् पुन्मैयोर्
वॆहुरु नरहैयुम् नहुम्व यिऱ्ऱिनान् 1147

वॆय्य वॆम् कतिर्कळै–गरम और प्रिय (शीतल) किरणों वाले सूर्य और चन्द्र के; विळुङ्कुम्–खादक; वॆम् अरा–भयंकर (राहु-केतु) सर्प; चॆय् तॊळिल् इल–निष्क्रिय होकर; तुयिल्–आकर जहाँ सोते हैं; चॆवियिन् तॊळ्ळैयान्–कर्ण-विवर वाला; किळर् वन्मैयिन्–बढ़ती कठोरता से; पॊय् पुरियुम्–असत्य-वादन (आदि दुष्कर्म) करनेवाले;

पुन्मैयोर्–नीच लोग; वैकुम्–जहाँ वास करते हैं; नरकैयुम्–उस नरक का भी; नकुम्–परिहास करनेवाले; वयिऱ्ऱिऩाऩ्–पेट का। ११४७

सूर्य गरम किरणों के हैं और चन्द्र प्रिय शीतल किरणों के। इन दोनों को राहु और केतु नाम के सर्प पकड़कर निगल लेते हैं। ये दोनों अपना काम छोड़कर कबन्ध के कर्ण-विवरों में जाकर सोते रहते हों, ऐसे कानों वाला था वह। असत्य-कथन आदि नीच काम करनेवालों को जहाँ जाकर रहना पड़ता है, उस नरक को भी लजानेवाला था, उसका पेट। ११४७

मुऱ्ऱिय वुयिरॆला मुरुङ्ग वारित्ताऩ्
पऱ्ऱिय करत्तिऩऩ् पणैत्त पण्णैयिल्
तुऱ्ऱिय पुहुतरु तोऱ्ऱत् ताऩमऩ्
कोऱ्ऱवाय् तऱ्चॆयल् कुऱित्त वायिऩाऩ् 1148

मुऱ्ऱिय–जिनको घेर लिया; उयिर् ऎलाम्–उन सभी प्राणियों को; मुरुङ्क–मिटाकर; ताऩ् वारि पऱ्ऱिय–जिनसे पकड़ता है; करत्तिऩऩ्–ऐसे हाथों का; पणैत्त पण्णैयिल्–मोटे झुण्डों में; तुऱ्ऱिय–ठूँसे हुए (प्राणी); पुकु तरुम्–घुसते हैं; तोऱ्ऱत्ताल्–उस दृश्य से; नमऩ् कोऱ्ऱ वाय् तऩ्–यम के राजद्वार का; चॆयल्–कार्य; कुऱित्त–जिसकी ओर संकेत करता है (समान); वायिऩाऩ्–ऐसा मुख वाला। ११४८

उसके हाथ अपने क्रोड के घेरे में आये हुए सभी प्राणियों को मिटाने के काम में लीन थे। बड़े-बड़े झुण्डों में अनेक प्राणी उसके मुख में ठूँसे जा रहे थे। उस दृश्य को देखकर यम का सुरक्षित राजद्वार स्मरण आता था। ११४८

ओलमार् कडलॆऩ मुऴङ्गु मोदैयाऩ्
आलमे यॆऩविरुण् डऴऩ्ऱ वाक्कैयाऩ्
नीलमाल् नेमियिऱ् ऱलैयै नीक्किय
कालऩे मियैप्पॆरुङ् गवन्दक् काट्चियाऩ् 1149

ओलम् आर्–गर्जनशील; कटल् ऎऩ–सागर-सम; मुऴङ्कुम् ओतैयाऩ्–कोलाहलमय शब्द वाला; आलमे ऎऩ–हलाहल के ही समान; इरुण्टु–काले; अऴऩ्ऱ–उष्ण; आक्कैयाऩ्–शरीर का; नील माल् नेमियिल्–नील श्रीविष्णु के चक्रायुध से; तलैयै नीक्किय–सिर-कटे; काल नेमियिल्–कालनेमि के समान; पॆरुम् कवन्त–बड़े कबन्ध के; काट्चियाऩ्–दृश्य वाला। ११४६

उसका बोल गर्जनशील सागर के शोर के समान था। उसका शरीर हलाहल के समान काला और गरम था। नीले वर्ण के श्रीविष्णु के क्रायुध के द्वारा सिर-कटे कालनेमि नामक राक्षस के कबन्ध के समान

उसका आकार दिखता था। (कालनेमि के सौ सिरों और हाथों को श्रीविष्णु ने अपने चक्रायुध चलाकर काटा था। वही कालनेमि पीछे कंस बना था। यह पुराणांतर में कहा गया है। इसका उल्लेख अयोध्याकाण्ड में भी आया है।)। ११४९

ताक्किय तणप्पिल्का लॅड्रियत् तन्नुडै
मेक्कुयर् कॉडुमुडि यिळन्द मेरुनेर्
आक्कैयि न्रुन्दवन् ऱन्नै यव्वळि
नोक्किन रिरुवरु नुणङ्गु केळ्वियार् 1150

तणप्पु इल् काल्–अप्रतिहत पवन के; ताक्किय ऍंड्रिय–वेग से बहकर झटका देने से; तन् उटै–अपने; मेक्कु उयर्–ऊपर उठे हुए; कॉटु मुटि–उन्नत शृंगों को; इळन्त–जिसने खोया है; मेरु नेर्–ऐसे मेरु के समान; इरुन्तवन्–जो रहा; तन्नै–उस कबन्ध को; नुणङ्कु केळ्वियार्–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान के; इरुवरुम्–(श्रीराम और लक्ष्मण) दोनों ने; अ वळि–वहाँ; नोक्किनर्–देखा। ११५०

उसका शरीर उस मेरु के समान था, जिसके उन्नत शृंग दुर्धर्ष वेग से बहनेवाले पवन के झटके से टूटकर गिरे हों। सूक्ष्म श्रवणज्ञान के स्वामी दोनों, श्रीराम और लक्ष्मण ने वहाँ ऐसे कबन्ध को देखा। ११५०

नीर्पुहु नॅडुङ्गड लडङ्गु नेमिशूळ्
पार्पुहु नॅडुम्बहु वायॅप् पार्त्तनर्
शूर्पुह वरियदो ररक्कर् तॉन्मदिल्
ऊर्पुहु वायिलो विदुवॅन् ऱुन्निनार् 1151

नीर् पुकु–जल जिसमें प्रवेश करता है; नॅटुम् कटल् अटङ्कु–वे विशाल समुद्र जिसमें समाविष्ट हैं; नेमि चूळ्–और (जो) चक्रवालगिरि से घिरी हुई है; पार् पुकु–वह भूमि जिसमें प्रविष्ट हो सकती है; नॅटुम् पकु वायॅ–उस बड़े और खुले मुख को; पार्त्तनर्–(उन्होंने) देखा; चूर् पुकल् अरियतु–सूर्य जिसमें प्रवेश नहीं कर सकता, ऐसा; ओर्–एक; अरक्कर्–राक्षसों का; तॉल् मतिल् ऊर्–प्राचीन प्राचीरों से आवृत नगर में; पुकु–प्रवेश करानेवाला; वायिलो इतु–द्वार क्या यह; ऍन्ऱु–ऐसा; उन्नित्तार्–सोचा। ११५१

श्रीराम और लक्ष्मण ने देखा कि उसके मुख के अन्दर सारी नदियों के जल को समा लेनेवाले सारे सागरों को अपने अन्दर लिये हुए चक्रवालगिरि से आवृत पृथ्वी जा सकती है! उन्होंने सन्देह किया कि क्या यह सूर्य के लिए भी अगम प्राचीन प्राचीरों से आवृत लंका नगर का द्वार है?। ११५१

अव्वळि यिळैयव नमैन्दु नोक्किये
वॅव्विय वीरुपॅरुम् बूदम् विल्वलाय्

वव्विय तन्गैयिन् वळैत्तु वाय्प्पॅयुम्
शॅय्वदॅ न्विवणॆन्च् चॅम्मल् शॅप्पुवान् 1152

अ वऴि–तव; इळैयवन्–कनिष्ठ भ्राता (के); अमैन्तु नोक्कियॆ–खूब देखकर; विल् वलाय्–धनुर्विद्याविदग्ध; वॅव्वियतु ओरु पॅरुम् पूतम्–भयंकर एक भूत; वव्विय–अपने द्वारा पकड़े गये प्राणियों को; तन् कैयिल् वळैत्तु–अपने हाथों से समेट लेकर; वाय् पॅयुम्–अपने मुख में डालनेवाला है; इवण् चॅय्वतु ॲन्–यहाँ करना क्या; ॲन–कहने पर; चॅम्मल्–प्रभु श्रीराम; चॅप्पुवान्–बोले। ११५२

तब लक्ष्मण ने कवन्ध को खूब ध्यान से देखा। फिर श्रीराम से कहा कि धनुर्विद्या-निपुण ! यह भयंकर भूत है, जो अपने क्रोड में आने वाले सभी प्राणियों को हाथ से लेकर अपने मुख में डाल लेता है ! अब हम क्या करें ? —लक्ष्मण ने यह प्रश्न किया। ११५२

तोहैयुम् बिरिन्दन्न ॲन्दॅ तुञ्जिनान्
वेहवॅम् बऴिशुमन् दुऴल वेण्डिलेन्
आहलिन् यानिनि यिदनुक् कामिडम्
एहुदि योण्डुनिन् ऱिळव लाण्डॆन्ऱान् 1153

इळवल्–छोटे भैया; तोकैयुम् पिरिन्तनळ्–मयूराभा (जानकी) विछुड़ गयी; ॲन्तै तुञ्चितान्–मेरे पिता (जटायु) चिरनिद्रा में लग गये; वेक वॅम् पऴि–अकस्मात आया यह कठोर अपयश; चुमन्तु–ढोता हुआ; उऴल वेण्टलेन–संकट में फिरना नहीं चाहता; आकलिन्–इसलिए; यान्–मैं; इति इततुक्कु–अब इसका; आमिटम्–(आमिश =) खाद्य मांस (या मेरा स्थान); ईण्टु निन्ऱु–यहाँ से; एकुति–चलो; ॲन्ऱान्–कहा। ११५३

तब श्रीराम ने नैराश्य से यों कहा— छोटे भैया ! मयूर की-सी छटा वाली सीता बिछुड़ गयी। मेरे पिता (-सम) जटायु चिर निद्रा में लीन हो गये; अकस्मात आयी यह निंदा ढोता फिरना मैं नहीं चाहता। इसलिए अब मेरा स्थान उसका भोजन बनना है। (आमिटम्— आमिष का भी तमिऴ रूप है; आम् इटम्— करके बननेवाला स्थान अर्थ भी किया जा सकता है।) तुम मुझे छोड़कर यहाँ से चले जाओ। ११५३

ईन्ऱव रिडर्प्पड वॅम्बि तुन्पुऱ्
चान्ऱवर् तुयरुऱप् पऴिक्कुच् चान्ऱुमाय्त्
तोन्ऱलि नॅन्नुयिर् तुऱन्द पोदलाल्
ऊन्ऱिय पॅरुम्बडर् तुडैक्क वॊण्णुमो 1154

ईन्ऱवर्–मेरे जनक-जननी; इटर् पट–कष्ट भोगते हैं; ॲम्पि–मेरा कनिष्ठ भरत; तुन्पुऱ्–दुःखी है; चान्ऱवर् तुयर् उऱ–उत्तम (वसिष्ठ आदि) लोग संकट में पड़े हैं; पऴिक्कु–अपयश के लिए; चान्ऱुम् आय्–एक दृष्टान्त बना; तोन्ऱलिन्–पैदा हुआ हूँ, इसलिए; ॲन् उयिर् तुऱन्त पोतु अलाल्–बिना प्राण त्यागे; ऊन्ऱिय–

स्थिर रूप से हुए; पॅरुम् पटर्—इन बड़े दुःखों को; तुटैक्क ऑण्णुमो—मिटा सकेंगे क्या। ११५४

मेरे कारण मेरे माँ-बाप दुःखी हुए। मेरा कनिष्ठ भरत संकट में है। बड़े और आदरणीय वसिष्ठ आदि दुःख में हैं। और भी मैं अपकीर्ति का दृष्टान्त बना पैदा हुआ हूँ! इसलिए मरे विना इस बड़े और गहरे दुःख का मिटना सम्भव है क्या? । ११५४

इल्लियल् बुडैयनी रळित्त विन्शीलाळ्
वल्लिवल् लरक्करदम् मनैयु ळाळॅनच्
चॉल्लिनन् मलैयॅनच् चुमन्द तूणियन्
विल्लिनन् शॅल्वनो मिदिलै वेन्दन्बाल् 1155

इल् इयल्पु उटैय नीर्—गृहस्थ धर्म का; अळित्त—पालनकारिणी; इन् चॉलाळ्—मधुरभाषिणी; वल्लि—लता (-समाना); अरक्कर् तम् मनै उळाळ्—राक्षसों के घर में है; ॲन—ऐसा; मितिलै वेन्तन् पाल्—मिथिलापति के पास; चॉल्लि—कहता हुआ; नल् मलै—श्रेष्ठ पर्वत; ॲन चुमन्त—के समान ढोये जानेवाले; तूणियन् विल्लिनन्—तूणीरों व धनु के साथ; चॅल्वनो—जाऊँगा क्या। ११५५

गृहस्थ धर्म की अच्छी पालिका, मधुरभाषिणी और लता-समाना सीता राक्षसों के घर में है! श्रेष्ठ पर्वत के समान यह तूणीर और धनु ढोते हुए मैं क्या मिथिलेश के पास यह समाचार देने जाऊँ? । ११५५

तळैयविळ् कोदैयैत् ताङ्ग लाऱ्ऱलन्
इळैपुरन् दळित्तन्मे लिवर्न्द कादलन्
उळॅनन् वुरैत्तलि नुम्ब रानॅन
विळैदनन् ऱादलिन् विळिद नन्ऱॅन्ऱान् 1156

तळै अविळ् कोतैयै—प्रफुल्ल पुष्पों की मालाधारिणी सीता को; ताङ्कल् आऱ्ऱलन्—संरक्षित करने की शक्ति से हीन; इळै पुरन्तु अळित्तल् मेल्—(पर) (इला) भूमि के पालन-शासन पर; इवर्न्त कातलन्—उमँगते प्रेम का; उळन्—है; ॲन—ऐसा; उरैत्तलिन्—कहे जाने से; उम्परान् ॲन विळैतल्—स्वर्गवासी कहे जाने का यह कार्य; नन्ऱु आतलिन्—अच्छा है, इसलिए; विळितल्—मरना; नन्ऱु ॲन्ऱान्—अच्छा होगा, कहा। ११५६

लोग यों कहकर मेरी निंदा करेंगे कि श्रीराम में विकसित पुष्पों की मालाधारिणी सीता का पालन करने की शक्ति नहीं रही। पर भूमि का पालन और शासन करने की इच्छा तो खूब रही! इस अपवाद से 'वह स्वर्गवासी हो गया' यह कहा जाना अच्छा है। इसलिए मेरा मर जाना ही श्रेयस्कर है! श्रीराम ने अपार खेद के साथ अपनी भर्त्सना के ये वचन कहे। ११५६

आण्डा निऩ्ऩ पऩ्ऩिड वैयऱ् किळवीरऩ्
ईण्डा युऩ्बिऩ् ऩेयिऩ शॆय्दे यिडर्वन्दु
मूण्डाऩ् मुऩ्ऩे यारुयि रोडु मुडियादे
मीण्डे पोदऱ् कामॆऩि ऩऩ्ऱॆऩ् विऩैयॆऩ्ऱाऩ् 1157

आण्टान्–जगद्रक्षक; इनत्त–इस भाँति; पन्नितट–बोले, तब; ऐयऱ्कु–प्रभु से; इळवीरन्–छोटे वीर; उन् पिन्–आपके पीछे; ईण्टु आय्–यहाँ आकर; एयित्त चॆय्ते–आज्ञा-पालन करके; इटर् वन्तु मूण्टाल्–आफ़त आ गयी तो; मुन्ने–आपके पहले ही; मुटियाते–विना मरे ही; आर् उयिर् ओटु–प्रिय प्राणों के साथ; मीण्टे पोतऱ्कु आम्–लौट जाने ही योग्य रहा; ऎनिल्–तो; नन्ऱु ऎन् विनै–बड़ी अच्छी होगी न मेरी सेवा; ऎन्ऱान्–कहा । ११५७

जगन्नायक ने यह सब गहरे शोक के साथ कहा। तब छोटे वीर लक्ष्मण ने अपने ज्येष्ठ भ्राता से कहा कि भाई! यह भी खूब रहा। आपके साथ वन में आया आपकी अज्ञाओं का पालन करने का, आप पर संकट आया तो आपके पहले अपनी जान दे देने का संकल्प करके। अब प्रिय प्राण लेकर लौट जाने के ही लिए योग्य समझा जाऊँ, तो मेरी सेवा बड़ी श्लाघनीय होगी न ? ११५७

ऎन्ऱा ऩऩ्ऩाऩ् पिऩ्ऩु मिशैप्पा ऩिडर्दऩ्ऩै
वॆऩ्ऱा रऩ्ऱो वीररॆऩ ळावार् मेलाय
तऩ्ऱाय् तऩ्दै तम्मु ऩॆऩुन्दऩ् मैयर्मुऩ्ऩे
पोऩ्ऱा निऩ्ऱा ऩीङ्गुव दऩ्ऱो पुहळम्मा 1158

ऎन्ऱान् अन्तान्–ऐसा कहकर लक्ष्मण; पिन्नुम् इचैप्पान्–और भी बोले; इटर् तन्नै–दुःख को; वॆन्ऱार् अन्ऱो–जीतनेवाले ही तो; वीरर्कळ् आवार्–वीर होते हैं; तन् ताय्–अपनी माता; तन्तै–पिता; तन् मुन्–अपना अग्रज; ऎन्नुम् तन्मैयर्–ऐसे पद में रहनेवालों को; मुन्ने पोन्ऱा–अपने पहले मरने देते हुए; निन्ऱाल्–कोई जीवित रहा तो; पुकळ् नीङ्कुवतन्ऱो–उसकी कीर्ति चली नहीं जायगी क्या; अम्मा–माँ । ११५८

लक्ष्मण ने और भी कहा। संकट आए तो उस पर विजय पानेवाले ही वीर कहे जायँगे न ? अपनी माँ, अपने पिता और अग्रज आदि बड़ों को मरने देकर कोई जीवित रहेगा तो क्या उसकी कीर्ति मिट नहीं जायगी ? । ११५८

माऩे यऩ्ऩा ळॊऩ्ऩॊडु तम्मुऩ् वरैयारुम्
काऩे वैहक् कण्डुयिल् कॊळ्ळाऩ् ऱऩिहात्तऱ्
काऩा ऩॆऩ्ऩे यॆऩ्ऱवर् मुऩ्ऩे यवरऩ्ऱित्
ताऩे वन्दा ऩॆऩ्ऱपिऩ् वेऱोर् तवरुण्डो 1159

माने अन्नाळ्–हरिणी ही सम; तन् ओटु–सीताजी के साथ; तम् मुन्–अपने

बड़े भाई के; वरै आरुम्–बाँसों से पूर्ण; कात्तै वैक–जंगल में ही रहते समय; कण् तुयिल् कोळ्ळान्–अनिद्र रहा; तनि कात्तर्कु आनान्–अनुपम रक्षक रहा; ॲन्ऩते–क्या ही (खूब); ॲन्ऩ्ऱवर्–जिन्होंने ऐसा कहा, वे; अवरै इऩ्ऱि–उनके विना ही; मुन्ऩे–उनके पहले ही; तानै वन्तान्–खुद आ गया; ॲन्ऩ्ऱु पिन्–कहेंगे, फिर; वेऱु ओर् तवऱु–उससे बढ़कर कोई और दोष; उण्टो–हो सकता है क्या। ११५९

लोगों ने यह देखकर आश्चर्य के साथ मेरी सराहना की कि हरिणी-सी सीताजी के साथ जो गये, उन अपने ज्येष्ठ भ्राता के साथ लक्ष्मण जंगल गया और रक्षणकर्ता बना। अब उनको ही यह कहने का मौका मिल जाय कि लक्ष्मण उनको छोड़कर उनके आने से पहले ही लौट आ गया तो (कितना बड़ा दोष हो जायगा?) इससे बढ़कर कोई दोष हो सकता है? । ११५९

ॲन्ऩ्ऱा युन्मुन् नेयिन यावुम् मिशैयिन्नल्
पिन्ऩ्ऱा दॅय्दिप् पेरिशै याळऱ् कळिवुण्डेल्
पॉन्ऩ्ऱा मुन्ऩम् बॉन्ऱुदि यॅन्ऩ्ऱा ळुरैपॉय्या
निन्ऩ्ऱा लन्ऱो निन्ऱदु वाय्मै निलैयम्मा 1160

ॲन् ताय्–मेरी माता ने; उन् मुन्–तुम्हारा ज्येष्ठ भाई; एयिन यावुम्–जो आज्ञाएँ देगा, वह सब; इचै–पूरा करो; इन्नल्–विपदाएँ आयें तो; पिन्ऩ्ऱातु–पीछे मत रहो और; ॲय्ति–आगे जाकर अपने ऊपर धारण कर लो; पेर् इचै आळऱ्कु–प्रकीर्तित उनके; अळिवु उण्टेल्–मरने की नौबत आयगी तो; पॉन्ऱा मुन्ऩम्–उनके मरने के पहले; पॉन्ऱुति–तुम मर जाओ; ॲन्ऩ्ऱाळ्–यह कहा है; उरै–उनका वचन; पॉय्या निन्ऩ्ऱाल् अन्ऱो–असत्य नहीं होगा, तभी तो; वाय्मै निलै निऱ्पतु–सत्य स्थिर होगा; अम्मा–माँ। ११६०

मेरी माता ने मुझे आदेश दिया था कि तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम जो भी आज्ञाएँ देंगे, वे सब पूरा करो। विपदा आयेगी तो पीछे मत रहो, पर आगे बढ़कर तुम उसे अपने ऊपर ले लो। शायद मरने की स्थिति आने की सम्भावना देखते हो तो उनके मरने के पहले तुम मरण का वरण कर लो। उस आदेश के अनुसार चलूँ तभी न मेरा सत्यव्रत स्थिर होगा? । ११६०

ॲऩ्पॅऱ् ऱाळुम् यानु मॅनैत्तोर् वहैयालुम्
निऩ्पॅऱ् ऱाट्कु निऩ्कु निनैप्पुम् पिळैयामल्
नऱ्पॊन् ऱोळाय् नल्लवर् पेण नलिनिऱ्कुम्
शॊऱ्पॅऱ् ऱान्मऱ् ऱारुयिर् पेणित् तुऱवेमाल् 1161

नल् पॊन् तोळाय्–श्रेष्ठ और सुन्दर कन्धों वाले; ॲन् पॅऱ्ऱाळुम् यानुम्–मेरी जननी और मैं; निन् पॅऱ्ऱाट्कुम्–आपकी जननी और; निऩ्कुम्–आपके प्रति; ॲनैत्तु ओर् वकैयालुम्–किसी भी तरह से; निनैप्पुम् पिळैयामल्–विना मन बदले; नल्लवर्

पेण–श्रेष्ठ लोगों द्वारा श्लाघ्य रीति से; नति निऱ्कुम्–अच्छी तरह अचल रहनेवाली; चॊल् पॆऱ्ऱाल्–(साधु-)वचन प्राप्त करेंगे तो; मऱ्ऱु–उसको छोड़कर; आर् उयिर् पेणि–अपने प्राणों के पालन में; तुऱवोम्–आपका कैंकर्य नहीं छोड़ेंगे। ११६१

उत्तम और मनोरम स्वर्ण-सम कन्धों वाले! मेरी जननी को और मुझे यह ख्याति मिल जाय कि हम आपकी जननी और आपके प्रति उत्तम मनुष्यों से श्लाघ्य होकर स्थिरमन रहे। जब इसकी सम्भावना है, तब उसके विपरीत अपने प्राणों के लोभ से अपने कर्तव्य छोड़ देंगे क्या? । ११६१

ओदुङ् गालप् पल्पॊरुण् मुऱ्ऱुऱ् ऱॊरुवाद
वेदञ् जॊल्लुन् दॆवरुम् वीयुङ् गडैवीयाय्
मादङ् गन्दिन् ऱुय्न्दिव नत्तिन् ऱलैवाऴ्म्
पूदङ् गॊल्लप् पॊन्ऱुदि यॆन्निऱ् पॊरुळुण्डो 1162

ओतुम् काल्–सच कहा जाय; पल् पॊरुळ्–जग के सारे पदार्थ; मुऱ्ऱु उऱ्ऱु–जब मिट जायेंगे; ऒरुवात–अमर; अ वेतम् चॊल्लुम्–उन वेदों में कथित; तेवरुम्–देव भी; वीयुम् कटै–मिट जायेंगे, उस युगान्त में; वीयाय्–अमर रहनेवाले आप; मातङ्कम् तिन्ऱु–गजों को खाकर; उय्न्तु–जीवित; इ वनत्तिन् तलै–इस कानन में; वाऴ्म्–रहनेवाले; पूतम् कॊल्ल–भूत के द्वारा मारे जाकर; पॊन्ऱुति ऎन्निल्–मर जायेंगे तो; पॊरुळ् उण्टो–उसका कोई अर्थ रहता है क्या। ११६२

सच कहा जाय, हे प्रभु! आप कौन हैं? जब प्रपंच की सारी सृष्टि मिट जायगी और अमर वेदों से प्रशंसित देवता लोग भी नहीं रह जायँगे, उस युगान्तकाल में भी आप अमर रहनेवाले हैं। ऐसे आप, हाथी खाते हुए जीवित रहनेवाले इस काननवासी भूत के मारते मर जायेंगे? इस कथन का कोई अर्थ हो सकता है क्या? । ११६२

केट्टार् कॊळ्ळार् कण्डवर् पेणार् किळर्पोरिल्
तोट्टार् कोवैच् चोर्कुऴ लन्नैत् तुवळामल्
मीट्टा नॆन्नुम् बेरिचै कॊळ्ळान् चॆरुवॆल्ल
माट्टान् माण्डा नॆन्ऱलिन् मेलुम् वचैयुण्डो 1163

केट्टार् कॊळ्ळार्–सुननेवाले नहीं मानेंगे; कण्टवर् पेणार्–देखनेवाले नहीं चाहेंगे; तोटु आर् कोतै–विकसित दलों के पुष्पों की मालाधारिणी; चोर् कुऴल् तन्नै–बिखरे केश की सीतादेवी को; तुवळामल्–दुःख में न छोड़कर; मीट्टान् ऎन्नुम्–मुक्त कर लाया, यह; पेर् इचै कॊळ्ळान्–बड़ा यश प्राप्त नहीं करके; चॆरु वॆल्ल माट्टान्–युद्ध में जीत न पा सका; माण्टान्–मर गया; ऎन्ऱु इलिन्–यह कथन होने के बाद; मेलुम्–उससे बढ़कर; वचै उण्टो–निंदा होगी क्या। ११६३

जो कोई सुनेगा वही नहीं मानेगा। जो कोई देखेगा वही नहीं चाहेगा। लोग यह कहें कि विकसित पुष्पों की मालाधारिणी सीतादेवी

को दुःख से निवृत्त कर लौटा नहीं लाया, न किसी युद्ध में विजय पायी; पर श्रीराम मर गया —इससे बढ़कर क्या निंदा होगी ? । ११६३

तणिक्कुन् दन्मैत् तन्ऱॅन्ऩि लन्ऱित् तहैवाळाल्
कणिक्कुन् दन्मैत् तन्ऱु विडत्तिऩ् कनलबूदम्
पिणिक्कुड् गैयुम् बॅय्पिल वायुम् पिळैयामल्
तुणिक्कुम् वण्णङ् गाणुदि तुन्बन् दुऱवॅन्ऱान् 1164

विटत्तिल्–विष के समान; कनल् पूतम्–जलता यह भूत; कणिक्कुम् तन्मैत्तु अन्ऱु–कुछ गण्य नहीं है; इ तकै वाळाल्–(हमारी) इन उत्तम तलवारों द्वारा; तणिक्कुम् तन्मैत्तु अन्ऱु–नहीं काटा जा सकता है; ॲन्तिल् अन्ऱु–ऐसा भी नहीं है; पिणिक्कुम् कैयुम्–जकड़नेवाले इन हाथों को; पॅय् पिल वायुम्–गुफा के समान मुख को, जिसमें वह सारे जीवों को समेटकर डाल लेता है; पिळैयामल्–अचूक रीति से; तुणिक्कुम् वण्णम्–काट लेता हूँ, वह रीति; काणुति–देखिए; तुन्पम् तुऱ–शोक छोड़ दीजिए; ॲन्ऱान्–कहा । ११६४

यह विष-समान जलनेवाला भूत कुछ गण्य नहीं है ! इन उत्तम तलवारों से न मारा जा सकेगा —ऐसा भी नहीं । अब देख लीजिए। मैं कैसे सभी जीवों को जकड़ लेनेवाले इसके हाथों को और गुफा के समान मुख को छिन्न-भिन्न कर देता हूँ । आप दुःख करना छोड़ दें । —लक्ष्मण ने ऐसा कहा । ११६४

ॲन्ऩा मुन्ऩे शॊल्लु मिळङ्गो विऱैयोऱ्कु
मुन्ऩे शॅल्ल मुन्ऩव नन्ऩा निन्नुमुन्दत्
तन्ऩे रिल्लात् तम्बि तडुप्पान् पिऱरिल्लै
अन्ऩो कण्ड वुम्बरुम् वॅय्दुऱ् ऱळुदाराल् 1165

ॲन्ऩा–ऐसा; मुन्ऩे चॊल्लुम्–(करने के) पूर्व ही वादा करके; इळम् को–लघुराज; इऱैयोऱ्कु–भगवान (श्रीराम) के; मुन्ऩे चॅल्ल–आगे गये; मुन्ऩवन्–ज्येष्ठ श्रीराम; अन्ऩानिन्नुम्–उनके भी; मुन्त–आगे गये; तन् नेर् इल्ला–अप्रमेय; तम्पि–छोटे भाई; तटुप्पान्–रोकने लगे; पिऱर् इल्लै–(उनको रोकने) कोई दूसरे नहीं थे; कण्ट उम्परुम्–इसको देख देव भी; वॅय्तुऱ्ऱु–शोकाकुल होकर; अळुतार्–रोये; अन्ऩो–हाय । ११६५

लक्ष्मण ने कार्य के पहले ही वादा कर दिया । लघुराज यह कहकर (उसको चरितार्थ करने के विचार से) श्रीराम के आगे कबन्ध के मुख की तरफ़ जाने लगे । श्रीराम भी उनको पीछे करके आगे जाने लगे । तब अनुपमेय छोटे भाई ने अपने बड़े भाई को रोका । इस तरह दोनों ने आपस में एक दूसरे को रोका । देवों ने यह देखा और यह भी देखा कि उन दोनों को रोकनेवाला कोई अन्य नहीं है । तब वे शोक से रोने लगे । ११६५

इत्तैय राहिय विरुवरु मुहत्तिरु कण्बोल्
कत्तैयुम् वार्हळल् वीरर्शॅन्ऱ् ऱणुहलुङ् गवन्दऩ्
वित्तैयि ऩॅय्दिय वीरर्नीर् यावर् कॊलॅऩ्ऩ
नित्तैयु नॅञ्जिऩ रिमैत्तिल रुरुत्तनर् निऩ्ऱार् 1166

इत्तैयर् आकिय–ऐसे; कत्तैयुम् वार् कऴल्–क्वणनशील बड़ी पायलधारी; वीरर् इरुवरुम्–दोनों वीर; मुकत्तु इरु कण् पोल्–मुख की दोनों आँखों के समान; चॅऩ्ऱु अणुकलुम्–ज्योंही जाकर नियराये, त्योंही; कवन्तऩ्–कवन्ध के भी; वित्तैयिऩ् ऎय्तिय–कर्म-प्रेरित हो आये; वीरर् नीर्–वीर तुम; यावर् कॊल्–कौन हो; ऎऩ्ऩ–पूछने पर; नित्तैयुम् नॅञ्चिऩर्–सोचते हुए मन के साथ; उरुत्तनर्–क्रुद्ध बनकर; इमैत्तिलर्–अपलक; निऩ्ऱार्–(तरेरते) खड़े रहे। ११६६

क्वणनशील पायलधारी दोनों वीर एक ही मुख की दोनों आँखों के समान जाकर कबन्ध के पास पहुँचे। कवन्ध ने उनसे पूछा कि कर्म-परिपाक से इधर आगत तुम दोनों वीर कौन हो? यह सुनकर दोनों वीर क्रुद्ध हुए और कुछ सोचते हुए उसको तरेरने लगे। उस स्थिति में वे खड़े रहे। ११६६

अऴिन्दु ळारल रिहऴ्न्दऩ रॅऩ्ऩैयॅऩ् ऱळऩ्ऱाऩ्
पॊऴिन्द कोपत्तऩ् पॊऱिक्कतल् विऴित्तॊऱुम् बॊडिप्प
विऴुङ्गु वॅऩ्ऩ वीङ्गलुम् विण्णुऱ वीरर्
ऎऴुन्द तोळ्हळै वाळ्हळा लरिन्दऩ रिट्टार् 1167

अऴिन्तुळ्ळार् अलर्–(मुझे देखकर भी) ये भय से निस्पंद नहीं हुए; ऎऩ्ऩै इकऴ्न्तऩर्–मेरा अपमान करते हैं; ऎऩ्ऱु अऴऩ्ऱाऩ्–यह सोचकर खौल उठा; तऩ् कोप पॊऱि कतल्–अपनी अंगार के साथ कोपाग्नि; विऴि तॊऱुम्–दोनों आँखों द्वारा; पॊटिप्प–प्रकट करते हुए; विऴुङ्कुवाऩ् ऎऩ्ऩ–निगल लूँगा, इस विचार से; वीङ्कलुम्–शरीर को फुलाने पर; वीरर्–दोनों वीरों ने; विण् उऱ ऎऴुन्त–आकाश से लगते हुए जो उठे, उन कन्धों को; वाळ्कळाल्–तलवारों से; अरिन्तऩर्–काटकर; इट्टार्–गिराया। ११६७

कबन्ध सोचने लगा कि यह क्या नई बात है? ये मुझे देखकर भयभीत होकर मूर्च्छित नहीं हो रहे! मेरा अपमान करते हैं। उसकी कोपाग्नि अंगारों के साथ उसकी दोनों आँखों से प्रकट होने लगी। उसने उनको निगलने के विचार से अपना शरीर फुलाया। तब दोनों वीरों ने आकाश तक उठे हुए उसके हाथों को अपनी तलवारों से काटकर गिरा दिया। ११६७

कैह ळऱ्ऱुवॆंड् गुरुदिया ऱॊऴुक्किय कवन्दऩ्
मॆय्यिऩ् मेऱ्कॊडु किऴक्कुऱप् पॆरुनदि विरवुम्

शैय मानॅडुन् दाळ्तडत् तनिवरै तन्नो
डैय नीङ्गिय पेरॅळि लुवमैय नानान् 1168

कैकळ् अऱ्ऱु–कटे हाथों का होकर; वॅम् कुरुति आऱु–गरम रक्त की नदी; ऑळुक्किय कवन्तन्–बहाता हुआ कबन्ध; मॅय्यिल्–अपने शरीर में; मेऱ्कु ऑट्टु किळक्कु–पश्चिम से पूर्व तक; उऱ–जाती हुई; पॅरु नति विरवुम्–बड़ी नदी (कावेरी) से युक्त; चैय मा नॅट्टु–सह्य नाम के लम्बे-चौड़े और; ताळ् तट–विस्तृत तराइयों के; तनि वरै तन्नॊटु–श्रेष्ठ पर्वत के साथ; ऐयम् नीङ्किय–सन्देह-रहित; पेर् ऍळिल्–अतीव सुन्दर; उवमैयन् आनान्–तुल्य बन गया। ११६८

कटे हाथों के साथ शरीर पर रक्त की नदी बहाते हुए जो रहा, उस कवन्ध का शरीर सह्याद्रि से असंदिग्ध और सुन्दर रूप से तुल्य हो गया, जिस पर कावेरी की लम्बी नदी पश्चिम से लेकर पूर्व के छोर को छूती हुई बहती है। ११६८

आळु नायह तङ्गैयिऱ् ऱीण्डिय वदनाल्
मूळुञ् शाबत्तिन् मुन्दिय तीविनै मुडित्तान्
तोळुम् वाङ्गिय तोमुडै याक्कैयैत् तुऱवा
नीळ नीङ्गिय परवैयिन् विण्णुऱ निमिर्न्दान् 1169

आळुम् नायकन्–लोकपालक जगन्नाथ प्रभु श्रीराम ने; अम् कैयिल्–अपने सुन्दर हस्त से; तीण्टिय अतनाल्–स्पर्श किया, उससे; मूळुम् चापत्तिन्–प्रभावपूर्ण शाप के कारण; मुन्तिय–आरब्ध; तीविनै–पाप को; मुटित्तान्–मिटाकर; तोळुम् वाङ्किय–कटी भुजाओं के साथ; तोम् उटै याक्कैयै–दोषयुक्त शरीर को; तुऱवा–छोड़कर; नीळम् नीङ्किय–नीड़ को त्यागकर आये; परवैयिन्–पक्षी के समान; विण् उऱ निमिर्न्तान्–आकाश को स्पर्श करते हुए बढ़ा। ११६९

उसके शरीर पर भुवनगोप्ता जगन्नायक श्रीराम के सुन्दर हाथ का स्पर्श हो गया था। इसलिए सारे पाप कट गये, जो प्रबल शाप के कारण उसे लगे थे और फल दे चुके थे। भुजाओं-रहित दोषसहित अपना शरीर छोड़कर वह नीडमुक्त पक्षी के समान आकाश में एक दिव्य रूप में खड़ा हो गया। ११६९

विण्णि निन्ऱवन् विरिञ्जने मुदलिनर् यार्क्कुम्
कण्णि निन्ऱव निवनॅनक् करुत्तुऱ वुणर्न्दान्
ऑण्णि यन्नवन् गुणङ्गळै वाय्दिऱन् दिशैत्तान्
पुण्णि यम्बयक् किन्ऱुळि यरियदॅप् पॊरुळे 1170

विण्णिन् निन्ऱवन्–आकाश में खड़ा होकर; विरिञ्चने मुतलिनर्–ब्रह्मादि; यार्क्कुम्–सभी को; कण्णिन् निन्ऱवन्–दृष्टि के सामने स्थित; इवन् ऍन–भगवान ये हैं, यह; करुत्तु उऱ उणर्न्तान्–मन में स्थिर रूप से जान लिया; अन्नवन् कुणङ्कळै–उनके कल्याणगुणों को; ऍण्णि–स्मरण कर; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; इचैत्तान्–

गान किया; पुण्णियम्-पुण्य; पयक्कित्तुऴि-जब फलीभूत होता है, तब; ऍ पॊरुळे अरियतु-कौन सी वस्तु दुर्लभ है। ११७०

आकाश में खड़ा होकर उसने अपने मन में यह स्थिर रूप से जान लिया कि ये ही वे परमदेव हैं, जो विरंचि आदि देवताओं की (ध्यान-) दृष्टि के लक्ष्य बने हैं। वह उनके कल्याणगुणों का स्मरण करके गान करने लगा। हाँ! जब पुण्य फलीभूत होने लगता है, तब कौन सी वस्तु दुर्लभ होती है? । ११७०

ईन्ऱवनो ॲप्पॊरुळु मॆल्लैतीर् नल्लऱत्तिन्
शान्ऱवनो तेवर् तवत्तिन् ऱनिप्पयनो
मून्ऱु कवडाय् मुळैत्तॆऴुन्द मूलमो
तोन्ऱि यरुविनैयेन् शाबत् तुयर्तुडैत्ताय् 1171

तोन्ऱि-मेरे सामने प्रकट होकर; अरु विनैयेन्-दुस्तर पापी (मेरे); चाप तुयर्-शाप का दुःख; तुडैत्ताय्-मिटानेवाले; ऍ पॊरुळुम् ईन्ऱवनो-सभी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता हैं क्या; ऍल्लै तीर्-सीमाहीन; नल् अऱत्तिन्-श्रेष्ठ धर्म के; चान्ऱु अवनो-प्रमाण जो हैं, वे हैं क्या; तेवर् तवत्तिन्-देवों के तप के; तनि पयनो-श्रेष्ठ फलस्वरूप हैं क्या; मून्ऱु कवटु आय्-त्रिशाखा में; मुळैत्तु ऍऴुन्त-प्रकट होनेवाले; मूलमो-उनके मूल हैं क्या। ११७१

मेरे सामने प्रकट होकर कठोर पापी मेरा शाप-दुःख दूर करनेवाले हे प्रभु! क्या आप ही चराचर के जनक हैं? अनन्त धर्मपथ के पथिकों के लिए प्रमाणस्वरूप आप ही हैं क्या? आप देवों के कठिन तप के फलस्वरूप अवतरित परमपुरुष हैं? या ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूपी त्रिशाखाओं के मूल परब्रह्म हैं? । ११७१

मूलमे यिल्ला मुदल्वने नीमुयलुम्
कोलमो यार्क्कुन् दॆरिवरिय कोळ्हैयवाल्
आलमो वालि ऩडैयो वडैक्किडन्द
बालनो वेलैप् परप्पो पहराये 1172

मूलमे इल्ला-अनादि; मुतल्वने-मूलपुरुष; नी मुयलुम्-आप जो लेते हैं; कोलमो-वे रूप; यार्क्कुम् तॆरिवु अरिय-सबके लिए अज्ञ; कॊळ्कैय-तथ्यों के आधार पर हैं; आल्-इसलिए; आलमो-(प्रलय के बाद उत्पन्न) वह वृक्ष हैं क्या; आलिन् अटैयो-उस वट का पत्र है क्या; अटै किटन्त पालनो-पत्र पर पड़े रहे शिशु हैं क्या; वेलै परप्पो-(वह वट-वृक्ष जिसमें है) वह सागर-विस्तार है क्या; पकराय्-समझाइए। ११७२

अनादि आदिपुरुष! आप स्वेच्छा से जो रूप लेते हैं, उनके तथ्य किसी के ज्ञानगम्य नहीं होते। आपका मूल रूप क्या है? प्रलय के जलविस्तार के मध्य प्रकट होनेवाला वट-वृक्ष है? या उसका पत्र?

या उस पत्र के शायी शिशु ? या वही जल-विस्तार ? समझाइए कौन सा है ? । ११७२

निऩ्शॅय्है कण्डु निऩैन्दऩवो नीण्मऱैहळ्
उऩ्शॅय्है यऩ्ऩवैताऩ् जॊऩ्ऩ ऒळुक्किऩवो
ॲऩ्शॅय्देऩ् मुऩ्ऩ मिच्चॅय्है यॅय्दिऩाय्
पिऩ्शॅय्व दिल्लाप् पॅरुञ्जॆल्व नीपॅऱ्ऱाय् 1173

पिऩ् चॅय्वतु इल्ला–और भी जोड़ा जाय ऐसा जो नहीं; पॅरुम् चॅल्वम्–ऐसे बड़े (मोक्ष) धन के; पॅऱ्ऱाय् नी–स्वामी हैं आप; नीण् मऱैकळ्–अनन्त वेदों ने; निऩ् चॅय्कै कण्टु–आपके कार्य देखकर; निऩैन्तऩवो–स्मरण करके कहे; अऩ्ऩवै ताम्–(या) वे; उऩ् चॅय्कै–आपके कृत्यों को; चॊऩ्ऩ ऒळुक्किऩवो–निर्धारित कर कहनेवाले हैं; इ चॅय्कै ॲय्तिऩाय्–यह (मुझे तारने का) काम करने की कृपा की; मुऩ्ऩम् ॲऩ् चॅय्तेऩ्–(इनके योग्य) पहले मैंने क्या पुण्य किया था । ११७३

आप मोक्षनिधि के स्वामी हैं। वह निधि ऐसी है, जिसमें और जोड़ने की आवश्यकता नहीं रहती, न जोड़ना ही सम्भव है। वेदों ने आपके कार्य देखकर वर्णन किये हैं या उनके कहे अनुसार आप कार्य करते हैं ? आपने मेरे प्रति यह जो हित-कार्य किया है, उसके योग्य मैंने क्या पुण्य किया था ? । ११७३

काण्बार्क्कुङ् गाणप् पडुम्बॊरुट्कुङ् गण्णाहिप्
पूण्बाय्पो लिऱ्ऱियाल् यादॊऩ्ऱुम् पूणादे
माण्बा लुलहै वयिऱ्ऱॊळित्तु वाङ्गुदियाल्
आण्बालो पॆण्बालो वप्पालो वॆप्पालो 1174

काण्पार्क्कुम्–दर्शकों और; काणप्पटम् पॊरुट्कुम्–दृश्य पदार्थों की; कण्णाकि–दृष्टि बनकर; यातु ऒऩ्ऱुम् पूणाते–बिना किसी का धारण किये ही; पूण्पाय् पोल्–धारक के समान; निऱ्ऱि–स्थित हैं; उलकै–सर्वलोकों को; माण्पाल्–दिव्यशक्ति से; वयिऱ्ऱु ऒळित्तु–उदर में छिपाये रखकर; वाङ्कुति आल्–(कल्पारम्भ में) फिर से बाहर लाते हैं; आण् पालो–आप पुरुष जाति हैं; पॆण्पालो–स्त्री; अप्पालो–दोनों के परे हैं; ॲ पालो–कौन जाति हैं । ११७४

आप दर्शकों और दृश्यों की आँखें हैं ! आप सचमुच किसी का धारण नहीं करते पर देखने में धारण करते से स्थित हैं ! [यह गीता के (९-५) श्लोक का भाव है। श्लोक यह है— "न च मत्स्यानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् । भूतभृन्न भूतस्थो ममात्मा भूतभावन: ॥" इसको ऐसे ही मनन करके समझना है।] अपनी (शक्ति) महिमा से प्रपंच को अपने उदर में छिपा लेते हैं और बाद प्रकट करते हैं ! क्या आप पुरुष जाति के हैं या स्त्री जाति के ? या दोनों नहीं है ? या दोनों के परे कोई (नपुंसक) जाति हैं ? कौन सा लिंग है आपका ? । ११७४

आदिप् पिरमऩुनी यादिप् परमऩुनी
आदियॆऩुम् पॊरुळुक् कप्पालुण् डायिऩुनी
शोदिनी शोदिच् चुडर्प्पिळम्बुम् नीयॆऩ्ऱु
वेदमुरै शॆय्दाल् वॆळ्हारो वेऱुळ्ळार् 1175

आति पिरमऩुम् नी–सृष्टिमूल ब्रह्मा भी आप हैं; आति परमऩुम् नी–उनके भी आदि परब्रह्म भी आप हैं; आति ऎऩुम् पॊरुळुक्कु–आदि कहलानेवाले तत्त्व के भी; अप्पाल् उण्टु आयिऩुम्–परे कुछ हो तो; नी–वह भी आप हैं; चोति नी–ज्योतिस्वरूप हैं आप; चोति चुटर् पिळम्पुम्–ज्योतियों की ज्योति का पुंज भी; नी ऎऩ्ऱु–आप ही हैं, यह; वेतम् उरै चॆय्ताल्–वेद कहते हैं तो; वेऱु उळ्ळार्–वेदबाह्य सम्प्रदायों के देव; वॆळ्कारो–नहीं शरमायेंगे क्या। ११७५

सृष्टि के मूल ब्रह्मा आप ही हैं। उनके भी आदि आप ही हैं। अगर आदि के आदि कुछ हैं तो वह भी आप ही हैं। आप ज्योतिस्वरूप सब हैं। ज्योतियों की ज्योति का पुंज भी आप ही हैं। यह वेदों का निष्कर्ष है। यह सुनकर अन्य सम्प्रदाय जिनको आदिदेव कहते हैं, वे देव कहाने पर नहीं शरमायेंगे क्या ? । ११७५

ऎण्डिशैयुन् दिण्शुवरा येळेळ् निलैयॆडुत्त
अण्डप् पॆरुङ्गोयिऱ् कॆल्ला मळहाय
मण्डलङ्गळ् मूऩ्ऱिऩ् मेलिऩ्ऱु मलराद
पुण्डरिह मॊट्टिऩ् पॊहुट्टो पुरैयम्मा 1176

ऎण् तिचैयुम्–आठों दिगन्त; तिण् चुवराय्–सबल भित्तियां बने हैं; एळ् एळ् निलै ऎटुत्त–ऐसे चौदह तल्लों में बने; अण्ट पॆरुम् कोयिऱ्कु ऎल्लाम्–अण्डों के बने सम्पूर्ण मन्दिर से; अळकु आय–अधिक सुन्दर; मण्टलङ्कळ् मूऩ्ऱिऩ् मेल् निऩ्ऱु–(सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र-) त्रिमण्डलों के ऊपर स्थित होकर; मलरात–अविकसित; पुण्टरिकम् मॊट्टिऩ्–कमलकली का; पॊकुट्टो–कणिका (परमपद); पुरै–आपका वासस्थान है क्या; अम्मा–री मैया। ११७६

चौदह लोकों का एक अण्ड है। उनमें हर एक दिगन्त की भित्तियों से आवृत है। वह अण्ड मन्दिर के समान है। उस सुन्दर मन्दिर के ऊपर सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र —तीन मण्डल हैं। उनके ऊपर अविकसित कमल की कली है। उसकी कर्णिका जो है (परमपद) क्या वही आपका वासस्थान है ? । ११७६

मण्बा लमरर् वरम्बारुङ् गाणाद
ऎण्बा लुयर्न्द वॆरियोङ्गु नल्वेळ्वि
उण्बायनी यूट्टुवाय् नीयिरण्डु मीक्कित्ऱ
पण्बा ररिवार् पहर्वाय् परमेट्टि 1177

परमेट्टि–परमेष्ठी; मण् पाल् अमरर्–भूसुर; आरुम्–कोई भी; वरम्पु काणात–जिसका ठिकाना नहीं देख पाते; ऍण्पाल् उयर्न्त–संख्या में बढ़े; ऍरि ओम्बु–जिनमें अग्नि पाली जाती है, उन; नल् वेळ्वि–श्रेष्ठ यज्ञों में; उण्पाय् नी–(हवि-) भोक्ता भी आप हैं; ऊट्टुवाय् नी–अन्य देवों को भोग करानेवाले भी (या हवि देनेवाले भी) आप ही हैं; इरण्टुम् ऑक्कित्तृ–(भोजनदाता, भोजनकर्ता) दोनों के साथ रहने का; पण्पु–प्रकार; अऱिवार् यार्–जाननेवाले कौन हैं। ११७७

परमेष्ठी ! भूसुर असंख्य यज्ञ करते हैं। उनमें अग्निदेव का आवाहन होता है और उनके पास हवि अर्पित की जाती है। उस हवि के भोक्ता भी आप हैं और उसका उच्छिष्ट देवताओं को आहार करानेवाले भी आप ही हैं। (हवि के देनेवाले भी आप हैं।) भोक्ता तथा भोजनदाता दोनों आप ही एक साथ रहते हैं। यह महिमा जान सकनेवाले कौन हैं ? । ११७७

निऱ्कु नॅडुनीत्त नीरिन् मुळैत्तॅळुन्द
मॊक्कुळे पोल मुहुळित्त वण्डङ्गळ्
ऑक्कवुयर्न् दुन्नुळे तोन्ऱि यॊळिक्कित्ऱ
पक्क मऱिदऱ् कॅळिदो परम्बरने 1178

परम्परने–परात्पर; निऱ्कुम् नॅटुम् नीत्तम्–विपुल महाप्रलय के; नीरिन्–जल में; मुकुळित्त–कली के समान उठे; अण्टङ्कळ्–अण्डगोल; ऑक्क उयर्न्तु–एक साथ ऊपर आकर; उन् उळे तोन्ऱि–आपके अन्दर से प्रकट होकर; ऑळिक्कित्ऱ–फिर कल्पान्त के प्रलय में छिप जाते हैं; पक्कम्–वह पक्ष; अऱितऱ्कु ऍळितो–जानने के लिए सुलभ है क्या। ११७८

परात्पर ब्रह्म ! महाप्रलय के जलविस्तार में से कली के समान अण्ड निकलकर ऊपर आते हैं। वे आप ही के अन्दर से बाहर प्रकट होते हैं, फिर यथासमय कल्पान्त के प्रलय में आप ही में समा जाते हैं ! यह आपका अतिशय पक्ष यथार्थ रूप में समझ लेना सुलभ है क्या ? । ११७८

मायप् पिऱवि मयलीक्कि माशिल्लाक्
कायत्तै नल्हित् तुयरिन् करैयेऱ्ऱिप्
पेयॊत्तेन् बेदैप् पिणक्करुत्त वॆम्बॆरुमान्
नायॊत्ते नॆन्न नलत्तिळैत्ते नाॅन्ऱान् 1179

माय पिऱवि–वंचकमय (राक्षस-)जन्म-सुलभ; मयल् नीक्कि–मोह हटाकर; माचु इल्ला–निर्दोष; कायत्तै नल्कि–शरीर को देकर; तुयरित् करै एऱ्ऱि–दुःख (सागर) के तीर पर चढ़ाकर; पेय् ऑत्तेन्–भूत के समान; पेतै पिणक्कु–अज्ञता से गृहीत पातकमय जीवन; अऱुत्त–काटनेवाले; ऍम्पॆरुमान्–मेरे प्रभु; नाय् ऑत्तेन् नान्–श्वान-सम मैंने; ऍन्न नलम् इऴैत्तेन्–क्या ही सुकर्म किया था। ११७९

मेरा वंचक राक्षस-जन्म था, उससे अत्यन्त मोह में फँसा हुआ था।

आपने उस मोह का जाल काट दिया। फिर यह निर्दोष दिव्य शरीर प्रदान किया। दुःख-सागर के तीर पर चढ़ा दिया। भूत के समान मेरे कुजीवन का बन्धन काटकर मुझे उबारनेवाले हे प्रभु ! मैं कुत्ते का जीवन बिता रहा था। मैंने क्या ही सुकार्य किया था ? आपकी निर्हेतुक करुणा भी कितनी बड़ी है ! । ११७९

अॆऩ्ऱाङ् गिनिदियम्बि यिऩ्ऩुरॆियक् कूऱुवॆऩ्ऩेल्
ऒऩ्ऱादु तेव रुऴुदिक् कॆऩ्ऩवुऩ्ऩात्
तऩ्ऱायैक् कण्णुऱ्ऱ कऩ्ऱॆऩ्ऩ तऩ्मैयऩाय्
निऩ्ऱाऩैक् कण्डा नॆऱिनिऩ्ऱार् नेर्निऩ्ऱाऩ् 1180

अॆऩ्ऱाङ्कु–ऐसा; इनितु इयम्बि–सन्तोषक रीति से स्तुति करके; इऩ्ऩुम्–अब; अऱिय कूऱुवॆऩ्ऩेल्–प्रकट कहूँ तो; तेवर् उऴुतिक्कु–देवों के हित में; ऒऩ्ऱातु–उचित नहीं रहेगा; अॆऩ्ऩ उऩ्ऩा–यह सोचकर; तऩ् तायै कण् उऱ्ऱ–अपनी माँ को जिसने देखा हो, उस; तऩ्मैयऩाय्–(बछड़े की-सी) स्थिति में आकर; निऩ्ऱाऩै–जो खड़ा रहा, उस कबन्ध को; नॆऱि निऩ्ऱार्–धर्मपथिकों को; नेर् निऩ्ऱाऩ्–सामने आकर दर्शन देनेवाले (श्रीराम) ने; कण्टाऩ्–देखा। ११८०

स्तुति में इतना कहा कबन्ध ने। वह और भी कहना चाहता था। लेकिन, 'और भी कहूँ तो अवतार-रहस्य खुल जायगा। वह देवों के हित में अच्छा नहीं रहेगा।' यह सोचकर वह बिछुड़ी माता गाय से पुनः प्राप्त बछड़े की-सी हालत में अत्यन्त आनन्द के साथ चुप खड़ा रह गया। ज्ञानमार्गियों को उनके ध्यान में दर्शन देनेवाले श्रीराम ने उसको उस स्थिति में देखा। ११८०

पारा यिळैयवऩे पट्टविवऩ् वेऱेयोर्
पेराळऩ् ऱाऩा यॊळियोङ्गु पॆऱ्ऱियऩाय्
नेराहा यत्तिऩ् निऱ्किऩ्ऱा ऩीयिवऩै
आरा यॆऩ्ऩववऩुम् यार्हॊलो नीयॆऩ्ऱाऩ् 1181

इळैयवऩे–अनुज; पाराय्–देखो; पट्ट इवऩ्–(हमारे हाथों) मरा यह; वेऱे ओर्–अन्य एक; पेर् आळऩ् तावाय्–सम्मान्य (व्यक्ति) बनकर; ऒळि ओङ्कु–तेज में उन्नति; पॆऱ्ऱियऩ् आय्–प्राप्त करके; नेर् निऱ्किऩ्ऱाऩ्–हमारे सामने खड़ा है; नी इवऩै आराय्–तुम इसको परख लो; अॆऩ्–(श्रीराम के) कहने पर; अवऩुम्–उन्होंने भी; नी यार् कॊलो–तुम कौन हो तो; अॆऩ्ऱाऩ्–पूछा। ११८१

तब श्रीराम ने लक्ष्मण को सुझाया कि छोटे भैया ! देखो। जिसको हमने मारा था, वह बहुत सम्मान के योग्य और तेजोमय रूप में खड़ा है। पता लगा लो कि वह सचमुच कौन है ? तब लक्ष्मण ने उससे पूछा कि तुम कौन हो तो ? । ११८१

शन्दप्पू णलङ्गल् वीरन् दनुवनु नामत् तेनोर्
कन्दर्प्पन् शाबत् तालिक् कडैप्पडु पिर्वि कण्डेन्
वन्दुर्रीर् मलर्क्कै तीण्ड मुन्नुडै वडिवु पॅर्रेन्
ऍन्दैक्कु मॅन्दै नीर्या लिशैप्पदु केण्मि नॅन्रान् 1182

चन्तम् पूण्–सुन्दर आभरण; अलङ्कल् वीरन्–और मालाधारी वीर; तनु अॅनुम् नामत्तेन्–तनु का नामधारी हूँ; ओर् कन्तर्प्पन्–एक गन्धर्व हूँ; चापत्ताल्–शाप के कारण; इ कटै पटु पिऱ्वि–यह नीच जन्म; कण्टेन्–प्राप्त कर चुका था; वन्तु उर्रीर्–आप पधारे; मलर् कै तीण्ट–(आपके) कमल-सम हाथों के स्पर्श से; मुन् उटै वटिवम्–मूल रूप; पॅर्रेन्–प्राप्त किया; ऍन्तैक्कुम् ऍन्तै नीर्–मेरे पिता के पिता आप; इचैप्पतु–मेरा विनय-कथन; केण्मिन्–सुनिए; ऍन्रान्–कहा। ११८२

तब उसने उत्तर दिया। वह सुन्दर आभरणों से और हारों से भूषित था। उसने कहा कि मैं तनु नामधारी गन्धर्व हूँ। किसी शापवश इस नीच जन्म को प्राप्त हुआ था। आप कृपा करके आये और आपके कमल-हस्तों के स्पर्श से मुझे अपना पूर्वरूप प्राप्त हो गया। मेरे पिता के पिता! मैं कुछ सुनाता हूँ। आप सुनिए। ११८२

कणैयुलाञ् जिलैयि नीरैक् काक्कुन रिल्लै येनुम्
इणैयिला डन्नै नाडर् केयिन शॅय्दर् केर्कुम्
पुणैयिला दवर्क्कु वेलै पोक्करि दन्न देपोल्
तुणैयिला दवर्क्कु मिन्राऱ् पहैप्पुलन् दॊलैत्तु नीक्कल् 1183

कणै उलाम् चिलैयित्तीरै–शरासन-हस्त आपको; काक्कुनर् इल्लै–रक्षित करने में समर्थ कोई नहीं है; एतुम्–तो भी; इणै इलाळ् तन्नै–अप्रमेय (सीताजी को); नाटर्कु–खोजने के हेतु; एयित–आवश्यक; चॅय्तर्कु–(काम) करने को; एर्कुम्–(सहायता प्राप्त करना) उचित होगा; पुणै इलातवर्कु–नाव जिनके पास नहीं है, उन्हें; वेलै पोक्कु–समुद्र-तरण; अरितु–कठिन है; अन्तते पोल्–उसी तरह; तुणै इलातवर्क्कुम्–सहायक-हीनों के लिए; पकै पुलम् तॊलैत्तु–शत्रु का समर में संहार करके; नीक्कल्–दूर करना; इन्रु–(सम्भव) नहीं है। ११८३

यह सर्वविदित है कि शरासनधारी आपकी सहायता करने का सामर्थ्यशाली कहीं नहीं है। तो भी अनुपम देवी सीता को खोजने हेतु आवश्यक और योग्य कार्य करने के लिए कुछ लोगों को सहायक बना लेना ही उचित होगा। जिसके पास नाव नहीं, उसे समुद्र पार करना कठिन है! वैसे ही समरांगण में शत्रुओं का नाश करना हो तो निस्सहायों के लिए साध्य नहीं है। ११८३

पऴिप्परु निलैमै याण्मै पहर्वदॆन् पडुम पीडत्
तुऴिप्पॆरुन् दहैमै शान्ऱ वन्दण नुयिर्त्त वॆल्लाम्

अऴिप्पदऱ् कौरुव नात वण्णलु मऱिदि रन्ऱे
ऑऴिप्परुन् दिऱल बूद गणत्तॊडु मुऱैयु मुण्मै 1184

पऴिप्पु अऱ–अनिंद्य; निलैमै आण्मै–आपके स्थान और पौरुष का; पकर्वतु अँत्–क्या कहना; पतुम पीट्टत्तु उऴि–पद्मपीठ पर (के); पॆरुम् तकैमै चान्ऱ–उत्कृष्ट और शानदार; अन्तणन् उयिर्त्त–ब्रह्मा द्वारा सृष्ट; ऍल्लाम्–सारे (लोकों व जीवों) को; अऴिप्पतऱ्कु–संहार करनेवाले; ऑरुवन् आत अण्णलुम्–एक बने ईश्वर भी; ऑऴिप्पु अरुम्–अलग न होनेवाले; तिऱल् अ–बलशाली; पूत कणत्तॊटुम्–भूतगणों के साथ; उऱैयुम् उण्मै–रहते हैं, सो तथ्य; अऱितिर् अन्ऱे–आप जानते हैं न। ११८४

आपके अनिंद्य गौरव और पौरुष (वीरता) का कहना क्या? पद्मपीठासीन ब्रह्मा से सृष्ट सारे लोकों के संहारक हैं शिवजी। वे भी अपने बलशाली भूतगणों को सदा साथ रखते हैं। यह तथ्य आप जानते ही हैं न? । ११८४

आयदु शॆयहै यॆन्ब दऱत्तुऱै नॆऱियि नॆण्णित्
तीयवर्च् चेर्हि लादु शॆव्वियोर्च् चेरुम् शॆय्है
तायिनु मुयिर्क्कु नल्हुञ् जवरियैत् तलैप्पट् टन्नाळ्
एयदोर् नॆऱियै यॆय्दि यिरलैयङ् गुन्ऱ मेऱि 1185

अऱ तुऱै नॆऱियिन् ऍण्णि–धर्म-मार्ग का विचार करके; तीयवर् चेर्किलातु–बुरों से नहीं मिलकर; चॆव्वियोर् चेरुम् चॆय्कै–अच्छों के साथ मिलने का काम; चॆय्कै ऍन्पतु आयतु–कर्तव्य-कर्म है; उयिर्क्कु–जीवों को; तायिनुम्–माता से बढ़कर; नल्कुम्–सहायक; चवरियै–शबरी को; तलैप्पट्टु–मिलकर; एयतु–उनसे निर्दिष्ट; नॆऱियै ऍय्ति–मार्ग पर जाकर; इरलै अम् कुन्ऱम् एऱि–ऋष्यमूक पर्वत पर चढ़कर। ११८५

धर्म-मार्गों का अवलम्बन करके, विना बुरों की संगति किये अच्छों के साथ मिलना अब कर्तव्य कर्म है। आप शबरी के पास जाकर उनसे मिलिए। वे माता से भी अधिक हित करेंगी। वे मार्ग बतायेंगी। आप उनके बताये मार्ग को पकड़कर जाइए और ऋष्यमूक (ऋष्य— एक तरह का हरिण है, उसके नाम से भूषित) पर्वत पर चढ़कर— । ११८५

कदिरवन् शिऱुव नात कनहवा णिऱत्ति नानै
ऍदिर्ऍदिर् तळुवि नट्पि निनिदमर्न् दवनि नीण्ड
वॆदिर्पॊरु तोळि नाळै नाडुदल् विळुमि दॆन्रान्
अदिर्कऴल् वीरर् तामु मन्नदे यमैव दानार् 1186

कतिरवन् चिऱुवन् आत–सूर्य का पुत्र; कनक वाळ् निऱत्तिनानै–उज्ज्वल कनक-वर्ण (सुग्रीव) को; ऍतिर् ऍतिर् तळुवि–आमने-सामने मिलकर; नट्पिन् इनितु अमर्न्तु–मित्रता में सुख से रहकर; अवनिन्–उसकी सहायता के साथ; ईण्ट–शीघ्र;

वेतिर् पोरु–बाँस के समान; तोळित्ताळै–कंधों की (सीता) को; नाटुतल्–खोजना; विळ्ळमितु ॲन्ऱ्ऱात्–श्रेयस्कर होगा, कहा; अतिर् कळल् वीरर् तामुम्–क्वणनशील पायलधारी वीर भी; अन्ऩते–वही; अमैवतु आत्तार्–करने में लगे। ११८६

वहाँ सुग्रीव से मिलिए। वह कनकवर्ण वानरनायक सूर्य का पुत्र है। उसके साथ मित्रता कर लीजिए। उसकी सहायता लेकर बाँस के समान कन्धों वाली सीतादेवी को खोजिए। वही श्रेष्ठ होगा। कबन्ध की यह सलाह मानकर क्वणनशील पायलधारी वीर श्रीराम और लक्ष्मण चलने लगे। ११८६

आऩपिऩ् ऱोळुदु वाळ्त्ति यऩ्दरत् तवऩुम् बोऩाऩ्
माऩवक् कुमरर् तामु मत्तिशै वळिक्कॊण् डेहि
काऩमु मलैयु नीङ्गिक् कङ्गुल्वन् दिरुक्कुङ् गालै
आऩैयि ऩिरुक्कै यॆऩ्ऩु मदङ्गऩ दडुक्कल् शेर्न्दार् 1187

आऩपिऩ्–उसके बाद; अवऩुम्–वह (कबन्ध) भी; तॊळुतु वाळ्त्ति–विनय और स्तुति करके; अन्तरत्तु पोऩाऩ्–आकाश में गया; माऩव कुमरर् तामुम्–मानव-कुमार भी; अ तिचै वळि कॊण्टु एकि–उस दिशा में राह बनाकर गये; काऩमुम् मलैयुम् नीङ्कि–कानन और पर्वत पार करके; कङ्कुल् वन्तु–रात आकर; इरुक्कुम् कालै–जब जम गयी, तब; आऩैयिऩ् इरुक्कै ॲन्ऩुम्–गज का स्थान कहलानेवाले; मतङ्कऩ् अतु–मातंग ऋषि के; अटुक्कल्–पर्वत पर; चेर्न्तार्–पहुँचे। ११८७

उसके बाद कबन्ध भी उनकी विनय के साथ स्तुति करके स्वर्ग चला गया। मानव (मनुकुल-जात) वीर भी कबन्ध की निर्दिष्ट (दक्षिण) दिशा में गये। अनेक कानन और पर्वत पार करके वे जाते रहे। खूब रात हो गयी, तब वे मातंग ऋषि के पर्वत पर आये। वहाँ मातंग (हाथी) रहते थे। ११८७

12. शवरि पिऱप्पु नीङ्गु पडलम् (शबरी जन्म-विमोचन पटल)

कण्णिय तरुदऱ् कॊत्त कऱ्पहत् तरुवु मॆन्ऩ
उण्णिय नल्हुज् जॆल्व मुरुनरुज् जोलैच् चालै
ऍण्णिय वित्तव मऩ्ऱित् तुऩ्बङ्ग ळिल्लै याऩ
बुण्णियम् पुरिन्दोर् वैहुन् दुऱक्कमे पोलु मऩ्ऱे 1188

कण्णिय–इच्छित; तरुतऱ्कु ऒत्त–(पदार्थ) देने में समर्थ; कऱ्पक तरुवुम् ॲन्ऩ–कल्पतरु के समान; उण्णिय–खाद्य (फलादि को); नल्कु–देनेवाले; चॆल्वम् उरुम्–समृद्ध; चोलै–उपवनों से पूर्ण; चालै–(मातंग का) आश्रम; ऍण्णिय इऩ्पम् अन्ऱि–सबसे गण्य सुख के सिवा; तुऩ्पङ्कळ् इल्लै आऩ–दुःख जहाँ नहीं है; पुण्णियम् पुरिन्तोर् वैकुम्–पुण्यपुरुष जहाँ रहते हैं; तुऱक्कमे पोलुम्–स्वर्ग के समान था। ११८८

शबरी का आश्रम इच्छित सभी मनोकामनाओं को पूरा करनेवाले

कल्पतरु कहा जा सकता था। खाद्य फल आदि यथेष्ट दे सके, उतने समृद्ध उपवन उसके चारों ओर थे। उसी आश्रम में मातंग मुनि रहते थे। वह पुण्यकृतों का प्राप्ति-स्थान साक्षात् स्वर्ग ही था, जहाँ चाहे हुए सभी सुख ही सुख मिलते हैं। कोई दुःख नहीं होता। ११८८

अन्नदा मिरुक्कै नण्णि याण्डुनिन् ऱळविल् कालम्
तन्नैये निनैन्दु नोऱ्कुम् शवरियैत् तलैप्पट् टन्नाट्
किन्नुरै यरुळित् तीदिन् ऱिरुन्दनै पोलु मॆन्ऱान्
मुन्नवर् किदुवॆन् ऱॆण्ण लावदोर् मूल मिल्लान् 1189

अवर्कु मुन्–उनके पूर्व; इतु–ये; ऍन्ऱु ऍण्णल् आवतु–ऐसा मानने योग्य; ओर्–कोई; मूलम् इल्लान्–(जिनका) मूल नहीं है; अन्नतु आम्–(वे श्रीराम) ऐसे; इरुक्कै नण्णि–स्थान में पहुँचकर; आण्टु निन्ऱु–वहाँ रहकर; अळवु इल् कालम्–अगणित काल तक; तन्नैये–अपना (श्रीराम का) निनैन्तु–ध्यान करके; नोऱ्कुम्–जो तपस्या करती रहीं; चवरियै तलैप्पट्टु–उन शबरी से मिलकर; अन्नाट्कु–उनको; इन् उरै अरुळि–मधुर उपदेश देकर; तीतु इन्ऱु–विना कष्ट के; इरुन्तनै पोलुम्–रहीं, शायद; ऍन्ऱान्–कहा। ११८९

श्रीराम आदिदेव थे। उनके पूर्व कोई नहीं रहे। वे सृष्टि के मूल थे। वे उस प्रख्यात मातंगाश्रम पर आये। वहाँ शबरी श्रीराम का ही ध्यान करते हुए अकूत काल से तपस्या कर रही थीं। श्रीराम उनसे मिले और उनका कुशल-क्षेम सम्बन्धी प्रश्न किया। आप विना किसी कष्ट के सुखी तो रहती हैं न? ११८९

आण्डव ळन्बि नेत्ति यळुदिळि यरुविक् कण्णळ्
माण्डदॆन् मायप् पाशम् वन्ददु वरम्बिल् कालम्
पूण्डमा दवत्तिन् शॆल्वम् बोयदु पिऱवि यॆन्ऱाळ्
वेण्डिय कॊणर्न्दु नल्हि विरुन्दुशॆय् दिरुन्द वेलै 1190

आण्टु–तब; अवळ्–शबरी; अरुवि कण्णळ्–सरिता के समान आँसू की धारा वाली आँखों के साथ; अन्पिन् एत्ति–भक्ति के साथ स्तुति करके; ऍन् माय पाचम्–मेरी माया का पाश; माण्टतु–मिट गया (आपके दर्शन से); वरम्पु इल् कालम्–असीम काल से; पूण्ट–मैंने जो धारण कर लिया था, उस; तवत्तिन् चॆल्वम्–उस तप का भाग्य; वन्ततु–आ मिला; पिऱवि पोयतु–जन्म कट गया; ऍन्ना–कहकर; वेण्टिय–निवेदनार्ह; कॊणर्न्तु–(फल आदि) लाकर; नल्कि–देकर; विरुन्तु चॆय्तु–आतिथ्य करके; इरुन्त वेलै–जब रहे, तब। ११९०

तब शबरी की आँखों से भक्ति के कारण आँसू की धारा सरिता के समान बहने लगी। उन्होंने श्रीराम की स्तुति की। कहा कि स्वामी! आपके दर्शन से मेरा मायापाश कट गया। निस्सीम काल से मैं तपस्या कर रही हूँ। उसका सुफल आज मुझे मिल गया। मेरा जन्म-मोचन हो

गया है। फिर उन्होंने उनके भोजन के योग्य फल आदि लाकर अतिथि-सत्कार किया। जब श्रीराम और लक्ष्मण विश्रांत रहे, तब— । ११९०

ईशतुङ् गमलत् तोलु मिमैयवर् यारु मॅन्दै
वाशवन् रानु मीण्डु वन्दनर् महिऴ्न्दु नोक्कि
आशरु तवत्तुक् कॅल्लै यणुहिय दिरामर् काय
पूशनै विरुम्बि यॅम्बार् पोदुदि यॅन्रु पोनार् 1191

ऎन्नै–मेरे पिता; ईचतुम्–शिवजी और; कमलत्तोतुम्–कमलासन; इमैयवर् यारुम्–सुर सब; वाचवन् तानुम्–वासव भी; ईण्टु–यहाँ; वन्तनर्–आये; मकिऴ्न्तु नोक्कि–सन्तोष के साथ मुझे देखकर; आचु अऱु–निर्दोष; तवत्तिऱ्कु ऎल्लै–तप का अन्त, सिद्धि का काल; अणुकियतु–निकट आ गया; इरामऱ्कु आय–श्रीराम की; पूचनै विरुम्पि–पूजा प्यार के साथ करके; ऎम् पाल् पोतुति–हमारे पास पहुँच जाओ; ऎन्ऱु पोनार्—कहके गये। ११९१

शबरी बोलीं। मेरे तात ! कमलासन, सभी देव और वासव यहाँ आये थे। उन्होंने मुझे सन्तोष के साथ देखकर कहा कि तुम्हारे निर्दोष तप का सिद्धिकाल आ गया। तुम श्रीराम की पूजा करना चाहती हो। वह पूरा करके हमारे पास आ जाओ। ११९१

इरुन्दनॅ नॅन्दै नीयीण् डॅय्दुदि यॅन्नुन् दन्मै
पॊरुन्दिड विन्रु तानॅन् पुण्णियम् बूत्त दॅन्र
अरुन्दवत् तरशि तन्नै यन्बुर नोक्कि यॅङ्गळ्
वरुन्दुरु तुयरन् दीर्त्ता यम्मनै वाऴि यॅन्रान् 1192

ऎन्नै–नाथ; नी ईण्टु ऎय्तुति–आप इधर पधारेंगे; ऎन्नुम् तन्मै–यह हालत; पॊरुन्तिट–जब हुई; इरुन्तनॆन्–(प्रतीक्षा में) रही; इन्ऱु तान्–आज ही; ऎन् पुण्णियम्–मेरा पुण्य; पूत्ततु—फूला (फलीभूत हुआ); ऎन्ऱ–ऐसा जिन्होंने कहा; अरुम् तवत्तु अरचि तन्नै–कठिन तपस्या की, उन रानी को; अन्पु उऱ–कृपा के साथ; नोक्कि–देखकर; अम्मनै–माताजी; ऎङ्कळ् वरुन्तुऱु–हमें कष्ट देनेवाले; तुयरम्–श्रम-दुःख को; तीर्त्ताय्–दूर किया; वाऴि–जिओ; ऎन्ऱान्–कहा। ११९२

मेरे नाथ ! आप यहाँ पधारेंगे— जब इसका भान लगा तभी से मैं आपकी प्रतीक्षा में रह रही हूँ। आज ही मेरा पुण्य सफलीभूत हुआ। जब शबरी ने राम से यह आदरवचन कहा, तब श्रीराम ने उन तपस्विनियों में रानी से कहा कि माता ! आपने हमारा श्रम और श्रमजनित दुःख दूर किया। आप चिरजीव रहें। ११९२

अन्नहनु मिळैय कोवु मन्रव णुरैन्द पिन्रै
विन्नैयरु नोन्बि ताळु मॅय्म्मैयि नोक्कि वॅय्य

तुन्नैपरित् तेरोन् मैन्द निरुन्दवत् तुळक्किल् कुन्ऱम्
नित्तैवरि दायऱ् कोत्त नॆऱियॆला निनैन्दु शॊन्नाळ् 1193

अन्तकत्तुम्–अनघ के; इळैय कोवुम्–और लघुराज के; अन्ऱु–उस दिन; अवण्–वहाँ; उरैन्त पिन्ऱै–ठहरने के बाद; वित्तै अऱु–कर्ममुक्त; नोन्पिताळुम्–तपस्विनी ने भी; मॆय्मैयिन् नोक्कि–यथार्थ रूप से देखकर; वॆय्य–गरम; तुन्नै परि–शीघ्रगामी अश्वों के; तेरोन्–रथ पर जानेवाले (सूर्य) का; मैन्तन्–पुत्र, सुग्रीव; इरुन्त–जहाँ रहा; अ तुळक्कु इल्–उस अचल; कुन्ऱम्–पर्वत के; नित्तैवु अरितु आयऱ्कु–मन से जानने में कठिन; ओत्त–जो रहा; नॆऱि ऎलाम्–मार्ग सभी; निनैन्तु चॊन्नाळ्–स्मरण करके बताया। ११९३

अनघ श्रीराम और उनके छोटे भाई लक्ष्मण उस दिन वहीं ठहरे। बाद कर्मभंजक तपस्विनी ने सच्चे भाव से श्रीराम और लक्ष्मण से शीघ्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार दीप्तियुत सूर्य के पुत्र, सुग्रीव के वासस्थान के पर्वत के मार्ग बताए। वे इतने जटिल थे कि मन में धारण करना भी कठिन था। पर उन्होंने अपनी स्मृति से उस अचल ऋष्यमूक पर्वत को जाने के सारे मार्ग ठीक-ठीक बता दिये। ११९३

वीट्टिनुक् कमैव दात मॆय्न्नॆऱि वॆळियिऱ् ऱाहक्
काट्टुरु मऱिञ् रॆन्न वन्नवळ् कळऱिऱ् ऱॆल्लाम्
केट्टन नॆन्ब मन्नो केळ्वियाऱ् चॆविहण् मुऱ्ऱुम्
तोट्टव रुणर्वि नुण्णु ममिऴ्दत्तिन् शुवैयाय् निन्ऱान् 1194

केळ्वियाल्–उपदेश-श्रवण द्वारा; चेविकळ्–कर्ण (जिनके); मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; तोट्टवर्–विद्ध हुए (भरे हुए) हैं; उणर्विन्–(वे ज्ञानी) अपनी अनुभूति द्वारा; उण्णुम्–(जिसको) भोगते हैं; अमुतत्तिन्–उस अमृत (रूपी) ज्ञान की; चुवैयाय् निन्ऱान्–जो रुचि के रूप में स्थित हैं, उन (श्रीराम ने); वीट्टिनुक्कु अमैवतु आत–मोक्ष के; मॆय् नॆऱि वॆळि–सच्चे मार्ग को; इऱु आक–यही है, ऐसा; काट्टुरुम्–दरसानेवाले; अऱिञर् ऎन्न–ज्ञानियों (गुरुओं) के समान; अन्नवळ्–उन्होंने; कळऱिऱ्ऱु ऎल्लाम्–जो कहा, वह सब; केट्टतन्–ध्यान देकर सुना; ऎन्प–ऐसा बड़े लोग कहते हैं। ११९४

श्रीराम कौन थे और उन्होंने किस विधि शवरी का मार्ग-दर्शन सुना? श्रेष्ठ उपदेशों से जिनके कर्ण भर गये थे, उनकी अनुभूति के लक्ष्य हैं वे। व उन ज्ञानियों से भुगते हुए ज्ञान रूपी अमृत के स्वाद थे। वे विनय के साथ ऐसे सुनते रहे, मानो शवरी कोई ज्ञानी गुरु हों, जो मोक्ष का मार्ग साफ़-साफ़ बता रहे हों। कवि कहते हैं कि ऐसा बड़े लोगों का कहना है! । ११९४

पिन्नव ळुळ्ळन्दु पॆऱ्ऱ योहत्तिन् पॆऱ्ऱियाले
तन्नुड ऱुऱन्दु तानत् तनिमैयिन् वीडु शार्न्दाळ्

अन्नंदु कण्ड वीर रदिशय मळवित्त् रॅय्दिप्
पॊन्नडिक् कळल्ह ळार्प्पप् पुहन्नमा नॅरियिर् पोनार् 1195

पिन्न्–उसके बाद; अवळ्–शवरी; उळन्तु पॅर्र–परिश्रम से प्राप्त; योकत्तिन् पॅर्रियाले–योग के फलस्वरूप; तन्न् उटल्–अपना शरीर; तुरन्तु–त्यागकर; अ तन्निमैयिन्–उस अद्वितीय; वीटु–मुक्तिपद को; चार्न्ताळ्–गयीं; अन्नतु कण्ट–उसको देखकर; वीरर्–(श्रीराम और लक्ष्मण) वीरों ने; अळवु इन्रु–अपार; अतिचयम् ॲय्ति–विस्मय पाकर; पॊन् अटि–सुन्दर चरणों की; कळल्कळ् आर्प्प–पायलों को बजने देते हुए; पुकन्र–शवरी-कथित; मा नॅरियिल्–बड़े मार्ग पर; पोनार्–गये। ११९५

यह कहने के बाद शबरी ने कठिन परिश्रम द्वारा प्राप्त योगशक्ति के बल से अपना शरीर छोड़ दिया। वे मोक्षपद को प्राप्त हो गयीं। श्रीराम और लक्ष्मण को यह देखकर अपार विस्मय हुआ। फिर वे अपने सुन्दर चरणों की पायलों को बजने देते हुए उस दुरूह और विकट मार्ग पर जाने लगे, जिसका सम्यक् वर्णन शबरी ने किया था। ११९५

तण्णॅनुङ् गानुङ् गुन्रु नदिहळुन् दविरप् पोनार्
मण्णिडै वैह रोरुम् वरम्बिला दाडु माक्कळ्
कण्णिय विनैह ळॅन्नुङ् गट्टळल् कळिद लाले
पुण्णिय मुरुविर् रन्न पम्बैयाम् पॉय्है पुक्कार् 1196

तण् ॲन्नुम्–शीतल; कानुम् कुन्रुम्–वनों और पर्वतों को और; नतिकळुम्–नदियों को; तविर–पार करते हुए; पोनार्–जो गये; मण् इटै–(वे) भूमि पर; वरम्पु इलातु–अपार वनकर; वैकल् तोरुम्–दिने-दिने; आटुम् माक्कळ्–स्नान करनेवाले लोगों ने; कण्णिय–जान-बूझकर जो किये; विनैकळ् ॲन्नुम्–वे कर्म रूपी; कट्टळल्–अग्निपुंज; कळितलाले–दूर हो जाते हैं, इसलिए; पुण्णियम् उरुविर्रु अन्न–पुण्यस्वरूप आया जैसे; पम्पै आम्–पंपा नाम के; पॊय्कै–सर पर; पुक्कार्–पहुँचे। ११९६

वे अनेक शीतल वनों, पर्वतों और नदियों को पार कर जाते रहे और पंपासर के तीर पर आ गये। उस पंपासर में दिने-दिने असंख्य लोग आकर स्नान करते और अपने पापों को निवार देते थे। उनके पापों का अग्निपुंज वहाँ मिट जाता था। इसलिए वह सर मूर्तपुण्य के समान लगा। ११९६

॥ अरण्यकाण्ड समाप्त ॥

विज्ञप्ति

विश्व-वाङ्मय से निस्रित अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

प्रकाशित हो चुके हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण ग्रन्थः—

१ गुजराती—गिरधर रामायण (रचनाकाल-१८३५ ई०) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृष्ठ संख्या १४६४ मूल्य ६०.००
२ मलयाळम—अध्यात्म रामायण (एळुत्तच्छन् कृत १५वीं शती) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृ० सं० ७५२ मू० ४०.००
३ ,, —महाभारत-एळुत्तच्छन् (१५वीं शती) पृ० १२१६ मू० ६०.००
४ बँगला— कृत्तिवास रामायण (आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्ध्या और सुन्दर)—१५वीं शती। हिन्दी पद्यानुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण पृ० ६२४ मू० २५.००
५ ,, कृत्तिवास लंकाकाण्ड— ,, गद्यानुवाद पृ० ४८८ मू० १५.००
६ कश्मीरी—रामावतारचरित-प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत पृ० ४८९ मू० २०.००
७ ,, ललद्यद—(नागरी) हिन्दी गद्य संस्कृत पद्यानु० पृ० १२० ,, १०.००
८ राजस्थानी—रुक्मिणी मंगल-पदम भगत कृत। पृ० ३०० मू० १५.००
९ तमिळ— तिरुक्कुरळ्-तिरुवल्लुवर कृत। २००० वर्ष से अधिक प्राचीन; नागरी लिप्यन्तरण, गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद, पृ० ३५२ मू० २०.००
१० ,, कम्ब रामायण बालकाण्ड (९वीं शती) पृ० ६५२ मूल्य ४०.००
११ कन्नड— रामचन्द्रचरित पुराण-अभिनव पम्प विरचित जैन-सम्प्रदाय रामचरित्र (११वीं शती) पृ० ६९० मू० ४०.००
१२ तेलुगु— मोल्ल रामायण (१४वीं शती) पृ० ४०० मू० २०.००
१३ ,, रंगनाथ रामायण (१३वीं शती) अनु. पृ. १३३५ मू० ६०.००
१४ मराठी—श्रीरामविजय-श्रीधरकृत (१७वीं शती) पृ० १२२८ मू० ६०.००
१५ अरबी— ज़ादे सफ़र (रियाज़ुस्सालिहीन) प्रामाणिक हदीस प्र० खण्ड पृ० ३३६ मू० १२.००
१६ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत उपनिषदों की व्याख्या) हिन्दी में पृ० २८० मू० २०.००
१७ उर्दू— शरीफ़ज़ादः (मिर्जा रुस्वा कृत) पृ० १३६ मू० ८.००
१८ गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब पहली सैंची पृ० ९६८ मू० ४०.००
१९ ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ९९२ मूल्य ५०.००
२० ,, श्रीजपुजी सुखमनी साहब गुरमुखी पाठ तथा ख्वाजः दिलमुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनों नागरी लिपि में; पृ० १६४ मू० ८.००
२१ ,, सुखमनी साहिब मूल गुटका नागरी लिपि। मूल्य ४'००
२२ सिन्धी— सामी, शाह, सचल की त्रिवेणी पृष्ठ ४१५ मू० २०.००

२३ नेपाली—भानुभक्त रामायण पृ० ३४४ मूल्य २०'००
२४ असमिया—माधवकंदली रामायण (१४वीं शती) पृ० ९४३ „ ६०'००
२५ ओड़िआ—बैदेहीश-बिळास उपेन्द्रभञ्ज (१८वीं शती) पृ० १००० „ ६०'००
२६ „ तुलसी-रामचरितमानस—ओड़िआ लिपि में मूलपाठ तथा ओड़िआ गद्य-पद्य अनुवाद। पृ०सं० १४६४ मू० ६०.००

प्रचारित प्रकाशन (ल.कि.घ.)

२७ क़ुर्आन शरीफ़ मूलपाठ अरबी तथा नागरी लिपि में पृ० ५२० मू० २०.००
२८ „ „ तथा हिन्दी अनुवाद सहित पृ० १०२४ मू० ४०.००
२९ „ केवल हिन्दी अनुवाद पृ० ५३० मू० २०.००
३० „ क़ौरानिक कोश (पठनक्रम) पृ० १९२ मू० १०.००
३१ बहुभाषाई— 'वाणी सरोवर' त्रैमासिक पत्र वार्षिक मूल्य १०'००

यन्त्रस्थ तथा कार्याधीन चल रहे अन्य ग्रन्थ :— अनुमानित पृष्ठ

१ तमिळ— कम्बरामायण अयोध्या से लंकाकाण्ड	४०००
२ गुरमुखी—श्री गुरूग्रन्थ साहिब ३,४ सैंची	२०००
३ गुजराती—प्रेमानन्द रसामृत	६००
४ उर्दू— गुज़श्त: लखनऊ (शरर)	३५०
५ तेलुगु— पोतन्नकृत भागवतमु (१३वीं शती)	२०००
६ ओड़िआ—जगमोहन रामायण बलरामदास कृत	१०००
७ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर खण्ड २-३	६००
८ „ मुल्ला मसीही रामायण (जहाँगीर काल)	५००
९ अरबी—बुखारी शरीफ़ (ल.कि.घ.)	३०००
१० " क़ौरानिक कोश वर्णानुक्रम (ल.कि.घ.)	३००
११ „ क़ुर्आन शरीफ़ तफ़सीर माजिदी (ल०कि०घ०)	६०००
१२ मराठी—श्रीहरि-विजय (श्रीधर कृत)	१२००
१३ „ श्री संत एकनाथ भावार्थ रामायण	३०००
१४ कोंकणी—ख्रीस्त पुराण	५००
१५ कन्नड—तोरवे रामायण (१६वीं शती)	९००
१६ बँगला—कृत्तिवास रामायण उत्तरकाण्ड	५००
१७ हिब्रू— बाइबिल ओल्ड टेस्टामेण्ट	२०००
१८ ग्रीक— " निउ टेस्टामेण्ट	१०००
१९ बाइबिल-सार (सालोमन के नीति-वचन)	१००
२० संस्कृत—(तुलसी) रामचरितमानस का मूलपाठ सहित संस्कृत पंक्ति-अनुपंक्ति पद्यानुवाद	१०००
२१ परिवर्द्धित नागरी उर्दू-हिन्दी कोश	१२००

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥'



प्रतिष्ठाता— पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी